कृष्णमित्रविरचितया संस्कृतटीकया वैकुण्ठीहिन्दीव्याख्या
आङ्गलभाषानुवादेन च समलङ्कृतः

प्रो. सत्यदेवमिश्रः

पण्डितवरश्रीमदमरसिंहविरचितः

अमरकोशः

(सम्पूर्ण)

॥श्रीः॥

पण्डितवरश्रीमदमरसिंहविरचितः

नामलिङ्गानुशासनं

नाम

अमरकोशः

कृष्णमित्रविरचितया संस्कृतटीकया वैकुण्ठीहिन्दीव्याख्या
आङ्गलभाषानुवादेन च समलङ्कृतः

सम्पादकः

प्रो. सत्यदेव मिश्र

कुलपति

राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय

जयपुर

जगदीश संस्कृत पुस्तकालय

जयपुर

प्रकाशक

जगदीश संस्कृत पुस्तकालय

झालानियों का रास्ता, किशनपोल बाजार,
जयपुर - 302001 (राजस्थान)
दूरभाष - 2320227

ISBN 81-87177-53-3

प्रथम संस्करण 2005

मूल्य - 700.00

प्रमुख वितरक

आयुर्वेद संस्कृत हिन्दी पुस्तक भंडार

झालानियों का रास्ता, किशनपोल बाजार,
जयपुर - 302 001 (राजस्थान)
दूरभाष - 2312974

लेजर टाईप सैटिंग :
सरस्वती कम्प्युटर्स, जयपुर

मुद्रक : अग्रवाल प्रिन्टिंग प्रेस
चौडा रास्ता, जयपुर–3

NĀMALINGĀNUŚĀSANA

OR

AMARAKOSA

OF

AMARASIMHA

With

Krsnamitra's Commentary in Sanskrit Vaikunthi Commentary in Hindi and Annotation of words in English.

By

Satyadeva Misra
Vice Chancellor
Rajasthan Sanskrit University
Jaipur

Jagdish Sanskrit Pustakalaya
Jaipur

द्वितीय संस्करण : पुरोवाक्

लौकिक संस्कृत साहित्य के कोशों में अमरकोश सबसे प्राचीन और प्रसिद्ध है। इसका एक अन्य प्रचलित नाम नामलिङ्गानुशासन है। हरगोविन्द शास्त्री ने रामाश्रमी (व्याख्या सुधा) के साथ 1970 में चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी से प्रकाशित नामलिङ्गानुशासन (अमरकोश) की प्रस्तावना में यह मत व्यक्त किया है कि पुरुषोत्तम देव ने इस कोश ग्रंथ के तीनों काण्डों को आधार मानकर अपने ग्रन्थ का नाम 'त्रिकाण्ड-शेष' रखा है। रघुनाथ चक्रवर्ती ने अपने अमरकोश की व्याख्या को 'त्रिकाण्डचिन्तामणि' के नाम से तथा रमानाथ ने अपनी अमरकोश व्याख्या को 'त्रिकाण्डविवेक' के नाम से सम्बोधित किया है, अतः इसका दूसरा नाम 'त्रिकाण्डकोष' है। इतिहासवेत्ताओं ने इसके प्रणेता अमरसिंह का आविर्भावकाल चतुर्थ शताब्दी ईस्वी माना है। इसके प्रणयन के पूर्व कात्यायन ने 'नाममाला' वाचस्पति ने 'शब्दकोश', विक्रमादित्य ने 'शब्दकोश' तथा 'संसारावर्त', व्याडि ने 'उत्पलिनी' आदि संस्कृत कोशों की रचना की थी, पर वे कालकवलित हो चुके हैं। परवर्ती काल में भी अनेक कोश लिखे गये हैं, पर उनके निर्माण से अमरकोश की प्रसिद्धि तथा लोकप्रियता में कोई कमी नहीं आई हैं। 1500 अनुष्टुपों में निबद्ध अमरकोश के लगभग 20,000 शब्द गत 1600 वर्षों से संस्कृत वाङ्मय की विविध विधाओं के प्रणेताओं, उसके टीकाकारों एवं संस्कृत के पठन-पाठन में संलग्न छात्रों तथा अध्यापकों के अक्षय रिक्थ सिद्ध हुये हैं। यदि अमरकोश न होता तो संस्कृत के विशाल वाङ्मय का एक बहुत बड़ा भाग या तो विलुप्त हो गया होता या प्रचलन में न आ पाता। इस कोश ने एक ओर तो मल्लिनाथ प्रभृति टीकाकारों को अपनी रचना के पहले लिखे गये 'कुमारसंभव' आदि काव्यग्रन्थों को, तथा बाद लिखे गये शिशुपालवधम् जैसे दुर्बोध ग्रन्थों को स्पष्ट करने की शक्ति प्रदान की हैं और दूसरी तरफ कवियों और लेखकों को अमूल्य शब्द सम्पदा का उपहार देते हुये उन्हें श्रेष्ठ साहित्यसर्जना की क्षमता प्रदान की है। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि देश के संस्कृत पाठशालाओं के प्रारम्भिक पाठ्यक्रम में लघुसिद्धान्त कौमुदी के साथ अमरकोश का पठन-पाठन प्राचीन काल से आज तक यथावत् बना हुआ है।

संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाओं की बहुसंख्यक टीकाओं से भी अमरकोश की लोकप्रियता प्रमाणित होती है। 'शब्दकल्पद्रुम' तथा 'अमरभारती' में इस कोश की 41 संस्कृत टीकाओं का उल्लेख हैं।[1] सरकारी ग्रन्थागारों तथा व्यक्तिगत पुस्तकालयों से अभी भी अमरकोश के अगणित टीकाग्रन्थ उपलब्ध हैं। शब्दकल्पद्रुम में उल्लिखित टीकाओं के अतिरिक्त तमिल, तेलुगु तथा कन्नड भाषाओं की 18 टीकायें मद्रास के सरकारी प्राच्य पाण्डुलिपि ग्रन्थागार में सुरक्षित हैं।[2]

अमरकोश तथा उसकी टीकाओं के अनुवाद विदेशी भाषाओं में भी प्राप्त हैं। उज्जयिनी के गुणरत्न (छठीं शताब्दी ई.) ने अमरकोश की 50 टीकाओं का चीनी भाषा में अनुवाद किया हैं। फ्रांसीसी यात्री जीन फ्रैन्कोइस पॉन्स 1698 ई. में भारत आये थे। उन्होंने लगभग 50 वर्षों तक भारत में संस्कृत का अध्ययन किया था। इस फ्रांसीसी यात्री ने बोपदेव तथा पाणिनि के व्याकरणों का विधिवत् अध्ययन किया था तथा इन ग्रन्थों में निपुणता प्राप्त करने के उपरान्त न केवल लैटिन तथा फ्रेंच भाषाओं का मिला-जुला एक व्याकरण ग्रन्थ लिखा, अपितु लैटिन भाषा में अमरकोश का अनुवाद भी किया।

---

1. द्रष्टव्य, मेरे द्वारा संपादित, कृष्णमित्र की टीका के साथ प्रकाशित, अमरकोश, प्रथम संस्करण भूमिका पृ. ?
2. वही पृ. ?

डॉ. रघुवीर ने एशिया की विविध भाषाओं में अमरकोश के अनुवाद ग्रन्थों का संग्रह किया था। इस संग्रह से वर्मा की भाषा में उपलब्ध अमरकोश का सत्रहवीं ईस्वी के महावैयाकरण सितु ने तिब्बती भाषा में अनुवाद किया। लोकेशचन्द्र ने इस तिब्बती भाषा में अनूदित ग्रन्थ को 1965 ई. में सत-पिटक ग्रन्थ माला के 38 वें ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित किया था। 19 वर्षों के बाद 1984 में वर्मा की भाषा में रूपान्तरित होकर यह सत-पिटक ग्रन्थमाला के 336 वें भारतीय-एशियाई साहित्य के रूप में प्रकाशित हुए है।

'अमरकोश' की संस्कृत टीकाओं में क्षीरस्वामी का 'अमरकोशोद्घाटन' तथा भानुजिदीक्षित की 'रामाश्रमी' या 'व्याख्यासुधा' टीका अत्यन्त लोकप्रिय है । इनका वैशिष्टय शब्दों के वैदुष्यपूर्ण व्युत्पत्ति-निरुपण में निहित है। इन टीकाओं के अनेक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। 'अमरकोशोद्धाटन' का एक प्रामाणिक संस्करण 1981 में उपासना प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी से सम्वत् 2026 में प्रकाशित 'व्याख्यासुधा' का प्रामाणिक संस्करण भी उपलब्ध है। अडयार पुस्तकालय तथा शोधकेन्द्र, मद्रास से ए. ए. रामनाथन के द्वारा संपादित दक्षिणभारत की अमरकोश की तीन व्याख्यायों का तीन खण्डों में प्रकाशन किया गया है। ये व्याख्या ग्रन्थ हैं- (1) लिङ्गसूरिकृत अमरपालवृत्ति (2) मल्लिनाथ कृत अमरपदपारिजातम् तथा (3) अप्पयार का अमरप्रदीपविवरण।

अमरकोश की टीकायें अभी भी व्यक्तिगत पुस्तकालयों तथा सरकारी ग्रन्थागारो से प्राप्त हो रही हैं। 1961 ई. में मैं जब अपनी पारिवारिक 500 पाण्डुलिपियों की सूची तैयार कर रहा था, तब मुझे अमरकोश की दो और दुर्लभ संस्कृत टीकायें प्राप्त हुईं। ये हैं- (1) भिक्षु फतेगिरि कृत 'अमरसूचिका' तथा (2) कृष्णमित्र विरचित 'अमरकोश-टीका'। अमरसूचिका में अमरकोश के शब्दों की सूची है तथा इनके अर्थों के स्पष्टीकरण के लिये यत्र-तत्र 'व्याख्यासुधा' का व्याख्यान उद्धृत किया गया है। इसके केवल 16 पर्ण उपलब्ध हैं, पर व्याख्यासुधा को आधार बनाकर इसका पूर्ण किया जाना सम्भव है। अमरकोश की कृष्णमित्र विरचित टीका क्षीरस्वामी के 'अमरकोशोद्धाटन' तथा भानुजिदीक्षित की 'व्याख्यासुधा' के समान व्युत्पत्तिपरक है। उपलब्ध पाण्डुलिपि पूर्ण है तथा 1811 ई. की है। मैंने अपने प्रथम संस्करण की भूमिका में पाण्डुलिपि की उपर्युक्त तिथि तथा अन्तःसाक्ष्यों के प्रमाण के आधार पर कृष्णमित्र की टीका का प्रणयन काल 18 वीं शताब्दी ई. का उत्तरार्ध निर्धारित किया हैं।

मेरे पास सुरक्षित गुसाईं उदलगिरि के 1860 ई. के हस्तलेख से यह ज्ञात होता हैं कि गुसाईं जी ने अमरकोश के उपर्युक्त टीकाग्रन्थ की प्रति लगभग 250 अन्य पाण्डुलिपियों के साथ विक्रम सम्वत् 1917 की अगहन कृष्ण प्रतिपदा को बलरामपुर (उत्तर प्रदेश) निवासी पं. ठाकुरदीन जी के सुपुत्र संभवतः मेरे ज्येष्ठ प्रपितामह पं. शीतलप्रसाद जी के पास 'न्यास' के रूप में रखी थी। अमरकोश के शब्दों के सरल एवं आकर्षक व्याख्यान से युक्त कृष्णमित्र की टीका के प्रकाशन का निर्णय मैंने सन् 1961 में लिया। इसकी अन्य पाण्डुलिपि के अन्वेषण का प्रयास किया, पर देश-विदेश में कहीं भी इसकी कोई अन्य प्रति न मिल सकी। अतः मेरे पास इसे अपनी एकल पाण्डुलिपि से प्रकाशित करने के अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प न था। संपादन सुकर था, क्योंकि मेरी पाण्डुलिपि न तो खण्डित है और न ही अशुद्ध है। मैने अपने मद्रास प्रवास के समय 1969 ई. में मद्रास विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डॉ. वे. राघवन से सम्पर्क किया, मैंने उन्हें कृष्णमित्र विरचित अपनी अमरकोश टीका की पाण्डुलिपि दिखाई। इसकी सरल शैली में की गई व्युत्पत्तिमय व्याख्या तथा उपयोगिता से प्रभावित होकर उन्होंने मुझे इसके अविलम्ब प्रकाशन का परामर्श दिया। इस बीच मलाया विश्वविद्यालय, क्वालालम्पूर (मलेशिया) के भारतीय अध्ययन विभाग में संस्कृत के प्राध्यापक के रूप में मेरी नियुक्ति हो गयी। वहाँ रहते हुये मैंने इस टीका ग्रन्थ का सम्पादन किया तथा काशी से इसके प्रकाशन कराने का निर्णय लिया। मेरे विदेश में होने के कारण इसके प्रकाशन में जो संभावित बाधायें थी, उन्हें श्रद्धेय गुरुदेव डॉ. वीरमणि प्रसाद उपाध्याय, सेवा निवृत्त आचार्य एवं अध्यक्ष संस्कृत विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर तथा पितृकल्प पूज्य श्वसुर पं. अनिरूद्ध पति त्रिपाठी जी उपसचिव, विहार विधान सभा, पटना ने दूर करने के अनुग्रह किया। डॉ. राघवन ने

भारत सरकार से वित्तीय सहायता दिलाई, गुरुदेव ने प्रूफ देखने का भार वहन किया तथा बार-बार पटना से काशी की सायास यात्रा करते हुये पूज्य श्वसुर जी ने प्रकाशन व्यवस्था का उत्तरदायित्व संभाला। 1972 में आंग्लभाषा में मेरी भूमिका तथा अमरकोश के मूल शब्दों के आंग्लानुवाद के साथ कृष्णमित्र की टीका के साथ अमरकोश का प्रकाशन हुआ।

कृष्णमित्र का टीकासौष्ठव विद्वानों के आकर्षण का केन्द्र बना। प्रो. बलदेव उपाध्याय ने आचार्य कृष्णमित्र की पाण्डित्यप्रदर्शन से शून्य सर्वथा सफल एवं लोकप्रिय टीकाकार के रूप में प्रशंसा की। मद्रास के दैनिक समाचार-पत्र 'हिन्दू' में 28 अक्टूबर 1973 में इसकी समीक्षा प्रकाशित हुई। मद्रास से प्रकाशित एक अन्य दैनिक समाचार-पत्र 'इण्डियन एक्सप्रेस' ने इसकी समीक्षा 'ए ग्रेट संस्कृत डिक्शनरी' (एक महान् शब्द कोश) के शीर्षक से 6 अप्रैल 1974 को प्रकाशित की। मोतीलाल बनारसीदास के द्वारा प्रकाशित 'ग्लोरी ऑफ इण्डिया' तथा जयपुर से प्रकाशित शोध पत्रिका, भारती-शोध-सार संग्रह में भी इसकी प्रशंसापूर्ण समीक्षा प्रकाशित हुई।

डॉ. राघवन ने साहित्य अकादमी, दिल्ली से प्रकाशित होने वाले इण्डियन लिट्रेचर की अप्रैल-जून, 1975 के 'रीसेन्ट संस्कृत पब्लिकेशन्स' पृ. 15 में इसका उल्लेख किया है। प्रो. वेङ्कटाचलम्, डॉ. सुधीर कुमार गुप्त, डॉ. अमरनाथ पाण्डेय प्रभृति प्रसिद्ध भारतीय विद्वानों तथा अमेरिकन लाईब्रेरी ऑफ कांग्रेस आफिस, नई दिल्ली के निदेशक जेरी आर. जेम्स् ने भी कृष्णमित्र की टीका के साथ प्रकाशित अमरकोश के प्रथम संस्करण की प्रशंसा की है। (द्रष्टव्य परिशिष्ट संख्या।)

अमरकोश का उक्त संस्करण गत 20 वर्षों से अप्राप्य था। जयपुर में आने से पहले मैं बिड़ला तकनीकी एवं विज्ञान संस्थान (बितबिस), पिलानी (राजस्थान) में था। वहाँ संस्कृत के पुस्तकों के प्रकाशन की असुविधा थी। सौभाग्यवश यहाँ आते ही मेरा परिचय राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के सहायक प्रोफेसर डॉ. उमेशदाश के माध्यम से जगदीश संस्कृत पुस्तकालय के संचालक श्री ओमप्रकाश शर्मा जी से हुआ। उन्होंने इसके द्वितीय संस्करण के प्रकाशन में अपनी अभिरूचि प्रदर्शित की। मैंने भी उनकी इच्छा का स्वागत किया और द्वितीय संस्करण के प्रकाशन की योजना बनी। प्रस्तुत संस्करण को और भी उपयोगी बनाने के लिये इसमें 'कोश' के संस्कृत शब्दों की हिन्दी व्याख्या का भी समावेश किया गया है।

मैं राष्ट्रपति सम्मानित लब्धप्रतिष्ठ संस्कृत विद्वान् देवर्षि कलानाथ शास्त्री जी का कृतज्ञ हूँ, जिनकी प्रेरणा से यह संस्करण और भी उपयोगी होकर जयपुर से प्रकाशित हो रहा है। राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के व्याकरण विभाग के प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार तिवारी तथा इसी विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. राजधर मिश्र साधुवाद के पात्र हैं, जिन्होंने इस बृहत्कोश के कई प्रूफ पढ़कर मुझे तथा इसके प्रकाशक को सहयोग प्रदान किया हैं। धर्मपत्नी इन्दिरा ने अन्तिम प्रूफ देखकर अशुद्धियों के निराकरण का प्रशंसनीय श्रम किया है।

राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, जयपुर परिसर के सहायक प्रोफेसर डॉ. रमाकान्त पाण्डेय, राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर के सचिवालय के श्री प्रदीप कुमार शर्मा तथा कम्प्यूटर ऑपरेटर श्री सुकेश जैन का, एवं पुत्र चि. मयङ्क का मैं वर्धापन करता हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इसके शीघ्र प्रकाशित कराने में मेरी सहायता की है। श्री ओमप्रकाश शर्मा को मैं विशेष धन्यवाद देता हूँ, जिनके मनोयोग तथा सोत्साह प्रयास से इस कोश ग्रन्थ का आकर्षक रूप में प्रकाशन हुआ है।

जयपुर,

18.3.05

प्रो. सत्यदेव मिश्र

कुलपति, राजस्थान

संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर

FOREWORD

The Sanskrit lexicon by Amarasimha, called Nāmalingānuśāsana, popularly known as Amarakośa, occupies an honoured position in the history of Sanskrit lexicography, Its popularity is evinced by a host of commentaries written upon it by eminent scholars of various regions and religions. The earliest available commentary Ksiraswāmi is undoubyedly a unique production of its kind due to the wealth of information about the different shades of meanings as well as the derivation of words. Four earlier commentaries mentioned by him are those of Upādhyāya Acyutopādhyāya), Ganda (?), Nārāyana and Śrī Bhoja (probably Bhojarāja, the famous king of Dhāra) but they are available neither in print nor known to exist in MS. form. Ksiraswāmī, a reputed grammarian hailing from Kashmir, belonged to the last quarter of 11th cent. and the first quarter of 12th cent. He in in fact a source of inspiration to the latter commentators who by their erudite commentaries have attempted to make Aarakosa better known to the scholars of Sanskrit language. Tikāsarvaswa of Sarvānanda (1159 A. D.) Kāmadhenu of the Buddhist Subhuticandra (Which possesses the rare merit of being translated into Tibetan), Padacandrikā of Raimukuṭa composed in 1431 A. D. based upon a comparative study of 16 earlier commentaries, Ramaśramī or Vyākhyāsudhā of Bhanuji Diksita alias Rāmaśrama, written in the firsy half of 17th cen. Amaraṭikā by Bharata Mallika of bengal written before 17 the cent.- these are some of the most important commentraies of Amarakośa available in print each of which possesses a unique distinction of its own on account of wealth of rich materials as regards the distinvtive shades of meanings preserved by Sanskrit words.

The present commentrary on amarakośa by Krsnamitra which is being present here for the first time is a welcome addition to the commentarial literature on this popular Sanskrit lexicon. The commentary gives the derivation of the words as has been already done by Bhanuji Diksita in his Vyākhyāsudhā and is indeed indebted to it.

Kṛṣṇamitra proposes to present here a popular commentary on a popular Sanskrit lexicon unburdened as it is by an erudition of super type. And in this attempt he is eminently successful.

The learned editor Shri Satyadeva Mishra is to be heartily congratulated on the production of this excellent edition. He has taken ample labours to make the edition as useful as possible. He has given in English the meaning of each Sanskrit word of the text and has added a very usful and reliable index of words appearing in the book, besides several valuable appendices for cross references. In his introduction he discusses the value of the commentary and settles its date by arguments at once convincing and authentic. Though based upon a single MS. the deition is quite reliable and free from mistakes and lacunae. I have great pleasure in bringing this book to the notice of Sanskrit scholars and hope the learned editor will bring to light other valuable works of Sanskrit and earn the gratitude of students and scholars alike.

Varansi
24-4-72

Baldeva Upadhyaya
Director (Retired), Research Institute,
Sanskrit University, Varanasi

INTRODUCTION

The *Amarakośa or Nāmalingānuśāsana* of Amarasimha is the earliest lexicon available to us. Amarasimha was a Bauddha, who knew Mahāyāna and was well acquainted with the works of Kālidāsa. He as a legend goes, was one of the nine jewels of Vikramāditya's court.[1] This legend however, is not of much singificance, as it contemporises the literatures flourished in different centuries.[2] According to professor K. G. Oka's convincing view, Amarsimha was a predecess or of Iśvarakṛṣṇa, the author of the sāṇkhya Kārikā fame, and *Amarakośa* is a work of the 4th century A. D.[3]

The *Amarakośa* occupies a unique place among all lexicons. While other lexicons contain either synonymous or homonymous words, the *Amarakośa* contains both. It treasures over twenty thousands of words in a compass of just fifteen hundred verses. No. other lexicon has been so authoritative and popular as the *Amarakośa.* All lexicons of later origin and glosses of classical Sanskrit literature are replete with quotations from the *Amarakośa.* Thousands of sanskrit scholars learn it by heart even tody. Its popularity is evidenced als by the mass of commentaries written on it by the scholars belonging to different religions. The *Sabdakalpadruma* and the *Amara-bhāratī* preserve the list of as many as forty-one commentaries. The list of as many as forty-one commentaries. These are (1)· *Vyākhyā-pradīpa* by Acyutopādhyāya (2) *Kriyā-kalāpa* by Āśadhara (3) Kāsika by Kāśinātha (4) *Amarkośa- dghāṭana* by Ksīrasvāmin (5) *Bālabodhinī* by Gosvāmin (6) *Amarakaumudi* by Nayanānanda Rāmacandra (7) *Amarakośa-pañjikā* by Nārāyaṇa Śarman (8) *Śabdārtha-dīpikā* by Nārāyaṇavidyāvinoda (9) *Subodhinī* by Nīlakaṇṭha (10) *Amarakośamālā* by Paramānanda (11) *Amarakośapañjikā* (Second) by Bṛhaspati (12) *Mugdhabodha* by Bharatamallika (13) *Vyākhyāsudhā or Rāmāśramī* by Bhānujidikṣita or Rāmāśrama (14) *Gurubālabodhini* by Mañjubhaṭṭa (15) *Sārasundarī* by Mathureśa-vidyālaṇkāra (16) *Amarapadapārijāta* by Mallinatha (17) *Budhamanobarā* by Mahādevatirtha (18) *Amaraviveka* by Maheśvara (19) *Amarabodhinī* by Mukundaśarman (20) *Trkaṇḍacintāmaṇi* by Raghunātha Cakravartin (21) *Amarakośa-vyākhyā* by Rāghavendra (22) *Trikāṇḍaviveka* by Rāmanātha (23) *Vaisamya Kaumudī* by Rāmaprasāda (24) *Amarakośa vyākhyā* by Ramaśarman (25) *Amaravṛtti* by Rāmasvāmin (26) *Pradīpamañjarī* by Rāmeśvara Śarman (27) *Padacandrikā* by Rāyamukuṭa (28) *Amara-vyākhyā* by Lakṣmaṇa Śāstri (29) *Amarabodhinī* by Liṇgabhaṭṭa (30) *Padamañjarī* by Lokanātha (31) *Vyākhyā-mrtam* by Śaṇkarācārya (32) *Amarṭikā* by Śrīdhara (33) *Tikāsarvasvam* by Sarvānanda (34) *Amarapadyamukuṭa* by Raṇgācārya (35) Bṛhadvṛtti------ (36)-----by Appayadikṣita (37) *Grrubālabodhinī* by Bhanudikṣita (38) ----- by Mānyabhaṭṭa (39)-------by Liṇgamāsūri (40) *Amarkośapadavivrti*----- and (41) *Kāmadhenu*----. A good number of commentaries preserved in the Government and private libraries of India and abroad are still coming to light. Eighteen commentaries other than the listed above are available in the

---

1. The other eight are : Dhanvantari. 2. Ksapanaka. 3. Śanku. 4. Vetālabhaṭṭa. 5. Ghaṭakarpara. 6. Kālidāsa. 7. Varāhamihira and 8. Vararuci.
2. History of Sanskrit Literature by S. N. Das Gupta and S. K. De Vol. I, pp. 229-30 (University of Calcutta, 1962).
3. Introduction on *Amarakośa* with the commentary of Kṣrirasvāmin, p. 9 (Poona, 1913).

Government Oriental Manuscripts Library, Madras.[4] Some of these commentaries are in languages other than Sanskrit. Another commentary on the text by Viṣṇu is referred to by professor E. D. Kulakarni in his Introduction on the *Dharaṇi-kośa.*[5] I come across two more rare commentaries on the text namely *Amrasūcikā* by Bhikṣu Fategiri and Amarakośatikā by Ācārya Kṛṣṇa-mitra in 1961, while I was preparing a list of 500 Sanskrit Munuscripts in my family possession. The first is an indexical work which enumerates the words and verses used in the *Amarkośa* for each word. It frequently quotes critical and aphoristic excerpts from the *Vyākhyāsudhā* of Bhānuji Dikṣita.[6] It is incomplete. The available fragment of 16 folios contains the commentary for the first 9 sections (*vargas*) of the first *Kāṇḍa* The second by Acārya Kṛṣṇamitra which is offered here to Sanskrit scholars is a brilliant exposition of the text on the lines of Ksirasvāmin's *Amarakośodghāṭana* and Bhānujidikṣita's *Vyākhyāsudhā*

The present edition of Krsnamitra's commentary is based on the single manuscript mentioned above, as no other copy of the work has come to my notice as yet. The MS. bears the library No. 32 and dates back to 1868 V. S. (= 1811 A. D.). It is written on country paper. It consists of 244 folios of 121/2+43/4 inches. The folios belonging to each *Kāṇḍa* are separately numbered. Each folio contains 8-10 lines on average except the folios Nos. 51 and 52 of the third *Kāṇḍa* which contain fifteen lines. The MS. is fairly correct. It is written with black ink in a big, bold and readable hand writing. Most of the vokables are indicated by straight strokes upon them. Yellow pigment is used to cancel the wrong letters. The corrections are made in the left or right margin of the respective folios. The name of the scribe is Vasilāla.

The author of the commentary is Acārya Krsnamitr, as is evident from the colophons at the chapters' end. That he was a devotee of Lord Viṣṇu, is obvious from the introductory verse and the commentary's commencement with invocation to Śrî Rāma. His mention of over 500 colloquial words (See Appendix) in the commentary which are still used in the Avadhi and Bhojapuri regions suggests that he was a native of Northern India. His use of Nepala,[7] *Uttarāpatha*[8] and *Uttaradeśa*[9] also strengthens the same conclusion.

---

4. (i) *Nāmalingānuśāsana-vyākhyā* by Tiruvenkatācārya (R 1241).
(ii) *Nāmalingānuśāsana-vyākhyā* by Ravivarmarāja (R 4930),
(iii) *Nāmalingānuśāsana-vyākhyā* by by Jātavedadikṣta (R 3552),
(iv) *Nāmalingānuśāsana* With Kanarese commentary (D 19538),
(v) *Nāmalingānuśāsana* With Kanarese Meaning (R 4552),
(vi) *Nāmalingānuśāsana* With Telugu meaning (D 1657),
(vii) *Nāmalingānuśāsana* With Telugu commentary (D 1665),
(viii) *Nāmalingānuśāsana* With Telugu commentary by Nāgadevabhaṭṭa (D 1674), (ix) *Nāmaliṇgānuśāsana* With Telugu meaning by Namadi Venkaṭarāya (947 (a)), (x) *Nāmaliṇgānuśāsana* With Telugu commentary by Rāmacandrādhivarm (R 949), (xi) *Nāmaliṇgānuśāsana* With Teulug commentary by Kasturimallakavi (R 958), (xii) *Nāmaliṇgānuśāsana* With Tamil commentary by Veṇkaṭeśvara, (xiii) *Nāmaliṇgānuśāsana* With Tamil commentary by vaidyanāthādhivarm (R 11098 (a)), (xiv) *Nāmaliṇgānuśāsana-padavivaraṇam* (R 1253), (xv) *Amarakośapadavivṛti* by Veṇgalalingayasūri (D 1697), (xvi) *Nāmaliṇgānuśāsana-vyākhyā* by Ravivaramarāja (R 4427), and (xvii) *Nāmaliṇgānuśāsana-vyākhyā* by subhūticandra (R 2933).
5. See, Introduction on *Dharaṇikośa* of Dharanidāsa, P. 10 (Poona, 1968).
6. शिवौ मे स्तां येन शिवायामरसचिकाम्। विदधे बालबोधाय फतेगिर्यार्ख्याभिक्षुकः ॥1 ॥ नामसंख्योदिपधानामधिकारमिह स्मरेत्। उक्तं व्याख्यासुधायां यत्तद्व्याख्यानं क्वचित्क्वचित् ॥2 ॥
(Invocatory verses of the *Amarasūcikā*) (No. 511).
7. *cf. Amarakośatîkā, 2.4.128.*
8. Ibid. 2.4.129
9. Ibid. 2.4.153.

The name, Krsnamitra is not unknown to Sans Kritists. We know of the grammarian Kṛṣṇamitra who wrote Bhāvapradīpa on th *Śabdakaustubba,* and *Siddbāntakaumudīratnārnava* on the *Siddbāntakaumudī.* This Kṛṣṇamitra was the son of Rāmasevaka who belonged to the 18th century A. D. Among my hereditary manuscripts, I have one on the Āyurveda, namely *yogataraṅgiṇī* the authorship of which is ascribed to Kṛṣṇamitra. The reference to a Kṛṣṇamitra Ācārya (18the-19th centuries) who wrote about a score of philosophical works is found in the Bibliography of Indian philosophy, Vol. I edited by Korl F. Potter.[10] There is also a gloss by Krsnamitrācārya on the Kumārasambhava of Kālidāsa.[11] Since these works are not accessible to me, I am unable to say if their author is only one or different. It is also not possible to maintain the identity of the lexicon's commentator with his name sakes, If the frequent references to Pāṇiṇi's *Aṣṭādhyāyī, Patañjali's Mahābhāsya and Kātyāyana's* Vārtika by Kṛṣṇamitra in his commentary are of any significance, he may be said to be identical with the Kṛṣṇamitra who composed commentraies on Bhaṭṭoji Diksita's *Śabdakaustubha* and *Siddhāntakaumudī.* But the materials in my possession are too scanty to support this surmise.

The other works and authors mentioned by Kṛṣṇamitra in his commentary are:

Amaramālā (1.6.6.), *Kāvya* (1.6.18), *Kāvyādarśa* (3.3.22), *Kumārasambhava* (3.4.13), *Gītā* (3.3.37, 3.3.45, 3.3.103, 3.3.146, 3.3.212, and 3.4.6), *Carakasambitā* (1.1.33), *Nāgānanda* (3.4.17), *Nāṭyaśastra* (1.7.10), *Pañcatantra* (3.3.37, 3.3.48), *Prācya* (1.7.4), *Prañca* (1.4.7), *Bhaṭṭalollaṭa* (1.7.21), *Bhartṛbari* (3.3.131), *Bhāguri* (1.3.13), *Bhāvaprakāśa* (2.4.48), *Manu* (2.1.7, 2.1.8 and 2.7.14), *Mālā* (2.2.13), *Mudrārākṣasa* (3.3.79), *Meghadūt* (3.5.9), *Medinī (1.6.6, 3.3.7, 3.3.10, 3.3.13-14, 3.3.16, 3.3.60, 3.3.169, 3.3.198,* 3.3.225, 3.3.231 and 3.6.18), *Raksita* (2.9.18), *Raghuvamśa* (3.3.22, 3.3.43, 3.3.95 and 3.3.95 and 3.3.144), *Rabhasa* (3.6.18), *Rāmāśrama* (1.7.7 and 2.4.156), *Viśa* (1.1.44, 3.3.58, 3.3.115, 3.3.121, 3.3.140, 3.3.141 and 3.6.18), *Visnu Purāṇa* (3.3.22), *Veṇīsambāra* (3.3.136), *Vaidya* (2.6.66), *Śakaṭāyana* (1.1.6), Śiśupālabadha (3.5.9), *Sabhya* (1.8.4), *Saṅgita-ratnākara* (1.7.9), *Saṅgitaśāstra* (1.7.6), *Sudhā* (2.8.16), *Smṛti* (1.1.55) and *Svāmī* (1.6.6., 1.1.35, 1.3.4, 1.3.16, 1.3.19, 1.3.27, 1.3.36, 1.8.3, 1.8.4, 2.4.121, 2.4.124, 2.6.71, 2.9.18, 2.9.26, 2.9.27-28, 3.3.12, 3.3.133, 3.3.168, 3.6.8 and 3.6.18).

Most of the works and authors listed above are of earlier orgin and they do not provide clues in ascertaining the date of Kṛṣṇamitra. What is relevant here is the references to earlier commentators of the *Amarakośa,* namely Kṣīrasvāmin and Rāmāśrama. They are also frequently quoted by Kṛṣṇamitra as *anye, apare eke, kecit* and *yattu.* Rāyamukuṭa is twice quoted. There are also references to some commentators preceding and succeeding Kṣīrasvāmin. But it is not possible to identify them in view of the absence of their commentaries. Ksirasvāmin, Rāyamukuṭa and Rāmāśrama are not only quoted as authorities but are sometimes adversely criticised by

---

10. (i) *Anumiti-parāmarśa.* (NV), (ii) *Bādha-buddhi-prativandha-katāvicāra* (NV), (iii) *Bhaṭṭārkataraṅgiṇī* (NV), (iv) Paradipa on Bhāvānanda's Bhāvānandi, (v) Tikā on Gadādhara's *Gadādhari,* (vi) *Laghunyāyasudhā* (NV), (vii) *Laghusāmagrivyāpti* (NV), (viii) *Laghutarka-sudhā (NV),* (ix) *Tikā* on Raghunāthaśiromaṇi's Nañvāda, (x) Vyākhyā on *padārthatattva-nirūpaṇa, (xi) Padārthapārijāta* (V), (xii) *Ratnāvalivādasubhāṭkā* (NV). (xiii) *Sāmagrivādārtha* (NV), (xiv) Commentary on Iśvarakṛṣṇa's Sāṅkhya-kārikā (s) (xv) *Tikā* on Gadādhara's *Śakitvāda,* (xvi) *Siddhānta-rabasya* (NV), (xvii) *Tarka-Pratibandharabasya,* (xviii) *Prakāśa* on Raghunathaśiromaṇi's *Tattvacintāmaṇi* Didhiti and (xix) *Tattvamimāmsā* (pp. 355-356) (Delhi, 1970).
11. Cf. A History of Sanskrit Literature by S. N. Dasgupta and S. K. De, Vol. I. fn. 1, p. 74 (University of calcutta, 1966).

Kṛṣṇamitra. Kṣirasvāmin and Rāyamukuṭa are certainly older to Rāmāśrama who is also called Bhānujidiksita. Since Kṛṣṇamitra explicitly quotes Rāmāśrama and his *Vyākyāsudhā* on the *Amarakośa*, we can accept the *Vyākhyāsudhā's* date as the earlier limit to the date of Kṛṣṇamitra's commentary, the later limit being of course A. D. 1811, the date of the MS. in my possession Bhānuji is generally assigend to the earlier half of the 17th century A. D. Prof. P. K. Gode identifies Kirtisimha, the Baghel patron of Bhānuji with Fateh Singh, the founder of Sohawal state in Baghelkhanda in central India, and ascribes Bhānuji to the period A. D. 1620 to 1660.[12] Since Bhanuji's commentary exerts much influesce on Kṛṣṇamitra, and enjoys a celebrated position in his commentary, we may assume that Krsnamitra composed his commentary nearly a century after the composition of Bhānuji's *Vyākhyāsudhā* i. e. sometime in the fifties of the 18th century A. D. This can also be confirmed by the date of the manuscript which is the later limit of the commentary's date. As the MS. is dated A. D. 1811, Krsnamitra must have composed his commentary many years earlier than this date. In short, the commentary might have been written in the later half of the 18th century.

Now a word about the edited text. All attempts have been made to make the book useful and free from mistakes. English meanings of the words are given in footnotes and the number of the synonyms is given in rectangular brackets. Best efforts have been made to verify quotations and mention their original sources. In cases of alterations and corrections, the readings of the manuscript have been given in the footnotes. B. K. and M are the main abbreviations used for Bhānuji Dikṣita, Kṛṣṇamitra and the manuscript respectively. Inspite of all possible care, some misprints have occurred especially in the footnotes because of oversight in proof reading for which I crave pardon from scholars.

12. Cf. A contemporary Manuscript of Bhānuji Diksita's Vyākhyāsudhā in studies in Indian Literary History by P. K. Gode, Vol. III, pp. 26-30 (Poona, 1956).

I feel called upon to express my gratitude to the ministry of Education and Social Welfare, Government of India for assisting me financially in the publication of this rare text. I am highly thankful to Dr. V. Raghavan, Prof. and Head of the Deptt. of Sanskrit (Rtd.) from whom I received inspiration and advice in bringing out the edition. Grateful thanks are due to Dr. T. M. P. Mahadevan, Director, Centre of advanced Study in Philosophy, University of Madras, and Dr. K. Kunjunni Raja, Prof. and Head fo the Deptt. of Sanskrit, Madras University and Dr. V. P. Upadhyaya, Prof. and Head of the Detpp. of Sanskrit, Gorakhpur University are dut to Shri A. P. Tripathi, Shastri, Reporter, Bihar Vidhan Sabha, Patna for taking very great pains in making all arrangements for timely publication of the book, and for easing all problems arising from my overseas stay. I am also thankful to many of my colleagues and friends, especially Shri R. N. Choudhary who extended their whole-hearted co-operation by supplying some materials useful in preparing the introduction.

Finally, I wish to thank my wife Indira Mishra for her active co-operation in preparation of the work.

Satyadeva Misra

अमरकोषस्थवर्गानुक्रमणिका

प्रथमं काण्डम्

द्वितीयं काण्डम्

तृतीयं काण्डम्

॥श्री॥

अमरकोशः

कृष्णमित्रविरचितया संस्कृतटीकया वैकुण्ठीहिन्दीव्याख्या आङ्गलभाषानुवादेन च समलङ्कृतः

प्रथमं काण्डम्

यस्य ज्ञानदयासिन्धोरगाधस्यानघा गुणाः।
सेव्यतामक्षयो धीराः स श्रिये चामृताय च ॥१॥

टीका

श्रीरामायनमः।

कोशव्युत्पादनं रेखागवयन्यायमाश्रितम्।
पद्यापतिंपदं प्रेष्ठं प्रेप्सतामद्वयार्थकम्।

कृष्णमित्रटीका :- यस्येति- हे धीराः स भगवान् सेव्यताम्।[1] धैर्यशालिनामेव सेवाक्षमत्वादुक्तं धीरा इति। स कः? यस्य गुणाः क्षात्र्यादयोऽणिमादयो[2] वा अनघा निष्पापाः। कथं भूतस्य ? ज्ञानदययोः सिन्धोः, समुद्रस्येव विपुलाधारस्य ज्ञानवत्त्वेन परोपकारयोग्यतासेव्यत्वं सूचितम्[3] ज्ञानिनोऽपि प्रयोजनाभावे[4] किमुपकारेणेत्याशङ्कानिवृत्तये दयोपादानम्। अगाधस्य अपरिच्छिन्नमहत्त्वस्य[5] नास्ति क्षयो यस्य सोऽक्षयः।[6] कस्मै प्रयोजनाय ? श्रिये चामृताय च । च द्वयोपादानमुभयोः प्राधान्यसूचनाय। नास्ति मृतं मरणं यत्रेत्यमृतत्वाय मोक्षार्थम्॥१॥

हिन्दीअर्थ :- हे सज्जनों ! तुम उस अविनाशी ज्ञानदाता गुरु की भोग और मोक्ष की प्राप्ति के लिये सेवा करो, जो शास्त्रज्ञ दयालु विषयों से विरक्त हैं, और सत्य, शौच, दया, क्षमा आदि गुणों से परिपूर्ण हैं ॥१॥

ग्रंथ में वक्तव्य विषय दिखलाते हैं:-

समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः।
सम्पूर्णमुच्यते वर्गैर्नामलिङ्गानुशासनम्॥२॥

1. **M. reads** सेव्यतां 2. M. ज्ञान्यादयोणिमादयो। 3. M. सूचितं 4. M. ज्ञानिनोपि प्रयोजनोभावे 5. M. अपरिच्छिन्नमहत्त्वस्य 6. M. सोक्षयः

कृष्णमित्रटीका :- स्वप्रवृत्तिप्रयोजनं दर्शयति - **समाहृत्येति।** अन्यतन्त्राणि[1] कोशलिङ्गानुशासनानि समाहृत्य एकीकृत्य सम्पूर्णं न्यूनतारहितं नामलिङ्गबोधकं शास्त्रमुच्यते अनुशिष्यते[2] विविच्य बोध्यतेऽस्मिन्ननेन[3] वा संक्षिप्तैः लघूकृतैः प्रतिसंस्कृतैः प्रत्येकं क्रमकथनेन कृतोत्कर्षैरसारांशरहितैरिति वा वर्गैः सजातीयसमूहैः सम्पूर्ण[4] लक्ष्यलक्षणमुक्तम् ॥२॥

हिन्दीअर्थ :- मैं व्याडि आदि के नामलिङ्गानुशासन अथवा सिद्धान्तों का संग्रह करके शब्दों के क्रमानुसार कथन करने से सुशोभित ऐसे थोड़े-थोड़े शब्दों के वर्गों से अर्थात् पृथक्-२ प्रकरणों से युक्त शब्द और उनके लिंगों के बोधक कोश की रचना कर रहा हूँ॥२॥

इस ग्रन्थ में की गई लिंगादिव्यवस्था के विषय में कहते हैं:-

प्रायशो रूपभेदेन साहचर्याच्च कुत्रचित्।
स्त्रीपुन्नपुंसकं ज्ञेयं तद्विशेषविधेः क्वचित्॥३॥

कृष्णमित्रटीका :- लिङ्गज्ञानोपायमाह - प्रायश इति। प्रायशो बाहुल्येन[5] रूपस्यावन्तादेर्भेदेन[6] स्त्रीपुन्नपुंसकं ज्ञेयम्। यथा - 'लक्ष्मीः पद्मलया पद्मा' (अ. १. १. २७) 'पिनाकोऽजगवं[7] धनुः' (अ. १. १. ३५)। कुत्रचित्साहचर्यात्, यथा- 'अश्वयुगश्विनी' (अ. १. ३. २१)। क्वचित्तेषां स्त्र्यादीनां विशेषतो विधानात्कथनात्,

1. M. अन्यतंत्राणि 2. M. अनुशिष्यत्ते 3. M. बोध्यते स्मिन्ननेन। 4. M. संपूर्ण 5. M. बाहुल्येन। 6. M. आवन्तादेर्भेदेन 7. M. पिनाकोजगवं

यथा- 'भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान्' (अ. १. ७. ६), 'क्लीबे त्रिविष्टम्', (अ. १. १. ६) इति ॥३॥

हिन्दीअर्थ :- इस ग्रंथ में प्रायः ईप्, आप् विसर्ग और अनुस्वार के द्वारा स्त्रीलिंग, पुँल्लिंग, और नपुँसकलिंग जानना चाहिये, जैसे- 'पद्मालया' और 'पद्मा' यहां 'आप्' होने से 'पद्मालया' और 'पद्मा' यह स्त्रीलिङ्ग हैं। 'पिनाकोऽजगवं धनुः' 'पिनाकः' यहाँ पर विसर्ग है, इससे 'पिनाक' शब्द पुँल्लिङ्ग है। 'अजगवम्' यहाँ पर अनुस्वार होने से 'अजगव' शब्द नपुंसक है, कहीं पर विशेषण में स्थित अथवा सर्वनामवाचक शब्द में स्थित रूप के भेद से लिंगों में भेद होता है, जैसा- 'तत्परो हनुः' यहां पर तत्परः इस विशेषण का पुँल्लिंगरूप होने से उसका विशेष्य जो 'हनु' शब्द है वह भी पुँल्लिंग है तथा 'कुतूःकृत्तेः स्नेहपात्रं सैवाल्पा कुतुपः पुमान्' यहां 'सा' यह जो सर्वनामसंज्ञक शब्द है वह 'कुतू' शब्दका विशेषण है इससे 'सा' इसका स्त्रीलिंग होने से उसका विशेष्य जो 'कुतू' शब्द है वह भी स्त्रीलिंग है, (और निश्चित लिंग वाले शब्द का उच्चारण करने से उसका जो लिंग है वही लिंग) निश्चित लिङ्ग वाले शब्द का जो लिङ्ग है वही लिङ्ग उस समीप पढ़े हुए अनिश्चितलिंगवाले शब्द का जानना, जैसे 'अश्वयुगश्विनी' 'भानु' और 'वियद्विष्णुपदम्' यहां पर 'अश्वयुजू' 'भानु' और 'वियद्' इन अनिश्चितलिंगवाले शब्दों के समीप निश्चित लिङ्गवाले 'अश्विनी' 'कर' और 'विष्णुपद' ये शब्द होने से उनके जो लिङ्ग हैं वे ही लिंग उन शब्द होने से 'अश्वयुज' शब्द का स्त्रीलिंग, 'भानु' - शब्द का पुँल्लिंग और 'वियद्' शब्द का नपुंसक लिंग है, यह ज्ञातव्य है। कहीं कहीं उन स्त्री, पुम्, नपुंसक इनके विशेषरीति से कथन करने से स्त्रीलिंग, पुँल्लिंग और नपुंसकलिंग जानना है, जैसे 'भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान्' 'रोचिः शोचिरुभे क्लीबे' यहां पर भेरी शब्द के समीप 'स्त्री' ऐसा विशेषरीति से कथन किया है अतः 'भेरी' यह शब्द स्त्रीलिंग है और 'दुन्दुभि' शब्द के समीप 'पुमान्' यह कथन करने से 'दुन्दुभि' शब्द पुंल्लिंग है और 'रोचिस्' 'शोचिस्' शब्दों के समीप 'उभे क्लीबे' अर्थात् दोनों भी नपुसंक यह विशेष करने से रोचिस् और 'शोचिस्' ये शब्द नपुसकलिंग हैं, इसी प्रकार सर्वत्र जानना है॥३॥

भेदाख्यानाय न द्वन्द्वो नैकशेषो न सङ्करः।
कृतोऽत्र[1] भिन्नलिङ्गानामनुक्तानां क्रमादृते ॥४॥

कृष्णमित्रटीका :- भेदेति। अत्रामरकोशे भिन्नलिङ्गानामन्यत्रानुक्तानां भेदं बोधयितुं द्वन्द्वो न कृतः, तथाहि सति परवल्लिङ्गं स्यात्, यथा- 'कुलिशं भिदुर णविः' (अ. १. १. ४७) इति, न तु कुलिशभिदुरपवय इति। तथैकशेषोऽपि[1] न कृतः, तथाहि सति शिष्यमाणस्यैव लिङ्गं प्रतीयेत, यथा- 'नभः खं श्रावणो नभाः' (अ. ३. ३. २३२) इति, न तु खश्रवाणौनभसो इति। तथा सङ्करो लिङ्गता प्रतीयेत, यथा- 'स्तवः स्तोत्रं नुतिः स्तुतिरिति' (अ. १. ६. ११), न तु स्तुतिः स्तोत्रं स्तवो नुतिरिति। एतच्च क्रमादृते यत्र संग्रहश्लोकादौ क्रममात्रं विवक्षितं तत्र भिन्नलिङ्गानां द्वन्द्वादयः कृता एव, यथा- 'वर्गाः पृथ्वी पुरक्ष्माभृद्धनौषधिमृगादिभिः' (अ. २. १. १.) इति, न तु क्रमाभावेऽपि[2] 'रक्षोगन्धर्वकिंनरा' (अ. १. १. ११) इत्यत्र कथं द्वन्द्व इति चेत्सत्यं क्रमग्रहणमुपलक्षणं तत्रापि हि क्रमवद्विशेलिङ्गबोधनेच्छा नास्ति ॥४॥[3]

हिन्दीअर्थ :- इस कोश में अपने अपने पर्यायों में नहीं पढ़े हुए भिन्न-२ लिङ्गवाले शब्दों का लिङ्गभेद कहने के अर्थ द्वन्द्व और एकशेष नहीं किया है, जैसे- 'देवता' शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं 'दैवत' शब्द न. है और 'अमर' शब्द पुल्लिंग है, इन भिन्न भिन्न लिङ्गवाले 'देवता' 'दैवत' और 'अमर' शब्दों का लिंगभेद कहने के कारण 'देवतादैवतामराः' ऐसा द्वन्द्वसमास नहीं किया है, द्वन्द्वसमास किया जाय तो 'अमर' शब्द का पुँलिंग होने से 'देवता' और 'दैवत' भी पुल्लिङ्ग हो जायगा क्योंकि द्वन्द्वसमासमें और तत्पुरुष में लिङ्ग पर पद के अनुसार ही होता है, अतः 'देवता' और 'दैवत' शब्द पुल्लिङ्ग नहीं होने के लिए द्वन्द्व समास नहीं किया ऐसा सर्वत्र जानना ऐसे ही 'नभः खं श्रावणो नभाः' यहां पर 'अश्रावणौ तु नभसी' ऐसा 'नभसी' इस प्रकारका एक शेष भी नहीं किया क्योंकि 'नभाश्च नभश्च नभसी' ऐसा एकशेष करने से 'नभसी' यह नपुँसकलिङ्ग शेष रहेगा फिर आकाशवाचक 'नभस्' शब्द पुँल्लिङ्ग है यह नहीं जाना जायगा, इस लिए 'खं नभः' और 'श्रावणो नभाः'

1. M. कृतोत्र। 2. M. क्रमाभावेपि 3. **cet Krsnaswami's Commentary**, Amarakosodghatana, P. 2.

ऐसा पृथक् -२ 'नभस्' शब्द कहा है लिङ्गभेद समझने के लिये एकशेष 'नभसी' ऐसा नहीं किया, समान लिङ्गों का तो द्वन्द्वसमास किया ही है, जैसे- 'स्वर्गनाकत्रिदिवत्रि-दशालयाः' 'पादा रश्म्यङ्घ्रितुर्यांशाः' यहां पर एक लिङ्ग के ही सब शब्द हैं, अतः उनका द्वन्द्व समास किया है और जिन शब्दों के पर्यायशब्द और लिङ्ग स्वतन्त्रतासे अन्य स्थलों में कहे हैं, उससे अन्यत्र जो उस भिन्नलिङ्ग शब्दों का किसी अर्थान्तरके अर्थ कथन करने के लिये द्वन्द्वसमास किया है, जैसे-'विद्याधराप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः' मातापितरौ पितरौ यहां पर 'अप्सरस्' शब्द अपने पर्यायों 'स्त्रियां बहुष्वप्सरसः स्वर्वेश्या उर्वशीमुखाः' यहां ही स्त्रीलिंङ्ग है ऐसा कहा है, उसी 'अप्सरस्' शब्द देवयोनि में परिगणनरूप अर्थ के लिये विद्याधर आदि के गणों में पठित है और 'विद्याधर' 'अप्सरस्' 'यक्ष' 'रक्षस्' 'गन्धर्व' 'किन्नर' इन सब शब्दों द्वन्द्व समास है, अब यहां पर यद्यपि सर्वशब्दों का द्वन्द्वसमास होने से 'विद्याधराप्सरोयक्षरक्षो-गन्धर्वकिन्नराः' ऐसा पुँल्लिङ्ग रूप बना है तो भी 'अप्सरस्' यहां पर कथन करने के अनुसार स्त्रीलिंङ्ग ही है ऐसा समझना और 'मातापितरौ पितरौ' यहां पर 'पितरौ' इसमें 'मातृ' और 'पितृ' ऐसे दोनों का एकवद्भाव किया गया है, इसमें 'मातृ' और 'पितृ' इनमें से 'पितृ' इस शब्द को 'मातृ' 'पितृ' इन दोनों का वाचकत्व होने से भी उसके अन्तर्गत यद्यपि 'मातृ' यह शब्द है तथापि वह 'मातृ' शब्द 'जनयित्री' प्रसूर्माता इस स्थल में पर्यायशब्दों के साथ स्त्रीलिङ्ग पठित है इस कारण उस 'पितरौ' इसके अन्तर्गत 'मातृ' शब्द का स्त्रीलिङ्ग ही है ऐसा जानना । इस कोष में उन भिन्न भिन्न लिङ्गवाले शब्दों का क्रम छोड़ के भिन्न-२ लिङ्गवाले शब्दों में मिश्रण नहीं किया है जैसे- 'स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः' यहां पर 'स्तव' ऐसा पुल्लिङ्ग कहा, फिर 'स्तोत्र' यह नपुंसकलिंग कहा, फिर 'स्तुतिः' 'नुतिः' वे स्त्रीलिंग शब्द कहे हैं 'स्तुतिः स्तोत्रः' 'नुतिः' वे स्त्रीलिंग शब्द कहे हैं 'स्तुतिः' स्तोत्र स्तवो नुतिः ऐसा लिङ्गों का मिश्रणरूप संकर नहीं किया है, ऐसा ही 'जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः' यहां पर 'जनुर्जननजन्मानि' ये नपुंसक शब्द, फिर 'जनिः' 'उत्पत्ति' ये स्त्रीलिंग शब्द, फिर 'उद्भवः' यह पुंलिङ्गशब्द कहा । यहा से सर्वत्र लिङ्गों के विषय में जानना ॥४॥

त्रिलिङ्ग्यां त्रिष्विति पदं मिथुने तु द्वयोरिति।
निषिद्धलिङ्गं शेषार्थं त्वन्ताथादि न पूर्वभाक् ॥५॥

कृष्णमित्रटीका :- त्रिलिङ्ग्यामिति। यत्र त्रयाणां लिङ्गानां समाहारस्तत्र त्रिष्विति पदं प्रयुक्तमिति परिभाष्यते । यथा- 'त्रिषु स्फुलिङ्गोऽग्निकणः' (अ. १. १. ५७)। तथा मिथुने स्त्री पुल्लिङ्गे द्वयोरिति पदं ज्ञेयम्। यथा- 'बह्नेर्द्वयोर्ज्वाल-कीली' (अ. १. १. ५७) । तथा यत्र किञ्चिल्लिङ्गं निषिद्धन्तत्र तद्भिन्नं बोद्धव्यं,[1] यथा- 'व्योमयानं विमानोऽस्त्री' (अ. १. १. ४८) ति। अत्र स्त्रीत्वे निषिद्धे पुन्नपुंसकयोर्लाभः। तथा तु शब्दोऽन्ते[2] यस्याथशब्द आदिर्यस्य तत्पूर्वं न भजते, किन्तूत्तरान्वयि। 'नगरी त्वमरावती' (अ. १. १. ४५), 'जवोऽथ[3] शीघ्रं त्वरितम्' (अ. १. १. ६४) इति ॥५॥

हिन्दीअर्थः-जो शब्द तीनों लिङ्गो में चलता है उसका 'त्रिषु' पद से कथन किया है जैसे- 'त्रिषु स्फुलिङ्गोऽग्निकणः' यहां पर 'स्फुलिङ्ग' शब्द तीनों लिङ्गो में होता है अतः उस 'स्फुलिंङ्ग' शब्द के समीप 'त्रिषु' यह पद कथन किया है, और जहां पर स्त्रीलिङ्ग और पुल्लिङ्ग इन दोनों लिङ्गो में कोई शब्द होता है, वहां 'द्वयोः' ऐसा पद कथन किया है, जैसे-'द्वयोर्ज्वालकीलौ' यहां पर 'ज्वाल' और 'कील' ये दोनों शब्द पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग हैं अतएव इन्हें 'द्वयोः' से सूचित किया गया है। 'द्वयोः' यह केवल द्वि शब्दका उपलक्षण है, अर्थात् किसी भी तरह से द्वि-शब्द का जहां पर प्रयोग होगा वहां स्त्रीलिङ्ग और पुल्लिङ्ग होगा जैसे- 'द्विहीनं प्रसवे सर्वम्' और 'द्वयहीने कुकुन्दरे' इत्यादि स्थल में द्वि-शब्द से स्त्रीलिङ्ग और पुल्लिङ्ग ऐसा अर्थ करने से प्रसव-वाचक जितने शब्द हैं वे सभी स्त्रीलिङ्ग और पुल्लिङ्ग से रहित हैं अर्थात् नपुंसकलिङ्ग हैं और कुकुन्दर-शब्द द्वय-स्त्रीलिङ्ग और पुल्लिङ्ग से रहित हैं अतः नपुंसकलिङ्ग है। तथा जिस शब्द का जो लिङ्ग निषिद्ध किया हो उसके अतिरिक्त बाकी रहा लिङ्ग उस शब्द का होगा। जैसे 'वज्रमस्त्री' यहाँ पर 'वज्र' यह शब्द 'अस्त्री' से सूचित होने के कारण स्त्रीलिङ्ग नहीं है, इससे 'वज्र' शब्द के स्त्रीलिङ्गत्व का निषेध होने के कारण शिष्ट पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग 'वज्र' शब्द के हैं ऐसा जानना चाहिये।

---

1. M. बोद्धव्यं 2. M. शब्दः अन्ते 3. M. जवोथ

जिस शब्द के पीछे 'तु' यह शब्द हो वहां उस तु-शब्द के पहले जो शब्द हो उसका पर्यायवाचक शब्द उसके पीछे पढ़ा हुआ ही शब्द होता है, उससे पहला शब्द उस 'तु' के पहले पठित शब्द का पर्यायवाचक शब्द नहीं होता है, जैसे- 'नगरी' 'त्वमरावती' यहां पर 'तु' यह जो शब्द पठन किया है इसके पूर्व पठित जो 'नगरी' शब्द है उसका पर्याय अर्थबोधक शब्द 'अमरावती' यह है इस तु-शब्द के कथन से 'नगरी' का सम्बन्ध 'अमरावती' से होता है उस 'नगरी' शब्द के प्रथम पठित 'इन्द्राणी' शब्द में नहीं होता है यह 'तु' अन्त में जिसके है ऐसे नामपदकी व्यवस्था कही है। अब इसी प्रकार से 'तु' जिसके अन्त में है ऐसा लिङ्गवाचक पद सर्वनाम-संज्ञक पद और अव्ययसंज्ञक पद इन पदों का भी सम्बन्ध उस तु-शब्द के पीछे पढ़े हुए शब्द में ही होता है, जैसे-पुंसि त्वन्तर्धिः यहां 'पुंसि' इस लिङ्गवाचक पद का 'अन्तर्धिः' इस पद में सबन्ध हुआ और 'तस्य तु प्रिया' यहां 'तस्य' इस सर्वनामसंज्ञक पद का तु-शब्द के पीछे पठित प्रिया-शब्द में सम्बन्ध हुआ और 'वा तु पुंसि' यहां पर 'वा' इस अव्यय संज्ञक पद का तु-शब्द के पीछे पठित 'पुंसि' इसमें सम्बन्ध हुआ इस प्रकार से सर्वत्र तु-शब्द के विषय में जानना चाहिये। इस कोश में जहां पर जिन शब्दों के पहले 'अथ' यह शब्द हो वहां उस अथ शब्द के पीछे पठित नाम पद, लिङ्ग पद, सर्वनाम पद और अव्यय पद इनका सम्बन्ध उस अथ- शब्द के पीछे पठित शब्दों में ही होता है। जैसे- 'जवोऽथ शीघ्रं त्वरितम्' यहां पर अथ-शब्द के पीछे पठित 'शीघ्र' इस नाम पद का सम्बन्ध उस अथ- के प्रथम पठित जब-शब्द में नहीं होता है किंतु अथ- शब्द के पीछे पठित 'शीघ्र' इस नामपद का सम्बन्ध उस अथ— शब्द के पीछे पठित 'त्वरितम्' 'लघु' 'क्षिप्रम्' 'अरम्' 'द्रुतम्' इन शब्दों में होता है। ऐसे ही 'शस्तं चाथ त्रिषु द्रव्ये' यहां पर अथ- शब्द के पीछे पठित 'त्रिषु' इस लिङ्गवाचक पद का द्रव्यवाचक पाप, पुण्य, सुख आदि के पदों में सम्बन्ध होता है, उस अथ के पहले पठित 'शस्तं' इसमें सम्बन्ध नहीं होता है। अब जहां अथ-शब्द के बदले में अथो-शब्द कहा हो वहां भी इस प्रकार की व्यवस्था जाननी चाहिये। जैसे- 'अनुकोशोऽप्यथो हासः' यहां पर अथो इस शब्द के पीछे पठित 'हास' इस नाम पद का सम्बन्ध उनके पीछे पठित 'हास' 'हास्य' इन शब्दों में होता है, उस अथो- शब्द के प्रथम पठित अनुकोश- शब्द में नहीं होता है। इस प्रकार की व्यवस्था इस कोश में जिज्ञासु जनों को जाननी चाहिये ॥५॥

अथ स्वर्गवर्गः ॥१॥

स्वर्ग के ९ नाम

स्वरव्ययं- स्वर्ग-नाक-त्रिदिव-त्रिदशालयः।
सुरलोको द्यो दिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम् ॥१॥

कृष्णमित्रटीका - स्वरिति। यद्यपि भाष्यमते सञ्ज्ञाशब्दा अव्युत्पन्नास्तथापि स्वरवर्णादिशुद्ध्यर्थं **शाकटायन**मतेन व्युत्पत्तिः प्रदर्श्यते। स्वरति अप्राप्त्या[1] उपतापयति स्वः। 'स्वः शब्दोपतापयोः' (भ्वा. प. अ.) विच्। सुष्ठु अर्ज्यते स्वर्गः। न्यङ्क्वादित्वात्कुः, चजोरिति तु निष्ठायामनिट् (७. ३. ५९) इति निषिद्धम्।[2] नास्त्यकं दुःखमत्र 'नभ्राण्णपात्' (६. ३. ७५) इति[3] नञ् प्रकृत्या। तृतीया द्यौस्त्रिदिवः। दिवशब्दोऽदन्तोऽपि। 'द्यौः[4] स्त्री स्वर्गे च गगने दिवं क्लीबं तयोः स्मृतम्।' इति मेदिनी- (१५८. ११) वचनात् **स्वामी** तु दिवौकस इत्यादि वृत्तिविषये-दन्तमाह। त्रिभिर्ब्रह्मादिभिर्दीव्यति प्रकाशत इति वा 'इगुप-धत्वात्' - (३. १. १३५) कः। त्रिदशानां देवानामालयः स्थानम्। द्योतन्तेऽस्यां द्यौः। 'बाहुलकात्' (३. ३. १) द्युतेर्डोः। दीव्यन्त्यस्यां द्यौः दिवेर्दिविः क्विपि 'च्छ्वोः' (६. ४. ११) इत्यूट् स्यात्[5]। तृतीयं विष्टपं विशन्त्यत्र सुकृतिन इति विशेः क (प्रत्यय) स्तस्य तुट्। केचित्तु - उणादौ पिष्टपेति पठित्वा वस्य पकारादेशमाहुः। तथा **चारमाला** - 'विष्टपो विष्टपोऽप्यस्त्री' इति ॥१॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १ स्वः २ स्वर्ग ३ नाक ४ त्रिदिव ५ त्रिदशालय ६ सुरलोक ७ द्यौ ८ दिव ९ त्रिविष्टप ये नौ नाम स्वर्ग के हैं, जिसमें स्वर शब्द अव्यय है। दिवौ और द्यौ, शब्द (स्त्रीलिङ्ग) है। तथा त्रिविष्टप (नपुंसकलिङ्ग) है। शेष पाँच शब्द पुंल्लिङ्ग है।

देवताओं के २६ नाम

अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधाः सुराः।
सुपर्वाणः सुमनसस्त्रिदिवेशा दिवौकसः ॥२॥

1. M. अप्राप्सा 2. **The View criticised,** here, is of Raya Mukuta. See Bhanuji Diksita's Commentary Ramasrami, p. 4 **Chow.** Edn., 1970. 3. M. नभ्रास्मपादिति, 4. M. द्यौ 5. M. दिवेर्दिविः क्विपि तुच्छोरित्यूट् स्यात् 6. **Heaven.** (9)

आदितेया दिविषदो लेखा अदितिनन्दनाः।
आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना अमर्त्या अमृतान्धसः॥३॥
बहिर्मुखाः क्रतुभुजो गीर्वाणा दानवारयः।
वृन्दारका दैवतानि पुंसि वा देवताः[1] स्त्रियाम्॥४॥

कृष्णमित्रटीका :- न म्रियन्ते अमराः। 'पचाद्यच्' (३. १. १३४)। निष्क्रान्ता जराया निर्जराः। दीव्यन्तीति देवाः । 'पचाद्यच्' (३. १. १३४) । त्रिर्दश त्रिदशाः। 'सङ्ख्ययाऽव्यया-' (२. २. २५) इति बहुब्रीहिः। तिस्रो दशा अवस्था येषां ते त्रिदशा इति वा । विबुध्यन्ते विबुधाः 'इगुपध-' (३. १. १३५) इति कः। सुरन्ति सुराः। सुर ऐश्वर्ये (तु. प. से.) कः। सुरा इत्येषामिति वा। सुष्ठु पर्व चरितं येषां ते (सुपर्वाणः)। सुष्ठु मनो येषां ते सुमनसः। दिवि ओको निवासोऽस्य। दिवमोक इति वा, पृषोदरादित्वात् (६. ३. १०९) इत्यन्ते ॥२॥ आदित्या अपत्यान्यादितेयाः। 'कृदिकारात्' (ग. सू. ४. १. ४५) इति ङीषन्तात् 'स्त्रीभ्यो ढक्' (४. १. १२०)। दिवि सीदन्ति वर्तन्ते दिवि, षदः षड्लृ 'सत्सूद्विष[2] -' (३. २. ६१) इति क्विप्। 'हृद्द्युभ्यां च' (वा. ६. ३. १) इति ङेरलुक् । 'सुषामादिषु च' (८. ३. ९८) इति षः। पक्षे द्युसदः। लिख्यन्ते चित्रादौ लेखाः। 'अकर्तरि-' (३. ३. १९) इति कर्मणि घञ्। 'दित्यदित्या-' (४. १. ८५) इति ण्यः, आदित्याः। ऋशब्दोऽदितिवाची, ततो भवन्ति ऋभवः । 'मितद्रवादिभ्य उपसङ्ख्यानात्' (वा. ३. २. १८०) डुः। नास्ति स्वप्नमेषाम् (अस्वप्नाः)। म्रियन्तेऽत्रेति मर्तो[3] भूलोकः। 'हसिमृग्रिणवामिदमिलूपूधुर्विभ्यस्तन्' (उ. ३. ८६)। तत्र भवा अप्युपचारान्मर्ताः।[4] 'नखसूरमर्तय-विष्ठेभ्य-'(वा. ५. ४. ३६) इति स्वार्थे यत्। तद्भिन्ना अमर्त्याः अमृतमन्धोऽत्रमेषाममृतान्धसः ॥३॥ बहिर-ग्निर्मुखे येषां ते। ऋतून् ऋतुषु वा भुञ्जते। गीरेव निग्रहानुग्र-हसमर्था वाणोऽस्त्रं[5] येषां ते गीर्वाणाः। प्रशस्तं वृन्दं येषां वृन्दारकाः। 'शृङ्गवृन्दाभ्यामारकन्' (वा. ५. २. १२०)। देव एव देवता सैव दैवतं तलन्तात् स्वार्थे प्रज्ञाद्यण् (५. ४. ३८)। रूपभेदात् क्लीबता । पुंसीत्युक्तेः पुंस्त्वम्। देवपर्यायाणां पुंस्त्वात्तच्छङ्कानिवृत्तये स्त्रियामिति॥४॥[6]

1. M. देवता 2. M. सत्सुद्विष 3. M. मर्त्तो 4. M. -मर्त्याः 5. M. वाणोस्त्र 6. Gods [26]

हिन्दी अर्थ :- १अमर २ निर्जर ३ देव ४ त्रिदश ५ विबुध ६ सुर ७ सुपर्वा (नान्त) ८ सुमनस् ९त्रिदिवेश १० दिवौकस् ११(सान्त) ॥२॥ आदितेय १२ दिविषद् १३ लेख १४ अदितिनन्दन १५ आदित्य १६ ऋभु १७ अस्वप्न १८ अमर्त्य १९ अमृतान्धा २०(सान्त)॥३॥ बहिर्मुख २१ क्रतुभुक् (जान्त) २२ गीर्वाण २३ दानवारि २४ वृन्दारक २५ दैवतम् २६ देवता- ये **छब्बीस नाम** देवताओं के है ॥४॥ जिनमें दैवत शब्द विकल्प से पुल्लिङ्ग होता है। अभिप्राय यह है कि दैवत शब्द पुँ० नपुंसकलिङ्ग दोनों है। एवं देवता शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग है । **शेष २४** शब्द (पुल्लिङ्ग) है ।

गण देवताओं के ९ नाम

आदित्यविश्ववसवस्तुषिताभास्वरानिलाः।
महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः॥५॥

कृष्णमित्रटीका :-आदित्यादयो द्वादशत्वा-दिसङ्ख्युक्ताः सञ्चारिण्यो देवताः। एकत्वं तु समुदाये, वृत्ताः शब्द अवयवेष्वपि वर्तन्त इति[1] न्यायात्। विश्वेदेवास्त्रयोदश, श्राद्धाग्रे विशन्तीति। 'अशूप्रुषि'(उ. १. १५२) इति क्वन्। वसन्तीति वसवोऽष्टौ। 'शृस्वृस्निहि-' (उ. १. १०) इत्युः। तुष्यन्तीति तुषिताः षड्विंशत्। ('रुचिवचि-' (उ. ४. १८५)[2] इति) कितच्। आभासन्ते, इत्याभास्वराः चतुष्षष्टिः। 'स्थेशभास-' (३. २. १७५) इति वरच्। अनन्त्यनेनानिलाः, एकोनपञ्चाशत्। 'सलिकल्यनि-' (उ. १. ५४) इति इलच् । महाराजशब्दोऽस्त्येषां महाराजिकाः, षट्त्रिंशद्देशते । 'महाराजप्रोष्ठपदाट्ठञ्' (४. २. ३५)। साधन्ते, आराध्यन्ते साध्या द्वादश । एकादश रुद्राः॥५॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ -आदित्य (बारह) २ विश्व (तेरह) ३ वसु (आठ) ४ तुषित (छत्तीस) ५ आभास्वर (चौसठ) ६ अनिल (उनचास) ७ महाराजिक (दो सौ बीस) ८ साघ्य (बारह) ९ रुद्र (ग्यारह)-ये नौ पुल्लिङ्ग नाम गणदेवताओं के है ॥५॥

देव योनि के १० नाम

विद्याधरोऽप्सरो-यक्ष-रक्षो-गन्धर्व-किंनराः।
पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमी देवयोनयः॥६॥

1. M. वर्तन्ते इति. 2. M. अधिकशति 3. **Nine groups of deities** (Ganadevata) [1 each]

कृष्णमित्रटीका :-विद्याया धराः जीमूतवाहनादयः गुटिकाञ्जनादिधारिणश्च। अप्सु सरन्ति। 'सरतेरसुन्' (उ. ४. २३७)[1] । यक्ष्यन्ते पूज्यन्ते। 'यक्ष पूजायाम्' (चु. आ. से.) । 'अकर्तरि च कारके-' (३. ३. १९) इति घञ् । रक्षन्त्येभ्यो रक्षांसि। 'रक्ष पालने' (भ्वा. प. से.)। 'सर्वधातुभ्योऽसुन्' (उ. ४. १८९)। गन्धमर्वन्ति गन्धर्वाः तुम्बुरुप्रभृतयो गायनाः। 'अर्व गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'शकन्ध्वादिः' (वा. ६. १. ९४) । अश्वमुखात् कुत्सिता नराः किंनराः। पिशाचाः पिशिताशनाः। गूहन्तीति गुह्यकाः। ण्वुलि 'पृषोदरादित्वात्' (६. ३. १०९) यगागमः। निधिरक्षका ये यक्षास्ते गुह्यकाः। सिद्ध्यन्तीति सिद्धाः विश्वावसुप्रभृतयः। भूतिरस्यास्ति भूतः। 'अर्श आदि[2]' (५. २. १२७) देवा योनिरुत्पत्तिरेषां देवयोनयः, देवांशाः देववददृष्टसहितेभ्यः परमाणुभ्यो जायन्ते वा ॥६॥[3]

हिन्दी अर्थ:- - १ विद्याधर (पुल्लिङ्ग जीमूतवाहन आदि) २ अप्सरस् (सान्त देवताओं की स्त्रियां) ३ यक्ष (पुल्लिङ्ग कुबेर आदि) ४ रक्षस् (सान्त लंकादिके वासी), ५ गंधर्व (तुंबरू आदि) ६ किन्नर (अश्वादि मुखवाले मनुष्याकृति), ७ पिशाच (भूतविशेष), ८ गुह्यक (मणिभद्र आदि), ९ सिद्ध (विश्वावसु आदि), १० भूत (बालग्रह आदि)- ये दश देवयोनिविशेष के नाम है। इनमें अप्सरस् शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग, और रक्षस् शब्द नित्य (नपुंसकलिङ्ग) होते हैं। शेष आठ शब्द पुल्लिङ्ग हैं॥६॥

असुरों के १० नाम

असुरा दैत्य-दैतेय-दनुजेन्द्रारि-दानवाः।
शुक्रशिष्या दितिसुताः पूर्वदेवाः सुरद्विषः ॥७॥

कृष्णमित्रटीका:- अस्यन्ति देवानसुराः 'असेरुरन्' (उ. १. ४२)। सुरविरुद्धत्वाद्वा । दितिर्दनुश्चासुरमातरौ[4]। ङीषन्तात्। 'स्त्रीभ्यो ढक्' (४. १. १२०); दैतेयः। इन्द्रस्यारयः।[5] शुक्रस्य शिष्याः। अनीतिवशाद्देवत्वाद्भ्रष्टाः। सुरान् द्विषन्ति सुरद्विषः। 'सत्सूद्विष-' (३. २. ६१) इति क्विप्॥७॥

1. **According to the context**, the reference should have been made to the Unadi-sutra 'सर्त्तरप्पूर्वादसिः' (४. २३६) which means that the affix 'असि' comes after the root 'सृ' (to move) preceded by the word अप् 2. M. अर्श आदिः 3. **The kinds of** demi-gods (devayonis) 4. M. द्वितिदनश्चासुरमातरौ। 5. M. इन्द्रस्य अरयः

हिन्दी अर्थ :- १ असुर २ दैत्य ३ दैतेय ४ दनुज ५ इन्द्रारि ६ दानव ७ शुक्रशिष्य ८ दितिसुत ९ पूर्वदेव १० सुरद्विष (षान्त)- ये पुल्लिङ्ग नाम असुर (दैत्यों) के हैं॥७॥

बुद्ध के १८ नाम

सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्मराजस्तथागतः।
समन्तभद्रो भगवान्मारजिल्लोकजिज्जिनः॥८॥
षडभिज्ञो दशबलोऽद्वयवादी विनायकः।
मुनीन्द्रः श्रीघनः शास्ता मुनिः-

कृष्णमित्रटीका:- सर्वं जानाति सर्वज्ञः । सुष्ठु गतं ज्ञानं यस्य सः[1]। बुद्ध्यते बुद्धः। 'मतिबुद्धि-' (३. २. १८८) इति क्तः । धर्मेण राजते धर्मस्य राजेति वा। तथेति सत्यार्थे, तथा सत्यं गतं ज्ञानं यस्य। समन्तं पूर्णं भद्रमस्य। भगं माहात्म्यमस्यास्ति। मारं कामं जयति। क्विप्। जयति तपसा लोकं लोकजित्। जयति भवं जिनः। इणषिञ्- (उ. ३. २) इति नः॥८॥ दिव्यचक्षुर्दिव्यश्रोत्रं पूर्वनिवासानुस्मृतिरात्मज्ञानं वियद्गमनं कायव्यूहादिसिद्धिश्चेति षडभिज्ञा[2] ज्ञायमानानि यस्य। दशबलानि यस्य सः। 'दानं शीलं क्षमा वीर्यं ध्यानप्रज्ञाबलानि च[3] । उपायः प्रणिधिर्ज्ञानं दशबुद्धबलानि वै॥' अद्वयं विज्ञानातिरिक्तवस्तुनिषेधात्। अद्वैतं वदति। 'आवश्यक-' (३. ३. १७०) णिनिः। विनयत्यनुशास्ति[4]। 'ण्वुल्' (३. १. १३३) । मुनिषु इन्द्रः। श्रिया योगभूत्या घनो निविडः। शास्तीति शास्ता। औणादिकस्तृच्, तेन इट् न।[5]

हिन्दी अर्थ :-१ सर्वज्ञ, २ सुगत, ३ बुद्ध, ४ धर्मराज, ५ तथागत, ६ समन्तभद्र, ७ भगवत् (मत्वन्त), ८ मारजित्, ९ लोकजित्,१० जिन ॥८॥ ११ षडभिज्ञ, १२ दशबल, १३ अद्वयवादिन् (इन्नन्त), १४ विनायक, १५ मुनीन्द्र, १६ श्रीघन, १७ शास्ता (ऋकारान्त), १८ मुनि, ये अठारह पुल्लिङ्ग नाम भगवान् बुद्ध के हैं। जो शाक्यमुनि ॥-

शाक्यमुनिस्तु यः ॥९॥
स शाक्यसिंहः सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिश्च सः।
गौतमश्चार्कबन्धुश्च मायादेवोसुतश्च सः ॥१०॥

1. M. स 2. M. षट् अभिज्ञा। 3. M. वः 4. M. विनयति अनुशास्ति 5. **Baddha** [18].

कृष्णमित्रटीका:-यस्तु शकेषु जातः शाक्यमुनिर्बुद्धावतारः[1]॥९॥ शकोऽभिजनोऽस्य[2] शाक्यः। 'शण्डिकादिभ्योञ्यः' (४. ३. ९२) शाक्यसिंह इवेत्युपमितसमासः, भीमो भीमसेन इति वत्। शाक्योऽपि[3] सर्वार्थेषु सिद्धो निष्पन्नः। शुद्ध ओदनो यस्य स शुद्धोदनो राजा। 'शकन्ध्वादिः' (वा. ६. १. ९४)। तदपत्यं शोद्धोदनिः। गौतमस्तद्गोत्रावतारात् तच्छिष्यत्वाद्वा। 'तस्येदम्' (४. ३. १२०) इत्यण् । अर्कस्य बन्धुः, सूर्यवंश्यत्वात्॥१०॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ शाक्यमुनि ॥९॥ २ शाक्यसिंह, ३ सर्वार्थसिद्ध, ४ शौद्धोदनि, ५ गौतम, ६ अर्कबन्धु, ७ मायादेवी सुत, ये सात पुल्लिङ्ग नाम शाक्यमुनि के हैं॥१०॥

ब्रह्मा के २० नाम

ब्रह्मात्मभूः सुरज्येष्ठः परमेष्ठी पितामहः।
हिरण्यगर्भो लोकेशः स्वयम्भूश्चतुराननः॥११॥
धाताब्जयोनिर्द्रुहिणो विरिञ्चिः कमलासनः।
स्रष्टा प्रजापतिर्वेधा विधाता विश्वसृड् विधिः॥१२॥
''नाभिजन्माण्डजः पूर्वो निधनः कमलोद्भवः (१)
सदानन्दो रजोमूर्तिः सत्यको हंसवाहनः'' (२)

कृष्णमित्रटीका:- बृंहति वर्धते ब्रह्मा। 'बृंहेर्नोऽच्च'[5] (उ. ४. १४५) इति मनिन् । धातोर्नस्यादादेशः। आत्मना भवति। 'भुवः सञ्ज्ञान्तरयोः' (३. २. १७९) इति क्विप्। अनेनैव स्वयम्भूशब्देऽपि[6] सिद्धे पुनर्वचनं स्वभूनिवृत्त्यर्थम्। सुरेषु ज्येष्ठः। परमे व्योमनि चिदाकाशे तिष्ठति। 'परमे स्थः कित्' (उ. ४. १०) इतीनिः[7]। 'तत्पुरुषे कृति-' (६. ३. १४) इति सप्तम्यलुक्। पितृणां मरीच्यादीनां पिता। हिरण्यं हिरण्यमयण्डं, तस्य गर्भ इव। हिरण्यस्य गर्भो वा, ब्रह्माण्डप्रभवत्वात्। लोकानामीशः। चत्वार्याननान्यस्य[8] ॥११॥ दधातीति धाता। धातोः 'तृच्' (३. १. १३३)। अब्जं योनिरस्य। द्रुह्यत्यसुरेभ्यो द्रुहिणः। 'बहुलमन्यत्रापि' (उ. २. ४९) इतीनच्। गुणाभावश्च। विरिङ्क्ते सूते विरिञ्चिः। 'अच इः' (उ. ४. १३९) । पृषोदरादित्वात् (६. ३. १०९) नुम्। कमलमासनमस्य। सृजति स्रष्टा। प्रजानां पतिः। विदधाति, विसृजति। 'विधाञो वेध च[1]' (उ. ४. २२४) इत्यसुन् । वेधादेशः । विशेषण दधाति । विश्वं सृजति। विधत्ते विधिः। 'उपसर्गे घोः किः[2]' (३. ३. ९२)। बाहुलकात् (३. १. ११३) कर्तरि ॥ १२॥[3]

हिन्दी अर्थ :-- १ ब्रह्मन् (नान्त), २ आत्मभू, ३ सुरज्येष्ठ, ४ परमेष्ठी (इन्नन्त), ५ पितामह, ६ हिरण्यगर्भ, ७ लोकेश, ८ स्वयम्भू, ९ चतुरानन ॥११॥ १० धातृ (ऋकारान्त), ११ अब्जयोनि, १२ द्रुहिण. विरिञ्चि, १४ कमलासन, १५ स्रष्टा(ऋकारान्त), १६ प्रजापति, १७ वेधा, (सान्त) १८ विधाता (ऋकारान्त), १९ विश्वसृट् (जान्त), २० विधि- ये बीस पुल्लिङ्ग नाम ब्रह्मा के हैं॥१२॥

१ नाभिजन्मन् (नान्त), २ अण्डज, ३ पूर्व, ४ निधन, ५ कमलोद्भव, ६ सदानन्द, ७ रजोमूर्ति, ८ सत्यक, ९ हंसवाहन''- ये नौ (पुल्लिङ्ग) ब्रह्मा के प्रक्षिप्त नाम हैं (१-२)

विष्णु के ३९ नाम

विष्णुर्नारायणः कृष्णो वैकुण्ठो विष्टरश्रवाः।
दामोदरो हृषीकेशः केशवो माधवः स्वभूः॥१३॥
दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो गोविन्दो गरुडध्वजः।
पीताम्बरोऽच्युतः शार्ङ्गी विष्वक्सेनो जनार्दनः॥१४॥
उपेन्द्र इन्द्रावरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुजः।
पद्मनाभो मधुरिपुर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः॥१५॥
देवकीनन्दनः शौरिः श्रीपतिः पुरुषोत्तमः।
वनमाली बलिध्वंसी कंसारातिरधोक्षजः॥१६॥
विश्वंभरः कैटभजिद्विधुः श्रीवत्सलाञ्छनः।
पुराणपुरुषो यज्ञपुरुषो नरकान्तकः (३)
जलशायी विश्वरूपो मुकुन्दो मुरमर्दनः(४)

कृष्णमित्रटीका:-वेवेष्टि व्याप्नोति विश्वं विष्णुः। 'विषेः किच्च' (३. ३९) इति नुः। नराणां समूहो नारं तदयनमस्य।[4] 'पूर्वपदात्'- (८. ४. ३) इति णः। कृष्णो वर्णेन । 'कृषेर्वर्णे' (उ. ३. ४) इति नक् ।

1.M. शाक्यमुनि बुद्धावतारः 2. M. शका अभिजनो स्य 3. M. शाक्योपि 4. **Gautama Buddha** [7] 5. M. बृंहेनोच्च 6. M. स्वयंभूशब्देपि 7. M. इति इनि ८. M. चत्वारि आननान्यस्य

1. M. विधाञोर्वेध च 2. M. उपसर्गे धो किः 3. **M. Braha** [20] 4. M. तदयनमस्यः।

विकुण्ठानां जीवानामयं नियन्ता । 'तस्येदम्' (४. ३. १२०) इत्यण्। विष्टरो दर्भमुष्टिरिव श्रवसी कर्णावस्य । दाम-उदरे यस्य, बाल्ये चापल्येन मात्रा बद्धत्वात् । हृषीकाणामिन्द्रियाणामीशः। प्रशस्ताः केशाः सन्त्यस्य।[1] 'केशाद्वोऽन्यतरस्याम्' (५. २. १०९) माया लक्ष्म्या धवः, मधोरपत्यमिति वा, तद्वंश्यत्वात् ॥१३॥ इति षच् । गां भुवं विन्दति गोविन्दः। वाराहरूपेणोद्धारात्। 'अनुपसर्गाल्लिम्पविन्द-'(३. १. १३८) इति शः। गरुडो ध्वजं चिह्नमस्य।[2] नास्ति च्युतं स्खलनं स्वस्थानाद्यस्य। 'गत्यर्थां-' (३. ४. ७२) इति क्तः। शृङ्गस्य विकारः शार्ङ्गधनुः। तदस्यास्ति शार्ङ्गी[3] । विषु नानास्थानेष्वञ्चति[4] विष्वक्। सर्वतो व्यापिनी सेनास्य। जननः जनः, तमर्दयति हन्ति जनान्समुद्रस्य दैत्यभेदानिति वा ॥ १४॥ इन्द्रमुपगतोऽनुजत्वात्।[5] उपेन्द्रः। इन्द्रस्यावरं जातः । चक्रं पाणौ यस्य। चत्वारो भुजा अस्य । पद्मं नाभौ यस्य। 'अच् प्रतयन्वव-' (५. ४. ७५) इति योगविभागादच् । मधो दैत्यविशेषस्य रिपुः। वसुदेवस्यापत्यम् । 'ऋष्यन्धक-' (४. १. ११४) इत्यण्। सर्वत्र वसतीति वासुः, वासुश्चासौ[6] देवश्चेति वा। त्रिषु लोकेषु विक्रमः पादन्यासोऽस्य[7]॥१५॥ देवक्या नन्दनः। देवकी गौरवादित्वात् देवकानाचष्टे, इति वा णिजन्तात् 'अच् इः' (उ. ४. १३८) । 'ततो ङीष्' (वा. ४. ४५)। शूरस्यापत्यम्, तद्वंशजत्वात्। बाह्वादित्वात् (४. १. ९६) इञ्। श्रियः पतिः । पुरुषेषु पुरुषाणां वोत्तमः।[8] निर्धारणाभावान्न निषेधः। आपादलम्बिनी माला वनमाला साऽस्यास्ति। व्रीह्यादित्वात् (५. २. ११६) इनिः। बलिं ध्वंसते। कंसस्याराति।[9] अधः कृतमक्षजमिन्द्रियजन्यं ज्ञानं येन ॥१६॥

विश्वं विभर्ति । 'सञ्ज्ञायां भृतॄवृजि[10]-'(३. २. ४६) इति खच् । कैटभं जितवान्। विधत्यसुरान् विधुः। 'पृभिदिव्यधि-' (उ. १. २३) इति कुः। श्रीवत्सो नाम श्वेतरोमावर्तविशेषो वक्षसि लाञ्छनमस्य॥[11]

हिन्दी अर्थः- १ विष्णु, २ नारायण, ३ कृष्ण, ४ वैकुण्ठ, ५ विष्टरश्रवस् (सान्त), ६ दामोदर, ७ हृषीकेश, ८ केशव, ९ माधव, १० स्वभू ,॥१३॥ ११ दैत्यारि, १२ पुण्डरीकाक्ष, १३ गोविन्द, १४ गरुडध्वज, १५ पीताम्बर, १६ अच्युत, १७ शार्ङ्गिन् (इन्नन्त),१८ विष्वक्सेन, १९ जनार्दन,॥१४॥ २० उपेन्द्र, २१ इन्द्रावरज, २२ चक्रपाणि, २३ चतुर्भुज, २४ पद्मनाभ, २५ मधुरिपु, २६ वासुदेव, २७ त्रिविक्रम, ॥१५॥ २८ देवकीनन्दन, २९ शौरिन्, ३० श्रीपति, ३१ पुरुषोत्तम, ३२ वनमालिन् (इन्नन्त), ३३ वलिध्वंसिन् (इन्नन्त), ३४ कंसाराति, ३५ अधोक्षज, ३६ विश्वम्भर, ३७ कैटभजित् (तान्त), ३८ विधु, ३९ श्रीवत्सलाञ्छन- ये उनतालीस पुल्लिङ्ग नाम भगवान् विष्णु के हैं॥१६॥

भगवान् विष्णु के ये सात नाम प्रक्षिप्त भी हैं- १ पुराणपुरुष, २ यज्ञपुरुष, ३ नरकान्तक, ४ जलशायिन् (इन्नन्त), ५ विश्वरूप, ६ मुकुन्द, ७ मुरमर्दन ।

1. M. सन्त्यस्यः 2. M. चिह्नमस्य 3. M. शार्ङ्गी 4. M. नानास्थानेषु अञ्चति 5. M. इन्द्रमुपगतोनुजत्वात् 6. M. वसुश्च सौ 7. M. पादन्यासोस्य 8. M. वा उत्तमः 9. M. कंसस्य अरातिः 10. M. भृवृजि 11. Visnu [39]

वसुदेव के २ नाम

वसुदेवोऽस्य जनकः स एवानकदुन्दुभिः ॥१७॥

कृष्णमित्रटीका:- अस्य श्रीकृष्णस्य जनकः, वसुषु दीव्यति वसुदेवः। पचाद्यच् (३. १. १३४)। आनकैर्दुन्दुभिश्चोपलक्षितः। वसुदेवजन्मनि देवैरानक-दुन्दुभिवादनात्[1] ॥१७॥

हिन्दी अर्थः- वसुदेव कृष्ण के पिता हैं और वही आनकदुन्दुभिः हैं। अर्थात् वसुदेव और आनकदुन्दुभि ये दोनों नाम कृष्ण के पिता के हैं॥१७॥

बलभद्र के १७ नाम

बलभद्रः प्रलम्बघ्नो बलदेवोऽच्युताग्रजः।
रेवतीरमणो रामः कामपालो हलायुधः॥१८॥
नीलाम्बरो रौहिणेयस्तालाङ्को मुसली हली।
सङ्कर्षणः सीरपाणिः कालिन्दीभेदनो बलः॥१९॥

कृष्णमित्रटीका:- बलेन भद्रः श्रेष्ठः । बलस्तु भीमवत्। प्रलम्बं नामासुरं हतवान् । मूलविभुजादिः (वा. ३. २. ५)। बलेन दीव्यति। अच्युतस्याग्रजः। रेवत्या रमणः। नन्द्यादिः (३. १. १३४) । रमन्तेऽस्मिन् योगिनो रामः[2]। 'हलश्च'(३.३. १२१) इति घञ्। कामं पालयति। हलमायुधमस्य॥१८॥ नीलमम्बरं यस्य। रोहिण्या अपत्यम्।

1. **Vasudeva,** the father of Sri Krsna [2] 2. M. रमन्तेस्मिन्योगिनो

शुभ्रादित्वात् (४. १. १२३) ढक् । तालवृक्षोऽङ्को ध्वजोऽस्य[1]। मुसलमस्त्यस्य। सङ्कर्षति संहारमूर्तित्वात्सङ्कर्षणः। नन्द्यादित्वात् (३. १. १३४) ल्युः। सीरो हलं पाणावस्य। कालिन्द्या यमुनाया भेदनः। हलेनाकर्षणात्॥१९॥[2]

हिन्दी अर्थः- १ बलभद्र, २ प्रलम्बघ्न, ३ बलदेव, ४ अच्युताग्रज, ५ रेवतीरमण, ६ राम, ७ कामपाल, ८ हलायुध॥१८॥ ९ नीलांबर, १० रौहिणेय, ११ तालाङ्क, १२ मुसलिन्(अन्नन्त), १३ हलिन् (इन्नन्त), १४ संकर्षण, १५ सीरपाणि, १६ कालिन्दीभेदन, १७ बल- ये सत्रह (पुल्लिङ्ग) नाम बलदेवजी के हैं ॥ १९॥

कामदेव के २१ नाम

मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः।
कंदर्पो दर्पकोऽनङ्गः कामः पञ्चशरः स्मरः॥२०॥
संबरारिर्मनसिजः कुसुमेषुरनन्यजः।
पुष्पधन्वा रतिपतिर्मकरध्वज आत्मभूः॥२१॥
अरविन्दमशोकं च चूतं च नवमल्लिका।(५)
नीलोत्पलं च पञ्चैते पञ्चबाणस्य सायकाः (६)
उन्मादनं तापनश्च, शोषणं स्तम्भनं तथा। (७)
सम्मोहनश्च कामस्य, पञ्च बाणाः प्रकीर्तिताः (८)

कृष्णमित्रटीकाः- मदयति मदनः । मदी हर्षे (भ्वा. प. से.) । ल्युः (३. १. १३४)। मननं मत्=चेतना। सम्पदादि क्विप् (वा. ३. ३. १०८) 'गमादीनां क्वौ' (वा. ६. ४. ४०) इति नलोपः। यत्तु[3]- 'अनुदात्तोपदेश-' (६.४.३७) इति नलोपः इति । तत्र। क्विपो झलादित्वाभावात्। 'ह्रस्वस्य—'(६. १. ७१) इति तुक्। मतो मथः= मन्मथः। भ्रियन्तेऽनेन[4] मारः। करणे घञ् (३. ३. १९)। प्रकृष्टं द्युम्नं बलमस्य । मीनो मकरः केतनं ध्वजोऽस्य[5]। कुत्सितः दर्पोऽस्य[6] कंदर्पः। 'कम्' इत्यव्ययं कुत्सायाम्। दर्पयति दर्पकः। 'ण्वुल-' (३. १. १३३)। नास्त्यङ्गमस्य[7]। काम्यतेऽनेन[8] कामः। 'पुंसि सञ्ज्ञायाम्-' (३. ३. ११८) घः। पञ्च शरा अस्य। उन्मादनतापनशोषणस्तम्भनसंमोहनाः शराः। स्मर्यतेऽनेन[9] स्मरः।

1. M. तालवृक्षोङ्के ध्वजोस्य 2. **Balabhadra** [17] 3. **The commentators,** like Krisnaswamin and Rayamuput'a, P. 14, Chowkhamba. 1970. 4. M. भ्रियन्तेनेन 5. M. ध्वजोस्य 6. M. दर्पोस्य। 7. M. नास्ति अङ्गमस्य 8. M. काम्यतेनेन 9. M. स्मर्यतेनेन

'पुंसि संज्ञायाम्-' (३. ३. ११८) घः॥२०॥ संबरस्य दैत्यस्यारिः। शबरस्तालव्यादिरपि । शृङ्गाररूपेण मनसि जायते '-जनेर्डः' (३. २. ९७)। 'तत्पुरुषे कृति-' (६. ३. १४) इत्यलुक् । कुसुमानीषवो यस्य । न मनसोऽन्यस्माज्जायते[1]। पुष्पं धनुरस्य। 'वा सञ्ज्ञायाम्' (५. ४. १३३) इत्यनङ् ॥२१॥

हिन्दी अर्थ :- १ मदन, २ मन्मथ, ३ मार, ४ प्रद्युम्न, ५ मीनकेतन, ६ कन्दर्प, ७ दर्पक, ८ अनङ्ग, ९ काम, १० पञ्चशर, ११ स्मर ॥२०॥ १२ शम्बरारि, १३ मनसिज, १४ कुसुमेषु, १५ अनन्यज, १६ पुष्पधन्वन् (नान्त), १७ रतिपति, १८ मकरध्वज, १९ आत्मभू, २० ब्रह्मसू, २१ विश्वकेतु- ये २१ (पुल्लिङ्ग) नाम कामदेव के हैं॥ २१॥

१. अनिरुद्ध और २. उमापति ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम अनिरुद्ध (कामपुत्र) के हैं। कुछ लोग ब्रह्मसू और विश्वकेतु ये दो नाम भी अनिरुद्ध का मानते हैं।

१ अरविन्दम्, २ अशोकम्, ३ चूतम् (नपुंसकलिङ्ग), ४ नवमल्लिका (स्त्रीलिङ्ग), ५ नीलोत्पलम् (नपुंसकलिङ्ग)- ये पाँच कामदेव के बाण हैं। १ उन्मादन, २ तापन, ३ शोषण, ४ स्तम्भन, ५ सन्मोहन- ये पाँच क्रमशः उन बाणों के धर्म हैं।(४-७)

ब्रह्मसूर्ऋष्यकेतुः स्यादनिरुद्ध उषापतिः।

कृष्णमित्रटीकाः- ब्रह्मज्ञानं सूते ब्रह्मसूः। ऋष्यनामा मृगः केतुरस्य। उषा बाणस्य पुत्री, तस्याः पतिः। ब्रह्मसूर्ऋष्यकेतुः कामस्यैव नामनी इत्यन्ये॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ ब्रह्मसू, २ ऋष्यकेतु, ३ अनिरुद्ध, ४ उषापति- ये चार नाम (पुल्लिङ्ग) नाम अनिरूद्ध के हैं।।।-

लक्ष्मी के ६ नाम

लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा कमला श्रीर्हरिप्रिया॥२२॥
इंदिरा लोकमाता मा क्षीरोदतनया रमा (९)
"भार्गवी लोकजननी क्षीरसागरकन्यका (१०)"

कृष्णमित्रटीका :- लक्ष्यते लक्ष्मीः। 'लक्षेर्मुट् च' (उ. ३. १६०) इतीप्रत्ययः। पद्ममालयो यस्याः। पद्ममस्त्यस्याः। 'अर्श आद्यच्' (५. २. १२७)। एवं

1. M. मनसोन्यस्माज्जायन्ते 2. **M. Kama** (cupid) [19]

कमला। श्रयति हरिं श्रीः। 'क्विब्वचि-' (वा. ३. २. १७८) इति क्विब्दीर्घौ ॥२२॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ लक्ष्मी, २ पद्मालया, ३ पद्मा, ४ कमला, ५ श्री, ६ हरिप्रिया- ये ६ स्त्रीलिङ्ग नाम लक्ष्मी के है॥२२॥

ये आठ अन्य प्रक्षिप्त नाम लक्ष्मी के हैं। १ इन्दिरा, २ लोकमाता (ऋकारान्त), ३ मा,४ क्षीरोदतनया, ५ रमा, ६ भार्गवी, ७ लोकजननी, ८ क्षीरसागरकन्यका- ये आठ स्त्रीलिङ्ग प्रक्षिप्त नाम लक्ष्मी के हैं।(८-९)

शङ्खो लक्ष्मीपतेः पाञ्चजन्यः चक्रं सुदर्शनः।

कृष्णमित्रटीका:- लक्ष्मीपतेः शङ्खः पाञ्चजन्यः। पञ्चजने पाताले भवः । 'पञ्चजनात्' (वा. ४. ३. ५८) इति यञ्। 'बहिर्देवपञ्चजनेभ्यः ञ्य इत्युपसङ्ख्यानं नास्ति' इत्याहु॥[2] हरेश्चक्रं सुदर्शनः। शोभनं दर्शनमस्य। 'भाषायां शाशियुधि-' (वा. ३. ३. १३०) इति युच् ॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ पाञ्चजन्य- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम विष्णु भगवान् के शंख का है। १ सुदर्शन, यह एक पुल्लिङ्ग नाम विष्णु के चक्र का है।

कौमोदकी गदा खड्गो नन्दकः कौस्तुभो मणिः ॥२३॥

कृष्णमित्रटीका:- कोः पृथिव्या मोदकः कुमोदको विष्णुः[4]। तस्येयं कौमोदकी । गदति गदा॥[5] नन्दयति देवान् । 'ण्वुल्' (३. ३. १३३)॥[6] कुं भुवं स्तुभ्नाति व्याप्नोति कुस्तुभोऽब्धिः[7], तत्र भवः ॥२३॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १ कौमोदकी- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम विष्णु की गदा का है। १ नन्दक- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम विष्णु के खड्ग (तलवार) का है। १ कौस्तुभ- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम विष्णु की मणि का है॥२३॥

चापः शार्ङ्गं मुरारेस्तु श्रीवत्सो लाञ्छनं स्मृतम् (११)
अश्वाश्च शैब्यसुग्रीवमेघपुष्पबलाहकाः (१२)
सारथिर्दारुको मन्त्री ह्युद्धवो वनजो गदः (१३)

1. **Brahmasu,** Rsyaketu. Aniruddha and Usapati, all the four, according to Krsnamitra, are the names of Aniruddha. But Bhanuji Diksita and some other commentators include the first two among the names of Kamadeva. 2. **Laksmi** (the goddess of property) [6] 3. **Visnu's conch** [1]. 4. **Visnu's discus** [1]. 5. **Visnu's mace** [1] 6. **Visnu's sword** [1]. 7. M. कुस्तुभोब्धिः। 8. **Visnu's** gem (said to be obtained with) 13 other jewels at the churning of the ocean.[1].

हिन्दी अर्थ :- १ शार्ङ्गम्- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम विष्णु के धनुष का है १ श्रीवत्स- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम विष्णु के वक्षः स्थल के चिह्न का है। १ शैब्य, २ सुग्रीव, ३ मेघपुष्प, ४ बलाहक- ये चार प्रक्षिप्त- (पुल्लिङ्ग) नाम विष्णु के घोड़ों के हैं। १ दारुक- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम विष्णु के सारथि का हैं। १ उद्धव- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम विष्णु के मन्त्री का है। १ गद- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम विष्णु के अनुज का है।(१०-१२)

गरुड के ९ नाम

गरुत्मान् गरुडस्तार्क्ष्यो वैनतेयः खगेश्वरः।
नागान्तको विष्णुरथः सुपर्णः पन्नगाशनः॥२४॥

कृष्णमित्रटीका:- गरुतः पक्षाः सन्त्यस्य, गरुत्मान् । यवादित्वात् (८. २. ९) झयः (८.२. १०) इति वत्वं न। गरुद्भिर्डयते गरुडः। 'डीङ्' (भ्वा. आ. से.) 'अन्येभ्योऽपि-'[1] (वा. ३. २. १०१) इति डः। पृषोदरादित्वात् (५. ३. १०९) इति तलोपः। तृक्षस्यापत्यं तार्क्ष्यः, गर्गादित्वात् (४. १. १०५) यञ्। विनताया अपत्यम्। खगानामीश्वरः। नागानामन्तकः। विष्णो रथ इव। शोभने पर्णे पक्षावस्य, हेमपक्षत्वात्। पन्नगानश्नाति। ल्युः (३. १. १३४) ॥२४॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ गरुत्मत् (मत्वन्त), २ गरुड, ३ तार्क्ष्य, ४ वैनतेय, ५ खगेश्वर, ६ नागान्तक, ७ विष्णुरथ, ८ सुपर्ण, ८ पन्नगाशन- ये नौ (पुल्लिङ्ग) नाम गरुड़ के हैं॥२४॥

शिव के ४८ नाम

शंभुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महेश्वरः।
ईश्वरः शर्व ईशानः शङ्करश्चन्द्रशेखरः॥२५॥
भूतेशः खण्डपरशुर्गिरीशो गिरिशो मृडः।
मृत्युञ्जयः कृत्तिवासाः पिनाकी प्रमथाधिपः॥२६॥
उग्रः कपर्दी श्रीकण्ठः शितिकण्ठः कपालभृत्।
वामदेवो महादेवो विरूपाक्षस्त्रिलोचनः॥२७॥
कृशानुरेताः सर्वज्ञो धूर्जटिर्नीललोहितः।
हरः स्मरहरो भर्गस्त्र्यम्बकस्त्रिपुरान्तकः॥२८॥
गङ्गाधरोऽन्धकरिपुः क्रतुध्वंसी वृषध्वजः।
व्योमकेशो भवो भीमः स्थाणू रुद्र उमापतिः॥२९॥
अहिर्बुध्न्योऽष्टमूर्तिश्च गजारिश्च महानटः (१४)

1. M. अन्येभ्योपि 2. **Garuda** [9].

कृष्णमित्रटीका:- शंभवत्यस्मात् शम्भुः। बाहुलकात् कर्तरि मितद्रवादि (वा. ३. २. १८) डुः। ईष्टे ईशः। 'इगुपध-' (३. १. १३५) इति कः। पशूनां जीवानां पतिः। शिवमस्यास्ति शिवः। 'अर्श आदिः' (५. २. १२७)। शूलमस्यास्ति। ईष्टे ईश्वरः। 'स्थेशभास-' (३. २. १७५) इति वरच्। शृणाति शर्वः। 'शृ हिंसायाम्' (क्र्या. प. से.)। 'कृगृशृ-' (उ. १. १५६)। ईष्टे ईशानः। 'ताच्छील्य-' (३. २. १२९) इति चानश्। शं करोति। 'शमि धातोः सञ्ज्ञायाम्' (३. २. १४) इत्यच् 'कृञो हेतु-' (३. २. २०) इति टः,[1] तु अनेनैव बाध्यते। चन्द्रः शेखरोऽस्य[2]॥२५॥ भूतानामीशः। खण्डयतीति खण्डः परशुरस्य। गिरेरीशः। गिरिस्याश्रयत्वेनेति गिरिशः। लोमादित्वात् (५. २. १००) शः। मृडयति सुखयति। मृत्युं जयति। 'सञ्ज्ञायां भृतृवृजि-' (३ २. ४६) इति खच्। कृत्तिश्चर्मवासोऽस्य[3]। पिनाकोऽस्यास्ति[4]। प्रमथानामधिपः॥२६॥ उच्यति क्रुधा समवैति उग्रो रौद्रत्वात्। 'उच समवाये' (दि. प. से)। 'ऋज्र-' (उ. २. २८) इत्यादिना रन्, गश्चान्तादेशः। कपर्दोऽस्यास्ति[5]। श्रीः शोभा कण्ठेऽस्य[6]। शितिः कालः कण्ठोऽस्य[7]। कपालं बिभर्ति। वामः श्रेष्ठो लोकविपरीतो वामदेवः। विरूपाण्यक्षीण्यस्य, त्रिनेत्रत्वात्। त्रीणि लोचनान्यस्य॥२७॥ कृशानौ रेतोऽस्य[8]। देव्या सोढुमशक्यं रेतो बह्नौ क्षिप्तम्। सर्वं जानाति। धूर्गङ्गा जटास्त्यस्य 'जटिर्जटा' (इति द्विरूप कोशः)। 'जट संघाते' (भ्वा. प. से.)। 'सर्वधातुभ्यः-' (उ. ४. ११७) इतीन्। नीलः कण्ठो लोहितश्च केशेऽतो नीललोहितः। हरत्ययं हरः। 'हरतेरनुद्यमनेऽच्'[9] (३. २. ९)। स्मरं हरति। भृज्यन्ते कामादयोऽनेन[10] भर्गः। 'हलश्च' (३. ३. १२१) इति घञ्। त्रीण्यम्बकानि[11] नेत्राण्यस्य। त्रिपुरस्यान्तकः। 'त्रिपुरी' इति भाष्यदर्शनेऽपि[12] लोकाश्रयत्वाल्लिङ्गस्य त्रिपुरमपि॥२८॥ गङ्गाया घरः। अन्धकनाम्नोऽसुरस्य[13] रिपुः। क्रतुं दक्षयज्ञं ध्वंसते। 'सुपि-' (३. २. ७८)। अप्। बिभेत्यस्मात्। भीमः। 'भियः षुग्वा' (उ. १. १४८) इति मक्। तिष्ठति। स्थाणु। रोदयतीति रुद्रः। 'रोदेर्णिलुक् च' (उ. २. २२) इति रक्। उमायाः पतिः॥२९॥[14]

1. **Cf. Amarakos'odghatana.** 2. M. शेखरोस्य 3. M.चर्मवासोस्य 4. M. पिनाकोस्यास्ति 5. M. कपदोस्यास्ति 6. M. कणठेस्य 7. M. कण्ठोऽस्य 8. M. रेतोस्य 9. M. हरतेनुद्यमने च 10. M. कामादयोनेन 11. M. त्रीणि अम्बकानि 12. M. दर्शनेपि 13. M. अन्धकनाम्नो सुरस्य 14. **Siva** [48].

हिन्दी अर्थ :-१ शम्भु, २ ईश, ३ पशुपति, ४ शिव, ५ शूलिन् (इन्नन्त), ६ महेश्वर, ७ ईश्वर, ८ शर्व, ९ ईशान, १० शङ्कर, ११ चन्द्रशेखर ॥२५॥ १२ भूतेश, १३ खण्डपरशु, १४ गिरीश, १५ गिरिश, १६ मृड, १७ मृत्युञ्जय, १८ कृत्तिवासस् (सान्त), १९ पिनाकिन् (इन्नन्त), २० प्रमथाधिप ॥२६॥ २१ उग्र, २२ कपर्दिन् (इन्नन्त), २३ श्रीकण्ठ, २४ शितिकण्ठ, २५ कपालभृत् (तान्त), २६ वामदेव, २७ महादेव, २८ विरूपाक्ष, २९ त्रिलोचन ॥२७॥ ३० कृशानुरेतस् (सान्त), ३१ सर्वज्ञ, ३२ धूर्जटि, ३३ नीललोहित, ३४ हर, ३५ स्मरहर, ३६ भर्ग, ३७ त्र्यम्बक, ३८ त्रिपुरान्तक॥२८॥ ३९ गङ्गाधर, ४० अन्धकरिपु, ४१ क्रतुध्वंसिन् (इन्नन्त), ४२ वृषभध्वज, ४३ व्योमकेश, ४४ भव, ४५ भीम, ४६ स्थाणु, ४७ रुद्र, ४८ उमापति- ये अढ़तालीस पुल्लिङ्ग नाम भगवान् शङ्कर के हैं ॥२९॥

१ अहिर्बुध्न्य, २ अष्टमूर्ति, ३ गजारि, ४ महानट - ये चार (पुल्लिङ्ग) प्रक्षिप्त नाम भी भगवान् शङ्कर के हैं।

कपर्दोऽस्य जटाजूटःपिनाकोऽजगवं धनुः।

कृष्णमित्रटीका:- कं शिरः पिपर्ति कपर्दः। औणादिको दः। अस्य शिवस्य जटानां जूटो बन्धः॥[1] अस्य धनुः। पिनह्यत इति पिनाकः। 'पिनाकादयश्च' (उ. ४. १५) इति निपातितः। अजं ब्रह्माणं गच्छति, अजगः। सोऽस्यास्ति[2] स्वामित्वेनाजगवम्। 'गाण्ड्यजगात्संज्ञायाम्' (५. २. ११०) इति वः। 'प्रज्ञा-' (५. ४. ३८) अणि, आ जगवम्। 'आजवकम्' इति **स्वामी**॥[3]

हिन्दी अर्थः- १ कपर्द-यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम शिवजी के जटाजूट का है। १ पिनाक (पुल्लिङ्ग), २ अजगव नपुंसकलिङ्ग- ये दो नाम शिवजी के धनुष के हैं।

प्रमथाः स्युः पारिषदा ब्राह्मीत्याद्यास्तु मातरः॥३०॥
'ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा (१५)
वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा सप्त मातरः' (१६)

कृष्णमित्रटीका:- प्रमथ्यन्ति दुष्टान्। अच् परिषदि भवाः। 'परिषदोण्यः' (४. ४. १०१) इत्यत्र योगविभागात् ण्येऽपि पार्षद[4] इति पाठान्तरम्॥[5]

1. **Siva hair** [1]. 2. M. सोस्याति 3. **Siva's leow** [2] 4. M. ण्येपि पर्षद 5. **Siva's** attendants.- [2]

ब्राह्म्यादयः परिवारत्वेन वर्तते। मातरो लोकपूज्यत्वात्। ''ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा । वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा सप्त मातरः॥'' एता ब्रह्मादिशक्ति-देवताः। क्वचित्कालसङ्कर्षिणीत्यष्टौ मातरः। ब्रह्माणीति पाठान्तरम्॥३०॥[1]

हिन्दी अर्थः- १ प्रमथ, २ पारिषद, शिव के पारिषद (सभा में रहने वाले) प्रमथ कहलाते हैं। प्रमथ शब्द (पुल्लिङ्ग) हैं। १ ब्राह्मी, २ माहेश्वरी, ३ कौमारी, ४ वैष्णवी, ५ वाराही, ६ इन्द्राणी, ७ चामुण्डा- ये सात स्त्रीलिङ्ग नाम मातृकावाची ब्राह्मी आदि शक्तियों के हैं।॥३०॥

भूतिर्विभूतिरैश्वर्यमणिमादिकमष्टधा॥[2]
'अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा (१७)
प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वं चाऽष्टसिद्धयः'(१८)

कृष्णमित्रटीका:-*भवनं भूतिः। ईश्वरस्य भाव* ऐश्वर्यम्। 'अणिमा लघिमा चैव महिमा गरिमा तथा। प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वं चाष्टभूतयः।' अणोर्भावः, अणिमा। लघोर्भावः लघिमा। महतो भावः। येन ब्रह्माण्डमपि न माति। गरिमा, गुरुत्वम्। प्राप्तिरङ्गुल्यग्रेण चन्द्रादेः। प्रकामस्य भाव इच्छानभिघातः। ईशिनो भाव ईशित्वम्। प्रभुत्वम्। येन स्थावरा अप्याज्ञाकारिणः। वशिनो भावो वशित्वम्। येन भूमावप्युन्मज्जननिमज्जने॥[3]

हिन्दी अर्थः- १ विभूति (स्त्रीलिङ्ग), २ भूति (स्त्रीलिङ्ग), ३ ऐश्वर्य (नपुसंक)- ये तीन नाम ऐश्वर्य या सिद्धि के हैं। १ अणिमन्, २ महिमन, ३ गरिमन्, ४ लघिमन्- ये चार (नान्त पुल्लिङ्ग) ५ प्राप्ति स्त्रीलिङ्ग, ६ प्राकाम्य, ७ ईशित्व, ८ वशित्व- ये तीन नपुंसकलिङ्ग हैं - ये आठ नाम आठ प्रकार की सिद्धियों के हैं।

पार्वती के २१ नाम

उमा कत्यायनी गौरी काली हैमवतीश्वरी ॥३१॥
शिवा भवानी रुद्राणी सर्वाणी सर्वमङ्गला।
अपर्णा पार्वती दुर्गा मृडानी चण्डिकाम्बिका ॥३२॥
'आर्या दाक्षायणी चैव गिरिजा मेनकात्मजा (१९)

कृष्णमित्रटीका:-ओर्महेशस्य मा लक्ष्मीः। 'उ मा' इति मात्रा तपसो निषिद्धेति।[1] अजादित्वाट्टाप। (४. १. ४)। कतस्यापत्यम्। 'सर्वत्र लोहितादि-' (४. १. १८) इति ष्फः। गौरो वर्णोऽस्त्यस्याः[2] एवं काली। वर्णाविवक्षायां गौराकाला। हिमवतोऽपत्यम्[3]। ईष्टे ईश्वरी। 'स्थेशभास-' (३. २. १७५) इति वरचि टाप् (४. १. ४)। पुंयोगे तु ईश्वरी॥३१॥ शिवा स्वतः श्रेयस्करी। पुंयोगे तु शिवी। भवस्य स्त्री। सर्वाणि मङ्गलान्यस्याः। अपर्णा, तपसि पर्णानामप्यभोजनात्। पर्वतोऽभिजनोऽस्याः।[4] पर्वतस्येयमितीदमर्थेऽण् (४. ३. १२०) इत्यन्ये। अपत्ये तु इञ् स्यात्। दुःखे[5] गन्तुं शक्या दुर्गा। 'सुदुरोरधिकरणे च' (वा. ३. २. ४८) इति डः। चण्डति कुप्यति चण्डिका। ण्वुल्[6] (३. १. १३३) पचाद्यचि (वा. ३. १. १३४), 'बह्वादि-' (४. १. ४५) ङीषि चण्डी। अम्बैवाम्बिका जगन्मातृत्वात्॥३२॥[7]

हिन्दी अर्थः- १ उमा, २ कात्यायनी, ३ गौरी, ४ काली, ५ हैमवती, ६ ईश्वरी,॥३१॥ ७ शिवा, ८ भवानी, ९ रुद्राणी, १० शर्वाणी, ११ सर्वमङ्गला, १२ अपर्णा, १३ पार्वती, १४ दुर्गा, १५ मृडानी, १६ चण्डिका, १७ अम्बिका, ॥३२॥ १८आर्या, १९ दाक्षायणी, २० गिरिजा, २१ मेनकात्मजा- ये इक्कीस स्त्रीलिङ्ग नाम पर्वती के हैं।

गणेश के ८ नाम

विनायको विघ्नराजद्वैमातुरगणाधिपाः।
अप्येकदन्त-हेरम्ब-लम्बोदर-गजाननाः॥३३॥

कृष्णमित्रटीका:- विगतो नायको नियन्ताऽस्य[8]। विघ्नस्य राजा। द्वयोर्मात्रोरपत्यम्। गङ्गाया अप्यपत्यत्वा-द्दुर्गाचामुण्डाभ्यां पालितत्वाद्वा। गणानां प्रथमानामधिपः। एको दन्तोऽस्य[9]। स्कन्दोत्पाटितैकदन्तत्वात्।[10] हे उषसि रम्बते शब्दायते 'रबि शब्दे' (भ्वा. आ. से.)। ङेरलुक्[11]। लम्बमुदरमस्य। गजस्येवाननमस्य॥३३॥[12]

1. Seven worldly mothers. [1 each], 2. **Krisnaswami** and Bhanuji Diksita read: विभूतिभूतिरैश्वर्यमणिमादि-कमष्टधा 3. **Eight superhuman powers** called bhuti & C. [1 each].

1. **Cf. Kumarasambhava,** 2. 26. 2. M. वर्णोस्त्यस्याः 3. M. हिमवतोपत्यम् 4. M. पर्वतोभिजनोस्याः 5. M. दुषृषेण 6. M. ण्वल् 7. Um; [17]. 8. M. नियन्तास्य 9. M. दन्तोस्य 10. 'परशुरामेणोत्पाटितैकदन्ता गणेशः', (Vacaspatyam, P. 1469). 11. **By applying the sutra** 'तत्पुरुषे कृति बहुलम्', (६. ३. १४) 12. **Ganesa** [8].

हिन्दी अर्थः-१ विनायक, २ विघ्नराज, ३ द्वैमातुर, ४ गणाधिप, ५ एकदन्त, ६ हेरम्ब, ७ लम्बोदर, ८ गजानन- ये आठ पुल्लिङ्ग नाम गणेश जी के हैं।।३३।।

स्वामिकार्त्तिकेय के नाम

कार्तिकेयो महासेनः शरजन्मा षडाननः।
पार्वतीनन्दनः स्कन्दः सेनानीरग्निभूर्गुहः ।।३४।।
बाहुलेयस्तारकजिद्विशाखः शिखिवाहनः।
षाण्मातुरः शक्तिधरः कुमारः क्रौञ्चदारणः।।३५।।
"शृंगी भृंगी रिटिस्तुंडी नन्दिको नन्दिकेश्वरः।
कर्ममोटी तु चामुण्डा चर्ममुण्डा तु चर्चिका(२१)"

कृष्णमित्रटीकाः-कृत्तिकानामपत्यं कार्तिकेयः। महती सेनाऽस्य[1]। शरेषु जन्मास्य। षड् आननान्यस्य। अग्निपत्नीनां षण्णां कृत्तिकानां स्तनपानात्। पार्वत्या नन्दनः। स्कन्दत्यरीन्। सेनां नयति। अग्नेर्भवति। गूहति सेनाम्। 'इगुपध-' (३. १. १३५) इति कः।।३४।। बहुलानां कृत्तिकानामपत्यम्। तारकं जयति । विशाखायां जातः विशाखः। 'संधिवेलादि-' (४. ३. १६) अणः 'श्रविष्ठा-फल्गुनी-' (४. ३. ३४) इत्यादिना लुक्। शिखी मयूरो वाहनमस्य। षण्णां मातृणामपत्यम्। शक्तेर्धरः। कुत्सितो मारोऽस्य[2]। कुमारयति क्रीडतीति वा। क्रौञ्चं गिरिं दारयति। ण्यन्तात् (३. १. २६) ल्युः (३. १. १३४)। कैलासमस्त्रशिक्षार्थं गच्छतः स्कन्दस्य क्रौञ्चेन मार्गो रुद्धोऽभूत्।।३५।।[3]

हिन्दी अर्थः- १ कार्त्तिकेय, २ महासेन, ३ शरजन्मन् (नान्त), ४ षडानन, ५ पार्वतीनन्दन, ६ स्कन्द, ७ सेनानी, ८ अग्निभू, ९ गुह, ।।३४।। १० बाहुलेय, ११ तारकजित् (तान्त), १२ विशाख, १३ शिखिवाहन, १४ षाण्मातुर, १५ शक्तिधर, १६ कुमार, १७ क्रौञ्चदारण- ये सत्रह पुल्लिङ्ग नाम स्वामिकार्तिकेय के हैं।।।३५।। १ शृङ्गिन्, २ भृङ्गिन् (इन्नन्त), ३ रिटि, ४ तुंडिन् (इन्नन्त), ५ नन्दिक, ६ नन्दिकेश्वर- ये छः पुल्लिङ्ग नाम नंदिगण के हैं। "कर्ममोटी यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम चामुंडाका और चर्ममुंडा यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम चर्चिका का है।"

इन्द्र के ३५ नाम

इन्द्रो मरुत्वान्मघवा विडौजाः पाकशासनः।
वृद्धश्रवाः सुनासीरः पुरुहूतः पुरन्दरः।।३६।।

1. M. सेनाऽस्य 2. M. मारोस्य 3. **Kartikeya.** [17].

जिष्णुर्लेखर्षभः शक्रः शतमन्युर्दिवस्पतिः।
सुत्रामा गोत्रभिद्वज्री वासवो वृत्रहा वृषा ।।३७।।
वास्तोष्पतिः सुरपतिर्बलारातिः शचीपतिः।
जम्भभेदी हरिहयः स्वाराण्नमुचिसूदनः।।३८।।
संक्रन्दनो दुश्च्यवनस्तुराषाण्मेघवाहनः।
आखण्डलः सहस्राक्ष ऋभुक्षाः

कृष्णमित्रटीकाः- इन्दति इन्द्रः। 'इदि परमैश्वर्ये' (भ्वा. प. से.); 'ऋज्रेन्द्र-' (उ. २. २८) इत्यादिना रन्। मरुतो देवाः सन्त्यस्य। 'तसौ मत्वर्थे' (१. ४. १९) इति भत्वाज्जश्त्वाभावः। मह्यते पूज्यते मघवा। 'श्वन्नुक्षन्-' (उ. १. १६०) इति निपातितः। विडं भेदकमोजोऽस्य[1] विडौजाः। 'विड भेदने' (तु. प. से.) 'इगुपध-' (३. १. १३५) इति कः। विट्सु प्रजासु ओजोऽस्येति[2] वा। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। पाकानां दितिगर्भाणां शासनः। वृद्धे श्रवसी अस्य। शोभना नासीरा अग्रेसरा अस्य शुः पूजायाम् ।[3] पुरु प्रभूतं हूतं यज्ञेष्वाह्वानं यस्य। पुराण्यरीणां दारयति। 'वाचंयमपुरन्दरौ च' (६. ३. ६९) इति साधुः।।३६।। जयनशीलो जिष्णुः। 'ग्लाजिस्थश्च-' (३. १. १३९) इति ग्स्नुः। लेखेषु देवेषु ऋषभः श्रेष्ठः। शक्नोति शक्रः। 'स्फायितञ्चि-' (उ. २. १३) इत्यादिना रक्। शतं मन्यवो यागा अस्य। 'षष्ठ्याः पतिपुत्र-' (८. ३. ५३) इत्यलुकि कस्कादित्वात् (८. ४. ४८) सत्त्वे दिवस्पतिः। सुष्ठु त्राम बलं यस्य। गोत्रान् गिरीन् पक्षच्छेदाद् भिन्नवान्[4]। वज्रमस्यास्ति। वसोरपत्यं वासवः। वृत्रं हतवान्। वर्षतीति वृषा । कनिन् (उ. १. १५७) ।।३७।। वास्तोर्ग्रहक्षेत्रस्य[5] पतिरधिष्ठाता। '- वास्तोष्पतिगृहमेधाच्छ च' (४. २. ३२) इति निपातनादलुकि षत्वम्। सुराणां पतिः। बलस्यारातिः[6]। शच्याः पतिः। जम्भमसुरं भिनत्ति। णिनिः। हरयः पिङ्गा हया अस्य। स्वः स्वर्गे राजते, स्वाराट्। क्विपि 'ढ्रलोपे-' (६. ३. १११) पूर्वस्य दीर्घः। नमुचेर्दैत्यस्य सूदनः।। ३८।। संक्रन्दयति रिपुस्त्रीः। 'क्रदि आह्वाने रोदने च' (भ्वा. प. से.) ल्युः (३. १. १३४)। दुष्टं रेतश्च्यवते[7] परदारेषु दुश्च्यवनः। 'चलनशब्दार्थत्-' (३. २. १४८) इति युच्। दुःखेन[8] च्यवते रणाद्वा। तुरं त्वरितं

1. M. भेदकमोजोस्य 2. M. आजोस्येति 3. **Therefore** the word derived with the help of indeclinable 'शु' will be 'शुनासीरः' 4. M. पक्षच्छेदा भिन्नवान्। 5. M. वास्तोः ग्रहक्षेत्रम्य 6. M. बलस्य अरातिः 7. M. रेतः च्यवते 8. M. दुष्खेण।

साहयत्यभिभवत्यरीन् तुरं वेगं सहते वा । 'छन्दसि सहः' (३.२. ६३) इति योगविभागात् ण्विः। मेघान् वाहयति वर्षयति। आखण्डयति भिनत्त्यरीन्। 'खडि भेदने' (चु. प. से.) । 'वृषादिभ्यः कलच्' (उ. १. १०६) । सहस्रमक्षीण्यस्य। 'बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः[1]-' (५. ४. ११३) इति षच्। 'ऋभुक्षः स्वर्गवज्रयोः' इति विश्वः। सोऽस्यास्ति[2] ऋभुक्षाः। इतिः (५. २. ११५) ॥[3]

हिन्दी अर्थः- १ इन्द्र, २ मरुत्वत् (मत्वन्त), ३ मघवन् (मत्वन्त), ४ बिडौजस् (सान्त), ५ पाकशासन्, ६ वृद्धश्रवस् (सान्त), ७ शुनासीर, ८ पुरुहूत, ९ पुरन्दर, ॥३६॥ १० जिष्णु, ११ लेखर्षभ, १२ शक्र, १३ शतमन्यु, १४ दिवस्पति, १५ सुत्रामन् (नान्त), १६ गोत्रभिद् (तान्त), १७ वज्रिन् (इन्नन्त), १८ वासव, १९ वृत्रहन् (नान्त), २० वृषन् (नान्त), ॥३७॥ २१ वास्तोष्पति, २२ सुरपति, २३ बलाराति, २४ शचीपति, २५ जम्भभेदिन् (इन्नन्त), २६ हरिहय, २७ स्वाराज् (जान्त), २८ नमुचिसूदन, ॥३८॥ २९ संक्रन्दन, ३० दुश्च्यवन, ३१ तुरासाह् (हान्त), ३२ मेघवाहन, ३३ आखण्डल, ३४ सहस्राक्ष, ३५ ऋभुक्षिन् (नान्त)- ये पैंतीस पुल्लिङ्ग नाम इन्द्र के हैं।

तस्य तु प्रिया ॥३९॥

पुलोमजा शचीन्द्राणी

कृष्णमित्रटीकाः- तस्य इन्द्रस्य पत्नी ॥३९॥ पुलोम्नो मुनेर्जाता । 'पञ्चम्यामजातौ' (३. २. ९८) इति डः। शचते शची[4]। शच (श्वच) गतौ (भ्वा. आ. से.) । इन् (उ. ४. ११८)। 'कृदिकारात्-' (ग. सू. ४. १. ४५) इति ङीष्। इन्द्रस्य स्त्री ॥[5]

हिन्दी अर्थः- १ पुलोमजा, २ शची, ३ इन्द्राणी- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम इन्द्र की प्रिया के हैं ॥३९॥

नगरी त्वमरावती।

कृष्णमित्रटीकाः- इन्द्रस्य नगरी तु अमरावती। अमराः सन्त्यस्याम्। 'मतौ बह्वच-' (६. ३. ११९) इति दीर्घः ॥[6]

1. M. सक्थ्यक्ष्णोः 2. M. सोस्यास्ति 3. **Indra** [35]. 4. M. शचति शची 5. **Indrani** (Indra's wife). [3]. 6. **Amaravati** (abode of gods or Indra's residence) [1].

हिन्दी अर्थः- १ अमरावती- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम इन्द्र की नगरी का है।

हय उच्चैःश्रवाः

कृष्णमित्रटीकाः- इन्द्रस्य हयः, अश्व उच्चैः श्रवाः। उच्चैः श्रवसी अस्य ॥[1]

हिन्दी अर्थः- १ उच्चैःश्रवस् (सान्त)- यह एक पुल्लिङ्ग नाम इन्द्र के घोड़े का है।

सूतो मातलिः

कृष्णमित्रटीकाः- तस्य सूतः सारथिर्मातलिः। मतं लाति मतलः। तस्यापत्यम् । इञ् (४. १. ९५)[2]।

हिन्दी अर्थः- १ मातलि- यह एक पुल्लिङ्ग नाम इन्द्र के सारथि का है।

नन्दनं वनम् ॥४०॥

कृष्णमित्रटीकाः- तस्य वनं नन्दनम्। नन्दयतीति। ल्युः (३. १. १३४)॥४०॥[3]

हिन्दी अर्थः- १ नन्दन- यह एक नाम नपुंसकलिङ्ग इन्द्र के बाग का हैं ॥४०॥

स्यात्प्रासादो वैजयन्तः

कृष्णमित्रटीकाः- तस्य प्रासादो वैजयन्तः। वैजयन्ती पताकाऽस्त्यस्मिन्।[4] अर्श आदिः (५. २. १२७)।[5]

हिन्दी अर्थः- १ वैजयन्त- यह एक पुल्लिङ्ग नाम इन्द्र के महल का हैं।

जयन्तः पाकशासनिः।

कृष्णमित्रटीकाः- पाकशासनस्य इन्द्रस्यापत्यमिञ् (४. १. ९५)। जयतीति जयन्तः। 'तृभूवहि-' (उ. ३. १२८) इत्यादिना झच्॥[6]

हिन्दी अर्थः- १ जयन्त, २ पाकशासनि- ये दो नाम पुल्लिङ्ग नाम इन्द्र के पुत्र के हैं।

ऐरावतोऽभ्रमातङ्गैरावणाभ्रमुवल्लभाः ॥४१॥

कृष्णमित्रटीकाः- इरा उदकं तदस्त्यस्मिन्निरावानब्धिस्तत्र भव ऐरावत इन्द्रहस्ती। अभ्रं मेघस्तद्रूपो मातङ्गः। अभ्रे आकाशे इति वा। इरया उदकेन वणति,

1. **Indra's horse.** [1]. 2. **Matali, the** charioteer of Indra [1]. 3. **Nandana,** the garden of Indra [1] 4. M. पताका अस्ति अस्मिन् 5. **Vaijayanta,** the palace of Indra [1]. 6. **Jayanta,** the son of Indra [2]

इरावणः। 'वण शब्दे' (भ्वा. प. से.) । ततः प्रज्ञाद्यण् (५. ४. ३८) । अभ्रे खे माति न भ्राम्यति । बाहुलकादुः। अभ्रमोर्वल्लभः ।।४१।।[1]

हिन्दी अर्थः- १ ऐरावत, २ अभ्रमातङ्ग, ३ ऐरावण, ४ अभ्रमुवल्लभ- ये चार पुल्लिङ्ग नाम इन्द्र के हाथी के हैं।।४१।।

वज्र के १० नाम

ह्रादिनी वज्रमस्त्री स्यात्कुलिशं भिदुरं पविः।
शतकोटिः स्वरुः शंवो दम्भोलिरशनिर्द्वयोः ।।४२।।

कृष्णमित्रटीकाः- ह्रादः स्फूर्जथुरस्त्यस्या[2] ह्रादिनी । वजति यात्येव न प्रतिहन्यते वज्रम्। 'ऋज्रेन्द्र-' (उ. २. २८) इत्यादिना रन्। कुलिनः पर्वतान् श्यति पक्षच्छेदेन तनूकरोति। 'आतोऽनुपसर्गे-' (३. २. ३) कः। भिनत्ति तच्छीलम्। 'विदिभिदिच्छिदेः कुरच्' (३. २. १६२)। पुनाति पविः। 'अच् इः' (उ. ४. १३८)। शतं कोटयो धारा अस्य। स्वरति स्वरुः। 'स्वृ शब्दोपतापयोः' (भ्वा. प. अ.)। 'शृस्वृस्निहि-' (उ. १. १०) इत्यादिना उः। शं विद्यतेऽस्य[3] शंवः।' कंशेभ्याम्-' (५. २. १३८) इति वः। दम्नोति खेदयति। 'दम्भु दम्भने' (स्वा. प. से.)। औणादिक ओलिः। अश्नाति अशनिः। 'अर्तिसृधृधम्' (उ. २. १०२) इत्यनिः ।।४२।।[4]

हिन्दी अर्थः- १ ह्रादिनी(स्त्रीलिङ्ग), २ वज्र, ३ कुलिश, ४ भिदुर, ५ पवि, ६ शतकोटि, ७ स्वरु, ८ शाम्ब, ९ दम्भोलि, १० अशनि- ये दश नाम वज्र के हैं। वज्रशब्द पुल्लिङ्ग नपुंसक लिङ्ग है। अशनिशब्द (पुल्लिङ्ग) और (स्त्रीलिङ्ग) तथा कुलिश, भिदुर नपुंसकलिङ्ग, शेष पुल्लिङ्ग हैं।।४२।।

व्योमयानं विमानोऽस्त्री

कृष्णमित्रटीकाः- व्योम्नि यान्त्यनेन। करणेल्युट् (३.३.११७)। विमान्ति वर्तन्तेऽस्मिन्[5] देवा विमानम्। अधिकरणे ल्युट् (६.३.११७)।[6]

हिन्दी अर्थः-१ व्योमयान (न.), २ विमान- ये दो नाम विमान के हैं। विमानशब्द पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग है।

1. **Airavata,** the elephant of Indra [4]. 2. M. स्फूर्जथुः स्त्यस्या, 3. M. विद्यतेस्य 4. **Thunderbolt of Indra's weapon** [10]. 5. M. वर्तन्तेस्मिन् 6. **Heavenly car** (such as puspaka & C.) [2].

नारदाद्याः सुरर्षयः।

कृष्णमित्रटीकाः- नारं नरसमूहं द्यति भिनत्ति कलहैः सुराश्च ते ब्रह्मादिपुत्रत्वादृषयश्च। (आद्येन तुम्बुरुभरतपर्वतदेवलादयः)।।[1]

हिन्दी अर्थः-१ नारद आदि देवताओं के ऋषि हैं। आदि पद से तुम्बरु भरत-पर्वत-देवल आदि लिये जाते है।

स्यात्सुधर्मा देवसभा

कृष्णमित्रटीकाः- सुष्ठु धर्मोऽस्याः[2]। 'धर्मादिनिच्-' (५. ४. १२४)। 'डाबुभ्याभ्याम्' (४. १. १३) इति डाप्। सहभान्त्यस्यां सभा। 'सभाराजा-'[3] (२. ४. २३) इति निपातनादङ्। देवानां सभा आस्थानगृहम्।।[4]

हिन्दी अर्थः- १ सुधर्मा, २ देवसभा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम देवताओं की सभा के हैं।

पीयूषममृतं सुधा।।४३।।

कृष्णमित्रटीकाः- पीयते पीयूषम्। 'पीयेरुषन्' (उ. ४. ७६) । सौत्रो धातुः । नास्ति मृतमत्र। सुष्ठु धीयते पीयते सुधा। 'आतश्चोपसर्गे' (३. ३. १०६) इत्यङ्[5] ।।४३।।[6]

हिन्दी अर्थः- १ पीयूष (न.), २ अमृत नपुंसकलिङ्ग, ३ सुधा स्त्रीलिङ्ग- ये तीन नाम अमृत के हैं ।।४३।।

मन्दाकिनी वियद्गङ्गास्वर्णदी सुरदीर्घिका।

कृष्णमित्रटीकाः-मन्दमकितुं शीलमस्याः। 'अक अग कुटिलायां गतौ' (भ्वा. प. से.) णिनिः। वियति आकाशे गङ्गा। स्वः स्वर्गस्य नदी। पूर्वपदादि (८. ४.३) णः। सुराणां दीर्घिका ।।[7]

हिन्दी अर्थः- १ मन्दाकिनी, २ वियद्गंगा, ३ स्वर्णदी, ४ सुरदीर्घिका- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम आकाशगंगा के हैं ।।

मेरुः सुमेरुर्हेमाद्री रत्नसानुः सुरालयः ।।४४।।

कृष्णमित्रटीकाः- मिनोति क्षिपत्युच्चत्वा-ज्ज्योतींषि[8]। 'डुमिञ् (प्रक्षेपणे)' (स्वा. उ. अ.) 'मिपीभ्यां

1. **Divine sages,** namely Narada, Tumbaru, Bharata & C. 2. सुष्ठु धर्मोस्याः 3. शभाशाला- 4. **Council of gods** [2] 5. M. आतश्चोपसर्गरपि ङ् 6. **Nectar** [3].7. **Celestial river, Akasaganga** [4]. 8. M. क्षिपति उच्चत्वाज्ज्योतीषि.

रुः' (उ. ४.१०१)। हेम्नोऽद्रिः।[1] रत्नानि सानवोऽस्य[2]। सुराणामालयः ॥४४॥[3]

हिन्दी अर्थः- १ मेरु, २ सुमेरु, ३ हेमाद्रि, ४ रत्नसानु, ५ सुरालय- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम सुमेरु पर्वत के हैं॥४४॥

पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः।
सन्तानः कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनम्॥४५॥

कृष्णमित्रटीकाः-एते पञ्च देवनां तरवो वृक्षाः। मन्दा आरा धाराऽस्य[4] सरलत्वात्। पारिणः पारवतो नामाब्धेर्जातः पारिजातः पारिजातः। सन्तन्यते। उपसङ्ख्यानात् (३. १. १४०) णः। कल्पः सङ्कल्पस्तस्य पूरको वृक्षः। हरेरिन्द्रस्य चन्दनम्॥४५॥[5]

हिन्दी अर्थः- १ मन्दार, २ पारिजातक, ३ सन्तान, ४ कल्पवृक्ष, ५ हरिचन्दन- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम देवताओं के वृक्ष के हैं ॥४५॥

सनत्कुमारो वैधात्रः

कृष्णमित्रटीका:- *सनत् नित्यं कुमारः। विधातुरपत्यम्॥*[6]

हिन्दी अर्थः- १ सनत्कुमार, २ वैधात्र- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम सनकादिकों के हैं।

स्वर्वैद्यावश्विनीसुतौ।
नासत्यावश्विनौ दस्रा वाश्विनेयौ च तावुभौ॥४६॥[7]

कृष्णमित्रटीका:- *स्वर्गस्यवैद्यावश्विनी सुतौ, न असत्यौ। 'नभ्राण्नपाद-' (६. ३.७४) इति नञ् प्रकृत्या।* अश्वः प्रशस्तः अस्ति अनयोः। दस्यतः क्षिपतो रोगान्। 'दसु उपपक्षये' (दि. प. से.)। 'स्फायितञ्चि-' (उ. २. १३) इति रक्। अश्विन्या अपत्यम्। ढक् (४. १. १२०) (तावुभाविति द्वित्वविशिष्टत्वादेकवचनाभावः) ॥४६॥[8]

हिन्दी अर्थः- १ स्वर्वैद्य, २ अश्विनीकुमार, ३ नासत्य, ४ अश्विन्, ५ दस्र, ६ आश्विनेय- ये छः पुल्लिङ्ग नाम अश्विनीकुमारों के हैं- ये यमल अर्थात् दोनों एक साथ उत्पन्न हुए हैं; इसलिये इनके वाचक शब्द हमेशा द्विवचनान्त होते हैं॥५१॥

1. M. हेम्नोद्रिः। 2. M. सानवोस्य 3. **The mountain, Sumeru.** 4. M. धारास्य 5. **Five paradisaic trees** [1 each]. 6. **Sanatkumara, the son of Brahma.** [2]. 7. उभौ द्वित्वविशिष्टौ 8. As'**vinikumaras** [6].

स्त्रियां बहुष्वपसरसः स्वर्वेश्या उर्वशीमुखाः।
घृताची मेनका रम्भा उर्वशी च तिलोत्तमा (२२)
सुकेशी मञ्जुघोषाद्याः कथ्यन्तेऽप्सरसो बुधैः (२३)

कृष्णमित्रटीकाः- अद्भ्यः सरन्ति अप्सरसः। सरतेरसुन् (उ. ४. २३७)। बहुष्विति प्रायिकम्। 'अप्सराः' इति भाष्यप्रयोगात्। स्वः स्वर्गस्य वेश्या। उरून् महतोऽश्नुते[1] व्याप्नोति वशीकरोति, उर्वशी। मूलविभुजादित्वात् (वा. ३. २. ५) कः। 'धृताची मेनका रम्भा उर्वशी च तिलोत्तमा। सुकेशी मञ्जुघोषाद्याः कथ्यन्तेऽप्सरसो बुधैः॥[2]'

हिन्दी अर्थः- १ अप्सरस्, २ स्वर्वेश्या- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम उर्वशी, मेनका आदि स्वराङ्गनाओं के हैं। इनमें अप्सरस्शब्द स्त्रीलिङ्ग बहुवचनान्त है॥

१. घृताची, २. मेनका, ३. रम्भा, ४. उर्वशी, ५. तिलोत्तमा, ६. सुकेशी, ७. मञ्जुघोषा- ये सात स्त्रीलिङ्ग नाम 'अप्सराओं' के प्रक्षिप्त नाम हैं।

हाहा हूहूश्चैवमाद्या गन्धर्वास्त्रिदिवौकसाम् ॥४७॥

कृष्णमित्रटीकाः- हाहा हूहू इत्येतौ आलापानुकारेण वाचकौ त्रिदिवौकसां देवानां गायनाः। (आद्येन तुम्बुरुविश्वसुचित्ररथादीनां ग्रहः) ॥४७॥[3]

हिन्दी अर्थः- गन्धर्वो के नाम २ - १ हाहा, २ हूहू, ३ आदि (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम देवताओं के गन्धर्व अर्थात् गानेवालों के हैं॥४७॥

अग्नि के ३४ नाम

अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहोत्रो धनञ्जयः।
कृपीटयोनिर्ज्वलनो जातवेदास्तनूनपात्॥४८॥
बर्हिः शुष्मा कृष्णवर्त्मा शोचिष्केश उषर्बुधः।
आश्रयाशो बृहद्भानुः कृशानुः पावकोऽनलः॥४९॥
रोहिताश्वो वायुसखः शिखावानाशुशुक्षणिः।
हिरण्यरेता हुतभुग् दहनो हव्यवाहनः॥५०॥
सप्तार्चिर्दमुनाः शुक्रश्चित्रभानुर्विभावसुः।
शुचिरप्पित्तम्

कृष्णमित्रटीका:- अङ्गत्यूर्ध्वं यात्यग्निः[4]। औणादिको निः। विश्वानरस्यापत्यम्। ऋष्यण् (४. १. १३४)। वहति हव्यं वह्निः (वहि) श्रिश्रुयु- (उ. ४. ५१)

1. M. महतः अश्नुते, 2. **Celestial damsels** [1 each]. 3. **Celestial musicians,** Gandharvas. 4. M. अंगति ऊर्ध्वं याति अग्निः

इति निः। वीतिर्भक्ष्यमश्वो वा हूयतेऽतिस्मन्[1]। 'हुयामा-' (उ. ४. १६७) इति त्रन्। धनं जयति। 'सञ्ज्ञायाम्-' (३. २. ४६) इति खच् । कृपीटस्य जलस्य योनिः। धूमजत्वान्मेघानाम्। ज्वलति[2] ज्वलनः। 'जुचङ्क्रम्य-' (३. २. १५०) इति युच्। जाता वेदा अस्मात्। असुन् (४. १८८)। तनूं न पातयति, दाहधर्मत्वात्। 'नभ्राण्नपात्' (६. ३.७५) इति निपातः ॥४८॥ बृंहति वर्धते बर्हिः। 'बृंहेर्नलोपश्च' (उ. २. १०९) इति इस । पुल्लिङ्गोऽप्ययम्[3] । शुष्यन्त्यनेन शुष्मा। 'अन्येभ्योऽपि-'[4] (३. २. ७५) इति मनिन्। सञ्ज्ञापूर्वकत्वान्न गुणः। बर्हिः कुशः शुष्म बलमस्येति वा एकं नाम वा। कृष्णो धूमो वर्त्मास्य। शोर्चीषिज्वालाः केशा इवास्य। 'नित्यं समासे' (८. ३. ४५) इति षः। उषसि रात्रौ बुध्यते प्रकाशते, उषर्बुधः। इगुपधेति (३. १. १३५) कः। 'अहरादीनाम्-' (वा. ८. २. ७०) इति रः। आश्रयमाधारमश्नाति। 'कर्मण्यण्' (३. २. १)। बृहन्तो भानवः किरणा अस्य। 'कृश तनू करणे' (दि. प. से.) । कृश्यति 'ऋतन्यञ्जि-' (उ.४.२) इत्यानुक्। पुनाति पावकः। अनित्यनेन लोकोऽनलः[5] । वृषादित्वात् (उ. १. १०६) कलच्॥४९॥ लोहिता अश्वा अस्य। वायोः सखा। शिखाः सन्त्यस्य। आशोष्टुमिच्छति। आङ्पूर्वात् शूषेः (दि. प. अ.) सन्नन्तात् 'आङि शुषे-' (उ. २. १०३) इत्यनिः। छान्दसोऽपि भाषायां क्वचित्। हिरण्यं रेतोऽस्य[6]। 'अग्नेरपत्यं प्रथमं हिरण्यम्' इति स्मृतेः। हुतं भुङ्क्ते। दहति। ल्युः (३. १. १३४) । हव्यं वाहयति देवान्नयति। ण्यन्तात् 'हव्यपुरीषपुरीष्येज्युट्' (३. २. ६५) इत्यन्ये ॥५०॥ सप्तार्चिषः[7] काली करालीत्याद्या जिह्वा अस्य।[8] दाम्यति दमुनाः। दमेरुनस् (उ. ४. २३४) शुक्रं तेजोऽस्त्यस्य[9] शुक्रः। विभैव वसु धनमस्य। शुचिः शोधकत्वात्। अपां पित्तं दाहकत्वात्॥[10]

---

1. M. हूयतेस्मिन् 2. M. ज्वलिति 3. M. पुल्लिंङ्गोप्ययम् 4. M. अन्येभ्योपि 5. M. लोकोनलः 6. M. रेतोस्य 7. M. सप्त अर्चिषः। 8. M. काली कराली च मनोजवा च सुलोहिता या च सुधूम्रवर्णा। स्फुलिङ्गिनी विश्वरुची च देवी लेलायमाना इति सप्त जिह्वाः॥ (Mundaka Upanishad 1.2.4) Cp. Rgveda 3.6.2 9. M. तेजोस्यस्य 10. **Agni (fire)** [34].

हिन्दी अर्थः-१ अग्नि, २ वैश्वानर, ३ वह्नि, ४ वीतिहोत्र, ५ धनञ्जय, ६ कृपीटयोनि, ७ ज्वलन, ८ जातवेदस् (सान्त), ९ तनूनपात् (तान्त), ॥४८॥ १० बर्हिस् (सान्त), ११ शुष्मन् (नान्त), १२ कृष्णवर्त्मन् (नान्त), १३ शोचिष्केश, १४ उषर्बुध, १५ आश्रयाश, १६ बृहद्भानु, १७ कृशानु, १८ पावक, १९ अनल,॥४९॥ २० रो (लो) हिताश्व, २१ वायुसख, २२ शिखावत् (मत्वन्त), २३ आशुशुक्षणि, २४ हिरण्यरेतस् (सान्त), २५ हुतभूज् (जान्त), २६ दहन, २७ हव्य वाहन, ॥५०॥ २८ सप्तार्चिस् (सान्त), २९ दमुनस् (सान्त), ३० शुक्र, ३१ चित्रभानु, ३२ विभावसु, ३३ शुचि पुल्लिङ्ग, ३४ अप्पित्त नपुंसकलिङ्ग- ये चौंतीस नाम अग्नि के हैं।

और्वस्तु बाडवो बडवानलः॥५१॥

कृष्णमित्रटीका:-यस्तु उर्वस्य मुनेरपत्यमग्निः। ऋष्यण्[1] (४. १. ११४)। वरुणभीताया अस्य मातुरुर्वेण गोपितत्वात्। बडवायां भवोऽश्वमुखत्वात्[2]॥५१॥[3]

हिन्दी अर्थः- १ और्व, २ वाडव, ३ वडवानल - ये तीन पुल्लिङ्ग नाम वडवाग्नि के हैं॥५२॥

बह्नेर्द्वयोर्ज्वालकीलावर्चिर्हेतिः शिखा स्त्रियाम्।

कृष्णमित्रटीका:-बह्नेरिति प्रायोवादः। द्वयोः स्त्रीपुंसयोः। ज्वलति ल्वालः। 'ज्वलितिकसन्तेभ्यो णः' (३. १. १४०)। स्त्रियां टाप् (४. १. ४) 'कील बन्धेः' (भ्वा. प. से.) । द्वे। अर्चिः। 'अर्च पूजायाम्' (भ्वा. प. से. चु. उ. अ.) 'अर्चि शुचि-' (उ. २. १०८) इति इसिः । हिनोति हेतिः। 'हि गतौ' (स्वा. प. अ.) 'अतियूति-' (३. ३. ९७) इति निपातः । शेते शिखा । शीङः **किद्घ्रस्वश्च** (उ. ५. २४) इति खः। त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थः- १ ज्वाल, २ कील, ३ अर्चिस्, ४ हेति, ५ शिखा- ये पाँच नाम अग्नि की शिखा के हैं। ज्वाला और कीलशब्द पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग, अर्चिस्शब्द सान्त स्त्रीलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग, हेति और शिखाशब्द स्त्रीलिंग हैं।

त्रिषु स्फुलिङ्गोऽग्निकणः

कृष्णमित्रटीका:-स्फुलति चलति तत्र इङ्गति स्फुलिङ्गः। अग्नेः कणः। द्वे ॥[5]

---

1. M. ऋष्यण् 2. M. भवः अश्वमुखत्वात् 3. **The submarine fire** [3]. 4. **The flame of fire** [5] 5. **A spark of fire** [2].

हिन्दी अर्थः- १ स्फुलिंग, २ अग्निकण- ये दो पुल्लिङ्ग नाम अग्नि के कण के हैं। स्फुलिंगशब्द तीनों लिंगों का वाची है।

संतापः संज्वरः समौ[1] ॥५२॥

'उल्का स्यान्निर्गतज्वाला भूतिर्भसितभस्मनी (२४)
क्षारो रक्षा च दावस्तु दवो वनहुताशनः'(२५)

कृष्णमित्रटीका :- संतापयति संज्वरयति। ण्यन्तादच् (३. १. १३४)॥५२॥[2]

हिन्दी अर्थः- १ सन्ताप, २ सञ्ज्वर- ये दो पुल्लिङ्ग नाम अग्नि के संताप के हैं॥५७॥ "उल्का- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम अंगारे का है। १ भूति स्त्रीलिङ्ग, २ भसित नपुंसकलिङ्ग ३ भस्मन् (नान्त) नपुंसकलिङ्ग, ४ क्षार पुल्लिङ्ग, ५ रक्षा स्त्रीलिङ्ग- ये पाँच नाम राख के हैं। १ दाव, २ दव- ये दो पुल्लिङ्ग नाम वनाग्नि के हैं।"

यम के १४ नाम

धर्मराजः पितृपतिः समवर्ती परेतराट्।
कृतान्तो यमुनाभ्राता शमनो यमराड्यमः ॥५३॥
कालो दण्डधरः श्राद्धदेवो वैवस्वतोऽन्तकः।

कृष्णमित्रटीका:-धर्मस्य राजा। पितृणां पतिः। समं वर्तते रिपौ मित्रे च। परेतेषु मृतकेषुराजते। कृतोऽन्तो[3] विनाशो येन। शमयति शमनः। ल्युः (३. १. १२४)। यमेन संयमेन राजते। यमयति यमः॥५३॥ कलयत्यायुः कालो वर्णेन वा। 'मित्त्वाभावात् कालयतीति विग्रहः' इत्यन्ये।[4] दण्डस्य धरः। श्राद्धस्य देवः। विवस्वतोऽपत्यम्[5]। अन्तं करोति अन्तकः । 'तत्करोति-' (वा. ३. १. २६) इति ण्यन्ताद् ण्वुल् (३. १. १३३)॥

हिन्दी अर्थः- १ धर्मराज, २ पितृपति, ३ समवर्तिन् (इन्नन्त), ४ परेतराज् (जान्त), ५ कृतान्त, ६ यमुनाभ्रातृ (ऋकारान्त), ७ शमन, ८ यमराज् (जान्त), ९ यम, ॥५३॥ १० काल, ११ दण्डधर, १२ श्राद्धदेव, १३ वैवस्वत, १४ अन्तक- ये चौदह पुल्लिङ्ग नाम यम के हैं।

राक्षस के १५ नाम

राक्षसः कौणपः क्रव्यात् क्रव्यादोऽस्रप आशरः॥५४॥
रात्रिंचरो रात्रिचरः कर्वुरो निकषात्मजः।
यातुधानः पुण्यजनो नैर्ऋतो यातुरक्षसी॥५५॥

1. समानार्थौ समानलिङ्गौ 2. **Fire's heat** [2]. 3. M. कृतः अन्तो. 4. See **Ramasrami,** p. 30 5. M. विवस्वतोपत्यम्।

कृष्णमित्रटीका:-रक्ष एव राक्षसः। स्वार्थिकाः क्वचिल्लिङ्गमति वर्तन्ते। कुणपं शवं भोक्तुं[1] शीलमस्य। 'शीलम्' (४.४. ६१) इत्यण्। क्रव्यमाममांसमत्ति। 'क्रव्ये च' (३. २. ६९) इति विट्। पक्वमांसमत्तीति विग्रहे पृषोदरादित्वात् (६. ३. १०९) क्रव्यादः। अस्रं रक्तं पिबति। आशृणोति हिनस्त्याशरः[2]॥५४॥ रात्रौ चरति। 'रात्रेः कृति विभाषायाम्' (६. ३. ७२) मुम्। कुर्वुरो वर्णेन। निकषा रक्षसां माता। यातूनि यातना धीयन्तेऽस्मिन्[3]। पुण्यजनो विपरीत लक्षणया। निर्ऋतेरपत्यम्। यातयतीति यातुः। 'कामिमनि-' (उ. १. ७२) इति तुः। रक्षन्त्यस्मात्। असुन् (उ. ४. १८८) ॥५५॥[4]

हिन्दी अर्थः- १ राक्षस, २ कौणप, ३ क्रव्याद् (दान्त), ४ क्रव्याद, ५ अस्रप, ६ आशर, ॥५४॥ ७ रात्रिंचर, ८ रात्रिचर, ९ कर्बुरः, १० निकषात्मज, ११ यातुधान, १२ पुण्यजन, १३ नैर्ऋत, १४ यातु, १५ रक्षस् (सान्त)- ये पन्द्रह नाम राक्षस् के हैं इनमें यातु और रक्षस् -ये दो नाम (नपुसंक) शेष पुँल्लिंग हैं॥५५॥

वरुण के ५ नाम

प्रचेता वरुणः पाशी यादसांपतिरप्पतिः।

कृष्णमित्रटीका:-प्रकृष्टं चेतोऽस्य[5] । वृणोति वरुणः। 'कृवृदारिभ्य उनन्'[6] (उ. ३. ५३)। पाशोऽस्यास्ति[7]। यादसां जलजन्तूनां। 'तत्पुरुषे कृति-' (६. ३. १४) इति वालुक्॥[8]

हिन्दी अर्थः- वरुण के नाम ५ - १ प्रचेतस् (सान्त), २ वरुण, ३ पाशिन् (इन्नन्त), ४ यादसाम्पति, ५ अप्पति- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम वरुण के हैं। ॥-

वायु के २० नाम

श्वसनः स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वा सदागतिः॥५६॥
पृषदश्वो गन्धवहो गन्धवाहानिलाशुगाः।
समीर-मारुत-मरुज्-जगत्प्राण-समीरणाः॥५७॥
नभस्वद्वात-पवन-पवमान प्रभञ्जनाः।
प्रकम्पनो महावातो झञ्झावातः सवृष्टिकः (२६)

कृष्णमित्रटीका:- श्वसन्त्यनेन । स्पृशति स्पर्शनः। 'बहुलमन्यत्रपक्रि' (उ. २. ७८) इति युच्। वातीति

1. **Yamaraja,** the god of death. [14] 2. M. हिनस्ति आशरः 3. M. धीयन्तेस्मिन् 4. **Demon.** [14]. 5. M. चेतोस्य 6. M. कृवृदरिभ्य उनन् 7. M. पाशोस्यास्ति 8. **Varuna** [5].

वायुः। 'कृवापाजि-' (उ. १.१) इत्युण्[1] मातरि आकाशे श्वयति वर्धते। 'श्वन्नुक्षन्-' (उ. १. १६०) इति निपातः॥५६॥ पृषन्मृगभेदोऽश्वो[2] वाहनमस्य। गन्धस्य वहः गन्धं वहति। अनन्त्यनेनानिलः।[3] 'सलिकल्यनि-' (उ. १. ५४) इति इलच्। आशु गच्छत्याशुगः। 'अन्यत्रापि-' (वा. ३. २. ४८) इति डः। सम्यगीरयति प्रेरयति। 'ईर गतौ' (अ. आ. से.)। अच् (३. १. १३४)। युचि (३. २. १४८) तु समीरणः। म्रियन्तेऽनेन[4] मरुत्। 'मृग्रोरुतिः' (उ. १.१४)। स एव मारुतः॥५७॥ नभोऽस्यास्ति[5] श्रयत्वेन। वातीति वातः। 'हसिमृग्रिण-' (उ. ३. ८६) इति तन्। पुनाति पवनः। 'बहुलमन्यत्रापि'[6] (उ. २. ७८) इति युच्। 'पूङ्यजोः शानन्' (३. ४. १२८)। पवमानः। प्रभनक्ति प्रभञ्जनः॥[7]

हिन्दी अर्थः-१ श्वसन, २ स्पर्शन, ३ वायु, ४ मातरिश्वन् (नान्त), ५ सदागति, ॥५६॥ ६ पृषदश्व, ७ गन्धवह, ८ गन्धवाह, ९ अनिल, १० आशुग, ११ समीर, १२ मारुत, १३ मरुत् (तान्त), १४ जगत्प्राण, १५ समीरण, ॥५७॥ १६ नभस्वत् (मत्वन्त), १७ वात, १८ पवन, १९ पवमान, २० प्रभञ्जन- ये बीस पुल्लिङ्ग नाम वायु के हैं। १ प्रकंपन, २ महावात- ये दो पुल्लिङ्ग नाम महावायु अर्थात् आँधी के हैं। जो वृष्टि के सहित इसको झंझावात कहते हैं, यह पुँल्लिंग है॥

प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ च वायवः॥५८॥
'हृदि प्राणो गुदेऽपानः समानो नाभिमण्डले(२७)
उदानः कण्ठदेशे स्याद्व्यानः सर्वशरीरगः'(२८)
शरीरस्था इमे

कृष्णमित्रटीकाः- प्रसरणेन। अनिति (८. ४. १९)। अनेन प्राणः। 'पुंसि-' (३. ३. ११८) इति घः। एवमपसरणेन, समन्तात्, ऊर्ध्वं, व्याप्त्या चेत्यर्थः॥५८॥ एते वायवः शरीरस्थाः। 'हृदि प्राणो गुदेऽपानः[8] समानो नाभिसंस्थितः। उदानः कण्ठदेशस्थो व्यानः सर्वशरीरगः॥ अन्नप्रवेशनं मूत्राद्युत्सर्गोऽन्नविपाचनम्। भाषणादिनिमेषादि तद्व्यापाराः क्रमादमी॥'[9]

1. M. इति उण्। 2. M. पृषन्मृगभेदोश्वो 3. M. अनन्त्यनेन अनिलः 4. M. भ्रियन्तेनेन 5. M. नभोस्यास्ति 6. M. वहलमन्यत्रापि 7. **Air of wind** [20] 8. M. गुदेपान 9. **Five vital airs:** prana, apana, samana, udana and uyana [1 each]

हिन्दी अर्थः-१ प्राण, २ अपान, ३ समान, ४ उदान, ५ व्यान- ये पाँच (पुल्लिङ्ग) नाम शरीर में स्थित वायु के हैं हृदय में प्राण है, गुदा में अपान हैं, नाभि में समान है, कंठ में उदान और सम्पूर्ण शरीर में व्यान हैं॥५८॥-

रंहस्तरसी तु रयः स्यदः।
जवः

कृष्णमित्रटीकाः- रंहत्यनेन। 'रहि गतौ' (भ्वा. प. से.)। असुन् (उ. ४. १८८)। तरत्यनेन। असुन् (उ. ४. १८८)। रयतेऽनेन।[1] 'रय गतौ' (भ्वा. आ. से.)। 'पुंसि-' (३. ३. ११८) इति घः। स्यन्दतेऽनेन[2]। 'स्यदोजवे' (३. ४. २८) इति घञन्तो निपातः। जवनं जवः। 'जु' इति सौत्रो (३. २. १५०) धातुः॥[3]

हिन्दी अर्थः- १ रंहस् (सान्त न.), २ तरस् (सान्त नपुंसकलिङ्ग), ३ रय, ४ स्यद, ५ जव (पुल्लिङ्ग)- ये पाँच नाम वेग के हैं।

अथ शीघ्रं त्वरितं लघु क्षिप्रमरं द्रुतम्॥५९॥
सत्वरं चपलं तूर्णमविलम्बितमाशु च।

कृष्णमित्रटीकाः- शिङ्घति[4] व्याप्नोति शीघ्रम्। 'शिघि आघ्राणे' (भ्वा. प. से.)। 'शीघ्रादयश्च' इति निपातः। त्वरतेस्म त्वरितम्। ञित्वरा (भ्वा. प. से.)। 'विभाषा भावादिकर्मणोः' (७. २. ७२) इतीड् भावे तूर्णम्। लङ्घते। 'लघि गतौ' (भ्वा. आ. से.)। 'लङ्घिबंह्योर्नलोपश्च' (उ. १. २९) इति कुः। क्षिपति क्षिप्रम्। 'स्फायितञ्चि-' (उ. २. १३) इति रक्। ऋच्छतीति अरम्। 'ऋ गतौ' (भ्वा. जु. प. अ.)। अच् (३. १. १३४)। अरमव्ययम्। द्रवति स्म[5]। 'द्रु गतौ' (भ्वा. प. अ.)। 'गत्यर्था-' (३. ४. ७२) इति क्तः। त्वरया सह वर्तते सत्वरं चोपति। 'चुप मन्दायां गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'चुपेरच्चोपधायाः' (उ. १. १११) इति कलप्रत्ययः। न विलम्बते स्म। अश्नुते आशु। 'अशू व्याप्तौ' (स्वा. आ. से.)। 'कृवापा-' (उ. १.१) इत्युण्। शीघ्रनाम॥[6]

हिन्दी अर्थः- १ शीघ्र, २ त्वरित, ३ लघु, ४ क्षिप्र, ५ अर, ६ द्रुत, ॥५९॥ ७ सत्वर, ८ चपल, ९ तूर्ण, १० अविलम्बित, ११ आशु- ये ग्यारह नपुंसकलिङ्ग नाम शीघ्रता के हैं॥

1. M. रयत्यनेन 2. M. स्यन्दतेनेन 3. **Speed** [5] 4. M. शिङ्घते। 5. M. द्रवते स्म 6. **Quick** [11]

नित्य के ९ नाम

सतत[1]ऽनारताश्रान्तसन्तताविरतानिशम् ॥६०॥
नित्यानवरताजस्रमपि

कृष्णमित्रटीका:- संतन्यन्ते स्म सततम् । तनोतेः क्तः (३. ४. ७२)। 'समो वा हिततयोः' (वा. ६. १. १४४) इति मलोपाभावे सन्ततम्। आङ्अव विपूर्वो रमिर्विरामे ततो नञ्समासः। नास्ति श्रान्तं श्रमोऽत्र[2]। नास्ति निशात्र, सा हि विरतिस्थानमिति व्यापारराहित्यं लक्ष्यते॥६०॥ नियतं भवं नित्यम्। 'त्यब् नेर्ध्रुवे' (वा. ४. १०४) । न जस्यति। 'जसु मोक्षणे' (दि. प. से.) । 'नमिकम्पि-' (३. २. १६७) इति रः॥[3]

हिन्दी अर्थ:- १ सतत, २ अनारत, ३ अश्रान्त, ४ सन्तत, ५ अविरत, ६ अनिश, ॥६०॥ ७ नित्य, ८ अनवरत, ९ अजस्र- ये नौ नपुंसकलिङ्ग नाम लगातार के हैं।

अथातिशयो भरः।
अतिवेल-भृशात्यर्थातिमात्रोद्गाढ-निर्भरम्॥६१॥
तीव्रैकान्त-नितान्तानि गाढ-बाढदृढानि च॥

कृष्णमित्रटीका:- अतिशयनमतिशयः। 'एरच्' (३. ३. ५६)। भरणं भरः। 'पुंसि-' (३. ३. ११८) इति घः, अच् (३. १. १३४) वा। अतिक्रान्तौ बेलां मर्यादाम्। भृशते। कः (३. १. १३५)। अतिक्रान्तोऽर्थं[4] मात्रां च। उद्गाहते स्म उद्गाढम्। निश्शेषेण भरोऽत्र[5] ॥६१॥ तीवति। 'तीव स्थौल्ये' (भ्वा. प. से.)। बाहुलकाद्रक् (उ. २. २८) एकोऽन्तो निश्चयोऽत्र[6]। निताम्यति स्म। 'तमु काङ्क्षायाम्' (दि. प. से.) क्तः। 'बाहृ प्रयत्ने' (भ्वा. आ. से.), 'दृह वृद्धौ' (भ्वा. प. से.)। 'क्षुब्धस्वान्त-' (७. २. १८) इति, 'दृढः स्थूल-' (७. २. २७) इति च निपातितौ॥[7]

हिन्दी अर्थ:- १ अतिशय, २ भर, (पुल्लिङ्ग) ३ अतिवेल, ४ भृश, ५ अत्यर्थ, ६ अतिमात्र, ७ उद्गाढ, ८ निर्भर॥६१॥ ९ तीव्र, १० एकान्त, ११ नितान्त, १२ गाढ, १३ बाढ, १४ दृढ- ये चौदह नाम अतिशय के हैं इनमें अन्तिम बारह नुपंसकलिङ्ग हैं॥-

1. B. सततम् 2. M. श्रमोत्र 3. **Continual** [9] 4. M. अतिक्रान्तोर्थ 5. M. भरोत्र 6. M. एकः अन्तो निश्चयोत्र 7. **Excess** [12]

क्लीबे शीघ्राद्यसात्वे स्यात् त्रिष्वेषां सत्त्वगामि यत्॥६२॥

कृष्णमित्रटीका:- असत्त्वे अद्रव्यार्थकत्वे सति शीघ्रादिदृढपयर्न्तं क्लीबे स्यात्। यथा- शीघ्रं भुङ्क्ते, भृशं याति। एषां मध्ये यत्सत्त्वगामि द्रव्यवृत्ति तत्त्रिलिङ्गम्। यथा- शीघ्रा जरा, शीघ्रो मृत्युः, शीघ्रं वयः॥६२॥[1]

हिन्दी अर्थ:- अद्रव्यवाची शीघ्र आदि शब्द नपुंसक लिङ्ग में होते हैं और द्रव्यवाची तीनों लिंगों में होते हैं॥६२॥ शीघ्र से लेकर दृढपर्यंत शब्द असत्त्व विषयक होने पर अर्थात् द्रव्यवृत्ति के अभाव में नपुंसकलिंग है और इन शीघ्र कृतवान्, भृशं, मूर्ख, भृशं याति इन वचनों में नपुंसकलिंग है और इन शीघ्र आदि के मध्य में जो सत्वगामी द्रव्यवृत्ति हैं वह तीनों लिंग वाची हैं। जैसे- शीघ्रा धेनुः, शीघ्रो वृषः, शीघ्रं गमनम् इन वचनों में (स्त्रीलिङ्ग पुल्लिङ्ग न.) हैं।

कुबेर के १७ नाम

कुबेरस्त्र्यम्बकसखो यक्षराड् गुह्यकेश्वरः।
मनुष्यधर्मा धनदो राजराजो धनाधिपः॥६३॥
किंनरेशो वैश्रवणः पौलस्त्यो नरवाहनः।
यक्षैकपिङ्गैलविल-श्रीदः पुण्यजनेश्वरः॥६४॥

कृष्णमित्रटीका:- कुत्सितं बेरं देहोऽस्य[2]। कुष्ठित्वात्। त्र्यम्बकस्य। त्र्यम्बकस्य सखा। यक्षेषु राजते। मनुष्यस्येव धर्मोऽस्य[3]। श्मश्रुलत्वादिः। धनं दयते। 'देङ् पालने' (भ्वा. आ. अ.)। एवं श्रीदः राज्ञां यक्षाणां राजा॥६३॥ विश्रवसोऽपत्यं[4] वैश्रवणः। शिवादौ (४. १. ११२) विश्रवणादेशो निपातितः॥ पुलस्तगोत्रापत्यम्। गर्गादिः (४. १.१०५)। नरो वाहनमस्य। क्षुभ्नादिः (८. ४. ३९) न णत्वम्। यक्ष्यते यक्षः। 'यक्ष पूजायाम्' (चु. आ. से.) । एकं पिङ्गमस्य। पिङ्गलैकनैत्रत्वात्। इडविडमाताऽस्य[5] । डलयोरेकत्वात् ॥६४॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ कुबेर, २ त्र्यम्बकसख, ३ यक्षराज् (जान्त), ४ गुह्यकेश्वर, ५ मनुष्यधर्मन् (नान्त), ६ धनद, ७ राजराज, ८ धनाधिप, ॥६३॥ ९ किन्नरेश, १० वैश्रवण, ११ पौलस्त्य, १२ नरवाहन, १३ यक्ष, १४ एकपिङ्ग, १५ ऐलविल, १६ श्रीद, १७ पुण्यजनेश्वर, ये सत्रह पुल्लिङ्ग नाम कुबेर के हैं॥६४॥

1. **M. adds in the left hand margin**: शीघ्रादिदृढपर्यन्तं क्रियाविशेषणत्वादद्रव्ये वर्तमानं क्लीबे स्यात्। लिङ्गसङ्ख्याकारकान्वित द्रव्य सत्त्वं भेद्यं विशेष्यम्। 2. M. देहोस्य 3. M. धर्मोस्य 4. M. विश्रवसोपत्यं 5. M. इडविड मातस्य 6. **Kubera.** [17]

अस्योद्यानं चैत्ररथम्

कृष्णमित्रटीका:- अस्य कुबेरस्योद्यानमुपवनं[1] चित्ररथेन निर्वृत्तम्॥[2]

हिन्दी अर्थः:- कुबेर बगीचे का नाम १ - १ चैत्ररथ- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम कुबेर के बगीचे का है।

पुत्रस्तु नलकूबरः।

कृष्णमित्रटीका:- नडः कूवरं रथावयो यस्य सः पुत्रः।[3]

हिन्दी अर्थः:- १ नलकूबर- यह एक पुल्लिङ्ग नाम कुबेर के पुत्र का है।

कैलासः स्थानम्

कृष्णमित्रटीका:- अस्य स्थानं के लसनमस्य केलासः स्फटिकः। तस्यायम्॥[4]

हिन्दी अर्थः:- १ कैलास- यह एक पुल्लिङ्ग नाम कुबेर के स्थान का है।

अलका पूः

कृष्णमित्रटीका:- अलका। अल भूषणे (भ्वा. प. से.)। 'क्वुन् शिल्पिसञ्ज्ञयोः-' (उ. २. ३२)। क्षिपकादित्वात् (वा. ७. ३. ४५) नेत्वम्॥[5]

हिन्दी अर्थः:- १ अलका- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम कुबेर की पुरी का है।

विमानं तु पुष्पकम् ॥६५॥

कृष्णमित्रटीका:- अस्य विमानं पुष्पकम्। पुष्पमिव। 'इवे प्रतिकृतौ' (५.३. ९६) कः॥७०॥[6]

हिन्दी अर्थः:- १ पुष्पक- यह एक पुल्लिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग नाम कुबेर के विमान का है।

स्यात्किन्नरः किंपुरुषस्तुरङ्गवदनो मयुः।

कृष्णमित्रटीका :- किञ्चिन्नरोऽश्वमुखत्वात्[7] कुत्सितो नरो वा। मिनोति मयुः। 'डुमिञ् प्रक्षेपे' (स्वा. उ. अ.), 'भृमृशी-'[8] (उ. १. ७) इत्युः। किंनरनाम ॥[9]

हिन्दी अर्थ :- १ किन्नर, २ किम्पुरुष, ३ तुरङ्गवदन, ४ मयु- ये चार पुल्लिङ्ग नाम किन्नरों के हैं।

निधिर्ना शेवधिः

कृष्णमित्रटीका:- निधीयते निधिः। 'ना' इति पूर्वोत्तराभ्यां सम्बध्यते। शेतेऽनेन[1] शेवं सुखम्। 'इणशीभ्यां वन्' (उ. १. १५३)। शेवं धीयतेऽस्मिन्[2]। 'कर्मण्यधिकरणे च' (३. ३. ९३) इति किः। निधिनाम॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ निधि, २ शेवधि- ये दो पुल्लिङ्ग नाम खजाने के हैं।

भेदाः शङ्खपद्मादयो निधेः॥६६॥[4]

'महापद्मश्च पद्मश्च शङ्खो मकरकच्छपौ (२९)
मुकुन्दकुन्दनीलाश्च खर्वश्च निधयो नव' (३०)

इति स्वर्गवर्गः॥१॥

कृष्णमित्रटीका:- शाम्यति खमनेन। 'शमे खः' (उ. १. १०२)। पद्मा लक्ष्मीरस्यास्ति। 'महापद्मश्च पद्मश्च शङ्खो मकरकच्छपौ। मुकुन्दकुन्दनीलाश्च खर्वश्च निधयो नव'॥६६॥[5]

इति स्वर्गवर्गः॥१॥

हिन्दी अर्थ :- खजाने के भेद पद्म, शङ्ख इत्यादि ॥६६॥ (यहाँ "ना" अर्थात् पुँल्लिंग काककी आँख की पुतली के समान दोनों में सम्बन्ध है) पद्म, शंख (पुल्लिङ्ग) आदि नाम निधि अर्थात् खजाने के भेदवाची हैं। महापद्म, पद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, खर्व- ये नव (पुल्लिङ्ग) नाम निधि अर्थात् खजाने के भेद हैं॥

इति स्वर्गवर्गः॥१॥

अथ व्योमवर्गः॥२॥

आकाश के १६ नाम

द्योदिवौ द्वे स्त्रियामभ्रं व्योम पुष्पकरमम्बरम्।
नभोऽन्तरिक्षं गगनमनन्तं सुरवर्त्म खम्॥१॥
वियद्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाशविहायसी।

1. M. कुवेरस्य उद्यानमुपवनं 2. **Caitraratha,** the garden of Kubera [1] 3. **Nalakubara,** the son of Kubera [1] 4. **Kailasa,** the abode of Kubera [1] 5. **Alaka, the capital of Kubera** [1] 6. **Puspaka,** the car of Kubera [1]. 7. M. किंचिन्नराश्वमुखत्वात् 8. M. भमिशी 9. **Kinnara,** the mystical being, having the body of a man and the head of a horse [4] M. शेतेनेन

1. M. धीयतेस्मिन् 2. **Treasure** [2] 3. **Ksiraswami and Bhanuji Diksita read this quarter as:** भेदाः पद्मशङ्खादयो निधेः 4. **Various treasures of Kubera** 5. M. अन्तः ऋक्षाण्यत्र।

'विहायसोऽपि नाकोऽपि द्युरपि स्यात्तदव्ययम् (३१)
तारापथोऽन्तरिक्षं च मेघाध्वा च महाविलम् (३२)
विहायाः शकुने पुंसि गगने पुंनपुंसकम्' (३३)

इति व्योमवर्गः ॥२॥

कृष्णमित्रटीका :- अभ्रति स्थैर्यं गच्छति। अभ्र गतौ (भ्वा. प. से.)। अच् (३. १. १३४)। व्ययति व्योम। व्येञ् (भ्वा. प. से.)। 'नामन्सीमन्-' (उ. ४. १५०) इति मन्नन्तो निपातितः। पुष्कं वारि राति। अम्बं शब्दं राति। 'अवि शब्दे' (भ्वा. आ. से.)। न बभस्ति नभः। भस दीप्ती (जु०.प. से.)। क्विप् (३. २. १७८)। अन्तर्ऋक्षाण्यत्र[1]। पृषोदरादित्वात् (६. ३. १०६) इत्वम्। गच्छत्यनेन गगनम्। 'गमेर्गश्च' (उ. २. ७७) इति युच्। खन्यते खम्। डः (वा. ३. २. १०१)॥१॥ वियच्छति विरमति वियत्। क्विपि (३.२.७५) मलोपं (वा. ६. ४. ४०) तुक् (६. १. ७१)। विष्णोः पदं विक्रमोऽत्र[2]। आकाशन्ते देवा अत्र। विजहाति स्वँ विहायः। ओजहातेरसुन्॥[3]

इति व्योमवर्गः ॥२॥

हिन्दी अर्थ :- १ द्यो, २ दिव, ३ अभ्र, ४ व्योमन् (नान्त), ५ पुष्कर, ६ अम्बर, ७ नभस् (सान्त), ८ अन्तरिक्ष, ९ गगन, १० अनंत, ११ सुरवर्त्मन् (नान्त), १२ ख, ॥१॥ १३ वियत् (तान्त), १४ विष्णुपद, १५ आकाश, १६ विहायस् (सान्त), १७ विहायस, १८ नाकसू, १९ द्युसू- ये उन्नीस ''तारापथ (पुल्लिङ्ग), अन्तरिक्ष (नपुंसकलिङ्ग), मेघाघ्वन् (नान्त पुल्लिङ्ग), महाबिल (नपुंसकलिङ्ग)- ये चार कुल तेईस नाम आकाश के हैं। द्यो और दिव् शब्द स्त्रीलिंग हैं। आकाश और विहायस् शब्द (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) हैं। और द्युस् यह अव्यय है शेष नपुंसकलिङ्ग हैं'' ॥२॥

१. विहायस, २. नाक, ३. द्यु, ४. तारापथ, ५. अन्तरिक्षम्, ६. मेघाध्वा, ७. महाविलम्, ८. विहाय- ये आठ नाम भी प्रक्षिप्त 'आकाश' के ही हैं। इनमें प्रथम तीन अव्यय हैं। 'विहायस्' शब्द आकाश अर्थ में पुल्लिङ्ग और नपुल्लिङ्ग दोनों में प्रयुक्त होता है और पक्षी अर्थ में केवल पुल्लिङ्ग में होता है। शेष चार नपुंसकलिङ्ग हैं।

इति व्योमवर्गः ३ ॥२॥

1. M. विक्रमोत्र 2. Sky [16] 3. M. हनिकुखि,

अथ दिग्वर्गः ॥३॥

दिशा के ५ नाम

दिशस्तु ककुभः काष्ठा आशाश्च हरितश्च ताः।

कृष्णमित्रटीका :- दिशत्यवकाशं दिक् । 'ऋत्विग-' (३. २. ५९) इत्यादिना क्विन्। कं वातं स्कुभ्नाति विस्तारयति। 'स्कुभ' इति सौत्रो (३.१.८२) धातुः। पृषोदरादित्वात् (६. ३. १०९) सलोपः। काशते काष्ठा। 'हरिकुषि[1]-' (उ. २.२) इति क्थन्। आसमन्तादश्नुते व्याप्नोति। हरन्ति नयन्त्यनया 'हसृरुहि-' (उ. १. ९७) इतिः। अदशानाम् ॥१॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ दिश् (शान्त), २ ककुभ (भान्त), ३ काष्ठा, ४ आशा, ५ हरित् (तांत)- ये पाँच स्त्रीलिङ्ग नाम दिशा के हैं।

प्राच्यवाचीप्रतीच्यस्ताः पूर्वदक्षिणपश्चिमाः ॥१॥
उत्तरा दिगुदीची स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- प्राञ्चति प्राप्नोति सूर्य प्राची। 'ऋत्विग्-' (३. २. ५९) आदिना क्विन्। अवाञ्चति । 'अव' इत्यव्ययं मध्यार्थे, अपदिशमिति वत्। 'अवो मध्यार्थे' इति स्वामी। प्रति पश्चाद्दिनान्तेऽञ्चति[3] सूर्यम्। पूर्वदक्षिणेति 'सर्वनाम्नो वृत्तिमात्रे पुम्वत्' (वा. ५. ३. २८)। उत्तरत्यतिशयेनोत्तराः। उत्तरमश्चत्यर्कोऽस्याम्[4]॥

हिन्दी अर्थ :- प्राची, अवाची, प्रतीची, उदीची- ये क्रम से स्त्रीलिङ्ग दिशाओं के नाम है।

दिश्यं तु त्रिषु दिग्भवे।
''अवाग्भवमवाचीनमुदीचीनमुदग्भवम् (३४)
प्रत्यग्भवं प्रतीचीनं प्राचीनं प्राग्भवं त्रिषु (३५)

कृष्णमित्रटीका :- दिशि भवं दिश्यम्। 'दिगादिभ्यो यत्' (४. ३. ५४)॥२॥[5]

हिन्दी अर्थ :- दिशोत्पन्नवस्तु का नाम दिश्य है, दिशा में होने वाले को दिश्य कहते हैं और यह तीनों लिंगवाची है। जैसे - 'दिश्यो हस्ती, दिश्या हस्तिनी' इन वचनों में हस्ती के साथ दिश्य शब्द पुँल्लिंग है और हस्तिनी के साथ दिश्यशब्द स्त्रीलिंग है। ''अवाचीन, उदीचीन,

1. **Direction** [5] 2. M. पश्चाद्दिनान्ते अञ्चति 3.M. उत्तरमश्चत्यर्को स्याम्। 4. **East, west,** south and north [2 each] 5. **The thing belonging to a direction** [1]

प्रतीचीन, प्राचीन ये तीनों लिंगवाची चार नाम यथाक्रम दक्षिण, उत्तर, पश्चिम, पूर्व इन चार दिशाओं में होने वाले पदार्थ के हैं।''

दिग्पतियों के १-१ नाम

इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैऋतो वरुणो मरुत्॥२॥
कुबेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात्।
रविः शुक्रो महीसूनः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः (३६)
बुधो बृहस्पतिश्चेति दिशां चैव तथा ग्रहाः (३७)

कृष्णमित्रटीका:- इन्द्रादयः पूर्वादिस्वामिनः॥[1]

हिन्दी अर्थ :- इन्द्र, बह्नि, यम, नैऋत, वरुण, पवन, कुबेर, ईश ये आठों (पुल्लिङ्ग) नाम क्रम से पूर्व, अग्नि कोण आदि आठों दिशाओं के है। १ कुबेर, ईशान कोण के स्वामी का नाम- १ ईश, ये आठों (पुल्लिङ्ग) नाम पूर्व आदि दिशाओं के क्रम से स्वामियों के हैं। ''१ रवि, २ शुक्र, ३ महीसूनु, ४ स्वर्भानु, ५ भानुज, ६ विधु, ७ बुध, ८ बृहस्पति- ये आठ ग्रहों के (पुंल्लिङ्ग) नाम क्रम से पूर्व आदि दिशाओं के स्वामियों के हैं।''

दिग्गजों के १-१ नाम

ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः॥३॥
पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः।

कृष्णमित्रटीका:- पुण्डरीकादयः। तत्तुल्य-वर्णत्वात्। वामनः खर्वत्वात्। पुष्पमित्र दन्ता अस्य। सर्वस्यां भूमौ विदितः। शोभनानि प्रतीकान्यङ्गान्यस्य। एते दिशाधारका गजाः॥४॥[2]

हिन्दी अर्थ :- पूर्व दिशा के हस्ती का नाम ऐरावत १। अग्निकोण के हस्ती का नाम पुण्डरीक २। दक्षिण दिशा के हस्ती का नाम वामन ३। नैर्ऋत्य कोण के हस्ती का नाम कुमुद ४। पश्चिम दिशा के हस्ती का नाम अञ्जन ५॥३॥ वायु कोण के हस्ती का नाम पुष्पदन्त ६। उत्तर दिशा के हस्ती का नाम -सार्वभौम ७। ईशान कोण के हस्ती का नाम सुप्रतीक ८ - ये आठ पुल्लिङ्ग नाम पूर्व आदि दिशाओं के क्रम से दिग्गज अर्थात् दिशाओं को धारण करनेवालों के हैं।

दिग्गजपत्नी के १-१ नाम

करिण्योऽभ्रमुः कपिला-पिङ्गलानुपमा क्रमात्॥४॥
ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती चाञ्जना चाञ्जनावती।

कृष्णमित्रटीका:- करिण्यः हस्तिन्यः। अभ्र आकाशे[1] माति। मित्रय्वादिवात् (उ. १. ३७) कुः। कपिला वर्णेन। ताम्रौ कर्णौ यस्याः। अञ्जना वर्णेन। 'अङ्गना' इति पाठान्तरम् अञ्जनमस्त्यस्याः। 'मतौ बह्वचः' (६. ३. ११९) इति दीर्घः। ऐरावतादिपत्नीनाम॥५॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ अभ्रमु, २ कपिला, ३ पिंगला, ४ अनुपमा,॥४॥ ५ ताम्रकर्णी, ६ शुभ्रदन्ती, ७ अङ्गना, ८ अञ्जनावती- ये आठ स्त्रीलिङ्ग नाम दिग्गजों की हथिनियों के हैं।

क्लीबाव्ययं त्वपदिशं दिशोर्मध्ये विदिक् स्त्रियाम्॥५॥

कृष्णमित्रटीका:- दिशोर्मध्यमपदिशम्। 'अप' इति मध्यर्थे। इदं क्लीबमव्ययं च। शरदादित्वात् (५. ४. १०७) टच्। दिग्भ्यां विनिर्गता विदिक्। कोणनाम॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ अपदिश, २ विदिश (शान्त)- ये दो नाम अग्नि कोण आदि दिशाओं के मध्यवाली दिशा के हैं जिसमें अपदिशशब्द नपुंसकलिङ्ग और अव्यय है तथा विदिक् शब्द स्त्रीलिङ्ग है॥५॥

अभ्यन्तरं त्वन्तरालम्

कृष्णमित्रटीका:- अन्तरमभिगतम्। अन्तर-मासमन्ताल्लांति अन्तरालम्। मध्यनाम॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ अभ्यन्तर, २ अन्तराल- ये दो नपुंसक लिङ्ग नाम मण्डल अर्थात् घेरे के हैं।

चक्रवालं तु मण्डलम्।

कृष्णमित्रटीका:- चक्राकारेण वाडते। 'वाड़ आप्लव्ये' (भ्वा. आ. से.)। मण्डं भूषणं लाति। मण्डलनाम॥६॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १ चक्रवाल, २ मण्डल- ये दो नपुंसक लिङ्ग नाम मण्डल अर्थात् गोलाकार के हैं।

मेघ के १५ नाम

अभ्र मेघो वारिवाहः स्तनयित्नुर्बलाहकः॥६॥
धाराधरो जलधरस्तडित्वान्वारिदोऽम्बुभृत्।
घन-जीमूत-मुदिर-जलमुग्धूमयोनयः॥७॥

कृष्णमित्रटीका:-अभ्रति अभ्रम्। अभ्र गत्यर्थः (भ्वा. प. से.)। मेहति सिञ्चति। न्यङ्क्वादित्वात् (७.

---

1. **The lords of eight directions**. [1 each] 2. **Elephants guarding eight direction &** [1each]

1. M. अभ्रे आकाशे 2. **Female elephants** of eight directions [1 each] 3. **An intermediate region** (of the compass[2]) 4. **Intermediate** [2] 5. **Circle** [2]

३. ५३) घः। वारि वहति । अण् (३. २.१) । स्तनयति। 'स्तनगदी देवशब्दे' (चु. उ. से.) चौरादिकात् 'स्तनि-' (उ. ३. २९) इति इत्नुः। णे रयू (६. ४. ५५)। वारिवाहको बलाहकः। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। धाराया धरः। तडितः सन्त्यस्य[1] । वारि ददाति। अम्बु बिभर्ति॥७॥ हन्यते वायुना घनः। 'मूर्तौ घनः' (३. ३. ७७) इति साधुः। जीवनं जलं मूतं बद्धमस्मिन्। 'मूङ् बन्धने' (भ्वा. आ. से.)। पृषोदरादिः (६. ३. १०९) मोदन्तेऽनेनं[2] मुदिरम्। 'इषिमदिमुदि-' (उ. १. ५१) इति किरच्। जलं मुञ्चति । धूमो योनिरस्य। मेघनाम ॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ अभ्र (नपुंसकलिङ्ग), २ मेघ, ३ वारिवाह, ४ स्तनयित्नु, ५ बलाहक, ॥६॥ ६ धराधर, ७ जलधर, ८ तडित्वत् (मत्वन्त), ९ वारिद, १० अम्बुभृत् (तान्त), ११ घन, १२ जीमूत, १३ मुदिर, १४ जलमुच् (चान्त), १५ धूमयोनि- ये पन्द्रह पुल्लिङ्ग नाम मेघ के हैं॥७॥

कादम्बिनी मेघमाला

कृष्णमित्रटीका:- कादम्बाः कलहंसा सन्त्यस्याम्। ते हि मेघमनुधावन्ति मेघपङ्क्तिनाम॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ कादम्बिनी, २ मेघमाला, ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम मेघ की पंक्ति के हैं।

त्रिषु मेघभवेऽभ्रियम्॥८॥

कृष्णमित्रटीका:-अभ्रे भवम्। 'समुद्राभ्राद्घः' (४.४.११८)। छान्दसत्वं प्रायिकम्। मेघभवनाम ॥८॥[5]

हिन्दी अर्थ :-मेघ में उत्पन्न वस्तु का एक नाम अभ्रिय है जो तीनों लिङ्ग में प्रयुक्त होता है। जैसे- 'अभ्रिया आपः अभ्रिय आसारः, अभ्रियं जलम्' इन वाक्यों में स्त्रीलिङ्ग, पुल्लिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग क्रम से हैं

स्तनितं गर्जितं मेघनिर्घोषे रसितादि च।

कृष्णमित्रटीका:- स्तनगर्जरसशब्दार्थाः मेघशब्दनाम ॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ स्तनित, २ गर्जित, ३ मेघनिर्घोष, ४ रसित- ये चार नपुंसकलिङ्ग नाम मेघ के गर्जन के हैं। ॥८॥

शंपाशतह्रदाह्रादिन्यैरावत्यः क्षणप्रभा।९॥
तडित्सौदामनी विद्युच्चञ्चला चपला अपि।

कृष्णमित्रटीका:- शं सुखं पिबति । शतं ह्रदा जलधारा अस्याः। ह्रादोऽस्त्यस्याः।[1] इरा जलमस्त्यस्य इरावान्मेघः। तस्येयम्। क्षणं प्रभाऽस्याऽ[2]॥९॥ ताडयति। 'ताडेर्णिलुक्च' (उ. १. ९८) इतीन्। सुदाम्नाऽद्रिणैकदिक्[3] सौदामनी। 'तेनैकदिक्' (४. ३. ११२) इत्यण्। 'सौदामिनी' इति पाठश्चिन्त्यः। विद्योतते। 'चञ्चु गतौ' (भ्वा. प. से.) । घञ् (३. ३. १८)। चञ्चं लाति। 'चुप मन्दायां गतौ' (भ्वा. प. से.) । कलच् (उ. १. १११)। विद्युन्नाम ॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ शम्पा, २ शतह्रदा, ३ ह्रादिनी, ४ ऐरावती, ५ क्षणप्रभा, ६ तडित् (तान्त), ७ सौदामनी, ८ विद्युत् (तान्त), ९ चञ्चला, १० चपला- ये दश स्त्रीलिङ्ग नाम बिजली के हैं॥९॥

स्फूर्जथुर्वज्रनिर्घोषे

कृष्णमित्रटीका:- टुओ स्फूर्जा (वज्रनिर्घोषे)। 'ट्वितोऽथुच्[5]' (३. ३. ८९)। स्फूर्जनं स्फूर्जथुः[6] । वज्रस्य निर्घोषः शब्दः। वज्रशब्दनाम ॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १ स्फूर्जथु, २ वज्रनिर्घोष- ये दो पुल्लिङ्ग नाम वज्र की ध्वनि के हैं।

मेघज्योतिरिरंमदः॥१०॥

कृष्णमित्रटीका:- अन्योन्यसघट्टनेन मेघान्निःसृत्य वृक्षादौ ज्योतिः पतति स इरंमदः। इरया जलेन माद्यति दीप्यते। अबिन्धनत्वात्। 'उग्रंपश्येरंमद-' (३. ४. ३७) इति निपातितः। वज्राग्निनाम ॥१०॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १ मेघज्योतिष् (सान्त), २ इरम्मद- ये दो पुल्लिङ्ग नाम मेघ की ज्योति के हैं।

इन्द्रायुधं शक्रधनुः

कृष्णमित्रटीका:- इन्द्रस्यायुधम्। शक्रस्यधनुः। मेघप्रतिफलिता हि सूर्यरश्मयो धनुराकारेण दृश्यन्ते[9]। इन्द्रधनुनाम॥[10]

---

1. M. तडितः सन्त्यस्या 2. M. मोदन्तेनेन 3. **Cloud** [15] 4. **A line of clouds** [2] 5. **A thing produced from clouds** [1] 6. **The thunder of clouds** [4]

1. M. ह्रादोस्त्यस्याः 2. M. प्रभास्याः 3. M. सुदाम्ना आद्रिण एदिक् 4. **Lightning** [10] 5. M. ट्वितोथुच 6. M. स्फर्जथुः 7. **A peal of thunder** [2] 8. **A flash of lightning** [2] 9. M. दश्यन्ते 10. **The rain-bow** [2]

हिन्दी अर्थ :- १ इन्द्रायुध, २ शक्रधनुष (सान्त), ३ रोहित- ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम इन्द्र के धनुष के हैं।

तदेव ऋजुरोहितम् ॥१०॥

कृष्णमित्रटीका:- तदेव इन्द्रस्य धनुरुत्पातवशाद[1] ऋजु अवक्रं रोहितम्। रोहणं रोहः सञ्जातोऽस्य[2]। तारकादित्वात् (५. २. ३६) इतच्। सरलधनुर्नाम ॥[3]

हिन्दी अर्थ :- सरल इन्द्रधनुष का नाम रोहित है॥१०॥

वृष्टिर्वर्षम्

कृष्णमित्रटीका:- वर्षणं वृष्टिः। 'वृषु सेचने' (भ्वा. प. से.)। अज्विधौ भयादीनामुपसङ्ख्यानात् (वा. ३. ३. ५६) वर्षम्। वृष्टिनाम ॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ वृष्टि, २ वर्ष, प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितिय नपुंसक लिङ्ग- ये दो नाम वर्षा के हैं।

तद्विघातेऽवग्राहावग्रहौ समौ ॥११॥

कृष्णमित्रटीका:- तस्या वृष्टेर्विघाते निरोधे 'अवे ग्रहो वर्षप्रतिबन्धे' (३. ३. ५१) इति वा घञ्। वृष्टिविघातनाम ॥११॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ अवग्राह, २ अवग्रह- ये दो पुल्लिङ्ग नाम वर्षा के निरोधक झुरा के हैं।

धारासंपात आसारः

कृष्णमित्रटीका:- धाराणां संपातः संततं पतनम्। आसरणमासारः। 'सृ स्थिरे' (३. ३. १७) 'भावे' (३. ३. १७) इति घञ्। महावृष्टिनाम ॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १ धारासम्पात, २ आसार- ये दो पुल्लिङ्ग नाम निरन्तर वर्षने के हैं।

शीकरोऽम्बुकणाः स्मृताः ॥११॥

कृष्णमित्रटीका:- शीकते । 'शीकृ सेचने' (भ्वा. आ. से.)। ऋच्छेरन् (उ. ३. १३१) इति बाहुलकादरन्। जलकणनाम ॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १ शीकर- यह एक पुल्लिङ्ग नाम जल के छोटे-छोटे कणकों (फुहारों) का है॥११॥

1. M. धनुः उत्पातवशात् 2. M. संजातोऽस्य 3. **The straight red bow of Indra** [1] 4. **Rain** [2] 5. **Drought** [2] 6. **A heavydown-fall of rain** [2] 7. **A drop of water of rain** [2]

वर्षोपलस्तु करका

कृष्णमित्रटीका:-कृणोति । 'कृञ् हिंसायाम्' (स्वा. उ. अ.)। 'कृञादिभ्यः-' (उ. ५. ३५) इति वुन्। क्षिपकादिः। वेनौरी। (-नाम) ॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ वर्षोपल (पुल्लिङ्ग), २ करका स्त्रीलिङ्ग, ये दो नाम ओलों के हैं।

मेघच्छन्नेऽह्नि दुर्दिनम् ॥१२॥

कृष्णमित्रटीका:- मेघेनच्छन्नमाच्छादितम्। वदरी (नाम) ॥१२॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ दुर्दिन यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम मेघ से आच्छादित हुए दिन का है।

अन्तर्धान के ८ नाम

अन्तर्धाव्यवधा पुंसि त्वन्तर्धिरपवारणम्।
अपिधान-तिरोधान-पिधानाच्छादनानि च ॥१३॥

कृष्णमित्रटीका:- धाञः (जु. उ. अ.) अङ्। अन्तर्धा किः अन्तर्धिः। 'वृञ् आच्छादने' (चु. उ. से.) चौरादिकाल्ल्युट् (३.३.११५)। गतिसमासः (२.२. १८)। 'वष्टि भागुरिः-' इति वाल्लोपः पिधानम्। व्यवधाननाम ॥१३॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ अन्तर्धा, २ व्यवधा (स्त्रीलिङ्ग), ३ अन्तर्धि (पुल्लिङ्ग), ४ अपवारण (नपुंसकलिङ्ग), ॥१२॥ ५ अपिधान, ६ तिरोधान, ७ पिधान, ८ आच्छादन (नपुंसकलिङ्ग)- ये आठ नाम आच्छादन (बादल से ढ़क जाने) के हैं। जिसमें अन्तर्धिशब्द पुँल्लिंग हैं।

चन्द्र के २० नाम

हिमांशुश्चन्द्र याश्चन्द्र इन्दुः कुमुदवान्धवः।
विधुः सुधांशुः शुभ्रांशुरोषधीशो निशापतिः ॥१४॥
अब्जो जेवातृकः सोमो ग्लौर्मृगाङ्कः कलानिधिः।
द्विजराजः शशधरो नक्षत्रेशः क्षपाकरः ॥१५॥

कृष्णमित्रटीका:- हिमा अंशवो यस्य। चन्द्र आह्लादको मस्यति परिणमते ।'चदि आह्लादने' (भ्वा. प. से.), स्फायितञ्चि- (उ. २. १३) इति रक्। उनत्ति। 'उन्देरिच्चादेः' (उ. १. १२) इत्युः। विशेषेण धयन्ति पिबन्त्यनेन सुराः। बाहुलकात्कुः (उ. १. २२)। सुधायुक्ता

1. **Hail** [2] 2. **A cloudy day** [2] 3. **Concealment or covering** [8]

अंशवोऽस्य।[1] ओषधीनामीशः, अप्यायकत्वात् ॥१४॥ अद्भ्यो जातोऽब्जः।[2] जीवयति। जीवेः 'आतृकन्वृद्धिश्च' (उ. १. ८०)। सूतेऽमृतं[3] सोमः। 'अर्तिस्तुसु-' (उ. १. ४०) इत्यादिना मन्। ग्लायति[4] क्षीयते ग्लौः। 'ग्लानुदिभ्यां डौः' (उ. २. ३४)। मृगोऽङ्केऽस्य[5]। कला निधीयन्तेऽत्र[6]। द्विजानां राजा। शशस्य धरः। नक्षत्राणामीशः। क्षपां करोति, उद्योतयति। चन्द्रनाम ॥१५॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१ हिमांशु, २ चन्द्रमस् (सान्त), ३ चन्द्र, ४ इन्दु, ५ कुमुदबान्धव,॥१३॥ ६ विधु, ७ सुधांशु, ८ शुभ्रांशु, ९ ओषधीश, १० निशापति, ११ अब्ज, १२ जैवातृक, १३ सोम, १४ ग्लौ, १५ मृगाङ्क, १६ कलानिधि ॥१४॥ १७ द्विजराज, १८ शशधर, १७ नक्षत्रेश, २० क्षपाकर- ये बीस पुल्लिङ्ग नाम चन्द्रमा के हैं।

कला तु षोडशो भागो

कृष्णमित्रटीका:- कलयति सङ्ख्याति कला। अच् (३. १. १३४)। चन्द्रस्य षोडशो भागः। कलानाम ॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १ कला- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम चन्द्रमा के मण्डल के सोलहवें भाग का है।

बिम्बोऽस्त्री मण्डलं त्रिषु ।

कृष्णमित्रटीका:- बिम्बति भाति। सौत्रो धातुः। मण्डलनाम ॥[9]

हिन्दी अर्थ :- १ बिम्ब, २ मण्डल- ये दो नाम बिम्ब के हैं जिसमें बिम्बशब्द (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) है और मण्डलशब्द त्रिलिंगी है ॥१५॥

भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्धः

कृष्णमित्रटीका:- भिद्यते स्म भित्तम्। शक्यते भेत्तुं शकलम्। कलच् (उ. १. ११२)। खण्ड्यते खण्डः। 'खडि भेदने' (चु. प. से.) घञ्। ऋध्नोति अर्घ। 'ऋधु वृद्धौ' (स्वा. प. से.) घञ्। शकलः शकलम्। खण्डः खण्डम्॥[10]

हिन्दी अर्थ :- १ भित्त, २ शकल, ३ खण्ड, ४ अर्द्ध, ये चार नाम टुकड़े के हैं। जिसमें शकल और खण्डशब्द पुल्लिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग हैं।

अर्धं समेऽशंके ॥१६॥

कृष्णमित्रटीका:- 'समप्रविभागोऽर्धं नपुंसकं खण्डमात्रे पुमान्' इति स्वामी। 'वाच्यलिङ्गः' इत्यन्ये। 'वा पुंसीति पूर्वोतरान्वयि' इत्यपरे। खण्डनाम ॥१६॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १अर्द्ध- यह एक नाम समभाग के है। अर्ध शब्द पुल्लिङ्ग और वाच्य लिङ्ग भी है। समान भाग अर्ध में यह नपुंसकलिङ्ग है।

चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना

कृष्णमित्रटीका:- चन्द्रोऽस्त्यस्याः। ठन् (५. २. ११५)। कुमुदानामियम्, विकासहेतुत्वात्। ज्योतिरस्त्यस्याम् 'ज्योत्स्नातमिस्त्रा-' (५. २. ११४) इति साधुः। ज्योतिर्नाम॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ चन्द्रिका, २ कौमुदी, ३ ज्योत्स्ना- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम चन्द्रमा की चाँदनी के हैं।

प्रसादस्तु प्रसन्नता।

कृष्णमित्रटीका:- षदलृ (भ्वा. तु. अ.)। घञ्। प्रसादः। नैर्मल्यनाम॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ प्रसाद (पुल्लिङ्ग), २ प्रसन्नता स्त्रीलिङ्ग- ये दो नाम निर्मलता के हैं॥१६॥

कलङ्काङ्कौ लाञ्छनं च चिह्नं लक्ष्म च लक्षणम् ॥१७॥

कृष्णमित्रटीका:- कं ब्राह्मणं लङ्कयति हीनतां गमयति कलङ्कः। 'लकि गतौ'। 'कर्मण्यण्' (३. २.१)। अङ्क्यतेऽनेन।[4] 'अकि लक्षणे' (भ्वा. प. से.)। घञ्। 'लच्छ लाच्छि लक्षणे'।[5] (भ्वा. प. से.)। लाञ्छ्यतेऽनेन[6] चहयति चिह्नम्। 'चह परिकल्पने' (भ्वा. प. से.)। बाहुलकान्नक्। इत्वं च। लक्षयति लक्ष्म। मनिन् (३. २. ७५)। चिह्ननाम ॥१७॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १ कलङ्क, २ अङ्क, ३ लाञ्छन, ४ चिह्न, ५ लक्ष्मन्, ६ लक्षण- ये छः नाम चिह्न के हैं जिसमे कलङ्क, अङ्क ये दो शब्द पुल्लिङ्ग हैं शेष नपुंसकलिङ्ग है।

सुषमा परमा शोभा

---

1. M. अंशवोस्य 2. M. जातः अब्जः 3. M. सूतं अमृतं 4. M. ग्लायते 5. M. मृगोङ्केस्य 6. M. निधीयन्तेत्र 7. **Moon** [20] 8. **A digit of the moon** [1] 9. **Arb of disc** [2] 10. **Part** [1]

1. **A halt portion** [1] 2. **Moonlight** [3] 3. **Clearness** [2] 4. M. अङ्क्यतेनेन 5. **In the Dhatupatha**, the root-forms are given as 'लछ-लाछि' i. e. without 'च्' 6. M. लाञ्छ्यतेनेन 7. **Mark** [6]

कृष्णमित्रटीका:- शोभनं समं सर्वमनया। 'सुविनिर्दुर्भ्यः[1] सुपिसूतिसमाः' (८. ३. ८८) । इति षः। उत्कृष्टशोभानाम[2]॥

हिन्दी अर्थ :- १ सुषमा- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम उत्तम शोभा का है।

शोभाकान्तिर्द्युतिश्छविः।

कृष्णमित्रटीका:- शोभयति। 'शुभ शोभायाम्' (तु. प. से.) । अच्। काम्यते। क्तिन्। द्योत्यतेऽनया[3]। 'इगुपधात्किः' (उ. ४. ११९)। छ्यति[4] छिनत्त्यसारं छविः। शोभानाम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १ शोभा, २ कान्ति, ३ द्युति, ४ छवि- ये चार (स्त्रीलिङ्ग) नाम कान्ति के हैं ॥१७॥

अवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुहिनं हिमम्॥१८॥
प्रालेयं मिहिका च

कृष्णमित्रटीका:- अवश्यायते । 'श्यैङ् गतौ' (भ्वा. आ. अ.)। 'श्याद्व्यध-' (३. १. १३१) इति णः। निह्रियते नीहारः। घञ् (३. ३. १९)। तोषयति। 'तुषारादयश्च' (उ. ३. १३९) इति आरन् कित्। तोहति। 'तुहिर[6] अर्दने' (भ्वा. प. से.)। 'वेपितुह्योर्ह्रस्वश्च' (उ. २. ५२) इतीनन्। हन्ति हिमम्। 'हन्तेर्हि च' (उ. १. १४७) इति मक्॥१७॥ प्रलयादागतं प्रालेयम्। 'केकयमित्रयु-' (७. ३.२) इत्यादिना साधु॥ हिमनाम॥[7]

हिन्दी अर्थ :- पाले के नाम ७ - १ अवश्याय, २ नीहार, ३ तुषार (पुल्लिङ्ग), ४ तुहिन, ५ हिम, ६ प्रालेय (नपुंसकलिङ्ग), ७ मिहिका (स्त्रीलिङ्ग)- ये सात नाम हिम अर्थात् जाड़े के हैं।

अथ हिमानी हिमसंहतिः॥

कृष्णमित्रटीका:- महद्धिमं हिमानी । हिमसमूह (नाम)॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १ हिमानी, २ हिमसंहति- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम बहुत हिम के हैं २॥१८॥

शीतं गुणे

कृष्णमित्रटीका:- गुणे शीतलत्वेऽर्थे[9] शीतत्वात् क्लीबम्॥[10]

हिन्दी अर्थ :- १ शीत- शब्द गुण अर्थात् स्पर्शविशेष में ही नपुंसकलिङ्ग है, गुणवाले में नहीं हैं।

तद्वदर्थाः सुषीमः शिशिरो जडः॥१९॥
तुषारः शीतलः शीतो हिमः सप्तान्यलिङ्गकाः।

कृष्णमित्रटीका:- तद्वदतः गुणवतः वाचका ये तु अन्यलिङ्गाः। 'श्यैङ् गतौ' (भ्वा. प. अ.)। भावे क्तः (३. १. १३४)। 'द्रवमूर्तिस्पर्शयोः श्यः' (६. १. २४) इति सम्प्रसारणम्। सुष्ठु सीमा मर्यादा अस्य। सुषामादित्वात् (८. ३. १८) षः। 'सुष्ठु श्यायते सुशीमः' इति स्वामी। 'शश प्लुतगतौ' (भ्वा. प. से.) । 'अजिरशिशिर-' (उ. १. ५३) इत्यादिना किरच्, इत्वं च। जलति घनीभवति जडः । जलधान्ये॥१९॥ शीतं लाति। शीतलद्रव्यनाम॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ सुषीम, २ शिशिर, ३ जड, ४ तुषार, ५ शीतल, ६ शीत, ७ हिम- ये सातों नाम शीतगुणवाले के हैं। अन्यलिंग अर्थात् त्रिलिंगी हैं। इनका लिंग विशेष्य के अनुसार होता है ॥१९॥

ध्रुव औत्तानपादिः स्याद्

कृष्णमित्रटीका:- ध्रुवति ध्रुवः। कः (३. १. १३५)। उत्तानपादस्यापत्यम्। ऋष्यणि (४. १. ११४) प्राप्ते बाह्वादित्वात् (४. १.९६) इञ् ध्रुवनाम॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ ध्रुव, २ औत्तानपादि ये दो पुल्लिङ्ग नाम उत्तानपाद के पुत्र ध्रुव के हैं।

अगस्त्यः कुम्भसम्भवः॥२०॥
मैत्रावरुणिः

कृष्णमित्रटीका:- अगं स्त्यायति स्तम्भितवान्। मित्रावरुणयोरपत्यम्। ऋषिसमुदायस्यानृषित्वादिञ्। अगस्त्यनाम ॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ अगस्त्य, २ कुम्भसम्भव, ३ मैत्रावरुणि- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम अगस्त्यमुनि के हैं।॥

अस्यैव लोपामुद्रा सधर्मिणी।

कृष्णमित्रटीका:- पतिशूश्रूषा लोपेऽमुद्रा। मुदं न राति ददाति। समानो धर्मोऽस्त्यस्याः[4] सधर्मिणी, पत्नी। एकम्॥[5]

---

1. M. सुविनिदुर्भ्यः 2. **Exquisite beauty** [1]. 3. M. द्योत्यतेनया 4. M. छेति 5. **Beauty** [4] 6. M. तुहिर 7. **M. reads wrongly** as: केकयुमित्रयु- 8. **Snow.** [7] 9. **A mass of snow** [2] शीतलत्वेर्थे 10. **Coldness** [1]

---

1. **Cold or a cold thing** [7] 2. **Dhruva, the son of Uttanapada** [2], 3. **The sage,** Agastya. [3] 4. M. धर्मोस्त्यस्याः 5. **Lopamudra, the wife of Agastya.** [1]

हिन्दी अर्थ :- १ लोपामुद्रा- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम अगस्त्य की समानधर्मवाली स्त्री का है॥२०॥

नक्षत्रमृक्षं भं तारा तारकाप्युडु वा स्त्रियाम् ॥२१॥

कृष्णमित्रटीका :- न क्षरति नक्षत्रम्। 'नभ्राण्नपात्-' (६. ३. ७५) इति निपातितः। ऋषति ऋक्षम्[1]। 'ऋषी गतौ' (तु. प. से.)। 'स्नुव्रश्चि-' (उ. ३. ६६) इति सः कित्[2]। भातीति भम्। 'अन्येष्वपि-' (३. २. १०१) इति डः। तरन्त्यनया। निपातनाद्दीर्घः[3] तारा। स्वार्थे कः तारका। अवतेरुडुः। 'डीङ् गतौ' (भ्वा. दि. आ. अ.)। डीङो मितद्रवादित्वात् (वा. ३. २. १८०) डुः॥२१॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ नक्षत्र, २ ऋक्ष, ३ भ (नपुंसकलिङ्ग), ४ तारा (स्त्रीलिङ्ग), ५ तारका (स्त्रीलिङ्ग), ६ उडु- ये छः नाम नक्षत्र के हैं। इसमे उडु शब्द स्त्रीलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग हैं।

दाक्षायण्योऽश्विनीत्यादितारा:

कृष्णमित्रटीका :- दक्षस्यापत्यानि। 'वा नामधेयस्य' (वा.१. १. ७३) इति वृद्धत्वे 'उदीचां वृद्धात्-' (४. १. १५७) इति फिञ्। गौरादि (४. १. ४१) ङीष्। नक्षत्रनाम।[5]

हिन्दी अर्थ :- अश्विनी आदि २८ नक्षत्रों का एक नाम- १ दाक्षायणी है। अश्विनीनक्षत्र से आदि ले रेवतीपर्यंत दाक्षायणी नाम से प्रसिद्ध हैं।

अश्वयुगश्विनी।

कृष्णमित्रटीका :- अश्वं युनक्ति रूपेण। अश्वो-ऽस्ति[6] रूपेणश्विनो। द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १ अश्वयुज् (जान्त), २ अश्विनी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम अश्विनी नक्षत्र के हैं॥२१॥

राधा विशाखा

कृष्णमित्रटीका :- राध्नोति साधयति कार्यं राधा। विशाखति। 'शाखृ व्याप्तौ' (भ्वा. प. से.)। द्वे॥[8]

हिन्दी अर्थ :-१ राधा, २ विशाखा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम विशाखा नक्षत्र के हैं।

पुष्ये तु सिध्यतिष्यौ

कृष्णमित्रटीका :- पुष्णात्यर्थान् पुष्यः। सिध्यन्त्यनेनार्थाः। त्वेषति। 'त्विष दीप्तौ' (भ्वा. प. अ.)। त्रीणि॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ पुष्य, २ सिध्य, ३ तिष्य- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम पुष्य नक्षत्र के हैं।

श्रविष्ठया ॥२२॥

समा धनिष्ठा

कृष्णमित्रटीका :- श्रवः सोऽस्त्यस्याः[2] 'श्रविष्ठा' ॥२२॥ धनमस्या धनिष्ठा । इयं श्रविष्ठया समेत्यन्वयः। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ श्रविष्ठा, २ धनिष्ठा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम धनिष्ठा नक्षत्र के हैं। श्रविष्ठा के तुल्य हैं।

स्युः प्रोष्ठपदा भद्रपदा स्त्रियाम्।

कृष्णमित्रटीका :- प्रोष्ठो गौस्तस्येव पादाः। 'सुप्रातसुश्च-' (५. ४. १२०) इति निपातितः। भद्रं पदं यासां ताः। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- पूर्वभाद्रपदा और उत्तरभाद्रपदा नक्षत्रों के नाम २ - १ प्रोष्ठपदा, २ भाद्रपदा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम पूर्वाभाद्रपद और उत्तराभाद्रपद के हैं॥२२॥

मृगशीर्षं मृगशिरस्तस्मिन्नेवाग्रहायणी ॥२३॥

कृष्णमित्रटीका :- मृगस्येव शीर्षं शिरोऽस्य[5]। अग्रेहायनमस्याः। 'पूर्वपदात्-' (८. ४. ३.) इति णः। त्रीणि[6]॥२३॥

हिन्दी अर्थ :-१ मृगशीर्ष (नपुंसकलिङ्ग), २ मृगशिर (सान्त नपुंसकलिङ्ग), ३ आग्रहायणी स्त्रीलिङ्ग- ये तीन नाम मृगशिर नक्षत्र के हैं।

इल्वलास्तच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः।

कृष्णमित्रटीका :- 'ईल स्वप्ने क्षेपणे च' (तु. प. से। 'सानसिवर्णसि-' (उ. ४. १०७) इति वलच् गुणाभावश्च। 'इन्यकाः' इति पाठे, इन्वति प्रीणयति। 'इति प्रीणने' (भ्वा. प. से.)। इदितो नुम् (७. १. ५८)। सञ्ज्ञायां क्वुन् (उ. २. ३२)। क्षिपकादिः (वा. ७. ३. ४५)। मृगशीर्षशिरोदेशस्थानां पञ्चानां स्वल्पतारकाणां नाम॥[7]

---

1. ऋच्छम् 2. M. इतिः स कित् 3. M. निपातनादीर्घः 4. **Star.** [6] 5. **Twenty-seven lunar marsions known as asvini** & C. 6. M. अश्वोस्ति 7. **Asvini** [2] 8. **Visakha.** [2]

1. **Pusya**. 2. M. सोस्त्यस्या 3. M. धनिष्ठा (२) 4. **Bhadrapada** [2] 5. M. शिरोस्य 6. M. मार्गशीर्ष (३) 7. **Five stars in the head of** मृगशिरा or orion.

हिन्दी अर्थ :- मृगशिर के मस्तक पर रहने वाले नक्षत्रों का एक नाम- १ इल्वल- ये एक स्त्रीलिङ्ग नाम मृगशिर के शिर के देश में रहने वाले पाँच तारों का हैं ॥२३॥

बृहस्पति के ९ नाम

बृहस्पतिः सुराचार्यो गीष्पतिर्धिषणो गुरुः ॥२४॥
जीव आङ्गिरसो वाचस्पतिश्चित्रशिखण्डिजः।

कृष्णमित्रटीका:- बृहतां पतिः। 'तद्बृहतोः-' (वा. ६. १. १५७) इति निपातितः। गिरां पतिः। 'अहरादीनाम्-' (वा. ८. २. ७०) इति रेफाभावे कस्कादि (८. ३. ४८) षः। धिषणास्यास्ति। गृणाति, उपदिशति गुरुः। 'गृ शब्दे' (क्रिया. प. से)। 'कृग्रोरुच्च' (उ. १. २४) इति कुः ॥२४॥ जीवयति। मृतसञ्जीवनीविद्यावत्त्वात्। अङ्गिरसोऽपत्यम्।[1] ऋष्यण् (४. १. ११४)। 'षष्ठ्याः पतिपुत्र-' (८. ३. ५३) इति सत्वविधानादलुगपिवाचस्पतिः। चित्रशिखण्डिनः सप्तर्षयः तदन्तर्गतोऽङ्गिरा।[2] नव॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ बृहस्पति, २ सुराचार्य, ३ गीष्पति, ४ धिषण, ५ गुरु, ६ जीव, ७ आंगिरस, ८ वाचस्पति, ९ चित्रशिखण्डिज- ये नौ पुल्लिङ्ग नाम बृहस्पति के हैं ॥२४॥

शुक्र के ६ नाम

शुक्रो दैत्यगुरुः काव्य उशना भार्गव कविः ॥२५॥

कृष्णमित्रटीका:- शुक्रः रुद्रशुक्रद्वारानिर्गतित्वात्। क्वेरपत्यम्। 'कुर्वादिभ्योणः' (४. १. १५१)। कविस्त्वभेदात्। वष्ट्युशना।[4] 'वशेः कनसि' (उ. ४. २३८)। भृगोरपत्यम्। ऋष्यण् (४.१.११४)। कूयते ख्यायते कविः 'अच इः' (उ. ४. १३८) ॥२५॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १ शुक्र, २ दैत्यगुरु, ३ काव्य, ४ उशनस् (सान्त), ५ भार्गव, ६ कवि- ये छः पुल्लिङ्ग नाम शुक्राचार्य के हैं।

मङ्गल के ५ नाम

अङ्गारकः कुजो भौमो लोहिताङ्गो महीसुतः।

कृष्णमित्रटीका:- अङ्गार इव रक्तवर्णत्वात्, अङ्गारकः। 'अगि गतौ' (भ्वा. प. से.)। आरन् (उ. ३. १३४)। सञ्ज्ञायाम्। को भूमौ जायते। भूमेरपत्यम्। लोहितान्यङ्गान्यस्य। पञ्च॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १ अङ्गारक, २ कुज, ३ भौम, ४ लोहितांग, ५ महीसुत- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम मङ्गल के हैं॥२५॥

बुध के ३ नाम

रौहिणेयो बुधः सौम्यः

कृष्णमित्रटीका:- रोहिण्या अपत्यम्। बुध्यते बुधः। सोमो देवता पितास्य। 'सोमाट्ट्यण्'(४. २. ३२)। त्रीणि॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ रौहिणेय, २ बुध, ३ सौम्य- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम बुध के हैं।

समौ सौरिशनैश्चरौ ॥२६॥

कृष्णमित्रटीका:- सूरस्सूर्कस्यापत्यम्। शनैश्चरः पङ्गुत्वात् ॥२६॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ सौरि, २ शनैश्चर- ये दो पुल्लिङ्ग नाम शनि के हैं।

राहु के ५ नाम

तमस्तु राहुः स्वर्भानुः सैंहिकेयो विधुन्तुदः।

कृष्णमित्रटीका:- ताम्यति तमः। 'तमु ग्लानौ' (दि. प. से.)। असुन् (उ. ४. १८८)। रहति भुक्त्वा चन्द्राकौ राहुः। 'रह त्यागे' (भ्वा. प. से.)। बाहुलकाद्गुण। स्वः स्वर्गे भाति। 'दाभाभ्यां नुः' (उ. ३. ३२) 'क्षुम्नादिः' इत्येके।[3] 'पूर्वपदात्-' (८. ४. ३.) इति (न) णत्वमिति **स्वामी**। सिंहिकाया अपत्यम्। विधुं तुदति। 'विध्वरुषोस्तुदः' (३. २. ३५) इति खश्। पञ्च ॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ तमस् (सान्त), २ राहु, ३ स्वर्भानु, ४ सैंहिकेय, ५ विधुन्तुद- ये पाँच नाम राहु के हैं; जिसमें तमस् शब्द नपुंसकलिङ्ग है। शेष पुल्लिङ्ग हैं॥२६॥

सप्तर्षयो मरीच्यत्रिमुखाश्चित्रशिखण्डिनः ॥२७॥

कृष्णमित्रटीका:- सप्त च ते ऋषयश्च। एषां सप्तर्षिरित्येकत्वमपि। चित्रः शिखण्डः चूडास्त्येषाम्[5] ॥२७॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ चित्रशिखण्डिन्- यह एक इन्नन्त पुल्लिङ्ग नाम मरीचि, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वसिष्ठ इन सप्तऋषियों के हैं।

---

1. M. अङ्गिरसोऽपत्यम् 2. M. तदन्तर्गतोङ्गिरा 3. **Brhaspati** (Jupiter) [9] अङ्गिरसोऽपत्यम् 4. M. वष्टि उशना 5. **Sukracarya** (venus) [6] 6. **Mangala.** (Mars) [5]

1. **Budha.** (Mercury) [3] 2. **Sani.** (Saturn) [2] 3. **See Ramasrami,** p. 50 4. **Rahu.** [5] 5. M. चूडास्त्येषाम् 6. **Sven sages:** Marici, Angiras, Atri, Pulastya, Kratu and Vasistha.

*"मरीचिरंगिरा अत्रि पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः। वसिष्ठश्चेति सप्तैते ज्ञेयाश्चित्रशिखण्डिनः" ॥१॥ भाषा मरीचि १ अगिरस २ अत्रि ३ पुलस्त्य ४ पुलह ५ क्रतु ६ वसिष्ठ ७ ये सप्तर्षि चित्रशिखण्डि कहलाते हैं।

राशीनामुदयो लग्नं ते तु मेषवृषादयः।[1]

कृष्णमित्रटीका :- अश्नुवते व्याप्नुवन्ति राशयः। 'अशू व्याप्तौ' (स्वा. आ. से.)। 'अशिपणाय्यो रुडायलुकौ-' (उ. ४. १३२), इणप्रतययश्च। लगति लग्नम्। 'लगे सङ्गे' (भ्वा. प. से.)। 'क्षुब्धस्वान्त-' (७. २. १८) इति निपातितः। एकम्॥[2]

हिन्दी अर्थ :- राशियों के उदय का नाम १ - १ लग्न- यह एक (नपुंसक) नाम मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ, मीन इन राशियों के उदय का है

राशियों के नाम २ -१ मेष, २ वृष, आदि॥२७॥

सूर्य के २७ नाम

सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः ॥२८॥
भास्कराहस्करब्रध्नप्रभाकरविभाकराः।
भास्वद्विवस्वत्सप्ताश्वहरिदश्वोष्णरश्मयः ॥२९॥
विकर्तनोऽर्कमार्तण्डमिहिरारुणपूषणः।
द्युमणिस्तरणिर्मित्रश्चित्रभानुर्विरोचनः ॥३०॥
विभावसुर्ग्रहपतिस्त्विषांपतिरहर्पतिः।
भानुर्हंसः सहस्रांशुस्तपन सविता रविः ॥३१॥
"पद्माक्षस्तेजसांराशिश्छायानाथस्तमिस्रहा (३८)
कर्मसाक्षी जगच्चक्षुर्लोकबन्धुस्त्रयीतनुः (३९)
प्रद्योतनो दिनमणिः खद्योतो लोकबान्धवः (४०)
इनो मागो धामनिधिश्चांशुमाल्यब्जिनीपतिः (४१)"

कृष्णमित्रटीका :- सुवति प्रेरयति कर्मणि लोकं सूरः। 'षू प्रेरणे' (तु. प. से.)। 'सुसुधागृधिम्यः क्रन्' (उ. २. २४)। 'राजसूय-' (३. १. ११४) इति सूर्यो निपातितः। इर्यति अर्यमा। 'श्वन्नुक्षन्-' (उ. १. १६०) इति निपातितः। अदितेरपत्यम्। द्वादश आत्मानो मूर्तयोऽस्य[3]। दिवादिनं करोति। 'दिवोविभा-' (३. २. २१) इति टः॥२८॥ भास्कराहस्करौ, कस्कादित्वात् (८. ३. ४८)। बध्नाति तिमिरं ब्रध्नः। विवः तेजः तदस्यास्ति विवस्वान्। 'वस आच्छादने' (अ. आ. अ.)। क्विप् (३. २. ६६)। सप्त अश्वा यस्य। हरितो[1] नीला अश्वा यस्य ॥२९॥ विकृन्तत्यात्मानं भ्रमणेन तेजः शातनात्। अर्च्यतेऽर्कः[2]। 'अर्च पूजायाम्' (भ्वा. प. से.)। घञि (३. ३. १९) कुत्वम् (७. ३. ५२)। मृतऽण्डे[3] भवः। मेहति मिहिरः। 'इषि (मदि) मुदि-' (उ. १. ५१) इति किरच्। अरुणो वर्णेन। 'अर्तेश्च' (उ. ३. ६०) इत्युनन्। पुष्णाति पूषा। 'श्वन्नुक्षन्-' (उ. १. १६०) इति साधु। दिवो मणिरिव। तरन्त्यनेन। 'अर्तिसृधृ-' (उ. २. १०२) इत्यादिना अनिः। मेघति मित्रः। 'अमिचिमिदिशसिभ्यः' (उ. ४. १६३) इति क्त्रः। चित्रा भानवोऽस्य[4]। विरोचते विरोचनः। 'अनुदात्तेतश्च-' (३. २. १४९) इति युच्॥३०॥ विभा दीप्तिर्वसु धनमस्य। अह्नां पतिः। 'अहरादीनाम्-'(वा. ८. २. ७०) इति रः। भाति भानुः। हन्ति तमो हंसः[5]। 'वृतॄवदि-' (उ. ३. ६२) इति सः। सहस्रमंशवोऽस्य[6]। तपति। ल्युः (३. १. १३४)। सुवति प्रेरयति। 'रू शब्दे' (अ. प. से.)। रूयते शब्दाते रविः। 'अच इः' (उ. ४. १३८)। सप्तत्रिंशत्॥३॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १ सूर, २ सूर्य, ३ अर्य्यमन् (नान्त), ४ आदित्य, ५ द्वादशात्मन् (नान्त), ६ दिवाकर, ७ भास्कर, ८ अहस्कर, ९ ब्रघ्न, १० प्रभाकर, ११ विभाकर, ॥२८॥ १२ भास्वत् (तांत), १३ विवस्वत् (तांत), १४ सप्ताश्व, १५ हरिदश्व, १६ उष्णरश्मि, १७ विकर्त्तन, १८ अर्क, १९ मार्तण्ड, २० मिहिर, २१ अरुण, २२ पूषन् (तांत), ॥२९॥ २३ द्युमणि, २४ तरणि, २५ मित्र, २६ चित्रभानु, २७ विरोचन, २८ विभावसु, २९ ग्रहपति, ३० त्विषाम्पति, ३१ अहर्पति, ३१ ॥३०॥ ३२ भानु, ३३ हंस, ३४ सहस्रांशु, ३५ तपन, ३६ सवितृ (ऋकारांत), ३७ रवि- ये सैंतीस और "पद्माक्ष, तेजसांराशि, छायानाथ, तमिस्रहन् (नान्त), कर्मसाक्षिन् (इन्नन्त), जगच्चक्षु, लोकबन्धु, त्रयीतनु, प्रद्योतन,

1. **A figure of the twelve Zodical signs.** [!] 2. **Zodical signs:** Mesa (Aries), Vrsa (Yauraus), Mithuna (Gemini), Karka (Cancer), Simha (Leo), Kanya (Virgo), Tula (Libra), Vrs'cika (Scorpio), Dhanu (Sagittarius), Makara (Capicorn), Kumbha (Aquarius) and Mina (Pisces), [1 each] 3. मूर्तयोस्य

1. M. हरित 2. M. अर्च्यते अर्कः। 3. M. मृते अण्डे 4. M. भानवोस्य 5. M. हंस 6. M. सहस्रमंशवोस्य 7. **Sun** [37]

दिनमणि, खद्योत, लोकबान्धव, इन, भाग, धाम, निधि, अंशुमालि, अब्जिनीपति ये सत्रह कुल चौवन पुल्लिङ्ग नाम सूर्य के हैं।''

माठरः पिङ्गलो दण्डश्चण्डांशो पारिपार्श्विकाः।

कृष्णमित्रटीका:- मठन्त्यनेन मठः । 'मठ मदनिवासयोः' (भ्वा. प. से.) घः ३. ३. ११८)। मठं राति मठरः, तदपत्यम् । ऋष्यण् (४. १. ११४)। पिङ्गलो वर्णेन। दण्डोऽस्यास्ति[1]। पार्श्वे इति परिपार्श्वम्। विभक्त्यर्थेऽव्ययीभावः (२.१.६)। तत्र वर्तते पारिपार्श्विकः। 'परिमुखं च' (४. ४. २९) इति चकाराट्ठक्[2]। एते त्रयः सूर्यपार्श्वस्थाः।।[3]

हिन्दी अर्थ :- १ माठर, २ पिंगल, ३ दण्ड- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम सूर्य के पास रहने वालों के हैं ।।३१।।

सूर्यसूतोऽरुणोनूरुः काश्यपिर्गरुडाग्रजः ।।३२।।

कृष्णमित्रटीका:- सूर्यस्य सूतः सारथिः। अरुणो वर्णेन । न विद्येते ऊरू अस्य । कश्यपस्यापत्यम्। बाह्वादिः (४. १. ९६)। गरुडस्याग्रजो ज्येष्ठः पञ्च।।३२।।[4]

हिन्दी अर्थ :- १ सूरसूत, २ अरुण, ३ अनूरु, ४ काश्यपि, ५ गरुडाग्रज- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम सूर्य के सारथि के हैं।

परिवेषस्तु परिधिरुपसूर्यकमण्डले।

कृष्णमित्रटीका:- परितो विष्यतेऽनेन[5] । 'विष्लृ व्याप्तौ' (जु. उ. अ.) । घञ् (३. ३. १८)। परितो धीयतेऽनेन[6]। धाञः किः (३. ३. ९२) । सूर्यमुपगतमुपसूर्यम्। ततः स्वार्थे कः (५. ३. ९७) । उत्पातेन चन्द्रसूर्ययोजितस्य मण्डलस्य नाम ।।[7]

हिन्दी अर्थ :-सूर्य के मण्डल के अर्थात् जो कभी-२ उनके चारों ओर घेरा सा बन जाता है उसके १ परिवेष, २ परिधि (पुल्लिङ्ग), ३ उपसूर्यक, ४ मण्डल (नपुंसकलिङ्ग)- ये चार नाम हैं।।३२।।

किरणों के ११ नाम

किरणोस्रमयूखांशुगभस्तिघृणिरश्मयः ।।३३।।
भानुः करो मरीचिः स्त्रीपुंसयोर्दीधितिः स्त्रियाम्।

कृष्णमित्रटीका:- कीर्यते किरणः कृपृ- (उ. २. ८२) इति क्युः[1]। वसन्ति रसा अस्मिन्नुस्रः। 'स्फायितञ्चि-' (उ. २. १३) इति रकि, यजादित्वात् (६. १. १५) सम्प्रसारणम्। मिनोति क्षिपति तमो मयूखः। ऊखः (उ. ५. २५) प्रत्ययः। अंशयत्यंशुः। 'अंश विभाजाने चुरादिः। मृगय्वादित्वात्' (उ. १. ३७) कुः। गां बभस्ति दीपयति। पृषोदरादिः (६. ३. १०९) । 'घृ सेचने' (भ्वा. प. अ.)। 'घृणिपृश्नि-' (उ. ४. ५२) इति निः। '**वृष्णिः**' इति '**पृश्निः**' इति च पाठान्तरम्।।३३।। कीर्यते करः। 'ऋदोरप्' (३. ३. ५७)। म्रियते तमोऽस्मिन्[2]। 'मृकणिभ्यामीचिः' (उ. ४. ७०)। दीधीते दीप्यते।दीधीङ् (अ. आ. से.) क्तिचि (३.३. १७४) 'यीवर्णयोः-' (७. ४. ५३) इतीकारलोपः।'तितृत्र-' (७. २.९) इतीण्निषेधस्तु नास्ति, 'अग्रहादीनाम्' इति वचनात् । एकादश।।[3]

हिन्दी अर्थ :-१ किरण, २ उस्र, ३ मयूख, ४ अंशु, ५ गभस्ति, ६ घृणि, ७ रश्मि, ८ भानु, ९ कर, १० मरीचि, ११ दीधिति- ये ग्यारह नाम किरण के हैं; जिसमें मरीचि शब्द स्त्रीलिङ्ग पुल्लिङ्ग, दीधितिशब्द स्त्रीलिङ्ग और शेष पुल्लिङ्ग हैं ।।३३।।

स्युः प्रभारुग्रुचिस्त्विड्भाश्छविद्युतिदीप्तयः ।।३४।।
रोचिः शोचिरुभे क्लीबे

कृष्णमित्रटीका:- प्रभाति प्रभा।'आतश्चोपसर्गे' (३. १. १३६) इति कः। रोचते रुक्। क्विप् (३.२. १७८) । 'इगुपधात्कित्' (उ. ४. ११९) इतीन् रुचिः । त्वेषति। 'त्विष दीप्तौ' (भ्वा. उ. से.) । क्विप् (३. २. १७८)। 'भा दीप्तौ' (अ. प. अ.)। दृशिग्रहणात् (वो. ३. २. १०१) डः। 'भासृ दीप्तौ' (भा. आ. से.) क्विप् (३. २. १७८)। छ्यति छविः । छवीति क्विन् (उ. ४. ५६) । द्योतन्तेऽनया।[4] 'इगुपधात्-' (उ. ४. ११९) इतीन्। दीप्यन्तेऽनया[5]। 'क्तित्राबादिभ्यः' (वा. ३. ३. ९४)।।३४।। रोचतेऽनेन[6] रोचिः। 'अर्चिशुचि-'[7] (उ. २. १०८) इति इस्। ई सुचिर् (दि. उ. से.)। प्रभानाम।।[8]

1. M. दण्डोस्यास्ति 2. M. चकरात् ठक् 3. **Three attendants on the sun.** 4. **Aruna,** the Chariteer of the sun [5] 5. M. विष्येतेनेन 6. M. धीयतेनेन 7. **The halo round the sun or the moon.**[2]

1. M. ल्युः 2. M. तमोस्मिन् 3. **Ray** [11] 4. M. द्योत्तन्तेनया 5. M. दीप्यनतेनया 6. M. रोचतेनेन 7. M. 'अर्तिशुचि' - 8. **Light** [11]

हिन्दी अर्थ :-१ प्रभा, २ रुच् (चान्त), ३ रुचि , ४ त्विष् (षांत), ५ भा, ६ भास (सांत), ७ छवि, ८ द्युति, ९ दीप्ति, १० रोचिष् (सांत), ११ शोचिष् (षांत)- ये ग्यारह नाम प्रभा के हैं। इनमें प्रभा से दीप्तिशब्द तक स्त्रीलिंग हैं। रोचिष और शोचिष शब्द नपुंसकलिङ्ग हैं।

प्रकाशोद्योत आतपः।

कृष्णमित्रटीका:- प्रकाशोद्यतयोर्घञ्। आतपे अच्। त्रीण्यातपस्य॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ प्रकाश, २ द्योत, ३ आतप- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम सूर्य की गर्मी (धूप) के हैं॥३४॥

काष्णं कवोष्णं मन्दोष्णं कदुष्णंत्रिषु तद्वति ॥३५॥

कृष्णमित्रटीका:- ईषदुष्णम्। कोः कत् कवं का च । गुणिनि एते विशेष्यनिघ्नाः चत्वारि ॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ कोष्ण, २ कवोष्ण, ३ मन्दोष्ण, ४ कदुष्ण- ये चार नाम अल्पगर्म के हैं। ये धर्म में रूपभेद से नपुंसकलिङ्ग हैं। धर्मी अर्थात् धर्मवाले में त्रिलिंगी हैं।

तिग्मं तीक्ष्णं खरं तद्वत्

कृष्णमित्रटीका:- तेजयति तिग्मम्। 'युजिरुचितिजां कुश्च' (उ. १. १४६) इति मक्। 'तिजेर्दीर्घश्च' (उ. ३. १८) इति स्नक् । खमिन्द्रियं रात्यभिभवति[3] । तद्वत्, गुणिनि विशेष्यनिध्नः। अत्युष्णस्य त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ तिग्म, २ तीक्ष्ण, ३ खर- ये तीन नाम अत्यन्त गर्म के हैं- ये भी धर्म में रूपभेद से नपुंसकलिङ्ग हैं और धर्मी अर्थात् धर्मवालों में त्रिलिंगी हैं।

मृगतृष्णा मरीचिका ॥

कृष्णमित्रटीका:- मृगाणां तृष्णास्त्यस्याम्। मरीचिरियं भवति॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ मृग-तृष्णा, २ मरीचिका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम मृगजल अर्थात् मरुदेश में फैली हुई रेतपर सूर्य की किरणे पडने से जो भ्रमरूप जलका आभास होता है उसके हैं ॥३५॥

इति दिग्वर्गः॥३॥

1. **Sunshine** [3] 2. **Lukeworm** [4] 3. M. राति अभिभवति 4. **Hot** [3] 5. **Mirage** [2]

अथ कालवर्गः॥४॥

कालो दिष्टोऽप्यनेहापि समयोऽपि

कृष्णमित्रटीका:- कालयति सर्वं कालः। 'कल संख्याने' (भ्वा. आ. से.) । ण्यन्तादच् (३. १. ११३४)। दिश्यतेस्म[1]। 'क्तिच्क्तौ च संज्ञायाम्' (३. ३. १७४) इति क्तः। न ईहतेऽत्र[2] अनेहा। असुन् (उ. ४. २२३)। सम्यगेति। 'इण् गतौ' (अ. प. अ.) पचाद्यच् (३. १. १३४) । कालनाम॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ काल, २ दिष्ट, ३ अनेहस् (सान्त), ४ समय- ये चार पुल्लिङ्ग नाम काल के हैं।

अथ पक्षतिः।

प्रतिपद् द्वे स्त्रीत्वे

कृष्णमित्रटीका:- पक्षस्य मूलम् । 'पक्षात्तिः'[4] (५. २. २५)। प्रतिपद्यते उपक्रम्यते मासोऽनया[5] । द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ पक्षति, २ प्रतिपत् (दांत)- ये दो नाम पडवा के हैं। प्रतिपद् से आदि तिथि कही जाती हैं। पक्षति और प्रतिपद्शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं।

तदाद्यास्तिथयो द्वयोः॥१॥

कृष्णमित्रटीका:- सा प्रतिपद् आद्या यासां ताः। तन्यते तिथिः। 'ऋतन्यञ्जि-' (उ. ४. २) इति इथिन्। पृषोदरादिः (६. ३. १०९) । एकम् ॥१॥[7]

हिन्दी अर्थ :-प्रतिपदादि का एक नाम - १ तिथि है। तिथिशब्द स्त्रीलिङ्ग पुल्लिङ्ग हैं ॥१॥

घस्रो दिनाहनी वा तु क्लीबे दिवसवासरौ।

कृष्णमित्रटीका:- अत्ति तमः घस्रः। 'स्फायि' (उ. २. १३) इति रक्। द्यति तमो दिनम् । द्यतेः[8] किनन् (उ. २. ४९)। न जहाति कालमहः। 'नञि जहातेः' (उ. १. १५९) इति कनिन् । दीव्यन्त्यत्र । 'दिवादिभ्यः कित्' (उ. ३. १२१) इत्यसच् । वासयति। 'अर्तिमिभ्रमि-'[9] (उ. ३. १. १३२) इत्यरप्रत्ययेः॥[10]

हिन्दी अर्थ :-१ घस्र (पुल्लिङ्ग), २ दिन (नपुंसकलिङ्ग), ३ अहन् (नांत नपुंसकलिङ्ग), ४ दिवस, ५ वासर- ये पाँच नाम दिन के हैं। जिसमें दिवस, वासर शब्द (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) हैं।

1. M. दिश्यते सस्म 2. M. ईहतेत्र 3. **Time** [4] 4. M. पक्षाति 5. M. मासोनया 6. **The first day of a paksa or fortnight**. [2] 7. **A lunar day** (tithi) [1] 8. M. द्यते 9. M. अर्तिकमिनमि- 10. **Day** [5]

प्रत्यूषोऽहर्मुखं कल्यमुषः प्रत्युषसी अपि ॥२॥
प्रभातं च
''व्यष्टं विभातं द्वे क्लीबे पुंसि गोसर्ग इष्यते।''

कृष्णमित्रटीका :- प्रत्यूषति रुजति कामुकान्। 'ऊष रुजायाम्' (भ्वा. प. से.)। अह्नो[1] मुखम्। कलयति चेष्टां कल्यः। 'अघ्न्यादयश्च' (उ. ४. १११) इति यक्। काले साधु 'काल्यम्' इति वा। 'कल्यं प्रभातं सज्जे च कल्यो नौरोगदक्षयोः' इति **शाश्वतः**। ओषति तमः। 'उष दाहे' (भ्वा. प. से.)। 'उषः कित्' (उ. ४. २३३) इत्यसिः ॥२॥ भातुं प्रवृत्तम्। प्रभातम्। आदिकर्मणि (३. ४. ७१) क्तः। षट् ॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ प्रत्यूष, २ अहर्मुख, ३ कल्य, ४ उषस् (सांत), ५ प्रत्युषस् (सांत), ॥२॥ ६ प्रभात- ये छः और ''व्यष्ट (नपुंसकलिङ्ग), विभात (नपुंसकलिङ्ग), गोसर्ग पुल्लिङ्ग- ये तीन कुल नौ नाम प्रभात के हैं। प्रत्यूष (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) हैं। शेष (नपुंसकलिङ्ग) हैं।

दिनान्ते तु सायम् सन्ध्या पितृप्रसूः।

कृष्णमित्रटीका :- दिनस्यान्तः सायम्। अव्ययम्। स्यति दिनं सायः 'श्याद्व्यधा-' (३. १. १४१) इति णः। दिनान्तस्यैकम् ॥[3]

संध्यायन्त्यस्याम्। 'ध्यै चिन्तायाम्' (भ्वा. प. अ.) 'आतश्चोपसर्गे' (३. ३. १०६) इत्यङ्। पितॄन् प्रसूते। क्विप् (३. २. ७६)। संध्यायां द्वे ॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ दिनान्त (पुल्लिङ्ग), २ सायम् (अव्यय, नपुंसकलिङ्ग), ३ सन्ध्या, ४ पितृप्रसू (स्त्रीलिङ्ग) - ये चार नाम सांयकाल के हैं।

प्राह्णपराह्णमध्याह्नास्त्रिसंध्यम्।

कृष्णमित्रटीका :- प्रारम्भोऽपरं[5] मध्यं वाह्नः। 'राजाहः-' (५. ४. ६१) इति टचि 'अह्नोऽह्नः'[6] (५. ४.८८) इत्यह्नादेशः। तिस्रः सन्ध्याः समाहृतास्त्रिसन्ध्यम्। सन्ध्यानामेकैकम् ॥[7]

हिन्दी अर्थ :-प्रातः काल का एक नाम- १ प्राह्ण, मध्याह्नकाल का एक नाम- १ मध्याह्न, मध्याह्नोत्तर काल का एक नाम- १ अपराह्ण, इन तीनों कालों का नाम इकट्ठा एक नाम- १ त्रिसन्ध्य है। प्राह्ण, अपराह्ण, मध्याह्न इन तीनों को त्रिसन्ध्य कहते हैं।

1. M. अन्हः 2. **Dawn [6]** 3. **Evening [1]** 4. **Twilight [2]** 5. M. प्रारम्भोपरं 6. M. अन्होन्ह 7. **Three twilights : morning, day and evening [1 each]**

अथ शर्वरी ॥३॥

निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा क्षणदा क्षपा।
विभावरीतमस्विन्यौ रजनी यामिनी तमी ॥४॥

कृष्णमित्रटीका :- शृणाति चेष्टाः[1] 'शर्वरी'। 'शॄहिंसायाम्' (क्र्या. प. से.)। 'कृशृ-' (उ. २. १२२) इति ष्वरच् ॥३॥ नितरां श्यति तनूकरोति चेष्टाः निशा। 'आतश्चोपसर्गे' (३.१.१३६) कः। निशीथोऽस्त्यस्याः[2]। राति सुखम्। 'राशदिभ्यां त्रिप्' (उ. ४. ६७)। तिस्रो यामा यस्याः सा त्रियामा। आद्यान्तयामार्धयोर्दिनव्यवहारात्। क्षणमुत्सवं ददाति। क्षपयति चेष्टां क्षपा। अच् विभाति। (क) वनिप्। 'वनो र च' (४. १.७)। तमोऽस्त्यस्याम्[3] रज्यन्ते कामुका अनया। यामा निक्षिप्ताः सन्त्यस्याः। ताभ्यन्त्य-स्याम्। तमादिनिः[4]। (५. २. ११५) ॥४॥ रात्रेर्द्वादिशं ॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ शर्वरी, ॥३॥ २ निशा, ३ निशीथिनी, ४ रात्रि, ५ त्रियामा, ६ क्षणदा, ७ क्षपा, ८ विभावरी, ९ तमस्विनी, १० रजनी, ११ यामिनी, १२ तमी- ये बारह स्त्रीलिङ्ग नाम रात्रि के हैं ॥४॥

तमिस्रा तामसी रात्रिर्

कृष्णमित्रटीका :- तमोऽस्त्यस्याम्[6]। 'ज्योत्स्नातमिस्रा-' (५. २. ११४) इति साधु। ज्योत्स्नादिभ्य उपसंख्यानात् (वा. ५. १०३) अण्। तामसी अत्यन्धकारयुक्तारात्रिः। द्वे ॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१ तमिस्रा- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम अंधेरी रात्रि का है।

ज्यौत्स्नी चन्द्रिकयान्विता।

कृष्णमित्रटीका :- ज्योत्स्नास्त्यस्याम् ज्यौत्स्नी। पूर्ववदण् (वा. ५. २. १०३)। चन्द्रिकया युक्ता प्रकाशवती रात्रिः। द्वे ॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १ ज्यौत्स्नी- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम चंद्रमासे युक्त अर्थात् चाँदनीरात्रि का है।

आगामिवर्तमानाहर्युक्तायां निशिपक्षिणी ॥५॥

कृष्णमित्रटीका :- आगामिवर्तमाने ये अह्नी ताभ्यां युक्ता रात्रिः। स-मासान्तविधेरनित्यत्वान्न टच्।

1. M. चेष्टोः 2. M. निशिथोस्त्यस्याः 3. M. तमोस्त्यस्यां। 4. M. तमाद्विनिः 5. Night [12] 6. M. तमोस्यस्यां 7. A dark night [2] 8. A moonlit night [2]

आगामि वर्तमाने अहनी युक्ते यस्यामिति बहुव्रीहिर्वा। पूर्वापररात्रियुक्तं दिनमपि पक्षिणी । पूर्वापरदिवसौ पक्षाविव स्तः ॥५॥[1]

हिन्दी अर्थ :-वर्तमान और आगन्तुक दिनों के मध्य की रात्रि का एक नाम- १ पक्षिणी है- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम पहले दिन से युक्त हुई रात्रि का है ॥५॥

गणरात्रं निशा बह्वयः

कृष्णमित्रटीका:- गणानां बह्वीनां रात्रीणां समाहारः । 'अहः सर्वैकदेश-' (५. ४. ८७) इत्यच्। संख्यापूर्व रात्रं क्लीबम्। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ गणरात्र- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम बहुतसी रात्रियों के समूह का हैं।

प्रदोषो रजनीमुखम्।

कृष्णमित्रटीका:- दुष्यति दोषाः प्ररब्धा दोषा यस्मिन् । रजन्या मुखमिव। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ प्रदोष (पुल्लिङ्ग), २ रजनीमुख (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम रात्रि के पूर्वभाग के हैं।

अर्धरात्रनिशीथौ द्वौ

कृष्णमित्रटीका:- अर्धरात्रेः । 'अहः सर्वैक' (५. ४. ८७) इत्यच्। नियतं शेरतेऽस्मिन्निशीथः। 'निशीथगोपीथ-' (उ. २.६) इति थक्। द्वे ॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ अर्धरात्र, २ निशीथ- ये दो पुल्लिङ्ग नाम आधी रात के हैं।

द्वौ यामप्रहरौ समौ ॥६॥

कृष्णमित्रटीका:- याति यामः। 'अर्तिस्तुसु' (उ. १. १४०) इति मन् । प्रह्रियते ठक्कादिरस्मिन् प्रहरः। 'पुंसि संज्ञायाम्-' (३. ३. ११८) घः ॥६॥ द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ याम, २ प्रहर- ये दो पुल्लिङ्ग नाम प्रहर के हैं॥६॥

सपर्वसंधिः प्रतिपत्पश्चदश्योर्यदन्तरम्।

कृष्णमित्रटीका:- प्रतिपत्पश्चदश्योर्यदन्तरं स संधिः। स एव पर्वेत्यन्वयः। 'पर्वसंधिः' इत्येक नाम, इति प्राञ्चः। द्वे॥[6]

1. A night enclosed with two days. [1] 2. A series of nights. [2] 3. Nightfall [2] 4. Midnight, [2] 5. One-eigth part of a day [2] 6. The junction of the first and fifteenth of a fortnight [1]

हिन्दी अर्थ :-प्रतिपदा १ और पंचदशी १५। ३० के मध्य के काल का नाम १ - १ पर्वसन्धि- यह एक पुल्लिङ्ग नाम प्रतिपदा और पंचदशी के अंतर का हैं।

पक्षान्तौ पञ्चदश्यौ द्वे

कृष्णमित्रटीका:- द्वे पञ्चदश्यौ पूर्णिमामावस्ये पक्षस्यान्ती । एकम्॥[1]

हिन्दी अर्थ :-अमावस्या और पूर्णिमा का नाम १- १ पक्षान्त (पुल्लिङ्ग) २ पञ्चदशी (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम पक्ष के अन्त की तिथि के हैं।

पौर्णमासी तु पूर्णिमा ॥७॥

कृष्णमित्रटीका:- पूर्णो मासो वर्ततेऽस्याम्[2]। पूर्णमासादण्। पूर्णचन्द्रस्य पूरणम्। तेन निर्वृत्तं पूर्णिमा। 'तेन निर्वृतम्' इत्यर्थे इमप् (वा. ४. ४. २०) टाप् (४. १.४) । द्वे ॥७॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ पौर्णमासी, २ पूर्णिमा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम पूर्णमा के हैं॥७॥

कलाहीने सानुमति

कृष्णमित्रटीका:- सा पूर्णिमा उदयकाले प्रतिपत्सद्भावात्कलाहीने चन्द्रे, अनुमतिः। अनुमन्यते। क्तिच् (३. ३. ७१४) एकम्॥[4]

हिन्दी अर्थ :-जिस पूर्णमासी में प्रतिपदा के योग से चन्द्रमा की कला हीन हो उसका एक नाम- १ अनुमति है- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम कलाहीन चंद्रमायुक्त पौर्णमासी का है।

पूर्णे राका निशाकरे।

कृष्णमित्रटीका:- पूर्णे चन्द्रे तु । राति शुभम्। 'कृदाधारा-' (उ. ३. ४०) इति कः। एकम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :-जिसमें पूर्ण चन्द्रमा हो उस पूर्णिमा का एक नाम-१ राका है- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम कलाहीन चंद्रमायुक्त पौर्णमासी का हैं।

अमावास्या त्वमावस्या दर्शः सूर्येन्दुसंगमः ॥८॥

कृष्णमित्रटीका:- अमा सह वसतश्चन्द्रा-र्कावस्याम्॥[6]। 'अमानस्यदन्यतरस्याम्' (३. १. १२२)

1. The last day of a fortnight. [2] 2. M. वर्ततेस्याम् 3. Purnima [2] 4. A purnima in which moon is one digit less than full 5. A purnima with full moon 6. M. वसतः चन्द्रार्कावस्याम्

इति ण्यति पक्षे वृद्ध्यभावः। दृश्यते ज्ञायेते चन्द्रार्कावत्र। 'पुंसि-' (३.३. १०८) इति घः[1]। चत्वारि ॥८॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ अमावास्या, २ अमावस्या (स्त्रीलिङ्ग), ३ दर्श, ४ सूर्येन्दुसंगम (पुल्लिङ्ग)- ये चार नाम अमावस के हैं ॥८॥

सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली

कृष्णमित्रटीका:- चतुर्दशीयोग्यादृष्टचन्द्रा या अमा सा सिनीवाली। सिनीं सितां रेखां वलति धारयति। 'कर्मण्यण्' (३.२. १)। एकम् ॥[3]

हिन्दी अर्थ :-जिसमें चतुर्दशी के योग से चन्द्रमा का दर्शन हो उस अमावास्या का एक नाम- १ सिनीवाली है - यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम चन्द्रमा जिसमें दिखाई दे उस अमावस का हैं।

सा नष्टेन्दुकला कुहूः।

कृष्णमित्रटीका:- नष्टचन्द्रकला अमा कुहूः। कुहयति। 'कुह विस्मापने' (चु. उ. से.)। 'नृतिशृध्योः-' (उ. १. ९१) इति कूः बाहुलकात्। एकम्॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ कुहू- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम जिसमें चंद्रमा नहीं दीखे उस अमावस का हैं।

उपराग ग्रहः

कृष्णमित्रटीका:- उपरज्यतेऽनेन[5]। 'हलश्च' (३.३.१२१) इति घञ्। ग्रहण ग्रहः। 'ग्रहवृदृ-' (३.३.४८) इत्यप्। ग्रहणस्य द्वे ॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ उपराग, २ ग्रह- ये दो नाम राहु से किये गये चंद्रमा और सूर्य के ग्रास के हैं।

राहुग्रस्ते त्विन्दौ च पूष्णि च ॥९॥

सोपप्लवोपरक्तौ द्वौ

कृष्णमित्रटीका:- राहुणा ग्रस्त इन्दुः सूर्यश्च॥९॥ सोपप्लव उपरक्तश्च । द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १ उपराग, २ ग्रह,३ सोपप्लव, ४ उपरक्त, उपराग, ग्रह- यह दो नाम राहु से किये गये चंद्रमा और सूर्य के ग्रास के हैं॥९॥ सोपप्लव, उपरक्त ये दो नाम राहु से ग्रस्त हुए चंद्रमा और सूर्य के हैं। ये चारों पुल्लिङ्ग नाम हैं।

1. M. घ 2. **Amavasya the** day of the conjunction of the sun and moon [4] 3. **An amavasya** in which moon is visble. [1] 4. **An amavasya in which** moon is not uisible [1] 5. M. उपरज्यतेनेन 6. **Eclipse.** [2] 7. **Sun or moon in eclispse** [2]

अग्न्युत्पात उपाहितः।

कृष्णमित्रटीका:- अग्निकृत उत्पात उपद्रवः। उपासन्नमाहितं फलं यस्य ॥[1]

हिन्दी अर्थ :-धूम्रकेतु के नाम २ - १ अग्न्युत्पात, २ उपाहित- ये दो पुल्लिङ्ग नाम अग्निकृत उत्पात के हैं।

एकयोक्त्या पुष्पवन्तौ दिवाकरनिशाकरौ॥१०॥

कृष्णमित्रटीका:- पुष्पं विकासोऽस्त्यनयोः[2]। युगपच्चन्द्रार्कयोर्बोधने। पुष्पवन्तौ न तु पुष्पवानर्क इन्दुर्वा॥१०॥[3]

हिन्दी अर्थ :-सूर्य और चन्द्र दोनों का इकट्ठा नाम १- १ पुष्पवन्त- यह एक पुल्लिङ्ग नाम एक युक्ति करके अर्थात् दोनों को एक साथ कहने से सूर्य चंद्रमा का हैं॥१०॥

अष्टादशनिमेषास्तु काष्ठास्

कृष्णमित्रटीका:- निमेषोऽक्षिस्पन्दकालः[4]॥

हिन्दी अर्थ :-१ निमेष (पुल्लिङ्ग)- नाम आँख के मीचने और खोलने (पलक मारने) का है अठारह निमेषों का नाम १- १ काष्ठा (स्त्रीलिङ्ग) हैं।

त्रिंशत्तु ताः कला।

कृष्णमित्रटीका:- ताः काष्ठास्त्रिंशत्॥[5]

हिन्दी अर्थ :-तीस काष्ठाओं का नाम १ - १ कला स्त्रीलिङ्ग, है।

तास्तु त्रिंशत्क्षणाः

कृष्णमित्रटीका:- ताः कलास्त्रिंशत्। क्षणोति क्षणः। 'क्षणु[6] हिंसायाम्' (त. उ. से.)॥[7]

हिन्दी अर्थ :-तीस कलाओं का नाम १ - १ क्षण पुल्लिङ्ग, हैं।

ते तु मुहूर्त्तो द्वादशास्त्रियाम्॥११॥

कृष्णमित्रटीका:- ते क्षणा द्वादश, मुहूतियर्ति मुहूर्तः। 'लिङ्चोर्ध्वमौहूर्तिके[8]' (३. ३. १६४) इति निपातितः॥११॥[9]

1. **Destruction or danger from fire**. [1] 2. M. विकासोस्त्यनयोः 3. **Sun and moon.** [1] 4. M. निमेषोक्षिस्पन्दकालः 5. **Kastha, a measure of time.** [1] 6. M. क्षण् 7. **M. Ksana,** a measure of time comprising thirty kalas [1] 8. **Muhurat,** a time of twelve ksanas. [1] 9. **A day and night** or ahoratra, a period of time equal to thirty Muhurtas.

हिन्दी अर्थ :-बारह क्षणों का एक नाम- १ मुहूर्त्त, है और मुहूर्त्त शब्द (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग.) हैं॥११॥

ते तु त्रिंशदहोरात्रः

कृष्णमित्रटीका:- अहश्च रात्रिश्च तयोः समाहारः। 'अहः सर्व-' (५. ४. ८७) इत्यच्। 'रात्राह्नाहाः-' (२. ४. २९) इति पुंस्त्वम्॥[1]

हिन्दी अर्थ :-तीस मुहूर्तों का एक नाम- १ अहोरात्र है। पुल्लिङ्ग अर्थात् दिनरात्रि के सम को अहोरात्र कहते है।

पक्षस्ते दशपञ्च च।

कृष्णमित्रटीका:- ते अहोरात्राः पञ्चदश, पक्ष्यते पक्षः। 'पक्ष परिग्रहे' (भ्वा. चु. प. से.)॥[2]

हिन्दी अर्थ :-पंद्रह दिन रात का नाम- १ पक्ष पुल्लिङ्ग, होता हैं।

पक्षौ पूर्वापरौ शुक्लकृष्णौ

कृष्णमित्रटीका:- शुक्लो मासस्य पूर्वः पक्षः। कृष्णस्त्वपरः॥[3]

हिन्दी अर्थ :- - १ शुक्ल, २ कृष्ण, महीने का पूर्वपक्ष शुक्ल है परपक्ष कृष्ण ये दोनो ही पुल्लिङ्ग हैं।

मासस्तु तावुभौ॥१२॥

कृष्णमित्रटीका:- तावुभौ[4] पक्षौ मासः। मस्यते परिमीयतेऽनेन[5]।'मसी परिमाणे' (दि. प. से.)॥१२॥[6]

हिन्दी अर्थ :-दो पक्षों का एक नाम- १ मास है। मास (महीना) पुल्लिङ्ग हैं॥१२॥

द्वौ द्वौ माघादिमासौ[7] स्याद् ऋतुः

कृष्णमित्रटीका:- इर्यतिऋतुः। 'अर्तेश्च-' (उ. २. ७१) इति तुः॥[8]

हिन्दी अर्थ :-मार्गशीर्षादि दो दो मासों का नाम १- १ ऋतु (पुल्लिङ्ग) होता हैं। (मूल में जो माघ से दो दो मासों की गणना है वह केवल अयनारम्भ के कारण से हैं)।

1. **Fortnight,** a period of time with fifteen days and nights [1] 2. **Bright and** dark fortnights [1 each] 3. M. तौ उभौ 4. M. परिमीयतेनेन 5. **Month,** a period of time having two fortnights [1] 6. **Ramasrami reads** मार्गादिमासौ 7. **Season** (rtu), a period of two months [10] 8. M. अयतेर्कोनेन।

तैरयनं त्रिभिः।

कृष्णमित्रटीका:- तैः ऋतुभिस्त्रिभिरयनम्। अयतेऽर्कोऽनेन[1]॥

हिन्दी अर्थ :-तीन ऋतुओं का नाम १ - १ अयन नपुंसकलिङ्ग होता हैं।

अनये द्वे गतिरुदग्दक्षिणार्कस्य

कृष्णमित्रटीका:- अयने तु द्वे। अर्कस्योत्तरा-गतिर्दक्षिणा[2] च। माघाद्याः षण्मासा उत्तरायणमिति यावत्॥[3]

हिन्दी अर्थ :-दो अयनों के २ भेद - १ उत्तरा-यण, २ दक्षिणायन- इन दोनों अयनों का वत्सर पुल्लिङ्ग होता है।

वत्सरः॥३॥

कृष्णमित्रटीका:- ते द्वे अयने वत्सरः। 'वसेश्च' (उ. ३. ७१) इति सरप्रत्ययः। सः सीतितः॥१३॥[4]

हिन्दी अर्थ :-दो अयनो का नाम १ -वत्सर पुल्लिङ्ग होता है॥१३॥

समरात्रिन्दिवे काले विषुवद्विषुवं च तत्।
"पुष्ययुक्ता पौर्णमासी पौषी मासे तु यत्र सा (४२)
नाम्ना स पौषो माघाद्याश्चैवमेकादशापरे (४३)"

कृष्णमित्रटीका:- समौ रात्रिन्दिवौ यत्र मेषतु-लासंक्रान्तिः। विषु साम्येऽव्ययम्।[5] तद्विद्यतेऽस्य[6] विषुवत्। 'वप्रकरणेऽन्यत्रापि' (भ्वा. वा. ५. २. १०९) इत्युक्तेर्वः। विषुवः॥[7]

हिन्दी अर्थ :-जिसमें दिनरात समान होते हैं उस संक्रांति (तुला और मेष) के - १ विषुवत् (तांत), २ विषुव- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम है। समान रात्रि दिन वाले काल अर्थात् मेषतुला की संक्रांति के काल के हैं। "पुष्यनक्षत्र से युक्त जो पौर्णमासी उसका पौषी ऐसा स्त्रीलिङ्ग एक नाम है इस प्रकार पौष से लेकर सब मास जानना चाहिये।"

1. **Ayana,** a period of halt year constituted by three seasons [1], 2. M. अर्कस्य उत्तराग-तिर्दक्षिणा, 3. **Uttarayana and daksinayana**. [1each], 4. **Year of duration** of time having two ayanas or twelve months, 5. M. साम्येव्ययम्, 6. M. तद्विद्यतेस्य, 7. **The period of time when a day and night are of equal hours** [2],

मार्गशीर्षे सहा मार्ग आग्रहायणिकश्च सः ॥१४॥

कृष्णमित्रटीका:- मृगशीर्षेण युक्ता पौर्णमासी मार्गशीर्षी, सास्त्यस्मिन्[1]। सहते सद्यः। असुन् (उ. ४. १८८)। एकदेशप्रयोगान्मार्गः। आग्रहायणी पौर्णमासी अस्त्यस्मिन्[2]। 'अग्रहायण्यश्वत्थाट्ठक्' (४. २. २२) ॥१४॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ मार्गशीर्ष, २ सहस् (सान्त), ३ मार्ग, ४ आग्रहायणिक- ये चार पुल्लिङ्ग नाम मगशिर (अगहन महीने) के हैं ॥१४॥

पौषे तैषसहस्यौ द्वौ

कृष्णमित्रटीका:- पौष इति । 'पुष्ययुक्ता पौर्णमासी पौषी मासे तु यत्र सा । नाम्ना स पौषो माघाद्याश्चैवमेकादशापरे॥' इति क्वचित्पठ्यते । तिष्यः पुण्यवाची। सहोऽस्यास्ति[4] सहस्यः। '-मासन्वोः' (४.४. १२८) यत्। त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ पौष, २ तैष, ३ सहस्य- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम पौष (मास) के हैं।

तमा माघे

कृष्णमित्रटीका:- तपोःस्यास्ति[6] तपाः। तपेरसुन् (उ. ४. १८८)। मघया युक्ता पौर्णमासी अस्त्यत्र। द्वे ॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१ तपस् (सान्त), २ माघ- ये दो पुल्लिङ्ग नाम माघ के हैं।

अथ फाल्गुने।

स्यात्तपस्यः फाल्गुनिकः

कृष्णमित्रटीका:- फलति निष्पादयति। 'फलेर्गुक्त' (उ. ३. ५६) इत्युनन्। तपसि साधुः। 'तत्र साधुः' (४. ४. ९८)। 'विभाषाफाल्गुनीश्रवणा-' (४.२.२३) इत्यणूठकौ। त्रीणि॥[8]

हिन्दी अर्थ :-१ फाल्गुन, २ तपस्य, ३ फाल्गुनिक- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम फाल्गुन के हैं।

1. M. सा अस्ति अस्मिन् 2. M. अस्ति अस्मिन् 3. **The month,** margas'irsa (corresponding to November and December) [4] 4. M. सहोस्यास्ति 5. **Pausa,** the month corresponding to December and January [3] 6. M. तपोस्यास्ति 7. **Magha,** the month corresponding of january and February [2] 8. **Falguna,** the month corresponding to February and march. [3]

स्याच्चैत्रे चैत्रिको मधुः ॥१५॥

कृष्णमित्रटीका:- चित्रया युक्ता पौर्णमासी अस्त्यत्र। 'विभाषा फाल्गुनी-' (४. २. २३) इत्यणूठकौ। मन्यते मधुः। 'फलिपाटि-' (उ. १. १८) इत्युर्धश्च॥१५॥[1]

हिन्दी अर्थ :-चैत्रमास के नाम ३ - १ चैत्र, २ चैत्रिक, ३ मधु- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम चैत के हैं ॥१५॥

वैशाखे माधवो राधः

कृष्णमित्रटीका:- राधः विशाखः। त्रीणि॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ वैशाख, २ माधव, ३ राध- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम वैशाख के हैं।

ज्येष्ठे[3] शुक्रः

कृष्णमित्रटीका:- संज्ञापूर्वकत्वाद्विध्यभावे ज्येष्ठोऽपि[4] ॥ द्वे ।[5]

हिन्दी अर्थ :-१ ज्येष्ठ, २ शुक्र- ये दो नाम पुल्लिङ्ग नाम जेठ (ज्येष्ठ) के हैं।

शुचिस्त्वयम्।

आषाढे

कृष्णमित्रटीका:-शोचन्ति विरहिणोऽस्मिन्[6]। 'इगुपधात्कित्' (उ. ४. ११९) इतीन् । द्वे ॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१ शुचि, २ आषाढ़- ये दो पुल्लिङ्ग नाम आषाढ के हैं।

श्रावणे तु स्यान्नभाः श्रावणिकश्च सः ॥१६॥

कृष्णमित्रटीका:-नभते नभाः । 'नभ हिंसा-याम्' (क्र्या. आ. से.)। असुन् (उ. ४. १८९)। 'विभाषा-' (४. २. २३) इति ठकि श्रावणिकः। त्रीणि॥१६॥[8]

हिन्दी अर्थ :-१ श्रावण, २ नभस् (सान्त), ३ श्रावणिक- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम श्रावण के हैं ॥१६॥

स्युर्नभस्यप्रौष्ठपदभाद्रपदाः समाः।

1. **Caitra,** the month corresponding to March and April [3] 2. **Vaisakha,** the month corresponding to April and May [2] 3. B. and K. ज्यैष्ठे 4. M. ज्येष्ठोपि 5. **Jyestha,** the month corresponding to May and June [2] 6. M. शोचंति विरहिणोस्मिन् 7. **Asadha,** the month Corresponding to June & July [2] 8. **Sravana, the month Corresponding to July and August** [2]

कृष्णमित्रटीका :- नभसि, अभ्रे साधुर्नभस्यः। प्रोष्ठपदाभिर्युक्ता प्रौष्ठपदी। भद्रपदाभिर्युक्ता भाद्रपदी। सा पौर्णमास्यत्र । चत्वारि॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ नभस्य, २ प्रौष्ठपद, ३ भाद्र, ४ भाद्रपद- ये चार पुल्लिङ्ग नाम भादों (भाद्रमास) के हैं।

स्यादाश्विन इषोऽप्याश्वयुजोऽपि

कृष्णमित्रटीका :- अश्विन्या युक्ता, आश्विनी। इष्यते पात्रार्थिभिरिषः। अश्वयुजा युक्ता पौर्णमासी आश्वयुजी। त्रीणि ॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ आश्विन, २ इष, ३ आश्वयुज - ये तीन पुल्लिङ्ग नाम आश्विन (मास) के हैं।

स्यात्तु कार्तिके ॥१७॥

बाहुलोर्जो कार्तिकिकः

कृष्णमित्रटीका :- (कार्तिके) ॥१७॥ बहुलाः कृत्तिकाः। ऊर्जयति उत्साहयति। चत्वारि॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ कार्तिक, ॥१७॥ २ बाहुल, ३ ऊर्ज, ४ कार्तिकिक- ये चार पुल्लिङ्ग नाम कार्तिक (मास) के हैं।

हेमन्तः

कृष्णमित्रटीका :- हिमेऽन्तोऽस्य[4] हेमन्तः। पृषोदरादिः (६. ३. १०९) ॥[5]

हिन्दी अर्थ :-अगहन पूस मास में सिद्ध हुई ऋतु का एक नाम- १ हेमन्त है - यह एक ऋतु हैं।

शिशिरोऽस्त्रियाम्।

कृष्णमित्रटीका :- (स्पष्टार्थम्) ॥[6]

हिन्दी अर्थ :-माघ फाल्गुण से सिद्ध हुई ऋतु का एक नाम- १ शिशिर- यह एक ऋतु हैं। हेमन्त और शिशिरशब्द पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग हैं।

वसन्ते पुष्पसमयः सुरभिः

कृष्णमित्रटीका :- वसन्ति सुखमस्मिन्। 'तृभूवहिवसि-' (उ. ३. १२८) इति झच् । सुष्ठु रभन्तेऽत्र[1]। 'रभराभस्ये' (भ्वा. आ. अ.) । इन् (उ. ४. ११७) त्रीणि॥[2]

हिन्दी अर्थ :-चैत्र वैशाख से सिद्ध ऋतु १ वसन्त, २ पुष्प समय, ३ सुरभि- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम वसंतऋतु के हैं।

ग्रीष्म ऊष्मकः ॥१८॥

निदाघ उष्णोपगम उष्ण उष्मागमस्तपः।

कृष्णमित्रटीका :- ग्रसते रसान्। 'ग्रीष्मः' (उ. १. १५०) इत्युणादिसूत्रेण निपातितः। ऊषति[3] । ऊष रुजायाम्[4] (भ्वा. प. से.) । 'अन्येभ्योऽपि-' (३.२.७५) इति मनिन्। यावदित्वात् (५. ४. २९) कः॥१८॥ नितरां दाह्यतेऽत्र[5]। घञ् (३. २. १२१) । न्यङ्क्वादित्वात् (७.२.५३) कुः। ओषति उष्णः। 'इणसिञ्जि-' (उ. ३. २) इति नक्। तपेरच्। सप्त॥[6]

हिन्दी अर्थ :-ज्येष्ठ आषाढ के ऋतु १ ग्रीष्म, २ ऊष्म क, ॥८॥ ३ निदाघ, ४ उष्णोपगम, ५ उष्ण, ६ ऊष्मागम, ७ तप- ये सात पुल्लिङ्ग नाम ग्रीष्म ऋतु के हैं।

स्त्रियां प्रावृट् स्त्रियां भूम्नि वर्षाः

कृष्णमित्रटीका :- प्रवर्षति प्रावृट्। भूम्नि बहुत्वे वर्षन्ति वर्षाः । टाप् (४. १. ४)॥[7]

हिन्दी अर्थ :-सावन भादों के ऋतु १ प्रावृट्, २ वर्षा- ये दो नाम वर्षाऋतु के हैं। वहां प्रावृट्शब्द षकारान्त (स्त्रीलिङ्ग) हैं और वर्षाशब्द (स्त्रीलिङ्ग) और नित्य बहुवचनांत हैं।

अथ शरत् स्त्रियाम्॥१९॥

कृष्णमित्रटीका :- शीर्यन्तेऽस्यां[8] पाकेनौषधयः। 'शृ हिंसायाम्' (क्र्या.प. से.) । 'शृद्दृभसोऽदिः' (उ. १. १३०)॥१९॥[9]

हिन्दी अर्थ :-अर्श्विन कार्तिक के ऋत- १ शरद् (दान्त)- यह एक नाम शरद् ऋतु का है और स्त्रीलिंग है ॥१९॥

---

1. **Bhadrapada**, the month corresponding to Augast and September [4] 2. **Asvina,** the month corresponding to September and October [3] 3. **Kartika,** the month corresponding to October and November [4] 4. M. हिमे अन्तोस्य 5. **Hemanta,** the winter season comprising to Margasirsa and Pausa months. [1] 6. **Sisira,** the cold season comprising Magha and Falguna months. [1]

1. M. सुष्ठु रभन्तेत्र 2. **Vasanta,** the spring season comprising the two months, Caitra and Vaisakha [3] 3. M. उषति 4. M. 'उष रुजायाम्' 5. M. दह्यतेत्र 6. **Grisma,** the summer season Comprising Jyestha and Asadha months [7] 7. **Varsa,** the rainy season comprising Sravana and Bhadrapada months [2] 8. M. शीर्यन्तेस्यां 9. **Sarat,** the autumn season comprising Asvina and Kartika months [1]

षडमी ऋतवः पुंसि मार्गादीनां युगैः क्रमात्।

कृष्णमित्रटीका:- (स्पष्टम्) ॥[1]

हिन्दी अर्थ :-मार्गशीर्ष आदि दो दो महीनों के- ये छः ऋतु होते हैं। और ऋतुशब्द पुल्लिङ्ग है।

संवत्सरो वत्सरोऽव्दो हायनोऽस्त्री शरत्समाः ॥२०॥

कृष्णमित्रटीका:- संवसन्ति ऋतवोऽत्र[2] । 'वसेश्च' (उ. ३. ७१)। 'संपूर्वाच्च-' (उ. ३. ७२) इति सरप्रत्ययः। आप्यते व्याप्यते। 'अब्दादयश्च' (उ. ४. ९८) इति दन्हस्वौ। जहाति भावान् । 'हश्च ब्रीहिकाकालयोः' (३. १. १४८) इति ण्युट् । सह मान्ति वर्तन्ते ऋतवो यासु। बहुत्वं प्रायिकम् । 'समायां समायां विजायते' इति भाष्यप्रयोगात्॥२०॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ संवत्सर, २ वत्सर, ३ अब्द, ४ हायन, ५ शरद, ६ समा- ये छः नाम वर्ष के हैं। इनमें हायनान्त शब्द (पुल्लिङ्ग नपुंसक) हैं। शरद् (स्त्रीलिङ्ग) हैं। समाशब्द स्त्रीलिङ्ग बहुवचनांत है। शेष पुल्लिङ्ग हैं ॥२०॥

मासेन स्यादहोरात्रः पैत्रः

कृष्णमित्रटीका:- नृणां मासेन पितृणामयं पैत्रोऽहोरात्रः[4] । तत्र कृष्णः पक्षोऽहः[5] । शुक्लो रात्रिः ॥[6]

हिन्दी अर्थ :- मनुष्यों के एक महीने का पितरों का (दिनरात्रि) दिवस होता है। जिसमें कृष्णपक्ष की अष्टमी के उत्तरार्द्ध में दिन का आरम्भ और शुक्लपक्ष की अष्टमी के उत्तरार्द्ध में रात्रि का आरम्भ होता हैं।

वर्षेण दैवतः।

कृष्णमित्रटीका:- नृणां वर्षेण दैवोऽहोरात्रः[7]। तत्रोत्तरायणं दिनम्। दक्षिणायनं रात्रिः[8] ॥

हिन्दी अर्थ :-मनुष्यों के एक वर्ष का देवताओं का (दिनरात्रि) दिवस होता है। उत्तरायण दिन है, दक्षिणायन रात्रि है और मनुष्यों के कृतयुग आदि की चौकड़ी देवताओं का एक युग होता हैं।

दैवे युगसहस्रे द्वे ब्राह्मः

कृष्णमित्रटीका:- देवानां युगसहस्रद्वयेन ब्राह्मणोऽयं[9] ब्रह्मोऽहोरात्रः[10]। दिव्यैर्द्वादशभिर्वर्षसहस्रैर्देवानामेकं युगम्। तत्सहस्रं ब्रह्मणो दिनं भूतानां स्थितिकालः। तावत्येव रात्रिर्भूतानां प्रलयकालः ॥[1]

हिन्दी अर्थ :-इस प्रकार देवों के दो हजार युग का ब्रह्मा का (दिनरात्रि) दिवस होता है। ब्रह्मा के दिन में संसार की स्थिति और ब्रह्माजी की रात्रि में प्रलयकाल होता हैं।

कल्पौ तु तौ नृणाम् ॥२१॥

कृष्णमित्रटीका:- ये दैवे युगसहस्त्रे तौ नृणां कल्पौ। कल्पयतः स्थिति प्रलयं चेति कल्पौ॥२१॥[2]

हिन्दी अर्थ :-उन दो युग सहस्रों को मनुष्यों का कल्प कहते हैं। ब्रह्मा का दिन मनुष्यों का स्थितिकाल और ब्रह्मा की रात्रि मनुष्यों का प्रलयकाल होता है॥२१॥

मन्वन्तरं तु दिव्यानां युगानामेकसप्ततिः।

कृष्णमित्रटीका:- मनूनां स्वायंभुवादीनामन्तरमवकाशोऽवधिर्वा।[3] तैर्हि चतुर्दशभिर्ब्रह्मणो दिनम्॥[4]

हिन्दी अर्थ :-इकहत्तर दिव्यवर्ष का नाम १ मन्वन्तर १॥

संवर्तः प्रलयः कल्पः क्षयः कल्पान्त इत्यपि ॥२२॥

कृष्णमित्रटीका:- संवर्त्यते प्रलीयते कल्प्यते वा अत्र। कल्पस्यान्तोऽवधिः[5] ॥२२॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ संवर्त, २ प्रलय, ३ कल्प, ४ क्षय, ५ कल्पान्त- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम प्रलय के हैं ॥२२॥

अस्त्री पङ्कं पुमान्पाप्मा पापं किल्विषकल्मषम्।
कलुषं वृजिनैनोघमंहो दुरितदुष्कृतम् ॥२३॥

कृष्णमित्रटीका:-पच्यते दुःखमनेन[7] । 'पचि-व्यक्तीकरणे' (भ्वा. आ. से.)। घञ् (३.३.१९)। पान्त्यात्मानमस्मात्। 'नामन्सीमन्-' (उ. ४. १५०) इति निपातितः। 'पानीविषिभ्यः पः[8]' (उ. ३. २३), पापम्। केलयति क्रीडयति। 'किल श्वैत्यक्रीडनयोः' (तु. प. से.)। 'किलेर्बुक् च' (उ. १. ५०) इति टिषच्[9]। कर्मस्यति समापयति कल्मषम्। पृषोदरादित्वात्[10] (६. ३.१०९)

1. Cf. आदाय मार्गशीर्षाच्च द्वौ द्वौ मासावृतुः स्मृतः। 2. M. ऋतवोत्र। 3. **Year.** [6] 4. M. पैत्रौहोरात्रः 5. M. पक्षोहः 6. **Measure of a day** and night of manes (pitrs). 7. M. दैवोहोरात्रः 8. **Measure of a day night of gods** 9. M. ब्रह्मणोयं 10. M. ब्राह्मोहोरात्रः

1. **Measure of a day and night of Brahma.** 2. **Measure of the duration of the world** 3. M. स्वायंभुवदीनामन्तरमवकाशोवधिर्वा 4. **Measure of the period of age of a Manu** 5. M. कल्पस्यांतोवधिः 6. **Dissolution.** [5] 7. M. दुष्खमनेन 8. M. प. 9. M. किषच् 10. M. पृषोदारादित्वात्,

लत्वादि। वृज्यते वृजिनम्। 'बृजेः किच्च' (उ. २. ४७) इतीनच्[1] एति एनः। 'इण[2] आगसि' (उ. ४. १९७) इत्यसुन् नुट् च। अङ्कते गच्छति, अघम्। आगमानित्यत्वान्नुम्। अंहति। 'अहि गतौ' (भ्वा. प. से.)। असुन् (उ. ४. १८८)। दुरेति दुरितम्। दुष्टं[3] क्रियते दुष्कृतम्॥२३॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ पंक, २ पाप्मन् (नान्त), ३ पाप, ४ किल्बिष, ५ कल्मष, ६ कलुष, ७ वृजिन, ८ एनस् (सांत), ९ अघ, १० अंहस् (सांत), ११ दुरित, १२ दुष्कृत- ये बारह नाम पाप के हैं। इनमें पाप्मन्शब्द (पुल्लिङ्ग) हैं। पंक शब्द पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग है और सब क्लीब हैं ॥२३॥

स्याद्धर्ममस्त्रियां पुण्यश्रेयसी सुकृतं वृषः।

कृष्णमित्रटीका:- ध्रियते धर्मः। 'अर्तिस्तुसु' (उ. १. १४०) इत्यादिना मन्। यागाङ्गे नपुंसकम्- 'तानि धर्माण्यासन्' (ऋ. १०. ९०. १६)। 'लोकधर्मी' इत्यादौ धर्मीशब्दोऽप्यस्ति[5]। पुणति। 'पुण कर्मणि शुभे' (तु. प. से.)। तत्र साधुः अतिशयेन प्रशस्यं[6] श्रेयः। सुष्ठु क्रियते स्म। वर्षति[7] वृषः[8]। कः। मञ्च ॥[9]

हिन्दी अर्थ :-१ धर्म, २ पुण्य, ३ श्रेयस् (सांत), ४ सुकृत, ५ वृष- ये पाँच नाम धर्म के हैं। इनमें धर्मशब्द (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग), वृष (पुल्लिङ्ग), शेष (नपुंसकलिङ्ग) हैं। पुण्यशब्द जब विशेषण होता है तब इसका लिंग विशेष्य के समान होता है।

सुख के १२ नाम

मुत्प्रीतिः प्रमदो हर्षः प्रमोदामोदसंमदाः ॥२४॥
स्यादानन्दथुरानन्दशर्मशातसुखानि च।

कृष्णमित्रटीका:- मोदनं मुत्। क्विप्[10] (वा. ३. ३. ९४)। प्रीञः क्तिन् (३. ३. ९४)। 'प्रमदसंमदौ हर्षे' (३. ३. ६८) इत्यप्। प्रमोदामौदौ घञन्तौ ॥२४॥ आनन्दनमानन्दथुः। 'ट्वितोऽथुच्'[11] (३. ३. ८९)। शृणति क्लेशं शर्म। 'सर्वधातुभ्यो मनिन्' (उ. ४. १४४)। श्यति दुःखं[12] शातम् 'शो तनूकरणे' (दि. प. अ.)। बाहुलकात्तन् (उ. ३. ८६)। शोभनानि खान्यत्र। द्वादश॥[13]

1. M. इति इनच् 2. M. इण् 3. M. दुष्ट 4. **Sin** [12] 5. M. धर्मीशब्दोप्यस्ति 6. प्रशस्यः is the reading of the manuscript. But as the adjective of श्रेयस् it should be प्रशस्यम् 7. M. विर्षति 8. M. वृष 9. **Punya (merit)** [5] 10. M. क्विप् 11. M. ट्वितोथुच् 12. M. दुष्खं 13. **Pleasure** [12].

हिन्दी अर्थ :-१ मुद् (दांत), २ प्रीति, ३ प्रमद, ४ हर्ष, ५ प्रमोद, ६ आमोद, ७ सम्मद, ॥२४॥ ८ आनन्दथु, ९ आनन्द, १० शर्मन् (नांत), ११ शात, १२ सुख- ये बारह नाम सुख के हैं। इनमें मुद् और प्रीतिशब्द स्त्रीलिंग हैं। शर्मन्, शात, सुख नपुंसकलिङ्ग, शेष पुल्लिङ्ग हैं।

कल्याण के १२ नाम

श्वः श्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मङ्गलं शुभम्॥२५॥
भावुकं भविकं भव्यं कुशलं क्षेममस्त्रियाम्।
शस्तं च

कृष्णमित्रटीका:- श्व आगामि श्रेयोऽत्र[1]। 'श्वशोवसीयः श्रेयसः' (५. ४. ८०) इत्यसुन्। शेतेऽनेन[2] शिवम्।

'सर्वनीघृष्व-' (उ. १. १५४) इति वन्ह्रस्वौ। भन्दते भद्रम। 'भदि कल्याणे' (भ्वा. आ. से.)। 'ऋज्रेन्द्र' (उ. २. २८) इति रन्[3]। कल्यं नीरुजत्वमाणयति। मङ्ग्यते[4]। 'मगि सर्पणे' (भ्वा. प. से.)। 'मङ्गेरलच्' (उ. ५. ६०)। शोभते। 'शुभ शोभायाम्' (भ्वा. आ. से.)। कः (३. १. १३५)॥२५॥ भवनशीलं भावुकम्। 'लषपत-' (३. २. १५४) इत्युकञ्। भवोऽत्रास्ति[5]। 'अत इनिठनौ' (५. २. ११५)। भवनार्हं भव्यम्। भव्यगेय- (३. ४. ६८) इति यत्। कुशान् लाति। क्षपत्यशुभम्। 'क्षि क्षये' (भ्वा. प. अ.)। मन् (उ. १. १४०)। शस्यते शस्तम्। क्तः[6]॥ द्वादश॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१ श्वःश्रेयस् (सान्त), २ शिव, ३ भद्र, ४ कल्याण, ५ मङ्गल, ६ शुभ, ॥२५॥ ७ भावुक, ८ भविक, ९ भव्य, १० कुशल, ११ क्षेम, १२ शस्त- ये बारह नाम कल्याणमात्र के हैं। इनमें क्षेम और शस्त शब्द पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग हैं।

अथ त्रिषु द्रव्ये पापं पुण्यं सुखादि च ॥२६॥

कृष्णमित्रटीका:- पापपुण्यशब्दौ सुखादयः शस्तपर्यन्ताश्च द्रव्ये वर्तमानास्त्रिषु लिङ्गेषुबोध्याः॥२६॥

1. M. श्रेयोत्र 2. M. शेतेनेन 3. M. रक् 4. M. मंग्यते 5. M. भवोत्रास्ति 6. M. क्त 7. **Auspiciousness** [12] *'प्रशंसावचनैश्च' (२. १. ६६)। एतैस्सह जातिः प्राग्वत्। कोऽर्थः? जातिशब्दस्समस्यते तस्य च पूर्वनिपातः। [Added as note in page nineteen]

हिन्दी अर्थ :-पाप और पुण्यशब्द तथा सुख आदि शस्त पर्यन्त जो शब्द हैं वे यदि द्रव्यवाचक हों तो तीनों लिङ्गों में होते हैं। पाप-पुण्यशब्द और सुखादिशब्द (श्वःश्रेयस् से लेकर शस्तपर्यंत शब्द) विशेष्य के साथ आने से वाच्यलिङ्ग अर्थात् तीनों लिंग हैं। जैसे- 'पापा स्त्री, पापः पुमान्, पापं कुलम्' इन वचनों में स्त्रीलिङ्ग, पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग हैं॥२६॥

मतल्लिका मचर्चिका प्रकाण्डमुद्धतल्लजौ।
प्रशस्तवाचकान्यमूनि

कृष्णमित्रटीका:- मतल्लिकादयोऽव्युत्पन्नाः *प्रशंसावाचिनः। प्रशस्तोगौर्गोमतल्लिका। पञ्च[1] ॥

हिन्दी अर्थ :-१ मतल्लिका (स्त्रीलिङ्ग), २ मचर्चिका (स्त्रीलिङ्ग), ३ प्रकाण्ड (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग), ४ उद्ध (पुल्लिङ्ग), ५ तल्लज (पुल्लिङ्ग)- ये पाँच नाम प्रशस्तवाचक हैं। जैसे - 'प्रशस्ता ब्राह्मणाः ब्राह्मण-तल्लिका' आदि जानना चाहिए।

अयः शुभावहो विधिः॥२७॥

कृष्णमित्रटीका:-एति सुखमनेन अयः 'पुंसि' (३. ३. ११८) इति घः ॥२७॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ अय-यह एक पुल्लिङ्ग नाम शुभ को उत्पन्न करने वाले दैव अर्थात् भाग्य का हैं॥२७॥

दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिर्विधिः।

कृष्णमित्रटीका:- देवादागतं दैवम्। दिश्यते उपदिश्यते स्म दिष्टम्। क्तः (३. २. १०२)। भगस्यैश्वर्यादेरिदं भागम्। तदेव भागधेयम्। 'नामरूपभागेभ्यो धेयः' (वा. ५. ४. ३५)। 'भागाद्यच्च' (५. १. ४६)। भाग्यम्। नियम्यतेऽनया[3]। क्तिन् (३.३. ९४)। विधीयतेऽनेन[4]। 'उपसर्गे घोः किः' (३. ३. ९२)॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ दैव, २ दिष्ट, ३ भागधेय, ४ भाग्य, ५ नियति, ६ विधि- ये छः नाम पूर्वजन्म के कर्म (भाग्य) के हैं। इनमें नियतिशब्द (स्त्रीलिङ्ग) हैं, विधिशब्द (पुल्लिङ्ग) और शेष नपुंसकलिङ्ग हैं।

हेतुर्ना कारणं बीजम्

कृष्णमित्रटीका:- हिनोति व्याप्नोति कार्यम्। 'हि गतौ' (स्वा. प. अ.)। 'कमिमनि[1]-' (उ. ४. ७२) इति तुन्। कार्यतेऽनेन[2] कारणम्। ल्युट् (३. ३. ११७)। विशेषेण जायतेऽनेन[3] बीजम्। 'उपसर्गे च संज्ञायाम्' (३. २. ९९) इति डः। 'अन्येषामपि-' (६. ३. १३७) इति दीर्घः। त्रीणि ॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ हेतु, २ कारण, ३ बीज- ये तीन नाम कारण के हैं। इनमें हेतु शब्द पुल्लिङ्ग, शेष नपुंसकलिङ्ग है।

निदानं त्वादिकारणम्॥२८॥

कृष्णमित्रटीका:- निदीयतेऽनेन[5]। आदिर्मुख्यं कारणमुपादानमिति यावत्॥२८॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ निदान- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम आदिकारण का है॥२८॥

क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः

कृष्णमित्रटीका:- क्षेत्रं शरीरं जानाति। अततीत्यात्मा। अति, 'सातिभ्यां-' (उ. ४. १५२) मनिण्। पुरति पुरुषः। 'पुर अग्रगमने' (तु. प. से.) पुरः। पुरि शेते इति वा। त्रीणि॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१ क्षेत्रज्ञ, २ आत्मन् (नान्त), ३ पुरुष- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम शरीर के अधिदैवत (चैतन्य) के हैं।

प्रधानं प्रकृतिस्त्रियाम्॥

कृष्णमित्रटीका:-प्रधान्तेऽत्र[8] सर्वम्। प्रकृष्टाः कृतिः कार्यं यस्याः। सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्था-अव्यक्ताख्या। द्वे ॥[9]

हिन्दी अर्थ :-१ प्रधान (नपुंसकलिङ्ग), २ प्रकृति- ये दो नाम सत्त्व आदि गुणों की साम्य-अवस्था (प्रकृति) के हैं। प्रकृति शब्द स्त्रीलिङ्ग है।

विशेषः कालिकोऽवस्थाः

कृष्णमित्रटीका:-कालकृतो देहादेर्भेदो यौवनादिरवस्था। कालेन निर्वृत्तः। 'निर्वृत्तेऽक्षद्यूतादिभ्यः' (४. ४.१९) इति ठक्। 'अवपूर्वात्तिष्ठतेरङ्' (३. ३. १०६)॥[10]

---

1. **Five words** which used at the end of nouns denote excellence or best of its kind 2. Good luck [1] 3. M. नियम्यतेनया 4. M. विधीयतेनेन 5. **Destiny or fate** [6]

1. M. कमिगमि 2. M. कार्यतेनेन 3. M. जायतेनेन 4. **Cause** [3] 5. M. निदीयतेनेन 6. **Primary Cause.** [1] 7. **Purusa** [3] 8. M. प्रधत्तेत्र 9. **Prakrti,** the Material Cause of the universe [2] 10. **The stage such as youth etc.** [1]

हिन्दी अर्थ :-१ अवस्था, यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम कालकृत यौवन आदि विशेष उम्र का हैं।

गुणाः सत्त्वंरजस्तमः ॥२९॥

कृष्णमित्रटीका :- गुणाः प्रकृतेर्धर्माः। सत्त्वम्, साधुत्वम्, तच्च प्रकाशकं ज्ञानसुखहेतुः। रञ्जयति। रागात्मा दुःखहेतुः[१]। 'भूरञ्जिभ्यां कित्' (उ. ४. २१६) इत्यसुन्। ताम्यत्यनेन तमः। असुन्॥ २९॥[२]

हिन्दी अर्थ :-१ सत्त्व, २ रजस् (सान्त), ३ तमस् (सान्त)- ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम गुणों के हैं॥२९॥

जनन के ६ नाम

जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः।

कृष्णमित्रटीका :- जननं जनुः। जनेरुसि (उ. २. ११५), ल्युटि (३. ३. ११५) जननम्। मनिनि (उ. ४. १४४) जन्म। जनिः। इक् षट्॥[३]

हिन्दी अर्थ :-१ जनुस् (सान्त न.), २ जनन (न.), ३ जन्मन् (नान्त नपुंसकलिङ्ग), ४ जनि (स्त्रीलिङ्ग), ५ उत्पत्ति (स्त्रीलिङ्ग), ६ उद्भव (पुल्लिङ्ग)- ये छः नाम जन्म के हैं।

प्राणियों के ६ नाम

प्राणी तु चेतनो जन्मी जन्तुजन्युशरीरिणः॥३०॥

कृष्णमित्रटीका :- प्राणाः सन्त्यस्य। अत इनिः (५. २. ११५)। चेतयते। नन्द्यादिः (३.१. १३४)। जन्मी। व्रीह्यादित्वात् (५. २. ११६)। जायते। 'कमिगमिजनि-' (उ. १. ७२) इति तुन्। 'यजिमनि-' (उ. ३. २०) इति युच्। जन्युः॥३०॥[४]

हिन्दी अर्थ :-१ प्राणिन् (इन्नन्त), २ चेतन, ३ जन्मिन् (इन्नन्त), ४ जन्तु, ५ जन्यु, ६ शरीरिन् (इन्नन्त)- ये छः नाम प्राणी के हैं॥३०॥

जातिर्जातं च सामान्यम्

कृष्णमित्रटीका :- जायते जातिः। क्तिन्। क्ते (३. ३. १७४) जातम्। समानानां भावः। त्रीणि॥[५]

हिन्दी अर्थ :-१ जाति (स्त्रीलिङ्ग), २ जात (नपुंसकलिङ्ग), ३ सामान्य (नपुंसक)- ये तीन नाम घट आदि जाति के हैं।

1. M. दुष्खहेतुः 2. **Sattva**, rajas and tamas qualities [1each] 3. **Origin or birth.** [8] 4. **Living Creature** [6] 5. **Universal** [3].

व्यक्तिस्तु पृथगात्मता।

कृष्णमित्रटीका :- व्यज्यतेऽनया[१]। अञ्जू क्तिन् (३. ३. ९४) पृथगात्मा यस्य तस्य भावः। द्वे॥[२]

हिन्दी अर्थ :-१ व्यक्ति, २ पृथगात्मता- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम घट आदि व्यक्ति के हैं।

मन के ७ नाम

चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृन्मानसं मनः ॥३१॥

इति कालवर्गः ॥४॥

कृष्णमित्रटीका :- चेतति चित्तम्। क्तः (३. ३. ११४)। असुन् (उ. ४. १८८)। चेतः। ह्रियते विषयैः। हृञः कयन् दुगौ। स्वनति। 'क्षुब्धस्वान्त-' (७. २. १८) इति साधुः। ह्रियते हृत्। क्विपि (३. २. १७८) तुक् (६. १. ७१)। दान्तमपीदम्। मन्यतेऽनेन[३]। असुन् (उ. ४. १८८)। प्रज्ञाद्यणि (५. ४. ३८) मानसम्॥३१॥[४]

इति कालवर्गः॥४॥

हिन्दी अर्थ :-१ चित्त, २ चेतस् (सान्त), ३ हृदय, ४ स्वान्त, ५ हृद् (दान्त), ६ मानस, ७ मनस् (सान्त)- ये सात (नपुंसकलिङ्ग) नाम मन के हैं॥३१॥

इति कालवर्गः ॥४॥

अथ धीवर्गः॥५॥

बुद्धि के १४ नाम

बुद्धिर्मनीषा धिषणा धीः प्रज्ञा शेमुषी मतिः।
प्रेक्षोपलब्धिश्चित्संवित्प्रतिपज्ज्ञप्तिचेतनाः ॥१॥

कृष्णमित्रटीका :- बुद्ध्यतेऽनया[५]। क्तिन् (३. ३. ९४)। मनस ईषा। देधेष्टि धिषणा। 'धिष शब्दे' (भ्वा. प. से.)। युच्। ध्यायत्यनया धीः। 'ध्यायतेः संप्रसारणं च'(वा. ३. २. १७८) इति क्विप्। 'आतश्चोपसर्गे' (३. ३. १०६) इत्यङि प्रज्ञा। शेते। शेः विच् (३. २. ७५)। मोहः। तं मुष्णाति। मूलविभुजादित्वात् (वा. ३. २.५) के गौरादित्वात् (४. १. ४१) ङीष्। मन्यतेऽनया[६]। क्तिन् (३. ३. ९४)। 'गुरोश्च हलः' (३. ३. १०३) इत्यङ्[७]। षित्वात् (३. ३. १०४) अङि प्राप्ते बाहुलकात् क्तिन्। उपलब्धिः। क्विपि (वा. ३. ३.९) चित्, संवित्। पद्यते।

1. M. व्यज्य-तेनया 2. **Individual** [2] 3. M. मन्यतेनेन 4. **Mind** [7] 5. M. बुद्ध्यतेनया। 6. M. मन्यतेनया 7. M. इति अङ्

प्रतिपत्। ज्ञपश्चुरादि[1] (चु. प. से.)। णिजभावे क्तिन्। ज्ञप्तिः। 'चित संचेतने' (चु. आ. से.) चुरादिः[2]। णिचोऽनित्यत्वादभावे 'ण्यासश्रन्थः-' (३. ३. १०७) इति युच्॥१॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ बुद्धि, २ मनीषा, २ धिषणा, ४ धी, ५ प्रज्ञा, ६ शेमुषी, ७ मति, ८ प्रेक्षा, ९ उपलब्धि, १० चित् (तान्त), ११ संविद् (दान्त), १२ प्रतिपद् (दान्त), १३ ज्ञप्ति, १४ चेतना- ये चौदह (स्त्रीलिङ्ग) नाम बुद्धि के हैं॥१॥

धीर्धारणावती मेधा

कृष्णमित्रटीका :- धारणाशक्तियुक्ता धीः। मेधते[4] सर्वमस्याम्। 'मेधृ संगमे' (भ्वा.उ. से.)एकम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :-कही हुई वार्त्ता को धारण कर रखनेवाली बुद्धि का एक नाम- १ मेधा यह स्त्री नाम है।

संकल्प कर्म मानसम्॥

"अवधानं समाधानं प्रणिधानं तथैव च (४४)"

कृष्णमित्रटीका :- इदमहं कुर्यामिति मनसोव्यापारः संकल्प। घञ् (३. ३. १८)। एकम्॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १ संकल्प, यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम मन के व्यापार (कामना) का है। "अवधान, समाधान प्रणिधान- ये तीन (नपुंसकलिङ्ग) नाम समाधान के हैं।"

चित्ताभोगो मनस्कारः

कृष्णमित्रटीका :- चित्तस्य मनस आभोगः सुखादौ तत्परतया स्थिरीकरणम्, पुनः पुनर्मनसि करणम्। 'अतः कृकमि-' (८. ३. ४६) इति सः। द्वे ॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१ चित्ताभोग, २ मनस्कार- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम सुख आदि (किसी वस्तु) में तत्पर मन के हैं।

चर्चा संख्या विचारणा ॥२॥

"विमर्शो भावना चैव वासना च निगद्यते (४५)"

कृष्णमित्रटीका :- 'चर्च अध्ययने' (चु. उ. से.)। 'चिन्तिपूजि-' (३. ३. १०५) इत्यङ्। संख्यानम्। 'चक्षिङः ख्याञ्' (२. ४. ५४)। 'ण्यास-' (३. ३. १०७) इति युच्। विचारणा ॥२॥ त्रीणि॥[8]

हिन्दी अर्थ :-१ चर्चा, २ संख्या, ३ विचारणा- ये तीन (स्त्रीलिङ्ग) नाम प्रमाणों के द्वारा किये गए अर्थ की परीक्षा (विचार) के हैं ॥२॥ "विमर्श (पुल्लिङ्ग), भावना, वासना (दो स्त्रीलिङ्ग) ये तीन नाम वासना के हैं।"

अध्याहारतर्क ऊहः

कृष्णमित्रटीका :- अध्याहरणमपूर्वोत्प्रेक्षणम् हृञो घञ् (३. ३. १८)। तर्कणम्। 'तर्क भाषार्थः' (चु. प. से.)। त्रीणि॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ अध्याहार, २ तर्क, ३ ऊह- ये तीन (पुल्लिङ्ग) नाम तर्क (अपूर्व विचार) के हैं।

विचिकित्सा तु संशयः।

सन्देहद्वापरौ च

कृष्णमित्रटीका :- 'कित संशये' (भ्वा. प. से.)। सन् (३. १. ५)। 'अ प्रत्ययात्' (३. ३. १०२)। शीङः (अ. आ. से.) 'एरच्' (३. ३. ५६)। घञ्। सन्देहः। द्वौ पक्षौ यत्र द्वापरः। पृषोदरादित्वात् (६. ३. १०९) आत्वम्। चत्वारि॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ विचिकित्सा (स्त्रीलिङ्ग), २ संशय (पुल्लिङ्ग), ३ संदेह (पुल्लिङ्ग), ४ द्वापर (पुल्लिङ्ग)- ये चार नाम संशयज्ञान के हैं।

अथ समौ निर्णयनिश्चयौ ॥३॥

कृष्णमित्रटीका :- निर्णयः। निश्चयनम्। 'ग्रहवृद्वनिश्चि-' (३. ३. ५८) इत्यप् ॥३॥ द्वे ॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ निर्णय, २ निश्चय- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम निर्णय (निश्चय) के हैं॥३॥

मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकता

कृष्णमित्रटीका :- मिथ्या परलोको नास्तीत्येवंविधादृष्टिर्बुद्धिरस्य। नास्ति परलोक इति मतिर्यस्य तद्भावः। 'अस्ति नास्ति दिष्टंमतिः' (४. ४. ६०)। इति ठक्। द्वे ॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ मिथ्यादृष्टि, २ नास्तिकता- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम परलोक को मिथ्या जानने के हैं।

व्यापादो द्रोहचिन्तनम्।

---

1. M. ज्ञपेश्चुरादि 2. M. चुरादि 3. **Intellect** [14] 4. M. मेधन्ते 5. **Retentive faculty,** mental vigour [1] 6. **Volition.** [1] 7. **Mental attention to pleasure & C.** [2] 8. **Discussion** [3].

1. **Reasoning** [3] 2. **Doubt.** [4] 3. **Decision** [2] 4. **Atheism** [2]

कृष्णमित्रटीका:- व्यापादनं व्यापादः। 'पद गतौ' (दि. आ. अ.)। व्याङ्पूर्वात् ण्यन्तात् (३. १. २६) घञ् (३. १. २६)। द्वे ॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ व्यापाद (पुल्लिङ्ग), २ द्रोहचिन्तन (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम परद्रोहचिंतन के हैं।

समौ सिद्धान्तराद्धन्तौ

कृष्णमित्रटीका:- राद्धः सिद्धः अन्तो निश्चयोऽस्य[2]। द्वे ॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ सिद्धान्त, २ राद्धान्त- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम सिद्धान्त (निश्चय की हुई बात) के हैं।

भ्रान्तिर्मिथ्यामतिर्भ्रमः ॥४॥

कृष्णमित्रटीका:- 'भ्रमु चलने' (भ्वा. प. से.)। क्तिन् (३. ३. ९४)। 'अनुनासिकस्य-' (६. ४. १५) इति दीर्घः। भ्रान्तिः। मिथ्यामतिरतस्मिंस्तदिति ज्ञानम्। भ्रमः। घञ् (३. ३. १८)। 'नोदात्तोपदेश-' (७. ३. ३४) इति न वृद्धिः ॥४॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ भ्रान्ति (स्त्रीलिङ्ग), २ मिथ्यामति (स्त्रीलिङ्ग), ३ भ्रम (पुल्लिङ्ग)- ये तीन नाम भ्रम के हैं ॥४॥

स्वीकार करने के १० नाम

संविदागूः प्रतिज्ञानं नियमाश्रवसंश्रवाः।
अङ्गीकाराभ्युपगमप्रतिश्रवसमाधयः ॥५॥

कृष्णमित्रटीका:- संवेदनम्। संवित्। क्विप् (वा. ३. ३. ९४)। आगमनमागूः। 'गमेः' इति प्रकृते 'भ्रमेश्च डूः' (उ. २. ६८)। 'यमः समुपनिविषु च' (३. ३. ६८) इत्यप्। नियमः। 'श्रु श्रवणे' (भ्वा. प. अ.)। 'ऋदोरप्' (३. ३. ५७)। आश्रवः। अङ्गीकारः। घञ्। 'ग्रहवृदृ-' (३. ३. ५८) इत्यप्। अभ्युपगमः ॥५॥ दश ॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ संविद्, २ आगू, ३ प्रतिज्ञान, ४ नियम, ५ आश्रव, ६ संश्रव, ७ अङ्गीकार, ८ अभ्युपगम, ९ प्रतिश्रव, १० समाधि- ये दश नाम अङ्गीकार (प्रतिज्ञा) के हैं। इनमें संवित् और आगू (स्त्रीलिङ्ग), प्रतिज्ञान (नपुंसकलिङ्ग), और शेष (पुल्लिङ्ग) हैं ॥५॥

मोक्षे धीर्ज्ञानम्

1. Malice [2] 2. M. निश्चयोस्य 3. Doctrine [2] 4. Error [3] 5. Acceptance [10]

कृष्णमित्रटीका:- मोक्षफलिका धीः ज्ञानम् ॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ ज्ञान- यह (नपुंसकलिङ्ग) नाम मोक्ष में लगी बुद्धि का हैं।

अन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः।

कृष्णमित्रटीका:- अन्यत्र शास्त्रे शिल्पादौ च या धीः सा विज्ञानम् ॥[2]

हिन्दी अर्थ :-मोक्ष से अन्यत्र शिल्पविद्या और शास्त्र में बुद्धि लगाने का एक नाम- १ विज्ञान है। (नपुंसकलिङ्ग) नाम शिल्प और अन्यशास्त्रों में जो बुद्धि हैं उसका है।

मोक्ष के ८ नाम

मुक्तिः कैवल्यनिर्वाणश्रेयो निःश्रेयसामृतम् ॥६॥
मोक्षोऽपवर्गः

कृष्णमित्रटीका:- मोचनं मुक्तिः। केवलस्य भावः कैवल्यम्। 'गुणवाचन-' (५. १. १२४) इति ष्यञ्। निर्वान्त्यस्मिन्निर्वाणम्। 'निर्वाणोऽवाते[3]' (७. २. ५०) इति साधुः। अतिशयेन प्रशस्यं श्रेयः। निश्चितं श्रेयो निःश्रेयसम्[4]। 'अचतुरविचतुर-' (५. ४. ७७) इत्यच्। नास्ति मृतमत्र ॥६॥ 'मोक्ष अवसाने' (चु. उ. से.) चुरादिः। 'एरच्' (३. ३. ५६)। अपवर्जनं भावेभ्योऽपवर्गः[5]। घञ्॥ अष्टौ ॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ मुक्ति, २ कैवल्य, ३ निर्वाण, ४ श्रेयस् (सान्त), ५ निःश्रेयस् (सान्त), ६ अमृत, ॥६॥ ७ मोक्ष, ८ अपवर्ग- ये आठ नाम मोक्ष के हैं। इनमें मुक्ति (स्त्रीलिङ्ग), मोक्ष, अपवर्ग (पुल्लिङ्ग), शेष (नपुंसकलिङ्ग) हैं।

अथाज्ञानमविद्याहंमतिः स्त्रियाम्।

कृष्णमित्रटीका:- विरुद्धवेदनमविद्या। 'संज्ञायां समज-' (३. ३. ९९) इति क्यप्। अहमित्यस्य मननमहंमतिः। अनात्मन्यात्मबुद्धिः। त्रीणि ॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१ अज्ञान (नपुंसकलिङ्ग), २ अविद्या, ३ अहम्मति- ये तीन नाम अज्ञान के हैं। इनमें अविद्या, अहंमति शब्द स्त्रीलिंग हैं।

1. Knowledge relating to the moksa or liberation [1] 2. Knowledge of an art [1] 3. M. निर्वाणोवाते 4. M. निश्रेयसम् 5. M. भावेभ्योपवर्गः 6. Moksa [8] 7. Nescience or ignorance [3]

रूपं शब्दो गन्धरसस्पर्शाश्च विषया अमी ॥७॥
गोचरा इन्द्रियार्थाश्च

कृष्णमित्रटीका:- रूपयति। '(रूप) रूपक्रियायाम्' (चु. उ. से.) चुरादिः। शप्यते आक्रुश्यते शब्दः। 'शाशपिभ्यां-' (उ. ४. ९७) दन्। गन्धयति। 'गन्ध अर्दने' (चु. आ. से.)। रस्यते, आस्वाद्यते रसः। स्पृशेः स्पर्शः। घञ्। विषेशेण सिन्वन्ति निबध्नन्तीन्द्रियाणि[1], विषयाः। पचाद्यच् (३. ३. १३४) 'परिनिषि-' (८. ३. ७०) इति षः॥७॥ गाव इन्द्रियाणि चरन्त्येषु। 'गोचर-' (३. ३. ११९) इति साधुः। इन्द्रियैरर्थ्यन्ते इन्द्रियार्थाः। 'अर्थ याञ्चायाम्' (चु. आ. से.)। त्रीणि ॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ रूप (नपुंसकलिङ्ग), २ शब्द (पुल्लिङ्ग), ३ गन्ध (पुल्लिङ्ग), ४ रस (पुल्लिङ्ग), ५ स्पर्श (पुल्लिङ्ग) ॥७॥- ये पाँच विषयों के नाम हैं। इकट्ठे रूपरसादि १ विषय, २ गोचर (पुल्लिङ्ग), ३ इन्द्रियार्थ (पुल्लिङ्ग)- इन तीन नामों से प्रसिद्ध हैं।

हृषीकं विषयीन्द्रियम्।

कृष्णमित्रटीका:- हृष्यन्त्यनेन। 'अलिहृषिभ्यां कित्' (उ. ४. १७) इति ईकन्। विषयोऽस्यास्ति[3]। इन्द्रस्यात्मनो लिङ्गम्, इन्द्रियम्। इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गम्- (५. २. ९३) इत्यादिना निपातितः॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ हृषीकं, २ विषयी (इन्नन्त), ३ इन्द्रिय- ये तीन (नपुंसकलिङ्ग) नाम चक्षु आदि इन्द्रिय के हैं।

कर्मेन्द्रियं तु पाय्वादि

कृष्णमित्रटीका:- पिबति शोषयति तैलम्। पायुः। कृवापाजि- (उ. १.१) इत्युण्। वाक्पाणिपादपायूपस्थाख्यं कर्मसाधनमिन्द्रियम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- गुदा आदि॥ (गुदा, लिंग, हाथ, पैर, वाणी) कर्मेन्द्रियों के नाम हैं।

मनो नेत्रादि धीन्द्रियम्॥८॥

कृष्णमित्रटीका:- चक्षुः श्रोत्रत्वग्घ्राणरसनामनांसीति बुद्धिसाधनानीन्द्रियाणि॥८॥[6]

1. M. निबध्नन्ति इन्द्रियाणि 2. **Sense-objects, namely form,** taste, smell, sound and touch [1 each] 3. M. विषयोस्यास्ति 4. Sense-organ [3] 5. **Karmendriya** (organ of action as the anus Sc. 6. **Jnanendriya (organ of perception)** as the mind & C.

हिन्दी अर्थ :-ज्ञानेन्द्रियों के पाँच नाम है-१ मनस्, २ नेत्र, ३ बुद्धि, ४ कान, ५ नाक- ये पाँच ज्ञानेन्द्रिय कहलाते हैं ॥८॥

रस के ६ नाम

तुवरस्तु कषायोऽस्त्री

कृष्णमित्रटीका:- तौति हिनस्ति रोगान्। 'तु' इति सौत्रादौणादिको एवरच् (उ. ३. १)। कषति कण्ठम्[1]। 'कष हिंसायाम्' (भ्वा. प. से.)। बाहुलकादायः॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ तुवर -कषाय, २ मधुर, ३ लवण, ४ कटु, ५ तिक्त, ६ अम्ल, ये छः रसवाचक शब्द (पुल्लिङ्ग) हैं। कषायशब्द (पुल्लिङ्ग न.), शेष (पुल्लिङ्ग) हैं। ये शब्द रसवानों में वर्त्तमान हों तो त्रिलिङ्गी हैं। इनमें तुवरशब्द हरड आदि में प्रसिद्ध है।

मधुरो

कृष्णमित्रटीका:- मधु माधुर्यमस्यास्ति। 'ऊषशुषि-' (५. २. १०७) इति रः॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ मधुर- यह एक नाम मिठास का है। मधुर रस जल आदि में प्रसिद्ध है।

लवणः।

कृष्णमित्रटीका:- लुनाति जाड्यं लवणः। नन्द्यादिः (३. १. १३४)॥[4]

हिन्दी अर्थ :-इस रस का एक नाम- १ लवण है। लवण रस सेंधा आदि में प्रसिद्ध हैं।

कटुः।

कृष्णमित्रटीका:- कटत्यावृणोति। 'कटे वर्षावरणयोः' (भ्वा. प. से.)। 'कटि वटिभ्यां च' (उ. १. ८) इत्युः॥[5]

हिन्दी अर्थ :-इस रस का एक नाम- १ कटु है - कटु रस मरीच आदि में प्रसिद्ध हैं।

तिक्तः

कृष्णमित्रटीका:- तेजयति स्म तिक्तः॥[6]

हिन्दी अर्थ :-इस रस का एक नाम- १ तिक्त है। तिक्त रस नींब आदि में प्रसिद्ध है।

अम्लश्च[7]

1. M. कण्ठम् 2. **Astringent flavour** [2]. 3. **Sweet taste** [1] 4. **Saline taste** [1] 5. **Acrid flavour** [1] 6. **Bitter taste** [1] 7. **K. and B.** read it as अम्ब्लश्च

कृष्णमित्रटीका:- अमति रुजत्यरुचिमम्लः। बाहुलकाल्ल ॥[1]

हिन्दी अर्थ :-इस रस का एक नाम- १ अम्ल है। अम्ल रस अमली आदि में प्रसिद्ध हैं।

रसाः पुंसि तद्वत्सु षडमी त्रिषु ॥९॥

कृष्णमित्रटीका:- अमी षट् रसवति वाच्ये त्रिषु लिङ्गेषु बोध्याः ॥९॥

हिन्दी अर्थ :-कषाय आदि रसवाचक शब्द यदि द्रव्यवाचक हों तो तीनां लिंगों में होते हैं॥९॥

विमर्दोत्थे परिमलो गन्धे जनमनोहरे।

कृष्णमित्रटीका:- सुरतादिविमर्दोत्थे माल्यादिगन्धे, घर्षणसमुद्भवे चन्दनादिगन्धे च, जनानां मनोहरे, परिमलः। परिमल्यते। 'मल धारणे' (भ्वा. आ. से.)॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ परिमल- यह (पुल्लिङ्ग) नाम संघर्षण आदि से उत्पन्न और मनोहारी गंध का है।

आमोदः सोऽतिनिर्हारी

कृष्णमित्रटीका:- सः गन्धः। अतिनिर्हारी, अत्यन्तमनोहरश्चेदामोदः। आसमन्तान्योदयति। अच् (३. १. १३४)॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ आमोद- यह (पुल्लिङ्ग) एक नाम अत्यन्त समा-कर्ष वाले (मनोहारी) गंध का है।

वाच्यलिङ्गत्वमागुणात् ॥१०॥

कृष्णमित्रटीका:- आगुणात्, 'गुणे शुक्लादयः पुंसि' (अ. १. ५. १७) इत्यतः प्राक्। इत ऊर्ध्वं 'वाच्यलिङ्गता' इत्यधिक्रियते॥१०॥

हिन्दी अर्थ :-यहां से लेकर ''गुणे शुक्लदयः पुंसि'' इससे पहले जो शब्द हैं वे वाच्यलिङ्ग (जो आगे कहे जायगें) अर्थात् विशेष्यलिङ्ग होते हैं शब्द त्रिलिङ्गी है। कस्तूरी में आमोद गंध है। कपूर में सुखवासना गंध है। बकुल में परिमल गंध है। चंपा आदि में सुरभि गंध है॥१०॥

समाकर्षी तु निर्हारी

कृष्णमित्रटीका:- समाकर्षति मनः। णिनिः। दूरगामिगन्धस्य द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ समाकर्षिन् (इन्नन्त), २ निर्हारिन् (इन्नन्त), ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम दूर से जाने वाले गंध के हैं।

1. Sour tast [1] 2. Fragrance arising from rubbing [1] 3. Perfume [1] 4. Diffused odour [2]

सुरभिर्घ्राणतर्पणः।
इष्टगन्धः सुगन्धिः स्यात्

कृष्णमित्रटीका:- सुष्ठु रभन्तेऽत्र[1]। इन् (उ. ४. ११७) घ्राणं तर्पयति। ल्युः (३. १. १३४)। इष्टो गन्धोऽस्य[2]। चत्वारि॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ सुरभि, २ घ्राणतर्पण, ३ इष्टगन्ध, ४ सुगंधि- ये चार (पुल्लिङ्ग) नाम सुन्दर (अत्युत्तम) गंध के हैं।

आमोदी मुखवासनः॥११॥

कृष्णमित्रटीका:- आमोदयति। मुखं वासयति। मुखवासनवटिकादेर्द्वे॥११॥[4]

हिन्दी अर्थ :-मुख को सुगंधित करने वाले १ आमोदिन् (इन्नन्त), २ मुखवासन- ये दो (पुल्लिङ्ग) ताम्बूल आदि गंध के हैं॥११॥

पूतिगन्धिस्तु दुर्गन्धः

कृष्णमित्रटीका:- पूयते पूतिः। 'पूयी विशरणे' (भ्वा. आ. से.)। क्तिन् (३. ३. ९४)। पूतिर्दुष्टो गन्धोऽस्य[5] द्वे ॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ पूतिगन्धि, २ दुर्गन्ध- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम दुष्टगंध (दुर्गन्ध) के हैं।

विस्रं स्यादामगन्धि यत्।

कृष्णमित्रटीका:- विस्यति। 'विस प्रेरणे' (दि. प. से.)। बाहुलकाद्रक् (उ. २. १३)। आमोऽपक्वमलः। तस्येव च गन्धोऽस्य[7]। अपक्वमांसादिगन्धस्य द्वे ॥[8]

हिन्दी अर्थ :-१ विस्र, २ आमगंधि- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम कच्ची गंधि के हैं अर्थात् विना पके हुए मांस आदि के हैं।

श्वेतवर्ण के १३ नाम

शुक्ल-शुभ्र-शुचि-श्वेत-विशद-श्येत-पाण्डराः॥१२॥
अवदातः सितो गौरो वलक्षो धवलोऽर्जुनः।

कृष्णमित्रटीका:- शोकति मनोऽस्मिन्[9] शुक्लः। 'शुक गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'ऋज्रेन्द्र-' (उ. २. २८) इति निपातितः। शोभते शुभ्रः।

1. M. रमन्तेत्र 2. M. गन्धोस्य 3. Sweet smell [4] 4. A perfume for the mouth made up in the form of Camphor pill & C. [2] 5. M. गन्धोस्य 6. Fetid odour [2] 7. M. गन्धोस्य 8. Smell like that of raw meat. [2] 9. M. मनोस्मिन्

'स्फायि-' (उ. २. १३) इति रक्। 'शुच् दीप्तौ' (?)। इक् (वा. ३. ३. १०८)। श्वेतते श्वेतः। '(श्वि) श्विता वर्णे' (भ्वा. आ. से.)। विशीयते विशदः। शदलृ (भ्वा. तु. प. अ.)। अच् (३. १. १३४)। श्यायते श्येतः[1]। 'श्यैङ् गतौ' (भ्वा. आ. अ.)। 'हृश्याभ्यामितन्' (उ. ३. ९३)। पण्डते मनोऽस्मिन्[2] पाण्डरः। 'पडि गतौ' (भ्वा. आ. से.) बाहुलकादरदीर्घौ ॥१२॥ अवदायते स्म। दैपः क्तः। सिञः क्तः (उ. ३. ८९)। गुरुते उद्युङ्क्ते मनोऽस्मिन्[3]। 'गुरी उद्यमने' (तु. आ. से.)। गोर एव गौरः। अवलक्ष्यते वलक्षः। धवनं धवः। धूञोऽप्[4] (३. ३. ५७)। धवं लाति धवलः। अर्ज्यतेऽर्जुनः[5]। 'अर्जेर्णि लुक् च' (उ. ३. ५८) इत्युनन्॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १ शुक्ल, २ शुभ्र, ३ शुचि, ४ श्वेत, ५ विशद, ६ श्येत, ७ पांडर, ॥१२॥ ८ अवदात, ९ सित, १० गौर, ११ वलक्ष, १२ धवल, १३ अर्जुन- ये तेरह नाम सफेद रंग के हैं।

हरिणः पाण्डुरः पाण्डुः

कृष्णमित्रटीका:- हरति मनः। 'श्यास्त्याहृञ-विभ्य इन च्' (उ. २. ४६) पाण्डुः। पाण्डुत्वमस्यास्ति। नगपाण्डुपांशुभ्यो रः (वा. ५. २. १०७)। त्रीणि॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१ हरिण, २ पांडुर, ३ पांडु- ये तीन नाम पीले से मिले हुए सुफेद रंग के हैं।

ईषत्पाण्डुस्तु धूसरः ॥१३॥

कृष्णमित्रटीका:- ईषदव्यक्तः पाण्डुः। धूसनं धुसः। 'धूस कान्तौ' (चू. प. से.) चुरादिः। 'एरच्' (३. ३. ५६)। धूसं राति। एकम्॥१३॥[8]

हिन्दी अर्थ :-१ ईषत्पाण्डु, २ धूसर- ये दो नाम अल्पश्वेत रंग के हैं॥१३॥

कृष्णे नीलासितश्यामकालश्यामलमेचकाः।

कृष्णमित्रटीका:- कर्षति मनः। 'कृषेर्वर्णे' (उ. ३. ४) इति नक्। नीलते। 'नील वर्णे' (भ्वा. आ. से.)। असितो न सितः। श्यायते मनोऽस्मात्[9]। 'श्यैङ् गतौ' (भ्वा. आ. अ.)। 'इषियुधि-' (उ. १. १४५) इति मक्। कालयति मनः। श्यामं श्यामत्वं लाति। मेचयति मिश्रीभवति मेचकः॥[10]

1. M. श्येत 2. M. मनोस्मिन् 3. M. मनोस्मिन्। 4. M. धूञोप् 5. M. अज्यतेर्जुनः 6. **White** [13] 7. **Pale-white** [13] 8. **Gray** [2] 9. M. मनोस्मात् 10. **Black** [7]

हिन्दी अर्थ :-१ कृष्ण, २ नील, ३ असित, ४ श्याम, ५ काल, ६ श्यामल, ७ मेचक- ये सात नाम काले नीले आदि रंग के हैं।

पीतो गौरो हरिद्राभः

कृष्णमित्रटीका:- पीयते पीतः। त्रीणि॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ पीत, २ गौर, ३ हरिद्राभ- ये तीन नाम पीले रंग के हैं।

पालाशो हरितो हरित् ॥१४॥

कृष्णमित्रटीका:- पलाशस्य पर्णस्यायम्। हरति। 'हृश्याभ्यामितन्' (उ. ३. ९३)। 'हृसृरुहियुषिभ्यः इतिः[2]' (उ. १. ९७)॥१४॥ त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ पालाश, २ हरित, ३ हरित्- ये तीन नाम हरे रंग के हैं॥१४॥

रोहितो लोहितो रक्तः

कृष्णमित्रटीका:- रोहति। रुहेस्तन्। रलयोरेकत्वम्। रजति स्म। 'रञ्ज रागे' (भ्वा. उ. अ.)। क्तः (३. २. १०२)॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ रोहित, २ लोहित, ३ रक्त- ये तीन नाम लाल रंग के हैं।

शोणः कोकनदच्छविः।

कृष्णमित्रटीका:- शोणति। 'शोणृ वर्णे' (भ्वा. प. से.)। कोकनदं रक्तोत्पलमिव च्छविर्यस्य॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ शोण, २ काकनदच्छवि- यह नाम लाल कमल के समान रंग का है।

अव्यक्तरागस्त्वरुणः

कृष्णमित्रटीका:- अव्यक्तो रागो लौहित्यमस्य। ऋच्छति। 'अर्तेरुनन्' (उ. ३. ६०)॥द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ अरुण- यह एक नाम थोड़े लाल रंग का है।

श्वेतरक्तस्तु पाटलः ॥१५॥

कृष्णमित्रटीका:- पाटयति। 'पट गतौ' (भ्वा. प. से.)। ण्यन्तात्कलच् (उ. १. १०६)॥१५॥ द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१ पाटल- यह नाम सफेद और लाल मिले हुए अर्थात् गुलाबी रंग का हैं॥१५॥

1. **Yellow** [3] 2. M. इति 3. **Green** [3] 4. **Red** [3] 5. **Crimson** [2] 6. **The colour of the dawn** [1] 7. **Pale-red** [2]

श्यावः स्यात्कपिशः।

कृष्णमित्रटीका:- श्यायते श्यावः बाहुलकात्, वः (उ. १. १५६) कपिर्मर्कटो वर्णोऽस्त्स्य[1]। लोमादित्वात् (५. २. १००) शः। कृष्णपीतस्य द्वे ॥[2]

हिन्दी अर्थ :- मिले हुए काले और पीले रङ्ग के दो नाम- १ श्याव, २ कपिश- ये दो नाम धूसर अरुण अर्थात् वानर जैसे रंग के हैं।

धूम्रधूमलौ कृष्णलोहिते ।

कृष्णमित्रटीका:- धूमं राति। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। कृष्णमिश्रो लोहितः। त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ धूम्र, २ धूमल, ३ कृष्णलोहित- ये तीन नाम काले सहित लाल रंग के हैं।

कडारः कपिलः पिङ्गपिशङ्गौ कद्रुपिङ्गलौ ॥१६॥

कृष्णमित्रटीका:- कडति कडः। तमाराति कडारः। कपिवर्णं लाति। पिञ्जति पिङ्गः। 'पिजि वर्णे' (अ. आ. से.)। पेशति पिशङ्गः। 'पिश अवयवे' (तु. उ. से.)। 'विडादिभ्यः कित्' (उ. १. १२१) इत्यङ्गच्। कन्दते कद्रुः। 'कदि आह्वाने रोदने च' (भ्वा. आ. से.)। मृगय्वादित्वात् (उ. १. ३७) साधुः। पिङ्गं लाति॥१६॥ षट्॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ कडार, २ कपिल, ३ पिङ्ग, ४ पिशङ्ग, ५ कद्रु, ६ पिङ्गल- ये छः नाम वानर के जैसे पिंगल (पीले) वर्ण के हैं॥१६॥

चित्रं किर्मीरकल्माषशवलैताश्च कर्बुरे।

कृष्णमित्रटीका:- चीयते चित्रम्। 'अमिचिमि-' (उ. ४. १६३) इति चिञः क्त्रः। कीर्यते किर्मीरम्। 'गम्भीरादयश्च' इति निपातः। कलयति कल्। माषयति माषः। 'मष हिंसायाम्' (भ्वा. प. से.)। कल् चासौ माषश्च। शवति याति वर्णान्, शवल एति वर्णान् एतः। कर्बति कर्बुरः। 'कर्ब हिंसायाम्'। 'मद्गुरादयश्च' (उ. १. ४१) इतिः निपातः॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ चित्र, २ किर्मीर, ३ कल्माष, ४ शबल, ५ एत, ६ कर्बुर- ये छः नाम विचित्र (चितकबरे) वर्ण के हैं।

गुणे शुक्लादयः पुंसि गुणिलिङ्गास्तु तद्वति ॥१७॥

कृष्णमित्रटीका:- गुणमात्रे वर्तमानाः शुक्लादयः शब्दाः पुंसि बोध्याः। पटस्य शुक्ल इति॥

1. M. वर्णोस्त्यस्य 2. **Brown** [2] 3. **Rrownish red** [3] 4. **Tawny** [6] 5. **Variegated Colour.** [6]

शुक्लं रूपमित्यादौ तु विशेष्यनिघ्नता इष्यत एव। तद्वति गुणवति गुणिलिङ्गाः। शुक्लः पटः, शुक्ला शाटी, शुक्लं वस्त्रम्॥१७॥

इति धीवर्गः॥५॥

हिन्दी अर्थ :-केवल गुणवाचक शुक्ल आदि शब्द पुल्लिङ्ग होते है जैसे- पटस्य शुक्लः, और द्रव्यवाधी के साथ गुणवाचक विशेष्य के आधार पर तीनों लिङ्ग में प्रयुक्त होते है। जैसे- शुक्ला शाही, शुक्लपटः, शुक्लं वस्त्रम्॥१७॥

इति धीवर्गः॥५॥

अथ शब्दादिवर्गः॥६॥

सरस्वती के ७ नाम

ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग्वाणी सरस्वती।

कृष्णमित्रटीका:- ब्रह्मण इयं ब्राह्मी। 'ब्राह्मोऽजातौ[1]' (६. ४. ७१) इति निपातः। भरतस्येयम्। भाष्यते भाषा। 'गुरोश्च हलः' (३. ३. १०३)। गृणाति गौः। क्विप् (वा. ३. ३. ६४)। उच्यते वाक्। 'क्विब्वचि-' (वा. ३. २. १७८) इति दीर्घः। वाण्यते शब्द्यते। 'वण शब्दे' (भ्वा. प. से.)। सरः प्रसरणमस्त्यस्याः। अधिष्ठातृदेवतायाः सप्त॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ ब्राह्मी, २ भारती, ३ भाषा, ४ गीर (रान्त), ५ वाच् (चान्त), ६ वाणी, ७ सरस्वती- ये सात (स्त्रीलिङ्ग) नाम सरस्वती के हैं।

व्याहार उक्तिर्लपितं भाषितं वचनं वचः॥१॥

कृष्णमित्रटीका:- व्याहरणम्। घञ् (३. ३. १८)। उच्यते। क्तिन् (३. ३. ९४)। वचः। असुन्॥१॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ व्याहार (पुल्लिङ्ग), २ उक्ति (स्त्रीलिङ्ग), ३ लपित (नपुंसकलिङ्ग), ४ भाषित (नपुंसकलिङ्ग), ५ वचन (बोलने) (नपुंसकलिङ्ग), ६ वचस् (सान्त नपुंसकलिङ्ग)- ये छः नाम वचन के हैं॥१॥

अपभ्रंशोऽपशब्दः स्यात्

कृष्णमित्रटीका:- अपभ्रश्यते संस्कृतात्। अपभ्रंशः। अपभ्रष्टः शब्दोऽपशब्दः[4]। द्वे॥[5]

1. M. ब्राह्मोजातौ 2. **Sarasvati, the goddess of knowledge** [6] 3. **Speech or Words** [6] 4. M. शब्दोपशब्दः 5. **Corrupt word** [2]

हिन्दी अर्थ :-अपभ्रष्ट अर्थात् व्याकरण रीति से अशुद्ध शब्द का एक नाम- १ अपभ्रंश है - यह (पुल्लिङ्ग) है।

शास्त्रे शब्दस्तु वाचकः।

कृष्णमित्रटीका :- शास्त्रे व्याकरणादौ यो वाचकः साधुः सः शब्द इति व्यवह्रियते ॥[1]

हिन्दी अर्थ :-व्याकरण शास्त्र आदि में जो वाचक साधु है उसका शब्द यह एक नाम है।

तिङ् सुबन्तचयो वाक्यं क्रिया वा कारकान्विता ॥२॥

कृष्णमित्रटीका :- तिङन्तचयः- पचति भवति पाको भवतीत्यर्थः। सुबन्तचयः- त्वया कर्तव्यम्। कारकान्विता क्रिया - घटमानय। वक्तव्यं वाक्यम्। 'वचोऽशब्द संज्ञायाम्'[2] (७. ३. ६७) इत्यर्थान्तरे निषेधादत्र कुः ॥२॥[3]

हिन्दी अर्थ :-तिङन्तसुबन्त के समूह या कारकयुक्त क्रिया का वाक्य यह एक नाम है। जैसे - 'पचति भवति, प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्' यह है। अथवा कारकसहिता क्रिया वाक्य कहलाती है। जैसे-'देवदत्त गामभिरक्ष शुक्लदण्डेन' यह वाक्य है॥२॥

श्रुतिः स्त्री वेद आम्नायस्त्रयी

कृष्णमित्रटीका :- श्रूयते श्रुतिः। विदन्त्यनेन धर्मं वेदः। घञ्। आम्नायते। 'म्ना अभ्यासे' (भ्वा. प. अ.)। घञ्। त्रीणि त्रयोऽवयवा यस्या सा त्रयी। त्रय्या धर्मस्त्रयीधर्मः॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ श्रुति, २ वेद (पुल्लिङ्ग), ३ आम्नाय (पुल्लिङ्ग), ४ त्रयी- ये चार नाम वेद के हैं। इनमें श्रुतिशब्द स्त्रीलिंग हैं।

धर्मस्तु तद्विधिः।

कृष्णमित्रटीका :- तया त्रय्या विधिर्विधीयमानो यज्ञादिस्तद्विधिस्तद्विधानम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :-वेद में कही हुई संध्या तर्पण आदि विधि का धर्म -यह एक नाम है - यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम वैदिक विधि यज्ञ आदि का है।

स्त्रियामृक्सामयजुषी इति वेदास्त्रयस्त्रयी ॥३॥

कृष्णमित्रटीका :- ऋच्यते स्तूयतेऽनया[6] ऋक्। स्यति पापं साम। मनिन् (उ. ४. १५२)। इज्यतेऽनेन[7]। 'अर्तिपृवपि-' (उ. २. ११७) इत्युस्॥३॥[8]

1. **Word.** [1] 2. M. वचोशब्दसंज्ञायाम् 3. **Sentence** [1] 4. **Veda** [4] 5. **Dharma** [1] 6. M. स्तूयतेना 7. M. इज्यतेनेन 8. **Trayi** (Rgveda, Yajurveda and Samaveda) [1]

हिन्दी अर्थ :-१ ऋच् (चान्त), २ यजुष् (षान्त नपुंसकलिङ्ग), ३ सामन् (नान्त नपुंसकलिङ्ग)- इन तीन वेदों के समूह का एम नाम त्रयी हैं। इनमें ऋच् शब्द (स्त्रीलिङ्ग) हैं

शिक्षेत्यादि श्रुतेरङ्गम्

कृष्णमित्रटीका :- अङ्ग्यते ज्ञायतेऽनेनाङ्गम्[1], उपकारकम्। शिक्षा कल्पो व्याकरणं ज्योतिष् छन्दो निरुक्तश्च ॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ शिक्षा, २ कल्प, ३ व्याकरण, ४ निरुक्त, ५ ज्योतिष, ६ छन्दस्- ये सभी वेद के छः अंगों के नाम हैं। अंग शब्द (नपुंसकलिङ्ग) है। छः अंग, चार वेद, मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण ये चौदह विद्या हैं।

ओङ्कारप्रणवौ समौ।

कृष्णमित्रटीका :- अवति ओम्। 'अवतेष्टिलोपश्च' (उ. १. १४२) इति मनिनष्टिलोपे 'ज्वरत्वर-' (६. ४. २०) इत्यूठ्। गुणः (७. ३. ८४)। प्रणूयते स्तूयतेऽनेन[3] प्रणवः॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ ओंकार, २ प्रणव- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम ओंकार के हैं।

इतिहासः पुरावृत्तम्

कृष्णमित्रटीका :- 'इति ह आसीत्' यत्रेति इतिहासः। पारम्पर्योपदेशे 'इति ह' इत्यव्ययम्। पुरावृत्तं पूर्वचरितम्। तत्प्रतिपादको ग्रन्थ इति यावत्। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ इतिहास (पुल्लिङ्ग), २ पुरावृत्त (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम भारत आदि पूर्वचरित (इतिहास) के हैं।

उदात्ताद्यास्त्रयः स्वराः ॥४॥

कृष्णमित्रटीका :- स्वर्यन्तेऽर्था[6] एभिः स्वराः॥४॥[7]

उदात्त, अनुदात्त, स्वरितका स्वर एक नाम है। उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, ये तीन स्वर कहलाते हैं॥४॥

आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्तर्कविद्यार्थशास्त्रयोः।

1. M. ज्ञायतेनेनाङ्गम्, 2. **Six Vedangas called Siksa etc.**, 3. M. स्तूयतेनेन, 4. **The sacred syllable.** Om [2]. 5. **Itihasa** (History) [2], 6. M. स्वर्यंते अर्था, 7. **Three Vedic** accents : udatta, anudatta and svarita,

कृष्णमित्रटीका:- प्रत्यक्षागमाभ्यामीहितस्य पश्चात्परीक्षणमन्वीक्षा। सा प्रयोजनमस्याः सा तर्कविद्या। दम्यतेऽनेन[1] दण्डः। 'ञमण्ताड्डुः' (उ. १. ११४)। दण्डो नीयते बोध्यतेऽनया[2] सा दण्डनीतिः। अर्थस्य भूम्यादेः शास्त्रम्॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ आन्वीक्षिकी (स्त्रीलिङ्ग), यह एक नाम गौतमप्रणीत तर्क विद्या का है। १ दण्डनीति, यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम बृहस्पति आदि प्रणीत अर्थनीति शास्त्र (अर्थशास्त्र) का है।

आख्यायिकोपलब्धार्था

कृष्णमित्रटीका:- आचष्टे आख्यायिका। 'चक्षिङः ख्याञ्' (२. ४. ५४)। ण्वुल् (३.१. १३३)। उपलब्धो ज्ञातोऽर्थोऽस्याः[4] । ज्ञातसत्यभूतार्थाकथा॥[5]

हिन्दी अर्थ :-जिसका अर्थ जान लिया हो उस कथा के दो नाम है- १ आख्यायिका, २ उपलब्धार्था। ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम वासवदत्ता आदि ग्रन्थ के हैं।

पुराणं पञ्चलक्षणम्॥५॥

कृष्णमित्रटीका:- पुरापि नवम्। 'पुराणप्रोक्तेषु-' (४. ३. १०५) इति निपातितः। 'सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च। वंश्यानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्'॥५॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १ पुराण, २ पञ्चलक्षण, पुराण- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम सर्ग, पतिसर्ग, वंश, मन्वंतर, वंश्यानुचरित इन पाँच लक्षणों से युक्त पुराणों के दो नाम हैं॥५॥

प्रबन्धकल्पना कथा

कृष्णमित्रटीका:- प्रबन्धस्य कल्पना रचना कथ्यते। कथा कादम्बर्यादिः। 'चिन्तिपूजि-' (३. ३. १०५) इत्यङ् ॥ द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :-कल्पना की हुई कादम्बरी आदि कथा के दो नाम है- १ प्रबन्धकल्पना, २ कथा। यह (स्त्रीलिङ्ग) नाम वाक्य के विस्तार की रचना का है।

1. M. दम्यतेनेन 2. M. बोध्यतेनया 3. **Tarkasastras** (Logic) and Arthasastra (Economics) [1 each]. 4. M. ज्ञातोथौस्याः 5. **Akhyayika** (Narrative) [2] 6. **Purana** [1] 7. **Katha**, a variety of prose composition distinguished from the Akhyayika.

प्रवल्हिका प्रहेलिका

कृष्णमित्रटीका:- प्रवल्ह्यते आच्छादयति। वल्ह आच्छादने (भ्वा. आ. से.)। प्रहेलयति अभिप्रायं सूचयति। 'हिल भावकरणे' (तु. प. से.)। 'व्यक्तीकृत्य कमप्यर्थं स्वरूपार्थस्य गोपनात्। यत्र बाह्यार्थसम्बन्धः[1] कथ्यते सा प्रहेलिका॥' यथा- 'पानीयं पातुमिच्छामि[2] त्वत्तः कमललोचने। यदि दास्यसि नेच्छामि नो चेद्दास्यसि देहि मे॥' दुर्विज्ञातार्थप्रश्नस्य द्वे।[3]

हिन्दी अर्थ :-जिसके सुनने से एक मतलब जाना जाय और विचार करने से दूसरा मतलब निकले उस (कहानी) के दो नाम है- १ प्रवल्हिका, २ प्रहेलिका- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम पहेली के हैं।

स्मृतिस्तु धर्मसंहिता

कृष्णमित्रटीका:- वेदार्थस्मरणपूर्वकं मन्वाद्यै रचितत्वात्स्मृतिः। धर्मः संधीयतेऽस्याम्[4] ॥ द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :-धर्म जानने के लिए रचना किये गये श्लोकों के समूह के दो नाम है - १ स्मृति, २ धर्मसंहिता। स्मृति - यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम धर्म के बोध के लिये रची हुई धर्मसंहिता का हैं।

समाहृतिस्तु संग्रहः ॥६॥

कृष्णमित्रटीका:- समाहरणम्। संग्रहणम्। द्वे॥६॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ समाहृति (स्त्रीलिङ्ग), २ संग्रह (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम संग्रहग्रन्थ के हैं॥३॥

समस्या तु समासार्था

कृष्णमित्रटीका:- समसनं समस्या। 'असु क्षेपणे' (दि. प. से.)। ण्यत् (३. १. १२४)। संज्ञापूर्वकत्वादवृद्ध्यभावः। समसनं समासः। पूरणसाकाङ्क्षः सोऽर्थो[7] यस्याः। कविशक्तिपरीक्षार्थमपूर्णतयैव पठ्यमाना। यथा 'शतचन्द्रं नभस्तलम्' इत्युक्ते 'दामोदरकराघातविकलीकृतचेतसा। दृष्टं चाणूरमल्लेन-' इत्यनेन सा पूर्यते।[8]

हिन्दी अर्थ :-जिसमें कुछ अर्थ पूरा किया जाय उसके दो नाम है- १ समस्या, २ समासार्था। समस्या- यह

1. **B reads** संबन्धः 2. M. पातुमिछामि 3. **Riddle** [2] 4. M. संधीयतेस्या 5. **Smrtisastra** [2] 6. **Compilation** [2] 7. M. सोर्थो। 8. **Samasya,** proposing part of a stanza to another to be completed [2]

एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम कवि की शक्ति की परीक्षा के लिए किसी श्लोक वा कवित्त के संकेत देने का हैं।

किंवदन्ती जनश्रुतिः।

कृष्णमित्रटीका:- किंवदन्तीति। किंवदन्ती लोकप्रवादः। जनेभ्यः श्रूयते। द्वे।[1]

हिन्दी अर्थ :-१ किंवदन्ती, २ जनश्रुति- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम लोकप्रवाद अर्थात् दुर्यश के हैं।

वार्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्यात्

कृष्णमित्रटीका:- वृत्तिर्लोकवृत्तमस्त्यस्याम्। 'वृत्तेश्च' (वा. ५. २. १०१) इति णः। प्रवर्तते व्याप्नोति। वृतेः (भ्वा. आ. से.) क्तिच् (३. ३. १७४)। वृत्तस्य चरितस्यान्तः। उद्गतोऽन्तो[2] यस्य। चत्वारि॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ वार्ता (स्त्रीलिङ्ग), २ प्रवृत्ति (स्त्रीलिङ्ग), ३ वृत्तान्त (पुल्लिङ्ग), ४ उदन्त (पुल्लिङ्ग)- ये चार नाम लोकवृत्तान्त कथन (वार्ता) के हैं।

अथाह्वयः ॥७॥

आख्याह्वमिधानं च नामधेयं च नाम च।

कृष्णमित्रटीका:- आहूयतेऽनेनाह्वयः[4]। बाहुलकाद् घः॥७॥ आख्यानमाख्या। 'आतश्च-' (३. १. १३६) इत्यङ्। एवमाह्वा। नम्यतेऽभिधीयतेऽनेन[5]। 'णम प्रह्वत्वे शब्दे च' (भ्वा. प. अ.)। 'नामन्सीमन्-' (उ. ४. १५०) इति निपातितः। 'भागरूपनामभ्योधेयः' (वा. ५. ४. ३६) स्वार्थे। षट्॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ आह्वय (पुल्लिङ्ग) ॥७॥ २ आख्या (स्त्रीलिङ्ग), ३ आह्वा (स्त्रीलिङ्ग), ४ अभिधान (नपुंसकलिङ्ग), ५ नामधेय (नपुंसकलिङ्ग), ६ नामन् (नान्त नपुंसकलिङ्ग)- ये छः नाम नाम के हैं।

हूतिराकारणाह्वानम्

कृष्णमित्रटीका:- ह्वेञः (भ्वा. उ. अ.) क्तिन् (३. ३. ९४)। कृञो ण्यन्तात् (३. १. २६) युच् (३. ३. १०७)। आकारणा। ल्युटि (३. ३. ११५) आह्वानम्। त्रीणि॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१ हूति (स्त्रीलिङ्ग), २ आकारणा (स्त्रीलिङ्ग), ३ आह्वान (नपुंसकलिङ्ग)- ये तीन नाम आह्वान अर्थात् बुलाने के हैं।

1. **Rumour** [2] 2. M. उद्गतः अन्तो 3. **Talk** [4] 4. M. आहूयतेनेनाह्वयः 5. M. नम्यतेभिधीयतेनेन 6. **Name** [6] 7. **Calling** [3].

संहूतिर्बहुभिः कृता ॥८॥

कृष्णमित्रटीका:- संभूय हूतिः या बहुभिर्मिलितैः कृता॥८॥[1]

हिन्दी अर्थ :- बहुत जनों के द्वारा पुकारने का एक नाम- १ संहूति है- और यह (स्त्रीलिङ्ग) हैं॥८॥

विवादो व्यवहारः स्यात्

कृष्णमित्रटीका:- विविधो वादः। ऋणदानादिर्व्यवहारे न्यायः। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ विवाद, २ व्यवहार- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम कर्जा आदि के कारण अनेक प्रकार के विवाद के हैं।

उपन्यासस्तु वाङ्मुखम्।

कृष्णमित्रटीका:- वाचो[3] मुखमारम्भः।द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ उपन्यास (पुल्लिङ्ग), २ वाङ्मुख (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम वचन (वार्ता) के आरंभ के हैं।

उपोद्धात उदाहारः

कृष्णमित्रटीका:- उप समीपे उद्धननं ज्ञापनमुपोद्धातः। यदाहु- 'चिन्तां प्रकृतसिद्ध्यर्थामुपोद्धातं विदुर्बुधाः' इति। उदाहरणमुदाहारः। वक्ष्यमाणोपयोग्यर्थवर्णनम्। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- जो बात आगे कही जाय उसके उपयोगी बात के दो नाम है- १ उपोद्धात, २ उदाहार- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम प्रकृतसिद्धि अर्थ किये हुए चिन्तन के हैं।

शपनं शपथः पुमान्॥९॥

कृष्णमित्रटीका:- 'शप आक्रोशे' (दि. उ. अ.)। ल्युट् (३. ३. ११५)। शपनम्। 'शीङ्शप-' (उ. ३. ११३) इत्यथः॥९॥ द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ शपन (नपुंसकलिङ्ग), २ शपथ (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम कसम (सौगन्ध) के हैं॥९॥

प्रश्नोऽनुयोगः पृच्छा च

कृष्णमित्रटीका:- प्रच्छनं प्रश्नः। 'यजयाच' (३. ३. ९०) इति नङि 'च्छ्वोः-' (६. ४. १९) इति शः। अनुयोजनमनुयोगः। घञ् (३. ३. १८)। 'गुरोश्च हलः' (३. ३. १०३) इत्यङ्। पृच्छा। त्रीणि॥[7]

1. **Collective calling** [1] 2. **Dispute.** [2] 3. M. वाचौ 4. **Preface** [2] 5. **Introduction.** [2] 6. **Oath** [2] 7. **Question** [3]

हिन्दी अर्थ :-१ प्रश्न (पुल्लिङ्ग), २ अनुयोग (पुल्लिङ्ग), ३ पृच्छा (स्त्रीलिङ्ग)- ये तीन नाम प्रश्न के हैं।

प्रतिवाक्योत्तरे समे।

कृष्णमित्रटीका:-उत्तरत्यनेनोत्तरम्। 'ऋदोरप्' (३.३.५७)। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ प्रतिवाक्य, २ उत्तर- ये दो (न.) उत्तर के हैं।

मिथ्याभियोगोऽभ्याख्यानम्

कृष्णमित्रटीका:-मिथ्याभियोगः। 'त्वं मे शतं धारयसि' इति मिथ्याक्षेपः॥ द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ मिथ्यामियोग (पुल्लिङ्ग), २ अभ्याख्यान (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम झूठे दोष लगाने के हैं।

अथ मिथ्याभिशंसनम्॥१०॥

अभिशापः

कृष्णमित्रटीका:- मिथ्याभिशंसनं सुरापानादिविषयो मिथ्यारोपः॥१०॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ मिथ्यामिशंसन (नपुंसकलिङ्ग)॥१०॥ २ अभिशाप (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम मदिरापान आदि का मिथ्यारोप लगाने के हैं।

प्रणादस्तु शब्दः स्यादनुरागजः।

कृष्णमित्रटीका:-अनुरागात्प्रीतिविशेषाज्जातो यो मुखकण्ठादिशब्दः॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ प्रणाद- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम अनुराग से उत्पन्न शब्द का है।

यशः कीर्तिः समाज्ञा च

कृष्णमित्रटीका:- अश्नुते व्याप्नोति दिशः यशः। 'अशेर्देवने युट् च' (उ. ४. १९०) इत्यसुन्। कीर्त्यते कीर्तिः। 'कृत संशब्दने' (चु. प. से.)। 'ऊतियूति-' (३. ३. ९७) इति निपातितः। समाज्ञायतेऽनया[5]। 'आतश्च' (३. ३. १०६) इत्यङ्। त्रीणि॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ यशस् (नपुंसकलिङ्ग), २ कीर्ति (स्त्रीलिङ्ग), ३ समाज्ञा (स्त्रीलिङ्ग)- ये तीन नाम कीर्ति के हैं।

स्तवः स्तोत्रं नुतिः स्तुतिः॥११॥

कृष्णमित्रटीका:- स्तूयतेऽनेन[1]। 'ऋदोरप्' (३. ३. ५७)। 'दाम्नी-' (३. २. १८२)। इति ष्ट्रनि स्तोत्रम्॥११॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ स्तव (पुल्लिङ्ग), २ स्तोत्र (न.), ३ स्तुति (स्त्रीलिङ्ग), ४ नुति (स्त्रीलिङ्ग)- ये चार नाम स्तुति के हैं॥११॥

आम्रेडितं द्विस्त्रिरुक्तम्

कृष्णमित्रटीका:- आम्रेड्यते आधिक्येनोच्यते स्म। 'मेडृ उन्मादे' (भ्वा. प. से.)। द्वौ वारौ द्विः। त्रीन् वारान् त्रिः॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ आम्रेडित- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम दो वार तीन वार कहने का है।

उच्चैर्घुष्टं तु घोषणा।

कृष्णमित्रटीका:- उच्चैर्घुष्यते। 'घुषिर-विशब्दने' (७. २. २३) इति नेट्। 'ण्यास-' (३. ३. १०७) इति युच्। घोषणा। उच्चशब्दस्य। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ उच्चैर्घुष्ट (न.), २ घोषणा (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम ऊँचे शब्द में बोलने के हैं।

काकुः स्त्रियां विकारो यः शोकभीत्यादिभिर्ध्वनेः॥१२॥

कृष्णमित्रटीका:- ककते काकुः। 'कक लौल्योपतापयोः' (भ्वा. आ. से.)। बाहुलकादुण् (३. ३. १)। शोकक्रोधादिजनितविकृतशब्दस्य॥१२॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ काकु- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम शोक और भय आदि से उत्पन्न ध्वनिविकार का है॥१२॥

निन्दा के १० नाम

अवर्णाक्षेपनिर्वादपरीवादापवादवत्।
उपक्रोशो जुगुप्सा च कुत्सा निन्दा च गर्हणे॥१३॥

कृष्णमित्रटीका:- अवर्णो विपरीतवर्णनम्। अवर्णने घञ् (३. ३. १८)। 'क्षिप् प्रेरणे' (तु. उ. से.)। घञ् (३. ३. १८) निष्क्रान्तो वादात्। यथा अवर्णादयो निन्दार्था, तथोपक्रोशादयोऽपीत्यर्थः[6]। क्रुशेर्घञ् (३. ३. १८) गुपेर्निन्दायां सन् (३. १. ५)। 'कुत्स अवक्षेपणे' (चु.आ. से.)॥ दश॥१३॥[7]

1. **Reply** [2] 2. **False charge** [2] 3. **False accustion** [2] 4. **A burst of applause, huzza** [1] 5. M. समाज्ञयतेनया 6. **Fame** [3]

1. M. स्तूयतेनेन 2. **Praise** [4] 3. **Repeated saying** [1] 4. **Proclamation** or speaking aloud [2] 5. **The changed voice** due to anger and fear [1] 6. M. तथा उपक्रोशोदयो पीत्यर्थः 7. **Blame** [10]

हिन्दी अर्थ :-१ अवर्ण, २ आक्षेप, ३ निर्वाद, ४ परीवाद (परिवाद), ५ अपवाद, ६ उपक्रोश, यहाँ तक (पुल्लिङ्ग), ७ जुगुप्सा, ८ कुत्सा, ९ निन्दा- ये (स्त्रीलिङ्ग), १० गर्हण (नपुंसकलिङ्ग), ये दश नाम निन्दा के हैं॥१३॥

पारुष्यमतिवादः स्यात्

कृष्णमित्रटीका:- परुषो निष्ठुरम्। तस्य भावः।[1] अतिक्रम्योक्तिरतिवादः। अप्रियवचनस्य द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ पारुष्य (नपुंसकलिङ्ग), २ अतिवाद (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम कठोर बोलने के हैं।

भर्त्सनं त्वपकारगीः।

कृष्णमित्रटीका:- 'भर्त्स संतर्जने' (चु. आ. से.)। अपकारार्था गीः। 'चौरोऽसि[3] घातयिष्यामि त्वाम्' इत्याद्या। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ भर्त्सन-यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम अपकार के लिये बोलने अर्थात् धमकाने का है।

यः सनिन्द उपालम्भस्तत्र स्यात् परिभाषणम्॥१४॥

कृष्णमित्रटीका:- उपालम्भो द्विधाः- स्तुतिपूर्वो निन्दापूर्वश्च। 'महापुरुषस्य तवेदं किमुचितम्' इत्याद्यम्। 'हालिकस्य तवेदमुचितमेव' इति द्वितीयम्। तत्र द्वितीयो यः स परिभाषणम्॥१४॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ परिभाषण- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम क्रोधपूर्वक दोष के प्रतिपादन (खिझाने) का है ॥१४॥

तत्र त्वाक्षारणा यः स्यादाक्रोशो मैथुनं प्रति।

कृष्णमित्रटीका:- 'क्षर संचलने' (भ्वा. प. से.)। ण्यन्ताद्युच् (३. ३. १०७)। परस्त्रीनिमित्तं पुंसः, परपुरुषनिमित्तं स्त्रियाश्चाक्रोशो मैथुनं प्रति। मैथुनमुद्दिश्य 'गाली' इत्यर्थः॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ आक्षारणा (आक्षारण १), आक्षारणा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम परस्त्रीलिङ्ग पुरुष से संयोगनिमित्त निन्दा (मैथुनार्थवार्ता) का है।

स्यादाभाषणमालापः

कृष्णमित्रटीका:-आलापः संभाषणम्। 'लप व्यक्तायां वाचि' (भ्वा. प. से.)। घञ् (३. ३. १८)॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१ आभाषण (नपुंसकलिङ्ग), २ आलाप (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम आपस में संबोधनपूर्वक बोलने के हैं।

प्रलापोऽनर्थकं वचः॥१५॥

कृष्णमित्रटीका:- अनर्थकं प्रयोजनशून्यम्॥१५॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ प्रलाप- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम अनर्थक वचन का है॥१५॥

अनुलापो मुहुर्भाषा

कृष्णमित्रटीका:- मुहुः पुनः पुनः॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ अनुलाप (पुल्लिङ्ग), २ मुहुर्भाषा (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम बहुतवार (बारम्बार) बोलने के हैं।

विलापः परिदेवनम्।

कृष्णमित्रटीका:- परिदेवनं शोकः॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ विलाप (पुल्लिङ्ग), २ परिदेवन (नपुंसक)- ये दो नाम रुदनपूर्वक बोलने (रोने) के हैं।

विप्रलापो विरोधोक्तिः

कृष्णमित्रटीका:- विरुद्धं प्रलापः। विरुद्धस्योक्तिः॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ विप्रलाप (पुल्लिङ्ग), २ विरोधोक्ति (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम आपस में विरुद्ध बोलने के हैं।

संलापो भाषणं मिथः॥१६॥

कृष्णमित्रटीका:-मिथोऽन्योन्यं[5] प्रति युक्तिप्रत्युक्ती[6] संलापः॥१६॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१ संलाप- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम आपस में बोलने (योग्य भाषण) का है॥१६॥

सुप्रलाप सुवचनम्

कृष्णमित्रटीका:- सुष्ठु प्रलपनम्॥[8]

हिन्दी अर्थ :-१ सुप्रलाप (पुल्लिङ्ग), २ सुवचन (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम सुन्दर बोलने के हैं।

अपलापस्तु निह्नवः।

'चोद्यमाक्षेपाभियोगौ शापाक्रोशौ दुरेषणा (४६)
अस्त्री चाटु चटु श्लाघा प्रेम्णा मिथ्याविकत्थनम् (४७)'

1. M. अतिक्रम्य उक्तिरतिवादः 2. **Unkind words.** [2] 3. M. चौरोसि 4. **Reproach** [2] 5. **Reproof with abuse** [1] 6. **Calumny or adultery** [1] 7. **Conversation** [2]

1. **Absurd words** [1] 2. **Repetition** [1] 3. **Lamentation** [2] 4. **A contradictory** statement. [2] 5. M. मिथोन्योन्यं 6. M. प्रति उक्तिप्रत्युक्ती 7. **A mutual talk** [1] 8. **Eloquence, good speech** [2]

कृष्णमित्रटीका:- निह्नवः गोपनम्। धार्यमाणेऽपि[1] 'न धारयामि' इत्याद्यम्। ह्नुङ अपनयने (अ. आ.अ.)। 'ऋदोरप्' (३. ३. ५७)॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ अपलाप, २ निह्नव- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम गुप्तवचन (मुकर जाने) के हैं। "चोद्य (नपुंसकलिङ्ग), आक्षेप (पुल्लिङ्ग), अभियोग (पुल्लिङ्ग) ये तीन नाम अद्भुत प्रश्न के हैं। शाप (पुल्लिङ्ग), आक्रोश (पुल्लिङ्ग), दुरेषणा (स्त्रीलिङ्ग)- ये तीन नाम शाप वचन के हैं। चाटु, चटु, श्लाघा (स्त्रीलिङ्ग)- ये तीन नाम प्रेम के साथ मिथ्या बोलने के हैं। यहाँ चाटु, चटु, शब्द (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) हैं।"

संदेशवाग्वाचिकं स्याद्

कृष्णमित्रटीका:- संदिश्यते संदेशः। तस्य वचनम्। संदिष्टस्यार्थस्योक्तिः[3]। 'वाचो व्याहृतार्थायाम्' (५. ४. ३५) इति ठक्[4]। वाचिकम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ सन्देशवाच् (चान्त स्त्रीलिङ्ग), २ वाचिक (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम दूत आदि के मुख से कहे हुए वचन (संदेश) के हैं।

वाग्भेदास्तु त्रिषुत्तरे ॥१७॥

कृष्णमित्रटीका:- उत्तरे वक्ष्यमाणा वाग्भेदास्त्रिषु ॥१७॥

हिन्दी अर्थ :-रुषती शब्द से लेकर सम्यक्शब्दपर्यंत जो शब्द हैं वे तीनों लिङ्गों में होते हैं इससे परे वक्ष्यमाण रुशती आदि और सम्यक् पर्यन्त वाणी के भेद त्रिलिङ्गी हैं॥१७॥

रुषती वागकल्याणी

कृष्णमित्रटीका:- 'रुष हिंसायाम्' (भ्वा. प. अ.)। शत्रन्तान् ङीप्। रुषती । रुषन् शब्दः। रुषद्वचः॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ रुषती- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम अकल्याणी (अमङ्गल) वाणी का है।

स्यात्कल्या तु शुभात्मिका।

कृष्णमित्रटीका:- कलासु साधु कल्या। 'तत्र साधुः' (४. ४. ९८) इति यत्। 'काल्या' अपि इति कात्यः। द्वे।[7]

हिन्दी अर्थ :-१ कल्या- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम शुभवाणी का है।

अत्यर्थमधुरं सान्त्वम्

कृष्णमित्रटीका:- सान्त्वयति। 'सान्त्व[1] सामप्रयोगे' (चु. प. से.)॥ द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- अति मिष्टवचन का एक नाम- १ सान्त्व है - यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम अत्यन्त मधुर बोलने का है।

संगतं हृदयंगमम् ॥१८॥

कृष्णमित्रटीका:- हृदयं गच्छति हृदयंगमम्। युक्तिमिलितं वचः। 'गमश्च'[3] (३. २. ४७) इति खच्॥१८॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ संगत २ हृदयंगम- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम संबद्ध अर्थात् योग्य वचन के हैं॥१८॥

निष्ठुरं परुषम्

कृष्णमित्रटीका:- नितिष्ठति निष्ठुरम्। 'मद्गुरादयश्च' (उ. १. ४१) इति निपातः। पूरयति परुषम्। 'पॄ पालने' (जु. प. से.)। 'पृनहि-'[5] (उ. ४. ७५) इत्युषच्। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ निष्ठुर, २ पुरुष- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम कठोर वचन के हैं।

ग्राम्यमश्लीलम्

कृष्णमित्रटीका:-ग्रामे भवम्। 'ग्रामाद्यखञौ' (४. २. ९४)। श्रियं लाति श्रीलम्। तद्भिन्नम् भण्डादिवचनम्। रस्य लः। द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१ ग्राम्य, २ अश्लील- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम शिथिल (भाँड़ आदि) वचन के है।

सत्ये सूनृतम्।

कृष्णमित्रटीका:- प्रियं सत्यं वचनं सूनृतम्। सुष्ठून्यते[8] सून्, सूंश्च तदृतं च। सुष्ठु नृत्यन्त्यनेन वा॥[9]

हिन्दी अर्थ :-१ सूनृत- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम प्रिय और सत्यवचन का है।

---

1. M. धार्यमाणेपि 2. **Denial.** [8] 3. M. सदिष्टार्थस्योक्तिः 4. M. ठक 5. **Message.** [2] 6. **An inauspicious word.** [1] 7. **An auspicious word** [1]

1. M. सान्त्व 2. **Very sweet words** [1] 3. M. गमेश्च 4. **A. Consistent word** [2] 5. M. प्रवृहनि 6. **A harsh word** [2] 7. **Vulgar Word** [2] 8. M. सुष्ठु उन्यते 9. **A Pleasant** and true Word [2]

अथ संकुलसंक्लिष्टे परस्परपराहते ॥१६॥

कृष्णमित्रटीका:- परस्परविरुद्धं[1] यथा- 'अन्धो[2] मणिमुपाविध्य-त्तमनङ्गुलिरावयत्'॥१६॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ संकुल, २ क्लिष्ट, ३ परस्परपराहत। जिसमें संकुल, क्लिष्ट-ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम आपस में पूर्वापर विरुद्ध के हैं जैसे- 'मेरी माता वंध्या है'॥१६॥

लुप्तवर्णपदं ग्रस्तम्

कृष्णमित्रटीका:- लुप्ता वर्णाः पदं वा यत्र। अशक्त्यादिना असम्पूर्णमुच्चारितमिति यावत्। ग्रस्येते स्म। 'ग्रसु अदने' (भ्वा. आ. से.)॥ द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :-अधकहे वचन के दो नाम है - १ लुप्तवर्णपद, २ ग्रस्त- इनमें ग्रस्त यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम असंपूर्ण उच्चारित वचन का है।

निरस्तं त्वरितोदितम्।

कृष्णमित्रटीका:- त्वरितं शीघ्रमुक्तम्। निरस्यते स्म। 'असु क्षेपणे' (दि. प. से.)। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :-जल्दी कहे हुए शब्द के दो नाम- १ निरस्त, २ त्वरितोदित, इनमें निरस्त- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम शीघ्र कहे हुए वचन का हैं।

अम्बूकृतं सनिष्ठेवम्

कृष्णमित्रटीका:- अनम्बुनोऽम्बुनः[6] 'करणमम्बूकृतम्।' 'च्वौ-' (७. ४. २६) इति दीर्घः।[7] निष्ठेवः स्थूतकारः। 'ष्ठिवु निरसने' (भ्वा. प. से.)। 'निष्टीवम्' इति पठि पृषोदरादित्वात् (६. ३. १०९) (ईकारः)। श्लेषमनिर्गमसहितवचनस्यैकम्॥[8]

हिन्दी अर्थ :-थूकसहित बोलने के दो नाम- १ अम्बूकृत, २ सनिष्ठीव, इनमें अंबूकृत- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम लार अर्थात् थूक सहित वचन का है।

अबद्धं स्यादनर्थकम्॥२०॥

कृष्णमित्रटीका:- न बद्ध्यते स्म। 'बन्ध बन्धने' (क्र्या. प. अ.)। क्तः (३. २. १०२)। असम्बद्धं दशदाडिमादिवाक्यम् ॥२०॥[9]

1. M. परस्परविरुद्ध 2. M. अन्धा 3. **A Complicated statement** [3] 4. **A half-uffered word** [2] 5. **A rapidly uffered word** [2] 6. M. अनम्बुनः अम्बुनः 7. M. दीर्घ 8. **A word accompanied** with emission of saliva [1] 9. **A meaningless statemetent** [2]

हिन्दी अर्थ :-१ अबद्ध, २ अनर्थक, अबद्ध- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम अनर्थक वचन का है॥२०॥

अनक्षरमवाच्यं स्याद्

कृष्णमित्रटीका:- अनक्षरम्। विरुद्धाक्षरम्। न वक्तुं योग्यम्। निन्दावचनस्य द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ अनक्षर, २ अवाच्य- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम नहीं कहने योग्य वचन के हैं।

आहतरं तु मृषार्थकम्।

कृष्णमित्रटीका:- आहन्यते स्म[2]। मृषाऽर्थो यस्य। 'एष वन्ध्यासुतो याति खपुष्पकृतशेखरः। मृगतृष्णाम्भसि स्नातः शशशृङ्गधनुर्धरः[3]'॥ द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ आहत- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम मिथ्या और असंभावित अर्थवाले का है। जैसे- 'यह वंध्या का पुत्र जाता है'।

सोल्लुण्ठनं तु सोत्प्रासं भणितं रतिकूजितम्॥२१॥
'सोल्लुण्ठनं तु सोत्प्रासं भणितं रतिकूजितम्'(४८)
"श्राव्यं हृद्यं मनोहारि विस्पष्टं प्रकटोदितम्(४९)"

कृष्णमित्रटीका:- क्वचित् पठ्यते। 'लुठि आलस्ये प्रतिघाते च' (भ्वा. प. से.)। ल्युट् (३. १. ११५) उल्लुण्ठनेन सहितम्। उत्प्रासनम्। 'असु क्षेपणे' (दि. प. से.)। उत्प्रास उपहासः। तत्सहितम्। द्वे॥[5]

'मण कूजने' (भ्वा. प. से.)। क्तः (३. ३. ११४)। रतौ कूजितम्। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १ सोल्लुण्ठन, २ सोत्प्रास- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम उपहाससहित वचन के हैं।

१ भणित, २ रतिकूजित- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम स्त्रीसंग (मैथुन) के समय बोलने के हैं। १ श्राव्य, २ हृद्य, ३ मनोहारिन् (इन्नन्त), ४ विस्पष्ट, ५ प्रकटोदित- ये पाँच (नपुंसकलिङ्ग) प्रकट वचन के हैं।

अथ म्लिष्टमविस्पष्टम्

कृष्णमित्रटीका:- म्लेच्छेम्लिष्टम्। 'क्षुब्ध-स्वान्त-' (७. २. १८) इति साधुः। अविस्पष्टमप्रकटं (म्)। द्वे॥[7]

1. **An unufferable word** [2] 2. M. स्मा 3. M. मृषा अर्थो 4. **An impossible statement.** [2] 5. **A sarcastic statement** [2] 6. **The sound at the time of coition** [2] 7. **An indistinct word** [2].

हिन्दी अर्थ :- १ म्लिष्ट, २ अविस्पष्ट- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम अस्पष्टवचन के हैं।

वितथं त्वनृतं वचः ॥२१॥

कृष्णमित्रटीका:- विगतं तथा सत्यं यत्र तद्वितथम्। न ऋतमनृतम्। मिथ्योक्तेः ॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ वितथ, २ अनृत- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम असत्य के हैं। वितथ यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम मिथ्यावचन का है ॥२१॥

सत्यं तथ्यमृतं सम्यग्

कृष्णमित्रटीका:- सति साधु सत्यम्। तथा साधु तथ्यम्। समञ्जति सम्यक् ॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ सत्य, २ तथ्य, ३ ऋत, ४ सम्यक् (चान्त)- ये चार (नपुंसकलिङ्ग) नाम सत्यवचन के हैं।

अमूनि त्रिषु तद्वति ॥२२॥

कृष्णमित्रटीका:- तद्वति त्रिषु। सत्या आशीः, सत्यः शब्दः, सत्यं वचः ॥२२॥

हिन्दी अर्थ :- सत्य आदि शब्द द्रव्यवाचक हों तो तीनों लिङ्गों में होते हैं - ये शब्द विशेषण होते हैं तब त्रिलिङ्गी हैं। जैसे- 'सत्या स्त्री, सत्यः पुमान्, सत्यं कुलम्,' इत्यादि।

शब्द के १७ नाम

शब्दो निनादनिनदध्वनिध्वानरवस्वनाः।
स्वाननिर्घोषनिर्ह्रदनादनिस्वाननिस्वनाः ॥२३॥
आरवारावसंरावविरावाः

कृष्णमित्रटीका:- शब्द शब्दने। घञ् (३. ३. १८)। 'णद अव्यक्ते शब्दे' (भ्वा. प. से.)। 'नौ[3] गद- ' (३. ३. ६४) इत्यप्। घञि नादः[4]। 'ध्वन शब्दे' (भ्वा. प. से.) 'रु शब्दे' (आ. प. से.)। 'ऋदोरप्' (३. ३. ५७)। 'स्वनहसोर्वा' (३. ३. ६२) इति घञपौ ॥२३॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ शब्द, २ निनाद, ३ निनद, ४ ध्वनि, ५ ध्वान, ६ रव, ७ स्वन, ॥२२॥ ८ स्वान, ९ निर्घोष, १० निर्ह्राद, ११ नाद, १२ निस्वान, १३ निस्वन, १४ आरव, १५ आराव, १६ संराव, १७ विराव- ये सत्रह (पुल्लिङ्ग) नाम शब्द मात्र के हैं।

1. A False word [2] 2. A true word [2] 3. M. णौ 4. M. नाद। 1. Sound (in general) [17]

अथ मर्मरः ॥२३॥

स्वनिते वस्त्रपर्णानाम्

कृष्णमित्रटीका:- मर्मराति मर्मरः ॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ मर्मर- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम वस्त्र और पत्तों के शब्द का है ॥२३॥

भूषणानां तु शिञ्जितम् ॥२४॥

निक्काणो निक्कणः क्काणः क्कणः क्कणनमित्यपि।

कृष्णमित्रटीका:-भूषणानां ध्वनौ। 'शिजि अव्यक्ते शब्दे' (अ. आ. से.)। भूषणध्वनेः षट् ॥२४॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ शिञ्जित- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम गहनों के शब्द (खनखनाहट) का है।

१ निक्वाण, २ निक्कण, ३ क्काण, ४ क्वण, ५ क्वणन- ये पाँच नाम वीणा आदि शब्द के हैं। इनमें क्कणन (नपुंसकलिङ्ग) शेष (पुल्लिङ्ग) हैं ॥२४॥

वीणायाः क्वणिते प्रादेः प्रक्काणप्रक्वणादयः ॥२५॥

कृष्णमित्रटीका:-उत्तरे उपसर्गात्परः क्वणधातुश्चेदित्यर्थः क्वणो वीणायामिति सोपसर्गात् घञपोर्विधानात् ॥२५॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ प्रक्काण, २ प्रक्कण, ३ उपक्वणन आदि- (पुल्लिङ्ग) नाम भी वीणा ही के शब्द में है; अन्य के शब्द में नहीं।

कोलाहलः कलकलः

कृष्णमित्रटीका:-कोलनम्। कोल एकीभावः। 'कुल संस्त्याने' (भ्वा. प. से.)। कोलमाहलति। 'हल विलेखने' (भ्वा. प. से.)। 'कल शब्दे' (भ्वा. आ. से.)। कलादपि कलः। द्वे ॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ कोलाहल, २ कलकल- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम बहुतों से मिलकर किये हुए शब्द (कोलाहल) के हैं।

तिरश्चां वाशितं रुतम्।

कृष्णमित्रटीका:-तिरोऽश्चन्ति[5] तिर्यञ्चः। तेषां यद्रुतं तद्वाशितम् ॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १ वाशित, २ रुत- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम पक्षियों के शब्द के हैं ॥२५॥

1. **The rusting sound** of leaves and garments [1] 2. **Tinkling** of ornaments [6] 3. **The sound** of a lute [2] 4. **uproar** [2] 5. M. तिरः अञ्चन्ति 6. **Cry of birds** [1]

स्त्री प्रतिश्रुत्प्रतिध्वाने

कृष्णमित्रटीका:-प्रतीयं श्रूयते प्रतिश्रुत्। प्रतिध्वनिः ॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ प्रतिश्रुत् (तान्त स्त्रीलिङ्ग), २ प्रतिध्वान (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम प्रति ध्वनि (गूंजने) के हैं।

गीतं गानमिमे समे ॥२६॥

इति शब्दादिवर्गः ॥६॥

कृष्णमित्रटीका:- (स्पष्टम्) ॥२६॥[2]

इति शब्दादिवर्गः ॥६॥

हिन्दी अर्थ :-१ गीत, २ गान- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम गाने के हैं।

इति शब्दादिवर्गः ॥६॥

अथ नाट्यवर्गः ॥७॥

निषादर्षभगान्धारषड्जमध्यमधैवताः।
पञ्चमश्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः ॥१॥

कृष्णमित्रटीका:-निषीदति मनोऽस्मिन्निति[3] निषादः। षद्लृ (भ्वा. तु. प. अ.)। घञ् (३. ३. २१)। ऋषभो गोशब्दानुकारित्वात्। तदाहुः- 'षड्जं मयूरा ब्रुवते गावस्त्वृषभभाषिणः। अजाविकं तु गन्धारं क्रौञ्चो नदति मध्यमम्। पुष्पसाधारणे काले पिकः कूजति पञ्चमम्। आश्वस्तु धैवतं शैति निषादं रौति कुञ्जरः॥' गन्धारदेशे भवः गान्धारः। 'नासाकण्ठशिरस्तालुजिह्वादन्तांश्च संस्पृशन्। षड्भ्यः संजायते यस्मात्तस्मात् षड्ज इति स्मृतः॥' मध्ये भवः मध्यमः। 'तद्वदेवोत्थितौ वायुरुरः कण्ठसमाहतः। नाभिप्रायो महानादो मध्यस्थस्तेन मध्यमः॥' धीमतामयं धैवतः। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। 'वायुः समुद्गतो नाभेरुरोहृत्कण्ठमूर्धसू। विचरन्पञ्चमस्थानप्राप्त्या पञ्चम उच्यते॥' अमी सप्तस्वरास्तन्त्रीतः कण्ठाच्च उच्चरन्ति। 'दारवी गात्रवीणे च द्वे वीणे स्वरधारिके' इति वचनात्॥१॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ निषाद, २ ऋषभ, ३ गान्धार, ४ षड्ज, ५ मध्यम, ६ धैवत, ७ पञ्चम- ये सात (पुल्लिङ्ग) नाम वीणा या कंठ से उठे हुए स्वरों के हैं॥१॥ '' हस्ती निषाद स्वर से बोलता है। गौ ऋषभ स्वर से बोलती है। बकरी आदि गांधार स्वर से बोलती है। मोर षड्ज स्वर से बोलता है। कंज मध्यम स्वर से बोलती है। घोडा धैवत स्वर से बोलता है। कोयल पञ्चम स्वर से बोलती है।''

षडजं रौति मयूरस्तु गावो गर्दन्ति चर्षभम्। अजाविकौ च गांधारं क्रौञ्चो नदति मध्यमम्॥१॥ पुष्पसाधारणे काले कोकिलो रौति पञ्चमम्। अश्वस्तु धैवतं रौति निषादं रौति कुञ्जरः॥२॥ अर्थात् मोर षड्ज शब्द को बोलता है। वैल ऋषभ शब्द को, भेड़, बकरी, गान्धार स्वर को, क्रौञ्च पक्षी मध्यम स्वर को, घोड़ा धैवत स्वर को, कोकिल वसन्त काल में पञ्चम स्वर को और हस्ती निषाद स्वर को बोलता है।

कालकी तु कले सूक्ष्मे ध्वनौ

कृष्णमित्रटीका:-कले मधुरे। सूक्ष्मे अल्पे च। ध्वनौ शब्दे। काकली। ईषत्कलोऽस्याम्।[1] एकम्॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ काकली- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम सूक्ष्म (शब्द) का है।

तु मधुरास्फुटे।

कलः

कृष्णमित्रटीका:-मधुरः श्रुतिसुखः। अस्फुटोऽव्यक्ताक्षरः। ईदृशे ध्वनौ कलः। 'कल संख्याने' (भ्वा. आ. से.)। घः (३. ३. १२५)। एकम्॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ कल- यह एक नाम मधुर और अस्पष्ट शब्द का है।

मन्द्रस्तु गम्भीरे

कृष्णमित्रटीका:-गम्भीरे मेघादिध्वनौ। मन्दते। 'मदि स्तुत्यादौ' (भ्वा. अ. से.)। 'स्फायि-' (उ. २. १३) इति रक्[4]। एकम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ मन्द्र- यह एक नाम गंभीर ध्वनि का है।

तारोऽत्युच्चैः

कृष्णमित्रटीका:-तारयत्यतिक्रामयत्यन्यान् स्वरान्। 'नृणामुरसि मन्द्रस्तु द्वाविंशति विधो ध्वनिः। स एव कण्ठो मध्यः स्यात्तरः शिरसि गीयते॥'[6]

---

1. Echo [2] 2. Song [2] 3. M. मनोस्मिन्निति 4. **The seven notes being,** nisada, rsabha, gandhara, & adja, dhaivata, madhyam & pancama [1 each]

1. M. ईषत्कलोस्याम् 2. **A low and sweet tone** [1] 3. **A sweet** and indistinct tone [1] 4. M. रकः 5. **Deep or rumbling sound** [1] 6. **A loud tone** [1]

हिन्दी अर्थ :-१ तार- यह एक एक नाम अत्यन्त ऊँची ध्वनि का है।

त्रयस्त्रिषु ॥२॥

'नृणामुरसि मध्यस्थो द्वाविंशतिविधो ध्वनिः (५०) स मन्द्रः कण्ठमध्यस्थस्तारः शिरसि गीयते (५१)'

कृष्णमित्रटीका:-त्रयः कलमन्द्रतारा:। एते त्रिषु बोध्याः ॥२॥

हिन्दी अर्थ :- कल आदि तीन शब्द तीनों लिङ्गों में होते हैं॥२॥ ''मनुष्यों के हृदय से बाईस प्रकार का ध्वनि गाया जाता है। कण्ठ से मन्द्र और मस्तक से तार स्वर गाया जाता है।''

समन्वितलयस्त्वेकतालः

कृष्णमित्रटीका:-सम्यगन्वितो लयो नृत्यगीतवाद्यानां साम्यं यत्र सः। एकः समस्तालो मानमस्येत्येकतालः ॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ एकताल- जिसमें अच्छी लय हो और गीत के तुल्य हो उसे एकताल कहते हैं - यह (पुल्लिङ्ग) है।

वीणातु वल्लकी

विपञ्ची

कृष्णमित्रटीका:- वेति जायते स्वरोऽस्याम्[2]। 'रास्नासास्ना-' (उ. ३. १५) इत्यादिना णत्वादि निपात्येत। 'वल वल्ल संवरणे' (भ्वा. आ. से.)। क्वुन् (उ. २. ३२)। गौरादिः (४. १. ४२)। विपञ्चयति विस्तारयति। ण्यन्तादच् (३. १. १३४)। गौरादिः (४. १. ४१)॥ त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ वीणा, २ वल्लकी, ३ विपञ्ची- ये तीन (स्त्रीलिङ्ग) नाम वीणा के हैं।

सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः परिवादिनी॥३॥

कृष्णमित्रटीका:-सैव सप्तभिस्तन्त्रीभिरुपलक्षिताया सा परिवादिनी। वदेर्णिनिः॥३॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ परिवादिनी- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम सात तंत्रियों से बन्धी हुई वीणा का है॥३॥

ततं वीणादिकं वाद्यम्

कृष्णमित्रटीका:- वीणादिकं यद्वाद्यं तत्ततम्। तन्त्री तननात्॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ तत- यह (नपुंसकलिङ्ग) नाम वीणा आदि बाजे का है।

आनद्धं मुरजादिकम्।

कृष्णमित्रटीका:-आनह्यते स्म, चर्मणा मुखं बध्यते स्म॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ आनद्ध- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम मृदंग आदि बाजे का हैं।

वंशादिकं तु सुषिरम्

कृष्णमित्रटीका:-सुषिः छिद्रमस्यास्ति। 'ऊषसुषि-'[3] (५. २. १०७) इति रः। 'सुषिरम्' इति प्राच्याः॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ सुषिर- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम वंशी, अलगोजा, शंख आदि बाजे का है।

कांस्यतालादिकं घनम्॥४॥

कृष्णमित्रटीका:-कांस्यमयस्तालः। घनं निविडत्वात्। 'मूर्तौ घनः' (३. ३. ७७) इति हन्तेरप् घनादेशश्च[5]॥४॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १ घन- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम कांसे के बाजे घंटा झालर आदि का है॥४॥

चतुर्विधमिदं वाद्यं वादित्रातोद्यनामकम्।

कृष्णमित्रटीका:-इदं ततादि चतुर्विधं वाद्यते ध्वन्यते। वदेर्ण्यन्तात् (३. १. २६) 'अचो यत्' (३. १. ९७)। 'भूवादिगृभ्यो णित्रन्' (उ. ४. १७०) आसमन्तातुद्यते ताड्यते। तुदेर्ण्यत् (३. १. १२४)। त्रीणि॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १ वाद्य, २ वादित्र, ३ आतोद्य - ये तीन नाम पूर्वोक्त तत आदि चार प्रकार के बाजे के हैं। इनमें वादित्र, आतोघ ये दो पुल्लिङ्ग है, (सामूहिक)

मृदङ्गा मुरजाः

कृष्णमित्रटीका:-मृत अङ्गमेषाम्। मुरात्संवेष्टनाज्जाता मुरजाः। 'मुर संवेष्टने' (तु. प. से.) तुदादिः। द्वे॥[8]

---

1. **Harmony or unison** (of song, dance and instrumental music) [1] 2. M. स्वरोस्याम् 3. **Lute.** [3] 4. **A lute of seven strings.** [1]

1. **Any stringed musical instrument.** [1] 2. **Drums and alike** musical instruments [1] 3. M. ऊषसुखिः 4. **Flute**. [1] 5. M. घनोदेशश्च 6. **Bell and** a like musical instruments [1] 7. **Four kinds of musical instruments** [3] 8. **Tabors** [2]

हिन्दी अर्थ :- १ मृदङ्ग, २ मुरज- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम मृदङ्ग के हैं।

भेदास्त्वङ्क्यालिङ्ग्यूर्ध्वकास्त्रयः ॥५॥

कृष्णमित्रटीका:-तेषां भेदा विशेषास्त्रयः। अङ्कोऽस्यास्त्यङ्की[1], उत्सङ्गस्थत्वात्। आलिङ्गोऽस्यास्त्यालिङ्ग्यवादनात्[2]। ऊर्ध्वं कायति, ऊर्ध्वकः। ऊर्ध्वीकृत्यैकेन मुखेन वादनात्। केचित्तु अङ्ग्यलिङ्ग्य इति पठन्ति । 'हरीतक्याकृतिस्त्वङ्क्यो यवमध्यस्तथोर्ध्वकः। आलिङ्ग्यश्चैव गो पुच्छो मध्यदक्षिणवामगः॥' नाट्ये चैतत्॥५॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ अङ्क्य, २ आलिङ्ग्य, ३ ऊर्ध्वक- ये तीन (पुल्लिङ्ग) नाम भी मृदङ्ग के ही भेद के हैं॥५॥

स्याद्यशः पटहो ढक्का

कृष्णमित्रटीका:-यशोऽर्थं[4] पटहो यशः पटहः। यत्रादौ यशोऽर्थं[5] पटहो हन्यते सः। अयं सार्धहस्तद्वयदीर्घः षष्ठ्यङ्गुलपरिधिविस्तारः। संगीतशास्त्रे 'देशीपटहः' इत्युच्यते।ढगित्यव्यक्तं कायति ढक्का। 'कै शब्दे' (भ्वा. प. से.)। 'आतोऽनुपसर्गे[6] कः' (३. २. ३.)। 'टोल' इति लोके। 'ढिंढोरा' इत्यस्येत्येके। द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१ यशः पटह (पुल्लिङ्ग), २ ढक्का (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम ढोलक (नगाड़े) के हैं।

भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान्।[8]

कृष्णमित्रटीका:-विभेत्यस्या भेरी। 'ऋज्रेन्द्र-' (उ. २. २८) इति रन्। 'दुन्दु' शब्देन भाति दुन्दुभिः। बाहुलकात्किः। 'नगारा' इति लोके। 'भेरीनफीरी' इत्यन्ये। भेरी ढक्काभेदः[9]। 'दुन्दुभिस्तुभिन्न एव' इत्यन्ये। संगीतशास्त्रे दुन्दुभितः पृथगेव 'भेरी, नफीरी' इति दृश्यते। तत्र हि त्रिवितस्तिदीर्घा ताम्रनिर्मिता। चतुर्विंशत्यङ्गुले वलयसंयुते मुखे क्रियते।[10] कोणाख्येन काष्ठेन वामहस्तेन च तस्या वादनम्[11]।द्वे॥[12]

हिन्दी अर्थ :- धोंसा नफीरी आदि के तीन नाम है - १ भेरी, २ आनक, ३ दुन्दुभि। भेरी, दुंदुभि- ये दो नाम नगाड़े के हैं। यहाँ भेरी शब्द (स्त्रीलिङ्ग) और दुंदुभि शब्द (पुल्लिङ्ग) है।

1. M. अङ्कोस्यास्त्यङ्की 2. M. आलिङ्गोस्यास्त्या-लिङ्ग्यवादनात् 3. **Three kinds of tabors** [1 each] 4. M. यशोर्थं 5. M. यशोर्थं 6. M. आतोनुपसर्गे 7. **Double-drum** [2] 8. **B reads this quarter as:** भेर्यामानकदुन्दुभी। 9. M. ढक्काभेद 10. M. क्रियेते 11. M. वादन 12. **Kettle-drum** [2]

आनकः पटहोऽस्त्री स्यात्

कृष्णमित्रटीका:-आनयति प्रोत्साहयति, आनकः। ण्वुल (३. १. १३३)। पटेन हन्यते पटहः। हन्तेर्डः (वा. ३. २. १०१)। अयं मार्गपटहो लोके 'पखाउज' इत्युच्यते।द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ आनक (पुल्लिङ्ग), २ पटह - ये दो नाम बड़े नगाड़े के हैं। यहाँ पटह शब्द (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) है।

कोणो वीणादिवादनम्॥६॥

कृष्णमित्रटीका:-कुणत्यनेन। कुण शब्दे (तु. प. से.)। वीणादिकं येन काष्ठेन वाद्यते। तच्च क्वचिद्धनुराकृतिः, ढक्कादौ सरल एव काष्ठमयः, वीणादौ लोहादिमयः ॥६॥ द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ कोण- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम जिससे वीणादि बजाई जाती है उस धनुषाकार काष्ठा का है॥६॥

वीणादण्डः प्रवालः स्यात्

कृष्णमित्रटीका:-वीणाया दण्डः। प्रकर्षेण वल्यते प्रवालः। 'वल संवरणे' (भ्वा. प. से.)। घञ् (३. ३. १९)। अयं हस्तद्वयादिदीर्घः॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ प्रवाल- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम वीणा के दंड का है।

ककुभस्तु प्रसेवकः॥

कृष्णमित्रटीका:-कं वातं स्कुभ्नाति। स्कुभिः सौत्रः। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। वीणादण्डाधः स्थितं[4] शब्दगाम्भीर्यार्थमलाबूदार्वादिमयं भाण्डम्। 'वीणाप्रान्तस्थवक्रकाष्ठविशे-षस्य' इति **रामाश्रमी**[5]। प्रसेव्यते। क्वुन् (उ. २. ३२) ॥द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १ ककुभ, २ प्रसेवक- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम वीणा के प्रान्त में स्थित चर्म से मढ़े हुए काष्ठतुंबी के हैं, जो शब्द की गंभीरता के लिये रहते हैं।

1. **War-drum** [2] 2. **The quill of a lute** [1] 3. **The neck of a lute** [2] 4. M. वीणादण्डाधस्थितं 5. M. रामाश्रम् 6. **A small instrument** of wood placed under the neck of a lute to made the sound deeper [2]

कोलम्बकस्तु कायोऽस्याः

कृष्णमित्रटीका:-अस्या वीणायाः कायः अलाबूदण्डादिसमुदायस्तन्त्रीहीनः। 'कुल संस्त्याने' (भ्वा. प. से.)। बाहुलका-दम्बच्। एकम्॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ कोलम्बक- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम वीणा के तंत्रीरहित दंड आदि के समुदाय का है।

उपनाहो निबन्धनम्॥७॥

कृष्णमित्रटीका:- उपनह्यतेऽनेनास्मिन्[2] वा। 'णह बन्धने' (दि. उ. अ.)। यत्र तन्त्र्यो निबध्यन्ते तस्योर्ध्वभागस्य द्वे॥७॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ उपनाह, २ निबन्धन, उपनाह - यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम जहाँ वीणा के प्रान्त में तन्त्री बाँधी जाती है उसका है॥७॥

वाद्यप्रभेदा डमरुमड्डुडिण्डिमझर्झराः।
मर्दलः पणवोऽन्ये च

कृष्णमित्रटीका:-'डम्' इत्यव्यक्तं शब्दमिर्यति डमरुः। अर्तेः (जु. प. से.), मृगय्वादित्वात् (उ. १. ३७) कुः। मज्जतीति[4] मज्जकम्। 'भृमृशी-'[5] (उ. १. ७) इत्यादिना उः। पृषोदरादित्वात् (६. ३. १०९) जस्य डः। जलवाद्यमेतत्। डिण्डिमझर्झरौ शब्दानुकारात्। मर्द्यते मर्दलः[6]। मृदङ्गभेदः। पणायत्यन्तर्गतस्तन्त्रीकः। अन्ये हुडुक्वागोमुखादयः॥[7]

हिन्दी अर्थ :-डमरु का एक नाम है - १ डमरु, से आदि लेकर ये बाजों के भेद है। बड़े डमरु का नाम १ - २ मड्ड, डिंडिम का नाम १ - ३ डिंडिम, झांझ का नाम १ - ४ झर्झर, तथा मर्दल, पणव आदि और भी बाजे हैं॥

नर्तकीलासि के समे॥८॥

कृष्णमित्रटीका:-नृत्यति नर्तकी। 'शिल्पिनि ष्वुन्' (३. १. १४५)। लसति लासकी। 'लस श्लेषणक्रीडनयोः' (भ्वा. प. से.) ण्वुल् (३. १. १३३)॥८॥[8]

हिन्दी अर्थ :-१ नर्तकी, २ लासिका- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम नाचने वाली के हैं॥८॥

विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वमोघो घनं क्रमात्।

कृष्णमित्रटीका:-विलम्बन्ते करणादयोऽत्रं[1]। 'लबि अवस्रंसने' (भ्वा. आ. से.) द्रवति शीघ्रं गच्छत्यत्र। विलम्बितद्रुतमध्यानां नृत्यं-गीत-वाद्यानां तत्त्वादीनि क्रमेण नामानि। तदुक्तं संगीतरत्नाकरे- "क्रियानन्तरविश्रान्तिर्लयः स त्रिविधो मतः। द्रुतो मध्यो बिलम्बश्च द्रुतः शीघ्रतमो मतः॥" इति। 'तत्त्वमोघो घनम्' इत्यन्ये पठन्ति 'उच समवाये' (दि. प. से.)। पृषोदरादित्वात् (६. ३. १०९) घः॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ विलम्बितम्, २ द्रुतम्, ३ मध्यम्, इन तीनों के अर्थ में क्रमशः तत्त्वम्, ओघः, घनम्, इन तीनों का प्रयोग होता है। धीरे-धीरे नाच का एक नाम- तत्त्व है - यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम हाथ पैर आदि के द्वारा देर से नाचने आदि का है। शीघ्र नाच का नाम १ ओघ- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम शीघ्र नाचने आदि का है। मध्यम नाच का एक नाम- घन है- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम जो न देर से और न शीघ्रता से नाचना हो उसका है।

तालः कालक्रियामानम्

कृष्णमित्रटीका:-तालः। तत्र प्रतिष्ठायाम् (चु. प. से.)। करणे घञ्। 'मेयाया गानक्रियायाः कालनियमहेतुः' इत्यन्ये[3]॥[4]

हिन्दी अर्थ :- समय और क्रिया के प्रमाण का नाम- ताल- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम ताल का है(मात्रा गिनकर ताली बजाने को भी ताल कहते हैं।) कालक्रिया के नियम के हेतु का है।

लयः साम्यम् अथास्त्रियाम्॥९॥

कृष्णमित्रटीका:-गीतवाद्यपादादिन्यासानां क्रियाकालयोः साम्यं लयः। अत्र लघ्वादिना क्रिया परिमीयते तया कालः। तद्यथा- 'लघुद्वयं गुरुः' इति प्रतिमण्डतालः। 'आवापस्तत्र हस्तस्योत्तनस्याङ्गलिकुञ्चनम्। निष्क्रामोऽधस्तलस्य[5] स्यादङ्गलीनां प्रसारणम् इति'॥[6]

1. **The body of a lute** [1] 2. M. उपनह्यतेनेनास्मिन् वा 3. **The tie of a lute** (the lower part of the tail-piece where the wires are filed [2] 4. M. मज्जतोति 5. M. भमिशी 6. M. मर्दल 7. **Different kinds of drums** [1 each] 8. **A Female dancer** [2]

1.M. करणादयोत्र 2. **Slow fast and mean times** (in music) [1 each] 3. **See also**, अमरकोशोद्घाटन p. 4. **Musical time or measure** [1] 5. M. निष्क्रामोधस्तलस्य 6. **The union of song**, dance and musical instrument [1]

हिन्दी अर्थ :- लय- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम लय का है गाना बजाना और पैर आदि का रखना इनकी क्रियाकाल के साम्य का है। इसके आगे कहे ये शब्द स्त्रीलिङ्गवाची नहीं हैं अर्थात् पुलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग वाची होते हैं तहाँ ताल और लय शब्द (पुल्लिङ्ग) हैं ॥९॥

ताण्डवं नटनं नाट्यं लास्यं नृत्यं च नर्तने।

कृष्णमित्रटीका:- तण्डुना प्रोक्तं ताण्डवम्। 'नट अवस्यन्दने' (भ्वा. प. से.)। ल्युट् (३. ३. ११५)। ण्यति (३. १. १२४) नाट्यम्। 'ऋदुपधाच्च-' (३. १. ११०) इति नृत्तेः क्यप्। नाट्यशास्त्रे त्वेषां भेदोऽस्ति[1]। तथा हि- साक्षादिवार्थाकारादिप्रदर्शिका हस्तादिचेष्टा अभिनयः। स चतुर्धा। अङ्गैः प्रदर्शित आङ्गिकः। वाचा विरचितो वाचिकाः। हारकेयूराद्यैः प्रदर्शित आहार्यः। सात्विकैर्भावैर्विरचितः सात्त्विकः। काव्याद्यर्थविभावादिव्यञ्जको नटे स्थितोऽभिनयः[2] चतुर्भिरभिनयैरुपेतं वाक्यार्थाभिनयो नटकर्म नाट्यं नर्तनं च। नाटकादावेव आङ्गिकाभिनयैः पदार्थोभिनयो[3] नृत्यम्। गात्रविक्षेपमात्रं विवाहाभ्युदयादौ सर्वाभिनयवर्जितं नृत्तम्। 'वर्यमानासारिताद्यैर्गीतैस्तत्र ध्रुवायुतकरणैरङ्गहारैश्च प्राधान्येन प्रवर्तितः। तत्तूक्तमुद्धृतप्रायं प्रयोगं ताण्डवं मतम्॥' ललिताङ्गहाराभिनयं वासकसज्जादि नायकाचरितश्लिष्टत्वाल्लास्यम्। तदुक्तम्- 'लास्यं तु सुकुमुदाङ्गं मकरध्वजवर्धनम्।' इति। करणं हस्तादिक्रिया। तदुक्तम् - 'स्यात्क्रिया करपादादेर्विलासेनात्रुटद्रसाकरणं नृत्यकरणभीमवद्भीमसेनवत्। अङ्गानामुचिते देशे प्रापणं सविलासकम्। मातृकोक्तसम्प्रदायमङ्गहारोऽभिधीयते[4]॥' रौद्रादिरसप्रधानाङ्गाभटीत्तिस्ताण्डवे शृङ्गारे करणकैशिकीवृत्तिर्लास्ये॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ तांडव, २ नटन, ३ नाट्यम्, ४ लास्य, ५ नृत्य, ६ नर्त्तन, ये छः (नपुंसकलिङ्ग) नाम नाचने (नृत्य) के हैं। जिनमें प्रथम में अस्त्रियों का सम्बन्ध होने से पुल्लिङ्ग + नपुंसकलिङ्ग दोनों हैं।

तौर्यत्रिकं नृत्यगीतं वाद्यं नाट्यमिदं त्रयम्॥१०॥

कृष्णमित्रटीका:-नृत्तगीतवाद्यं तौर्यत्रिकम्। तूरी त्वरायाम् (दि. प. से.)। ण्यत् (३. १. १२४)। तूर्य[6] मुरजादि। तत्र भवं त्रिप्रमाणं तौर्यत्रिकम्। रसप्रसन्नमिच्छन्ति तूर्यत्रयमिदं विदुः। नृत्तादित्रयमेव नाट्यम्। 'चतुर्धाभिनयोपेतो नटो भाषादिभेदवित्' ॥१०॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ तौर्यत्रिकम्, २ नाट्यम्- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम सम्मलित नाच गाना वाद्य ये तीन मिलकर तौर्य्यत्रिक और नाट्य कहलाते हैं॥१०॥

भ्रकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रूकुंसश्चेति नर्तकः।
स्त्रीवेषधारी पुरुषः नाट्योक्तौ गणिकाज्जुका॥११॥

कृष्णमित्रटीका:-यः पुरुषः स्त्रीवेषधारी नृत्यति तस्मिन् भ्रकुंसादित्रयम्। 'पटपुट-' इति दण्डोक्त 'कुसि' धातोश्चुरादिण्यन्तात् (३. १. २५) 'एरच्' (३. ३. ५६)। भुंवा कुंसो भाषणं शोभा वा अस्य। 'इको ह्रस्वोऽङ्यः[2]-' (६. ३. ६१) इति ह्रस्वम्। 'अभ्रुकुंसादीनाम्' इति पक्षे अत्वश्च। 'नर्तकः सूरिभिः प्रोक्तो नाट्यनृत्ते कृतश्रमः।'[3] 'नाट्योक्तौ' इत्यधिकारः प्रागङ्गहारात् (अ. १. ७. १६)। गणिका अज्जुका ज्ञेया। 'अर्ज अर्जने' (भ्वा. प. से.)। 'समि कसेः-' (उ. २. २९) इति बाहुलकादुकन्, रस्य जः॥११॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ भ्रकुंस, २ भ्रुकुंस, ३ भ्रूकुंस- ये तीन (पुल्लिङ्ग) नाम स्त्री के भेष को धारण कर नाचने वाले पुरुष के हैं। 'अंगहार' यहाँ तक नाट्यप्रकरण के शब्द कहते हैं। अतः आगे कहे जाने वाले नामों का प्रयोग नाटक में होगा अन्य स्थान पर नहीं। १ गणिका, २ अज्जुका- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम वेश्या के हैं॥११॥

भगिनीपतिरावुत्तः भावो विद्वान् अथावुकः।

कृष्णमित्रटीका:-आ समन्तात्, अपनम्। क्विप् (वा. ३. ३. ९४)। तमुत्तनोति, आवुत्तः। तनोतेर्डः। एकम्॥[5] भावयति भावः। नाट्यादन्यत्राप्येते दृश्यन्ते। तदुक्तम्- 'मान्यो भावेऽपि[6] वक्तव्यः किञ्चिदूनेऽपि[7] मारिषः।' इति॥[8]

हिन्दी अर्थ :-१ आवुत्त- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम बहनोई का हैं। २ भाव- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम विद्वान् (वेत्ता) का है।

---

1. M. भेदोस्ति 2. M. स्थितोभिनयः 3. M. पदार्थोभिनयो 4. M. मातृकोक्तसम्प्रदायमङ्गहारोभिधीयते 5. **Dance** [6] 6. M. तूर्य।

1. **The union of song,** dance and musical instrument [2] 2. M. ह्रस्वोड्यः 3. **A male dance** in female affire [3] 4. **Courtesan** [1] 5. **A sister's husband** [1] 6. M. भावेपि 7. M. किंचिदूनेपि 8. **A learned man** [1]

जनकः युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥१२॥

कृष्णमित्रटीका:-अवति। बाहुलकादुकण्। जनकः पिता। एकम्॥[1] युवा चासौ राजा च। कुमारयति। 'कुमार क्रीडायाम्' (चु. उ. से.)। अच् (३. १. १३४)। भर्तुः राज्ञो दारकः सुतः। 'दृङ् आदरे' (तु. आ. अ.)। ण्वुल् (३. १. १३३)। द्वे॥१२॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ आवुक-यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम पिता एवं राजा का हैं। १ युवराज, २ कुमार, ३ भर्तृदारक- ये तीन (पुल्लिङ्ग) नाम युवराज के हैं ॥१२॥

राजा भट्टारको देवःतत्सुता भर्तृदारिका।

कृष्णमित्रटीका:-भट्टं स्वामित्वमृच्छति। 'ऋ गतौ' (भ्वा. प. अ.)। दीव्यति देवः। द्वे॥[3] भर्तुः राज्ञः॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ भट्टारक, २ देव- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम राजा के हैं। १ भर्तृदारिका- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम राजा की पुत्री (राजकन्या) का है।

देवी कृताभिषेकायाम् इतरासु तु भट्टिनी॥१३॥

कृष्णमित्रटीका:-राज्ञः पट्टबन्धनीया राज्ञी सा देवी॥[5] अन्या राजपत्नी भटेः (भ्वा. प. से.) तनि भट्टः सोऽस्त्यस्या[6] भट्टिनी॥१३॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१ देवी- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम अभिषेक की हुई रानी (राजपत्नी) का हैं। १ भट्टिनी- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम अन्यरानी का है॥१३॥

अब्रह्मण्यमबध्योक्तौ राजश्यालस्तु राष्ट्रियः।

कृष्णमित्रटीका:-अबध्योक्तौ वधं नार्हतीत्युक्तौ। ब्रह्मणि साधु ब्रह्मण्यम्। तद्भिन्नम्॥[8] राष्ट्रेऽधिकृतः[9]। 'राष्ट्रवारपार-' (४. २. ९३) इति घः। एकम्॥[10]

हिन्दी अर्थ :-१ अब्रह्मण्य- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम अवध्य ब्राह्मण आदि को मारने का दोष प्रकाश करने का है। १ राष्ट्रिय- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम राजा के साले का है।

अम्बा माता अथ बाला स्याद्वासूः आर्यस्तु मारिषः॥१४॥

कृष्णमित्रटीका:-अम्ब्यते अम्बा। 'अवि शब्दे' (भ्वा. आ. से.)। 'गुरोश्च हलः' (३. ३. १०३)।

1. **Father** [1] 2. **Crown-prince** [2] 3. **King** [2] 4. **Pincess** [1] 5. **A Crowned queen** [1] 6. M. सोस्त्यस्या, 7. **An uncrowned queen** [1] 8. **Not favourable** to Brahmans; an unbrahmanical or sacrilegious act [1] 9. M. 'राष्ट्रे अधिकृत : 10. **Brother in-law of a king** (queen's brother) [1]

'नाट्योक्तौ' (अ. १. ७. ११) इत्यस्य प्रायिकत्वादम्बादीनामन्यत्रापि प्रयोगः॥[1] बाला कुमारी। वास्यते स्वगृहे वासूः। बाहुलकादूः। एकम्॥[2] अर्तु योग्यः। आर्यः। 'ऋ गतौ' (भ्वा. प. अ.)। ण्यत् (३. १. १२४)। मर्षणान्मारिषः। मान्यः। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)॥१४॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ अम्बा, २ मातृ- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम माता के हैं। मातृशब्द ऋकारान्त है। १ बाला, २ वासू- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम कुमारी के हैं। १ आर्य, २ मारिष- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम उत्तम के हैं॥१४॥

अत्तिका भगिनी ज्येष्ठा निष्ठा निर्वहणे समे।

कृष्णमित्रटीका:-अत्ता[4] मातेवान्तिका। एकम्॥[5] नियतं स्थानं निष्ठा। निश्शेषेण वहनं समाप्तिनिर्वहणम्। मुखप्रतिमुखगर्भावमर्शानिर्वहणाख्या नाटके पञ्चसंधयः। 'प्रस्तुतकथासमापनस्य' इत्यन्ये॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ अत्तिका- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम बड़ी बहन का है। १ निष्ठा (स्त्रीलिङ्ग), २ निर्वहण (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम नाटक की निर्वहण संधि अर्थात् प्रस्तुत कथा की समाप्ति के हैं।

हण्डे हञ्जे हलाह्वानं नीचां चेटीं सखीं प्रति॥१५॥

कृष्णमित्रटीका:-नीचां प्रति आह्वानं हण्डे, चेटीं प्रति हञ्जे, सखीं प्रति हला। त्रीण्यव्ययानि॥१५॥[7]

हिन्दी अर्थ :-हंडे (पुल्लिङ्ग) नाम अपने से नीचे सहेली को बुलाने का है। हंजे (पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम चेटी को बुलाने का है हला- यह एक नाम सखी को बुलाने का है यहाँ हंडे, हंजे हला ये अव्यय हैं॥१५॥

अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपः व्यञ्जकाभिनयौ समौ।

कृष्णमित्रटीका:-अङ्गस्य हारः। स्थानात्स्थानान्तरे नयनम्। द्वे॥[8] व्यनक्ति व्यञ्जकः। आभिमुख्यं नीयतेऽर्थोऽनेनाभिनयः।[9] मनोगतभावसूचकः। वाचिकाङ्गिकाहार्यसात्त्विकमेच्चतुर्धा॥[10]

1. **Mother** [1] 2. **Virgin** [1] 3. **A venerable man** addressed by the सूत्रधार in dramas [1] 4. M. अत्तो 5. **Elder sister** [1] 6. **Catastrophe** or end of a drama [2] 7. **The vocative particles used** in addressing a female of infeior caste, female attendant, and female friend [1 each] 8. **Gesticulation** [2] 9. M. नीयतेर्थोनेनाभिनय 10. **A thetrical action expressive** of some sentiments [2]

हिन्दी अर्थ :-१ अङ्गहार, २ अङ्गविक्षेप- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम नृत्यविशेष के हैं। १ व्यञ्जक, २ अभिनय- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम हाथ आदि के द्वारा मनोगत अर्थ के प्रकाश के हैं।

निवृत्ते त्वङ्गसत्त्वाभ्यां द्वे त्रिष्वाङ्गसात्त्विके ॥१६॥

कृष्णमित्रटीका :-(स्पष्टम्) ॥१६॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ आंगिक- यह नाम अंग से निष्पन्न कर्म का है। १ सात्त्विक- यह एक नाम अंतःकरण से किए हुए कर्म का है। सात्विक- ये दोनों त्रिलिंगी हैं। "स्तंभ, स्वेद, रोमाञ्च, स्वरभंग, कंप, वर्ण का बदलना, अश्रु, प्रलय ये आठ सात्विक गुण हैं" ॥१६॥

रस के ८ नाम

श्रृङ्गारवीरकरुणाद्भुतहास्यभयानकाः।
वीभत्सरौद्रौ च रसाः श्रृङ्गारः शुचिरुज्ज्वलः ॥१७॥

कृष्णमित्रटीका :- श्रृङ्गारादयोऽष्टौ[2] रसाः। चशब्दाच्छान्तोऽपि[3] नवमो रसः। रस्यन्ते रसाः। 'रस आस्वादने'। तदाहुः- 'विभावैरनुभावैश्च मुक्तोऽथ[4] व्यभिचारिभिः। आस्वाद्यत्प्रधानत्वात्स्थाय्येव तु रसो भवेत्॥' इति॥[5] श्रृङ्गमुन्नतमिर्यति ऋङ्गारः। उत्तमयुवप्रकृतित्वेन जुगुप्सारहितत्वाच्छुचिः उच्चैर्ज्वलति प्रकाशते। अच् (३. १. १३४)। त्रीणि॥१७॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ श्रृंगार २ वीर, ३ करूण, ४ अद्भुत, ५ हास्य, ६ भयानक, ७ बीभत्स, ८ रौद्र- ये आठ (पुल्लिङ्ग) नाम पृथक् पृथक् रस के हैं। च शब्द से शान्त और वात्सल्य का भी संग्रह है। १ श्रृंगार, २ शुचि, ३ उज्ज्वल- ये तीन (पुल्लिङ्ग) नाम श्रृंगार रस के हैं ॥१७॥

उत्साहवर्धनो वीरः कारुण्यं करुणा घृणा।
कृपा दयानुकम्पा स्यादनुक्रोशोऽपि अथो हसः ॥१८॥

कृष्णमित्रटीका :-उत्साहं वध्रयति। ल्युः (३. १. १३३)। वीरयति वीरः। 'वीर विक्रान्तौ' पचाद्यच् (३. १. १३४)। द्वे॥[7] करुणः करुणावान्। तस्य भावः। ब्राह्मणादित्वात् (५. १. १२४) ष्यञ्। घृण्यतेऽनया[8] घृणा। 'क्रप कृपायाम्' (भ्वा. आ. से.)। 'क्रपेः सम्प्रसारणं च' (ग. ३. ३. १०४) इत्यङ्। दयते रक्षत्यनया। भिदादिः। कपि चलने (भ्वा. आ. से.)। 'गुरोश्चहलः' (३. ३. १०३)। अनुकम्पा। अनुक्रोशन्त्यनेन। क्रुशेर्घञ्। करुणरसस्य सप्त॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ उत्साहवर्धन, २ वीर ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम वीर रस के हैं। १ कारुण्य (नपुंसकलिङ्ग), २ करुणा, ३ घृणा, ४ कृपा, ५ दया, ६ अनुकंपा (स्त्रीलिङ्ग), अनुक्रोश (पुल्लिङ्ग) ये नाम (दया) करुण रस के हैं॥१८॥

हासो हास्यं च बीभत्सं विकृतं त्रिष्विदं द्वयम्।

कृष्णमित्रटीका :-'हसे हसने' (भ्वा. प. से.)। 'स्वनहसोर्वा'[2] (३. ३. ६२) अप् ॥१८॥ हासः॥ घञ् (३. ३. १८)। ण्यति (३. १. १२४) हास्यम्। त्रीणि॥[3] बधेर्निन्दायां सन् (३. १. १६)। भावे घञ् (३. ३. १८)। जुगुप्साप्रभवत्वाद्विकृतः, विष्ठारुधिरादिदर्शनजनितः। रसे पुमान् तद्वति त्रिलिङ्गः। द्वयोरित्यनेन पर्यायता सूचिता॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ हस (पुल्लिङ्ग), २ हास (पुल्लिङ्ग), ३ हास्य (नपुंसकलिङ्ग)- ये तीन नाम हास्य रस के हैं। १ बीभत्स, २ विकृत ये दो नाम बीभत्स रस के हैं - और ये दोनों शब्द त्रिलिंगी हैं।

विस्मयोऽद्भुतमाश्चर्यं चित्रमपि अथ भैरवम् ॥१९॥

कृष्णमित्रटीका :-विपूर्वात् स्मिङः (भ्वा. आ. अ.) 'एरच्' (३. ३. ५६)। 'अत्[5]' आश्चर्यार्थेऽव्ययम्[6]। तस्यभवनमद्भुतम्। 'अदि'[7] भुवो द्रुतच् (उ. ५. १)। आचरणीयम्। 'आश्चर्यमनित्ये' (६. १. १४७) इति साधुः। 'चित्र चित्रकरणे' (चु. उ. से.) ण्यन्तात् पचाद्यच् (३. १. १३४) चत्वारि॥[8] भीरोरिदं त्रासकत्वाद्भैरवम्॥१९॥

हिन्दी अर्थ :-१ अद्भुत, २ आश्चर्य, ३ विस्मय, ४ चित्र ये चार नाम अद्भुत (अचरज) रस के हैं। विस्मय (पुल्लिङ्ग) शेष (नपुंसकलिङ्ग) हैं। १ भैरव यह नाम भयानक का है ॥१९॥

---

1. **Bodily actions** and others derived from the sattva quality [1 each] 2. M. श्रृङ्गारादयष्टौ 3. M. च शब्दाच्छान्तोपि, 4. M. युक्तोथ 5. **Nine rasas** (sentiments) 6. M. श्रृङ्गाररस (erotic sentiment) [3] 7. M. वीररस (the sentiment of heroism) [2] 8. M. घृण्यतेनया

1. करुण-रस (the pathetic sentiment) [2] 2. M. स्वनर्हसोर्वा 3. हास्य-रस or the sentiment of mirth or humover [3] 4. बीभत्स-रस (disgusting sentiment) [2] 5. M. अति 6. M. आश्चर्यार्थेव्ययम् 7. M. अति 8. **Adbhuta-rasa** (marvellous sentiment) [4]

दारुणं भीषणं भीष्मं घोरं भीमं भयानकम्।
भयंकरं प्रतिभयम् रौद्रं तूग्रम् त्रिषु॥२०॥

कृष्णमित्रटीका:- दारयति। 'कृवृदारिभ्य उनन्' (उ. ३. ५३)। भीषयते। ल्युः (३. १. १३४)। विभेत्यस्मात्। 'भिषः षुक्च' (उ. १. १४८) इति मक्। 'भीमादयोऽपादाने[1]' (३. ४. ७४) घुर भीमार्थे (तु. प. से.)। बिभेत्यस्मात्। 'आनकः शीङ् भियः' (उ. ३. ८२)। भयं करोति। 'मेघर्तिभयेषु कृञः' (३. २. ४३)। खच्। प्रतिगतं भयेन। नव॥[2] रुद्रस्यायम्। रौद्रः क्रोधात्मा। 'उच समवाये' (दि. प. से.)। 'ऋज्रेन्द्र-' (उ. २. २८) इति रन्॥[3] अमी अद्भुताद्याश्चतुर्दश तद्वति त्रिषु॥२०॥

हिन्दी अर्थ :-१ दारुण, २ भीषण, ३ भीष्म, ४ घोर, ५ भीम, ६ भयानक, ७ भयंकर, ८ प्रतिभय,ये आठ नाम भयानक के हैं। १ रौद्र, २ उग्र, ये दो नाम उग्र के हैं। भैरव से लेकर रौद्रपर्यंत चौदह शब्द तीनों लिंगवाची हैं॥२०॥

चतुर्दश दरत्रासौ भीतिर्भीः साध्वसं भयम्।

कृष्णमित्रटीका:- दीर्यत्यस्मात्। दरः। 'दृ भये'। अप् (३. ३. ५७)। 'त्रसी उद्वेगे' (दि. प. से.)। घञ् (३. ३. १८)। 'ञिभी भये' (जु. प. से.)। क्तिन् (३. ३. ९४)। भीतिः। क्विपि (वा. ३. ३. ९४) भीः। साधून् स्यति। मूलविभुजादित्वात्कः। षट्॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ दर (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग), २ त्रास (पुल्लिङ्ग), ३ भीति (स्त्रीलिङ्ग), ४ भी (स्त्रीलिङ्ग), ५ साध्वस (नपुंसकलिङ्ग), ६ भय (नपुंसकलिङ्ग)- ये छः नाम भय के हैं।

विकारो मानसो भावः अनुभावो भावबोधकः॥२१॥

कृष्णमित्रटीका:-मानसो विकारो रत्यादिर्भावः। भावयति करोति रसान्। 'व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायीभावो रसः स्मृतः।' इति वचनाद्भावरससमितिविभावाः। ते चालम्बनविभावा उद्दीपनविभावाश्च। यमालम्ब्य रस उत्पद्यते स आलम्बनविभावः। यथा- शृङ्गारादौ नायिकादिः। यो रसमुद्दीपयति स उद्दीपनविभावः। यथा-गान्धर्वोपवनगमनादिः॥[5] अनुभावयन्ति अनुभवगोचरतां नयन्ति रसानित्यनुभावाः कटाक्षादयः। अनेकरसनिष्ठत्वं व्यभिचारित्वम्। यथा रतिः शृङ्गारशान्तकरुणाहास्येषु। निर्वेदादयस्तु व्यभिचारिणस्त्रस्त्रिंशत्। विभावैर्ललनोद्यनादिभिर्जनितः स्थायीरत्यादिको भावः। अनुभावः कटाक्षादिभिः कार्यैरनुमितः। व्यभिचारिभिर्निर्वेदादिभिः सहकारिभिरुपचितो रस इति **भट्टलोल्लट** प्रभृतयः॥२१॥[1]

हिन्दी अर्थ :- भाव-यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम मनसंबंधी विकार का है। अनुभाव यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम चित्त के विकार को प्रकाश करने वाले का है॥२१॥

गर्वोऽभिमानोऽहंकारो मानश्चित्तसमुन्नतिः।
"दर्पोऽवलेपोऽवष्टम्भश्चित्तोद्रेकः स्मयो मदः(५२)"

कृष्णमित्रटीका:-'गर्व माने' (चु. आ. से.)। घञ् (३. ३. १८)। अभिसर्वतो मननमभिमानः। 'अहम्' इति करणमहङ्कारः॥[2] 'मनु अवबोधने' (त. आ. से.) घञ्। मानः। चित्तस्य समुन्नतिः॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ गर्व, २ अभिमान, ३ अहंकार - ये तीन (पुल्लिङ्ग) नाम गर्व के हैं। १ मान यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम चित्त की बहुत ऊँचाई अर्थात् उन्नति का है। "दर्प, अवलेप, अवष्टंभ, चित्तोद्रेकः, स्मय, मद ये छः (पुल्लिङ्ग) नाम मद के हैं।"

परिभव के ९ नाम

अनादरः परिभवः परीभावस्तिरस्क्रिया ॥२२॥
रीढावमाननावज्ञावहेलनमसूर्क्षणम्।

कृष्णमित्रटीका:-न आदरः। 'परौ भुवोऽवज्ञाने। ने'[4] (३. ३. ५५) इति घञ् । भावः। पक्षे 'ऋदोरप्' (३. ३. ५७)। तिरस्करणम्। कृञः शः (३. ३. १००)। 'तिरसोऽन्यतरस्याम्[5]' (८. ३. ४२) इति सः ॥२॥ रेहणं रीढा। 'रिह कत्थनादौ' (तु. प. से.)। क्तः। होढे[6] (८. २. ३१) लोपः मनेर्ण्यन्ताद्युच् (३. ३. १०७) 'आतश्च-' (३. ३. १०६) इत्यङ्। अवज्ञा। 'हेड्[7] अनादरे' (भ्वा. आ. से.)। घञ् (३. ३. १८)। अवहेलनम्। 'सूर्क्ष आदरे' (भ्वा. प. से.)। नव॥[8]

1. M. भीमादयोपादाने 2. **Bhayanaka-rasa, the sentiment of terror** [9] 3. **Raudra- rasa, the sentiment of wrath or furiousness** [2] 4. **Fear** [6] 5. **Bhava as rati etc.** [1]

1. **Anubhava** (an eternal manifestation or indication of a feeling) [1] 2. **Pride or egoism** [3] 3. **Self respect** [2] 4. M. भुवोवज्ञाने 5. M. तिरसोन्यतरस्याम् 6. M. ढोढे, 7. M. हेडि 8. **Disregard** [9]

हिन्दी अर्थ :-१ अनादर, २ परिभव, ३ परीभाव- ये तीन (पुल्लिङ्ग), १ तिरस्क्रिया ॥२२॥ २ रीढ़ा, ३ अवमानना, ४ अवज्ञा- ये चार (स्त्रीलिङ्ग), १ अवहेलन, २ असूर्क्षण- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) कुल नव नाम अनादर के हैं।

मन्दाक्षं ह्रीस्त्रपा व्रीडा लज्जा

कृष्णमित्रटीका:-मन्दमक्षि यत्र तन्मन्दाक्षम्। 'ह्री लज्जायाम्' (जु. प. अ.)। संपदादि (वा. ३. ३. ६४) क्विप्। 'त्रपूष् लज्जायाम्' (भ्वा. आ. से.)। षित्त्वात् (३. ३. १०४) अङ्। 'व्रीड लज्जायाम्' (दि. प. से.)। 'ओलस्जी व्रीडे' (तु. प. से.)। अ प्रत्ययः (३. ३. १०३) ॥पञ्च॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ मन्दाक्ष, २ ह्री, ३ त्रपा, ४ व्रीडा, ५ लज्जा- ये पाँच नाम लज्जा के हैं। यहाँ मन्दाक्ष (नपुंसकलिङ्ग) शेष (स्त्रीलिङ्ग) हैं।

सापत्रपान्यतः ॥२३॥

कृष्णमित्रटीका:-सा लज्जा अन्यतश्चेत् परस्माल्लज्जावहे जाते अपत्रपा। एकम्॥२३॥[2]

हिन्दी अर्थ :- अपत्रपा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम दूसरे से लज्जा का है॥२३॥

क्षान्तिस्तितिक्षा

कृष्णमित्रटीका:-'क्षमू सहने' (दि. आ. अ.) क्तिन्। तिजेः (भ्वा. आ. से.) क्षमायां सन् (३. १. १५)। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ क्षान्ति, २ तितिक्षा- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम अन्य के सुख को सहने के हैं।

अभिध्या तु परस्य विषये स्पृहा।

कृष्णमित्रटीका:-अभिध्यानमभिध्या। 'आतश्च-' (३. ३. १०६) इत्यङ्। परस्य विषयिणीच्छा॥[4]

हिन्दी अर्थ :- अभिध्या यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम अन्य के धन के विषय में इच्छा का हैं।

अक्षान्तिरीर्ष्या

कृष्णमित्रटीका:-न क्षान्तिः। ईर्ष्यणमीर्ष्या। 'ईर्ष्य ईर्ष्यायाम्' (भ्वा. प. से.)। 'गुरोश्च-' (३. ३. १०३) इत्यः। 'परोत्कर्षासहिष्णुत्वस्य' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ अक्षान्ति, २ ईर्ष्या- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम ईर्ष्या के हैं।

असूया तु दोषारोपो गुणेष्वपि ॥२४॥

कृष्णमित्रटीका:-'असूञ् असूयायाम्'। कण्ड्वादित्वाद्यकि (३. १. २७) 'अ प्रत्ययात्' (३. ३. २०२)। गुणेषु दानादिषु दम्भादिरूपदोषारोपः॥२४॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ असूया यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम गुणों में दोष के आरोपण का है॥ २४॥

वैरं विरोधो विद्वेषः

कृष्णमित्रटीका:-वीरस्य कर्म। '-वैरमैथुनिकयोः' (४. २. १२५) इति निर्देशादण्। 'रुधिर आवरणे' (रु. उ. अ.)। 'द्विष अप्रीतौ' (अ. उ. से.)। त्रीणि॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ वैर, २ विरोध, ३ विद्वेष- ये तीन नाम वैर के हैं।

मन्युशोकौ तु शुक् स्त्रियाम्

कृष्णमित्रटीका:-'मन् ज्ञाने' (दि. आ. अ.)। मनिजनि[3]-दसिभ्यो युः (उ. ३. २०)। 'शुच शोके' (भ्वा. प. से.)। घञ् (३. ३. १८)। क्विपि (वा. ३. ३. ६४) शुक्। त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ मन्यु, २ शोक (पुल्लिङ्ग), ३ शुच् (चान्त) (स्त्रीलिङ्ग)- ये तीन नाम शोक के हैं।

पश्चात्तापोऽनुतापश्च विप्रतीसार इत्यपि॥२५॥

कृष्णमित्रटीका:-पश्चात्तपनम्। घञ् (३. ३. १८)। विप्रतिसरणम्। 'सृ गतौ' (भ्वा. प. अ.)। घञ् (३. ३. १८)। उपसर्गस्य घञि- (६. ३. १२२) इति दीर्घः। त्रीणि॥२५॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ पश्चात्ताप, २ अनुताप, ३ विप्रतीसार- ये तीन (पुल्लिङ्ग) नाम पश्चत्ताप के हैं ॥२५॥

कोपक्रोधामर्षरोषप्रतिघा रुट्क्रुधौ स्त्रियौ।

कृष्णमित्रटीका:-कोपक्रोधौ घञि। 'मृष तितिक्षायाम्' (दि. उ. से.)। घञि (३. ३. १८) नञ्समासः (२.२.६)। 'रुष हिंसायाम्' (भ्वा. प. से.)। घञ् (३. ३० १८) प्रतिहन्यतेऽनेन[6] प्रतिघः। 'करणे हनः' (३. ४. ३७)। 'परौ घः' (३. ३. ८४) इति बाहुलकाद्घत्वञ्च। सप्त॥[7]

1. Shame [5] 2. Shame from others [1] 3. Patience [8] 4. Coveting anothers's property [1]

1. **Detraction** [1] 2. **Enmity** [3] 3. M. मनजन- 4. Griet [3] 5. **Repentance** [3] 6. M. प्रतिहन्यतेनेन 7. **Anger** [7]

हिन्दी अर्थ :-१ कोप, २ क्रोध, ३ अमर्ष, ४ रोष, ५ प्रतिघा (पुल्लिङ्ग), ६ रुष् (षान्त), ७ क्रुध् (स्त्रीलिङ्ग)- ये सात नाम क्रोध के हैं।

शुचौ तु चरिते शीलम्

कृष्णमित्रटीका :-शुचौ शुद्धे। 'शील समाधौ' (भ्वा. प. से.)। घञ् (३. ३. १८)। एकम्।।[1]

हिन्दी अर्थ :-१ शील- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम शुद्ध चरित्र का है।

उन्मादश्चित्तविभ्रमः ।।२६।।

कृष्णमित्रटीका :-'मदी हर्षे' (दि. प. से.)। घञ् (३. ३. १८)। उन्मादः। चित्तस्य विभ्रमोऽनवस्थानं[2] भूताद्यावेशात् ।।२६।।[3]

हिन्दी अर्थ :-१ उन्माद, २ चित्तविभ्रम- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम चित्त बिगड़ने के हैं।।२६।।

प्रेमा ना प्रियता हार्दं प्रेम स्नेहः

कृष्णमित्रटीका :-प्रीणाति प्रियः। 'इगुपध-' (३. १. १३५) इति कः। तस्य भावः। 'पृथ्वादिभ्य[4] इमनिच्-' (५. १. १२२)। 'प्रियस्थिर-' (६. ४. १५६) इति प्रादेशः। हृदयस्य कर्म हार्दम्। युवादित्वात् (५. १. १३०) अण्। 'हृदयस्य हृल्लेख-' (६. ३. ५०) इति हृत्। 'प्रीञ् तर्पणे' (क्र्या. उ. से.)। मनिन् (३. २. ७५)। प्रेम। 'स्निह[5] प्रीतौ' (दि. प. से.)। घञ् (३. ३. १८) स्नेहः। पञ्च।।[6]

हिन्दी अर्थ :-१ प्रेमन् (नान्त पुल्लिङ्ग), २ प्रियता (स्त्रीलिङ्ग), ३ हार्द (नपुंसकलिङ्ग), ४ प्रेमन् (नान्त नपुंसकलिङ्ग), ५ स्नेह (पुल्लिङ्ग)- ये पाँच नाम प्रेम के हैं।

अथ दोहदम्।

इच्छा काङ्क्षा स्पृहेहा तृड् वाञ्छा लिप्सा मनोरथः ।।२७।।
कामोऽभिलाषस्तर्षश्च

कृष्णमित्रटीका :-दोहमाकर्षं ददाति। यद्यप्ययं सामान्येनेच्छावाची तथापि गर्भिणीच्छायां प्रायेण प्रयुज्यते[7]। 'इच्छा[8]' (३. ३. १०१) इति सूत्रेण इषेः शप्रत्ययो निपातितः। 'काक्षि इच्छायाम्' (भ्वा. प. से.)। 'गुरोश्च-' (३. ३. १०३) इत्यः[1]। 'स्पृह ईप्सायाम्' (चु. उ. से.)। भिदादिः। 'ईह चेष्टायाम्' (भ्वा. आ. से.)। 'भितृष् पिपासायाम्' (दि. प. से.)। क्विपि (वा. ३. ३. ६४) तृट्। लब्धुमिच्छा लिप्सा। मन एव रथो दूरगामि यत्र स मनोरथः।।२७।। 'कमु कान्तौ' (भ्वा. आ. से.)। घञ् (३. ३. १८)। कामः। 'लष कान्तौ' (भ्वा. उ. से.)। घञ् (३. ३. १८)। द्वादश।।[2]

हिन्दी अर्थ :-१ दोहद (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग), २ इच्छा, ३ कांक्षा, ४ स्पृहा, ४ ईहा, ६ तृष् (षान्त), ७ वांछा, ८ लिप्सा (स्त्रीलिङ्ग), ९ मनोरथ।।२७।। १० काम, ११ अभिलाष, १२ तर्ष (पुल्लिङ्ग)- ये बारह नाम मनोरथ के हैं।

स महान् लालसा द्वयोः।[3]

कृष्णमित्रटीका :-स तर्षो महांश्चेल्लालसा। भृशं लसनम्। यङन्तादः (३. ३. १०२)। एकम्।।[4]

हिन्दी अर्थ :-१ लालसा- यह एक नाम अत्यन्त इच्छा का है और (स्त्रीलिङ्ग पुल्लिङ्ग) हैं।

उपाधिर्ना धर्मचिन्ता

कृष्णमित्रटीका :- उप समीप[5] आधेः। धर्मस्य चिन्ता विचारः। द्वे।।[6]

हिन्दी अर्थ :-१ उपाधि (पुल्लिङ्ग), २ धर्मचिन्ता (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम धर्म की चिन्ता के हैं।

पुंस्याधिर्मानसी व्यथा ।।२८।।

कृष्णमित्रटीका :-आधीयते दुःखमनेन[7]। धाञः 'उपसर्गे घोः किः' (३. ३. ९२)। मानसो व्यथा पीडा।।२८।।[8]

हिन्दी अर्थ :-१ आधि (पुल्लिङ्ग), २ मानसी व्यथा (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम मन की पीडा के हैं ।।२८।।

स्याच्चिन्ता स्मृतिराध्यानम्

कृष्णमित्रटीका :-'चिति स्मृत्याम्' (चु. प. से.)। 'चिन्तिपूजि-' (३. ३. १०५) इत्यङ्। चिन्ता। त्रीणि।।[9]

हिन्दी अर्थ :-१ चिन्ता, २ स्मृति (स्त्रीलिङ्ग), ३ आध्यान (नपुंसकलिङ्ग)- ये तीन नाम स्मरण के हैं।

---

1. **Good conduct** [1] 2. M. विभ्रमोनवस्थानं 3. Madness [2] 4. M. पृथ्वीदिभ्य 5. **In the Dhatupatha it is read as** ष्णि 6. **Love** [5] 7. M. प्रयुज्येते 8. M. इच्छा

1. M. इत्य 2. **Desire** [12] 3. **K. and B. read it as follows:** सोऽत्यर्थ लालसा द्वयोः 4. **Longing** [1] 5. M. समांपे 6. **Religious discussion** [2] 7. M. दुखमनेन 8. **mental pain or anguish** [1] 9. **Recollection** [3]

उत्कण्ठोत्कलिके समे।

कृष्णमित्रटीका:-'कठि शोके' (भ्वा. आ. से.)। उत्कण्ठा। उत्पूर्वात्कलेर्वुन् (उ. ५. ३५)। कामादिजस्मृतेर्द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ उत्कंठा, २ उत्कलिका- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम उत्कंठा के हैं।

उत्साहोऽध्यवसायः स्यात्

कृष्णमित्रटीका:-'षह मर्षणे' (भ्वा. आ. से.)। घञ् (३. ३. १८)। उत्साहः। स्यतेर्घञि (३. ३. १८) आतो युक् (७. ३. ३३)। अध्यवसायः। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ उत्साह, २ अध्यवसाय- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम उत्साह के हैं।

स वीर्यमतिशक्तिभाक् ॥२६॥

कृष्णमित्रटीका:-उत्साहः सातिशयो[3] वीर्यम्। वीरस्य कर्म। वीरे साधुः॥२६॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ वीर्य (नपुंसकलिङ्ग)- यह एक नाम अत्यन्त उत्साह का है॥२६॥

कपटोऽस्त्री व्याजदम्भोपधयः छद्मकैतवे।
कुसृतिर्निकृतिः शाठ्यम्

कृष्णमित्रटीका:-के मूर्ध्नि पट इवाच्छादकः कपटः। व्यजन्त्यनेन व्याजः। घञ्। दम्यतेऽनेन[5]। घञ् (३. ३. १८)। उपधीयते आरोप्यतेऽनेन[6]। 'उपसर्गे घोः किः' (३. ३. ९२)। छाद्यतेऽनेन[7]। 'छद अपवारणे' (चु. उ. से.)। मनिन् (३. २. ७५)। कितवस्य कर्म। युवादित्वात् (५. १. १३०) अण्। कुत्सिता सृतिः। 'सृ गतौ' (भ्वा. प. अ.)। निकृष्टा कृतिः। क्वापि[8] शठ कैतवे (भ्वा. प. से.)। पचद्यच् (३. १. १३४)। नव॥[9]

हिन्दी अर्थ :-१ कपट (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग), २ व्याज (पुल्लिङ्ग), ३ दम्भ (पुल्लिङ्ग), ४ उपधि (पुल्लिङ्ग), ५ छद्मन् (नान्त नपुंसकलिङ्ग), ६ कैतव (नपुंसकलिङ्ग), ७ कुसृति (स्त्रीलिङ्ग), ८ निकृति (स्त्रीलिङ्ग), ९ शाठ्य (नपुंसकलिङ्ग)- ये नौ नाम शठता के हैं।

1. **Anxiety** [2] 2. **Enthusiasm or determination** [2] 3. M. सातिशायो 4. **Firm determination** [2] 5. M. दम्यतेनेन 6. M. आरोप्यतेनेन 7. M. छाद्यतेनेन 8. M. कापी 9. **Fraud** [9]

प्रमादोऽनवधानता॥३०॥

कृष्णमित्रटीका:-'मदी हर्षे' (दि. प. से.)। घञि(३. ३. १८) प्रमादः। अनवधानमविचारित-करणम्॥३०॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ प्रमाद, २ अनवधानता- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम असावधानता के हैं॥३०॥

कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहलम्।

कृष्णमित्रटीका:-कृतू कृतेः स्नेहपात्रं हलति। 'हल विलेखने' (भ्वा. प. से.) प्रज्ञाद्यणि (५. ४. ३८) कौतूहलम्। कुतूं कायति। 'इको[2] ह्रस्वोऽङ्यः-' (६. ३. ६१) इति ह्रस्वः। प्रज्ञाद्यणि (५. ४. ३८) कौतुकम्॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ कौतुहल, २ कौतूक, ३ कुतुक, ४ कुतूहल- ये चार (नपुंसकलिङ्ग) नाम कौतुक के हैं।

स्त्रीणां विलासविव्वोकविभ्रमा ललितं तथा॥३१॥
हेला लीलेत्यमी हावाः क्रिया शृङ्गारभावजाः।

कृष्णमित्रटीका:-शृङ्गारो रत्यादिः। भावा मनो-विकारास्तेभ्यो जाताः क्रियाश्चेष्टा विलासादयो हावशब्द-वाच्याः। जुहोतेर्घञि हावः। 'लस श्लेषणे' (भ्वा. प. से.)। घञि (३. ३. १८) विलासः। विवानम्। विवुर्गतिविशेषः। 'वा गतौ' (अ. प. अ.)। 'मृगय्वादयश्च' (उ. १. ३७) इति कुः। 'उच समवाये' (दि. प. से.)। घञि (३. ३. २१) ओकः। 'भ्रमु अनवस्थाने' (दि. प. से.)। घञि (३. ३. १८) विभ्रमः। 'नोदात्त-' (७. ३. ३४) इति न वृद्धिः। 'लल ईप्सायाम्' (चु. आ. से.)। ललितम्॥३१॥ 'हिल भावकरणे' (तु. प. से.) घञि (३. ३. १८) हेला। 'ली (ङ्) श्लेषणे' (दि. आ. अ.)। क्विप् (वा. ३. ३. ९४)। लियं लाति लीला[4]। 'विलासोऽङ्गे[5] विशेषो यः प्रियाप्तावासनादिषु।' 'विव्वोकोऽभिमत[6]- प्राप्तावपि गर्वा-दनादरः। चित्तवृत्त्यनवस्थानं शृङ्गाराद्विभ्रमो मतः॥ अनाचा-र्योपदिष्टं स्याल्ललितं रतिचेष्टितम्। प्रौढेच्छञ्ज सुरते हेला हावः स्याद्भावसूचकः॥ हावः शृङ्गारभावाप्तौ रम्योक्तस्मित-वीक्षितम्। शृङ्गारप्रौढिमा हेला' इति। (किं) च प्रियस्यानुकृतिलीला श्लिष्टावाग्वेषचेष्टितैः॥[7]

1. **Carelessness** [2] 2. M. ह्रस्वोड्य 3. **Curiosity** [4] 4. M. लीलाः 5. M. विलासोङ्गे 6. M. विव्वोकोभिमत 7. **Hava i. e. any feminine coquettish gesture exciting amarous sensations** [1]

हिन्दी अर्थ :-१ विलास (पुल्लिङ्ग), २ विव्वोक (पुल्लिङ्ग), ३ विभ्रम (पुल्लिङ्ग), ४ ललित (नपुंसकलिङ्ग)॥३१॥ ५ हेला (स्त्रीलिङ्ग), ६ लीला (स्त्रीलिङ्ग)- ये सब स्त्रियों के शृङ्गार से उपजी छः चेष्टा हाव नाम से प्रसिद्ध हैं।

द्रवकेलिपरीहासाः क्रीडा लीला च नर्म[1] च॥३२॥

कृष्णमित्रटीका:-द्रवति हृदयमनेन द्रवः। 'द्रु गतौ' (भ्वा. प. अ.)। अप् (३. ३. ५७)। किलन्त्यनेन केलिः। 'किल क्रीडायाम्' (तु. प. से.)। इन् (उ. ४. ११७)। हसेर्घञि (३. ३. १८) हासः। 'क्रीड् विहारे' (भ्वा. प. से.), 'खे (के) लृ चलने' (भ्वा. प. से.)। अः (३. ३. १०३)। 'नृ नये' (भ्वा. प. से.)। मनिन् (३. २. ७५)। नर्म। क्रीडायाः षट्॥३२॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ द्रव (पुल्लिङ्ग), २ केवल (पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग), ३ परीहास (पुल्लिङ्ग), ४ क्रीडा (स्त्रीलिङ्ग), ५ खेला (स्त्रीलिङ्ग), ६ नर्मन् (नपुंसकलिङ्ग) - ये छः नाम क्रीडा मात्र के हैं ॥३२॥

व्याजोऽपदेशो लक्ष्यं च

कृष्णमित्रटीका:-व्यज्यत इति व्याजः, स्वरूपाच्छादनम्। अतद्रूपस्य ताद्रूप्यमपदेशः, क्रीडार्थं वञ्चनम्। 'लक्ष आलोचने' (चु. आ. से.)। ण्यत् (३. ३. १२४)। लक्ष्यम्। त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ व्याज (पुल्लिङ्ग), २ अपदेश (पुल्लिङ्ग), ३ लक्ष्य (नपुंसकलिङ्ग)- ये तीन नाम अपने रूप को छिपाने के हैं।

क्रीडा खेला च कूर्दनम्।

कृष्णमित्रटीका:-क्रीडया खेलनम्। 'कुर्द क्रीडायाम्' (भ्वा. प. से.)। ल्युट् (३. ३. ११५)। 'र्वोः' (८. २. ७६) इति दीर्घः। 'कन्दुकादिक्रीडनस्य त्रीणि' इत्यन्ये॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ क्रीडा (स्त्रीलिङ्ग), २ खेला (स्त्रीलिङ्ग), ३ कूर्दन (नपुंसकलिङ्ग)- ये तीन नाम बाललीला के हैं।

घर्मो निदाघः स्वेदः स्यात्

1. B reads खेला 2. Play [6] 3. Excuse, pretence, evasion [3] 4. boys' sport [3]

कृष्णमित्रटीका:-जिघर्त्यनेनाङ्गम्। घर्मः। 'घृ क्षरणदीप्त्योः' (जु. प. अ.)। 'घर्म-' (उ. १. १४६) इति निपातः। निदह्यतेऽनेन[1]। न्यङ्क्वादिः। स्विद्यत्यङ्गमनेन। प्रस्वेदहेतोस्तापस्य त्रीणि॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ धर्म, २ निदाघ, ३ स्वेद- ये तीन (पुल्लिङ्ग) नाम पसीने के हैं।

प्रलयो नष्टचेष्टता॥३३॥

कृष्णमित्रटीका:-प्रलीयते क्रियाऽत्र[3]। 'एरच्' (३. ३. ५३)। नष्टा चेष्टा यस्य। तस्य भावः। अपसात्त्विकभावो मूर्च्छापरर्यायः[4]। हर्षशोकादिभिः सकलचेष्टा नाश इति यावत्॥३३॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ प्रलय (पुल्लिङ्ग), २ नष्टचेष्टता (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम मूर्च्छा से बेहोश होने के हैं॥३३॥

अवहित्थाकारगुप्तिः

कृष्णमित्रटीका:-अवहिः स्थानमवहित्था। पृषोदरादिः (६. ३. १८)। शोकहर्षादिजनितस्य मुखग्लानिरोमाञ्चादेर्गोपनम्। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ अवहित्था, २ आकारगुप्ति- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम शोक आदि से उपजी मुख की ग्लानि के वा गुप्त आकार के हैं।

समौ संवेगसंभ्रमौ॥

कृष्णमित्रटीका:-ओवजी (तु. आ. से.) घञि (३. ३. १८) संवेगः। हर्षादिना कर्मसु त्वराया द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१ संवेग, २ संभ्रम- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम आनन्दपूर्वक कर्मो में शीघ्रता के हैं।

स्यादाच्छुरितकं हासः सोत्प्रासः

कृष्णमित्रटीका:-आच्छुरणं परच्छेदनम्। भावेक्तः (३. ३. ११४)। स्वार्थे कः (५. ३. ७७)। उत्प्रास्यते सामर्षयुक्तः क्रियतेऽनेन[8]। अस्तेर्घञ् (३. ३. १८)। सोपहास इत्यर्थः। एकम्॥[9]

हिन्दी अर्थ :- आच्छुरितक- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम अभिप्राय सहित हँसने का है अथवा शब्द सहित हँसने का है।

1. M. निदह्यतेनेन 2. Heat and sweat [3] 3. M. क्रियात्र 4. M. मूर्च्छापरपर्याय 5. Swoon [2] 6. Dissimulation or concealment of an internal feeling [2] 7. Haste. [2] 8. M. क्रियतेनेन 9. A horse-laugh [1]

स मनाक् स्मितम्॥३४॥

कृष्णमित्रटीका:-स[1] हासः मनाक्, ईषत् स्मितम्। अदृष्टदन्तमित्यर्थः ॥३४॥[2]

हिन्दी अर्थ :-स्मित- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम मुसकुराने का हैं॥३४॥

मध्यमः स्याद्विहसितम्

कृष्णमित्रटीका:-स हासो मध्यमः, महत्त्वाल्पत्वसहितः। एकम्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- विहसित- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम मध्यम हँसने का है।

रोमाञ्चो रोमहर्षणम्।

कृष्णमित्रटीका:-रोम्णामञ्चनं रोमाञ्चः रोमाणि हृष्यन्त्यनेन॥द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- रोमाञ्च (पुल्लिङ्ग), २ रोमहर्षण (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम रोमावली खड़ी होने के हैं।

क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टम्

कृष्णमित्रटीका:-'क्रदि रोदने' (भ्वा. प. से.)। क्तः (३. ३. ११४)। 'क्रुश रोदने' (भ्वा. प. से.)। क्तः (३. ३. ११४)। त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ क्रंदित, २ रुदित, ३ क्रुष्ट- ये तीन (नपुंसकलिङ्ग) नाम रोने के हैं।

जृम्भस्तु त्रिषु जृम्भणम्॥३५॥

कृष्णमित्रटीका:-'जृभि गात्रविनामे' (भ्वा. आ. से.) जृम्भो मुखादेर्विकारः॥द्वे॥३५॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ जृम्भ, २ जम्भण (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम जंभाई के हैं यहाँ जृंभशब्द त्रिलिंगी है॥३५॥

विप्रलम्भे विसंवादः

कृष्णमित्रटीका:-विशेषेण प्रलम्भनं विप्रलम्भः। विरुद्धं सम्यग्वदनमङ्गीकृतासम्यक्संपादनमित्यर्थः॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१ विप्रलम्भ, २ विसंवाद- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम ठगाई के साथ बोलने के हैं।

रिङ्गणं स्खलनं समे।

कृष्णमित्रटीका:-'रिगि गतौ' (भ्वा. प.से.)। 'स्खल संचलने' (भ्वा. प. से.)। 'धर्मादिश्चलनस्य' द्वे इति स्वामी। 'बालानां हस्तपादगमनस्य' इत्यन्ये। 'पिच्छिलादौपतनस्य' इत्यपरे॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ रिङ्गण, २ स्खलन- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम अपने धर्म आदि से उलटे चलने अथवा बालकों के घुटनों से चलने के हैं।

निन्द्रा के ५ नाम

स्यान्निद्रा शयनं स्वापः स्वप्नः संवेश इत्यपि॥३६॥

कृष्णमित्रटीका:-निद्राणं निद्रा। 'द्रा कुत्सायाम्' (आ. प. से.)। 'आतश्च-' (३. ६. १०६) इत्यङ्। 'ञिष्वप् शये' (अ. प. अ.)। घञि (३. ३. १८) स्वापः। 'स्वपो नन्' (३. ३. ९१)। स्वप्नः। 'विश प्रवेशने' (तु. प. अ.) घञि (३. ३. १८) संवेशः। पञ्च॥३६॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ निद्रा (स्त्रीलिङ्ग), २ शयन (नपुंसकलिङ्ग), ३ स्वाप (पुल्लिङ्ग), ४ स्वप्न (पुल्लिङ्ग), ५ संवेश (पुल्लिङ्ग)- ये पाँच नाम नींद के हैं॥३६॥

तन्द्री प्रमीला

कृष्णमित्रटीका:-तत्पूर्वाद्रातेः 'स्पृहि गृहि-' (३. २. १५८) इति सूत्रे 'तन्द्रा' इति निपातितः। गौरादेराकृतिगणत्वान्ङीषपि॥ प्रमीलयन्तीन्द्रियाण्यस्यां प्रमीला। 'मील निमेषणे' (भ्वा. प. से.)। अत्यन्तश्रमादिना सर्वेन्द्रियासामर्थ्यस्य द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ तन्द्री, २ प्रमीला- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम नींद के आदि और अन्त्य में हुए आलस्य के हैं।

भ्रकुटिर्भ्रुकुटिर्भ्रूकुटिः स्त्रियः।

कृष्णमित्रटीका:-'कुट कौटिल्ये' (तु. प. से.)। 'इगुपधात्कित्' (उ. ४. ११९) इतीन्। 'भ्रुवः कुटिः' भ्रकुंसवत्त्रैरूप्यम्। क्रोधादिना ललाटसंकोचस्य त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ भ्रकुटि, २ भ्रूकुटि, ३ भ्रूकुटि (स्त्रीलिङ्ग)- ये तीन नाम भृकुटी चढाने के हैं।

अदृष्टिः स्यादसौम्येऽक्ष्णि

1. M. सः 2. **Smile** [1] 3. **A gentle laugh** [1] 4. **Thrill** [2] 5. **Weeping** [3] 6. **Yawning** [2] 7. **Deceiving by false statements.** [2]

1. Falling down or deviating from the right path. [2] 2. **Sleeping.** [5] 3. **Drowsiness** [2] 4. **Bending of the eye-brows** [3]

कृष्णमित्रटीका :- असौम्ये असुन्दरे, क्रूरदृष्टावित्यर्थः। विरुद्धा दृष्टिरदृष्टिः। एकम्॥[1]

हिन्दी अर्थ :- अदृष्टि- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम रोषसहित (क्रूरदृष्टि) टेढ़ी आँख से देखने का है।

संसिद्धिप्रकृती त्विमे॥३७॥

स्वरूपं च स्वभावश्च निसर्गश्च

कृष्णमित्रटीका :- 'षिध संराद्धौ' (दि. प. अ.)। क्तिन् (३. ३. ९४)। संसिद्धिः। कृञः क्तिन् (३. ३. ९४)। प्रकृतिः। 'इमे' इति द्वयोः स्त्रीत्वबोधनाय॥३७॥ 'सृज विसर्गे' (तु. प. अ.)। घञ् (३. ३. १८) निसर्गः। पञ्च॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ संसिद्धि (स्त्रीलिङ्ग), २ प्रकृति (स्त्रीलिङ्ग)॥३७॥ ३ स्वरूप (नपुंसकलिङ्ग), ४ स्वभाव (पुल्लिङ्ग), ५ निसर्ग (पुल्लिङ्ग)- ये पाँच नाम स्वभाव के हैं।

अथ वेपथुः। कम्पः

कृष्णमित्रटीका :-'टुवेपृ कम्पने' (भ्वा. आ. से.)। 'ट्वितोऽथुच्'[3] (३. ३. ८९)। वेपथुः। 'कपि चलने' (भ्वा. आ. से.)। घञ् (३. ३. १८)। कम्पः॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ वेपथु, २ कम्प- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम कंप के हैं।

अथ क्षण उद्धर्षो मह उत्सव उद्धवः॥३८॥[5]

इति नाट्यवर्गः॥७॥

कृष्णमित्रटीका :-क्षणोति दुःखम्।[6] 'क्षणु हिंसायाम्' (त. उ. से.)। पचाद्यच् (३. १. १३४)। क्षणः। उद्धर्षयति। 'हृषु अलीके' (भ्वा. प. से.)। 'मह पूजायाम्' (भ्वा. प. से.)। अच् (३. १. १३४)। महः। सान्तस्तु तेजोवाची। उध्दुनोति दुःखमुद्धवः।[7] 'धूञ् कम्पने' (स्वा. उ. अ.)। अच् (३. १. १३४)। उत्सूते सुखमूत्सवः॥३८॥[8]

इति नाट्यवर्गः॥७॥

हिन्दी अर्थ :-१ क्षण, २ उद्धर्ष, ३ मह, ४ उद्धव, ५ उत्सव-ये पाँच (पुल्लिङ्ग) नाम उत्सव के हैं॥३८॥

इति नाट्यवर्गः॥७॥

1. **An evil or unkind look.** [1] 2. **Nature**. [6] 3. M. ट्विचतोथुच् 4. **Tremor** [2] 5. 'अथ क्षण उद्धर्षो मह उद्धव उत्सवः।' is the reading adopted by k and B. 6. M. दुष्खं 7. M. दुष्खमुद्धवः 8. **Festival** [5]

अथ पातालभोगिवर्गः॥८॥

अधोभुवनपातालबलिसद्मरसातलम्।

नागलोकः

कृष्णमित्रटीका :- अधश्च तद्भुवनं च। पतन्त्यत्र पातालम्। 'पति चण्डिभ्यामालञ्' (उ. १. ११७)। बलेः सद्म। रसायास्तलमधः॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ अधोभुवन, २ पाताल, ३ बलिसद्मन्, ४ रसातल (नपुंसकलिङ्ग), ५ नागलोक (पुल्लिङ्ग)- ये पाँच नाम पाताल के हैं।

अथ कुहरं शुषिरं विवरं बिलम्॥१॥

छिद्रं निर्व्यथनं रोकं रन्ध्रं श्वभ्रं वपा शुषिः।

कृष्णमित्रटीका :-कुं हरति। 'हरतेरनुद्यमनेऽच्'[2] (३. २. ९)। शुष 'शोषणे' (दि. प. अ.)। 'इगुपधात्-' (उ. ४. ११९) किः। शुषिरस्यास्ति। 'ऊष शुषि-' (५. २. १०७) इति रः। विव्रियते विवरम्। 'वृञ् वरणे' (स्वा. उ. से.)। पचाद्यच् (३. १. १३४)। 'विल भेदने' (तु. प. से.)। 'इगुपध-' (३. १. १३५) इति कः॥१॥ छिद्यते छिद्रम्। 'स्फायितञ्च-' (उ. २. १३) इति रक्। निव्यर्थतेऽनेन[3]। रोचतेऽत्र[4] रोकम्[5]। 'रुच दीप्तौ' (भ्वा. आ. से.) 'हलश्च' (३. ३. १२१) इति घञ्। न्यङ्क्वादित्वात् (७. ३. ५३) कुः। 'रध हिंसासंराद्ध्योः' (दि. प. से.)। बाहुलकाद्रक्। 'श्वभ्र गतौ' (चु. प. से.)। ण्यन्तादच्। 'डुवप्' (भ्वा. उ. अ.)। भिदादित्वात् (३. ३. १०४) वपा। एकादश॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ कुहर, २ सुषिर, ३ विवर, ४ बिल॥१॥ ५ छिद्र, ६ निर्व्यथन, ७ रोक, ८ रन्ध्र, ९ श्वभ्र (नपुंसकलिङ्ग), १० वपा, ११ शुषि (स्त्रीलिङ्ग)- ये ग्यारह नाम छिद्रमात्र के हैं।

गर्तावटौ भुवि श्वभ्रे

कृष्णमित्रटीका :-गिरति गर्तः। 'गॄ निगरणे' (तु. प. से.)। 'हसिमृगृ-' (उ. ३. ८६) इति तन्। अवत्यस्मादवटः। 'शकादिभ्योऽटन्'[7] (उ. ४. ८१) भूरन्ध्रस्य द्वे॥[8]

1. पाताल लोक the world under earth said to be inhabited by Nagas. [5] 2. M. हरतेस्नुद्यमने च 3. M. निर्व्यथतेनेन 4. M. रोचतंत्र 5. M. रोकः। 6. Hole (in general) [11] 7. M. शकादिभ्योटन् 8. Hole (in ground) [2]

हिन्दी अर्थ :- १ गर्त, २ अवट- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम पृथ्वी के छिद्र के हैं।

सरन्ध्रे शुषिरंत्रिषु॥२॥

कृष्णमित्रटीका:-रसन्ध्रे शुषिरम्। एकम्॥२॥[1]

हिन्दी अर्थ :- सुषिर- यह एक नाम छिद्रयुक्त वस्तु का है और त्रिलिङ्गवाची हैं॥२॥

अन्धकारोऽस्त्रियां ध्वान्तं तमिस्त्रं तिमिरं तमः।

कृष्णमित्रटीका:-'अन्ध दृष्ट्युपघाते' (चु. उ. से.) चुरादिः। घञ् (३. ३. १८)। अन्धं करोत्यन्धकारः। 'क्षुब्धस्वान्त-' (७. २. १८) इति ध्वान्तो निपातितः। तमोऽस्यास्ति[2] तमिस्रम्। 'ज्योत्स्नातमिस्रा-' (५. २. ११४) इति साधुः। 'तिम आर्द्रीभावे' (दि. प. से.)। किरच्। तिमिरम्। ताम्यत्यनेन तमः। असुन् (उ. ४. १८८)॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ अन्धकार (पुल्लिङ्ग न.), २ ध्वान्त (नपुंसकलिङ्ग), ३ तमिस्र (नपुंसकलिङ्ग), ४ तिमिर (नपुंसकलिङ्ग), ५ तमस् (नपुंसकलिङ्ग)- ये पाँच नाम अंधकार के हैं।

ध्वान्ते गाढेऽधतमसम्

कृष्णमित्रटीका:-ध्वान्ते गाढे दृढान्धकारे । अन्धयतीत्यन्धम्। तच्च तमश्च॥[4]

हिन्दी अर्थ :- अन्धतमस्- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम अत्यंत अंधेरे का है।

क्षीणेऽवतमसम्

कृष्णमित्रटीका:-क्षीणे ध्वान्तेऽवहीनं[5] तमः॥[6]

हिन्दी अर्थ :- अवतमस्- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम विगत अंधेरे का है।

तमः॥३॥

विष्वक्संतमसम्

कृष्णमित्रटीका:-विष्वक् सर्वतस्तमः॥३॥[7]

हिन्दी अर्थ :- सन्तमस- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम सर्वव्यापी अंधेरे का है॥३॥

नागाः काद्रवेयाः

कृष्णमित्रटीका:- नगे भवा नागाः। कद्रोरपत्यानि ॥द्वे॥[8]

हिन्दी अर्थ :-१ नाग, २ काद्रवेय- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम सर्पों के हैं।

तदीश्वरः। शेषोऽनन्तः

कृष्णमित्रटीका:-तेषामीश्वरः। 'शिष्लृ विशेषणे' (रु. प. अ.)। घञ् (३. ३. १८)। शेषः। नास्त्यन्तोऽस्यानन्तः[1] ॥द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ शेष, २ अनन्त- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम सर्पों के पति शेषनाग के हैं।

वासुकिस्तु सर्पराजः

कृष्णमित्रटीका:-वसु[3] कायति वसुकः। तदपत्यं वासुकिः॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ वासुकि, २ सर्पराज- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम सर्पों के राजा के हैं।

अथ गोनसे॥४॥ तिलित्सः स्यात्

कृष्णमित्रटीका:-गोरिव नासिकास्य गोनसः॥४॥ 'तिल गतौ' (भ्वा. प. से.) इगुपधात्किः (३. १. १३५)। तिलित्सरति। 'अन्येभ्योऽपि[5]-' (वा. ३. २. १०२) इति डः। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ गोनस॥४॥ २ तिलित्स- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम पाणस सर्प के हैं।

अजगरे शयुर्वाहस इत्युभौ।

कृष्णमित्रटीका:-अजो नित्यो गरोऽस्य[7]। शेतेऽत्यर्थं[8] शयुः। 'भृमृशी-' (उ. १. ७) इत्युः। वाहं स्यति वाहसः। त्रीणि॥[9]

हिन्दी अर्थ :-१ अजगर, २ शयु, ३ वाहस- ये तीन (पुल्लिङ्ग) नाम अजगर के हैं।

अलगर्दो जलव्यालः

कृष्णमित्रटीका:-'अल गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'गर्द शब्दे' (भ्वा. प. से.)। अलश्चासौ गदंश्च। जलस्य व्यालः सर्पः॥[10]

हिन्दी अर्थ :-१ अलगर्द, २ जलव्याल- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम पानी के सर्प के हैं।

---

1. **A hollow thing** [1] 2. M. तमोस्यास्ति 3. **Darkness.** [5] 4. **Deep darkness** [1] 5. M. ध्वान्ते अवहीनं 6. **Slight or dim darkness** [1] 7. **All-pervading darkness** [1] 8. नाग, **a semi-divine being having the face of a man and tail of the serpant** [2]

1. **M. the** नास्ति अन्तोस्यानन्तः 2. शेष, the king of nagas. [2] 3. M. वसुं 4. **Vasuki, the king of snakes** [2] 5. M. अन्येभ्योपि 6. **A kind of sanke** [2] 7. M. गरोस्य 8. M. शेतेत्यर्थ 9. **Boa-constrictor, the largest species of serpents** [3] 10. **Water-serpent.** [2]

समौ रजिलडुण्डुभौ ॥५॥

कृष्णमित्रटीका:-वेराजिः रेखाऽस्यास्ति[1] राजिलः। सिध्यादित्वात् (५. २. ९७) लच्। 'डुण्डु' इत्यनुकरणे शब्दः। तेन भणति भाति वा डुण्डुभः। द्विमुखोऽयं[2] निर्विषः। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ:-१ राजिल, २ डुण्डुभ- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम निर्विष और दो मुखवाले सर्प के हैं॥५॥

मालुधानो मातुलाहिः

कृष्णमित्रटीका:-मालुर्धतुरस्तत्र धानमस्य मालुधानः। मां तुलयति मातुलः। कः। स चासावहिश्च मातुलाहिः। चित्रसर्पस्य द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ:-१ मालुधान, २ मातुलाहि- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम खङ्ग के आकार वाले चित्रसर्प के हैं।

निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः।

कृष्णमित्रटीका:-निर्मुक्तस्यक्तः कञ्चुकस्त्वगयेन। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ:-१ निर्मुक्त, २ मुक्तकंचुक- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम त्यागी हुई कांचली वाले सर्प के हैं।

सर्पमात्र के २५ नाम

सर्पः पृदाकुर्भुजगो भुजङ्गोऽहिर्भुजङ्गमः॥६॥
आशीविषो विषधरश्चक्री व्यालः सरीसृपः।
कुण्डलीगूढपाच्चक्षुः श्रवाः काकोदरः फणी॥७॥
दर्वीकरो दीर्घपृष्ठो दन्दशूको विलेशयः।
उरगः पन्नगो भोगी जिह्मगः पवनाशनः॥८॥
'लेलिहानो द्विरसनो गोकर्णः कञ्चुकी तथा (५३)
कुम्भीनसः फणधरो हरिर्भोगधरस्तथा (५४)
अहेः शरीरं भोगः स्यादाशीरप्यहिदंष्ट्रिका (५५)'

कृष्णमित्रटीका:-'सृप्लृगतौ' (भ्वा. प. से.)। अच् (३. १. १३४)। सर्पः। प्रियते व्यायच्छति पृदाकुः। प्रियर्तेदाकुहस्वश्च। भुजेन कौटिल्येन गच्छति भुजगः। 'गमश्च[6]' (३. २. ४७) इति डः। गमेः[7] सुपि खश्च डिद्वा (वा. ३. २. ३८)। भुजङ्गः। भुजङ्गमः। अंहत्यहिः। औणादिकः किः॥६॥ आश्यां विषमस्य। 'आशीस्ता (लुगता) दंष्ट्रा तयाविद्धो न जीवति।' चक्रं मण्डलाकारताऽस्यास्ति[1] चक्री। व्याडनं[2] हन्तुमुद्यमोऽस्यास्ति[3] व्यालः। 'अड उद्यमे' (भ्वा. प. से.)। कुटिलं सर्पति सरीसृपः। 'नित्यं कौटिल्ये-' (३. १. २३) इति यङ्। कुण्डलं तदाकारताऽस्यास्ति[4] कुण्डली। गूढाः पदा अस्य। चक्षुषी श्रवसी अस्य। काकस्येवोदरमस्य। फणोऽस्यास्ति[5]॥७॥ दर्व्याकारफण एव प्रहारसाधनत्वात्करोऽस्य[6]। दीर्घं पृष्ठमस्य। कुत्सितं दशति दन्दशूकः। यङन्तात् 'यजजपदशां यङः' (३. २. १६६) इत्यूकः[7] विले शेते। उरसा गच्छति, उरगः। 'उरसो लोपश्च' (वा. ३. २. ४८) इति डः। पन्नं पतितं यथा तथा गच्छति। सर्वत्रपन्नयोः (वा. ३. २. ४८) इति डः। भोगः फणोऽस्यास्ति[8]। जिह्मं वक्रं गच्छति पवनोऽशनं[9] यस्य। पञ्चविंशतिः॥८॥[10]

हिन्दी अर्थ:-१ सर्प, २ पृदाकु, ३ भुजग, ४ भुजंग, ५ अहि, ६ भुजंगम॥६॥ ७ आशीविष, ८ विषधर, ९ चक्रिन् (इन्नन्त), १० व्याल, ११ सरीसृप, १२ कुण्डलिन् (इन्नन्त), १३ गूढपाद् (दान्त), १४ चक्षुःश्रवस् (सान्त), १५ काकोदर, १६ फणिन् (इन्नन्त)॥७॥ १७ दर्वीकर, १८ दीर्घपृष्ठ, १९ दन्दशूक, २० बिलेशय, २१ उरग, २२ पन्नग, २३ भोगिन् (इन्नन्त), २४ जिह्मग, २५ पवनाशन- ये पच्चीस (पुल्लिङ्ग) नाम सर्प के है॥८॥ "लेलिहान, द्विरसन, गोकर्ण, कंचुकिन् (इन्नत), कुभीनस, फणधर, हरि, भोगधर- ये आठ (पुल्लिङ्ग) नाम सर्प मात्र के हैं। भोग- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम सांप के शरीर का है आशिस् (सान्त), अहिदंष्ट्रिका- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम सांप की डाढ के हैं।"

त्रिष्वाहोयं विषास्थ्यादि

कृष्णमित्रटीका:-अहौ भवमाहेयम्। 'दृतिकुक्षि-' (४. ३. ५६) इति ढञ्॥[11]

हिन्दी अर्थ:-१ आहेय- यह एक नाम सर्प के विष और हड्डी आदि का है। आहेय शब्द त्रिलिङ्गवाची है।

1. M. रेखास्यास्ति 2. M. द्विमुखोयं 3. **A kind of non-poisonous serpent said to be having two faces** [2] 4. **A snake with the spotted skin** [2] 5. **A snake that has cast off its slough** [2] 6. M. गमेश्च 7. M. गमे

1. M. मण्डलाकारतास्यास्ति 2. M. व्यडनं 3. M. हन्तुमुद्यमोस्यास्ति 4. M. तदाकारतास्यास्ति 5. M. फणोस्यास्ति 6. M. प्रहारसाधनत्वात्करोस्य 7. M. इत्युकः 8. M. फणोस्यास्ति 9. M. पवनोशनं 10. **Snake in general** [25] 11. **Poison or any other thing pertaining to a serpant.** [1]

स्फटायां[1] तु फणा द्वयोः।

कृष्णमित्रटीका:-स्फटति विशीर्यतेऽनया[2] स्फटा[3]। 'स्फट विकसने' (चु. प. से.)। 'फटा' इत्यपि क्वचित्पाठः। 'फण गतौ' (भ्वा. प.से.)। अच् (३. १. १३४)। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ स्फटा, २ फणा- ये दो (पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग) नाम सर्प के फन के हैं।

समौ कञ्चुकनिर्मोकौ

कृष्णमित्रटीका:-कञ्चते कञ्चुकः। 'कचि दीप्तिबन्धनयोः' (भ्वा. आ.से.)॥ बाहुलकादुकन्। निर्मुच्यते निर्मोकः सर्पत्वक्॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ कञ्चुक, २ निर्मोक- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम सांप की कांचली के हैं।

क्ष्वेडस्तु गरलं विषम्॥९॥

कृष्णमित्रटीका:-क्ष्वेडते मोहयति क्ष्वेडः। 'ञिक्ष्विदा स्नेहमोचनयोः' (भ्वा. प. से. दि. प. से.)। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। गिरति जीवं गरः 'गृ निगरणे' (तु. प.से.)। अच् (३. १. १३४)। गरं लाति गरलः। वेवेष्टि[6] कायं विषम्। 'विष्लृ व्याप्तौ' (जु. उ. अ.)। इगुपध- (३. १. १३५) इति कः॥९॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१ क्ष्वेड (पुल्लिङ्ग), २ गरल (नपुंसकलिङ्ग), ३ विष (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग)- ये तीन नाम विष के हैं।॥९॥

विषभेद के ९ नाम

पुंसि क्लीबे च काकोलकालकूटहलाहलाः।
सौराष्ट्रिकः शौक्लिकेयो ब्रह्मपुत्रः प्रदीपनः॥१०॥
दारदो वत्सनाभश्च विषभेदा अमी नव।

कृष्णमित्रटीका:-ईषत्कोलति काकोलः। 'कुल संस्त्याने' (भ्वा. प. से.)। 'ईषदर्थे' (६. ३. १०५) चेति कोः का। कालस्य मृत्योः कूटो राशिरिव। हलति जठरम्। 'हलविलेखने' (भ्वा. प. से.)। न हलति आहलति वा। ततः कर्मधारयः। सुराष्ट्रे देशे भवः सौराष्ट्रकः। अध्यात्मादिः। शुक्लिके देशे भवः। 'दृतिकुक्षि-' (४. ३. ५६) इति योगविभागाड्ढञ्। ब्रह्मणः पुल्लिङ्गः। प्रदीपयति। नन्द्यदिल्युः (३. १. १३४)॥१०॥ दरदि देशे भवः दारदः। वत्सस्येव नाभिरस्य। 'अच् प्रतयन्वव-' (५. ४. ७५) इति योगविभागादच्। एते प्रत्येकं स्थावरविषभेदाः॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ काकोल, २ कालकूट, ३ हलाहल- ये तीन (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) हैं और ४ सौराष्ट्रिक, ५ शौक्लिकेय, ६ ब्रह्मपुत्र, ७ प्रदीपन,॥१०॥ ८ दारद, ९ वत्सनाभ- ये छः (पुल्लिङ्ग) हैं। इस प्रकार ये नौ भेद विष के हैं।

विषवैद्यो जाङ्गलिकः

कृष्णमित्रटीका:-विद्यामधीते वेद वा वैद्यः। विषस्य वैद्यः। जाङ्गली विषविद्या तामधीते जाङ्गुलिकः। वसन्तादित्वात् (४. २. ६३) ठक्। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ विषवेद्य, २ जांगुलिक- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम विषवैद्य के हैं।

व्यालग्राह्याहितुण्डिकः॥११॥

इति पाताल भोगिवर्गः॥८॥

कृष्णमित्रटीका:-व्यालं गृह्णाति व्यालग्राही। 'नन्दिग्रहि-' (३. १. १३४) इति णिनिः। अहेस्तुण्डं मुखम्। तेन दीव्यति, आहितुण्डिकः। ठक् (४. ४. २)। संज्ञापूर्वकत्वाद्वृद्ध्यभावे 'अहितुण्डिकः' अपि॥११॥[3]

इति पातालभोगिवर्गः॥८॥

हिन्दी अर्थ :-१ व्यालग्राहिन् (इन्नन्त), २ अहितुण्डिक- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम सर्प पकडने वाले के हैं॥११॥

इति पातालभोगिवर्गः ॥८॥

अथ नरकवर्गः॥९॥

स्यान्नारकस्तु नरको निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम्।

कृष्णमित्रटीका:-नराः कायन्त्यत्र नरकः। बाहुलकादधिकरणे कः। प्रज्ञाद्यणि (५. ४. ३८) नारकः। निर्गतोऽयान्निरयः। अयः शुभावहो विधिः। चत्वारि॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ नारक, २ नरक, ३ निरय (पुल्लिङ्ग), ४ दुर्गति (स्त्रीलिङ्ग)- ये चार नाम नरक के हैं।

तद्भेदास्तपनोऽवीचिमहारौरवरौरवाः॥१॥

संहारः कालसूत्रं चेत्याद्याः

---

1. Others read it as स्फटायां 2. M. विशीर्यतेनया 3. M. स्फाटा 4. The hood of a serpant [2] 5. Slough [2] 6. M. विवेष्टि 7. Poison. [3] 1 Cf. 'त्वं विष ब्रह्मणः पुत्रः सत्ये धर्म व्यवस्थितः।' (याज्ञवल्क्य स्मृति २.११०)

1. Nine kinds of poison [1each] 2. A dealer in antidotes [2] 3. A charmer of snakes [2] 4. hell [4]

कृष्णमित्रटीका:-तस्य नरकस्य भेदाः। तपन्त्यनेन वा तपनः। विरुद्धा वीचयोऽत्रावीचिः[1]। रुरुहिंस्रः क्रन्दश्च तत्र भवो रौरवः ॥१॥ संहारस्थाने केचित् 'संघातं' पठन्ति। कालान्ययोमयानि सूत्राण्यत्र। आद्यशब्देन तामिस्रादयः॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ तपन (पुल्लिङ्ग), २ अवीचि (पुल्लिङ्ग), ३ महारौरव (पुल्लिङ्ग), ४ रौरव (पुल्लिङ्ग) ॥१॥ ५ संहार (पुल्लिङ्ग) ६ कालसूत्र (नपुंसकलिङ्ग), आदि नरक के भेद हैं। यहाँ आदिशब्द से तामिस्र, कुंभीपाक आदि लेने चाहिये।

सत्त्वास्तु नारकाः।

प्रेताः

कृष्णमित्रटीका:-सत्त्वा जन्तवः। नरके भवाः। प्रकर्षेण इताः गताः प्रेताः॥ द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ नारक, २ प्रेत (पुल्लिङ्ग)- ये नाम नरक में रहने वाले जीवों का है।

वैतरणी सिन्धुः

कृष्णमित्रटीका:-विगतः तरणिः सूर्योऽत्र[4] तत्र पाताले भवा वैतरणी नदी । एकम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- वैतरणी- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम नरक की नदी का है।

स्यादलक्ष्मीस्तु निर्ऋतिः ॥२॥

कृष्णमित्रटीका:-निष्क्रान्ता ऋतेः सन्मार्गान्निर्ऋतिः॥ द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ अलक्ष्मी, २ निर्ऋति, निर्ऋति- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम नरक की अशोभा का है॥२॥

विष्टिराजूः

कृष्णमित्रटीका:-विशति क्लेशं विष्टिः। आजवते आजूः। 'क्विब्बचि-' (वा. ३. २. १७८) इति क्विबदीर्घौ। 'नरके हठात्क्षेपस्य' द्वे इति स्वामी। निर्मूल्यकर्मकरणस्यं इत्यन्ये[7]॥[8]

हिन्दी अर्थ :-१ विष्टि, २ आजू ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम नरक में जबरदस्ती गिराने के हैं।

1. M. वीचयोत्रावीचिः 2. **Three kinds of hell** [1 each] 3. **Creatures inhabiting hell.** [2] 4. M. सूर्योत्र 5. वैतरणी the river of hell [1] 6. **calamity, evil** [2] 7. **B. ascribes this explanation to the Commentaor, Rayamukuta** (See रामाश्रमी, p. 118) 8. **Residence in hell to which one is condemned** [2]

कारणा तु यातना तीव्रवेदना।

कृष्णमित्रटीका:-'कृञ् हिंसायाम्' (क्र्या. उ. से.)। 'यत निकारोपस्कारयोः' (चु. उ. से.)। ण्यान्ताभ्यामाभ्यां युच् (३. ३. १०७)। त्रीणि॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ कारणा, २ यातना, ३ तीव्रवेदना- ये तीन (स्त्रीलिङ्ग) नाम नरक की पीड़ा के हैं।

दुख के ९ नाम

पीडा बाधा व्यथा दुःखममानस्यं प्रसूतिजम्॥३॥

स्यात्कष्टं कृच्छमाभीलम्

कृष्णमित्रटीका:-'पीड अवगाहने' (चु. प. से.)। 'बाधृ लोडने' (भ्वा. आ. से.)। 'व्यथ भये' (भ्वा. आ. से.) दुष्टानि खान्यत्र। अमनसो भाव आमनस्यम्॥३॥ 'चत्वारि पीडाया वैमनस्यस्य द्वे' इति स्वामी। 'षडपि मनः पीडार्थाः-' इति सभ्याः। कषति स्म कष्टम्। 'कृच्छ्रागहनयोः-' (७. २. २२) इति नेट्। कृन्तति कृच्छ्रम्। 'कृतेश्छः क्रू च' (उ. २. २१) इति रक्छौ। आ समन्ताद्भियं लातीत्याभीलम्। शरीरपीडायाः त्रीणि। 'नवापि दुःखस्य'[2] इत्यन्ये॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ पीडा (स्त्रीलिङ्ग), २ बाधा (स्त्रीलिङ्ग), ३ व्यथा (स्त्रीलिङ्ग), ४ दुःख (नपुंसकलिङ्ग), ५ आमनस्य (नपुंसकलिङ्ग), ६ प्रसूतिज (नपुंसकलिङ्ग) ॥३॥ ७ कष्ट (नपुंसकलिङ्ग), ८ कृच्छ्र (नपुंसकलिङ्ग), ९ आभील (नपुंसकलिङ्ग) ये नौ नाम दुःख के हैं। इन के मध्य में जो दुःख आदि विशेष्यवृत्तिवाले हैं वे त्रिलिंगवाची हैं। जैसे- 'सेयं सेवा दुःखा च बहुरूपा, सोयं दुःखसुतो गुणः, सर्वं दुःखं विवेकिनः'।

त्रिष्वेषां भेद्यगामि यत्।

इति नरकवर्गः ॥९॥

कृष्णमित्रटीका:-एषां[4] दुःखादीनां[5] मध्ये यद्भेद्यगामि द्रव्यविशेषणं तत्त्रिषु। यथा-सेयं दुःखा[6] च दुरुपपादा च 'दुःखः[7] सुतो निर्गुणः' इत्यादि॥

इति नरकवर्गः ॥९॥

हिन्दी अर्थ :-और भेद्यगामित्व (विशेष्यवृत्तित्व) का जहाँ अभाव है वहाँ वे ही लिङ्ग हैं॥४॥

इति नरकवर्गः ॥९॥

1. **Torment.** [3] 2. M. दुष्खस्य 3. Pain [9] 4. M. एषां 5. M. दुष्खादीनां 6. M. दुष्खा 7. M. दुष्खः

अथ वारिवर्गः ॥१०॥

समुद्र के १५ नाम

समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावरः सरित्पतिः।
उदन्वानुदधिः सिन्धुः सरस्वान्सागरोऽर्णवः॥१॥
रत्नाकरो जलनिधिर्यादः पतिरपांपतिः

कृष्णमित्रटीका:-समुनत्ति समुद्रः। 'उन्दी क्लेदने' (रु. प. से.)। 'स्फायि-' (उ. २. १३) इति रक्। आपः- उदकानि धीयन्तेऽस्मिन्नब्धिः[1]। कुं पृथ्वीं पिपर्ति मर्यादापालनादकूपारः। पृ पालनादौ (जु. प. से.)। अण् (३. २. १.)। 'अन्येषामपि-' (६. ३. १३७) इति दीर्घः। पारावारौ स्तोऽस्य[2]। अर्श आद्यच् (५. २. १२७)। सरितां पतिः। उदकानि सन्त्यत्र। 'उदन्वानुदधौ च' (८. २. १३) इति निपातितः। उदकानि धीयन्तेऽत्रोदधिः[3]। 'कर्मण्यधिकरणे च' (३. २. ९३) इति किः। स्यन्दते सिन्धुः। 'स्यदेः संप्रसारणं घश्च' (उ. १. ११) इत्युः। सरांसि सन्त्यस्य सरस्वान्। सगरैः खातः सागरः। अर्णोऽस्यास्त्यर्णवः[4]। 'अर्णसः सलोपश्च' (वा. ५. १०९) इति वः॥१॥ रत्नानामाकरः। जलानां निधिः। यादसां जलजन्तूनां पतिः। अपां पतिः। पञ्चदश॥[5]

हिन्दी अर्थ:-१ समुद्र, २ अब्धि, ३ अकूपार, ४ पारावार, ५ सरित्पति, ६ उदन्वत् (मत्वन्त), ७ उदधि, ८ सिन्धु, ९ सरस्वत् (मत्वन्त), १० सागर, ११ अर्णव॥१॥ १२ रत्नाकर, १३ जलनिधि, १४ यादःपति, १५ अपाम्पति- ये पन्द्रह (पुल्लिङ्ग) नाम समुद्र के हैं।

तस्य प्रभेदाः क्षीरोदो लवणोदस्तथापरे॥२॥

कृष्णमित्रटीका:-क्षीरमुदकं यस्य। उदकस्योदः (वा. ६. ३. ५७)। अपरे सुरोदघृतोदादयः॥२॥[6]

हिन्दी अर्थ:-१ क्षीरोद, २ लवणोद, (३ इक्षुरसोद, ४ सुरोद, ५ दधिमण्डोद, ६ स्वादूद, ७ घृतोद)- ये सभी (पुल्लिङ्ग) शब्द समुद्र भेद के हैं॥२॥

जल के २० नाम

आपः स्त्री भूम्नि वार्वारि सलिलं कमलं जलम्।
पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनम्॥३॥

1. M. धीयन्तेस्मिन्नब्धिः। 2. M. स्तोस्य 3. M. धीयन्तेत्रोदधिः 4. M. अर्णोस्यास्ति अर्णवः 5. **Ocean** [1] 6. **Different kinds of ocens** [1 each]

कबन्धमुदकं पाथः पुष्करं सर्वतोमुखम्।
अम्भोऽर्णस्तोयपानीयनीरक्षीराम्बुशंबरम्॥४॥
मेघपुष्पं घनरसः

कृष्णमित्रटीका:-आप्नुवन्ति, आपः। 'आप्नोतेर्ह्रस्वश्च' (उ. २. ५८) इति क्विब्ह्रस्वौ। भूम्नि बहुत्वे। वारयति वाः वृञोण्यन्तात् (३. १. २६) क्विप् (३. २. १७८)। 'वसिवपि-' (उ. ४. १२४) इतीञि वारि। सलति सलिलम्। 'सल गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'सलिकलि-' (उ. १. ५४) इतीलच्। 'कमु कान्तौ' (भ्वा. आ. से.) वृषादित्वात् (उ. १. १०६) कलच्। कमलम्। 'जल अपवारणे' (चु. प. से.) अच्। (३. १. १३४)। जलम्। 'पीङ् पाने'। असुन् (उ. ४. १८८)। पयः। कीलां ज्वालामलति धारयति कीलालम्। जीव्यतेऽनेन[1]। भवन्त्युत्पद्यन्तेऽनेन[2] भुवनम्। संज्ञापूर्वकत्वा-द्वृद्ध्यभावः। वनु याचने (तु. आ. से.)। घञ् (३. ३. १९)। वनम्॥२॥ कं सुखं बध्नाति कबन्धम्। 'उन्दी क्लेदने' (रु. प. से.)। 'उदकम्-' (उ. २. ३९) इत्युणादिसूत्रेण साधुः। पाति पाथः। 'उदके थुट् च' (उ. ४. २०३) इत्यसुन्। 'पुषः कित्' (उ. ४.४.) इति करन्। पुष्करम्। सर्वतो मृखान्यस्या 'अभि शब्दे' (भ्वा. आ. से.)। असुन् (उ. ४. १८८)। अम्भः। 'ऋ गतौ' (भ्वा. प. अ.)। 'उदके नुट् च' (उ. ४. १९६) इत्यसुन्। अर्णः। तुः सौत्र आवरणार्थः। ततोयः। तोयम्। पिबतेरनीयर (३. १. ९६)। पानीयम्। 'स्फायि-' (उ. २. १३) इति रक्। नीरम्। क्षियः (तु. प. अ.) ईरन्। क्षीरम्। 'अवि शब्दे' (भ्वा. आ. से.)। बाहुलकादुः। अम्बुः शंवृणोति शंवरम्। वृञोऽच्[3] (३. ३. १३४)॥४॥ मेघस्य पुष्पमिव। घनस्य रसः। सप्तविंशतिः॥[4]

हिन्दी अर्थ:-१ अप् (स्त्रीलिङ्ग बहुवचन), २ वार, ३ वारि, ४ सलिल, ५ कमल, ६ जल, ७ पयस् (सान्त), ८ कीलाल, ९ अमृत, १० जीवन, ११ भुवन, १२ वन॥३॥ १३ कबन्ध, १४ उदक, १५ पाथस् (सान्त), १६ पुष्कर, १७ सर्वतोमुख, १८ अम्भस् (सान्त), १९ अर्णस् (सान्त), २० तोय, २१ पानीय, २२ नीर, २३ क्षीर, २४ अम्बु, २५ शम्बर, ॥४॥

1. M. जीव्यतेनेन 2. M. भवन्त्युत्पद्यतेनेन। 3. M. वृञोच 4. Water [27]

२६ मेघपुष्प, २७ घनरस (पुल्लिङ्ग)- ये सत्ताईस (न.) नाम पानी के हैं।

त्रिषु द्वे आप्यमम्मयम्।

कृष्णमित्रटीका:-अप्सु भवमाप्यम्। बाहुलकात्ष्यञ्। 'एकाच-' (वा. ४. ३. १४४) इति मयट्। अम्मयम्। इदं द्वयं त्रिषु। जलविकारस्य द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ आप्य, २ अम्मय- ये दो नाम पानी के विकार के हैं और त्रिलिंगी हैं।

भङ्गस्तरङ्ग ऊर्मिर्वा स्त्रियां वीचिः अथोर्मिषु॥५॥

कृष्णमित्रटीका:-भज्यते भङ्गः। 'भञ्जो आमर्दने' (रु. प. अ.)। घञ् (३. ३. १६)। तरति तरङ्गः। तरतेरङ्ग च्। (उ. १. १२०)। 'ऋ गतौ' (भ्वा. प. अ.)। 'अर्तेरुच्च' (उ. ४. ४४) इति मिः। ऊर्मिः। 'वा स्त्रियाम्' इति पूर्वोत्तराभ्यां सम्बध्यते। 'वेञो डिच्च' (उ. ४. ७२) इतीचिः। वीचिः। चत्वारि॥५॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ भंग (पुल्लिङ्ग), २ तरंग (पुल्लिङ्ग), ३ उर्मि (स्त्रीलिङ्ग पुल्लिङ्ग), ४ वीचि (स्त्रीलिङ्ग)- ये चार नाम लहर के हैं॥५॥

महत्सूल्लोकल्लोलौ

कृष्णमित्रटीका:-उल्लोडयति 'लोड़ उन्मादे' (भ्वा. प. से.)। ण्यन्तात् (३. १. २६) अच् (३. १. १३४)। कं जलं तस्य लोल उन्मादः। 'वा पदान्तस्य' (८. ४. ५९) इत्यनुस्वारस्य लः। महातरङ्गस्य द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ उल्लोल, २ कल्लोल ये- दो (पुल्लिङ्ग) नाम बड़ी लहर के हैं।

स्याद वर्तोऽम्भसां भ्रमः।

कृष्णमित्रटीका:-व्रतेर्घञ् (३. ३. १८)। आवर्तः। जलभ्रमणस्यैकम्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- आवर्त्त- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम मंडल के आकार वाले भँवर का है।

पृषन्ति बिन्दुपृषताः पुमांसो विप्रुषः स्त्रियाम्॥६॥

कृष्णमित्रटीका:-पर्षति पृषत्। 'पृषु सेचने' (भ्वा. प. से.)। 'पृषदबृहत्-' (उ. २० ८४) इति साधु। बहुत्वमतन्त्रम्। बिन्दति विन्दुः। बिदि अवयवे (भ्वा. प. से.)। बाहुलकादुः। 'पृषिरञ्जिभ्यां कित् (उ. ३. १११) इत्यतच्। पृषतः। प्रोषो दाहो विप्रुट। जलकणस्य चत्वारि॥६॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ पृषत् (तान्त नपुंसकलिङ्ग), २ बिन्दु (पुल्लिङ्ग), ३ पृषत् (पुल्लिङ्ग), ४ विप्रुष्- ये चार नाम पानी की बूंदों के हैं। यहाँ विप्रुष् शब्द षकारान्त (स्त्रीलिङ्ग) है॥६॥

चक्राणि पुटभेदाः स्युः

कृष्णमित्रटीका:-चक्राकारेण यान्त्यधः चक्राणि। 'वक्रणि' इत्यन्ये पठन्ति। 'वक्रः शनैश्चरे पुंसि पुटभेदे नपुंसकम्' इति हैमः। पुटं शंश्लिष्टं भिन्दन्ति। 'कर्मण्यण्' (३.२.१)। चक्राकारेण जलानामधोगमनस्य द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ चक्र (नपुंसकलिङ्ग), २ पुटभेद (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम चक्र के आकार में नीचे जाते हुए पानी के हैं।

भ्रमाश्च जलनिर्गमाः।

कृष्णमित्रटीका:-भ्रमन्ति जलान्यनेन भ्रमः। घञ् (३. ३. २१)। 'ग्रहवृदृनिश्चिगमश्च' (३. ३. ५८) इत्यप्। जलानां निर्गमः। जलनिस्तरणपथः। प्रणाल्याद्याः द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ भ्रम, २ जलनिर्गम- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम पानी निकलने वाले जाल के हैं।

कूलं रोधश्च तीरश्च प्रतीरं च तटं त्रिषु॥७॥

कृष्णमित्रटीका:-कूलयति कूलम्। अच् (३. ३. १३४)। रुणद्धि रोधः। असुन् (उ. ४. १८८)। 'पार तीर कर्मसमाप्तौ' (चु. उ. से.)। अच् (३. १. १३४)। प्रकृष्टं तीरं प्रतीरम्। 'तट उच्छ्राये' (भ्वा. प. से.)। अच् (३. १. १३४)॥७॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ कूल, २ रोधस् (सान्त), ३ तीर, ४ प्रतीर, ५ तट- ये पाँच (नपुंसकलिङ्ग) नाम नदी के तीर के हैं। यहाँ तट शब्द त्रिलिंगी हैं॥७॥

पारावारे परार्वाची तीरे

कृष्णमित्रटीका:-परतीरे पारम्। अर्वाक्तीरेऽवारम्[5]। 'ऋ गतौ' (भ्वा. प. अ.)। अवपूर्वाद्घञ् (३. ३. ११९)॥[6]

1. **Products of water** [2] 2. **Wave of water** [4] 3. **A large wave** [2] 4. **Whirlpool, gulf** [6]

1. **A drop of water** [4] 2. **Flowing down** of water in form of a whirl [2] 3. **Watercourse** [2] 4. **Bank** (of a river) [5] 5. M. अवाकतारे अवारम् 6. **Two banks of a river** [1 each]

हिन्दी अर्थ :- पार- यह (नपुंसकलिङ्ग) नाम नदी के बाद वाले तीर का है। अवार- यह (नपुंसकलिङ्ग) नाम नदी के पहले वाले तीर का है।

पात्रं तदन्तरम्।

कृष्णमित्रटीका:-कूलयोर्मध्यं पात्रम्। पिबतेः [‘पा पाने’(भ्वा. प. अ.)] ष्ट्रन् (४. १५८)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- पात्र- यह (नपुंसकलिङ्ग) नाम दोनों तीरों के मध्य का हैं।

द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीपं यदन्तर्वारिणस्तटम्॥८॥

कृष्णमित्रटीका:-द्विर्गता आपोऽस्मिन्[2] द्वीपम्। अन्तरगता आपोऽस्मिन्।[3] जलमध्यस्थस्थानस्य द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ द्वीप, २ अन्तरीप- ये दो (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) नाम पानी के मध्य में तट अर्थात् टापू के हैं॥८॥

तोयोत्थितं तत्पुलिनम्

कृष्णमित्रटीका:-तत्तटं तोयात्क्रमेणोत्थितं पुलिनम्। ‘पुल महत्त्वे’ (भ्वा. प. से.)। ‘तलिपुलिभ्यां च’ (उ. २. ५३) इतीनन्। एकम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ पुलिन यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम पानी के क्रम से निकली हुई पृथ्वी का है।

सैकतं सिकतामयम्

कृष्णमित्रटीका:-सिकताः सन्त्यस्मिन्सैकतम्। सिकतानां विकारः सिकतामयम्। बालुकामयतटस्य द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ सैकत, २ सिकतामय- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम बहुत रेतवाली जगह और तट के हैं।

निषद्वरस्तु जम्बालः पङ्कोऽस्त्री शादकर्दमौ॥९॥

कृष्णमित्रटीका:-निषीदन्त्यत्र निषद्वरः। ‘नौ सदेः’ (उ. २. १२३) इति ष्वरच्। ‘जमु अदने’ (भ्वा. प. से.)। बाहुलकाद्वलन्। ‘पचि विस्तारे’ (चु. प. से.)। घञि पङ्कः। ‘षद्लृ शातने’ (भ्वा. तु. प. अ.) घञ् (३. ३. १२१)। शादः। ‘कर्द कुत्सिते शब्दे’ (भ्वा. प. से.)। ‘कलिकर्द्योरमः’ (उ. ४. ८४)॥९॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१ निषद्वर, २ जम्बाल, ३ पंक, ४ शाद, ५ कर्दम- ये पाँच (पुल्लिङ्ग) नाम कीचड़ के हैं इनमें पंक शब्द (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) है॥९॥

1. **The channel or bed of a river** [1] 2. M. आपोस्मिन् 3. M. आपोस्मिन् 4. **Island** [2] 5. **A sandy bank of a river** [1] 6. **A sandy bank** [1] 7. **Mud.** [5]

जलोच्छ्वासाः परीवाहाः

कृष्णमित्रटीका:-जलान्युच्छ्वसन्ति परिवहन्त्येभिः। प्रवृद्धजलानां निर्गममार्गस्य द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ जलोच्छ्वास, २ परीवाह- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम निर्गम मार्ग बनाकर के बढ़े हुए और बहते हुए पानी के हैं।

कूपकास्तु विदारकाः।

कृष्णमित्रटीका:-कुत्सिताः कूपाः कूपकाः। विदार्यन्ते विदारकाः। शुष्कनद्यादौ कुतस्य गर्तस्य द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ कूपक, २ विदारक- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम सूखी नदी आदि में पानी के लिये जो गढ़े किये जावें उनके हैं।

नाव्यं त्रिलिङ्गं नौतार्ये

कृष्णमित्रटीका :- नावा तार्यम्, नाव्यम्। एकम्॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ नाव्य- यह नाम नाव से पार होने के योग्य पानी आदि का है और त्रिलिङ्गी है।

स्त्रियां नौस्तरणिस्तरिः॥१०॥

कृष्णमित्रटीका:- ‘णुद प्रेरणे’ (तु. उ. अ.)। ‘ग्लानुदिभ्यां डौः’ (उ. २. ६४)। नौः। तीर्यतेऽनया[4] तरणिः[4]। ‘अर्तिसृधृ-’ (उ. २. १०२) इतीनिः। ‘अच इः’ (उ. ४. १३८)। तरिः। त्रीणि॥१०॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ नौ, २ तरणि, ३ तरि- ये तीन (स्त्रीलिङ्ग) नाम नाव के हैं॥१०॥

उडुपं तु प्लवः कोलः

कृष्णमित्रटीका:-उडुनो जलात्पाति, उडुपम्। प्लवते प्लवः। ‘प्लुङ् गतौ’ (भ्वा. आ. अ.)। अच् (३. १. १३४)। ‘कुल संस्त्याने’ (भ्वा. प. से.)। ‘ज्वलिति’ (३. १. १४०) इति णः। कोलः। तृणादिनिर्मितप्लवस्य त्रीणि॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१ उडुप, २ प्लव, ३ कोल- ये तीन (पुल्लिङ्ग) नाम डौंगी के हैं। उडुप (नपुंसकलिङ्ग) भी है।

स्रोतोऽम्बुसरणं स्वतः।

1. **Channel** (to carry of excess of water). [2] 2. **Hole** (sunk for water in a dry river), [2] 3. **Accessible by boat as a river.** [2] 4. M. तीर्यतेनया 5. M. तरणि 6. **Boat.** [3] 7. **Raft** [3]

कृष्णमित्रटीका:-स्वतो जलप्रस्रवणं स्रोतः। 'स्रु गतौ' (भ्वा. प.अ.)। 'स्रुरीभ्यां[1] तुट् च' (उ. ४. २०१) इत्यसुन्॥[2]

हिन्दी अर्थ :- स्रोतस्- यह एक (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) नाम अपने आप से पानी के निकलने का है।

आतरस्तरपण्यं स्यात्

कृष्णमित्रटीका:-आतरन्त्यनेनातरः। 'पुंसि संज्ञायाम्' (३. ३. ११८)। घः। तरणं तरः। 'ऋदोरप्' (३. ३. ५७) तरस्य पण्यं मूल्यम्। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ आतर (पुल्लिङ्ग), २ तरपण्य (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम नदी की उतराई देने के हैं।

द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी॥११॥

कृष्णमित्रटीका:-द्रवति द्रोणी । 'द्रु गतौ' (भ्वा. प. अ.)। 'बहिश्रि-' (उ. ४. ५१) इति निः। 'कृदिकारात्-' (ग. ४. ४५) इति ङीष्। पुनः पुनरम्बु वहति। 'बहुलमाभीक्ष्ण्ये' (३. २. ८१) इति णिनिः। 'काष्ठ' इत्युपलक्षणम्। काष्ठपाषाणादिकृतनौकाकार-जलधारण्या द्वे॥११॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ द्रोणी (स्त्रीलिङ्ग), २ काष्ठाम्बुवाहिनी- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम काठ से बनी हुई और पानी में बहने वाली नाव का है॥११॥

सांयात्रिकः पोतबणिक्

कृष्णमित्रटीका:- समुदितानां गमनं द्वीपान्त-रागमनं वा संयात्रा। सा प्रयोजनमस्य। पवते वातेन पोतो वहित्रम्। तेनोपलक्षितो वणिक्। वहित्रगामिनो वणिजो द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ सांयात्रिक, २ पोतवणिज् (जान्त)- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम नाव के द्वारा व्यवहार करने वालों के हैं।

कर्णधारस्तु नाविकः।

कृष्णमित्रटीका:-कर्णोऽरित्रं[6] तं धरति। 'धृञ् धारणे' (भ्वा. उ. अ.)। नावा तरति। 'नौद्व्यचष्ठन्' (४. ४. ७)॥द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १ कर्णधार, २ नाविक- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम मल्लाह के हैं।

नियामकाः पोतवाहाः

कृष्णमित्रटीका:-नियच्छति पोतं नियामकाः। ण्वुल् (३. १. १३३)। पोतं वहन्ति। अण् (३. २. १)। वहित्रवाहकस्य द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ नियामक, २ पोतवाह- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम जहाज के खिवैये के हैं।

कूपको गुणवृक्षकः॥१२॥

कृष्णमित्रटीका:-कूपे कायति। 'आतः-' (३. १. १३६)। कः। गुणानां रज्जूनां वृक्षः। नौर्यत्र काष्ठे रज्ज्वा बध्यते। द्वे॥१२॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ कूपक, २ गुणवृक्षक- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम रस्सी आदि के मध्य आधारस्थित स्तंभ अर्थात् मस्तूल का है॥१२॥

नौकादण्डः क्षेपणी स्यात्

कृष्णमित्रटीका:-येन काष्ठेन नौर्वाह्यते स नौकादण्डः। नौकापार्श्वद्वयबद्धं चालनकाष्ठम्। क्षिप्यतेऽनया[3] क्षेपणी॥द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ नौकादण्ड (पुल्लिङ्ग) १ क्षेपणी (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम नाव को चलाने वाली वल्ली के हैं।

अरित्रं केनिपातकः।

कृष्णमित्रटीका:-ऋच्छत्यनेनारित्रम्। 'ऋ गतौ' (भ्वा. प. अ.)। 'अर्तिलूधू-' (३. १. १८४) इतीत्रः। के जले निपातोऽस्य[5]। नौपुच्छस्थदीर्घविस्तृ-तचालनकाष्ठस्य द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ अरित्र (नपुंसकलिङ्ग), २ केनिपातक (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम सुकाण अर्थात् पतवार के हैं।

अभ्रिः स्त्री काष्ठकुद्दालः

कृष्णमित्रटीका:-अभ्रत्यभ्रिः[7]। 'अभ्रगतौ' (भ्वा. प. से.) इन (उ. ४. ११७)। कुमुद्दालयति[8] कुदालः। 'दल विशरणे' (भ्वा. प. से.)। अण् (३. २. १)। शकन्ध्वादिः (वा. ६. १. ९४)। पोतादेर्मलापनयनार्थं काष्ठादिरचितकुदालस्य द्वे॥[9]

---

1. M. सुदीभ्यां 2. **A natural course of water** [1] 3. **Fare for being ferried over a river** [2] 4. **A vessel of wood or stone for holding water** [2] 5. **A seafaring merchant** [2] 6. M. कर्णोरित्रं 7. **Sailor** [2]

1. **Rower** [2] 2. **The stake to which a boat is moored** [2] 3. M. क्षिप्यतेन 4. Oar [2] 5. M. निपातोस्य 6. **Rudder** [2] 7. M. अभ्रति अभिः 8. M. कुमुदालयति 9. **A woden scraper** [2]

हिन्दी अर्थ :-१ अभ्रि (स्त्रीलिङ्ग), २ काष्ठकुदाल (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम जहाज आदि के मल को दूर करने के लिए काठ के कुदाल के हैं।

सेकपात्रं तु सेचनम् ॥१३॥

'यानपात्रं तु पोतोऽब्धिभवे त्रिषु समुद्रियम्(५६) सामुद्रिको मनुष्योऽब्धिजाता सामुद्रिका च नौ'(५७)

कृष्णमित्रटीका:-सिच्यतेऽनेन[1]। नौस्थजलनिस्सारण पात्रस्य द्वे॥१३॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ सेकपात्र, २ सेचन- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम चमड़े से बने जल फेंकने वाले पात्र के हैं॥१३॥

पोत (पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम 'जहाज' का है। समुद्रियम्, (त्रिलिङ्ग)- यह 'समुद्रीय पदार्थ' का नाम है। सामुद्रिक (पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम 'समुद्र के मनुष्य' का हैं। सामुद्रिका (स्त्रीलिङ्ग)- यह एक नाम समुद्र में चलनेवाली नाव का हैं।

क्लीबेऽर्धनावं नावोऽर्धे

कृष्णमित्रटीका:-अर्ध नावोऽर्धनावम्[3]। 'नावो द्विगोः' (५.४.९९), 'अर्धाच्च' (५.४.१००) अति टच्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- अर्द्धनाव (नपुंसकलिङ्ग)- यह नाम नाव के आधे भाग का है।

अतीतनौकेऽतिनु त्रिषु।

कृष्णमित्रटीका:-नावमतिक्रान्तमतिनु। पुंसि, अतिनौः॥[5]

हिन्दी अर्थ :- अतिनु- यह एक नाम नाव को जीतकर बड़े तैरने वाले मनुष्य आदि का है और यह शब्द त्रिलिङ्गी हैं।

त्रिष्वगाधात्

कृष्णमित्रटीका:-अगाधम् (अ. १. १०. १५) अभिव्याप्य त्रिषु।

हिन्दी अर्थ :-अगाध शब्दपर्यंत जितने शब्द हैं तीनों लिङ्गों में चलते हैं। यहाँ से अतलस्पर्शपर्यंत सब शब्द त्रिलिङ्गी हैं।

प्रसन्नोऽच्छः

कृ.मित्र.टीका :-'षद्लृ विशरणादौ' (भ्वा. तु. प. अ.)। क्तः। प्रसन्नः। न च्छ्यति दृष्टिमच्छः। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ प्रसन्न, २ अच्छ- ये दो नाम निर्मल के हैं।

कलुषोऽनच्छ आविलः ॥१४॥

कृष्णमित्रटीका:-कस्य जलस्य लुषो घातकः। 'लुष हिंसायाम्'। अविलति, आविलः। 'विल भेदने' (तु. प. से.)। 'इगुपध-' (३. १. १३५) इति कः। त्रीणि॥१४॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ कलुष, २ अनच्छ, ३ आविल- ये तीन नाम गँदले के हैं॥१४॥

निम्नं गभीरं गम्भीरम्

कृष्णमित्रटीका:-निमनति। 'म्ना अभ्यासे' (भ्वा. प. अ.)। 'आतः-' (३. १. १३६)। कः। 'गम्भीरादयश्च' इति गच्छतेर्निपातितौ ('गभीरगम्भीरौ' (उ. ४. ३५)। त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ निम्न, २ गभीर, ३ गंभीर- ये तीन नाम गंभीर (गहरे) के हैं।

उत्तानं तद्विपर्यये।

कृष्णमित्रटीका:-तस्य गम्भीरस्य विपर्यये। उत्तानमुद्गतस्तानो विस्तारोऽस्मात्[4]॥[5]

हिन्दी अर्थ :- उत्तान- यह एक नाम गंभीर से विपरीत का है।

अगाधमतलस्पर्शे

कृष्णमित्रटीका:-नास्ति गाधः प्रतिष्ठाऽस्य।[6] नास्ति तलेऽधः[7] स्पर्शोऽस्य[8] तत्। अतिनिम्नम्। द्वे॥[9]

हिन्दी अर्थ :-१ अगाध, २ अतलस्पर्श-ये दो नाम अत्यन्त गंभीर अर्थात् अथाह के हैं।

कैवर्ते दाशधीवरौ ॥१५॥

कृष्णमित्रटीका:- के जले वर्तन्ते। केवर्ता मत्स्यास्तेषामयं घातकः। दाश्यते मूल्यमस्मै। 'दशृ दाने' (भ्वा. उ. से.)। दधाति मत्स्यान् धीवरः। 'छित्वर-' (उ. ३. १) इति निपातितः। त्रीणि॥१५॥[10]

---

1. M. सिच्चयतेनेन 2. **The pot used for pouring out water from a boat** [2] 3. M. नावंर्धनावं 4. **The half a boat** [1] 5. **Disembarked.** [1]

1. **Clear** [2] 2. **Dirty** [3] 3. **Deep** [3] 4. M. विस्तारोस्मात् 5. **Shallow** [1] 6. M. प्रतिष्ठास्य 7. M. तलेधः 8. M. स्पर्शोस्य 9. **Unfathomable** [2] 10. **Fisherman** [3]

हिन्दी अर्थ :-१ कैवर्त, २ दाश, ३ धीवर- ये तीन (पुल्लिङ्ग) नाम मल्लाह (मछुआरे) के हैं।।१५।।

आनायः पुंसि जालं स्यात्

कृष्णमित्रटीका:-आनयन्ति मत्स्याननेनेत्यानायः। 'जालमानायः' (३. ३. १२४) इति साधुः। जले क्षिप्यते जालम्। द्वे।।[1]

हिन्दी अर्थ :-१ आनाय (पुल्लिङ्ग), २ जाल (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम जाल के हैं।

शणसूत्रं पवित्रकम्।

कृष्णमित्रटीका:-'शण गतौ' (भ्वा. प. से.)। शणस्य सूत्रम्। पवित्रमुपवीतमिव पवित्रकम्। शणसूत्र-जालस्य द्वे।।[2]

हिन्दी अर्थ :-१ शणसूत्र, २ पवित्रक- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम शणसूत्र अर्थात् सुतली के हैं।

मत्स्याधानी कुवेणी स्यात्

कृष्णमित्रटीका:-मत्स्या आधीयन्तेऽत्र[3]। घाञः (जु. उ.अ.) ल्युट् (३. ३. ११७)। कुत्सितं वेणन्तेऽस्यां[4] मत्स्याः। 'वेणृ गतौ' (भ्वा. उ. से.)। मत्स्य स्थापनपात्रस्य द्वे।।[5]

हिन्दी अर्थ :-१ मत्स्याधानी, २ कुवेणी- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम मछली बाँधने की करंडिका अर्थात् टोकरी के हैं।

बडिशं मत्स्यवेधनम्।।१६।।

कृष्णमित्रटीका:-बलिनो मत्स्यान् श्यति। मत्स्या विध्यन्तेऽनेन[6]। द्वे।।१६।।[7]

हिन्दी अर्थ :-१ बडिश, २ मत्स्यवेधन-ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम मछलीवेधन अर्थात् वंशी के हैं।।१६।।

मत्स्यसामान्य के ८ नाम

पृथुरोमा झषो मत्स्यो मीनो वैसारिणोऽण्डजः। विसारः शकली च

कृष्णमित्रटीका:-पृथूनि रोमाण्यस्य। 'झष हिंसार्थः' (भ्वा. प. से.)। माद्यति मत्स्यः। 'मदी हर्षे' (दि. प. से.)। 'ऋतन्यञ्जि-' (उ. ४. २) इति स्यः। मीयते मीनः। 'फेनमीनौ' (उ. ३. ३.) इति निपातितः।

1. Net (for fish) [2] 2. A hempen net [2] 3. M. आधीयन्तेत्र 4. M. वेगन्तभ्या 5. A fish-basket [2] 6. M. विध्यन्तेनेन 7. A fish- hook [2]

'सृ गतौ' (भ्वा. प. अ.)। ग्रह्यदित्वाण्णिनीः। विसारी। ततः स्वार्थेऽण्। वैसरिणः। अण्डाज्जातोऽण्डजः[1]। 'व्याधिम-त्स्यबलेषु' (वा. ३. ३. ७) इति घञ्। विसारः शकल-मस्यास्ति। अष्टौ।।[2]

हिन्दी अर्थ :-१ पृथुरोमन् (नान्त), २ झष, ३ मत्स्य, ४ मीन, ५ वैसारिण, ६ अण्डज, ७ विसार, ८ शकुलिन् (इन्नन्त)-ये आठ (पुल्लिङ्ग) नाम मछली के हैं।

अथ गडकः शकुलार्भकः।।१७।।

कृष्णमित्रटीका:-'गड सेचने' (भ्वा. प. से.)। संज्ञायां क्वुन् (उ. २. ३२)। शकुलो मत्स्यस्तस्यार्भके। द्वे।।१७।।[3]

हिन्दी अर्थ :-१ गडक, २ शकुलाभक- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम गलफटी मछली या बच्चेविशेष के हैं।।१७।।

सहस्रदंष्ट्रः पाठीनः

कृष्णमित्रटीका:-सहस्रं द्रंष्ट्रा यस्य। पाठी द्विजस्तस्येन इवापेक्षितः।।[4]

हिन्दी अर्थ :-१ सहस्रदंष्ट्रं, २ पाठीन- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम बहुत दांतवाली मछली विशेष के हैं।

उलूपी शिशुकः समौ।

कृष्णमित्रटीका:-उ विस्मयजनकं रूपमस्य उलूपी। शिशुः शिशुमार इव। 'शूइशु' इति ख्यातमत्स्यस्य द्वे।।[5]

हिन्दी अर्थ :-१ उलूपिन् (इन्नन्त), २ शिशुक- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम शिशुमार के आकारवाली मछली के हैं।

नलमीनश्चिलिचिमः

कृष्णमित्रटीका:-नडाख्यतृणान्तश्चारी नडाभो वा मीनो नलमीनः। 'चिल विलसने' (तु. प. से.)। 'इगुपधात्-' (उ. ४. ११९) किः चिलिं विलासं चिनोति मिमीते च चिलिचिमः। द्वे।।[6]

हिन्दी अर्थ :-१ नलमीन, २ चिलिचिम- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम पानी और तृण में विचरनेवाली मछली के हैं।

1. M. अण्डाज्जातोण्डजः 2. Fish [8] 3. kinds of fish [2] 4. A kind of fish [2] 5. A kind of fish [2] 6. Prawn [2]

प्रोष्ठी तु शफरी द्वयोः ॥१८॥

कृष्णमित्रटीका:-प्रकृष्ट ओष्ठोऽस्याः[1]। शफां राति शीघ्रगत्वात्। शफरी। द्वे॥१८॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ प्रोष्ठी (स्त्रीलिङ्ग), २ शफरी (पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग) ये दो नाम सफरी मछली के हैं॥१८॥

क्षुद्राण्डमत्स्यसंघातः पोताधानम्

कृष्णमित्रटीका:-क्षुद्रा ये अण्डान्निसृता मत्स्यास्तेषां[3] संघातः। पोता अर्भका आधीयन्तेऽत्र[4]। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- पोताधान यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम छोटी मछलियों के समूह का है।

अब मत्स्यविशेष कहते हैं।

अथो झषाः।

रोहितो मद्गुरः शालो राजीवः शकुलस्तिमिः ॥१९॥

तिमिङ्गिलादयश्च

कृष्णमित्रटीका:-अथो झषा मत्स्यविशेषा उच्यन्ते। रोहितो रक्तत्वात्। मज्जति मद्गुरः। 'मद्गुरादयश्च' (उ. १. ४१) इति निपातितः। शाड्यते शालः। 'शाड् श्लाघायाम्' (भ्वा. आ. से.)। राजी रेखाऽस्ति[6] राजीवः। शक्नोति गन्तुं शकुलः। बाहुलकादुलच। तिम्यति तिमिः ॥१९॥ तिमिं गीलति तिमिङ्गिलः॥[7]

हिन्दी अर्थ :- रोहित- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम रोही मछली का है। मदगुर- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम मंगरा मछली का हैं। शाल- यह (पुल्लिङ्ग) नाम चक्रांकित मछली का है। राजीव- यह (पुल्लिङ्ग) नाम राया मछली का है। शकुल- यह (पुल्लिङ्ग) नाम सौरा मछली का है। १ तिमि॥१९॥ २ तिमिंगिल, ३ नंद्यावर्त्त- ये तीन (पुल्लिङ्ग) नाम तीन तरह की मछलियों के हैं।

अथ यादांसि जलजन्तवः।

कृष्णमित्रटीका:-याति यादः। असुन् (उ. ४. ८८)। बाहुलकादुक्। जलानां जन्तवः द्वे॥[8]

हिन्दी अर्थ :-१ यादस् (सान्त न.), २ जल जन्तु (पुल्लिङ्ग) ये दो नाम पानी में रहनेवाले जीव के हैं।

तद्भेदाः शिशुमारोदशङ्कवो मकरादयः ॥२०॥

कृष्णमित्रटीका:-तेषां जलजन्तुनां भेदाः। शिशून्मारयति। उनत्ति उद्रः। 'उन्दी क्लेदने' (रु. प. से.)। 'स्फायि-' (उ. २. १३) इति रक्। शङ्कतेऽस्मात्[1]। 'खरुशङ्कुपीयु-' (उ. १. ३६) इति निपातितः। मा कुर्यात्किञ्चिदिति त्रस्यत्यस्मान्मकरः॥२०॥[2]

हिन्दी अर्थ :- शिशुमार- यह (पुल्लिङ्ग) नाम शिरस मछली का है। उद्र- यह (पुल्लिङ्ग) नाम हूद मछली का है। शंकु- यह (पुल्लिङ्ग) नाम सफू मच्छ का है। १ मकर- यह (पुल्लिङ्ग) नाम मगरमच्छ का है। आदि शब्द से जलहस्ती आदि जानना चाहिये। ये सब मच्छलियों के भेद हैं॥२०॥

स्यात्कुलीरः कर्कटकः

कृष्णमित्रटीका:-कुलिनमीरयति कुलीरः। 'कर्क' इति सौत्रो धातुः। 'शकादिभ्योऽटन्'[3] (उ. ४. ८१)। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ कुलीर, २ कर्कटक-ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम कैंकड़े के हैं।

कूर्मे कमठकच्छपौ।

कृष्णमित्रटीका:-कुत्सित ऊर्मिर्वेगोऽस्य[5] कूर्मः। 'अच्प्रत्यन्वव-' (५. ४. ७५) इति योगविभागादच। के जले मठन्ति। 'मठमदनिवासयोः' (भ्वा. प. से.)। कच्छेन पिबति। त्रीणि॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ कूर्म, २ कमठ, ३ कच्छप- ये तीन (पुल्लिङ्ग) नाम कछुआ के हैं।

ग्राहोऽवहारः

कृष्णमित्रटीका:-गृह्णाति ग्राहः। 'विभाषा ग्रहः' (३. १. १४३) इति णः। अवपूर्वात् 'हृञः' (भ्वा. प. अ.) 'श्याद्व्यधा-' (३. १. १४१) इति णः। अवहारः[7] द्वे॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १ ग्राह, २ अवहार-ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम ग्राह के हैं।

नक्रस्तु कुम्भीरः

कृष्णमित्रटीका:-न क्रामति दूरस्थलं नक्रः। 'अन्यत्रापि-' (वा. ३. २. ४८) इति डः। कुम्भिनं हस्तिनमीरयति। द्वे॥[9]

---

1. M. ओष्ठस्याः 2. **kind of small glittering fish** 3. M. मत्स्या तेषां 4. M. आधोयन्तेत्र 5. **The shoal of small fish** [1] 6. M. रेखस्ति 7. **Seven kinds of fish** [1 each] 8. **An aquatic animal** [2]

1. M. शङ्कतस्मात् 2. **Four kinds of aquatic animals** [1 each] 3. M. शकादिभ्योटन् 4. **Crab** [2] 5. M. ऊर्मिर्वेगोस्य 6. **Tortoise** [3] 7. M. अवहार 8. **Crocodile** [2] 9. **A kind of crocodle** [2]

हिन्दी अर्थ :-१ नक्र, २ कुम्भीर ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम नाकू के हैं।

अथ महीलता ॥२१॥

गण्डूपदः किंचुलुकः

कृष्णमित्रटीका:-मह्यां लतेव कृशत्वाद्दीर्घत्वाच्च ॥२१॥ गण्डवो ग्रन्थयः पदान्यस्य। किञ्चित्तु चुलुम्पति। 'चुलुम्प' धातोः 'अन्येभ्योऽपि[1]' (वा. ३. २. १०१) इति डः 'केचुआ' इति लोके॥त्रीणि॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ महीलता (स्त्रीलिङ्ग)॥२१॥ २ गण्डुपद (पुल्लिङ्ग), ३ किंचुलक (पुल्लिङ्ग)- ये तीन नाम केंचुवा के हैं।

निहाका गोधिका समे।

कृष्णमित्रटीका:-नियतं जहाति भुवं निहाका। 'नौहश्च' (उ. ३. ४४) इति हाकः[3] ('ओहाक् त्यागे' जु. प. अ.) कन्। 'गुध परिवेष्टने' (दि. प. से.) ण्वुल् (३. १. १३३)। गोधिका। 'गोह' इति लोके द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ निहाका, २ गोधिका- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम जलगोह के हैं।

रक्तपा तु जलौकायां स्त्रियां भूम्नि जलौकसः॥२२॥

कृष्णमित्रटीका:-रक्तं पिबति। 'आतः-' (३. २. ३) कः[5]। जलमोकोऽस्याः[6]। अदन्तोऽप्योकशब्दः[7]। त्रीणि॥२२॥[8]

हिन्दी अर्थ :-१ रक्तपा (स्त्रीलिङ्ग), २ जलौका (स्त्रीलिङ्ग), ३ जलौकस्- ये तीन नाम जोंक के कहे हैं। इनमें जलौकस् शब्द नित्य बहुवचनान्त सकरान्त स्त्रीलिङ्ग है॥२२॥

मुक्तास्फोटः स्त्रियां शुक्तिः

कृष्णमित्रटीका:-मुक्ताः स्फुटन्त्यस्मात्। शोचति शुक्तिः। द्वे॥[9]

हिन्दी अर्थ :-१ मुक्तास्फोट (पुल्लिङ्ग), २ शुक्ति (स्त्रीलिङ्ग) ये दो नाम सींपी के हैं।

शङ्खः स्यात्कम्बुरस्त्रियाम्।

कृष्णमित्रटीका:-शाम्यति शङ्ख[10]। शमेः खः। काम्यते कम्बुः। 'जत्र्वादयश्च' (उ. ४. १०२) इति निपातितः। द्वे॥[11]

1. M. अन्येभ्योपि 2. **A kind of worm, earth-worm** [2] 3. M. हाकं 4. **A kind of ligerd** [2] 5. M. क 6. M. जलंमोकोस्याः 7. M. अदन्तोप्योकशब्दः 8. **Leech** [3] 9. **Oyster-shell**[2] 10. M. शङ्ख 11. **Conch-shell** [2]

हिन्दी अर्थ :-१ शंख, २ कम्बु- ये दो (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) नाम शंख के हैं।

क्षुद्रशङ्खाः शङ्खनखाः

कृष्णमित्रटीका:-क्षुद्राश्च ते शङ्खाश्च। शङ्खस्य नख इव। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ क्षुद्रशंख, २ शंखनख- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम छोटे शंख के हैं।

शम्बूका जलशुक्तयः॥२३॥

कृष्णमित्रटीका:-शाम्यन्ति शम्बूकाः। 'उलूकादयश्च' (उ. ४. ४१) इति निपातितः। जलजाः शुक्लयः। द्वे॥२३॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ शम्बूक, २ जलशुक्ति- ये दो (पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग) नाम घोंघे का है॥२३॥

भेके मण्डूकवर्षाभूशालूरप्लवदर्दुराः।

कृष्णमित्रटीका:-विभेति भेकः। 'इणभीका' (उ. ३. ४३) इति कन्। मण्डते मण्डूकः। 'शलमण्डिभ्यामूकण्' (उ. ४. ४२)। वर्षासु भवति। 'शाड़ गतौ' (भ्वा. आ. से.)। 'खर्जिपिञ्जादिभ्यः' (उ. ४. ६०) अरः। 'प्लुङ् गतौ' (भ्वा. आ. अ.)। अच् (३. १. १३४)। प्लवः दृणाति शब्देः कर्णौ। 'मुकुरदर्दुरौ'[3] (उ. १. ४०) इति निपातितः। षट्॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ भेक, २ मण्डूक, ३ बर्षाभू, ४ शालूर, ५ प्लव, ६ दर्दुर- ये छः (पुल्लिङ्ग) नाम मेंढक के हैं।

शिलीगण्डुपदी

कृष्णमित्रटीका:- 'शिल उञ्छे' (तु. प. से.)। 'इगुपध-' (३. १. १३५) इतिः कः। 'जातेः-' (४. १. ६३) इति ङीष्। क्षुद्रकिंचुलुकस्य द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ शिली, २ गण्डूपदी- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम गिडोवा अर्थात् केंचुए के हैं।

भेकी वर्षाभ्वी

कृष्णमित्रटीका:-गौरादित्वात्वात् (४. १. ४१) वर्षाभ्वी। मण्डूक्या द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ भेकी, २ वर्षाभ्वी- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम छोटी मेंढक जाति के हैं।

1. **small conch-shell** [2], 2. **A bivalve shell** [2], 3. M. मकरदर्दुरौ, 4. Frog [6], 5. **A kind of small worm** [2], 6. **A female frog** [2],

कमठी दुलिः ॥२४॥

कृष्णमित्रटीका:-'दुल उत्क्षेपे' (चु. प. से.)। 'इगुपधात्-' (उ. ४. ११९) किः। कच्छप्या द्वे॥२४॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ कमठी, २ डुलि-ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम कछवी के हैं॥२४॥

मद्गुरस्य प्रिया शृङ्गी

कृष्णमित्रटीका:-मद्गुरस्य प्रिया सादृश्यात्। 'शॄ हिंसायाम्' (क्र्या. प. से.) 'शृणातेर्ह्रस्वः-' (उ. १. १२६) इति गन्नुटौ। एकम्॥[2]

हिन्दी अर्थ :- शृङ्गी (स्त्रीलिङ्ग)- यह एक नाम मद्गुर नामवाले मच्छरविशेष की स्त्री के हैं।

दुर्नामा दीर्घकोशिका।

कृष्णमित्रटीका:-दुष्टं निन्दितं नामास्याः। दीर्घः कोशोऽस्याः[3]। 'झिनायी' इति लोके॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ दुर्नामा (पुल्लिङ्ग), २ दीर्घकोशिका (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम जोंक के आकार वाले जलचरविशेष के हैं।

जलाशयो जलाधारः[5]

कृष्णमित्रटीका:-जलमाशयो हृदयमस्य॥द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ जलाशय, २ जलाधार- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम तालाब आदि के हैं।

तत्रागाधजलो ह्रदः ॥२५॥

कृष्णमित्रटीका:-तत्र जलाशयानां मध्ये। अगाधं जलं यस्य। ह्रादते ह्रादः। पृषोदरादित्वात् (६. ३. १०९) ह्रस्वः। एकम्॥२५॥[7]

हिन्दी अर्थ :- ह्रद यह (पुल्लिङ्ग) नाम अगाध पानी वाले जलस्थान का है॥२५॥

आहावस्तु निपानं स्यादुपकूमजलाशये।

कृष्णमित्रटीका:-आह्वायन्तेऽत्राहावः[8]। 'ह्वेञ् स्पर्धायाम्' (भ्वा. उ. अ.)। नियतं पिबन्त्यस्मिन्। कूपसमीपरचितजलाधारस्य द्वे॥[9]

हिन्दी अर्थ :-१ आहाव (पुल्लिङ्ग), २ निपान (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम कुँए के पास के गड्ढ़े के हैं। इसमें भरे पानी को पशु पीते हैं।

1. **A female tortoise** [2] 2. **A female sheat-fish** [1] 3. M. कोशोस्याः 4. **Cockle** [2] 5. **K. and B. read it as** जलाशया जलाधाराः 6. **A pond, lake or reservoir** [2] 7. **A deep lake** [1] 8. M. आह्वायन्तेत्राहावः 9. **Trough** (near a wall for watering cattle) [2]

पुंस्येवान्धुः प्रहिः कूप उदपानं तु पुंसि वा ॥२६॥

कृष्णमित्रटीका:-अन्धयन्त्यन्धुः। 'अन्ध दृष्ट्युपघाते' (चु. उ. से.)। मृगय्वादित्वात् (उ. १. ३७) कुः। प्रह्रियते[1] प्रहिः। 'प्रे हरतेः[2] कूपे' (उ. ४. १३४) इति इः डिच्च। कौति कूपः। 'कुयुभ्यां च' (उ. ३. २७) इति यः दीर्घश्च। उदकं पिबन्त्यस्मिन्। चत्वारि॥२६॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ अन्धु, २ प्रहि, ३ कूप, ४ उदपान- ये चार नाम कुँए के हैं। उदपान शब्द (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) है शेष (पुल्लिङ्ग) हैं॥२६॥

नेमिस्त्रिकास्य

कृष्णमित्रटीका:-अस्य कूपस्य। नीयतेऽनया[4] नेमिः। नीञो मिः (उ. ४. ३४)। तिस्रोऽस्रयोऽस्याः[5]। त्रिका। संख्यायाः (संज्ञा) सङ्घ- (५. १. ५८) इति कन्। कूपस्यान्ते रज्जवादिधारणार्थयन्त्रस्य द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ नेमि, २ त्रिका- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम कुँए के चाक अर्थात् घिर्री के हैं।

वीनाहोमुखबन्धनमस्य यत्।

कृष्णमित्रटीका:-विनह्यतेऽनेन।[7] कूपमुखे इष्टकादिभिर्बद्धस्यैकम्॥[8]

हिन्दी अर्थ :-१ वीनाह (पुल्लिङ्ग) यह नाम कुए के पनघटे का है।

पुष्करिण्यां तु खातं स्यात्

कृष्णमित्रटीका:-पुष्कराणि सन्त्यस्याम् 'पुष्करादिभ्यो देशे' (५. २. १३५) इतीनिः। 'खनु अवदारणे' (भ्वा. उ. से.)। क्तः (३. २. १०२)। 'जनसन-' (६. ४. ४२) इत्यात्वं खातम्। समचतुरस्रखातस्य द्वे॥[9]

हिन्दी अर्थ :-१ पुष्करिणी (स्त्रीलिङ्ग), २ खात (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम खोदी हुई छोटी तलैया के हैं।

अखातं देवखातकम् ॥२७॥

कृष्णमित्रटीका:-खातद्भिन्नं देवेनखातम्। अकृत्रिमजलाशयस्य द्वे॥२७॥[10]

1. M. प्रहीयते 2. M. हरते 3. **Well** [4] 4. M. नीयतेनया 5. M. त्रिस्रोस्रयोस्याः 6. **Contrivance for raising water over which passes the rope of the bucket** [1] 7. M. विनह्यतेनेन 8. **The top or Cover of a well** [1] 9. **A lotus-pool** [2] 10. **A natural lake** [2]

हिन्दी अर्थ :-१ अखात, २ देवखातक- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम विना खोदे हुए सरोवर अर्थात् पुराने तीर्थ के हैं॥२७॥

पद्माकरस्तडागोऽस्त्री

कृष्णमित्रटीका:-पद्मानामाकरः। तड्यते तडागः। 'तड आघाते' (चु. प. से.)। 'तडागादयश्च' इति निपातः 'तडाकः' इत्यन्ये। 'तटाकः' इत्यपरे। पद्मसहितागाधजलाशयस्य द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ पद्माकर (पुल्लिङ्ग), २ तडाग (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम तालाब के हैं।

कासारः सरसी सरः।

कृष्णमित्रटीका:-'कासृ शब्दे' (भ्वा. आ. से.)। 'तृषारादयश्च' (उ. ३. १३९) इत्यारन्। सरति सरः। सृ गतौ (भ्वा. प. अ.)। असुन् (उ. ४. १८८)। तत एव महत्त्वे गौरादित्वात् (४. ११-. ४१) ङीष्। कृत्रिमपद्माकरस्य त्रीणि॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ कासार (पुल्लिङ्ग), २ सरसी (स्त्रीलिङ्ग), ३ सरस् (सान्त नपुंसकलिङ्ग)- ये तीन नाम तालाब के हैं।

वेशन्तः पल्वलं चाल्पसरः

कृष्णमित्रटीका:-विशन्त्यत्र भेकादयः। 'जृविशिभ्यां झच्' (उ. ३. १२६)। पलति पल्वलम्। 'पल गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'सानसिवर्णसि-' (उ. ४. १०७) इति वलच्। अल्पं च तत्सरश्च। त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ वेशन्त (पुल्लिङ्ग), २ पल्वल (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग), ३ अल्पसरस्, (सान्त नपुंसकलिङ्ग)- ये तीन नाम छोटी तलाई के हैं।

वापी तु दीर्घिका ॥१८॥

कृष्णमित्रटीका:-उपयन्ते पद्मान्यस्याम्। 'विसिवपि[4]-'(उ. ४. १२४) इति इञ्। दीर्घैव दीर्घिका। 'संज्ञायां कन्' (५. ३. ७५) द्वे॥२८॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ वापी, २ दीर्घिका- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम बावड़ी के हैं॥२८॥

खेयं तु परिखा

1. **A large tank. alunding in lot to us** [2] 2. A natural tank [3] 3. A small tank [3] 4. M. वसिवमि 5. M. दीर्घेव

कृष्णमित्रटीका:-खन्यते खेयम्। 'ईं च खनः' (३. १. १११) इति यत्। परितः खन्यते परिखा। दुर्गादेः परितः खातस्य[1] द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ खेय (नपुंसकलिङ्ग), २ परिखा (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम खाई के हैं।

आधारस्त्वम्भसां यत्र धारणम्।

कृष्णमित्रटीका:-आध्रियते जलमस्मिन्नाधारः 'बाँध' इति लोके॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ आधार (पुल्लिङ्ग)- यह नाम बाँध का है।

स्यादालवालमावालमावापः

कृष्णमित्रटीका:-आसमन्ताज्जलस्य लवमालाति। आलवालः। आवलते आवालः। 'वल संवरणे' (भ्वा. प. से.)। घञ् (३. ३. १२१)। आवयन्ति जलमत्र। वृक्षमूलकृतजलाधारस्य त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ आलवाल (नपुंसकलिङ्ग), २ आवाल (नपुंसकलिङ्ग), ३ आवाप (पुल्लिङ्ग)- ये तीन नाम वृक्ष आदि के थांवले के हैं।

नदी के १२ नाम

अथ नदी सरित् ॥२९॥
तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्रादिनी धुनी।
स्रोतस्वती द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगाऽऽपगा॥३०॥
'कूलंकषा निर्झरिणी रोधोवक्रा सरस्वती (५८)'

कृष्णमित्रटीका:- नदति नदी। पचाषु (३. १. १३४) 'नदट्' इति टित्। सरति (स) रित्। सरतेरितिः[5] (उ. १. १७)॥२९॥ तरङ्गाः सन्त्यस्याम्। शैवलमस्त्यस्याम्। तटमस्त्यस्याः। ह्रदाः सन्त्यस्याम्। धुनोति वेतसादीन्। स्रोतांसि सन्त्यस्याम्। द्वीपमस्त्यस्याम्। स्रवति स्रवन्ती शत्रन्तः। निम्नं गच्छति निम्नगा। अपां समूह आपं तेन गच्छति॥३०॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ नदी, २ सरित् (तान्त)॥२९॥ ३ तरंगिणी, ४ शैवलिनी, ५ तटिनी, ६ ह्रादिनी, ७ धुनी, ८ स्रोतस्वती, ९ द्वीपवती, १० स्रवन्ती, ११ निम्नगा, १२ आपगा- ये बारह (स्त्रीलिङ्ग) नाम नदी के हैं॥३०॥

1. **A long lake** [2] 2. **A trench round a fort** [2] 3. **Dam** [1] 4. **A basin for water** (round the root of a tree) [3] 5. M. सरतेरिति 6. **River** [12]

"कूलंकषा, निर्झरिणी, रोधोवक्रा, सरस्वती- ये भी चार (स्त्रीलिङ्ग) नाम नदी के हैं।"

गङ्गा के ८ नाम

गङ्गा विष्णुपदी जह्नुतनया सुरनिम्नगा।
भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्रोता भीष्मसूरपि॥३१॥

कृष्णमित्रटीका:-गच्छति गङ्गा। 'गन् गम्यद्योः' (उ. १. १२३)। विष्णुपदोद्भूता। जह्नुना पीता श्रोत्रेण त्यक्ता जाह्नवी[1]। भगीरथेनावतारिता[2]। त्रयः पन्थानः त्रिपथम्। तेन गच्छति। त्रीणि स्रोतांस्यस्याः। भीष्मं सूते। अष्टौ॥३२॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ गंगा, २ विष्णुपदी, ३ जह्नुतनया, ४ सुरनिम्नगा, ५ भागीरथी, ६ त्रिपथगा, ७ त्रिस्त्रोतसू (सान्त), ८ भीष्मसू- ये आठ (स्त्रीलिङ्ग) नाम गंगाजी के हैं॥३१॥

यमुना के ४ नाम

कालिन्दो सूर्यतनया यमुना शमनस्वसा।

कृष्णमित्रटीका:-कलिन्ददेशजा। यच्छति यमुना। 'अजियमि[4]-' (उ. ३. ६१) इत्युनन्। चत्वारि॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ कालिन्दी, २ सूर्यतनया, ३ यमुना, ४ शमनस्वसृ (ऋकारान्त)- ये चार (स्त्रीलिङ्ग) नाम यमुनाजी के हैं।

नर्मदा के ४ नाम

रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यका ॥३२॥

कृष्णमित्रटीका:-रेवृ प्लव गतौ' (भ्वा. आ. से.)। अच् (३. १. १३४) नर्म ददाति। सोमात् सोमवंशजात्पुरूरवस उद्भूता तेनावतारितत्वात्। मेकलऋषिरद्रिर्वा। चत्वारि॥३२॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ रेवा, २ नर्मदा, ३ सोमोद्भवा, ४ मेकलकन्यका- ये चार (स्त्रीलिङ्ग) नाम नर्मदाजी के हैं॥३२॥

करतोया सदानीरा

कृष्णमित्रटीका:-करस्य तोयमत्रास्ति। गौरीविवाहे हस्तोदकाज्जाता। सद नीरमस्याम्। स्मृतिषु तस्या रजोदोषाभावोक्तेः। 'अटक' नदी लोके॥[7]

1. M. जान्हवी 2. M. भगिरथेनावतारिता 3. The river, Ganga [8] 4. M. अर्तियमि 5. The river यमुना [4] 6. The river, नर्मदा [4] 7. The river, Ataka [2]

हिन्दी अर्थ :-१ करतोया, २ सदानीरा- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम गौरी के विवाह में कन्यादान के जल से उपजी नदी के हैं।

बाहुदा सैतवाहिनी।

कृष्णमित्रटीका :-बाहुं छिन्नं दत्तवती लिखितस्य। सितानि वाहनानि यस्यार्जुनस्य तस्येयम्। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ बाहुदा, २ सैतवाहिनी- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम सतलज नदी के हैं।

शतद्रुस्तु शुतुद्रिः स्यात्

कृष्णमित्रटीका:-शतधा द्रवति। शतद्रुः। शू पूजितं तुदति। 'इगुपधात्-' (उ. ४. ११६) इतीन्। बाहुलकाद्रुक। 'शतलुज' लोके। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ शतद्रु, २ शुतुद्रि- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम सतलज नदी के हैं।

विपाशा तु विपाट् स्त्रियाम्॥३३॥

कृष्णमित्रटीका:-पाशं विमोचयति। ण्यन्ताद च् (३. १. १३४)॥३३॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ विपाशा, २ विपाट् (शान्त)- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम व्यासनदी के हैं॥३३॥

शोणो हिरण्यवाहः[4] स्यात्

कृष्णमित्रटीका:-शोणति शोणः। 'शोणृ वर्णगत्योः' (भ्वा. प. से.)। अच् (३. १. १३४)। हिरण्यं वहति। अण् (३. २. १)। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ शोण, २ हिरण्यवाह- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम नदविशेष के हैं अर्थात् शोणा नदी के हैं।

कुल्याल्पा कृत्रिमा सरित्।

कृष्णमित्रटीका:-कुले साधुः कुल्या। कृत्रिमा स्वल्पा नदी॥[6]

हिन्दी अर्थ :- कुल्या- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम छोटी और बनाई हुई नहर का है।

शरावती वेत्रवती चन्द्रभागा[7] सरस्वती॥३४॥
कावेरी

1. The river, Bahuda [2] 2. The river, S'atadru (Satalaja) [2] 3. The river, Vipasa [2] 4. B reads हिरण्यवाहुः 5. शोण, the male river rising in Gondavan and falling into the गंगा, near पाटलिपुत्र, [2] 6. Canal [1] 7. reads चान्द्रभागी

कृष्णमित्रटीका:-शराः सन्त्यस्याम्। वेत्रमस्याम्। चन्द्रभागयोः पर्वतयोरियं ततः प्रभवत्वात्॥३४॥ कस्य जलस्य वेरं शरीरं तस्येयम्॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ शरावती, २ वेत्रवती, ३ चन्द्रभागा, ४ सरस्वती॥३४॥ ५ कावेरी- ये पाँच (स्त्रीलिङ्ग) नाम पाँच नदीविशेष के हैं।

सरितोऽन्याश्च

कृ.मित्र.टीका:-अन्यागण्डकी गोदावर्यादयः॥[2]

हिन्दी अर्थ :- कौशिकी, गंडकी, चम्बल, गोदावरी वेणी आदि अन्य भी नदियाँ हैं।

संभेदः सिन्धुसंगमः।

कृष्णमित्रटीका:-संभिद्यन्ते मिलन्त्यत्र। सिन्ध्वोः[3] संगमः॥द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ सम्भेद, २ सिन्धुसंगम- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम नदीसंगम के हैं।

द्वयोः प्रणाली पयसः पदव्याम् त्रिषु तूत्तरौ॥३५॥

कृष्णमित्रटीका:-नल्यते प्रणाली। 'णल बन्धने' (भ्वा. प. से.)। कृत्रिमजलनिस्सरणमार्गम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- प्रणाली- यह एक (स्त्रीलिङ्ग पुल्लिङ्ग) नाम पानी निकलने के मार्ग में मच्छ के मुख के समान रूपवाले का है॥३५॥

देविकायां सरय्वां च भवेद्दाविकसारवौ।

कृष्णमित्रटीका:-देविकायां नद्यां भवं दाविकम्। देविकाशिंशपा- (७. ३. १) इत्यात्त्वम्। 'सर्तेरयूः[6]' (उ. ३. २२)। सरय्वां भवं सारवम्। 'डाण्डिनायन-' (६. ४. १७४) इति टिलोपः॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१ सारव, २ दाविक देविकानदी में जो हो उसे दाविक, सरयूनदी में हो उसे सारव कहते हैं- ये दोनों शब्द त्रिलिंगी हैं।

सौगन्धिकं तु कह्लारम्

कृष्णमित्रटीका:-सुगन्ध्येव सौगन्धिकम्। 'विनयादिभ्यष्ठक्' (५. ४. ३४)। के ह्लादते कह्लारम्। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। शुक्लकह्लारस्य द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ सौगंधिक, २ कह्लार- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम सायंकाल में खिलनेवाले कमल के हैं। इसी को कुइयाँ भी कहते हैं।

हल्लकं रक्तसन्ध्यकम्॥३६॥

कृष्णमित्रटीका:-'हल्ल विकसने'। ण्वुल् (३. १. १३३)। रक्तसन्ध्येव रक्तसन्ध्यकम्। रक्तकह्लारस्य द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ हल्लक, २ रक्तसन्ध्यक-ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम लालरंगवाले पूर्वोक्त कमल के हैं॥२६॥

स्यादुत्पलं कुवलयम्

कृष्णमित्रटीका:-उत्पलति। 'पल गतौ' (भ्वा. प. से.)। कोर्वलयमिव, शोभाकरत्वात्। कमलकुमुदादीनां सामान्येन द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ उत्पल, २ कुवलय- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम कुमोदिनी के हैं अथवा साधारण कमल के हैं।

अथ नीलाम्बुजन्म च।

इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन्

कृष्णमित्रटीका:-'इदि परमैश्वर्ये' (भ्वा. प. से.)। इनो (उ. ४. ११७) ङीष्। इन्दी लक्ष्मीः। तस्या वरमिष्टम्। नीलोत्पलस्य द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ नीलाम्बुजन्मन् (नान्त), २ इन्दीवर- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम नीले कमल के हैं।

सिते कुमुदकैरवे॥३७॥

कृष्णमित्रटीका:-कौ मोदते। के जले रौति। केरवो हसः तस्येदं प्रियम्। शुक्लोत्पलस्य द्वे॥३७॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ कुमुद, २ कैरव- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम सुफेद कमल के हैं॥३७॥

शालूकमेषां कन्दः स्याद्

कृष्णमित्रटीका:-एषां सौगन्धिकादीनां कन्दमूलः। 'शल चलते' (भ्वा. आ. से.)। 'शलिमण्डिभ्यामूकण्' (उ. ४. ४२)। 'भसीड' लोके॥[6]

1. **Five rivers being Saravati, Vetravati, Candrabhaga, Sarasvati and kaveri** [1 each] 2. **Gandaki and Godavari** [1 each] 3. M. सिन्ध्वी 4. **Confluence** (of two or more rivers) [2] 5. **Drain** [1] 6. M. सरतेरयू 7. **The products of the Devika and सरयू rivers** [1each]

1. **The white lotus blossoming in the evening** [2] 2. **The red lotus or a kind of red flower** [2] 3. **A lotus or white water-lily in general** [2] 4. **The blue lotus** [2] 5. **The white lotus and water-liy** [2] 6. **The root of a lotus** [1]

हिन्दी अर्थ :- शालूक- यक एक (नपुंसक-लिङ्ग) नाम कमलकन्द का है।

वारिपर्णी तु कुम्भिका।

कृष्णमित्रटीका:-वारिणि पर्णान्यस्याः। कुम्भोऽस्त्यस्याः[1]। यागानामशाकम्। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ वारिपर्णी, २ कुम्भिका- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम जलकुंभी के हैं।

जलनीली तु शेवालं शैवलः

कृष्णमित्रटीका:-जलं नीलयति। शेते जले शेवलः। शीङो वालन्[3] वलज् वा (उ. ४. ३८)। त्रीणि। 'शेवार' लोके॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ जलनीली (स्त्रीलिङ्ग), २ शेवाल (नपुंसकलिङ्ग), ३ शैवल (पुल्लिङ्ग)- ये तीन नाम शेवाल के हैं।

अथ कुमुद्वती॥३८॥

कुमुदिन्याम्

कृष्णमित्रटीका:-कुमुदानि सन्त्यस्याम्॥३८॥ कुमुदयुक्तस्य देशस्य द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ कुमुद्वती॥३८॥ २ कुमुदिनी ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम कुमोदिनी के हैं।

नलिन्यां तु बिसिनीपद्मिनीमुखाः।

कृष्णमित्रटीका:-नडाः सन्त्यत्र। डलयोरेकता। विसमस्त्यस्याः॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ नलिनी, २ बिसिनी, ३ पद्मिनी - ये तीन (स्त्रीलिङ्ग) नाम कमलिनी के हैं। यहाँ मुखशब्द से सरोजिनी आदि नाम भी कमलिनी के हैं।

सामान्य पद्म के १६ नाम

वा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम्॥३९॥
सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम्।
पङ्केरुहं तामरसं सारसं सरसीरुहम्॥४०॥
बिसप्रसूनराजीवपुष्कराम्भोरुहाणि च।

कृष्णमित्रटीका:-पद्यते पद्मम्। 'अर्तिस्तुसु' (उ. १. १४०) इति मन्। 'णल गन्धे' (भ्वा. प. से.)। इनन् (उ. २. ४९)। नलिनम्। अरं शीघ्रं विन्दति। 'गवादिषु विन्दे-' (वा. ३. १. ३८) इति शः॥३९॥ सहस्रं पत्राण्यस्य। कं जलमलति। कुशे जले शेते। 'अधिकरणे शेतेः-' (३. २. १५) इत्यच्। पङ्के रोहति। 'तमु काङ्क्षायाम्' (दि. प. से.)। घञ् (३. ३. १९)। 'रस आस्वादने'। तामः प्रकर्षो रसोऽस्य।[1] सरसि भवम्॥४०॥ विसस्य प्रसूनम्। राज्यः सन्त्यस्य राजीवम्। पुष्णाति पुष्करम्। 'पुषः कित्' (उ. ४.४.) इति करन्। अम्भसि रोहन्ति। षोडश।[2]

हिन्दी अर्थ :-१ पद्म, २ नलिन, ३ अरविन्द, ४ महोत्पल॥३९॥ ५ सहस्रपत्र, ६ कमल, ७ शतपत्र, ८ कुशेशय, ९ पंकेरुह, १० तामरस, ११ सारस, १२ सरसीरुह॥४०॥ १३ बिसप्रसून, १४ राजीव, १५ पुष्कर, १६ अम्भोरुह- ये सोलह (नपुंसकलिङ्ग) नाम कमल के हैं; उनमें पद्मशब्द (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) है।

पुण्डरीकं सिताम्भोजम्

कृष्णमित्रटीका:-पुण्डयति पुण्डरीकम्। 'मडि भूषायाम्', 'पुडि च' (भ्वा. प. से.)। 'कर्क (कर्क) (फर्फ) रीकादयश्च' (उ. ४. २०) इत्यरीकन्। श्वेत (कमलस्य) द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ पुण्डरीक, २ सिताम्भोज, ३ ककनद-ये तीन (नपुंसकलिङ्ग) नाम सफेद कमल के है।

अथ रक्तसरोरुहे॥४१॥

रक्तोत्पलं कोकनदम्

कृष्णमित्रटीका:-कोकांश्चक्रान्नदति। त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ रक्तसरोरुह॥४१॥ २ रक्तोत्पल, ३ कोकनद- ये तीन (नपुंसकलिङ्ग) नाम लाल कमल के हैं।

नालः नालम्

कृष्णमित्रटीका:-'णल गन्धे' (भ्वा. प. से.) 'ज्वलिति-' (३. १. १४०) इति णः। नालाद्विलिङ्गः। उत्पलादिदण्डस्य द्वे॥[5]

---

1. M. कुम्भोस्त्यस्याः 2. Pistia Stratiotes [2] 3. M. वलन् 4. Moss 5. **A Place abounding in lotus** [2] 6. **A lotus-palnt, or the bunch of louts** [3]

1. M. रसोस्य 2. **A lotus in general** [16] 3. **The white lotus,** [2] 4. **The red lotus** [3] 5. **The stalk of the lotus** [2]

हिन्दी अर्थ :-१ नाल (पुंल्लिंग), २ नाल (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम कमल की दंडी के हैं।

अथास्त्रियाम्।

मृणालं बिसम्

कृष्णमित्रटीका:-मृण्यते मृणालम्। 'मृण हिंसायाम्' (तु. प. से.)। 'तिमिविशि-' (उ. १. ११८) इति कालन्। 'बिस प्रेरणे' (दि. प. से.)। कः (३. १. १३६)। बिसः। अब्जादीनां मूलस्य द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१ मृणाल, २ विस- ये दो (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) नाम कमल की भेसा के हैं।

अब्जादिकदम्बे षण्डमस्त्रियाम्॥४२॥

कृष्णमित्रटीका:-सनोति। 'षणु अवदारणे'। 'अमन्ताड्डः' (उ. १. ११४)। अब्जादीनां समूहस्यैकम्॥४२॥[2]

हिन्दी अर्थ :- खण्ड- यह एक (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) नाम कमल आदि के समूह का है॥४२॥

करहाटः शिफाकन्दः

कृष्णमित्रटीका:-करं हाटयति। 'हट दीप्तौ' (भ्वा. प. से.)। शिफा मलप्ररोहस्तत्सहितः कन्दः। पद्मकन्दस्य द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ करहाट, २ शिफाकन्द- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम कमल की जड़ के हैं।

किंजल्कः केसरोऽस्त्रियाम्।

कृष्णमित्रटीका:-किञ्चिज्जलति। 'जल अपवारणे' (चु. प. से.) बाहुलकात्कः। के जले सरति। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१ किंजल्क (पुल्लिङ्ग), २ केसर (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग)-ये दो नाम कमल की केसर के हैं।

संवर्तिका नवदलम्

कृष्णमित्रटीका:-संवर्ते संवर्ती। 'हृपिषिरुहि' (उ. ४. ११८) इतीन्। स्वार्थे कन् (५. ३. ७५)। नवं च तद्दलं च। पद्मादीनां नवपत्रस्य द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१ संवर्तिका (स्त्रीलिङ्ग), २ नवदल (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम कमल आदि के नये पत्तों के हैं।

1. The fiber of the lotus [2] 2. The assemblage of all parts of a lotus [1] 3. The stem of a lotus [2] 4. The filament of a lotus [2] 5. The new leaf of a lotus [2]

बीजकोशो वराटकः॥४३॥

इति वारिवर्गः॥१०॥

कृष्णमित्रटीका:- बीजस्य कोशः, आधारः। वरमटति। ततः स्वार्थेकन् (५. ३. ७५)॥[1]

इति वारिवर्गः॥१०॥

हिन्दी अर्थ :-१ बीजकोश, २ वराटक- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम कमलगट्टों के हैं॥४३॥

भाषाटीकायां वारिवर्गः॥१०॥

वर्गों का संकलन

उक्तं स्वर्गव्योमदिक्कालधीशब्दादिसनाट्यकम्।
पातालभोगिनरकं वारि चैषां च संगतम्॥४४॥
इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने।
स्वरादिः काण्डः प्रथमः साङ्ग एव समर्थितः॥४५॥

कृष्णमित्रटीका :-एषां स्वर्गादीनां संगतं देवासुरमनुष्यादिकं चोक्तम्॥४४-५॥

हिन्दी अर्थ :-स्वर्गवर्ग, व्योमवर्ग, दिग्वर्ग, कालवर्ग, धीवर्ग, शब्दादिवर्ग, नाट्यवर्ग, पातालभोगिवर्ग, नरकवर्ग, वारिवर्ग, ये दश वर्ग कहे गये॥४४॥ इस प्रकार अमरसिंह की कृति नाम लिंगानुशासन में स्वरादि शब्दों का अंग उपांग सहित प्रथम कांड कहा गया॥४५॥

इति श्रीमदाचार्यकृष्णमित्रकृतायाममरकोश-टीकायां प्रथमः काण्डः समाप्तः॥१॥

---***---

1. The seed vessel of a lotus [2].

॥श्री॥

अमरकोशः

कृष्णमित्रविरचितया संस्कृतटीकया वैकुण्ठीहिन्दीव्याख्या आङ्गलभाषानुवादेन च समलङ्कृतः

द्वितीयं काण्डम्

वर्गाः पृथ्वी पुरक्ष्माभृद्वनौषधिमृगादिभिः।
नृब्रह्मक्षत्रविट्शूद्रैः साङ्गोपाङ्गैरिहोदिताः॥१॥

कृष्णमित्रटीका :- इह अस्मिन्काण्डे पृथ्व्यादिभिर्वर्गा उदिता वक्तुमारब्धाः। 'आदिकार्मणि क्तः' (३. ४. ७१)। कथंभूतैः? साङ्गोपाङ्गैः। अङ्गानि मृदादीनि। उपाङ्गानि खिलादीनि। 'आरण्याः पशवो मृगाः' ॥१॥

हिन्दी अर्थ :- अथ १ भूमिवर्गः (पृथ्वीवर्ग), २ पुरवर्ग, ३ शैलवर्ग, ४ वनौषधिवर्ग, ५ सिंहादिवर्ग, ६ नृवर्ग, ७ ब्रह्मवर्ग, ८ क्षत्रियवर्ग, ९ वैश्यवर्ग, १० शूद्रवर्ग- ये दश अंग उपांगसहित इस दूसरे कांड में कहे गये हैं॥१॥

अथ भूमिवर्गः ॥१॥

भूर्भूमिरचलानन्ता रसा विश्वंभरा स्थिरा।
धरा धरित्री धरणी क्षोणिर्ज्या काश्यपी क्षितिः॥२॥
सर्वंसहा वसुमती वसुधोर्वी वसुंधरा।
गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्ष्मावनिर्मेदिनी मही॥३॥
''विपुला गह्वरी धात्री गौरिला कुम्भिनी क्षमा।
भूतधात्री रत्नगर्भा जगती सागराम्बरा॥''

कृष्णमित्रटीका :- भवतीति भूः। क्विप्। 'भुवः कित्' (उ. ४. ४५) इति मिः। 'कृदिकारात्-' (ग. ४. १४५) इति ङीषि भूमीत्यपि। न चलति। नास्त्यन्तोऽस्याः।[1] रसोऽस्त्यस्याम्।[2] अच् (५. २. १२७)। विश्वं विभर्ति। 'सञ्ज्ञायां भृतृ-' (३. २. ४६) इति खच्। तिष्ठति। अजिरादित्वात् (उ. १. ५३) किर्। ध्रियते। पचाद्यच् (३. १. १३४)। 'अशित्रादिभ्यः-' (उ. ४. १७२) इतीत्र। 'अर्तिसृधृ[3]-' (उ. २. १०२) इत्यनिः। ङीष्। क्षौति। 'टुक्षु शब्दे' (अ. प. अ.)। बाहुलकान्निः। जिनाति। 'ज्यावयोहानौ' (क्र्या. प. अ.)। अन्ध्यादिः (उ. ४. १११)। ज्या। 'मौर्वी ज्या वसुंधरा। कश्यपस्येयं तस्मै रामेण दत्तत्वात्। क्षियन्ति तम्।' 'क्षि निवासे' (तु. प. अ.)॥२॥ सर्वं सहते । वसु धनमस्त्यस्याम्। वसु दधाति। 'आतः-' (३. २. ३) इति कः। उर्वी विस्तीर्णत्वात्। वोतः-' (४. १. ४४) इति ङीष्। वसु धारयति। गां जलं त्रायते। कायति। मितद्रवादिः। (वा. ३. २. १८०)। प्रथते। 'प्रथेः[1] षिवन् संप्रसारण च' (उ. १. १५१)। पृथ्वीति। 'वोतः-' (४. १. ४४) इति ङीष्। 'क्षमेरुपधाया लोपश्च[2] (उ. ५. ६५) इत्यच्। क्षमा। अवति।' 'अर्तिसृ-' (उ. २. १०२) इत्यनिः। मेदमस्त्यस्याम्। 'मह पूजायाम्'। ण्यन्तात् 'अच् इः' (उ. ४. १३८)। क्षमा इला च॥३॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ भू, २ भूमि, ३ अचला, ४ अनन्ता, ५ रसा, ६ विश्वम्भरा, ७ स्थिरा, ८ धरा, ९ धरित्री, १० धरणि, ११ क्षोणि, १२ ज्या, १३ काश्यपी, १४ क्षिति॥२॥ १५ सर्वसहा, १६ वसुमती, १७ वसुधा, १८ उर्वी, १९ वसुन्धरा, २० गोत्रा, २१ कु, २२ पृथिवी, २३ पृथ्वी, २४ क्ष्मा, २५ अवनि, २७ मेदिनी, २७ मही- ये सत्ताईस (स्त्रीलिङ्ग) नाम पृथिवी के हैं॥३॥

''१ विपुला, २ गह्वरी, ३ धात्री, ४ गो, ५ इला, ६ कुम्भिनी, ७ क्षमा, ८भूतधात्री, ९ रत्नगर्भा, १० जगती, ११ सागराम्बरा- ये ग्यारह प्रक्षिप्त नाम भी पृथ्वी के हैं।''

---

1. M. नास्तत्यन्तो स्याः 2. M. रसोस्त्यस्याम् 3. M. अतिस्रधृ।

1. M. प्रथः 2. The पाणिनीय form of the सूत्र is: क्षमेरुपधा-लोपश्च 3. Earth [27]

मृन्मृत्तिका प्रशस्ता तु मृत्सा मृत्स्ना च मृत्तिका।

कृष्णमित्रटीका :- मृद्यते मृत्। 'मृदस्तिकन्' (५. ४. ३९)॥[1] 'सस्नौ प्रशंसायाम्' (५. ४. ४०)। प्रशस्ता मृत्। मृत्सा॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ मृद् (दान्त), २ मृत्तिका- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम माटी के हैं। १ मृत्सा, २ मृत्स्ना- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम सुन्दर माटी के हैं।

उर्वरा सर्वसस्याढ्या स्यादूषः क्षारमृत्तिका॥४॥

कृष्णमित्रटीका :-'उर्वी हिंसायाम्' (भ्वा. प. से.)। बाहुलकाद्दीर्घो न। उर्व राति। सर्वसस्युक्तस्यैकम्।[3] उषति। 'ऊष रुजायाम्' (भ्वा. प. से.)। कः (३. १. १३५)। क्षारयति। 'अक्षरसंचलने'। क्षारा चासौ मृत्तिका च॥द्वे॥४॥[4]

हिन्दी अर्थ :- उर्वरा (स्त्रीलिङ्ग)- यह एक नाम सम्पूर्ण खेतियों से युक्त मिट्टी का है। १ ऊष,२ क्षारमृत्तिका - ये दो नाम रेह के हैं। इनमें ऊषः पुल्लिङ्ग है, शेष स्त्रीलिङ्ग है॥४॥

ऊषवानूषरौ द्वावप्यन्यलिङ्गौ स्थलं स्थली।

कृष्णमित्रटीका :-ऊषोऽस्त्यस्य[5]। 'ऊषसुषि' (५. २. १०७) इति रः। अन्यलिङ्गौ वाच्यालिङ्गौ॥ द्वे॥[6] स्थलति। 'ष्ठल स्थाने' (भ्वा. प. से.)। अकृत्रिमभूमेद्वे॥[7]

हिन्दी व्याख्या :- १ ऊषवान् , २ ऊषर- ये दो त्रिलिङ्ग नाम ऊसर (न उपजने वाली) भूमि के हैं। १ स्थलम् , २ स्थली कृत्रिमाकृत्रिम स्थल का स्थलम्- यह नपुंसक नाम है। अकृत्रिमस्थले का "स्थली"- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम है। बनाई हुई भूमि का 'स्थला'- यह एक स्त्री नाम है।

मानौ मरुधन्वानौ द्वे खिलाप्रहते समे॥५॥

त्रिषु

कृष्णमित्रटीका :- म्रियते तृषास्मिन्। 'भृमृशी-' (उ. १. ७) इत्युः। धनति धन्वा। निर्जलदेशस्य द्वे॥[8] खिलति। 'खिल उञ्छे' (तु. प. से.)। न प्रहन्यते स्म॥५॥ हलादिभिरकृष्टे एतौ त्रिषु ॥द्वे॥[9]

1. Soil [2] 2. Good earth of soil [2]. 3. The Ferfile soil [2].4. The saline ground [2] 5. M. ऊषोस्त्य 6. A barren spot with saline soil [2] 7. Ground [2] 8. Dry soil [2] 9. Waste soil or land,

हिन्दी अर्थ :- १ मरुः, २ धन्वा- ये दो पुंलिंग नाम मारवाड़ देश के हैं। १ खिलम् , २ अप्रहतम् - ये दो त्रिलिङ्ग नाम बिना जोती हुयी भूमि के हैं॥५॥

अथो जगती लोको विष्टपं भुवनं जगत्।

कृष्णमित्रटीका :- गच्छति।[1] 'वर्तमाने पृषद्' (उ. २. ८४) इति साधुः। शतृवद्भावान्ङीष्। लोक्यते। घञ् (३. ३. १४)। विष्टपति। 'ष्टप प्रतिघाते'। भवन्त्यस्मिन्। 'भूसू-' (उ. २. ८०) इति क्युन्। पञ्च॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ जगती ,२ लोकः, ३ विष्टफम्, ४ भुवनम् , ५ जगत्- ये ५ नाम भूतल के हैं जिनमें 'जगती' शब्द स्त्रीलिङ्ग है और 'लोक' शब्द पुल्लिङ्ग शेष है तीन शब्द नपुंसकलिङ्ग हैं।

लोकोऽयं भारतं वर्षम्

कृष्णमित्रटीका :- 'उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणे। वर्षं तद्भारतं नाम-'। अयं जम्बूद्वीपनवमांशः॥[3]

हीन्दी अर्थ :- अयं लोकः- भारतम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम भारतवर्ष का है।

शरावत्यास्तु योऽवधेः॥६॥

देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्यः

कृष्णमित्रटीका :- शरावत्या नद्याः सकाशात्प्राक् सहितो दक्षिणो देशः प्राच्यः॥[4]

हिन्दी अर्थ :- यह भारतवर्ष जम्बूद्वीप का नवमांश है। वर्ष ९ हैं। यथा १- भारतवर्ष, २ किंपुरुषवर्ष, ३ हरिवर्ष, ४ रम्यवर्ष, ५ हिरण्मयवर्ष, ६ कुरुवर्ष, ७ भद्राश्ववर्ष, ८ केतुमालवर्ष और ९ इलावृतवर्ष। इनमें हिमालय के दक्षिण भाग में ३, उत्तर देश में ३, पूर्व में १, और पश्चिम में १, तथा मध्य भाग में १ हैं। शरावती नदी से पूर्व और दक्षिण दिशा में स्थित देश का - प्राच्यः (प्राच्यां भवः यत्)- यह एक पुल्लिङ्ग नाम है।

उदीच्यः पश्चिमोत्तरः।

कृष्णमित्रटीका :- पश्चिमसहित उत्तरस्तु उदीच्यः।[5]

हिन्दी अर्थ :- शरावती नदी के पश्चिम उत्तर में स्थित देश का उदीच्य- यह एक पुल्लिङ्ग नाम है।

1. M. गच्छति 2. World [5] 3. भारतवर्ष (India) [1] 4. The Country south east of the श्रावती river [1] 5. The Country north west of the श्रावती river [1]

प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- प्रतिगतोऽन्तम्[1]। म्लेच्छानां देशः। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ प्रत्यन्त २ म्लेच्छदेश- ये दो पुल्लिङ्ग नाम शिष्टाचार रहित म्लेच्छ देश के हैं।

मध्यदेशस्त मध्यमः॥७॥

कृष्णमित्रटीका :- मध्यश्चासौ। मध्ये भवः। मनुः- 'हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्ये यत्प्रागविनशनादपि।प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्तितः॥' (२. २१) विनशनं कुरुक्षेत्रम्॥७॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ मध्यदेश (मध्यश्चासौ देशश्चेति) २ मध्यम (मध्ये भवः, मः)- ये दो पुल्लिङ्ग नाम मध्यदेश के हैं॥७॥

आर्यावर्तःपुण्यभूमिर्मध्यं विन्ध्यहिमालयोः।

कृष्णमित्रटीका :- आर्या वर्तन्तेऽस्मिन्[4]। 'आ समुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्राच्च पश्चिमात्। तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्त्तं विदुर्बुधाः॥' (म. २. २२)। हिमप्रधानोऽगः[5]। 'हिमालयोः' इति पाठे हिमेनाल्यते। 'अल भूषणादौ' (भ्वा. प. से.)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १ आर्यावर्त, २ पुण्यभूमि- ये दो नाम विन्ध्य और हिमालय पर्वत के मध्यस्थित देश के हैं जिनमें प्रथम पुल्लिङ्ग और अन्य स्त्रीलिङ्ग है।

नीवृज्जनपदः

कृष्णमित्रटीका :- नियतं वर्तन्तेऽस्मिन्। 'नहिवृति-' (६. ३. ११६) इति दीर्घः। जनाः पद्यन्तेऽत्र[7]। जननिवासस्थानम्॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १ नीवृत्, २ जनपद- ये दो पुल्लिङ्ग नाम नगरादि के हैं।

देशविषयौ तूपवर्तनम्॥८॥

कृष्णमित्रटीका :- दिशति। विसिनोति। उपवर्ततेऽस्मिन्[9]। स्थानमात्राणि॥७॥[10]

1. M. प्रति गतः अन्तं 2. The Country occoupied by mlecchas [1] 3. The midland Country lying between the Himalaya and Vindhya mountains [1]. 4. M. वर्तन्तेस्मिन् 5. M. हिमप्रधानोगः 6. आर्यावर्त्त- the tract extending from the eastern to the western ocean and bound on the north and south by the Himalaya and Vindhya respectively [2]. 7. M. पद्यन्तेत्र 8. An inhabited country [2] 9. M. उपवर्ततेस्मिन् 10. Place [3]

हिन्दी अर्थ :- १ देशः, २ विषयः, ३ उपवर्तनम् - ये तीन नाम ग्राम समुदाय के हैं जिनमें प्रथम दो पुल्लिङ्ग हैं, शेष तृतीय नपुंसकलिङ्ग हैं॥८॥

त्रिष्वागोष्ठात्

कृष्णमित्रटीका :- गोष्ठशब्दात्प्राक् 'त्रिषु' इत्यधिकारः॥

हिन्दी अर्थ :- त्रिषु आ गोष्ठात्= गोष्ठशब्द-मभिव्याप्य। यहाँ से लेकर गोष्ठशब्द पर्यन्त 'त्रिषु' का अधिकार है अतः इसबीच के सभी शब्द त्रिलिङ्ग हैं।

नडप्राये नड्वान्नड्वल इत्यपि।

कृष्णमित्रटीका :- नडः प्रायो यत्र। 'कुमुदन-डवेतसेभ्यो ड्मतुप्' (४. २. ८७)। 'नडशादाड् ड्वलच्' (४. २. ८८)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ नड्वान् २ नड्वलः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम अधिक नरकटवाले देश के हैं।

कुमुद्वान् कुमुदप्राये[2] वेतस्वान् बहुवेतसे[3]॥९॥

शाद्वलः शादशहरिते

कृष्णमित्रटीका :- शादेन बालतृणेन नीलः॥[4]

हिन्दी अर्थ :- अधिक कुमुद वाले देश का - कुमुद्वान्- यह एक पुल्लिङ्ग नाम है। अधिक बेंत वाले देश का- वेतस्वान् - यह एक पुल्लिङ्ग नाम है॥९॥

शाद्वलः हरे घासों से पूर्ण स्थान का- यह एक त्रिलिङ्ग नाम है।

स जम्बाले तु पङ्किलः।

कृष्णमित्रटीका :- जम्बालेन पङ्केन सहिते। पङ्कोऽस्त्यस्मिन्[5]। पिच्छादित्वात् (५. २. १००) इलच्॥[6]

हिन्दी अर्थ :- पङ्किलः कीचड़ वाले देश या स्थान का- यह एक त्रिलिङ्ग नाम है।

जलप्रायमनूपं स्यात्पुंसि कच्छस्तथाविधः॥१०॥

कृष्णमित्रटीका :- अनुगता आपोऽत्र[7]। 'ऊदनोर्देशे' (६. ३. ९८)। तथाविधो जलप्रायः। कं जलं छ्यति। 'छोच्छेदने' (दि. प. अ.)। 'आतः-' (३. २. ३) इति कः[8]॥१०॥[9]

1. A place abounding in reeds [2] 2. A place abunding in lotus [1] 3. A place covered with canes [1]. 4. A place green with young grass [1] 5. M. पङ्कोस्त्यस्मिन्, 6. A muddy place [1] 7. M. आपोत्र 8. M. कः 9. A place abounding in water [3].

हिन्दी अर्थ :- १ जलप्रायम् ,२ अनूपम् , ३ कच्छः- ये तीन नाम जलाधिक प्रदेश के हैं; इनमें प्रथम दो त्रिलिङ्ग हैं और कच्छ शब्द पुल्लिङ्ग है। 'त्रिषु' को बाधने के लिए पुंसि कहा गया है। 'कच्छमनूपम्' बोपालित के मत में नपुंसक भी है।

अनूपशब्द का अर्थ है- 'नानाद्रुमलतावीरुन्निर्झरप्रान्तशीतलैः। वनैर्व्याप्तमनूपं स्यात् सरयैर्व्रीहियवादिभिः।' अनेक प्रकार के पेड़, लता, झरना, शीतल प्रान्त और जङ्गलों से युक्त देश को अनूप कहा जाता है।

स्त्री शर्करा शर्करिलः शार्करः शर्करावति।

कृष्णमित्रटीका :- शर्करावति। 'देशे लुबिलचौ च' (५. २. १०५)। 'सिकताशर्कराभ्यां च' (५. २. १०४) इत्यण्॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ शर्करा , २ शर्करिलः, ३ शार्कर, ४ शर्करावत्- ये चार नाम बालुकामय देश के हैं। इनमें प्रथम नित्य स्त्रीलिङ्ग और द्वितीय पुल्लिङ्ग -स्त्रीलिङ्ग-नपुंसकलिङ्ग है। शर्कराशब्द नित्य बहुवचनान्त है।

देश एवादिमौ

कृष्णमित्रटीका :- आदिमौ शर्कराशर्करिलौ देशे एव प्रयोक्तव्यौ। शार्करः शर्करावानिति तु देशादेशयोः। पाषाणप्राया मृत् शर्करा। 'कांकर' लोके।

हिन्दी अर्थ :- कङ्कड़, बालू से युक्त प्रदेश के -१ शार्करः शर्करावान्- ये दो पुल्लिङ्ग नाम हैं।

उक्त चार नामों में आदि के दो - 'शर्करा, शर्करिलः'- देश अर्थ में ही प्रयुक्त होते हैं। अन्यत्र नहीं। शार्करः और शर्करावान् इन दो नामों का प्रयोग देशादेश में भी होता है।

एवमुन्नेयाः सिकताविति॥११॥

कृष्णमित्रटीका :- एवं सिकतासिकतिलौ देशे। सैकतः सिकतावानिति तु देशादेशयोः॥११॥[2]

हिन्दी अर्थ :- इसी प्रकार १ सिकताः, २ सैकतिलः, ३ सैकतः और ४ सिकतावान् शब्दों को भी समझना चाहिए - ये ४ अधिक बालुका वाले देश के नाम हैं। जिनमें सिताशब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग नि. ब. व. है। शेष ३ नाम त्रिलिङ्ग हैं॥११॥

1. **A place abounding in stony fragments** [4], 2. **A sandy place** [4],

देशो नद्यम्बुवृष्ट्यम्बुसम्पन्नव्रीहिपालितः।
स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च यथाक्रमम्॥१२॥

कृष्णमित्रटीका :- नद्यम्बुजातसस्यवर्धितो देशो नदीमातृकः। वर्षजव्रीहिवर्धितो देशो देवमातृकः। देवोऽभ्रं[1] माताऽस्य[2]॥१२॥[3]

हिन्दी अर्थ :- नद्यम्बुभिः वृष्ट्यम्बुभिश्च सम्पन्नैः, ब्रीहिभिः=धान्यैः, पालितः=वर्द्धितः देशः। नदी, नहर के जल से खेत सींचने पर अन्न पैदा होता हो जिस देश में उस देश का - नदीमातृकः (नदी माता अस्येति कप्) और वर्षा के जल से खेत सींचने पर अन्न पैदा होता हो जिस देश में उस देश का - देवमातृकः (देवः माता अस्येति कप्) क्रमशः एक-एक त्रि. नाम है॥१२॥

सुराज्ञि देशे राजन्वान् स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- 'सुराज्ञि' इत्यत्र 'न पूजनात्' (५. ४. ६९) इति समासान्ताभावः। 'राजन्वान्सौराज्ये' (८. २. १४) इति साधुः। धार्मिकराजयुक्तदेशस्यैकम्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- सुन्दर राजा से पालित देश का- राजन्वान्- यह एक पुं-स्त्री-नपुंसक लिङ्ग नाम है।

ततोऽन्यत्रराजवान्।

कृष्णमित्रटीका :-राजमात्रयुक्तदेशस्यैकम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- साधारण राजा से युक्त देश का - १ राजवान् यह एक पुं-स्त्री-नपुंसक लिङ्ग नाम है।

गोष्ठं गोस्थानकम्

कृष्णमित्रटीका :- गावस्तिष्ठन्ति यत्र। 'घञर्थे-' (वा. ३. ३. ४८) इति कः। 'अम्बाम्ब-' (८. ३. ९७) इति षः। गवां स्थानम्। स्वार्थे कः (५. ३. ७५)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १ गोष्ठम् , २ गोस्थानकम् - ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम गोशाला के हैं।

तत्तु गौष्ठीनं भूतपूर्वकम्॥१३॥

कृष्णमित्रटीका :- गावो यत्र पूर्वमासन्। 'गोष्ठात् खञ् भूतपूर्वे' (५. २. १८)॥१३॥[7]

1. M. देवोभ्रं 2. M. मातास्य 3. **Countries depending on irrigation and raim water respectively** [1 each]. 4. **A country governed by the just or good king** [1] 5. **A country having the ruler** [1] 6. **Cow-house or cow-pen** [2]. 7. **The place which was formenly a cow-pen** [1].

हिन्दी अर्थ :- गौष्ठीनम् यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम जहाँ पहले गाय बाँधी जाती हो उस स्थान का है॥१३॥

पर्यन्तभूः परिसरः

कृष्णमित्रटीका :- पर्यन्ते भूः। परितः सरन्त्यत्र। घः (३. ३. १८)। नद्यादिसमीपभूमर्द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ पर्यन्तभूः २ परिसरः- ये दो नाम नद्यादिसमीप भूमि के हैं। जिनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग और द्वि. पुल्लिङ्ग है।

सेतुरालौ स्त्रियां पुमान्।

कृष्णमित्रटीका :- स्त्रियां वर्तमानायामालौ सेतुः। पुमानित्यन्वयः। सिनोति। 'सितनि-' (उ. १. ६९) इति तुन्। अल्यतेऽनया[2]। 'इणजादिभ्यः' (भ्वा. ३. ३. १०८)। द्वे। 'पुल' लोके॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ सेतुः २ आलिः- ये दो नाम पुल के हैं इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग, द्वितीय स्त्रीलिङ्ग है।

वामलूरश्च वल्मीकं पुंनपुंसकम्॥१४॥

कृष्णमित्रटीका :- वामं लूयते। बाहुलकाद्रक्। न अकति। बाहुलकादुः। बलन्ते प्राणिनोऽत्र[4]। 'अलीकादश्यच' (उ. ४. २५) इति निपातः। पिपीलिकादिनिष्कासितमृत्पुञ्जस्य त्रीणि। 'वेमउट' लोके॥१४॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १ वामलूरः, २ नाकुः, ३ वल्मीकम्- ये तीन नाम दीमक, चींटी आदि द्वारा निकाली हुई काली मिट्टी समूह के हैं; इनमें प्रथम दो पुल्लिङ्ग शेष नपुंसकलिङ्ग पुल्लिङ्ग हैं॥१४॥

अयनं वर्त्म मार्गाध्वपन्थानः पदवी सृतिः।
सरणिः पद्धतिः पद्या वर्तन्येकपदीति च॥१५॥

कृष्णमित्रटीका :- अयतेऽनेन[6]। ल्युट् (३. ३. ११३)। वर्तन्तेऽनेन[7]। मनिन् (उ. ४. १४४)। मार्ग्यते। 'मार्ग अन्वेषणे' (चु. उ. से.)। अत्ति। 'अदेर्धच' (उत्र ४. ११५) इति क्वनिप्। पथन्तेऽनेन[1]। 'पथेगतौ' (भ्वा. प. से.)। पथिमथिभ्यामिनिः। 'पद्याटभ्यामविः'। ङीष् (ग. ४. १. ४५)। सरन्त्यनया[2]। क्तिच् (३. ३. १७४)। 'अर्ति-' (उ. २. १०२) इत्यनिः। तालव्यादिरपि। पादाभ्यां हन्ते। क्तिन् (३. ३. ९४)। पादाय हिता। 'पद्यति-' (६. ३. ५३) इति पद्भावः। वर्ततेऽनया[3]। 'वृतेश्च' (उ. २. १०६) इत्यनिः। एकः पादोऽस्याम्[4]। 'कुम्भपदीषु च' (५. ४. १३९)। इति साधुः॥१५॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १ अयनम्, २ वर्त्म, ३ मार्गः, ४ अध्वा, ५ पन्थाः, ६ पदवी, ७ सृतिः, ८ सरणिः, ९ पद्धतिः, १० पद्या, ११ वर्तनी, १२ एकपदी- ये १२ नाम मार्ग के हैं, इनमें प्रथम दो नपुल्लिङ्ग, मध्य के मार्गादि ३ पुल्लिङ्ग, शेष अन्त के ७ नाम स्त्रीलिङ्ग हैं॥१५॥

अतिपन्थाः सुपन्थाश्च सत्पथश्चार्चितेऽध्वनि।

कृष्णमित्रटीका :- स्वतिभ्यां 'न पूजनात्' (५. ४. ६९) इति समासान्तनिषेधः। संश्चासौ पन्थाश्च। अर्चिते श्रेष्ठे त्रीणि॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ अतिपन्थाः, २ सुपन्थाः, ३ सत्पथः- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम अच्छे मार्ग के हैं।

व्यध्वो दुरध्वो विपथः कदध्वा कापथः समाः॥१६॥

कृष्णमित्रटीका :- विरुद्धोऽध्वा[7]। दुष्टोऽध्वा[8]। 'उपसर्गादध्वनः' (५. ४. ८५) इत्यच्। विरुद्धः पथः। पथिन्शब्दे क्लीबता स्यात्। 'कोः कत्-' (६. ३. १०१)। 'ईषदर्थे च' (६. ३. १०५) इति का॥१६॥[9]

हिन्दी अर्थ :-१ व्यध्वः, २ दुरध्वः, ३ विपथः, ४ कदध्वा, ५ कापथः- ये पांच नाम पुंल्लिङ्ग नाम खराब रास्ते (कुमार्ग) के हैं॥१६॥

अपन्थास्त्वपथं तुल्ये

कृष्णमित्रटीका :- पथोऽभावः। 'पथो विभाषा' (५. ४. ७२) इत्यच्। अपथं नपुंसके (२. ४. ३०)॥[10]

---

1. **Environs of a river mountain & C.** [2] 2. M. अल्यतेनया 3. **Bridge** [2] 4. M. प्राणिनोत्र 5. **Ant-hill** [3] 6. M. अयतेनेन 7. M. वर्तन्तेनेन

1. M. पथन्तेनेन 2. M. सरन्त्यनेन 3. M. वर्ततेनया 4. M. पादोस्यां 5. **Way, road or path** [12] 6. **A good way** [3] 7. M. विरुद्धोध्वा 8. M. दुष्टोध्वा 9. **A bad way** [5]. 10. **A wrong way** [2]

हिन्दी अर्थ :- १अपन्था २ अपथम्- ये दो नाम मार्गाभाव के हैं; इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग और द्वितीय नपुंसकलिङ्ग है।

शृङ्गाटकचतुष्पथे।

कृष्णमित्रटीका :- शृङ्गं प्राधान्यमटति। चतुर्णां पथां समाहारः। 'पथः संख्याव्ययादेः' (वा. २. ४. ३०) इति क्लीबता॥द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ शृङ्गाटकम् , २ चतुष्पथम्- ये दो नपुल्लिङ्ग नाम चौक (चौराहे) के हैं।

प्रान्तरं दूरशून्योऽध्वा

कृष्णमित्रटीका :- प्रकृष्टमन्तरमत्र। दूरं शून्यो मार्गः॥द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- प्रान्तरम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम उस रास्ते का है जिसमें बहुत दूर तक जल और छाया नहीं मिलते। 'दूरश्चासौ शून्यश्चेति दूरशून्यः' यह अध्वा का विशेषण है।

कान्तारं वर्त्म दुर्गमम्॥१७॥

कृष्णमित्रटीका :- कस्याम्भसोऽन्तमृच्छति[3]। एकम्॥१७॥[4]

हिन्दी अर्थ :-कान्तारम्-यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम चौरादि के उपद्रवों से युक्त दुर्गम मार्ग का है॥१८॥

गव्यूतिः स्त्री क्रोशयुगम्

कृष्णमित्रटीका :- 'गोर्यूतौ' (६. १. ७९) इत्यव्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १ गव्यूतिः २ क्रोशयुगम्- ये दो नाम दो कोश (४ मील) लम्बे स्थान या रास्ते के हैं। जिनमें प्र. पुल्लिङ्गं लम्बे स्थान या रास्ते के हैं। जिनमें प्र. पुल्लिङ्ग, द्वि. नपुलिङ्ग. हैं। ज्ञातव्य हैः- ४ हाथ =१ धनुष। १००० धनुष= १ कोश (२ मील) और २ कोश वा २००० धनुष को 'गोरुतम्' या 'गोमतम्' कहते हैं।

नल्वः किष्कुचतुःशतम्।

कृष्णमित्रटीका :- 'नल गन्धे'। उल्वादित्वात् (उ. ४. ९५) वः। किष्कुर्हस्तः, तेषां चतुः शती[6]॥[7]

1. A place where four ways meet [2] 2. A dreary way [2] 3. M. कस्याम्भसोन्तमृच्छति 4. A difficult way [2] 5. A measure of distance equal to two krosas (four miles) [2]. 6. M. चतुशत 7. A measure of distance equal to 400 hastas or cubits [1]

हिन्दी अर्थ :- १ नल्वः- यह एक पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग नाम चार सौ हाथ लम्बे स्थान या रस्सी का है।

घण्टापथः संसरणम्

कृष्णमित्रटीका :- घण्टोपलक्षितानां पन्थाः। 'दशधन्वन्तरो राजमार्गो घण्टापथः स्मृतः'। संसरत्यनेन॥ द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ घण्टापथः, २ संसरणम्- ये दो नाम राजमार्ग के हैं; इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग और द्वितीय नपुंसकलिङ्ग है।

तत्पुरस्योपनिष्करम्॥१८॥

'द्यावापृथिव्यौ रोदस्यौ द्यावाभूमी च रोदसी।
दिवस्पृथिव्यौ गञ्जा तु रुमा स्याल्लवणाकरः॥प्र.॥'

इतिभूमिवर्गः॥१॥

कृष्णमित्रटीका :- तत्संसरणम्। पुरस्य चेद्भवति तदा। उपनिष्कीर्यतेऽत्र[2] सैन्यमिति॥१८॥[3]

इति भूमिवर्गः॥१॥

हिन्दी अर्थ :- उपनिष्करम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम शहर के मार्ग का हैं।॥१८॥

द्यावापृथिव्यौ, १ रोदस्यौ, २ घावाभूमी, ३ रोदसी, ४ दिवस्पृथिव्यौ- ये ५ प्रक्षिप्त स्त्रीलिङ्ग और नित्य द्विवचनान्त नाम पृथ्वी और आकाश के समूह के हैं।

इति भूमिवर्गः।

अथ पुरवर्गः॥२॥

पूः स्त्री पुरीनगर्यौ वा पत्तनं पुटभेदनम्।
स्थानीयं निगमः

कृष्णमित्रटीका :- पिपर्ति। 'पॄ पालने' (जु. प. से.)। 'भ्राजभास-' (३. ३. १७७) इति क्विप्। 'उदोष्ठ्यपूर्वस्य' (७. १. १०२)। पुरति कान्तान्ङीष्। नगाः सन्त्यत्र। 'नगपांसु[4]'(वा. ५. २. १०७) इति रः। वाशब्दात्क्लीबत्वं पत्तनसाहचर्यात् पतन्त्यत्र। 'विपतिभ्यां[5] तनन्' (उ. ३. १५०)। पुटानि पत्राणि भिद्यन्तेऽत्र[6]। स्थानाय हितम्। 'तस्मै हितम' (५. १. ५) इति छः। नितरां गच्छन्त्यत्र। 'गोचर-' (३. ३. ११९) इति निपातः। सप्त॥[7]

1. A highway [2] 2. M. उपनिषृकीर्यतेत्र 3. The mainway of a town. 4. M. नगपांशु 5. M. विपतिभ्यां 6. M. भिद्यन्तेत्र 7. City [7].

हिन्दी अर्थ :- १ पूः, २ पुरी, ३ नगरी, ४ पत्तनम्, ५ पुटभेदनम्, ६ स्थानीयम्, ७ निगमः- ये ७ नाम नगर के हैं जिनमें पूः (पुर्शब्द) स्त्रीलिङ्ग, पुरी, नगरी स्त्रीलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग-पत्तन, पट्ट, पुटभेदन, स्थानीय नपुंसकलिङ्ग, और निगमशब्द पुल्लिङ्ग हैं।

अन्यत्तु यन्मूलनगरात् पुरम् ॥१॥

तच्छाखानगरम्

कृष्णमित्रटीका :- मूलनगरं राजधानी ततो भिन्नं यत्पुरम्॥१॥ शाखेव नगरम्। 'सराय' लोके। एकम्॥[1]

हिन्दी अर्थ :- शाखानगरम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम राजधानी के निकटवर्ती छोटे-छोटे शहर के हैं।

वेशो वेश्याजनसमाश्रयः।

कृष्णमित्रटीका :- विशन्त्यत्र कामुकाः। घञ् (३. ३. १२१)॥[2]

हिन्दी टीका :- १ वेशः २ वेश्याजनसमाश्रयः - ये दो पुल्लिङ्ग नाम वेश्याओं के निवासस्थान के हैं।

आपणस्तु निषद्यायाम्

कृष्णमित्रटीका :- आपणन्तेऽस्मिन्[3]। 'गोचर-संचर-' (३. ३. ११९) इति साधुः। निषीदन्त्यस्याम्। 'संज्ञायां समजनिषद-' (३. ३. ९९) इति क्यप्। द्वे हट्टस्य॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ आपणः, २ निषद्या- ये दो नाम हाट-बाजार में समानों को रखकर बेचने के लिए लम्बे-लम्बे बैरक की तरह बने घर के हैं; इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग और द्वितीय स्त्रीलिङ्ग हैं।

विपणिः पण्यवीथिका॥२॥

कृष्णमित्रटीका :- विपण्यतेऽस्याम्[5]। 'इक् कृष्यादिभ्यः' (वा. ३. ३. १०८)। पण्यस्य वीथी। विक्रय-स्थानस्य द्वे॥२॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १ विपणिः , २ पण्यवीथिका ये दो स्त्रीलिङ्ग. नाम बाजार से अतिरिक्त विक्रय स्थान के हैं। क्षीरस्वामी के मत में - ये दो नाम बाजार के मार्ग के हैं। मुकुट के मत में - उक्त चारों नाम बाजार के हैं। प्रमाण में "पर्यापतत् क्रयिकलोकमगण्यपण्यपूर्णापणी विपणिनो विपणिं विभेजुः" यह माघ का उद्धरण देते हैं। वस्तुतस्तु- 'ये दो नाम दूकानों की पंक्ति के हैं'- यह मत भानुजिदीक्षित का है॥२॥

रथ्या प्रतोली विशिखा

कृष्णमित्रटीका :- रथं बहति। 'तद्वहति-' (४. ४. ७६) इति यत्। प्रतोलयति। (तुल) चुरादेरच् (३. १. १३४)। गौरादिः (४. १. ४१)। विगतशिखा मुण्डितेव समत्वात्। ग्राममध्यमार्गस्य त्रीणि। 'गली' लोके॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ रथ्या, २ प्रतोली, ३ विशिखा - ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम गाँव के मार्ग (गली) के हैं। किन्हीं आचार्यों के मत से- विपण्यादि ५ नाम एकार्थक हैं। वे अपने मत में प्रमाण स्वरूप कौटिल्य के निम्न उद्धरण उद्धृत करते हैं यथा- 'विशिखायां सौवर्णिप्रचारः'।

स्याच्चयो वप्रमस्त्रियाम्।

कृष्णमित्रटीका :- चीयते। उप्यते। 'बपि-वृधिभ्यां[2] रन्' (उ. २. २७)। प्राकाराधारस्य द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ चयः, २ वप्रम्- ये दो नाम किले के चारों तरफ खाई से निकाली हुई मिट्टी के ढ़ेर या प्राकाराधार के हैं जिनमें प्रथम पुल्लिङ्ग, द्वितीय पुलिङ्ग नपुसकंलिङ्ग दोनों है।

प्राकारो वरणः सालः

कृष्णमित्रटीका :- प्रक्रियते। उपसर्गस्य दीर्घः (६. ३. १२३)। वृणोति। कर्तरि ल्युः। सल्यते। 'षल गतौ' (भ्वा. प. से.)। ग्रामादेरन्तः कण्टकादिवेष्टनस्य त्रीणि। 'रकवा' लोके॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ प्राकारः (प्रक्रियते इति घञ् घञि परे उपसर्गस्य दीर्घः), २ वरणः (वृणोतीति ल्युट्) ३ सालः (सल्यते गम्यते इति कर्मणि घञ्)- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम वांस या काँटा आदि के घेरे के हैं।

प्राचीरं प्रान्ततो वृतिः॥३॥

कृष्णमित्रटीका :-प्रागेव प्राचीनम्। '-अञ्चेरदिक् स्त्रियाम्' (५. ४. ८) इति खः। 'प्राचीरम्' इति इतिपाठे प्राङ्पूर्वाच्चिनोतेः क्रन् । प्रान्ततः प्रान्ते वरणम्॥३॥[5]

---

1. **Suburb** [1] 2. **A residence of prostitutes** [2] 3. M. आपणन्तेस्मिन् 4. **Market** [2] 5. M. विपवधिभ्यां 6. **A Market-place** [2].

1. **Street** [3] 2. M. वपिवधिभ्यां 3. **A mound of eart & raised from the ditch of a fort** [2] 4. **Rampart** [3] 5. **Fence** [2].

हिन्दी अर्थ :-१ प्राचीनम्- यह एक नपुसकंलिङ्ग नाम ग्रामादि के अन्त में कण्टकादि के घेरे का है॥३॥

भित्तिः स्त्री कुड्यम्

कृष्णमित्रटीका :- भिद्यते। क्तिन् (३. ३. ६४) कुड्यां साधु कुड्यम्। पृषोदरादित्वात् (६. ३. १०९) डः द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ भित्तिः, २ कुड्यम्- ये दो नाम दीवाल के हैं, इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग द्वितीय नपुंसकलिङ्ग हैं।

एडूकं यदन्तर्न्यस्तकीकसम्।

कृष्णमित्रटीका :- अन्तर्न्यस्तास्थि यत् कुड्यं तद् ईडयति। 'उलूकादयश्च' (उ. ४. ४१) इति साधु। अस्थिमयकुड्यस्यैकम्॥[2]

हिन्दी अर्थ :- एडूकम्- यह एक नपुंसक नाम हड्डी, लकड़ी, पत्थर, लोहा आदि मध्य में देकर बनाई हुई दीवाल का है।

गृहं गेहोदवसितं वेश्म सद्म निकेतनम्॥४॥
निशान्तवस्त्यसदनं भवनागारमन्दिरम्।
गृहाः पुंसि च भूम्न्येव निकाय्यनिलयालयाः॥५॥
वासः कुटी द्वयोः शाला सभा

कृष्णमित्रटीका :- गृह्णाति धान्यादिकम्। 'गेहे कः' (३. १. १४४)। गं 'गणेशमीहते। उदवसीयते स्म। स्यतेः षिञो वा क्तः' (३. २. १०२)। विशन्त्यत्र। मनिन् (उ. ४. १४४)। सीदन्त्यत्र। सदेर्मनिन् (उ. ४. १४४) निकेतन्त्यत्र। 'कित निवासे' (भ्वा. प. से.)॥४॥ निशाया अन्तोऽत्र[3]। अपस्त्यायति संघीभवति यस्याम्। स्त्यै (भ्वा. प. अ.) 'आतः-' (३. १. १३६) कः। सीदन्त्यत्र। भवन्त्यत्र। अग्यतेऽस्मिन्[4]। मन्द्यते सुप्यतेऽत्र[5]। 'इषिमदि' (उ. १. ५१) इति किरच्। भूम्नि बहुत्वे एव गृहाः पुंसि। निचीयते धान्यादिकमत्र। 'पाय्यसांनाय्य-' (३. १. १२९) इति साधुः। निलीयतेऽत्र[6]। 'पुसि' (३. ३. ११९) इति घः। आलीयतेऽत्र[7]॥५॥ वसन्त्यत्र। घञ् (३. ३. १२१)। कुट्यतेऽस्मिन्[8]। शालते शाला। सह भान्त्यस्याम्। विंशतिः॥[9]

1. Wall [2] 2. A wall containig bones within [1] 3. M. अन्तो 4. M. अंग्यतेस्मिन् 5. M. सुप्यतेत्र 6. M. निलीयतेत्र 7. M. आलीयतेत्र 8. M. कुट्यतेस्मिन् 9. House [20]

हिन्दी अर्थ :-१ गृहम्, २ गेहम्, ३ उदवसितम्, ४ वेश्म, ५ सद्म ६ निकेतनम्, ७ निशान्तम्, ८ वस्त्यम्, ९ सदनम्, १० भवनम्, ११ अगारम्, १२ मन्दिरम्- ये १२ नपुंसक लिङ्ग नाम घर के हैं।

१ गृहाः, २ निकाय्यः, ३ निलयः, ४. आलयः ये ४ पुल्लिङ्ग नाम घर के हैं। उपर्युक्त १२ तथा ये ४=१६ नाम गृह के हैं॥५॥ १ वासः, २ कुटी, ३ शाला, ४ सभा- ये चार नाम सभागृह के हैं, इनमें 'वासः' पुंलिङ्ग, कुटी स्त्रीलिङ्ग पुल्लिङ्ग दोनों है, शेष स्त्रीलिङ्ग हैं।

संजवनं त्विदम्।
चतुशालम्

कृष्णमित्रटीका :- संजवन्त्यत्र। 'जु गतौ' सौत्रः। चतस्रः शालाः समाहृताः। अन्योन्याभिमुख-चतुश्शालागृहमित्यर्थः॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ संजवनम्, २ चतुः शालम्- ये दोनों पुल्लिङ्ग नाम परस्पराभिमुख चौतरफा घर वाले स्थान के हैं।

मुनीनां तु पर्णशालोटजोऽस्त्रियाम्॥६॥

कृष्णमित्रटीका :- पर्णनिर्मिताया मुनीनां शाला। उटैः तृणपर्णादिभिर्जायते।[2] एकम्॥६॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ पर्णशाला, २ उटजः- ये दो नाम मुनियों के पर्ण निर्मित घर के हैं जिनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय नपुल्लिङ्ग दोनों है॥६॥

चैत्यमायतनं तुल्ये

कृष्णमित्रटीका :- चित्याया इदम्। चैत्यम्। पिशाचादिस्थानम् आयतन्तेऽत्र[4]। 'यति प्रयत्ने' (भ्वा. आ. से.)। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १ चैत्यम्, २ आयतनम्- ये दो नपुंसक लिङ्ग नाम यज्ञस्थान के हैं।

वाजिशाला तु मन्दुरा।

कृष्णमित्रटीका :- वाजिनां शाला। मन्दतेऽत्र[6]। 'मन्दिवाशि-'[7] (उ. १. ३८)। इत्युच्। द्वे॥[8]

1. A quadrangle of four buildings facing each other [2]. 2. M. तृणपर्णादिभि जायते 3. Hermitage [2] 4. M. आयतन्तेत्र 5. A sacrificial shed [2]. 6. M. मन्दतेत्र 7. M. मन्दिवासि 8. A stable for horses [2]

हिन्दी अर्थ :- १ वाजिशाला, २ मन्दुरा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम अस्तबल (घुड़शाला) के हैं।

आवेशनं शिल्पिशाला

कृष्णमित्रटीका :- आविशन्त्यत्र। शिल्पिनां शिल्पस्य वा शाला ।।[1]

हिन्दी अर्थ :- १ आवेशनम् , २ शिल्पिशाला - ये दो नाम कारीगरों के घर के हैं; इनमें प्रथम नपुंसक लिङ्ग और द्वितीय स्त्रीलिङ्ग है। 'विभाषा सेनासुरा.....' यह क्लीबत्व होने पर 'शिल्पिशालम्' क्लीबान्त प्रयोग से साधु है।

प्रपा पानीयशालिका ।।७ ।।

कृष्णमित्रटीका :- प्रपिबन्त्यत्र। 'आतश्च' (३. ३. १०६) इत्यङ्। पानीयस्य शाला ।।द्वे ।।७ ।।[2]

हिन्दी अर्थ :-१ प्रपा, २ पानीयशालिका-ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम पौसरा या जल रखने की जगह के हैं।।७ ।।

मठश्छात्रादिनिलयः

कृष्णमित्रटीका :- मठ्यतेऽत्र।[3] 'मठ निवासे' (भ्वा. प. से.)। छात्रादीनां परिव्राजकादीनां स्थानस्यैकम्।।[4]

हिन्दी अर्थ :- मठ- यह एक पुल्लिङ्ग नाम विद्यार्थी, संन्यासी आदि के रहने के स्थान का है। बौद्धों के निवास स्थान को विहार कहते हैं जो पुल्लिङ्ग नपुसक लिङ्ग दोनों है।

गञ्जा तु मदिरागृहम्।

कृष्णमित्रटीका :- गञ्जन्त्यस्याम्। 'गजि मदने' (भ्वा. प. से.)। 'गुरोश्च-' (३. ३. १०३) इत्यः ।।द्वे ।।[5]

हिन्दी अर्थ :- १ गञ्जा, २ मदिरागृहम्- ये दोनो नाम ताड़ीखाने के हैं; इनमें 'गञ्जा' स्त्रीलिङ्ग. और 'मदिरागृहम्' नपुंसक लिङ्ग है।

गर्भागारं वासगृहम्

कृष्णमित्रटीका :- 'कुट्टिमोऽस्त्री निबद्धा भूश्चन्द्रशालाशिरोगृहम्।' गर्भ इवागारम्। वासस्य गृहम्। मध्यगृहस्य द्वे ।।[6]

1. Manufactory [2] 2. A place where water is distributed to travellers [2]. 3. M. मठ्यतेत्र 4. Monastery or seminary [1] 5. A dram-house [2] 6. The inner apartments of a house [2]

हिन्दी अर्थ :- १ गर्भागारम्, २ वासगृहम्- ये दो नपुंसक लिङ्ग नाम घर के मध्य भाग के हैं।

अरिष्टं सूतिकागृहम् ।।८ ।।

कृष्णमित्रटीका :- न रिष्टमत्र। सूतिकाया गृहम्। द्वे ।।८ ।।[1]

हिन्दी अर्थ :- १ अरिष्टम् , २ सूतिकागृहम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम प्रसवालय के हैं। अथवा- 'गर्भागारम्' आदि चारों नाम पर्यायवाची हैं ।।८ ।।

वातायनं गवाक्षः

कृष्णमित्रटीका :- वातस्यायनम्। गवामक्षीव। द्वे। 'ताष' लोके ।।[2]

हिन्दी अर्थ :- १ वातायनम् , २ गवाक्ष- ये दो नाम खिड़की (झरोखे) के हैं, इनमें प्रथम नपुंसक, द्वितीय पुल्लिङ्ग है।

अथ मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः।

कृष्णमित्रटीका :- मण्ड्यते मण्डः। तं पाति। जनानामाश्रयः ।।द्वे ।।[3]

हिन्दी अर्थ :- १ मण्डपः, २ जनाश्रयः- ये दो नाम मण्डप के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग नपुंसक लिङ्ग है और द्वितीय पुल्लिङ्ग है।

हर्म्यादि धनिनां वासः

कृष्णमित्रटीका :- हरति मनः। अध्न्यादित्वात् (उ. ४. ११२) यत् मुट् च। आदिना स्वस्तिकादिः। एकम्।।[4]

हिन्दी अर्थ :- हर्म्यम् (हरति मनः, यत् मुट् च)-यह एक नपुंसक नाम धनियों के रहने के स्थान का है।

प्रासादो देवभूभुजाम् ।।९ ।।

कृष्णमित्रटीका :- देवानां भूभुजां च गृहम्। प्रसीदन्त्यत्र। घञि (३. ३. १२१) उपसर्गस्य दीर्घः (६. ३. १२२) ।।९ ।।[5]

हिन्दी अर्थ :- प्रासादः- यह एक पुल्लिङ्ग नाम देवताओं और राजाओं के घर का है ।।९ ।।

सौधोऽस्त्री राजसदनम्

1. The lying-in chamber [2]. 2. Window [2] 3. Pavilion [2] 4. The building belonging to a rich [1] 5. A temple or royal mansion [1]

कृष्णमित्रटीका :- सुधा शुक्तिका चूर्णलेपोऽस्त्यस्य[1]। राज्ञः सदनं योग्यत्वात्। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ सौधः, २ राजसदनम्- ये दो नाम राजभवन के हैं इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग है और द्वितीय नपुंसकलिङ्ग है।

उपकार्योपकारिका।

कृष्णमित्रटीका :- उपक्रियते। ण्यत् (३. १. १२४)। उपकरोति। ण्वुल् (३. ३. १३३)। राजगृहसय द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ उपकार्या, २ उपकारिका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम तम्बू की कनात, सामियाना के हैं।

स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्द्यावर्तादयोऽपि च॥१०॥
विच्छन्दकप्रभेदा हि भवन्तीश्वरसद्मनाम्।

कृष्णमित्रटीका :- स्वस्ति क्षेमं कायति। सर्वतो भद्रमस्य। नन्दयति नन्दी। आवर्तोऽस्य[4]॥१०॥ विशिष्टन् छन्दयति साभिलाषान् करोति। राज्ञां गृहस्यैकैकम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १ स्वस्तिकः, २ सर्वतोभद्रः, ३ नन्द्यावर्तः, ४ विच्छन्दकः- ये चार पुल्लिङ्ग नाम देवालय के पृथक्-पृथक् हैं॥१० १/२॥

स्त्र्यगारं भुभूजामन्तः पुरं स्यादवरोधनम्॥११॥
शुद्धान्तश्चावरोधश्च

कृष्णमित्रटीका :- स्त्रीणामगारम्। अन्तरभ्यन्तरे पुरं गृहम्। अवरुध्यन्तेऽत्र[6]॥११॥ शुद्धा रक्षका अन्तेऽस्य[7]। तात्स्थ्यान्महिष्याप्येते। चत्वारि॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १ अन्तःपुरम्, २ अवरोधनम्, ३ शुद्धान्तः, ४ अवरोधः- ये चार नाम रनिवास के हैं। जिनमें प्रथम दो नपुंसकलिङ्ग हैं, शेष- पुल्लिङ्ग हैं॥११॥

स्यादट्ट क्षौममस्त्रियाम्।

कृष्णमित्रटीका :- अट्यते। 'अट्ट अतिक्रमणे' (भ्वा. आ. से.)। घञ् (३. ३. १४) क्षुवन्त्यत्र। 'टुक्षु शब्दे' (अ. प. से.)। 'अर्तिस्तु-' (उ. १. १४०) इति मः। हर्म्याद्युपरिगृहस्य द्वे॥[9]

हिन्दी अर्थ :- १ अट्टः, २ क्षौमम् ये दो नाम अटारी के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग और पुल्लिङ्ग है।

प्रघाणप्रघणालिन्दा बहिर्द्वारप्रकोष्ठके॥१२॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रहझयते। 'अगारैकदेशे प्रघण प्रघाणश्च' (३. ३. ७९) इति साधुः। अल्यते भूष्यते। बाहुलकात्किन्दच्। द्वारप्रकोष्ठाद्वहिर्द्वाराग्रवर्तिचतुष्कस्य त्रीणि॥१२॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ प्रघाणः, २ प्रघणः, ३ अलिन्दः 'पटडेहर' अर्थात् चौकठ की बाहरी जगह के ३ नाम हैं - ये तीनों नाम पुल्लिङ्ग हैं। ॥१२॥

गृहावग्रहणी देहली

कृष्णमित्रटीका :- गृहमवगृह्यतेऽनया[2]। ल्युट् (३. ३. १७)। देहं गोमयाद्युपलेनं लाति। द्वाराग्रे उदुम्बराख्यस्य द्वे। 'देहरवट' लोके॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१ गृहावग्रहणी, २ देहली देहरी या दरवाजे के नीचेवाले भाग के -ये दो नाम हैं। दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं।

अङ्गनं चत्वराजिरे।

कृष्णमित्रटीका :- 'अगि गतौ' (भ्वा. प. से.)। करणे ल्युट् (३. ३. ११७)। मूर्धन्यान्तत्वम्। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। चते याचने (भ्वा. उ. से.)। 'कृगृ-' (उ. २. १२२) इति ष्वरच्। अजन्त्यत्र। 'अजिरशिशिर-' (उ. १. ५३) इति साधुः। त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ अङ्गणम् , २ चत्वरम् , ३ अजिरम्- आँगन के ये तीन नाम हैं जो नपुंसकलिङ्ग हैं।

अधस्ताद्दारुणि शिला

कृष्णमित्रटीका :- शिलति । 'शिल उञ्छे' (तु. प. से.)। स्तम्भादीनामाधारभूतं दारु शिला॥[5]

हिन्दी अर्थ :- शिला दरवाजे के दोनों खम्भों के नीचेवाले काष्ठ, लोहे या पत्थर का -यह एक नाम है, जो स्त्रीलिङ्ग है।

नासा दारूपरि स्थितम्॥१३॥

---

1. M. चूर्णलेपः अस्त्यस्य 2. **A white washed mansion or a palace** [2]. 3. **A royal tent** [2] 4. M. आवर्तोस्य 5. **Different kinds of royal palaces** [1 each] 6. M. अवरुध्यन्तेत्र 7. M. अन्तेस्य 8. **The Female apartment of a royal palace** [4]. 9. **An upper story** [2]

1. **A porch before the door of a house** [4] 2. M. गृहमवगृह्यतेनया 3. **The threshold (of a door)** [2] 4. **Court-yard** [3]. 5. **The lower timber of a door** [1]

कृष्णमित्रटीका :- स्तम्भादेरुपरि दारु नासा। 'द्वारशाखाया ऊर्ध्वधारिणी शिला नासा' इति माला। नास्यते। 'नासृशब्दे' (भ्वा. आ. से.) ॥१३॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ नासा- यह एक नाम दरवाजे के दोनों खम्भों के ऊपरवाले काष्ठ, लोहे या पत्थर का है, जो स्त्रीलिङ्ग है॥१३॥

प्रच्छन्नमन्तर्द्वारं स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- अन्तः[2] स्थितं द्वारम्। 'खिरकी' लोके॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ प्रच्छन्नम्, २ अन्तर्द्वारम्- ये दो नाम खिड़की के हैं; दोनों नपुंसकलिङ्ग हैं।

पक्षद्वारं तु पक्षकः।

कृष्णमित्रटीका :- पक्षे पार्श्वे द्वारम्। पक्ष इव। पार्श्वद्वारस्य द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ पक्षद्वारम्, २ पक्षकम् मुख्यद्वार के बगलवाले द्वार के- ये दो नाम हैं। दोनों नपुंसकलिङ्ग हैं।

वलीकनीध्रे पटलप्रान्ते

कृष्णमित्रटीका :- वलति। 'अलीकादयश्च' (उ. ४. २५) इति साधुः। नितरां ध्रियते। पटलस्य छछिषः प्रान्ते। कुड्याद्बहिर्वीथी येनाच्छाद्यते॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १ वलीकम् ,२ नीध्रम् , ३ पटलप्रान्तम् छान्ह ओरी या घोड़मुँहा के- ये तीन नाम हैं। दनमें पहला पुल्लिङ्ग तथा नपुंसक है और शेष नुपंसक लिङ्ग हैं।

अथ पटलं छदिः॥१४॥

कृष्णमित्रटीका :- पटं लाति। छाद्यतेऽनेन[6]। 'अर्चि शुचि[7]-' (उ. २. १०८) इतीसिः॥१४॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १ पटलम् , २ छदिः , छावना, छाजन् के- ये दो नाम हैं। इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग और द्वितीय स्त्रीलिङ्ग है॥१४॥

गोपानसी तु बलभी छादने वक्रदारुणि।

कृष्णमित्रटीका :- गोभिः किरणैः पानं शोषणम्। तत्स्यति बलेनाभाति। गौरादिः (४. १. ४१)। वक्राणि दारूणि यस्मिन्। पटलाधारवंशपञ्जरस्य द्वे। 'बंगला' (?) लोके॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ गोपानसी, २ वलभी धरन कैंची या छाने के लिये दिये हुए टेढ़े काष्ठ के -ये दो नाम हैं। दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं।

कपोतपालिकायां तु विटङ्कं पुंनपुंसकम्॥१५॥

कृष्णमित्रटीका :- कपोतानां पालिका। विशेषेण टङ्कतेऽत्र[2]। 'टकि बन्धने' (चु. प. से.)। गृहप्रान्ते रचितपक्षिस्थानस्य द्वे॥१५॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ कपोतपालिका ,२ विट्ङ्कम् कबूतर आदि पक्षियों के लिये लकड़ी आदि के बनाए हुए घर के -ये दो नाम हैं, इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग और द्वितीय पुल्लिङ्ग नपुंसक लिङ्ग दोनों है॥१५॥

स्त्री द्वार्द्वारं प्रतीहारः

कृष्णमित्रटीका :-द्वार्यते। 'द्वृ क्षरणे' क्विप्।(वा. ३. ३. ६४)। पचाद्यचि (३. १. १३४) द्वारम् प्रतिह्रियते। घञ् (३. ३. १४)। त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ द्वार्, २ द्वारम्, ३ प्रतीहारः- ये तीन नाम दरवाजे के हैं, इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग और तृतीय पुलिङ्ग हैं।

स्याद्वितर्दिस्तु वेदिका।

कृष्णमित्रटीका :- विगता तर्दिर्हिंसाऽत्र[5]। विदन्त्यस्याम्। इन्नन्तान्ङीष्। अङ्गणादौ कृतस्य चतुरस्र-स्थानस्य द्वे। 'वेदी' (लोके)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १ वितर्दिः, २ वेदिका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम वेदी के है।

तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारम्

कृष्णमित्रटीका :- तुरन्त्यत्र। द्वाराग्रे स्तम्भोपरिरचितं सिंहद्वाराख्यम्॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १ तोरणः,२ बहिर्द्वारम् ये दो नाम तोरण (बाहरी फाटक) के हैं। इनमें प्रथमपुल्लिङ्ग, है और द्वितीय केवल नपुंसकलिङ्ग है।

पुरद्वारं गोपुरम्॥१६॥

---

1. **The upper timber of a door** [1] 2. M. अन्त 3. **The Private or secret door within a house** [2] 4. **The side- door of a house** [2]. 5. **The edge of the roof** [3] 6. M. छाद्यतेनेन 7. M. अर्तिशुचि 8. **Roof** [2]

1. **The curved beam which supports a thatch** [2] 2. M. टङ्कतेत्र 3. **Aviary** [2] 4. **Door** [3]. 5. M. मर्दिर्हिसात्र 6. **A quadrangular spot in the courtyard of a temple of palace** [2] 7. **An outer door** [2]

कृष्णमित्रटीका :- पुरस्य द्वारम्। गां पुरिति। 'पुर अग्रगमने' (तु. प. से.)॥१६॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ पुरद्वारम्, २ गोपुरम्- ये दो नाम नगर के बड़े फाटक के हैं जो नपुंसकलिङ्ग हैं॥१६॥

कूटं पूर्द्वारि यद्धस्तिनखस्तस्मिन्

कृष्णमित्रटीका :- पुरद्वारे कृतं क्रमनिम्नमवतरणार्थं मृत्कूटम्। हस्तिनो नख इव॥[2]

हिन्दी अर्थ :- हस्तिनखः- यह एक पुल्लिङ्ग नाम सुखपूर्वक चढ़ने या उतरने के लिये नगर द्वार पर बनाई हुई ढलान जमीन का है।

अथ त्रिषु।

कपाटमररं तुल्ये

कृष्णमित्रटीका :- कं शिरः पाटयति प्रविशताम्। 'कवाटम्' इत्यन्ये। इर्यति। 'अर्तिकमि-' (उ. ३. १३२) इत्यरन्। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ कपाटम्, २ अररम्-ये दो नाम किवाड़ के हैं, दोनों नपुंसकलिङ्ग हैं।

तद्विष्कम्भोऽर्गलं न ना॥१७॥

कृष्णमित्रटीका :- विष्कम्नाति। 'स्कम्भुः' सौत्रो रोधनार्थः। अर्ज्यतेऽर्गः।[4] न्यङ्क्वादिः (७. ३. ५३)। तं लाति। कपाटरोधनकाष्ठस्य द्वे। 'वेवडा' (लोके)॥१७॥[5]

हिन्दी अर्थ :- अर्गलम् 'किल्ली' का- यह एक नाम है, जो नपुंसकलिङ्ग है॥१७॥

आरोहणं स्यात्सोपानम्

कृष्णमित्रटीका :- सह विद्यमानमुपरि आनो गमनमनेन। पाषाणदिकृतस्य सौधारोहणमार्गस्य द्वे। 'सीढ़ी' (लोके)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १ आरोहणम्, २ सोपानम् पत्थर आदि से बनी सीढ़ी के- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम हैं।

निःश्रेणिस्त्वधिरोहणी।

कृष्णमित्रटीका :- नियता श्रेणी पङ्क्तिरत्र। सोपसर्गपाठे निश्चिता श्रेणिः। काष्ठादिकृतारोहणमार्गस्य द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १ निश्रेणिः, २ अधिरोहणी 'काठकी सीढ़ी' के- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम हैं।

संमार्जनी शोधनी स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- संमृज्यतेः शोध्यतेऽनया[1]। द्वे। 'बढ़नी' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ संमार्जनी, २ शोधनी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम झाड़ू के हैं।

संकरोऽवकरस्तथा॥१८॥

क्षिप्ते

कृष्णमित्रटीका :- संकीर्यते, 'ऋदोरप्' (३. ३. ५७)॥१८॥ क्षिप्ते 'धूल्यादौ' इति शेषः। द्वे। 'कतवार' 'करकट' लोके॥१८॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ संकरः, २ अक्करः- ये दो पुल्लिङ्ग नाम कतवार या बहारन के हैं॥१८॥

मुखं निःसरणम्

कृष्णमित्रटीका :- गृहादेर्निस्रियते प्रविश्यतेवा येन तन्मुखम्। निर्गमनप्रवेशमार्गस्य द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ मुखम्, २ निःसरणम्- ये दो नपुसंकलिङ्ग नाम घर आदि के प्रधान द्वार के हैं।

संनिवेशो निकर्षणः।

कृष्णमित्रटीका :- संनिविशन्तेऽत्र[5]। कषर्णान्निर्गतम्। पुरादेर्बहिर्विहारभूमेर्द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १ सन्निवेशः, २ निकर्षणम्- ये दो नाम ठहरने योग्य सुन्दर स्थान के हैं। इनमें प्रथम पुलिङ्ग और द्वितीय नपुंसकलिङ्ग है।

समौ संवसथग्रामौ

कृष्णमित्रटीका :- संवसन्त्यत्र। 'उपसर्गे वसेः'[7] (उ. ३. ११६) इत्यथच्। ग्रसते। 'ग्रसेरा च' (उ. १. १४३) इति मन्। द्वे॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १ संवसथः, २ ग्रामः- ये दो पुल्लिङ्ग नाम ग्राम के हैं।

वेश्मभूर्वास्तुरस्त्रियाम्॥१९॥

---

1. The gate of a town [2]. 2. A sort of turret projecting the approach to the gate of a city [2]. 3. The leaf of a door [2] 4. M. अर्ज्यते अर्गः 5. The bolt of a door [2] 6. Steps or stairs [2] 7. Staircase [2].

1. M. शोध्यतेनया 2. Broom [2] 3. Sweeping [2] 4. The main door of a house for entry and elit [2] 5. M. संनिविशन्तेत्र 6. An open space for recreation [2] 7. M. वस 8. Village [2]

कृष्णमित्रटीका :-वेश्मनो भूः। वसन्त्यत्र। 'वसेस्तुन्नगरे णिच्च' (उ. १. ७५)। गृहरचनावच्छिन्नभूमेर्द्वे॥१९॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ वेश्मभूः, २ वास्तुः- ये दो नाम घर की जमीन के हैं इनसे प्रथम् स्त्रीलिङ्ग और द्वितीय पुल्लिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग दोनों हैं॥१९॥

ग्रामान्तमुपशल्यं स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- ग्रामस्यान्तः समीपम्। शल्यमुपगतम्।[2]

हिन्दी अर्थ :- १ ग्रामान्त, २ उपशल्यम्- ये दो नाम गाँव के पासवाली जमीन के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग और द्वितीय नपुंसकलिङ्ग है।

सीमासीमे स्त्रियामुभे।

कृष्णमित्रटीका :- सीयते। षिञ् (स्वा. उ. अ.)। 'नामन्सीमन्-' (उ. ४. १५०) इति साधुः। 'डाबुभाभ्या-भ्याम्-' (४. १. १३)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ सीमन्, २ सीमा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम सीमा, सरहद के हैं।

घोष आभीरपल्ली स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- घोषन्ति गावोऽत्र[4]। आभीराणां पल्ली कुटी॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १ घोषः, २ आभीरपल्ली- ये दो नाम अहीरों के झोपड़े या गाँव के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग और द्वितीय स्त्रीलिङ्ग है।

पक्कणः शवरालयः॥२०॥

इति पुरवर्गः॥२॥

कृष्णमित्रटीका :- पचति च स कणति च। शवराणामालयः। भिल्लग्रामस्य द्वे॥२०॥[6]

इति पुरवर्गः॥२॥

हिन्दी अर्थ :- १ पक्कणः, २ शवरालयः कोल, भील, किरात, आदि म्लेच्छ जातियों के ग्राम के- ये दो पुलिङ्ग नाम हैं॥२०॥

इति पुरवर्गः॥

1. **A building-ground** [2] 2. **An open space near the vicinity of a village** [2] 3. **Boundary** [2] 4. M. गावोत्र 5. **An abode of herdsmen** [2] 6. **An abode of barbarians** [2].

अथ शैलवर्गः॥३॥

महीध्रे शिखरिक्ष्माभृदहार्यधरपर्वताः।
अद्रिगोत्रगिरिग्रावाचलशैलशिलोच्चयाः॥१॥

कृष्णमित्रटीका :- महीं धरति। मुलविभुजादिः (वा. ३. २. १)। शिखरमस्यास्ति। क्ष्मां बिभर्ति। हर्तुं न शक्योऽहार्यः।[1] 'ऋहलोर्ण्यत्' (३. १. १२४)। धरति धरः। अच् (३. १. १३५)। पर्वाणि सन्त्यत्र। '-पर्वमरुद्भ्याम्' (वा. ५. २. १२२) तः। अद्यते अद्रिः। 'अदिशदिशृभिभ्यः क्रिन्' (उ. ४. ६५)। गां त्रायते। 'आतः-' (३. २. ३) कः। गिरति गिरिः। बाहुलकाद्रिक्। 'ग्रसु अदने' (भ्वा. आ. से.)। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। वनिप् (३. २. ७५)। न चलत्यचलः। शिलाः सन्त्यत्र। ज्योत्स्नादित्वादण् (वा. ५. २. १. ३)। शिलाभिरुच्चीयते। 'एरच्' (३. ३. ५६)। त्रयोदश॥१॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ महीध्र, २ शिखरी, ३ क्ष्माभृत्, ४ अहार्य, ५ धर, ६ पर्वत, ७ अद्रि, ८ गोत्र, ९ गिरि, १० ग्रावा, ११ अचल, १२ शैल, १३ शिलोच्चय- ये तेरह पुल्लिङ्ग नाम पहाड़ के हैं॥१॥

लोकालोकश्चक्रवालः

कृष्णमित्रटीका :- अन्तर्लोक्यते सूर्यकिरणानां स्पर्शात्। बहिर्न लोक्यते। लोकालोकः। चक्राकारेण बाडते चक्रवालः। 'बोड़ृ आप्लाव्ये' (भ्वा. आ. से.)। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ लोकालोक, २ चक्रवाल- ये दो पुल्लिङ्ग नाम सात द्वीपवाली पृथ्वी से घिरे हुए पहाड़ के हैं।

त्रिकूटस्त्रिककुत्समौ।

कृष्णमित्रटीका :- त्रीणि कूटान्यस्य। त्रीणि ककुदसदृशानि शृङ्गाण्यस्य।[4]

हिन्दी अर्थ :- १ त्रिकूटः, २ त्रिककुद- ये दो पुंलिङ्ग नाम त्रिकूट पहाड़ के हैं।

अस्तस्तु चरमक्ष्माभृत्

कृष्णमित्रटीका :- अस्त्यर्कादीनस्तः। चरन्त्यत्र चरमः। 'चरेरमः' (उ. ५. ५९)॥द्वे॥[5]

1. M. शक्योहार्यः 2. **Mountain** [13]. 3. **A mythical mountain** [2] 4. **The mountain**, त्रिकूट [2]. 5. **The setting or western mountain** [2]

हिन्दी अर्थ :- १ अस्तः, २ चरमाक्ष्माभृत्- ये दो पुल्लिङ्ग नाम अस्ताचल पर्वत के हैं।

उदयः पूर्वपर्वतः ॥२॥

कृष्णमित्रटीका :- उद्यन्ति ग्रहा यस्मात्। इणः (अ. प. अ.) 'एरच्' (३. ३. ५६)। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ उदयः, २ पूर्वपर्वतः- ये दो पुल्लिङ्ग नाम उदयाचल के हैं॥२॥

हिमवान्निषधो विन्ध्यो माल्यावान्पारियात्रकः।
गन्धमादनमन्ये च हेमकूटादयो नगा॥३॥

कृष्णमित्रटीका :- हिममस्त्यस्मिन्। निवीदति निषधः। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। विशेषेण इध्यते विन्ध्यम्। 'शि इन्धी-' (रु. आ. से.) ण्यत् (३. १. १२४)। शकन्ध्वादिः (६. १. ९४)। माल्यं माल्याकारताऽस्यास्ति[2]। परितो यात्रया दृश्यते पारियात्रकः। 'शेषे' (४. २. ९२) अण्। स्वार्थे कन् (५. ३. ७५)। गन्धेन मादयति। हेम्नः कूटो राशिः॥३॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ हिमवान्, २ निषध, ३ विन्ध्य, ४ माल्यवान्, ५ पारियात्रक, ६ गन्धमादन, ७ हेमकूट ये हिमालय, निषध आदि- ये सात पर्वत विशेषों के नाम हैं। इनमें छठा पुल्लिङ्ग एवं नपुंसकलिङ्ग है, अन्य शेष छः केवल पुल्लिङ्ग हैं। आदि पद से मलयादि का संग्रह है॥३॥

पाषाणप्रस्तरग्रावोपलाश्मानः शिला दृषत्।

कृष्णमित्रटीका :- पिनष्टि पाषाणः। बाहुलकादान च्। प्रस्तृणाति प्रस्तरः। 'स्तृञ् आच्छादने' (क्रया. उ. अ.)। गिरति ग्रावः। वनिप् (३. २. ७५)। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। उप लाति। 'ला आदाने' (अ. प. अ.)। कः (३. १. १३६)। अश्नुते अश्म। अशू व्याप्तौ (स्वा. आ. से.)। मनिन् (३. २. ७५)। 'शिल उञ्छे' (तु. प. से.)। शिला। दृणाति दृषन्। 'दृणातेः पुरघ्रस्वश्च' (उ. १. १३१) इत्यादिः। सप्त॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ पाषाण, २ प्रस्तर, ३ ग्रावा, ४ उपल, ५ अश्मा, ६ शिला, ७ दृषत्- ये सात नाम पत्थर के हैं। इनमें १-५ पुल्लिङ्ग, शेष २ स्त्रीलिङ्ग हैं।

कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गम्

कृष्णमित्रटीका :- कूटयति। 'कूट दाहे' (चु. उ. से.)। अच् (३. १. १३४)। शिखाऽस्यास्ति।[1] 'शिखाया ह्रस्वश्च' (वा. ५. २) इति रः। 'शृणातेर्ह्रस्वश्च' (उ. १. १२६) इति गन्नुड्ह्रस्वाः। त्रीणि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ कूटः, २ शिखरम्, ३ शृङ्गम्- ये तीन पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग नाम पहाड़ की चोटी के हैं। 'अस्त्री' का सम्बन्ध दोनों से है।

प्रपातस्त्वतटो भृगुः॥४॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रपतन्त्यस्मात्। न तटमत्र। भर्जति भृगुः। 'भ्रस्ज पाके' (तु. उ. अ.) पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। त्रीणि॥४॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ प्रपातः, २ अतटः, ३ भृगु- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम पहाड़ से गिरने योग्य स्थान के हैं॥४॥

कटकोऽस्त्री नितम्बोऽद्रेः

कृष्णमित्रटीका :- कटत्यावृणोति कटकः। 'कटे वर्षादौ' (भ्वा. प. से.)। संज्ञाया क्वुन् (उ. २. ३२)। पर्वतमध्यभागो मेखलाख्योऽयम्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- कटक- यह एक पुल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग नाम पहाड़ के मध्य भाग का है।

स्नुः प्रस्थः सानुरस्त्रियौ।

कृष्णमित्रटीका :- स्नौति जलं स्नुः। स्नु प्रस्त्रवणे (अ. प. अ.)। मितद्रवादित्वात् (वा. ३. १८०) डुः। प्रतिष्ठन्तेऽस्मिन्समभूभागत्वात्[5]। घञर्थे कः (वा. ३. ३. १०८)। सनोति ददाति सुखं सानुः। 'षणु दाने' (त. उ. से.)। 'दृसनिजानि-' (उ. १. ३) इति ञुण्। पर्वतसमभूभागस्य त्रीणि॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १ स्नुः, २ प्रस्थः, ३ सानुः- ये तीन पुल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग नाम पहाड़ की समतल भूमि के किसी एक भाग के हैं।

---

1. The eastern mountain (behind which the sun is supposed to rise) [2] 2. M. माल्याकारतास्यास्ति 3. Seven mountains being Himvan, Nisadha, Vindhya, Malyavan, Pariyatraka, Gandhamadana, Hemakuta. 4. Stone [7].

---

1. M. शिखास्यास्ति 2. **Summit** [3] 3. **Steep** [3] 4. **The slope of a mountain** [2] 5. M. प्रतिष्ठन्तेस्मिन्पतनभूभागत्वात् 6. Montain-ridge; table-land [3]

उत्सः प्रस्रवणम्

कृष्णमित्रटीका :- उनत्त्यम्भसा उत्सः। 'उन्द' (रु. प. से.)। 'उन्दिगुधिकुषिभ्यश्च' (उ. ३. ६८) इति सः। कित्। प्रस्रवन्त्यापोऽस्मात्[१]। जलस्रवणावधेः स्थानस्य द्वे॥[२]

हिन्दी अर्थ :- १ उत्सः,२ प्रस्रवणम्- ये दो नाम पहाड़ से गिरे हुए अधिक जल के इकट्ठा होने वाले स्थान के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग तथा द्वितीय न. है।

वारिप्रवाहो निर्झरो झरः॥५॥

कृष्णमित्रटीका :- वारिणः प्रवाहः। निर्झरणं निर्झरः। 'झृष वयोहानौ' (दि. प. से.)। उत्सान्निर्गतस्य जलप्रवाहस्य द्वे। 'पञ्चापि पर्यायाः' इत्यन्ये। 'झरना[३]' लोके॥५॥[४]

हिन्दी अर्थ :- १ वारिप्रवाहः, २ निर्झरः, ३ झरः- ये 'झरना' के तीन पुल्लिङ्ग नाम हैं। अन्य आचार्यों के मत से उत्सादि. पाँचों नाम झरना के हैं॥५॥

दरी तु कन्दरो वा स्त्री

कृष्णमित्रटीका :- दृणान्ति दरी। 'दॄ विदारणे' (क्र्या. प. से.)। पचादौ (३. १. १३४) 'टित्-' (४. १. १५)। कं जलं तेन दीर्यते। 'ऋदोरप्' (३. ३. ५७)। कृत्रिमस्य गृहाकारस्य गिरिविवरस्य द्वे॥[५]

हिन्दी अर्थ :- १ दरी, २ कन्दरः पहाड़ की कन्दरा के- ये दो नाम हैं। इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग तथा द्वितीय पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग दोनों हैं।

देवखातबिले गुहा

गह्वरम्

कृष्णमित्रटीका :- 'बिल भेदने' (तु. प. से.)। कः (३. १. १३५)। गाह्यते गह्वरम्। 'छित्वरछत्वर' (उ. ३. १.) इति गाहतेर्वरच्। अकृत्रिम गिरिविवरस्य त्रीणि॥[६]

हिन्दी अर्थ :- १ देवखातविलम्, २ गुहा, ३ गह्वरम् प्रकृति से ही बने हुए विल या गुफा के- ये तीन नाम हैं। इनमें द्वितीय स्त्रीलिङ्ग और प्रथम तथा तृतीय न. हैं। किसी-किसी के मत से 'गुहा, गह्वरम्'- ये दो ही नाम हैं।

1. M. प्रस्रवन्त्यापोस्मात् 2. **A watery place** [2] 3. M. झरणा, 4. **Fountain** [3] 5. **Cave** [2] 6. **A natural cave** [2]

गण्डशैलास्तु च्युताः स्थूलोपला गिरेः॥६॥

कृष्णमित्रटीका :- शैलानां गण्डा इव गण्ड-शैलाः भूकम्पादिना गलिताः॥६॥[१]

हिन्दी अर्थ :- गण्डशैलः पहाड़ से गिरी हुई बड़ी-बड़ी चट्टान का यह एक पुल्लिङ्ग नाम है॥६॥

दन्तक यह एक पुल्लिङ्ग नाम - पहाड़ के टेढ़े स्थान से बाहर निकली हुई बड़ी चट्टान का हैं।

खनिः स्त्रियामाकरः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- खन्यते खनिः। 'खनिकषि-' (उ. ४. १३९) इति इन्। आकीर्यन्ते धातवोऽस्मिन्नाकरः[२]। 'कृविक्षेपे' (तु. प. से.)। द्वे॥[३]

हिन्दी अर्थ :- १ खनि, २ आकर 'खान' अर्थात् रत्न्, धातु और कोयला आदि के निकलने के स्थान के -ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम हैं।

पादाः प्रत्यन्तपर्वताः।

कृष्णमित्रटीका :- पद्यते एभिः पादाः। 'पद गतौ' (दि. आ. अ.) घञ् (३. ३. १२१)। प्रत्यन्ते महाद्रीनां समीपे ये क्षुद्राः पर्वताः। द्वे॥[४]

हिन्दी अर्थ :- १ पाद, २ प्रत्यन्तपर्वतः- ये दो पुल्लिङ्ग नाम आसपास की छोटी पहाड़ी के हैं।

उपत्यकाद्रेरासन्ना भूमिरुर्ध्वमधित्यका॥७॥

कृष्णमित्रटीका :- उप आसन्न। अध्यारूढा। 'उपाधिभ्यां त्यकन्-' (५. २. ३४) ॥७॥[५]

हिन्दी अर्थ :- उपत्यका यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम पहाड़ के पास बाली जमीन के नीचे वाले हिस्से का है।

धातुर्मनः शिलाद्यद्रेः

कृष्णमित्रटीका :- दधाति शोभां धातुः। 'सितनि[६]-' (उ. १. ६९) इति तुन्॥[७]

हिन्दी अर्थ :- १ धातुः, यह एक पुंलिङ्ग नाम धातु का है। (सोना, चाँदी, ताँबा, हरिताल, मैनसिल, गेरु, अञ्जन, कसीस, सीसा, लोहा, हिंगुल (सिंगरफ) गन्धक, अभ्रक आदि धातु पहाड़ से निकलते हैं।)।

1. **A huge rock thrown down by an entrthquake or storm** [1] 2. M. धातवोस्मिन्नाकरः 3. **Mine** [2] 4. **The hill near a mountain** [2]. 5. **The low-land and high-land near a mountain** [1 each] 6. M. झितनि 7. **Mineral, like arsenic etc.** [1].

गैरिकं तु विशेषतः।

कृष्णमित्रटीका :- गिरौ भवं गैरिकम्। गिरिक-शब्दादण् (४. २. ५३)। गैरिकं विशेषेण धातुः॥[1]

हिन्दी अर्थ :- गैरिकम् 'गेरू' अर्थात् पहाड़ से निकले हुए लाल रंग के धातु-विशेष का एक नपुंसकलिङ्ग नाम है।

निकुञ्जकुञ्जौ वा क्लीबे लतादिपिहितोदरे॥८॥

इति शैलवर्गः॥३॥

कृष्णमित्रटीका :- कुं जनयति कुञ्जः। '-जनेर्डः' (३. २. ९७)। लतादिना पिहितस्य स्थानस्य द्वे॥८॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ निकुञ्ज, २ कुञ्ज 'कुञ्ज' अर्थात् लता या झाड़ी आदि से आच्छादित स्थान-विशेष के ये दो नाम हैं, जो पुल्लिङ्ग तथा नुपंसकलिङ्ग दोनो हैं॥८॥

इति शैलवर्ग॥३॥

अथ वनौषधिवर्गः॥४॥

अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम्।

कृष्णमित्रटीका :- अटन्त्यत्राटवी। 'पद्यटिभ्या- मविः' (?) 'कृदिकारात्-' (ग. ४. १. ४५) ङीष्। अर्यतेऽरण्यम्। 'ऋ गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'अर्तेर्नित्' (उ. ३. १०२) वेपन्तेऽत्र[3]। 'वेपितुह्योर्ह्रस्वश्च' (उ. २. ५२) इति इनन्। गाह्यते गन्तुम्। 'कृच्छ्रगहनयोः-' (७. २.२२) इति निर्देशाद्ध्रस्वयुचौ। कानयति दीपयति। कनी दीप्त्यादौ (भ्वा. प. से.)। ल्युट् (३. १. १३४)। वनति। 'वन संभक्तौ' (भ्वा. प. से.)। षट्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ अटवी, २ अरण्यम्, ३ विपिनम्, ४ गहनम्, ५ काननम्, ६ वनम्- ये छः नाम वन के हैं। इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग है, शेष नपुंसकलिङ्ग हैं।

महारण्यमरण्यानी

कृष्णमित्रटीका :- महच्च तदरण्यं च॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १ महारण्यम्, २ अरण्यानी- ये दो नाम बड़े जंगल के हैं, इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग और द्वितीय स्त्रीलिङ्ग है।

गृहारामास्तु निष्कुटाः॥१॥

कृष्णमित्रटीका :- गृहस्यारामाः। निष्क्रान्ताः कुटाद् गृहात्॥१॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ गृहारामः, २ निष्कुटः- ये दो पुल्लिङ्ग नाम घर के पास में लगाये हुए उद्यान के है॥१॥

आरामः स्यादुपवनं कृत्रिमं वनमेव यत्।

कृष्णमित्रटीका :- आरमन्त्यत्रारामः 'हलश्च' (३. ३. १२१)। उप समीपं वनस्य तुल्यत्वादुपवनम्। कृत्रिमवृक्षसमूहस्य द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ आरामः, २ उपवनम्- ये दो नाम किसी के लगाये हुए वृक्षसमूह के हैं। जिनमें प्रथम पुल्लिङ्ग और द्वितीय नपुंसकलिङ्ग हैं।

अमात्यगणिकागेहोपवने वृक्षवाटिका॥२॥

कृष्णमित्रटीका :- अमात्यस्य मन्त्रिणो वेश्यायाश्च गृहस्य युदपवनं तद् वृक्षस्य वाटिका। 'वट वेष्टने' (भ्वा. प. से.)। 'संज्ञायाम्-' (३. ३. १०९)। अमात्येत्युपलक्षणम्॥२॥[3]

हिन्दी अर्थ :- वृक्षवाटिका-यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम 'मन्त्रियों या वेश्याओं के उपवन' का है॥२॥

पुमानाक्रीड उद्यानं राज्ञः साधारणं वनम्।

कृष्णमित्रटीका :- आक्रीडन्त्यत्र। उद्यान्त्यत्र। राज्ञः सर्वोपभोग्यवनस्य द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ आक्रीडः, २ उद्यानम्- ये दो नाम प्रमदाओं या मित्रों के साथ क्रीडा करने के लिये लगाये हुए राजाओं के साधारण वन या बगीचे के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग एवं नपुंसकलिङ्ग है और द्वितीय नपुंसक हैं।

स्यादेतदेव प्रमदवनमन्तः पुरोचितम्॥३॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रमदानां वनम्। 'ङ्यापोः' (६. ३. ६३) इति ह्रस्वः। सस्त्रीकाणां राज्ञां क्रीडायोग्यम्॥३॥[5]

हिन्दी अर्थ :- प्रमदवनम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम रानियों के क्रीडा के लिए लगाये हुए वन या फुलवाड़ी का है। बाहुल्येन ह्रस्व होने पर ही 'प्रविष्टः प्रमदावनम्' भट्टि का प्रयोग है॥३॥

---

1. The red chalk [1] 2. A place overgrown with creepers [2]. 3. M. वेपन्तेत्र 4. Forest [6] 5. A large forest [2]

1. A garden attached to a house [2] 2. Garden [2] 3. A garden in the house of a minister or prostitute [1]. 4. A royal pleasure garden [2] 5. A pleasure-garden attached to the royal harem [1]

वीथ्यालिरावलिः पङ्क्तिः श्रेणी

कृष्णमित्रटीका :- विथ्यते वीथिः। 'विथृ याचने' (भ्वा. आ. से.)। 'इगुपधात्कित्-' (उ. ४. ११९) इर्तीन्। बाहुलकाद्दीर्घः। आलति। 'अल भूषणादौ' (भ्वा. प. से.) आङीन् (उ ४. ११७)। आवलति। 'वल संवरणे' (भ्वा. प. से.)। पञ्चते पङ्क्तिः। 'पचिविस्तारे' (भ्वा. प. से.)। 'श्रिञ् सेवायाम्' (भ्वा. उ. से.)। 'वहिश्रि-' (उ. ४. ५१) इतीणिः। सान्तरपङ्क्तेः पञ्च॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ वीथी, २ आलिः, ३ आवलिः, ४ पंक्तिः, ५ श्रेणी- ये पाँच स्त्रीलिङ्ग नाम कतार या पंक्ति के हैं।

लेखास्तु राजयः।

कृष्णमित्रटीका :- लिख्यते लेखा। 'राजृ दीप्तौ' (भ्वा. उ. से.)। इन् (उ. ४. ११७)। निरन्तरपङ्क्त-पङ्क्तिसाधारणाया द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ लेखा, २ राजिः- ये दो स्त्री नाम रेखा या लकीर के हैं।

वन्या वनसमूहे स्याद्

कृष्णमित्रटीका :- वनानां समूहः। 'पाशादिभ्यो यः' (४. २. ४९)। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ वन्या यह १ स्त्रीलिङ्ग नाम वन के समूह का है।

अङ्कुरोऽभिनवोद्भिदि॥४॥

कृष्णमित्रटीका :- अङ्क्यतेऽङ्कुरः[4]। 'मन्दि-वाशि-'[5] (उ. १. ३८) इत्युरच्। उद्भिनत्ति भुवमुद्भित् द्वे॥४॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १ अंकुर, २ अङ्कुरः अभिनवोद्भित- ये २ नाम अङ्कुर के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग और द्वितीय स्त्रीलिङ्ग है॥४॥

वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तरुः।
अनोकहः कुटः सालः पलाशी द्रुद्रुमागमाः॥५॥

कृष्णमित्रटीका :- वृश्च्यते वृक्षति वा वृक्षः। 'वृक्ष वरणे' (?)। मह्यां रोहति। शाखाऽस्यास्ति[7]। ब्रीह्यादित्वात् (५. २. ११६) इनिः। विटपः शाखाविस्ता-रोऽस्यास्ति।[1] पादैर्मूलैः पिबति। तरन्त्यनेन तरुः। 'भृमृशी' (उ. १. ७) इत्युः। अनसः शकटस्याकं गतिं हन्ति। 'कुट कौटिल्ये' (तु. प. से.)। सल्यते सालः। 'षल गतौ' (भ्वा. प. से.)। पलाशानि सन्त्यस्य। द्रवत्यूर्ध्वम्। 'द्रु गतौ' (भ्वा. प. अ.)। मितद्रवादिः (वा. ३. २. १८०)। डुः। द्रुः शाखाऽस्यास्ति[2]। 'द्युद्रुभ्यां मः' (५. २. १८०)। न गच्छत्यगमः। त्रयोदश॥५॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ वृक्षः, २ महीरुहः, ३ शाखी, ४ विटपी, ५ पादपः, ६ तरुः, ७ अनोकहः-, ८ कुटः, ९ सालः, १० पलाशी, ११ द्रुः, १२ द्रुमः-, १३ अगमः- ये तेरह पुल्लिङ्ग नाम वृक्ष के हैं॥५॥

वानस्पत्य फलैः पुष्पात्

कृष्णमित्रटीका :- वनस्य पतिः। तत्र भवः। पारस्करादित्वात् (६. १. १४७) सुट्। 'दित्य-' (४. १. ८५) इति ण्यः[4]। पुष्पाज्जातैः फलैर्हेतुभिः॥[5]

हिन्दी अर्थ :- वानस्पत्यः- यह एक पुल्लिङ्ग नाम 'फूलकर फलने वाले पेड़' का है। जैसे- आम, लीची आदि।

तैरपुष्पाद्वनस्पतिः।

कृष्णमित्रटीका :- तैः पुष्पैर्विना फलैः॥[6]

हिन्दी अर्थ :- वनस्पतिः- यह एक पुल्लिङ्ग नाम बिना फूले फलने वाले वृक्ष का है।

ओषध्यः फलपाकान्ता[7]

कृष्णमित्रटीका :- ओषं रुजं दधाति। धाञः (जु. उ. आ.) किः (३. ३. ९३)। फलपाक एवान्तो यासाम्॥[8]

हिन्दी अर्थ :- ओषधिः 'फलकर पकने के बाद नष्ट होने वाले उद्भिधान, चना, जौ, गेहूँ' आदि का - यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम है।

स्यादबन्ध्यः फलेग्रहिः॥६॥

---

1. Row [5] 2. Streak [2] 3. A multitude of groves; a large forest [1] 4. M. अङ्क्यते अङ्कुरः 5. M. मन्दिवासि 6. Sprout [2] 7. M. शाखास्यास्ति

1. शाखाविस्तारोस्यास्ति। 2. M. शाखास्यास्ति 3. Tree (in general) [13] 4. M. ण्य 5. A tree the fruit of which is produced from blossom e. g. mango [1] 6. A tree that bears fruit without blossom [1] 7. B. and K. read as: ओषधिः फलपाकान्ता 8. A plant or herb which dies after becoming ripe [2].

कृष्णमित्रटीका :- फलानि गृह्णाति समये। 'फलग्रहिरात्मंभरिश्च' (३. २. २६) इति साधुः। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ अवन्ध्यः, २ फलेग्रहिः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम अपने-अपने समय में फलने वाले पेड़ आदि के हैं॥६॥

बन्ध्योऽफलोऽवकेशी च

कृष्णमित्रटीका :- बन्धे साधुः। अवके शून्ये-ईष्टेऽवकेशी[2]। त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ वन्ध्यः, २ अफलः, ३ अवकेशी समय पर भी नहीं फलने वाले पेड़ के- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम हैं।

फलवान्फलिनः फली।

कृष्णमित्रटीका :- 'फलबर्हाभ्यामिनच्[4]' (वा. ५. २. १२१)। फलिनः। त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १ फलवान्, २ फलिनः, ३ फली- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम फले हुए पेड़ आदि के हैं।

प्रफुल्लोत्फुलसंफुल्लव्याकोशविकचस्फुटा॥७॥
फुल्लश्चैते विकसिते

कृष्णमित्रटीका :- 'फुल्ल विकसने' (भ्वा. प. से.)। अच् (३. १. १३४)। व्यावृत्तः कोशः संकोचोऽस्मात्।[6] 'कच बन्धने' (भ्वा. प. से.)। विगतः कचोऽस्मात्।[7] 'स्फुट विकसने' (तु. प. से.)। कः (३. १. १३५)॥७॥ 'कस गतौ' (भ्वा. प. से.)। क्तः (३. ४. ७२) विकसितः। अष्टौ॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १ प्रफुल्लः, २ उत्फुल्लः, ३ संफुल्लः, ४ व्याकोशः, ५ विकचः-, ६ स्फुटः, ७ फुल्लः, ८ विकसित- ये आठ त्रिलिङ्ग नाम फूले हुए पेड़, लता आदि के हैं।

स्युरबन्ध्यादयस्त्रिषु।

कृष्णमित्रटीका :- एते अबन्ध्यादयः।

हिन्दी अर्थ :- 'अवन्ध्य' से लेकर विकसितान्त शब्द त्रिलिङ्ग हैं।

स्थाणुर्वा ना ध्रुवः शङ्कुः

1. **A tree that bears fruit in time** [2] 2. M. ईष्टवकेशी, 3. **A barren tree** [3] 4. M. फलवर्हिभ्यामिनच् 5. **A tree bearing fruit** [2] 6. M. संकोचोस्मात् 7. M. कचोस्मात् 8. **A blossomed or full-blown tree** [8].

कृष्णमित्रटीका :- तिष्ठति स्थाणुः। 'स्थो णुः' (उ. ३. ३७)। ध्रुवति। ध्रुव स्थैर्ये (तु. प. से.)। शङ्कतेऽस्मात्[1]। 'खरुशङ्कु-' (उ. १. ३६) इति साधुः। शाखापत्ररहिततरोः त्रीणि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ स्थाणुः, २ ध्रुवः, ३ शङ्कु- ये तीन नाम ठूंठे पेड़ के हैं। इनमें प्रथम पुलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग और द्वितीय, तृतीय पुल्लिङ्ग हैं।

ह्रस्वशाखाशिफः क्षुपः॥८॥

कृष्णमित्रटीका :- ह्रस्वाः शाखा शिफा मूलानि वा यस्य स शाखोटकादिः। क्षुप्यते क्षुपः॥८॥[3]

हिन्दी अर्थ :- क्षुपः- यह एक पुल्लिङ्ग नाम छोटी शाखा और तना वाले पेड़ के हैं।

अप्रकाण्डे स्तम्बगुल्मौ

कृष्णमित्रटीका :- प्रकाण्डो गण्डस्तद्रहितः। स्तम्भते स्तम्बः। 'स्तम्ब कर्णयोः-' (३. २. १३) इति निपातः। गुडति गुल्मः। 'गुड रक्षायाम्' (तु. प. से.)। स्कन्धरहितस्य द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ स्तम्बः, २ गुल्मः- ये दो पुल्लिङ्ग नाम बिना डाल-वाले पेड़ आदि के हैं।

बल्ली तु व्रततिर्लता।

कृष्णमित्रटीका :- 'वल बल्ल संवरणे' (भ्वा. आ. से.)। 'सर्वधातुभ्य इन्' (उ. ४. ११७)। प्रकृष्टा ततिरस्या व्रततिः। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। लतति। 'लतिः' सौत्रः। त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १ वल्ली, २ व्रततिः, ३ लता- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम 'लता, लत्तर,' के हैं। जैसे- अंगूर, मालती, कद्दू, खीरा आदि।

लता प्रतानिनी वीरुद्गुल्मिन्युलप इत्यपि॥९॥

कृष्णमित्रटीका :- शाखापत्रप्रचयः प्रतानः। सोऽस्याः[6]। विरुणद्धि वीरुत्। गुल्मः प्रतानोऽस्त्यस्याः[7]। 'उलः' सौत्रः। तस्मात्कपः (उ. ३. १४४)। त्रीणि॥९॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १ वीरुत्, २ गुल्मिनी, ३ उलपः - ये तीन नाम 'बहुत डालों से युक्त लता' के हैं। इनमें प्रथम, द्वितीय स्त्रीलिङ्ग तथा तृतीय पुल्लिङ्ग है॥९॥

1. M. शङ्कतेस्मात् 2. **Having no branches, leaves and flowers** (a tree) [3] 3. **A tree with small branches** [1], 4. **A trunkless** [2] 5. **Creeper** [2] 6. M. सोस्त्यस्याः 7. M. प्रतानोस्त्यस्याः 8. **A branching Creeper** [5]

नगाद्यारोह उच्छ्राय उत्सेधश्चोच्छ्रयश्च सः।

कृष्णमित्रटीका :- नगस्य तरोः। आरोहः, औन्नत्यम्। 'श्रिञ् सेवायाम्' (भ्वा. उ. से.)। 'उदि श्रयति' (३. ३. ४९) इति घञ्। 'धिष गत्याम्' (भ्वा. प. से.)। घञ् (३. ३. १८)। उत्सेधः। 'एरच्' (३. ३. ५६)। उच्छ्रयः। वृक्षादिदैर्घ्यस्य त्रीणि॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ उच्छ्रायः, २ उत्सेधः, ३ उच्छ्रयः-ये तीन पुल्लिङ्ग नाम पेड़ आदि की ऊँचाई के हैं।

अस्त्री प्रकाण्डः स्कन्धः स्यान्मूलाच्छाखावधिस्तरोः॥१०॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रकाम्यते प्रकाण्डः। 'वरण्डादयश्च' (?) इति डः। स्कन्द्यते, आरुह्यते स्कन्धः। स्कन्दिर् (भ्वा. प. अ.) दस्य धः। द्वे॥१०॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ प्रकाण्डः, २ स्कन्धः- ये दो नाम मूल से लेकर स्कन्धावधि भाग के हैं। जिनमें प्रथम पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग और द्वितीय पुल्लिङ्ग है॥१०॥

समे शाखालते

कृष्णमित्रटीका :- शाखति। 'शाखृ व्याप्तौ' (भ्वा. प. से.)। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ शाखा, २ लता- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम डाल के हैं।

स्कन्धशाखाशाले

कृष्णमित्रटीका :- स्कन्धस्य शाखा। स्कन्धात्प्रथमोत्पन्ना। शलति शाला। 'शल चलने' (भ्वा. प. से.)। 'ज्वलिति-' (३. १. १४०) इति णः। 'समे' इत्यनुषङ्गः॥द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ स्कन्धशाखा, २ शाल- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम स्कन्ध से सबसे पहले फूटनेवाली शाखा के हैं।

शिफाजटे।

कृष्णमित्रटीका :- शेते शिफा। बाहुलकाद्ध्रस्वफकौ। जटति। 'जट संघाते' (भ्वा. प. से.)। जटारूपमूलस्य द्वे॥[5]

1. The height of a tree [3] 2. The trunk of a tree from the root to the branches [2] 3. The branch of a tree [2] 4. The first branch of a tree [2] 5. The roof of a tree spreading in the ground [2]

हिन्दी अर्थ :- १ शिफा, २ जटा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम सोर अर्थात् जमीन के भीतर फैली हुई पेड़ की जड़ के हैं।

शाखा शिफावरोहः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- शाखावलम्बिनी शिफा अवरोहः।[1]

हिन्दी अर्थ :- १ अवरोहः- यह एक पुल्लिङ्ग नाम शाखामूल का है।

मूलाच्चाग्रं गता लता॥११॥

कृष्णमित्रटीका :- मूलादूर्ध्वं गता या शिफा सा लता॥१॥[2]

हिन्दी अर्थ :- लता- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम वृक्ष पर चढ़नेवाली लता का है॥११॥

शिरोऽग्रं शिखरं वा ना

कृष्णमित्रटीका :- श्रीर्यते शिरः। 'श्रयतेः स्वाङ्गे शिरः किच्च' (उ. ४. १९३) इत्यसुन्। अगति। 'अग कुटिलायां गतौ' (भ्वा. (प. से.) 'ऋज्रेन्द-' (उ. २. २८) इति साधुः॥ शिखां राति शिखरः। वा ना वा पुल्लिङ्ग। वृक्षोर्ध्वभागस्य त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ शिरः, २ अग्रम्, ३ शिखरम्- ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम पेड़ आदि के सबसे ऊपर के हिस्से के हैं।

मूलं बुध्नोऽङ्घ्रिनामकः।

कृष्णमित्रटीका :- मूलति। 'मूल प्रतिष्ठायाम्' (भ्वा. प. से.)। बध्यते बुध्नः। 'बन्धेर्ब्रधि बुधी च' (उ. ३. ५) इति नक्। अङ्घ्रेर्नाम यस्य। मूलमात्रस्य त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ मूल, २ बुनः, ३ अङ्घ्रिनामकः- ये तीन नाम 'पेड़ आदि की जड़' के हैं जिनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग है और द्वितीय, तृतीय पुल्लिङ्ग हैं।

सारो मज्जा समौ

कृष्णमित्रटीका :- सरति सारः। 'सृ स्थिरे' (३. ३. १७) घञ्। मज्जति मज्जा। 'श्वन्नुक्षन्-' (उ. १. १६०) इति जान्तो निपातितः। टाबन्तोऽपि[5] ।द्वे॥[6]

1. The root of a branch [1]. 2. A creeping plant winding itself round a tree from the bottom to the top [1], 3. The top of a tree [3] 4. Root (in general) [3] 5. M. टावन्तोपि 6. The mith of a tree [2]

हिन्दी अर्थ :- १ सारः, २ मज्जा- ये दो पुलिङ्ग नाम लकड़ों के बीच का हीर अर्थात् सारिल लकड़ी के हैं।

त्वक् स्त्री वल्कं वल्कलमस्त्रियाम्॥१२॥

कृष्णमित्रटीका :- त्वचति त्वक्। 'त्वच संवरणे' (तु. प. से.)। वल्कयति। 'वल्क परिभाषणे' (चु. प. से.)। त्रीणि॥१२॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ त्वक्, २ वल्कम्, ३ वल्कलम्- ये तीन नाम पेड़ आदि के छिलके के हैं। जिनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग है और द्वितीय, तृतीय पुलिङ्ग-नपुंसकलिङ्ग हैं॥१२॥

काष्ठं दारु

कृष्णमित्रटीका :- काशते काष्ठम्। दीर्यते दारु। 'द्दसनिजनि-' (उ. १. ३) इति ञुण्। पुंस्यप्ययम्। काष्ठस्य द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- काष्ठम्, २ दारु- ये दो नाम लकड़ी के हैं। इनमें प्रथम न. है और द्वितीय पुल्लिङ्ग नंपुसकलिङ्ग दोनों हैं।

इन्धनं त्वेध इध्ममेधः समित् स्त्रियाम्।

कृष्णमित्रटीका :- इन्धेऽनेनाग्निरिन्धनम्[3]। एधतेऽनेन[4]। असुन् (उ. ४. १८८)। 'इषि युधि-' (उ. १. १४५) इति इन्धेर्मक्। इध्मम्। इन्धे एधः। 'अवोदैधोद्म' (६. ४. २९) इति अदन्तो निपातितः। समिध्यतेऽनया[5]। पञ्च॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १ इन्धनम्, २ एधः, ३ इष्मम्, ४ एधः, ५ समित्- ये पाँच नाम जलावन, (इंधन) के हैं, इनमें प्रथम से तृतीय नपुंसकलिङ्ग हैं और चतुर्थ पुंल्लिङ्ग एवं पञ्चम स्त्रीलिङ्ग हैं। इन्धनम् आदि तीन नाम 'जलावन' की लकड़ी के और 'एधः समित्'- ये दो नाम- हवन की लकड़ी के हैं, ऐसा भी मत हैं।

निष्कुहः कोटरं वा ना

कृष्णमित्रटीका :- निश्चयेन कुहयते। 'कुह विस्मापने' (चु. आ. से.)। कुटति कोटरः। 'कुट कौटिल्ये' (तु. प. से.)। वृक्षादिरन्ध्रस्य द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १ निष्कुहः, २ कोटरम्- ये दो नाम पेड़ के खोंढ़र अर्थात् 'खोखले' के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग है और द्वितीय पुंल्लिङ्ग न. दोनों हैं।

वल्लरिर्मञ्जरिः[1] स्त्रियौ॥१३॥

कृष्णमित्रटीका :- 'वल्ल संवरणे' (स्वा. आ. से.)। वल्लमृच्छति वल्लरिः। 'अच इः' (उ. ४. १३८)। मञ्जुलमृच्छति मञ्जरिः। 'अच इः' (उ. ४. १३८)। शकन्ध्वादिः।द्वे॥१३॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ वल्लरिः, २ मञ्जरिः- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम मञ्जरी, मोंजर के हैं।

पत्रं पलाशं छदनं दलं पर्णं छदः पुमान्।

कृष्णमित्रटीका :- पतति पत्रम्। पतेः ष्ट्रन् (उ. ४. १४८)। पलं मांसमश्नाति। छद्यतेऽनेन।[3] 'छद अपवारणे' (चु. उ. से.)। 'आधृषाद्वा' (ग ३. १. २५) इति णिजभावः। दलति। 'दल विदारणे' (चु. उ. से.)। पर्णयति पर्णम्। 'पर्ण हरितभावे' (चु. उ. से.)। छद्यतेऽनेन[4]। णिजभावे 'पुंसि-' (३. ३. ११९) घः। षट्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १ पत्रम् (पतति इति ष्ट्रन्) २ पलाशम् (पलं मांसमश्नाति इति अण्) ३ छदनम् (छद्यते-ऽनेन ल्युट्) ४ दलम् (दलति इति पचाद्यच्) ५ पर्णम् (पृणति इति पचाद्यच्) ६ छदः (छद्यतेऽनेन इति घः)- ये छः नाम पत्ते के हैं। जिनमें प्रथम से पञ्चम नपुंसकलिङ्ग और छठवां पुल्लिङ्ग है।

पल्लवोऽस्त्री किसलयम्

कृष्णमित्रटीका :- पद्भ्यां लूयते पल्लवः। किञ्चित्सलति किसलयम्। 'षल गतौ' (भ्वा. प. से.)। बाहुलकात् कयन्। नवपत्रस्य द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १ पल्लवः, २ किसलयम्- ये दो नाम नये पल्लव के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग और दूसरा पुल्लिङ्ग नपुल्लिङ्ग दोनों हैं।

विस्तारो विटपोऽस्त्रियाम्॥१४॥

कृष्णमित्रटीका :- स्तृञ् आच्छादने (स्वा. उ. अ.)। भावे घञ्। विस्तारः। विटान् पाति। शाखादिविस्तारस्य द्वे॥१४॥[7]

1. **The bark of a tree** [3] 2. **Wood** [2] 3. M. इन्धेनेनाग्निरिन्धनम् 4. M. एधतेनेन 5. M. समिध्यतेनया 6. **Fuel** [5] 7. **The hollow of a tree** [2]

1. **Some commentators read as tollows** : वल्लरी मञ्जरी 2. **Shoot** [2] 3. M. छद्यतेनेन 4. M. छद्यतेनेन 5. Leaf [6] 6. **A new or tender beaf** [2] 7. **The extension of a branch or a tree** [2]

हिन्दी अर्थ :- १ विस्तार, २ विटपः- ये दो नाम 'पेड़ के फैलाव' के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग है और दूसरा पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग दोनों है॥१४॥

वृक्षादीनां फलं सस्यम्

कृष्णमित्रटीका :- सस्ति सस्यम्। 'षस सस्ति स्वप्ने' (अ. प. से.)। 'माछाससि-' (उ. ४. १०६) इति यः। शसेः (भ्वा. प. से.) यति (वा. ३. १. ६७) शस्योऽपि[1] ॥द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ फलम्, २ सस्यम्, ये दो नपुंसक नाम फल के हैं।

वृन्तं प्रसवबन्धनम्।

कृष्णमित्रटीका :- वृणोति वृन्तम्। 'वृञ् वरणे' (स्वा. उ. से.)। बाहुलकाद 'अञ्जि घृषि-' (उ. ३. ८९) इति क्तः, नुम् च। प्रसवो बध्यतेऽनेन[3] । लोके।द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ वृन्तम्, २ प्रसवबन्धम्- ये दो नपुंसक नाम भेंटी अर्थात् पुष्पादि के मूलाधार के हैं।

आमे फले शलाटुः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- आमे अपक्वे फले। 'शल चलनादौ' (भ्वा. प. से.)। शलमटति। मृगय्वादित्वात् (उ. १. ३७) कुः[5] ॥[6]

हिन्दी अर्थ :- शलाटुः- यह एक त्रिलिङ्ग नाम कच्चे फल का है।

शुष्के वानमुभे त्रिषु॥१५॥

कृष्णमित्रटीका :- शुष्के फले वानम् 'वनु याचने' (त. आ. से.) घञ् (३. ३. १८)॥१५॥[7]

हिन्दी अर्थ :- वानम्- यह एक त्रिलिङ्ग नाम सूखे फल का है॥१५॥

क्षारको जालकं क्लीबे

कृष्णमित्रटीका :- क्षरति क्षारकः। 'क्षर संचलने' (भ्वा. प. से.)। ण्वुल् (३. १. १३३)। जालमिव जालकम्। नवकलिकावृन्दस्य द्वे॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १ क्षारकः, २ जालकम्- ये दो नाम नई कली या कलियों के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग और द्वितीय नपुंसक. हैं।

कलिका कोरकः पुमान्।

कृष्णमित्रटीका :- कलयति कलिका। 'अच इः' (उ. ४. १३८)। स्वार्थे कन् (५. ३. ७५)। 'कुर शब्दे' (तु. प. से.)। '- संज्ञायां वुन्' (उ. ५. ३५)। अविकसितकलिकाया द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ कलिका, २ कोरकः- ये दो नाम 'कली' अर्थात् विना खिले हुए फूल के हैं। इनमें पहला स्त्रीलिङ्ग और दूसरा पुल्लिङ्ग हैं।

स्याद् गुच्छकस्तु[2] स्तबकः

कृष्णमित्रटीका :- गूयते गुच्छः। 'गुङ् शब्दे' (भ्वा. आ. से.)। गम्यादिभ्यः छः। स्तूयते स्तबकः। 'विकासोन्मुखकलिकायाः' इत्येके। 'कलिकादिकदम्बस्य' इत्यन्ये॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ गुत्छकः, २ स्तबकः फूल या फल आदि के गुच्छे के- ये दो पुल्लिङ्ग नाम हैं।

कुड्मलो[4] मुकुलोऽस्त्रियाम्॥१६॥

कृष्णमित्रटीका :- 'कुट छेदने' (तु. प. से.)। 'कुटकुषिभ्यां क्मलच्' (उ. १. १०६)। मुञ्चेर्बाहुलकादुलक्। विकासोन्मुखकलिकाया द्वे॥१६॥

हिन्दी अर्थ :- १ कुड्मल-कुट्मलः, २ मुकुलः- ये दो पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग नाम अधखिली कली के हैं॥१६॥

स्त्रियः सुमनसः पुष्पं प्रसूनं कुसुमं सुमम्॥[5]

कृष्णमित्रटीका :- सुष्ठु मन्यन्ते। 'पुष्प विकसने' (दि. प. से.)। 'षूङ् प्राणिप्रसवे' (दि. आ. से.)। निष्ठानः प्रसूनम्। कुस्यति कुसुमः। 'कुस संश्लेषणे' (दि. प. से.)। 'कुसेः-' (उ. ४. १०६) इत्युमः। पञ्च॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १ सुमनसः, २ पुष्पम्, ३ प्रसूनम्, ४ कुसुमम्, ५ सुमम्- ये पाँच नाम नपुंसक नाम फूल के हैं।

मकरन्दः पुष्परसः

कृष्णमित्रटीका :- मकरं द्यति कामजनकत्वान्मकरन्दः। पुष्पस्य रसः। द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १ मकरन्दः, २ पुष्परसः- ये दो नाम पुल्लिङ्ग फूल के रस (मधु) के हैं।

---

1. M. शस्योपि 2. **The fruit of a tree or creeper** [2]. 3. M. वध्यतेनेन 4. **The footstalk of a leaf or fruit** [2] 5. M. कु 6. **An unripe fruit** [1] 7. **A dry fruit** [1] 8. **A bunch of buds** [2]

1. **Bud** [2] 2. **B. reads** गुस्तकस्तु 3. **A cluster of blossoms B. reads** कुट्मलो 4. **An opening bud** [2] 5. **B. reads** समम् 6. **Flower** [5] 7. **Flower-juice** [2]

परागः सुमनोरजः ॥१७॥

कृष्णमित्रटीका :- परां गच्छति। 'अन्येष्वपि' (वा. ३. २. ४८) इति डः। सुमनसा रजः। द्वे॥१६॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ परागः, २ सुमनोरजः, ये दो नाम फूल के पराग के हैं इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग है और द्वितीय नपुंसकलिङ्ग है॥१७॥

द्विहीनं प्रसवे सर्वम्

कृष्णमित्रटीका:-वक्ष्यमाणमश्वत्थादिवृक्षलतादिप्रसूयमाने पुष्पे फले मूले च वर्तमानं द्वाभ्यां स्त्रीपुंसाभ्यां हीनं ज्ञेयम्।

हिन्दी अर्थ :- द्विहीनं पूर्व कहे हुए शब्दों का साधारणतः लिङ्गनिर्देश करने के बाद 'द्विहीन' शब्द से विशेषतया लिङ्गनिर्देश करते हैं। आगे कहे जाने वाले वृक्ष, लता और औषध के वाचक शब्द यदि पुष्प, मूल और पत्र के वाचक हों तो वे न. में प्रयुक्त होते हैं। जैसे- 'चम्पकम्, आम्रम्, सूरणम्'- ये तीन नाम क्रमशः 'चम्पा के फूल, आम के फूल आम के फल और सूरन की जड़' इन अर्थों में प्रयुक्त होने से नुपंसक. हुए हैं।

हरीतक्यादयः स्त्रियाम्।

कृष्णमित्रटीका :- हरीतक्याः फलं तु हरीतकीत्येव। 'लुपि युक्तवद्व्यक्तिवचने' (१. २. ५१) इत्यत्र 'हरीतक्यादिषु व्यक्तिः' (वा. १. २. ५१) इति वचनात् लिङ्ग प्रकृतिवत्।

हिन्दी अर्थ :- हरीतक्यादयः, आदिना 'कोशातकी (द्राक्षा) बदरी कण्टकारिका' इत्यादयः। 'हरीतक्यादयः' इस पद से उक्त लिङ्ग का बाधक वचन कह रहे हैं। फल आदि अर्थ में प्रयुक्त होने पर भी 'हरीतकी, कर्कटी' आदि शब्द स्त्रीलिङ्ग ही रह जाते हैं अर्थात् नपुंसकलिङ्ग नहीं होते जैसे- 'हरीतकी, कर्कटी, द्राक्षा, बदरी आदि शब्द क्रमशः हरें, ककड़ी, दाख और बैर के फल,' इस अर्थ में प्रयुक्त होने पर भी पूर्ववत् स्त्रीलिङ्ग ही हैं नपुंसकलिङ्ग नही।

आश्वत्थ-वैणव-प्लाक्ष-नैयग्रोधैङ्गुदफले ॥१८॥ बार्हतं च

कृष्णमित्रटीका :- अश्वत्थस्य फलम्। वेणूनाम्। प्लक्षस्य। न्यग्रोधस्य। इङ्गुद्याः। 'न्याग्रोधस्य च केवलस्य' (७. ३. ५) इत्यैच्॥१८॥ बृहत्याः फलम्॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ आश्वत्थम्, २ वैणवम, ३ प्लाक्षम्, ४ नैयग्रोधम्, ५ ऐङ्गुदम्, ६ बार्हतम्- ये छः नपुंसकलिङ्ग १-१ नाम क्रमशः- पीपल, बांस पाकड़, वट, इङ्गुदी और भटकटैयाफल के हैं।

फले जम्ब्वा जम्बूः स्त्री जम्बु जाम्बवम्।

कृष्णमित्रटीका :- जम्ब्वाः फले जाम्बवं जम्बु च। 'जम्ब्वा वा' (४. ३. १६५) इत्यण्। लुकि (४. ३. १६३) नपुंसकह्रस्वे (१. २. ४८) जम्बु॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ जम्बूः, २ जम्बु, ३ जाम्बवम्, जामुन फल के- ये तीन नाम हैं। इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग और द्वितीय तथा तृतीय नुपंसकलिङ्ग हैं।

पुष्पे जातिप्रभृतयः स्वलिङ्गाः

कृष्णमित्रटीका :- जात्याः पुष्पम् जातिः। 'पुष्पमूलेषु बहुलम्' (वा. ४. ३. १६६) इत्यणादेर्लुक्। स्वलिङ्गाः।

हिन्दी अर्थ :- जाति, 'स्वलिङ्गाः' कहने से अभिप्राय यह है कि - पुष्पार्थक होने पर भी नित्य स्त्रीलिङ्ग ही रहते हैं। नपुंसक में इनका प्रयोग नहीं होता। प्रभृतिपद से- मल्लिका, यूथिका, शेफालिका का संग्रह है।

व्रीहयः फले ॥१९॥

कृष्णमित्रटीका :- यथा- यवानां फलानि यवाः। 'फलपाकशुषाम्-' (वा. ४. ३. १६६) इति लुप्॥१९॥

हिन्दी अर्थ :- व्रीहिः- यहाँ पर आदि (बहुवचनान्त) शब्द से 'यवः, माषः, प्रियङ्गः, गोधूमः, चणकः' का ग्रहण होता है- ये शब्द पहले ओषध्यर्थक होने से पुलिङ्ग कहे गये हैं, किन्तु फलार्थक होने पर भी पुल्लिङ्ग ही रहते हैं, नपुंसकलिङ्ग में इनका प्रयोग नहीं होता हैं यथा यवः माषः एवं मुद्गाः ॥१९॥

विदार्याद्यास्तु मूलेऽपि

कृष्णमित्रटीका :- विदार्याः मूलं पुष्पञ्च विदारी।

1. The pollen of a flower [2]

1. The fruit of the six trees [1 each] 2. The fruit of the jambu tree [3].

हिन्दी अर्थ :- विदारी- यह एक स्त्री नाम विदारी कन्द का है। आदि शब्द से शालापर्णी, गम्भारी, शब्दों का संग्रह है। मूल, 'अपि' शब्द से - पुष्प, फल- अर्थ में प्रयुक्त होने पर भी ये शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग ही रहते हैं। नपुंसकलिङ्ग में इनका प्रयोग नहीं होता है।

पुष्पे क्लीबेऽपि पाटला।

कृष्णमित्रटीका :- पाटलायाः पुष्पम्। पाटला। लुकि (वा. ४. २. १६६) तु पाटलम्॥

हिन्दी अर्थ :- पाटला- यह एक स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग नाम पाटला (गुलाब) के फूल का है। गुलाब के फूल अर्थ में प्रयुक्त होने पर 'पाटलम्, पाटला' दोनों ही होते हैं।

बोधिद्रुमश्चलदलः पिप्पलः कुञ्जराशनः॥२०॥ अश्वत्थे

कृष्णमित्रटीका :- बुध्यते बोधिः। इन् (उ. ४. ११७) स चासौ द्रुमश्च। चलं दलमस्य। पिप्लं फलमस्यास्ति। कुञ्जरेणाश्यते ॥२०॥ अश्वेषु तिष्ठत्याश्रयत्वादश्वत्थः। 'पीपल' लोके॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ बोधिद्रुमः, २ चलदलः, ३ पिप्पलः, ४ कुञ्जराशनः, ५ अश्वत्थः- ये पाँच पुल्लिङ्ग, नाम पीपल के पेड़ के हैं॥२०॥

अथ कपित्थे स्युर्दधित्थग्राहिमन्मथाः।
तस्मिन्दधिफलं पुष्पफलदन्तशठावपि॥२१॥

कृष्णमित्रटीका :- कपयस्तिष्ठन्त्यत्र[2]। दधिवर्णो द्रवस्तिष्ठत्यत्र। गृह्णाति ग्राही। मतोमथः मन्मथः[3]। दधिफलेऽस्य[4]। पुष्पयुक्तं फलमस्य। दन्तानां शठ इवापकारित्वात्। सप्त। 'कयथ' लोके॥२१॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १ कपित्थः, २ दधित्थः, ३ ग्राही, ४ मन्मथः, ५ दधिफलः, ६ पुष्पफल, ७ दन्तशठः- ये सात पुल्लिङ्ग नाम कैथ के हैं॥२१॥

उदुम्बरे जन्तुफलो यज्ञाङ्गो हेमदुग्धकः।

कृष्णमित्रटीका :- उल्लङ्घितमम्बरमनेन। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। जन्तवः फलेऽस्य[6]। यज्ञमङ्गति गच्छति। हेमवर्णं दुग्धमस्य। चत्वारि। 'गूलरि' लोके॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ उदुम्बरः, २ जन्तुफलः, ४ हेमदुग्धकः- ये चार पुल्लिङ्ग नाम गूलर के हैं।

कोविदारे चमरिकः कुद्दालो युगपात्रकः॥२२॥

कृष्णमित्रटीका :- कुं भूमि विदृणाति। चमरोऽस्याति[2] चमरिकः। कुमुद्दालयति। युगं युग्मं पत्रमस्य। चत्वारि। 'कचनार' लोके॥२२॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ कोविदारः, २ चमरिकः, ३ कुद्दालः, ४ युगपत्रकः- ये चार पुल्लिङ्ग नाम कचनार के हैं॥२२॥

सप्तपर्णो विशालत्वक् शारदो विषमच्छदः।

कृष्णमित्रटीका :- सप्त पर्णमस्य। विशाला त्वगस्य। शरदि पुष्प्यति। विषमाश्छदा यस्य। चत्वारि। 'छतिवन' लोके॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ सप्तपर्णः, २ विशालत्वक्, ३ शारदः, ४ विषमच्छदः- ये चार पुल्लिङ्ग नाम सात पत्ते वाले वृक्षविशेष (सप्तपर्ण=सतवन) के हैं।

आरग्वधे राजवृक्षशम्पाकचतुरङ्गुलाः॥२३॥
आरेवतव्याधिघातकृतमालसुपर्णकाः।

कृष्णमित्रटीका :- 'रञ्ज रागे' (भ्वा. दिं. उ. अ.) आरजं रोगं हन्त्यारग्वधः। सम्यक्पाकोऽस्य[5]। शं कल्याणं पाकोऽस्येति[6] वा। चतस्त्रोऽङ्गलयो[7] यस्य। पर्वणां प्रमाणम्॥२३॥ रेवती रोगदेवता। अरेवत्यां भवः। कृता मालाऽस्य। अष्टौ। 'किरवार' इति 'धननबहेर' इति 'शृगालदण्ड' इति च लोके॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १ आरग्वधः, २ राजवृक्षः, ३ संपाकः, ४ चतुरंगुलः, ५ आरेवत, ६ व्याधिघातः, ७ कृतमालः, ८ सूवर्णकः- ये आठ पुल्लिङ्ग नाम अमलतास के हैं।

स्युर्जम्बीरे दन्तशठजम्भजम्भीरजम्भलाः॥२४॥

कृष्णमित्रटीका :- जम्यते जम्बीरम् 'जमु अदने' (भ्वा. प. से.)। 'गम्भीरादयश्च' (उ. ४. ३५)

---

1. **The pippala or fig-tree** [5] 2. M. कपयः तिष्ठन्त्यत्र 3. M. मन्मथ 4. M. दधिफलेस्य 5. **The kapittha or wood-apple tree** [7] 6. M. फलेस्य

1. **The udumbara or gulari tree** [4] 2. M. चमरोम्यास्ति, 3. **The Kacanara tree** [4] 4. **The chitavana tree** [4] 5. M. सम्यक्पाकोस्य 6. M. पाकोस्येति 7. M. चतस्रोङ्गलयो 8. **The aragvadha (amalatasa) tree** [8]

इति साधुः। दन्तानां शठ इव। 'जभी गात्रविनामे' (भ्वा. आ. से.)। 'रधिजभोः-' (७. १. ६१) इति नुम्। पञ्च। 'नीबू जंभीरी' (लोके)॥२४॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ जम्बीरः, २ दन्तशठः, ३ जम्भः, ४ जम्भीरः, ५ जम्भलः- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम जंबीरी नीबू के हैं॥२४॥

वरणे वरुणः सेतुस्तिक्तशाकः कुमारकः।

कृष्णमित्रटीका :- व्रियतेऽनेन[2] वरणः। वृञः (स्वा. उ. से.) ल्युट् (३. १. ११३)। 'कुर्वृदारिभ्य उनन्' (उ. ३. ५३)। 'षिञ् बन्धने' (स्वा. उ. अ.)। 'सितनि-' (उ. १. ६६) इति तुन्। सेतुः। कुमार इव कुमारकः। पञ्च। 'वरण' लोके।[3]

हिन्दी अर्थ :- १ वरणः, २ वरुणः, ३ सेतुः, ४ तिक्तशाकः, ५ कुमारकः- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम वारुण या वरण वृक्ष के हैं।

पुंनागे पुरुषस्तुङ्ग केशरो देववल्लभः॥२५॥

कृष्णमित्रटीका :- पुमान्नाग इव। 'पुर अग्रगमने' (तु. प. से.)। 'पुरः कुषन्' (उ. ४. ७४)। तुङ्ग उच्चत्वात्। प्रशस्ताः केशरा अस्य। सीहुण्डपत्र इव इषच्छ्वेतपुष्पः॥२५॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ पुन्नागः, २ पुरुषः, ३ तुंगः, ४ केसरः, ५ देववल्लभः- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम नागकेसर वृक्ष के हैं॥२५॥

पारिभद्रे निम्बतरुर्मन्दारः पारिजातकः।

कृष्णमित्रटीका :- पारि पारं गतं भद्रमस्य। 'णिवि सेचने' (भ्वा. प. से.)। निम्बः। मन्दा आराऽस्य[2]। पारे गतं जन्मास्य। 'फरहद'॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ पारिभद्रः, २ निम्बतरुः, ३ मन्दारः, ४ पारिजातकः- ये चार पुल्लिङ्ग नाम बकायन के हैं।

तिनिशे स्यन्दनो नेमी रथद्रुरतिमुक्तकः॥२६॥
वञ्जुलश्चित्रकृच्च

कृष्णमित्रटीका :- अतिक्रान्तो निशाः। तिनिशः। स्यन्दनं रथोपयोगित्वात्। नीयते नेमिः। णीञोमिः (उ. ४. ३४)। रथस्य द्रुः। अतिशयितो मुक्तो विस्तारोऽस्य[1] ॥२६॥ वच्यते वञ्जुलः। बाहुलकाद्रलो जश्च। 'सांदन' लोके॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १तिनिशः, २ स्यन्दनः, ३ नेमिः, ४ रथद्रुः, ५ अतिमुक्तकः, ६ वञ्जुल, ७ चित्रकृत्- ये सात पुल्लिङ्ग नाम तिनिश या वञ्जुल के हैं।

अथ द्वौ पीतनकपीतनौ।
आम्रातके

कृष्णमित्रटीका :- पीतं करोति। आम्रमतति। त्रीणि। 'अमरूत (?)' लोके॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ पीतनः, २ कपीतनः, ३ आम्रातकः- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम अमड़ा के हैं।

मधूके तु गुडपुष्पमधुद्रुमौ॥२७॥
वानप्रस्थमधुष्ठीलौ

कृष्णमित्रटीका :- मन्यते मधूकः। 'उलूका-दश्यच' (उ. ४. ४१) इति साधुः। गुड इव पुष्पमस्य। मधुनामा द्रुमः॥२७॥ वनप्रस्थे वनैकदेशे भवः। मधुष्ठी-वति। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। 'महुआ' लोके॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ मधूकः, २ गुडपुष्पः, ३ मधुद्रुमः, ४ वानप्रस्थः, ५ मधुष्ठीलः- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम महुआ के हैं।

जलजेऽत्र मधूलकः।

कृष्णमित्रटीका :- जलजे मधूके मधु लाति। मधूलकः। एकम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- मधूलकः- यह एक पुल्लिङ्ग नाम जल में होने वाले महुआ का है

पीलौ गुडफलः स्रंसी

कृष्णमित्रटीका :- पील प्रतिष्टम्भे (भ्वा. प. से.)। मृगय्वादिः (उ. १. ३७)। स्रंसयति मलम्। णिनिः (३. ३. १७०)। 'पीलव' लोके॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १ पीलुः, २ गुडफलः, ३ स्रंसयति- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम पीलु नामक वृक्षविशेष के हैं।

---

1. Citron [5] 2. M. व्रियतेनेन 3. **The varana tree** [5] 4. **The Resara tree** [4] 5. M. आरास्य 6. **The pharahada or coral tree** [4]

1. M. विस्तारोस्य 2. **The tinisa tree** [7] 3. The amrataka or hog-plum tree. 4. The madhuka (mahuva) tree [5] 5. The madhulaka tree [1] 6. The pilu tree.

तस्मिँस्तु गिरिसम्भवे ॥२८॥

अक्षोटकन्दालौ द्वौ

कृष्णमित्रटीका :- गिरिजे तु तस्मिन्पीलौ ॥२८॥ अक्षस्येवोटाः पर्णान्यस्य। अक्षोटः। कर्परमालति[1]। 'कान्द-राल' इति पाठे, कन्दरास्यास्ति। पर्वतवृक्षः। 'अखरोट' लोके॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ अक्षोटः, २ कन्दराल- ये दो पुल्लिङ्ग नाम पहाड़ी पीलु (अखरोट) के हैं।

अङ्कोटस्तु निकोचकः।

कृष्णमित्रटीका :- अङ्क्वस्य- उटः। निकुच्यते। 'कुच शब्दे तारे'(भ्वा. प. से.)। 'ढेरा' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १ अङ्कोट, २ निकोचकः- ये दो पुल्लिङ्ग नाम ढेला (अङ्कोल) नामक वृक्ष विशेष के हैं।

पलाशे किंशुकः पर्णो वातपोथः

कृष्णमित्रटीका :- पलं मांसमश्नाति। किञ्चित् शुक् इव। प्रशस्तानि पर्णान्यस्य पर्णः। वातं पोथयति। 'पुथ हिसायाम्' (द्वि. प. से.)। 'पराश' इति लोके॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ पलाशः, २ किंशुकः, ३ पर्णः, ४ वातपोथः- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम पलाश के हैं।

अथ वेतसे ॥२९॥

रथाभ्रपुष्पविदुलशीतवानीरवञ्जुलाः।

कृष्णमित्रटीका :- वितस्यति वेतसः ॥२९॥ रमन्तेऽस्मिन्[5] रथः। हनिकुषि- (उ. २. २) इति क्थन्। अभ्रमिव पुष्पमस्य। विदोल्यते विदुलः। 'दुल उत्क्षेपे' (चु. प. से.)। शीतो वीर्येण। वाति नीरं वानीरम्। 'वज गतौ' (भ्वा. प. से.)। बाहुलकादुलचनुमौ। षट्। 'वेरसा' लोके। 'वेत्रः' इत्यस्य तु भ्रमः। तस्य हि 'वेत्रम्' इति नाम। वेतसोनदीतटगोदवो गुल्मः।[6]

हिन्दी अर्थ :- १ वेतसः ॥२९॥, २ रथः, ३ अभ्रमिव, ४ विदुलः, ५ शीत, ६ वानीरः, क्विप् ७ वजति- ये सात पुल्लिङ्ग नाम बेंत के हैं।

द्वौ परिव्याधविदुलौ नादेयी चाम्बुवेतसे ॥३०॥

कृष्णमित्रटीका :- विध्यतेऽम्भसा[1] परिव्याधः। नद्यां भवा नादेयी। जलवेतसस्य चत्वारि। अयमेव 'वेरसा' इत्यन्ये ॥३०॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १ परिव्याधः, २ विदुलः, ३ नादेयी, ४ अम्बुवेतसः- ये चार नाम जलवेंत के हैं, इनमें तृतीय स्त्रीलिङ्ग और अन्य पुल्लिङ्ग हैं॥३०॥

शोभाञ्जने शिग्रुतीक्ष्णगन्धकाक्षीवमोचकाः।

कृष्णमित्रटीका :- शोभमनक्ति। 'अञ्जू व्यक्त्यादौ' (रु. प. से.)। ल्युट् (३. ३. ११३)। सुष्ठु भनक्तीनि। दन्त्यादिर्वा। शिनोति तैक्ष्ण्यात्। शिग्रुः। 'शिञ् निशाने' (स्वा. उ. अ.)। 'जत्र्वादश्च' (उ. ४. १०२) इति साधुः। तीक्ष्णो गन्धोऽस्य[3]। आक्षीवयति। 'क्षीवृ मदे' (भ्वा. आ.से.)। ह्रस्वादिरपि। मुञ्चति गन्धम्। 'सहिजन' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ शोभाञ्जनः, २ शिग्रुः, ३ तीक्ष्णगन्धकः, ४ आक्षीव :, ५ मोचकः- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम सहिजन के हैं।

रक्तोऽसौ मधुशिग्रुः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- रक्तो रक्तपुष्पोऽसौ[5] मधु मधुरः। 'सुनुगा' लोके॥[6]

हिन्दी अर्थ :- मधुशिग्रुः- यह एक पुल्लिङ्ग नाम रक्त पुष्पवाले सहिजन का है।

अरिष्टः फेनिलः समौ ॥३१॥

कृष्णमित्रटीका :- न रिष्टमस्मात्। फेनोऽस्या-स्ति[7]। 'रीठी' (लोके)॥३१॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १ अरिष्टः, २ फेनिल- ये दो पुल्लिङ्ग नाम रीठा के हैं।

बिल्वे शाण्डिल्यशैलूषौ मालूरश्रीफलावपि।

कृष्णमित्रटीका :- बिलति बिल्वः। 'बिल भेदने' (तु. प. से.)। उल्वादिः (उ. ४. ९५)। शाण्डिल्य इव मान्यत्वात्। शैलूष इव नानारूपपरिवर्तनात्। मां लक्ष्मीं लाति। बाहुलकादूः। श्रीप्रदं फलमस्य। 'बेल' (लोक)॥[9]

---

1. M. कर्परमालाति 2. **The aksota or walnut tree** [2] 3. **The ankota tree** [2] 4. **The palasa tree** [4] 5. M. रमन्तेस्मिन् 6. **Cane** [7]

1. M. विध्यतेम्भसा 2. **The water-growing cane** [4] 3. M. गन्धोस्य 4. **The sobhanjana (sahajana) tree** [4] 5. M. रक्तपुष्पोसौ 6. **The madhusigru tree** [1] 7. M. फेनोस्यास्ति 8. **The arista (ritha) tree** [2] 9. **The bilva (bela) tree** [5]

हिन्दी अर्थ :- १ बिल्वः, २ शाण्डिल्यः, ३ शैलूषः, ४ मालूरः, ५ श्रीफल- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम बेल के हैं।

प्लक्षो जटी पर्कटी स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- प्लक्ष्यते। 'प्लक्ष भक्षणे' (भ्वा. प. से.)। जटाः सन्त्यस्य। पृच्यते। 'पृची संपर्के' (रु. प. से.)। बाहुलकात् कटः। 'पाकरि' (लोके) ॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ प्लक्षः, २ जटी- ये दो पुल्लिङ्ग और एक स्त्रीलिङ्ग नाम पाकड़ के है।

न्यग्रोधो बहुपाद्वरः ॥३२॥

कृष्णमित्रटीका :- न्यक् तिर्यक्। रुणद्धि मार्गम्। बहवः पादा अस्य। वटति। 'वट वेष्टने' (भ्वा. प. से.)। 'वरगद' (लोके) ॥३२॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१ न्यग्रोधः, २ बहुपात्, ३ वटः- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम बरगद के हैं ॥३२॥

गालवः शावरो लोध्रस्तिरीटस्तिल्वमार्जनौ।

कृष्णमित्रटीका :- गालवस्यापत्यम्। शवराणामयम्। दन्त्यादिरपि। रुणद्धि। बाहुलकाद्रन्। तीर्यते मलमनेन। 'कृतृकृपिभ्यः[3] कीटन्' (उ. ४. १८४)। 'तिलस्नेहने' (तु. प. से.)। उल्वादिः (उ. ४. ९५)। मार्ष्टि अनेन। लोध्र (स्य) ॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ गालवः, २ शावरः, ३ लोघ्रः, ४ तिरीटः, ५ तिल्बः, ६ मार्जनः- ये छः पुल्लिङ्ग नाम लोध के हैं।

आम्रश्चूतो रसालः

कृष्णमित्रटीका :- अम्यते। आम्रः 'अम गत्यादौ' (भ्वा. प. से.)। 'अमितम्योर्दीघश्च' (उ. २. १६) इति रक्। च्योतति रसं चूतः। रसमलति ॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १ आम्रः, २ चूतः, ३ रसालः- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम आम के हैं।

असौ सहकारोऽतिसौरभः ॥३३॥

कृष्णमित्रटीका :- अतिशयितं सौरभमस्य आ (म्रस्य) ॥३३॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१ सहकारः, अतिसौरभः- यह एक पुल्लिङ्ग नाम सुगन्धियुक्त आम का है ॥३३.१/२॥

कुम्भोलूखलकं क्लीबे कौशिको गुग्गुलुः पुरः।

कृष्णमित्रटीका :- कुम्भोलूखलाकाराद् वृक्षकोशान्निर्याति। कुम्भेति पृथगपि नाम। कोशे भवः। गुडति रक्षति वातरोगात्। गुग्गुलुः। 'पुर अग्रगमने' (तु. प. से.)। 'गूगुर' (लोके) ॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ कुम्भम्, २ उलूखलकम्, ३ कोशिकः, ४ गुग्गुलुः, ५ पुरः- ये पाँच नाम गुग्गुलु के हैं। इनमें प्रथम द्वितीय नपुंसक और अन्य तीन पुल्लिङ्ग हैं।

शेलुः श्लेष्मातकः शीत उद्दालो बहुवारकः ॥३४॥

कृष्णमित्रटीका :- शिलति शेलुः। 'शिल उच्छे' (तु. प. से.)। बाहुलकादुः। श्लेष्माणमतति। क्वुन् (उ. २. ३२)। बहून् वारयति। 'लहटोरा' (लोके) ॥३४॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १ शेलुः, २ इलेष्मातकः, ३ शीतः, ३ उद्दालः, ४ बहुवारकः- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम लसोड़ा के हैं। इनमें शीत नपुंसक भी है ॥३४.१/२॥

राजादनं पियालः स्यात्सन्नकद्रुर्धनुष्पटः।

कृष्णमित्रटीका :- राजभिरद्यते। पियति पियालः। 'रिपि गतौ' (रु. प. से.)। सन्नो लीनः कद्रूर्वर्णोऽस्य[2]। धनुष इव पटो विस्तारोऽस्य[3]। 'चार', 'चिरौंजी' (इति लोके) ॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ राजादनम्, २ प्रियालः, ३ सन्नकद्रुः, ४ धनुष्पटः- ये चार नाम चिरौंजी के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग नपुंसक और अन्य तीन केवल पुल्लिङ्ग है। सोमनन्दी ने 'सन्नः' कद्रुः-ऐसा पृथक् नाम माना है ॥३५॥

गंभारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका ॥३५॥

श्रीपर्णी भद्रपर्णी च काश्मर्यश्चापि

कृष्णमित्रटीका :- कं जलं बिभर्ति कंभारी। पृषोदरादित्वात् 'गंभारी' इत्यपि। काशते काश्मरी। मनिन्। 'वनो र च' (४. १. ७)। मधु इव पर्णान्यस्याः ॥३५॥ श्रीयुक्तानि पर्णान्यस्याः। काश्मरीशब्दोऽस्त्यस्य[5]। 'अन्येभ्योऽपि[6]-' (वा. ५. १. १२०) इति यप्। 'खंभारि' (लोके)[7]।

1. The plaksa (pakara) tree [3] 2. The nyagrodha or banyan tree [3] 3. M. कृतृकपिभ्यः 4. The lodhra tree [6] 5. The mango tree [3] 6. A very fragrant mango [2]

1. Guggula (a particular fragrant gum resin) [5] 2. The slesmataka (lahatora) tree [5] 3. M. कद्रूर्वर्णोस्य, 4. M. विस्तारोस्य 5. The piyala tree [4] 6. M. काश्मरीशब्दोस्त्यस्य 7. M. अन्येभ्योपि 8. The gambhari tree [7]

हिन्दी अर्थ :- १ गम्भारी, २ सर्वतोभद्रा, ३ काश्मरी, ४ मधुपर्णिका, ५ श्रीपर्णी, ६ भद्रपर्णी, ७ काश्मर्यः- ये सात नाम गम्भार के । इनमें सप्तम पुल्लिङ्ग अन्य छः स्त्रीलिङ्ग हैं॥३६॥

अथ द्वयोः।

कर्कन्धूर्बदरी कोली कोलं कुवलफेनिले॥३६॥

कृष्णमित्रटीका :- कटकं दधाति कर्कन्धूः। 'अन्दूदृम्भू-' (उ. १. ९३) इति साधुः। 'बदस्थैर्ये' (भ्वा. प. से.)। 'दिविभ्रमि-' (?) इत्यरः। कोलति। 'कुल संस्त्याने' (भ्वा. प. से.)। इन् । गौरादित्वात् (४. १. ४१) ङीषि 'कोली' इत्यपि । कौ वलति। फेनोऽस्यास्ति[1]। 'वैरि' वृक्ष (स्य)॥३६॥[2]

हिन्दी अर्थः-१ कर्कन्धुः, २ बदरी, ३ कोली- ये तीन नाम बेर के हैं इनमें प्रथम द्वितीय पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग हैं। तृतीय केवल स्त्रीलिङ्ग है। कोलिः इन् करने पर ह्रस्वान्त भी है।

सौवीरं बदरं घोण्टा

कृष्णमित्रटीका :- सुवीरदेशे भवम्। 'घुण भ्रमणे' (भ्वा. आ. से.)। बाहुलकाट्टः। घोण्टा। 'वैरि' फलम्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. सौवीरम्, २. बदरम्, ३. घोण्टा- ये दो वनबैर के हैं। इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग और द्वितीय स्त्रीलिङ्ग है।

अथ स्यात्स्वादुकण्टकः।

विकङ्कतः स्रुवावृक्षो अन्थिलो व्याघ्रपादपि॥३७॥

कृष्णमित्रटीका :- स्वादुश्चासौ कण्टयुक्तश्च। 'ककि' (भ्वा. आ. से.) गत्यर्थः। अतच्प्रत्ययः। स्रुवाया वृक्षः, ग्रन्थिं लाति। व्याघ्रस्येव पादावस्य। 'कठार' (लोके)॥३७॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. स्वादुकण्टक, २. विकङ्कत, ३. स्रुवावृक्ष, ४. ग्रन्थिल, ५. व्याघ्रपात्- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम कटाय (कठेर) के हैं॥३७॥

ऐरावतो नागरङ्गः नादेयी भूमिजम्बुका।

1. M. फेनोस्यास्ति 2. The jujube tree [6] 3. The fruit of jujube [2] 4. The vikankata tree [5]

कृष्णमित्रटीका :- इरावत्या विद्युत इवायम्। नागा रजन्त्यत्र। 'नारङ्गी' (लोके)॥[1] नद्यां भवाः। भूमेर्जम्बूः। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. ऐरावत, २. नागरङ्ग, ३. नादेयी, ४. भूमिजम्बुका- ये चार नाम नारङ्गी वृक्ष के हैं जिनमें प्रथम, द्वितीय पुल्लिङ्ग और तृतीय, चतुर्थ स्त्रीलिङ्ग हैं।

तिन्दुकः स्फूर्जकः कालः स्कन्धश्चशितिसारके॥३८॥

कृष्णमित्रटीका :- तिम्यति तिन्दुकः। मृगय्वादिः (उ. १. ३७)। स्फूर्जति स्फूर्जकः। कालः स्कन्धोऽस्य[3]। शितिः कालः सारो मज्जास्य। 'तेंदु' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. तिन्दुक, २. स्फूर्जक, ३. कालस्कन्ध, ४. शितिसारक- ये चार पुल्लिङ्ग नाम तेंदुआ नामक वृक्ष के हैं॥३८॥

काकेन्दुः कुलकः काकपीलुकः काकतिन्दुके।

कृष्णमित्रटीका :- काकानां तिन्दुः। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। कुलस्य गृहस्य प्रतिकृतिरिव। 'पील प्रतिष्टम्भे' (भ्वा. प. से.)। पीलुः। कटुतिन्दुकः। 'कोचिला' लोके॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. काकेन्दु, २. कुलक, ३. काकपीलुक, ४. काकैः पील्यते बाहुलकादुः काकतिन्दुकः- ये चार पुल्लिङ्ग नाम कुचला के हैं।

गोलीढो झाटलो घण्टापाटलिर्मोक्षमुष्ककौ॥३९॥

कृष्णमित्रटीका :- गोभिर्लीढः। झाटं संघातं लाति। बाहुलकाड्ढन्तेष्टो[6] घत्वं च। 'पट गतौ;' (भ्वा. प. से.) पाटं लाति। डिः। मोक्षयति रोगम्। मुञ्चेः (तु. प. अ.) सन्। मुषस्तेये' (क्र्या. प. से.)। 'सृवृभूशुषि-' (उ. ३. ४१) इति कक्। 'मोष' लोके॥३९॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१. गोलिढ, २. झाटल, ३. घण्टापाटलि, ४. मोक्ष, ५. मुष्कक- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम लोध विशेष के हैं॥३९॥

तिलकः क्षुरकः श्रीमान् समौ पिचुलझावुकौ।

1. The orange tree [5] 2. The nadeyi tree [2] 3. M. स्कन्धोस्य 4. The tinduka (tendu) tree [5] 5. The Katutinduka (Kocila) tree [4] 6. M. बाहुलकाड्ढन्तेः टः 7. The golidha tree [5]

कृष्णमित्रटीका :- 'तिल स्नेहने' (तु. प. से.)। क्वुन् (उ. २. ३२)। 'क्षुर विलेखने' (तु. प. से.)। त्रीणि। तिलकनाम्नैव प्रसिद्धस्तिलपुष्पाभः॥[1] पिचुं तूलं लाति। 'झाम्' इति शब्दं वेति गच्छति। मितद्रवादिः (वा. ३. २. १८०)। 'झाऊ' लोके॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. तिलक, २. क्षुरक, ३. श्रीमान्- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम तिलकवृक्ष के हैं।

१. पिचुल, २. झावुक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम झाऊ वृक्ष (झौआ) के हैं।

श्रीपर्णिका कुमुदिका कुम्भी कैटर्यकट्फलौ॥४०॥

कृष्णमित्रटीका :- श्रीः पर्णे यस्याः। कुमुद इव कुमुदिका। कुम्भीव कुम्भी। केटति कैटर्यः। 'कटे वर्षावरणयोः' (भ्वा. प. से.)। 'कायफर' (लोके)॥४०॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. श्री पर्णिका, २. कुमुदिका, ३. कुम्भी,४. कैटर्यः, ५. कट्फल- ये पाँच नाम कायफल के हैं। इनमें प्रथम से तृतीय तक स्त्रीलिङ्ग और अन्य दो पुल्लिङ्ग हैं॥४०॥

क्रमुकः पट्टिकाख्यः स्यात्पट्टी लाक्षाप्रसादनः।

कृष्णमित्रटीका :- क्रामति क्रमुकः। बाहुलकादुकः। पट्टोऽस्यास्ति[4] पट्टी। पट्टिकाख्यो लोध्रः। लाक्षां प्रसादयति। रक्तलोध्र (स्य) पट्टिकालोध्र (स्य)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. क्रमुक, २. पट्टिकाख्य, ३. पट्टी, ४. लाक्षाप्रसादन- ये चार पुल्लिङ्ग नाम पठानी लोध के हैं।

नूदस्तु यूपः क्रमुको ब्रह्मण्यो ब्रह्मदारु च ॥४१॥ तूलं च

कृष्णमित्रटीका :- नुदति नूदः। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। यूपप्रकृतित्वाद्यूपः। ब्रह्मणि वैदिके साधुः। ब्रह्मणोदारु॥४१॥ तूलयति। 'तूल निष्कर्षे' (भ्वा. प. से.)। 'तूत' (लोके)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १ नूद, २. यूप, ३. क्रमुक, ४. ब्रह्मण्य, ५. ब्रह्मदारु, ६. तूलम्- ये छः नाम सहतूत के हैं। इनमें प्रथम से चतुर्थ तक पुल्लिङ्ग और अन्य दो नपुंसक हैं।

नीपप्रियककदम्बस्तु हलिप्रिये।

कृष्णमित्रटीका :- नयति सुखं नीपः। 'वानीविषिभ्यः प' (उ. ३. २३)। प्रीणाति प्रियकः। 'कद' सौत्रहिंसार्थः। 'कृकदि-' (उ. ४. ८२) इत्यम्बच्। हलिनः प्रियः। 'कदम्ब' (इति ख्यातस्य)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. नीप, २. प्रियक, ३. कदम्बः, ४. हलिनः प्रियः- ये चार पुल्लिङ्ग नाम कदम्ब वृक्ष के हैं।

वीरवृक्षोऽरुष्करोऽग्निमुखी भल्लातकी त्रिषु॥४२॥

कृष्णमित्रटीका :- वीर वृक्षो दुःस्पर्शत्वात्। अरुर्ब्रणं करोति। अग्निरिव मुखं यस्याः। भल्ल इवातति। 'भेलो' (लोके)॥४२॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. वीरवृक्ष, २. अरुष्कर, ३. अग्निमुखी, ४. भल्लातकी- ये चार नाम भिलाव के हैं। इनमें प्रथम द्वितीय पुल्लिङ्ग , तृतीय स्त्रीलिङ्ग और चतुर्थ त्रिलिङ्ग हैं॥४२॥

गर्दभाण्डे कन्दरालकपीतनसुपार्श्वकाः। प्लक्षश्च

कृष्णमित्रटीका :- गर्दं शब्दयुक्तं भाण्डमस्य। कन्दरां लाति। कं पीतयति। शोभनं पार्श्वमस्य। प्लक्षति। 'अन्यभ्योऽपि[3]-' (वा. ३. २. १०१) इति डः। 'गजहढा' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१. गर्दभाण्ड, २. कन्दराल, ३. कपीतन, ४. सुपार्श्वक, ५. प्लक्ष- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम लाही पीपल (गेढी) के हैं।

तिन्तिडी चिञ्चाम्लिका

कृष्णमित्रटीका :- तिम्यति तिन्तिडी। 'अलीकादयश्च' (उ. ४. २४) इति निपातितः। 'चिम्' इत्यव्यक्तं चिनोति। चिञो (स्वा. उ. अ.) डः (वा. ३. २. १०१)। अम्लो रसोऽस्यास्ति[5] ॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. तिन्तिडी, २. चिञ्चा, ३. अम्लिका- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम इमली के हैं।

अथो पीतसालके॥४३॥

सर्जकासनबन्धूकपुष्पप्रियकजीवकाः।

---

1. The tilaka tree [2] 2. The picula (jhau) tree [2] 3. The Rayaphara tree [5] 4. M. पट्टोस्यास्ति 5. The red lodhra tree [4] 6. The tula (tuta) tree [6]

1. The kadamba tree [4] 2. The bhallataka (marking-nut) tree [3] 3. M. अन्येभ्योपि 4. The Plaksa tree [5] 5. M. रसोस्यास्ति 6. The tamarind tree [3]

कृष्णमित्रटीका :- पीतः सारोऽस्य[1] ॥४३॥ सृजति सर्जकः। ण्वुल् (३. १. १३३)। अस्यतिअसनम्। ल्युः (३. १. १३३)। बन्धूकस्येव पुष्पाण्यस्य। जीवयति जीवकः। 'विजयसारः' ॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१. पीतसारक ॥४३॥, २. सर्जक, ३. असन, ४. बन्धूकपुष्प, ५. प्रियक, ६. जीवक- ये छः पुल्लिङ्ग नाम विजयसार के हैं।

साले[3] तु सर्जकार्ष्याश्वकर्णकाः सस्यसंवरः ॥४४॥

कृष्णमित्रटीका :- सल्यते सालः। 'षल गतौ' (भ्वा. प. से.)। कृषति कृषः। स एव कार्ष्यः। 'कार्श्यः' इत्यपि। अश्वकर्ण इव पत्रमस्य। सस्यैः संत्रियते। 'शेखुआ' (लोके) ॥४४॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. साल, २. सर्ज, ३. कार्श्यः, ४. अश्वकर्णक, ५. सस्यसंवर- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम सखुआ के हैं ॥४४॥

नदीसर्जो वीरतरुरिन्द्रदुः ककुभोऽर्जुनः।

कृष्णमित्रटीका :- नद्याः सर्जः। वीरश्चासौ तरुश्च। ककुभः सन्त्यस्य। अर्जुनः शुक्लत्वात्। 'कौह' (लोके) ॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. नदीसर्ज, २. वीरतरु, ३. इन्द्रदु, ४. ककुभ, ५. अर्जुन- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम अर्जुनवृक्ष के हैं।

राजादनः फलाध्यक्षः क्षीरिकायाम् अथो द्वयोः ॥४५॥

कृष्णमित्रटीका :- राज्ञां भक्ष्यः। क्षीरमस्त्यस्याः। 'खीरी' (लोके)।[6]

हिन्दी अर्थ :- १. राजादन, २. फलानामध्यक्षः, ३. क्षीरिका- ये तीन नाम खिरिनी के पेड़ के हैं। इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग- पुल्लिङ्ग है, द्वितीय केवल पुल्लिङ्ग एवं तृतीय स्त्रीलिङ्ग है ॥४५॥

इङ्गुदी तापसतरुः भूर्जे चर्मिमृदुत्वचौ।

कृष्णमित्रटीका :- इङ्गति-इङ्गुदी। अस्यास्तैलं तापसानामुपयुज्यते। 'केवटी' (लोके) ॥[7] भुवमूर्जयति। चर्मास्यास्ति। 'भोजपत्रवृक्षस्य' ॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. इङ्गुदी, २. तापसतरु- ये दो नाम इङ्गुदी के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग हैं और द्वितीय केवल पुल्लिङ्ग हैं।

१. भूर्ज, २. चर्मी, ३. मृदुत्वक्- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम भोजपत्र के वृक्ष के हैं।

पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायुः शाल्मलिर्द्वयोः ॥४६॥

कृष्णमित्रटीका :- पिच्छास्यास्ति। पूर्यतेऽनया[1]। मञ्चति। 'शल चलने' (भ्वा. आ. से.)। 'मल धारणे' (भ्वा. आ. से.)। शाल् चासौ मलिश्च। 'शेंबर' (सेंमल) (लोके) ॥४६॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. पिच्छिला, २. पूरणी, ३. मोचा, ४. स्थिरायु, ५. शाल्मलि- ये पाँच नाम सेमल वृक्ष के हैं। इनमें प्रथम से तृतीय तक स्त्रीलिङ्ग है और चतुर्थ पुल्लिङ्ग, एवं पञ्चम पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग दोनो हैं ॥४६॥

पिच्छा तु शाल्मलीवेष्टे

कृष्णमित्रटीका :- 'पिच्छ बाधे' (चु. प. से.)। शाल्मल्या वेष्टो निर्यासः। 'मोचरस' (लोके) ॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. पिच्छा, २. शाल्मलोवेष्टः- ये दो नाम सेंवरीगोंद या मोचरस के हैं। इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग और द्वितीय पुल्लिङ्ग हैं।

रोचनः कूटशाल्मलिः।

कृष्णमित्रटीका :- रोचयति। कूटः कृष्णः शाल्मलिः। द्वे ॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. रोचन, २. कूटशाल्मलि- ये दो पुल्लिङ्ग नाम काला सेमर के हैं।

चिरविल्वो नक्तमालः करजश्च करञ्जके ॥४७॥

कृष्णमित्रटीका :- चिरं विलति। नक्तं मालो धारणमस्य। करेण जन्यते। कं रञ्जयति। 'करञ्ज' चिललिल (इति ख्यातस्य)। 'कञ्जा' लोके ॥४७॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. चिरविल्व, २. नक्तमाल, ३. करज, ४. करञ्जक- ये चार पुल्लिङ्ग नाम करञ्जवृक्ष के हैं ॥४७॥

प्रकीर्यः पूतिकरजः पूतीकः कलिमारकः।

---

1. M. सारोस्य 2. **The vijayasara tree** [6] 3. M. शाले 4. **The sala (sekhva) tree** [5] 5. **The arjuna tree** [5] 6. **The ksirika tree** [3] 7. **The ingudi tree** [2] 8. **The birch-tree** [3]

1. M. पूर्यतेनया 2. **The silk-cotton tree** [5] 3. **Gum or exudation of the silk-cotton tree** [2] 4. **A species of the शाल्मली tree** [2] 5. **The karanja tree** [4]

कृष्णमित्रटीका :- प्रकीर्यते। अध्न्यादित्वात् (उ. ४. १११) यक्। पुनाति पूतीकः। तिन्तिडीकादश्यच[1] (उ. ४. २०) इति साधुः। कलिं मारयति। 'कण्टकवत्करञ्जस्य'॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रकीर्य, २. पूतिकरज, ३. पूतीक, ४. कलिमारक- ये चार नाम करञ्ज के एक-एक भेद के हैं।

करञ्जभेदाः षड्ग्रन्थो मर्कट्यङ्गारवल्लरी॥४८॥

कृष्णमित्रटीका :- वक्ष्यमाणाः करञ्जभेदा षड्ग्रन्थो हस्तिवारुणाख्यः। 'मर्कटीवशीकरञ्ज उदस्थाङ्गावल्लरी' इति केचित्। वस्तुतः षड्ग्रन्थादयः पर्यायाः। तथा च भावप्रकाशे- 'उदयकीर्यस्तृतीयोऽन्यः षड्ग्रन्थो हस्तिवारुणी। मर्कटी वायसी चापि करञ्जी करभञ्जिका॥' इति। करञ्जिका। 'डिठोहरी' (लोके)॥४८॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. षड्ग्रन्थ, २. मर्कटी, ३. अंगारवल्लरी- ये तीन नाम करञ्ज के एक-एक भेद के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग एवं द्वितीय तृतीय स्त्रीलिङ्ग हैं॥

रोही रोहितकः प्लीहशत्रुर्दाडिमपुष्पकः।

कृष्णमित्रटीका :- रोहति रोही। रोहितो वर्णेन। प्लीहः शत्रुः। दाडिमपुष्पमिव। रोहित (स्य)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. रोही, २. रोहितक, ३. प्लीहशत्रु, ४. दाडिमपुष्पक- ये चार पुल्लिङ्ग नाम लाल करञ्ज के हैं॥

गायत्री बालतनयः खदिरो दन्तधावन॥४९॥

कृष्णमित्रटीका :- गायन्तं त्रायते। बालास्तनयाः पत्राण्यस्य। 'क्षद स्थैर्ये' (भ्वा. प. से.) किरच् (उ. १. ४. ५१)। दन्तान् धावयति। 'खयर' (लोके)॥४९॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. गायत्री, २. बालतनय, ३. खदिर, ४. दन्तधावन- ये चार पुल्लिङ्ग नाम कत्था, खैर के हैं। इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग भी होता है॥४९॥

अरिमेदोविट्खदिरे

कृष्णमित्रटीका :- अरिरिव मेदः स्नेहोऽस्य[6]। विड्गन्धिः खदिरः[7]। वैद्यके (अरिमेदकारादिः) प्रसिद्धः॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. अरिमेद, २. विट्खदिर- ये दो पुल्लिङ्ग नाम दुर्गन्ध खैर के हैं।

कदरः खदिरे सिते।

सोमवल्कोऽपि

कृष्णमित्रटीका :- कं जलं दृणाति। सोम इव वल्कोऽस्य[1]। श्वेतखदिर (स्य)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. कदर, २. सोमवल्क- ये दो पुल्लिङ्ग नाम सफेद कत्थे के हैं।

अथ व्याघ्रपुच्छगन्धर्वहस्तकौ॥५०॥

एरण्डो डरुबूकश्च रुचकश्चित्रकश्च सः।

चञ्चुः पञ्चाङ्गुलो मण्डवर्धमानव्यडम्बकाः॥५१॥

कृष्णमित्रटीका :- व्याघ्रस्येव पुच्छमस्य। गन्धर्वस्य हस्त इव॥५०॥ आ ईरयति वायुम्। बाहुलकादण्डच्। उरुं महान्तं वाति। 'उलूकादयश्च' (उ. ४. ४१) इति साधुः। रोचते रोचकः। चित्रयति। क्वुन् (उ. २. ३२)। चञ्चति। 'चञ्चु गतौ' (भ्वा. प. से.)। पचाङ्गुलयोऽस्य[3]। मण्डयति। वर्धते वर्धमानः। व्यडं[4] मलमम्बयति। 'अबि स्रंसने' (भ्वा. आ. से.)। 'रेंड़' (लोके)॥५१॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. व्याघ्रपुच्छ, २. गन्धर्वहस्तक॥५०॥, ३. एरण्ड, ४. उरुबूक उरु, ५. रुचक, ६. चित्रक, ७. चञ्चु, ८. पञ्चाङ्गुल, ९. मण्ड, १०. वर्द्धमान, ११. व्यडम्बक- ये ग्यारह पुल्लिङ्ग नाम एरण्ड (रेंडी) के हैं॥५१॥ शमीर (अल्पा शमी इति) यह एक पुल्लिङ्ग नाम छोटी शमी का है।

अल्पा शमी शमीरः स्यात् शमी सक्तुफला शिवा।

कृष्णमित्रटीका :- शमयति रोगान् सक्तुवत्फलमस्याः। शिवंकल्याणं करोति। त्रीणि। 'शमी'[6]।

हिन्दी अर्थ :- १. शमी, २. सक्तुफला, ३. शिवा- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम शमी के हैं।

पिण्डीतको मरुबकः श्वसनः करहाटकः॥५२॥

शल्यश्च मदने

कृष्णमित्रटीका :- पिण्डी तनोति। मरुं वाति। क्वुन् (उ. २. ३२) निर्जलेऽपि श्वसिति॥[7] करं हाटयति।

1. M. तिडीकादश्यच 2. **The thorny karanja tree** [5] 3. **The different species of the Karanja tree** [1 each] 4. **The rohita tree** [4] 5. **The khadira tree** [4] 6. M. स्नेहोस्य 7. M. खदिर 8. **The arimeda tree** [2]

1. M. वल्कोस्य 2. **White khadira tree** [2] 3. M. पञ्चाङ्गुलयोस्य 4. M. व्यड 5. **The caster oil plant** [11] 6. **The sami tree** [4] 7. M. निर्जलेपि

'हट दीप्तौ' (भ्वा. प. से.)॥५२॥ 'शल गतौ' (भ्वा. प. से.)। शल्यः। मदयति। 'मयनफर' (लोके)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. पिण्डीतक, २. मरुबक, ३. श्वसंन, ४. करहाटक, ५. शल्य, ६. मदन- ये छः पुल्लिङ्ग नाम मयनफल के हैं॥५२॥

शक्रपादपःपारिभद्रकः।
भद्रदारुद्रुकिलिमं पीतदारु च दारु च॥५३॥
पूतिकाष्ठं च सप्त स्युर्देवदारुणि

कृष्णमित्रटीका :- शक्रस्य पादपः। पारि प्रायं भद्रमस्य। द्रुश्चासौ किलिमम्। पीतम्॥५३॥ पूति च तत्काष्ठं च। 'देवदारु'॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. शक्रपादप, २. पारिभद्रक, ३. भद्रदारु, ४. द्रुकिलिमम् ५. पीतदारु, ६. दारु॥५३॥, ७. पूतिकाष्ठम्, ८. देवदारु- ये आठ नाम देवदारु के हैं। इनमें एक से छः तक पुल्लिङ्ग हैं, शेष नपुंसकलिङ्ग हैं।

अथ द्वयोः।
पाटलिः पाटलाऽमोघा काचस्थाली[3] फलेरुहा॥५४॥
कृष्णवृन्ता कुबेराक्षी

कृष्णमित्रटीका :- पाटं लाति। न मोघा। काचस्य कान्त्यर्थस्य स्थाली। फले रोहति॥५४॥ कृष्णं वृन्तमस्याः। कुबेरस्येवाक्ष्यस्याः। 'पाडर' (लोके)।[4]

हिन्दी अर्थ :- १. पाटली, २. पाटला, ३. अमोघा, ४. काचस्थाली, ५. फलेरुहा॥५४॥, ६. कृष्णं, ७. कुबेराक्षी- ये सात नाम पाढ़र के हैं। इनमें दो से छः तक स्त्रीलिङ्ग और प्रथम पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग दोनों हैं।

श्यामा तु महिलाह्वया।
लता गोवन्दनी गुन्द्रा प्रियङ्गुः फलिनी फली॥५५॥
विष्वक्सेना गन्धफली कारम्भा प्रियकश्च सः।

कृष्णमित्रटीका :- श्यामोऽस्त्यस्याः[5]। महिलाया आह्वयोऽस्याः[6]। लतति। 'लतिः' सौत्रः। गवि भूमौ वन्द्यते। गुद्रयति। 'गुदि क्षोदे' (?)। प्रियं गच्छति। मृगय्वादिः (उ. १. ३७)। फलमस्त्यस्याः। गौरादित्वा। (४. १. ४१) फली॥५५॥ विष्वक् सेना। सर्वतोबध्नाति। गन्धवत्फलमस्याः। ईषद् रम्भा। प्रीणाति प्रियकः। दाच्छाफल (?) 'प्रियङ्गु'॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. श्यामा, २. महिलाह्वया, ३. लता, ४. गोवन्दनी, ५. गुन्द्रा, ६. प्रियङ्गु, ७. फलिनी, ८. फली॥५५॥, ९. विष्वक्सेना, १०. गन्धफली, ११. कारम्भा, १२. प्रियक- ये बारह नाम प्रियङ्गुवृक्ष के हैं। इनमें प्रथम से ग्यारह स्त्रीलिङ्ग और बारहवाँ पुल्लिङ्ग हैं॥

मण्डूकपर्णपत्रोर्णनटकट्वङ्गटुण्टुकाः॥५६॥
स्योनाकशुकनासर्क्षदीर्घवृन्तकुटन्नटाः।
शोणकश्चारलौ

कृष्णमित्रटीका :- मण्डूक इव पर्णमस्य। पत्रे उर्णाऽस्य[2]। नटति। कटून्यङ्गान्यस्य। 'टुण्टु' इति कायति॥५६॥ सीव्यति स्योनः। बाहुलकान्नः। स्योनमकति स्योनाकः। तालव्यादिरपि। शुकनासेव पुष्पमस्य। ऋक्ष्णोति ऋक्षः। दीर्घं वृन्तमस्य। कुटन् वक्रीभवन् नटति। 'शोणृ वर्णे' (भ्वा. प. से.) शोणकः। इर्यति अरलुः। 'अर्तेररुः' (उ. ४. ७९)। 'सवन' (सरिवन) (लोके)।[3]

हिन्दी अर्थ :- १. मण्डूकपर्ण, २. पत्रोर्ण, ३. नट, ४. कट्वङ्ग, ५. टुण्टुक॥५६॥, ६. स्योनाक, ७. शुकनास, ८. ऋक्ष, ९. दीर्घवृन्त, १०. कुटन्नट, ११. शोणक, १२. अरलु- ये बारह पुल्लिङ्ग नाम सोनापाठा के हैं।

तिष्यफला त्वामलकी त्रिषु॥५७॥
अमृता च वयस्था च

कृष्णमित्रटीका :- तिष्यं मङ्गल्यं फलमस्याः। आमलते। 'मल धारणे' (भ्वा. आ. से.)। क्वुन् (उ. २. ३२)॥५७॥ न म्रियतेऽनया[4]। वयो यौवनं तिष्ठत्यनया। 'अंवरा' (लोके)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. तिष्यफला, २. आमलकी॥५७॥, ३. अमृता, ४. वयस्था- ये चार नाम आँवला के हैं। इनमें प्रथम द्वितीय त्रिलिङ्ग हैं, शेष दो स्त्रीलिङ्ग हैं।

---

1. **The mayanaphala tree** [6] 2. **The devadaru (pine) tree** [8] 3. **K. reads** काला स्थाली 4. **The patala (padara) tree** [7] 5. M. श्यामोस्त्यस्याः 6. M. आह्वयोस्याः।

1. **The priyangu tree** (said to put forth blossoms at the touch of women) [12] 2. M. उर्णास्य। 3. **The sonaka tree** [12] 4. M. म्रियतेनया 5. **The myrobalan tree** [4]

त्रिलिङ्गस्तु बिभीतकः।

(ना) अक्षस्तुषः कर्षफलो भूतावासः कलिद्रुमः॥५८॥

कृष्णमित्रटीका :- बिभ्यत्यस्मात्। क्तान्तात्कः। अक्षति। 'अक्षू व्याप्तौ' (भ्वा. प. से.)। तुष्यति तुषः। कर्ष फलमस्य। भूतानामावासः। कलेर्द्रुमः 'बहेरा' (लोके)॥५८॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. बिभीतक, २. अक्ष, ३. तुष, ४. कर्षफल, ५. भूतावास, ६. कलिद्रुम- ये छः नाम बहेड़ा के हैं। इनमें प्रथम त्रि. और ५ पुल्लिङ्ग हैं॥५८॥

अभया त्वव्यथा पथ्या कायस्था पूतनाऽमृता।

हरीतकी हैमवती चेतकी श्रेयसी शिवा॥५९॥

कृष्णमित्रटीका :- न भयमस्याः। न व्यथा यस्याः। कायस्तिष्ठत्यनया। हरिरितो यस्याः। हिमवति जाता। चेतयति। अतिप्रशस्ता श्रेयसी। 'हरड' (लोके)॥५९॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. अभया, २. अव्यथा, ३. पथ्या, ४. कायस्था, ५. पूतना, ६. अमृता, ७. हरीतकी, ८. हैमवती, ९. चेतकी, १०. श्रेयसी, ११. शिवा- ये ग्यारह स्त्रीलिङ्ग नाम हरीतकी के हैं॥५९॥

पीतद्रुः सरलः पूतिकाष्ठं च

कृष्णमित्रटीका :- पीतो द्रुर्वृक्षः सरति सरलः। पूतेः पावनस्य काष्ठम्। 'चीड' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. पीतद्रु, २. सरल, ३. पूतिकाष्ठम्- ये तीन नाम सरलनामक वृक्षविशेष के हैं। इनमें प्रथम, द्वितीय पुल्लिङ्ग और तृतीय नपुंसकलिङ्ग हैं।

अथ द्रुमोत्पलः

कर्णिकारः परिव्याधो[4]

कृष्णमित्रटीका :- द्रुमे उत्पलवत्पुष्पमस्य। कर्णिकामिर्यति। परिबिध्यति। 'कठचंपा' (लोके)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. द्रुमोत्पल, २. कर्णिकार, ३. परिव्याध- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम कठचम्पा के हैं।

लकुचो लिकुचो डहुः॥६०॥

1. The terminalia belecica (bahera) tree [6] 2. The harada or yellew myrobalan tree [11] 3. The sarala tree [3] 4. K. and read परिव्याधे 5. The kathacampa tree [3]

कृष्णमित्रटीका :- 'लक आस्वादने' (?)। बाहुलकादुचः। पृषोदरादित्वात् (६. ३. १०९) पक्षे इत्वम्। दह्यति डहुः। मृगय्वादिः (उ. १. ३७)। 'बडहर' (लोके)॥६०॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. लकुच, २. लिकुच, ३. डहु- ये दो पुल्लिङ्ग नाम बड़हर के हैं॥६०॥

पणसः कण्टकिफलः

कृष्णमित्रटीका :- पणनं पणः, सोऽस्यास्ति[2]। 'पनसः' इति दन्त्योऽपि[3]। द्वे। 'कटहल' (लोके)।[4]

हिन्दी अर्थ :- १. पनस, २. कण्टकिफल- ये दो पुल्लिङ्ग नाम कटहल के हैं।

निचुलो हिज्जलोऽम्बुजः।

कृष्णमित्रटीका :- निचोल्यते निचुलः। 'चुल समुच्छ्रये' (चु. प. से.)। 'हि गतौ' (स्वा. प. अ.)। हिनोति हित्-तत्-जलमस्य। 'इज्जलः' इत्यपि पाठः। 'ईजरु' इति 'समुद्रफल' इति च लोके॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१. निचुल, २. हिज्जल, ३. अम्बुज- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम समुद्रफल के हैं। इज्जलः भी पाठ है- एतीति क्विप्, तुक् इत्, इत् जलमस्य-विग्रह होगा।

काकोदुम्बरिका फल्गुर्मलपूर्जघनेफला॥६१॥

कृष्णमित्रटीका :- काकप्रिया उदुम्बरी। फलति फल्गुः। 'फलिपाटि-' (उ. १. १८) इति साधुः। मलंयवते मलयूः। 'यु जुगुप्सायाम्' (चु. आ. से.)। बाहुलकादीर्घः 'मलात्पुनाति मलपूः' इत्यपि कश्चित्। जघने फलमस्याः। 'कठूमरि' (लोके)॥६१॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. काकोदुम्बरिका, २. फल्गु, ३. मलपू, ४. जघनेफला- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम कालागूलर के हैं॥६१॥

अरिष्टः सर्वतोभद्रो हिङ्गुनिर्यासमालकाः।

पिचुमन्दश्च निम्बे

कृष्णमित्रटीका :- न रिष्टमस्मात्। सर्वतोभद्रमात्। हिङ्गुसमो निर्यासोऽस्य।[7] 'मल धारणो' (भ्वा. आ. से.)। ण्वुल् (३. १. १३३)। पिचुं कुष्ठभेदं

1. A kind of bread-fruit tree [3] 2. M. सोस्यास्ति 3. M. दन्त्योपि 4. The jack tree [2] 5. A kind of tree [3] 6. The opposite-leaved fig-tree [4] 7. M. निर्यासोस्य

मन्दयति। 'पिचुमर्दः' इत्यन्ये। निम्यति। 'णिवि सेचने' (भ्वा. प. से.)। 'नींब' (लोके)।[1]

हिन्दी अर्थ :- १. अरिष्ट, २. सर्वतोभद्र, ३. हिङ्गुनिर्यास, ४. मालक, ५. पिचुमर्द, ६. निम्ब- ये छः पुल्लिङ्ग नाम नीम के हैं।

अथ पिच्छिलाऽगुरुशिंशपा ।।६२।।

कृष्णमित्रटीका :- पिच्छाऽस्त्यस्याः[2]। न गुरुरस्मात्। क्लीबम्। 'शिम्' इत्यव्यक्तं शब्दं शपति। 'अगुरुतुल्या शिंशपा' इत्यन्ये। त्रीणि। 'शीशम' (लोके)।।६२।।[3]

हिन्दी अर्थ :- १. पिच्छिला, २. अगुरु, ३. शिंशपा- ये तीन नाम शीशम के हैं। इनमें द्वितीय नपुंसकलिङ्ग और प्रथम तृतीय स्त्रीलिङ्ग हैं।।६२।।

कपिला भस्मगर्भा सा

कृष्णमित्रटीका :- कपिला वर्णेन। भस्म[4] गर्भे यस्याः। द्वे।।[5]

हिन्दी अर्थ :- १. कपिला, २ भस्मगर्भा- यह दो स्त्रीलिङ्ग नाम कपिल वर्ण वाले शीशम के हैं।

शिरीषस्तु कपीतनः।

भण्डिलोऽपि

कृष्णमित्रटीका :- 'शॄ हिंसायाम्' (क्र्या. प. से.)। 'शॄपॄभ्यां कित्' (उ. ४. २७) इतीषन्। कपीनां तनो विस्तारः। बाहुलकाद्दीर्घः। 'भडि कल्याणे' (च. प. से.)। 'सलिकल्यनि-' (उ. १. ५४) इति इलच्। 'शिरीस' (लोके)।।[6]

हिन्दी अर्थ :- १. शिरीष, २. कपीतन, ३. भण्डिल- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम सिरीस के हैं।

अथ चाम्पेयश्चम्पको हेमपुष्पकः ।।६३।।

कृष्णमित्रटीका :- चम्पादेशे भवश्चाम्पेयः। 'चपि गत्याम्' (चु. प. से.)। चम्पयति। ण्वुल्। हेमवर्णं पुष्पमस्य। 'चम्पा' (लोके)।।६३।।[7]

हिन्दी अर्थ :- १. चाम्पेय, २. चम्पक, ३. हेमपुष्पक- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम चम्पा के हैं।।६३।।

1. The nimva tree [6] 2. M. पिछास्त्यस्याः 3. The sisama tree 4. M. भश्म 5. Brown sisama tree [2] 6. The sirisa tree [3] 7. The Campaka tree which bears yellow, fragrant flowers [3]

एतस्य कलिका गन्धफली स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- गन्धः फलं साध्यमस्याः। एकम्।[1]

हिन्दी अर्थ :- गन्धफली- यह एक नाम स्त्रीलिङ्ग नाम चम्पा की कली का है।

अथ केशरे[2]।

वकुलः

कृष्णमित्रटीका :- केशाः सन्त्यस्य। वङ्कते गच्छति। बाहुलकालदुच्। 'मौलशिरी' (लोके)।।[3]

हिन्दी अर्थ :- १. केसर, २. वकुल- ये दो पुल्लिङ्ग नाम मौलसरी के हैं।

वञ्जुलोऽशोके

कृष्णमित्रटीका :- न शोकोऽस्मात्[4]। अशोक (स्य) द्वे।।[5]

हिन्दी अर्थ :- १. वञ्जुल, २. अशोक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम अशोक के हैं।

समौ करकदाडिमौ।।६४।।

कृष्णमित्रटीका :- करोति दोषाभावम्। 'कृञा-दिभ्यो वुन्' (उ. ५. ३५)। दलनं दालः। 'भावप्रत्ययान्ता-दिमप्' (वा. ४. ४. २०)। द्वे। 'अनार' (लोके)।।६४।।[6]

हिन्दी अर्थ :- १. करक, २. दाडिम- ये दो पुल्लिङ्ग नाम अनार के हैं।।६४।।

चाम्पेयः केशरो नागकेशरः काञ्चनाह्वयः।

कृष्णमित्रटीका :- नागाख्याः केशराः सन्त्यस्य। काञ्चनस्याह्वयः। 'नागकेशर' (लोके)।।[7]

हिन्दी अर्थ :- १. चाम्पेय, २. केसर, ३. नागकेसर, ३. काञ्चनाह्वय- ये चार पुल्लिङ्ग नाम नागचम्पा पुष्प के हैं।

जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका।।६५।।

कृष्णमित्रटीका :- जयति जया। तर्कमृच्छति। नद्यां भवा। विजयन्तस्येयम्।।६५।।[8]

1. The bud of a campaka tree [1] 2. Majority reads केसरे 3. The vakula tree [2] 4. M. शोकोस्मत् 5. The asoka tree [2] 6. The pomegrante tree 7. The nagakes'ara tree [4] 8. The jaya tree [5]

हिन्दी अर्थ :- १. जया, २. जयन्ती, ३. तर्कारी, ४. नादेयी, ५. वैजयन्तिका- ये पाँचों स्त्रीलिङ्ग नाम जाहो, अरणी या गनियार के हैं॥६५॥

श्रीपर्णमग्निग्रन्थः स्यात् कणिका गणिकारिका जयः

कृष्णमित्रटीका :- श्रीः पर्णेऽस्य[1]। अग्निं मथ्नाति। 'कण शब्दे' (भ्वा. प. से.)। क्वुन् (उ. २. ३२)। गणिकां समूहमिर्यति। पञ्च। 'अगेथू' (?) (लोके)[2]

हिन्दी अर्थ :- १. श्रीपर्णम्, २. अग्निमन्थ, ३. कणिका, ४. गणिकारिका, ५. जय- ये पाँचों नाम जयपर्ण के हैं इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग, तृतीय चतुर्थ स्त्रीलिङ्ग, शेष दो पुल्लिङ्ग हैं।

अथ कुटजः शक्रो गिरिमल्लिका॥६६॥

कृष्णमित्रटीका :- कुटे शक्रे जायते। शक्नोति शक्रः। वत्स इव। गिरेर्मल्लिका। 'कुरैया' (लोके)॥६६॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. कुटज, २. शक्र, ३. वत्सक, ४. गिरिमल्लिका- ये चार नाम कटैया के हैं। इनमें प्रथम तीन पुल्लिङ्ग तथा चतुर्थ स्त्रीलिङ्ग हैं॥६६॥

एतस्यैव कलिङ्गेन्द्रयवभद्रयवं फले।

कृष्णमित्रटीका :- कलिं गच्छति। इन्द्रयव (स्य)॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१. कलिङ्गम्, २. इन्द्रयवम्, ३. भद्रयवम्- ये तीनों नाम 'इन्द्रयव' के हैं, इनमें प्रथम त्रिलिङ्ग, द्वितीय तृतीय पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग नाम हैं।

कृष्णपाकफलाविग्नसुषेणाः करमर्दके॥६७॥

कृष्णमित्रटीका :- कृष्णः पाकोऽस्य। कृष्ण-पाकं फलमस्य। आ विजतेस्म। ओविजी (तु. प. से.) क्तः। शोभना सेनाऽस्य[5]। करं मृद्नाति। 'करवंद' (करोंदा) (लोके)॥६७॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. कृष्णपाकफलम्, २. अविग्नः 'आविग्नः', ३. सुषेण, ४. करमर्दक- ये चार पुल्लिङ्ग नाम करोदा 'करवन' के हैं॥६७॥

कालस्कन्धस्तमालः स्यात्तापिच्छोऽपि

1. M. पर्णेस्य 2. The sriparna tree [5] 3. The kutaja tree [4] 4. The indrayava tree [3] 5. M. सेनास्य 6. A kind of tree bearing small sour fruits [4]

कृष्णमित्रटीका :- ताम्यति तमालः। तमिविशिभ्यां कालन् (उ. १. ११८)। तापितं छादयति। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। तमाल (स्य)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. कालस्कन्ध, २. तमाल, ३. तापिच्छ- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम तम्बाकू के हैं।

अथ सिन्दुकः।

सिन्दुवारेन्द्रसुरसौ निर्गुण्डीन्द्राणिकेत्यपि॥६८॥

कृष्णमित्रटीका :-स्यन्दे सिन्दुः। सिन्दुं वृणोति। शोभनो रसोऽस्य[2]। इन्द्रस्य सुरसः। निर्गुडति। 'गुड रक्षायाम्' (तु. प. से.)। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। इन्द्रस्येयमिद्राणी। 'मेउड़ी' (लोके)॥६८॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. सिन्दुक, २. सिन्दुवार, ३. इन्द्रस्य सुरसः, ४. निगुण्डी, ५. इन्द्राणिका- ये पाँच नाम सिन्धुआर के हैं, इनमें प्रथम तीन पुल्लिङ्ग तथा शेष दो स्त्रीलिङ्ग नाम हैं॥६८॥

वेणी खरा गरी देवताडो जीमूत इत्यपि।

कृष्णमित्रटीका :- वेणीव वेणी। खरा तीक्ष्णत्वात्। गिरति। 'गरागरी' इत्यन्ये पेठुः। देवमिन्द्रं ताडयति। जीमूत इव। देवदालीखेरपसावत्फला व्रततिः (?)। 'वंदाल' (लोके)।[4]

हिन्दी अर्थ :- १. वेणी, २. खरा, ३. गरी, ४. देवताड, ५. जीमूत- ये पाँच नाम 'देवताल' अर्थात्= 'बन्दाली', एक तरह के गुजराती वृक्ष के हैं, इनमें प्रथम तृतीय स्त्रीलिङ्ग और शेष द्वितीय पुल्लिङ्ग हैं।

श्रीहस्तिनी तु भूरुण्डी

कृष्णमित्रटीका :- श्रिया हस्तो विद्यतेऽस्याः[5]। भुवं रुण्डयत्याच्छादयति। 'हथिकन' (लोके)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. श्रीहस्तिनी, २. भूरुण्डी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम एक तरह के शाक विशेष के हैं।

तृणशून्यं तु मल्लिका॥६९॥

भूपदी शीतभीरुश्च

कृष्णमित्रटीका :- तृणशूले गुल्मे साधु। 'मल्ल धारणे' (भ्वा. आ. से.)॥६९॥ भुवि पदमस्याः। शीताद्भीरुः। 'मालती मल्लिका वेल्लि'॥[7]

1. The tamala tree which has a very dark bark [3] 2. M. रसोस्य 3. The sinduvara tree [5] 4. The vandala tree [5] 5. M. विद्यतेस्यः 6. Sunflower [2] 7. The jasmine plant [3]

हिन्दी अर्थ :-१. तृणशून्यं, २. मल्लिका॥६९॥, ३. भूपदी, ४. शीतभीरु- ये चार नाम छोटी वेला के हैं। जिनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग शेष स्त्रीलिङ्ग हैं।

सैवास्फोता वनोद्भवा।

कृष्णमित्रटीका :- आस्फोटयत्यास्फोता। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। 'वनवेल्लि' ॥[1]

हिन्दी अर्थ :- आस्फोता- यह एक स्त्रीलिङ्ग जंगली वेला का है।

शेफालिका तु सुवहा निर्गुण्डी नीलिका च सा॥७०॥

कृष्णमित्रटीका :- शेरते शेफाः, अलयो यस्य। सुष्ठु वहति। निलिका पर्णेन॥७०॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. शेफालिका, २. सुवहा, ३. निर्गुण्डी, ४. नीलिका- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम काली नेवारी के हैं॥७०॥

सितासौ श्वेतसुरसा भूतवेशी

कृष्णमित्रटीका :- शोभनो रसोऽस्याः[3]। भूतानि विशति। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१. श्वेतसुरसा, २. भूतवेशी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम सफेद फूलवाली नेवारी के हैं॥

अथ मागधी।

गणिकायूथिकाम्बष्ठा

कृष्णमित्रटीका :- मगधेषु भवा। गणिकेव गणिका। यूथमस्त्यस्याः। अम्बेव मातेव तिष्ठति। 'जूही' (लोके)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. मागधी, २. गणिका, ३. यूथिका, ४. अम्बष्ठा- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम जूही के हैं।

सा पीता हेमपुष्पिका॥७१॥

कृष्णमित्रटीका :- हेमवत्पुष्पमस्याः। एकम्॥[6]

हिन्दी अर्थ :- हेमपुष्पिका- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम पीले फूलवाली जूही का है॥७१॥

अतिमुक्तः पुण्ड्रकः स्याद्वासन्ती माधवी लता।

1. **A wild variety of the jasmine plant** [3] 2. **The sephalika plant** [4] 3. M. रसोस्या 4. **White sephalika** [1] 5. **A kind of jasmine** [4] 6. **A kind of jasmine** [2]

कृष्णमित्रटीका :- अतिक्रान्तो मुक्ताम्। पुण्ड्यते पुण्ड्रः। पुडि खण्डने (भ्वा. प. से.)। वसन्ते पुष्प्यति। मधौ पुष्प्यति। 'माधवी' (इति ख्यातः)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. अतिमुक्त, २. पुण्ड्रक, ३. वासन्ती, ४. माधवी, ५. लता- ये पाँच नाम वसन्त ऋतु में फूलने वाले कुन्द विशेष या माधवी के हैं, इनमें प्रथम दो नाम पुल्लिङ्ग तथा शेष स्त्रीलिङ्ग हैं।

सुमना मालती जातिः

कृष्णमित्रटीका :- शोभनं मनोऽस्याम्[2]। मां लतति। जायते जातिः। क्तिजन्तान्ङीष्। 'चंबेइलि' (चमेली) (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. सुमना, २. मालती, ३. जाति- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम चमेली के हैं।

सप्तला नवमालिका ॥७२॥

कृष्णमित्रटीका :- सप्त मनो बुद्धीन्द्रियाणि लाति। नवा स्तुल्या मालाऽस्याः[4]। 'नेवारी' (लोके)॥७२॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. सप्तला, २. नवमालिका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम वसन्ती नेवारी के हैं॥७२॥

माघ्यं कुन्दम्

कृष्णमित्रटीका :- माघे भवम्। माघ्यम्। कुं भुवं द्यति। 'कुन्द' (स्य)॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१. माघ्यम्, २. कुन्दम्- ये दो नाम कुन्द के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग तथा द्वितीय पुल्लिङ्ग नाम हैं।

रक्तकस्तु बन्धूको बन्धुजीवकः।

कृष्णमित्रटीका :- रक्तपुष्पकत्वाद् रक्तकः। बध्नाति चित्तं बन्धूकः। 'उलूकादयश्च' (उ. ४. ४१) इति साधुः। बन्धुर्जीवानाम्। 'दुपहरिआ' (लोके)॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. रक्तक, २. बन्धूक, ३. बन्धुजीवक- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम (दोपहरी) दुपहरिया नामक पुष्पवृक्ष के हैं।

1. **Madhavi or spring creeper with fragrant flowers** [2] 2. M. मनोस्यां 3. **Cameli, a kind of jasmine plant** [3] 4. M. मालास्या 5. Navamalika, a kind of jasmine [2] 6. Kunda, a kind of jasmine bearing white and delicate flowers [2] 7. Bandhuka, a flower plant bearing red flowers [3]

सहा कुमारी तरणिः

कृष्णमित्रटीका :- सहते सहा। कुमारीव कुमारी। तरन्त्यनया। 'अर्तिसृ-' (उ. २. १०२) इत्यनिः। 'गुलाब' लोके। 'शतपत्री' त्वस्यैवभेदः। 'सेवती' लोके॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१. सहा, २. कुमारी, ३. तरणि - ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम घी कुआर के हैं।

अम्लानस्तु महासहा॥७३॥

कृष्णमित्रटीका :- म्लाययति। 'कटसरैआ' (लोके)॥७३॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. अम्लान, २. महासहा- ये दो नाम कटसरैया के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग तथा द्वितीय स्त्रीलिङ्ग हैं॥७३॥

तत्र शोणे कुरबकः

कृष्णमित्रटीका :- शोणे रक्ते तस्मिन्। कुत्सितोखोऽत्र[3]॥ (एकम्)[4]

हिन्दी अर्थ :- कुरबक- यह एक पुल्लिङ्ग नाम लाल फूलवाली कटसरैया के हैं।

तत्र पीते कुरण्टकः[5]

कृष्णमित्रटीका :- कौ रम्यते कुरण्टकः॥[6]

हिन्दी अर्थ :- कुरण्टक- यह एक पुल्लिङ्ग नाम पीले फूलवाली कटसरैया का है।

नीला झिण्टी द्वयोर्वाणा दासो चार्तगलश्च सा॥७४॥

कृष्णमित्रटीका :- नीलपुष्पा सा। झिण्टी। 'झिम्' रटति। वण्यते वाणा। 'वण शब्दे' (भ्वा. प. से.)। दास्यते दासी। 'दसु उपक्षये' (दि. प. से.)। आर्तः क्षीणो गलति॥७४॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. वाणा, २. दासी, ३. आर्तगल- ये तीन नाम काली कटसरैया के हैं, इनमें एक पुंल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग और द्वितीय स्त्रीलिङ्ग है तथा तृतीय पुंल्लिङ्ग हैं॥७४॥

सैरेयकस्तु झिण्टी स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- सीरे भवः। झिण्टीमात्रस्येदम्॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. सैरीयक, २. झिण्टी- ये दो नाम कटसरैया के हैं, इनमें प्रथम पुंल्लिङ्ग, और द्वितीय स्त्रीलिङ्ग हैं।

तस्मिन् कुरवकोऽरुणे।

कृष्णमित्रटीका :- तस्मिन् सैरेयके॥[1]

हिन्दी अर्थ :- कुरवक- यह एक पुल्लिङ्ग नाम लाल कटसरैया का है।

पीता कुरण्टको झिण्टी तस्मिन्सहचरी द्वयोः॥७५॥

कृष्णमित्रटीका :- पीता झिण्टी कुरण्टकः। तस्मिन् सैरेयके॥७५॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. कुरण्ट, २. सहचरी पीले कटसरैया की सहचरी कहते हैं - यह स्त्रीलिङ्ग पुल्लिङ्ग में प्रयुक्त होता है।

ओड्रपुष्पं जपापुष्पम्

कृष्णमित्रटीका :- आ ईषदुनत्ति, ओड्रम्। उन्दी (रु. प. से.) 'स्फायि-' (उ. २. १३) इति रक्। दस्य डः। ओड्रं पुष्पमस्य। जपतीति जपा 'अढ़हुल' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. ओड्रपुष्पम्, २. जपा- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम अढ़हुल के हैं।

वज्रपुष्पं तिलस्य यत्।

कृष्णमित्रटीका :- वज्रमिव पुष्पं तिलस्य पुष्पम्। एकम्।[4]

हिन्दी अर्थ :- १. वज्रपुष्पं- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम तिल के फूल का है।

प्रतीहासशतप्रासचण्डातहयमारकाः॥७६॥

करवीरे

कृष्णमित्रटीका :- प्रतीतो हासो विकासः। शतं प्रास्यति। हयानां मारकः॥७६॥ करं वीरयति। 'कण्डइल' (लोके)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रतीहास, २. शतप्रास, ३. चण्डात, ४. हयमारक॥७६॥, ५. करवीर- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम कनइल पुष्प वृक्ष के हैं॥

---

1. The aloc plant [3] 2. The amaranth plant [2] 3. M. खोत्र 4. The red species of amaranth [1] 5. B. reads कुरुण्टकः 6. The yellow species of amaranth [1] 7. The blue species of amaranth [3] 8. Amaranth (in general) [2]

1. Red amaranth [1] 2. Yellow amaranth [2] 3. China rose [2] 4. The flower of sesamum [1] 5. The karavira (kandayil) plant [5]

करीरे तु क्रकरग्रन्थिलावुभौ।

कृष्णमित्रटीका :- करिण ईरयति। क्रेति करोति क्रकरः॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. करीर, २. क्रकर, ३. ग्रन्थिल - ये तीन पुल्लिङ्ग नाम करील वृक्ष के हैं।

उन्मत्तः कितवो धूर्तो धत्तूरः कनकाह्वयः॥७७॥ मातुलो मदनश्च

कृष्णमित्रटीका :- उन्मत्तयति। कितवाः सन्त्यस्य। 'धुर्वी हिंसायाम्' (भ्वा. प. से.)। धूर्तः। धयति धातून् धत्तूरः। कनकमाह्वयोऽस्य[2]॥७७॥ मा नास्ति तुलाऽस्य[3]। मदयति। 'धतूर' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. उन्मत्त, २. कितव, ३. धूर्त, ४. धत्तूर, ५. कनकाह्वय॥७७॥, ६. मातुल, ७. मदन- ये सात पुल्लिङ्ग नाम धतूरे के हैं।

अस्य फले मातुलपुत्रकः।

कृष्णमित्रटीका :- मातुलस्य पुत्र इव। धत्तूरफल (स्य)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- मातुलपुत्रक- यह एक पुल्लिङ्ग नाम धतूरे के फल का हैं।

फलपूरो बीजपूरः रुचको मातुलुङ्गके॥७८॥

कृष्णमित्रटीका :- फलेन पूर्यते। बीजेन पूर्यते। रोचते रुचकः। मातुलमुङ्गति। 'उगि वर्जने' (?)। शकन्ध्वादिः। 'विजउरा' (लोके)॥७८॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. फलपूर, २. वीजपूर, ३. रुचक, ४. मातुलुङ्गक- ये चार पुंल्लिङ्ग नाम बिजौरा नीबू के हैं॥७८॥

समीरणो मरुवकः प्रस्थ पुष्पः फणिज्जकः। जम्बीरोऽपि

कृष्णमित्रटीका :- समीरयति। मरौ वाति। क्वुन् (उ. २. ३२)। प्रस्थे सानौ पुष्प्यति। फणीव उज्झको वर्जकोऽस्य[7]। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। जम्यते जम्बीरः। 'मरुआ' (इति ख्यातः)॥[8]

1. **Karira, a thorny plant growing in deserts** [2] 2. M. कनकमाह्वयोस्य 3. M. तुलास्य 4. The dhatura tree [5] 5. **The fruit of a dhatura tree** [1] 6. **Vijapura (vijaura) a common citron tree** [4] 7. M. वर्जकोस्य 8. **A strong fragrant plant** [5]

हिन्दी अर्थ :- १. समीरण, २. मरुवक, ३. प्रस्थपुष्प, ४. फणिज्जक, ५. जम्बीर- ये पाँच पुंल्लिङ्ग नाम मरुवा (खाद्यान्न विशेष) के हैं।

अथ पर्णासे कठिंजरकुठेरकौ॥७९॥

संसकृत टीका :- पर्णान्यस्यति। कठिनं जारयति। कुठ प्रतिघाते (भ्वा. प. से.) कुठेरकः। कृष्णपत्रा 'ममरी'॥७९॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. पर्णास, २. कठिञ्जर, ३. कुठेरक- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम पर्णास के हैं॥७९॥

सितेऽर्जकोऽत्र

कृष्णमित्रटीका :- अर्जयति। श्वेतपत्रा 'ममरी'॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१. अर्जक- यह एक पुल्लिङ्ग नाम सफेद पर्णास का है।

पाठी तु चित्रको वह्निसंज्ञकः।

कृष्णमित्रटीका :- पाठोऽस्यास्ति[3]। चित्तं बुद्धिं त्रायते। 'चीत' (चीता) (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. पाठी, २. चित्रक, ३. वह्निसंज्ञक- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम चीता के हैं।

अर्काह्वसुकास्फोतगणरूपविकीरणाः॥८०॥ मन्दारश्चार्कपर्णो

कृष्णमित्रटीका :- अर्कमाह्वा यस्य। वसतीति वसुः। 'शृस्वृ-' (उ. १. १०) इत्युः। ततः कः। आस्फोटयति। गणा बहूनि रूपाण्यस्य। विकीरयति॥८०॥ मन्दा आराऽस्य[5]। अर्कभानि पत्राण्यस्य। 'मन्दार (स्व)'॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. अर्काह्व, २. वसुक, ३. आस्फोट, ४. गणरुप, ५. विकीरण॥८०॥, ६. मन्दार, ७. अर्कपर्ण- ये सात पुल्लिङ्ग नाम आक (मन्दार) के हैं।

अत्र शुक्लेऽलर्कप्रतापसौ।

कृष्णमित्रटीका :- अल भूषणे (भ्वा. प. से.) अल् चासावर्कश्च। प्रकृष्टः तापसः। श्वेतमन्दार (स्य)॥

हिन्दी अर्थ :-१. अलर्क, २. प्रतापस- ये दो पुल्लिङ्ग नाम फूलवाले आक के हैं॥

1. **The panasa tree bearing black leaves** [1] 2. **The parnasa tree with white leaves** [1] 3. **The Citraka tree** [3] 4. M. आरास्य 5. **Arka, a medicinal plant** [7] 6. **The arka bearing white flowers** [2]

शिवमल्ली पाशुपत एकाष्ठीलो वुको वसुः ॥८१॥

कृष्णमित्रटीका :- शिवप्रिया मल्ली। पशुपतेरयम्। एकोष्ठीलो मज्जास्त्यस्य। वाति वुकः। 'वक' इत्यन्ये। वसति वसुः। 'वकहल' 'बहहौलशिरी' इति च॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. शिबमल्ली, २. पाशुपत, ३. एकाष्ठील, ४. वुक, ५. वसु- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम गुम्मा के हैं॥८१॥

वन्दा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीवन्तिकेत्यपि।

कृष्णमित्रटीका :- वन्द्यते वृन्दा। वृक्षमत्ति। वृक्षे रोहति। जीवति जीवन्ती। 'रुहिनन्दि-' (उ. ३. १२७) इति झच्। 'बांदा' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. वन्दा, २. वृक्षादनी, ३. वृक्षरुहा, ४. जीवन्तिका- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम बन्दा के हैं।

वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची तन्त्रिकाऽमृता ॥८२॥
जीवन्तिका सोमवल्ली विशल्या मधुपर्ण्यपि।

कृष्णमित्रटीका :- वत्सैरद्यते। छिन्ना रोहति। गुडति रक्षति। बाहुलकादूचट्। तन्त्रयति। 'तत्रि कुटुम्बधारणे' (चु. उ. से.)॥८२॥ विगतं शल्यमस्याः। मधुमयानि पर्णान्यस्याः। 'गुरुचि' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. वत्सादनौ, २. छिन्नरुहा, ३. गुडूची, ४. तन्त्रिका, ५. अमृता॥८२॥, ६. जीवन्तिका, ७. सोमवल्ली, ८. विशल्या, ९. मधुपर्णी- ये नौ स्त्रीलिङ्ग नाम गुरुच के हैं॥

मूर्वादेवी मधुरसा मोरटा तेजनी स्रवा॥८३॥
मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्यपि।

कृष्णमित्रटीका :- मूर्वति। 'मूर्वी बन्धने' (भ्वा. प. से.)। मुरति मोरटा। 'मुर संवेष्टने' (तु. प. से.)। 'शकादि-भ्योऽटन्[4]' (उ. ४. ८१)। तेजति तेजनी। स्रवति॥८३॥ मधु लाति। 'अन्येषामपि-' (६. ३. १३७) इति दीर्घः। मधुनः श्रेणिरत्र। गोः कर्ण इव। पीलोरिव पर्णान्यस्याः। 'चिह्नारु' (लोके)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. मूर्वा, २. देवी, ३. मधुरसा, ४. मोरटा, ५. तेजनी, ६. स्रुवा॥८३॥, ७. मधूलिका, ८. मधुश्रेणी, ९. गोकर्णी, १०. पीलुपर्णी-ये दस स्त्रीलिङ्ग नाम मूर्वा के हैं॥

पाठाऽम्बष्ठा विद्धकर्णी स्थापनी श्रेयसी रसा॥८४॥
एकाष्ठीला पापचेली प्राचीना वनतिक्तिका।

कृष्णमित्रटीका :- पाठ्यते पाठा। विद्धौ कर्णौ यया। स्थापयति। अतिप्रशस्तः। रसोऽस्त्यस्याः[1]॥८४॥ पापे चलति। पचादौ 'चेलट्' इति निपातितः। प्राचि भवा। वने तिक्ता। पाठी (पाठा) (इति ख्याता)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. पाठा, २. अम्बष्ठा, ३. विद्धकर्णी, ४. स्थापनी, ५. श्रेयसी, ६. रसा॥८४॥, ७. एकाष्ठीला, ८. पापचेली, ९. प्राचीना, १०. वनतिक्तिका - ये दस स्त्रीलिङ्ग नाम पाठा या पाढ़र के हैं।

कटुः कटंभराऽशोकरोहिणी कटुरोहिणी॥८५॥
मत्स्यपित्ता कृष्णभेदी चक्राङ्गी शकुलादनी।

कृष्णमित्रटीका :- कटति कटुः। 'कटे वर्षादौ' (भ्वा. प. से.)। 'शृस्तृ-' (उ. १. १०) इत्युः। कटं भरति। अशोकं रोहयति। कटुश्चासौ रोहिणी च॥८५॥ मत्स्यानां पित्तमिव। कृष्णो भेदश्छेदोऽस्याः[3]। चक्रवदङ्गमस्याः। शकुलैरद्यते। 'कुटुकी' (कुटकी) (इति ख्याता)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. कटु, २. कटंवरा, २. अशोकरोहिणी॥८५॥, ३. कटुरोहिणी, ४. मत्स्यपित्ता, ५. कृष्णभेदी, ६. चक्राङ्गी, ७. शकुलादनी- ये सात स्त्रीलिङ्ग नमा कुटकी के हैं।

आत्मगुप्ताऽजहाव्यङ्गा[5] कण्डूरा प्रावृषायणी॥८६॥
ऋष्यप्रोक्ता शूकबिम्बिः कपिकच्छुश्च मर्कटी।

कृष्णमित्रटीका :- आत्मना गुप्ता। न जहाति शूकानजहा। 'जहाजडा' इति चान्ये। कण्डूं राति। प्रावृषि भवा॥८६॥ ऋष्यैर्मृगैः प्रोक्ता। शूकयूक्ता शिम्बिः। कपीनां कच्छूः। मर्कटीव। केवाछ (केवाच) (लोके)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. आत्मगुप्ता, २. अजहा, ३. अव्यण्डा, ४. कण्डूरा, ५. प्रावृषायणी॥८६॥, ६. ऋष्यप्रोक्ता, ७. शूकशिम्बि, ८. कपिच्छुः, ९. मर्कटी- ये नौ स्त्रीलिङ्ग नाम केवांच के हैं॥

1. The vuka (bakahala) tree [5] 2. A parasitical plant, a kind of pot herb [4] 3. The guduci (guruci) plant [9] 4. M. शकादिभ्योटन् 5. The murva creeper [10]

1. M. रसोस्त्यस्याः 2. The patha plant [10] 3. M. भेदश्छेदोस्याः 4. The kutaki plant [8] 5. B reads आत्मगुप्ता जडाऽव्यण्डा 6. The markati (kenvaca) tree [9]

चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी द्रवन्ती शम्बरी वृषा॥८७॥
प्रत्यक् श्रेणि सुतश्रेणी चण्डा मूषिकपर्ण्यपि।

कृष्णमित्रटीका :- चित्रं रूपमत्स्यस्याः। उपगता चित्रम्। न्यग् रोहति। द्रवति। शं वृणोति। वर्षति वृषा॥८७॥[1] प्रतीची रेणी यस्याः। सुतानां श्रेणिरस्याः। मूषिकः पर्णमस्याः। 'मूसाकानी' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. चित्रा, २. उपचित्रा, ३. न्यग्रोधी, ४. द्रवन्ती, ५. शंवरी, ६. वृषा॥८७॥, ७. प्रत्यक्श्रेणी, ८. सुतश्रेणी, ९. रण्डा, १०. मूषिकपर्णी- ये दस स्त्रीलिङ्ग नाम मूसाकर्णी के हैं।

अपामार्गः शैखरिको धामागर्वमयूरकौ॥८८॥
प्रत्यक्पर्णी कीशवर्णी किणिहीखरमञ्जरी।

कृष्णमित्रटीका :- अपमार्जन्त्यनेन। शिखरे प्रायेण भवति। अधममार्ग वाति धामागर्वः। मयूर प्रति-कृतिः॥८८॥ प्रत्यञ्चि पर्णान्यस्याः। कीशवत्पर्णान्यस्याः। 'केशपर्णी' इत्यन्ये। किणिनो जिहीते। खरा मञ्जरिरस्याः। 'चिचिह्ला' (चिचिढ़ा) (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१. अपामार्ग, २. शैखरिक, ३. धामार्गव, ४. मयूरक॥८८॥, ५. प्रत्यक्पर्णी, ६. कीशपर्णी, ७. किणिह्रो, ८. खरमञ्जरी- ये आठ नाम चिचिढ़ा के हैं। इनमें एक से चार पुल्लिङ्ग और पाँच से आठ स्त्रीलिङ्ग हैं।

हञ्जिका ब्राह्मणी पद्मा भार्गी ब्राह्मणयष्टिका॥८९॥
अङ्गारवल्ली बालेयशाकवर्वरवर्धकाः।

कृष्णमित्रटीका :- हन्ति रोगं हञ्जी। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। ब्राह्मणी, पवित्रत्वात्। पद्मा ततुल्यत्वात्। भर्गोऽस्त्यस्याः[4]। ब्राह्मणस्य यष्टिरिव॥८९॥ अङ्गारवद् वल्ल्यस्याः बालेयशाको गर्दभयोग्यत्वात्। बर्वर्ति। वृञ् (स्वा. उ. से.) यङ्लुगन्तः। 'वृधु[5] छेदने' (स्वा. आ. से.)। वर्धकः। ''बभनेटी'' (लोके)॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१. हञ्जिका, २. ब्राह्मणी, ३. पद्मा, ४. भार्गी, ५. ब्राह्मणयष्टिका॥८९॥, ६. अङ्गारवल्ली, ७. बालेयशाक, ८. वर्वर, ९. वर्धक- ये नो नाम भारङ्गी के हैं इनमें एक से छः स्त्रीलिङ्ग और सात से नो पुल्लिङ्ग हैं।

1. **B. reads** रण्डा 2. **The Musikaparni (musakani) plant** [10] 3. **The apamarga plant** [8] 4. M. भर्गोस्त्यस्याः 5. M. बन्धु 6. **The bhargi plant** [9]

मञ्जिष्ठा विकपाजिङ्गी समङ्गा कालमेषिका॥९०॥
मण्डूकपर्णी भण्डीरी भण्डी योजनवल्ल्यपि।

कृष्णमित्रटीका :- मञ्जौ शोभने वर्णे तिष्ठति। विकषति। 'कषहिंसायाम्' (भ्वा. प. से.) 'जिगि गतौ' (?)। सम्यगङ्गान्यस्याः। काले मिष्यते शब्द्यते॥९०॥ मण्डूक वत्पर्णमस्याः। भण्ड्यते भण्डी। योजनगामिनी वल्ली 'मजीठ' (लोके)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. मञ्जिष्ठा, २. विकसा, ३. जिङ्गो, ४. समङ्गा, ५. कालमेशिका॥९०॥, ६. मण्डूक-पर्णी, ७. भण्डीरी, ८.भण्डी, ९. योजनवल्ली- ये नो स्त्रीलिङ्ग नाम मंजीठ के हैं।

यासो यवासो दुःस्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः॥९१॥
रोदनी कच्छुराऽनन्ता समुद्रान्ता दुरालभा।

कृष्णमित्रटीका :- 'यसु प्रयत्ने' (दि. प. से.)। घञ् (३. ३. १८)। यासः। यवान् स्यति। दुःस्पर्शः कण्टकित्वात्। धन्वनो यासः मरुभवत्वात्। कुंनाशयति॥९१॥ रोदयति। कच्छुं राति। न अन्तोऽस्याः।[2] समुद्रान्तोऽस्यस्याः[3]। दुःखेनालभ्यते[4]। 'यवासा' (इति ख्यातः)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. यास, २. यवास, ३. दुःस्पर्श, ४. धन्वयास, ५. कुनाशक॥९१॥, ६. रोदनी, ७. कच्छुरा, ८. अनन्ता, ९. समुद्रान्ता, १०. दुरालभा- ये दस नाम जवासा के हैं, इनमें एक से पाँच पुल्लिङ्ग और छः से दस स्त्रीलिङ्ग हैं।

पृश्निपर्णी पृथक्पर्णी चित्रपर्ण्यङ्घ्रिवर्णिका॥९२॥
क्रोष्टुविन्ना सिंहपुच्छी कलशिर्धावनिर्गुहा।

कृष्णमित्रटीका :- पृश्निरल्पं पर्णमस्याः। पृथग्सक्तं पर्णमस्याः। अङ्घ्रेरारभ्य पर्णमस्याः॥९२॥ क्रोष्टुभिर्विन्ना दत्तेव। कलं श्यति। धावति। बाहुल-कादनिः। 'धाऊपात' इति 'विथवनि' (पिठिवनि) इति च॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. पृश्निपर्णी, २. पृथक्पर्णी, ३. चित्रपर्णी, ४. अङ्घ्रिवल्लिका॥९२॥, ५. क्रोष्टुविन्ना, ६. सिंहपुच्छी, ७. कलशि, ८. धावनि, ९. गुहा- ये आठ स्त्रीलिङ्ग नाम पिठिवन के हैं।

1. **The manjistha (madder) creeper** [8] 2. M. अन्तोस्याः 3. M. समुद्रान्तोस्त्यस्याः 4. M. दुख्खेणा-लभ्यते 5. **The yavasa grass or creeper** [10] 6. **The simhapucchi (pithvana) plant** [9]

निदिग्धिका स्पृशी व्याघ्री बृहती कण्टकारिका॥९३॥
प्रणोदनी[1] कुली क्षुद्रा दुःस्पर्शा राष्ट्रिकेत्यपि।

कृष्णमित्रटीका :- निदिह्यते। 'दिह उपचये' (अ. उ. अ.)। कृः (३. २. १०२)। स्पृशति स्पृशी। व्याजिघ्रति। 'वृह वृद्धौ' (भ्वा. प. अ.)। बृहती। कण्टकानिर्यति। 'ऋ गतौ' (जु. प. अ.)॥९३॥ प्रणोदयति। 'प्रतोदनी' इति पाठान्तरम्। कोलति। 'कुल संस्त्याने' (भ्वा. प. से.)। 'कुणी' इति पाठान्तरम्। क्षुणत्ति क्षुद्रा। 'स्फायि-' (उ. २. १३) इति रक्। राष्ट्रमस्त्यस्याः। 'भटकटैआ' (लोके)।[2]

हिन्दी अर्थ :- १. निदिग्धिका, २. स्पृशी, ३. व्याघ्री, ४. बृहती, ५. कण्टकारिका॥९३॥, ६. प्रचोदनी, ७. कुली, ८. क्षुद्रा, ९. दुःपर्शा, १० राष्ट्रिका- ये दस स्त्रीलिङ्ग नाम भटकटैया के हैं।

नीली काला क्लीतकिका ग्रामीणा मधुपर्णिका॥९४॥
रञ्जनी श्रीफली तुत्था द्रोणी दोला च नीलिनी।

कृष्णमित्रटीका :-नीली वर्णेन। एवं काला। क्लीतकम्। क्रयोऽस्त्यस्याः[3]। ग्रामे भवा। मधुराणि पर्णान्यस्याः॥९४॥ रञ्जयति रञ्जनी। श्रीवतमलमस्याः। 'तुत्थ आवरणे'। तुथते। 'तुच्छा' इति पाठान्तरम्। द्रवति द्रोणी। 'बहिश्रि-' (उ. ४. ५१) इति निः। 'तूणी' इत्यन्ये। मेलयति मेला। 'दोलो' इत्यन्ये। नीलो पर्णोस्त्यस्याः[4]। 'नील' (इति ख्यातः)॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१. नीली, २. काला, ३. क्लीतकिका, ४. ग्रामीणा, ५. मधुपर्णिका॥९४॥, ६. रञ्जनी, ७. श्रीफली, ८. तुत्था, ९. द्रोणी, १०. दोला, ११. नीलिनी- ये ग्यारह स्त्रीलिङ्ग नाम नील के हैं।

अवल्गुजः सोमराजी सुवल्लिः सोमवल्लिका॥९५॥
कालमेषी कृष्णफला वाकुची पूतिफल्यपि।

कृष्णमित्रटीका :- अवल्गोरशोभनाज्जातः। सोम इव राज्यस्य। शोभना वल्ल्यस्याः। सोमस्य वल्लिः॥९५॥ कालं मिषति। 'मिष स्पर्धायाम्' (तु. प. से.)। वातं सङ्कोचयति वाकुची। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। पूतिः गन्धः फलेष्वस्याः। 'वकुची' (लोके)॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१. अवल्गुज, २. सोमराजी ३. सुवल्लि, ४. सोमवल्लिका॥९५॥, ५. कालमेषो, ६. कृष्णफला, ७. वाकुची, ८. पूतिफली- ये आठ नाम बाकुचा के हैं इनमें एक और दो पुल्लिङ्ग और शेष छः स्त्रीलिङ्ग हैं।

कृष्णोपकुल्या वैदेही मागधी चपला कणा॥९६॥
उषणा पिप्पली शौण्डी कोला

कृष्णमित्रटीका :- कृष्णा वर्णेन। उपगता कुल्याम्। विदेहेषु भवा। मगधेषु भवा। चपति। 'चप सान्त्वने' (भ्वा. प. से.)। कणति। 'कण शब्दे' (भ्वा. प. से.)॥९६॥ 'ऊष[1] रुजायाम्' (भ्वा. प. से.) ऊषणम्। पिपर्ति पिप्पली। शुण्डायां मद्यपानगृहे भवा। कोलति। 'पीपरि' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. कृष्णा, २. उपकुल्या, ३. वैदेही, ४. मागधी, ५. चपला, ६. कणा॥९६॥, ७. उषणा, ८. पिप्पलो, ९. शौण्डी, १०. कोला- ये दस स्त्रीलिङ्ग नाम पिप्पली (पीपरि) के हैं।

अथ करिपिप्पली।

कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसीवसिरः[3] पुमान्॥९७॥

कृष्णमित्रटीका :- करिपिप्पली बृहत्त्वात्। कपिरिव वल्ली। कोल इव वल्ली। वस्ते वसिरः। 'गजपीपरि' (लोके)॥९७॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. करिपिप्पली, २. कपिवल्ली, ३. कोलवल्ली, ४. श्रेयसी, ५. वशिर- ये पाँच नाम गजपीपरि के हैं इनमें चार स्त्रीलिङ्ग और एक पुल्लिङ्ग हैं॥८७॥

चव्यं तु चविका

कृष्णमित्रटीका :- चर्व्यते चव्यम्। 'चाव' (इति ख्यातम्)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. चव्यम्, २. चविका, ये दो नाम चाम (चव्य) के हैं। इनमें एक नपुंसकलिङ्ग दूसरा स्त्रीलिङ्ग हैं। चन्द्रनन्दन के मत में ये दोनों नाम भी पूर्वान्वयी हैं। अतः 'तु' के स्थान पर 'च' पढ़ना चाहिए।

काकचिञ्चीगुञ्जे तु कृष्णला।

---

1. K and B. read प्रचोदनी 2. The kantakarika (bhatakataiya) plant [10] 3. M. क्रयोस्त्यस्याः 4. M. नीलो पर्णोस्त्यस्याः 5. The nili or indigo plant [11] 6. The vakuci (vakuci) plant [10]

1. M. उष्, 2. Pippali or long pepper [10] 3. B. reads वशिरः 4. Ganjapippali [5] 5. Cavya (Cabha) [2]

कृष्णमित्रटीका :- काकवर्णा चिञ्चा। गौरादिः (४. १. ४१)। गुञ्जति गुञ्जा। कृष्णं वर्णं लाति। 'घुंघुची' (लोके)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. काकचिञ्चा सभी ने गौरादि मानकर 'ई' कारान्त पढ़ा है। २. गुञ्जा, ३. कृष्णवर्णा- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम गुजा के हैं।

पलंकषा त्विक्षुगन्धा श्वदंष्ट्रा स्वादुकण्टकः॥९८॥
गोकण्टको गोक्षुरको वनशृंगार इत्यपि।

कृष्णमित्रटीका :- पलं मासं कषति। इक्षोरिव गन्धोऽस्याः[2]। शुनो दंष्ट्रेव। संज्ञापूर्वकत्वान्न वृद्धिः। स्वादुः कण्टकोऽस्य॥९८॥ गोः पृथिव्याः कण्टकः। गां क्षुरति। 'गुखुल' (गोखुरु लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. पलङ्कष, २. इक्षुगन्धा, ३. श्वदंष्ट्रा, ४. स्वादुकण्टक॥९८॥, ५. गोकण्टक, ६. गोक्षुरक, ७. वनशृंगाट- ये सात नाम गोखरू के हैं, इनमें एक से तीन स्त्रीलिङ्ग, शेष पुल्लिङ्ग हैं।

विश्वा विषा प्रतिविषातिविषोपविषारुणा॥९९॥
शृङ्गी महौषधं च

कृष्णमित्रटीका :- विशति विश्वा। वेवेष्टि। प्रतीपं विषमस्याः। अरुणो वर्णेन॥९९॥ 'शृ हिंसायाम्' (क्र्या. प. से.)। महदौषधम्। 'अतीस' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १ विश्वा, २. विषा, ३. प्रतिविषा, ४. अतिविषा, ५. उपविषा, ६. अरुणा, ७. शृंगी, ८. महौषधम्- ये आठ नाम अतांस के है, इनमें प्रथम सात स्त्रीलिङ्ग है, और आठवाँ नपुंसकलिङ्ग हैं।

अथ क्षीरावीदुग्धिके[5] समे।

कृष्णमित्रटीका :- क्षीरमवति। दुग्धमस्त्यस्याः। 'दूधी' (लोके)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. क्षीरावी, २. दुग्धिका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम दुधिया घास के हैं।

शतमूली बहुसुताऽभीरुरिन्दीवरी वरी॥१००॥
ऋष्यप्रोक्ताऽभीरुपत्री नारायण्यः शतावरी।
अहेरुः

संस्कृत टीका:- न भीरुः। इन्दीवरमस्त्यस्याः। वृणोति वरी॥१००॥ ऋष्यैः प्रोक्ता। अभीरुणि पत्राण्यस्याः। नारायणाज्जाता। शतेनावृणोति। न हिनोति। 'शतावरि' (इति ख्याता)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. शतमूली, २. बहुसुता, ३. अभीरु, ४. इन्दीवरी, ५. वरी॥१००॥, ६. ऋष्यप्रोक्ता, ७. अभीरुपत्री, ८. नारायणी, ९. शतावरी, १०. अहेरु- ये दस स्त्रीलिङ्ग नाम शतवार के हैं।

अथ पीतद्रु कालीयकहरिद्रवः॥१०१॥
दार्वी पचंपचा दारुहरिद्रा पर्जनीत्यपि।

कृष्णमित्रटीका :- कलेरयम्। हरिः पीतो द्रुरस्य। दारु। हरिद्रैकदेशो दार्वी। गौरादिः (४. १. ४१)॥१०१॥ अतिशयेन पचति पचंपचा। पिपर्ति पालयति। पर् चासौ जनयति पर्जनी। 'दारुहरदी' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. पीतद्रु, २. कालेयक, ३. हरिद्रु॥१०१॥, ४. दार्वी, ५. पचम्पचा, ६. दारुहरिद्रा, ७. पर्जनी- ये सात नाम दारुहल्दी के हैं इनमें एक से तीन पुल्लिङ्ग, चार से सात स्त्रीलिङ्ग हैं।

वचोग्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्विका॥१०२॥

कृष्णमित्रटीका :- वक्ति वचा। शतं पर्वाण्यस्याः। 'वच' (लोके)॥१०२॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. वचा, २. उग्रगन्धा, ३. षड्ग्रन्था, ४. गोलोमी, ५. शतपर्विका- ये पाँच स्त्रीलिङ्ग नाम घुड़बच के हैं॥१०२॥

शुल्का हैमवती

कृष्णमित्रटीका :- हिमवति भवा। 'श्वेतवच' (इति)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- हैमवती- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम खुरासानी वच का है।

वैद्यमातृसिंह्यौ तु वाशिका।
वृषोऽटरूषः सिंहास्यो वासको वाजिन्तकः॥१०३॥

कृष्णमित्रटीका :- हिनस्ति सिंही। वाश्यते। 'वाशृ शब्दे' (दि. आ. से.)। 'वासिका' इत्यन्ये॥१०३॥

---

1. The gunja shrub bearing a red black berry [3] 2. M. गन्धोस्यः 3. The goksuraka (gokharu) plant [7] 4. Ativisa (atisa), a poisonous yet highly medicinal plant [8] 5. B. and K. read क्षीरावी and दुग्धिका separately 6. Dugdhika, a kind of grass. [2]

1. Satavari, a medicinal plant [9] 2. The daruharidra plant [7] 3. The vaca plant [5] 4. White vaca [2]

वर्षति मधु। 'वृषु सेचने'। अटान् गच्छति रूषति। सिंहास्य-स्तत्तुल्यमुखः। एवं वाजिदन्तः। 'अडूस' (लोके) ॥१०३॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. वैद्यमाता, २. सिंही, ३. वाशिका, ४. वृष, ५. अटरूष, ६. सिंहास्य, ७. वासकः, ८. वाजिदन्तक- ये आठ पुल्लिङ्ग नाम अडूसा (वासक) के हैं। इनमें एक से तीन स्त्रीलिङ्ग और चार से आठ पुल्लिङ्ग हैं॥१०३॥

आस्फोता[2] गिरिकर्णी स्याद्विष्णुक्रान्ताऽपराजिता।

कृष्णमित्रटीका :- गिरिबलिमूषिका, तत्क-र्णतुल्यपत्रः। अ पराजिता॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. आस्फोटा , २. गिरिर्बलि-मूषिका, ३. विष्णुक्रान्ता, ४. अपराजिता- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम अपराजिता के हैं।

इक्षुगन्धा तु काण्डेक्षुकोकिलाक्षेक्षुरक्षुराः॥१०४॥

कृष्णमित्रटीका:-काण्डेनेक्षुः। कोकिलस्याक्षीव। इक्षुमिक्षुगन्धं राति। 'तालमखाना' (लोके)॥१०४॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. इक्षुगन्धा, २. काण्डेक्षु, ३. कोकिलाक्ष, ४. इक्षुर, ५. क्षुर ये पाँच नाम तालमखाना के हैं इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग दो से पाँच पुल्लिङ्ग हैं॥१०४॥

शालेयः स्याच्छीतशिवश्छत्र मधुरिका मिसिः।
मिश्रेयोऽपि

कृष्णमित्रटीका :- शालायां भवः। शीतोऽसौ[5] शिवः। छत्रमस्त्यस्ति। मधुरोऽस्त्यस्याः।[6] मिषति मिसिः। 'मिशी'। इत्यन्ये। मिश्रमीयते। 'शौंफ' (लोके)॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. शालेय, २. शीतशिवः, ३. छत्रा, ४. मधुरिका, ५. मिसि, ६. मिश्रेया- ये छः नाम वनसौंफ के हैं। इनमें एक तथा दो पुल्लिङ्ग हैं और तीन से छः स्त्रीलिङ्ग हैं।

अथ सीहुण्डो वज्रदुः स्नुक्स्नुही गुडा॥१०५॥
समन्तदुग्धा

कृष्णमित्रटीका :- 'सी' इति हुण्डते। 'ष्णुह उद्गिरणे' (दि. प. से.)॥१०५॥ समन्तादुदुग्धमस्याः। 'सेहुण्ड' (लोके)॥[8]

1. Atarusa (adusa), a very useful medicinal plant. 2. B. reads आस्फोटा 3. The aparajita plant [4] 4. The kokilaksa (talamakhana) plant [5] 5. M. शातोसौ 6. M. मधुरान्त्यस्याः 7. Sweey cummin [6] 8. The sihunda or milk-hedge plant [6]

हिन्दी अर्थ :- १. सीहुण्ड, २. वज्रदुः, ३. स्नुक्, ४. स्नुही, ५. गुडा॥१०५॥, ६. समन्तदुग्धा- ये छः नाम सेंहुण्ड के हैं, इनमें एक तथा दो पुल्लिङ्ग और तीन से छः स्त्रीलिङ्ग हैं।

अथो वेल्लममोघा चित्रतण्डुला।
तण्डुलश्च कृमिघ्नश्च विडङ्गं पुंनपुंसकम्॥१०६॥

कृष्णमित्रटीका :- 'वेल्ल चलने' (भ्वा. प. से.)। 'तड आघाते' (चु. प. से.)। 'सानसिवर्णसि-' (उ. ४. १०७) इति तण्डुलः। विट् अङ्गमस्य। 'वाउमिरंग' (बायविडंग) (लोके)॥१०६॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१. वेल्लम्, २. अमोघा, ३. चित्रतण्डुला, ४. तण्डुल, ५. कृमिघ्नः-, ६. विडङ्गम्- ये छः नाम बायबिड़ङ्ग के हैं। इनमें एक नपुंसकलिङ्ग दो से तीन स्त्रीलिङ्ग, चार से पाँच पुल्लिङ्ग, छः पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग हैं॥१०६॥

बला वाट्यालकः

कृष्णमित्रटीका :- वाटीमलति। 'वरिआरा' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१. वला, २. वाट्यालका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम बरिआरा के हैं।

घण्टारवा तु शणपुष्पिका।

कृष्णमित्रटीका :- घण्टेवारौति। ('सनई' लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. घण्टारवा, २. शणपुष्पिका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम सनई के हैं।

मृद्वीका गोस्तनी द्राक्षा स्वाद्वी मधुरसेति च॥१०७॥

कृष्णमित्रटीका :- मृद्वी कोमला। गोस्तनी तत्तुल्यत्वात्। द्राक्ष्यते शब्द्यते। 'दाष' (दाख) (लोके)॥१०७॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१. मृद्वीका, २. गोस्तनी, ३. द्राक्षा, ४. मधुरसा- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम दाख के हैं॥१०७॥

सर्वानुभूतिः सरला त्रिपुटा त्रिवृता त्रिवृन्।
त्रिभण्डी रेचनी[5]

1. The vidanga plant [6] 2. The bala (variara) plant [2] 3. A kind of flax [2] 4. The draksa or grape plant [5] 5. B. and K. रोचनी

कृष्णमित्रटीका :- सर्वैरनुभूयते। त्रयः पुटा अस्याः। त्रीनवयवान् वृणोति। त्रीन् दोषान् भण्डते। रेचयति। सप्त। 'तिधार' (लोके)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. सर्वानुभूति, २. सरला, ३. त्रिपुटा, ४. त्रिवृता, ५. त्रिवृत्, ६. त्रिभण्डी, ७. रोचनी- ये सात स्त्रीलिङ्ग नाम सफेद निशोथ के हैं॥

श्यामापालिन्द्यौ तु सुषेणिका॥१०८॥
कालामसूरविदलार्धचन्द्रा कालमेषिका।

कृष्णमित्रटीका :- पालयति पालिन्दी। सुष्ठु सेनया पाति॥१०८॥ मसूरवद्द्विदलमस्याः। कालं मिषति। 'श्यामतिधारा' (इति ख्याता)॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१. श्यामा, २. पालिन्दी, ३. सुषेणिका॥१०८॥, ४. काला, ५. मसूरविदला, ६. अर्द्धचन्द्रा, ७. कालमेषिका- ये सात स्त्रीलिङ्ग नाम काला निशोथ के हैं।

मधुकं क्लीतकं यष्टीमधुकं मधुयष्टिका॥१०९॥

कृष्णमित्रटीका :- मध्विव। यष्टी मध्विव। 'जेठीमधु' (लोके)॥१०९॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१. मधुकम्, २. क्लीतकम्, ३. यष्टिमधुकम्, ४. मधुयष्टिका- ये चार नाम मुलहठी के हैं इनमें एक से तीन नपुंसकलिङ्ग और चतुर्थ नाम स्त्रीलिङ्ग हैं॥१०९॥

विदारी क्षीरशुक्लेक्षुगन्धा क्रोष्टी च या सिता।

कृष्णमित्रटीका :- विदारयति। क्रोशति क्रोष्ट्री। 'बिलाईकंद' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१. विदारी, २. क्षीरशुक्ला, ३. इक्षुगन्धा, ४. क्रोष्टी- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम *कृष्ण-भूमिकूष्माण्ड के हैं।

अन्या क्षीरविदारी स्यान्माश्वेतर्क्षगन्धिका॥११०॥

कृष्णमित्रटीका :- अन्या असिता। क्षीखती विदारी। ऋक्षवद्गन्धोऽस्याः[5]। त्रीणि॥११०॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१. क्षीरविदारी, २. महाश्वेता, ३. ऋक्षगन्धा- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम शुक्ल भूमिकूष्माण्ड के हैं॥११०॥

1. The suklatridhara plant [7] 2. The syamatridhara plant [7] 3. The medicinal plant, called jethimadhu [4] 4. The vidari plant 5. M. ऋक्षवद्गन्धो स्याः 6. The ksiravidari plant [3]

लाङ्गली शारदी तोयपिप्पली शकुलादनी।

कृष्णमित्रटीका :- लाङ्गलाकारोऽस्त्यस्याः[1]। शरदि भवा[2]। 'जलपीपरि' 'परिसगा' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१. लाङ्गली, २. शारदी, ३. तोयपिप्पली, ४. शकुलादनी- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम जलपीपरि के हैं॥

खराश्वा कारवी दीप्यो मयूरो लोचमस्तकः[4]॥१११॥

कृष्णमित्रटीका :-खरः अश्वोऽस्याः[5]। केन जलेनारौति। दीपे साधुः। 'मीनातेरूरन्' (उ. १. ६७)। मयूरः। लोचो दर्शनीयो मस्तकोऽस्य[6]। 'अजमोदा' (लोके)॥१११॥

हिन्दी अर्थ :-१. खराश्वा, २. कारवी, ३. दीप्य, ४. मयूर, ५. लोचमस्तक- ये पाँच नाम अजमोदा के हैं, इनमें एक से दो स्त्रीलिङ्ग और तीन से पाँच पुल्लिङ्ग हैं॥१११॥

गोपी श्यामा शारिवा स्यादनन्तोत्पलशारिवा।

कृष्णमित्रटीका :- गोपायति। शारिरत्यस्याः। उत्पलसदृशपत्रा। 'सांड' (लोके)॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१. गोपी, २. श्यामा, ३. शारिवा, ४. अनन्ता, ५. उत्पलशारिवा- ये पाँच स्त्रीलिङ्ग नाम अजमोदा के हैं, इनमें एक से दो स्त्रीलिङ्ग हैं और तीन से पाँच पुल्लिङ्ग हैं।

योग्यमृद्धिः सिद्धिलक्ष्म्यौ

कृष्णमित्रटीका :- युज्यते योग्यम्। ऋध्नोति। 'ऋधु वृद्धौ' (भ्वा. प. से.)॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. योग्यम्, २. ऋद्धि, ३. सिद्धि, ४. लक्ष्मी- ये चार नाम सिद्धि नामक औषधविशेष के हैं, इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग शेष स्त्रीलिङ्ग हैं।

वृद्धेरप्याह्वया इमे॥११२॥

कृष्णमित्रटीका :- इमे चत्वारो वृद्ध्याख्यौषधेरपि नामानि॥११२॥[9]

हिन्दी अर्थ :- वृद्धि- यह एक स्त्रीलिङ्ग और पूर्वोक्त चार नाम वृद्धिनामक औषध विशेष के है॥११२॥

1. M. लाङ्गलाकारोस्त्यस्याः 2. M. भावा 3. Jalapippali [4] 4. M. अश्वोस्याः 5. M. मस्तकोस्य 6. The ajamoda plant [5] 7. The sariva plant bearing lotus like leaves [5] 8. Rddhi, a medicinal plant [4] 9. The vrddhi plant [5]

कदली वारणवुसा मोचा रम्भांशुमत्फला।[1]
काष्ठीला[2]

कृष्णमित्रटीका :- केन वायुना दल्यते। मुञ्चति मोचा। रभते रम्भा। 'रभेरशब्लिटोः' (७. १. ६३) इति नुम्। ईषदष्ठीलमस्याः। 'केला' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. कदली, २. वारणवुसा, ३. रम्भा, ४. मोचा, ५. अंशुमत्फला, ६. काष्ठीला- ये छः स्त्रीलिङ्ग नाम केला के हैं।

मुद्गपर्णी तु काकमुद्रा सहेत्यपि॥११३॥

कृष्णमित्रटीका :- काकानां मुद्गं राति। 'मुंगवनि' 'वनमूंगी' इति च ॥११३॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. मुद्गपर्णी, २. काकमुद्गा, ३. सहा- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम वनमूंग के हैं॥११३॥

वार्ताकी हिङ्गुली सिंही भण्टाकी दुष्प्रधर्षिणी।

कृष्णमित्रटीका :- वार्तमयोग्यमकति। हिङ्गं लाति। भण्यते भण्टाकी। 'पिनाकादयश्च' (उ. ४. १५) इति साधु। पञ्च। 'वनभांटा'। (इति)॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१. वार्ताकी, २. हिङ्गुलो, ३. सिंही, ४. भण्टाकी, ५. दुष्प्रधर्षिणी- ये पाँच स्त्रीलिङ्ग नाम वनभाटा के हैं।

नाकुली सुरसा रास्ना सुगन्धा गन्धनाकुली॥११४॥
नकुलेष्टा भुजङ्गाक्षी छत्राकी सुवहा च सा।

कृष्णमित्रटीका :- नकुलानामियं प्रिया। 'रस आस्वादने' (चु. उ. से.)। 'रास्नासास्ना-' (उ. ३. १५) इति साधुः॥११४॥ छत्रमकति। नव। 'रासना' भेदः॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१. नाकुली, २. सुरसा, ३. रास्ना, ४. सुगन्धा, ५. गन्धनाकुली॥११४॥, ६. नकुलेष्टा, ७. भुजङ्गाक्षी, ८. छत्राकी, ९. सुवहा- ये नो स्त्रीलिङ्ग नाम रासना के हैं।

विदारिगन्धांशुमती शालपर्णी[7] **स्थिरा ध्रुवा॥११५॥**

कृष्णमित्रटीका :- विदार्या इव गन्धोऽस्याः[8]। शालस्येव पर्णान्यस्याः। 'शखिनि' (सखिन), (लोके)॥११५॥[9]

हिन्दी अर्थ :-१. विदारिगन्धा, २. अंशुमती, ३. सालपर्णी, ४. स्थिरा, ५. ध्रुवा- ये पाँच स्त्रीलिङ्ग नाम सरिवन के हैं॥११५॥

तुण्डिकेरी समुद्रान्ता कर्पासी बदरेति च।

कृष्णमित्रटीका :- तुण्डिकान् शरीराणि ईरयति। 'कृञः पासः' (उ. ५. ४५)। कर्पासी। बदति बदरा। 'कपास' (लोके)॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१. तुण्डिकेरी, २. समुद्रान्ता, ३. कार्पासी, ४. बदरा- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम कपास के हैं।

भारद्वाजी तु सा वन्या

कृष्णमित्रटीका :- भरद्वाजस्येयम्। 'बनकपास' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- भारद्वाजी- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम बनकपास का है।

शृङ्गी तु ऋषभोवृषः॥११६॥

कृष्णमित्रटीका :- ऋषति। 'ऋषीगतौ' (तु. प. से.)। 'ऋषिवृषिभ्यां कित्' (उ. ३. १२३) इत्याभच्। 'ककराशींगी' (लोके)॥११६॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. शृंगी, २. ऋषभ, ३. वृष- ये तीन नाम काकरासिंगी के हैं, इनमें एक स्त्रीलिङ्ग दो से तीन पुल्लिङ्ग हैं।

गाङ्गेरुकी नागबला झषा ह्रस्वगवेधुक।

कृष्णमित्रटीका :- गाङ्गं जलमीरयति। मृगय्वादिः (उ. १. ३७) झषति हिंसार्थः। गवि भूमावेधते गवेधुका। ह्रस्वा चासौ सा च। 'गुडशकरी' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. गाङ्गेरुकी, २. नागबला, ३. झषा, ४. ह्रस्वगवेधुका- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम गँगेरन के हैं।

धामार्गवो घोषकः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- धामार्जति[5] धामार्गवः। घोषति। कर्को (टकी) घटपत्र-(?) 'खेखसा' (लोके)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. धामार्गवो, २. घोषक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम सफेद फूल वाली तुरई के हैं।

---

1. B. and K. read this line as follows : कदली वारणवुसारम्भा मोचांशुमत्फला। 2. B. reads काष्ठिला 3. The plantain tree [6] 4. Kakamudga [3] 5. The brinjal plant growing in deserts [5] 6. The rasna plant [9] 7. B. reads सालपर्णी 8. M. गन्धोस्या 9. Salaparni [5]

1. The cotton plant [4] 2. The vanakapasa plant [1] 3. Rsabha (medicinal plant) [3] 4. The nagabala (gudasakari) plant [4] 5. M. धाम अर्जति 6. A kind of vegetable [2]

महाजाली स पीतकाः ॥११७॥

कृष्णमित्रटीका :- जालं वितानः। पीतपुष्प- 'खेखसा' ॥११७॥[1]

हिन्दी अर्थ :- महाजाली- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम पीले फूल वाली तुरई का है॥११७॥

ज्योत्स्नी[2] पटोलिका जाली

कृष्णमित्रटीका :- ज्योत्स्नाऽस्त्यस्याः[3]। पटति विस्तीर्यते। 'कपिगडि-' (उ. १. ६६) इत्योलच्। जालं विस्तारोऽस्या अस्ति। 'चिचिंडा' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. ज्यौत्स्नी, २. पटोलिका, ३. जाली- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम चिचिड़ा नामक तरकारी के हैं।

नादेयी भूमिजम्बुका।

कृष्णमित्रटीका :- भूजम्बूर्भूलग्नपत्रा अम्बूः॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. नादेयी, २. भूमिजम्बूका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम भुंई जामुन के हैं।

स्याल्लाङ्गलिक्यग्निशिखा

कृष्णमित्रटीका :- आङ्गलवत्खनतिः! अग्निरिव शिखाऽस्ति[6] । द्वे। 'करिआरी' (लोके)॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१. लांगलिकी, २. अग्निशिखा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम करिहारी के हैं।

काकाङ्गी काकनासिका॥११८॥

कृष्णमित्रटीका :- काकस्येवाङ्गमस्याः। 'कौआठोरी' (लोके)॥११८॥[8]

हिन्दी अर्थ :-१. काकंगी, २. काकनासिका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम कौवाठोठी के हैं॥११८॥

गोधापदी तु सुवाहा

कृष्णमित्रटीका :- गोधावत्पादौ मूलमस्याः। 'हंसपदी' 'लाज्जालू' (इति च लोके)॥[9]

हिन्दी अर्थ :- १. गोधापदी, २. सुवहा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम लजालू के हैं।

मुसली तालमूलिका।

1. A kind of vegetable [2] 2. Majority reads ज्यौत्स्नी 3. M. ज्योत्स्नास्त्यस्या 4. A kind of vegetable. 5. Bhumijambuka [2] (Ct. Amarakosa 2. 4.38) 6. M. शिखास्ति 7. The safflower plant [2] 8. A kind of flower [2] 9. A sensitive plant [2]

कृष्णमित्रटीका :- भेरी मूलमध्ये व्रतति। मुस्यति खण्डयति मुसली। वृषादिः (उ. १. १०६)। तालस्येव मूलमस्याः। 'मूसरि' (लोके)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. मुसली, २. तालमूलिका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम मुसलीकन्द के हैं।

अजशृङ्गी विषाणी स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- अजशृङ्गमिव। विषाण- मस्त्यस्याः। 'मेढाशीगी' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. अजशृङ्गी, २. विषाणी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम मेढ़ासिङ्गी के हैं।

गोजिह्वादार्विके समे ॥११९॥

कृष्णमित्रटीका :- गोर्जिह्वेव। 'गोभी' (इति ख्याता)॥११९॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. गोजिह्वा, २. दार्विका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम गोभी के हैं॥११९॥

ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागवल्ल्यपि

कृष्णमित्रटीका :- ताम्यति। तान् बुली च सा। 'बुल् निमज्जने' (चु. प. से.)। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)॥ 'पान' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. ताम्बूलवल्ली, २. ताम्बूली, ३. नागवल्ली- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम पान के हैं।

अथ द्विजा।

हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी॥१२०॥

कृष्णमित्रटीका :- द्विर्जाता। हरति। रेणुरस्या अस्ति। कुन्तिषु भवा। 'रैनुक' (इति ख्याता)॥१२०॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. द्विजा, २. हरेणु, ३. रेणुका, ४. कौन्ती, ५. कपिला, ६. भस्मगन्धिनी- ये छः स्त्रीलिङ्ग नाम रेणुका बीज के हैं॥१२०॥

एलाबालुकमैलेयं सुगन्धि हरिबालुकम्। बालुकं च

कृष्णमित्रटीका :- एलयति। 'इल प्रेरणे' (चु. प. से.)। तच्च तब्दालुकं च। 'ह्रस्वः' (एलबालुकम्) इति स्वामी। इलायां भवम्। 'एलुबालुक' (लोके)॥[6]

1. Curculigo Orchioides [2] 2. The ajas'rngi plant [2] 3. Cauliflower; Cabbage [2] 4. The betel plant [3] 5. Renuka a plant [6] 6. Elabaluka a granular substance used for perfume [5]

हिन्दी अर्थ :-१. एलावालुकम्, २. ऐलेयम्, ३. सुगन्धि, ४. हरिबालुकम, ५. बालुकम् - ये पाँच नपुल्लिङ्ग नाम एलुआ के हैं।

अथ पालङ्क्यां मुकुन्दः कुन्दुकुन्दुरू॥१२१॥

कृष्णमित्रटीका :- पालयति पालम्, तमङ्क्यते। 'अङ्क पदे-' (चु. उ. से.)। 'अचो यत्' (३. १. ९७)। पालङ्क्यां 'पालिन्दो' इति वैद्याः। मुखी कुन्द इव। कुं भूमिं द्यति। 'आतः-' (३. २. ३) कः। 'कुन्दुः' इति पाठान्तरम्। 'कोन्दरू' 'पालकशाक' (इति च लोके)। 'मल्लीकीनिर्यासः सुगन्धिद्रव्यं कुन्दकुन्दुरू' इत्यन्ये॥१२१॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१. पालङ्की, २. मुकुन्द, ३. कुन्द, ४. कुन्दुरु- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम पालक के हैं॥१२१॥

बालं ह्रीबेरबर्हिष्ठोदीच्यं केशाम्बुनाम च।

कृष्णमित्रटीका :- ह्रीयुक्तं वेरमस्य। वर्हिषि तिष्ठति। उदीचिभवम्। केशाम्बुनोर्नाम यस्य। 'सुगन्धबाला' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. बालम्, २. ह्रीबेरम्, ३. बर्हिष्ठम्, ४. उदीच्यम्, ५.केशाम्बुनाम- ये पाँच नपुंसकलिङ्ग नाम नेत्रवाला के हैं।

कालानुसार्यवृद्धाश्मपुष्पशीतशिवानि तु॥१२२॥ शैलेयम्

कृष्णमित्रटीका :- कालेनानुस्रियते। वृद्धमिव। अश्मनः पुष्पमिव। शीतंच तच्छिवम्[3]॥१२२॥ शिलायां भवम्। 'छरीला' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१. कालानुसार्यम्, २. वृद्धम्, ३. अश्मपुष्पम्, ४. शीतशिवम्॥१२२॥, ५. शैलेयम्-ये पाँच नपुल्लिङ्ग नाम सिलाजीत के हैं।

तालपर्णी तु दैत्या गन्धकुटी मुरा। गन्धिनी

कृष्णमित्रटीका :- दितेरियम्। गन्धस्य कुटीव। मुरति। 'मुर वेष्टने' (तु. प. से.)। 'एकाङ्गो' (इति ख्याता)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. तालपर्णी (तालः पर्णमस्याः इति ङीष्), २. दैत्या (दितेरियम् इति ण्यः), ३. गन्धकुटी (गन्धस्य कुटीव इति), ४. मुरा (मुरति 'मुरं वेष्टने' इति इगुपधत्वात् कः), ५. गन्धिनी (प्रशस्तो गन्धोऽस्याः इति इन्)- ये पाँच स्त्रीलिङ्ग नाम मुरा (मरोड़फली) के हैं।

गजभक्ष्या तु सुवहा सुरभी रसा॥१२३॥ महेरणा कुन्दुरुकी सल्लकी ह्लादिनीति च।

कृष्णमित्रटीका :- गजैर्भक्ष्यते। सुष्ठु रभ्यते सुरभिः॥१२३॥ महदीरणमस्याः। कुन्दुरुरिव। सत्सु लक्यते। 'शालइ' (इति) सर्जभेदः॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. गजभक्ष्या, २. सुबहा, ३. सुरभि, ४. रसा॥१२३॥, ५. महेरणा, ६. कुन्दुरुकी, ७. सल्लकी, ८. ह्लादिनी- ये आठ स्त्रीलिङ्ग नाम सनई के हैं।

अग्निज्वालासुभिक्षे तु धातकी धातृपुष्पिका॥१२४॥

कृष्णमित्रटीका :- अग्नेर्ज्वालेव रक्तपुष्पत्वात्। सुष्ठु भिक्षते। धातुं करोति। ण्यन्तः। धातृ पुष्पमस्याः। 'धातुरक्त धातुकी अतएव धातुपुष्पी' इति स्वामी। 'धवई' (लोके)॥१२४॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१. अग्निज्वाला, २. सुभिक्षा, ३. धातकी, ४. धातुपुष्पिका- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम धवा के हैं॥१२४॥

पृथ्वीका चन्द्रबालैला निष्कुटिर्बहुला

कृष्णमित्रटीका :- पुथुरिव पृथ्वीका। चन्द्रस्य कर्पूरस्य बालेव। एलयति। निश्चिता कुटिरस्य। 'इलायची' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. पृथ्वीका, २. चन्द्रवाला, ३. एला, ४. निष्कुटिः-, ५. बाहुल- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम बड़ी इलायची के हैं।

अथ सा।

सूक्ष्मोपकुञ्चिका तुत्था कोरङ्गी त्रिपुटा त्रुटिः॥१२५॥

कृष्णमित्रटीका :- उपकुञ्चति। 'तुच्छा' इति स्वामी। कुरति शब्दायते। त्रयः पुटा यस्याः। त्रुट्यति। 'छोटी इला (य) ची' (लोके)॥१२५॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१. उपकुञ्चिका, २. तुत्था, ३. कोरङ्गी, ४. त्रिपुटा, ५. त्रुटि- ये पाँच स्त्रीलिङ्ग नाम छोटी इलायची के हैं॥१२५॥

---

1. **Palaka, a kind of green vegetable** [4] 2. **Hribera, a kind of perfume** [1] 3. M. तत् शिवं 4. **Silajita or benzoin** [5] 5. **Mura, a kind of perfume** [5]

1. **The sallaki tree** [8] 2. **The dhava tree** [5] 3. **Cardamom** [5] 4. **Small cardamom** [5]

व्याधिः कुष्ठं पारिभव्यं वाप्यं[1] पाकलमुत्पलम्।

कृष्णमित्रटीका :- विगत आधिरनेन। कुष्यति कुष्ठम्। परिभवे साधु। अदन्तात्स्वार्थेऽण्[2] (५. ४. ३८)। 'पारिभाव्यम्' इत्यन्ये। वाप्यां भवम्। वाप्यम्। पाकं लाति। 'पल गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'कुट' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. व्याधि, २. कुष्ठम्, ३. पारिभाव्यम्, ४. वाप्यम्, ५. पाकलम्, ६. उत्पलम्- ये छः नाम कूठ संज्ञक औषधिविशेष के हैं, इनमें एक पुल्लिङ्ग और पाँच नपुंसकलिङ्ग हैं।

शङ्खिनी चोरपुष्पी स्यात्केशिनी

कृष्णमित्रटीका :- शङ्ख इव। केशाः सन्त्यस्याः। 'कवडोना' (?) (लोके)।[4]

हिन्दी अर्थ :- १. शङ्खिनी, २. चोरपुष्पी, ३. केशिनी- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम शङ्खाहुली नामक वृक्षविशेष के हैं।

अथ वितुन्नकः ॥१२६॥

झटाऽमलाऽज्झटा ताली शिवा तामलकीति च।

कृष्णमित्रटीका :- वितुद्यते स्म॥१२६॥ झटः संघातोऽस्त्यस्याः[5]। अमला निर्मला। अज्झटाश्चर्यकारिसंघाता। 'आत्' आश्चर्ये। ताडयति ताली। ताम्यति तामलकी। 'भूम्यामलकी' (इति ख्याता)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. वितुन्नक॥१२६॥, २. झटा, ३. अमला, ४. अज्झटा, ५. ताली, ६. शिवा- ये छः नाम छोटा आँवरा (हर्फा) के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग अन्य स्त्रीलिङ्ग हैं।

प्रपौण्डरीकं पुण्डर्यम्

कृष्णमित्रटीका :- प्रकृष्टं पौण्डरीकम्। 'पुडि खण्डने' (भ्वा. प. से.)। पुण्डस्यार्यं प्रधानम्। 'पंडेरिआ' (लोके)॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रपौण्डरीकम्, २. पौण्डर्यम् - ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम पुण्डरीया वृक्ष के हैं।

अथ तुन्नकुवेरकः ॥१२७॥

कुणिः कच्छः कान्तलको नन्दिवृक्षः

कृष्णमित्रटीका :- तुद्यते स्म। कुत्सितं बेरं देहमस्य। 'कुण शब्दे' (तु. प. से.)। कुणति कुणिः। 'तुणिः' इत्यपि पाठः। कच्यते कच्छः। कान्तो लक्यते नन्द्या वृक्षः। 'तुणी' (इति ख्यातः)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. तुन्न॥१२७॥, २. कुबेरक, ३. कुणि, ४. कच्छ, ५. कान्तलक, ६. नन्दिवृक्ष- ये छः पुल्लिङ्ग नाम तणी या तुन के हैं।

अथ राक्षसी।

चण्डा धनहरी क्षेमदुष्पत्रगणहासकाः ॥१२८॥

कृष्णमित्रटीका :- रक्षस इयम्। चण्डते चण्डा। क्षिणोति क्षेमम्। 'क्षि हिंसायाम्' (स्वा. प. से.)। दुष्टानि पत्राण्यस्य। 'दुष्पत्र' इति स्वामी। 'भटिउर' इति नैपाले ख्यातं सुगन्धिद्रव्यम्॥१२८॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. राक्षसी, २. चण्डा, ३. धनहरी, ४. क्षेम, ५. दुष्पत्र, ६. गणहासक- ये छः नाम चोरा नामक गन्धद्रव्य के हैं, इनमें एक से तीन स्त्रीलिङ्ग, चार से छः पुल्लिङ्ग हैं॥१२८॥

व्याघ्रायुधं व्याघ्रनखं करजं चक्रकारकम्।

कृष्णमित्रटीका :- व्याघ्रस्यायुधमिव। 'व्याडायुधमपि' (क्वचित्पाठः)। चक्रस्य कारकम्। 'नखनखी' (इति) सुगन्धद्रव्य (स्य)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. व्याडायुधम्, २. व्याघ्रनखम्, ३. करजम्, ४. चक्रकारकम्- ये चार नपुंसकलिङ्ग नाम बघनखा के हैं।

सुषिरा विद्रुमलता कपोताङ्घ्रिर्नटीनली॥१२९॥

कृष्णमित्रटीका :- सुषिरस्यास्ति। नटयति नटी। पञ्च। 'नकुला' इति 'यावारी' इति च उत्तरापथे प्रसिद्धं सुगन्धद्रव्यम्॥१२९॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. शुषिरा, २. विद्रुमलता, ३. कपोताङ्घ्रिः, ४. नटी, ५. नली- ये पाँच स्त्रीलिङ्ग नाम माल- काँगनी के हैं॥१२९॥

धमन्यञ्जकेशी च हनुर्हट्टविलासिनी।

कृष्णमित्रटीका :- धम्यते धमनिः। अञ्जनमिव केशा अस्याः। हन्तीति हनुः। हट्टे विलसति॥[5]

---

1. B. reads व्याप्यम् 2. M. अदन्तात्स्वार्थेण 3. **Kuta, a medicinal substance** [5] 4. **The corapuspi creeper** [3] 5. M. संघातोस्त्यस्या 6. **Bhumyamalaki** (small myrobalan) [6] 7. **The pundarya tree** [2]

1. **The tuni tree** [6] 2. **A kind of perfume known as bhativura in Nepal** [5] 3. **Vyaghranakha, a kind of perfume** [4] 4. **Nali, a kind of perfume called yavari in northern region** [5] 5. Hattavilasini, a sort of perfume [4]

हिन्दी अर्थ :- १. धमनी, २. अञ्जनकेशी, ३. हनु, ४. हट्टविलासिनी- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम अञ्जनकेशी के हैं।

शुक्तिः शङ्खः खुरः कोलदलं नखम्

कृष्णमित्रटीका :- शोचति शुक्तिः। न खनति नखम्। नखी समुद्रकर्कटस्य नखः।'चत्वारि चत्वारि नामानि' इत्यन्ये। 'हनुः' इत्यादि नखस्यैव नाम वैद्यके प्रसिद्धम्। यद्बृहन्नखस्तस्य तु नखीहनुरित्यादि नाम। अञ्जनकेश्यन्तं च सप्त नालिकाया नामानीति प्रसिद्धमेव। व्याघ्रनखं समुद्रकर्कटस्य वृहन्नखो दृष्टस्तस्यैव नखी॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. शुक्ति, २. शङ्ख, ३. खुर, ४. कोलदलम्, ५. नखम्- ये पाँच नाम नखनामक गन्धद्रव्य के हैं। इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग दो से तीन पुल्लिङ्ग और चार से पाँच नपुंसकलिङ्ग हैं।

अथाढकी ॥१३०॥

काक्षी मृत्स्ना तुवरिका मृतालकसुराष्ट्रजे।

कृष्णमित्रटीका :- अढौकते आढकी॥१३०॥ कक्षे भवा। तुवरौऽस्त्यस्याः[2]। मृतमालयति। षट्। 'अरहरि' (अरहर लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. आढकी॥१३०॥, २. काक्षी, ३. मृत्स्ना, ४. तुवरिका, ५. मृतालकम्, ६. सुराष्ट्रजम्- ये छः नाम अरहर के हैं। इनमें एक से चार स्त्रीलिङ्ग और पाँच से छः नपुंसकलिङ्ग हैं॥

कुटन्नटं दाशपुरं वानेयं परिपेलवम्॥१३१॥

प्लवगोपुरगोनर्दकैवर्ती मुस्तकानि च।

कृष्णमित्रटीका :- कुटन्नटयति। दशपुरे भवम्। वने जातं वानेयम्। नन्द्यादिः (४. ३. ९७)। परितः पेलवं मृदु ॥१३१॥ प्लवते। गां जलं पिपर्ति। गां जलं नर्दयति। 'केवटी' 'मोथा' (इति च लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. कुटन्नटम्, २. दाशपुरम्, ३. वानेयम्, ४. परिपेलवम्॥१३१॥, ५. प्लवम्, ६. गोपुरम्, ७. गोनर्दम्, ८. कैवर्तीमुस्तकम्- ये आठ नपुंसकलिङ्ग नाम जलमोथा के हैं।

ग्रन्थिपर्णे[5] शुकं वर्हपष्पं स्थौणेयकुक्कुरे॥१३२॥

1. Nakha, a kind of perfume [5] 2. M. तुवरोस्त्यस्याः 3. A Kind of pulse [6] 4. Motha, a kind of grass [9] 5. B. reads ग्रन्थिपर्णम्

कृष्णमित्रटीका :- ग्रन्थौ पर्णान्यस्य। शोचति शुकः। वर्हं प्रशस्तम्। पुष्प्यति पुष्पम्। स्थूणाया अपत्यम्। कुक्कुरोऽस्यास्ति[1]। 'गविवन' इति लोके ग्रन्थिपर्णस्यैव भेदः शुकादिः। लोके 'शुनेर' इति॥१३२॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. ग्रन्थिपर्णम्, २. शुकम्, ३. बर्हि, ४. पुष्पम्, ५. स्थौणेयम्, ६. कुक्कुरम्- ये छः नपुंसकलिङ्ग नाम कुकरौन्हा के हैं॥१३२॥

मरुन्माला तु पिशुना स्पृक्का देवी लता लघुः।

समुद्रान्ता वधूः कोटिवर्षा लङ्केपिकेत्यपि॥१३३॥

कृष्णमित्रटीका :- मरुतां माला। पिशुना गन्धसूचनात्। स्पृशति स्पृक्ता। बाहुलकात्कक्। बहते बधूः। कोटिभिरग्रैर्वर्षति। लङ्कायामुप्यते। 'डुवप्' (बीजसन्ताने) (भ्वा.उ. अ.)। क्वुन् (उ. २. ३२)। 'लकोई' इति 'कपुरी' इति च सुगन्धिशाक (स्य)॥३३॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. मरुन्माला, २. पिशुना, ३. स्पृक्का, ४. देवी, ५. लता, ६. लघु, ७. समुद्रान्ता, ८. वधू, ९. कोटिवर्षा, १०. लङ्केपिका- ये दस स्त्रीलिङ्ग नाम अरयर (शाक) विशेष के हैं॥१३३॥

तपस्विनी जटा मांसी जटिला लोमशा मिसी।

कृष्णमित्रटीका :- जटाऽस्त्यस्याः।[4] सा च मांसी च। 'मनेर्दीर्घश्च' (उ. ३. ६४) इति सः। मिषति मिसी। 'जटामांसी' (इति ख्याता)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. तपस्विनी, २. जटा, ३. मांसी, ४. जटिला, ५. लोमशा, ६. मिसी- ये छः स्त्रीलिङ्ग नाम जटामांसी के हैं।

त्वक्पत्रमुत्कटं भृङ्गं त्वचं चोचं वराङ्गकम्॥१३४॥

कृष्णमित्रटीका :- त्वग्वृक्षवल्कलत्वात्। पत्रा-कृतिपत्रम्। 'संप्रोदश्च कटच्' (५. २. २९)। उत्कटम्। 'भृञः किन्नुट् च' (उ. १. २५) इति गन्। अर्श आद्यचि (५. २. १२७) त्वचम्। चोचं प्रशस्तं वल्कलमस्यास्ति। 'तज' (लोके)॥१३४॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. त्वक्पत्रम्, २. उत्कटम्, ३. भृङ्गम्, ४. त्वचम्, ५. चोचम्, ६. वराङ्गकम्- ये छः नपुंसकलिङ्ग नाम तज (दालचीनी) के हैं॥१३४॥

1. M. कुक्कुरोस्यास्ति 2. The granthiparna tree [5] 3. The sprkka (lakoi) plant [10] 4. M. जटास्त्यास्याः 5. The jatamasi plant [6] 6. Tvakpatra or taja [5]

कर्चूरको द्राविडकः काल्पको वेधनुख्यकः।

कृष्णमित्रटीका :- कृन्तति त्वग्दोषं[1] कर्चूरः। खर्जूरादश्यच (उ. ४. ९०) इति साधुः। द्रविडदेशे जातः। काल्पे विधौ भवः। 'कचूर' (इति ख्यातः)॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१. कर्चूरक, २. द्राविडक, ३. काल्पक, ४. वेधमुख्यक- ये चार पुल्लिङ्ग नाम कचूर के हैं।

ओषध्यो जातिमात्रे स्युः

कृष्णमित्रटीका:-जातिमात्रविवक्षायामोषधिः।

हिन्दी अर्थ :- जातिमात्र विवक्षा में ओषधी शब्द का प्रयोग होता है। ओषधी- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम जातिवाचक दवा अर्थ में प्रयुक्त होता है।

अजातौ सर्वमौषधम् ॥१३५॥

कृष्णमित्रटीका :- द्रव्यमात्रविवक्षायां चूर्णगुटिकादि औषधम्॥१३५॥

हिन्दी अर्थ :- द्रव्य मात्र की विवक्षा में - औषधम् (ओषधेरजातौ इत्यण्)- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम औषध के अर्थ में प्रयुक्त होता है। 'सर्वमौषधम्' शब्द से घृत-तैलादि सभी औषध शब्दवाच्य हैं॥१३५॥

शाकाख्यं पत्रपुष्पादि

कृष्णमित्रटीका :- पत्रपुष्पादिः शाकः॥[3]

हिन्दी अर्थ :- शाकम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम साग (आदि से फल फूल आदि का भी ग्रहण होता है) का हैं।

तण्डुलीयोऽल्पमारिषः।

कृष्णमित्रटीका :- ताण्डुलाय हितः। अल्पश्चासौ मारिषः। 'चवराई' लोके॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. ताण्डुलीय, २. अल्पमारिष - ये दो पुल्लिङ्ग नाम चौराई शाक के हैं।

विशल्याऽग्निशिखाऽनन्ता फलिनी शक्र पुष्प्यपि॥१३६॥

कृष्णमित्रटीका :- विगतं शल्यमस्याः। शक्रः, अर्जुनवृक्षः। तस्य पुष्पमिव। पञ्च। 'करिआरी' (लोके)। एवं मुक्तापीयं शाकत्वात्पुनरुपात्ता॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. विशल्या, २. अग्निशिखा, ३. अनन्ता, ४. फलिनी, ५. शक्रपुष्पिका- ये पाँच स्त्रीलिङ्ग नाम अग्निशिखा के हैं।

स्यादृक्षगन्धा छगलाण्ड्यावेगी[1] वृद्धदारकः। जुङ्गः

कृष्णमित्रटीका :- छगलस्येवाण्डान्यस्थीन्यस्याः। आवेगोऽस्त्यस्याः[2] जुङ्गति। 'जुगि वर्जने' (भ्वा. प. से.)। 'विधार' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१. ऋक्षगन्धा, २. छगलान्त्री, ३. आवेगी, ४. वृद्धदारक, ५. जुङ्ग- ये पाँच नाम विधारा के हैं। इनमें एक से तीन स्त्रीलिङ्ग और चार से पाँच पुल्लिङ्ग हैं।

ब्राह्मी तु मत्स्याक्षी वयस्था सोमवल्लरी॥१३७॥

कृष्णमित्रटीका :- ब्रह्मण इयम्। वयसि तिष्ठ-त्यनया। 'ब्राह्मी' (इति ख्याता)॥१३७॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. ब्राह्मी, २. मत्स्याक्षी, ३. वयस्था, ४. सोमवल्लरी- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम ब्राह्मी के हैं॥१३७॥

पटुपर्णी हैमवती स्वर्णक्षीरी हिमावती।

कृष्णमित्रटीका :- पटूनि पर्णान्यस्याः। स्वर्णवत् क्षीरमस्याः। 'चोष' (लोके)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. पटुपर्णी, २. हैमवती, ३. स्वर्णक्षीरी, ४. हिमावती- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम मकई के हैं।

हयपुच्छी तु काम्बोजी माषपर्णी महासहा॥१३८॥

कृष्णमित्रटीका :- कम्बोजदेशे भवा। 'मषवनि' 'बन उर्दी इति च'॥१३८॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. हयपुच्छी, २. कम्बोजी, ३. माषपर्णी, ४. महासहा- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम वनउड़द के हैं।

तुण्डिकेरी रक्तफला बिम्बिका पीलुपर्ण्यपि।

कृष्णमित्रटीका :-तुण्डिकान् ईरयति। बिम्बीं कायति। 'कुन्दुरू' (लोके)॥[7]

---

1. M. त्वचूदोर्षं 2. **Karcuraka (kacura)m a fragran plant** [4] 3. **Any edible leaf, fruit or root used as vegetable** [1] 4. **Tanduliya (caural), a kind of green vegetable** [2] 5. **Indrapuspi (kariyani), a kind of herb** [4]

1. **B. reads** छगलान्त्र्यावेगी 2. M. आवेगोस्त्यस्या 3. **The vrddhadaraka (vidhara) herb** [5] 4. **Brahmi, a sort of medicinal plant** [5] 5. **Svarnaksini (makoya), a medicinal plant** 6. **Masaparni, a kind of bean's plant** [5] 7. **A kind of vegtable** [4]

हिन्दी अर्थ :- १. तुण्डिकेरी, २. रक्तफला, ३. बिम्बिका, ४. पीलुपर्णी- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम कुन्दरू के हैं।

वर्वरा कवरी तुङ्गी खरपुष्पाजगन्धिका॥१३९॥

कृष्णमित्रटीका :- वृञो वरच्। वर्वरा। कस्य शिरसो वरी। तुज्जति। 'तुजि हिंसायाम्' (भ्वा. प. से.)। न्यङ्क्वादिः (७. ३. ५३)। 'ममरी' (लोके)॥१३९॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. वर्वरा, २. कवरी, ३. तुङ्गी, ४. खरपुष्पा, ५. अजगन्धिका- ये पाँच स्त्रीलिङ्ग नाम पवई नामक शाक के हैं॥१३९॥

एलापर्णी तु सुवहा रास्ना युक्तरसा च सा।

कृष्णमित्रटीका :- एलाया इव पर्णान्यस्याः। युक्तो रसो यस्याः। 'रासन' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. एलापर्णी, २. सुवहा, ३. रास्ना, ४. युक्तरस- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम एलापर्णी के हैं।

चाङ्गेरी चुक्रिका दन्तशठाऽम्बष्ठाऽम्ललोणिका॥१४०॥

कृष्णमित्रटीका :- चाङ्गं दक्षमीरयति। चुक्रय (ति) चुक्रः। 'चुक्क व्यथने' (चु. प. से.)। अम्ला च लूनयति च। 'अचिलोना' (इति ख्याता)॥१४०॥[3]

हिन्दी अर्थ :- चाङ्गेरी, २. चुक्रिका, ३. दन्तशठ, ४. अम्बष्ठा, ५. अम्ललोणिका- ये पाँच स्त्री नाम नोनी शाक के हैं।

सहस्रवेधी चुक्रोऽम्लवेतसश्शतवेध्यपि।

कृष्णमित्रटीका :- सहस्रं विध्यति। अम्लश्चासौ वेतसश्च। 'अमिलवेत' (अमलवेत) (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. सहस्रवेधी, २. चुक्र, ३. अम्लवेतस, ४. शतवेधी- ये चार पुल्लिङ्ग नाम अमरबेल के हैं।

नमस्कारी गण्डकाली समङ्गा खदिरेत्यपि॥१४१॥

कृष्णमित्रटीका :- नमस्करणशीला। गाण्डेषु ग्रन्थिषु काली। खदति खदिरा। 'लज्जालू' 'लजारू' (इति च) लोके॥१४१॥[5]

1. Mamari, a kind of vegetable [5] 2. The plant, elaparni or mimosa octondra [4] 3. The ambastha (acilona) plant [5] 4. The amalaveto plant [4] 5. The namaskari (bajaru) plant [4]

हिन्दी अर्थ :- १. नमस्कारी, २. गण्डकाली, ३. समङ्गा, ४. खदिरा- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम लजालू के हैं॥१४१॥

जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया मधुस्रवा।[1]

हिन्दी अर्थ :- जीवति। 'जीवइ' शाकः। 'डोडी' गुर्जरदेशे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. जीवन्ती, २. जीवनी, ३. जीवा, ४. जीवनीय, ५. मधु, ६. स्रवा- ये छः स्त्रीलिङ्ग नाम जीवन्ती के हैं।

कूर्चशीर्षो मधुरकः श्रृङ्गह्रस्वाङ्गजीवकाः॥१४२॥

कृष्णमित्रटीका :- कूर्चं श्मश्रु। तद्वच्छीर्षमस्य। जीवकोऽष्टवर्गान्तर्गतः॥१४२॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. कूर्चशीर्ष, २. मधुरक, ३. श्रृङ्ग, ४. ह्रस्वाङ्ग, ५. जीवक- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम जीवक के हैं॥१४२॥

किराततिक्तो भूनिम्बोऽनार्यतिक्तः

कृष्णमित्रटीका :- किरातदेशे जातस्तिक्तः। त्रीणि। 'चिराइता' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. किराततिक्त, २. भूनिम्ब, ३. अनार्यतिक्त- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम चिरायता के हैं।

अथ सप्तला।

विमला सातला भूरिफेना चर्मकषेत्यपि॥१४३॥

कृष्णमित्रटीका :- सातं सुखं लाति। सातला रक्तक्षीरसीहुण्डः॥१४३॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. सप्तला, २. विमला, ३. सातला, ४. भूरिफेना, ५. चर्मकषा- ये पाँच स्त्रीलिङ्ग नाम सेहुँड़ के हैं॥१४३॥

वायसोली स्वादुरसा वयस्था

कृष्णमित्रटीका :- वायसवल्लीयते वायसोली। 'काकोली' (इति ख्याता)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. वायसोली, २. स्वादुरसा, ३. वयस्था- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम काकोली के हैं।

1. B. reads मधु, स्रवा as two separate names 2. The jiva plant known as dodi in Gujrat 3. The jivaka plant [5] 4. The Bhunimba (cirayata) plant [3] 5. The saptala or red mikl-hedge tree [5] 6. The kakoli plant [3]

अथ मुकूलकः।
निकुम्भो दन्तिका प्रत्यक्श्रेण्युदुम्बरपर्ण्यपि ॥१४४॥

कृष्णमित्रटीका :- मङ्कते मकूलः। 'मकि मण्डने' (भ्वा. आ. से.)। नियतः कुम्भः। दाम्यति दन्ती। 'दला (न्ता)' (लोके) ॥१४४॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. मकूलक, २. निकुम्भ, ३.दन्तिका, ४. प्रत्यक्श्रेणी, ५. उदुम्बरपर्णी- ये पाँच नाम दन्तीनामक औषध के हैं। इनमें एक तथा दो पुल्लिङ्ग और तीन से पाँच स्त्रीलिङ्ग हैं॥१४४॥

अजमोदा तूग्रगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका।

कृष्णमित्रटीका :- अजं मोदयति। द्वे अज-मोदायवानी भेदः। ब्रह्मण दृभ्यते। 'दृभी ग्रन्थे' (तु. प. से.)। दुष्टो यवः। 'यवा' इति॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. अजमोदा, २. उग्रगन्धा, ३. ब्रह्मदर्भा, ४. यवानिका- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम अजवाइन के हैं।

मूले पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि पौष्करे॥१४५॥

कृष्णमित्रटीका :- पौष्करे मूले (इत्यन्वयः) पुष्णाति। पुषः करन् (उ. ४. ४)। कश्मीरेषु भवम्। 'पुष्करमूल (स्य)' त्रीणि॥१४५॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. पुष्करम्, २. काश्मीरम्, ३. पद्मपत्रम्-ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम पुष्करमूल के हैं॥१४५॥

अव्यथाऽतिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी।

कृष्णमित्रटीका :- अतिचरति। पद्यते पद्मम्। चारयति। 'शकादिभ्योऽटन्' (उ. ४. ८१)। 'गुलाब' लोके। पञ्च पद्मचारिण्याः॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. अव्यथा, २. अतिचरा, ३. पद्मा, ४. चारटी, ५. पद्मचारिणी- ये पाँच स्त्रीलिङ्ग नाम स्थलकमलिनी के हैं।

काम्पिल्यः कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रोचनीत्यपि॥१४६॥

कृष्णमित्रटीका :- 'गुलाब' लोके। पञ्च 'कबीला' लोके॥१४६॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. काम्पिल्य, २. कर्कश, ३. चन्द्र, ४. रक्तांग, ५. रोचनी- ये पाँच नाम कबीला के हैं, इनमें एक से चार पुल्लिङ्ग शेष स्त्रीलिङ्ग हैं॥१४६॥

1. **Darti, a medicinal plant** [5] 2. **Ajamoda (ajavaina), a very useful medicinal plant** [4] 3. **Puskaramula** [3] 4. **The padmacarini or rose plant** [5] 5. **The kampilya (kabila) tree** [5]

प्रपुन्नाडस्त्वेडगजोदद्रुघ्नश्चक्रमर्दकः।
पद्माट उरणाख्यश्च

कृष्णमित्रटीका :- पुमांसं नाटयति। एडो मेष एव गजोऽस्य[1]। चक्रं दद्रुं मृद्नाति। पद्ममटति। उरणो मेषः, तस्याख्याऽस्य[2]। 'चकवड' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रपुन्नाड, २. एडगज, ३. दद्रुघ्न, ४. चक्रमर्दक, ५. पद्माट, ६. उरणाख्य- ये छः पुल्लिङ्ग नाम चकवढ़ के हैं।

पलाण्डुस्तु सुकन्दकः॥१४७॥

कृष्णमित्रटीका :- पलस्याण्डमिव पलाण्डुः। 'पिआजु (ज)' (लोके)॥१४७॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. पलाण्डु, २. सुकन्दक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम प्याज के हैं॥१४७॥

लतार्कदुर्द्रुमौ तत्र हरिते

कृष्णमित्रटीका :- लतासु अक्र इव। दुष्टो द्रुमः। हरितपलाण्डु॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१. लतार्क, २. दुर्द्रुम- ये दो पुल्लिङ्ग नाम हरे प्याज के हैं।

अथ महौषधम्।
लशुनं गृञ्जनारिष्टमहाकन्दरसोनकाः॥१४८॥

कृष्णमित्रटीका :- लशति च्छिनत्ति रोगान्। मृञ्ज्यते गृञ्जना। 'गृजिशब्दे' (भ्वा. प. से.)। न रिष्टमस्मात्। महत्कन्दमस्य। रसनोनः। 'लहसुन' (लोके)॥१४८॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. महौषधम्, २. लशुनम्, ३. गृञ्जनम्, ४. अरिष्ट, ५. महाकन्द, ६. रसोनक- ये छः नाम लहसुन के हैं, जिनमें एक तथा दो नपुंसकलिङ्ग शेष चार पुल्लिङ्ग हैं।

पुनर्नवा तु शोथहनी

कृष्णमित्रटीका :- पुनरभीक्ष्णं नवा। द्वे। 'गुद-हपुर्ना' (लोके)॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. पुनर्नवा, २. शोथघ्नी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम गदहपूर्ना के हैं॥

वितुन्नं सुनिषण्णकम्।

1. M. गजोस्य 2. M. तस्याख्यास्य 3. **The Cakramardaka (Cakavada) tree** [6] 4. **Onion** [2] 5. **Green Onion** [2] 6. **Garlic** [6] 7. **The punarnava plant** [2]

कृष्णमित्रटीका :- विगतं तुन्नं व्यथनमस्मात्। सुष्ठु निषण्णमस्मात्। द्वे। 'विसखपरिआ' (लोके)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. वितुन्नम्, २. सुनिषण्णकम् - ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम विसखपरिया के हैं।

स्याद्वातकः शीतलोऽपराजिता शणपर्ण्यपि॥१४९॥

कृष्णमित्रटीका :- आवातं करोति। शणपर्णी॥१४९॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. वातक, २. शीतल, ३. अपराजिता, ४. शणपर्णी- ये चार नाम पटुआ के है। इनमें प्रथम और द्वितीय पुल्लिङ्ग शेष स्त्रीलिङ्ग हैं॥१४९॥

परावताङ्घ्रिः कटभी पण्या ज्योतिष्मती लता।

कृष्णमित्रटीका :- कटवद्भाति। गौरादिः (४. १. ४१)। पण्यते पण्या। पञ्च। 'ककूदनि' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. पारावताङ्घ्रि, २. कटभी, ३. पण्या, ४. ज्योतिष्मती, ५. लता- ये पाँच स्त्रीलिङ्ग नाम मालकांगनी के हैं।

वार्षिकं त्रायमाणा स्यात्त्रायन्ती बलभद्रिका॥१५०॥

कृष्णमित्रटीका :- वर्षासु भवम्। त्रायते। बलेनभद्रा। 'त्रायमान' (लोके)॥१५०॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१. वार्षिकम्, २. त्रायमाणा, ३. त्रायन्ती, ४. बलभद्रिका- ये चार नाम त्रायमाणा के हैं, इनमें एक नपुंसकलिङ्ग और दो से चार स्त्रीलिङ्ग हैं॥१५०॥

विष्वक्सेनप्रियागृष्टिर्वाराही वदरेति च।

कृष्णमित्रटीका :- गृश्यते गृष्टिः। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। 'गेंटि (डि)' (लोके)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. विष्वक्सेनप्रिया, २. गृष्टि, ३. वाराही, ४. बदरा- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम वाराहीकन्द के हैं।

मार्कवो भृङ्गराजः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- मर्चति मार्कवः। भृङ्ग इव राजते। 'भंगरैआ' (लोके)॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१. मार्कव, २. भृङ्गराज- ये दो पुल्लिङ्ग नाम भृङ्गराज के हैं।

काकमाची तु वायसी॥१५१॥

कृष्णमित्रटीका :- काकान् मञ्चते। 'मचि धारणे'। 'केवैआ' (लोके)॥१५१॥[1]

हिदी अर्थ :- १. काकमाची, २. वायसी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम मकोय के हैं॥१५१॥

शतपुष्पासितच्छत्त्रातिछत्त्रामधुरा मिसिः।
अवाक्पुष्पी कारवी च

कृष्णमित्रटीका :- शतं पुष्पमस्याः। 'शौंफ' (लोके)।[2] कां खेति। 'मंगरैल' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. शतपुष्पा, २. सितच्छत्त्रा, ३. अतिच्छत्त्रा, ४. मधुरा, ५. मिसि, ६. आवाक्पुष्पी, ७. कारवी- ये सात स्त्रीलिङ्ग नाम सौंफ के हैं।

सरणा तु प्रसारिणी॥१५२॥
तस्यां कटंभरा राजबला भद्रबलेति च।

कृष्णमित्रटीका :- प्रसारयति। राजेव बलदा। 'गन्धप्रसारणि' (इति ख्याता)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. सरणा, २. प्रसारिणी, ३. कटम्भरा, ४. राजबला, ५. भद्रबला- ये पाँच स्त्रीलिङ्ग नाम आकाशबेल के हैं।

जनी जतूका रजनी जतुकृच्च क्रवर्तिनी॥१५३॥
संस्पर्शा

कृष्णमित्रटीका :- जनयति जनी। 'उलूकादयश्च' (उ. ४. ४१)। जतूका। रज्यतेऽनया[5]। जतु करोति। चक्रवद्वर्तितुं शीलमस्याः॥१५३॥ स्पृश्यते। 'ययरी' इति उत्तरदेशे प्रसिद्धं सुगन्धिद्रव्यम्॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. जनी, २. जतूका, ३. रजनी, ४. जतुकृत्, ५. चक्रवर्तिनी॥१५३॥, ६. संस्पर्शा- ये छः स्त्रीलिङ्ग नाम चकवत के हैं॥

अथ शटी गन्धमूलीषड्ग्रन्थिकेत्यपि।
कचूरोऽपि पलाशः

कृष्णमित्रटीका :- 'शट रुजादौ' (भ्वा. प. से.)। पलमश्नाति 'कचूर' (लोके)॥[7]

---

1. Vitunna, a pot herb [2] 2. Sanaparni, a plant beter known as patasana [2] 3. Jyotismati (kakudani) [5] 4. The trayamana plant [4] 5. The varahi tree [5] 6. Bhrngaraja, a useful medicinal plant [2]

1. The makoya plant [2] 2. Sweet cummin [5] 3. Karavi (mangraila) [2] 4. The gandhaprasarini plant [5] 5. M. रज्यतेनया 6. Cakravartini, a frgrant substance called yayari in northern India [6] 7. The karcura or zedoary plant [5]

हिन्दी अर्थ :- १. शटी, २. गन्धमूली, ३. षड्ग्रन्थिका, ४. कर्चूर, ५. पलाश- ये पाँच नाम आमाहल्दी के हैं। इनमें एक से तीन स्त्रीलिङ्ग तथा चार से पाँच पुल्लिङ्ग हैं।

अथ कारवेल्लः कटिल्लकः ॥१५४॥
सुषवी च

कृष्णमित्रटीका :- कारे वेल्लति। 'वेल्ल चलने' (भ्वा. प. से.)। 'कठ शोके' (भ्वा. प. से.)। बाहुलकादिल्लः ॥१५४॥ सुषुवति। गौरादिः (४. १. ४१)। 'करैला' (लोके)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. कारवेल्ल, २. कठिल्लकः ॥१५४॥, ३. सुषवी- ये तीन नाम करैला के हैं, जिनमें एक-दो पुल्लिङ्ग और तृतीय स्त्रीलिङ्ग हैं।

अथ कुलकं पटोलस्तिक्तकः पटुः।

कृष्णमित्रटीका :- पाटयति पटोलः। 'परवर' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. कुलकं, २. पटोल, ३. तिक्तक, ४. पटु- ये चार नाम परवल के हैं, इनमें एक नपुंसकलिङ्ग दो से चार पुल्लिङ्ग हैं।

कूष्माण्डकस्तु कर्कारूः

कृष्णमित्रटीका :-कु[3] ईषदुष्मा अण्डेषु बीजेषु यस्य। कर्कश्चासावरुः वस्ति शोधकः 'कोहेंडा'(कोंहड़ा) (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. कूष्माण्डक, २. कर्कटी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम ककड़ी के हैं।

एर्वारुः कर्कटी स्त्रियौ ॥१५५॥

कृष्णमित्रटीका :- आ समन्तात् ईरयति वारयति च एर्वारुः। 'इवारुः' इति कूवचित्। कर्कमटति। 'कांकरि' (लोके)॥१५५॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१. ईर्वारु, २. कर्कटी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम ककड़ी के हैं॥१५५॥

इक्ष्वाकुः कटुतुम्बी स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- इक्षुमाकरोति। मृगय्वादिः (उ. १. ३७)। तुम्बति रुचिम्। द्वे। 'तितलौकी' (लोके)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. इक्ष्वाकु, २. कटुश्चासौ- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम तोता कद्दू के हैं।

तुम्ब्यलाबूरुभे समे॥

कृष्णमित्रटीका :- न लम्बते। 'नञि अम्बेर्न-लोपश्च' (उ. १. ८७)॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१. तुम्बी, २. अलाबू- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम लौकी के हैं।

चित्रा गवाक्षी गोजग्धा[2]

कृष्णमित्रटीका :- चियते चित्रा। गां तुम्बति। 'तुबि अदने' (भ्वा. प. से.)। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। धन्वन्तरिमदनपालादिनिघण्टुषु 'गोडुम्बा' शब्दो न दृश्यते किं तु 'गवादनी' इति। तस्मादत्र 'गोजग्धा' इति सुपाठः[3]। 'गोदुग्धा' इत्यपि क्वचिल्लब्धा॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. चित्रा, २. गवाक्षी, ३. गोडुम्बा- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम जेठ महीने में होने वाली ककड़ी के हैं॥

विशाला त्विन्द्रवारुणी॥१५६॥

कृष्णमित्रटीका :- 'इन्द्रा मृगादनी स्यादिन्द्रवारुणी चान्या विशाला गजविभिटः' इति वैद्यके प्रसिद्धत्वात्। 'इन्द्रवारुणी या तु बृहत्फला सा विशाला' 'कांकरिभेदः' इति तु रामाश्रमस्य भ्रमः। रोन्द्री त्विन्द्रसुचित्रा गावा भा (?)। इन्द्रं वारयति। 'इंदारुणि' (लोके)॥१५६॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. विशाला, २. इन्द्रवारुणी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम इनारुन के हैं॥१५६॥

अर्शोघ्नः शूरणः कन्दः

कृष्णमित्रटीका :- अर्शांसि हन्ति। सूरयति। कन्दयति। 'शूरण' इति ख्यातः॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. अर्शोघ्न, २. शूरण, ३. कन्द- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम सूरन के हैं।

गण्डीरस्तुसमष्ठिला।

कृष्णमित्रटीका :- गण्डति गण्डीरः। 'गांडर' (लोके)॥[7]

---

1. **Karavella** (Karaila) [3] 2. **Patola** (paravara), **a species of cucumber** [4] 3. M. क 4. Pumpkin [2] 5. **Karkati** (kankari, a kind of cucumber) 6. **Bitter gourd** (titalauki) [2]

1. **Gourd** [2] 2. **B. reads** गोडुम्बा, **and K. reads** गोतुम्बा 3. M. सुपठम् 4. **Citra, a kind of cucumber** [3] 5. **Indravaruni, a kind of medicinal plant** [2] 6. **S'urana, a kind of esculent root** [3] 7. **A kind of grass of which khas'a is the root** [2]

हिन्दी अर्थ :-१. गण्डीर, २. समष्ठिला- ये दो नाम गांडर शाक के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग द्वितीय स्त्रीलिङ्ग हैं।

कलम्बी

कृष्णमित्रटीका :- के लम्बते। 'करेंबु' (लोके)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- कलम्बी- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम करेमू शाक के हैं।

उपोदका

कृष्णमित्रटीका :- उप अधिकमुदकमस्याः। 'पोई' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- उपोदिका- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम पोई के हैं।

अस्त्री तु मूलकं

कृष्णमित्रटीका :- मूलति। 'मूल प्रतिष्ठायाम्' (भ्वा. प. से.)। 'मूरी (ली)' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- मूलकम्- यह एक पुल्लिङ्ग नाम मूली का हैं।

हिलमोचिका॥१५७॥

कृष्णमित्रटीका :- हिलति मोचयति च। 'हिलिसा' (लोके)॥१५७॥[4]

हिन्दी अर्थ :- हिलमोचिका- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम हिलसाल का हैं॥१५७॥

वास्तूकं शाकभेदाः स्युः

कृष्णमित्रटीका :- वसति वास्तूकः। 'उलूकादयश्च' (उ. ४. ४१) इति साधुः। 'बथुआ' (लोके)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- वास्तूकम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम बथुआ साग का हैं।

दूर्वा तु शतपर्विका।

सहस्रवीर्याभार्गव्यौ रुहानन्ता

कृष्णमित्रटीका :- 'दूर्वी हिंसायाम्' (भ्वा. प. से.)। दूर्वा। षट् 'दूर्वा' (इति ख्यातस्य)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. दूर्वा, २. शतपर्विका, ३. सहस्रवीर्या, ५. भार्गवा, ६. रुहा, ७. अनन्ता- ये छः स्त्रीलिङ्ग नाम दूब के हैं॥

अथ सा सिता॥१५८॥

गोलोमी शतवीर्या च गण्डाली शकुलाक्षकः।

कृष्णमित्रटीका :- सिता दूर्वा॥१५८॥ गोलो-मसु जाता। गण्डमलति। 'शुक्लदुर्वा'॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. गोलोमी, २. शतवीर्या, ३. गण्डाली, ४. शकुलाक्षका- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम सफेद दूब के हैं, इनमें चौथा पुल्लिङ्ग भी हैं।

कुरुविन्दो मेघनामा मुस्ता मुस्तकमस्त्रियाम्॥१५९॥

कृष्णमित्रटीका :- कुरून् विन्दति। 'मुस्त संघाते'। चत्वारि। 'मोथा' (लोके)॥१५९॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१. कुरुविन्द, २. मेघनामा, ३. मुस्ता- ये चार नाम मोथा के हैं, इनमें एक से दो पुल्लिङ्ग तीन स्त्रीलिङ्ग चतुर्थ नपुंसकलिङ्ग पुल्लिङ्ग हैं॥१५९॥

स्याद्भद्रमस्तको गुन्द्रा

कृष्णमित्रटीका :- गां जलं द्राति। 'गोंद' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१. भद्रमुस्तक, २. गुन्द्रा- ये दो नाम नागरमोथा के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग और द्वितीय स्त्रीलिङ्ग हैं।

चूडाला चक्रलोच्चटा।

कृष्णमित्रटीका :- उच्चटति। 'मुस्ताविशेषस्य' त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. चूडाला, २. चक्रला, ३. उच्चटा- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम मोथा के हैं।

वंशे त्वक्सारकर्मारत्वचिसारतृणध्वजा॥१६०॥

शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः।

कृष्णमित्रटीका :- वमति वंशः। कर्मा राति। तृणेषु ध्वज इव॥१६०॥ वेणति वेणुः। 'वेणृ निशामनादौ' (भ्वा. उ. से.)। मस्कते। 'मस्क गतौ' (भ्वा. आ. से.)। 'वांस' (लोके)॥[5]

---

1. Karembu, a kind of vegetable [1] 2. Upodaka (poi), a kind of herb [1] 3. Radish [1] 4. Hilisa [1] 5. Vastuva, a kind of vegetable [1] 6. Durva (bent grass) [6]

1. White durva [4] 2. The musta (motha) grass [4] 3. The gundra (gonda) grass [2] 4. Cakrala, a kind of motha grass [3] 5. Bamboo [10]

हिन्दी अर्थ :- १. वंश, २. त्वक्सार, ३. कर्मार, ४. त्वचिसार, ५. तृणध्वज ॥१६०॥, ६. शतपर्वा, ७. यवफल, ८. वेणु, ९. मस्कर, १०. तेजन- ये दास पुल्लिङ्ग नाम बाँस के हैं॥

वेणवः कीचकास्ते स्युर्ये स्वनन्त्यनिलोद्धताः ॥१६१॥

कृष्णमित्रटीका :- अनिलेन ताडिता वेणवो ये शब्दायन्ते ते कीचकाः ॥१६१॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१. किचक- यह एक पुल्लिङ्ग नाम उस बाँस का है जिसके छिद्रों में हवा के भरने से शब्द होने लगता है॥१६१॥

ग्रन्थिर्ना पर्वपरुषी

कृष्णमित्रटीका :- ग्रन्थे ग्रन्थिः। पिपर्त्ति परुः। 'गांठि' (गाँठ) (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. ग्रन्थि, २. पर्व, ३. परुस्- ये तीन नाम वंशादि के पोर (ग्रन्थि) के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग शेष दो नपुंसकलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग हैं।

गुन्द्रस्तेजनकः शरः।

कृष्णमित्रटीका :- गां द्राति गुन्द्रः। शृणाति शरः। 'शरहती' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. गुन्द्रः, २. तेजनकः, ३. शर- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम सरकण्डा के है।

नडस्तु धमनः पोटगलः

कृष्णमित्रटीका :- 'नड गहने'। 'धमिः' सौत्रः। पोटः संश्लिष्टो गलोऽस्य[4]। 'नल' (इति ख्यातः)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. नड, २. धमन, ३. पोटगल - ये तीन पुल्लिङ्ग नाम नरकट के हैं।

अथो काशमस्त्रियाम्॥१६२॥

इक्षुगन्धा पोटगलः

कृष्णमित्रटीका :- 'काशृ दीप्तौ' (भ्वा. आ. से.)॥१६२॥ 'काश' (लोके)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. काश, २. इक्षुगन्धा, ३. पोटगलः- ये तीन नाम काश नामक घास विशेष के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय स्त्रीलिङ्ग और तृतीय पुल्लिङ्ग हैं।

1. **A sounding bomboo** [1] 2. **The joint or knot of a bamboo, cane & C.** [3] 3. **S'ara, a kind of white reed** [3] 4. M. गलोस्य 5. **The nala reed** [3] 6. **Kasa, a kind of grass used for making mats & C.** [4]

पुंभूम्नि तु वल्गजाः।

कृष्णमित्रटीका :- 'वल संवरणे' (भ्वा. आ. से.)। 'वज गतौ' (भ्वा. प. से.)। वल् चासौ 'वजश्च। 'वगई' (लोके)'[1]

हिन्दी अर्थ :- वल्वला- यह एक पुल्लिङ्ग नित्य बहुवचनान्त नाम वगई का हैं। 'एको बल्वजः' इति भाष्यप्रयोगात् एकवचनान्तोऽपि।

रसाल इक्षुः

कृष्णमित्रटीका :- इष्यते इक्षुः। 'इषे क्सुः' (उ. ३. ५७)। 'ऊँष (ख)' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. रसाल, २. इक्षु- ये दो पुल्लिङ्ग नाम ऊख के हैं।

तद्भेदाः पुण्ड्रकान्तारकादयः॥१६३॥

कृष्णमित्रटीका :- पुण्ड्यते। 'पुडि खण्डने'। 'पंवडा' (लोके)। कान्तमृच्छति। 'कतारा' (लोके)॥१६३॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. पुण्ड्र, २. कान्तारक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम ईख के विशेष भेद हैं। आदिपद से 'इक्षुः कर्कटको वंशः कान्तारो वेणु निःसृतः। इक्षुन्यः पौण्ड्रकश्च रसालः सुकुमारकः' का संग्रह हैं॥१६३॥

स्याद्वीरणं वीरतम्

कृष्णमित्रटीका :- वीरयति वीरणम्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. वीरणम्, २. वीरतरम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम गांडर तृणविशेष के हैं।

मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम्।
अभयं नलदं सेव्यममृणालं जलाशयम्॥१६४॥
लामज्जकं लघुलयमवदाहेष्टकापथे।

कृष्णमित्रटीका :- अस्य वीरणस्य मूले। भयम-स्मात्। नलं गन्धं ददाति। मृणालमिव। सादृश्ये नञ्॥१६३॥ लातिला। सा मज्जाऽस्य[5]। लीयते दाहोऽस्मात्[6] (लघु) लयम्। अवलीयते दाहोऽनेन[7]। इष्टकापथमस्य। 'उशीर' (इति ख्यातस्य)॥[8]

1. **Vagai, a kind of grass** [1] 2. **Sugar-cane** [2] 3. **Different kinds of sugarcane** [1 each] 4. **Virana, a kind of fragrant grass** [2] 5. M. मज्जास्य 6. M. दाहोस्मात् 7. M. दाहोनेन 8. **Us'ira, the fragrant root of a virana plant** [10]

हिन्दी अर्थ :-१. उशीरम्, २. अभयम्, ३. नलदम्, ४. सेव्यम्, ५. अमृणालम्, ६. जलाशयम् ॥१६४॥, ७. लामज्जकम्, ८. लघुलयम्, ९. अवदाहम्, १०. इष्टकापथम्- ये दस नाम खस के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग और शेष नौ नाम नपुंसकलिङ्ग हैं।

नलादयस्तृणं गर्मुच्छ्यामाकप्रमुखा अपि ॥१६५॥

कृष्णमित्रटीका :- तृण्यते तृणम्। 'तृणु अदने' (त. उ. से.)। गीर्यते गुर्मुत्। 'ग्रो मुट् च' (उ. १. ९५) इत्युतिः। श्याममकति। गर्मुच्छ्यामाकौ तृणधान्यविशेषौ॥१६५॥

हिन्दी अर्थ :- नलादय, २. तृणम्, ३. गर्मुत्, ४. श्यामाक- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम तृण जाति धान्य के हैं। प्रमुख शब्द से नीवार का संग्रह है। कोद्रवादि का संग्रह करने से उसमें भी हविष्यत्व आ जायेगा॥१६५॥

अस्त्रीः कुशः[1] कुथो दर्भः पवित्रम्

कृष्णमित्रटीका :- कौ शेते कुशः। दृभ्यते दर्भः। पूयतेऽनेन[2] पवित्रम्। 'कुश' (इति ख्यातः)॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१. कुशम्, २. कुथ, ३. दर्भ (दृभ्यते= ग्रन्थभवति इति घञ्), ४. पवित्रम् (पूयतेऽनेन इति इत्रः)- ये चार नाम कुशा के हैं, इनमें प्रथम से तृतीय नपुंसकलिङ्ग पुल्लिङ्ग, और चतुर्थ नपुंसकलिङ्ग हैं।

अथ कत्तृणम्।

पौरसौगन्धिकध्यामदेवजग्धकरौहिषम् ॥१६६॥

कृष्णमित्रटीका :- कुत्सितं तृणम्। पुरे भवम्। सुगन्धः प्रयोजनमस्य। ध्यायति ध्यामम्। देवैर्जग्धमिव। रोहति रौहिषम्। 'रोहिष' (लोके)॥१६६॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. कत्तृणम्, २. पौरम्, ३. सौगन्धिकम्, ४. ध्यामम्, ५. देव-जग्धकम्, ६. रौहिषम् - ये छः नपुंसकलिङ्ग नाम रोहिषनामक सुगन्धित घास के हैं॥१६६॥

छत्त्रातिच्छत्त्रपालघ्नौ

कृष्णमित्रटीका :- पालं क्षेत्रं हन्ति। 'जलजतृणविशेषस्य'॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. छत्त्रा, २. अतिच्छत्र, ३. पालघ्न- ये तीन नाम जल में होने वाले तृण विशेष के हैं, इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, शेष पुल्लिङ्ग हैं।

मालातृणकभूस्तृणौ।

कृष्णमित्रटीका :- मालाकाराणि तृणान्यस्य। भुवस्तृणम्। पारस्करादिः (६. १. १५७)। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. मालातृणकम्, २. भूस्तृणम् - ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम तृणविशेष के हैं। भानुदीक्षिते..... 'भूस्तृणौ' पाठ रखा है उनके मत से दोनों पुल्लिङ्ग हैं। क्षीरस्वामी ने छत्रादि पाँचों को पर्य्याय माना है।

शष्पं बालतृणम्

कृष्णमित्रटीका :- शष्यते शष्पम्। 'शष हिंसायाम्' (भ्वा. प. से.)। 'नवतृण (स्य)'॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. शष्पम्, २. बालं तृणम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम कोमल और नई घास के हैं।

घासा यवसम्

कृष्णमित्रटीका :- अद्यतेऽनेन[3] घासः। यूयते यवसम्। 'घास' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१. घास, २. यवसम्- ये दो नाम बैलों के खाने योग्य घास और भूसा के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग हैं।

तृणमर्जुनम् ॥१६७॥

कृष्णमित्रटीका :- अर्ज्यते। 'तृण'- (मात्रस्य)॥१६७॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. तृणम्, २. अर्जुनम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम तृण (घास) मात्र के हैं॥१६७॥

तृणानां संहतिस्तृण्या नड्या तु नडसंहतिः।

कृष्णमित्रटीका :- संहतिः समूहः। 'पाशादिभ्यो यः' (४. २. ४९) (तृणनडसमूहयोरेकैकम्)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- तृण (घास) की ढेरीको- तृण्या कहते हैं, जो स्त्रीलिङ्ग हैं।

नड्या नडसमूह का- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम है।

---

1. B. and K. read कुशम् 2. M. पूयतेनेन 3. Kus'a, kind of holy grass used in several religious ceremonies [4] 4. Rohisa, a kind of fragrant grass [6] 5. Palaghna, a water- growing grass [2]

1. Malatrna, a kind of fragrant grass [2] 2. Young grass [2] 3. M. अद्यतेनेन 4. Meadow- grass [2] 5. Grass in general [2] 6. A heap of grass, and a quantity of reeds [1 each]

तृणराजाह्वयस्तालः

कृष्णमित्रटीका :- 'तल प्रतिष्ठायाम्' (चु. प. से.)। 'ताल' (लोके)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. तृणराजाह्वय, २. ताल- ये दो पुल्लिङ्ग नाम ताल के हैं।

नालिकेरस्तु लाङ्गली॥१६८॥

कृष्णमित्रटीका :- नालिकामीरयति। 'नरिअर' (नारियल) (लोके)॥१६८॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. नालिकेर, २ लाङ्गली- ये दो पुल्लिङ्ग नाम नारियल के हैं।

घोण्टा तू पूगः क्रमुको गुवाकः खपुरः

कृष्णमित्रटीका :- घोणते वोण्टा। पुनाति पूगः। क्रामति क्रमुकः। 'गु पुरीषोत्सर्गे' (तु. प. अ.)। 'पिनाकादयश्च' (उ. ४. १५) इति गुवाकः। खं पिपर्ति। 'सुपारी' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. घोण्टा, २. पूग, ३. क्रमुक, ४. गुवाक, ५. खपुर- ये पाँच नाम सुपारी वृक्ष के हैं, इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, शेष चार पुल्लिङ्ग हैं।

अस्य तु।

फलमुद्वेगम्

कृष्णमित्रटीका :- अस्य पूगस्य फलम्। उद्वेजयति॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. उद्वेग- यह एक पुल्लिङ्ग नाम सुपारी का हैं।

एते च हिंतालसहितास्त्रयः॥१६९॥

खर्जूरः केतकी ताली खर्जूरी च तृणद्रुमः।

इति वनौषधि वर्गः॥४॥

कृष्णमित्रटीका :- एते नालिकेरादयो हिंतालेन सहिताश्चत्वारः तृणजातीया द्रुमाः। हीनोऽल्प-स्तालः[5]॥१६९॥ 'खर्ज व्यथने' (भ्वा. प. से.)। केतयति। 'वनखजूरि' (लोके)। अनंनासो विष्णुकन्दः। 'अनंनास' (लोके) 'खर्वुजं हिमकर्कटम्।' 'खर्बूज' (लोके)॥[6]

इति वनौषधि वर्गः॥४॥

हिन्दी अर्थ :- एते=नारिकेलाद्यास्त्रयश्चतुर्थेन हिंतालेन सहिताश्चत्वारो खर्जूराद्याः तृणजातीया द्रुमाः= वृक्षाः इति सम्बन्धः। १. हिन्ताल, २. खर्जूर, ३. केतको, ४. खर्जूरी, ५. ताली- ये पाँच तृण वृक्षों के एक-एक नाम हैं। इनमें एक और दो पुल्लिङ्ग, शेष तीन से पाँच स्त्रीलिङ्ग हैं।

इति वनौषधि वर्गः॥४॥

अथ सिंहादिवर्गः॥५॥

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्यक्षः केशरी[1] हरिः।

कृष्णमित्रटीका :- हिनति सिंहः। मृगणामिन्द्रः। पञ्चं विस्तृतमास्यमस्य। हरिणी पिङ्गले अक्षिणी यस्य। केशराः स्कन्धबालाः सन्त्यस्य। हरति हरिः। 'अच इः' (उ. ४. १३८)। 'सिंह' (इति ख्यातः)[2]

हिन्दी अर्थ :- १. सिंह, २. मृगेन्द्र, ३. पच्चास्य, ४. हर्यक्ष, ५. केसरी, ६. हरि- ये छः पुल्लिङ्ग नाम सिंह के हैं।

शार्दूलद्वीपिनौ व्याघ्रे

कृष्णमित्रटीका :- श्रृणाति शार्दूलः। 'श्रृ हिंसायाम्' (क्र्या. प. से.)। दुल च् (उ. ४. ९०)। दुक् दीर्घौ। द्वीपं चर्मास्यास्ति। व्याजिघ्रति। 'वाघ' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. शार्दूल, २. द्वीपी, ३. व्याघ्र ये तीन पुल्लिङ्ग नाम बाघ के हैं।

तरक्षुस्तु मृगादनः॥१॥

कृष्णमित्रटीका :- तरं मार्गं क्षिणोति तरक्षुः। मृगय्वादिः (उ. १. ३७)। 'तेंदुआ' (लोके)॥१॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. तरक्ष, २. मृगादन- ये दो पुल्लिङ्ग नाम तेंदुआ बाघ के हैं॥१॥

वराहः शूकरो[5] घृष्टिः कोलः पोत्री किरिः[6] किटिः। दंष्ट्री घोणी स्तब्धरोमा क्रोडो भूदार इत्यपि॥२॥

कृष्णमित्रटीका :- वरमाहन्ति शूकोऽस्त्यस्या[7]। घर्षति। 'घृषु संघर्षे' (भ्वा. प. से.)। पोत्रं मुखाग्रमस्त्यस्य। किरति। बाहुलकात् किः। केटति। 'किट गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'इक्षुपधात्कित्' (उ. ४.

---

1. The palm tree [2] 2. Cocoanut [2] 3. The betel-nut tree [5] 4. Betel-nut [1] 5. M. हीनोल्पस्तालः 6. Four kinds of grass-trees (trnadruma) [1 each]

1. B. and K. read केसरी 2. Lion [6] 3. Tiger [3] 4. Hyena [2] 5. Majority reads सूकरो 6. B. prefers किरः 7. M. शूकोस्त्यस्य

११६)। दंष्ट्राऽस्त्यस्य[1]। घोणा नासाऽस्य[2]। ब्रीह्यादी (निः) (५. ३. ११६)। क्रोडोऽस्या-स्ति[3]। 'क्रुड निमज्जने' (तु. प. से.)। 'शूअर' (लोके)॥२॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१. वराह, २. सूकर, ३. घृष्टि, ४. कोल, ५. पोत्री, ६. किर, ७. किटि, ८. दंष्ट्री, ६. घोणी, १०. स्तब्धरोमा, ११. क्रोड, १२. भूदार- ये बारह पुल्लिङ्ग नाम सूअर के हैं॥२॥

कपिप्लवङ्गप्लवगशाखामृगवलीमुखाः।
मर्कटी वानरः कीशो वनौकाः

कृष्णमित्रटीका :- कम्पते कपिः। 'कुडिक-म्प्योर्नलोपश्च' (उ. ४. १४३) इतीन्। प्लवेन गच्छति। शाखा सञ्चारी मृगः। वली मुखेऽस्य[5]। मर्कति मर्कटः। 'मर्कः' सौत्रः ग्रहणार्थः। 'शकादिभ्योऽटन्' (उ. ४. ८१)। वने राति वनरः, तस्यायं वानरः। 'की' इति शब्दमीष्टे। 'वानर' (इति ख्यातस्य)॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१. कपि, २. प्लवङ्ग, ३. प्लवग, ४. शाखामृग, ५. वलीमुख, ६. मर्कट, ७. वानर, ८. कीश, ६. वनौका- ये नौ पुंल्लिङ्ग नाम वानर के हैं।

अथ भल्लुके ॥३॥

ऋक्षाच्छभल्लभालूकाः

कृष्णमित्रटीका :- भल्लते हिनस्ति भल्लुकः। 'भल्ल हिंसायाम्' (भ्वा. आ. से.)। बाहुलकादुः॥३॥ ऋक्ष्णोति ऋक्षः। 'ऋक्ष हिंसायाम्' (स्वा. प. से.)। अच्छ अभिमुखं भल्लते। भालयति भालूकः। 'भल आभण्डने' (चु. आ. से.) उलूकादिः (उ. ४. ४१)। भल्लतेऽस्तु[7] भल्लुकः। 'भालू' (लोके)॥[8]

हिन्दी अर्थ :-१. भल्लुक, २. ऋक्ष, ३. अच्छमल्ल, ४. भालूक- ये चार पुल्लिङ्ग नाम भालू के हैं।

गण्डके खड्गखड्गिनौ।

कृष्णमित्रटीका :- गच्छति गण्डः। 'गमन्ताड्डः' (उ. १. ११४)। खडति भिनत्ति खड्गः। गन् कित् (उ. १. १२४)। 'गैंडा' (लोके)॥[9]

हिन्दी अर्थ :-१. गण्डक, २. खड्ग, ३. खड्गी- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम गेंड़ा के हैं।

1: M. दंष्ट्रास्त्यस्य 2. M. नासास्य 3. M. क्रोडोस्यास्ति 4. **Hog** [12] 5. M. मुखेस्य 6. **Monkey** [9] 7. M. भल्लतेस्तु 8. **Bear** [4] 9. **Rhinoceros** [3]

लुलापो महिषी वाहद्विषत्कासरसैरिभाः ॥४॥

कृष्णमित्रटीका :- लुलति पङ्के अयते च। 'मह पूजायाम्' (भ्वा. प. से.)। 'अविमह्योष्टिषच्' (उ. १. ४५)। वाहानां द्विषन्। ईषत् सरति। सीरिषु भाति। ततोऽण्[1]। सैरिभः। 'भैंसा' (इति ख्यातस्य) पञ्च॥४॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. लुलाय, २. महिष, ३. वाहद्विषन्, ४. कासर, ५. संरिभ- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम भैंसा के हैं॥४॥

स्त्रियां शिवा भूरिमायगो गोमायुर्मृगधूर्तकाः।
शृगालवञ्चकक्रोष्टुफेरुफेरवजम्बुकाः ॥५॥

कृष्णमित्रटीका :-गां विकृतां वाचं मिनोति। 'डुमिञ् प्रक्षेपे' (स्वा. उ. से.)। 'कृवापा-' (उ. १. १) इत्युण्। सृजति सृगालः। सरति गालयति चेति वा। तालव्यादिः (शृगालः) अपि। क्रोशति। 'फे' इत्यव्यक्तं रौति। जमति जम्बुकः। 'जमु' अदने (भ्वा. प. से.)। 'सियार' (लोके)॥५॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. शिवा, २. भूरिमाय, ३. गोमायु, ४. मृगवृर्तक, ५. सृगाल, ६. वञ्चक, ७. क्रोष्टु, ८. फेरु, ६. फेरब, १०. जम्बुक- ये दस नाम सियार के हैं। इनमें प्रथम नित्य स्त्रीलिङ्ग शेष नौ नाम पुल्लिङ्ग हैं॥५॥

ओतुर्विडालो मार्जारो वृषदंशक आखुभुक्।

कृष्णमित्रटीका :- अवतीति ओतुः। 'सितनि' (उ. १. ६६) इति तुन्। विडमालाति। मार्ष्टि मार्जारः। 'कञ्जिमृजिभ्यां चित्' (उ. ३. १३७) इत्यारन्। वृषान् मूषकान् दशति। 'बिलारि' (लोके)।[4]

हिन्दी अर्थ :- १. ओतु, २. विडाल, ३. मार्जार, ४. वृषदंशक, ५. आखून्- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम बिलाव के हैं।

त्रयो गौधारगौधेरगौधेया गोधिकात्मजे ॥६॥

कृष्णमित्रटीका :- गोधाया अपत्यम्। 'चंदनगोह' (इति ख्यातस्य)॥६॥[5]

हिन्दी अर्थ :- गोधा (चन्दन शोहर) में उत्पन्न होने वाले जन्तु विशेष के -१. गौधार, २. गौधेर, ३. गौधेय- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम हैं॥६॥

1. M. ततोण् 2. **Buffalo** [5] 3. **Jackal** [10] 4. **Cat** [5] 5. **Iguana** [3]

श्वावित्तु शल्यः

कृष्णमित्रटीका :- श्वानं विध्यति। 'शल चलने' (भ्वा. प. से.)। यत्। 'साही' (लोके)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. श्वावित्, २. शल्य- ये दो पुल्लिङ्ग नाम साही के हैं।

तल्लोम्नि शलली शललं शलम्।

कृष्णमित्रटीका :- वृषादित्वात् (उ. १. १०६) कलच्। शललम्। त्रीणि 'साहीकण्टकस्य'॥

हिन्दी अर्थः- १. शलली, २. शललम्, ३. शलम्- ये तीन नाम साही के काँटे के हैं, इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, शेष दो नपुंसकलिङ्ग हैं।

वातप्रमीर्वातमृगः

कृष्णमित्रटीका :- वातं प्रमिमीते वाताभिमुखं धावनात्। वात इव मृगः। निश्शङ्को मृगविशेषः पृषतभेदः॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. वातप्रेमी, २. वातमृग- ये दो पुल्लिङ्ग नाम हवा की ओर मुखकर के तेज दौड़ने वाले मृगविशेष के हैं।

कोक ईहामृगो वृकः ॥७॥

कृष्णमित्रटीका :- कोकते। 'कुक वृक आदाने' (भ्वा. आ. से.)। ईहामृगस्येवा (स्य)। 'वीगु' (लोके)॥७॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. कोक, २. ईहामृग, ३. वृक- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम हुडार के हैं।

मृगे कुरङ्गवातायुहरिणाजिनयोनयः॥

कृष्णमित्रटीका :- मृग्यते व्याधेः[4]। कौ रङ्गोऽस्य[5] हरिणाकृतिर्महानयम्। वातमयते। उण्। हरति मनः। 'श्या-स्त्या-' (उ. २. ४६) इतीनच्। ताम्रवर्णः। 'मृग' (इति ख्यातः)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. मृग, २. कुरङ्ग, ३. वातायु, ४. हरिण, ५. अजिनयोनि- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम हरिण के हैं।

ऐणेयमेण्याश्चर्माद्यम्

कृष्णमित्रटीका :- 'एण्या ढञ्' (४. ३. १५९)॥[7]

हिन्दी अर्थ :- मृग्याश्चर्मादि-ऐणेयम्- यह एक त्रिलिङ्गि नाम हरिणी के चर्मास्थि आदि का हैं।

एणस्यैणमुभेत्रिषु ॥८॥

कृष्णमित्रटीका :- एणचर्मादौ तु 'प्राणिरजतादिभ्योऽञ्' (४. ३. १५४)॥८॥[1]

हिन्दी अर्थ :- ऐणम्- यह एक त्रिलिङ्गि नाम हरिण के चर्मास्थि का है॥८॥

कदली कन्दली चीनश्चमूरुप्रियकावपि।
समूरुश्चेति हरिणा अमी अजिनयोनयः ॥९॥

कृष्णमित्रटीका :- के दलति। कन्दे लीयते। चिनोति चीनः। चम्वामुरुर्यस्य। शोभनावुरू यस्य। एते हरिणभेदाश्चर्मण्युपयुक्ताः॥९॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. कदली, २. कन्दली, ३. चीन, ४. चमूरु, ५. प्रियक, ६. समूरु- ये छः नाम मृग विशेष के हैं, इनमें प्रथम दो स्त्रीलिङ्ग, शेष चार पुल्लिङ्ग हैं।

कृष्णसाररुरुन्यङ्कुरशङ्कुशवररौहिषाः।
गोकर्णपृषतैणर्श्यरोहिताश्चमरो मृगाः ॥१०॥

कृष्णमित्रटीका :- कृष्णेन सारः शबलः। रौति रुरुः। जत्वादि (उ. ४. १०२) शरत्पुच्छशृङ्गः। न्यञ्चतीति न्यङ्कुः। 'नावञ्चेः' (उ. १. १७) इति कुः। बहुविषाणः। रमते रङ्कुः। मृगय्वादिः (उ. १. ३७)। शं वृणोति शवरः। रोहिषं तृणभेदमत्ति। पृषताः सन्त्यस्य। 'चीतर' (लोके)। एति एणः, कृष्णहरिणः। ऋच्छति ऋश्यः। गवय एव 'रोरु' लोके। रोहितो रक्तत्वात्। चमति चमरः। एते द्वादशमृगभेदाः॥१०॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. कृष्णसार, २. रुरु, ३. न्यङ्कु, ४. रङ्कु, ५. शम्बर, ६. रौहिष, ७. गोकर्ण, ८. पृषत, ९. एण, १०. ऋश्य, ११. रोहित, १२. चमर- ये बारह पुल्लिङ्ग नाम मृग भेद के हैं॥१०॥

गन्धर्वः शरभो रामः सृमरो गवयः शशः।
इत्यादयो मृगेन्द्राद्या गवाद्याः पशुजातयः ॥११॥
'अधोगन्ता तु खनको वृकः पुंध्वज उन्दुरः'॥प्र.॥

---

1. **Porcupine** [2] 2. **The quill of a porcupine** [3] 3. **A swift antelope** [2] 4. **Wolf** [3] 5. M. रङ्गोस्य 6. **Deer** [5] 7. **The skin and horns of a female deer.** [1]

1. **The skin etc. of a deer** [1] 2. **Six varieties of deers** [1 each] 3. **Other twelve kinds of deers** [1 each]

कृष्णमित्रटीका :- शरे भाति। रमते। 'सृ गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'सृघस्यदः क्मरच्' (३. २. १६०)। गामयते गवयः। 'शश प्लुतगतौ' (भ्वा. प. से.)। 'खरहा' (लोके)। इत्यादयो ये अत्रोक्ताः ये च पूर्वोक्ताः सिंहाद्या वक्ष्यमाणाश्च ये गोमेषहस्त्यादयः सर्वे ते पशुजातयः। पश्यति सर्वमविशेषेणेति पशुः। 'अर्जिदृशि-' (उ. १. २७) इत्युः, पशिश्च॥११॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. गन्धर्व, २. शरभ, ३. राम, ४. सृमर, ५. गवय, ६. शश आदि जो यहाँ कहे गए हैं और जो पूर्व में कहे हैं सिंहादि, जो आगे कहे जायँगे गो, मेष, हस्ति, अश्वादि वे सब पशु जाति के हैं और पशु शब्द वाच्य हैं - ये छः पुल्लिङ्ग नाम पृथक् पृथक् एक-एक मृग भेदों के हैं॥११॥

१. अधोगन्ता, २. खनक, ३. वृक, ४. पुंध्वज, ५. उन्दुर- ये पाँच नाम चूहा के प्रक्षिप्त हैं।

उन्दुरुर्मूषिकोऽप्याखुः

कृष्णमित्रटीका :- उनत्ति, उन्दुरुः। मुष्णाति। 'मुष्णातेर्दीर्घश्च' (उ. २. ४२) इति किकन्। आ खनति, आखुः। '-खनिशृभ्यां डिच्च' (उ. १. ३३) इत्युः। 'मूस' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. उन्दुरु, २. मूषिक, ३. आखु - ये तीन पुल्लिङ्ग नाम चूहा के हैं।

गिरिका बालमूषिका।

कृष्णमित्रटीका :- गिरति गिरिका। बाला चासौ मूषिका च॥द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. गिरिका, २. बालमूषिका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम चूहिया के हैं।

'छुछुन्दरी गन्धमुखी दीर्घतुण्डी दिवान्धिक्रा'॥प्र.॥

सरटः कृकलासः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- सरति सरटः कृकं गलं-लासयति। 'गिर्गिटान'। (गिरगिट) (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. छुछुन्दरी, २. गन्धमुखी, ३. दीर्घतुण्डी, ४. दिवान्धिका- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम छुछुन्दर के प्रक्षिप्त हैं।

1. Six different kinds of animals [1 each] 2. Rat [3] 3. Small mouse [2] 4. Lizard, [2]

१. सरट, २. कृकलास- ये दो पुल्लिङ्ग नाम गिरगिट के हैं।

मुशली[1] गृहगोधिका॥१२॥

कृष्णमित्रटीका :- मुशलमिव। 'विछतुइआ' 'विस्तुइया' (च लोके)॥१२॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. मुसली, २. गृहगोविका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम छिपकली के हैं॥१२॥

लूता स्त्री तन्तुवायोर्णनाभमर्कटकाः समाः।

कृष्णमित्रटीका :- लुनाति लूता। तन्तून् वयति। ऊर्णेव तन्तुर्नाभावस्य। 'ङ्यापोः-' (६. ३. ६३) इति ह्रस्वः। मर्कति। 'मकरी' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. लूता, २. तन्तुवाय, ३. ऊर्णनाभ, ४. मर्कटक- ये चार नाम मकड़ी के हैं जिनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग शेष पुल्लिङ्ग हैं।

नीलङ्गुसतु कृमिः

कृष्णमित्रटीका :- नितरां लङ्गति। 'लगि गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'खरु शङ्क-' (उ. १. ३७) इति साधु। क्रामति कृमिः। 'क्रमिशति-' (उ. ४. १२१) इति किरिश्च॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. नीलङ्गु, २. क्रिमि- ये दो पुल्लिङ्ग नाम सोनकीडा के हैं। इन प्रत्ययविधायक औणादिकसूत्र में सम्प्रसारण की अनुवृत्ति होने से 'कृमिः' भी होता हैं।

कर्णजलौका शतपद्युभे॥१३॥

कृष्णमित्रटीका :- कर्णस्य जलौकेव। 'गोजर' (लोके)॥१३॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. कर्णजलौका, २. शतपदी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम गोजर के हैं। 'गर्णजलौकाः' सान्त पाठ भी है। सान्त होने पर भी स्त्रीत्व बोधन के लिए ही 'उभे' कहा गया है॥१३॥

वृश्चिकः शूककीटः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- वृश्चति वृश्चिकः। 'व्रश्चिकृष्योः किकन्' (उ. २. ४०)। शूकयुक्तः कीटः। 'ऊर्णादिभक्षकस्य कृमिविशेषस्य' द्वे॥[6]

1. Majority reads मुसली 2. A house-lizard [2] 3. Spider [4] 4. A small insect. [2] 5. Centipede [3] 6. A kind of insect that eats woolen garments [2]

हिन्दी अर्थ :-१. वृश्चिक, २. शूककीट- ये दो पुल्लिङ्ग नाम ऊनी वस्त्रों को काटने वाले कीड़े के हैं।

अलिद्रुणौतु वृश्चिके।

कृष्णमित्रटीका :- अलति अलिः। दीर्घादिः (आलिः) अपि। द्रुणति द्रुणः। 'द्रुण हिंसायाम्' (तु. प. से.)। 'द्रोणः' इत्यन्ये। 'बीछी' (लोके)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. अलि, २. द्रुण, ३. वृश्चिक - ये तीन पुल्लिङ्ग नाम बीछी के हैं।

पारावतः कलरवः कपोतः

कृष्णमित्रटीका :- (गुडप्रियस्तीक्ष्णदंट्रः। 'चिउटा'। मत्कुणो रक्तबीजकः। खट्वाकृमिः), परमवति। ततो जातः पारावातः। कस्य वायोः पोत इव। 'परेवा', 'कबूतर' (इति च लोके)। 'गृहकः' त्वन्यः॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. पारावत, २. कलरव, ३. कपोत- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम कबूतर के हैं।

अथ शशादनः॥१४॥

'दिवान्धः कौशिको घूको दिवाभीतो निशाटनः'॥प्र.॥

पत्री श्येनः

कृष्णमित्रटीका :- प्रशस्तं पत्त्रमस्य। 'श्यैङ् गतौ' (भ्वा. आ. अ.)। 'श्यास्त्या-' (उ. २. ४६) इतीनच्[3]। 'वाज' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. शशादन, २. पत्री, ३. श्येन- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम बाज पक्षी के हैं।

उलूके तु वायसारातिपेचकौ।

कृष्णमित्रटीका :- उलति दहति। 'उलूकादयः-' (उ. ४. ४१) इति साधुः। 'पचिमच्योरिच्योरिच्च' (उ. ५. ३७) इति वुन्। पेचकः। 'घूक' 'कुचकुचवा' इति च (लोके)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. उलूक, २. वायसाराति, ३. पेचक- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम उल्लू के हैं।

व्याघ्राटः स्याद्भरद्वाजः

कृष्णमित्रटीका :- व्याघ्रमटति। भरद्वाजस्यापत्यम्। 'मर्दुल' (लोके)।[6]

हिन्दी अर्थ :-१. व्याघ्राट, २. भरद्वाज- ये दो पुल्लिङ्ग नाम भरद्वाज पक्षी के हैं।

1. **Scorpian** [2] 2. **Pigeon** [3] 3. M. इति इनच् 4. **Hawk** [3] 5. **Owl** [3] 6. **Sky-bark** [2]

खञ्जरीटस्तु खञ्जनः॥१५॥

कृष्णमित्रटीका :- खञ्जति। बाहुलकाद् रीटन्। 'खड़ैचा' (लोके)॥१५॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. खञ्जरीट, २. खञ्जन- ये दो पुल्लिङ्ग नाम खञ्जन पक्षी (जो हस्त नक्षत्र में दीखते हैं जिनका हस्तार्क में दर्शन का फल कहा गया हैं) के हैं॥१५॥

लोहपृष्ठस्तु कङ्कः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- लोहमिव पृष्ठमस्य। 'ककि गतौ' (भ्वा. आ. से.)। 'ककहडा' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. लोहपृष्ठ, २. कङ्क- ये दो पुल्लिङ्ग नाम सफेद चील- जिसे कंकहड़ कहते हैं। के हैं।

अथ चाषः किकीदिविः॥

कृष्णमित्रटीका :- चषति। 'चष हिंसायाम्' (चु. प. से.)। 'किकी' इति दीव्यति। 'चास' (लोके)।[3]

हिन्दी अर्थ :- १. चाष, २. किकीदिवि- ये दो पुल्लिङ्ग नाम चास (नीलकण्ठ) पक्षी के हैं।

कलिङ्गभृङ्गधूम्याटाः

कृष्णमित्रटीका :- के मूर्ध्नि लिङ्गमस्य। भृङ्ग इव॥ धूम्यां धूमसमूहमटति। 'भुजैटा' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. कलिङ्ग, २. भृङ्ग, ३. घूम्याट- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम भुचेङ्गा पक्षी के हैं।

अथस्याच्छतपत्त्रकः॥१६॥

दार्वाघाटः

कृष्णमित्रटीका :- दारु आहन्ति 'कठफोरवा' (लोके)।[5]

हिन्दी अर्थ :- १. शतपत्रक, २. दार्वाघाट- ये दो पुल्लिङ्ग नाम कठफोरवा पक्षी के हैं।

अथ सारङ्गः[6] स्तोकश्चातकः समाः।

कृष्णमित्रटीका :- सारमङ्गमस्य। स्तोकं जल-मसय। चतति। चतति। 'चते याचने' (भ्वा. प. से.)। 'पिपीहा' (लोके)॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. शारङ्ग, २. तोतक, ३. चातक- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम पपीहा के हैं।

1. **Wag-tail** [2] 2. **Heron** [2] 3. **Blue jay** [2] 4. **A kind of bird** [3] 5. **Wood-pecker** [2] 6. **B. reads** शारङ्गः 7. **Cataka, a bird supposed to live only on rain-drops** [3]

कृकवाकुस्ताम्रचूडः कुक्कुटश्चरणायुधः ॥१७॥

कृष्णमित्रटीका :- कृकेन गलेन वक्ति। 'कृकेवचः कश्च' (उ. १. ६) इत्युण्। 'कुक आदाने' (भ्वा. आ. से.)। स चासौ कुटति च। 'कुट कौटिल्ये' (तु. प. से.)। 'मुरगा' (लोके) ॥१७॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. कृकवाकु, २. ताम्रचूडः, ३. कुक्कुट, ४. चरणायुध- ये चार पुल्लिङ्ग नाम मुर्गा के हैं॥१७॥

चटकः कलविङ्कः स्यात् तस्य स्त्री चटका

कृष्णमित्रटीका :- चटति। 'चट भेदने' (भ्वा. प. से.)। कलं वङ्कते गच्छति। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। (द्वे 'चटकस्य' एकम् 'चटकस्त्रियाः')॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१. चटक, २. कलविङ्क- ये दो पुल्लिङ्ग नाम चटक (गौरा) पक्षी के हैं।

१. चटका- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम चटक की स्त्री का है।

तयोः।

पुममत्ये चाटकैरः स्त्र्यपत्ये चटकैव हि॥१८॥

कृष्णमित्रटीका :- चटकायाश्चटकस्य[3] व। 'चटकाया ऐरक्' (४. १. १२८)। चटकाच्च स्त्र्यपत्ये लुग्वक्तव्यः (वा. ४. १. १२८)॥१८॥[4]

हिन्दी अर्थ :- चटकैर- यह एक पुल्लिङ्ग नाम गौरा या गौरैया के पुत्र का है।

चटका- यह एक स्त्रीलिंग नाम गौरा या गौरैया की पुत्री का हैं॥१८॥

कर्करेटुः करेटफः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- कर्के रेटति। 'रेट्टभाषणे' (भ्वा. उ. से.)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. कर्करेटु, २. करेटु- ये दो पुल्लिङ्ग नाम अशुभभाषी पक्षिविशेष के हैं।

कृकणक्रकरौ समौ।

कृष्णमित्रटीका :- 'कृ' इति कणति। 'क्र' इति शब्दं करोति। द्वे॥[6]

1. Cock [5] 2. Male and female sparrows [1 each] 3. M. चटकायाः चटकस्य वा 4. The male and female issue of a sparrow [1 each] 5. Karetu (titihiri), a kind of bird [2] 6. Krakara, a bird which cries 'kra' [2]

हिन्दी अर्थ :- १. कृकण, २. क्रकर- ये दो पुल्लिङ्ग नाम अशुभभाषी पक्षि विशेष के हैं।

वनप्रियः परभृतः कोकिलः पिक इत्यपि॥१९॥

कृष्णमित्रटीका :- 'चत्वारः पर्यायाः' इति युक्तं वनं प्रियमस्य। काकेन भृतः। कोकते। 'सलिकलि-' (उ. १. ५४) इतीलच्[1]। अपि कायति पिकः। 'कोइल' (लोके)॥१९॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१. वनप्रिय, २. परभृत, ३. कोकिल, ४. पिक-ये चार नाम पुल्लिङ्ग कोकिल के हैं॥१९॥

काके तु करटारिष्टबलिपुष्टसकृत्प्रजाः।
ध्वाङ्क्षात्मघोषपरभृद्बलिभुग्वायसा अपि॥२०॥

कृष्णमित्रटीका :- 'का' शब्दं कायति। के रटति। न रिष्टमस्य। बलिना पुष्टः। ध्वाङ्क्षति। ध्वाक्षि शब्दे (भ्वा. प. से.)। आत्मानं घोषयति। 'वय गतौ' (भ्वा. आ. से.) 'वयश्च' (उ. ३. १२०) इत्यसच्। 'कौआ' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. काक, २. करट, ३. अरिष्ट, ४. बलिपुष्ट, ५. सकृत्प्रज, ६. ध्वाङ्क्ष, ७. आत्मघोष, ८. परभृत्, ९. बलिभुक्, १०. वायस- ये दस पुल्लिङ्ग नाम कौआ के हैं॥२०॥

द्रोणकाकस्तु काकोलः

कृष्णमित्रटीका :- द्रोणाख्यः काकः। काकयति। 'कक लौल्ये' (भ्वा. आ. से.)। 'डोमकाक' (इति ख्यातः)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. द्रोणकाक, २. काकोल- ये दो पुल्लिङ्ग नाम डोम (कार) कौआ के हैं।

दात्यूहः कालकण्ठकः।

कृष्णमित्रटीका :- दातिं मरणमूहते। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१. दात्यूह, २. कालकण्टक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम जलकाक के हैं।

आतायिचिल्लौ

कृ. मित्र टीका:- आतायते। 'तापृ-' (भ्वा. आ. से.)। 'सुपि-' (३. २. ७८) इति णिनिः। 'चिल्ल शैथिल्ये' (भ्वा. प. से.)। 'चील्ह' (लोके)॥[6]

1. M. इति इलच्। 2. Cuckoo [4] 3. Crow [10] 4. Raven [2] 5. Gallinule [2] 6. Kite [2]

हिन्दी अर्थ :- १. आतायी, २. चिल्ल- ये दो पुल्लिङ्ग नाम चील के हैं।

दाक्षाय्यगृध्रौ

कृष्णमित्रटीका :- 'दक्ष वृद्धौ' (भ्वा. आ. से.)। 'श्रृदक्षि-' (उ. ३. ९६) इत्याय्यः। ततोऽण्[1] (४. ३. १२०)। गृध्यते। क्रन् (उ. २. २४)। 'गीध' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. दाक्षाय्य, २. गृध्र- ये दो पुल्लिङ्ग नाम गीध के हैं।

कीरशुकौ समौ॥२१॥

कृष्णमित्रटीका :- 'की' शब्दमीरयति। 'शुक गतौ' (?)। 'शुग्गा' (लोके)॥२१॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. कीर, २. शुक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम सुग्गा के हैं।

'समौ' का सम्बन्ध तीनों के साथ है जैसे- 'आतायिचिल्लौ' समौ, 'दाक्षाय्यगृध्रौ' समौ, कीरशुकौ समौ॥२१॥

क्रुङ् क्रौञ्चः

कृष्णमित्रटीका :- क्रुञ्चेः (भ्वा. प. से.) क्विनि (३. २. ५९) प्रज्ञाद्यणि (५. ४. ३८) क्रौञ्चः। 'करांकुलि' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. क्रुङ्, २. क्रौञ्च- ये दो पुल्लिङ्ग नाम करांकुल पक्षी के हैं।

अथ बकः कह्वः

कृष्णमित्रटीका :- वक्ति वकः। न्यङ्क्वादिः (७. ३. ५३)। के जले ह्वयति। 'वकु (गु)ला' (लोके)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. बक, २. कह्व- ये दो पुल्लिङ्ग नाम बक के हैं।

पुष्कराह्वस्तु सारसः

कृष्णमित्रटीका :- सरसि भवः। 'सहरस' (सारस लोके)॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१. पुष्कराह्व, २. सारस- ये दो पुल्लिङ्ग नाम सारस पक्षी के हैं।

कोकश्चक्रश्चक्रवाको रथाङ्गाह्वयनामकः॥२२॥

कृष्णमित्रटीका :- कोकते। चकते। रक् (उ. २. १३)। 'चक्र' इति वाक् यस्य। वचेर्घञ् (३. ३. १९)। रथाङ्गस्य चक्रस्याह्वयो नामास्य। 'चक्रवाक' (इति ख्यातः)॥२२॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१. कोक, २. चक्र, ३. चक्रवाक, ४. रथाङ्गह्वयनामकः- ये चार पुल्लिङ्ग नाम चक्रवाक के हैं॥२२॥

कादम्बः कलहंसः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- कदम्बे समूहे भवति। कलो मधुरवाक् हंसः। 'वतक' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१. कादम्ब, २. कलहंस- ये दो पुल्लिङ्ग नाम बतक के हैं।

उत्क्रोशकुररौ समौ।

कृष्णमित्रटीका :- उत्क्रोशति। 'कुङ् शब्दे' (भ्वा. आ.से.)। 'कुवः क्ररन्' (उ. ३. १३३)। द्वे। कुररोऽपि क्रौञ्चभेद एव॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. उत्क्रोश, २. कुरर- ये दो पुल्लिङ्ग नाम कुरर पक्षी के हैं।

हंसास्तु श्वेतगरुतश्चक्राङ्गा मानसौकसः॥२३॥

कृष्णमित्रटीका :- हन्ति गच्छति। श्वेता गरुतः पक्षा अस्य। चक्राण्यङ्गान्यस्य। 'सामान्य हंसस्य' चत्वारि॥२३॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. हंस, २. श्वेतगरुत्, ३. चक्राङ्ग, ४. मानसौका- ये चार पुल्लिङ्ग नाम हंस के हैं॥२३॥

राजहंसास्तु ते चञ्चुचरणैर्लोहितैः सिताः।

कृष्णमित्रटीका :- चञ्चुभिः सहितैश्चरणैर्लोहितैरुपलक्षितास्ते हंसानां राजा। 'रक्तहंसस्य' (एकम्)॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१. राजहंस- यह एक पुल्लिङ्ग नाम राजहंस का है।

मलिनैर्मल्लिकाख्यास्ते

---

1. M. ततोण् 2. **Vulture** [2] 3. **Parrot** [2] 4. **Kraunca or curlew** [2] 5. **Crane** [2] 6. **Sarasa or Indian crane** [2]

1. **Ruddy goose** [2] 2. **Kalahamsa, a kind of goose** [2] 3. **Osprey** [2] 4. **A gander in general** [5] 5. **Flamingo** (a sort of white goose with redlegs and bild) [1]

कृष्णमित्रटीका :- किञ्चिद्धूम्रवर्णैश्चञ्चुचरणै-रुपलक्षिताः। 'मल्लिकः' इति आख्या येषाम्। 'धूम्रहंसस्य' (एकम्)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- मल्लिकाख्य- यह एक पुल्लिङ्ग नाम शरीर से सफेद किन्तु चोंच और चरणों से धूसर रंग वाले हंस का है।

धार्तराष्ट्राः सितेतरैः ॥२४॥

कृष्णमित्रटीका :- कृष्णैश्चञ्चुचरणैरुप-लक्षिताः। धृतराष्ट्रे भवाः। 'कृष्णहंसस्य' (एकम्)॥२४॥[2]

हिन्दी अर्थ :- धार्तराष्ट्र- यह एक पुल्लिङ्ग नाम काले रंग के चोंच और चरण वाले हंस के हैं॥२४॥

शरारिरातिराडिश्च[3]

कृष्णमित्रटीका :- शरं नीरमृच्छति। 'अच इः' (उ. ४. १३८)। अतति। 'अज्यतिभ्यां च' (उ. ४. १३०) इतीण्। आ अटति। इन् (उ. ४. ११७)। 'आडी' जलपक्षी॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १.शरारि, २. आटि, ३. आडि - ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम आडी पक्षी के हैं।

वलाका विसकण्ठिका।

कृष्णमित्रटीका :- वलां कायति। विसवत्क-ण्ठोऽस्याः[5]। बकभेदः॥[6]

हिन्दी अर्थ :- बलाका, २. बिसकण्ठिका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम बगुला विशेष के हैं।

हंसस्य योषिद्वरटा

कृष्णमित्रटीका :- वृणोति वरटा। हंसस्य स्त्री॥[7]

हिन्दी अर्थ :- वरटा- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम हंस की स्त्री का है।

सारसस्य तु लक्ष्मणा॥२५॥

कृष्णमित्रटीका :- लक्ष्म विद्यतेऽस्याः[8]। 'सरहस-' स्य पत्नी॥२५॥[9]

1. A flamingo with smoke-coloured legs and bill [1] 2. A flamingo with black legs and bill [1] 3. B. reads शरारिराटिरा डिश्च 4. Adi, a kind of bird [1] 5. M. विसवत्कण्ठोस्याः 6. Valaka a kind of crane [2] 7. Female goose [1] 8. M. विद्यतेस्याः 9. Female crane (sarasa) [1]

हिन्दी अर्थ :- लक्ष्मणा- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम सरस की स्त्री (सारसी) का हैं॥२५॥

जतुकाऽजिनपत्त्रा स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- जत्विव। इवार्थे कन् (५. ३. ९६)। अजिनमिव पत्त्रमस्याः। 'चमगुदरी' (लोके)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. जतुका, २. अजिनपत्रा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम चमगादड़ के हैं।

परोष्णी तैलपायिका।

कृष्णमित्रटीका :- परं शत्रुरुष्णं यस्याः। तैलं पिबति। 'गादुर' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. परोष्णी, २. तैलपायिका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम तेलचटा नामक कीटविशेष के हैं।

वर्वणा मक्षिका नीला

कृष्णमित्रटीका :- वरं वणति। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। नीलवर्णमक्षिकाया एकम्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. वर्वणा, २. मक्षिका , ३. नीला- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम नीले रंग की मक्खी के हैं। अतः 'नीला' में 'वा संज्ञायां' से ङीष् का अभाव हुआ, अन्यथा गुण की विवक्षा में 'नीली' होना चाहिये था।

सरघा मधुमक्षिका॥२६॥

कृष्णमित्रटीका :- सरं गतिमन्तं घातयति। द्वे। 'मधुमाछी' (लोके)॥२६॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१. सरघा, २. मधुमक्षिका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम मधुमक्खी के हैं।

पतङ्गिका पुत्तिका स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- पतद् अङ्गमस्याः। पुत् कुत्सितं तनोति। 'अन्येभ्योऽपि[5]-' (वा. ३. २. १०१) इति डः। स्वार्थे कन् (५. ३. ७५)। मधुमक्षिकाविशेषः॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. पतङ्गिका, २. पुत्तिका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम मधुमक्खी विशेष के हैं।

दंशस्तु वनमक्षिका।

कृष्णमित्रटीका :- दशति दंशः। द्वे। 'डासा' इति ख्यातायाः॥[7]

1. Bat [2] 2. A kind of bat [2] 3. Blue fly [1] 4. Honey bee [2] 5. M. अन्येभ्योपि 6. Patangika, a kind of honey bee [2] 7. Gad-fly [2]

हिन्दी अर्थ :- १. दंश, २. वनमक्षिका-ये दो नाम डांस के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग और द्वितीय स्त्रीलिङ्ग हैं।

दंशी तज्जातिरल्पास्याद्

कृष्णमित्रटीका :- 'छोप्डासा' (लोके)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- अल्पा दंशजातिः- दंशी- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम मच्छड़ का है।

गन्धोली वरटा द्वयोः॥२७॥

कृष्णमित्रटीका :- गन्धयत्यर्दयति। ओलच्। 'वरटा' 'वरई' (इति च लोके)॥२७॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. गन्धोली, २. वरटा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम बर्रे के हैं॥२७॥

भृङ्गारी चोरुका चीरी झिल्लिका च समा इमाः।

कृष्णमित्रटीका :- भृङ्गमाराति। 'ची' इति शब्दं रौति चीरुका। 'चि' इति ईरयति। 'चिल्ल शैथिल्ये' (भ्वा. प. से.)। पृषोदरादित्वात् (६. ३. १०९) झः। 'झींगुर' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. भृङ्गारी, २. चीरुका, ३. चीरी, ४. झिल्लिका- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम झींगुर के हैं।

समौ पतङ्गशलभौ

कृष्णमित्रटीका :- 'शल चलने'। 'कृशृशलि-' (उ. ३. १२२) इत्यभच्। 'टीडी' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. पतङ्ग, २. शलभ- ये दो पुल्लिङ्ग नाम फतिंगा के हैं।

खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः॥२८॥

कृष्णमित्रटीका :- ज्योतिरिवेङ्गति[5]। 'दृगि गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'जुगनू' (लोके)॥२८॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. खद्योत, २. ज्योतिरिङ्गण- ये दो पुल्लिङ्ग नाम जुगनू के हैं॥२८॥

मधुव्रतो मधुकरो मधुलिण्मधुपालिनः।
द्विरेफपुष्पलिड्भृङ्गषट्पदभ्रमरालयः॥२९॥

कृष्णमित्रटीका :- मधुव्रतं भक्षमस्य। अलो वृश्चिकलाङ्गुलम्। तद्वदिवास्यास्ति। 'अतः-' (५. २. ११५) इनिः। द्वौ रेफौ नाम्नि यस्य। बिभर्ति भृङ्गः। भ्राम्यति। 'अर्तिकमि-' (उ. ३. १३२) इति करन्। अलति। इन् (उ. ४. ११७)। 'भंवरा' (लोके)॥२९॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. मधुव्रत, २. मधुकर, ३. मधुलिट्, ४. मधुप, ५. अली, ६. द्विरेफ, ७. पुष्पलिट्, ८. भृङ्ग, ९. षट्पद, १०. भ्रमर, ११. अलि- ये ग्यारह पुल्लिङ्ग नाम भ्रमर के हैं॥२९॥

मयूरो वर्हिणो बर्ही नीलकण्ठो भुजङ्गभुक्।
शिखावलः शिखी केकी मेघनादानुलास्यपि॥३०॥

कृष्णमित्रटीका :- मयते। खर्वादिः। बर्हमस्यास्ति। 'फलबर्हाभ्यामिनन्' (वा. ५. २. १२२)। मेघनादेनानुलसति। 'मुरैला' (लोके)॥३०॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. मयूर , २. बर्हिण, ३. बर्ही, ४. नीलकण्ठ, ५. भुजङ्गभुक् , ६. शिखावल, ७. शिखी, ८. केकी९. मेघनादानुलासी- ये नौ पुल्लिङ्ग नाम मयूर (मोर)के हैं॥३०॥

केका वाणी मयूरस्य

कृष्णमित्रटीका :- के मूर्ध्नि कायते॥[2]

हिन्दी अर्थ :- केका- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम मोर की बोली का है।

समौ चन्द्रकमेचकौ।

कृष्णमित्रटीका :- चन्द्र इव। मेचको वर्णेन। पिच्छस्य चन्द्राकृतेर्द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. चन्द्रक, २. मेचक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम मोर के पुच्छ में स्थित नेत्राकार चमकदार चिह्न के हैं।

शिखा चूडा

कृष्णमित्रटीका :- शेते शिखा। 'चुड समुच्छ्राये' (तु. प. से.)। भिदादित्वात् (३. ३. १०४) अङ्दीर्घौ ॥द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. शिखा, २. चूडा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम मयूरशिखा (कलंगी) के हैं।

शिखण्डस्तु[5] पिच्छबर्हे नपुंसके॥३१॥

कृष्णमित्रटीका :- शिखभिर्डयते। 'पिच्छ कुट्टने' (चु. प. से.)। 'बृह बृद्धौ' (भ्वा. प. से.)। अच् (३. १. १३४)। वहीः। 'मयूरपंखस्य' त्रीणि॥३१॥[6]

---

1. **Small gad-fly** [1] 2. **Wasp.** [2] 3. **Cricket** [4] 4. **Grass-hopper** [2] 5. M. ज्योतिरिव इङ्गति 6. **Fire-fly** [2] 7. **Bhramara or black bee** [11]

1. **Peacock** [9] 2. **The peacock's cry** [1] 3. **The eye in pecock's tail** [2] 4. **The peacock's crest** [2] 5. **B.** reads शिखण्डश्च 6. **The peacock's tail** [3]

हिन्दी अर्थ :- १. शिखण्ड , २. पिच्छम् , ३. बर्हम्- ये तीन नाम मोर पंख के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग शेष नपुल्लिङ्ग हैं॥३१॥

खगे विहङ्गविहगविहङ्गमविहायसाः।
शकुन्तिपक्षिशकुनिशकुन्तशकुनद्विजाः॥३२॥
पतत्रिपत्रिपतगपतत्पत्ररथाण्डजाः।
नगौकोवाजिविकिरविविष्करपतत्रयः॥३३॥

कृष्णमित्रटीका :- खे गच्छति[1]। विहायसि गच्छति। 'विहायसो विह च-' (वा. ३. २. ३८)। 'खच्च डिद्वा' (वा. ३. २. ३८), डि (वा ३. २. ४८) विहगः। विहाययति। 'हय गतौ' (भ्वा. प. से.)। सर्वधातुभ्योऽसुन्[2] (उ. ४. १८८)। शक्नोति। 'शकेरुनोन्तोन्त्युनयः' (उ. ३. ४९) इतिप्रत्ययचतुष्टयम्। द्विर्जायते॥३२॥ पतत्रं पत्रं वास्त्यस्य। पतेन पक्षेण गच्छति। पतति। पतत् पत्रं रथ इव यस्य। वाजाः पक्षाः सन्त्यस्य। विकिरति। वातीति विः। 'वातेर्डिच्च' (उ. ४. १३३) इतीण्। 'विष्किरः शकुनौ-' (६. १. १५०) इति निपातः। 'पतेरत्रिन्' (उ. ४. ६९)॥३३॥ नीडे उद्‌भवः। गरुतः पक्षा येषाम्। पतितुमिच्छन्तः पित्सन्तः। 'पक्षी' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. खग, २. बिहङ्ग , ३. विहाया,४. शकुन्ति, ५. पक्षी , ६. शकुनि, ७. शकुन्त , ८. शकुन , ९. द्विज ॥३२॥, १०. पतत्री, ११. पत्री, १२. पतग , १३. पतत् , १४. पत्रस्थ, १५. अण्डज, १६. नगौका , १७. वाजी, १८. विकिर , १९. विः, २०. विष्किर , २१. पतत्रि, २२. नीडोद्भव , २३. गरुत्मान्, २४. पित्सन् , २५. नभसङ्गम- ये पच्चीस पुल्लिङ्ग नाम पक्षिमात्र के हैं॥३३॥

तेषां विशेषा हारीतो मद्गुः कारण्डवः प्लवः॥३४॥
तित्तिरिः कुक्कुभो लावो जीवंजीवश्चकोरकः।
कोयष्टिकष्टिट्टिभको वर्तको वर्तिकादयः॥३५॥

कृष्णमित्रटीका :- एते पक्षिणां विशेषाः। हारि मनोहारि इतं गमनं यस्य। रमणं रण्डः। का ईषद् रण्डं वाति॥३४॥ 'तित्ति' शब्दं राति। किः। 'तीतिर' (लोके)। 'कुक्कु' शब्देन भाति। 'बनकुक्कुट' (लोके)। लावयति लावः। जीवं जीवं जवयति। चकते चकोरकः। 'कठि-' (उ. १. ६४) इत्योरन्। कं जलं यष्टिरिव। 'टिट्टि' शब्देन भाति। 'टिटिहिरी' (लोके)। वर्तते। 'वटई' (लोके)। वर्तकश्चित्रस्तदन्या वर्तिका॥३५॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. हारीत, २. मद्गु , ३. कारण्डच, ४. प्लव ॥३४॥, ५. तित्तिरि ६. कुक्कुभ, ७. लाव्, ८. जीबंजीव, ९. चकोरक, १०. कोयष्टिक, ११. टिट्टिभक, १२. वर्तक , १३. वर्तिक 'आदि' पदसे शारिका आदि जानना चाहिए- ये तेरह पुल्लिङ्ग नाम पक्षिविशेष के हैं॥३५॥

गरुत्पक्षच्छदाः पत्त्रं पतत्त्रं च तनूरुहम्।

कृष्णमित्रटीका :- गृणाति। 'मृग्रोरुतिः' (उ. १. ९४)। 'पक्ष परिग्रहे' (चु. प. से.)। छाद्यतेऽनेन[2]। पतन्त्यनेन। 'दाम्नी-' (३. २. १८२) इति ष्ट्रन्। पतन्त्रं त्रायते। 'षट् पक्षस्य'॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. गरुत् , २. पक्ष , ३. छद , ४. पत्त्रम् , ५. पतत्त्रम् , ६. तनूरुहम- ये छः नाम पंख के हैं। इनमें प्रथम तीन पुल्लिङ्ग हैं शेष तीन नपुंसकलिङ्ग हैं।

स्त्री पक्षतिः पक्षमूलम्

कृष्णमित्रटीका :- पक्षस्य मूलं पक्षतिः॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. पक्षति, २. पक्षमूलम्- ये दो नाम पंख की जड़ के हैं जिनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग द्वि. नपुल्लिङ्ग हैं।

चञ्चु स्त्रोटिरुभेस्त्रियौ।३६॥

कृष्णमित्रटीका :- 'चञ्चु गतौ' (भ्वा. प. से.)। त्रोट्यते। 'ठोर' (लोके)॥३६॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. चञ्चु, २. त्रोटि- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम चोंच के हैं॥३६॥

प्रडीनोड्डीनसंडीनान्येताः खगगतिक्रियाः।

कृष्णमित्रटीका :- प्रकृष्टं डयनम्। डीङः (दि. आ. अ.) निष्ठातस्य नः। एते पक्षिणां गतिविशेषाः॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१. प्रडीनम् , २. उड्डीनम्, ३. संडीनम्- ये ३ नपुंसकलिङ्ग नाम पक्षियों के गतिविशेष के हैं।

---

1. M. गछति 2. M. सर्वधातुभ्योसुन् 3. **Bird** [27]

1. **Different kinds of birds,** [1 each] 2. M. छाद्यतेनेन 3. **Wing** [6] 4. **The root of a wing** [2] 5. **Beak or bill** [2] 6. **Three kinds of the flying of binds** [1 each]

पेशीकोशो[1] द्विहीनेऽण्डम्

कृष्णमित्रटीका :- पेशीनां मांसखण्डानां कोशो भाण्डागारम्। अमति निस्सारयत्स्मादण्डः। द्वाभ्यां हीने क्लींवे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १.पेशी, २. कोष, ३. अण्डम्- ये तीन नाम अण्डा के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग हैं। द्वितीय पुल्लिङ्ग और तृतीय नपुल्लिङ्ग हैं।

कुलायो नीडमस्त्रियाम्॥३७॥

कृष्णमित्रटीका :- कुलमयते। नितरामीड्यते। 'खोंता' 'झोंझि' (इति च) लोके॥३७॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. कुलाय, २. नीडम्- ये दो नाम घोंसला के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग द्वितीय पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग हैं॥३७॥

पोतः पाकोऽर्भको डिम्भ पृथुकः शावकः शिशिः।

कृष्णमित्रटीका :- पुनाति पोतः। 'हसि-' (उ. ३. ८६) इति तन्। पच्यते परिणम्यतेऽनेन[4]। 'ऋ गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'अर्भकपृथुक-' (उ. ५. ५३) इति साधुः। डिम्भयति। 'डिभिसंघे'। पर्थयति। 'पृथु प्रक्षेपे'। 'शव गतौ' (भ्वा. प. से.)। घञन्तात्कन् (५. ३. ७५)। शिनोति- शिशुः। 'शः कित् सन्वच्च' (उ. १. २०) इत्युः॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. पोत, २. पाक, ३. अर्भक, ४. डिम्भ, ५. पृथुक, ६. शावक, ७. शिशु- ये सात पुल्लिङ्ग नाम बच्चा के हैं।

स्त्रीपुंसौ मिथुनं द्वन्द्वम्

कृष्णमित्रटीका :- स्त्री च पुमांश्च। 'मिथृ मेथृ संगमे' (भ्वा. उ. से.)। 'क्षुधिपिशि-' (उ. ३. ५५) इत्युनन्। द्वौ द्वौ। 'द्वन्द्व रहस्य-' (८. १. १५) इति निपातः। त्रीणि॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. स्त्रीपुंसौ, २. मिथुनम्, ३. द्वन्द्वम्- ये तीन नाम स्त्री और पुरुष की जोड़ी के हैं, जिनमें प्रथम नित्य द्विवचनान्त और पुल्लिङ्ग हैं शेष दो नपुंसकलिङ्ग हैं।

युग्मं तु युगलं युगम्॥३८॥

1. B. पेशी कोषो 2. Egg [2] 3. Nest [2] 4. M. परिण्म्यतेनेन 5. **The young of any animal or bird** [7] 6. **Couple** [3]

कृष्णमित्रटीका :- 'युजिरुचि-' (उ. १. १४६) इति मक्। युग्मम्। न्यङ्क्वादित्वात् (७. ३. ५३) कुत्वम्। युगं लाति॥३८॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. युग्मम्, २. युगलम्, ३. युगम्- ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम जोड़ा के हैं। मेदिनीकार ने द्वन्द्व- शब्दको भी युग्म का पर्य्याय कहा है। मुकुट ने 'द्वन्द्व' शब्द को उत्तरान्वयी माना है, जो 'त्वन्ताऽथादि न पूर्वभाक्' इस प्रतिज्ञा से विरुद्ध होने के कारण उपेक्ष्य है॥३८॥

समूहनिवहव्यूहसंदोहविसरव्रजाः।
स्तोमौघनीकरव्रातवारसंघातसंचयाः॥३९॥
समुदायः समुदयः समवायश्चयो गणः।
स्त्रियां तु संहतिर्वृन्दं निकुरम्बं कदम्बकम्॥४०॥

कृष्णमित्रटीका :- समूह्यते। 'ऊह वितर्के' (भ्वा. आ. से.)। 'वह प्रापणे' (भ्वा. उ. अ.)। निवहः। संदुह्यते। विसरति। 'व्रज गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'अर्तिस्तु' (उ. १. १४०) इति ष्टुओ (अ. उ. अ.) मन्। आ उह्यतेऽनेन[2]। घञ् (३. ३. १२१)। न्यङ्क्वादिः (७. ३. ५३)। नि करोति। ण्यन्ताद्व्रतशब्दाद् घञ् (३. ३. १९)। वार्यतेऽनेन[3] वारः। घः (३. ३. ११८)। संहन्यते। घञ् (३. ३. १९)। हनस्तः (७. ३. ३२)। 'हो हन्तेः-' (७. ३. ५४)। संचीयते। 'एरच्' (३. ३. ५६)॥३९॥ समुदायते। 'अय गतौ' (भ्वा. आ. से.) समुदीयते। इणः (अ. प. अ.) अच् (३. ३. ५६)। समवाय्यते। 'अय गतौ' (भ्वा. आ. से.)। गण्यते। 'गण संघाते' (चु. उ. से.)। संहन्यते। वृणोति वृन्दम्। 'अब्दादयश्च' (उ. ४. ९८) इति साधुः। निकुरति। 'कुर छेदने' (तु. प. से.)। अम्बच्। कदम्बयते। द्वाविंशतिः॥४०॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. समूह, २. निवह, ३. व्यूह, ४. सन्दोह, ५. विसर, ६. व्रज, ७. स्तोम, ८. ओध, ९. निकर, १०. व्रात, ११. वार, १२. संघात, १३. संचय॥३९॥, १४. समुदाय, १५. समुदय, १६. समवाय, १७. चय, १८. गण, १९. संहति, २० वृन्दम्, २१. निकुरम्बम्, २२. कदम्बकम्- ये बाईस नाम समूह के हैं। इनमें प्रथम अठारह पुल्लिङ्ग उन्नीसवाँ स्त्रीलिङ्ग शेष तीन नपुंसकलिङ्ग हैं॥४०॥

1. **Pair** [3] 2. M. उह्यतेनेन 3. वार्यतेनेन। 4. **Multitude or Collection** [22]

वृन्दभेदाः समैर्वर्गः

कृष्णमित्रटीका :- समैरुपलक्षितम्। वृज्यते वर्गः॥[1]

हिन्दी अर्थ :-वर्गः- यह एक पुल्लिङ्ग नाम एकजातीय जीव या तद् भिन्न के समूह का हैं।

संघसार्थौ तु जन्तुभिः।

कृष्णमित्रटीका :- सजातीयैर्जन्तुभिरुपलक्षितम्। सरति। 'सर्तेर्णित्' (उ. २. ५) इति थन्॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. संघ, २. सार्थ- ये दो पुल्लिङ्ग नाम एक जातीय या भिन्नजातीय जीवसमूह के हैं।

सजातीयैः कुलम्

कृष्णमित्रटीका :- सजातीयैरेव समूहैः॥[3]

हिन्दी अर्थ :- कुलम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम एक जातीय प्राणिसमूह का है।

यूथं तिरश्चां पुंनपुंसकम्॥४१॥

कृष्णमित्रटीका :- 'यू मिश्रणे' (अ.प.से.)। '-पृष्ठगूथयूथ-' (उ. २. १२) इति साधुः। तिर्यक्समूहे यूथम्॥४१॥[4]

हिन्दी अर्थ :- यूथम्- यह एक नाम पक्षियों के समूह का हैं, यह पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग दोनों हैं॥४१॥

पशूनां समजः

कृष्णमित्रटीका :- 'अज गत्यादौ' (भ्वा. प. से.)। अप् (३. ३. ६९)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- समज- यह एक पुल्लिङ्ग नाम पशुओं के समूह का है।

अन्येषां समाजः

कृष्णमित्रटीका :- अन्येषां संघः समाजः। घञ् (३. ३. १९)॥[6]

हिन्दी अर्थ :-समाज- यह एक पुल्लिङ्ग नाम पशु से भिन्नजातिवालों के समूह के है। जैसे- 'ब्राह्मणसमाजः' 'क्षत्रियसमाजः'।

स्यान्निकायः

1. A class of similar things e. g. Brahmana-varga, saila-varga etc. [1] 2. Group (as paksi-sangha, manus-vasangha Sc.) [1] 3. Race or family [1] 4. A flock of birds [1] 5. A multitude of animals [1] 6. An assembly of human beings [1]

कृष्णमित्रटीका :- निचीयते। घञि कुः॥[1]

हिन्दी अर्थ :- निकाय- यह एक पुल्लिङ्ग नाम एक धर्मवाले समूह का हैं।

पुञ्जराशी तूत्करः कूटमस्त्रियाम्॥४२॥

कृष्णमित्रटीका :- पुञ्ज्यते पुमांसं जयति वा पुञ्जः। उत्कीर्यते। कूटयति। 'धान्यादेरुच्छ्रितवृन्दस्य'॥४२॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. पुञ्ज, २. राशि, ३. उत्कर, ४. कूटम्- ये चार नाम अन्नादि की ढेरी के हैं। इनमें प्रथम तीन पुल्लिङ्ग चतुर्थ नपुंसकलिङ्ग हैं॥४२॥

कापोतशौकमायूरतैत्तिरादीनि तद्गणे।

कृष्णमित्रटीका :- कपोतानां समूहः कपोतम्। एवं शुकानां मयूराणाम्॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१. कपोतम्, २. शौकम्, ३. मायूरम्, ४. तैत्तिरम्- ये चार नपुंसकलिङ्ग शब्द कबूतर, सुग्गा, मोर और तीतर के समूह के पृथक्-पृथक् एक-एक नाम हैं।

गृहासक्ताः पक्षिमृगाः छेकास्ते गृह्यकाश्च ते॥४३॥

इति सिंहादिवर्गः॥५॥

कृष्णमित्रटीका :- छ्यति छेकः। 'छो छेदने' (दि. प. अ.)। बाहुलकादीकन्। गृह्यते गृह्यः। क्यप् (३. १. ११९)॥४३॥[4]

इति सिंहादिवर्गः॥५॥

हिन्दी अर्थ :- १. छेक, २. गृह्यक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम पालतू पशुपक्षी के है॥४३॥

इति सिंहादिवर्गः।

अथ मनुष्य वर्गः॥६॥

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः।

कृष्णमित्रटीका :- मनोरपत्यम्। 'मनोर्जाता-वञ्यतौ षुक् च' (४. १. १६१)। म्रियन्ते मृताः। ततः स्वार्थे यत् (वा. ५. ४. ३६)। नरति। 'नॄ नये' (भ्वा., क्र्या. प. से.) अच् (३. १. १३४)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. मनुष्यः, २. मानुष, ३. मर्त्य, ४. मनुज, ५. मानव, ६. नर-ये छः नाम मनुष्य मात्र के हैं।

1. An association of persons who perform like duties [1] 2. M. कुट्यति 3. A sheat of grain [3] 4. A flock of pigeons, parrots, peacocks and frankoline patriges [1 each] 5. Tame birds or animals [2]

स्युः पुमांसः पञ्चजनाः पुरुषाः पूरुषा नरः ॥१॥

कृष्णमित्रटीका :- पुनाति। 'पूञो डुम्सुन्' (उ. ४. ७७)। पञ्चभिर्भूतैर्जन्यते। घञ् (३. ३. १९)। 'पुर अग्रगमने'[1] (तु. प. से.)। 'पुरः कुषन्' (उ. ४. ७४)। पृषोदरादित्वात् (६. ३. १०९) पक्षे दीर्घः। पुरि शेते वा। 'नयतेर्डिच्च' (उ. २. १००) इत्युन्। 'मनुष्य (जातौ) पुरुष (स्य)' ॥१॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. पुमान्, २. पञ्चजना, ३. पुरुष, ४. पूरुष, ५. नर- ये पाँच नाम मनुष्य जाति के हैं।

स्त्री योषिदबला योषा नारी सीमन्तिनी वधूः।
प्रतीपदर्शिनी वामा वनिता महिला तथा ॥२॥

कृष्णमित्रटीका :- स्त्यायेते शुक्रशोणिते अस्याम्। 'स्त्यायतेर्ड्रट्' (उ. ४. १६५)। 'युष' सौत्रः सेवार्थः। 'हसृरुहि-' (उ. १. ९७) इत्यतिः। अल्पं बलमस्याः। योषति। 'नृनरयोवृद्धिश्च' इति ङीन्। सीमन्तोऽस्त्यस्याः।[3] 'वही धश्च' (उ. १. ८३) इत्यूः। प्रतीपं द्रष्टुं शीलमस्याः। वमति स्नेहम्। ज्वालादिः (३. १. १४०)। वन्यते वनिता। मह्यते। 'सलिकलि-' (उ. १. ५४) इतीलच् ॥२॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. स्त्री, २. योषित्, ३. अबला, ४. योषा, ५. नारी, ६. सीमन्तिनी, ७. वधू, ८. प्रतीपदर्शिनी, ९. वामा, १०. वनिता, ११. महिला- ये ग्यारह नाम स्त्री जाति के हैं।

विशेषास्तु अङ्गना भीरुः कामिनी वामलोचना।
प्रमदा मानिनी कान्ता ललना च नितम्बिनी ॥३॥
सुन्दरी रमणी रामा

कृष्णमित्रटीका :- स्त्रीणां विशेषाः। प्रशस्तान्यङ्गान्यस्याः। 'भियः क्रुक्लुकनौ' (३. २. १७४)। कामोस्त्यस्याः[5]। वामे सुन्दरे लोचने यस्याः। प्रमदो हर्षोऽस्त्यस्याः[6]। मानोऽस्त्यस्याः[7]। कम्यते स्म। 'लल ईप्सायाम्' युच् (उ. २. ७८)। प्रशस्तो नितम्बोऽस्याः[8] ॥३॥ सुष्ठु उनत्त्यरीन्। 'उन्दी' (रु. प. से.)। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। रमयति। ल्युट्। ज्वालादित्वात् (३. १. १४०) णः। रामा।[9]

1. **Mankind** [6] 2. **Man** [5] 3. M. सीमन्तोस्त्यस्याः 4. **Woman** [11] 5. M. कामोस्त्यस्याः 6. M. हर्षोस्त्यस्याः 7. M. मानोस्त्यस्याः 8. M. नितम्बोस्याः 9. **Twelve kinds of beautiful women.** [1 each]

हिन्दी अर्थ :-१. अङ्गना, २. भीरु, ३. कामिनी, ४. वामलोचना, ५. प्रमदा, ६. मानिनी, ७. कान्ता, ८. ललना, ९. नितम्बिनी ॥३॥, १०. सुन्दरी, ११. रमणी, १२. रामा- ये बारह नाम उत्कृष्ट स्त्री विशेष के हैं।

कोपना सैव भामिनी।

कृष्णमित्रटीका :- 'भामक्रोधे' (भ्वा. आ. से.)। आवश्यके णिनिः (३. ३. १७०) ॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. कोपना, २. भामिनी- ये दो नाम क्रोध करने वाली स्त्री के हैं।

वरारोहा मत्तकाशिन्युत्तमा वरवर्णिनी ॥४॥

कृष्णमित्रटीका :- वर आरोहो नितम्बोऽस्याः[2]। मत्तेव काशते। वरवर्णोऽस्त्यस्याः[3]। 'अत्यन्तोत्कृष्टस्त्री' ॥४॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. वरारोह, २. मत्तकाशिनी, ३. उत्तमा, ४. वरवर्णिनी- ये चार नाम अत्यन्त उत्कृष्ट स्त्री के हैं ॥४॥

कृताभिषेका महिषी

कृष्णमित्रटीका :- कृतोभिषेकोऽस्याः[5] ॥[6]

हिन्दी अर्थ :- महिषी- यह एक नाम पटरानी का है। (पटरानी वह कहलाती है, जिसके साथ राजा का अभिषेक किया जाता है।)

भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः।

कृष्णमित्रटीका :- अन्या महिषीभिन्ना ॥[7]

हिन्दी अर्थ :- भोगिनी- यह एक नाम राजा की अन्य स्त्रियों का हैं।

पत्नी पाणिग्रहीती च द्वितीया सहधर्मिणी ॥५॥
भार्या जायाथ पुंभूम्नि दाराः

कृष्णमित्रटीका :- 'पत्युर्नो यज्ञसंयोगे' (४. १. ३३)। पाणिर्गृहीतोऽस्याः[8]। द्वयोः पूरणी। सहधर्मऽस्त्यस्याः[9] ॥५॥ भ्रिमते भार्या। ण्यत् (३. १. १२४)। जायतेऽस्याम्[10]। 'जनेर्यक्' (उ. ४. ११०)। दारयन्ति भ्रातृन्। घञ् (वा. ३. ३. २०)। सप्त ॥[11]

1. **A Passionate woman** [2] 2. M. नितम्बोस्याः 3. M. वरवर्णोस्त्यस्याः 4. **An excellent woman** [4] 5. M. कृतोभिषेकोस्याः 6. **A consectatred queen** [1] 7. **Unconsecrated queens** [1] 8. M. पाणिर्गृहीतोस्याः 9. M. सहधर्मोस्त्यस्याः 10. M. जायतेस्याम् 11. **Wife** [7]

हिन्दी अर्थ :- १. पत्नी, २. पाणिग्रहीती, ३. द्वितीया, ४. सहधर्मिणी॥५॥, ५. भार्या, ६. जाया, ७. दारा- ये सात नाम विवाहिता स्त्री के हैं।

स्यात्तु कुटुम्बिनी।

पुरन्ध्री

कृष्णमित्रटीका :- कुटुम्बस्त्यस्याः। पुरं धारयन्ति। 'संज्ञायां भृतृवृ-' (३. २. ४६) इति खच्। पृषोदरादिः (६. ३. १०६)। 'पुत्रादिमत्याः सधवायाः' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१. कुटुम्बिनी, २. पुरंध्री- ये दो नाम पुत्रादि से युक्त सधवा स्त्री के हैं।

सुचरित्रा तु सती साध्वी पतिव्रता॥६॥

कृष्णमित्रटीका :- शोभनं चरित्रमस्याः। 'अस भुवि' (अ. प. से.)। 'श्नसोरल्लोपः' (६. ४. १११) ङीप् (४. १. ६)। साध्नोति परलोकम्। 'कृवापा-' (उ. १. १) इत्युण्। चत्वारि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. सुचरित्रा, २. सती, ३. साध्वी, ४. पतिव्रता- ये चार नाम पतिव्रता (पतिप्रेम-परायणा) स्त्री के हैं॥६॥

कृतसापत्निकाध्यूढाधिविन्ना[3]

कृष्णमित्रटीका :- सपत्न्या भावः सापत्नी। ष्यञन्तात् (५. १. २४) ङीष् (४. १. ४१)। ततः कन् (५. ३. ७५)। कृता सापत्निका यस्याः। अधि उपरि रूढमुद्वहनमस्याः। अधि उपरि विन्नं लाभोऽस्याः[4]। 'अनेकंभार्यस्य प्रथमभार्या'॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. कृतसपत्निका, २. अध्यूढा, ३. अधिविन्ना- ये तीन नाम अनेक विवाह किये हुए पुरुष की पहली स्त्री के हैं।

अथ स्वयंवरा।

पतिंवरा च वर्या

कृष्णमित्रटीका :- स्वयं वृणीते। व्रियतेऽनया[6]। स्वेच्छया पतिं वृणोति॥[7]

1. A woman whose husband and childern are living [7] 2. A virtuous woman or cheste wife [4] 3. B. reads कृतसपत्निकाध्यूढाधिविन्ना 4. M. लाभोस्याः 5. A wife, whose husband has married another wife [3] 6. M. व्रियतेनया 7. A woman who chosses her husband her-self [3]

हिन्दी अर्थ :-१. स्वयंवरा, २. पतिंवरा, ३. वर्या- ये तीन नाम अपनी इच्छा से पति वरण करने वाली स्त्री के हैं।

अथ कुलस्त्री कुलपालिका॥७॥

कृष्णमित्रटीका :- कुलं पालयति। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. कुलस्त्री, २. कुलपालिका - ये दो नाम कुलीन स्त्री के हैं॥७॥

कन्या कुमारी

कृष्णमित्रटीका :- कनति कन्या। 'कनी दीप्तौ' (भ्वा. प. से.)। अध्न्यादिः (उ. ४. १११)। कुत्सितौ मारोऽस्याः[2]। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. कन्या, २. कुमारी स्त्रीलिङ्ग - ये दो प्रथम अवस्था वाली (कुंवारी) लड़की के हैं।

गौरी तु नग्निकानागतार्तवा।

कृष्णमित्रटीका :- गवते गौरी। 'गुङ्' (भ्वा. आ. अ.)। 'ऋज्रेन्द्रा-' (उ. २. २८) इति निपातः। न जते स्म नग्ना। 'ओणजी व्रीडे' (तु. आ. से.)। क्तः (३. ४. ७२)। तस्य नः (८. २. ४५)। अनागतमार्तवं रजोऽस्याः[4]। त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. गौरी, २. नग्निका, ३. अनागतार्तवम्- ये तीन नाम उस स्त्री के हैं जिसे रजोधर्म न हुआ हो।

स्यान्मध्यमा दृष्टरजाः

कृष्णमित्रटीका :- दृष्टं रजोऽस्याः[6]। द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१. मध्यम, २. दृष्टरज- ये दो नाम उस स्त्री के हैं जिसे पहली बार रजोधर्म हुआ हो।

तरुणी युवती समे॥८॥

कृष्णमित्रटीका :- तरन्त्यनया। 'त्रो रश्च लो वा' (उ. ३. ५४) इत्युरच्। यौति। 'कनिन युव्रषि-' (उ. १. १५७) इति कनिन्। द्वे॥८॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. तरुणी, २. युवति- ये दो नाम मध्यम अवस्था वाली स्त्री के हैं॥८॥

1. A noble woman [2] 2. M. मारोस्याः 3. Virgin [2] 4. M. रजोस्याः 5. A young girl prior to menstruation [3] 6. M. रजोस्वाः 7. A marriageable attained to puberty [1] 8. Majority reads युवतिः

समाः स्नुषाजनीवध्वः

कृष्णमित्रटीका :- स्नौति स्नुषा। 'स्नु प्रस्रवणे' (अ. प. से.)। 'स्नु वृश्चि-' (उ. ३. ६६) इति सः। जायतेऽल्याम्[1]। 'जनिधसिभ्यामिण्'[2] (उ. ४. १३१)। पुत्रभार्यायास्त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १.स्नुषा, २. जनी, ३. वधू- ये तीन नाम पतोहू (नवविवाहिता) स्त्रीलिङ्ग के हैं।

चिरण्टी तु सुवासिनी।

कृष्णमित्रटीका :- चिरिणोति चिरण्टी। सुष्ठु वसति पितृगेहे। पितृगेहस्थाया युवत्या द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. चिरण्टी, २. सुवासिनी- ये दो नाम पिता के घर में रहने वाली विवाहिता (युवती) के हैं।

इच्छावती कामुका स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- कामयते। 'लषपत-' (३. २. १५४) इत्युकञ्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. इच्छावती, २. कामुका- ये दो नाम किसी वस्तु को चाहने वाली स्त्री के हैं।

वृषस्यन्ती तु कामुकी ॥९॥

कृष्णमित्रटीका :- वृषं नरमिच्छति। मैथुनेच्छायामसुक्॥९॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. वृषस्यन्ती, २. कामुकी- ये दो नाम मैथुनेच्छा वाली स्त्री के हैं॥९॥

कान्तार्थिनी तु या याति संकेतं साभिसारिका।

कृष्णमित्रटीका :- पुरुषेच्छया या रतिस्थानं गच्छति। अभिसरति॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १.अभिसारिका- यह एक नाम पति को संकेत स्थान पर बुलाने वाली स्त्री का है।

पुंश्चली धर्षणी[8] बन्धक्यसती कुलटेत्वरी॥१०॥
स्वैरिणी पांशुला च स्यात्

1. A young woman [2] 2. M. जायतेस्याम् 3. Daughter-in-law [3] 4. A woman married or single who resides in her father's house [2] 5. A woman longing for something [2] 6. A lustful woman [2] 7. A woman who either goes to meet her lover or keeps an appointment made by him [1] 7. Majority prefers चर्षणी

कृष्णमित्रटीका :- पुंसु चलति। धर्षयति। 'ञिधृषा-' (स्वा. प. से.)। ल्युट् (३. ३. ११३) बन्धे ण्वुल् (३. १. १३३)। कुलस्य अटा। एति तच्छीला॥१०॥ स्वेन ईरितु शीलमस्याः। पांशु पापं लाति। अष्टौ॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. पुंश्चली, २. चर्षणी, ३. बन्धकी, ४. असती, ५. कुलटा, ६. इत्वरी॥१०॥, ७. स्वैरिणी, ८. पांसुला-ये आठ नाम व्यभिचारणी स्त्री के हैं।

अशिश्वी शिशुना बिना।

कृष्णमित्रटीका :- नास्ति शिशुरस्याः। एकम्॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. अशिश्वी- यह एक नाम पुत्रहीन स्त्री का है।

अवीरा निष्पतिसुता

कृष्णमित्रटीका :- पतिपुत्रहीना अवीरा॥[3]

हिन्दी अर्थ :- अवीरा- यह एक नाम पति पुत्र से हीन स्त्री का है।

विश्वस्ताविधवे समे॥११॥

कृष्णमित्रटीका :- विफलं श्वसिति। विगतो ध्वोऽस्याः[4]। द्वे॥११॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. विश्वस्ता, २. विधवा- ये दो नाम विधवा स्त्री के हैं॥११॥

आलिः सखी वयस्या

कृष्णमित्रटीका :- आलयति। 'अल भूषणे' (भ्वा. प. से.)। 'अच इः' (उ. ४. १३८)। समानं ख्याति। 'समाने ख्यः-' (उ. ४. १३६) इतीण्। वयसा तुल्या। 'नौवयोधर्म-' (४. ४. ९१) इति यत्। त्रीणि॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१. आलि, २. सखी, ३. वयस्या- ये तीन नाम सहेली के हैं।

अथ पतिवत्नी सभर्तृका

कृष्णमित्रटीका :- पतिरस्त्याः। द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. पतिवत्नी, २. सभर्तृका- ये दो नाम सधवा स्त्री के हैं।

1. An unchaste woman [8] 2. A woman without son [1] 3. A woman who has neither son nor husband [1] 4. M. धवोस्याः 5. Widow [2] 6. A female friend [3] 7. A woman whose husband is alive [2]

वृद्धा पलिक्नी

कृष्णमित्रटीका :- वर्द्धते वृद्धा। क्तः। पलितमस्त्यस्याः। 'छन्दसि क्नमेके' (वा. ४. १. ३६)। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. वृद्धा, २. पलिक्नी- ये दो नाम वृद्धा स्त्री के हैं, जिसके बाल सफेद हों।

प्राज्ञी तु प्रज्ञा[2]

कृष्णमित्रटीका :- प्रजानाति 'आतश्च-' (३. १. १३६) इति कः। 'स्वयंज्ञात्र्याः' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रज्ञा, २. प्राज्ञी- ये दो नाम स्वयं जानने वाली स्त्री के हैं।

प्राज्ञा तु धीमती॥१२॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रज्ञास्त्यस्याः। द्वे॥१२॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रज्ञा, २. धीमती ये दो नाम चतुर स्त्री के हैं ॥१२॥

शूद्री शूद्रस्य भार्या स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- शूद्रस्य स्त्री। पुंयोगी ङीष् (४. १. ४८)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- शूद्री- यह एक नाम शूद्र की स्त्री का है चाहे किसी भी वर्ण वाली स्त्री से उत्पन्न हुई हो।

शूद्रा तज्जातिरेव तु[6]**।**

कृष्णमित्रटीका :- शूद्रोत्पन्नायां त्वजादिपत्वा ट्टाप्॥[7]

हिन्दी अर्थ :- शूद्रा- यह एक नाम उस स्त्री का है जो शूद्र जातीय किसी अन्य वर्ण की भी स्त्री हो।

आभीरी तु महाशूद्री जातिपुंयोगयोः समा॥१३॥

कृष्णमित्रटीका :- आभीरस्य स्त्री। जातौ पुंयोगे च (४. १. ४८) ङीष्। एवं महाशूद्री। या तु महती शूद्री तत्र टाबेव। 'ब्राह्मणा (त्) शूद्रकन्यायामाभीरो नाम जायते'॥१३॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. आभीरी, २. महाशूद्री- ये दो नाम ग्वालिन के है। ये जाति पुंयोग के तुल्य होते हैं॥१३॥

अर्याणी स्वयमर्या स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- 'अर्यक्षत्रियाभ्यां वा' (वा. ४. १. ४९) (इति) स्वार्थे ङीषानुकौ। स्वयं पुंयोग विना। 'वैश्यायाः' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. आर्याणी, २. अर्या- ये दो नाम वैश्य कुल में उत्पन्न स्त्री के हैं।

क्षत्रिया क्षत्रियाण्यपि।

कृष्णमित्रटीका :- (एवम् । द्वे)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. क्षत्रिया, २. क्षत्रियाणी- ये दो नाम क्षत्रियकुल में उत्पन्न स्त्री के हैं।

उपाध्यायाप्युपाध्यायी

कृष्णमित्रटीका :- उपेत्याधीयतेऽस्याः[3]। 'विद्योपदेशिन्याः' द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. उपाध्याया, २. उपाध्यायी- ये दो नाम स्वयं अध्यापन करने वाली स्त्री के हैं।

स्यादाचार्यापि च स्वतः॥१४॥

कृष्णमित्रटीका :- स्वयं मन्त्रव्याख्यात्री॥१४॥[5]

हिन्दी अर्थ :- आचार्या- यह एक नाम स्वयं मन्त्र व्याख्या करने वाली स्त्री का है॥१४॥

आचार्यानी तु पुंयोगे

कृष्णमित्रटीका :- आचार्यस्य स्त्री॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. आचार्यानी- यह एक नाम आचार्यपत्नी का है।

स्यादर्यी

कृष्णमित्रटीका :- एवं पुंयोगे अर्यी॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. अर्यी- यह एक नाम अन्य जाति में उत्पन्न हुई वैश्य-स्त्री का है।

क्षत्रियी तथा ।

कृष्णमित्रटीका :- क्षत्रियी॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. क्षत्रियी- यह एक नाम किसी भी जाति में पैदा हुई क्षत्रिय पत्नी का है।

उपाध्यायान्युपाध्यायी

---

1. An old grey-haired woman [2] 2. B. prefers the following order : प्रज्ञा तु प्राज्ञी 3. A wise woman [2] 4. An intelligent woman [2] 5. The wife of a Sudra [1] 6. B. and K. read च in plave of तु 7. A woman of the S'udra tribe [1] 8. Either a cowherd's wife or woman of a very low S'udra tribe [2]

1. A woman of the Vais'ya tribe [2] 2. A womean of the Ksatriya caste [2] 3. M. उपेत्याधीयतेस्याः 4. A female preceptor [2] 5. A spiritual preceptress [1] 6. The wife of a spiritual preceptor [1] 7. The wife of a Vais'ya [1] 8. The wife of a Ksatriya [1]

कृष्णमित्रटीका :- उपाध्यायस्य स्त्री। मातुलो-पाध्याययोरानुग्वा (वा. ४. १. ४९)।।[1]

हिन्दी अर्थ :- १. उपाध्यायानी, २. उपाध्यायी - ये दो नाम गुरुपत्नी के हैं।

पोटा स्त्रीपुंसलक्षणा।।१५।।

कृष्णमित्रटीका :- स्तनश्मश्रूवादियुक्ता स्त्री पोटा।।१५।।[2]

हिन्दी अर्थ :- पोटा- यह एक नाम स्तन, दाढ़ी और स्त्री पुरुष चिह्नों से युक्त स्त्री का है।।१५।।

वीरपत्नी वीरभार्या

कृष्णमित्रटीका :- वीरः पतिरस्याः। वीरस्य भार्या। द्वे।।[3]

हिन्दी अर्थ :- १. वीरपत्नी, २. वीरभार्या- ये दो नाम शूरवीर की पत्नी के हैं।

वीरमाता तु वीरसूः।

कृष्णमित्रटीका :- वीरस्य माता। वीरं सूते। द्वे।।[4]

हिन्दी अर्थ :- १. वीरमाता, २. वीरसू- ये दो नाम वीर की माता के हैं।

जातापत्या प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका।।१६।।

कृष्णमित्रटीका :- जातमपत्यमस्याः। चत्वारि।।१६।।[5]

हिन्दी अर्थ :- १. जातापत्या, २. प्रजाता, ३. प्रसूता, ४. प्रसूतिका- ये चार नाम प्रसूतिका (जच्चा) के हैं।।१६।।

स्त्री नग्निका कोटवी स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- 'कुट कौटिल्ये' (तु. प. से.) कोटं वेति। 'नग्नायाः' द्वे।।[6]

हिन्दी अर्थ :- १.नग्निका, २. कोटवी- ये दो नाम वस्त्ररहित नग्न स्त्री के हैं।

दूती संचारिके समे।

कृष्णमित्रटीका :- दूयन्तेऽनया[7]। 'दूङ् उप (परि) तापे' (दि. आ. से.)। क्तः। संचारयति। द्वे।।[8]

1. The wife of a preceptor [2] 2. A woman with beard or such other masculine features [1] 3. The wife of a hero [2] 4. The mother of a hero [2] 5. A woman recently delivered [4] 6. A naked woman [2] 7. M. दूयन्तेनया 8. A female messenger [2]

हिन्दी अर्थ :- १. दूती, २. संचारिका- ये दो नाम दूती के हैं।

कात्यायन्यर्धवृद्धा या काषायवसनाधवा[1]।।१७।।

कृष्णमित्रटीका :- कतस्यापत्यम्। काषाय-वस्त्रधारिण्यर्धवृद्धा या विधवा।।१७।।[2]

हिन्दी अर्थ :- कात्यायनी- यह एक नाम अधबूढ़ गेरुआ वस्त्र पहनने वाली विधवा स्त्री का है।।१७।।

सैरन्ध्री परवेश्मस्था स्ववशा शिल्पकारिका।

कृष्णमित्रटीका :- सीरं धरति सीरन्ध्रः। मूलविभुजादिः (वा. ३. २. ५)। तस्येयम्। एकम्।।[3]

हिन्दी अर्थ :- सैरन्ध्री- यह एक नाम दूसरे के घर में रहने वाली, स्वतन्त्र, केश गूंथने वाली स्त्री का है।

असिक्नी स्यादवृद्धाया प्रेष्यान्तः पुरचारिणी।।१८।।

कृष्णमित्रटीका :- या युवती प्रेष्यान्तश्चारिणी सासिक्नी। 'छन्दसि क्नमेके' (वा. ४. १. ३९) इत्यसितायाः क्नः।।१८।।[4]

हिन्दी अर्थ :- असिक्नी- यह एक नाम अवृद्धा आज्ञा प्राप्त कर इधर-उधर जाने वाली और अन्तःपुर (रनिवास) में रहने वाली स्त्री का है।।१८।।

वारस्त्री गणिका वेश्या रूपाजीवा

कृष्णमित्रटीका :- वारस्य वृन्दस्य स्त्री। समूहोऽस्त्यस्याः[5]। वेशेन नेपथ्येन शोभते। 'कर्मवेशाद्यत्' (५. १. १००)। वेश्या।।[6]

हिन्दी अर्थ :- १. वारस्त्री, २. गणिका, ३. वेश्या, ४. रूपाजीवा- ये चार नाम वेश्या स्त्री के हैं।

अथ सा जनैः।

सत्कृता वारमुख्या स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- वारे वेश्यावृन्दे मुख्या।।[7]

हिन्दी अर्थ :- वारमुख्या- यह एक नाम लोगों से सत्कार पायी हुई वेश्या का है।

कुट्टनी शंभली समे।।१९।।

1. B. reads कषायवसनाधवा 2. A middle-aged widow attired in red clothes [1] 3. An independent female artizan working in another person's house [1] 4. A young maidservant of the harem [1] 5. M. समूहोस्त्यस्याः 6. Prostitute [4] 7. The chief of a number of harlots [1]

कृष्णमित्रटीका :- कुट्टयति। ल्युट् (३. ३. ११३)। शं सुखं लभते। 'भल परिभाषणे' (भ्वा. आ. से.)। द्वे॥१९॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. कुट्टनी, २. शंभली- ये दो नाम दूसरे की स्त्री को पर पुरुष के साथ मिलाने वाली स्त्री के हैं॥१९॥

विप्रश्निका त्वीक्षणिका दैवज्ञा

कृष्णमित्रटीका :- विविधः प्रश्नोऽस्त्यस्याः[2]। कन्। शुभाशुभयोरीक्षणमस्त्यस्याः। दैवं शुभा-शुभं जानाति। त्रीणि 'शुभाशुभलक्षणज्ञायाः'॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. विप्रश्निका, २. ईक्षणिका, ३. दैवज्ञा- ये तीन नाम लक्षणादि से शुभाशुभ को जानने वाली स्त्री का है।

अथ रजस्वला।

स्त्रीधर्मिण्यविरात्रेयी मलिनी पुष्पवत्यपि॥२०॥

ऋतुमत्यप्युदक्यापि

कृष्णमित्रटीका :- रजोऽस्त्यस्याः[4]। वलच् (५. २. ११२)। स्त्रीधर्मो रजोऽस्त्यस्याः[5]। अवीरा तत्काले वीरसम्बन्धरहिता। अत्रेरपत्यमात्रेयी तद्वदगम्या। मलम-स्त्यस्याः॥२०॥ ऋतुरस्त्यस्याः। उदकमस्त्यस्याः। 'संज्ञा-याम्' (?) यत्॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. रजस्वला, २. स्त्रीधर्मिणी, ३. अवि, ४. आत्रेयी, ५. मलिनी, ६. पुष्पवती॥२०॥, ७. ऋतुमती, ८. उदक्या- ये आठ नाम रजस्वला स्त्री के हैं।

स्याद्रजः पुष्पमार्तवम्।

कृष्णमित्रटीका :- रज्यतेऽनेन[7]। 'भूरञ्जिभ्यां कित्' (उ. ४. २१६) इत्यसुन्। पुष्पते। ऋतुरेव। प्रज्ञाद्यण् (५. ४. ३८)॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. रज, २. पुष्पम्, ३. आर्तवम् - ये तीन नाम स्त्रीरज के हैं।

श्रद्धालुर्दोहदवती

कृष्णमित्रटीका :- श्रद्धास्त्यस्याः। दोहदं गर्भिण्यभिलाषोऽस्त्यस्याः[1]। 'इच्छा विशेषवत्याः' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. श्रद्धालु, २. दोहदवती- ये दो नाम गर्भवश किसी वस्तु विशेष को चाहने वाली स्त्री का है।

निष्कला विगतार्तवा॥२१॥

कृष्णमित्रटीका :- निर्गतं कलं शुक्रमस्याः। 'रजोहीनायाः' द्वे॥२१॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. निष्कला, २. विगतार्तवा ये दो नाम रजोहीन (जिसे रजोधर्म न होता हो या वृद्धावस्था के कारण बंद हो गया हो) स्त्री के हैं॥२१॥

आपन्नसत्त्वा स्याद्गुर्विण्यन्तर्वत्नी च गर्भिणी।

कृष्णमित्रटीका :- १. आपन्नः सत्त्वो जन्तुरस्याम्। गुरुर्गभोऽस्त्यस्याः[4]। ब्रीह्यादिः (५. २. ११६) अन्तरस्त्यस्यां गर्भः। चत्वारि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १.आपन्नसत्त्वा, २. गुर्विणी, ३. अन्तर्वत्नी, ४. गर्भिणी- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम गर्भिणी स्त्री के हैं।

गणिकादेस्तु गाणिक्यं गार्भिणं यौवतं गणे॥२२॥

कृष्णमित्रटीका :- गणिकानां[6] समूहे यञ् (वा. ४. २. ४०)। युवतीनां समूहः। शत्रन्तात् 'भिक्षादिभ्योऽण्' (४. २. ३८)॥२२॥ 'युनस्तिः' इति त्यन्तस्य तु 'भस्याढे-' (वा. ६. ३. ६५) इति पुम्वद्भावे (वा. ६. ३. ३५) 'अन्' (६. ४. १३७) इति प्रकृतिभावात् यौवनम्' ॥२२॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. गाणिक्यम्, २. गार्भिणम्, ३. यौवतम्- ये तीन नाम समूह के हैं।

पुनर्भूर्दिधिषूरूढाद्विः

कृष्णमित्रटीका :- पुनर्भवति संस्कृता। दधाति पापं दिधिषूः। 'अन्दूदृम्भू-' (उ. १. ९३) इति साधुः। वारद्वयमूढा विवाहिता॥[8]

---

1. Bawd [2] 2. M. प्रश्नोरत्यस्याः 3. A female fortune-teller [3] 4. M. रजोस्त्यस्याः 5. M. रजोस्त्यस्याः 6. A woman during her menstruation [8] 7. M. रज्यतेनेन 8. Menstruation [3]

1. M. भिलोषोस्त्यस्याः 2. A pregnant woman longing for anything [2] 3. A woman in whom the menstrual discharge has ceased [2] 4. M. गुरुगभोस्त्यस्याः 5. A pregnant woman [4] 6. M. गणिकाणां 7. A number of prostitutes, pregnant women, and young women [1 each] 8. A woman married twice [2]

हिन्दी अर्थ :- १. पुनर्भू, २. दिधिषू- ये दो नाम दो बार ब्याही स्त्री के हैं।

तस्या दिधिषुः[1] पतिः।

कृष्णमित्रटीका :- तस्याः पतिः दिधिषुः। दिधिषुमात्मन इच्छति। क्यजन्तात् (३. १. ८) क्विप् (३. २. १७८)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- दिधिषु- यह एक नाम दो बार ब्याही स्त्री के पति का है।

स तु द्विजोऽग्रे दिधिषुः[3] सैव यस्य कुटुम्बिनी॥२३॥

कृष्णमित्रटीका :- अग्रे प्रधानं दिधिषुर्यस्य। पुनर्भूमार्यैव यस्य प्रधानम्॥२३॥[4]

हिन्दी अर्थ :- अग्रेदिधिषू- यह एक नाम उस पुरुष का है, जिसके परिवार में दो बार ब्याही हुई स्त्री की प्रधानता है॥२३॥

कानीनः कन्यकाजातः सुतः

कृ.मित्र टीका :- कन्याया अनूढाया अपत्यम्। 'कन्यायाः कनीन च' (४. १. ११६)। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- कानीन- यह एक नाम कुंवारी कन्या के पुत्र का है।

अथ सुभगासुतः।

सौभागिनेयः

कृष्णमित्रटीका :- सुभगाया अपत्यम् 'कल्या-ण्यादीनामिनङ्' (४. १. १२६)॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१. सुभगासुत, २. सौभागिनेय - ये दो नाम सौभाग्यवती स्त्री के पुत्र के हैं।

स्यात्पारस्त्रैणेयस्तु परस्त्रियाः॥२४॥

कृष्णमित्रटीका :- परिस्त्रिया अपत्ये। इनङ् (४. १. १२६)। उभयपदवृद्धिः (७. ३. १९)॥२४॥[7]

हिन्दी अर्थ :- पारस्त्रैणेय- यह एक नाम परस्त्री पुत्र का है॥२४॥

पैतृष्वसेयः स्यात् पैतृष्वस्त्रीयश्च पितृष्वसुः। सुतः

1. B. and K. reads दिधिषूः 2. The husband of a woman married [1] 3. B. and. K. read दिधिषूः 4. A man of one of the first three castes who marries a married before [1] 5. The son of an unmarried woman [1] 6. The son of a favourite wife [2] 7. Adulterine (born from another's wife) [1]

कृष्णमित्रटीका :- 'पितृष्वसुश्छण्' (४. १. १३२)। 'ढकि लोपः' (४. १. १३३) च॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १.पैतृष्वसेय, २. पैतृष्वस्त्रीय- ये दो नाम फुफेरे भाई के हैं।

मातृष्वसुश्चैवम्

कृष्णमित्रटीका :- मातृश्वसुश्चेति। प्राग्वत्॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. मातृष्वसेय, २. मातृष्व-स्त्रीयश्च -ये दो नाम मौसेरे भाई के हैं।

वैमात्रेयो विमातृजः॥२५॥

कृष्णमित्रटीका :- विरुद्धा माता विमाता। पदपत्ये शुभ्रादित्वात् (४. १. १२३) ढक्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. वैमात्रेय, २. विमातृज- ये दो नाम विमाता पुत्र अर्थात् सौतेले भाई के हैं॥२५॥

अथ बान्धकिनेयः स्याद्बन्धुलश्चासतीसुतः।
कौलटेयः कौलटेरः भिक्षुकी तु सती यदि॥२६॥

कृष्णमित्रटीका :- बन्धक्या अपत्यम्। बन्धून लाति। कुलटाया अपत्यम्। ढक् (४. १. १२०)। 'क्षुद्राभ्यो वा' (४. १. १३१) इति द्रक्॥२६॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. बान्धकिनेय, २. बन्धुल, ३. असतीसुत,४. कौलटेय, ५. कौलटेर- ये पाँच नाम व्यभिचारिणी स्त्री के हैं॥२६॥

तदा कौलटिनेयोऽस्याः कौलटेयोऽपि चात्मजः।

कृष्णमित्रटीका :- सत्ययुक्ता या भिक्षुकी तदपत्यं कौलटिनेयः। 'कुलटाया वा' (४. १. १२७) इतीनङ्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १.कौलटिनेय, २. कौलटनेय- ये दो नाम भिक्षा मांगने वाली यदि स्त्री हो तो उसके पुत्र के हैं।

आत्मजस्तनयः सूनुः सुतः पुत्रः स्त्रियां त्वमी॥२७॥

कृष्णमित्रटीका :- आत्मनो देहाज्जातः। तनोति कुलम्। 'वलिमलि-' (उ. ४. ९९) इति कयन्। सूते। 'सुवः कित्' (उ. ३. ३५) इति नुः। 'षु प्रसवे' (भ्वा. प. अ.)। क्तः (३. २. १०२)। पुंनाम्नो नरकात्त्रायते॥[6]

1. The son of a paternal aunt [2] 2. The son of a mother's sister [2] 3. Ther son of a step-mother [2] 4. The son of unchaste woman [5] 5. The son of a chaste female begger [2] 6. Son [5]

हिन्दी अर्थ :- १. आत्मज, २. तनय, ३. सूनु, ४. पुत्र, ५. सूत- ये पाँच नाम पुत्र के हैं।

उपर्युक्त 'आत्मजः' आदि शब्द के स्त्रीलिङ्ग होने पर (१) आत्मजा, (२) तनया, (३) सूनु, (४) सुता, (५) दुहिता- ये पाँच नाम पुत्री (लड़की) के हैं।

आहुर्दुहितरं सर्वे

कृष्णमित्रटीका :- स्त्रीलिङ्गास्वेते दुहितरं वदन्ति। दोग्धि दुहिता। 'नप्तृनेष्ट्ट-' (उ. २. ६५) इति साधुः॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १.अपत्यम्, २. तोकम्- ये दो नाम सन्तान मात्र के हैं।

अपत्यं तोकं तयोः समे।

कृष्णमित्रटीका :- न पतत्यनेन यः। 'तुः' सौत्रो हिंसादौ। बाहुलकात्कः। तयोः तनय- दुहित्रोः॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १.औरस, २. उरस्य- ये दो नाम अपने लड़के (पुत्र) के है॥

स्वजाते त्वौरसौरस्यौ तातस्तु जनकः पिता॥२८॥

कृष्णमित्रटीका :- स्वस्माज्जातः। उरसा निर्मितः। 'उरसोऽण्[3] च' (४. ४. ६४)॥[4] तनोति तातः। 'दुतनिभ्यां दीर्घश्च' (उ. ३. ९०) इति क्तः। जनयति। पातीति पिता। 'नप्तृनेष्ट्ट-' (उ. २. ९५) इति साधुः॥२८॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१. तात, २. जनक, ३. पिता- ये तीन नाम पिता के हैं॥२८॥

जनयित्री प्रसूर्माता जननी

(धाविका दुग्धदा धात्री धाविको दुग्धदीपतिः।)

कृष्णमित्रटीका :- जनयति। प्रसूते। माति गर्भोऽस्याम्[6]॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. जनयित्री, २. प्रसू, ३. माता, ४. जननी- ये चार नाम माता के हैं।

भगिनी स्वसा।

कृष्णमित्रटीका :- भगं कल्याणमस्त्यस्याः। सुष्ठु अस्यति। 'सावसेर्ऋन्' (उ. २. ९६)। द्वे॥[8]

हिन्दी अर्थ :-१. भगिनी, २. स्वसा- ये दो नाम बहिन के हैं।

ननन्दा तु स्वसा पत्युः

कृष्णमित्रटीका :- न नन्दति। 'नञि नन्देः' (उ. २. ९८) इति ऋन्॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. ननान्दा- यह एक नाम ननद का है।

नप्त्री पौत्री सुतात्मजा॥२९॥

कृष्णमित्रटीका :- न पतन्ति पितरोऽनया। पुत्रस्यापत्यं स्त्री। विदाद्यञ् (४. १. १०४)॥२९॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१. नप्त्री २. पौत्री, ३. सुतात्मजा - ये तीन नाम पुत्र या पुत्री की (स्त्री सन्तति) लड़की के हैं॥२९॥

भार्यास्तु भ्रातृवर्गस्य यातरः स्युः परस्परम्।

कृष्णमित्रटीका :- यतन्ते यातरः। 'यतेर्वृद्धिश्च' (उ. २. ९७) इत्यृन्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- याता- यह एक नाम देवरानी (पति के भाइयों की स्त्रीलिङ्ग) के है।

प्रजावती भ्रातृजाया

कृष्णमित्रटीका :- प्रजाऽस्त्यस्याः[4]। भ्रातु-र्जायायार्द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रजावती, २. भ्रातृजाया- ये दो नाम भौजाई (भाभी) के हैं।

मातुलानी तु मातुली॥३०॥

कृष्णमित्रटीका :- मातुलस्य पत्नी। मातुलोपा-ध्याययोरानुग्वा (वा. ४. १. ४९)॥३०॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१. मातुलानी, २. मातुली- ये दो नाम मामा की पत्नी के हैं॥३०॥

पतिपत्न्योः प्रसूः श्वश्रूः

कृष्णमित्रटीका :- पतिपत्नयोर्माता श्वश्रूः॥[7]

हिन्दी अर्थ :- श्वश्रू- यह एक नाम सास (पति या पत्नी की माता) का है।

---

1. **Daughter** [6] 2. **Child** [2] 3. M. उरसोण् 4. **A legitimate child** [2] 5. **Father** [3] 6. M. गर्भोस्याम् 7. **Mother** [3] 8. **Sister** [2]

1. **Husband's sister** [1] 2. **Grand-daughter** [3] 3. **The wife of a husband's brother** [1] 4. M. प्रजाप्त्यस्याः 5. **Brother's wife** [2] 6. **The wife of a maternal uncle** [2] 7. **Mother-in-law** (a wife's or husband's mother) [1]

श्वशुरस्तु पिता तयोः।

कृष्णमित्रटीका :- तयोः पिता श्वशुरः। शु पूजितं कृत्वा अश्नुतो। 'शावशेः-' (उ. १. ४४) इत्युन्॥[1]

हिन्दी अर्थ :-श्वशुर- यह एक नाम श्वसुर का है।

पितुर्भ्राता पितृव्यः स्यान् मातुर्भ्राता तु मातुलः॥३१॥

कृष्णमित्रटीका :- 'पितृव्यमातुलमातामह' (४. २. ३६) इति निपात्यन्ते॥३१॥[2]

हिन्दी अर्थ :- पितृव्य यह एक नाम चाचा का है। मातुल- यह एक नाम मामा का है॥३१॥

श्यालाः स्युर्भ्रातरः पत्न्याः

कृष्णमित्रटीका :- श्यायते। 'श्यैङ् गतौ' (भ्वा. आ. अ.)। बाहुलकात्कालन्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- श्याला- यह एक नाम शाला (पत्नी के भ्राता) का है।

स्वामिनो देवृदेवरौ।

कृष्णमित्रटीका :- स्वामिनः पत्युर्भ्राता कनिष्ठः। दीव्यति। 'अर्तिकमि-' (उ. ३. १३२) इत्यरः। 'भ्रातापत्न्याः शालकः स्यात्स्वसा श्यालो च शालिका॥'[4]

हिन्दी अर्थ :-१. देव, २. देवर- ये दो नाम देवर (स्वामी के छोटे भाई) के हैं।

स्वस्त्रीयो भागिनेयः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :-स्वसुरपत्यम्। 'स्वशुश्छः' (४. १. १४३)। भगिन्या अपत्यम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१. स्वस्त्रीय, २. भागिनेय- ये दो नाम बहिन के लड़के के हैं।

जामाता दुहितुः पतिः॥३२॥

कृष्णमित्रटीका :- जायां मिमीते। 'नप्तृ नेष्टृ' (उ. २. ६५) इति साधुः॥३२॥[6]

हिन्दी अर्थ :-जामाता- यह एक नाम दामाद का है॥३२॥

पितामहः पितृपिता

कृष्णमित्रटीका :- 'मातृपितृभ्यां पितरि डामहच्' (वा. ४. २. ३६)॥[7]

1. **Father-in-law** (a wife's or husband's father) [1] 2. **A paternal uncle, and maternal uncle** [1] 3. **Wife's brother** [1] 4. **Husband's younger brother** [2] 5. **The son of a sister** [2] 6. **Son-in-law** [1] 7. **Grandfather** [2]

हिन्दी अर्थ :- पितामह- यह एक नाम दादा का है।

तत्पिता प्रपितामहः।

कृष्णमित्रटीका :- तस्य पितामहस्य पिता। प्रकर्षेण पितामहः॥[1]

हिन्दी अर्थ :- प्रपितामह- यह एक नाम प्रपितामह का है।

मातुर्भातामहाद्येवम्

कृष्णमित्रटीका :- मातुः पिता मतामहः॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१. मातामह, २. प्रमातामह- ये दोनों नाम क्रमशः नाना, परनाना के हैं।

सपिण्डास्तु सनाभयः॥३३॥

कृष्णमित्रटीका :- सह पिण्डेन वर्तते। समानो नाभिर्मूलपुरुषोऽस्य[3]। सप्तमपुरुषावधयः सपिण्डाः॥३३॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१. सपिण्ड, २. सनाभि- ये दो नाम सप्तपुरुषावधि जाति (सात पीढी के परिवार तक) के हैं॥३३॥

समानोदर्यसोदर्यसगर्भ्यसहजाः समाः।

कृष्णमित्रटीका :- समाने उदरे शयितः। 'विभाषोदरे' (६. ३. ८८) सभावः। समाने गर्भे भवः। सह तुल्ये उदरे जातः। चत्वारि॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१. समानोदर्य, २. सोदर्य, ३. सगर्भ्य, ४. सहज- ये चार नाम सहोदर भाई (एक माता से उत्पन्न भाई) के हैं।

सगोत्रबान्धवज्ञातिबन्धुस्वस्वजनाः समाः॥३४॥

कृष्णमित्रटीका :- समानं गोत्रं कुलमस्य। बन्ध्नाति बन्धुः। 'शृस्वृस्निहि-' (उ. १. १०) इत्युः। प्रज्ञाद्यणि (५. ४. ३८) बान्धवः। ज्ञायते ज्ञातिः। 'स्वन शब्दे' (भ्वा. प. से.)। 'अन्येभ्योऽपि[6]-' (वा. ३. ३. १०१) इति डः। स्व आत्मीयश्चासौ जनश्च। षट्॥३४॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. सगोत्र, २. बान्धवः, ३. ज्ञाति, ४. स्व, ५. स्वजन, ६. समा- ये छः नाम सगोत्र (अपने खानदान) के हैं॥३४॥

1. **A great grand-father** [1] 2. **Grand-father and great grand-father** (maternal) [1 each] 3. M. नाभिर्मूलपुरुषोस्य 4. **Sapinda** [2] 5. **Brother** (uterine) [4] 6. M. अन्येभ्योपि 7. **Kinsman** (sagotra) [6]

ज्ञातेयं बन्धुता तेषां क्रमाद्भावसमूहयोः।

कृष्णमित्रटीका :- ज्ञातेभविः। 'कपिज्ञात्योर्ढक्' (५. १. १२७)। बन्धूनां समूहः। 'ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्' (४. २. ४३)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. ज्ञातेयम्, २. बन्धुता- ये दो नाम क्रम से ज्ञातियों के भाव तथा बन्धुओं के भाव तथा बन्धुओं के समूह का एक-एक नाम है।

धवः प्रियः पतिर्भर्ता

कृष्णमित्रटीका :- धवति धवः। प्रीणाति प्रियः। कः (३. १. १३५)। 'पातेर्डतिः' (उ. ४. ५७)। बिभर्ति। भृञः (जु. उ. से.) तृच् (३. १. १३३)। चत्वारि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. धव, २. प्रिय, ३. पति, ४. भर्ता- ये चार नाम पति के हैं।

जारस्तूपपतिः समौ॥३५॥

कृष्णमित्रटीका :- जारयति। 'दारजारौ-' (वा. ३. ३. २०) इति घञ्। उपमितः पत्या। द्वे॥३५॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १.जार, २. उपपतिः- ये दो नाम मुख्य से भिन्न अप्रधान पति (यार) के हैं॥३५॥

अमृते जारजः कुण्डः

कृष्णमित्रटीका :- अमृते पत्यौ जाराज्जातः। कुण्डः। कुण्ड्यते कुलमनेन। 'कुडि दाहे' (भ्वा. आ. से.)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- कुण्ड- यह एक नाम पति के जीवित रहने पर उपपति (यार) से उत्पन्न पुत्र का है।

मृते भर्तरि गोलकः।

कृष्णमित्रटीका :- मृते भर्तरि जाराज्जातो गोलकः। 'गुड रक्षायाम्' (तु. प. से.) घञ् (३. ३. १९)। कन् (५. ४. ५)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- गोलक- यह एक नाम विधवा में जार से उत्पन्न पुत्र का है।

भ्रात्रीयो भ्रातृजः

कृष्णमित्रटीका :- भ्रातुरपत्यम् 'भ्रातुर्व्यच्च' (४. १. १४४) इति छः॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. भ्रात्रीय, २. भ्रातृज- ये दो नाम भ्रातृपुत्र (भतीजे) के हैं।

भ्रातृभगिन्यौ भ्रातरावुभौ॥३६॥

कृष्णमित्रटीका :- स्वसा च भ्राता च 'भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम्' (१. २. ६८) इत्येकशेषः॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१. भ्रातृभगिन्यौ, २. भ्रातरौ- ये दो नाम भाई-बहिन समुदाय के हैं॥३६॥

मातापितरौ पितरौ मातरपितरौ प्रसूजनयितारौ।

कृष्णमित्रटीका :- माता च पिता च। 'आनङृतो द्वन्द्वे' (६. ३. ३५)। 'पिता माता' (१. २. ७०) इत्येकशेषो वा। 'मातरपितरावुदीचाम्' (६. २. ३२) इति निपातः॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. मातापितरौ, २. पितरौ, ३. मातरपितरौ, ४. प्रसूजनयितारौ- ये चार नाम माता और पिता के समुदाय के हैं।

श्वश्रूश्वशुरौ श्वशुरौ

कृष्णमित्रटीका :- श्वश्रूश्च श्वशुरश्च। 'श्वशुरः श्वश्वा' (१. २. ७१) इत्येकशेषः॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१. श्वश्रूश्वशुरौ, २. श्वशुरौ- ये दो नाम सास-ससुर समुदाय के हैं।

पुत्रौ पुत्रश्च दुहिता च॥३७॥

कृष्णमित्रटीका :- पुत्रश्च दुहिता च। 'भ्रातृपुत्रौ-' (१. २. ६८) इत्येकशेषो वा॥३७॥[5]

हिन्दी अर्थ :- पुत्रौ- यह एक नाम पुत्र और कन्या के समुदाय का है॥३७॥

दंपती जंपती जायापती भार्यापती च तौ।

कृष्णमित्रटीका :- जाया ज पतिश्च। राजदन्तादौ (२. २. ३१) पाठाज्जायाशब्दस्य 'दम्-' भाव 'जम्-' भावौ॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१. दम्पती, २. जम्पती, ३. जायापती, ४. भार्यापती- ये चार नाम पति-पत्नी समुदाय के हैं।

---

1. **Relationship and kinsmen** [1 each] 2. **Husband** [4], 3. **A masculine paramour** [2] 4. **The son of a woman by a man other than her husband while the husband is alive** [1] 5. **A widow's bastard** [1]

1. **Nephew** (brother's son) [2] 2. **A brother and a sister** [2],3. **Parents** [4] 4. **Father-in-law and mother-in-law** [2] 5. **Son and daughter** [1] 6. **Married couple** [4]

गर्भाशयो जरायुः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- गर्भ[1] आशतेऽत्र[2]। जरामेति। 'किंजरयोः श्रिणः।' (उ. १. ४) इत्युण्। 'गर्भवेष्टनचर्मणः' द्वे। लोके॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. गर्भाशय, २. जरायु- ये दो नाम गर्भाशय (जिसमें बच्चा लिपटा रहता है उस चर्म) के हैं।

उल्वं च कललोऽस्त्रियाम्॥३८॥

कृष्णमित्रटीका :- उल्लूयते। 'उल्वादयश्च' (उ. ४. ९५) इति साधु। कलं लाति। 'शुक्रशोणितसंपातस्य' द्वे॥३८॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. उल्वम्, २. कललम्- ये दो नाम वीर्य और रक्त समुदाय के हैं॥३८॥

सूतिमासो वैजननः

कृष्णमित्रटीका :- सूतेः प्रसवस्य मासः। विजायतेऽस्मिन्[5]। ल्युडन्तात् (३. ३. ११७) अण्॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. सूतिमास, २. वैजनन- ये दो नाम जन्ममास के हैं।

गर्भो भ्रूण इमौ समौ।

कृष्णमित्रटीका :- 'गृ निगरणे' (तु. प. से.) 'अर्तिगृभ्यां भन्' (उ. ३. १५२)। 'भ्रूण आशाविशङ्कयोः' (चु. आ. से.)। घञ् (३. ३. १९) ॥द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. गर्भ, २. भ्रूण- ये दो नाम उदरस्थ जीव के हैं।

तृतीयाप्रकृतिः शण्ढः क्लीबः पण्डो नपुंसकम्॥३९॥

कृष्णमित्रटीका :- स्त्रीपुंसापेक्षया तृतीया प्रकृतिः प्रकारः। शाम्यति शण्ढः। 'शमेर्ढः' (उ. १. ९९)। 'क्लीबृ अधाष्टर्ये' (भ्वा. आ. से.) 'पडिपशि नाशने' (चु. प. से.)। न स्त्री न पुमान्। पञ्च॥३९॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. तृतीयाप्रकृति, २. शण्ढ, ३. क्लीब, ४. षण्डः अथवा पण्ड, ५. नपुंसकम्- ये पाँच नाम हिजड़ा के हैं।

1. M. गर्भे 2. M. आशेतेत्र 3. **Womb or uterus [2]** 4. **A cover, envelope, esp. the membrane sorrounding the embroyo [2]** 5. M. विजायतेस्मिन् 6. **The month of delivery [2]** 7. **The child in the womb [2]** 8. **An impotent man [5]**

शिशुत्वं शैशवं बाल्यम्

कृष्णमित्रटीका :- शिशोर्भावः। 'इगन्ताच्च लघु-' (५. १. १३१) इत्यण्। बालस्य भावः। ब्राह्मणादिः (५. १. १२४)। त्रीणि॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १.शिशुत्वम्, २. शैशवम्, ३. बाल्यम्- ये तीन नाम बचपन (बाल्यावस्था) के हैं।

तारुण्यं यौवनं समे।

कृष्णमित्रटीका :- यूनो भावः। 'हायनान्त-' (६. ४. १३७) इत्यण्। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १.तारुण्यम्, २. यौवनम्- ये दो नाम जवानी के हैं।

स्यात्स्थाविरं तु वृद्धत्वम्

कृष्णमित्रटीका :- स्थविरस्य भावः। युवादिः (५. १. १३९)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १.स्थविरम्, २. वृद्धत्वम्- ये दो नाम बुढ़ापा के हैं।

वृद्धसंघेऽपि वार्धकम्॥४०॥

कृष्णमित्रटीका :- वृद्धानां संघः। 'वृद्धाच्च' (वा. ४. २. ३९) इति वुञ्। भावकर्मणोस्तु मनोज्ञादित्वात् (५. १. १३३)। ततः स्वार्थे ष्यञि (वा. ५. १. १३३)। ततः स्वार्थे ष्यञि (वा. ५. १. ११४) वार्धक्यम्। द्वे॥४०॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १.वृद्धसंघ, २. वार्धकम्- ये दो नाम वृद्ध समूह के हैं॥४०॥

पलितं जरसा शौक्ल्यं केशादौ

कृष्णमित्रटीका :- 'पल गतौ' (भ्वा. प. से.)। जराहेतुकं केशादौ शुक्लत्वम्। एकम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- पलितम्- यह एक नाम वृद्धावस्था के कारण बाल पकने का है। आदि पद से दाढ़ी मूंछ का भी संग्रह हैं।

विस्रसा जरा।

कृष्णमित्रटीका :- विस्रस्यतेऽनया[6]। भिदादिः (३. ३. १०४)। जीर्यत्यनया। षिदादित्वात् (३. ३. १०४) अङ्। द्वे॥[7]

1. **Childhood [8]** 2. **youth [2]** 3. **Old age [2]** 4. **A collection of old man [2]** 5. **Greyness of hair brought on by old age [1]** 6. M. विश्रस्यातेनयाः 7. **Old age [2]**

हिन्दी अर्थ :- १.विस्रसा, २. जरा- ये दो नाम वृद्धावस्था के हैं।

स्यादुत्तानशया डिम्भा स्तनपा स्तनंधयी॥४१॥

कृष्णमित्रटीका :- उत्ताना शेते। अच् (वा. ३. २. १५)। 'डिभि संघे' (चु. उ. से.)। अच् (३. ३. ५६)। स्तनौ पिबति। आतः कः (३. २. ३)। स्तनं धयति। 'नासिकास्तनयोः-' (३. २. १९) इति खश्[1]। अतिबाला॥४१॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १.उत्तानशया, २. डिम्भा, ३. स्तनपा, ४. स्तनन्धयी- ये चार नाम दूध पीने वाली बालिका के हैं॥४१॥

बालस्तु स्यान्माणवकः

कृष्णमित्रटीका :- बल्यते बालः। मनोरयम्। 'ब्राह्मणमाणव-' (४. २. ४२) इति निपातनाण्णः। 'अल्पे' (५. ३. ८५) इति कः। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १.बाल, २. माणवक ये दो नाम बालक के है।

वयस्यस्तरुणो युवा।

कृष्णमित्रटीका :- वयसि तिष्ठति। तरति। त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १.वयस्य, २. तरुण, ३. युवा- ये तीन नाम नौजवान के हैं।

प्रवया स्थविरो वृद्धो जीनो जीर्णो जरन्नपि॥४२॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रगतं वयोऽस्य[5]। तिष्ठति 'अजिरशिशिर-' (उ. १. ५३) इति निपातः। जिनाति स्म। क्तः। 'ग्रहज्या-' (६. १. १६) इति इत्। हलः (६. ४. २)। 'ल्वादिभ्यश्च' (८. २. ४४)। जीर्यते। क्तः। 'जीर्यतेरतृन्' (३. २. १०४)। षट्॥४२॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रवया, २. स्थविर, ३. वृद्ध, ४. जीन, ५. जीर्ण, ६. जरन्- ये छः नाम वृद्ध के हैं॥४२॥

वर्षीयान् दशमी ज्यायान्

कृष्णमित्रटीका :- अतिशयेन वृद्धः। 'प्रियस्थिर' (६. ४. १५७) इति वर्षादेशः। दशमोऽवस्थाविशेषोऽस्यास्ति[7]। 'वृद्धस्य च' (५. ३. ६२) इतिज्यः। त्रीणि॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. वर्षीयान्, २. दशमी, ३. ज्यायान्- ये तीन नाम अतिवृद्ध के हैं।

पूर्वजस्त्वग्रियोऽग्रजः।

कृष्णमित्रटीका :- 'अग्राद्यत्' (४. ४. ११६)। 'घच्छौ[1] च' (४. ४. ११७)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १.पूर्वज, २. अग्रिम, ३. अग्रज- ये तीन प्रथम उत्पन्न हुए (बड़े भाई अपने से पहले उत्पन्न) के हैं।

अघन्यजे स्युः कनिष्ठयवीयोऽवरजानुजाः॥४३॥

कृष्णमित्रटीका :- जघन्येऽवरकाले जातः। अतिशयेन युवा। 'युवाल्पयोः कनन्यतरस्याम्' (५. ३. ६४)। पक्षे 'स्थूलदूर-' (६. ४. १५६) इति यणादिलोपगुणौ। अवरस्मिन्काले जातः। पञ्च॥४३॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. जघन्यज, २. कनिष्ठ, ३. यवीय, ४. अवरज, ५. अनुज- ये पाँच नाम छोटे भाई के हैं॥४३॥

अमांसो दुर्बलश्छातः

कृष्णमित्रटीका :- न मांसमस्य। दुष्टं बलमस्य। 'छो छेदने[4]' (दि. प. अ.)। क्तः (३. ४. ७२)। छातः। त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. अमांस, २. दुर्बल, ३. छात- ये तीन नाम दुर्बल के हैं।

बलवान्मांसलोऽसलः।

कृष्णमित्रटीका :- अंसोऽस्यास्ति[6]। त्रीणि॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १.बलवान्, २. मांसल, ३. अंसल- ये तीन नाम बलवान् के हैं।

तुन्दिलस्तुन्दिकस्तुन्दी बृहत्कुक्षिः पिचिण्डिलः॥४४॥

कृष्णमित्रटीका :-तुन्दिरस्यास्ति। तुन्दादिभ्य इलच् (५. २. ११७)। 'तुन्दिबलिवटेर्भः' (५. २. १३९)। बृहत्कुक्षिरस्य। अतिशयितं पिचिण्डमुदरमस्य। पञ्च॥४४॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. तुन्दिल, २. तुन्दिक, ३. तुन्दी, ४. बृहत्कुक्षि, ५. पिचण्डिल- ये पाँच नाम बढ़े हुए पेट वाले (तोंदवाले) के हैं।

---

1. M. खच् 2. **A female baby sucking the breast** [4] 3. **Child** [2] 4. **Young man** [3] 5. M. वयोस्य 6. **Old man** [6] 7. M. दशमोवस्थाविशेषोस्यास्ति 8. **Very old man** [3]

1. M. घछौ 2. **Elder brother** [3] 3. **Younger brother** [5] 4. M. च्छेदने 5. **A weak man** [3] 6. M. अंसोस्यास्ति 7. **A fat or strong man** [3] 8. **A man having a protuberant belly** [5]

अवटीटोऽवनाटश्चवभ्रटो नतनासिके।

कृष्णमित्रटीका :- अवनता नासिकाऽस्य[1]। 'नते नासिकायाः संज्ञायां टीटञ्नाटञ्भ्रटचः' (५. २. ३१)। त्रीणि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १.अवटीट, २. अवनाटः, ३. अवभ्रट- ये तीन नाम चिपटी नाक वाले के हैं।

केशवः केशिकः केशी

कृष्णमित्रटीका :-प्रशस्ताः केशा अस्य। 'केशाद्वोऽन्यतरस्याम्[3]' (५. २. १०९)। पक्षे इनिठनौ (५. २. ११५)। त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. केशव, २. केशिक, ३. केशी- ये तीन नाम सुन्दर केश वाले के हैं।

बलिनो बलिभः समौ॥४५॥

कृष्णमित्रटीका :- बलिश्चर्मसंकोचोऽस्यास्ति।[5] पामादित्वान्नः। द्वे॥४५॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. बलिन, २. बलिभ- ये दो नाम जिसके चमड़े में सिकुड़न आ गया हो उसके हैं॥४५॥

विकलाङ्गस्तुपोगण्डः

कृष्णमित्रटीका :- विकलमङ्गमस्य। पुनाति पौः। विच् (३. २. ७५)। स गण्डोऽस्य[7] पोगण्डः। 'स्वभावहीनाधिकाङ्गस्य' द्वे॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १.विकलाङ्ग, २. पोगण्ड- ये दो नाम विकलाङ्ग अर्थात् कम या अधिक अङ्ग वाले के हैं।

खर्वो ह्रस्वश्च वामनः।

कृष्णमित्रटीका :- 'खर्व गतौ' (भ्वा. प. से.) 'ह्रस् शब्दे' (भ्वा. प. से.) उल्वादिः (उ. ४. ९५)। वामयति। नन्द्यादिः (३. १. १३४)॥[9]

हिन्दी अर्थ :- १. खर्व, २. ह्रस्व, ३. वामन- ये तीन नाम बौना के हैं।

खरणाः स्यात्खरणसः

कृष्णमित्रटीका :- खरा तीक्ष्णा खरस्येव नासिकाऽस्य[10]। 'खुराखराभ्यां नस् वा' (वा. ५. ४. ११८)। पक्षे 'अञ् नासिकायाः-' (५. ४. ११८) इत्यच् नसादेशश्च। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. खरणा, २. खरणस- ये दो नाम नुकीली नाक वाले के हैं।

विग्रस्तु गतनासिकः[2]॥४६॥

कृष्णमित्रटीका :- विगता नासिकाऽस्य[3]। 'वेर्ग्रो वक्तव्यः' (वा. ५. १. ११८)॥४६॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. विग्र, २. गतनासिका- ये दो नाम नकटा के हैं॥४६॥

खुरणाः स्यात्खुरणसः

कृष्णमित्रटीका :- खुर इव नासिकाऽस्य[5]। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१. खुरणा, २. खुरणस- ये दो नाम पशुखुर सदृश नाक वाले के हैं।

प्रज्ञुः प्रगतजानुकः।

कृष्णमित्रटीका :- प्रगते वातादिना विरले जानुनी अस्य। 'प्रसंभ्यां जानुनोर्ज्ञुः' (५. ४. १२९)। द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१. प्रज्ञु, २. प्रगतजानुकः- ये दो नाम वातादिरोग ग्रस्त टेढ़ी जङ्घा वाले के हैं।

ऊर्ध्वज्ञुरूर्ध्वजानुः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- ऊर्ध्वे जानुनी अस्य॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १.ऊर्ध्वज्ञु, २. ऊर्ध्वजानु- ये दो नाम बैठने पर जिसकी जङ्घा ऊपर को उठी हों उसके हैं।

संज्ञुः संहतजानुकः॥४७॥

कृष्णमित्रटीका :- संहते जानुनी अस्य॥४७॥[9]

हिन्दी अर्थ :- १. संज्ञु, २. संहतजानुक- ये दो सटी हुई जङ्घा वाले के हैं॥४७॥

स्यादेडे बधिरः

कृष्णमित्रटीका :- आ सर्वत[10]। ईड्यते। बध्यते। 'इषिमदि-' (उ. १. ५१) इति किरच्। द्वे॥[11]

1. M. नासिकास्य 2. **A man having a flat nose** [3] 3. M. केशाद्वोन्यतरस्याम् 4. **A man having fine hair** [3] 5. M. बलिश्चर्मसंकोचोस्यास्ति 6. **A fold of the skin; wrinkle** [2] 7. M. गण्डोस्य 8. **A man having redundant or deficient limb** [2] 9. **A sharp nosed man** [2] 10. M. नासिकास्य

1. **Flat-nosed** [2] 2. **B. reads** गतनासिके 3. M. नासिकास्य 4. **A noseless man** [2] 5. M. नासिकास्य 6. **A person having hoof-like nose** [2] 7. **Bow-legged; bondy-legged** [2] 8. **A man having long shanks** [2] 9. **Knock-kneed** [2] 10. M. सर्वतः 11. **A deaf man** [2]

हिन्दी अर्थ :- १. एड, २. बधिर ये दो नाम कूबड़ा के हैं।

कुब्जे गडुल

कृष्णमित्रटीका :- कु उब्जोऽस्य[1]। 'उब्ज आर्जवे' (तु. प. से.)। शकन्ध्वादिः (वा. ६. १. ९४)। गडुस्यास्ति। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. कुब्ज, २. गडुल- ये दो नाम कूबड़ा के हैं।

कुकरे कुणिः।

कृष्णमित्रटीका :- कुत्सितः, रोगादिना वक्रः करोऽस्य[3]। 'कुण शब्दे' (तु. प. से.)। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १.कुकर, २. कुणि- ये दो नाम रोग से टेढ़े हाथ वाले के हैं।

पृश्निरल्पतनौ

कृष्णमित्रटीका :- पृच्छ्यते पृश्निः। अल्पा तनुरस्य। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. पृश्नि, २. अल्पतनु- ये दो नाम छोटे शरीर वाले के हैं।

श्रोणः पङ्गौ

कृष्णमित्रटीका :- 'श्रोणृ संघाते' (भ्वा. प. से.)। 'पन स्तुतौ' (भ्वा. आ. से.)। बाहुलकाद्गुः। 'जङ्घाहीनस्य' द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. श्रोण, २. पङ्गु- ये दो नाम लंगड़े (जङ्घा रहित) के हैं।

मुण्डस्तु मुण्डिते॥४८॥

कृष्णमित्रटीका :- मुण्ड्यते। 'मुडि खण्डने' (भ्वा. प. से.)। द्वे॥४८॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. मुण्ड, २. मुण्डित- ये दो नाम मुड़े (घुटे) शिर वाले के हैं॥४८॥

वलिरः केकरे

कृष्णमित्रटीका :- 'वल संवरणे' (भ्वा. आ. से.)। बाहुलकात्किरच्। श्वे मूर्ध्नि करोति केकरः। द्वे॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. बलिर, २. केकर- ये दो नाम ऐंचकर देखने वाले के हैं।

खोडे खञ्जः

कृष्णमित्रटीका :- 'खोडृ गतिप्रतिघाते' (भ्वा. प. से.)। 'खजि गतिवैकल्ये' (भ्वा. प. से.)। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. खोड, २. खञ्ज- ये दो नाम लंगड़ा (गति विकल) के हैं।

त्रिषु जरावराः।

जडुलः कालकः पिप्लुः

कृष्णमित्रटीका :- जराशब्दादवरा उत्तानशयाद्यास्त्रिलिङ्गाः। जडति। बाहुलकादुलच्। कालयति। 'कल क्षेपे' चुरादिः। अपि प्लवते। मितद्र्वादिः (वा. ३.२. १८०)। 'लच्छन' लोके॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. जडुल, २. कालक, ३. पिप्लु- ये तीन नाम जन्मकाल से ही उत्पन्न शरीर के चिह्न (लहसन) के हैं।

तिलकस्तिलकालकः॥४९॥

कृष्णमित्रटीका :- तिल इव। कन् (५. ३. ९६)। तिल इव कालकः। द्वे॥४९॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. तिलक, २. तिलकालक- ये दो नाम काली तिल सदृश शरीर के चिह्न के हैं॥४९॥

अनामयं स्यादारोग्यम्

कृष्णमित्रटीका :- आमयस्याभावः। अरोगस्य भावः। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. अनामयम्, २. आरोग्यम्- ये दो नाम रोग रहित (निरोग) के हैं।

चिकित्सा रुक्प्रतिक्रिया।

कृष्णमित्रटीका :- 'कितेर्व्याधिप्रतीकारे' (वा. इति), सन्। रुजः। प्रतिक्रिया निरसनम्। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१. चिकित्सा, २. रुक्प्रतिक्रिया - ये दो नाम चिकित्सा के है।

भेषजौषधभैषज्यान्यगदो जायुरित्यपि॥५०॥

कृष्णमित्रटीका :- भेषं रोगं जयति। 'अन्येभ्योऽपि[6]-' (वा. ३. २. १०१) इति डः। ओषधेरिद-

1. M. उब्जोस्य 2. A crook back [2] 3. M. करोस्य 4. A man having crooked hand [2] 5. A small man [2] 6. A lame man [2] 7. A man with the shaved head [2] 8. A squint-eyed man [2]

1. A Crippled man [2] 2. Freckle [3] 3. Mole [2] 4. Good health [2] 5. Treatment [2] 6. M. अन्येभ्योपि

मोषधम्। भेषजमेव। 'अनन्ता-' (३. ४. २३) इति ज्यः। न गदोऽस्मात्[1]। जयति रोगान्। 'कृवापाजि-' (उ. १. १) इत्युण्। पञ्च॥५०॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. भेषजम्, २. औषधम्, ३. भैषज्यम्, ४. अगद, ५. जायु- ये पाँच नाम औषध (दवा) के हैं॥५०॥

स्त्री रुग्रजा चोपतापरोगव्याधिगदाम्याः।

कृष्णमित्रटीका :- रुजति देहम्। 'रुजो भङ्गे' (तु. प. अ.)। 'इगुपध-' (३. १. १३४) इति कः। रुजा। उपतापयति। घञि रोगः। विविधा आधयोऽस्मात्[3]। गदति गदः। 'अम रोगे' (भ्वा. प. से.)। आमं यात्यनेन। सप्त॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१. रुक्, २. रुजा, ३. उपताप, ४. रोग, ५. व्याधि, ६. गद, ७. आमय- ये सात नाम रोग के हैं।

क्षयः शोषश्च यक्ष्मा च

कृष्णमित्रटीका :- क्षयति देहम्। अच् (३. १. १३४)। शोषयति।यक्षयते। 'यक्ष पूजायाम्' (चु. आ. से.)। मनिन् (उ. ४. १४४)। 'क्षयी' (लोके)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. क्षय, २. शोष, ३. यक्ष्मा- ये तीन नाम राज्यक्ष्मा (टी. बी.) के हैं।

प्रतिश्यायस्तु पीनसः॥५१॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रतिक्षणं श्यायते। 'यश-द्व्यधा-' (३. १. १४१) इति णः। पीनं स्यति। 'नासारोगविशेषस्य' द्वे॥५१॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रतिश्याय, २. पीनस- ये दो नाम पीनस (नाम के) रोग के हैं॥५१॥

स्त्री क्षुत् क्षुतं क्षवः पुंसिः

कृष्णमित्रटीका :- 'टुक्षु शब्दे' (अ. प. से.)। क्विप् (वा. ३. ३. ६४)। क्ते (३. ३. ११४) क्षुतम्। 'ऋदोरप्' (३. ३. ५७)। क्षवः। 'छिक्का' (लोके)॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१. क्षुत्, २. क्षुतम्, ३. क्षव- ये तीन नाम छींक के हैं।

कासस्तु क्षवथुः पुमान्।

कृष्णमित्रटीका :- 'कासृ[1] शब्दकुत्सायाम्' (भ्वा. आ. से.)। 'ट्वितोऽथुच्[2]' (३. ३. ८९) अवथुः। 'खाँसी' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. कास, २. क्षवथु- ये दो नाम कासरोग (खाँसी) के हैं।

शोफस्तु श्वयथुः शोथः

कृष्णमित्रटीका :- 'शव गतौ' (भ्वा. प. से.)। बाहुलकात्फः। थश्च। 'च्छवोः-' (६. ३. १९) इत्यूठ्। 'टुओश्वि-' (भ्वा. प. से.)। 'ट्वितोऽथुच्'[4] (३. ३. ८९)। त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. श्वयथु, २. शोफ, ३. शोथ - ये तीन नाम सूजन के हैं।

पादस्फोटो विपादिका ॥५२॥

कृष्णमित्रटीका :- पादस्य स्फुटनम्। 'स्फुट विकसने' (तु. प. से.)। विपद्यतेऽनया[6] 'पद गतौ' (दि. आ. अ.)। 'रोगाख्यायां ण्वुल्-' (३. ३. १०८)। 'बेवाइ' (लोके)॥५२॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. पादस्फोट, २. विपादिका- ये दो नाम पैर के तलवे में फटने वाले रोग (बिवाय) के हैं॥५२॥

किलाससिध्मे

कृष्णमित्रटीका :- के लसति। सिध्यति सिध्मम्। 'सेंहुआ' (लोके)॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. किलासम्, २.सिध्मन्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम सेंहुआ के हैं।

कच्छ्वां तु पाम पामा विचर्चिका।

कृष्णमित्रटीका :- 'कषेश्छ च' (उ. १. ८४) इत्यूः। पाति देहमस्मात्। मनिन् (उ. ४. १४४)। 'डाबु-भ्याम्-' (४. १. १३)। पामा। विचर्च्यते। 'चर्च अध्ययने' (चु. उ. से.)। रोगे ण्वुल् (३. ३. १०८)। खर्जुभेदः।[9]

हिन्दी अर्थ :-१. कच्छू, २. पाम, ३. पामा, ४. विचिर्चिका- ये एक, तीन, चार, स्त्रीलिङ्ग द्वितीय नपुंसकलिङ्ग नाम खसरा (खुजली) के हैं।

---

1. M. गदोस्मात् 2. **Medicine** [5] 3. M. आधयोस्मात् 4. **Disease** [7] 5. **A pulmonary disease** [3] 6. **A nasal disease** [2] 7. **Sneezing** [3]

1. M. काश 2. M. ट्वितोथुच् 3. **Cough** [2] 4. M. ट्वितोथुच्, 5. **Swelling** [3] 6. M. विपद्यतेनया 7. **Cracking of the feet** [2] 8. **Blotch** [2] 9. **Sca, a sking disease** [4]

खर्जूः कण्डूश्च[1] कण्डूया

कृष्णमित्रटीका :- 'खर्ज मार्जने' (?)। 'कृषिचमि-' (उ. १. ८१) इत्युः। 'कण्डूञ् गात्र-विघर्षणे' (कण्ड्वादिः), 'कण्ड्वादिभ्यो यक्' (३. १. २७)। 'अ प्रत्ययात्' (३. ३. १०२)। 'खाज' (लोके)।।[2]

हिन्दी अर्थ :- १. कण्डू, २. कण्डवा, ३. खर्जू- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम खुजलाहट के हैं।

विस्फोटः पिटकस्त्रिषु ।।५३।।

कृष्णमित्रटीका :- 'स्फुटिर् विशरणे' (भ्वा. प. से.)। 'पिट शब्दसंघातयोः' (भ्वा. प. से.)। द्वे।।५३।।[3]

हिन्दी अर्थ :- १. विस्फोट, २. पिटक- ये दो पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग नाम फोड़ा के हैं।।५३।।

व्रणोऽस्त्रियामीर्ममरुः क्लीबे

कृष्णमित्रटीका :- 'व्रण शब्दे' (भ्वा. प. से.)। ईर गतौ' (अ. आ. से.)। बाहुलकान्मन्। 'ऋ गतौ' (जु. प. अ.)। 'अर्तिपृवपि-' (उ. २. ११७) इत्युस्। 'घाव' (लोके)।।[4]

हिन्दी अर्थ :- १. व्रण, २. इर्मम्, ३. अरु- ये तीन नाम क्रम से एक पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग, दो-तीन नपुंसकलिङ्ग घाव के हैं।

नाडीव्रणः पुमान्।

कृष्णमित्रटीका :- नाड्यां व्रणः। सदा प्रस्रवतो व्रणस्य। 'नसूर' लोके।।[5]

हिन्दी अर्थ :- नाडीव्रण- यह एक पुल्लिङ्ग नाम हमेशा पीव निकलने वाले घाव (नासूर) का हैं।

कोठो मण्डलम्

कृष्णमित्रटीका :- 'कुठि प्रतिघाते' (भ्वा. प. से.)। अच् (३. १. १३४) आगमस्यानित्यत्वान्न नुम्। मण्डलमिव। 'मण्डलाकारकुष्ठस्य' द्वे।।[6]

हिन्दी अर्थ :- १. कोठ, २. मण्डलकम्- ये दो नाम क्रम से एक पुल्लिङ्ग एक नपुंसकलिङ्ग जिससे शरीर में चकत्ते पड़ जायँ ऐसे गजकर्ण रोग के हैं।

कुष्ठश्वित्रे

1. Majority reads कण्डूः खर्जूश्च 2. Itch [3] 3. Pimple [2] 4. Wound [3] 5. Ulcer [1] 6. Leprosy with round spots [2]

कृष्णमित्रटीका :- 'हनिकुषि-' (उ. २. २) इति क्थन्। श्वेतते। 'श्विता वर्णे' (भ्वा. आ. से.)। 'स्फायि-' (उ. २. १३) इति रक्। 'श्वेतकुष्ठस्य' द्वे।।[1]

हिन्दी अर्थ :- १.कुष्ठम्, २. श्वित्रम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम सफेद कोढ़ के हैं।

दुर्नामकार्शसी ।।५४।।

कृष्णमित्रटीका :- दुष्टं नामास्य। इयर्त्यर्शः। 'अर्तेर्व्याधौ शुट् च' (उ. ४. १९५) इत्यसुन्। ववासीर (लोके)।।५४।।[2]

हिन्दी अर्थ :- १. दुर्नामकम्, २. अर्श- ये दो नाम बवासीर के हैं।।५४।।

आनाहस्तु विबन्धः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- आनहनम्। 'णह बन्धने' (दि. उ. अ.)। 'बन्ध बन्धने' (क्र्या. प. अ.)। 'आध्मानस्य' द्वे।।[3]

हिन्दी अर्थ :- १. आनाह, २. निबन्ध- ये दो पुल्लिङ्ग नाम जिसमें टट्टी पेशाब बन्द हो जाय उस रोग के वाचक हैं।

ग्रहणी रुक् प्रवाहिका।

कृष्णमित्रटीका :- गृह्यतेऽग्निरनया[4]। प्रवहति। वण्वुल् (३. १. १३३)। प्रवाहिका। रुक रोगः। 'ग्रहणी' (इति ख्याता)।।[5]

हिन्दी अर्थ :- १. ग्रहणी, २. प्रवाहिका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम संग्रहणी के हैं।

प्रच्छर्दिका वमिश्च स्त्री पुमांस्तु वमथुः समाः ।।५५।।

कृष्णमित्रटीका :- 'छर्द वमने' (चु. प. से.)। 'टुवम उद्‌गिरणे' (भ्वा. प. से.) 'इक् कृष्यादिभ्यः' (वा. ३. ३. १०८)। 'वमन' (लोके)।।५५।।[6]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रच्छर्दिका, २. वमि, ३. वमथु- ये तीन नाम क्रम से कय (उल्टी) के हैं।।५५।।

व्याधिभेदा विदधिः स्त्री ज्वरमेहभगंदराः।
'शलीपदं पादवल्मकं केशघ्नस्त्विलुप्तकः' ।।प्र.।।
अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात्पूर्वे शुक्रावधेस्त्रिषु ।।५६।।[7]

1. White lepros [2] 2. Piles [2] 3. Constipation [2] 4. M. गृह्यतेग्निरनया 5. Diarrhoea [2] 6. Vomitting [4] 7. This verse remains unexplained in the manuscript, The copyist might have missed the commentary of the verse due to oversight. Seven kinds of disease [1 each]

रोगहार्यगदंकारो भिषग्वैद्यौ चिकित्सके।

कृष्णमित्रटीका :- रोगं हरति। णिनिः (३. २. ७८)। अगदमरोगं करोति। विद्यामधीते। चिकित्सति॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. विद्रधि, २. ज्वर, ३. मेह, ४. भगन्दर- ये चार नाम उदर आदि मुलायम स्थान में होने वाले फोड़ा, ज्वर, प्रमेह और भगन्दर के क्रम से हैं।

१. शलीपदम्, २. पादवल्मीकम् (नपुल्लिङ्ग)- ये दो प्रक्षिप्त नाम पीलपांव अर्थात् जिसमें घुटने के नीचे का हिस्सा फूलकर मोटा हो जाये उस रोग विशेष के हैं।

१. अश्मरी, २. मूत्रकृच्छ्रम्- ये दो नाम पेशाब में कष्ट उत्पन्न करने वाले रोग (कृच्छ्र) के हैं॥५६॥

१. रोगहारी, २. अगदङ्कार, ३. भिषक्, ४. वैद्य, ५. चिकित्सक- ये पाँच नाम वैद्य, डॉक्टर, हकीम आदि (दवा देने वाले) के हैं।

वार्तो निरामयः कल्य उल्लाघोनिर्गतो गदात्॥५७॥

कृष्णमित्रटीका :- वृत्तिरस्यास्ति। 'वृत्तेश्च' (वा. ५. २. १०१) इति णः। निर्गत आमयात्। कलासु साधुः। 'तत्र साधुः' (४. ४. ९८) इति यत्। 'लाघृ सामर्थ्ये' (भ्वा. आ. से.)। 'अनुपसर्गात्फुल्ल-' (८. २. ५५) इति साधुः। चत्वारि॥५७॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. वार्त, २. निरामय, ३. कल्य, ४. उल्लाघ- ये चार नाम रोग रहित (नीरोग) के हैं॥५७॥

ग्लानग्लास्नू

कृष्णमित्रटीका :- ग्लायते स्म ग्लानः। 'संयोगादेः-' (८. २. ४३) इति निष्ठानः। 'ग्लाजिस्थ ग्स्नुः' (३. २. १३९)। 'रोगेण क्षीणस्य' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. ग्लान, २. ग्लास्नु- ये दो नाम रोग से क्षीण के हैं।

आमयावी विकृतोव्याधितोऽपटुः।
आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तः

कृष्णमित्रटीका :- आमयोऽस्यास्ति[4]। 'आमयस्य दीर्घश्च' (वा. ५. २. १२२) इति विनिः। व्याधिः संजातोऽस्य[5]। आतोतोर्ति। 'तुर त्वर त्वरणे' 'छान्दसाः क्वचिद्भाषायाम्' 'अम रोगे' (चुरा. उ. से.)। चुरादिणिचोर्वैकल्पिकत्वाद्वेट्। सप्त॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१. आमयावी, २. विकृत, ३. व्याधित, ४. अपटु (पटोरन्यः, ६), ५. आतुर, ६. अभ्यमित, ७. अभ्यान्त- ये सात नाम व्याधिग्रस्त (रोगी) के हैं।

समौ पामनकच्छुरौ॥५८॥

कृष्णमित्रटीका :- पामाऽस्यास्ति[2]। कच्छुरस्यास्ति॥५८॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. पामन, २. कच्छुर- ये दो नाम खसरा या गीली खुजली के रोगी के हैं॥५८॥

दर्द्रुणो दर्द्रुरोगी स्यात्

कृष्णमित्रटीका :-दर्द्रुरस्यास्ति। 'शाकीपलाशीदर्द्रूणां ह्रस्वश्च' (५. २. १००)। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. दर्द्रुण, २. दद्रुरोगी- ये दो नाम दाद के रोगी के हैं।

अर्शोरोगयुतोऽर्शसः।

कृष्णमित्रटीका :- अर्शोसि सन्त्यस्य। 'अर्श-आदिभ्यः-' (५. २. १२७) अच्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. अर्शोरोगयुत, २. अर्शस- ये दो नाम बवासीर रोगी के हैं।

वातकी वातरोगी स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- 'वातातीसाराभ्यां कुक् च' (५. २. १२९)॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१. वातकी, २. वातरोगी- ये दो नाम वातरोगी के हैं।

सातिसारोऽतिसारकी॥५९॥

कृष्णमित्रटीका :-(स्पष्टम्)॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १.सातिसार, २. अतिसारकी- ये दो नाम अतिसार-रोगी के हैं॥५९॥

स्युः क्लिन्नाक्षे चुल्लचिल्लिपल्लाः क्लिन्नेऽक्ष्णि चाप्यमी।

---

1. **Physician** [5] 2. **A man recovered from sickness** [3] 3. **A languid man** [2] 4. M. आमयोस्यास्ति 5. M. संजातोस्य

1. **A diseased man** [7] 2. M. पामास्यास्ति 3. **A scabby man** [2] 4. **A person suffering from ringworm** [2] 5. **A person afflicted with piles** [1] 6. **A gouty man** [2] 7. **A person suffering for diarrhoea** [2]

कृष्णमित्रटीका :- क्लिने चक्षुषी अस्य। क्लिन्नस्य चुल् चिल्, पिलो लश्च। पुरुषश्चक्षुश्च। चोंधर (लोके)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. क्लिन्नाक्ष(नपुंसकलिङ्ग), २. चुल्ल(नपुंसकलिङ्ग), ३. चिल्ल (नपुंसकलिङ्ग), ४. पिल्ल (नपुंसकलिङ्ग)- ये चार नाम कीचर से युक्त नेत्र वाले के हैं।

उन्मत उन्मादवति

कृष्णमित्रटीका :- उन्मादोऽस्ति[2]। 'वातकृत-चित्ताविभ्रमस्य' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १.उन्मत्त, २. उन्मादवान्- ये दो नाम उन्माद के रोगी या पागल के हैं।

श्लेष्मलः श्लेष्मणः कफी॥६०॥

कृष्णमित्रटीका :- श्लेष्माऽस्यास्ति[4]। 'सिध्मा-दिभ्यश्च' (५. २. ९७) इति लच्। पासादित्वात् (५. २. १०) नः। कफोऽस्यास्ति[5]। त्रीणि॥६०॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. श्लेष्मल, २.श्लेषमण, ३. कफी- ये तीन नाम कफ वाले रोगी के हैं॥६०॥

न्युब्जो भुग्ने रुजा

कृष्णमित्रटीका :- 'उब्ज आर्जवे' (तु. प. से.)। 'भुजन्युब्जौ-' (७. ३. ३१) इति साधुः। भुग्नः कुब्जः। वक्रपृष्ठः। द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- न्युब्ज- यह एक नाम रोग से हुये कुबड़ा का है।

वृद्धनाभौ तुन्दिलतुण्डिभौ[8]।

कृष्णमित्रटीका :- रोगेण उन्नता नाभिरस्य। 'तुन्दिबलिवटेर्भः' (५. २. १३९)। सिध्मादित्वात् (५. २. ९६) लच्। त्रीणि॥[9]

हिन्दी अर्थ :- १. वृद्धनाभि, २. तुण्डिभ, ३. तुण्डिल- ये तीन नाम रोग के कारण बढ़े हुए नाभी वाले (बोढ़र, ढोंढर) के हैं।

किलासी सिध्मलः

1. A blear-eyed man [4] A blear eye [3] 2. M. उन्मादोस्ति 3. A lunatic man [2] 4. M. श्लेष्मास्यास्ति 5. M. कफोस्यास्ति 6. A person affected with excess of phlegm [3] 7. A hump-backed man (because of illness) [2] 8. B. perfers तुण्डिभतुण्डिलौ 9. A person having a protuberant navel [2]

कृष्णमित्रटीका :- किलासमस्यास्ति। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. किलासी, २. सिध्मल- ये दो नाम मूर्छा (मिर्गी) वाले के हैं।

अन्धोऽदृक्

कृष्णमित्रटीका :- अन्धयति। 'अन्ध दृष्ट्यु-पघाते' (चु. उ. से.)। नास्ति दृगस्य। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. अन्ध, २. अदृक्- ये दो नाम सूर (अन्धा) के हैं।

मूर्च्छाले मूर्तमूर्च्छितौ॥६१॥

कृष्णमित्रटीका :- मूर्च्छाऽस्यास्ति[3]। मूर्च्छतेः क्ते (३. ४. ७२) 'राल्लोपः' (३. ४. २१)। मूर्च्छा जाताऽस्य॥६१॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. मूर्च्छाल, २. मूर्त, ३. मूर्च्छित- ये तीन नाम मूर्च्छा (मिर्गी) रोग वाले के हैं॥६१॥

शुक्र तेजो रेतसी च बीजवीर्येन्द्रियाणि च॥

कृष्णमित्रटीका :- शोचत्यनेन। तेजयति। 'तिज निशाने' (भ्वा. आ. से.)। असुन् (उ. ४. १८८) 'री गत्यादौ' (क्र्या. प. अ.)। 'स्रुरीभ्यां तुट् च' (उ. ४. २०१) विशेषेण ईजते। 'ईज गत्यादौ[5]' (भ्वा. आ. से.)। वीरे साधु। इन्द्रस्यात्मनो लिङ्गम्। 'इन्द्रियमिन्द्रलिङ्ग-' (५. २. ९३) इति साधु। षट्॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. शुक्रम्, २. तेज, ३. रेत, ४. बीजम्, ५. वीर्यम्, ६. इन्द्रियम्- ये छः नाम मनुष्य के शरीर में स्थित स्निग्ध तथा सफेद वर्ण की धातु (वीर्य) के हैं।

मायुः पित्तम्

कृष्णमित्रटीका :- मिनोति ऊष्माणम्। 'डुमिञ् प्रक्षेपे' (स्वा. उ. अ.)। 'कृवापा-' (उ. १. १) इत्युण्। पतति पित्तम्। द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १.मायु, २. पित्तम्- ये दो नाम पित्त के हैं।

कफः श्लेष्मा

कृष्णमित्रटीका :- के जले फलति। श्लिष्यति। मनिन् (उ. ४. १४४)। द्वे॥[8]

1. A man having blotches [2] 2. Blind [2] 3. M. मूर्छास्यास्ति 4. M. जातास्य 5. A person fainted [2] 6. Semen virile [6] 7. Bile [2] 8. Phlegm [2]

हिन्दी अर्थ :- १. कफ, २. श्लेष्मा- ये दो नाम कफ के हैं।

स्यिां तु त्वगसृग्धरा॥६२॥

कृष्णमित्रटीका :- त्वचित। 'त्वच संवरणे' (तु. प. से.)। असृजो रक्तस्य धरा। द्वे॥६२॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १.त्वक्, २. असृग्धरा- ये दो नाम चमड़ी के हैं॥६२॥

पिशितं तरसं मांसं पललं क्रव्यमामिषम्।

कृष्णमित्रटीका :- 'पिश अवश्वे' (तु. प. से.)। क्तः (३. २. १०२)। तरो बलमस्यास्ति मनेर्दीर्घश्च' (उ. ३. ६४) इति सः। 'क्रुङ् गतौ' (भ्वा. आ. अ.)। "अचो यत्" (३. १. ६७)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. पिशितम्, २. तरसम्, ३. मांसम्, ४. पललम्, ५. क्रव्यम्, ६. आमिषम् (नपुल्लिङ्ग)- ये छः नाम मांस के हैं।

उत्तप्तं शुष्कमांसं स्यात्तद्वल्लूरं त्रिलिङ्गकम्॥६३॥

कृष्णमित्रटीका :- उत्तप्यते स्म। 'वल्ल संवरणे' (भ्वा. आ. से.)। खर्जादित्वात् (उ. ४. ९०) ऊरः। त्रीणि॥६३॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. उत्तपतम्, २. शुष्कमांसम्, ३. वल्लूरम्- ये तीन नाम सूखे मांस के हैं॥६३॥

रुधिरेऽसृग्लोहितास्रक्तक्षतजशोणितम्।

कृष्णमित्रटीका :- रुणद्धि। 'इषिमदि-' (उ. १. ५१) इति किरच्। अस्यतेः (दि. प. से.) बाहुलकाट्टजः। अस्यते। रक्। अस्रम्। रञ्जेः (भ्वा. उ. अ.) क्ते (३. २. १०२) रक्तम्। क्षताज्जातम् 'शोणृ वर्णे' (भ्वा. प. से.)। सप्त॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. रुधिरम्, २. असृक्, ३. लोहितम्, ४. अस्त्रम्, ५. रक्तम्, ६. क्षतजम्, ७. शोणितम्- ये सात नाम रक्त (खून) के हैं।

बुक्काऽग्रमांसम्

कृष्णमित्रटीका :- 'बुक्कभषणे' (भ्वा. प. से.)। घञ् (३. ३. १९)। अग्रं मुख्यं हृदयान्तर्गतं मांसम्। द्वे॥[5]

1. **Skin** [2] 2. **Flash** [6] 3. **Dried flesh or meat** [3] 4. **Blood** [7] 5. **Flesh in the heart** [2]

हिन्दी अर्थ :- १. बुक्का, २. अग्रमांसम्- ये दो नाम कलेजा (हृदय) के हैं।

हृदयं हृत्

कृष्णमित्रटीका :- ह्रियते[1] हृत। हृच्च तदपरं च॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. हृदयम्, २. हृत्- ये दो नाम हृदय के हैं।

मेदस्तु वपा वसा॥६४॥

कृष्णमित्रटीका :- 'ञिमिदा-' (दि. प. से.)। असुन् (उ. ४. १८८)। 'डुवप्-' (भ्वा. उ. अ.)। भिदाद्यङ् (३. ३. १०४)। वसति वसा। 'मां सस्नेहस्य' त्रीणि॥६४॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. मेद, २. वपा, ३. वसा- ये तीन नाम चर्बी के हैं॥६४॥

पश्चाद्ग्रीवा शिरा[4]मन्या

कृष्णमित्रटीका :- पश्चाद्भागे ग्रीवायाः शिरा। मन्या। मनेः क्यप् (३. ३. ९९)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- मन्या- यह एक नाम ग्रीवा (गर्दन) के पीछे वाली नस का है।

नाडी तु धमनिः सिरा।

कृष्णमित्रटीका :- 'नड भ्रंशे' चुरादेः 'अच इः' (उ. ४. १३८)। 'धमेः' सौत्रात् 'अर्तिसृधृ-' (उ. २. १०२) इति अनिः। 'षिञ् बन्धने' (स्वा. उ. अ.)। रक्। 'शिञ् निशाने' (स्वा. उ. अ.) इत्यस्य वा त्रीणि॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. नाड़ी, २. धमनि, ३. सिरा- ये तीन नाम नस के हैं।

तिलकं क्लोम

कृष्णमित्रटीका :- 'तिल स्नेहने' (तु. प. से.)। 'प्लुङ् गतौ' (भ्वा. आ. अ.)। मनिन् (उ. ४. १४४)। 'उदर्यजलाधारस्य' द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. तिलकम्, २. क्लोम- ये दो नाम उदर में पानी रहने के स्थान के हैं।

मस्तिष्कं गोर्दम्

1. M. हृदते 2. **Heart** [2] 3. **Fat** [2] 4. **B. and K. read** सिरा 5. **The muscle in the back of the neck** [1] 6. Any **tubular vessel of the body** [3] 7. **Lungs** [2]

कृष्णमित्रटीका :- मस्यति तिकति च। 'गुर्द परिवेष्टने' (?)। 'गुर्दा' (लोके)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. मस्तिष्कम्, २. गोर्दम्- ये दो नाम मस्तिष्क (दिमाग) के हैं।

किट्टं मलोऽस्त्रियाम्॥६५॥

कृष्णमित्रटीका :- केटति किट्टम्। मलते धारयति। 'कीटी' (लोके)॥६५॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. किट्टम् (नपुंसकलिङ्ग), २. मलम् (नपुंसकलिङ्ग)-ये दो नाम नाक-कान के मल के हैं॥६५॥

अन्त्रं पुरीतत्

कृष्णमित्रटीका :- 'अम गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'सर्वधातुभ्यः ष्ट्रन्' (उ. ४. १५८)। पुरीं तनोति। द्वे। 'आँती' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. अन्त्रम् (नपुंसकलिङ्ग), २. पुरीतत् (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम आंत के हैं।

गुल्मस्तु प्लीहा पुंसि

कृष्णमित्रटीका :- गुड्यते रक्ष्यतेऽस्मात्[4]। मक्। 'प्लिह गतौ' (भ्वा. आ. से.)। 'श्वन्नुक्षन्-' (उ. १. १६०) इति साधु। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. गुल्म (पुल्लिङ्ग), २. प्लीहा (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम हृदय के बायीं तरफ होने वाले गुल्म रोग के हैं।

अथ वस्नसा।

स्नायुः स्त्रियाम्

कृष्णमित्रटीका :- वस्ते, आच्छादयति वस्नम्। 'धापृ-' (उ. ३. ६) इति नः। वस्नं मूल्यं स्यति। स्नाति स्नायुः। बाहुलकादुण्॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. वस्नसा (स्त्रीलिङ्ग), २. स्नायु (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम प्रत्येक अङ्ग के सन्धि की नस के हैं।

कालखण्डयकृती तु समे इमे॥६६॥

कृष्णमित्रटीका :- कालं च तत्खण्डं च। यमं करोति यकृत्। 'कुक्षिदक्षिणपार्श्वे यकृत्, वामपार्श्वे प्लीहा' इति वैद्याः। 'वरवटि' लोके॥६६॥[7]

1. Brain [2] 2. Secretion [2] 3. Entrail [2] 4. M. रक्ष्यतेस्मात् 5. Spleen [2] 6. Nerve or tendon [2] 7. Liver [2]

हिन्दी अर्थ :- १. कालखण्डम् (नपुंसकलिङ्ग), २. यकृत् (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम हृदय के दाहिनी ओर होने वाले यकृत (मांस पिण्ड) के हैं॥६६॥

सृणिका स्यन्दिनी लाला

कृष्णमित्रटीका :- 'सृवृषिभ्यां कित्' (उ. ४. ४९) इति निः। स्यन्दते। णिनिः (३. १. १७०)। लालयते। 'लल ईप्सायाम्' (चुरादिः)। 'लार' (लोके)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. सृणिका (स्त्रीलिङ्ग), २. स्यन्दिनी (स्त्रीलिङ्ग), ३. लाला (स्त्रीलिङ्ग)- ये तीन नाम लार (सोते समय मुंह से निकलने वाला थूक) के हैं।

दूषिका नेत्रयोर्मलम्।

नासामलं तु सिङ्घाणं पिञ्जूषं कर्णयोर्मलम्॥प्र.॥

कृष्णमित्रटीका :- दूषयति। 'दोषो णौ' (६. ४. ९०) इत्यूत्वम्। 'कीचर' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- दूषिका (स्त्रीलिङ्ग)- यह एक नाम नेत्र कीचर (मैल) का है।

१. नासामलम्, २. सिङ्घाणम्- ये दो प्रक्षिप्त नाम मैल के हैं।

पिञ्जूषं- यह एक प्रक्षिप्त नाम कान के मैल का हैं।

मूत्रं प्रस्रावः

कृष्णमित्रटीका :- 'मूत्र प्रस्रवणे' (चु. उ. से.)। स्रूयते स्रावः। 'स्रु प्रस्रवणे' (भ्वा. प. अ.)। 'प्रे द्रुस्तु-' (३. ३. २७) इति घञ्। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. मूत्रम्, २. प्रस्राव (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम लघुशंका (पेशाब) के हैं।

उच्चारावस्करौ शमलं शकृत्॥६७॥

पुरीषं गूथं[4] वर्चस्कमस्त्री विष्ठाविशौ (षौ) स्त्रियौ।

कृष्णमित्रटीका :- उच्चार्यते त्यज्यते। अवकीर्यते। 'वर्चस्केऽवस्करः[5]' (६. १. १४८) इति साधुः। 'शकिशम्योर्नित्' (उ. १. ११२) इति कलः। 'शकेर्ऋृतिन्' (उ. ४. ५८)॥६७॥ पिपर्ति पुरीषम्। शृपृभ्यां किच्च' (उ. ४. २७) इतीषन्। गूयते। 'गुङ् गतौ' (?)। 'तिथपृष्ठ-' (उ. २. १२) इति साधुः। कुत्सितं वर्चः।

1. Saliva [3] 2. Secretion of eyes [1] 3. Urine [2] 4. B. reads गूथं पुरीषम् 5. M. वर्चस्केवस्करः

वितिष्ठतेऽनया[1] आतः कः (३. १. १३६)। विशति विट्। क्विप् (३. ३. ९४)॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१. उच्चार (पुल्लिङ्ग), २. अवस्कारः (पुल्लिङ्ग), ३. शमलम् (नपुंसकलिङ्ग), ४. शकृत् (नपुंसकलिङ्ग)॥६७॥, ५. गूथम् (नपुंसकलिङ्ग), ६. पुरीषम् (पुल्लिङ्ग), ७. वर्चस्कम् (पुल्लिङ्ग), ८. विष्ठा (स्त्रीलिङ्ग), ९. विट् (स्त्रीलिङ्ग)- ये नौ नाम टट्टी (पाखाना) के हैं।

स्यात्कर्परः कपालोऽस्त्री

कृष्णमित्रटीका :- कल्पते कर्पः। तं राति। कं पालयति। 'कपार' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. कर्पर (पुल्लिङ्ग), २. कपाल (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम कपाल के हैं।

कीकसंकुल्यमस्थि च॥६८॥

कृष्णमित्रटीका :- 'कि' इति कसति। 'कस गतौ' (भ्वा. प. से.)। कुले भवम्। 'असिसञ्जियां क्थिन्' (उ. ३. १५४)। त्रीणि। 'हाड़' (लोके)॥६८॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. कीकसम् (नपुंसकलिङ्ग), २. कुल्यम् (नपुंसकलिङ्ग), ३. अस्थि (नपुंसकलिङ्ग)- ये तीन नाम हड्डी के हैं॥६८॥

स्याच्छरीणस्थिन कङ्कालः

कृष्णमित्रटीका :- कं कालयति। 'कल क्षेपे' (चु. प. से.)। 'त्वङ्मांसरहितशरीरास्थिनः' एकम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. कङ्काल (पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम ठठरी (कङ्काल) का है।

पृष्ठस्थिन तु कशेरुका।

कृष्णमित्रटीका :- 'कश शब्द' (?) बाहुलकादेरुः। 'पृष्ठवंशस्य' एकम्॥[6]

हिन्दी अर्थ :- कशेरुका (स्त्रीलिङ्ग)- यह एक नाम पीठ के मध्य भाग की हड्डी (रीढ़) का है।

शिरोस्थनि करोटिः स्त्री

कृष्णमित्रटीका :- कं रोटते। 'रुट् दीप्तौ' (भ्वा. आ. से.)॥[7]

1. M. वितिष्ठतेनया 2. **Excrement** [9] 3. **Skull** [2] 4. **Bone** [3] 5. **Skeleton** [1] 6. **Back-bone** [1] 7. **Skull-bone** [1]

हिन्दी अर्थ :- करोटि (स्त्रीलिङ्ग)- यह एक नाम खोपड़ी का है।

पार्श्वास्थनि तु पर्शुका॥६९॥

कृष्णमित्रटीका :- परं शृणाति। 'अङ्परयोः खनिशृभ्यां डिच्च' (उ. १. ३३) इति कुः॥६९॥[1]

हिन्दी अर्थ :- पर्शुका (स्त्रीलिङ्ग)- यह एक नाम पंजड़ी का है॥६९॥

अङ्गं प्रतीकोऽवयवोऽपघन

कृष्णमित्रटीका :- अङ्गति। 'अगि गतौ' (भ्वा. प.से.)। प्रत्येति प्रतीकः। 'अलीकादयश्च' (उ. ४. २५) इति साधुः। अव यौति। 'यु मिश्रणे' (अ. प. अ.)। अच् (३. १. १३४)। अपहन्यते। 'अपघनोऽङ्गम्'[2] (३. ३. ८१) इति साधुः। चत्वारि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. अङ्गम् (नपुंसकलिङ्ग), २. प्रतीक (पुल्लिङ्ग), ३. अवयव (पुल्लिङ्ग), ४. अपघन (पुल्लिङ्ग)- ये चार नाम शरीर के अवयव (अङ्ग) के हैं।

अथ कलेवरम्।

गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः॥७०॥

कायो देहः क्लीबपुंसोः स्त्रियां मूर्तिस्तनुस्तनूः।

कृष्णमित्रटीका :-कले वरं श्रेष्ठम्। एति गात्रम्। ष्ट्रुनि (उ. ४. १५८)। 'बहुलं तनि' (?) इति गा। 'डुवप्'। 'अर्तिनृवपि-' (उ. २. ११७) इत्युसिः। संहन्यन्तेऽस्मिन्[4]। शरिण ईरयति। वर्षति। मनिन् (उ. ४. १४४)। विगृह्यते॥७०॥ चीयते कायः। चिञो (स्वा. उ. अ.) घञ् (३. ३. ४१)। चस्य कः। दिह्यते। घञ् (३. ३. १९)। मुर्छा (भ्वा. प. से.)। क्तिच् (३. ३. १७४)। 'राल्लोपः' (६. ४. २१)। तन्यते। 'भृमृशि-' (उ. १. ६) इत्युः। 'प्राणिजातेः' (?) इत्यूङ, तनूः[5]॥

हिन्दी अर्थ :- १. कलेवरम् (नपुंसकलिङ्ग), २. गात्रम् (नपुंसकलिङ्ग), ३. वपु (नपुंसकलिङ्ग), ४. संहननम् (नपुंसकलिङ्ग), ५. शरीरम् (नपुंसकलिङ्ग), ६. वर्ष्म (नपुंसकलिङ्ग), ७. विग्रह (पुल्लिङ्ग)॥७०॥, ८. काय (पुल्लिङ्ग), ९. देह (नपुंसकलिङ्ग), १०. मूर्ति (स्त्रीलिङ्ग), ११. तनु (स्त्रीलिङ्ग), १२. तनू (स्त्रीलिङ्ग) - ये बारह नाम शरीर के हैं।

1. **Rib** [1] 2. M. अपघनोङ्गम् 3. **Limb** [4] 4. M. संहन्यतेस्मिन् 5. **Body** [12]

पादाग्रं पदम्

कृष्णमित्रटीका :- पादस्याग्रम्। प्रगतं पदम्[1]॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. पादाग्रम् (नपुंसकलिङ्ग), २. प्रपदम् (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम पैर के अग्रभाग (पञ्जा) के हैं।

पादःपदंघ्रिश्चरणोऽस्त्रियाम् ॥७१॥

कृष्णमित्रटीका :- घञ् (३. ३. १६)। पादः। पद्यतेः क्विप् (३. ३. ९४)। 'पदोऽङ्घ्रिः' इति स्वामी। 'पदन्निति पदादेशः' इत्यन्ये। अंहत्यङ्घ्रिः। 'वंक्रपादयश्च' (उ. ४. ६६) इति साधु। चरन्त्यनेन। चत्वारि॥७१॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १.पाद (पुल्लिङ्ग), २. पत् (पुल्लिङ्ग), ३. अङ्घ्रिः (पुल्लिङ्ग), ४. चरण (नपुंसकलिङ्ग)- ये चार नाम पैर के हैं।॥७१॥

तद्ग्रन्थी घुटिके गुल्फौ

कृष्णमित्रटीका :- तस्य पादस्य ग्रन्थी। घोटतेऽनया[4]। गल्यते गुल्फः। 'गल अदने' (भ्वा. प. से.)। 'कलिगलिभ्यां फगस्योच्च' (उ. ५. २६) इति वा। 'घूटा' (लोके)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. घुटिका (स्त्रीलिङ्ग), २. गुल्फ (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम चरण की घुट्टी के हैं।

पुमान्पार्ष्णिस्तयोरधः।

कृष्णमित्रटीका :-तयोर्गुल्फयोरधः। पृष्यते। 'पृषु सेचने' (भ्वा. प. से.)। 'घृणिपृश्निपार्ष्णि-' (उ. ४. ५२) इति साधुः। 'पादपश्चाद्भागस्य' एकम्॥[6]

हिन्दी अर्थ :- पार्ष्णि (पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम पैर के अधोभाग (घुट्टी के नीचे वाले हिस्से) का है।

जङ्घा तु प्रसृता

कृष्णमित्रटीका :- जङ्घन्यते। हन्तेर्यङ्लुगन्तात् 'अन्येभ्योऽपि' (वा. ३. २. ४८) डः। प्रसरति स्म। द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. जङ्घा (स्त्रीलिङ्ग), २. प्रसृता (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम जंघा के हैं।

जानूरूपर्वाष्ठीवदस्त्रियाम् ॥७२॥

कृष्णमित्रटीका :- 'दृसनिजनि-' (उ. १. ३) इति युण्। ऊर्णूयते। 'ऊर्णोतेर्नुलोपश्च' (उ. १. ३०) इति कुः। उरोः[1] पर्वः। अति शयितमस्थि यस्मिन्। 'आसन्दीवदष्ठीवत्-' (८. २. १२) इति साधुः। जङ्घोर्ध्वभागो जानु। त्रीणि॥७२॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. जानू (नपुंसकलिङ्ग), २. ऊरूपर्व (नपुंसकलिङ्ग), ३. अष्ठीवत् (पुल्लिङ्ग)- ये तीन नाम घुटना के हैं॥७२॥

सक्थि क्लीबे पुमानूरुः

कृष्णमित्रटीका :-'षज्ज सङ्गे' (भ्वा. प. अ.)। 'असिसञ्जिभ्यां क्थिन्' (उ. ३. १५४)। 'जानूपरिभागस्य' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१. सक्थि (नपुंसकलिङ्ग), २. ऊरु (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम घुटने के ऊपर वाले हिस्से के हैं।

तत्संधिः पुंसि वङ्क्षणः।

कृष्णमित्रटीका :- तस्य उरो। 'वक्ष रोषे' (भ्वा. प. से.)। ल्युटि (३. ३. ११३) पृषोदरादित्वान्नुम्। एकम्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- वङ्क्षण (पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम घुटना तथा उसके ऊपर के जोड़ का है।

गुदं त्वपानं पायुर्ना

कृष्णमित्रटीका :- 'गुद कीडायाम्' (भ्वा. आ. से.)। कः (३. १. १३५)। अपानित्यनेन। 'अन प्राणने' (अ. प. से.)। पाति मलम्। 'कृवापा-' (उ. १. १) इत्युण्। त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. गुदम् (नपुंसकलिङ्ग), २. अपानम् (नपुंसकलिङ्ग), ३. पायु (पुल्लिङ्ग)- ये तीन नाम गुदा के हैं।

वस्तिर्नाभेरधो द्वयोः ॥७३॥

कृष्णमित्रटीका :- 'वसेस्तिः' (उ. ४. १७९)। एकम्॥७३॥[6]

हिन्दी अर्थ :- वस्ति (पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम मूत्राशय का है॥७३॥

कटो ना श्रोणिफलकम्

---

1. M. पदः 2. **The fore-part of the foot** [1] 3. **Foot** [4] 4. M. घोटते नया 5. **Ankle** [2] 6. **Heel** [1] 7. **Shark** [2]

1. M. उरो 2. **Knee** [3] 3. **Thigh** [1] 4. **The thigh-joint** [1] 5. **Anus** [3] 6. **The portion of abdomen below the nevel** [1]

कृष्णमित्रटीका :- कट्यते। 'कटे वर्षादौ' (भ्वा. प. से.)। श्रोणेः[1] फलकमिव, चर्माकारत्वात्। 'ककुत्पार्श्वनिस्सृतः' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- कट (पुल्लिङ्ग), २. श्रोणिफलकम् (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम कमर के दोनों भाग के हैं।

कटिः श्रोणिः ककुद्मती।

कृष्णमित्रटीका :- इन् (उ. ४. ११७)। 'श्रोणृ संघाते'। मांसपिण्डः ककुत्। सोऽतिशयितोऽस्याम्[3]। 'कटेः' त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. कटि (स्त्रीलिङ्ग), २. श्रोणि (स्त्रीलिङ्ग), ३. ककुद्मती (स्त्रीलिङ्ग)- ये तीन नाम कमर के हैं।

पश्चान्नितम्बः स्त्रीकट्याः

कृष्णमित्रटीका :- नितम्बति। 'तम्ब गतौ' (?)। 'स्त्रीकट्याः पश्चाद्भागस्य' एकम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- नितम्ब (पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम स्त्रियों के कटि भाग के निचले हिस्से का है।

क्लीबे तु जघनं पुरः॥७४॥

कृष्णमित्रटीका :- हन्यते। 'हन्तेः शरीरावयवे द्वे च' (उ. ५. ३२) इत्यच्। 'स्त्रीकट्याः पुरोभागस्य' एकम्॥७४॥[6]

हिन्दी अर्थ :- जघनम् (नपुंसकलिङ्ग)- यह एक नाम स्त्रियों की जंघा का है॥७४॥

कूपकौ तु नितम्बस्थौ द्वयहीने कुकुन्दरे।

कृष्णमित्रटीका :- कूपाविव। नितम्बे तिष्ठतः। द्वयहीने। कुं भूमिं दारयति[7]। 'दृ भये' (क्रया. प. से.)। कुत्सितं कुदरम्। 'पृष्ठवंशादधोगर्तयोः' एकम्॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. कूपक (पुल्लिङ्ग), २. कुकुन्दरम् (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम पृष्ठवंश के नीचे वाले गडढ़े के हैं।

स्फियां स्फिचौ कटिप्रोथौ

1. M. श्रेणि 2. **Broad hips** [2] 3. M. सोतिशयितोस्याम् 4. **Hip** [3] 5. **The buttock of a woman** [1] 6. **The fore-part of a female hip** 7. M. दरयति 8. **The cavaties of the loins.**

कृष्णमित्रटीका :- स्फायते स्फिक्। बाहुल-काङ्चिच्। कट्यां प्रोथौ[1] मांसपिण्डौ। 'कटी' 'प्रोथौ' इति नामद्वयं वा। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. स्फिक् (स्त्रीलिङ्ग), २. कटिप्रोथः (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम कमर के मांसपिण्ड के हैं।

उपस्थो वक्ष्यमाणयोः॥७५॥

कृष्णमित्रटीका :- उपतिष्ठते। वक्ष्यमाणयोः भगशिश्नयोः॥७५॥[3]

कृष्णमित्रटीका :- उपस्थ (पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम योनि व लिङ्ग का है।

भगं योनिर्द्वयोः

कृष्णमित्रटीका :- भज्यते। 'खनो घ च' (३. ३. १२५) इति घित्वाद्धः। यौति। 'बहिश्रि-' (उ. ४. ५१) इति निः। 'द्वयोः' इति योतिनान्वेति। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. भगम् (नपुंसकलिङ्ग), २. योनि (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम नारी के पेशाब करने के मार्ग के हैं।

शिश्नो मेढ्रमेहनशेफरी।

कृष्णमित्रटीका :- शिनोति[5] वर्षति शिश्नः। 'सृवृभू-' (उ. ३. ४१) इति कक्। अण्डयोः कोशः। 'वृषु सेचने' (भ्वा. प. से.)। त्रीणि॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. शिश्न (पुल्लिङ्ग), २. मेढ्र (पुल्लिङ्ग), ३. मेहनम् (नपुंसकलिङ्ग), ४. शेफ (नपुंसकलिङ्ग)- ये चार नाम पुरुष के मूत्र त्यागने के मार्ग के हैं।

मुष्कोऽण्डकोशो वृषणः

कृष्णमित्रटीका :- मुष्णाति। 'सृवृभू-' (उ. ३. ४१) इति कक्। अण्डयोः कोशः। 'वृषु सेचने' (भ्वा. प. से.)। त्रीणि॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. मुष्क (पुल्लिङ्ग), २. अण्डकोश (पुल्लिङ्ग), ३. वृषण (पुल्लिङ्ग), ये तीन नाम अण्डकोश के हैं।

1. M. प्रोथी 2. **Hip or loin** 3. **The organ of generation of either sex** 4. **The female organ of generation** [2] 5. M. शिनाति 6. **The male organ of generation** [4] 7. **Testicle** (3).

पृष्ठवंशाधरे त्रिकम् ॥७६॥

कृष्णमित्रटीका :- पृष्ठवंशस्याधोभागे त्रयाणां संघः। त्रिकम्। एकम्। 'रीढ़' (लोके) ॥७६॥[1]

हिन्दी अर्थ :- त्रिकम् (नपुंसकलिङ्ग)- यह एक नाम पीठ की रीढ़ के नीचे तीन हड्डियों के जोड़ वाले स्थान विशेष का है ॥७६॥

पिचण्डकुक्षी जठरोदरं तुन्दम्

कृष्णमित्रटीका :- अपि चमति। पिचण्डः। जमन्ताड्डः (उ. १. ११४)। कुष्यते। 'प्लुषिकुषि-' (उ. ३. १५५) इति क्सिः। जायतेऽत्र[2]। 'जनेररष्ठ च' (उ. ५. ३८) इति ठादेशः। ऊर्ध्वमिर्यति। उदरम्। तुदति तुन्दम्। 'अब्दादयः-' (उ. ४. ९८) इति साधुः। पञ्च ॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. पिचण्ड (पुल्लिङ्ग), २. कुक्षि (पुल्लिङ्ग), ३. जठरम् (नपुंसकलिङ्ग), ४. उदरम् (नपुंसकलिङ्ग), ५. तुन्दम् (नपुंसकलिङ्ग)- ये पाँच नाम उदर के हैं।

स्तनौ कुचौ।

कृष्णमित्रटीका :- स्तन्यते शब्द्यते। कुचति। 'कुच संकोचे' (तु. प. से.)। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. स्तन (पुल्लिङ्ग), २.कुच (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम स्तन के हैं।

चूचुकं तु कुचाग्रं स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- 'चूचु' इत्यव्यक्तं कायति। कुचस्याग्रम्। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. चूचुकम् (नपुंसकलिङ्ग), २. कुचाग्रम् (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम स्तन के ऊपर भाग के हैं।

न ना क्रोडं भुजान्तरम् ॥७७॥

कृष्णमित्रटीका :- ना पुमान्न। 'क्रुड् निमज्जने' (?) घञ् (३. ३. १९)। क्रोडः। भुजयोरन्तरम्। द्वे॥७७॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. क्रोडम् (नपुंसकलिङ्ग), २. भुजान्तरम् (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम गोदी (अङ्क) के हैं ॥७७॥

उरो वत्सं च वक्षश्च

1. The lower part of the back-bone [1] 2. M. जायतेत्र 3. Belly [4] 4. Breasts [2] 5. Nipple [2] 6. Lap [2]

कृष्णमित्रटीका :- 'अर्तेरुच्च' (उ. ४. १९४) इति असुन्। उरः। वस्ये छाद्यते वत्सम्। 'वक्ष संघाते' (भ्वा. प. से.)। असुन् (उ. ४. १८८)। त्रीणि॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. उर (नपुंसकलिङ्ग), २. वत्सन् (नपुंसकलिङ्ग), ३. वक्ष (नपुंसकलिङ्ग)- ये तीन नाम छाती के हैं।

पृष्ठं तु चरमं तनोः।

कृष्णमित्रटीका :- पृष्यते सिच्यते (पृष्ठम्)। '-पृष्ठगूथ-' (उ. २. १२) इति साधुः। देहस्य पश्चाद्भागः॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. पृष्ठम् (नपुंसकलिङ्ग)- ये एक नाम पीठ का है।

स्कन्धो भुजशिरोंऽसोस्त्री

कृष्णमित्रटीका :- स्कद्यते। घञ् (३. ३.१९)। 'स्कन्देश्च स्वाङ्गे' (उ. ४. २०६) इति घः। भुजस्य शिरः। अस्यते। 'अंस समाघाते'। त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. स्कन्ध (पुल्लिङ्ग), २. भुजशिर (नपुंसकलिङ्ग), ३. अंस (पुल्लिङ्ग)- ये तीन नाम कन्धे के हैं।

संधी तस्यैव जत्रुणी ॥७८॥

कृष्णमित्रटीका :- जायते जत्रु। 'जत्वादयश्च' (उ. ४. १०२) इति साधु। 'अंस कक्षयोः संघेः' एकम् ॥७८॥[4]

हिन्दी अर्थ :- जत्रु (नपुंसकलिङ्ग)- यह एक नाम कन्धे के जोड़ का है॥७८॥

बाहुमूले उभे कक्षौ

कृष्णमित्रटीका :- कष्यते। 'कष हिंसायाम्' (भ्वा. प. से.)। 'वृतॄवदि-' (उ. ३. ६२) इति सः। 'बाह्वोर्मूले' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- बाहुमूलम् (नपुंसकलिङ्ग), २. कक्ष (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम कांख के हैं।

पार्श्वमस्त्री तयोरधः।

कृष्णमित्रटीका :- पर्शूनां समूहः पार्श्वम्। 'पर्श्वा णस्-' (वा. ४. २. ४३) तयोः। कक्षयोरधोभागः॥[6]

1. Chest [3] 2. The back of a body [1] 3. Shoulder [3] 4. Collar-bone [1] 5. Arm-pit [2] 6. The lower part of an arm-pit [1]

हिन्दी अर्थ :- पार्श्वम् (पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम कांख के नीचे भाग का है।

मध्यमं चावलग्नं च मध्योऽस्त्री द्वौ परौ द्वयोः ॥७९॥

कृष्णमित्रटीका :- मध्ये भवम्। लग्यते स्म। 'लगे सङ्गे' (भ्वा. प. से.)। 'क्षुब्धस्वान्त-' (७. २. ६८) इति साधु। 'देहमध्यस्य' त्रीणि॥[1] परौ भुजबाहू॥७९॥

हिन्दी अर्थ :- १. मध्यमम् (नपुंसकलिङ्ग), २. अवलग्नम् (नपुंसकलिङ्ग), ३. मध्य (पुल्लिङ्ग)- ये तीन नाम शरीर के मध्य भाग के हैं॥७९॥

भुजबाहू प्रवेष्टो दोः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- भुज्यतेऽनेन[2]। वाहते। 'वाहृ प्रयत्ने' (भ्वा. आ. से.)। मृगय्वादि (उ. १. ३७)। 'वेष्ट वेष्टने' (भ्वा. आ. से.)। अच् (३. १. १३४)। 'दमेर्डोस्' (उ. २. ६९)। चत्वारि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. भुज (पुल्लिङ्ग), २. बाहु (पुल्लिङ्ग), ३. प्रवेष्ट (पुल्लिङ्ग), ४. दो (पुल्लिङ्ग)- ये चार नाम बांह के हैं।

कफोणिस्तु कूर्परः।

कृष्णमित्रटीका :- कं फणति। 'फण गतौ' (भ्व. प. से.)। इन् (उ. ४. ११७)। कुरति पिपर्ति च। 'कुर शब्दे' (तु. प. से.)। 'पॄ पालनादौ' (जु. प. से.) 'केहुनी' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१. कफोणि (पुल्लिङ्ग), २. कूर्पर (पुंलिङ्ग)- ये दो नाम केहुनी के हैं।

अस्योपरि प्रगण्डः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- अस्य कूर्परस्योर्ध्वं प्रत्यासन्नः कपोलो गण्डोऽस्य[5]॥[6]

हिन्दी अर्थ :- प्रगण्ड (पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम केहुनी के ऊपर वाले भाग का है।

प्रकोष्ठस्तस्य चाप्यधः ॥८०॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रकुयते। 'उषि[7]-कुषि-' (उ. २. ४) इति थन्। 'कफोणेरधोमणिबन्धपर्यन्तः'॥८०॥[8]

हिन्दी अर्थ :- प्रकोष्ठ (पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम केहुनी के नीचे वाले भाग का है॥८०॥

मणिबन्धादाकनिष्ठं करस्य करभो बहिः।

कृष्णमित्रटीका :- मणिर्बध्यतेऽत्र[1]। ततः कनिष्ठान्तो हस्तस्य बहिर्भागः करभः। करे भाति॥[2]

हिन्दी अर्थ :- करभ (पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम हाथ के बाहर वाले भाग का है।

पञ्चशाखः शयः पाणिः

कृष्णमित्रटीका :- पञ्च शाखा, अङ्गुलयोऽस्य[3]। शेतेऽस्मिन्[4] सर्वम्। 'पुंसि-' (३. ३. १२१) इति घः। 'शमः' इत्यन्ये। पणन्तेऽनेन[5] पाणिः त्रीणि॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. पञ्चशाख (पुल्लिङ्ग), २. शय (पुल्लिङ्ग), ३. पाणि (पुल्लिङ्ग)- ये तीन नाम हाथ के हैं।

तर्जनी स्यात्प्रदेशनी ॥८१॥

कृष्णमित्रटीका :- तर्ज्यतेऽनया[7]। प्रदिश्यतेऽनया[8]। 'अङ्गुष्ठसमीपाङ्गुल्याः' द्वे॥८१॥[9]

हिन्दी अर्थ :- १. तर्जनी (स्त्रीलिङ्ग), २. प्रदेशनी (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम अंगूठे के समीप वाली अङ्गुली के हैं॥८१॥

अङ्गुल्यः करशाखाः स्युः

कृष्णमित्रटीका :- अङ्गति। 'अगि गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'ऋतन्यञ्जि-' (उ. ४. २) इत्युलिः। करस्य शाखा इव। द्वे॥[10]

हिन्दी अर्थ :- १. अङ्गुलि (स्त्रीलिङ्ग), २. करशाखा (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम अङ्गुली के हैं।

पुंस्यङ्गुष्ठः प्रदेशिनी।

मध्यमानामिका चापि कनिष्ठा चेति ताः क्रमात्॥८२॥

कृष्णमित्रटीका :- अङ्गुशब्दोऽङ्गवाची[11]। तत्र तिष्ठन्ति एता अङ्गुल्यः॥८२॥[12]

---

1. **Waist or the middle of the body** [3] 2. M. भुज्यतेनेन 3. **Arm** [2] 4. **Elbow** [2] 5. M. गण्डोस्य 6. **The upper part of the arm from the elbow to the houslder** [1] 7. M. उष 8. **Fore arm** [1].

1. M. मणिर्बध्य-तेत्र 2. **The back of the hand from the wrist to the little finger** [1] 3. M. अङ्गुलयोस्य 4. M. शेतेस्मिन 5. M. पणन्तेनेन 6. **Hand** [3] 7. M. तर्ज्यतेनया 8. M. प्रदिश्यतेनया 9. **Fore-finger** [2] 10. **Fingers** [2] 11. M. अङ्गशब्दोङ्गवाची 12. **Thumb** [2] **Middle, third and last fingers** [1 each].

हिन्दी अर्थ :- १. अङ्गुष्ठ (पुल्लिङ्ग), २. प्रदेशनी (स्त्रीलिङ्ग), ३. मध्यमा (स्त्रीलिङ्ग), ४. अनामिका (स्त्रीलिङ्ग), ५. कनिष्ठिका (स्त्रीलिङ्ग)- ये पाँच नाम अंगूठे से लेकर कनिष्ठा तक की प्रत्येक अङ्गुली का क्रमशः एक-एक नाम है ॥८२॥

पुनर्भवः कररुहो नखोऽस्त्री नखरोऽस्त्रियाम्।

कृष्णमित्रटीका :- पुनर्भवति। करे रोहति। नखमस्य। नखं राति। चत्वारि॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. पुनर्भव, २. कररुह (पुल्लिङ्ग), ३. नख, ४. नखर (पुल्लिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग)- ये चार नाम नख के हैं।

प्रादेशतालगोकर्णास्तर्जन्यादियुते तते ॥८३॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रादिश्यते। तलत्यत्र। 'तल प्रतिष्ठायाम्' (चु. प. से.)। गोः कर्ण इव। 'तर्जन्यादिस-हिते वितृस्तेऽङ्गुष्ठे[2]' क्रमेणैकैकम्॥८३॥[3]

हिन्दी अर्थ :- प्रादेश(पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम तर्जनी और अंगूठे को फैलाकर बनाये गये नापने के प्रमाण के हैं।

ताल(पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम मध्यमा और अंगूठे को फैलाकर बनाये हुए नापने के प्रमाण विशेष का है।

गोकर्ण (पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम अनामिका और अंगूठे को फैलाकर बनाये गये नापने के प्रमाण विशेष का है॥८३॥

अङ्गुष्ठे सकनिष्ठे स्याद्वितस्तिर्द्वादशाङ्गुलः।

कृष्णमित्रटीका :- कनिष्ठया सहिते विस्तृतेऽङ्गुष्ठे[4]। वितस्यते। 'तसु उपक्षये' (दि. प. से.)। द्वादशाङ्गुलयः प्रमाणमस्य। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १.वितस्ति (वितस्यति इति तिः, पुल्लिङ्ग), २. द्वादशाङ्गुल (द्वादश अङ्गुलयः), (प्रमाणमस्य इति द्विगुसमासे, मात्रचो लुकि, अच् प्रत्ययश्च, पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम कनिष्ठा और अंगूठे को फैलाकर बनाये गये नापने के प्रमाण (वित्ता) के हैं।

1. Nail [4] 2. M. विस्तृतेङ्गुष्ठे 3. **The span of the thumb and fore finger, the span of the thumb and middle finger and the span of the thumb and the third finger** [1 each] 4. M. विस्तृतेङ्गुष्ठे 5. **The measure of length equal to twelve angulas** (being the distance between the extended thumb and the little finger) [2].

पाणौ चपेटप्रतलप्रहस्ताविस्तृताङ्गुलौ ॥८४॥

कृष्णमित्रटीका :- 'चप सान्त्वने' (भ्वा. प. से.)। अच् (३. १. १३४)। 'इट् गतौ' (भ्वा. प. से.)। चपश्चासाविटश्च। प्रतलति। प्रसृतो हस्तोऽस्य[1]। त्रीणि॥८४॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. चपेट, २. प्रतल , ३. प्रहस्त (पुल्लिङ्ग)- ये तीन नाम फैले अङ्गुली वाले हाथ (थप्पड़) के हैं॥८४॥

द्वौ संहतौ सिंहतलप्रतलौ वामदक्षिणौ।

कृष्णमित्रटीका :- सिंहस्येव तलमत्र। 'मिलितयोर्वामदक्षिणपाण्योर्विस्तृताङ्गुल्योः' (द्वे)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. सिंहतल, २. प्रतल (पुंल्लिङ्ग)- ये दो नाम विस्तृत अङ्गुली वाले दोनों हाथों को सटाने का है।

पाणिर्निकुब्जः प्रसृतिः

कृष्णमित्रटीका :- नितरां कुब्जः। प्रकृष्टा सृतिरस्य॥[4]

हिन्दी अर्थ :- प्रसृति (स्त्रीलिङ्ग)- यह एक नाम टेढ़े किये हुए हाथ (पसर) का है।

तौ युतावञ्जलिः पुमान् ॥८५॥

कृष्णमित्रटीका :- 'अञ्जू व्यक्त्यादौ' (रु. प. से.)। 'ऋतण्यञ्जि-' (उ. ४. २.) इत्यलिः। तौ प्रसृतौ मिलितौ॥८५॥[5]

हिन्दी अर्थ :- अञ्जलिः (पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम अञ्जलि का है।

प्रकोष्ठे विस्तृतकरे हस्तः

कृष्णमित्रटीका :- बाहौ प्रसारितपाणौ हस्तः। हसति। 'हसिमृग्-' (उ. ३. ८६) इति तन्। विस्तृतः करो यस्मिन्। एकम्॥[6]

हिन्दी अर्थ :- हस्तः (पुंल्लिङ्ग)- यह एक नाम (कुहनी के नीचे वाले भाग से मध्यामांगुलि के अन्तिम भाग तक अर्थात् २ वित्ता) प्रमाण विशेष का है।

1. M. हस्तोस्य 2. **Slap** [3] 3. **The palms of the hand opened and joined together** [1] 4. **The palm of the hand stretched out and hallawed** [1] 5. **A cavity formed by folding and joining the open hands together** [1] 6. **The measure of length equal to 24. angulas or about 18 inches** [1].

मुष्ट्या तु बद्धया।

सरत्निः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- स हस्तः बद्धया मुष्ट्या उपलक्षितः। रमन्तेऽस्मिन्[1] रत्निः। ऋच्छतीति वा। 'ऋ गतौ' (भ्वा. प. अ.)। 'ऋतनि-' (उ. ४. २) इति कत्निच्॥[2]

हिन्दी अर्थ :- रत्निः (स्त्रीलिङ्ग)- यह एक नाम निमुठ हाथ (मुट्ठी बांधकर हाथ से नापे हुए प्रमाण विशेष) का है।

अरत्निस्तु निष्कनिष्ठेन मुष्टिना॥८६॥

कृष्णमित्रटीका :- नास्ति रत्निर्मुष्टिरस्मिन्नरत्निः। निष्क्रान्ता कनिष्ठास्मिंस्तादृशो मुष्टिस्तेनोपलक्षितः सः अरत्निः॥८६॥[3]

हिन्दी अर्थ :- अरत्निः (पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग) - यह एक नाम कनिष्ठा अङ्गुलि की मुट्ठी से बाहर रखकर शेष अङ्गुलियों की मुट्ठी बांधकर हाथ से नापे हुए प्रमाण विशेष का है।

व्यामो वाह्वोः सकरयोस्तयोष्तिर्यगन्तरम्।

कृष्णमित्रटीका :- विशेषेण अम्यतेऽनेन[4]। स्वे स्वे पार्श्वे प्रसारितयोर्बाह्वोर्मध्यम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- व्यामः (पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम दोनों तरफ (अपने-अपने बगल में) हाथ सहित दोनों फैले बाँह के मध्य से नापे हुए प्रमाण विशेष का है।

ऊर्ध्वविस्तृतदोः पाणिनृमाने पौरुषं त्रिषु॥८७॥

कृष्णमित्रटीका :- दोषौ च पाणौ च। तत्। ऊर्ध्वं विस्तृतं दोः पाणि येन सः। तादृशो ना। तस्य यन्मानं परिमाणम्। पुरुषः प्रमाणमस्य। 'पुरुषहस्तिभ्यामण्' (५. २. ३८)॥८७॥[6]

हिन्दी अर्थ :- पौरुषम् (त्रिलिङ्ग)- यह एक नाम खड़े होकर हाथ को ऊपर उठाकर जो प्रमाण देता है, इसे परोसा कहते हैं।

1. M. रमन्तेस्मिन् 2. **The distance from the elbow to the closed fist [1]** 3. **The distance from the elbow to the tip of the little finger [1]** 4. M. अम्यतेनेन 5. **The measure of length equal to the space between the tips of the fingers of either hand when the arms are extended [1]** 6. **The full height of a man, the height to which he reaches with both arms elevated [1].**

कण्ठो गलः

कृष्णमित्रटीका :- कणति। 'कणेष्ठः' (उ. १. १०३)। गिरति गलः। 'ग्रीवाग्रभागस्य' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. कण्ठ, २. गलः (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम कण्ठ (ग्रीवा के अग्रभाग) के हैं।

अथ ग्रीवायां शिरोधिः कंधरेत्यपि।

कृष्णमित्रटीका :- गृणाति ग्रीवा। 'जिह्वाग्रीवा-' (उ. १. १५५) इति साधुः। शिरो धीयतेऽस्याम्[2]। कं शिरसो धरा। त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. ग्रीवा, २. शिरोधिः, ३. कंधरा (स्त्रीलिङ्ग)- ये तीन नाम गर्दन के हैं।

कम्बुग्रीवा त्रिरेखा सा

कृष्णमित्रटीका :- कम्बुः शङ्ख इव ग्रीवा। तिस्रो रेखा यस्याम्। 'शङ्खाकृतिग्रीवायाः' एकम्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- कम्बुग्रीवा (स्त्रीलिङ्ग)- यह एक नाम शङ्खाकार गर्दन का है।

अवटुर्घाटा कृकाटिका॥८८॥

कृष्णमित्रटीका :- न वटत्यवटुः। बाहुलकादुः। घाटयति। 'घट संघाते' (चु. प. से.)। कृकं कण्ठमटति। ग्रीवायामुन्नतो भागः। 'घांटी' लोके॥८८॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१. अवटुः (पुल्लिङ्ग), २. घाटा, ३. कृकाटिका (स्त्रीलिङ्ग)- ये तीन नाम गर्दन से ऊँचे भाग (घाटी) से हैं।

वक्त्रास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम्।

कृष्णमित्रटीका :- उच्यतेऽनेन।[6] 'गुधृवीप (चि) वचि-' (उ. ४. १६६) इति त्रः। अस्यतेऽन्नस्मिन्।[7] ण्यत् (३. ३. ११३)। वदत्यनेन। तुण्डति। 'तुडि तोडने' (भ्वा. प. से.)। आ अनित्यनेन। लप्यतेऽनेन[8]। 'लप व्यक्तायां वाचि' (भ्वा. प. से.)। श्वन्यतेऽनेन[9]। 'डित् खनेर्मुट च-' (उ. ५. २०) इत्यच्॥[10]

हिन्दी अर्थ :-१. वक्त्रम्, २. आस्यम् , ३. वदनम, ४. तुण्डम्, ५. आननम्, ६. लपनम्, ७. मुखम् (नपुल्लिङ्ग)- ये सात नाम मुख के हैं।

1. **Throat** [2] 2. M. धीयतेस्याम् 3. **Neck** [3] 4. **A conchshaped neck** [2] 5. **The raised and straight part of the neck** [3] 6. M. उच्यतेनेन 7. M. अस्यतेन्नमस्मिन् 8. M. लप्यतेनेन 9. M. खन्यतेनेन 10. **Mouth or face** [6].

क्लीबे घ्राणं गन्धवहा घोणा नासा च नासिका॥८९॥

कृष्णमित्रटीका :- घ्रायतेऽनेन[1]। ल्युट् (३. ३. ११७) गन्धस्य वहा। घोणति, अनया। 'घुण भ्रमणे' (भ्वा. प. से.)। नासतेऽनया[2]। 'णासृ शब्दे' (भ्वा. आ. से.)॥८९॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. घ्राणम् (नपुल्लिङ्ग), २. गन्धवहा, ३. घोणा, ४. नासा, ५. नासिका (स्त्रीलिङ्ग)- ये पाँच नाम नासिका के हैं।

ओष्ठाधरौ तु रदनच्छदौ दशनवाससी।

कृष्णमित्रटीका :- उष्यते। 'उष दाहे' (भ्वा. प. से.)। 'उषिकुषि-' (उ. २. ४) इति थः। न ध्रियते। 'धृङ् अवस्थाने' (तु. आ. अ.) रदनाः छाद्यन्तेऽनेन[4]। दशनानां वाससी इवाच्छादकत्वात्। चत्वारि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. ओष्ठः, २. अधरः, ३. रदनच्छदः (पुल्लिङ्ग), ४. दशनवासः (नपुंसकलिङ्ग)- ये चार नाम ओठ के हैं।

अधस्ताच्चिबुकम्

कृष्णमित्रटीका :- चीवति। 'चीवृ आदाने' (भ्वा. उ. से.)। मृगय्वादिः (उ. १. ३७)। चिनोति शोभामिति वा। 'ओष्ठादधोभागस्य' एकम्। 'ठोडी' लोके॥[6]

हिन्दी अर्थ :- चिबुकम् (नपुंसकलिङ्ग)- यह एक नाम ओठ के नीचे के भाग का है।

गण्डौ कपौलो

कृष्णमित्रटीका :- गण्डति। कं पोलयति॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. गण्डः, २. कपोल (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम गाल के हैं।

तत्परो हनुः॥९०॥

कृष्णमित्रटीका :- ताभ्यां कपोलाभ्यां परः, अधः। हन्ति हनुः। 'शृस्वृ-' (उ. १. १०) इत्युः। 'चौभरि' (?) लोके॥९०॥[8]

हिन्दी अर्थ :- हनुः (पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम ठुड्डी (दाढ़ी) का है।

1. M. घ्रायतेनेन 2. M. नासतेनया 3. Nose [6] 4. M. छाद्यन्तेनेन 5. Lip [4] 6. The lower part of the lip [1] 7. Cheek [2] 8. Chin [1].

रदना दशना दन्ता रदाः

कृष्णमित्रटीका :- रद्यतेऽनेन[1]। 'रद विलेखने' (भ्वा. प. से.)। दश्यतेऽनेन[2]। दाम्यति दन्तः। रदति चत्वारि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- रदनः, २. दशनः ३. दन्तः, ४. रदः (पुल्लिङ्ग)- ये चार नाम दांत के हैं।

तालु तु काकुदम्।

कृष्णमित्रटीका :- तालयति। मृगय्वादिः (उ. १. ३७)। काकुर्जिह्वा दीयतेऽनेन[4]। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. ताल, २. काकुदम् (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम तालु के हैं।

रसज्ञा रसना जिह्वा

कृष्णमित्रटीका :- रसं जानाति। रस्यतेऽनया[6]। 'रस आस्वादने' (चु. उ. से.)। लिहन्त्यनया। 'शेवयह्व-जिह्वा-' (उ. १. १५५) इति साधुः। त्रीणि॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १.रसज्ञा (स्त्रीलिङ्ग), २. रसना (नपुल्लिङ्ग), ३. जिह्वा (स्त्रीलिङ्ग)- ये तीन नाम जिह्वा के हैं।

प्रान्तावोष्ठस्य सृक्किणी[8]॥९१॥

कृष्णमित्रटीका :- सृजति। बाहुलकात्क-किन्॥९१॥[9]

हिन्दी अर्थ :- सृक्कणिः (पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम ओठ के दोनों किनारों का है।

ललाटमलिकं गोधिः

कृष्णमित्रटीका :- ललं विलासमटति। अलति। 'अलिहृषिभ्यां किच्च' (उ. ४. १७) इतीकन्। गुध्यते। 'गुध परिवेष्टने' (दि. प. से.)। त्रीणि॥[10]

हिन्दी अर्थ :- १. ललाटम् २. अलिकम् (नपुल्लिङ्ग), ३. गोधिः (पुल्लिङ्ग)- ये तीन नाम ललाट के हैं।

ऊर्ध्वे दृग्भ्यां भ्रुवौ स्त्रियौ।

कृष्णमित्रटीका :- भ्रमयति। भ्रमेर्डूः (उ. २. ६८)। 'भौंह' लोके॥[11]

1. M. रद्यतेनेन 2. M. दश्यतेनेन 3. Tooth [4] 4. M. दीयतेनेन, 5. Palate [2] 6. M. रस्यतेनया 7. Tongue [3] 8. M. सृक्किनी B. prefers सृक्कणी 9. The Corners of the lips [1] 10. Fore head [1] 11. Eye-brow [3].

हिन्दी अर्थ :- भ्रूः (स्त्रीलिङ्ग)- यह एक नाम भौं का है।

कूर्चमस्त्री भ्रुवोर्मध्यम्

कृष्णमित्रटीका :- कुरति। बाहुलकाच्चट्॥[1]

हिन्दी अर्थ :- कूर्चम् (पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम नाक के ऊपर दोनों भौं के बीच वाले स्थान का है।

तारकाक्ष्णः कनीनिका॥६२॥

कृष्णमित्रटीका :- तारयति। 'कन दीप्तौ (भ्वा. प. से.)। बाहुलकादीनन्। द्वे॥६२॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. तारका, २. कनीनिका (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम आँख की पुतली के हैं।

लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुरणिक्षी।
दृग्दृष्टी च

कृष्णमित्रटीका :- लोल्यतेऽनेन[3]। नीयतेऽनेन[4]। 'दीप्नी-' (३. २. १८२) इति पक्षेष्ट्रन्। ईक्ष्यतेऽनेन[5]। चक्षतेऽनेन[6]। 'चक्षेः शिच्च' (उ. २. ११९) इत्युसिः। 'अक्षू व्याप्तौ' (भ्वा. प. से.)। इन् (उ. ४. ११७)। दृश्यतेऽनया[7]। क्तिनि (३. ३. ९३) दृष्टिः। अष्ट॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. लोचनम् , २. नयनम् , ३. नेत्रम्, ४. ईक्षणम् , ५. चक्षुः, ६. अक्षिः (नपुल्लिङ्ग), ७. दृक्, ८. दृष्टिः (स्त्रीलिङ्ग)- ये आठ नाम नेत्र के हैं।

अस्रु नेत्राम्बु रोदनं चास्रमश्रु च॥६३॥

कृष्णमित्रटीका :- अस्यति, अश्नुते वा। अश्वादिः (उ. ५. २९)। रुद्यते अन्यत्रापीति रक्। अस्रम्। पञ्च॥६३॥[9]

हिन्दी अर्थ :- १. अस्रु, २. नेत्राम्बु , ३. रोदनम् , ४. अस्रम् , ५. अश्रुः (नपुल्लिङ्ग)- ये पाँच नाम आँसू के हैं।

अपाङ्गौ नेत्रयोरन्तौ

कृष्णमित्रटीका :- अपकृष्टावङ्गात् 'बाह्यौ' इति शेषः॥[10]

हिन्दी अर्थ :- अपाङ्गः (पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम नेत्रों के समीप स्थान (किनारों) का है।

कटाक्षोऽपाङ्गदर्शने।

कृष्णमित्रटीका :- कटं गण्डमक्षति। 'अक्षू व्याप्तौ' (भ्वा. प. से.)। अपाङ्गेन दर्शनम्। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. कटाक्षः, २.अपाङ्गदर्शनम् (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम कटाक्ष के हैं।

कर्णशब्दग्रहौ श्रोत्रं श्रुतिः स्त्री श्रवणं श्रवः॥६४॥

कृष्णमित्रटीका :- कर्णयति। 'कर्ण भेदने' (चु. उ. से.)। शब्दो गृह्यतेऽनेन[2]। श्रूयतेऽनेन[3] ष्ट्रन् (उ. ४. १५८)। असुनि (उ. ४. १८८) श्रवः॥६४॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. कर्णः (कीर्यते शब्दोऽस्मिन् अच्, पुल्लिङ्ग), २. शब्दग्रहः (पुल्लिङ्ग), ३. श्रोत्रम् (नपुल्लिङ्ग), ४. श्रुतिः (स्त्रीलिङ्ग), ५. श्रवणम् , ६. श्रवः (नपुल्लिङ्ग)- ये छः नाम कान के हैं।

उत्तमाङ्गं शिरः शीर्षं मूर्धा ना मस्तकोऽस्त्रियाम्।

कृष्णमित्रटीका :- उत्तमं च तदङ्गं च। 'श्रयतैः स्वाङ्गे शिरः। किच्च' (उ. ४. १९३) इत्यसुन्। 'कुमारशीर्षयोः-' (३. २. ५१) इति निर्देशात् शीर्षादेशोऽपि। मुह्यन्त्यनेन। 'श्वन्नुक्षन्-' (उ. १. १६०) इति साधुः। 'मसी परिणामे' (दि. प. से.)। क्तान्तात् (३. २. १०२) कन्। पञ्च॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. उत्तमाङ्गम्, २. शिरः३. शीर्षम् (नपुल्लिङ्ग), ४. मूर्धा (पुल्लिङ्ग), ५. मस्तकः (पुल्लिङ्ग, नपुल्लिङ्ग)- ये पाँच नाम शिर के हैं।

चिकुरः कुन्तलो बालः कचः केशः शिरोरुहः॥६४॥

कृष्णमित्रटीका :- 'चि' इत्यव्यक्तं कुरति। कुन्तं कुन्ताकारं लाति। वलति। 'बल प्राणने' (भ्वा. प. से.)। कच्यते। 'कच बन्धने' (भ्वा. प. से.)। के शेते। डः (वा. ३. २. १०१)। शिरसि रोहति। षट्॥६४॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१. चिकुरः, २. कुन्तलः, ३. बालः, ४.कच,५.केश,६.शिरोरुहः(पुल्लिङ्ग)- ये छःनाम बाल के है।

तद्वृन्दे कैशिकं कैश्यम्

---

1. The middle part of the eye-brows [1] 2. The pupil of the eye [3] 3. M. लोच्यतेनेन 4. M. नीयतेनेन 5. M. ईक्ष्यतेनेन 6. M. चक्षतेनेन 7. M. दृश्यतेनया 8. Eye [8] 9. Tear [5] 10. The corners of the eyes [1].

1. Side-glance [2] 2. M. गृह्यतेनेन 3. M. श्रूयतेनेन 4. Ear [6] 5. Head [5] 6. Hair [6].

कृष्णमित्रटीका :-केशानां समूह।'अचित' (४.२.४७)इति ठक्।'केशाश्वाभ्यां यञ्छौ-' (४. २. ४८)। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. कैशिकम् (केशानां समूहः इति ठक्, नपुंसकलिङ्ग), २. कैश्यम् (समूहार्थे ष्यञ्, नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम केश समूह के हैं।

अलकाश्चूर्णकुन्तलाः।

कृष्णमित्रटीका :- अलति। चूर्णस्य कर्चूरादिक्षोदस्य कुन्तलाः॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. अलकः, २. चूर्णकुन्तलाः (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम टेढ़े बाल के हैं।

ते ललाटे भ्रमरकाः

कृष्णमित्रटीका :- भ्रमर इव। एकम्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- भ्रमरकः (पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम ललाट पर आये हुए टेढ़े बाल (काकुल, बुलबुली) का है।

काकपक्षः शिखण्डकः॥९६॥

कृष्णमित्रटीका :- काकस्य पक्ष इव। शिखाया अण्ड इव। क्षत्रियाणां चूडा। 'बुलबुल' लोके॥९६॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. काकपक्षः, २. शिखण्डकः (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम शिखा सामान्य के हैं।

कबरी केशवेशः

कृष्णमित्रटीका :- कं वृणोति कबरी। अच् (३. १. १३४)। 'को (र) रन्' (उ. ४. १५४) इति सूत्रेण वा। केशानां वेशो मार्जनाबन्धविशेषः। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. कबरी (स्त्रीलिङ्ग), २. केशवेशः (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम बालों की रचना विशेष के हैं।

अथ धम्मिलः संयताः कचाः।

कृष्णमित्रटीका :- 'धम्मिः' सौत्रः। धम्मेर्लः। संयताः बद्धाः। 'जूरा (ड़ा)' लोके॥[6]

हिन्दी अर्थ :- धम्मिल्लः (पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम जूड़ा खोपा (बान्धे हुए स्त्रियों के बाल की रचना विशेष) का है।

1. A quantity of hairs [2] 2. Curled hairs [2] 3. The hairs hanging on the forehead [1] 4. A lock of hairs [2] 5. A braid of hairs [2] 6. Tide hairs [2].

शिखा चूडा केशपाशी

कृष्णमित्रटीका :- शेते शिखा। 'शीङो-ह्रस्वश्च' (उ. ५. २४) इति खः। चुड्यते। 'चुड समुच्छ्राये' (चु. प. से.)। भिदादौ निपातः। प्रशस्ताः केशाः केशपाशी। 'चोटी' (लोके)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. शिखा, २. चूडा, ३. केशापाशी (स्त्रीलिङ्ग)- ये तीन नाम चोटी के हैं।

व्रतिनस्तु जटा सटा॥९७॥

कृष्णमित्रटीका :- व्रतिनः शिखा। जटति। 'जट संघाते' (भ्वा. प. से.)। 'षट अवयवे' (भ्वा. प. से.)॥९७॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. जटा, २. सटा (स्त्रीलिङ्ग) - ये दो नाम तपस्वियों के सटे बालों के हैं।

वेणिः प्रवेणिः[3]

कृष्णमित्रटीका :- वेणति। 'वेणृ निशामनादौ' (भ्वा. उ. से.)। 'प्रोषितभर्तृकादिधार्यकेशरचनाविशेषस्य द्वे' इत्येके। 'स्त्रीचोटी' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. वेणिः, २. प्रवेणी (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम गुथी हुई चोटी के हैं।

शीर्षण्यशिरस्यौ विशदे कचे।

कृष्णमित्रटीका :- शिरसि भवः। 'वा केशेषु' इति शीर्षन्। विशदे स्नानादिनिर्मले॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. शीर्षण्यः, २. शिरस्य (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम स्नानादि से निर्मल बाल के हैं।

पाशः पक्षश्च हस्तश्च कलापार्थाः कचात्परे॥९८॥

कृष्णमित्रटीका :- पाश्यते। 'पश बन्धे' (चुरादिः)। पक्ष्यते। 'पक्षपरिग्रहे' (भ्वा. प. से.)। कचात्परे सन्तः कलापार्थाः॥९८॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. पाशः, २. पक्षः, ३. हस्तः (पुल्लिङ्ग)- ये तीन नाम शब्द कचवाचक शब्द के अन्त में रहने पर 'केश समूह' अर्थ को प्रकट करते है।

तनूरुहं रोम लोम

कृष्णमित्रटीका :- तन्वां रोहति। 'नामन्-सीमन्-' (उ. ४. १५०) इति साधुः। रुयते लूयते वा। त्रीणि। 'रोवाँ' (लोके)॥[7]

1. Crest-hair [3] 2. Matted hairs [2] 3. B. reads वेणिप्रवेणी, 4. Braided hairs [2] 5. Clean hair [2] 6. A mass of hairs [3] 7. The hair on the body (of men and animals) [3].

हिन्दी अर्थ :- १. तनूरुहम्, २. रोम, ३. लोम (नपुल्लिङ्ग)- ये तीन नाम शरीर के रोम के हैं।

तद्वृद्धौ श्मश्रुः पुंमुखे।

कृष्णमित्रटीका :- तस्य वृद्धिस्तस्यां स्मनि मुखे श्रयते। मितद्रवादिः (वा. ३. २. १८०)। पुंसो मुखे। एकम्। 'दाढी' (लोके)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- श्मश्रुः (नपुंसकलिङ्ग)- यह एक नाम दाढ़ी के बढ़े हुए बाल और मूंछ का है।

आकल्पवेषौ नेपथ्यं प्रतिकर्मप्रसाधनम्॥९९॥

कृष्णमित्रटीका :- आकल्पनम्। विशयते[2]। नयतेर्णिचि (३. २. ७५) गुणः (७. ३. ८४) नेपथ्यम्। प्रत्यङ्गं कर्म। प्रसाध्यतेऽनेन[3]। अलङ्काररचनादिकृत-शोभायाः पञ्च॥९९॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. आकल्पः (पुल्लिङ्ग), २. वेषः, ३. नेपथ्यम्, ४. प्रतिकर्म, ५. प्रसाधनम् (नपुंसकलिङ्ग) - ये पाँच नाम आभूषण आदि रचना विशेष के हैं।

दशैते त्रिषु

कृष्णमित्रटीका :- एते वक्ष्यमाणाः।

हिन्दी अर्थ :- यह आगे कहे दश शब्द तीनों लिगों में होते हैं।

अलंकर्ताऽलकरिष्णुश्च

कृष्णमित्रटीका :- अलं करोति। 'अलंकृञ्' (३. २. १३६) इतीष्णुच्[5]। 'अलंकरणशीलस्य' द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. अलंकर्त्रा, २. अलंकरिष्णुः (त्रिलिङ्ग)- ये दो नाम अलंकरणशील (सुशोभित करने वाले) के हैं।

मण्डितः।

प्रसाधितोऽलंकृतश्च भूषितश्च परिष्कृतः॥१००॥

कृष्णमित्रटीका :- 'मडि भूषायाम्' (भ्वा. प. से.)। 'भूष अलंकारे' (भ्वा. प. से.)। 'संपरिभ्याम्-' (६. १. १३७) इति सुट्। पञ्च॥१००॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. मण्डितः (स्त्रीलिङ्ग), २. प्रसाधितः, ३. अलंकृतः, ४. भूषितः, ५. परिष्कृतः (त्रिलिङ्ग)- ये पाँच नाम आभूषणों से सुशोभित के हैं।

1. **Beard** [1] 2. विष्यते 3. M. प्रसाध्यतेनेन 4. **Decoration** [3] 5. M. इति इष्णुच् 6. **Decorating** [2] 7. **Decorated or ornamented** [5].

विभ्रड् भ्राजिष्णुरोचिष्णू

कृष्णमित्रटीका :- विभ्राजते। 'भुवश्च' (३. २. १३८) इति चादिष्णुच्। रोचते। 'अलंकृञ्-' (३. २. १३६) इतीष्णुच्[1]। 'अलंकारादिना शोभमानस्य' त्रीणि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. विभ्राट्, २. भ्राजिष्णुः, ३. रोचिष्णुः- ये तीन (त्रि.लिङ्ग) नाम अलंकारादि से सुशोभित के हैं।

भूषा तु स्यादलङ्क्रिया।

कृष्णमित्रटीका :- 'कृञः शच' (३. ३. १००) द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. भूषा, २. अलंक्रिया- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम गहना से सुशोभित करने के हैं।

अङ्कारस्त्वाभरणं परिष्कारो विभूषणम्॥१०१॥ मण्डनं च

कृष्णमित्रटीका :- अलङ्क्रियतेऽनेन[4]। आभ्रियतेऽनेन[5]। पञ्च॥१०१॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. अलंकार, २. आभरणम्, ३. परिष्कारः, ४. विभूषणम्, ५. मण्डनम्- ये पाँच नाम गहना के हैं। इनमें प्रथम, तृतीय पुल्लिङ्ग हैं शेष द्वितीय, चतुर्थ, पंचम नपुंसकलिङ्ग हैं।

अथ मुकुटं किरीटं पुं नपुंसकम्।

कृष्णमित्रटीका :- मुखे कुट्यते मुकुटम्। किरति। 'कृतॄ-' (उ. ४. १८४) इति कीटन्। द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. मकुटम्, २. किरीटम्- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम किरीट के हैं।

चूडामणिः शिरोरत्नम्

कृष्णमित्रटीका :- चूडाया मणिः। शिरसो रत्नम्। द्वे॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. चूडामणिः, २. शिरोरत्नम्- ये दो नाम शिरोमणि के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग हैं।

1. M. इति इष्णुच् 2. **Richly decorated** [3] 3. **Decoration with ornaments** [2] 4. M. अलक्रियतेनेन 5. M. आभ्रियतेनेन 6. **Ornament** [5] 7. **Crown** [2] 8. **Crest jewel** [2].

तरलो हारमध्यगः ॥१०२॥

कृष्णमित्रटीका :- तरं लाति। एकम् ॥[1]

हिन्दी अर्थ :- तरलः- यह एक पुल्लिङ्ग नाम सुमेरु (माला के मध्यमणि) का है॥१०२॥

बालपश्या पारितथ्या

कृष्णमित्रटीका :- बालपाशे साधुः। परितस्तथाभूताः। स्वार्थे ष्यञ् (वा. ५. १२४)। 'सीमन्तस्थितायाः स्वर्णादिपट्टिकायाः' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. बालपाश्या, २. परितथ्या - ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम स्त्रियों की चोटी में लगायी जानेवाली सोने की पट्टी (या आभूषण विशेष) का हैं।

पत्रपाश्या ललाटिका।

कृष्णमित्रटीका :- पत्रमिव पाश्या। 'कर्णललाटात्कनलंकारे' (४. ३. ६५)। 'ललाटभूषणस्य' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. पत्त्रपाश्या, २.ललाटिका- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम विन्दी, मनटीका आदि ललाट के भूषण के हैं।

कर्णिका तालपत्त्रं स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- कर्णस्यालङ्कारः। तालस्य पत्त्रम्॥ द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. कर्णिका, २. तालपत्त्रम्- ये दो नाम कनफूल या ऐरन झूमक, तरकी, ढेला आदि कर्णफूल के हैं, इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग है। 'ताटङ्क' भी इसी अर्थ में है। सुवर्णनिर्मित के भी ये ही नाम हैं।

कुण्डलं कर्णवेष्टनम्॥१०३॥

कृष्णमित्रटीका :- 'कुडि दाहे' (भ्वा. आ. से.) वृषादिः (उ. १. १०६)॥द्वे॥१०३॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. कुण्डलम्, २. कर्णवेष्टनम् - ये दो(नपुंसकलिङ्ग) नाम कुण्डल के हैं॥१०३॥

ग्रैवेयकं कण्ठभूषा

कृष्णमित्रटीका :- ग्रीवायां भवम्। 'कुलकुक्षि' (४. २. ९६) इति ढकञ्। 'कंठा' (लोके)॥[6]

1. The central gem of a necklace [1] 2. A golden ornament worn in the hair [2] 3. An ornament worn on the forehead [2] 4. A kind of ear-ornament [2] 5. Ear-ring [2] 6. A kind of neck ornament called कण्ठा.

हिन्दी अर्थ :- १. ग्रैवेयकम्, २. कण्ठभूषा- ये दो नाम कण्ठा, हँसुली, नेकलेस आदि ग्रीवाभरण के हैं, इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग द्वितीय स्त्रीलिङ्ग हैं।

लम्बनं स्याल्ललन्तिका।

कृष्णमित्रटीका :- लम्बते। 'लड विलासे' (भ्वा. प. से.)। शतुर्ङीप् (४. १. ६)। 'किंचिदवलम्बमानकण्ठभूषणस्य' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. लम्बनम् , २. ललन्तिका- ये दो नाम कुछ लटकने वाली कण्ठभूषा के हैं,इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय स्त्रीलिङ्ग हैं।

स्वर्णैः प्रालम्बिका

कृष्णमित्रटीका :- सैव ललन्तिका स्वर्णैः कृता प्रालम्बते॥[2]

हिन्दी अर्थ :- प्रालम्बिका-यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम गले से थोड़ा नीचे लटकने वाले गहने (सिकड़ी आदि) के हैं।

अथोरः सूत्रिका मौक्तिकैः कृता॥१०४॥

कृष्णमित्रटीका :- सैव ललन्तिका मौक्तिकैः कृता। उरसः सूत्रमिव॥१०४॥[3]

हिन्दी अर्थ :- उरःसूत्रिका- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम मुक्तामाला का है॥१०४॥

हारो मुक्तावली

कृष्णमित्रटीका :- ह्रियतेऽनेन[4]। घञ् (३. ३. १९)। मुक्तानामावली दीर्घा पङ्क्तिः। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. हार , २. मुक्तावली- ये दो नाम मुक्ताहार के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग, द्वितीय स्त्रीलिङ्ग हैं।

देवच्छन्दोऽसौ शतयष्टिकः।

कृष्णमित्रटीका :- असौ हारः। शतयष्टिकः शतलतिकः। देवैः छन्द्यते। 'छदि संवरणे' (चु. प. से.)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- देवच्छन्दः- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम सौ लड़ी वाले हार का हैं।

1. A short necklace [2] 2. The short necklace made of gold [1] 3. A necklace of pearls hanging over the breast [1] 4. M. ह्रियतेनेन 5. A necklace of pearls [2] 6. A pearl-necklace of hundred strings [1].

हारभेदा यष्टिभेदाद्-गुच्छगुच्छार्ध[1]गोस्तनाः ॥१०५॥
अर्धहारो माणवक एकावल्येकयष्टिका।
सैव नक्षत्रमाला स्यात्सप्तविंशतिमौक्तिकैः ॥१०६॥

कृष्णमित्रटीका :- यष्टीनां भेदात्, हारभेदः स्युः। गूयते। गुङः (भ्वा. आ. अ.) छक्। 'द्वात्रिंशल्लतिको गुच्छो गुच्छार्धऽस्तत्त्व[2] संख्यकः।' चत्वारिंशल्लतो गोस्तनः। गोः[3] स्तन इव ॥१०५॥ चतुःपञ्चाशल्लतोऽर्धहारः[4]। विंशतिलतो माणवकः, अल्पत्वात्। एका चासावावली च। एकावल्येव सप्तविंशतिमुक्ताभिः कृता नक्षत्राणां मालेव ॥१०६॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. गुत्सः२. गुत्सार्धः, ३. गोस्तनः॥१०५॥, ४. अर्धहारः, ५.माणवकः, ६. एकावली, ७. एकयष्टिका- ये सात नाम हारों के भेद-विशेष के हैं, जिनमें पाँच पुंल्लिङ्ग शेष दो स्त्रीलिङ्ग हैं।

नक्षत्रमाला- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम २७ दानों के हार का है॥१०६॥

आवापकः पारिहार्यः कटकं[6] वलयोऽस्त्रियाम्।

कृष्णमित्रटीका :- आ उप्यते। 'डुवप्' (भ्वा. उ. अ.)। परिह्रियते। ण्यत् (३. १. १२४)। कटति। क्वुन् (उ. २. ३२)। वलते। 'बलिमलि-' (उ. ४.९९) इति कयन्। 'प्रकोष्ठाभरणस्य' चत्वारि। 'चूरी (ड़ी)' लोके॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. आबापकः, २. परिहार्यः , ३. कटकः, ४. वलयः- ये चार नाम कलाई के आभूषण के हैं। इनमें एक-दो पुल्लिङ्ग हैं, तीन-चार पुल्लिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग हैं।

केयूरमङ्गदं तुल्ये

कृष्णमित्रटीका :- के बाहुशिरसि यौति। खर्जादिः (उ. ४. ९०)। अङ्गं दयते। 'बाजूबन्द' (लोके)॥[8]

हिन्दी अर्थ :-१. केयूरम्, २. अङ्गदम्- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम बाँह पर धारण किये जाने वाले आभूषण के हैं।

अङ्गुलीयकमूर्मिका ॥१०७॥

1. B. reads गुत्सगुत्स्पर्ध 2. M. गुछार्धे 3. M. गो 4. M. चतुःपञ्चाशल्लतोर्धहारः 5. **Seven kinds of pearl-necklaces [1 each] 6. B. and K. read** कटकः **7. A bracelet worn on the fore-arm [4] 8. Armlet [2].**

कृष्णमित्रटीका :- अङ्गुलौ भवम्। 'जिह्वामूला' (४. ३. ६२) इति छः ऊर्मिरिव। 'मुंदरी' (लोके)॥१०७॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. अङ्गुलीयकम्, २. ऊर्मिका - ये दो नाम अंगूठी के हैं, इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय स्त्रीलिङ्ग हैं॥१०७॥

साक्षराऽङ्गुलिमुद्रा सा

कृष्णमित्रटीका :- सा ऊर्मिका साक्षरा चेत्। अङ्गुल्या मुदं राति। 'मोहर' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- अङ्गुलिमुद्रा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम नामाङ्कित अंगूठी का है।

कङ्कणं कभूषणम्।

कृष्णमित्रटीका :- कं शुभं कणति। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. कङ्कणम्, २. करभूषणम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम मणिबन्ध पर पहने जाने वाले आभूषण के हैं।

स्त्रीकट्याँ मेखला काञ्ची सप्तकी रसना[4] तथा॥१०८॥
क्लीबे सारसनं च

कृष्णमित्रटीका :- मखं गतिं लाति। काञ्चते। 'काचि दीप्त्यादौ' (भ्वा. आ. से.)। सपति। 'षप समवाये' (भ्वा. प. से.)। तन्। 'रस शब्दे' (भ्वा. प. से.)॥१०८॥ सारं उत्कृष्टं सनमस्य। 'स्त्रीकटिभूषणस्य' पञ्च॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. मेखला, २. काञ्ची , ३. सप्तकी, ४. रशना ॥१०८॥, ५. सारसना- ये पाँच नाम कटि-भूषण के हैं, इनमें एक से चार स्त्रीलिङ्ग और पाँचवाँ नपुंसकलिङ्ग है।

अथ पुंस्कट्याँ शृङ्खलं त्रिषु।

कृष्णमित्रटीका :- पुंसां कट्याँ चेत्काञ्ची। श्रङ्गैः खलति। एकम्॥[6]

हिन्दी अर्थ :- शृङ्खालम्- यह एक (त्रिलिङ्ग) नाम पुरुष की करघनी का हैं।

पादाङ्गदं तुलाकोटिः मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियाम्॥१०९॥

कृष्णमित्रटीका :- पादस्याङ्गदमिव। तुलकारं कोटिरग्रमस्य। द्वे। 'विंदिञा' (लोके)। 'पायजेब' इत्यन्ये॥[7]

1. **A finger-ring** [2] 2. **A seal-ring** [1], 3. **A bracelet worn round the wrist** [2] 4. **Majority reads** रशना 5. **The girdle of a woman** [5] 6. **The girdle of a man** [1] 7. **A kind of anklet called payajeba or vichiya** [2].

मञ्जति। 'मज्जेः' सौत्रादीरः। नुवति पुरम्। 'नु स्तुतौ' (तु. प. से.)। 'घुघरु' (लोके)॥१०९॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. पादाङ्गदम्, २. तुलाकोटिः, ३. मञ्जीरः, ४. नूपरः:- ये चार नाम पायजेब के है। इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय स्त्रीलिङ्ग तृतीय-चतुर्थ पुल्लिङ्ग हैं॥।१०९॥

हंसकः पादकटकः

कृष्णमित्रटीका :- हसं इव। पादस्य कटकः, वलयः। 'गुजरी' इति 'जेहरि' इति च लोके॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. हंसकः, २. पादकटकः:- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम नूपुर के हैं और इसके पूर्व के लिखे हुए चार नाम भी पर्यायवाचक हैं।

किङ्किणी क्षुद्रघण्टिका।

कृष्णमित्रटीका :- किञ्चित्किणोऽत्र[3]। क्षुद्रा चासौ घण्टिका। 'घटि दीप्तौ' (चु. उ. से.)। 'घूघुरु' (लोके)। 'पादाटनोऽङ्घ्रिवलयम्[4]' "जेहरि" 'नवटोङ्गुष्ठ-मौंद्रिकम्[5]।' "अनवट" 'ताटङ्कः कर्णवलयम्' "वीर" 'हृन्माणिक्यं च तुष्किका॥' "धुकधुकी" (लोके)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. किङ्किणी, २. क्षुद्रघण्टिका- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम घूँघुरू के हैं।

त्वक्फलकृमिरोमाणि वस्त्रयोनिः

कृष्णमित्रटीका :- त्वक्फलं क्रिमि रोम चेति। वस्त्रस्ययोनिरूपादानकारणम्।[7]

हिन्दी अर्थ :- त्वगादीनि-वस्त्रयोनिः- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम वस्त्र बनाने में उपयोगी, छाल, फल, कृमि और रोंए का है।

दश त्रिषु॥११०॥

कृष्णमित्रटीका :- वक्ष्यमाणानि दश त्रिषु॥११०॥

हिन्दी अर्थ :- आगे कहे जाने वाले दस नाम (स्त्रीलिङ्ग) है॥११०॥

वाल्कं क्षौमादि

कृष्णमित्रटीका :- वल्कस्य त्वचो विकारः वाल्कम्। क्षौमादि। क्षुमाया विकारः। 'भंगरा' लोके॥[8]

1. Anklet [2] 2. A kind of anklet called gujari or jehari [2] 3. M. किंचित्कणोत्र 4. M. पादाटनोङ्घ्रिवलयं 5. M. नवटोङ्गुष्ठमौद्रिकम् 6. A small bell (ghungharu) [2] 7. The material of cloth such as bark [1] 8. The cloth made of the barks of trees [1].

हिन्दी अर्थ :- १. वाल्कम्, २. क्षौमम्- ये दो (त्रिलिङ्ग) नाम तीसी या केले आदि के छाल से बने हुए कपड़ों के हैं।

फालं तु कार्पासं बादरं च तत्।

कृष्णमित्रटीका :- फलस्य विकारः। कर्पास्या वादर्याश्च फलं कर्पासं वदरं तस्य विकारः॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. फालम्, २. कार्पासम्, ३. वादरम्- ये तीन (त्रिलिङ्ग) नाम कपास के बने सूती कपड़े के हैं।

कौशेयं कृमिकोशोत्थम्

कृष्णमित्रटीका :- कोशे सम्भूतम्। 'कोशाड्ढञ्' (४. ३. ४२)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- कौशेयम्- यह एक (त्रिलिङ्ग) नाम कृमिकोश से निकले सूत से बने पीताम्बर आदि रेशमी कपड़े के हैं।

राङ्कवं मृगरोमजम्॥१११॥

कृष्णमित्रटीका :- 'रङ्कोरमनुष्येऽण[3] च' (४. २. १००)। मृगशब्देन पशुमात्रग्रहणात्कम्बलाद्यपि राङ्कवम्॥१११॥[4]

हिन्दी अर्थ :- राङ्कवम्- यह एक (त्रिलिङ्ग) नाम ऊनी कपड़े का है। 'मृगरोमजम्' यहाँ पर मृगशब्द पशुमात्र परक है अतः राङ्कवम् से कम्बलादि भी लिये जायँगे।

अनाहतं निष्प्रवाणि तन्त्रकं च नवाम्बरे।

कृष्णमित्रटीका :- न आहतम्। निर्गता प्रवाणी तन्तुवायशलाकाऽस्मात्[5]। 'तन्त्रादचिरापहृते' (५. २. ७०)। नवं च तदम्बरं च। चत्वारि॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. अनहतम्, २. निष्प्रवाणि, ३. तन्त्रकम्, ४. नवाम्बरम् - ये चार नाम कोर कपड़े के हैं, इनमें एक से तीन त्रिलिङ्ग चतुर्थ नपुंसकलिङ्ग हैं।

तत्स्यादुद्गमनीयं यद्धौतयोर्वस्त्रयोर्युगम्॥११२॥

कृष्णमित्रटीका :- उद्गम्यतेऽभिलष्यते[7]। 'धौते' (एकम्)॥११२॥[8]

1. The cloth made of the fruits of cotton plant [3] 2. Silk [1] 3. M. रङ्कोरमनुष्येण् 4. A woolen cloth made of deer's or animal's hair [2] 5. M. तन्तुवायशलाकास्मात्, 6. A new cloth [4] 7. M. उद्गम्यतेभिलष्यते 8. A pair of washed clothes [1].

हिन्दी अर्थ :- उद्‌गमनीयम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम धुलाए हुए कपड़े के हैं। युग शब्द की विवक्षा यहाँ नहीं है।।११२।।

पत्त्रोर्णं धौतकौशेयम्

कृष्णमित्रटीका :- पत्रेषु कृतोर्णाऽस्त्यत्र[1]। धौतं च तत्कौशेयम्। प्रक्षालितकौशेयम्।।[2]

हिन्दी अर्थ :- १. पत्त्रोर्णम् , २. धौतकौशेयम् -ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम घुलाए हुए रेशमी कपड़े के हैं।

बहुमूल्यं महाधनम्।

कृष्णमित्रटीका :- बहुमूल्यमस्य। महद्धनं मूल्यमस्य।[3]

हिन्दी अर्थ :- १. बहुमूल्यम्, २. महाधनम् - ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम ज्यादे दामवाले वस्त्र के हैं।

क्षौमं दुकूलं स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- कूलति। 'कुल आवरणे' (भ्वा. प. से.)। 'पट्टवस्त्रस्य' द्वे।।[4]

हिन्दी अर्थ :- १.क्षौमम्, २. दुकूलम्- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम पीताम्बर के हैं।

द्वे तु निवीतं प्रावृतं त्रिषु।।११३।।

कृष्णमित्रटीका :- निवीयते। 'व्येञ्-' (भ्वा. उ. अ.)। क्तः (३. २. १०२) 'उपभुक्तवस्त्रस्य' द्वे।।११३।।[5]

हिन्दी अर्थ :- १. निवीतम्, २. प्रावृतम्- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम ढके हुए वस्त्र के हैं।

स्त्रियां बहुत्वे वस्त्रस्य दशाः स्युर्वस्तयोर्द्वयोः।

कृष्णमित्रटीका :- दशति। भिदादिः (३. ३. १०६)। 'वसेस्तिः' (उ. ४. १७९)। 'वस्त्रान्तदशायाः' द्वे।।[6]

हिन्दी अर्थ :- १. दशाः, २. वस्तयः- ये दो नाम वस्त्र की किनारी के हैं, इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग नित्य बहुवचन व द्वितीय स्त्रीलिङ्ग पुल्लिङ्ग नित्य बहुवचन है।

दैर्घ्यमायाम आनाहः

1. M. कृता ऊर्णास्त्यत्र 2. **A washed silk-garment** [2] 3. **Costly or expensive** [2] 4. **Silken cloth or woven silk** [2] 5. **A cloth worn out** [2] 6. **The border of a cloth** [2].

कृष्णमित्रटीका :- 'कञ्चुकं गात्रवसनम्' ''जामा'' 'कञ्चुकी कुचगोपिका' ''चोली''। दीर्घस्य भावः। आयम्यतेऽनेन[1]।।[2]

हिन्दी अर्थ :- १. दैर्घ्यम्, २. आयामः, ३.आरोहः- ये तीन नाम कपड़े आदि की लम्बाई के हैं, इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग, पुल्लिङ्ग और द्वितीय, तृतीय पुल्लिङ्ग हैं।

परिणाहो विशालता।।११४।।

कृष्णमित्रटीका :- विशालस्य भावः। 'पनहा' (लोके)।।११४।।[3]

हिन्दी अर्थ :- १. परिणाहः, २. विशालता- ये दो नाम कपड़े आदि की चौड़ाई के हैं, जिनमें प्रथम द्वितीय स्त्रीलिङ्ग हैं।।११४।।

पटच्चरं जीर्णवस्त्रम्

कृष्णमित्रटीका :- 'पटत्' इत्यव्यक्तशब्दं चरति। जीर्णं च तद्वस्त्रं च।।[4]

हिन्दी अर्थ :- १. पटच्चरम् , २. जीर्णवस्त्रम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम पुराने कपड़े के हैं।

समौ नक्तककर्पटौ।

कृष्णमित्रटीका :- नजते। 'ओनजी ब्रीडे' (तु. आ. से.)। बाहुलकात्तन्। करे पटः कर्पटः। शकन्ध्वादिः (वा. ६. १. ९४)। 'प्रस्वेदादिमार्जनार्थं हस्तस्य वस्त्रखण्डस्य' द्वे।।[5]

हिन्दी अर्थ :- १. नक्तकः, २. कर्पटः- ये दो पुल्लिङ्ग नाम कपड़े के टुकड़े (गमछे) के हैं।

वस्त्रमाच्छादनं वासश्चेलं वसनमंशुकम्।।११५।।

कृष्णमित्रटीका :- वस्यतेऽनेन[6]। ष्ट्रन् (उ. ४. १५८)। 'वसेर्णित्' (उ. ४. २१७) इत्यसुन्। चिल्यतेऽनेन[7]। 'चिल पसने' (तु. प. से.)। अंशून्कायति।।११५।।[8]

हिन्दी अर्थ :- १. वस्त्रम्, २. आच्छादनम्, ३. वासः, ४. चेलम्, ५. वसनम्, ६. अंशुकम्- ये छः नपुंसकलिङ्ग नाम कपड़ा मात्र के हैं।।११५।।

1. M. आयम्यतेनेन 2. **The length of a cloth** [3] 3. **The breadth of a cloth** [2] 4. **Old or rugged cloth** [2] 5. **A piece of cloth** (hand-keirchef) [2] 6. M. वस्यतेनेन 7. M. चिल्यतेनेन 8. **Cloth** (in general) [6].

सुचेलकः पटोऽस्त्री

कृष्णमित्रटीका :- शोभनं चेलमेव। पटति। 'पट गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'शोभनवस्त्रस्य' द्वे[1]॥

हिन्दी अर्थ :- १. सुचेलकः, २. पटः- ये दो नाम अच्छे कपड़े के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग और द्वितीय नपुंसकलिङ्ग हैं।

ना वराशिः स्थूलशाटकः।

कृष्णमित्रटीका :- वरमश्नुते अस्यति वा। वरासिः। 'शट रुजादौ' (भ्वा. प. से.)। 'स्थूलपटस्य' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. वराशिः, २. स्थूलशाटकः - ये दो नाम मोटे कपड़े के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग, द्वितीय त्रिलिङ्ग हैं।

निचोलः प्रच्छदपटः

कृष्णमित्रटीका :- निचोल्यते। 'चुल समुच्छ्राये' (चुरादिः)। प्रच्छद्यते। 'छद संवरणे' (चु. उ. से.)। येन शय्यादि प्रच्छाद्यते। 'बुरका' इत्यस्येत्यन्ये॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. निचोलः, २. प्रच्छदूपटः- ये दो पुल्लिङ्ग नाम पालकी आदि के ओहार एवं सारङ्गी आदि की खोली के है॥ इनमें प्रथम त्रिलिङ्ग भी है। बुरका, विस्तरे का चादर आदि को भी निचोल कहते हैं।

समौ रल्लककम्बलौ॥११६॥

कृष्णमित्रटीका :- रमणं रत्। रतं लाति रल्लः। कं बलयति। 'कम्ब गतौ' वा॥११६॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. रल्लकः, २. कम्बलः- ये दो पुल्लिङ्ग नाम कम्बल के हैं॥११६॥

अन्तरीयोपसंव्यानपरिधानान्यधोंशुके।

कृष्णमित्रटीका :- अन्तरा भवम्। गहादित्वात् (४. २. १३८) छः। उपसंवीयतेऽनेन[5]। परिधीयते। अधोदेहभागस्यांशुकम्। 'परिधानवस्त्रस्य' चत्वारि॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. अन्तरीयम्, २. उपसंव्यानम्, ३. परिधानम्, ४. अर्धोऽशुकम्- ये चार नपुंसकलिङ्ग नाम कमर से नीचे पहनने वाले कपड़ों के हैं।

द्वौ प्रावारोत्तरासङ्गौ समौ बृहतिका तथा॥११७॥
संव्यानमुत्तरीयं च

1. Fine cloth [2] 2. Coarse cloth [2] 3. Coverlet or covering [2] 4. Blanket [2] 5. M. उपसंवीतेनेन 6. Under or lower garment [4].

कृष्णमित्रटीका :- प्राव्रियतेऽनेन[1]। घञ् (३. ३. ५४)। उत्तरे आसज्यते। 'बृहत्या आच्छादने' (५. ४. ६) कन्॥११७॥ संवीयतेऽनेन[2]। उत्तरस्मिन्देहभागे भवम्। 'उपरिवस्त्रस्य' पञ्च॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रावारः, २. उत्तरासङ्गः, ३. बृहतिका, ४. संव्यानम्, ५. उत्तरीयम्- ये पाँच नाम कमर से ऊपर पहनने वाले कपड़ों के हैं, इनमें प्रथम - द्वितीय पुल्लिङ्ग , तृतीय स्त्रीलिङ्ग, चतुर्थ पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग हैं।

चोलकूर्पासको स्त्रियाम्[4]।

कृष्णमित्रटीका :- कूर्परे अस्यते। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। 'आप्रपदीनकञ्चुकस्य' इत्येके। 'स्त्रीणां कञ्चुलिकाख्यस्य' इत्यन्ये॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. चोल, २. कूर्पासकः- ये दो नाम स्त्रियों की कुर्ती चोली आदि के हैं, इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग हैं। यहाँ 'स्त्रियाः' पाठभेद विशेषोक्ति विवक्षित नहीं हैं। अतः पुरुष के कुर्ता, कमीज भी जिये जा सकते हैं।

नीशारः स्यात्प्रावरणे हिमानिलनिवारणे॥११८॥

कृष्णमित्रटीका :- नितरां शीर्यते। 'शॄ वायु' (वा. ३. ३. २१) इति घञ्॥११८॥[6]

हिन्दी अर्थ :- नीशार- यह एक पुल्लिङ्ग नाम शीत से बचने के लिये जाड़े में ओढे जाने वाले वस्त्र का है।

अर्धोरुकं वरस्त्रीणां स्याच्चण्डातकमंशुकम्।

कृष्णमित्रटीका :- अर्धोरौ काशते। डः (३. २. १०१)। चण्डां[7] कोपनामतति। क्वुन् (उ. २. ३२)। 'लहंगा' (लोके)॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. अर्धोरुकम्, २. चण्डातकम् - ये दो नाम लहँगा के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग है।

स्यात्त्रिष्वाप्रपदीनं तत्प्राप्नोत्याप्रपदं हि यत्॥११९॥

1. M. प्राव्रियतेनेन 2. M. संवीयतेनेन 3. Upper garment [5] 4. B. reads स्त्रियाः 5. Bodice [2] 6. Warm cloth (as rajai, blanket sc.) [1] 7. M. चण्डं 8. Short petticoat [2].

कृष्णमित्रटीका :- आप्रपदं पादाग्रं प्राप्नोति। 'पादाग्रपर्यन्तलम्बमानवस्त्रस्य' एकम्॥११९॥[1]

हिन्दी अर्थ :- आप्रपदीनम्- यह एक त्रिलिङ्ग नाम पैर तक लटकने वाले कपड़े का है॥११९॥

अस्त्री वितानमुल्लोचः

कृष्णमित्रटीका :- वितन्यते। घञ् (३. ३. १९)। ऊर्ध्वं लोचति। 'लोचृ भासने' (चु. उ. से.)। 'चंदवा' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. वितानम् , २. उल्लोचः- ये दो नाम चँदवा के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग हैं।

दूष्याद्यं वस्त्रवेश्मनि।

कृष्णमित्रटीका :- दूष्यते दूष्यम्। 'वस्त्र-गेहस्य' एकम्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- दूष्यम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम कपड़े के घर तम्बू आदि का है। आदि पद से पटकुटी, पटवासः, पटगृहम्, पटकुड्यम्, का ग्रहण है।

प्रतिसीरा जवनिका स्यात्तिरस्करिणी च सा॥१२०॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रतिगतासीरम्। 'जुः' सौत्रो गतौ (३. २. १५७)। ल्युडन्तात् (३. ३. ११७) कन्। तिरस्क्रियतेऽनया[4]। 'कनात' (लोके)॥१२०॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रतिसीरा, २. जवनिका, ३. तिरस्करिणी- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम पर्दा कनात आदि के हैं॥१२०॥

परिकर्माङ्गसंस्कारः

कृष्णमित्रटीका :- मलवर्जनार्था क्रिया परिक-र्मस्नानोद्वर्जनादि। अङ्गं संस्क्रियतेऽनेन[6]। 'शरीर शोभाधाय-ककर्मणः' द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. परिकर्म, २. अङ्गसंस्कारः- ये दो नाम साबुन आदि से शरीर के संस्कार करने के हैं।

स्यान्माष्टिर्मार्जना मृजा।

कृष्णमित्रटीका :- 'मृजू शुद्धौ' (अ. प. से.) 'ण्यास-' (३. ३. १०७) इति युच्। 'प्रोञ्छनादिनाङ्गनिर्म-लीकरणस्य' त्रीणि॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. मार्ष्टिः, २. मार्जना, ३. मृजा-ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम पोंछकर शरीर को निर्मल करने के हैं।

उद्वर्तनोत्सादने द्वे समे

कृष्णमित्रटीका :- उद्वर्त्यतेऽनेन[1]। उत्साद्य-तेऽनेन[2]। 'षद्लृ-' (तु. प. अ.)। 'उद्वर्तनद्रव्येणाङ्गनिर्मली-करणस्य' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. उद्वर्तनम्, २. उत्सादनम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम उबटन, साबुन आदि से शरीर को मलने के हैं।

आप्लाव आप्लवः॥१२१॥

स्नानम्

कृष्णमित्रटीका :- 'प्लुङ्-' (भ्वा. आ. से.)। 'विभाषाङि रुप्लुवोः' (३. ३. ५०) इति वा घञ्॥१२१॥ 'ष्णा शौचे' (अ. प. अ.)। भावे ल्युट् (३. ३. ११५) त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. आप्लाव, २. आप्लवः, ३. स्नानम्- ये तीन नाम स्नान करने के हैं।

चर्चा तु चार्चिक्यं स्थासकः

कृष्णमित्रटीका :- चर्चते। 'चर्च अध्ययने' (चु. उ. से.)। धात्वर्थे ण्वुल् (वा. ३. ३. १०८) चर्चिका। स्वार्थे ष्यञ् (वा. ५. १. १२४)। बाहुलकात्सः, स्थासः, ततः कः। 'चन्दनादिना देहविलेपनस्य' त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. चर्चा, २. चार्चिक्यम्, ३. स्थासकः- ये तीन नाम शरीर में चन्दन आदि लगाने के हैं। इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग और तृतीय पुल्लिङ्ग हैं।

अथ प्रबोधनम्।

अनुबोधः

कृष्णमित्रटीका :- 'प्रयत्नेनोद्बोधनस्य' द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रबोधनम् , २. अनुबोध- ये दो नाम निकले हुए गन्ध को प्रयत्न द्वारा फिर से लाने के हैं। इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग हैं।

---

1. **A garment reaching to the feet** [1] 2. **Canopy** [2] 3. **Tent** [1] 4. M. तिरस्क्रियतेनया 5. **Curtain** [3] 6. M. संस्क्रियतेनेन 7. **Painting or perfuming the body** [2] 8. **Cleansing the body** [3].

1. M. उद्वर्त्यनेनेन 2. M. उत्साद्यतेनेन 3. **Cleaning the body with perfumes or fragrant unguents** [2] 4. **Bathing** [3] 5. **Smearing the body with sandal or unguents** [2] 6. **Reviving the secnt of a perfume** [2].

पत्रलेखा पत्राङ्गुलिरिमे समे ॥१२२॥

कृष्णमित्रटीका :- पत्राकारा लेखा। पत्त्रार्थेऽङ्गुलिव्यापारः[1]। 'स्तनकपोलादौ केशरादिना विरचितस्य तिलकविशेषस्य' द्वे॥१२२॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. पत्रलेखा, २. पत्राङ्गुलि- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम स्तन, गाल पर केसर आदि से बनायी गयी चित्रकारी के हैं॥१२२॥

तमालपत्त्रतिलकचित्रकाणि विशेषकम्।
द्वितीयं च तुरीयं च न स्त्रियाम्

कृष्णमित्रटीका :- तमालपत्त्रमिव। तिलवत् कायति। चित्रयति। विशेषयति। 'टीका (लोके)। द्वितीयं तिलकं तुरीयं विशेषकं स्त्रियां न भवतः। किं तु पुंनपुंसकयोः चत्वारि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. तमालपत्रम्, २. तिलक, ३. चित्रकम्, ४. विशेषकम्- ये चार नाम कस्तूरी, चन्दन आदि से ललाट पर तिलक लगाने के हैं। इनमें द्वितीय, चतुर्थ पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग, और प्रथम तृतीय नपुंसकल्गिङ्ग हैं।

अथ कुङ्कुमम् ॥१२३॥
कश्मीरजन्माग्निशिखं[4] वरं बाह्लीकपीतनम्।
रक्तसंकोचपिशुनं धीरलोहित चन्दनम् ॥१२४॥

कृष्णमित्रटीका :- 'कुंकुम्' इति शब्दोऽस्यास्ति[5]। अर्श आद्यच् (५. २. १२७)॥१२३॥ 'कशेर्मुट् च' (उ. ४. ३२) इतीरन्। कश्मीरे जन्मास्य। अग्निरिव शिखाऽस्य[6]। वृञः (स्वा. उ. से.) अप् (३. ३. ५८) वरम्। बह्लीके देशे भवम्। पीतं करोति। रज्यते स्म रक्तम्। सङ्कोचयति। 'कुच संपर्चनादौ' (भ्वा. प. से.) पिशति। 'पिश अवयवे' (तु. प. से.)। 'क्षुधिपिशि-' (उ. ३. ५५) इति उनन्, कित्। धियमीरयति। लोहितं च तच्चन्दनं च। एकादश 'केशरी (रि)' (लोके)॥१२४॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. कुङ्कुमम् ॥१२३॥ २. काश्मीरजन्मा, ३. अग्निशिखम्, ४. वरम्, ५. बाह्लीकम्, ६. पीतनम्, ७. रक्तम्, ८. संकोचम्, ९. पिशुनम्, १०. धीरन्, ११. लोहितवन्दनम्- ये ग्यारह नपुंसकलिङ्ग नाम केसर, कुङ्कम के हैं॥१२४॥

लाक्षा राक्षा[1] जतु क्लीबे यावोऽलक्तो द्रुमामयः।

कृष्णमित्रटीका :- लक्ष्यते रक्ष्यते। जायते। 'फलिपाटि-' (उ. १. १८) इत्युः। तोऽन्तादेशश्च[2]। यौति यवः स एव यावः न रक्तोऽस्मात्[3]। द्रुमाणामामयः। षट्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. राक्षा, २. लाक्षा, ३. जतु, ४. याव, ५. अलक्त, ६. द्रुमामय- ये छः नाम लाक्षा (लाख) के हैं। इनमें एक से दो स्त्रीलिङ्ग, तृतीय नपुंसकलिङ्ग, चार से छः पुल्लिङ्ग हैं।

लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञम्

कृष्णमित्रटीका :- लवं गच्छति, लूयते वा। देवानां कुसुमम्। श्रियः संज्ञाऽस्य[5]। त्रीणि॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. लवङ्गम्, २. देवकुसुम्, ३.श्रीसंज्ञम्- ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम लौंग के हैं।

अथ जायकम् ॥१२५॥
कालीयकं च कालानुसार्यं च

कृष्णमित्रटीका :- जयति गन्धान्तरम्। 'जि अभिभवे' (भ्वा. प. से.)। ण्वुल् (३. १. १३३)॥१२५॥ कालस्येदम्। 'वृद्धाच्छः' (४. २. ११४)। कालेन वस्तुना, अनुसर्तुं योग्यम्। 'कलंवक' (लोके)[7]

हिन्दी अर्थ :- १. जायकम्॥१२५॥, २. कालीयकम्, ३. कालानुसार्यम्- ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम सुगन्धित पीले चन्दन के हैं।

अथ समार्थकम्।
वंशकागुरुराजार्हलोहकृमिजजोङ्ककम् ॥१२६॥

कृष्णमित्रटीका :- वंशोऽस्त्यत्र[8]। ठन् (५. २. ११५)। न गुरु यस्मात्। राजानमर्हति। लुह्यते। 'लुह गार्द्ध्ये' (?)। कृमिभिर्जायते। षट्। 'अगर' (लोके)॥१२६॥[9]

हिन्दी अर्थ :- १. वंशिकम्, २. अगुरु, ३. राजार्हम्, ४. लोहम्, ५. कृमिजम्, ६. जोङ्गकम्- ये छः नपुंसकलिङ्ग नाम अगर के हैं॥१२६॥

---

1. M. पत्त्रार्थेगुंलिव्यापारः 2. **Drawing lines of painting on the body with coloured sandal, saffron, or any other fragrant substance** [2] 3. **The mark made with sandal wood or any other unguents on the forehead** [4] 4. **Majority reads** काश्मीरजन्माग्निशिखं 5. M. शब्दोऽस्त्यास्ति 6. M. शिखास्य 7. **Saffron** [1].

1. **B. reads** राक्षा लाक्षा 2. M. तोन्तादेशश्च 3. M. रक्तोस्मात 4. **Lac (red) used by women to die cerfain parts of the body** [6] 5. M. संज्ञास्य 6. **Clove** (3) 7. **A kind of sandal wood** [3] 8. M. वंशोस्त्यत्र 9. The fargrant aloe wood and tree [6].

कालागुर्वगुरु

कृष्णमित्रटीका :- कालं च तदगुरु च। 'कालागुरोः' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. कालागुरु, २. अगुरु-ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम काला अगर के हैं।

स्यात्तन्मङ्गल्या मल्लिगन्धि यत्।

कृष्णमित्रटीका :- मल्लिकापुष्पस्येव गन्धो यस्य। एकम्॥[2]

हिन्दी अर्थ :- मङ्गल्या- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम बेला के फूल के समान सुगन्ध देने वाले अगर का है।

यक्षधूपः सर्जरसो रालसर्वरसावपि॥१२७॥

बहुरूपोऽपि

कृष्णमित्रटीका :- यक्षान् धूपायति। सर्जस्य सालस्य रसः। राति अलति च। सर्वैः रस्यते॥१२७॥ बहूनि रूपाण्यस्य॥ 'राल' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. यक्षधूप, २. सर्जरस, ३. अराल, ४. सर्वरस॥१२७॥, ५. बहुरूप- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम राल, धूप के हैं।

अथ वृकधूपकृत्रिमधूपकौ।

कृष्णमित्रटीका :- वृक इव धूपः। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. वृकधूप, २. कृत्रिमधूप- ये दो पुल्लिङ्ग नाम अनेक सुगन्धित द्रव्यों से बनाये हुए धूप के हैं।

तुरुष्कः पिण्डकः सिह्लो यावनोऽपि

कृष्णमित्रटीका :- तुर त्वरणे' (जु. प. से.)। उसन्तात्कः। 'पिडि संघाते' (भ्वा. आ. से.)। अजन्तात् (३. १. १३४) कः। 'सि' इति ह्लादयति। डः। यवनदेशे भवः। 'सिल्हार' (लोके)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. तुरुष्क, २. पिण्डक, ३. सिह्ल, ४. यावन- ये चार पुल्लिङ्ग नाम लोहवान् के हैं।

अथ पायसः॥१२८॥

श्रीवासो वृकधूपोऽपि श्रीपिष्ट[6]-सरलद्रवौ।

कृष्णमित्रटीका :- पयसो विकारः॥१२८॥ श्रियो वासः। श्रियः सरलद्रवस्य पिष्टस्तच्चूर्णेन जनितत्वात्। 'सरलो देवदारुरेव' इति भ्रमः॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. पायस॥१२८॥, २. श्रीवास, ३. वृकधूप, ४. श्रीवेष्ट , ५. सरलद्रव- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम देवदारु के गोंद से बने हुए सुगन्धित द्रव्य विशेष के हैं।

मृगनाभिर्मृगमदः कस्तूरी च

कृष्णमित्रटीका :- मृगस्य नाभिः। कसति गन्धोऽस्याः[2]। 'कस गतौ' (भ्वा. प. से.)। खर्जूरादिः (उ. ४. ९०)[3] त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १.मृगनाभि, २. मृगमद, ३. कस्तूरी- ये तीन नाम कस्तूरी के हैं। इनमें प्रथम, द्वितीय पुल्लिङ्ग और तृतीय स्त्रीलिङ्ग हैं।

अथ कोलकम्॥१२९॥

कंकोलकं[5] कोशफलम्

कृष्णमित्रटीका :- कोलति। 'कुल संस्त्याने' (भ्वा. प. से.)॥१२९॥ कं कोलयति। कोशे फलमसय। 'मरिच' 'कंकोल' (इति च ख्यातस्य)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. कोलकम् ॥१२९॥, २. कक्लोकम्, ३. कोशफलम्- ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम कङ्कोल के हैं।

अथ कर्पूरमस्त्रियाम्।

घनसारश्चन्द्रसंज्ञः सिताभ्रो हिमवालुकः॥१३०॥

कृष्णमित्रटीका :- करोतीति करः, स चासौ पूरश्च। घनो दृढः सारोऽस्य। चन्द्रस्य संज्ञा यस्य। सितमभ्रमिव। हिभा वालुकाऽस्य[7]। 'बालुका' इत्यपि नामेत्यन्ये॥१३०॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. कपूर्रम, २. घनसार, ३. चन्द्रसंज्ञ, ४. सिताभ, ५. हिमवालुका- ये पाँच नाम कपूर के हैं। इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग, दो से चार पुल्लिङ्ग और पाँचवाँ स्त्रीलिङ्ग हैं॥१३०॥

गन्धसारो मलयजो भद्रश्रीश्चन्दनोऽस्त्रियाम्।

---

1. **Black kind of aloe wood** [2] 2. **A kind of aloe wood** [1] 3. **Resin** [5] 4. **Compound perfume** [2] 5. **Benzoin** [4] 6. **B. reads** श्रीवेष्ट-.

1. **Tunpenfine** [5] 2. M. गन्धोस्याः 3. **Musk** [3] 4. **Majority reads** कक्कोलम् 5. **A perfume prepared with the berries of the kankola plant** [3] 6. M. सारोस्य 7. M. वालुकास्य 8. **Camphor** [5].

कृष्णमित्रटीका :- गन्धसारो द्रवोऽस्य[1]। मलये जातः। भद्रा श्रीरस्य। चन्दयति। 'चदि आह्लादने' (भ्वा. प. से.)। ल्युट् (३. ४. ११३) चत्वारि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. गन्धसार २. मलयज, ३. भद्रश्री, ४. चन्दन- ये चार नाम श्रीखण्ड चन्दन के हैं। इनमें प्रथम द्वितीय पुल्लिङ्ग, तृतीय स्त्रीलिङ्ग, चतुर्थ पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग हैं।

तैलपर्णिकगोशीर्षे हरिचन्दनमस्त्रियाम्॥१३१॥

कृष्णमित्रटीका :- तिलपर्णी वृक्षभेदस्तत्र जातः (४. ३. २५) अण्। गोः शीर्षमिव। हरेरिन्द्रस्य चन्दनम्। 'चन्दनविशेषाणां' पृथक् पृथक्॥१३१॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. तैलपर्णिकम्, २. गोशीर्षम, ३. हरिचन्दनम्- ये तीन नाम क्रमशः सफेद चन्दन, कमल के समान गन्धवाले चन्दन, कपिल या पीले वर्ण वाले चन्दन के हैं। इनमें प्रथम, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग, तृतीय पुल्लिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग हैं।

तिलपर्णी तु पत्राङ्गं रञ्जनं रक्तचन्दनम्। कुचन्दनं च

कृष्णमित्रटीका :- तिलस्येव पर्णान्यस्याः। पत्रमेवाङ्गमस्य। रञ्जयति। कुचन्दनं निर्गन्धत्वात्। 'रक्तचन्दनस्य'॥[4]

हिन्दी अर्थः-१. तिलपर्णी, २. पत्राङ्गम्, ३. रञ्जनम्, ४. रक्तचन्दनम्, ५. कुचन्दनम्- ये पाँच नाम लालचन्दन के हैं। इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय से पंचम नपुंसकलिङ्ग हैं।

अथ जातीकोशजातीफले समे॥१३२॥

कृष्णमित्रटीका :- जात्याः कोशः 'जायफल' (लोके)॥१३३॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. जातीकोशम, २. जातीफलम् - ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम जायफल के हैं॥१३२॥

कर्पूरागुरुकस्तूरी कंकोलैर्यक्षकर्दमः।

कृष्णमित्रटीका :- कर्पूरादिभिः समभागैर्यक्ष-प्रियः कर्दमः॥[6]

हिन्दी अर्थ :- यक्षकर्दम- यह एक पुल्लिङ्ग नाम कपूर, अगर, कस्तूरी और कङ्कोल इन चारों को बराबर मिलकार बनाये हुए लेपविशेष का है।

गात्रानुलेपनी वर्तिर्वर्णकोऽस्त्री विलेपनम्[1]॥१३३॥

कृष्णमित्रटीका :- गात्रमनुलिप्यतेऽनया[2]। वर्त्यते। 'अच इः' (उ. ४. १३८)। 'गात्रानुलेपनयोग्यस्य पिष्टसुगन्धस्य' चत्वारि। वर्णं करोति। ण्वुल् (३. १. १३३)। 'घृष्टचन्दनादिलेपमात्रस्य' द्वे॥१३३॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. गात्रानुलेपनी, २. वर्त्ति, ३. वर्णकम्, ४. विलेपनम्- ये चार नाम लेप करने के लिये पीसे या घिसे हुए द्रवविशेष के हैं। इनमें प्रथम, द्वितीय स्त्रीलिङ्ग, तृतीय चतुर्थ नपुंसकलिङ्ग हैं॥१३३॥

चूर्णानि वासयोगाः स्युः

कृष्णमित्रटीका :- 'चूर्ण प्रेरणे' (चु. प. से.)। घञ् (३. ३. १९)। वासे सुगन्धीकरणे योगा उपायाः। 'पटवासादिक्षोदस्य' द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. चूर्णम्, २. वासयोग- ये दो नाम कपड़े या गुलाब आदि से सुगन्धित करने योग्य गन्धद्रव के चूर्ण के हैं।

भावितं वासितं त्रिषु।

कृष्णमित्रटीका :- भाव्यते। वास्यते। 'वस स्नेहनादौ' (चु. उ. से.) 'द्रव्यान्तरभावितस्य' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. भावितम्, २. वासितम्- ये दो त्रिलिङ्ग नाम केवड़ा या गुलाब आदि से सुगन्धित कपड़े आदि के हैं।

संस्कारो गन्धमाल्याद्यैर्यः स्यात्तदधिवासनम्॥१३४॥

कृष्णमित्रटीका :- धूपादिभिर्वस्त्रादीनां यः संस्कारः। अधिकं वास्यते। 'वास उपसेवायाम्' (चुरादिः)॥१३४॥[6]

हिन्दी अर्थ :- अधिवासनम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम गुलाब जल या सुगन्धित फूल आदि से पान, तिल, वस्त्र आदि को सुवासित करने का है।

माल्यं मालास्रजौ मूर्ध्नि

1. M. द्रवोस्य 2. **Sandal wood** [5] 3. **White sandal wood, go'sirsa, and yellow sandal wood, haricandana** [1 each] 4. **Red sandal** [5] 5. **Nutmeg** [2] 6. **An ointment consisting of camphor, agallochum, M & K and kankola in equal propontions** [1].

1. **B. reads** वर्तिर्वर्णकं स्याद्विलेपनम् 2. M. गात्रमनुलोप्यतेनया, 3. **An ointment prepared with rubbed sandal and other fragrant perfumes** [4] 4. **perfumed powder** [2] 5. **Any perfumed or scented thing** [2] 6. **Scenting with perfumes or odorous substances** [1].

कृष्णमित्रटीका :- मल्यते। 'मल धारणे' (भ्वा. आ. से.)। ण्यत् (३. १. १२४)। मां लाति। सृज्यते स्रक्। मूर्ध्नि शिरसि। अङ्गान्तरस्योपलक्षणमिदम्। त्रीणि॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१. माल्यम, २. माला, ३. स्रक्, ये तीन नाम शिरसे धारण की हुई मालामात्र के हैं। जिनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग द्वितीय तृतीय स्त्रीलिङ्ग हैं। यहाँ 'मूर्ध्नि' अविवक्षित है। क्योंकि अन्यत्र भी माला पहनी जाती है।

केशमध्ये तु गर्भकः।

कृष्णमित्रटीका :- गर्भ इव। एकम्॥[2]

हिन्दी अर्थ :- गर्भक- यह एक पुल्लिङ्ग नाम केश के बीच में लगायी जानेवाली माला का है।

प्रभ्रष्टकं शिखालम्बि

कृष्णमित्रटीका :- शिखातो लम्बते। एकम्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- प्रभ्रष्टम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम चोटी से लटकती हुई माला का है।

पुरो न्यस्तं ललामकम्॥१३५॥

कृष्णमित्रटीका :- पुरोभागे न्यस्तं माल्यं ललाटपर्यन्तं ललाममिव॥१३५॥[4]

हिन्दी अर्थ :- ललामकम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम ललाट पर धारण की हुई माला का है॥१३५॥

प्रालम्बमृजुलम्बि स्यात्कण्ठात्

कृष्णमित्रटीका :- प्रालब्ते। ऋजु लम्बितं शीलमस्य॥[5]

हिन्दी अर्थ :- प्रालम्बम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम गले में सीधी लटकती हुई माला का है।

वैकक्षकं तु तत्।

यत्तिर्यक् क्षिप्तमुरसि

कृष्णमित्रटीका :- विशिष्टः कक्षोऽस्माद्विकक्षमुरस्तत्र भवम्। एकम्॥[6]

हिन्दी अर्थ :- वैकक्षिकम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम जनेऊ की तरह तिर्छी पहनी हुई माला का है।

1. Garland [3] 2. A garland worn in the hair [1] 3. A garland hanging from the crest [2] 4. A garland worn on the the fore-head [1] 5. A garland worn straight [1] 6. A garland worn sideways like the sacred thread [1].

शिखास्वापीडशेखरौ॥१३६॥

कृष्णमित्रटीका :- शिखालिप्तमालः। आपीडयति। 'पीड अवगाहने' (चु. प. से.)। द्वे॥१३६॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. आपीड, २. शेखर- ये दो पुंल्लिङ्ग नाम शिखा में पहनी हुई माला के हैं॥१३६॥

रचना स्यात्परिस्पन्दः

कृष्णमित्रटीका :- रच्यते। 'स्पदि किंचिच्चलने' (भ्वा. आ. से.)। भावे घञ् (३. ३. १८)। 'शिल्पादिरचनायाः' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. रचना, २. परिस्पन्द- ये दो नाम शिल्पादि रचना के हैं जिनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय पुंल्लिङ्ग हैं।

आभोगः परिपूर्णता।

कृष्णमित्रटीका :- भूजेर्घञ् (३. ३. १८)। परिपूर्णस्य भावः। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. आभोग, २. परिपूर्णता- ये दो नाम सभी प्रकार से पूर्णता के हैं, इनमें प्रथम पुंल्लिङ्ग, द्वितीय स्त्रीलिङ्ग है।

उपधानं तूपबर्हः

कृष्णमित्रटीका :- उपधीयते शिरोऽत्र[4]। उपबृह्यतेऽत्र[5]। 'बृह वृद्धौ' (भ्वा. प. से.)। 'शिरोनिवेशनस्य' द्वे॥ 'तकिया' (लोके)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. उपधानम्, २. उपवर्ह- ये दो नाम तकिया के हैं, इनमें प्रथम नपुल्लिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग हैं।

श्य्यायां शयनीयवत्॥१३७॥

श्यनम्

कृष्णमित्रटीका :- शय्यतेऽस्मिन्[7]। शयनीयम्। ल्युटि शयनम्। त्रीणि 'तुलिकादेः' 'तोसक' (लोके)॥१३७॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. शय्या, २. शयनीयम् (अनीयरि), ४. शयनम्- ये तीन नाम बिछावन के हैं, इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग दो नपुंसकलिङ्ग हैं॥१३७॥

1. A garland worn on the head [2] 2. Making a garland [2] 3. Completion [2] 4. M. शिरोत्र 5. M. उपबृह्यतेत्र 6. Pillow [2] 7. M. शय्यतेस्मिन् 8. Bed. [3].

मञ्चपर्यङ्कपल्यङ्काः खट्वया समाः।

कृष्णमित्रटीका :- मञ्चते। 'मचि धारणे' (भ्वा. आ. से.)। परितोऽङ्क्यते[1]। 'अकि लक्षणे' (भ्वा. आ. से.)। 'परेश्च घाङ्कयोः' (८. २. २२) इति वा लः। खट्यते। 'खट काङ्क्षायाम्' (भ्वा. प. से.)। क्वुन् (उ. १. १५२)। चत्वारि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. मञ्च, २. पर्यङ्क, ३. पल्यङ्कः, ४. खट्वा- ये चार नाम पलंग के हैं, इनमें एक से तीन पुल्लिङ्ग, शेष स्त्रीलिङ्ग हैं।

गेन्दुकः कन्दुकः

कृष्णमित्रटीका :- गाते गाः, स इन्दुरिव। कन्द्यते। 'कदि रोदने' (भ्वा. प. से.)। बाहुलकादुकः। 'गेंदा' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. गेन्दुक, २. कन्दुक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम गेंद के हैं।

दीपः प्रदीपः

कृष्णमित्रटीका :- दीप्यतेऽनेन[4]। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. दीपः, २. प्रदीप- ये दो पुल्लिङ्ग नाम दीप के हैं।

पीठमासनम्॥१३८॥

कृष्णमित्रटीका :- पठन्त्यत्र। 'पिठ हिंसादौ' (भ्वा. प. से.)। बाहुलकाद्दीर्घः। आस्यतेऽत्र[6]। द्वे॥१३८॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. पीठम्, २. आसनम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम आसन के हैं॥१३८॥

समुद्रकः संपुटकः

कृष्णमित्रटीका :- समुद्गच्छति। डः (वा. ३. २. ४८)। संपुट्यते। 'पुट संश्लेषणे' (तु. प. से.)। 'डब्बा' (लोके)॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. समुद्गक, २. सम्पुटक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम सम्पुट के हैं।

प्रतिग्राहः पतद्ग्रहः।

कृष्णमित्रटीका :- प्रति गृह्णाति। णः (३. १. १४३)। पततो ग्रहः। 'पीकदानी' (लोके)॥[9]

1. M. परितोङ्क्यते 2. **Cot** [4] 3. **Ball.** [2] 4. M. दीप्यतेनेन 5. **Lamp** [2] 6. M. आस्यतेत्र 7. **Seat** [2] 8. **Casket** [2] 9. **Spitting-pot** [2].

हिन्दी अर्थ :- १. प्रतिग्राह, २. पतद्ग्रह- ये दो पुल्लिङ्ग नाम पीकदानी के हैं।

प्रसाधनी कङ्कतिका

कृष्णमित्रटीका :- प्रसाध्यतेऽनया[1]। कङ्कते। बाहुलकादतच्। 'ककही' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रसाधनी, २. कङ्कतिका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम कंघी के हैं।

पिष्टतः पटवासकः॥१३९॥

कृष्णमित्रटीका :- पिष्टमतति। पटो वास्यते येन। 'बुक्का' (लोके)॥१३९॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. पिष्टात्, २. पटवासक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम बुक्का के हैं॥१३९॥

दर्पणे मुकरादर्शौ

कृष्णमित्रटीका :- दर्पयति। 'दृप हर्षमोचनयोः' (दि. प. अ.)। मङ्कते। 'मकि मण्डने' (भ्वा. आ. से.)। 'मुकुरदर्दुरौ' (उ. १. ४०) इति साधुः। आदर्श्यतेऽत्र[4]। त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. दर्पण, २. मकुर, ३. आदर्श- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम दर्पण (ऐना, शीशा) के हैं।

व्यजनं तालवृन्तकम्।

इति नृवर्गः॥६॥

कृष्णमित्रटीका :- व्यजन्त्यनेन। 'अज गतिक्षेपणयोः' (भ्वा. प. से.)। तालस्येव वृन्तमस्य॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. व्यजनम्, २. तालवृन्तकम् - ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम पंखा के हैं।

इति मनुष्यवर्गः

अथ ब्रह्मवर्गः॥७॥

संततिर्गोत्रजनकुलान्यभिजनान्वयौ।

वंशोऽन्ववायः संतानः

कृष्णमित्रटीका :- संतन्यते। तनोतेः (तु. उ. से.), क्तिन् (३. ३. ९४)। गां त्रायते। जन्यतेऽनेन[7]। कोलति कुलति वा। अभिजन्यते। घञ् (३. ३. १९)। इणः। (अ. प. अ.) 'एरच्' (३. ३. ५६)। उश्यते। 'वश कान्तौ' (अ. प. से.)। पृषोदरादित्वान्नुम्। अन्ववाय्यते।

1. M. प्रसाध्यतेनया 2. **Comb** [2] 3. **Powder** [2] 4. M. आदर्श्यतेत्र 5. **Mirror** [3] 6. **Fan** [2] 7. M. जन्यतेनेन.

'अय गतौ' (भ्वा. आ. से.)। 'तनोतेश्च' (वा. ३. १. १४०) इति णः। नव॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. संतति, २. गोत्रम्, ३. जननम्, ४. कुलम्, ५. अभिजन, ६. अन्वय, ७. वंश ८. अन्ववाय, ९. सन्तान- ये नौ नाम वंश (कुल) के हैं। इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग दो से चार नपुंसकलिङ्ग, शेष पाँच पुल्लिङ्ग हैं।

वर्णाः स्युर्ब्राह्मणादयः ॥१॥

कृष्णमित्रटीका :- वर्ण्यते। 'वर्ण प्रेरणे' (चु. प. से.)॥१॥[2]

हिन्दी अर्थ :- वर्ण- यह एक पुल्लिङ्ग नाम ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र चारों वर्णों का वाचक है॥१॥

विप्रक्षत्रियविट्शूद्राश्चातुर्वर्ण्यमति स्मृतम्।

कृष्णमित्रटीका :- चत्वार एव वर्णाः। 'चतुर्वर्णादीनाम्' (वा. ५. १. १२४) इति ष्यञ्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- चातुर्वर्ण्यम्- यह एक नपुल्लिङ्ग नाम चारों वर्ण का है।

राजवीजी राजवंश्यः

कृष्णमित्रटीका :- राज्ञो बीजमस्त्यस्य। राज्ञो वंशे साधुः। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. राजवीजी, २. राजवंश्यः- ये दो पुल्लिङ्ग नाम राजकुल में उत्पन्न व्यक्ति के हैं।

वीज्यस्तु कुलसंभवः ॥२॥

कृष्णमित्रटीका :- वीजे साधुः। कुले संभवोऽस्य[5]। द्वे॥२॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. वीज्य, २. कुलसम्भवः- ये दो पुल्लिङ्ग नाम कुलमात्र में उत्पन्न व्यक्ति के हैं॥२॥

महाकुलकुलीनार्यसभ्यसज्जनसाधवः।

कृष्णमित्रटीका :- महच्च तत्कुलं च। तदपत्यम्। कुलादञ् खञौ (४. १. १४१)। कुलस्यापत्यम्। 'कुलात्ख' (४. १. १३९)। अर्यते। 'ऋ गतौ' (भ्वा. प. अ.)। ण्यत् (३. १. १२४)। सभायां साधुः। संश्चासौ जनश्च। 'कृवापा-' (उ. १.१) इत्युण्। साधुः। षट् 'कुलीनस्य'॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. महाकुल, २. कुलीन, ३. आर्य, ४. सभ्य, ५. सज्जन, ६. साधु- ये छः पुल्लिङ्ग नाम उत्तम कुल में उत्पन्न व्यक्ति के हैं।

ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्चतुष्टये ॥३॥ आश्रमोऽस्त्री

कृष्णमित्रटीका :- ब्रह्म वेदः। तदध्ययनार्थं व्रतमपि ब्रह्म। तच्चरितुं शीलमस्य। गृहाः दाराः सन्त्यस्य। वनमेव प्रस्थो देशः। 'तत्र भवः' (४. ३. ५२) भिक्षते। तच्छीलः। 'सनाशंस-' (३. २. १६८) इत्युः॥३॥ आसमन्तात् श्रमोऽत्र। एकम्॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. ब्रह्मचारी, २. गृही, ३. वानप्रस्थ, ४. भिक्षु- ये चार पुल्लिङ्ग नाम आश्रम शब्दवाच्य हैं, अर्थात् आश्रम (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) शब्द से ब्रह्मचर्याश्रमः, गृहस्थाश्रमः, वानप्रस्थाश्रमः, संन्यासाश्रमः, इन चार आश्रमों का ग्रहण होता है॥३॥

द्विजात्यग्रजन्मभूदेववाडवाः।

विप्रश्च ब्राह्मणः

कृष्णमित्रटीका :- द्वे जाती जन्मनी अस्य। जन्मना उपनयनेन च। अग्रे आदौ जन्मास्य। भुवो देवः। वडवायां जातः। विप्राति। 'प्रा पूतौ' (अ. प. अ.)। ब्रह्मणोऽपत्यम्[2]॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. आश्रम, २. द्विजातिः, ३. अग्रजन्मा, ४. भूदेव, ५. वाडव, ६. विप्र, ७. ब्राह्मण- ये सात पुंल्लिङ्ग नाम ब्राह्मण के हैं।

असौ षट्कर्मा यागादिभिर्युतः ॥४॥

कृष्णमित्रटीका :- असौ विप्रः यागादिभिर्युतः षट्कर्मा, षट्कर्माण्यस्य। एकम्॥४॥[4]

हिन्दी अर्थ :- षटकर्मा- यह एक पुंल्लिङ्ग नाम षट्कर्मी ब्राह्मण का है। यज्ञ करना, यज्ञ कराना, पढ़ना, पढ़ाना, दान देना और दान लेना ये छः कर्म हैं।

विद्वान् विपश्चिद्दोषज्ञः सन्सुधीः कोविदो बुधः। धीरो मनीषी ज्ञः प्राज्ञः संख्यावान्पण्डितः कविः॥५॥ श्रीमान्सूरिः कृती कृष्टिर्लब्धवर्णो विचक्षणः। दूरदर्शी दीर्घदर्शी

1. Lineage or family [9] 2. Brahmana and other castes. 3. The aggregate of the Hindu castes [1] 4. A royal descent [2] 5. M. संभवोस्य 6. Good family [2] 7. A high descent [6].

1. Four as'ramas brahmacarya, garhasthya, vanaprastha and sannyasa 2. M. ब्रह्मणोपत्यम् 3. Brahmana [6] 4. A Brahmana perporming the six duties enjoined on him [1].

कृष्णमित्रटीका :- वेत्ति। 'विदः शतुर्वसुः' (७. १. ३६)। विप्रकृष्टं निश्चिनोति। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। दोषं जानाति। अस्तीति सन्। शत्रन्तः। सुष्ठुः ध्यायति। कुङः (भ्वा. आ. अ.) विच् (३. २. ७५)। गुणः (७. ३. ८४)। कोर्वेदस्य विदः। बुध्यते बुधः। धियमीरयति। मनीषाऽस्यास्ति[1]। ब्रीह्यादिः (५. २. ११६)। जानाति ज्ञः। प्रज्ञः एव प्राज्ञः। संख्या विचारणाऽस्त्यस्य[2]। सदसद्विवेचिनी बुद्धिः पण्डा, सा जाताऽस्य[3]। 'कुङ् शब्दे' (भ्वा. आ. अ.)। 'अच इः' (उ. ४. १३८)॥५। धीरस्यास्ति। सूते सूरिः। क्रिः (उ. ४. ६४)। कृतमनेन। 'इष्टादिभ्यश्च' (५. २. ८८) इतीनिः। कर्षति। क्तिच् (३. ३. १७४)। लब्धो वर्णः[4] स्तुतिर्येन। विचष्टे। 'अनुदात्तेतश्च-' (३. २. १४९) इति युच्। दूरात्पश्यति॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. विद्वान् , २. विपश्चित् , ३. दोषज्ञ , ४. सत् , ५. सुधी, ६. कोविद, ७. बुध , ८. धीर, ९. मनीषिन्, १०. ज्ञ, ११. प्राज्ञ, १२. संख्यावत् १३. पण्डित, १४. कवि ॥५॥, १५. धीमान् , १६. सूरि , १७. कृती, १८. कृष्टि, १९. लब्धवर्ण , २०. विचक्षण, २१. दूरदर्शी, २२. दीर्घदर्शी- ये बाईस पुल्लिङ्ग नाम विद्वान् (पण्डित) के हैं।

श्रोत्रियच्छान्दसौ समौ॥६॥

कृष्णमित्रटीका :- छन्दोऽधीते[6]। 'श्रोत्रियश्च-' (५. २. ८४)। 'तदधीते-' (४. २. ५९) पक्षे अण्। द्वे॥६॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. श्रोत्रिय, २. छान्दस- ये दो पुल्लिङ्ग नाम वेद पढ़ने वाले ब्राह्मण के हैं॥६॥

'मीमांसको जैमिनीये वेदान्ती ब्रह्मवादिनि।
वैशेषिके स्यादौलूक्यः सौगतः शून्यवादिनि॥प्र.॥
नैयायिकस्त्वक्षपादः स्यात् स्याद्वादिक आर्हकः।
चार्वाकलौकायतिकौ सत्कार्ये साङ्ख्यकापिलौ'॥प्र.॥

हिन्दी अर्थ :- १. मीमांसक, २. जैमिनीय- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम मीमांसा शास्त्र को जानने वाले के हैं। १. वेदान्तिन्, २. ब्रह्मवादिन्- ये दो (इन्नन्त पुल्लिङ्ग) नाम वेदान्ती के हैं। १. वैशेषिक, २. औलूक्य- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम सात पदार्थवादी के हैं। १. सौगत, २. शून्यवादिन् (इन्नन्त)- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम शून्यवादी के हैं। १. नैयायिक, २. अक्षपाद- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम न्यायशास्त्र को जानने वाले के हैं। १. स्याद्वादिक, २. आर्हक- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम मोक्ष है अथवा नहीं है ऐसे कहने वाले के हैं। १. चार्वाक, २. लौकायतिक- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम देहात्मवादी बौद्ध के हैं। १. सांख्य, २. कापिल- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम सांख्य को जाननेवाले के हैं।

उपाध्यायोऽध्यापकः

कृष्णमित्रटीका :- उपेत्याधीयतेऽस्मात्[1]। 'इङश्च' (३. ३. २१) इति घञ्। अध्यापयति। ण्वुल् (३. १. १३३)॥द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. उपाध्याय, २. अध्यापक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम वेद के एक देश को या वेदाङ्गों को जीविका के लिए पढ़ाने वाले के हैं।

अथ स्यान्निषेकादिकृद्गुरुः[3]।

कृष्णमित्रटीका :- निषेको गर्भाधानम्। गृणाति धर्मम्। 'गृ शब्दे' (क्र्या. प. से.)। 'कृग्रोरुच्च' (उ. १. २४) इत्युः। एकम्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- गुरुः- यह एक पुल्लिङ्ग नाम निषेकादि संस्कारों को सविधि करके अन्नादि से पालन करते हुए पढ़ाने वाले का है।

मन्त्रव्याख्याकृदाचार्यः

कृष्णमित्रटीका :- मन्त्रस्य वेदस्य व्याख्यानं करोति। आचर्यते। ण्यत् (३. १. १२४)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. मन्त्रव्याख्याकृत् , २. आचार्य- ये दो पुल्लिङ्ग नाम मन्त्रों की व्याख्या करने वाले या शिष्य का यज्ञोपवीत संस्कार कर कल्प और रहस्य के सहित वेदों को पढ़ाने वाले ब्राह्मण के हैं।

आदेष्टा त्वध्वरे व्रती॥७॥

यष्टा च यजमानः

---

1. M. मनीषास्यास्ति 2. M. विचारणास्त्यस्य 3. M. जातास्य 4. M. वर्णे 5. **Scholar or learned man** [22] 6. M. छन्दोधीते 7. **A Brahmana well-versed in the veda** [2].

1. M. उपेत्याधीतेस्मात् 2. **Preceptor** [2] 3. **B. reads** स निषेकादिकृद्गुरुः 4. **Guru** (spiritual preceptor) [1] 5. **An interpretor of the Veda** [1].

कृष्णमित्रटीका :- आदिशति प्रेरयति। ऋत्विजो यागादौ व्रतं भोजनादिनियमोऽस्यास्ति[1]॥७॥ यजते। तृच् (३. १. १३३)। 'पुङ्यजोः शानन्' (३. २. १२८)। त्रीणि॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१. व्रती, २. यष्टा, ३. याजमान - ये तीन पुल्लिङ्ग नाम यजमान अर्थात् यज्ञ करने वाले के हैं॥७॥

अथ स सोमवति दीक्षितः।

कृष्णमित्रटीका :- स व्रती सोमपानवति यागे आदेष्टा सन्। दीक्षा जाताऽस्य[3]। एकम्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- दीक्षित- यह एक पुल्लिङ्ग नाम यज्ञ में ऋत्विजों का आदेश देने वाले अथवा सोमयाजी यजमान के हैं।

इज्याशीलो यायजूकः

कृष्णमित्रटीका :- इज्या शीलमस्य। पुनः पुनर्यजते। 'यजजपदशां यङः' (३. २. ११६६) इत्यूकः। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. इज्याशील, २. यायजूक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम बार बार यज्ञ करने वाले के हैं।

यज्वा तु विधिनेष्टवान्॥८॥

कृष्णमित्रटीका :- 'सुयजोर्ङ्वनिप्' (३. १. १०३)। एकम्॥८॥[6]

हिन्दी अर्थ :- यज्वा- यह एक पुल्लिङ्ग नाम विधिपूर्वक यज्ञ करने वाले का है॥८॥

स गीष्प (र्प) तीष्ट्या स्थपतिः

कृष्णमित्रटीका :- स यज्वा। बृहस्पतिसवेनेष्टवान्। स्थीयते स्थः। घञर्थे (वा. ३. ३. ५८) कः। स्थस्य पतिः। एकम्॥[7]

हिन्दी अर्थ :- स्थपति- यह एक पुल्लिङ्ग नाम बृहस्पति नामक यज्ञ करने वाले का है।

सोमपीती तु सोमपः।

कृष्णमित्रटीका :- सोमः पीतोऽनेन[1]। पिबतेः थकि (उ. २. ७)। 'पीथी' इत्यन्ये। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. सोमपीति, २. सोमप- ये दो पुल्लिङ्ग नाम सोमयज्ञ करने वाले के हैं।

सर्ववेदाः स येनष्टो यागः सर्वस्वदक्षिणः॥६॥

कृष्णमित्रटीका :- सर्वं वेदयति। असुन् (उ. ४. १६८)। सर्वस्वं दक्षिणा यत्र स विश्वजिदादिर्येन कृतः॥६॥[3]

हिन्दी अर्थ :- सर्ववेदा- यह एक पुल्लिङ्ग नाम सर्वस्वदक्षिणा बाला विश्वजिदादि यज्ञ का है॥६॥

अनूचानः प्रवचने साङ्गेऽधीती

कृष्णमित्रटीका :- अनूक्तवान्। 'उपेयिवान्' (३. २. १०६) इति साधुः। प्रोच्यते प्रवचनो वेदस्तत्राधीतमनेन। एकम्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- अनूचान- यह एक पुल्लिङ्ग नाम व्याकरण आदि छः अङ्गों के सहित वेद को पढ़ने वाले का है।

गुरोस्तु यः।

लब्धानुज्ञः समावृत्तः

कृष्णमित्रटीका :- गुरोः सकाशाल्लब्धप्राप्तानुज्ञा येन। वृतेः 'गत्यर्था-' (३. ४. ७३) इति क्तः॥[5]

हिन्दी अर्थ :- समावृत्त- यह एक पुल्लिङ्ग नाम गुरु की आज्ञा से गृहस्थाश्रम में रहने के लिए गुरुकुल से लौटे हुए ब्रह्मचारी का है। गुरोः सकाशाल्लब्धाऽनुज्ञा येन सः, इति सम्बन्धः।

सुत्वा त्वभिषवे कृते॥१०॥

कृष्णमित्रटीका :- सुनोति सुत्वा। 'सुयजोङ्वनिप्' (३. २. १०३)। अभिषवोऽवभृथस्नानम्। एकम्॥[6]

हिन्दी अर्थ :- सुत्वा- यह एक पुल्लिङ्ग नाम यज्ञ के अन्त में अवभृथ स्नान किए हुए का है॥ १०॥

---

1. M. नियमोस्यास्ति 2. **One who performs a sacrifice** (yajna) [3] 3. M. जातास्य 4. **A priest engaged in Somavat sacrifice** [1], 5. **A constant sacrificer** [2] 6. **A performer of sacrifice in accordance with Vedic precepts** [1] 7. **A sacrificcer of Brhaspatiyajm** [1].

1. M. पीतोनेन 2. **A Soma-sacrificer** 3. **A person, who performs sacrifice by giving away all his wealth in daksina** 4. **A person who teaches Vedas with their branches** (angas) [1] 5. **A pupil, who has returned home with permission of his Guru** [1] 6. **A student who has performed his ablutions** (subsequent or preparatory to a sacrifice) [1].

छात्रान्तेवासिनौ शिष्यै

कृष्णमित्रटीका :- गुरोर्दोषावरणं छत्त्रम्। तच्छीलमस्य, छात्रः। 'छत्रादिभ्यो णः' (४. ४. ६२)। अन्ते समीपे वसति। शिष्यते। 'एतिस्तु-' (३. १. १०६) इति क्यप्। 'शास इत्-' (६. ४. ३४)। त्रीणि॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. छात्र, २.अन्तेवासी, ३. शिष्य- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम छात्र के हैं।

शैक्षाः प्राथमकल्पिकाः।

कृष्णमित्रटीका :- शिक्षामधीयते। प्रथमकल्प आरभ्यः प्रयोजनमेषाम्। 'प्रथमारब्धवेदानां' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. शैक्षा, २. प्राथमकल्पिका- ये दो पुल्लिङ्ग नाम अध्ययन को प्रथम आरम्भ किए हुए ब्रह्मचारी के हैं।

एकब्रह्मव्रताचारा मिथः सब्रह्मचारिणः॥११॥

कृष्णमित्रटीका :- एकस्मिन्ब्रह्मणि ब्रते वाचरणं येषां ते। परस्परं समानं ब्रह्म चरन्ति। 'व्रते' (३. २. ८०) इति णिनिः एकम्॥११॥[3]

हिन्दी अर्थ :- सब्रह्मचारी- यह एक पुल्लिङ्ग नाम आपस में समान वेद, समान आचरण वाले ब्रह्मचारियों अर्थात् समान शाखा पढ़ने वालों का है॥११॥

सतीर्थ्यास्त्वेकगुरवः

कृष्णमित्रटीका :- समाने तीर्थे गुरौ वसति। 'समानतीर्थे वासी' (४. ४. १०७) इति यत्। एको गुरुरेषाम्॥द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. सतीर्थ्या, २. एकगुरव- ये दो पुल्लिङ्ग नाम एक गुरु से पढ़ने वाले अर्थात् सहाध्यायी के हैं।

चितानग्निचित्।

कृष्णमित्रटीका :- 'अग्नौ चेः' (३. २. ९१) इति क्विप्। एकम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- अग्निचित्- यह एक पुल्लिङ्ग नाम अग्निहोत्री (अग्न्युपासक) का है।

1. **Disciple** [3] 2. **One, who has just entered upon the study of the Vedas and S'iksa** [1] 3. **A student going through the same studies and observing the same** 4. **A fellow-student** [1] 5. **A person, who has kept the sacred fire** [1].

पारम्पर्योपदेशे स्यादैतिह्यमितिहाव्ययम्॥१२॥

कृष्णमित्रटीका :- परंपराया आगतः। अणन्तात् (४. ३. ७४) स्वार्थे ष्यञ्। पारंपर्यश्चासावुपदेशश्च। 'अनन्तावसथ-' (५. ४. २३) इति ञ्यः। ऐतिह्यम्। द्वे॥१२॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. ऐतिह्यम्, २. इति ह- ये दो नाम अव्यय हैं, जो परम्परया प्राप्त उपदेश अर्थ को कहते हैं॥१२॥

उपज्ञा ज्ञानमाद्यं स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- 'आतश्च-' (३. ३. १०६) इत्यङि उपज्ञा।[2]

हिन्दी अर्थ :- उपज्ञा- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम गुरुपदेश के बिना उत्पन्न सर्वप्रथम ज्ञान का है, जैसे- बिना गुरूपदेश के श्लोक निर्माण करने का ज्ञान वाल्मीकि को हुआ था।

ज्ञात्वारम्भ उपक्रमः।

कृष्णमित्रटीका :- क्रमेः (भ्वा. प. से.) घञि (३. ३. १८) उपक्रमः॥[3]

हिन्दी अर्थ :- उपक्रम- यह एक पुल्लिङ्ग नाम गुरु आदि से ज्ञान प्राप्त कर कार्य आरम्भ करने का है।

यज्ञः सवोऽध्वरो यागः सप्ततन्तुर्मखः क्रतुः॥१३॥

कृष्णमित्रटीका :- इज्यतेऽनेन[4]। 'यजयाच' (३. ३. ९०) इति नङ्। सूयते सोमोऽत्र[5]। षूञः (स्वा. उ. अ.) अप् (३. ३. ५७)। न ध्वरति। 'धृ कौटिल्ये' (भ्वा. प. अ.)। घञि (३. ३. १९) यागः। सप्तभिरग्निजिह्वाभिस्तन्यते। 'सितनि-' (उ. १. ६९) इति तुन्। मखत्यत्र। 'मख गतौ' (भ्वा. प. से.)। क्रियते। 'कृञः कतुः' (उ. १. ७७)। सप्त॥१३॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. यज्ञ , २. सव, ३. अध्वर, ४. याग, ५. सप्तन्त, ६. मख, ७. क्रतु- ये सात पुल्लिङ्ग नाम यज्ञ के हैं॥१३॥

पाठो होमश्चातिथीनां सपर्या तर्पणं बलिः।
एते पञ्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः॥१४॥

1. **Traditional instruction** (aitihya) [2] 2. **The knowledge acquired by self** [1] 3. **Commencemant** [1] 4. M. इज्यतेनेन 5. M. सोमोत्र 6. **Sacrifice** (yajna) [7].

कृष्णमित्रटीका :- पाठो घञ् (३. ३. १८)। हवनं होमः। 'अर्तिस्तु-' (उ. १. १४०) इति मन्। अतिथीनां गृहागतानां सपर्या पूजनम्। 'बल दाने' (भ्वा. आ. से.)। इन् (उ. ४. १. १७)। 'अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्। होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्॥ (मनुः ३. ७०)॥१४॥[1]

हिन्दी अर्थ :- पाठ- यह एक पुल्लिङ्ग नाम वेदादि पाठ करने का है। इसे ब्रह्मयज्ञ कहते हैं। १. होम (हवनमिति मन्) यह एक पुल्लिङ्ग नाम हवन करने का है।

तर्पणम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम पिण्डदान (श्राद्धादि) से पितरों को सन्तुष्ट करने का है, इसे पितृयज्ञ कहते हैं।

बलि- यह एक पुल्लिङ्ग नाम बलि वैश्वदेव अर्थात् काकादि को बलि देने का है, इसे भूतयज्ञ कहते हैं॥ ये पाँच महायज्ञ कहे जाते हैं॥१४॥

समज्या परिषद् गोष्ठी सभासमितिसंसदः।
आस्थानी क्लीबमास्थाने स्त्रीनपुंसकयोः सदः॥१५॥

कृष्णमित्रटीका :- समजन्त्यस्याम्। 'अज गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'संज्ञायां समज-' (३. ३. ९९) इति क्यप्। परितः सीदन्त्यस्याम्। गावोऽनेकावाचस्तिष्ठन्त्यस्याम्[2]। सह भान्त्यस्याम्। समिपन्त्यस्याम्। इणः (अ. प. से.) क्तिन् (३. ३. ९४)। संसीदन्त्यत्र। आतिष्ठन्त्यत्र। सदेरसुन् (उ. ४. १८८)। सदः। नव॥१५॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. समज्या, २. परिषत्, ३. गोष्ठी, ४. सभा, ५. समिति, ६. संसत्, ७. आस्थानी, ८. आस्थानम्, ९. सद्- ये नौ नाम सभा के हैं। जिनमें एक से सात नाम स्त्रीलिङ्ग आठवाँ नपुंसकलिङ्ग. और 'सद्' स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग. दोनों हैं॥१५॥

प्राग्वंशः प्राग्घविर्गेहात्

कृष्णमित्रटीका :- हविः शालायाः पूर्वभागे यजमानादीनां स्थित्यर्थं गेहः प्राग्वंशः। प्राङ्वंशः स्थूणाऽत्र[4]॥[5]

हिन्दी अर्थ :- प्राग्वंश- यह एक पुल्लिङ्ग नाम हवनशाला के पूर्व दिशा में यजमान को बैठने के लिए बनाए हुए स्थान का है।

सदस्या विधिदर्शिनः।

कृष्णमित्रटीका :- सदसि साधवः। विधिं पश्यन्ति। ऋत्विग्विशेषा एते॥[1]

हिन्दी अर्थ :- सदस्य- यह एक पुल्लिङ्ग नाम यज्ञ में न्यूनाधिक विधि को देखने वाले ऋत्विक् का है।

सभासदः सभास्ताराः सभ्याः सामाजिकाश्च ते॥१६॥

कृष्णमित्रटीका :- सभायां सीदन्ति। सभां स्तृणन्ति। 'स्तृञ् आच्छादने' (क्र्या. प. से.)। समाजं रक्षन्ति। चत्वारि॥१६॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. सभासद्, २. सभास्तर, ३. सभ्य, ४. सामाजिक- ये चार पुल्लिङ्ग नाम सभासद के हैं॥१६॥

अध्वर्यूद्गातृहोतारो यजुस्सामर्ग्विदः क्रमात्।

कृष्णमित्रटीका :- न ध्वरति। विच् (३. २. ७५)। अध्वरं यौति। यजुर्वेत्ति यः। उद्गायति सामवित्। होता स य ऋग्वेदं वेद॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १.अध्वर्यु, २. उद्गाता, ३. होता- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम यजुर्वेद, सामवेद, ऋग्वेद, जानने वालों का क्रम से एक-एक है।

आग्नीध्राद्या धनैर्वार्या ऋत्विजो याजकाश्च ते॥१७॥

कृष्णमित्रटीका :- अग्निमिधे, अग्नित्। अग्नीधः स्थानमाग्नीध्रम्। 'अग्नीधः शरणे रण् भं च' (वा. ४. ३. १२०)। तात्स्थ्यात् सोऽप्याग्नीध्र[4]॥१७॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. आग्नीध, २. ऋत्विक्, ३. याजक- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम यज्ञ कराने वाले ब्राह्मणों के हैं।

वेदि परिष्कृता भूमिः

---

1. **Five sacrifices enjoined to be performed daily by a Brahmana** 2. M. गावीनेकावाचस्तिष्ठन्त्यस्याम् 3. **Assembly or meeting** [9] 4. M. स्थूणात्र 5. **A sort of sacrificial room for yajamana and others** [1].

1. **A priest who superintends performances of a sacrifice** [1] 2. **A member of or spectator at an assembly** [1] 3. **The sacrificial priests well-versed in the first three vedas** [1 each] 4. M. सोप्याग्नीध्रः 5. **A priest who kindles the sacred fire** [3].

कृष्णमित्रटीका :- वेद्यते वेदिः। 'अच इः' (उ. ४. १३८)। परितः कृता संस्कृता॥[1]

हिन्दी अर्थ :- वेदि- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम यज्ञ के लिए साफ की हुई भूमि का है।

समे स्थण्डिलचत्वरे।

कृष्णमित्रटीका :- स्थलन्त्यत्र। 'ष्ठल स्थाने' (भ्वा. प. से.)। 'मिथिलादयश्च' (उ. १. ५७) इति साधुः। चतन्त्यस्मिन्। ष्वरच् (उ. २. १२२)। 'यागार्थं संस्कृतभूमेः' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. स्थण्डिलम्, २. चत्वरम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम यज्ञ के लिए साफ किये हुए स्थान विशेष के हैं।

चषालो यूपकटकः

कृष्णमित्रटीका :- 'चष भक्षणे' (भ्वा. उ. से.)। 'सानसि-' (उ. ४. १०७) इति साधुः। यूपस्याग्रे कृतः कटाकारः। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. चषाल, २. यूपकटक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम यज्ञस्तम्भ के ऊपर गोल बनाये हुए काष्ठविशेष के हैं।

कुम्बा सुगहना वृतिः ॥१८॥

कृष्णमित्रटीका :- 'कुबि आच्छादने' (भ्वा, चु. प. से.)। गहना निविडा वृतिर्वेष्टनम्॥१८॥[4]

हिन्दी अर्थ :- कुम्बा- यह एक नाम चाण्डालादि यज्ञ न देखे इसलिये यज्ञभूमि के चारों तरफ बनाये हुए घेरे का है॥१८॥

युपाग्रं तर्म

कृष्णमित्रटीका :- यूपस्याग्रम्। तरति। मनिन् (३. २. ७५) द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. यूपाग्रम्, २. तर्म- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम यज्ञस्तम्भ के ऊपरी भाग के हैं।

निर्मन्थ्यदारुणि त्वरणिर्द्वयोः।

कृष्णमित्रटीका :- निर्मथ्यते। तच्च तद्दारु च। ऋच्छति। '-सृधृयमि-' (उ. २. १०२) इत्यनिः॥[6]

1. Altar [1] 2. An altar prepared for a sacrifice [2] 3. A wooden ring on the top of a sacrificial post [2] 4. The enclosure round a sacrficial ground [1] 5. The top of a sacrifical post [2] 6. A piece of wood used for kindling the sacred fire by attrition [1].

हिन्दी अर्थ :- अरणि- यह एक पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग नाम जिस काष्ठ को परस्पर रगड़कर यज्ञ के लिए आग निकाली जाय उस काष्ठविशेष का है।

दक्षिणाग्निर्गार्हपत्याहवनीयौ त्रयोऽग्नयः ॥१९॥

कृष्णमित्रटीका :- दक्षिणोऽग्निः[1]। 'गृहपतिना सयुक्ते ञ्यः' (४. ४. ९०)। आहूयतेऽत्र[2]॥१९॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. दक्षिणाग्नि, २. गार्हपत्य, ३. आवहनीयः- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम अग्नि विशेष के हैं॥१९॥

अग्नित्रयमिदं त्रेता

कृष्णमित्रटीका :- त्रायते त्राः। त्रासु इता त्रेता॥[4]

हिन्दी अर्थ :- त्रेता- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम तीनों अग्नियों के समुदाय का है।

प्रणीतः संस्कृतोऽनलः।

कृष्णमित्रटीका :- प्रकर्षं नीतः। एकम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- प्रणीत- यह एक पुल्लिङ्ग नाम मन्त्र से संस्कृत अग्नि का है।

समूह्यः परिचाय्योपचाय्यावग्नौ प्रयोगिणः ॥२०॥

कृष्णमित्रटीका :- समूह्यते। वहेः (भ्वा. उ. अ.) ऊहेः (भ्वा. आ. से.) वा। परिचीयते, उपचीयते च। 'अग्नौ परिचाय्योपचाय्यसमूह्याः' (३. १. १३१)। प्रयोगोऽस्ति[6] येषां ते। अग्नौ प्रयोक्तव्या अग्निनामनीत्यर्थः॥२०॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. समूह्य, २.परिचाय्य, ३. उपचाय्य- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम स्थान विशेष की अग्नि के हैं॥२०॥

यो गार्हपत्यादानीय दक्षिणाग्निः प्रणीयते। तस्मिन्नानाय्यः

कृष्णमित्रटीका :- दक्षिणाग्नित्वेन संस्क्रियते। आनीयते। 'आनाय्योऽनित्ये[8]' (३. १. १२७)। यस्तु वैश्यकुलयोनिः स 'आनेयः'॥[9]

1. M. दक्षिणोग्निः 2. M. आहूयतेत्र 3. Three sacred fires 4. Three sacred fires taken collectively [1] 5. The fire consecrated by mantras [1] 6. M. प्रयोगोस्ति 7. The sacrificial fire arranged in a circle [3] 8. M. आनाय्योनित्ये 9. The sacred fire taken from garhapatya [1].

हिन्दी अर्थ :- आनाय्य- यह एक पुल्लिङ्ग नाम गार्हपत्याग्नि से लाकर दक्षिणाग्नि से संस्कृत अग्नि का है।

आथाग्नायी स्वाहा च हुतभुक्प्रिया ॥२१॥

कृष्णमित्रटीका :- अग्नेः स्त्री। 'वृषाकपि' (४. १. ३७) इत्यैङ्। सुष्ठु आहूयन्तेऽनया[1]। डः (वा. ३. २. १०१)। हुतभुजः प्रिया। त्रीणि ॥२१॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. अग्नायी, २. स्वाहा, ३. हुतभुक्प्रिया- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम अग्नि की स्त्री स्वाहा के हैं ॥२१॥

ऋक्सामिधेनी धय्या सा या स्यादग्निसमिन्धने।

कृष्णमित्रटीका :- समिध आधीयन्तेऽनया[3]। 'समिधामाधाने षेण्यण्' (वा. ४. १२०)। धीयतेऽग्निरनया[4]। 'पाय्यसानाय्य-' (३. १. १२६) इति साधुः। 'अग्निः प्रज्वाल्यते यया ऋचा सा' द्वे ॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. सामिधेनी, २. धाय्या- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम अग्नि में लकड़ी छोड़कर जलाने में प्रयोग किये जाने वाले मन्त्र के हैं।

गायत्रीप्रमुखं छन्दः

कृष्णमित्रटीका :- गायन्तं त्रायते। गौरादिः (४. १. ४१)। षडक्षरपदा गायत्री, सप्ताक्षरमुष्णिक्, इत्यादि। छन्द्यते छन्दः। असुन्। एकम् ॥[6]

हिन्दी अर्थ :- गायत्री- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम गायत्री इत्यादि छन्द का है।

हव्यपाके चरुः पुमान् ॥२२॥[7]

कृष्णमित्रटीका :- हव्यस्य पाकः। चर्यते चरुः। 'भृमृशी-' (उ. १. ७) इत्युः ॥२२॥[8]

हिन्दी अर्थ :- चरु- यह एक पुल्लिङ्ग नाम अग्नि में हवन किये जाने वाले अन्न का है ॥२२॥

आमिक्षा सा शृतोष्णे या क्षीरे स्याद्दधियोगतः।

कृष्णमित्रटीका :- आमिष्यते। 'मिषु सेचने' (भ्वा. प. से.)। बाहुलकात्सक्। शृते तप्ते दुग्धे दधियोजनात् ॥[9]

1. M. आहूयन्तेनया 2. **Svaha, the wife of Agni.** 3. **Majority reads च** 4. M. आधीयन्तेनया 5. M. धीयतेग्निरनया 6. **The mantra, which is recited while kindling the sacrificial fire** [1] 7. **Metre e. g. Gayatri, usnik & C.** [1] 8. **An oblation of rice, barley and pulse boiled for presentation to the gods and manes** [1] 9. **A mixture of boiled and coagulated milk** [1].

हिन्दी अर्थ :-१. आमिक्षा, यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम उष्ण दूध में दही छोड़ने पर उत्पन्न विकार विशेष या छाछ का है।

धवित्रं व्यजनं तद्यद्रचितं मृगचर्मणा ॥२३॥

कृष्णमित्रटीका :- धूयतेऽनेन[1]। 'अर्तिलूधूसू' (३. २. १८४) इत्रः। मृगचर्मणा यद्रचितम् ॥२३॥[2]

हिन्दी अर्थ :- धवित्रम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग यज्ञ में आग प्रज्वलित करने हेतु मृगचर्म के बने पंखे का हैं ॥२३॥

पृषदाज्यं सदध्याज्ये

कृष्णमित्रटीका :- पृषद्भिः सहितमाज्यम्। दध्ना सहिते धृते एकम् ॥[3]

हिन्दी अर्थ :- पृषदाज्यम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम दधिमिश्रित घी का है।

परमान्नं तु पायसम्।

कृष्णमित्रटीका :- परमं च तदन्नं च। पयसि संस्कृतम्। द्वे ॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. परमान्नम् , २. पायसम् , ये दो न. नाम खीर के हैं।

हव्यकव्ये दैवपित्र्ये[5] अन्ने

कृष्णमित्रटीका :- हूयते। 'अचो यत्' (३. १. ६७)। कूयते पितृभ्यः। 'कु शब्दे' (अ. प. अ.)। देवान्नं हव्यम्, पित्रन्नं कव्यम् ॥[6]

हिन्दी अर्थ :- हव्यम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम देवताओं के उद्देश्य से हवन द्वारा दिए जाने वाले अन्न का है।

पितृणामिदम् पैत्रं- कव्यम् (कूयते पितृभ्यः इति यत्) यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम ब्राह्मण भोजनादि द्वारा पितरों के उद्देश्य से दिये जाने वाले अन्न का है।

पात्रं स्रुवादिकम् ॥२४॥

कृष्णमित्रटीका :- स्रवति धृतादिकम्। 'स्रुवः कः' (उ. २. ६१) ॥२४॥[7]

1. M. धूयतेनेन 2. **A fan made of the deer's skin** [1] 3. **Ghee mixed with coagulated milk** [1] 4. **Rice boilded in milk** [2] 5. **B prerters.** दैयपित्रे 6. **Oblations to gods and manes** [1 each] 7. **The laddle and other wooden vessels used in a sacrifice** [1].

हिन्दी अर्थ :- पात्रम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम स्रुवा, चमस, प्रोक्षणीं, प्रणीता, सूर्प, व्यजन, उलूखल, मुसल, ग्रह,स्फय इत्यादि बर्तनों का है॥२४॥

ध्रुवोपभृज्जुहूर्ना तु स्रुवो भेदाः स्रुचः स्त्रियः।

कृष्णमित्रटीका :- ध्रुवति। उपविभर्ति। 'द्युतिगमिजुहोतीनां द्वे च' जुहः। स्रवति स्रुवः। भेदास्तु स्त्रियः। स्रुवः चिक् (उ. २. ६२) एतद्भेदा स्त्रियः॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. ध्रुवा, २. उपभृत्, ३. जुहूः- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम स्रुवा के भेदों के हैं।

१. स्रुवः, २. स्रुक्- ये दो नाम स्रुव के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग द्वितीय स्त्रीलिङ्ग हैं।

उपाकृतः पशुरसौ योऽभिमन्त्र्य क्रतौ हतः॥२५॥

कृष्णमित्रटीका :- उपाक्रियते। 'कृञ् हिंसायाम्' (स्वा. उ. अ.)॥२५॥[2]

हिन्दी अर्थ :- उपाकृतः- यह एक पुल्लिङ्ग नाम वेद मन्त्र से अभिमन्त्रित कर यज्ञ में मारे जाने वाले पशु का है॥२५॥

परंपराकं शमनं प्रोक्षणं च वधार्थकम्।

कृष्णमित्रटीका :- परंपराया अकनम्। 'अक गतौ' (भ्वा. प. से.)। शाम्यतेः (दि. प. से.) ल्युट् (३. ३. ११५)। प्रकर्षेणोक्षणम्। वध हिंसायाम्। 'यज्ञाङ्गपशुहिंसनस्य' त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. परम्पराकम्, २. शमनम्, ३. प्रोक्षणम्- ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम यज्ञ में पशु मारने के हैं।

वाच्यलिङ्गाः प्रमीतोपसंपन्नप्रोक्षिता हते॥२६॥

कृष्णमित्रटीका :- 'मीञ् हिंसायाम्' (क्र्या. उ. अ.)। मीतः। 'पद गतौ' (दि. आ. अ.), क्तः। 'यज्ञे हतस्य पशोः' त्रीणि॥२६॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रमीत, २. उपसम्पन्न, ३. प्रोक्षित- ये तीन नाम यज्ञ में मारे हुये पशु के हैं॥२६॥

सांनाय्यं हविः

कृष्णमित्रटीका :- संनीयते। 'पाय्यसांनाय्य' (३. २. १२६) इति साधुः। हूयते। 'अर्तिशुचि-' (उ. २. १०८) इतीसिः। सांनाय्यं हविर्विशेषः। द्वे॥[5]

1. A sacrificial laddle [3] 2. The animal killed in a sacrifice [1] 3. Immolation of an animal at sacrifice [3] 4. Immolated animal at sacrifive [3] 5. A kind of oblation [2].

हिन्दी अर्थ :- १. सांनाय्यम्, २. हवि- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम हवन करने योग्य पदार्थ के हैं।

अग्नौ तु हुतं त्रिषु वषट्कृतम्।

कृष्णमित्रटीका :- हुतं प्रक्षिप्तम्। वषण्मन्त्रेण कृतम्। 'प्रक्षिप्तहुतस्य' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- अग्नौ - १. हुतम्, २. वषट्कृतम्- ये दो त्रिलिङ्ग नाम अग्नि में हवन किये हुए पदार्थ के हैं।

दीक्षान्तोऽवभृथो यज्ञे[2]

कृष्णमित्रटीका :- अवभ्रियतेऽनेन[3]। 'अवे भृञः' (उ. २. ३) इति क्थन्। दीक्षाया अन्तः। प्रधानकर्मसमाप्तौ यज्ञे क्रियमाण इष्टिविशेषः॥[4]

हिन्दी अर्थ :- अवभृथः- यह एक पुल्लिङ्ग नाम यज्ञ के अन्त में यज्ञ समाप्ति सूचक स्नान का है।

तत्कर्मार्हं तु यज्ञियम्॥२७॥

त्रिषु

कृष्णमित्रटीका :- तस्य यज्ञस्य क्रियामर्हति। यज्ञमर्हति। 'यज्ञर्त्विग्भ्याम्-' (५. १. ७१) इत्यत्रोपसंख्यानाद् घः॥२७॥[5]

हिन्दी अर्थ :- यज्ञियम्- यह एक त्रिलिङ्ग नाम यज्ञ के योग्य ब्राह्मण तथा पदार्थ का है॥२७॥

अथ क्रतुकर्मेष्टम्

कृष्णमित्रटीका :- क्रतुर्यज्ञः। कर्म दानादि। इदमिष्टशब्दवाच्यम्॥[6]

हिन्दी अर्थ :- इष्टम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम यज्ञ कार्य और दान देने का है।

पूर्तं खातादिकर्माणि।

कृष्णमित्रटीका :- पुष्करिणी खननदेवालयादिनिर्माणादि पूतम्॥[7]

हिन्दी अर्थ :- पूर्तम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम बावड़ी, कुआँ, देवालय, औषधालयादि बनवाने का है।

1. The oblation offered to fire [2] 2. Majority reads यज्ञः 3. M. अवभ्रियतेनेन 4. A supplementary ascrifice at the end of a principal sacrifice [1] 5. A sacrificial thing [1] 6. Ista i, e, performing sacrifices and doing charitable works [1] 7. Pura i. e. act of pious liberality (such as digging well & C.) [1].

अमृतं विघसो यज्ञशेषभोजनशेषयोः ॥२८॥

कृष्णमित्रटीका :- यज्ञे होमावशिष्टमाज्यपुरोडाशाद्यमृतम्। देवातिथिगुर्वादिशिष्टं विघसः। 'घञपोश्च' (२. ४. ३८) इत्यदो घस्लृ ॥२८॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. अमृतम्, २. विघस- ये दो पुल्लिङ्ग नाम यज्ञ तथा ब्राह्मणादि के भोजन से बचे हुए अन्न का है, इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग द्वितीय पुल्लिङ्ग हैं॥२८॥

त्यागो विहायितं दानमुत्सर्जनविसर्जने।
विश्राणनं वितरणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥२९॥
प्रादेशनं निर्वपणमापवर्जनमंहतिः।

कृष्णमित्रटीका :- 'त्यज हानौ' (भ्वा. प. अ.)। हाको (जु. प. अ.) ण्यन्तात्क्तः (३. ३. ११४)। 'सृज विसर्गे' (तु. प. अ.)। 'श्रण दाने' (चुरादिः) 'स्पृश स्पर्शे' (तु. प. अ.)॥२९॥ 'दिश अतिसर्जने' (तु. उ. अ.)। 'डुवप्' (भ्वा. उ. अ.)। 'वृजी वर्जने' (अ. आ., रु. प., चु. उ. से.)। 'हन्तेरहं च' (उ. ४. ६२) इत्यतिः॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. त्याग, २. विहापितम्, ३. दानम्, ४. उत्सर्जनम्, ५. विसर्जनम्, ६. विश्राणनम्, ७. वितरणम्, ८. स्पर्शनम्, ९. प्रतिपादम्, १०. प्रादेशनम्, ११. निर्वपणम्, १२. पवर्जनम्, १३. अंहति- ये तेरह नाम दान के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग, एक से बारह नपुंसकलिङ्ग और तेरहवाँ स्त्रीलिङ्ग हैं।

मृतार्थं तदहर्दानं[3] त्रिषु स्यादौर्ध्वदेहिकम् ॥३०॥

कृष्णमित्रटीका :- मृतार्थं तदहः प्रेतदिने प्रेत-मुद्दिश्य मरणदिनमारभ्य सपिण्डीकरणपर्यन्तं दीयमानं जल-पिण्डादिकम्। देहादूर्ध्वम्। ऊर्ध्वदेहः। तत्र भवः। अध्यात्मादि (वा. ४. ६०)। केचिदुभयपदवृद्धिमाहुः॥३०॥[4]

हिन्दी अर्थ :- और्ध्वदैहिकम्- यह एक त्रिलिङ्ग नाम मरे हुए के उद्देश्य से एकदशाह तक दिए हुए पिण्डदानादि का है ॥३०॥

पितृदानं निवापः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- पितृभ्यो दानम्। न्यप्यते। 'डुवप्' (भ्वा. उ. अ.) घञ्। 'सपिण्डादूर्ध्वं पित्रुद्देशेन दानस्य' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- निवापः- यह एक पुल्लिङ्ग नाम सपिण्डी के बाद पितरों के उद्देश्य से दिये हुए दान का है।

श्राद्धं तत्कर्म शास्त्रतः।

कृष्णमित्रटीका :- श्रद्धाऽत्रास्ति[1]। 'प्रज्ञाश्रद्धा' (५. २. १०१) इति णः। तेषां पितॄणां कर्म। शास्त्रविधानेन॥[2]

हिन्दी अर्थ :- श्राद्धम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम पितरों के उद्देश्य से पिण्डदानादि कार्य का है।

अन्वाहार्यं मासिके[3]

कृष्णमित्रटीका :- अनु आ ह्रियते। ण्यत् (३. १. १२४)। मासे भवम् द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. अन्वाहार्यम्, २. मासिक- इन दो नामों में प्रथम पुल्लिङ्ग नाम अमावस्या को किये जाने वाले मासिक श्राद्ध का है।

अंशोऽष्टमोऽह्नः कुतपोऽस्त्रियाम् ॥३१॥

कृष्णमित्रटीका :- पञ्चदशमुहूर्त्तात्मकस्य दिनस्याष्टमो भागः। कुत्सितं तपति॥३१॥[5]

हिन्दी अर्थ :- कुतप- यह एक नपुंसकलिङ्ग. पुल्लिङ्ग नाम दिन का आठवाँ हिस्सा (सप्तममुहूर्त के उपरान्त तथा नवम मुहूर्त के मध्य का) श्राद्ध योग्य समय विशेष का है।

पर्येषणा परीष्टिश्चान्वेषणा च गवेषणा।

कृष्णमित्रटीका :- 'इषेरनिच्छार्थस्य' (वा. ३. ३. १०७) युच्। 'परेर्वा' (वा. ३. १. १०७) 'गवेष मार्गणे' (चुरादिः)। 'धर्माद्यन्वेषणस्य' चत्वारि॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. पर्येषणा, २. परिष्टि, ३. अन्वेषणा, ४. गवेषणा- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम धर्माद्यन्वेषण करने के हैं।

सनिस्त्वध्येषणा

कृष्णमित्रटीका :- सननं सनिः। 'षणु दोन' (तु. उ. से.)। इषेर्युच् (वा. ३. ३. १०७)। गुर्वाराधनस्य द्वे॥[7]

---

1. **The residue or leaving of a sacrifice, and remains of food** [1 each] 2. **Donation or gift** [13] 3. **Majority preferes** मृतार्थे तदहर्दाने 4. **Funeral rites** [1] 5. **An offering to the manes** [2].

1. M. श्रद्धात्रास्ति 2. **The funeral rite perfermed for the departed spirits of dead relatives** [1] 3. B. मासिकः 4. **The eigth part, of a day** [1] 5. **The monthly sraddha performed on the day of new moon** [1] 6. **A religious enquiry** [4] 7. **A respectful solicition, entreaty** [2]

हिन्दी अर्थ :- १. सनि, २. अध्येषणा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम, गुरु तात पिता इत्यादि की सेवा करना या गुरु आदि श्रेष्ठ जनों को प्रार्थना पूर्वक किसी काम में प्रवृत्त कराने का है।

याञ्चाभिशस्तिर्याचनार्थना ॥३२॥

कृष्णमित्रटीका :- याचः (भ्वा. उ. से.) नङ् (३. ३. ९०) अभिशंसनम्। 'शंसु स्तुत्यादौ' (भ्वा. प. से.)। क्तिन् (३. ३. ९४)। 'अर्थ याञ्चायाम्' (चु. उ. से.)। चत्वारि॥३२॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. याञ्चा, २. अभिशस्तिः, ३. याचना, ४. अर्थना- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम माँगने के हैं॥३२॥

षट् तु त्रिषु

कृष्णमित्रटीका :- इतः षट् त्रिषु॥

हिन्दी अर्थ :- यहाँ से छः शब्द तीनों लिङ्गों में होते हैं।

अर्घ्यमार्घ्याथ पाद्यं पादार्थवारिणि[2]।

कृष्णमित्रटीका :- जले। पादायेदम्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- अर्घ्यम्- यह एक नाम अर्घ के लिए जल का है।

पाद्यम्- यह एक त्रिलिङ्ग नाम पैर धोने के लिए जल का है।

क्रमादातिथ्यातिथेये अतिथ्यर्थेऽत्र साधुनि ॥३३॥

कृष्णमित्रटीका :- अतिथ्ये इदम्। 'अतिथेर्ज्यः' (५. ४. २६)। अतिथौ साधु। पथ्यतिथि- (४. ४. १०४) इति ढञ्। एकैकम्॥३३॥[4]

हिन्दी अर्थ :- आतिथ्यम्- यह एक त्रि.लिङ्ग नाम अतिथियों के निमित्त वस्तु का है।

आतिथेयम्- यह एक त्रिलिङ्ग नाम अतिथियों का अच्छा व्यवहार करने वाले का है या अतिथि निमित्त सिद्ध वस्तु का है॥३३॥

स्युरावेशिक आगन्तुरतिथिर्ना गृहागते।

1. Asking; begging [4] 2. Majority reads पादाय वारिणि
3. Arghya i. e the respectul offering or oblation to gods and and venerable men, and arghya, the offering of water for washing feet. [1 each] 4. Hospitality, and hospitable person [1 each].

कृष्णमित्रटीका :- अवेशे, अगेहे भवः। अध्यात्मादिः (वा. ४. ३. ६०)। आगच्छति। सितनि- (उ. १. ६९) इति तुन्। अतति। 'ऋतन्यञ्जि-' (उ. ४. २.) इति इथिन्। 'गृहागतस्य' त्रीणि॥ प्राघूर्णकप्राघुण-कावभ्युत्थानं तु गौरवम्' इति क्वचित्॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. आवेशिक, २. आगन्तु, ३. अतिथि- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम अतिथि (घर में आये) के हैं।

पूजा नमस्याऽपचितिः सपर्यार्चार्हणा समाः॥३४॥

कृष्णमित्रटीका :- 'पूज पूजायाम्' (चु. प. से.)। नमस्करणम्। क्यजन्तात् (३. १. १९) अः (३. ३. १०२)। 'सपर पूजायाम्' कण्ड्वादि। यक् (३. १. २७)। 'अर्च पूजायाम्' (भ्वा. प. से.)। 'अर्ह पूजायाम्' (चुरादिः)। 'पूजायाः' षट्॥३४॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. पूजा, २. नमस्या, ३. अपचिति, ४. सपर्या, ५. अर्चा, ६. अर्हण- ये छः स्त्रीलिङ्ग नाम पूजा के हैं॥३४॥

वरिवस्या तु शुश्रूषा परिचर्याप्युपासनम्।[3]

कृष्णमित्रटीका :- 'वरिवस' शब्दः पूजार्थः। ततः क्यच् (३. १. १९) श्रोतुमिच्छा। श्रुवः (भ्वा. प. अ.) सन्। परितः चरणम्। '-परिचर्यापरिसर्या-' (वा. ३. ३. १०१) इति साधुः। 'सेवायाः' चत्वारि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. वरिवस्या, २. शूश्रूषा, ३. परिचर्या, ४. उपासना- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम शुश्रूषा करने के हैं।

व्रज्याटाट्या पर्यटनम्

कृष्णमित्रटीका :- 'व्रजयजोः-' (३. ३. ९८) इति क्यप्। अटनम्। 'परिचर्या-' (वा. ३. ३. १०१) इत्यादिना निपातितः। 'अटनस्य' त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. व्रज्या, २. अटाट्या, ३. पर्यटनम्- ये तीन नाम जिनमें दो स्त्रीलिङ्ग एक नपुंसकलिङ्ग नाम घूमने के हैं। जिनमें दो

चर्या त्वीर्यापथे स्थितिः[6]॥३५॥

1. Guest [3] 2. Worship [6] 3. B. reads परिचर्याप्युपासना, 4. Service [4] 5. Wandering or roaming about [3] 6. Majority reads (वीर्यापथस्थितिः).

कृष्णमित्रटीका :- चरणम्। 'गदमदचर-' (३. १. १००) इति यत्। 'ईर गतौ' (अ. आ. से.)। ण्यत् (३. १. १२४)। ईर्यायाः पन्था ईर्यापथः। इर्यापथे ध्यानाद्युपाये परिव्राजकानां स्थितिः॥३५॥[1]

हिन्दी अर्थ :- चर्या- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम ध्यान मौन इत्यादि योगमार्ग में स्थित होने का है॥३५॥

उपस्पर्शस्त्वाचमनम्

कृष्णमित्रटीका :- उपस्पर्शनम्। 'चमु अदने' (भ्वा. प. से.)॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१. उपस्पर्शः, २. आचमनम्- यह एक पुल्लिङ्ग तथा एक नपुंसकलिङ्ग नाम आचमन करने के हैं।

अथ मौनमभाषणम्॥

कृष्णमित्रटीका :- मुनेः कर्म। (मौनम्)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. मौनम्, २. अभाषणम्, ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम चुप रहने का है।

आनुपूर्वी स्त्रियाँ वावृत्परिपाटी अनुक्रमः॥३६॥ पर्यायश्च

कृष्णमित्रटीका :- पूर्वं पूर्वमनुपूर्वम्, पूर्वानुक्रमेण च। अनुपूर्व भावः। दृढादित्वात् (५. १. १२३) ष्यञ्। ङीष्। आवर्तनमत्र। वृतेः (भ्वा. आ. से.) क्विप् (वा. ३. ३. ६४)। परिपटनम्। 'पट गतौ' (भ्वा. प. से.)। ण्यन्तात् 'अच् इः' (उ. ४. १३८)। क्रमेः (भ्वा. प. से.) घञ् (३. ३. १८)॥३६॥ पर्ययणम्। इणो घञ् (३. ३. ३८)। 'क्रमस्य' पञ्च॥३६॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. आनुपूर्वी, २. आवृत्, ३. परिपाटी, ४. अनुक्रम, ५. पर्याय- ये तीन स्त्रीलिङ्ग तथा दो पुल्लिङ्ग नाम क्रम के हैं॥३६॥

अतिपातस्तु स्यात्पर्यय उपात्ययः।

कृष्णमित्रटीका :- अतिक्रम्य पतनम्। पर्ययणम्। 'एरच्' (३. ३. ५६)। 'क्रमोल्लङ्घनस्य' त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. अतिपात, २. पर्यय, ३. उपात्यय- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम भिन्न क्रम के हैं।

1. **Performance of spiritual practices** [1] 2. **Sipping water before religious ceremonies** [2] 3. **Silence** [2] 4. **Sequence or order** [5] 5. **Inversion or violation of order** [3].

नियमो व्रतमस्त्री

कृष्णमित्रटीका :- नियमनम्। अच्। 'व्रतमात्रस्य' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. नियम, २. व्रतम्- ये दो नाम नियम या व्रत के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग और द्वितीय नपुंसकलिङ्ग पुल्लिङ्ग दोनों हैं।

तच्चोपवासादि पुण्यकम्॥३७॥

कृष्णमित्रटीका :- तदुपवासादि व्रतं पुण्यमेव। 'संज्ञायां कन्' (५. ३. ७५)॥३७॥[2]

हिन्दी अर्थ :- पुण्यकम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम उपवासादि शास्त्रविहित व्रत का हैं॥३७॥

उपवस्तं[3]तूपवासः

कृष्णमित्रटीका :- उपसनम्। 'वसु स्तम्भे' (दि. प. से.)। क्तः (३. ३. १३४)। प्रज्ञाद्यणि (५. ४. ३८) 'औपवस्तम्' अपि। वसतेर्घञ् (३. ३. २८)। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. औपवस्तम्, २. उपवास- ये दो नाम उपवास के हैं। इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग पुल्लिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग हैं।

विवेकः पृथगात्मता।

कृष्णमित्रटीका :- 'विचिर पृथग्भावे' (रु. उ. अ.)। घञ् (३. ३. १८)। पृथगात्मा यस्य तस्य भावः। 'प्रकृतिपुरुषादिभेदज्ञानस्य' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. विवेक, २. पृथगात्मता- ये दो नाम प्रकृति और पुरुष के भेद ज्ञान या भावों के पृथक् स्वरूप ज्ञान के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग द्वितीय स्त्रीलिङ्ग हैं।

स्याद्ब्रह्मवर्चसं वृत्ताध्ययनर्द्धिः अथाञ्जलिः॥३८॥

कृष्णमित्रटीका :- ब्रह्मणस्तपसो वर्चः। ब्रह्म-हस्तिभ्याम्-' (५. ४. ७८) इत्यच्। वृत्तमाचारः, तस्य अध्ययनस्य च ऋद्धिः॥३८॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. ब्रह्मवर्चसम्, २. वृत्ताध्ययनर्द्धि- ये दो नाम वेदाभ्यास की वृद्धि या सम्पत्ति के हैं। जिनमें प्रथम नपुल्लिङ्ग तथा द्वितीय स्त्रीलिङ्ग है॥३८॥

1. **Religious preactice or austerity** [2] 2. **Meritorious acts such as fasting & C.** [1] 3. **B. and K. perfer** औपवस्तं **and** औपवस्त्रं**, respectively,** 4. **Fasting** [2] 5. **Discriminative knowledge** (between Purusa and Prakrti) [2] 6. **Pre-eminence of religious practices and sacred knowledge** [2].

पाठे ब्रह्माञ्जलिः

कृष्णमित्रटीका :- ब्रह्मणोऽञ्जलिः[1]। वेदपाठकाले कृतोऽञ्जलिरित्यर्थः[2]॥[3]

हिन्दी अर्थ :- ब्रह्माञ्जलि- यह एक पुल्लिङ्ग नाम पढ़ने के पहले व्यस्त हाथ से गुरु के पैर को छूकर प्रणाम करने का है या पाठकाल में हाथों को जोड़ने का है।

पाठे विप्रुषो ब्रह्मविन्दवः।

कृष्णमित्रटीका :- वेदपाठे मुखान्निर्गता विन्दवो ब्रह्मविन्दवः॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. ब्रह्मबिन्दव, यह एक पुल्लिङ्ग नाम वेदादि पढ़ने के समय मुख से निकले हुए जलकण का है।

ध्यानयोगासने ब्रह्मासनम्

कृष्णमित्रटीका :- ध्यानस्य योग उपायः, तस्यासनं स्वस्तिकादि ब्रह्मणः सम्बन्धि आसनम्। एकम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- ब्रह्मासनम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम ध्यान और योग के आसन का है।

कल्पे विधिक्रमौ ॥३९॥

कृष्णमित्रटीका :- कल्पते। अच् (३. १. १३४)। विधानं विधिः। क्रमणमनेन। घञ्। त्रीणि॥३९॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. कल्प, २. विधि, ३. क्रम- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम शास्त्रोक्त विधि के हैं॥३९॥

मुख्यः स्यात्प्रथमः कल्पः

कृष्णमित्रटीका :- मुखमिव। शाखादिः (५. ३. १०३)॥[7]

हिन्दी अर्थ :- मुख्य- यह एक पुल्लिङ्ग नाम शास्त्रोक्त प्रधान विधि का है।

अनुकल्पस्ततोऽधमः।

कृष्णमित्रटीका :- अनु हीनः कल्पः। यथा- ब्रीह्यभावे यवादिः॥[8]

हिन्दी अर्थ :- अनुकल्प- यह एक पुल्लिङ्ग नाम शास्त्रोक्त गौण विधि का है।

संस्कारपूर्वं ग्रहणं स्यादुपाकरणं श्रुतेः॥४०॥

कृष्णमित्रटीका :- संस्कार उपनयनम्, तत्पूर्वकं श्रुतेर्ग्रहणं वेदपाठारम्भविधिविशेषः॥४०॥[1]

हिन्दी अर्थ :- उपाकरणम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग संस्कार के साथ-साथ वेद ग्रहण करने का है॥४०॥

समे तु पादग्रहणमभिवादनमित्युभे।

कृष्णमित्रटीका :- पादयोर्ग्रहणं स्पर्शः। अभिमुखीकरणार्थं वादनम्। 'वैधस्य नामोच्चारणादिपूर्वकनमस्कारस्य' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. पादग्रहणम्, २. अभिवादनम् - ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम अपना नाम कहते हुए प्रणाम करने का है।

भिक्षुः परिव्राट् कर्मन्दी पाराशर्यपि मस्करी॥४१॥

कृष्णमित्रटीका :- भिक्षते। 'सनाशंस-' (३. २. १६८) इत्युः। परित्यज्य सर्वं व्रतति। कर्मन्देन प्रोक्तमधीते। 'कर्मन्दकृशाश्वादिनिः' (४. ३. १११)। पाराशर्येण प्रोक्तमधीते। 'पराशर्य-' (४. ३. ११०) इति णिनिः। 'मस्करमस्करिणौ-' (६. १. १५४) इति निपातः। पञ्च 'सन्यासिनः'॥४१॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. भिक्षु, २. परिव्राट्, ३. कर्मन्दी, ४. पाराशरी, ५. मस्करी- ये पाँच पुल्लिङ्ग नाम संन्यासी के हैं॥४१॥

तपस्वी तापसः पारिकाङ्क्षी

कृष्णमित्रटीका :- तपोऽस्यास्ति[4]। 'तपः सहस्राभ्याम्-' (५. २. १०२) इति विनिः। 'अण् च' (५. २. १०३)। परिकाङ्क्षते। णिनिः (३. २. ७८)। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. तपस्वी, २. तापस, ३. परिकाङ्क्षी- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम तपस्वी के हैं।

वाचंयमो मुनिः।

कृष्णमित्रटीका :- वाचं यच्छति। 'वाचंयमपुरंदरौ-' (६. ३. ६९) इति साधुः। 'मनेरुच्च' (उ. ४. १२२) इतीनिः। 'मौनिनः' द्वे॥[6]

1. M. ब्रह्मणः अञ्जलिः 2. M. कृतोञ्जलिरित्यर्थः 3. The respectful salutation with folded hands while repeating the Vedas [1] 4. Drops of saliva sputtered while recting the Vedas [1] 5. Brahmasana, a position for meditation [1] 6. Sacred precept or rule [3] 7. Principal precept [1] 8. Secondary precept [1].

1. Commencement of reading the Veda after the performance of the preparatory rite [1] 2. Salutation [2] 3. Ascetic [5] 4. M. तपोस्यास्ति 5. An ascetic, who practices penance [2] 6. A sage practicing silence [2].

हिन्दी अर्थ :- १. वाचंयम, २. मुनि- ये दो पुल्लिङ्ग नाम मुनि के हैं।

तपःक्लेशसहो दान्तः

कृष्णमित्रटीका :- तपसः क्लेशः, तं सहते। दमेः (दि. प. अ.) क्तः (३. ४. ७२) द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. तपः २. क्लेशसह, ३. दान्त- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम तपस्या के क्लेश को सहने वाले का है।

वर्णिनो ब्रह्मचारिणः ॥४२॥

कृष्णमित्रटीका :- वर्णः स्तुतिरस्यास्ति। ब्रह्म वेदाध्ययनार्थं व्रतं चरति॥४२॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. वर्णी, २. ब्रह्मचारी- ये दो पुल्लिङ्ग नाम ब्रह्मचारी के हैं॥४२॥

ऋषयः सत्यवचसः

कृष्णमित्रटीका :- ऋषन्ति जानन्ति। 'ऋषी गतौ' (तु. प. से.)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. ऋषिः, २. सत्यवचः- ये दो पुल्लिङ्ग नाम ऋषि सामान्य के हैं।

स्नातकस्त्वाप्लुतव्रती।[4]

कृष्णमित्रटीका :- आप्लुतश्चासौ व्रती च। समाप्तवेदव्रतः॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. स्नातक, २. आप्लुतव्रती- ये दो पुल्लिङ्ग वेदव्रत समाप्त होने के पश्चात् गुरु आज्ञा से समाप्तिसूचक स्नान किये हुए ब्रह्मचारी के हैं।

ये निर्जितेन्द्रियग्रामा यतिनो यतयश्च ते॥४३॥

कृष्णमित्रटीका :- इन्द्रियाणां समूहो जितो यैः। यतमस्ति। यतन्तेः (भ्वा. आ. से.) इनिः (४. १. १७)। 'जितेन्द्रियस्य' त्रीणि॥४३॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. निर्जितेन्द्रियग्राम, २. यती, ३. यति- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम जितेन्द्रिय के हैं॥४३॥

यः स्थण्डिले व्रतवशाच्छेते स्थण्डिलशाय्यसौ। स्थाण्डिलश्च

1. One, who bears the pain of religious austerity [1] 2. Brahmacarin [2] 3. Sage [2] 4. B. and K. reads respectively as, स्नात-कस्त्वाप्लुतो व्रती and स्नातकस्त्वाप्लव्रती 5. A Brahmana, who has completed his study of the Vedas [2] 6. An ascetic who has controlled his sense-organs [3].

कृष्णमित्रटीका :- स्थण्डिले भूमौ शेते। 'व्रते' (३. २. ८०) इति णिनिः। 'स्थण्डिलाच्छयितरि व्रते' (४. २. १५) इत्यण्। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. स्थण्डिलशायी, २. स्थाण्डिल- ये दो पुल्लिङ्ग नाम बिना साफ की हुई भूमि पर सोने वाले व्रती का है।

अथ विरजस्तमसः स्युर्द्वयातिगाः॥४४॥

कृष्णमित्रटीका :- रजस्तमोभ्यां विगताः। द्वयमतिगच्छन्ति। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. विरजस्तमाः, २. द्वयातिग- ये दो पुल्लिङ्ग नाम सत्त्वगुणी के हैं॥४४॥

पवित्रः प्रयतः पूतः

कृष्णमित्रटीका :- पुनाति। 'अशित्रादिभ्य इत्रोत्रौ' (उ. ४. १७२)। प्रकर्षेण यतः। यमः क्तः। पूञः। त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. पवित्र, २. प्रयत, ३. पूत- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम पवित्र के हैं।

पाखडाः[4] सर्वलिङ्गिनः।

कृष्णमित्रटीका :- पातीति पाः वैदिकमार्गः, तं खण्डयतिं सर्वाणि लिङ्गानि येषाम्। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. पाखण्ड, २. सर्वलिङ्गी- ये दो पुल्लिङ्ग नाम पाखण्डी के हैं।

पलाशो दण्ड आषाढो व्रते

कृष्णमित्रटीका :- आषाढीपूर्णिमा प्रयोजनमस्य। 'विशाखाषाढादण्-' (५. १. ११०)। व्रते ब्रह्मचर्ये यः पलाशस्य दण्डः स इत्यर्थः।[6]

हिन्दी अर्थ :- आषाढ़- यह एक पुल्लिङ्ग नाम ब्रह्मचर्यावस्था में धारण किये हुए पलाशदण्ड का हैं।

राम्भस्तु वैणवः॥४५॥

कृष्णमित्रटीका :- रम्भस्य वेणोर्विकारः व्रत एव, अन्यत्र वैणव एव॥४५॥[7]

1. An ascetic, who sleeps on bare grond while performing religious austerities [2] 2. A person who is free from the influence of rajas and tamas qualities [2] 3. A holy person [3] 4. Majority prefers पाषण्डाः 5. Heretic [2] 6. A staff of the palas'a wood carried by an ascetic [1] 7. A bamboo-staff carried by an ascetic or religious student [1].

हिन्दी अर्थ :- राम्भ- यह एक पुल्लिङ्ग नाम ब्रह्मचर्यावस्था में धारण किए हुए बाँस के दण्ड का है॥४५॥

अस्त्री कमण्डलुः कुण्डी

कृष्णमित्रटीका :- कस्य जलस्य मण्डः सारः, तं लाति। मृग्व्वादिः (उ. १. ३७)। 'कुडि दाहे' (भ्वा. आ. से.)। कुण्डी ञमन्तं चेत्। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. कमण्डलु, २. कुण्डी- ये दो नाम कमण्डलु के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग नपुल्लिङ्ग है एवं द्वितीय स्त्रीलिङ्ग हैं।

व्रतिनामासनं वृषी।

कृष्णमित्रटीका :- व्रतिनां ब्रह्मचार्यादीनामासनम्। ब्रुवन्तः सीदन्त्यस्याम्। डः (वा. ३. २. १०१)। एकम्॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. वृषी, यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम ब्रह्मचारी आदि व्रतियों के आसन का है।

अजिनं चर्म कृत्तिः स्त्री

कृष्णमित्रटीका :- 'अज गतौ' (भ्वा. प. से.)। इनच् (उ. २. ४८)। चर्यते। मनिन् (उ. ४. १४४)। कृत्यते। 'कृती छेदने' (तु. प. से०.)। क्तिन् (३. ३. ९४)। त्रीणि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. अजिनम्, २. चर्म, ३. कृत्तिः- ये तीन नाम मृगादि के चमड़े का है, इनमें प्रथम व द्वितीय पुल्लिङ्ग है और तृतीय स्त्रीलिङ्ग है।

भैक्षं भिक्षाकदम्बकम्॥४६॥

कृष्णमित्रटीका :- भिक्षाणां समूहः। 'भिक्षादिभ्योऽण्[3]' (४. २. ३८)॥४६॥[4]

हिन्दी अर्थ :- भैक्षम्- यह एक त्रिलिङ्ग नाम भिक्षा में मिले हुए पदार्थों का है॥४६॥

स्वाध्यायः स्याज्जपः

कृष्णमित्रटीका :- स्वस्य अध्ययनम्। 'इङश्च' (३. ३. २१) इति घञ्। 'व्यधजोपोः-' (३. ३. ६१) इत्यप्। 'वेदाध्ययनस्य' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. स्वाध्याय, २. जप- ये पुल्लिङ्ग नाम नियम से वेदादि अभ्यास करने के हैं।

सुत्याभिषवः सवनं च सा।

कृष्णमित्रटीका :- 'संज्ञायां समज-' (३. ३. ९९) इति षुञः (स्वा. उ. से.) क्यप्। अपि (३. ३. ५७) अभिषवः। ल्युटि (३. ३. ११५) सवनम्। 'सोमलताकण्डनस्य' त्रीणि॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. सुत्या, २. अभिषव, ३. सवनम्- ये तीन नाम क्रमशः एक स्त्रीलिङ्ग, पुल्लिङ्ग, एक नपुंसकलिङ्ग सोमलता को कूटने के हैं।

सर्वैनसामपध्वंसि जप्यं त्रिष्वघमर्षणम्॥४७॥

कृष्णमित्रटीका :- सर्वाणि एनांसि अपध्वंसते। णिनिः (३. ३. ७८)। 'पोरदुपधात्' (३. १. ९८) इति यत्, जप्यम्। अघं मर्षति॥४७॥[2]

हिन्दी अर्थ :- अवमर्षणम्- यह एक त्रिलिङ्ग नाम सब पापों को नाश करने वाले जप का है॥४७॥

दर्शश्च पौर्णमासश्च यागौ पक्षान्तयोः पृथक्।

कृष्णमित्रटीका :- अमावास्यां क्रियमाणो याग उपचाराद्दर्शः। पक्षान्तयोरमावस्यापौर्णमास्योः क्रियमाणौ॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. दर्श, ३. पौर्णमास- ये दो पुल्लिङ्ग क्रमशः नाम अमावास्या और पूर्णिमा को होने वाले यज्ञ के हैं।

शरीरसाधनापेक्षं नित्यं यत्कर्म तद्यमः॥४८॥

कृष्णमित्रटीका :- यच्छत्यनेन यमः। शरीरमात्रेण साध्यं यावज्जीवं कर्म सत्यास्तेयादि यत्कर्म नित्यं कर्त्तव्यम्॥४८॥[4]

हिन्दी अर्थ :- यम- यह एक पुल्लिङ्ग नाम अहिंसा, सत्य, चोरी न करना, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह (दान न लेना) इन नित्यकर्मों का है॥४८॥

नियमस्तु स यत्कर्माऽनित्यमागन्तुसाधनम्।

कृष्णमित्रटीका :- न तु यावज्जीवम्, आगन्तुभिः कामनया समयविशेषादिर्भिर्हेतुभिः साध्यमुपवास स्नानादि, तन्नियमः॥[5]

---

1. A water-pot used by ascetics [2] 1. The seat of an asectic or religious student; [2] 2. Skin (of animal used as seat) [3] 3. M. भिक्षादिभ्योण् 4. Things collected as alms [1] 5. The study of the Vedas [2].

1. Extraction of Soma juice [3] 2. The mantra that destroys all sins [1] 3. Sacrifices which are performed on the amavasya and purnima [1 each] 4. Yama [1] Cf. Yogas'utra, 2.30. 5. Niyama [1] Cf. Yoga-sutra, 2.32.

हिन्दी अर्थ :- नियम- यह एक पुल्लिङ्ग नाम जीवन पर्यन्त की अपेक्षा किसी विशेष समय किये जाने वाले कार्य का है। (शौच, सन्तोष, तप, स्वाघ्याय, ईश्वर का ध्यान, इन सभी कर्मसाघनों का नाम नियम है)

उपवीतं यज्ञसूत्रं प्रोद्धते दक्षिणे करे॥४९॥

कृष्णमित्रटीका :- अजेर्वेतेर्वा उपवीतं यज्ञार्थं सूत्रम्। प्रोद्धते बहिष्कृते सति वामस्कन्धार्पितम्। द्वे॥४९॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. उपवीतम्, २. यज्ञसूत्रम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम यज्ञोपवीत के हैं।

प्राचीनावीतमन्यस्मिन्

कृष्णमित्रटीका :- प्राचीनं प्रदक्षिणमावीतम्। अन्यस्मिन्वामे करे प्रोद्धृते सति॥[2]

हिन्दी अर्थ :- प्राचीनावीत- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम दाहिने कन्धे से लटकते हुए यज्ञोपवीत का है। गोभिल ने कहा है- **सव्यं बाहुमुद्धत्य शिरोवधाय दक्षिणेऽसे प्रतिष्ठापयति सव्यं कक्षमन्वलम्बं भक्त्येवं प्राचीनावीती भयति।**

निवीतं कण्ठलम्बितम्।

कृष्णमित्रटीका :- नि अधोवीतं कण्ठाल्लम्बितं करद्वये बहिष्कृते सति॥[3]

हिन्दी अर्थ :- निवीतम्-यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम माला की तरह पहने हुए जनेऊ का है।

अङ्गुल्यग्रे तीर्थं दैवम्

कृष्णमित्रटीका :- अङ्गुलीनामग्रे देवानामिदं दैवं तीर्थम्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- दैवम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम अंगुलियों के अग्रभाग का है।

स्वल्पाङ्गुल्योर्मूलं कायम्॥५०॥

कृष्णमित्रटीका :- स्वल्पाङ्गल्योः कनिष्ठि- कयोरधोभागे। कः प्रजापतिर्देवताऽस्य[5]॥५०॥[6]

हिन्दी अर्थ :- कायम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम कनिष्ठा अंगुली के अधोभाग का है॥५०॥

1. **The sacred thread over the left shoulder and under the right arm** [2] 2. **The sacred thread over the right shoulder and under the left arm** [1] 3. **The sacred thread worn round the neck** [1] 4. **Devatirtha** [1] 5. M. देवतास्य 6. Kayatirtha [1].

मध्येऽङ्गुष्ठाङ्गुल्योः पित्र्यम्

कृष्णमित्रटीका :- अङ्गुष्ठतर्जन्योर्मध्ये पितरो देवताऽस्य[1]॥[2]

हिन्दी अर्थ :- पित्र्यम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम हाथ के अंगूठे और तर्जनी के मध्य भाग का है।

मूले ह्याङ्गुष्ठस्य ब्राह्मम्।

कृष्णमित्रटीका :- ब्रह्मा देवताऽस्य[3]॥[4]

हिन्दी अर्थ :- ब्राह्मम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम हाथ के अंगूठे के मूल भाग का है।

स्याद्ब्रह्मभूयं ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायुज्यमित्यपि॥५१॥

कृष्णमित्रटीका :- ब्रह्मणो भावः। 'भुवो भावे' (३. १. १०७) इति क्यप्। सह युनक्तीति सयुक्, तस्य भावः। ब्रह्मणा सायुज्यम्॥५१॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. ब्रह्मभूयम्, २. ब्रह्मत्वम्, ३. ब्रह्मसायुज्यम्- ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम ब्रह्ममय हो जाने का है॥५१॥

देवभूयादिकं तद्वत्

कृष्णमित्रटीका :- देवस्य भावः देवभूयं देवत्वमित्यादि॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. देवभूयम्, २. देवत्वम्, ३. देवसायुज्यम्- ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम देवमय हो जाने का है।

कृच्छ्रं सांतपनादिकम्।

कृष्णमित्रटीका :- कृन्तत्यनेन। 'कृतेश्छः' (उ. २. २१)। संतपति। ल्युट् (३. ३. ११३)। तस्येदं कर्म। सान्तपनं देहसाध्यम्॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. कृच्छ्रम्, २. सान्तपनम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम चान्द्रायण आदि व्रत का है। आदि पद से चान्द्रायण प्राजापत्यपराकादि का संग्रह है।

संन्यासवत्यनशने पुमान् प्रायः

कृष्णमित्रटीका :-सम्यक् न्यासः, आत्यन्तिकस्त्यागः, तद्युक्ते अनशने अभोजने मरणोद्देश्यके। प्रकृष्टमयनम्। इण् (अ.प.अ.) 'एरच' (३.३.५६.) एकम्॥[8]

1. M. देवतास्य, 2. **Pitrtirtha** [1] 3. M. देवतास्य 4. **Brahmatirtha** [1] 5. **Cmplete identity of soul with Brahman, the Supreme Spirit** [3] 6. **Identity with gods** [3] 7. **Penance** (as santapana & c.) [1] 8. **Giving up food after complete renunciation of the world and its attachments** [1].

हिन्दी अर्थ :- प्राय- यह एक पुल्लिङ्ग नाम संन्यासपूर्वक भोजन त्यागने का है।

अथ विरहा ॥५२॥

नष्टाग्निः

कृष्णमित्रटीका:-वीरोऽग्निः[1], तं हन्ति ॥५२॥ नष्टोऽग्निर्यस्य[2]। 'प्रमादादिना यस्याग्निहोत्राग्निर्नष्टः' एकम् (?) ॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. वीरहा ॥५२॥, २. नष्टाग्नि - ये दो पुल्लिङ्ग नाम प्रमाद से बुझी हुई अग्नि वाले अग्निहोत्री के हैं।

कुहना लोभान्मिथ्येर्यापथकल्पना।

कृष्णमित्रटीका :- 'कुह विस्मापने' (चुरादिः)। 'ण्यास-' (३. ३.१०७) इति युच्। ईर्यापथस्याचारभेदस्य मिथ्याऽतत्त्वे[4] कल्पना सम्पादनम्। 'धनादिलिप्सया मिथ्या-धर्माश्रयणदम्भादिः' एकम् ॥[5]

हिन्दी अर्थ :- कुहना- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम दम्भ से मौनादिधारण करने एवं अर्थलोभ से मिथ्याधर्माचरण करने का है।

व्रात्यः संस्कारहीनः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- व्रातमर्हति। संस्कारैः, उपवीतादिभिर्हीनः। द्वे ॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. व्रात्य, २. संस्कारहीन- ये दो पुल्लिङ्ग नाम गर्भाधानोपनयनादि संस्कारहीन का है।

अस्वाध्यायो निराकृतिः ॥५३॥

कृष्णमित्रटीका :- न स्वाध्यायो वेदाध्यय-नमस्य। आकृतेरध्ययनचेष्टाया निर्गतः। द्वे ॥५३॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. अस्वाध्याय, २. निराकृति- ये दो पुल्लिङ्ग नाम वेदविहीन के हैं ॥५३॥

धर्मध्वजी लिङ्गवृत्तिः

कृष्णमित्रटीका :- धर्मस्य ध्वजश्चिह्नम-स्यास्ति। भिक्षाद्यर्थं जटादिधारणं लिङ्गमाश्रमादि चिह्नधारणं वृत्तिर्जीविकास्य। द्वे ॥[8]

1. M. वीरोग्निः 2. M. नष्टोग्निर्यस्य 3. **A Brahmana, who has neglected his sacred fire** [2] 4.M. मिथ्या अतत्त्वे 5. **Interested performance of religious austerities** [1] 6. **A person, who has lost his caste owing to non-performance of purificatory rites** [2] 7. **A student, who has not studied the Vedas** [2] 8. **A religious hypocrite** [2].

हिन्दी अर्थ :- १. धर्मध्वजी, २. लिङ्ग-वृत्तिः - ये दो पुल्लिङ्ग नाम जीविका के लिए भस्मादि धारण करके झूठा साधु बनने वाले का है।

अवकीर्णी क्षतव्रतः।

कृष्णमित्रटीका :- किरः (तु. प. से.) क्तः (३. ३. ११४)। अवकीर्णं विक्षिप्तं व्रतमनेन। क्षतं खण्डितं ब्रह्मचर्यमस्य। द्वे ॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. अवकीर्णी, २. क्षतव्रत- ये दो पुल्लिङ्ग नाम ब्रह्मचर्यादि व्रत मध्य में ही भग्न हुए ब्रह्मचारी के हैं।

सुप्ते यस्मिन्नस्तमेति सुप्ते यस्मिन्नुदेति च ॥५४॥

अंशुमानभिनिर्मुक्ताभ्युदितौ तौ[2] यथाक्रमम्।

कृष्णमित्रटीका :- अभि सर्वतः सायं तेन कर्मणा निश्चयेन मुक्तः। उद् अतिशयेन इतं गतम्। एकैकम् ॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १.अभिनिर्मुक्त, २. आभ्युदित - ये दो पुल्लिङ्ग नाम क्रमशः जिसके सोये रहने पर सूर्यास्त और सूर्योदय हो जाय उसका एक-एक है ॥५४॥

परिवेत्तानुजोऽनूढे ज्येष्ठे दारपरिग्रहात् ॥५५॥

कृष्णमित्रटीका :- परिविन्दति ज्येष्ठं परित्यज्य भार्यां लभते। 'ज्येष्ठे अविवाहिते सति कृतोद्वाहः कनिष्ठ' ॥५५॥[4]

हिन्दी अर्थ :- परिवेत्ता- यह एक नाम ज्येष्ठ भ्राता के अविवाहित रहने पर विवाह किये हुए अनुज का है ॥५५॥

परिवित्तिस्तु तज्ज्यायान्

कृष्णमित्रटीका :- परि वर्जनं विन्दति लभते। तस्य परिवेत्तुर्ज्यायान् ज्येष्ठः। 'परिवेत्तुर्ज्येष्ठ भ्रातुरेकम्' ॥[5]

हिन्दी अर्थ :- परिवित्तिः- यह एक पुल्लिङ्ग नाम विवाहित छोटे भाई के अविवाहित बड़े भाई का है।

विवाहोपयमौ समौ

तथा परिणयोद्वाहोपयामाः पाणिपीडनम् ॥५६॥

1. **A Student, who has violated his religious practices** [2] 2. **B. reads** च 3. **One asleep at sunrise and sunset** [1 each] 4. **A younger brother married before the elder** [1] 5. **The unmarried elder brother, whose younger brother is married** [1].

कृष्णमित्रटीका :- विशिष्टं वहनम्। घञ् (३. ३. १८)। उपयमनं घञ्। परिणयनम्। 'एरच्' (३. ३. ५६)। पाणेः पीडनम्। विवाहः। षट्॥५६॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. विवाह, २. उपयम, ३. परिणय, ४. उद्वाह, ५. उपयाम, ६. पाणिपीडनम्- ये छः नाम विवाह के हैं, इनमें पहले पांच पुल्लिङ्ग अन्तिम एक नपुंसकलिङ्ग हैं॥५६॥

व्यवायो ग्राम्यधर्मो मैथुनं निधुवनं रतम्।

कृष्णमित्रटीका :- व्यवयानम्। इणः (अ. प. अ.) घञ्। ग्राम्याणां जनानां धर्मः। मिथुनस्य कर्म। नितरां धुवनं हस्तपादादिचालनम्। रमेः क्तः (३. ३. ११४)। पञ्च॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. व्यवाय, २. ग्राम्यधर्म, ३. मैथुनम्, ४. निधुवनम्, ५. रतम्- ये पाँच नाम स्त्री के साथ सम्भोग करने के हैं। इनमें प्रथम व द्वितीय पुल्लिङ्ग हैं तथा तृतीय से पंचम तक नपुंसकलिङ्ग हैं।

त्रिवर्गो धर्मकामार्थैः

कृष्णमित्रटीका :- त्रयाणां वर्गः समूहः॥[3]

हिन्दी अर्थ :- त्रिवर्ग- यह एक पुल्लिङ्ग नाम धर्मार्थकाम का है।

चतुर्वर्गः समोक्षकैः॥५७॥

कृष्णमित्रटीका :- मोक्षेण सहितैर्धर्माद्यैश्चतुर्णां वर्गः। एकम्॥५७॥[4]

हिन्दी अर्थ :- चतुर्वर्ग- यह एक पुल्लिङ्ग नाम धर्मार्थ काम मोक्ष का है॥५७॥

सबलैस्तैश्चतुर्भद्रम्

कृष्णमित्रटीका :- बलेन सहितैर्धर्माद्यैश्चत्वारि भद्राणि श्रेष्ठान्यत्र॥[5]

हिन्दी अर्थ :- चतुर्भद्रम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम सुदृढ चतुर्वर्ग का है।

जन्याः स्निग्धा वरस्य ये।

कृष्णमित्रटीका :- जनीं वधूं वहन्ति। 'संज्ञायां जन्या' (४. ४. ८२) इति यत्। वरस्य ये स्निग्धास्तत्पक्षाः॥[1]

हिन्दी अर्थ :- जन्य- यह एक पुल्लिङ्ग नाम वर के समवयस्क मित्र या वर पक्ष के लोगों का है॥

इति ब्रह्मवर्गः॥७॥

1. Marriage [6] 2. Sexual intercourse [5] 3. The first three ends of human life taken collectively [1] 4. The four ends of human life taken collectively [1] 5. The aggregate of the four ends of human life (Caturbhadra) [1].

1. The friend, attendant or relative of a bridegroom [1]

॥इति ब्रह्मवर्गः॥

अथ क्षत्रियवर्गः॥८॥

मूर्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्रियो विराट्।

कृष्णमित्रटीका :- मूर्धन्यभिषिक्तः। राज्ञोऽपत्यम्।[2] 'राजश्वसुराद्यत्' (४. १. १३७) बाहुभ्यां जातः। क्षत्त्रस्यापत्यम्। 'छत्राद्धः' (४. १. १३८)। विशेषेण राजति। पञ्च 'क्षत्त्रियस्य'॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. मूर्धाभिषिक्त, २. राजन्य, ३. बाहुज, ४. क्षत्रिय, ५. विराट्- ये पांच पुल्लिङ्ग नाम क्षत्रिय के हैं।

राज्ञि राट् पार्थिवः क्ष्माभृन्नृपभूपमहीक्षितः॥१॥

कृष्णमित्रटीका :- राजति। 'कनिन्युवृषि-' (उ. १. १५७) इति कनिन्। क्विपि (३. २. ६१)। राट्। पृथिव्या ईश्वरः। 'सर्वभूमिपृथिवीभ्यामणञौ' (५. १. ४१)। महीं क्षियति। 'क्षि निवासगत्योः' (तु. प. अ.)। सप्त 'राज्ञः'॥१॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १.राजा, २. राट्, ३. पार्थिव, ४. क्ष्माभृत्, ५. नृप, ६. भूप, ७. महीक्षित्- ये सात पुल्लिङ्ग नाम राजा के हैं॥१॥

राजा तु प्रणताशेषसामन्तः स्यादधीश्वरः।

कृष्णमित्रटीका :- प्रणता अशेषाः सामन्ताः स्वदेशानन्तर राजानो यस्य। अधिक ईश्वरः। एकम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- अधीश्वर- यह एक पुल्लिङ्ग नाम संनिहित सभी राजाओं को वश में करने वाले राजा का है।

चक्रवर्ती सार्वभौमः

कृष्णमित्रटीका :- चक्रे राजमण्डले वर्तते। णिनिः (३. २. ७८)। सर्वभूमेरीश्वरः 'समुद्रान्तभूमेरीश्वरस्य' द्वे॥[6]

2. M. राज्ञोपत्यम् 3. Ksatriya [5] 4. King [6] 5. A supreme king [1] 6. A universal king or ruler, whose dominions extend as far as ocean [1].

हिन्दी अर्थ :- १.चक्रवर्ती, २. सार्वभौमः- ये दो पुल्लिङ्ग नाम सागर तक राज्य करने वाले राजा का है।

नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥२॥

कृष्णमित्रटीका :- मण्डलस्य भूम्येकदेशस्य ईश्वरः। एकम्॥२॥[1]

हिन्दी अर्थ :- मण्डलेश्वर- यह एक पुल्लिङ्ग नाम देश के ऊपर आदेश चलाने वाले राजा का है॥२॥

येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः।
शास्ति यश्चाज्ञया स सम्राट्

कृष्णमित्रटीका :- सम्यक् राजति। क्विप् (३. २. ६१)। सार्वभौमविशेषोऽयम्॥[2]

हिन्दी अर्थ :- सम्राट्- यह एक पुल्लिङ्ग नाम जिसने राजसूय यज्ञ किया हो, जो भूमण्डल का स्वामी हो, तथा सम्पूर्ण राजा जिसकी आज्ञा मानते हों ऐसे राजा का है।

अथ राजकम् ॥३॥
राजन्यकं च नृपतिक्षत्त्रियाणां गणे क्रमात्।

कृष्णमित्रटीका :- राज्ञां समूहः ॥३॥ राजान्यानां समूहः। 'गोत्रोक्षोष्ट्र-' (४. २. ३९) इति वुञ्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- राजकम्- यह एक नाम राजसमूह का है॥३॥

राजन्यकम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम क्षत्रियों के समूह का है।

मन्त्री धीसचिवोऽमात्यः

कृष्णमित्रटीका :- मन्त्रोऽस्यास्ति[4]। धियां सचिवः सहायः। अमा सह भवः। 'अव्ययात्त्यप्' (४. २. १०४)। त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. मन्त्री, २. धीसचिव, ३. अमात्य- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम मन्त्री के हैं।

अन्ये कर्मसचिवास्ततः ॥४॥

कृष्णमित्रटीका :- ततो धीसचिवादन्ये कर्मसचिवाः ॥४॥[6]

1. A ruler of certain country or province [1] 2. A paramount monarch, who rules over other princes, and has performed the rajasuya sacrifice 3. A number or collection of soveriegns and Ksatriyas [1 each] 4. M. मन्त्रास्यास्ति 5. Minister or councillor [3] 6. Minister for action [1].

हिन्दी अर्थ :- कर्मसचिव- यह एक पुल्लिङ्ग नाम हर एक कार्य में सहयोग देनेवाले मन्त्री का है॥४॥

महामात्राः प्रधानानि

कृष्णमित्रटीका :- महामात्रा येषाम्[1]। प्रकर्षेणाधीयन्ते। 'प्रधानस्य' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. महामात्र, २. प्रधानम्- ये दो नाम क्रमशः एक पुल्लिङ्ग एक नपुंसकलिङ्ग राजा को मुख्य राय देनेवाले मन्त्री के हैं।

पुरोधास्तु पुरोहितः।

कृष्णमित्रटीका :- पुरोऽग्रे[3] धीयते पुरोधाः। 'दधातेर्हिः' (७. ४. ७२)। क्तः (३. २. १०२)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. पुरोधा, २. पुरोहित- ये दो पुल्लिङ्ग नाम पुरोहित के हैं।

द्रष्टरि व्यवहाराणां प्राड्विवाकाक्षदर्शकौ ॥५॥

कृष्णमित्रटीका :- ऋणादीनि विवादस्थानानि व्यवहाराः तेषां द्रष्टरि निर्णेतरि प्राड् प्रश्नः, विवाको विवेकः तौ स्तोऽस्य[5] प्रश्नविचारयोः कुशल इत्यर्थः। अक्षाणां व्यवहाराणां दर्शकः द्वे॥५॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. प्राड्विवाक, २. अक्षदर्शक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम मुकदमा देखनेवाले न्यायाधीश के हैं॥५॥

प्रतीहारे[7] द्वारपालद्वाःस्थद्वा स्थितदर्शकाः।

कृष्णमित्रटीका :- 'उपसर्गस्य घञि-' (६. ३. १२२) दीर्घः, प्रतीहारः। द्वारं पालयति। द्वारि तिष्ठति। 'द्वारपालस्य' पञ्च॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रतीहार, २. द्वारपाल, ३. द्वाःस्थ, ४. द्वाःस्थित, ५. दर्शक- ये पांच पुल्लिङ्ग नाम द्वारपाल के हैं।

रक्षिवर्गस्त्वनीकस्थः

कृष्णमित्रटीका :- रक्षिणां वर्गः। अनीके तिष्ठति। द्वे 'रक्षितृकारणस्य' ॥[9]

हिन्दी अर्थ :- १. रक्षिवर्ग, २. अनीकस्थ- ये दो पुल्लिङ्ग नाम अङ्गरक्षक के हैं।

अथाध्यक्षाधिकृतौ समौ ॥६॥

1. M. येषा 2. **Chief minister** [2] 3. M. पुरग्रे 4. **Family priest** [2] 5. M. स्तोस्य 6. **Judge** [2] 7. **B. and K. read** प्रतीहारः 8. **Door-Keeper** [5] 9. **Sentinel or gaurd** [2].

कृष्णमित्रटीका :- अधिगतोऽक्षं[1] व्यवहारम्। 'व्यापारितस्य' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. अध्यक्ष, २. अधिकृत- ये दो पुल्लिङ्ग नाम अध्यक्ष के हैं॥६॥

स्थायुकोऽधिकृतो ग्रामे

कृष्णमित्रटीका :- स्थातुं शीलमस्य। 'लषपत' (३. २. १५४) इत्युकञ्। 'ग्रामाधिकारिणः' एकम्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- स्थायुकः- यह एक पुल्लिङ्ग नाम एक ग्राम के अध्यक्ष का है।

गोपो ग्रामेषु भूरिषु।

कृष्णमित्रटीका :- गोपायति। आयाभावे, अच्। 'बहुग्रामाधिकृतस्य' एकम्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- गोपा- यह एक पुल्लिङ्ग नाम अनेक ग्रामों के अध्यक्ष का है।

भौरिकः कनकाध्यक्षः

कृष्णमित्रटीका :- भूरिणि सुवर्णे नियुक्तः। ठक् (४. ४. ६६)॥द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. भौरिक, २. कनकाध्यक्ष- ये दो पुल्लिङ्ग नाम स्वर्णाध्यक्ष के हैं।

रूप्याध्यक्षस्तु नैष्किकः॥७॥

कृष्णमित्रटीका :- निष्के हेम्नि नियुक्तः। 'टङ्कादिशालानियुक्तस्य' द्वे॥७॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. रूप्याध्यक्ष, २. नैष्किक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम खजाना या टकसाल के अध्यक्ष के हैं॥७॥

अन्तः पुरे त्वधिकृतः स्यादन्तर्वंशिको जनः।

कृष्णमित्रटीका :- अन्तर्वंशोऽस्यास्ति[7]। एकम्॥[8]

हिन्दी अर्थ :- अन्तर्वंशिक- यह एक पुल्लिङ्ग नाम रनिवास में नियुक्त व्यक्ति का है।

सौविदल्लाः कञ्चुकिनः स्थापत्याः सौविदाश्च ते॥८॥

1. M. अधिगतोक्षं 2. **Head or employer** [2] 3. **The head of a village** [1] 4. **The head of a number of villages** [1] 5. **The superintendent of gold in a royal treasury** [2] 6. **A mint-master** [2] 7. M. अन्तर्वंशोस्यास्ति 8. **A superintendent of women apartments** [1]

कृष्णमित्रटीका :- सुष्ठु विदन्तं विद्वांसं लान्ति। सुविदल्लाः स्त्रियः। तासामिमे रक्षकाः। कञ्चुकश्चोलकोऽस्त्येषाम्[1]। स्थपतयः स्वामिनः। ष्यञ् (वा. ५. १. १२४)। सुविदामिये। 'स्त्र्यगारे बही रक्षाधीकृतस्य' चत्वरि॥८॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. सौविदल्ल, २. कञ्चुकी, ३. स्थापात्य, ४. सौविद- ये चार पुल्लिङ्ग नाम रनिवास में बाह्य रक्षा के लिए नियुक्त (वेत की छड़ी लिए हुए जाने वाले) वृद्ध का है॥८॥

शण्ढो वर्षरस्तुल्यौ

कृष्णमित्रटीका :- शाम्यति। 'शमेर्ढः' (उ. १. ९९)। वर्षस्य रेतः पातनस्य वरः। असत्तान्तः पुरस्थाः। 'खोजा' लोके॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. शण्ढ, २. वर्षवर- ये दो पुल्लिङ्ग नाम हिंजड़े के हैं।

सेवकार्थ्यनुजीविनः।

कृष्णमित्रटीका :- सेवन्ते। अर्थः संनिहितोऽस्यास्ति[4]। त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. सेवक, २. अर्थी, ३. अनुजीवी- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम सेवक के हैं।

विषयानन्तरो राजा शत्रुः

कृष्णमित्रटीका :- विषयः स्वदेशः, तदपेक्षया अव्यवहितदेशस्य राजा शत्रुः। शातयति। शद्लृः (भ्वा. प. अ.) ण्यन्तात् 'रुशातिभ्यां क्रुनं' (उ. ४. १०३)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- शत्रु- यह एक पुल्लिङ्ग नाम अपने देश के समीपस्थ देश के राजा का है।

मित्रमतः परम्॥९॥[7]

कृष्णमित्रटीका :- मेद्यति। 'अमिचिमिदि-' (उ. ४. १६३) इति क्त्रः। अतः शत्रोः॥९॥[8]

हिन्दी अर्थ :- मित्रम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम अपने मित्र राज्य के राजा का है॥९॥

उदासीनः परतरः

1. M. कञ्चुकश्चालकोऽस्त्येषां 2. **Kancukin** (an old attendant on the women's apartments) [4] 3. **Eunuh** [2] 4. M. सनिहितोस्यास्ति 5. **Servant** [2] 6. **A rival neighbouring king** [1] 7. **A friendly neighbouring king** [1] 8. **A neutral neighbouring king** [1]

कृष्णमित्रटीका :- अतिशयितपरतरः। उदास्ते। 'ईदासः' (७. २. ८३) इतीत्वम्॥[1]

हिन्दी अर्थ :- उदासीन- यह एक पुल्लिङ्ग नाम शत्रु मित्र से भिन्न (तटस्थ) राजा का है।

पार्ष्णिग्राहस्तु पृष्ठतः।

कृष्णमित्रटीका :- पार्ष्णि पश्चात् पदं गृह्णाति। 'जिगीषोः पृष्ठभागस्थस्य राज्ञः' एकम्॥[2]

हिन्दी अर्थ :- पार्ष्णिग्राह- यह एक पुल्लिङ्ग नाम पीछे से रक्षा करने वाले राजा का है।

रिपौ वैरिसपत्नारिद्विषद्द्वेषणदुर्हृदः॥१०॥
द्विड्विपक्षाहितामित्त्रस्युशात्रवशत्रवः।
अभिघाति परारातिप्रत्यर्थिपरिपन्थिनः॥११॥

कृष्णमित्रटीका :- 'रप व्यक्तायां वाचि' (भ्वा. प. से.)। 'रपेरिच्चोपधायाः' (उ. १. २६)। वैरमस्यास्ति। सपत्नीव। 'व्यन् सपत्ने' (३. १. १४५) इति निर्देशादकारः। 'ऋ गतौ' (जु. प. अ.)। 'अच् इः' (उ. ४. १३८)। अरिः। 'द्विषोऽमित्रे'[3] (३. २. १३१) शतृ। युचि (३. २. १५१) द्वेषणः। दुष्टं हृदयमस्य॥१०॥ द्वेष्टि। क्विप् (३. २. ६१)। विरुद्धः पक्षोऽस्य[4]। न हितमस्मात्। 'अमेर्द्विषति चित्' (उ. ४. १७३) इतीत्रन्। दसति। 'दासु उपक्षये' (दि. प. से.)। 'यजिमनि-' (उ. ३. २०) इति युच्। शत्रुरिव। प्रज्ञाद्यण (५. ४. ३८)। अभिहन्तुं शीलः। णिनिः (३. २. ७८)। पिपर्ति रोषम्। पृ पालने' (जु. प. से.)। अच् (३. १. १३४)। न राति सुखम्। प्रतिकूलमर्थयति परि दोषाख्यानं पन्थयति। 'पथि गतौ' (चु. पृ. से.)॥११॥

हिन्दी अर्थ :- १. रिपु, २. वैरी, ३. सपत्नः, ४. अरि, ५. द्विषन्, ६. द्वेषण, ७. दुर्हृद्)॥१०॥, ८. द्विट्, ९. विपक्ष, १०. अहित, ११. अमित्र, १२. दस्यु, १३. शात्रव, १४. शत्रु, १५. अभिषाती, १६. पर, १७. अराति, १८. प्रत्यर्थी १९. परिपन्थी- ये उन्नीस पुल्लिङ्ग नाम शत्रु के हैं॥११॥

वयस्यः स्निग्धः सवयाः

कृष्णमित्रटीका :- वयसा तुल्यः। यत् (४. ४. ९१)। स्निह्यति। 'मतिबुद्धि-' (३. २. १८८) इति क्तः। समानं वयोऽस्य[1]। 'ज्योतिर्जनपद-' (६. ३. ८५) इति सः। 'तुल्यवयसः' त्रीणि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. वयस्य, २. स्निग्ध, ३. सवया- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम बराबर अवस्था वाले मित्र का है।

अथ मित्त्रं सखा सुहृत्।

कृष्णमित्रटीका :- मेद्यति। क्त्रन्। समानः ख्यायते लोकैः। 'समानै ख्यः-' (उ. ४. १३६) इतीन्, डित् (च)। शोभनं हृदयमस्य। त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. मित्रम्, २. सखा, ३. सुहृत्- ये तीन नाम मित्र के हैं। इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय, तृतीय पुल्लिङ्ग हैं।

सख्यं साप्तदीनं स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- सख्युर्भावः। 'सख्युर्यः' (५. १. १२६)। सप्तभिः पदैरवाप्यते। 'साप्तदीनं सख्यम्' (५. २. २२) इति साधुः। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. सख्यम्, २. साप्तपदीनम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग. नाम मित्रता के हैं।

अनुरोधोऽनुवर्तनम्॥१२॥

कृष्णमित्रटीका :- अनुरोधनम्। घञ् (३. ३. १८)। अनुगम्य वर्तनम्। 'आराध्यादेरिष्टसंपादनस्य' द्वे॥१२॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. अनुरोध, २. अनुवर्तनम्- ये दो नाम क्रमशः प्रथम पुल्लिङ्ग तथा द्वितीय नपुंसकलिङ्ग अनुकूल रहने का है॥१२॥

यथार्हवर्णः प्रणिधिरपसर्पश्चरः स्पशः।
चारश्च गूढपुरुषश्च

कृष्णमित्रटीका :- यो योऽर्हः[6]। यथार्ह वर्णो रूपमस्य। प्रकर्षेण निधीयतेऽत्र[7]। घोः किः (३. ३. ९२)। अपसर्पः। 'सृप्लृ गतौ' (भ्वा. प. से.)। अच् (३. १. १३४)। चरति। स्पशति। 'स्पश बाधनस्पर्शयोः' (भ्वा. उ. से.)। प्रज्ञाद्यणि (५. ४. ३८) चारः। गूढश्चासौ पुरुषश्च। 'हरिकारा' लोके। सप्त॥[8]

1. A king who follows his friendly king fighting for victory [1] 2. M. द्विषोमित्रे 3. M. पक्षोस्य। 4. Enemy [19].

1. M. वयोस्य 2. **Companion of the same age** [3] 3. **Friend** [3] 4. **Friendship** [2] 5. **Fulfilling one's wishes** [2] 6. M. यो यो अर्हः 7. M. निधीयतेत्र 8. **Spy** [7].

हिन्दी अर्थ :- १. यथार्हवर्ण, २. प्रणिधि, ३. अपसर्प, ४. चर, ५. स्पश, ६. चार, ७. गूढपुरुष- ये सात पुल्लिङ्ग नाम रूप से पता लगाने वाले (गुप्तचर) के हैं।

आप्तः प्रत्ययितस्त्रिषु ॥१३॥

कृष्णमित्रटीका :- आप्यते स्म। 'आप्लृ व्याप्तौ' (स्वा. प. अ.)। प्रत्ययो विश्वासः संजातोऽस्य[1]। 'विश्वस्तस्य' द्वे॥१३॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. आप्त, २. प्रत्ययित- ये दो पुल्लिङ्ग नाम विश्वास करने योग्य पुरुष के हैं॥१३॥

सांवत्सरो ज्यौतिषिको दैवज्ञगणकावपि।
स्युर्मौहूर्तिकमौहूर्तज्ञानिकार्तान्तिका अपि॥१४॥

कृष्णमित्रटीका :- संवत्सरं वेद। अण् (४. २. ५६)। ज्योतिषमधीते वेद वा। दैवं जानाति। गणयति। ज्ञानमस्यास्ति। अष्टौ॥१४॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. सांवत्सर, २. ज्यौतिषिक, ३. दैवज्ञ, ४. गणक, ५. मौहूर्तिक, ६. मौहूर्त , ७. ज्ञानी, ८. कार्तान्तिक- ये आठ पुल्लिङ्ग नाम ज्यौतिषी के हैं॥१४॥

तान्त्रिको ज्ञातसिद्धान्तः

कृष्णमित्रटीका :- तन्त्रं सिद्धान्तमधीते। ज्ञातः सिद्धान्तो येन॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. तान्त्रिक, २. ज्ञातसिद्धान्त - ये दो पुल्लिङ्ग नाम तत्त्वार्थ को ठीक-ठीक जानने वाले के हैं।

सत्री गृहपतिः समौ॥

कृष्णमित्रटीका :- सत्रमस्यास्ति। गृहस्य पतिः। 'सदान्नदानादिकर्त्तुर्गृहस्थस्य' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. सत्री, २. गृहपति- ये दो पुल्लिङ्ग नाम अन्नदान करने वाले गृहस्थ के हैं।

लिपिंकरोऽक्षरचणोऽक्षरचुञ्चुः- तु[6] लेखके॥१५॥

कृष्णमित्रटीका :- लिपि करोति। 'दिवाविभा' (३. २. २१) इति टः। अक्षरैर्वित्तः। 'तेन वितः-' (५. २. ५६) (इति) चणप्। लिखति। चत्वारि॥१५॥[7]

1. M. संजातीस्य 2. **A trust-worthy person** [2] 3. **Astrologer** [8] 4. **A person well-versed in any science or doctrine** [2] 5. **House-holder** [2] 6. B. reads च 7. **Writer** [4].

हिन्दी अर्थ :- लिपिकार, २. अक्षरचण, ३. अक्षरचञ्चु, ४. लेखक- ये चार पुल्लिङ्ग नाम लेखन कार्य करने वाले के हैं॥१५॥

लिखिताक्षरविन्यासे लिपिर्लिबिरुभे स्त्रियौ।

कृष्णमित्रटीका :- लिखितं यदक्षरसंस्थानं तत्र। 'लिखितं च अक्षरविन्यासश्च तयोः समाहारे' इत्यन्ये। लिप्यतेलिपिः। 'इक् कृष्यादिभ्यः' (वा. ३. ३. १०८) 'लिबिः' सौत्र इत्याहुः। पत्राञ्जनं मसिर्मेलामषीकज्जल-कन्यकामसी। वर्णदूतः स्वस्तिवक्त्रो लेखो वाचिकहारकः। स मन्त्रहारकः शाशोऽपकर्गलं[1] शाब्दं पत्रमणि वानिः। सुधा।[2]

हिन्दी अर्थ :- १. लिपिः, २. लिवि- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम पुस्तक इत्यादि में लिखे हुए अक्षर के हैं।

स्यात्संदेशहरो दूतः

कृष्णमित्रटीका :- कागदं संदेशं हरति। 'हरतेः' (३. २. ६) इत्यच्। दूयतेस्म। दूङ् (दि. आ. से.) क्तः[3] (३. ४. ७२) द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. संदेशहर, २. दूत- ये दो पुल्लिङ्ग नाम सन्देशवाहक के हैं।

दूत्यं तद्भावकर्मणी॥१६॥

कृष्णमित्रटीका :- दूतस्य भावः। 'दूतवणिग्भ्यां च' इति यः॥१६॥[5]

हिन्दी अर्थ :- दूत्यम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम संदेशवाहक के कार्य का है॥१६॥

अध्वनीनोऽध्वगोऽध्वन्यः पान्थः पथिक इत्यपि।

कृष्णमित्रटीका :- अध्वानमलं गच्छति। 'अध्वनो यत्खौ' (५. २. १६)। पन्थानं नित्यं गच्छति। 'पन्थो न नित्यम्' (५. १. ७६)। 'पथः एकन्' (५. १. ७५)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. अध्वनीन, २. अध्वग, ३. अध्वन्य, ४. पान्थ, ५. पथिक- ये पांच पुल्लिङ्ग नाम रास्ता चलने वाले राही के हैं।

स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च॥१७॥
राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च।

1. M. शाशोपकर्गलं 2. **Written characters** [2] 3. M. क्त, 4. **Messenger** [2] 5. **The work of a messenger** [1] 6. **Traveller** [5].

स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च ॥१७॥
राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च।

कृष्णमित्रटीका :- स्वामी राजा। अमात्यो मन्त्री[1]। कोशो भाण्डारः। राष्ट्रं देशः। पर्वतादि दुर्गाणि। बलं सैन्यम् ॥१७॥ राज्यस्याङ्गानि साधनानि। प्रकृष्टं कुर्वन्ति राज्यम्। क्तिच् (३. ३. १७४)। पौराणां नागराणाम्। श्रीयते श्रेणिः। 'बहिश्री-' (उ. ४. ५१) इति निः। एक मुख्याः सजातीयसमूहाः स्वाम्यमात्यादिपरस्परोपकारकं सप्ताङ्गं राज्यं पौरश्रेणिभिः सहाष्टाङ्गम्। द्वे ॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. स्वामी (राजा), २. अमात्य (मन्त्री), ३. सुहृत (मित्रम्), ४. कोश (भण्डारः), ५. राष्ट्रम् (देशः), ६. दुर्गम् (पर्वतादिः), ७. बलम् (सैन्यम्)- ये सात क्रमशः चार पुल्लिङ्ग तीन नपुंसकलिङ्ग क्रमशः एक -एक राज्य के या राजकर्म के अंगों के नाम हैं ॥१७॥

१. राज्याङ्गम्, २. प्रकृति- ये दो नाम उपर्युक्त स्वाम्यादि सातों के वाचक हैं, इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय स्त्रीलिङ्ग हैं।

पौराणां नागराणां श्रेणय- उस एक स्त्रीलिङ्ग नाम से नगर-वासियों की भी गणना राज्याङ्ग और प्रकृति में होती है। इस प्रकार राज्याङ्ग के आठ भेद हैं।

संधिर्ना विग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रयः ॥१८॥
षड्गुणाः

कृष्णमित्रटीका :- धाञः किः (३. ३. ९२) संधिः। विविधं ग्रहणम्। यानं यात्रा। द्विप्रकाराद्द्वैधम्; 'द्वित्र्योश्च धमुञ्' (५. ३. ४५)। आश्रयणम्। 'एरच्' (३. ३. ५६) ॥१८॥ एतानि षड् गुणशब्दवाच्यानि ॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. सन्धि, २. विग्रह, ३. यानम्, ४. आसनम्, ५. द्वैधम्, ६. आश्रय- ये छः नाम गुण शब्द वाच्य हैं। अभिप्राय यह है कि ये छः नीतिज्ञों के गुण कहलाते हैं, इनमें एक और दो पुल्लिङ्ग, तीन से पाँच नपुंसकलिङ्ग छःठा पुल्लिङ्ग हैं ॥१८॥

शक्तयस्तिस्रः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः।

1. M. मन्त्रा 2. Seven requisites of regal administration [2] 3. The expedients to be used by a king in foreign policies being (i) pace or alliance (ii) war (iii) march or expedition (iv) halt (v) duplicity and (vi) seeking shelter.

कृष्णमित्रटीका :- शक्यो जेतुमनया। भवत्येनन भावः। घञ् (३. ३. २४)। उक्तं च- 'कोशदण्डबलं प्रभुशक्तिः' इति। उत्सहतेऽनेन[1]। घञ् (३. ३. १२१) उक्तं हि— 'विक्रमं बलमुत्साहशक्तिः' इति। संध्यादीनां सामादीनां च यथावत्स्थापनं मन्त्रशक्तिः ॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रभाव, २. उत्साह, ३. मन्त्र, शक्ति- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम प्रभाव से उत्पन्न होनेवाले, उत्साह से उत्पन्न होने वाले और गुप्त मन्त्रणा से उत्पन्न होने वाले सामर्थ्य का कहते हैं। इस प्रकार की शक्तियाँ दण्ड बल प्रभावज शक्ति है। 'विक्रमबलमुत्साहशक्तिः'= पराक्रमबल उत्साहज शक्ति है। सन्धि आदि का और सामादि उपाय का यथावत् प्रयोग करना (ज्ञान बल का नहीं) मन्त्रज शक्ति है।

क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गो नीतिवेदिनाम् ॥१९॥

कृष्णमित्रटीका :- अष्टवर्गस्यापचयः क्षयः। उपचयो वृद्धिः। उपचयोपचयाभावः स्थानम्। 'कृषिर्वणिक्पथो दुर्गं सेतुः कुञ्जरबन्धनम्। खन्याकरबलादानं शून्यानां च निवेशनम् ॥' इत्यष्टवर्गः। त्रयाणां वर्गः ॥१९॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. क्षयः, २. स्थानम्, ३. वृद्धि - ये तीन नाम क्रमशः (अष्ट वर्ग की कमी को क्षय, समान रहने को स्थान और बढ़ने को वृद्धि), एक-एक त्रिवर्ग के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग, तृतीय स्त्रीलिङ्ग हैं। ये ही नीतिज्ञों के त्रिवर्ग भी कहलाते हैं ॥१९॥

स प्रतापः प्रभावश्च यत्तेजः कोशदण्डजम्।

कृष्णमित्रटीका :- कोशो धनम्, दण्डः सैन्यादि, ताभ्यां जातं यत्तेजः। द्वे ॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१. प्रताप, २. प्रभाव- ये दो पुल्लिङ्ग नाम कोश- दण्डज तेज के हैं।

भेदोदण्डः साम दानमित्युपायचतुष्टयम् ॥२०॥

कृष्णमित्रटीका :- शत्रोरमात्यादीनामुपायेन पृथक्करणं भेदः। दमेः (दि. प. से.) 'ञमन्ताड्डः' (उ. १. ११४)। 'साम सान्त्वप्रयोगे' (चु. उ. से.)

1. M. उत्सहतेनेन 2. Three regal powers namely utsahas'akti, prabhavas'akti and mantras'akti 3. Three states of loss stablity and increase 4. Glory, majesty, dignity [2].

बाहुलकात्कनिन्। प्रियवचनादिभिः क्रोधोपशामनं साम। दानं धनस्य। उपायतेऽनेन[1]। घञ् (३. ३. १२१)॥२०॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. भेद, २. दण्ड, ३. साम, ४. दानम्- ये चार नाम राजाओं के उपाय (पुल्लिङ्ग) के हैं। इनमें एक और दो पुल्लिङ्ग, तीन और चार नपुंसकलिङ्ग हैं। शत्रु के मन्त्री आदि को जिस उपाय के द्वारा एक को दूसरे से अलग कर अपने पक्ष में किया जाता है उस उपाय को 'भेद' कहते हैं। अपराधियों को किये जानेवाले शासन को 'दण्ड' कहते हैं। प्रियवचनों से क्रोध शान्त करने को 'साम' कहते हैं। अपने धनको दूसरे के लिये देने को 'दान' कहते हैं।

साहसं तु दमो दण्डः

कृष्णमित्रटीका :- सहसि बले भवम्। त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. साहसम्, २. दण्ड, ३. दम- ये तीन नाम दण्ड के हैं। ये तीनों नाम पुल्लिङ्ग हैं।

साम सान्त्वम्

कृष्णमित्रटीका :- सान्त्वनम्। घञ् (३. ३. १८)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. साम, २. सान्त्वम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम शान्त करने के हैं।

अथो समौ।

भेदोपजापौ

कृष्णमित्रटीका :- 'जप मानसे' (भ्वा. प. से.)। घञ् (३. ३. १८)। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. भेद, २. उपजाप- ये दो पुल्लिङ्ग नाम भेद के हैं।

उपधा धर्माद्यैर्यत्परीक्षणम्॥२१॥

कृष्णमित्रटीका :- उपधीयते ज्ञानमत्र। 'आतश्च-' (३. ३. १०६) इत्यङ्। धर्मार्थकामैरमात्यादीनां राज्ञा परीक्षणमुपधा॥२१॥[6]

1. M. उपायतेनेन 2. **Four means of success against an enemy i. e. (i) saman (conciliation) dana (bribery) (ii) danda (punishment) and (iii) bheda (sowing difference)**, 3. **Punishment i. e. open attack** [3] 4. **Conciliation or negotiation** [2] 5. **Sowing dissensions** [2] 6. **Trial or test of honesty** (of ministers and others by a king).

हिन्दी अर्थ :- उपधा- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम मन्त्री के धर्म, धन, काम, भयादि के ज्ञान की राजा द्वारा परीक्षा करने का है॥२१॥

पञ्च त्रिषु

कृष्णमित्रटीका :- निश्शलाकान्ताः पञ्च॥

हिन्दी अर्थ :- अषडक्षीण आदि निःशलाक पर्य्यन्त पाँच शब्द तीनों लिंगों में होते हैं॥

अषड्क्षीणो यस्तृतीयाद्यगोचरः।

कृष्णमित्रटीका :- अविद्यमानानि षड् अक्षी-ण्यत्र[1]। 'अषडक्षाशित-' (५. ४. ७) इति खः। द्वाभ्यामेव कृतो मन्त्र इत्यर्थः॥[2]

हिन्दी अर्थ :- अषडक्षीण- यह एक त्रिलिङ्ग नाम केवल दो व्यक्तियों की गुप्त वार्ता करने का है।

विविक्तविजनच्छन्ननिश्शलाकास्तथा रहः॥२२॥

रहश्चोपांशु चालिङ्गे

कृष्णमित्रटीका :- विविश्चन्ति जना अत्र। क्तः (३. ४. ७६)। विगतो जनोऽस्मात्[3]। छाद्यते। 'छद अपवारणे' (चु. उ. से.) क्तः (३. २. १०२)। शलाकाया निर्गतः। शलाका शारिका। रह्यते। 'रह त्यागे' (भ्वा. प. से.)। असुन् (उ. ४. १८८)॥२२॥ उपगतां अंशवः किरणा अत्र। एते द्वे अलिङ्गे अव्यये॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. विविक्त, २. विजन, ३. छन्न, ४. निःशलाक, ५. रह ॥२२॥, ६. रह, ७. उपांशु- ये सात नाम एकान्त के हैं। इनमें चार त्रिलिङ्ग, एक नपुंसकलिङ्ग, दो अव्यय हैं।

रहस्यं तद्भवे त्रिषु।

कृष्णमित्रटीका :- रहो भवम्। दिगादिः (४. ३. ५४)। एकम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- रहस्यम्- यह एक त्रिलिङ्ग नाम गुप्त मत का है।

समौ विस्रम्भविश्वासौ

कृष्णमित्रटीका :- 'स्रम्भु विश्वासे' (भ्वा. आ. से.)। दन्त्यादिरपि। 'श्वस प्राणने' (अ. प. से.)। घञ् (३. ३. १८)। द्वे॥[6]

1. M. क्षीण्यत्र 2. **Secret talks between two persons** [1] 3. M. जनोस्मात्। 4. **Lonely place** [6] 5. **Secret** [1] 6. **Confidence** [2].

हिन्दी अर्थ :- १.विस्रम्भ, २. विश्वास- ये दो पुल्लिङ्ग नाम विश्वास के हैं।

भ्रेषो भ्रंशो यथोचितात्॥२३॥

कृष्णमित्रटीका :- उचिताद् भ्रंशोऽधः पतनम्[1]। 'भ्रेषृ चलने' (भ्वा. उ. से.)। घञ् (३. ३. १८)। एकम्॥२३॥[2]

हिन्दी अर्थ :- भ्रेष- यह एक पुल्लिङ्ग नाम अधःपतन का है।

अभ्रेषन्यायकल्पास्तु देशरूपं समञ्जसम्।

कृष्णमित्रटीका :- भ्रेषादन्यः। नियमेन ईयते। 'परिण्योर्नीणोः-' (३. ३. ३७) इति घञ्। कल्पनम्। घञ् (३. ३. १८)। 'दिश अतिसर्जने' (तु. उ. अ.)। उचितो रूपमस्य। सम्यगञ्जोऽत्र[3]। 'उचितस्य' पञ्च॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. अभ्रेष, २. न्याय, ३. कल्प, ४. देशरूपम्, ५. समञ्जसम्- ये पाँच नाम न्याय के हैं। इनमें प्रथम तीन पुल्लिङ्ग और अन्तिम दो नपुंसकलिङ्ग हैं।

युक्तमौपयिकं लभ्यं भजमानाभिनीतवत्॥२४॥
न्याय्यं च त्रिषु षट्

कृष्णमित्रटीका :- युजेः (रु. उ. अ.), क्तः (३. २. १०२)। उपाय एव। 'उपायाद्ध्रस्वश्च' (ग. ५. ३४) इति ढक्। 'पोरदुपधात्' (३. १. ९८) इति यत्। लभ्यम्। अभिनीयते स्म। णीञः (भ्वा. उ. अ.) क्तः (३. २. १०२)॥२४॥ न्यायदनपेतम्। 'धर्मपथ्यर्थ-' (४. ४. ९२) इति यत्। षट् त्रिषु। 'न्यायागतस्य' षट्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. युक्तम्, २. औपयिकम्, ३. लभ्यम्, ४. भजमानम्, ५. अभिनीतम्॥२४॥, ६. न्याय्यम्- ये छः त्रिलिङ्ग नाम न्याययुक्त कार्य के हैं॥

संप्रधारणा तु समर्थनम्।

कृष्णमित्रटीका :- धृञः (भ्वा. उ. अ.) ण्यास- (३. ३. १०७) इति युच्। 'अर्थ याञ्चायाम्' (चु. उ. से.)। 'इदमुचितमेवेति निश्चयस्य' द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. संप्रधारणा, २. समर्थनम्- ये दो नाम अनुचित और उचित का विचार करने के हैं, इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग हैं।

1. M. भ्रंशोधःपतनम् 2. **Deviation** [2] 3. M. सम्यक् अञ्जोत्र 4. **Propriety** [5] 5. **Proper or just** [6] 6. **Determining the propriety of anything** [2].

अववादस्तु निर्देशो निदेशः शासनं च सः॥२५॥
शिष्टिश्चाज्ञा च

कृष्णमित्रटीका :- अवलम्ब्य वदनम्। घञ् (३. ३. १८)। निर्देशः कार्यादेशः। शाशेर्ल्युट् (३. ३. ११५)॥२५॥ 'क्तिन्नाबादिभ्यः' (३. ३. ९४)। शिष्टिः 'आतश्च-' (३. ३. १०६) इत्यङ्। 'आज्ञायाः' षट्॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. अववाद, २. निर्देश, ३. निदेश, ४. शासनम्॥२५॥, ५. शिष्टि, ६. आज्ञा- ये छः नाम आज्ञा के हैं। जिनमें एक से तीन पुल्लिङ्ग, चतुर्थ नपुंसकलिङ्ग, पाँच और छः स्त्रीलिङ्ग हैं॥

संस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः।

कृष्णमित्रटीका :- संतिष्ठतेऽनया[2]। 'मर्या' इति सीमार्थेऽव्ययम्[3]। तत्रादीयते। अङ् (३. ३. १०६)। धारयति धर्मम्। युच् (उ. २. ७८)। 'स्थागापा-' (३. ३. ९५) इति क्तिन्। 'न्याय्यपथस्थितेः' चत्वारि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. संस्था, २. मर्यादा, ३. धारण, ४. स्थिति- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम उचित मार्ग पर रहने के हैं।

आगोऽपराधो मन्तुश्च

कृष्णमित्रटीका :- 'इण आगोऽपराधे[5]च' (उ. ४. २११) इत्यसुन्, आगादेशश्च। अपराधनम्। मन्यते। 'कमिमनि-' (उ. १. ७२) इति तुः। त्रीणि॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. आग, २. अपराध, ३. मन्तु- ये तीन नाम अपराध के हैं, इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग, दो और तीन पुल्लिङ्ग हैं।

समे तूद्दानबन्धने॥२६॥

कृष्णमित्रटीका :- उत्पूर्वाद् द्यतेर्ल्युट् (३. ३. ११५)॥२६॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. उद्दानम्, २. बन्धनम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम बन्धन के हैं। समे=समानार्थे।

द्विपाद्यो द्विगुणो दण्डः

कृष्णमित्रटीका :- द्वौ पादौ परिमाणमस्य। 'पणपाद-' (५. १. ३४) इति यत्। 'शास्त्रबोधितदण्डाद्-द्विगुणदण्डनस्य' एकम्॥[8]

1. **Order or command** [6] 2. M. सतिष्ठतेनया 3. M. सीमार्थेव्ययम् 4. **Propriety of conduct** [4] 5. M. आगोपराधे 6. **Offence** [3] 7. **Confinement or imprisonment** [2] 8. **Double penality** [1].

हिन्दी अर्थ :- द्विपाद्य- यह एक पुल्लिङ्ग नाम दुगुने दण्ड का है।

भागधेयः करो बलिः।

कृष्णमित्रटीका :- भाग एव। 'नामरूप-' (वा. ५. ३५) इति धेयः। कीयते। अप् (३. ३. ४७)। बल्यते। 'बल दाने' (?)। इन् (उ. ४. ११७)। 'कर्षकादिभ्यो राजग्राह्यभागस्य' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. भागधेय, २. कर, ३. बलि- ये तीन नाम मालगुजारी के हैं।

घट्टादिदेयं शुल्कोऽस्त्री

कृष्णमित्रटीका :- घट्टादौ देयम्[2]। शुल्कते। 'शुल्क अतिसर्जने' (चु. प. से.)। एकम्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- शुल्क- यह एक पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग नाम जङ्गल घाट नदी इत्यादि की आमदनी से दिये जाने वाले शुल्क (कर) का है।

प्राभृतं तु प्रदेशनम्॥२७॥

कृष्णमित्रटीका :- भृञः (भ्वा. उ. अ.), क्तः (३. २. १०२)। 'देवताभ्यो मित्रादिभ्यश्च दीयमानस्य' द्वे॥२७॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. प्राभृतम्, २. प्रदेशनम्- ये दो नाम देवता तथा मित्र को प्रसन्न करने के लिए दिये जाने वाले पदार्थ उपहार का है॥२७॥

उपायनमुपग्राह्यमुपहारस्तथोपदा।

कृष्णमित्रटीका :- इणो गतेर्वा (भ्वा. आ. से.) ल्युट् (३. २. ११३)। उपायनम्। उपगृह्य (ते। घ) ञ्। उपदीयते। 'आतश्च-' (३. ३. १०६) इत्यङ्। चत्वारि॥ 'अकोर' लोके। वस्तुतस्तु प्रसक्तं प्रभ्वादिभ्यो दीयमानमु (पा) यनम्।, रहसि दीयमानं तूपदेति भेदः॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. उपायनम्, २. उपग्राह्यम्, ३. उपहार, ४. उपदा- ये चार नाम क्रमशः दो नपुंसकलिङ्ग एक पुल्लिङ्ग और एक स्त्रीलिङ्ग दिए जाने वाले उपहार के हैं।

यौतकादि तु यद् देयं सुदायो हरणं च तत्॥२८॥

कृष्णमित्रटीका :- युतकंयौतिसम्बन्धः, तत्र भवम्। अण् (४. ३. ५३)। सुदीयते। डुदाञः

1. **Rent or tax** [3] 2. M. देया 3. **Tex** (payable from the income) [1] 4. **Gift or present** (especially to gods and friends) [2] 5. **Gift** (in general) [4]

(चु. उ. अ.) युगागमः (७. ३. ३३)। ह्रियते। कर्मणि ल्युट् (३. ३. ११३)॥२८॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. यौतकम्, २. सुदाय, ३. हरणम् - ये तीन नाम उपनयन एवं विवाह संस्कार में दिये जाने वाले द्रव्य के हैं, इनमें एक और तीन नपुंसकलिङ्ग तथा द्वितीय पुल्लिङ्ग हैं॥२८॥

तत्कालस्तु तदात्वं स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- स चासौ कालश्च। तदेत्यस्य भावः। 'वर्तमानकालस्य' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१. तत्काल, २. तदात्वम्- ये दो नाम क्रमशः पुल्लिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग, वर्तमान काल के हैं।

स्त्र्यायतिः काल उत्तरः।

कृष्णमित्रटीका :- आ यम्यन्तेऽत्र[3]। यमेः (भ्वा. प. अ.) क्तिन् (३. ३. ९४)। एकम्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- आयाति- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम भविष्य काल का है।

सांदृष्टिकं फलं सद्यः

कृष्णमित्रटीका :- संदृष्टौ प्रत्यक्षे भवम्। अध्यात्मादिः (वा. ४. २. ६०)। 'व्यापारानन्तरं जायमान-फलस्य' एकम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- सांदृष्टिकम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम कार्योपरान्त सद्यः मिलनेवाले फल का है।

उदर्कः फलमुत्तरम्॥२९॥

कृष्णमित्रटीका :- उदर्क्यते। 'अर्क स्तवने' (चु. प. से.)। उत्तरं भाविकर्मफलम्॥२९॥[6]

हिन्दी अर्थ :- उदर्क- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम भविष्य काल में मिलने वाले फल का है।

अदृष्टं वह्नितोयादि

कृष्णमित्रटीका :- अग्नितोयादिकृतं भयमदृष्टम्॥[7]

1. **Dowery** [3] 2. **The present time** [2] 3. **B. and K. this quarter as follows:** उत्तरः काल आयतिः 4. M. read आयम्यन्तेत्र 5. **The future time** [1] 6. **Immediate consequence** [1] 7. **The future result of an action** [1].

हिन्दी अर्थ :- अदृष्टम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम अग्नि जल इत्यादि से होने वाले भय का है।

दृष्टं स्वपरचक्रजम्।

कृष्णमित्रटीका :- स्वपरयोश्चक्रं सैन्यम्। ताभ्यां जातम्। 'स्वपरसैन्यात्परराष्ट्रजाच्चौरादेः परचक्राद्दाहविलोपादेर्भयम्' ॥[1]

हिन्दी अर्थ :- दृष्टम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम चोर, जङ्गल दाह, चढ़ाई आदि के भय का है।

महीभुजामहिभयं स्वपक्षप्रभवं भयम्॥३०॥[2]

कृष्णमित्रटीका :- स्वस्य पक्षोऽहिरिव[3]। ततो जातं भयम्॥३०॥[4]

हिन्दी अर्थ :- अहिभयम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम राजाओं के अपने पक्ष से होने वाले भय का है।

गृहस्थत्वादावृताकारत्वाच्च स्वस्य पक्ष एव अहिः। स्वप-क्षात्प्रभवति इति पचाद्यच्। 'निजोऽथ मैत्रश्च समाश्रितश्च सम्बन्धतः कार्य-समुद्भवश्च। भृत्या गृहीतो विविर्धोपचारैः पक्षं बुधाः सप्तविधं वदन्ति॥३०॥'

प्रक्रिया त्वधिकारः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- प्रकर्षोपकरण्। 'कृञः श च' (३. ३. १००)। रिङ् (७. ४. २८)। 'राज्ञां छत्रधारणादिव्यापारस्य' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रक्रिया, २. अधिकार- ये दो नाम छत्रधारणादि व्यापार के हैं, इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग द्वितीय पुल्लिङ्ग है।

चामरं तु प्रकीर्णकम्।

कृष्णमित्रटीका :- चमरस्येदम्। प्रकीर्यतेऽस्मात्[6]। द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. चामरम्, २. प्रकीर्णकम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम चंवर के हैं।

नृपासनं तु यद्भद्रासनम्

कृष्णमित्रटीका :- नृपस्यासनम्। भद्रं च तदासनं च। 'मण्यादिकृतराजासनस्य' द्वे॥[8]

1. Unforeseen calamity or danger (such as from fire, water & C.) [1] 2. Visible danger as from thief, enemy & c. [1] 3. M. पक्षोहिरिव 4. Danger of a king from his own men [1] 5. The bearing of royal insignia [2] 6. M. प्रकीर्यतेस्मात् 7. Chowry [2] 8. A royal seat [3].

हिन्दी अर्थ :- नृपासनम्, २. भद्रासनम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम मणि आदि से निर्मित राजा के आसन के हैं।

सिंहासनं तु तत्॥३१॥

हैमम्

कृष्णमित्रटीका :- हेमविकारो नृपासनं सिंहाकारमासनम्॥[1]

हिन्दी अर्थ :- सिंहासनम्- यह एक नाम स्वर्ण से बने हुए राजा के सिंहासन का है। इति सम्बन्धः॥३१॥

छत्रं त्वातपत्रम्

कृ. मित्र टीका:-भद्रः कुम्भः। पूर्णः कुम्भः। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. छत्रम्, २. आतपत्रम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम छाता के हैं।

राज्ञस्तु नृपलक्ष्म तत्।

कृष्णमित्रटीका :- तत् छत्त्रम्। नृपस्य लक्ष्म॥ एकम्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- नृपलक्ष्म- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम राजा के छाते का है।

भद्रकुम्भः पूर्णःकुम्भः

कृष्णमित्रटीका :- भद्र कुम्भः। पूर्णः कुम्भः। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. भद्रकुम्भ, २. पूर्णकुम्भ- ये दो पुल्लिङ्ग कल्याणार्थ जल से परिपूर्ण घड़े के हैं।

भृङ्गारः कनकालुका॥३२॥

कृष्णमित्रटीका :- बिभर्ति जलम्। 'शृङ्गार-भृङ्गारौ च' (उ. १. १३६) इति साधुः। कनकस्यालुः। संज्ञायां कन्' (५. ३. ७५)। 'सुवर्णकृतलपात्रस्य' द्वे॥३२॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. भृङ्गार, २. कनकालुका- ये दो नाम क्रमशः प्रथम पुल्लिङ्ग, द्वितीय स्त्रीलिङ्ग स्वर्णपात्र विशेष के हैं॥३२॥

1. A royal seat made of gold [1] 2. Umbrella [2] 3. A royal umbrella [1] 4. A jar filled with water [2] 5. A golden pitcher [2].

निवेशः शिबिरं शण्ढे

कृष्णमित्रटीका :- निविशन्तेऽत्र[1]। घञ् (३. ३. २१)। शवन्त्यत्र। 'शव गतौ' (भ्वा. प. से.)। बाहुलकात्किरच् अच इत्वं च। षण्ढे क्लीबे। द्वे 'सैन्यावासस्य'। 'डेरा' लोके॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. निवेश, २. शिविरम्- ये दो नाम सेना के निवास की जगह के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग है॥

सज्जनं तूपरक्षणम्।

कृष्णमित्रटीका :- सज्जन्तेऽनेन[3]। 'सैन्यरक्षणायनियुक्तप्रहरिकादिन्यासस्य' द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. सज्जनम्, २. उपरक्षणम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम सेना की रक्षा के लिए नियत किये हुए पहरे का है।

हस्त्यश्वरथपादन्तं सेनाङ्गं स्याच्चतुष्टयम्॥३३॥

कृष्णमित्रटीका :- पदातीनां समूहः॥३३॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१. सेनाङ्गम्, २. हाथी, ३. घोड़ा, ४, रथ, ५. पैदल- ये पाँच सेना के अङ्ग हैं॥३३॥

दन्ती दन्तावलो हस्ती द्विरदोऽनेकपो द्विपः।
मतङ्गजो गजो नागः कुञ्जरो वारणः करी॥३४॥
इभः स्तम्बेरमः पद्मी

कृष्णमित्रटीका :- प्रशस्ता दन्ता अस्य दन्ती। 'दन्तशिखात्[6]-' (५. २. ११३) इति वलच्। 'वले' (६. ३. ११८) इति दीर्घः। हस्तः शुण्डोऽस्यास्ति[7]। द्वौ रदावस्य। अनेकेन करेण मुखेन च पिबति। द्वाभ्यां पिबति। मतङ्गादृषेजतिः। 'गज मदने' (भ्वा. प. से.)। अच् (३. १. १३४)। न अगः। अतिशयितः कुञ्जो हनुरस्य। 'खमुख-' (वा. ५. २. १०७) इति रः। वारयति शत्रुबलम्॥३४॥ एति इभः 'इणः कित्' (उ. ३. १५३) इति भः। स्तम्बे रमते। पद्मं विन्दुजालमस्यास्ति। पञ्चदश॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. दन्ती, २. दन्तावल, ३. हस्ती, ४. द्विरद, ५. अनेकप, ६. द्विप, ७. मतङ्गज, ८. गज (गजति इति अच्), ९. नाग (न अगः, नगे भवो वेति अण्), १०. कुञ्जर, ११. वारण, १२. करी॥३४॥, १३. इभ, १४. स्तम्बेरम, १५. पद्मी- ये चौदह पुल्लिङ्ग नाम गज के हैं।

यूथनाथस्तु यूथपः।

कृष्णमित्रटीका :- यूथस्य हस्तिवृन्दस्य नाथः। यूथं पाति। 'यूथमुख्यहस्तिनः' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. यूथनाथ, २. यूथप- ये दो पुल्लिङ्ग नाम समूह के स्वामी हाथी का है।

मदोत्कटो मदकलः

कृष्णमित्रटीका :- मदेन दानजलेन उत्कटो गजः। मदेन कलते। 'अन्तर्मदस्य हस्तिनः' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. मदोत्कट, २. मदकल- ये दो पुल्लिङ्ग नाम मतवाले हाथी के हैं।

कलभः करिशावकः॥३५॥

कृष्णमित्रटीका :- कलं भाषते। डः (वा. ३. २. १०२)। करिणः शावकः। द्वे॥३५॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. कलभ, २. करिशावक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम हाथी के बच्चे के हैं॥३५॥

प्रभिन्नो गर्जितो मत्तः

कृष्णमित्रटीका :- गर्जयति। त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रभिन्ना, २. गर्जित, ३. मत्त- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम मतवाले होकर गरजने वाले हाथी के हैं।

समावुद्वान्तनिर्मदौ।

कृष्णमित्रटीका :- उद्गतं मदवमनमस्मात्। 'गतमदस्य' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. उद्वान्त, २. निर्मद- ये दो पुल्लिङ्ग नाम मदरहित हाथी के हैं।

हास्तिकं गजता वृन्दे

कृष्णमित्रटीका :- हस्तिनां समूहः। 'अचित' (४. २. ४७) इति ठक्। 'गजसहायाभ्यां च' (वा. ४. २. ४३) इति तल्। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. हास्तिकम्, २. गजता- ये दो नाम गजसमूह के हैं। इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग द्वितीय स्त्रीलिङ्ग हैं।

---

1. M. निविशन्तेत्र 2. **Camp (for army)** [2] 3. M. सज्जन्तेनेन, 4. **Gaurd, sentry** [2] 5. **The component part of an army** [1] 6. M. दन्तिशिखात् 7. M. शुण्डोस्यास्ति 8. **Elephant** [15].

1. **The leader of a flock of elephants** [2] 2. **A rutting elephant** [2] 3. A yung elephant [2] 4. **A furious elephant** [2] 5. **An elephant out of rut** [2] 6. **A herd of elephant** [2]

करिणी धेनुका वशा॥३६॥

कृष्णमित्रटीका :- करोऽस्त्यस्याः। धेनुरिव। दवे कन् (५. ३. ९६)। वष्टि। 'वशिरण्योश्च' (वा. ३. ३. ५८) इत्यप्॥३६॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. करिणी, २. धेनुका, ३. वशा- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम हथिनी के हैं॥३६॥

गण्डः कटः

कृष्णमित्रटीका :- गण्डति। अच् (३. १. १३४)। कटति। 'कटे वर्षादौ' (भ्वा. प. से.) 'गजण्डयोः' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. गण्ड, २. कट- ये दो पुल्लिङ्ग नाम हाथी के गाल के हैं।

मदो दानम्

कृष्णमित्रटीका :- माद्यत्यनेन। द्यत्यनेन। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. मद, २. दानम्- ये दो नाम गज के मद के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग हैं।

वमथुः करशीकरः।

कृष्णमित्रटीका :- वम्यते। 'ट्वितोऽथुच्[4]' (३. ३. ८९)। करस्य शीकरः। 'शुण्डान्निर्गतजलस्य' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. वमथु, २. करशीकर- ये दो पुल्लिङ्ग नाम हाथी के सूंड़ से निकले हुए पानी के छीटों के हैं।

कुम्भौ तु पिण्डौ शिरसः

कृष्णमित्रटीका :- कुं भुवमुम्भति। शकन्ध्वादिः (वा. ६. १. ९४)। पिण्डते। 'पिडि' संघाते। एकम्॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. कुम्भ, २. पिण्ड- ये दो पुल्लिङ्ग नाम गज के मस्तक के ऊपर वाले दोनों मांसपिण्डों का है।

तयोर्मध्ये बिदुः पुमान्॥३७॥

कृष्णमित्रटीका :- तयोः कुम्भयोः। वेत्ति संज्ञामत्र घातेन। विदेः (अ. प. से.) बाहुलकात्कु॥३७॥[1]

हिन्दी अर्थ :- विदु- यह एक पुल्लिङ्ग नाम गज के ऊपर वाले दोनों मांसपिण्डों के बीच वाले भाग का है॥३७॥

अवग्रहो ललाटं स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- अवगृह्यतेऽङ्कुशेन[2]। एकम्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- अवग्रह- यह एक पुल्लिङ्ग नाम गज के ललाट का है।

इषीका त्वक्षिकूटकम्।

कृष्णमित्रटीका :- ईष्यते। -ईष उञ्छे' (भ्वा. प. से.)। 'ईषेः किद्ध्रस्वश्च' (उ. ४. २१) इतीकन्। अक्षिकूटकं चक्षुर्गोलकम्। एकम्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- ईषीकका- यह स्त्रीलिङ्ग नाम हाथी की आँख के गोलाकार भाग का है।

अपाङ्गदेशो निर्याणम्

कृष्णमित्रटीका :- निर्यात्यनेन। एकम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- निर्याणम्- यह एक नपुंसक-लिङ्ग नाम हाथी की आँख के किनारे भाग का है।

कर्णमूलं तु चूलिका॥३८॥

कृष्णमित्रटीका :- चूल्यतेऽनया[6]। 'चूल समुच्छ्राये' (चु. प. से.)। 'संज्ञायाम्' (३. ३. १०९) ण्वुल्॥३८॥[7]

हिन्दी अर्थ :- चूलिका- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम गज के कनपटी (कान की जड़ वाले भाग) का है॥३८॥

अधः कुम्भस्य वाहित्थम्

कृष्णमित्रटीका :- कुम्भस्याधः। ललाटादधोभागः। वहत्यवश्यं वाहि तत्र तिष्ठति। पृषोदरादित्वात्सस्य तः। एकम् 'वहित्थाधोभागो दन्तमध्यः'॥[8]

हिन्दी अर्थ :- वाहित्थम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम हाथी के ऊपर वाले दोनों मांसपिण्डों के नीचे वाले भाग का है।

---

1. A female elephant [3] 2. The temple of an elephant [2] 3. The juice or ichor that exudes from the temples of an elephant in rut [2] 4. M. ट्वितोथुच् 5. The water emitted from the trunk of an elephant [2] 6. The frontal globes on the forehead of an elephant [2].

1. The middle of the frontal globes on an elephant's forehead [1] 2. M. अवगृह्यतेङ्कुशेन 3. The forehead of an elephant [1] 4. The eyeball of an elephant [1] 5. The corner of an elephant's eye [1] 6. M. चुल्यतेनया 7. The root of an elephant's ear [1] 8. The part of an elephant's forehead below the frontal globes [1].

प्रतिमानमधोऽस्य यत्।

कृष्णमित्रटीका :- प्रतिमीयतेऽनेन[1]। 'मिञ् हिंसायाम्' (क्र्या. उ. अ.)। 'मीनाति-' (६. १. ५०) इत्यात्वम्। एकम्॥[2]

हिन्दी अर्थ :- प्रतिमानम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम हाथी के दोनों दांतों के बीच वाले भाग का है।

आसनं स्कन्धदेशः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- आस्यतेऽत्र[3]। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- आसनम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम गजस्कन्ध (हस्तिपक=महावत के बैठने की जगह) का है।

पद्मकं बिन्दुजालकम्॥३९॥

कृष्णमित्रटीका :- पद्ममिव। बिन्दूनां जालकमिव। 'गजस्य मुखादिस्थविन्दुसमूहस्य' द्वे॥३९॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. पद्मकम्, २. बिन्दुजालकम् - ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम हाथियों के मुँह में पद्माकार छोटे-छोटे लाल-लाल चिह्नविशेष के हैं॥३९॥

पक्षभागः पार्श्वभागः

कृष्णमित्रटीका :- पक्षयत्यनेन। 'पक्ष परिग्रहे' (चु. प. से.)। पक्षस्य भागः। 'गजपार्श्वस्य' द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. पक्षभाग, २. पार्श्वभाग- ये दो पुल्लिङ्ग नाम हाथी के बगल के हैं।

दन्तभागस्तु योऽग्रतः।

कृष्णमित्रटीका :- दन्तस्य भागः। 'अग्रभागस्य' एकम्॥[7]

हिन्दी अर्थ :- दन्तभाग- यह एक पुल्लिङ्ग नाम हाथी के अग्रभाग का है।

द्वौ पूर्वपश्चाज्जङ्घादिदेशौ गात्रावरे क्रमात्॥४०॥

कृष्णमित्रटीका :- पूर्वजङ्घाभागे गात्रम्। पश्चाज्जङ्घाभागोऽवरम्[8]। गातेऽनेन[9]। 'गाङ् गतौ' (अ. आ. अ.)। अव राति। कः (३. १. १३६)॥४०॥[10]

1. M. प्रतिम यन्तेनेन 2. The part of an elephant's head between the tusks [1] 3. M. आस्यतत्र 4. The shoulder of an elephant [1] 5. The coloured spots on the trunk and face of an elephant [1] 6. The flank of an elephant [2] 7. The fore part of an elephant [1] 8. M. पश्चाज्जङ्घाभागोवरं 9. M. गातेनेन 10. The parts of an elephant behind and above its thigh [1 each].

हिन्दी अर्थ :- १. गात्रम्, २. अवरम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम क्रमशः हाथी के पूर्वार्द्ध व परार्द्ध शरीर भाग के हैं। क्रम से पूर्वजङ्घावाले प्रदेश गात्र है और परजंघा वाला प्रदेश अवर हैं।

तोत्त्र वैणुकम्

कृष्णमित्र टीका :- तुदन्त्यनेन। 'दाम्नी-' (३. २. १७२) इति ष्ट्रन्। वेणुरिव। 'तोदनदण्डस्य' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. तोत्रम्, २. वैणुकम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम हाथी को ताडना देने वाले दण्डे अंकुश (तोदनदण्ड) के हैं।

आलानं बन्धस्तम्भे

कृष्णमित्रटीका :- आलीयतेऽत्र[2]। लीङः (दि. आ. अ.) ल्युट् (३. ३. ११७)। 'बन्धनस्तम्भस्य' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. आलानम्, २. बन्धस्तम्भ- यह दो नाम गज को बाँधने वाले खूँटे का है। इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग हैं।

अथ शृङ्खले।[4]

अन्दुको निगडोऽस्त्री

कृष्णमित्रटीका :- शृङ्गं प्राधान्यं खलति। 'खल संचलने' (भ्वा. प. से.)। अन्द्यतेऽनेन[5]। 'अदि बन्धने' (भ्वा. आ. से.)। 'अन्दूदृम्भू-' (उ. १. ९३) इति साधुः। स्वार्थे कः। निर्गतो गडः सेचनमस्मात्कठिनत्वात्। त्रीणि॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. शृङ्खलम् , २. अन्दुक, ३. निगड- ये तीन नाम हाथी को बाँधने वाली सिकड़ी के हैं। इनमें प्रथम त्रिलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग, तृतीय पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग हैं।

अङ्कुशोऽस्त्री शृणिः स्त्रियाम्॥४१॥

कृष्णमित्रटीका :- अङ्क्यतेऽनेन[7]। 'सानसिवर्णसि-' (उ. ४. १०७) इति साधुः। सरति अनया। 'सृवृषिभ्यां कित्-' (उ. ४. ४९) इति निः। 'शृ हिंसायाम्'

1. The goad for driving an elephant [2] 2. M. आलीयतेत्र 3. The post to which an elephant is tied [2] 4. B. prefers शृङ्खला 5. M. अन्द्यतेनेन 6. The chain for elephant's feet [1] 7. M. अङ्क्यतेनेन.

(क्र्या. प. से.) 'शृणिवृष्णि-' (४. ५२) इति वा साधु। द्वे॥४१॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. अङ्कुश, २. सृणि- ये दो नाम अङ्कुश के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग हैं और द्वितीय स्त्रीलिङ्ग है।

दूष्या कक्ष्या वरत्रा स्यात्[2]

कृष्णमित्रटीका :- दूष्यतेऽनया[3]। 'दोषो णौ' (६. ४. ९०) इत्यूत्। कक्षे भवा। वरं त्रायते। गजस्य मध्यबन्धनस्य' त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. दूष्या, २. कक्ष्या, ३. वरत्रा - ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम हाथी को कसने वाले रस्से का है।

कल्पनासज्जने[5] समे।

कृष्णमित्रटीका :- ण्यन्ताद्युच् (३. ३. १०७) कल्पना। एवं 'षस्ज गतौ[6]'। 'पल्याणाद्यारोपणेन सज्जीकरणस्य' द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. कल्पना, २. सज्जना- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम नाम गेरू आदि से हाथी की सजावट करने के हैं।

प्रवेण्यास्तरणं वर्णः परिस्तोमः कुथो द्वयोः॥४२॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रकृष्टा वेणिः। 'कृदिकारात्-' (ग. ४. १. ४५) इति वा ङीष्। आस्तीर्यतेऽनया[8]। बहवो वर्णाः सन्त्यस्य। परिस्तूयते। 'अर्तिस्तुसु-' (उ. १. १४०) इति मन्। कुथ्यति। 'कुथ पूतीभावे' (दि. प. से.)। 'गजोपर्यास्तरणचित्रकम्बलस्य' द्वे॥४२॥

हिन्दी अर्थ :- १.प्रवेणी, २. आस्तरणम्, ३. वर्ण, ४. परिस्तोमः, ५. कुथ- ये पाँच नाम हाथी के झूल के हैं। इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग, तृतीय, चतुर्थ पुल्लिङ्ग और पंचम पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग है।

वीतं त्वसारं हस्त्यश्वम्

कृष्णमित्रटीका :- न सारो बलं यस्य तादृशं हस्त्यादि॥[9]

1. The hook for driving an elephant [2] 2. B. reads च 3. M. दूष्यतेनया 4. The girth of an elephant [3] 5. B. and K. reads as कल्पना सज्जना 6. The decoration of an elephant [2] 7. M. आस्तीर्यतेनया 8. The coloured woolen cloth spread over an elephant [2] 9. A flock of weak elephants and horses [1].

हिन्दी अर्थ :- वीतम्- यह एक नपुंसक-लिङ्ग नाम युद्ध में असमर्थ हाथी घोड़े का है।

वारी तु गजबन्धनी।

कृष्णमित्रटीका :- बध्यतेऽस्याम्[1]। 'गजबन्धनशालायाः' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. वारी, २. गजबन्धनी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम हाथी बाँधने की जगह के हैं।

घोटके वीतितुरगतुरङ्गाश्वतुरङ्गमाः॥४३॥
वाजिवाहार्वगन्धर्वहयसैन्धवसप्तयः।

कृष्णमित्रटीका :- घोटते। 'घुट परिवर्तने' (भ्वा. आ. से.)। ण्वुल् (३.१. १३३)। वेति। 'वी गत्यादौ' (अ. प. अ.)। क्तिच् (३. ३. १७४)। तुरेण त्वरया गच्छति। डः (वा. ३. २. ४८)। 'गमश्च' (३. २. ४७) इति खच्। 'खच्च वा डित्' (वा. ६. २. ३८)। 'अशू व्याप्तौ' (स्वा. आ. से.) 'अशूप्रुषि-' (उ. १. १५२) इति क्वन्॥४३॥ अवश्यं वजति। वहत्यस्मिन्। घञ्। ऋच्छति। 'ऋ गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'अन्येभ्योऽपि[3]-' इति वनिप्। हयति। 'हय गतौ' (भ्वा. प. से.)। सिंधुषु भवः। सपति[4] सेनायाम्। 'षप समवाये' (भ्वा. प. से.)। क्तिच् (३. ३. १७४)। त्रयोदश॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. घोटक, २. वीति, ३. तुरग, ४. तुरङ्ग, ५. अश्व, ६. तुरङ्गम, ७. वाजी, ८. वाह ९. अर्वा, १०. गन्धर्व, ११. हय, १२. सैन्धव, १३. सप्ति-ये तेरह पुल्लिङ्ग नाम घोड़े के हैं।

आजानेयाः कुलीनाः स्युः

कृष्णमित्रटीका :- अजनमाजः। आजेन क्षेपेणानेयाः प्रापणीयाः। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. आजानेय, २. कुलीन्- ये दो पुल्लिङ्ग नाम कुलीन घोड़े के हैं।

विनीताः साधुवाहिनः॥४४॥

कृष्णमित्रटीका :- साधुवहनशीलाः। द्वे॥४४॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. विनीत, २. साधुवाही- ये दो पुल्लिङ्ग नाम चाल की शिक्षा दिये हुए घोड़ों के हैं॥४४॥

1. M. बध्यतेस्याम् 2. Stable (for elephants) [2] 3. M. अन्येभ्योपि 4. M. षपति 5. Horse [13] 6. A well-bred horse [2] 7. A well-trained horse [2].

वनायुजाः पारसीकाः काम्बोजा वाह्लिका हयाः।

कृष्णमित्रटीका :- वनायुषु देशे (षु) जाताः। पारसीकदेशे भवाः। 'कोपधाच्च' (४. ३. १३७) इत्यण्। कम्बोजेषु भवाः। वाह्लिकदेशे भवाः। एते हयविशेषाः प्रत्येकं भिन्नाः॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. वनायुज, २. पारसीक, ३. काम्बोज, ४. वाह्लिक- ये चार पुल्लिङ्ग नाम नामानुसार क्रम से उस दो देश में उत्पन्न हुये घोड़ों के हैं।

ययुरश्वमेधीयः

कृष्णमित्रटीका :- याति। 'यो द्वे च' (उ. १. २१) इति कुः। ययुः। अश्वमेधाय हितः। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. ययु, २. अश्वमेधीय- ये दो पुल्लिङ्ग नाम अश्वमेध यज्ञ में छोड़े जाने वाले घोड़े के हैं।

जवनस्तु जवाधिकः॥४५॥

कृष्णमित्रटीका :- जवनशीलः। 'जु' इति सौत्रः। जवेन वेगेनाधिकः॥४५॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. जवन, २. जवाधिक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम अधिक तेज चलने वाले घोड़े हैं॥४५॥

पृष्ठ्यः स्थौरी

कृष्णमित्रटीका :- प्रशस्तं पृष्ठस्य। 'अन्येभ्यो-ऽपि[4]-' (वा. ५. २. १२०) इति यप्[5]। स्थूलस्येदम्। 'तस्येदम्' (४. ३. १२०) इत्यण्। भारवाहिनोऽश्वस्य' द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. पृष्ठ्य, २. स्थौरी- ये दो पुल्लिङ्ग नाम भार ढोनेवाले घोड़े के हैं।

सितः कर्कः

कृष्णमित्रटीका :- करोति। 'कृदाधा-' (उ. ३. ४०) इति कः। 'शुक्लाश्वस्य' एकम्॥[7]

हिन्दी अर्थ :- कर्क- यह एक पुल्लिङ्ग नाम सफेद घोड़े का है।

रथ्यो वोढा रथस्य यः।

कृष्णमित्रटीका :- रथं वहति। 'तद्वहति-' (४. ४. ७६) इति यत्। 'रथवाहकाश्वस्य' एकम्॥[1]

हिन्दी अर्थ :- रथ्य- यह एक पुल्लिङ्ग नाम रथ में चलने वाले घोड़े का है।

बालः किशोरः

कृष्णमित्रटीका :- कशति। 'कश शब्दे' (अ. प. से.) 'किशोरादयः' (उ. १. ६५) इति साधुः। एकम्॥[2]

हिन्दी अर्थ :- किशोर- यह एक पुल्लिङ्ग नाम घोड़े के बच्चे का है।

वाम्यश्वा वडवा

कृष्णमित्रटीका :- वामयति वामी। गौरादिः (४. १. ४१)। बलमतिशयितमस्याः। 'अन्येभ्योऽपि-'[3] (वा. ५. १. १०९) इति वः॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. वामी, २. अश्वा, ३. वडवा- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम घोड़ी के हैं।

वाडवं गणे॥४६॥

कृष्णमित्रटीका :- वडवानां समूहः। 'खण्डि-कादिभ्यश्च' (४. २. ४५) इत्यञ्॥४६॥[5]

हिन्दी अर्थ :- वाडवम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम घोड़ियों के समूह का है॥४६॥

त्रिष्वाश्वीनं यदश्वेन दिनेनैकेन गम्यते।

कृष्णमित्रटीका :- 'अश्वस्यैकाहगमः' (५. २. १९) इति खञ्। एकम्॥[6]

हिन्दी अर्थ :- आश्वीनम्- यह एक त्रिलिङ्ग नाम एक दिन में घोड़े से जाने योग्य मार्ग का है।

कश्यं तु मध्यमश्वानाम्

कृष्णमित्रटीका :- कशामर्हति। दण्डादि (५. १. ६६)॥[7]

हिन्दी अर्थ :- कश्यम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम घोड़े के मध्य भाग का है।

हेषा ह्रेषा च निःस्वनः॥४७॥

कृष्णमित्रटीका :- 'ह्रेषृ शब्दे' (भ्वा. आ. से.)। 'गुरोश्च-' (३. ३. १०३) इत्यः। द्वे॥४७॥[8]

---

1. Five varities of horse in relation to the place of their birth [1 each] 2. A horse fit for the As'vamedha sacrifice [2] 3. A fleet horse [2] 4. M. अन्येभ्योपि 5. M. यक् 6. A pack horse [2] 7. White horse [1].

1. A chariot-horse [1] 2. A young horse [1] 3. M. अन्येभ्योपि 4. A female horse [3] 5. A flock of female horses [1] 6. What can be travelled over in a day by a horse [1] 7. The middle part of horses [1] 8. Neighing [3].

हिन्दी अर्थ :- १. हेषा , २. ह्रेषा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम घोड़े की आवाज (हिनहिनाहट) के हैं।।४७।।

निगालस्तु गलोद्देशे

कृष्णमित्रटीका :- निगलत्यनेन। 'गल अदने' (भ्वा. प. से.) घञ् (३. ३. १२१)। गलस्योद्देशः समीपभागः। 'घण्टाबन्धसमीपस्य' द्वे।।[1]

हिन्दी अर्थ :-१. निगाल, २. गलोद्देश- ये दो पुल्लिङ्ग नाम घोड़े की गर्दन के पृष्ठ भाग के हैं।

वृन्दे त्वश्वीयमाश्ववत्[2]।

कृष्णमित्रटीका :- अश्वानां समूहः। 'केशाश्वाभ्यां यञ्छौ-' (४. २. ४८)। 'अनुदात्तादेरञ्' (४. २. ४४)। 'अश्ववृन्दस्य' द्वे।।[3]

हिन्दी अर्थ :- १. अश्वीयम्, २. आश्वम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम घोड़ों के झुण्ड के हैं।

आस्कन्दितं घोरितकं रेचितं वल्गितं प्लुतम्।।४८।।
गतयोऽमूः पञ्चधाराः

कृष्णमित्रटीका :- अमूरश्वानां पञ्चगतयः। धार्यन्ते अश्वा अनया। भिदाद्यङ् (३. ३. १०४)। 'गतिविशेषाणाम्' एकम्।।[4]

हिन्दी अर्थ :- १. आस्कन्दितम्, २. धौरितक, ३. रेचितम्, ४. वल्गितम्, ५. प्लुतम्- ये पांच नपुंसकलिङ्ग नाम क्रम से घोड़ों के सरपट दौड़ने, दुलका चलने, पोइया चलने, उछालमारकर चलने, व चौकड़ी मारकर चलने के हैं।।४८।।

धारा- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम घोड़ों की उक्त पांच चालों का है।

घोणा तु प्रोथमस्त्रियाम्।

कृष्णमित्रटीका :- घोणते। 'घुण भ्रमणे' (भ्वा. आ. से.)। प्रोथति। 'प्रोथृ पर्याप्तौ' (भ्वा. उ. से.)। द्वे।।[5]

हिन्दी अर्थ :- १. घोणा, २. प्रोथम्- ये दो नाम घोड़ों के चक्कर लगाने के हैं। किसी आचार्य के मत 'प्रोथम्' यह घोड़ों की नाक का भी नाम है। इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग, पुल्लिङ्ग हैं।

1. The part near the neck of horse [2] 2. B. reads त्वाश्वीयमाश्ववत् 3. A number of horses [1] 4. Paces of horses : (i) full gallop (ii) trot or ambling (iii) cantering (iv) vaulting and (v) bounding or capering 5. The nose of a horse [2].

कविका तु खलीनोऽस्त्री

कृष्णमित्रटीका :- कवते। 'कुङ् शब्दे' (भ्वा. आ. अ.)। 'अच इः' (उ. ४. १३८)। स्वार्थे कन्। खे मुखविले लीनः। 'लगाम' लोके।।[1]

हिन्दी अर्थ :-१. कविका, २. खलीन-ये दो नाम लगाम के हैं, इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग हैं।

शफं क्लीबे खुरः पुमान्।।४९।।

कृष्णमित्रटीका :- शं फणति। 'फण गतौ' (भ्वा. प. से.)। डः (वा. ३. २. १०१)। खुरति। 'खुर छेदने' (तु. प. से.)। द्वे।।४९।।[2]

हिन्दी अर्थ :- १. शफम्, २. खुर- ये नाम अश्वखुर के हैं। इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग द्वितीय पुल्लिङ्ग हैं।।४९।।

पुच्छोऽस्त्री लूमलाङ्गूले

कृष्णमित्रटीका :- पुच्छति। 'पुच्छ प्रमादे' (?) इति तन्न तस्य अन्तः स्थादित्वात्। अत एवाग्रे 'त्व सुजागृहि' इति माध्यंदिनमन्त्रे 'रक्षाणोऽप्रयुच्छन्' इति प्रतीकमुपादाय 'पुच्छ प्रमादे' इत्युदाहरन्ति भाष्यतत्वतः। 'आरोहयन्त्रपल्याणम्' ''जीन'' 'खाददाऽरोहकुण्डिका' ''रिकाव''। लूयते। लूञो बाहुलकान्मक्। लङ्गति। 'लगि गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'खर्जिपिञ्जादिभ्य ऊरोलचौ' (उ. ४. ९०)। प्रज्ञाद्यण् (५. ४. ३८)। त्रीणि।।[3]

हिन्दी अर्थ :- १.पुच्छ, २. लूमम् , ३. लांगूलम्- ये तीन नाम अश्व की पूँछ के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय और तृतीय नपुंसकलिङ्ग हैं।

बालहस्तश्च बालधिः।

कृष्णमित्रटीका :- बालो[4] हस्त इव। बाला धीयन्तेऽत्र[5]। 'केशवल्लाङ्गूलमात्रस्य' द्वे।।[6]

हिन्दी अर्थ :- १. बालहस्त, २. बालधि- ये दो पुल्लिङ्ग नाम घोड़े की पूँछ के अग्रभाग के हैं।

त्रिषूपावृत्तलुठितौ परावृत्ते मुहुर्भुवि।।५०।।

कृष्णमित्रटीका :- 'लुठ प्रतिघाते' (भ्वा. प. से.)। 'श्रमशान्त्यर्थं पुनः पुनर्भूमौ लुठितस्याश्वस्य' द्वे।।५०।।[7]

1. The bit of a bridle [2] 2. Hoof [2] 3. The tail of a horse [3] 4. M. बालाः 5. M. धीर्यतेत्र 6. Hairy tail [2] 7. Rolling or wallowing on the ground of a horse [2].

हिन्दी अर्थ :- १.उपावृत्त, २. लुठित- ये दो त्रिलिङ्ग नाम श्रम दूर करने के लिए पृथ्वी पर लोटे हुए घोड़े के हैं।।५०।।

याने चक्रिणि युद्धार्थे शताङ्गः स्यन्दनो रथः।

कृष्णमित्रटीका :- यान्त्यनेन। चक्रमस्यास्ति। युद्धायेदम्। तस्मिन्। शतमङ्गान्यत्र। स्यन्दते। 'चलन-शब्दार्थ-' (३. २. १४८) इति युच्। रमन्तेऽनेन[1]। 'हनिकुषि-[2]' (उ. २. २) इति क्थन्। त्रीणि।।[3]

हिन्दी अर्थ :-१. शताङ्ग, २. स्यन्दन, ३. रथ - ये तीन पुल्लिङ्ग नाम युद्ध के रथ के हैं।

असौ पुष्परथश्चक्रयानं न समराय यत्।।५१।।

कृष्णमित्रटीका :- पुष्पमिव रथः। अन्तस्थमध्यः (पुष्यरथः) अपि। 'युद्धं विना यात्रासेवादौ सुखभ्रमणरथस्य' एकम्।।५१।।[4]

हिन्दी अर्थ :- पुष्यरथ- यह एक पुल्लिङ्ग नाम यात्रा उत्सव आदि में चढ़ने योग्य रथ का है।।५१।।

कर्णीरथः प्रवहणं डयनं च समं त्रयम्।

कृष्णमित्रटीका :- कर्णः कर्णसमीपदेशः स्कन्धः, सोऽस्यास्ति[5]। वाहकत्वेन कर्णी। स चासौ रथश्च स्कन्धवाह्य इत्यर्थः। प्रवहन्त्यनेन। डीयतेऽनेन[6]। 'चौडोल' लोके।।[7]

हिन्दी अर्थ :- १. कर्णीरथ, २. प्रवहणम्, ३. डयनम्- ये तीन नाम पर्दा से आच्छन्न स्त्रियों के चढ़ने योग्य डोला के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग, द्वितीय से तृतीय नपुंसकलिङ्ग हैं।

क्लीबेऽनः शकटोऽस्त्रीस्यात्

कृष्णमित्रटीका :- अनिति अनः। असुन् (उ. ४. १८८)। शक्नोति भारं वोढुम्। 'शकादिभ्योऽटन्[8]' (उ. ४. ८१)।।[9]

हिन्दी अर्थ :- १. अन, २. शकट-ये दो नाम गाड़ी के हैं, इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग हैं।

गन्त्री कम्बलिवाह्यकम्।।५२।।

1. M. रमन्तेनेन 2. M. हनिकुथि 3. **A war-chariot** [3] 4. **A chariot for travelling or for pleasure** (but not for war) [1] 5. M. सोस्यास्ति 6. M. डीयतेनेन 7. Palanquin [3] 8. M. शकादिभ्योटन् 9. **Cart** [2].

कृष्णमित्रटीका :- गम्यतेऽनया। युच्। षित्वान्ङीष् (४. १. ४१)। कम्बलः, सास्ना, साऽस्त्येषां[1] कम्बलिनो वृषास्तैरुह्यते। ण्यत् (३. १. १२४)। स्वार्थे कन्। द्वे[2]।।५२।।[3]

हिन्दी अर्थ :- १.गन्त्री, २. कम्बलिवाह्यकम् - ये दो नाम छोटी गाड़ी के हैं, जिनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग हैं ।।५२।।

शिविका याप्ययानं स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- शिवैव। 'संज्ञायां कन्' (५. ३. ७५)। याप्यैरधर्मैर्वा यानम्। 'पालकी' लोके।।[4]

हिन्दी अर्थ :- १. शिविका, २. याप्ययानम्- ये दो नाम पालकी के हैं। इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग हैं।

दोला प्रेङ्खादिका स्त्रियाम्।

कृष्णमित्रटीका :- दोलयति। 'दुल उत्क्षेपे' (चु. उ. से.)। प्रेष्य (ङ्खच) ते। 'इषि गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'डोली' (लोके)।।[5]

हिन्दी अर्थ :- १. दोल, २. प्रेङ्खा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम हिंडोला के हैं।

उभौ तु द्वैपवैयाघ्रौ द्वीपिचर्मावृते रथे।।५३।।

कृष्णमित्रटीका :- द्वीपिनो व्याघ्रस्य च विकारः। 'प्राणिरजत-' (४. ३. १५४) इत्यञ्। द्वैपेन वैयाघ्रेण च चर्मणा परिवृतो रथः। 'द्वैपवैयाघ्रादञ्' (४. २. १२)। 'व्याघ्रचर्मवेष्टितरथस्य' द्वे।।५३।।[6]

हिन्दी अर्थ :-१. द्वैप, २. वैयाघ्र- ये दो त्रिलिङ्ग नाम बाघ के चमड़े से मढ़े हुए रथ के हैं।।५३।।

पाण्डुकम्बलसंवीतः स्यान्दनः पाण्डुकम्बली।

कृष्णमित्रटीका :- पाण्डुकम्बलश्चित्रप्रावारः। 'पाण्डुकम्बलादिनिः' (४. २. ११)।।[7]

हिन्दी अर्थ :- पाण्डुकम्बली- यह एक त्रिलिङ्ग नाम घूसर कम्बल से मढ़े हुए रथ का है।

रथे काम्बलवास्त्राद्याः कम्बलादिभिरावृते।।५४।।

1. M. गम्यतेनया 2. M. सास्त्येषां 3. **A carriage covered with a blanket and drawn by oxen** [2] 4. **Litter** [2] 5. **Swing or a kind of palanquin itself** [2] 6. **A chariot covered with the skin of a tiger** [2] 7. **A chariot covered with a white blanket** [1].

कृष्णमित्रटीका :- कम्बलेन वस्त्रेण च परिवृतो रथः ॥५४॥[1]

हिन्दी अर्थ :- काम्बल- ये एक त्रिलिङ्ग नाम क्रम से कम्बल व वस्त्र से ढके हुए रथ के हैं॥५४॥

त्रिषु द्वैपादयः

रथ्या रथकट्या रथव्रजे।

कृष्णमित्रटीका :- रथानां समूहः। 'खलगोरथात्' (४. २. ५०) इति यत्। 'इनित्रकट्यचश्चः' (४. २. ५१)। रथानां व्रजे। त्रीणि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. रथ्या, २. रथकट्या, ३. रथव्रज- ये तीन नाम रथसमूह के हैं। इनमें एक, दो स्त्रीलिङ्ग, तृतीय पुल्लिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग हैं।

धूः स्त्री क्लीबे यानुमुखम्

कृष्णमित्रटीका :- धूर्वति। 'धुर्वी हिंसायाम्' (भ्वा. प. से.)। क्विप् (३. २. १७७)। 'राल्लोपः' (६. ४. २१)। यानस्य मुखं पुरोभागः। 'कट्टबन्धनस्थानस्य' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. धूः, २. यानमुखम्- ये दो नाम रथ में बैल जोतने के स्थान के हैं। इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग हैं।

स्याद्रथाङ्गमपस्करः ॥५५॥

कृष्णमित्रटीका :- रथस्याङ्गम्। अपकीर्यते स्वस्थाने क्षिप्यते। 'ऋदोरप्' (३. ३. ५७)। 'चक्रभिन्नरथाङ्गस्य'॥५५॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. रथाङ्गम्, २. अपस्कर- ये दो नाम रथ के अवयव के हैं, इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग पुल्लिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग हैं॥५५॥

चक्रं रथाङ्गम्

कृष्णमित्रटीका :- क्रियते गतिरनेन चक्रम्। 'घञर्थे कः' (वा. ३. ३. ५८)। 'कृञादीनां के द्वे' (वा. ६. १. १२) इति द्वित्वम्। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. चक्रम्, २. रथाङ्गम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम रथादि के पहिए के हैं।

तस्यान्तो[1]नेमिः स्त्री स्यात्प्रधिः पुमान्।

कृष्णमित्रटीका :- तस्य चक्रस्यान्तो भूस्पर्शिभागः। नयति रथं नेमिः णीञो मिः (उ. ४. ३४)। प्रधीयतेऽनेन[2]। धाञः (जु. उ. अ.) किः (३. ३. ९२)। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१. नेमि, २. प्रधि- ये दो नाम चक्र के ऊपर वाले परिधि (पुट्टी) के हैं। इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग हैं।

पिण्डिका नाभिः

कृष्णमित्रटीका :- पिण्ड्यते अरा यस्याम्। नभ्यतेऽक्षेण[4]। 'णभ हिंसायाम्' (भ्वा. आ. से.)। 'इञजादिभ्यः' (वा. ३. ३. १०८)। 'रथचक्रमध्ये मण्डलाकारायाः' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. पिण्डिका, २. नाभि- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम पहिए के बीचवाले भाग के हैं।

अक्षाग्रकीलके तु द्वयोरणिः ॥५६॥

कृष्णमित्रटीका :- अक्षस्य नाभिक्षेप्यस्यान्ते कीलके। अणति। 'अणशब्दे' (भ्वा. प. से.)। इन् (उ. ४. ११७)। द्वे॥५६॥[6]

हिन्दी अर्थ :- अणि- यह एक पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग, नाम धुरा में लगाने वाली किल्ली के हैं॥५६॥

रथगुप्तिर्वरुथो ना

कृष्णमित्रटीका :- रथस्य गुप्तिरावरणम्। व्रियते रथोऽनेन[7]। 'जॄ वृञ् भ्यामूथन्' (उ. २. ६)। 'परप्रहरणाभि-घातरक्षार्थ संनाहवद्रथावरणस्य' द्वे॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. रथगुप्ति, २. वरूथ- ये दो नाम शत्रु के प्रहार से बचने के लिए रथ में लोहे आदि के लगे पर्दे के हैं। इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग तथा द्वितीय पुल्लिङ्ग हैं।

कूबरस्तु युगंधरः।

कृष्णमित्रटीका :- 'कुङ् शब्दे' (तु. आ. से.)। बाहुलकाद्वरच्। युगं धारयति। 'संज्ञायां भृतृ-' (३. २. ४६) इति खच्। 'युगकाष्ठबन्धनस्थानस्य' द्वे॥[9]

---

1. The chariots covered with blanket and cloth [1 each] 2. A number of chariots [3] 3. The forepart of a carriage, the part where the yoke is fixed [2] 4. Any part of a chariot except the wheel [2] 5. Wheel [2].

1. Majority reads तस्यान्ते 2. M. प्रधीयतेनेन 3. The circumference of a wheel [2] 4. M. नभ्यतेक्षेण 5. The nave of a wheel [2] 6. The pin or bolt at the end of the pole of a carriage [2] 7. M. रथोनेन 8. A fence of wood or iron with which a chariot is provided as a protection from enemy's attack [2] 9. The pole of a carriage to which the yoke is fixed [2].

हिन्दी अर्थ :- १. कूबर, २. युगंधर- ये दो पुल्लिङ्ग नाम जुवा बांधने वाले स्थान के हैं।

अनुकर्षो दार्वधःस्थम्

कृष्णमित्रटीका :- अनुकृष्यते। घञ् (३. ३. १९)। 'रथस्याधस्तलभागदारुणः' एकम्॥[1]

हिन्दी अर्थ :- अनुकर्ष- यह एक पुल्लिङ्ग नाम रथ के नीचे वाले भाग का है।

प्रासङ्गो ना युगाद्युगः[2]॥५७॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रसज्यते। 'षज्ज सङ्गे' (भ्वा. प. अ.)। 'उपसर्गस्य-' (६. ३. १२२) इति दीर्घः। रथाद्य-ङ्गयुगादन्यद्युगम्, वृषभानां दमनकाले यदा सज्यते॥५७॥[3]

हिन्दी अर्थ :- प्रासङ्ग- यह एक पुल्लिङ्ग नाम जवाठ का है,अन्य आचार्य के मत से नये निकाले जाने वाले बछड़े के कन्धे पर रक्खे जाने वाले काष्ठ का है॥५७॥

सर्वं स्याद्वाहनं यानं युग्यं पत्रं च धोरणम्।

कृष्णमित्रटीका :- सर्वं हस्त्यश्वरथादिदोला-द्यम्। वाहयति। ण्यन्तात् कर्तरि ल्युट् (३. ३. ११३) यान्त्यनेन। युज्यतेऽनेन[4]। 'युग्यंच पत्रे' (३. १. १२१) इति क्यबन्तो निपातः। पतन्त्यनेन। 'दाम्नी-' (३. २. १८२) इति ष्ट्रन्। 'धोर्ऋ गतिचातुर्ये' (भ्वा. प. से.)। ल्युट् (३. ३. ११३)। 'वाहनस्य' पञ्च॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१. वाहनम् , २. यानम, ३. युग्यम् , ४. पत्रम् , ५. धोरणम- ये पाँच नपुंसकलिङ्ग नाम वाहनमात्र के हैं।

परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम्॥५८॥

कृष्णमित्रटीका :- विनीतकानामिदम्। परम्परया यद्वहति तस्यैकम्॥५८॥[6]

हिन्दी अर्थ :- वैनीतकम्- यह एक पुल्लिङ्ग नाम कहार आदि से ढोई जाने वाली पालकी तथा परम्परावाली सवारी जैसे गाड़ी आदि का है।

आधोरणा हस्तिपका हस्त्यरोहा निषादिनः।

कृष्णमित्रटीका :- आधोरयति। ल्युः (३. १. १३४)। हस्तिनं पाति। आतः कः (३. २. ३)। स्वार्थे कन्। हस्तनमारोहन्ति। चत्वारि॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. आधोरण, २. हस्तिपक, ३. हस्त्यारोह, ४. निषादी- ये चार पुल्लिङ्ग नाम महावत के हैं।

नियन्ता प्राजिता यन्ता सूतः क्षत्ता च सारथिः॥५९॥
सव्येष्ठदक्षिणस्थौ च संज्ञा रथकुटुम्बिनः।

कृष्णमित्रटीका :- नियच्छति। प्राजति। अजेः (भ्वा. प. से.) तृच् (३. १. १३३)। सुवति गमयति। 'षू प्रेरणे' (तु. प. से.) गत्यर्थत्वात्क्तः (३. २. १०२)। क्षदति। 'क्षद संवरणे' सौत्रः। 'तृन्तृचौ शंसिक्षदादिभ्यः-' (उ. २. ६३)। सरत्यश्वान्। 'सर्तेणिच्च' (उ. ४. ८९) इत्यथिन्॥५९॥ सत्ये वामे तिष्ठति। सुषामादिः (८. ३. ९८)। दक्षिणे तिष्ठति। 'सुपि-' (३. २. ४) इति कः। रथं कुटुम्बयितुं शीलमस्य। 'कुटुम्ब धारणे' (चु. आ. से.)। अष्टौ॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. नियन्ता, २. प्राजिता, ३. यन्ता, ४. सूत, ५. क्षत्ता, ६. सारथि॥५९॥, ७. सव्येष्ठा, ८. दक्षिणस्थ- ये आठ पुल्लिङ्ग नाम रथादि हाँकने वालों के हैं। उक्त आठ नाम रथ कुटुम्बी कहलाते हैं।

रथिनः स्यन्दनारोहाः

कृष्णमित्रटीका :- रथेन यान्ति। इनिः। स्यन्द-नमारोहति। अण् (३. २. १)। 'रथारूढस्य योद्धुः' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. रथी, २. स्यन्दनारोह- ये दो पुल्लिङ्ग नाम रथ पर चढ़कर लड़ने वाले के हैं।

अश्वारोहास्तु सादिनः॥६०॥

कृष्णमित्रटीका :- अश्वमारोहन्ति। सीदन्त्य-वश्यम्। 'षद्लृ-' (तु. प. अ.)। आवश्यके णिनिः (३. ३. १७०)। द्वे॥६०॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. अश्वारोह, २. सादी- ये दो पुल्लिङ्ग नाम घुड़सवार के हैं॥६०॥

भटा योधाश्च[5] योद्धारः

---

1. **The wood at the bottom of a chariot a chariot** [2]
2. B. reads युगान्तरम् 3. **Yoke** (for cattle) [2] 4. M. युज्यतेनेन
5. **Vehicle in general** (as a horse, elephant & c.) [5]
6. **A kind of vehicle** [1].

---

1. **Elephant-driver or rider** [4] 2. **Charioteer of driver** [8] 3. **A warrior who fights from a chariot** [2] 4. **A person riding on a horse** [2] 5. **B. reads** योद्धाश्च

कृष्णमित्रटीका :- भटति। 'भट भृतौ' (भ्वा. प. से.)। अच् (३. १. १३४)। युध्यन्ते। अच् (३. १. १३४)। त्रीणि॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. भट, २. योध, ३. योद्धा- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम लड़ाई करनेवालों के हैं।

सेनारक्षास्तु सैनिकाः।

कृष्णमित्रटीका :- सेनां रक्षन्ति। अण् (३. २. १)। 'रक्षति' (४. ४. ३३) इति ठक्। 'प्रहरिकादेः' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. सेनारक्ष, २. सैनिक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम सेना के पहरेदार के हैं।

सेनायां समवेता ये सैन्यास्ते सैनिकाश्च ते॥६१॥

कृष्णमित्रटीका :- सेनायां समवैति। 'सेनाया वा' (४.४.४५) इति ण्यः। ठक् (४.४.१) च। 'सेनायां मिलितस्यैकदेशिभूतस्य' द्वे॥६१॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१. सैन्य, २. सैनिक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम सैनिक के हैं॥६१॥

बलिनो ये सहस्रेण साहस्रास्ते सहस्रिणः।

कृष्णमित्रटीका :- सहस्रं बलानि सन्ति येषाम्। 'तपः सहस्रभ्यां विनीनी' (५. २. १०२) 'अण् च' (५. २. १०३)। 'सहस्रसंख्याकेन बलवतः' द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१. साहस्रा, २. सहस्री- ये दो पुल्लिङ्ग नाम एक हजार हस्त्यश्वादि योद्धाओं वाले सूबेदार के हैं।

परिधिस्थः परिचरः

कृष्णमित्रटीका :- परिधौ सेनान्ते तिष्ठति। परितश्चरति। 'सेनायां राज्ञो दण्डकारिणः' द्वे। 'प्रयाणे सामन्तस्यापकर्षस्य'- इत्यन्ये॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. परिधिस्थ, २. परिचर- ये दो त्रिलिङ्ग नाम दण्डनीय वीरों को दण्ड देने के लिए राजा द्वारा नियुक्त अधिकारी पुरुष के हैं।

सेनानीर्वाहिनीपतिः॥६२॥

कृष्णमित्रटीका :- सेनां नयति। क्विप् (३. २. ६१)। द्वे॥६२॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. सेनानी, २. वाहिनीपति- ये दो पुल्लिङ्ग नाम सेनापति के है॥६२॥

कञ्चुको वारबाणोऽस्त्री

कृष्णमित्रटीका :- कञ्च्यते। 'कचि दीप्त्यादौ' (भ्वा. आ. से.)। बाहुलकादुकः। वाणं वारयति। राजदन्तादिः (२. २. ३१)। चोलकाकृतिसंनाहस्य' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. कञ्चुक, २. वारबाण- ये दो नाम शत्रु के वार से बचने के लिए लोह आदि से रचित सन्नाह के हैं।इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग हैं।

यत्तु मध्ये सकञ्चुकाः।

बध्नन्ति तत्सारसनमधिकाङ्गः

कृष्णमित्रटीका :- सारं सनोति। 'षणु दाने' (तु. प. से.)। 'कञ्चुकदार्ढ्यार्थं मध्ये काये निबद्धस्य' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१. सारसनम्, २. अधिकाङ्ग- ये दो नाम कवच को स्थिर रखने के लिए कमर में कसने की पट्टी के हैं, इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग हैं।

अथ शीर्षकम्॥६३॥

शीर्षण्यं च शिरस्त्रे

कृष्णमित्रटीका :- शीर्षस्य प्रतिकृतिः। इवार्थे कन् (५. ३. ९६)॥६३॥ शिरसे हितम्। 'ये च तद्धिते' (६. १. ६१) इति शीर्षन्। शिरस्त्रायते। 'टोप' लोके॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. शीर्षकम् ॥६३॥, २. शीर्षण्यम्, ३. शिरस्त्रम्- ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम लड़ाई के समय पहने जोने वाले टोप के हैं।

अथ तनुत्रं वर्म दंशनम्।

उरश्छदः कङ्कटको जगरः कवचोऽस्त्रियाम्॥६४

कृष्णमित्रटीका :- तनुं त्रायते। वृणोति देहम्। वृञः (स्वा. उ. से.) मनिन् (३. २. ७५)। दंश्यतेऽनेन[4]। 'दशि दंशनस्पर्शनयोः' (चु. आ. से.)। उरश्छाद्यतेऽनेन[5]। कङ्कते। 'ककि लौल्ये' (भ्वा. आ. से.)। 'शकादिभ्योऽटन्' (उ. ४. ८१)। जागर्ति जगरः। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। कं वातं वञ्चति। 'वञ्चु गतौ' (भ्वा. प. से.)। मूलविभुजादिः। 'संनाहस्य' सप्त॥६४॥[6]

---

1. Warrior [3] 2. The guard of an army [2] 3. Soldier [2] 4. An army consisting of a thousand soldiers [1] 5. An officer employed a king for punishing offenders [2] 6. General [2].

1. A coat of mail [2] 2. Military belt or girdle [2] 3. Helmet [3] 4. M. दंश्यतेनेन 5. M. उरश्छाद्यतेनेन 6. Armour [7].

हिन्दी अर्थ :- १. तनुत्रम्, २. वम, ३. दंशनम्, ४. उरदश्छद, ५. कङ्कटक, ६. जगर, ७. कवच- ये सात नाम क्रम से तीन नपुंसकलिङ्ग, तीन पुल्लिङ्ग, एक पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग कवच के हैं।।६४।।

आमुक्तः प्रतिमुक्तश्च पिनद्धश्चापिनद्धवत्।

कृष्णमित्रटीका :- अपि नद्धः। भागुरिमतेन वा, अल्लोपः।।[1]

हिन्दी अर्थ :- १. आमुक्त, २. प्रतिमुक्त, ३. पिनद्ध , ४. अपिनद्ध- ये चार त्रिलिङ्ग नाम पहने हुए कवच व वस्त्र के हैं।

संनद्धौ वर्मितः दंशितो व्यूढकङ्कटः।।६५।।

कृष्णमित्रटीका :- संनह्यति। वर्म जातमस्य। तारकादिः (५. २. ३६)। सज्जति। 'षस्ज गतौ' (भ्वा. प. से.)। दंश संजातोऽस्य[2]। इतच् (५. २. ३६)। व्यूढो धृतः कङ्कटो येन। 'धृतसंनाहस्य' पञ्च।।६५।।[3]

हिन्दी अर्थ :- १. सन्नद्ध, २. वर्मित, ३. सज्ज, ४. दंशित, ५. व्यूढकङ्कट- ये पांच त्रिलिङ्ग नाम कवच आदि धारण करके युद्ध के लिए तैयार योद्धाओं के हैं।।६५।।

त्रिष्वामुक्तादयो

कृष्णमित्रटीका :- आमुक्तादयो (अ. २. ८. ६५) व्यूढकङ्कटान्ताः (अ. २. ८. ६५)।।

हिन्दी अर्थ :- आमुक्त आदि शब्द तीनों लिङ्गों में होते हैं।

वर्मभृतां कावचिकं गणे।

कृष्णमित्रटीका :- कवचिनां समूहः। 'ठञ् कवचिनश्च' (४. २. ४१)।।[4]

हिन्दी अर्थ :- कावचिकम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम कवचधारी पुरुषों के झुण्ड का हैं।

पदातिपत्तिपदगपादातिकपदाजयः।।६६।।

पद्गश्च पदिकश्च

कृष्णमित्रटीका :- पादाभ्यामतति। 'अज्यतिभ्याम्-' (उ. ४. १३०), 'पादे च' (उ. ४. १३१) इतीण्। पादस्य पदः (६. ३. ५२)। पद्यते। बाहुलकात्तिः। पादाभ्यां गच्छति। 'अन्येभ्योऽपि[1]-' (वा. ३. २. ४८) इति डः। पादस्य पदः (६. ३. ५२)। पदातिरेव। विनयादित्वात् (५. ४. ३४) ठक्। पादाभ्याम्-जति।।६६।। पद्भ्यां गच्छति। पादसमानार्थः पच्छब्दोऽप्यस्ति[2]। पादाभ्यां चरति। पर्पादित्वात् (४. ४. १०) ष्ठन्। 'इके चरतौ' (वा. ६. ३. ५३) इति पद्भावः सप्त।।[3]

हिन्दी अर्थ :- १. पदाति, २. पत्ति, ३. पदग, ४. पादातिक, ५. पदाजि, ६. पद्ग।।६६।।, ७. पदिक- ये सात पुल्लिङ्ग नाम पैदल सेना के हैं।

अथ पादातं पत्तिसंहतिः।

कृष्णमित्रटीका :-पदातीनां समूहः। भिक्षादिः (४. २. ३८)। द्वे।।[4]

हिन्दी अर्थ :- १. पादातम्, २. पत्तिसंहति- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम पैदल सेना के समूह के हैं।

शस्त्राजीवे काण्डपृष्ठायुधीयायुधिकाः समाः।।६७।।

कृष्णमित्रटीका :- शस्त्रमाजीवन्ति, उपजीवन्ति। काण्डानि शस्त्राणि पृष्ठे यस्य। आयुधेन जीवन्ति। 'आयुधाच्छ च' (४. ४. १४)। चात् ठक्। चत्वारि।।६७।।[5]

हिन्दी अर्थ :- १. शस्त्राजीव, २. काण्डपृष्ठ, ३. आयुधीय, ४. आयुधिक- ये चार त्रिलिङ्ग नाम शस्त्रादि कार्य से जीविका चलाने वालों के हैं।।६७।।

कृतहस्तः सुप्रयोगविशिखः कृतपुङ्खवत्।

कृष्णमित्रटीका :- कृतोऽभ्यस्तो[6] हस्तो यस्य। शोभनः प्रयोगोऽस्य[7]। सुप्रयोगो विशिखोऽस्य[8]। कृतोऽभ्यस्तः[9] पुङ्खयुक्तः शरो येन। 'अभ्यस्तशरस्य' त्रीणि।।[10]

हिन्दी अर्थ :- १. कृतहस्त, २. सुप्रयोगविशिख, ३. कृतपुङ्खः- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम अच्छी तरह अभ्यस्त वाण चलाने वाले के हैं।

अपराद्धपृषत्कोऽसौ लक्ष्याद्यश्च्युतसायकः।।६८।।

कृष्णमित्रटीका:- अपराद्धः पृषत्को वाणोऽस्य[11]। लक्ष्याद्वेध्यात् च्युतोभ्रष्टः सायकोऽस्य[12]। एक (म्)।।६८।।[13]

---

1. **A persen wearing clothes, armour & c** [4] 2. M. संजातोस्य 3. **A person dressed in armour and ready for battle** [5] 4. **A multitude of men in armour** [1].

---

1. M. अन्येभ्योपि 2. M. पच्छब्दोप्यस्ति 3. **Foot-soldier** [7] 4. **Infantry** [1] 5. **Mercenary soldier** [4] 6. M. कृतोभ्यस्तो 7. M. प्रयोगोस्य 8. M. विशिखोस्य 9. M. कृतोभ्यस्तः 10. **Skilled archer** [3] 11. M. वाणोस्य 12. M. सायकोस्य 13. **One who has not hit the mark with his arrow** [1].

हिन्दी अर्थ :- १. अपराद्धपृषत्क- यह एक त्रिलिङ्ग नाम निशाना चुके हुए का है॥६८॥

धन्वी धनुष्मान् धानुष्को निषङ्ग्यस्त्री धनुर्धरः।

कृष्णमित्रटीका :- धन्वाऽस्यास्ति[1]। व्रीह्यादित्वात्। (५. २. ११६) इनिः। धनुरास्यास्ति। मतुप् (५. २. ६४)। धनुः प्रहरणमस्य। 'तदस्य प्रहरणम्' (४. ४. ५७) इति ठक्। निषङ्गोऽस्यास्ति[2]। इनिः (५. २. ११५)। अस्त्रमस्यास्ति। धनुषो धरः। षट्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. धन्वी (धन्वा अस्यास्ति इति इनिः), २. धनुष्मान् (धनुरस्यास्ति इति मतुप् भत्वञ्च), ३. धानुष्क , ४. निषङ्गी, ५. अस्त्री, ६. धनुर्धर- ये छः त्रिलिङ्ग नाम धनुष धारण करने वालों के हैं।

स्यात्काण्डवांस्तु काण्डीरः

कृष्णमित्रटीका :- काण्डो वाणोऽस्यास्ति[4]। 'वाणधारकस्य' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. काण्डवान्, २. काण्डीर- ये दो त्रिलिङ्ग नाम बाण धारण करने वाले के हैं।

शाक्तीकः शक्तिहेतिकः ॥६९॥

कृष्णमित्रटीका :- शक्तिः प्रहरणमस्य। 'शक्तियष्ट्योरीकक्' (४. ४. ५९) शक्तिर्हेतिर्यस्य॥६९॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. शाक्तीक २. शक्तिहेतिक- ये दो नाम शक्ति नामक शस्त्र धारण करने वाले के हैं॥६९॥

याष्टीकपारश्वधिकौ यष्टिपर्श्वधहेतिकौ।

कृष्णमित्रटीका :- यष्टि प्रहरणमस्य। परश्वधः परशुः प्रहरणमस्य। 'परश्वधाट्ठञ्च' (४. ४. ५८) एकैकम्॥[7]

हिन्दी अर्थ :-१. याष्टीक, २. पारश्वधिक- ये दो त्रिलिङ्ग नाम क्रमशः लाठी और फरसा धारण करने वाले के हैं।

नैस्त्रिंशिकोऽसिहेतिः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- निस्त्रिंशः प्रहरणमस्य। 'प्रहरणम्' (४. ४. ५७) इति ठक्। 'खड्गायुधस्य' द्वे॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. नैस्त्रिंशिक (निस्त्रिंशः प्रहरणमस्य इति ठक्), २. असिहेति (असिर्हेतिर्यस्य)- ये दो त्रिलिङ्ग नाम तलवार धारण करने वाले के हैं।

1. M. धन्वास्यास्ति 2. M. निषङ्गोस्यास्ति 3. **Archer** [6] 4. M. वाणोस्यास्ति 5. **One armed with arrows** [2] 6. Lancer [2] 7. **Warriors armed with a club, and an axe.** [1 each] 8. Swordsman [2].

समौ प्रासिककौन्तिकौ ॥७०॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रासः कुन्तश्च प्रहरणमस्य। एकैकम्॥७०॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रासिक, २. कौन्तिक- ये दो त्रिलिङ्ग नाम क्रमशः प्रास या भाला धारण करने वाले के हैं॥७०॥

चर्मी फलकपाणिः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- चर्मास्यास्ति। फलकं पाणौ यस्य। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. चर्मी, २. फलकपाणि- ये दो त्रिलिङ्ग नाम ढाल धारण करने वालों के हैं।

पताकी वैजयन्तिकः।

कृष्णमित्रटीका :- पताकाऽस्यास्ति[3]। वैजयन्त्या चरति। ठक् (४. ४. ८)। 'ध्वजधारकस्य' द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. पताकी, २. वैजयन्तिक- ये दो त्रिलिङ्ग नाम पताका धारण करने वाले के हैं।

अनुप्लवः सहायश्चानुचरोऽभिसरः समाः ॥७१॥

कृष्णमित्रटीका :- अनुपश्चात् प्लवते। सह अयते। अनु चरति। अभितः सरति। 'सहायस्य' चत्वारि॥७१॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. अनुप्लव, २. सहाय, ३. अनुचर, ४. अभिसर- ये चार त्रिलिङ्ग नाम अनुचर के हैं॥७१॥

पुरोगाग्रेसरप्रष्ठाग्रतस्सरपुरस्सराः।

पुरोगमः पुरोगामी

कृष्णमित्रटीका :- पुरो गच्छति। डः (वा. ३. २. ४८)। पुरस्सरति। 'पुरोऽग्रतः'[6] (३. २. १८) इति टच्। प्रतिष्ठते गच्छति। 'आतश्व-' (३. १. १३६) इति कः। 'प्रष्ठोऽग्रगामिनि'[7] (८. ३. ९२) इति षः। अग्रतः सरति। पुरः सरति। पुरोगच्छति। अच् (३. २. १३४)। णिनौ (३. २. ७८) पुरोगामी। सप्त॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. पुरोग, २. अग्रेसर, ३. प्रष्ठ, ४. अग्रतः सर, ५. पुरःसर, ६. पुरोगम, ७. पुरोगामी- ये सात त्रिलिङ्ग नाम आगे चलने वाले के हैं।

1. **Warriors armed with two types of spears** [1 each] 2. **A soldier armed with a shield** [2] 3. M. पताकास्यास्ति 4. **Standard-bearer** [2] 5. Follower [3] 6. M. पुरोग्रतः 7. M. प्रष्ठोग्रगामिनि 8. **Leader** [7].

मन्दगामी तु मन्थरः ॥७२॥

कृष्णमित्रटीका :- मन्दं गच्छति। मन्थं राति। द्वे॥७२॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. मन्दगामी, २. मन्थर- ये दो त्रिलिङ्ग नाम धीरे-धीरे चलने वाले के हैं॥७२॥

जङ्घालोऽतिजवस्तुल्यौ

कृष्णमित्रटीका :- अतिशयिता जङ्घाऽस्य[2]। सिध्मादित्वात् (५. २. ९७) लच्। अतिशयितो जवो वेगोऽस्य[3] द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. जङ्घाल, २. अतिजवः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम अधिक तेज चलने वाले के हैं।

जङ्घाकरिकजाङ्घिकौ।

कृष्णमित्रटीका :- जङ्घैव करो हस्तो यस्य। जङ्घाभ्यां जीवति। 'वेतनादिभ्यो जीवति' (४. ४. १२) इति ठक्। 'जङ्घाजीविनः' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. जङ्घाकरिक, २. जाङ्घिक - ये दो त्रिलिङ्ग नाम डाँक ढोने के हैं।

तरस्वी त्वरितो वेगी प्रजवी जवनो जवः॥७३॥

कृष्णमित्रटीका :- तरोवेगोऽस्यास्ति। 'अस्माया-' (५. २. १२१) इति विनिः। 'ञित्वरा संभ्रमे' (भ्वा. आ. से.)। 'ञीतः क्तः' (३. २. १८७)। प्रजवति। 'जुः' सौत्रो (धातुः) वेगे। 'प्रजोरिनिः' (३. २. १५६)। 'जुचङ्क्रम्य-' (३. २. १५०) इति युच्। अचि (३. १. १३४) जवः। 'वेगवतः' षट्॥७३॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. तरस्वी, २. त्वरित, ३. वेगी, ४. प्रजवी, ५. जवन, ६. जव- ये छः त्रिलिङ्ग नाम शीघ्रता करने वाले के हैं॥७३॥

जय्यो यः शक्यते जेतुम्

कृष्णमित्रटीका :- जेतुं शक्यः। 'जि जये, अभिभवे वा' (भ्वा. प. अ.)। 'अचो यत्' (३. ३. ९७)॥[7]

हिन्दी अर्थ :- जय्य- यह एक त्रिलिङ्ग नाम जीते जा सकने वाले का है।

1. A person who walks slowly 2. M. जङ्घास्य 3. M. वेगोस्य 4. A man running swiftly [2] 5. Courier [2] 6. Express [6] 7. That which can be conquered [1].

जेयो जेतव्यमात्रके।

कृष्णमित्रटीका :- शक्यार्थादन्यत्र 'अर्हे कृत्य (तृ) चश्च' (३. ३. १६९) इति योग्यतायां यत्। एकम्॥[1]

हिन्दी अर्थ :- जेय- यह एक त्रिलिङ्ग नाम जीतने योग्य मात्र का है।

जैत्रस्तु जेता

कृष्णमित्रटीका :- जयतेस्तृच्। प्रज्ञाद्यण् (७. ४. ३८)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. जैत्र, २. जेता- ये दो त्रिलिङ्ग नाम विजयशील के हैं॥

यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति॥७४॥

सोऽभ्यमित्र्योऽभ्यमित्रीयोऽप्यभ्यमित्रीण इत्यपि।

कृष्णमित्रटीका :- अमित्रस्याभिमुखम्। 'लक्षणेन-' (२. १. १४) इत्यव्ययीभावः। अभ्यमित्र-मलंगामी। 'अभ्यमित्राच्छ च' (५. २. १७) चाद् यत्खौ। 'शत्रूणां संमुखं सामर्थ्येन गच्छतः' त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- यः द्विषतः=शत्रूणां अलं गच्छति सः॥७४॥ १.अभ्यमित्र्य (अमित्रस्याभिमुखम् इत्यव्ययीभावो यत् प्रत्ययश्च), २. अभ्यमित्रीय (अमित्रस्याभिमुखम् इति छः), ३. अभ्यमित्रीण (अमित्र-स्याभिमुखम् इति खः)- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम अपने पराक्रम से वैरी का सामना करने वाले के हैं।

ऊर्जस्वलः स्यादूर्जस्वी य ऊर्जातिशयान्वितः॥७५॥

कृष्णमित्रटीका :- अतिशयितमूर्जोऽस्यास्ति[4]। 'ज्योत्स्नातमिस्रा-' (५. २. ११४) इति वलज्विनी। ऊर्जस्यातिशयः। 'ऊर्ज बलादौ' (चु. प. से.)। घञ् (३. ३. १८)॥७५॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. ऊर्ज्वस्वल, २. ऊर्जस्वी , ३. ऊर्जातिशयान्वितः- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम अधिक बलवान् के हैं॥७५॥

स्यादुरस्वानुरसिलः

कृष्णमित्रटीका :- प्रशस्तमुरोऽस्य[6]। मतुप् (५. २. ९४)। पिच्छादित्वात् (५. २. १००) इलच्। 'विपुलोरसः' द्वे॥[7]

1. Conqureable (in general) [1] 2. Conqueror [2] 3. A warrior who valiantly encounters his enemy [3] 4. M. अतिशयितिमूर्जोस्यास्ति 5. A mighty or powerful man [2] 6. M. प्रशस्तमुरो स्य 7. A broadchested man [2].

हिन्दी अर्थ :- १. उरस्वान्, २. उरसिल- ये दो त्रिलिङ्ग नाम चौड़ी छाती वाले के हैं।

रथिनो रथिको रथी।

कृष्णमित्रटीका :- रथोऽस्यास्ति[1]। 'मेधारथा-भ्यामिरन्निनचौ' (वा. ५. २. १०९)। 'अत इनिठनौ' (५. २. ११५)। त्रीणि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. रथिन, २. रथिक, ३. रथी - ये तीन त्रिलिङ्ग नाम रथ के स्वामी के हैं।

कामंगाम्यनुकामीनः

कृष्णमित्रटीका :- कामं यथेष्टं गमनशीलः। णिनिः (३. २. ७८)। 'कामम्' इत्यव्ययम्। कामस्य सदृशम्। यथार्थेऽव्ययीभावः[3]। अनु कामं गामी। 'अवार' (५. २. ११) इति खः। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. क्रामङ्गामी, २. अनुकामीन - ये दो त्रिलिङ्ग नाम इच्छानुसार चलनेवाले के हैं।

हृत्यन्तीनस्तथा भृशम् ॥७६॥

कृष्णमित्रटीका :- अन्तस्यात्ययोऽत्यन्तं[5] गामी। खः (५. २. ११)। 'भृशं गामी' (इत्यन्वयः) 'अतिगमनशीलस्य' एकम्॥७६॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१. अत्यन्तीन- यह एक त्रिलिङ्ग नाम अधिक चलने वाले का है॥७६॥

शूरो वीरश्च विक्रान्तः

कृष्णमित्रटीका :- शूरयति। 'शूरवीर विक्रान्तौ' (चु. उ. से.)। विक्रामति स्म। क्रमेः (भ्वा. प. से.) क्तः (३. ४. १२) त्रीणि॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. शूर , २. वीर, ३. विक्रान्त - ये तीन त्रिलिङ्ग नाम पहलवान के हैं।

जेता जिष्णुश्च जित्वरः।

कृष्णमित्रटीका :- 'तृन्' (३. २. १३५), जेता। 'ग्लाजिस्थश्च ग्स्नुः' (३. २. १३९)। जिष्णुः। 'इण्नशजि-' (३. २. १६३) इति क्वरप्। जित्वरः॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. जेता, २.जिष्णु, ३. जित्वर - ये तीन त्रिलिङ्ग नाम सदा विजय करने वाले के हैं।

सांयुगीनो रणे साधुः शस्त्राजीवादयस्त्रिषु॥७७॥

कृष्णमित्रटीका :- संयुगे रणे साधु। 'प्रतिजनादिभ्यः खञ्' (४. ४. ९९)॥७७॥[1]

हिन्दी अर्थ :- सांयुगीन- यह एक त्रिलिङ्ग नाम लड़ाई में कुशल व्यक्ति का है॥७७॥

ध्वजिनी वाहिनी सेना पृतनाऽनीकिनी चमूः।
वरूथिनी बलं सैन्यं चक्रं चानीकमस्त्रियाम्॥७८॥

कृष्णमित्रटीका :- ध्वजाः सन्त्यस्याम्। वाहाः सन्त्यस्याम्। इनेन सहिता सेना। प्रियते। 'पृङ् व्यायामे' (तु. आ. अ.)। बाहुलकात्तनन्। अनीकं रणोऽस्त्यस्याम्[2]। चमति (श) त्रून्। वरूथाः[3] सन्त्यस्याम्। बलति। अच् (३. १. १३४)। सेनैव सैन्यम् चतुर्वणादिः (वा. ५. १. १२४)। क्रियतेऽनेन[4]। 'के कृञादीनाम्' (वा. ६. १. १२) द्वित्वम्। अनित्यनेन। 'अनिहृषिभ्यां किच्च' (उ. ४. १७) इतीकन्। एकादश॥७८॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. ध्वजिनी, २. वाहिनी, ३. सेना, ४. पृतना, ५. अनीकिनी, ६. चमू, ७. वरूथिनी, ८. बलम्, ९. सैन्यम्, १०. चक्रम्, ११. अनीकम्- ये ग्यारह नाम सेना के हैं, इनमें एक से सात स्त्रीलिङ्ग, आठ से दस नपुंसकलिङ्ग और ग्यारह नपुंसकलिङ्ग, पुल्लिङ्ग हैं॥७८॥

व्यूहस्तु बलविन्यासः

कृष्णमित्रटीका :- व्यूहते। वलस्य सेनाया विन्यासो विभज्य स्थापनम्। द्वे 'व्यूहस्य'॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. व्यूह, २. वलविन्यास- ये दो पुल्लिङ्ग नाम मोर्चाबन्दी के हैं।

भेदा दण्डादयो युधि।

कृष्णमित्रटीका :- भेदा विशेषाः। दण्डवदवस्थानं दण्डः॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. दण्ड, २. शकट, ३. मकर, ४. पताका, ५. दुर्जय- आदि लड़ाई में सेना को रखने को व्यवस्था (मोर्चाबन्दी) के क्रमशः एक-एक नाम हैं।

---

1. M. रथोस्यास्ति 2. **The owner of a carriage** [3] 3. M. यथार्थेव्ययीभावः 4. **One who goes at the his will or pleasure** [1] 5. M. अन्तस्यात्ययोत्यन्तं 6. **A person who walks too much** [1] 7. **A brave man** [3] 8. **A victorious person** [3].

1. **A skilled warrior** [1] 2. M. रणोस्त्यस्याम् 3. M. वरूथा 4. M. क्रियतेनेन 5. **Army** [11] 6. **A military array** [1] 7. **Different forms of military arrays** [1 each].

प्रत्यासारो व्यूहपार्ष्णिः

कृष्णमित्रटीका :- प्रतीपमासारयति भग्नान्। 'सृ गतौ' (भ्वा. प. अ.)। व्यूहस्य पार्ष्णिः पृष्ठभागः। 'सैन्यपृष्ठस्थितसैन्यस्य' द्वे।।[1]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रत्यासार, २. व्यूहपार्ष्णि- ये दो पुल्लिङ्ग नाम व्यूह के पीछे सेनाभाग के हैं।

सैन्यपृष्ठे प्रतिग्रहः ।।७९ ।।

कृष्णमित्रटीका :- प्रतिगृह्यतेऽनेन[2]। सैन्यस्य पश्चाद्भिन्नसंघातः ।।७९ ।।[3]

हिन्दी अर्थ :- सैन्यपृष्ठे सैन्यस्य पृष्ठे धनुः शतद्वयान्तरे स्थितं सैन्यम्- प्रतिग्रह (प्रतिगृह्यतेऽनेन इत्यप्)- यह एक पुल्लिङ्ग नाम सेना के पीछे (सेना की रक्षा के लिये) स्थित सैन्य टुकड़ी का है।।७९ ।।

एकैभैकरथा त्र्यश्वा पत्तिः पञ्चपदातिका।

कृष्णमित्रटीका :- एक इभः। एको रथः। त्रयोऽश्वाः[4]। पञ्चनराः इति पत्तिः उच्यते।।[5]

हिन्दी अर्थ :- पत्ति- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम उस सेना का है, जिसमें एक हाथी, एक रथ, तीन घोड़े और पाँच पैदल हों।

पत्त्यङ्गैस्त्रिगुणैः सर्वैः क्रमादाख्या यथोत्तरम्।।८०।।
सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः।
अनीकिनी दशानीकिन्योऽक्षौहिणी

कृष्णमित्रटीका :- तिस्त्रः पत्तयः सेनामुखम्। ततः गुल्मः। ततो गुणः। ततो वाहिनी। ततः पृतना। ततः चमूः। ततः[6] अनीकिनी। ततो दशानीकिनी। ततः। अक्षौहिणीति यथोत्तरत्रिगुणितैः संज्ञा। सेनयामुखमुपक्रमः। गुडति। 'गुड रक्षायाम्' (तु. प. से.)। बाहुलकान्मक्। गण्यते गणः।।[7]

हिन्दी अर्थ :- पत्ति के सभी अङ्गों से त्रिगुणित होने पर सेनामुखादि संज्ञा होती है। अर्थात् पत्ति सेनाविशेष की- १. सेनामुखम, कहते हैं जो नपुंसकलिङ्ग है। इसमें तीन हाथी, नौ घोड़े और पन्द्रह पैदल होते हैं।।८०।।

१. सेनामुख को गुल्म कहते हैं यह पुल्लिङ्ग है। इसमें ९ हाथी, ९ रथ, २७ घोड़े, और ४५ पैदल होते हैं, ये संख्यायें सेनामुख की संख्याओं से तीन गुनी हैं।

१. गुल्मको गण, कहते हैं। यह पुल्लिङ्ग है। इसमें २७ हाथी, २७ रथ, ८१ घोड़े और १३५ पैदल होते हैं, ये संख्यायें गुल्म की संख्याओं से त्रिगुणित हैं।

१. गण को वाहिनी कहते हैं। यह स्त्रीलिङ्ग नाम है। इसमें, ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोड़े और ४०५ पैदल होते हैं। ये संख्यायें गण की संख्याओं से ३ गुनी हैं।

१. वाहिनी को पृतना, कहते हैं, यह स्त्रीलिङ्ग नाम है इसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घोड़े और १२१५ पैदल होता हैं। ये संख्यायें वाहिनी की संख्याओं से ३ गुनी हैं।

१. पृतना को चमू , कहते हैं। यह स्त्रीलिङ्ग नाम है। इसमें ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ घोड़े और ३६४५ पैदल होते हैं। ये संख्यायें पृतना की संख्याओं से ३ गुनी हैं।

१. चमू को अनीकिनी कहते हैं, यह स्त्रीलिङ्ग नाम है। इसमें २१८७ हाथी, २१८७ रथ, ६५६१ घोड़े और १०८३५ पैदल होते हैं। ये संख्याएँ अनीकिनी की संख्याओं से ३ गुनी हैं। इस प्रकार सेनामुखम्, गुल्म, गणः वाहिनी, पृतना, चमूः, अनीकिनी ये ८ नाम सेनाविशेष के हैं।

१. अक्षौहिणी यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम अनीकिनी (२१८७० हाथी, २१८७० रथ, ६५६१० घोड़े और १०६३५० पैदल संख्यावाले) सेना विशेष का है।

अथ संपदि।।८१।।
संपत्तिः श्रीश्च लक्ष्मीश्च

कृष्णमित्रटीका :- संपद्यतेऽनया[1]। क्विप् (वा. ३. ३. ९४)।।८१।। 'संपत्तिसाकल्य-' (२. १. ६) इति निर्देशात् क्तिन् (३. ३. ९४) श्रीयते सर्वैः।।[2]

हिन्दी अर्थ :- १. संपत्।।८१।।, २. सम्पत्ति, ३ श्री, ४. लक्ष्मी- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम सम्पत्ति (धनोत्कर्ष) के हैं।

विपत्तौ विपदापदौ।।[3]

आयुधं तु प्रहरणं शस्त्रमस्त्रम् अथास्त्रियौ।।८२।।

---

1. **The army at the rear of a military array** [2] 2. M. प्रतिगृह्यतेनेन 3. **The rear of an army** [2] 4. M. त्रयोश्वाः 5. **The division of an army consisting of one elephant, one chariot, three horses and five foot-soldiers** [1] 6. M. तत 7. **Other eight division of an army** [1 each].

1. M. संपद्यतेनया 2. Prosperity [4] 3. **Calamity or adversity** [3].

कृष्णमित्रटीका :- आयुध्यन्तेऽनेन।[1] शस्यतेऽनेन[2]। 'शसु हिंसायाम्' (भ्वा. प. से.)। 'दाम्नीशस-' (३. २. १८२) इति ष्ट्रन्। अस्यते। ष्ट्रन् (उ. ४. १५८)। चत्वारि॥८२॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. विपत्ति, २. विपत्, ३. आपत्- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम विपत्ति के हैं।

१.आयुधम्, २. प्रहरणम्, ३. शस्त्रम्, ४. अस्त्रम्- ये चार नपुंसकलिङ्ग नाम शस्त्र के हैं॥८२॥

धनुश्चापौ धन्वशरासनकोदण्डकार्मुकम्। इष्वासोऽपि

कृष्णमित्रटीका :- धनति। 'धन शब्दे' (भ्वा. प. से.)। 'अर्तिकृवपि-' (उ. २. ११७) इत्युस्। चयस्य वंशभेदस्य विकारः। धन्वति। 'धवि गतौ' (भ्वा. प. से.) 'कनिन्युवृषि-' (उ. १. १५७) इति कनिन्। शरा अस्यन्तेऽनेन[4]। कौति। कौः विच् (३. २. ७५)। कोदण्डो वंशोऽस्य[5]। कर्मणे प्रभवति। 'कर्मण उकञ्' (५. १. १०३)। इषवो वाणा अस्यन्तेऽनेन[6]। सप्त॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. धनुः, २. चाप (चपस्य , ३. धन्वन् , ४. शरासनम्, ५. कोदण्ड, ६. कार्मुकम्, ७. इष्वास- ये सात नाम धनुष के हैं, इनमें क्रमश प्रथम व द्वितीय पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग, तृतीय से षष्ठ नपुंसकलिङ्ग, सप्तम पुल्लिङ्ग है।

अथ कर्णस्य कालपृष्ठं शरासनम्॥८३॥

कृष्णमित्रटीका :- कालो यम इव पृष्ठमस्य। कर्णस्य शरासनं धनुः॥८३॥[8]

हिन्दी अर्थ :- कालपृष्ठम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम कर्ण के धनुष का है॥८३॥

कपिध्वजस्य गाण्डीवगाण्डिवौ पुंनपुंसके।

कृष्णमित्रटीका :- कपिर्हनुमान् ध्वजेऽस्य[9]। गाण्डिर्ग्रन्थिरस्यास्ति। कृदिकारात्-' (ग. ४. १. ४५) इति वा ङीष्। 'गाण्ड्यजगात्-' (५. २. ११०) इति वः। 'अर्जुनधनुषः' द्वे॥[10]

हिन्दी अर्थ :-१. गाण्डीव, २.गाण्डिव- ये दो पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग नाम अर्जुन के धनुष के हैं। कपिः ध्वजे यस्य तस्यार्जुनस्येति शेषः। यह धनुर्मात्रका नाम है, ऐसा भी मत है।

कोटिरस्याटनी

कृष्णमित्रटीका :- कोट्यतेऽनया[1]। 'कुट प्रताने' (चुरादिः),। अटति। बाहुलकादनिः। 'धनुषोऽन्त्यस्य' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. कोटि, २. अटनी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम धनुष के दोनो किनारों के हैं।

गोधा[3] तले ज्याघातवारणे॥८४॥

कृष्णमित्रटीका :- 'गुध परिवेष्टने' (दि. प. से.)। घञ् (३. ३. १२१)। तलति। 'तल प्रतिष्ठायाम्' (भ्वा. प. से.)। व्यक्तिद्वयाद् द्वित्वम्। 'ज्याया गुणस्याघातस्य वारणे' तत्र द्वे॥८४॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१. गोधा, २. तलम्- ये दो नाम क्रमशः एक स्त्रीलिङ्ग एक नपुंसकलिङ्ग धनुष की डोरी की चोट से बचने के लिए हाथ में पहने जाने वाले चमड़े से बने हुए दस्ताने के हैं॥८४॥

लस्तकस्तु धनुर्मध्यम्

कृष्णमित्रटीका :- लस्यते स्म। 'लस श्लेषणादौ' (भ्वा. प. से.)। क्तः (३. २. १०२)। स्वार्थे कन् (५. ४. ३८) द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. लस्तक, २. धनुर्मध्यम्- ये दो नाम धनुष के बीच वाले भाग के हैं । इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग द्वितीय नपुंसकलिङ्ग हैं।

मौर्वी ज्या शिञ्जिनी गुणः।

कृष्णमित्रटीका :- मूर्वाया विकारः। 'ज्या वयोहानौ' (क्र्या. प. अ.)। शिङ्क्ते। 'शिजि अव्यक्ते शब्दे' (अ. आ. से.), णिनि। गुण्यते। 'गुण आमन्त्रणे' (चु. प. से.)। चत्वारि॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१. मौर्वी, २. ज्या, ३. शिञ्जिनी, ४. गुण- ये चार नाम धनुष की डोरी के हैं। इनमें प्रथम से तृतीय स्त्रीलिङ्ग चतुर्थ पुल्लिङ्ग हैं।

1. M. आयुध्यन्तेनेन 2. M. शस्यतेनेन 3. **Weapon** [4] 4. M. अस्यन्तेनेन 5. M. वंशोस्य 6. M. अस्यन्तेनेन 7. **Bow** [7] 8. **Karna's bow** [1] 9. M. ध्वजेस्य 10. **Arjuna's bow** [2].

1. M. कोटयतेनया 2. **The curved end of a bow** [2] 3. **B. and K. read** गोधे 4. **A leathern fence worn rund for safety from a bow** [2] 5. **The middle of a bow** 6. **Bow-string** [4].

स्यात्प्रत्यालीढमालीढमित्यादिस्थानपञ्चकम्॥८५॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रत्यालेहनम्। लिहः (अ. उ. अ.) क्तः (३. ३. ११३)। ऊर्ध्वस्थस्य वामपादप्रसारे दक्षिणपादसंकोचे आद्यम्। विपयर्ये द्वितीयम्। (इत्यादि[1])॥८५॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रत्यालीढम्, २. आलीढम् ३. ऊर्ध्वस्थस्य, ४. वामपादप्रसारे दक्षिणपादसंकोचे आद्यम्, ५. विपर्ययेऽन्त्यम्- ये पाँच नाम धनुषधारियों के स्थानभेद या स्थितिभेद के हैं॥८५॥

लक्ष्यं लक्षं शरव्यं च[3]

कृष्णमित्रटीका :- लक्ष्यते। 'लक्ष आलोचने' (चु. आ. से.)। शरान् व्ययति। 'व्येञ् संवरणे' (भ्वा. उ. अ.)। डः (वा. ३. २. ३)। त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. लक्षम्, २. लक्ष्यम्, ३. शरव्यम्- ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम निशाने के हैं।

शराभ्यास उपासनम्।

कृष्णमित्रटीका :- शरस्य शरमोक्षस्याभ्यासः। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. शराभ्यास (शरमोक्षस्याभ्यासः), २. उपासनम्- ये दो नाम क्रमशः एक पुल्लिङ्ग एक नपुंसकलिङ्ग बाण चलाने का अभ्यास करने के हैं।

पृषत्कवाणविशिखा अजिह्मगखगाशुगाः॥८६।
कलम्बमार्गणशराः पत्री रोप इषुर्द्वयोः।
सायकः प्रकरः काण्डः कङ्कपत्रः शिखण्डकः (?)॥
इति क्षेपकः।

कृष्णमित्रटीका :- 'पृषु सेचने' (भ्वा. प. से.)। शत्रन्तात्कन्। 'वण शब्दे' (भ्वा. प. से.)। घञ् (३. ३. १८) विशिष्टा शिखा अग्रमस्य। अजिह्मं खमाशु च गच्छन्ति॥८७॥ के लम्बते। मार्गयति। 'मृग अन्वेषणे' (भ्वा. उ. से.)। 'शृ हिंसायाम्' (क्र्या. प. से.)। रोप्यतेऽनेन[1]। 'रपु विमोहने' (दि. प. से.)। इष्यतेऽनेन[2]। 'ईषेः किच्च' (उ. १. १३) इत्युः। द्वादश॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. पृषत्क, २. वाण, ३. विशिख, ४. अजिह्मग, ५. खग, ६. आशुग, ७. कलम्ब, ८. मार्गण, ९. शर, १०. पत्री, ११. रोप, १२. इषु- ये बारह नाम बाण के हैं, इनमें ग्यारह पुल्लिङ्ग, एक पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग है।

प्रक्ष्वेडनास्तु नाराचाः

कृष्णमित्रटीका :- प्रकर्षेण क्ष्वेदन्ते। ञिक्ष्विदा (भ्वा. आ. से.) ल्युः (३. १. १३४)। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। नारमाचरति। डः (वा. ३. २. १०२)। 'सर्वलोहमयस्य शरस्य' द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रक्ष्वेडन, २. नाराच- ये दो पुल्लिङ्ग नाम लौहनिर्मित बाण के हैं।

पक्षो वाजः

कृष्णमित्रटीका :- पक्ष्यतेऽनेन[5]। 'पक्ष परिग्रहे' (भ्वा. प. से.)। वजत्यनेन। 'वज गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'शरपक्षस्य' द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. पक्ष, २. बाज- ये दो पुल्लिङ्ग नाम बाण में लगे हुए पंख के हैं।

त्रिषूत्तरे॥७८॥

कृष्णमित्रटीका :- उत्तरे वक्ष्यमाण। लिप्तका (अ. २. ८. ८८) न्ताः॥८७॥

हिन्दी अर्थ :- लिप्तकपर्यन्त सब शब्द तीनों लिंगों में होते हैं॥८७॥

निरस्तः प्रहिते वाणे

कृष्णमित्रटीका :- निरस्यते स्म॥[7]

हिन्दी अर्थ :- निरस्त- यह एक त्रिलिङ्ग नाम धनुष से छोड़े हुए बाण का है।

विषाक्ते दिग्धलिप्तकौ।

कृष्णमित्रटीका :- 'दिह उपचये' (अ. उ. अ.) क्तः (३. २. १०२)। 'विषसंबद्धवाणस्य' द्वे॥[8]

---

1. What Amara Simha means by the word ityadi is explained by K. as follows : आदिशब्दात्समपादं वैशाखं मण्डलं ग्रहं च धनुर्वेदप्रसिद्धम् (p. 123) 2. Five positions of an archer being pratyalidha alidha, sampada, vis'akha and mandala [1 each] 3. B. and K. लक्षं लक्ष्यं शरयं च 4. Butt (for an arrow) [2] 5. The practice of archery [2].

1. M. रोप्यतेनेन 2. M. इष्यतेनेन 3. Arrow [12] 4. An iron arrow [2] 5. M. पक्ष्यतेनेन 6. The feathered end of an arrow [2] 7. A discharged arrow [1] 8. A poisoned arrow.

हिन्दी अर्थ :-१. दिग्धः, २.लिप्तक- ये दो त्रिलिङ्ग नाम विष में बुझाये हुए बाण के हैं।

तूणोपासङ्गतूणीरनिषङ्गा इषुधिर्द्वयोः ॥८८॥

तूण्याम्

कृष्णमित्रटीका :- 'तूण संकोचे' (चु. आ. से.)। उपासज्यन्तेऽत्र[1] शराः। तूणति शरैः संकोचं राति। इषवो धीयन्तेऽत्र[2]। 'शराधारस्य' षट्॥८८॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. तूण, २. उपासङ्ग , ३. तूणीर , ४. निषङ्ग, ५. इषुधि, ६. तूणी- ये छः नाम तरकस के हैं- इनमें प्रथम से चतुर्थ पुल्लिङ्ग, पंचम पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग, षष्ठ स्त्रीलिङ्ग हैं।

खङ्गे तु निस्त्रिंशचन्द्रहासासिरिष्टयः।

कौक्षेयका मण्डलाग्रः करवालः[4] कृपाणवत्॥८९॥

कृष्णमित्रटीका :- खण्ड्यतेऽनेन[5] । 'छापूख-डिभ्यः कित्' (उ. १. १२४) इति गन्। निर्गतस्त्रिंश-तोऽङ्गुलिभ्यः। चन्द्र इव हासः प्रभाऽस्य[6]। अस्यते। इन् (उ. ४. ११७)। रेषति। 'रिषु हिंसायाम्' (तु. प. अ.)। क्तिच् (३. ३. १७४)। कुक्षौ भवः। 'कुलकुक्षि' (४. २. ९६) इति ढकञ्। मण्डलमग्रमस्य। करे वाल इव। कृपां नुदति। डः (वा. ३. २. १०१)। 'पूर्वपदात्-' (८. ४. ३) इति णः॥८९॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. खङ्ग, २. निस्त्रिंश, ३. चन्द्रहास, ४. असि, ५. रिष्टि, ६. कौक्षेयक, ७. मण्डलाग्र, ८. करपाल, ९. कृपाण- ये नौ पुल्लिङ्ग नाम खङ्ग आदि के हैं।

त्सरुः खड्गादिमुष्टौ स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- त्सरति। 'त्सर छद्मगतौ' (भ्वा. प. से.)। 'भृमीशी-' (उ. १.७) इत्युः॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. त्सरु- यह एक पुल्लिङ्ग नाम खड्ग आदि की मुठिया है।

मेखला तन्निबन्धनम्।

कृष्णमित्रटीका :- माया ईखं लाति। 'खड्गादेः चर्मादिरचितकटिबन्धनस्य' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- मेखला- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम म्यान और कमर में कसी जाने वाली पेटी का है।

फलकोऽस्त्री फलं चर्म

कृष्णमित्रटीका :- फलति। 'ञिफला विशरणे' (भ्वा. प. से.)। 'कृञादिभ्यो वुन्' (उ. ५. ३५)। चरन्त्यनेन। मनिन् (उ. ४. १४४)। 'ढाल' लोके॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. फलक, २. फलम्, ३. चर्म- ये तीन नाम ढाल के हैं। इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग, पुल्लिङ्ग द्वितीय एवं तृतीय नपुंसकलिङ्ग हैं।

संग्राह्यो मुष्टिरस्य यः॥९०॥

कृष्णमित्रटीका :- संगृह्यते। 'समि मुष्टौ' (३. ३. ३६) इति घञ्। अस्य फलकस्य। एकम्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- संग्रह- यह एक पुल्लिङ्ग नाम ढाल की मुठिया का है॥९०॥

द्रुघणे मुद्गरघनौ

कृष्णमित्रटीका :- द्रुर्वृक्षो हन्यतेऽनेन[4]। 'करणेऽयोविद्रुषु[5] (३. ३. ८२) इत्यप्, घनादेशश्च। मुदो गरः। हन्यतेऽनेन[6]। 'मूर्तौ घनः' (३. ३. ७७) इत्यप्, घनश्च। 'गुर्ज' इति लोके॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. द्रुघण २. मुद्गर, ३. घन- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम मुद्गर के हैं।

स्यादीली करवालिका

कृष्णमित्रटीका :- ईलयति। गौरादि ङीष्। करे वालेव। 'गुप्ती' इति लोके॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. ईली, २. करपालिका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम गुप्ती, तरवार के हैं।

भिन्दिपालः सृगस्तुल्यौ

कृष्णमित्रटीका :- भिन्दति। 'भिदि अवयवे' (भ्वा. प. से.)। इन् (उ. ४. ११७)। भिन्दि पालयति। सरति। बाहुलकाद् गक्। 'गोफण' इति ख्यातस्य द्वे। 'नलिकास्त्रस्य'- इत्यन्ये॥[9]

---

1. M. उपासज्यन्तेत्र 2. M. धीयन्तेत्र 3. **Quiver** [6] 4. **B. prefers** करपालः 5. M. खण्ड्यतेनेन 6. M. प्रभास्य 7. **Sword** [9] 8. **The hilt of swords and other weapons** [2].

1. **Swordbelt** [1] 2. **Shield** [3] 3. **The handle of a shield** [1] 4. M. हन्यतेनेन 5. M. करणेयोविद्रुषु 6. M. हन्यतेनेन 7. **Mallet or wooden mace** [3] 8. **A short sword** [2] 9. **Sling** [2].

हिन्दी अर्थ :- १. भिन्दिपाल, २. सृग- ये दो पुल्लिङ्ग नाम गुलेल या नलिका नामक हथियार के हैं।

परिघः परिघातनः ॥६१॥

कृष्णमित्रटीका :- परितो हन्यतेऽनेन[1] 'परौ घः' (३. ३. ४) इति साधुः। 'लोहबद्धयष्टेः' द्वे॥६१॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. परिघ, २. परिघातन-ये दो पुल्लिङ्ग नाम लोह से मढ़ी हुई लाठी के हैं॥६१॥

द्वयोः कुठारः स्वधितिः परशुश्च परश्वधः।

कृष्णमित्रटीका :- कुटं वृक्षमृच्छति। 'ऋ गतौ' (भ्वा. प. अ.)। स्वं धियति। 'धि धारणे' (तु. प. अ.)। क्तिच् (३. ३. १७४)। द्वे। 'टेगारी' लोके॥[3] परं शृणाति। 'आङ्परयोः खनिशृभ्यां डिच्च' (उ. १. ३३) इति कुः। परस्वं दधाति। कः। तालव्यमध्यः (परश्वधः) अपि। द्वे 'फरुहा' लोके॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. कुठार, २. स्वधिति, ३. परशु, ४. परश्वध- ये चार नाम फरसा, कुल्हाड़ी के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय से चतुर्थ पुल्लिङ्ग हैं।

स्याच्छस्त्री चासिपुत्री च छुरिका चासिधेनुका॥६२॥

कृष्णमित्रटीका :- शस्यतेऽनया[5]। 'शसु हिंसायाम्' (भ्वा. प. से.)। 'दाम्नीशस-' (३. २. १८२) इति ष्ट्रन्। असेः पुत्रीव। 'छुर छेदने' (तु. प. से.)। क्वुन् (उ. २. ३५)। असेः धेनुकेव। चत्वारि॥६२॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. शस्त्री (शस्यतेऽनया ष्ट्रन् ङीष् च), २. असिपुत्री, ३. छुरिका, ४. असिधेनुका- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम छुरी के हैं॥६२॥

वा पुंसि शल्यं शङ्कुर्ना

कृष्णमित्रटीका :- शलति। 'शल गतौ' (भ्वा. प. से.)। अघ्न्यादित्वात् (उ. ४. १११) यः। शङ्कतेऽस्मात्[7]। 'खरुशङ्कु-' (उ. १. ३६) इति साधुः। 'शेल' इति ख्यातस्य द्वे॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. शल्यम्, २. शंकु- ये नाम बाण के अग्रभाग या बर्छी के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग मात्र है।

1. M. हन्यतेनेन 2. **Stick or club studded with iron** [2] 3. **Axe** [2] 4. **A battle-axe** [2] 5. M. शस्यतेनया 6. **Knife** [4] 7. M. शङ्कतेस्मात् 8. **Javelin** [2].

सर्वला तोमरोऽस्त्रियाम्।

कृष्णमित्रटीका :- सर्वं लाति। तालव्यादिः (शर्वला) अपि। 'तु' सौत्रो गत्यर्थः। विच् (३. २. ७५)। तौर्गतेः म्रियतेऽनेन[1]। 'गंडासा' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. शर्वला, २. तोमर, ये दो नाम तोमर या गड़ासे के हैं। इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग है।

प्रासस्तु कुन्तः

कृष्णमित्रटीका :- प्रास्यते। कुं तनोति। डः। 'भाला' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रास, २. कुन्त- ये दो पुल्लिङ्ग नाम भाला के हैं।

कोणस्तु स्त्रियः पाल्यश्रिकोटयः॥६३॥

कृष्णमित्रटीका :- कुणत्यनेन। 'कुण शब्दे (तु. प. से.)। पालयति। 'अच इः' (उ. ४. १३८)। अश्यते। अंघ्र्यादि (उ. ४. ६६)। 'भुशुण्डी लोहनलिका' ''बंदूक'' 'नाडिकातिभुशुण्डिका' ''तोप''। 'दारुका वह्निचूर्णास्य' ''दारु''। दन्त्यमध्यस्त्वस्रशब्दो दन्तः। कोटयति। 'कुट कौटिल्ये' (तु. प. से.)। 'अच इः' (उ. ४. १३८)। चत्वारि॥६३॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. कोण, २. पालि, ३. अश्रि, ४. कोटि- ये चार नाम अस्त्रों के नोक के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग द्वितीय से चतुर्थ स्त्रीलिङ्ग हैं॥६३॥

सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसंनहनार्थकः।

कृष्णमित्रटीका :- सर्वेण अभिसरणम्। सर्वस्य ओघः। सर्वेषां संनहनमर्थो यस्य। 'सर्वसैन्यसंहननस्य' त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. सर्वाभिसार, २. स्वौंध, ३. सर्वसंनहनम्- ये तीन नाम सभी (चतुरङ्गिणी) सेना को तैयार करने के हैं।

लोहाभिहारोऽस्त्रभृतां राज्ञां नीराजनाविधिः॥६४॥

कृष्णमित्रटीका :- लोहस्य शस्त्रस्याभिहरणम्। नितरां राजनं तस्या विधिः। 'महानवम्यां प्रस्थानात्प्राक्च्छस्त्रवाहनादिपूजनविधेः' एकम्॥६४॥[6]

1. म्रियतेनेन 2. **An axe for cutting fodder** [2] 3. **Lance or spear** [2] 4. **The sharp edge or point of a sword or any weapon** [4] 5. **An attack with a complete army** [3] 6. **A military ceremony** [1].

हिन्दी अर्थ :- लोहाभिसार- यह एक पुल्लिङ्ग नाम युद्ध के लिए उद्यत वीरों या भूपतियों की आरती का, या युद्ध यात्रा के पहले शस्त्रों की पूजा का है। दीक्षित के मत से महानवमी के दिन प्रस्थान से पूर्व शस्त्र और वाहनों की पूजा का नाम है॥९४॥

यत्सेनयाभिगमनमरौ तदभिषेणनम्।

कृष्णमित्रटीका :- सेनयाभियानम्। 'सत्याप' (३. १. २१) इति णिचो ल्युट् (३. ३. ११५)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- अभिषेणनम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम शत्रु के सम्मुख सेना सहित जाने का है।

यात्रा व्रज्याभिनिर्याणं प्रस्थानं गमनं गमः॥९५॥

कृष्णमित्रटीका :- 'हुयामाश्रुभसिभ्यस्त्रन्' (उ. ४. १६७)। यात्रा। 'व्रजयजोः-' (३. ३. ९८) इति क्यप्[2]। व्रज्या। 'ग्रहवृ-' (३. ३. ५८) इत्यप्। गमः॥९५॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. यात्रा, २. व्रज्या, ३. अभिनिर्याणम्, ४. प्रस्थानम्, ५. गमनम्, ६. गम- ये छः नाम प्रस्थान के हैं। इनमें प्रथम व द्वितीय स्त्रीलिङ्ग, तृतीय से पंचम नपुंसकलिङ्ग, षष्ठ पुल्लिङ्ग हैं॥९५॥

स्यादासारः प्रसरणम्

कृष्णमित्रटीका :- आसरणम्। घञ् (३. ३. १८)। 'सर्वतोव्याप्यसैन्यप्रसरणस्य' द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. आसार, २. प्रसरणम्- ये दो नाम सेना के सब तरफ फैल जाने के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग हैं।

प्रचक्रं चलितार्थकम्।

कृष्णमित्रटीका :- प्रस्थितं चक्रं सैन्यम्। 'प्रस्थितसैन्यस्य' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रचक्रम्, २. चलितम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम यात्रा करती हुई सेना के हैं।

अहितान्प्रत्यभीतस्य रणे यानमभिक्रमः॥९६॥

कृष्णमित्रटीका :- अभि क्रमेः (भ्वा. प. से.) घञि (३. ३. १८) 'नोदात्त-' (७. ३. ३४) इति न वृद्धिः। एकम्॥९६॥[6]

1. Marching with troops against an enemy [1] 2. M. क्विप् 3. Marching (in general) [6] 4. Surrounding an enemy; incursion, attack [2] 5. An army in motion [2] 6. Encountering an enemy without fear [1].

हिन्दी अर्थ :- अभिक्रमणम्- यह एक पुल्लिङ्ग नाम निर्भय होकर शत्रु के समक्ष वीरों के जाने का है॥९६॥

वैतालिका बोधकराः

कृष्णमित्रटीका :- विविधेन तालेन शब्देन 'चरति' (४. ४. ८) इति ठक्। बोधं करोति। टः (३. २. २०)। 'प्रातर्जागरणकारिणः' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. वैतालिक, २. बोधकर- ये दो पुल्लिङ्ग नाम प्रातःकाल राजा को जगाने, व स्तुतिपाठ करने वाले बन्दी विशेष के हैं।

चाक्रिका घाण्टिकाश्चते।[2]

कृष्णमित्रटीका :- चक्रेण समूहेन चरन्ति। घण्टया चरन्ति। बहवो मिलिता ये राज्ञां स्तुत्यादि पठन्ति तेषां द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. चाक्रिक २. घाण्टिक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम घण्टा बजाने वाले तथा घड़ियारी बाजा बजाने वाले बन्दी के हैं।

स्युर्मागधास्तु मगधः

कृष्णमित्रटीका :- मगध्यति। कण्ड्वादि-यगन्तः। अचि (३. १. १३४) 'यस्य हलः' (६. ४. ४९)। 'वंशपरम्पराशंसकानां' द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. मागध, २. मगध- ये दो पुल्लिङ्ग नाम राजा की वंशावली वर्णन करने वाले बन्दी के हैं।

वन्दिनः स्तुतिपाठकाः॥९७॥

कृष्णमित्रटीका :- वन्दते। णिनिः। 'भाट' लोके। द्वे॥९७॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. वन्दी, २. स्तुतिपाठक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम राजा की स्तुति करने वाले बन्दी के हैं॥९७॥

संशप्तकास्तु समयात्संग्रामादनिवर्तिनः।

कृष्णमित्रटीका :- शपेः (भ्वा. उ. अ.) क्तः (३. ३. ११४)। संशप्तं शपथं कुर्वन्ति। समयात्शपथाद्धेतोः॥[6]

1. A bard who wakes up his master by singing songs in the morning [2] 2. B. घाण्टिकार्थकाः and K. घाण्टिकाः समाः 3. Bards singing in chorus praises in honour of a king or gods [2] 4. Minstrel [2] 5. Bhata (paregyrist) [2] 6. A warrior sworn never to return from a battle [1].

हिन्दी अर्थ :- संशप्तक- यह एक पुल्लिङ्ग नाम प्रतिज्ञा करने के कारण रणक्षेत्र से न लौटने वाले वीरों का है।

रेणुर्द्वयोः स्त्रियां धूलिः पांशुर्ना न द्वयो रजः ॥९८॥

कृष्णमित्रटीका :- रीयते। 'री गत्यादौ' (क्र्या. प. अ.)। 'अजिवृरी-' (उ. ३. ३८) इति णुः। धूयते। बाहुलकाल्लिः। 'पशि नाशने' (चु. प. से.)। 'अर्जिदृशकमि-' (उ. १. २७) इति साधुः। 'भूरञ्जिभ्यां कित्' (उ. ४. २१६) इत्यसुन्। चत्वारि॥९८॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. रेणु, २. धूलि, ३. पांशु, ४. रज- ये चार नाम धूल के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग स्त्री, द्वितीय स्त्रीलिङ्ग, तृतीय पुल्लिङ्ग, चतुर्थ नपुंसकलिङ्ग हैं॥९८॥

चूर्णे क्षोदः

कृष्णमित्रटीका :- चूर्ण्यते। 'चूर्ण पेषणे' (चुरादिः), 'क्षुदिर् संपेषणे' (रु. उ. अ.), द्वे॥[2]- 'षट् पर्यायाः'-इत्यन्ये।

हिन्दी अर्थ :- १. चूर्णम्, २. क्षोद- ये दो नाम क्रम से प्रथम नपुंसकलिङ्ग द्वितीय पुल्लिङ्ग बारीक धूल के हैं।

समुत्पिञ्जपिञ्जलौ भृशमाकुले।

कृष्णमित्रटीका :- समुत्पिञ्जते। 'पिजि हिंसायाम्' (चुरादिः)। पिञ्जं लाति। अतिसङ्कुलस्य' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. समुत्पिञ्ज, २. पिञ्जल- ये दो पुल्लिङ्ग नाम अधिक धनी (अति संकुल) सेना के हैं।

पताका वैजयन्ती स्यात्केतनं ध्वजमस्त्रियाम्॥९९॥

कृष्णमित्रटीका :- पतति। 'बलाकादयश्च' (उ. ४. १४) इत्याकः। वैजयन्तस्येयम्। केत्यते। ज्ञायतेऽनेन। 'कित संशयादौ' (भ्वा. प. से.)। ध्वजति। 'ध्वज गतौ' (भ्वा. प. से.)। चत्वारि॥९९॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. पताका, २. वैजयन्ती, ३. केतनम् , ४. ध्वजम्- ये चार नाम पताका झण्डे के हैं, इनमें एक और दो स्त्रीलिङ्ग तृतीय नपुंसकलिङ्ग चतुर्थ पुल्लिङ्ग हैं॥९९॥

1. **Dust** [4] 2. **Powdery dust** [2] 3. **An army in great disorder** [2] 4. M. ज्ञायतेनेन.

सा वीराशंसनं युद्धे भूमिर्यातिभयप्रदा।

कृष्णमित्रटीका :- वीरा आशंस्यन्तेऽत्र[1]॥[2]

हिन्दी अर्थ :- अतिभयप्रदा या युद्धभूमि सा इति सम्बन्धः- १. वीराशंसनम् (वीराः आर्शस्यन्तेऽत्रेति ल्युट्)- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम भय देने वाली युद्ध भूमि का है।

अहं पूर्वमहं पूर्वमित्यहंपूर्विका स्त्रियाम्॥१००॥

कृष्णमित्रटीका :- अहं पूर्वम्[3]। 'सुप् सुपा' (२. १. ४) इति समासः॥१००॥[4]

हिन्दी अर्थ :- अहंपूर्विका- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम मैं पहले पहुँचा इस प्रकार स्पर्धा से योद्धाओं के दौड़ने का है॥१००॥

आहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्संभावनात्मनि।

कृष्णमित्रटीका :- अहो पुरुषस्य भावः। मनोज्ञादित्वात् (५. १. १२३) वुञ्। 'आत्मनि शक्त्याविष्कारस्य' एकम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- **दर्पात् आत्मनि या सम्भावना स्यात् सा आहोपुरुषिका**- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम स्वाभिमान पूर्वक अपना सामर्थ्य दिखलाने का है।

अहमहमिका तु सा स्यात्परस्परं यो भवत्यहंकारः॥१०१॥

कृष्णमित्रटीका :- 'अहमहम्' शब्दोऽस्त्यत्र। व्रीह्यादित्वात् (५. २. ११६) ठन्॥१०१॥[6]

हिन्दी अर्थ :- अहमहमिका- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम पारस्परिक अहंकार का है॥१०१॥

द्रविणं तरः सहोबलशौर्याणि स्थाम शुष्मं च।

शक्तिः पराक्रमः प्राणो[7]

कृष्णमित्रटीका :- द्रवत्येनेन। 'द्रुदक्षिभ्यामिनन्' (उ. २. ५०)। तरत्यनेन। असुन् (उ. ४. १८८)। एवं सहः। 'बल प्राणने' (भ्वा. प. से.)। शूरस्य भावः। तिष्ठत्यनेन। मनिन् (उ. ४. १४४)। शुषन्त्यनेन। 'अविसिव-' (उ. १. १४४) इति मन्। क्रमेः (भ्वा. प. से.) घञ् (३. ३. १२१)। प्रणित्यनेन[8] दश॥[9]

1. **Flag or banner** [4] 2. M. आशास्यतेत्र 3. **A post of danger in battle** [1] 4. M. पूर्वः 5. **The desire among warriors to be first in the battle** [1] 6. **A great self-conceit** [1] 7. **Emulation** [1] 8. B. पराक्रमप्राणौ, and K. पराक्रमः प्राणो 9. **Strength or might** [10].

हिन्दी अर्थ :- १. द्रविणम्, २. तर , ३. सह ४. बलम् , ५. शौर्यम्, ६. स्थाम, ७. शुष्मम्, ८. शक्ति , ९. पराक्रम, १०. प्राण- ये दस नाम पराक्रम के हैं। इनमें एक से सात नपुंसकलिङ्ग, आठ स्त्रीलिङ्ग, नौ और दस पुल्लिङ्ग हैं।

विक्रमस्त्वतिशक्तिता ।।१०२ ।।

कृष्णमित्रटीका :- अतिशयिता शक्तिर्यस्य तस्य भावः ।।१०२ ।।[1]

हिन्दी अर्थ :- १. विक्रम, २. अतिशक्तिता- ये दो नाम अधिक बल के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग, द्वितीय स्त्रीलिङ्ग हैं।

वीरपाणं तु तत्पानं वृत्ते भाविनी वा रणे।

कृष्णमित्रटीका :- वीराणां पानम् ।।[2]

हिन्दी अर्थ :- वीरपाणम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम युद्धारम्भ या अन्त में उत्साहवृद्धि के लिए मदिरादि पान करने का है।

युद्धमायोधनं जन्यं प्रधनं प्रविदारणम् ।।१०३ ।।
मृधमास्कन्दनं संख्यं समीकं सांपरायिकम्।
अस्त्रियां समरानीकरणाः कलहविग्रहौ ।।१०४ ।।
संप्रहाराभिसंपातकलिसंस्फोटसंयुगाः।
अभ्यामर्दसमाघातसंग्रामाभ्यागमाहवाः ।।१०५ ।।
समुदायः स्त्रियः संयत्समित्याजिसमिद्युधः।

कृष्णमित्रटीका :- युधेः (दि. आ. अ.) क्त- (३. ३. ११४) ल्युटौ (३. ३. ११५) जननम्। जन्यम्। 'भव्यगेय-' (३. ४. ६८) इति साधुः। 'डुधाञ्' (जु. उ. अ.) 'कृपॄवृजि-' (उ. २. ८१) इति क्युः ।।१०३ ।। 'मृधु हिंसायाम्' (भ्वा. उ. से.)। घञर्थे कः। ख्यातेः कः, संख्या। सम्यगयनम्। 'ई गत्यादौ' (अ. प. अ.)। बाहुलकात्कः। संपरायनम्। 'अयं गतौ' (भ्वा. प. से.) ततो विनयादित्वात् (५. ४. ३४) ठक्। समरणम्। 'ऋ गतौ' (क्र्या. प. से.)। घः (३. ३. ११८)। 'अन प्राणने' (अ. प. से.)। 'अनीकादयश्च' इति साधुः। 'वशिरण्योश्च' (वा. ३. २. ५८) इत्यप्। कलस्य हननम्। डः (वा. ३. २. १०१)। विग्रहणम्। 'ग्रहवृ-' (३. ३. ५८) इत्यप् ।।१०४ ।। 'पत्लृ गतौ' (भ्वा. प. से.)। घञि (३. ३. १८) अभिसंपातः 'कल शब्दादौ' (भ्वा. आ. से.)। इन् (उ. ४. ११७)। संस्फोटनम्। घञ् (३. ३. १८)। संयोजनम्। प्रतिजनादिषु (४. ४. ९९) पाठान्न गुणः। 'मृद क्षोदे' (क्र्या. प. से.)। घञ् (३. ३. १८)। 'संग्राम युद्धे' (चु. उ. से.)। 'आङि युद्धे' (३. २. ७२) इति ह्वेञः (भ्वा. उ. अ.) अप्, संप्रसारणं च ।।१०५ ।। 'दय दानादौ' (भ्वादिः)। घञ् (३. ३. १८)। 'यती प्रयत्ने' (भ्वा. आ. से.)। क्विप् (वा. ३. ३. ९४)। सम्पूर्वादिणः क्तिच् (३. ३. ९४)। 'अज गतौ' (भ्वा. प. से.)। घञ्। क्विप् तुक् (६. १. ७१) समित्। एकत्रिंशत् ।।[1]

हिन्दी अर्थ :- १. युद्धम्, २. आयोधनम्, ३. जन्यम्, ४. प्रधनम्, ५. प्रविदारणम् ।।१०३ ।।, ६. मृधम्, ७. आस्कन्दनम् , ८. संख्यम् , ९. समीकम, १०. सांपरायिकम्- ये दस नाम नपुंसकलिङ्ग हैं।

१. समर , २. अनीक, ३. रण- ये तीन नाम पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग हैं।

१. कलह, २. विग्रह ।।१०४ ।।, ३. संप्रहार, ४. अभिसंपात, ५. कलि, ६. संस्फोट , ७. संयुग, ८. अभ्यामर्द, ९. समाघात, १०. संग्राम, ११. अभ्यागम, १२. आहव ।।१०५ ।।, १३. समुदाय, १४. संयत्- ये चौदह नाम पुल्लिङ्ग हैं।

१. समिति, २. आजि, ३. समित्, ४ युत्- ये चार स्त्रीलिङ्ग है। इस प्रकार ये एकतीस नाम युद्ध अर्थात् प्रहार करने के हैं।

नियुद्धं बाहुयुद्धेऽथ[2]

कृष्णमित्रटीका :- नितरां युद्धम् ।।[3]

हिन्दी अर्थ :- १. नियुद्धम्, २. बाहुयुद्धम् , ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम दङ्गल के हैं।

तुमुलं रणसंकुले ।।१०६ ।।

कृष्णमित्रटीका :- 'तुः' सौत्रः। मुलक्। 'रणे व्याकुलतायाः' द्वे ।।१०६ ।।[4]

हिन्दी अर्थ :- १. तुमुलम्, २. रणसंकुलम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम अच्छी तरह के युद्ध (घमासान युद्ध) के हैं ।।१०६ ।।

क्ष्वेडा तु सिंहनादः स्यात्

---

1. The excess of strength [2] 2. An exciting or refreshing drink taken by soldiers either before or after a battle [3].

1. War, battle or fight [31] 2. B. बाहुयुद्धेस्यात् 3. A close or hand- to- hand fight [2] 4. The confusion of a battle [2].

कृष्णमित्रटीका :- क्ष्वेदनं। ञिक्ष्विदा-' (भ्वा. आ. से.)। घञ् (३. ३. १८)। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। सिंहवन्नदनम्। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. क्ष्वेडा, २. सिंहनाद- ये नाम युद्ध में सिंह की तरह गरजने के है। इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग हैं।

करिणां घटना घटा।

कृष्णमित्रटीका :- घटनम्। 'घट संघाते' (चु. प. से.)। 'ण्यास-' (३. ३. १०७) इति युच्। षित्वादङ् (३. ३. १०४)। 'हस्तिसंघस्य' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. घटना, २. घटा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम गजसमूह के हैं। दीक्षित ने दो नाम माना है। किन्तु 'घटा' का पर्याय 'घटना' को मानना उपयुक्त नहीं लगता।

क्रन्दनं योधसंरावः

कृष्णमित्रटीका :- योधानां संरावोऽन्योन्य-स्पर्धयाऽह्वानम्[3]। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. क्रन्दनम, २. योधसंराव- ये दो नाम एक दूसरे की स्पर्धा से युद्ध में ललकारने के हैं। इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग हैं।

वृंहितं करिगर्जितम्॥१०७॥

कृष्णमित्रटीका :- करिणां गर्जिते द्वे॥१०७॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. वृंहितम्, २. करिगर्जितम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम गजों के गर्जने के हैं॥१०७॥

विस्फारो धनुषः स्वानः

कृष्णमित्रटीका :- 'स्फुर स्फुरणे' (तु. प. से.) घञ् (३. ३. १८)। एकम्॥[6]

हिन्दी अर्थ :- विस्फार- यह एक पुल्लिङ्ग नाम धनुष के टङ्कार का है।

पटहाडम्बरौ समौ।

कृष्णमित्रटीका :- पटं हन्ति। डः (वा. ३. २. १०१)। आडम्बं राति। 'डवि क्षेपे' (?)। 'पटहस्य' द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. पटह, २. आडम्बर- ये दो पुल्लिङ्ग नाम नगाड़ा के है।

प्रसभं तु बलात्कारो हठः

कृष्णमित्रटीका :- प्रगतं सभायाः। 'बलात्' इति निपातो हठार्थः। 'हठप्लुतिशठत्वयोः' (भ्वा. प. से.)। त्रीणि॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रसभम्, २. बलात्कार, ३. हठ, ये तीन नाम जबर्दस्ती करने के हैं। इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय व तृतीय पुल्लिङ्ग हैं।

अथ स्खलितं छलम्॥१०८॥

कृष्णमित्रटीका :- 'स्खल संचलने' (भ्वा. प. से.)। क्तः (३. ३. ११४)। 'छो देदने' (दि. प. अ.)। वृषादित्वात् (उ. १. १०६) कलच्। 'युद्धमर्यादायाश्च-लनस्य' द्वे॥१०८॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. स्खलितम्, २. छलम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम युद्ध में कपट करने के हैं॥१०८॥

अजन्यं क्लीबमुत्पात उपसर्गः समं त्रयम्।

कृष्णमित्रटीका :- न जन्यते। 'तकिशशि-' (वा. ३. १. ९७) इति यत्। पततिसृज्योर्घञ्। 'शुभाशुभसूचकमहाभूतविकारस्य' त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. अजन्यम्, २. उत्पात, ३. उपसर्ग- ये तीन नाम उत्पात के हैं, इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय, तृतीय पुल्लिङ्ग हैं।

मूर्च्छा तु कश्मलं मोहोऽपि

कृष्णमित्रटीका :- मुर्छा (भ्वा. प. से.)। 'गुरोश्च हलः' (३. ३. १०२)। 'कशि गतौ' (अ. आ. से.)। 'कुटकशिकौतिभ्यः प्रत्ययस्य मुट्' (उ. १. १०९) इति कलः। 'मुह वैचित्र्ये' (दि. प. से.)। त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. मूर्च्छा, २. कश्मलम्, ३. मोह- ये तीन क्रम से प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग, तृतीय पुल्लिङ्ग बेहोशी के नाम हैं।

अवमर्दस्तु पीडनम्॥१०९॥

कृष्णमित्रटीका :- 'मृद क्षोदे' (क्र्या. प. से.)। 'पीड अवगाहने' (चु. प. से.)। 'देशादेरुपद्रवदानस्य' द्वे॥१०९॥[5]

---

1. War - cry [2] 2. A troop of elephants assembled for martial purposes [2] 3. M. संरावोन्योन्यस्पर्धयाह्वानम् 4. Mutual defiance of warriors [2] 5. The roaring of an elephant [2] 6. The twang of a bow [1] 7. Drum [2].

1. Employing force [3] 2. Deviation from the rules of a war [2] 3. Portent [3] 4. Swooning or fainting [2] 5. Oppression, giving pain [2].

हिन्दी अर्थ :- १. अवमर्द, २. पीडनम्- ये दो नाम क्रम से प्रथम पुल्लिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग देश को शत्रु द्वारा पीड़ित करने के हैं॥१०९॥

अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनम्

कृष्णमित्रटीका :- स्कन्दिर् (भ्वा. प. अ.)। ल्युट् (३. ३. ११५)। 'षद्लृ-' (भ्वा. तु. प. अ.)। 'प्रहारादिना निःशक्तीकरणस्य' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- अभ्यवस्कन्दनम्- ये एक नपुंसकलिङ्ग नाम मार कर शक्तिहीन करने तथा रात में छापा मारने के हैं।

विजयो जयः।

कृष्णमित्रटीका :- 'जि अभिभवे' (भ्वा. प. अ.)। 'एरच्' (३. ३. ५६)। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. विजय, २. जय- ये दो पुल्लिङ्ग नाम विजय के हैं।

वैरशुद्धिः प्रतीकारो वैरनिर्यातनं च सा॥११०॥

कृष्णमित्रटीका :- वैरस्य शुद्धिः। वृञो घञ् (३. ३. १८)। वैरस्य निर्यातनम्। 'यत निकारादौ' (चुरादिः)। 'वैरशोधनस्य' त्रीणि॥११०॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. वैरशुद्धि, २. प्रतीकार, ३. वैरनिर्यातनम्- ये ३ नाम क्रम से प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग, तृतीय नपुंसकलिङ्ग दुश्मनी को दूर करने (प्रतिशोध) के हैं॥११०॥

प्रद्रावोद्द्रावसंद्रावाविद्रावो[4] विद्रवो द्रवः।
अपक्रमोऽपयानं च

कृष्णमित्रटीका :- प्रद्रवणम्। 'द्रु गतौ' (भ्वा. प. अ.)। घञ् (३. ३. २७)। संदवनम्। 'दुगतौ' (भ्वा. प. अ.)। 'ऋदोरप्' (३. ३. ५७), विद्रवः। क्रमेर्घञ् (३. ३. १८)। यातेर्ल्युट् (३. ३. ११५)। 'पलायनस्य' अष्टौ॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रद्राव, २. उद्द्राव, ३. संद्राव, ४. संदाव, ५. विद्रव, ६. द्रव, ७. अपक्रम, ८. अपयातम्- ये आठ नाम क्रम से प्रथम से सात पुल्लिङ्ग, आठवाँ नपुंसकलिङ्ग भागने के हैं।

रणे भङ्गः पराजयः॥१११॥

कृष्णमित्रटीका :- भञ्जनम्। 'भञ्जो आमर्दने' (रु. प. से.)। द्वे॥१११॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. भङ्ग, २. पराजय- ये दो पुल्लिङ्ग नाम पराजय के हैं॥१११॥

पराजितपराभूतौ

कृष्णमित्रटीका :- पराजीयते स्म। 'प्राप्ताभिभवस्य' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. पराजित, २. पराभूत- ये दो त्रिलिङ्ग नाम युद्ध में पराजितों (हारे हुए) के हैं।

त्रिषु नष्टतिरोहितौ।

कृष्णमित्रटीका :- 'त्रिषु' इत्युभयान्वयि। तिरो धीयते स्म। 'दधातेर्हिः' (७. ४. ४२)। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. नष्ट, २. तिरोहित- ये दो त्रिलिङ्ग नाम युद्ध से भागकर छिपे हुए के हैं।

प्रमापणं निवर्हणं निकारणं विशारणम्॥११२॥
प्रवासनं परासनं निषूदनं निहिंसनम्।
निर्यासनं संज्ञपनं निर्ग्रन्थनमपासनम्॥११३॥
निस्तर्हणं निहननं क्षणनं परिवर्जनम्।
निर्वापणं विशसनं मारणं प्रतिघातनम्॥११४॥
उद्वासनप्रमथनमक्रथनोज्जासनानि च।
आलम्भपिञ्जविशरघातोन्माथ वधा अपि॥११५॥

कृष्णमित्रटीका :- 'मीञ् हिंसायाम्' (क्र्या. प. अ.)। स्वार्थे णिच्। 'वर्ह हिंसायाम्' (चु. प. से.)। 'कृ हिंसायाम्' (चुरादिः)। 'शॄ हिंसायाम्' (क्र्या. प. से.)॥११२॥ 'वस च्छेदे' (चुरादिः)। 'असु क्षेपे' (दि. प. से.)। 'ज्ञाप मिच्च' (चु. प. से.)। 'ग्रथिकौटिल्ये' (भ्वा. आ. से.)॥११३॥ 'स्तृञ् हिंसायाम्' (?)। 'क्षणु हिंसायाम्' (त. उ. से.) 'डुवप्-' (भ्वा. उ. अ.)। 'शसु हिंसायाम्' (भ्वा. प. से.)॥११४॥ 'मथे[4] हिंसायाम्' (भ्वा. प. से.)। 'क्रथ हिंसायाम्' (भवा. प. से.)। 'जसु हिंसायाम्' (दि. प. से.)। लभेर्घञ् (३. ३. १८)। 'उपसर्गात्खलघञोः' (७. १. ६७) इति नुम्। 'पिजि हिंसायाम्' (चुरादिः)। अच् (३. ३. ५६)। 'हनो वधश्च[5]' (३. ३. ७६) इत्यप्। त्रिंशत्॥११५॥[6]

---

1. Attacking so as to disable an enemy [2] 2. Victory [2] 3. Revenge [2] 4. B. and K. read as follow : प्रद्रावोद्द्रावसंद्रावसंदावा 5. Running away [8].

1. Defeat (in war) [2] 2. One defeated in war [2] 3. A person disappeared from a battle [2] 4. M. मथ 5. M. हनो यद्वधश्च 6. Killing [30].

हिन्दी अर्थ :- १. प्रमापणम्, २. निवर्हणम्, ३. निकारणम्, ४. विशारणम् ॥११२॥, ५. प्रवासनम्, ६. परासनम् , ७. निषूदनम्, ८. निर्हिंसनम्, ९. निर्वासनम्, १०. संापनम, ११. निर्ग्रन्थनम्, १२. अपासनम्॥११३॥, १३. निस्तर्हणम्, १४. निहननम्, १५. क्षणम्, १६. परिवर्जनम्, १७. निर्वापणम्, १८. विशसनम्, १९. मारणम्, २०. प्रतिघातनम्।११४॥, २१. उद्वासनम्, २२. प्रमथनम्, २३. क्रथनम्, २४. उज्जासनम्, २५. आलम्भ, २६. पिञ्ज, २७. विशर, २८. घात, २९. उन्माथ, ३०. वध- ये क्रम से चौबीस नपुंसकलिङ्ग, छः पुल्लिङ्ग तीस नाम मारने के हैं॥११५॥

स्यात्पञ्चता कालधर्मो दिष्टान्तः प्रलयोऽत्ययः।
अन्तो नाशो द्वयोर्मृत्युर्मरणं निधनोऽस्त्रियाम्॥११६॥

कृष्णमित्रटीका :- पञ्चानां भावः। 'लीङ् श्लेषणे' (दि. आ. अ.)। 'एरच्' (३. ३. ५६)। 'अति बन्धने' (भ्वा. प. से.)। घञ् (३. ३. १८)। 'भुजिमृङ्भ्यां युकयुकत्युकौ' (उ. ३. २१)। 'कृपॄ-' (उ. २. ८१) इति धाञः क्युः॥११६॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. पञ्चता, २. कालधर्म, ३. दिष्टान्त, ४. प्रलय, ५. अत्यय, ६. अन्त, ७. नाश, ८. मृत्यु, ९. मरणम्, १०. निधन- ये दस नाम क्रम से प्रथम स्त्रीलिङ्ग द्वितीय से सप्तम पुल्लिङ्ग, अष्टम पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग, नवम नपुंसकलिङ्ग, दसवाँ पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग मृत्यु के हैं॥११६॥

परासुप्राप्तपञ्चत्वपरेतप्रेतसंस्थिताः।
मृतप्रमीतौ त्रिष्वेते

कृष्णमित्रटीका :- परागता असवोऽस्मात्[2]। परं लोकमितः। प्रकर्षेण इतः। सप्त॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. परासु, २. प्राप्तपञ्चत्व, ३. परेत, ४. प्रेत, ५. संस्थित, ६. मृत, ७. प्रमीत- ये सात नाम मृत व्यक्ति के हैं।

चिता चित्या चितिः स्त्रियाम्॥११७॥

कृष्णमित्रटीका :- 'चिञ् चयने' (स्वादिः)। क्तः (३. २. १०२) 'चित्याग्निचित्ये च' (३. १. १३२) इति क्यप्॥११७॥[4]

1. **Death** [10] 2. M. असवोस्मात् 3. **A dead man** [7] 4. **Pyre** [3].

हिन्दी अर्थ :- १. चिता, २. चित्या, ३. चिति- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम चिता के हैं॥११७॥

कबन्धोऽस्त्री क्रियायुक्तमपमूर्धकलेवरम्।

कृष्णमित्रटीका :- कं बध्यतेऽस्मात्[1]। एकम्॥[2]

हिन्दी अर्थ :- कबन्ध- यह एक पुल्लिङ्ग नाम बिना शिर के शरीर का है।।

श्मशानं स्यात्पितृवण (न) म्

कृष्णमित्रटीका :- शवाः शेरतेऽत्र[3]। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। पितॄणां वनम्। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. श्मशानम्, २. पितृवनम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम श्मशान के हैं।

कुणपः शवमस्त्रियाम्॥११८॥

कृष्णमित्रटीका :- 'क्वणेः संप्रसारणं च' (उ. ३. १४३) इति कपन्। शवति। 'शव गतौ' (भ्वा. प. से.) द्वे॥११८॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. कुणप, २. शवम्- ये दो नाम लाश (मृतशरीर) के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग हैं॥११८॥

प्रग्रहोपग्रहौ वन्द्याम्

कृष्णमित्रटीका :- प्रगृह्यते। 'ग्रहवृ-' (३. ३. ५८) इत्यप्। वन्द्यते वन्दी। इन् (उ. ४. ११७)। ङीष् (ग. ४. १. ४५)। त्रीणि॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रगह, २. उपग्रह, ३. वन्दी- ये तीन नाम क्रम से प्रथम और द्वितीय पुल्लिङ्ग तृतीय स्त्रीलिङ्ग कैदी के हैं। दीक्षित ने कारागार अर्थ कहा है।

कारा स्याद्बन्धनालये।

कृष्णमित्रटीका :- कीर्यतेऽत्र[7]। भिदादिपाठात् (३. ३. १०४) अङ्दीघौ। द्वे॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. कारा, २. बन्धनालय- ये दो नाम कारागार के हैं। इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग द्वितीय पुल्लिङ्ग है।

1. M. बध्यतेस्मत् 2. **A headless trunk** (especially breathing one) [1] 3. M. शेरतेत्र 4. **Cemetary, burial or burning ground** [2] 5. **A dead body** [2] 6. **Prisoner** [3] 7. M. कीर्यतेत्र 8. **Prison** [2].

पुंसि भूम्न्यसवः प्राणाश्चैवम्

कृष्णमित्रटीका :- अस्यन्ते, असवः 'स्वृस्निहि' (उ. १. १०) इत्युः। प्राणन्त्यनेन। 'अन प्राणने' (अ. प. से.)। घञ् (३. ३. १११)। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. असव, २. प्राणा- ये दो पुल्लिङ्ग नित्य ब. व. नाम प्राण के हैं।

जीवोऽसुधारणम् ॥११९॥

कृष्णमित्रटीका :- जीवनं जीवः। असूनां धारणम्। 'जीवनस्य' द्वे॥११९॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. जीव, २. असुधारणम्- ये दो नाम प्राण धारण करने के है। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग द्वितीय नपुंसकलिङ्ग हैं॥११९॥

आयुर्जीवितकालः

कृष्णमित्रटीका :- एति। 'एतेर्णिच्च' (उ. २. ११८) इत्युसिः। जीवितस्य कालः। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. आयु, २. जीवितकाल- ये दो नाम (प्रथम नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग) आयु के हैं।

ना जीवातुर्जीवनौषधम्।

इति क्षत्रियवर्ग॥८॥

कृष्णमित्रटीका :- जीवत्यनेन। 'जीवे रातुः' (उ. १. ७९)। 'मृतसंजीवनौषधस्य' द्वे॥[4]

इति क्षत्रियवर्गः॥८॥

हिन्दी अर्थ :- १. जीवातु, २. जीवनौषधम्- ये दो नाम जिलाने वाली दवा के है। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग हैं॥

इति क्षत्रियवर्गविवरणम्॥

अथ वैश्यवर्गः॥९॥

उरव्या उरुजा अर्या वैश्या भूमिस्पृशो विशः।

कृष्णमित्रटीका :- ब्रह्मण उरोर्जाताः। 'शरीरायवात्-' (४. ३. ५५) यत्। 'ऋ गतौ' (भ्वा. प. अ.)। 'अर्यः स्वामिवैश्ययोः' (३. १. १०३)। 'विश प्रवेशने' (तु. प. अ.)। भूमिं स्पृशन्ति। षट्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. उरव्य, २. ऊरुज, ३. अर्य, ४. वैश्य, ५. भूमिस्पृक्, ६. विट्- ये छः पुल्लिङ्ग नाम वैश्य के हैं।

1. Breath [2] 2. Life [2] 3. Age or duration of life [2] 4. Medicine for restoring life [2] 5. Vais'ya [6].

आजीवो जीविका वार्ता वृत्तिर्वर्तनजीवने॥१॥

कृष्णमित्रटीका :- आजीव्यतेऽनेन।[1] वर्ततेऽनया[2]। वार्ता। 'वृत्तेश्च' (वा. ५. २. १०१) इति णः। 'जीवनवृत्तेः'॥१॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. आजीव, २. जीविकाकन् च), ३. वार्ता, ४. वृत्ति (वर्ततेऽनया इति क्तिन्), ५. वर्तनम्, ६. जीवनम्- ये छः नाम जीविका (जीवनोपाय) के हैं, इनमें एक पुल्लिङ्ग, दो से चार स्त्रीलिङ्ग, पाँच और छः नपुंसकलिङ्ग हैं॥१॥

स्त्रियां कृषिः पाशुपाल्यं वाणिज्यं चेतिवृत्तयः।

कृष्णमित्रटीका :- कर्षणम्। 'इक्कृष्यादिभ्यः' (वा. ३. ३. १०८) पशून् पालयन्ति। तेषां भावः। वणिजां कर्म। एते प्रत्येकं जीवनोपायाः॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. कृषि, २. पाशुपाल्यम्, ३. वाणिज्यम्- ये तीन नाम पृथक्-पृथक् जीवनोपाय के हैं, इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय और तृतीय नपुंसकलिङ्ग हैं।

सेवा श्ववृत्तिः

कृष्णमित्रटीका :- 'षेवृ-' (भ्वा. आ. से.)। 'गुरोश्च-' (३. ३. १०३) इत्यः। शुन इव वृत्तिः। 'सेवायाः' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. सेवा, २. श्ववृत्ति- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम सेवा के हैं।

अनृतं कृषिः

कृष्णमित्रटीका :- हिंसादोषप्रधानत्वादनृतं कृषिः। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. अनृतम्, २. कृषि- ये दो नाम खेती के हैं, इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय स्त्रीलिङ्ग हैं।

उञ्छशिलं त्वृतम्॥२॥

कृष्णमित्रटीका :- 'उञ्छि उञ्छे' (तु. प. से.) घञ् (३. ३. १८)। 'शिल उञ्छे' (तु. प. से.)। कः (वा. ३. ३. ५८)। त्रीणि॥२॥[7]

1. M. आजीव्यतेनेन 2. M. वर्ततेनया 3. **Profession or livelihood [6]** 4. **Three means of maintenance (i) agriculture (ii) rearing of animals and (iii) trade** 5. **Service [2]** 6. **Agriculture [2]** 7. **Livelihood by picking or gleaning grains in a field [2].**

हिन्दी अर्थ :- १. उञ्छ, २. शिलम्, ३. ऋतम्- ये तीन नाम किसान के खेत व खलिहान से अन्न ले ज़ाने के बाद एक-एक दाना अन्न बीनने के हैं, जिनमें प्रथम पुल्लिङ्ग द्वितीय, तृतीय नपुंसकलिङ्ग हैं॥२॥

द्वे याचितायाचितयोर्यथासंख्यं मृतामृते।

कृष्णमित्रटीका :- याचितं मृतमयाचितम-मृतम्। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१. मृतम्, २. अमृतम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम क्रम से माँगे और बिना माँगे मिली वस्तु के हैं।

सत्यानृतं वणिग्भावः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- सत्यसहितमनृतम्। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. सत्यानृतम्, २. वाणिग्भाव - ये दो नाम व्यापार के है। इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग हैं।

ऋणं पर्युदञ्चनम्॥३॥

उद्धारः

कृष्णमित्रटीका :- 'ऋ गतौ' (भ्वा. प. अ.)। क्तः (३. २. १०२) 'ऋणमाघर्मण्ये' (८. २. ६०) इति णः। परित उदञ्च्यते। अञ्चेः (भ्वा. प. से.) ल्युट् (३. ३. ११३)॥३॥ घृञः (भ्वा. उ. अ.) घञ् (३. ३. १९)। त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. ऋणम्, २. पर्युदञ्चनम्॥३॥ ३. उद्धार- ये तीन नाम कर्ज के हैं, इनमें प्रथम-द्वितीय नपुंसकलिङ्ग, तृतीय पुल्लिङ्ग हैं।

अर्थप्रयोगस्तु कुसीदं वृद्धिजीविका।

कृष्णमित्रटीका :- अर्थस्य प्रयोगः। 'कुस संश्लेषणे' (दि. प. से.)। 'कुसेरुम्भो मेदेताः' (उ. ४. १०६) इतीदः। वृद्ध्याजीवनस्य त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. अर्थप्रयोग, २. कुसीदम, ३. वृद्धिजीविका- ये तीन नाम सूद (व्याज) के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग, तृतीय स्त्रीलिङ्ग हैं।

याच्ञयाप्तं याचितकम्

कृष्णमित्रटीका :- 'अपमित्यमाचिताभ्यां कक्कनौ' (४. ४. २१)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- याचितकम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम माँगने से प्राप्त पदार्थ का है।

निमयादापमित्यकम्॥४॥

कृष्णमित्रटीका :- 'मेङ् प्राणिदाने' (भ्वा. आ. अ.)। 'उदीचां माङो व्यतिहारे' (३. ४. १९) इति क्त्वा। 'मयतेरिदन्यतरस्याम्' (६. ४. ७०)। तुक् (६. १.७१)। 'अपमित्य-' प्राप्तम्। परिवर्तनेन प्राप्तमित्यर्थः॥४॥[1]

हिन्दी अर्थ :- आपमित्यकम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम बदले में मिली वस्तु का है॥४॥

उत्तमर्णाधमर्णौ द्वौ प्रयोक्तृग्राहकौ क्रमात्।

कृष्णमित्रटीका :- उत्तममृणमस्य। एकैकम्॥[2]

हिन्दी अर्थ :- उत्तमर्ण- यह एक त्रिलिङ्ग नाम कर्ज देने वाले का है। अधमर्णः, यह एक त्रिलिङ्ग नाम कर्ज लेने का है।

कुसीदिको वार्धुषिका वृद्ध्याजीवश्च वार्धुषिः॥५॥

कृष्णमित्रटीका :- कुसीदार्थं[3] प्रयच्छति। 'कुसीददशैक-' (४. ४. ३१) इति ष्ठन्। वृद्धिं वृद्ध्यर्थं प्रयच्छति। 'प्रयच्छति गर्ह्यम्' (४. ४. ३०) इति ठक्। 'वृद्धेर्वृधुषिभावः-' (वा. ४. ४. ३०)। वृद्धिः जीविकाऽ-स्य[4]। वार्धुषिः पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। चत्वारि॥५॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. कुसीदिक, २. वार्धुरिक, ३. वृद्ध्याजीव, ४. वार्धुषि- ये चार पुल्लिङ्ग नाम सूदखोर (ब्याज के लोभ से लगानी करने वाले) के हैं॥५॥

क्षेत्राजीवः कर्षकश्च कृषकश्च कृषीवलः।

कृष्णमित्रटीका :- क्षेत्रमाजीवोऽस्य[6]। कर्षति। ण्वुल् (३. १. १३३)। कृषिरस्यास्ति। 'वले' (६. ३. ११८) इति दीर्घः। चत्वारि॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. क्षेत्राजीव, २. कर्षक, ३. कृषक, ४. कृषीवल- ये चार पुल्लिङ्ग नाम किसान के हैं।

क्षेत्रं व्रैहेयशालेयं व्रीहिशाल्योद्भवोचितम्॥६॥

कृष्णमित्रटीका :- व्रीहीणां शालीनां च भवनं क्षेत्रम्। 'व्रीहिशाल्योर्ढक्' (५. २. २)॥६॥[8]

---

1. Solicited and unsolicited alms [2 each] 2. Trade [2] 3. Debt [3] 4. Usury [3] 5. A thing got by begging [2].

---

1. A thing obtained by barter [1] 2. Crditor and debtor [1 each] 3. M. कुसीदार्थ 4. M. जीविकास्य 5. Usurer [4] 6. M. क्षेत्रमाजीवोस्य 7. Farmer [4] 8. Two sorts of rice-fields [1 each].

हिन्दी अर्थ :- व्रैहेयम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम धान्यसामान्य पैदा होने योग्य खेत का है।

शालेयम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम कलमादि उत्पन्न होने योग्य खेत का है॥६॥

यव्यं यवक्यं षष्टिक्यं यवादिभवनं हि तत्।

कृष्णमित्रटीका :- यवानां यवकानां षष्टिका (नाम्। '-कष्टिका') द्यत्' (५. २. ३)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. यव्यम्, २. यवक्यम्, ३. षष्टिक्यम्- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम क्रम से एक-एक टूँडवाले जौ, बिना टूँडवाले जौ और साठी आदि अन्न के पैदा होने योग्य क्षेत्र (खेत) के हैं।

तिल्यतैलीनवन्माषोमाणुभङ्गाद् द्विरुपता॥७॥

कृष्णमित्रटीका :- तिलानां माषाणामुमानां भङ्गानां भवनं क्षेत्रम्। 'विभाषा तिल-' (५. २. ४) इति यत्खञौ। माष्यं माषीणमित्यादि॥७॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. तिल्यम्, २. तैलीनम्- ये दो त्रिलिङ्ग नाम तिल पैदा योग्य खेत का है।

१. माष्यम्, २. माषीणम्, ३. उम्यम्, ४. औमीनम्, ५. अणव्यम्, ६. अणवीनम्, ७. भङ्ग्यम्, ८. भाङ्गीनम्- ये आठ त्रिलिङ्ग उड़द, अलसी, चना, सनई, पैदा होने योग्य खेत के क्रमशः दो-दो नाम है॥७॥

मौद्गीनकौद्रवीणादि शेषधान्योद्भवक्षम्।

कृष्णमित्रटीका :- मुद्गानां कोद्रवाणां च क्षेत्रम्[3]। खञ् (५. १. १)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. मौद्गीनम् , २. कौद्रवीणम् - ये दो त्रिलिङ्ग नाम मूँग, कोदो आदि पैदा होने वाले क्षेत्र के हैं।

बीजाकृतं तूप्तकृष्टे[5]

कृष्णमित्रटीका :- बीजेन सहकृतम् 'कृञो द्वितीय-' (५. ४. ५८) इति डाच्। उप्तं च तत्कृष्टं च॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. बीजाकृतम्, २. उप्तकृष्टम्- ये दो त्रिलिङ्ग नाम बीज बोने के पश्चात् जोते हुए खेत के हैं।

1. Three kinds of barley growing fields [1 each] 2. Fields fit for growing sesamum, kidney-beans, flax & c. [1 each] 3. M. क्षेत्र 4. Fields fit for growing other species of grain [1 each] 5. Majority reads तुप्तकृष्टम् 6. A field ploughed over after sowing [2].

सीत्यं कृष्टं च हल्यवत्॥८॥

कृष्णमित्रटीका :- सीतया संमितम्। 'नौवयोधर्म-' (४. ४. ९१) इति यत्। हलेन कृष्टम्। 'मतजनहलात्-' (४. ४. ९७) इति यत्। हल्येन तुल्यम्। 'तेन तुल्यम्' (५. १. ११५) इति वतिः। त्रीणि॥८॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. सीत्यम्, २. कृष्टम्, ३. हल्यवत्- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम जोते हुए खेत के हैं॥८॥

त्रिगुणाकृतं तृतीयाकृतं त्रिहल्यं त्रिसीत्यमपि तस्मिन्।

कृष्णमित्रटीका :- त्रिगुणं कृतम्। 'संख्यायाश्च' (५. ४. ५९) इति डाच्। तृतीयं कृतं (तृतीया-) कृतम्। 'कृञो द्वितीय-' (५. ४. ४८) इति डाच्। त्रिवारं सीतया संमितम्। चत्वारि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. त्रिगुणाकृतम्, २. तृतीया-कृतम्, ३. त्रिहल्यम्, ४. त्रिसीत्यम्- ये चार त्रिलिङ्ग नाम तीन बार जोते हुए खेत के हैं।

द्विगुणाकृते तु सत्सर्वं[3] पूर्वं शम्वाकृतमपीह॥९॥

कृष्णमित्रटीका :- द्वितीयाकृतम्। द्विहल्यम्। द्विसीत्यम्। 'शंभ्याम्-' (५. २. १३८) इति वः। 'शम्ब' शब्दो द्वितीयकर्षणे वर्तते। 'कृञो द्वितीय-' (५. ४. ५८) इति डाच्। पञ्च॥९॥[4]

हिन्दी अर्थ : १. द्विगुणाकृतम्, २. द्वितीया-कृतम्, ३. द्विहल्यम्, ४. द्विसीत्यम्, ५. शम्वाकृतम्- ये पांच त्रिलिङ्ग नाम दो बार जोते हुए खेत का हैं॥९॥

द्रोणाढकादिवापादौ द्रौणिकाढकिकादयः।

कृष्णमित्रटीका :- द्रोणस्य वापः। 'तस्य वापः' (५. १. ४५) इति ठञ्। 'द्रोणादिपरिमितव्रीह्यादिवपनयोग्यं क्षेत्रम्'॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. द्रौणिक, २. आढकिक- ये दो त्रिलिङ्ग नाम क्रमशः एक द्रोण व एक आढक बोने योग्य खेत खेत के हैं। आदि पद से 'प्रास्थिकः, कौडविकः' का संग्रह है।

खारीवापस्तु खारीक उत्तमर्णादयस्त्रिषु॥१०॥

1. A ploughed field [3] 2. A field ploughed thrice [4] 3. Majority reads सर्वं 4. A field ploughed twice [5] 5. Fields in which one drona and one adhaka of grains can be sown [1 each].

कृष्णमित्रटीका :- 'खार्या ईकन्' (५. १. १३३)॥१०॥[1]

हिन्दी अर्थ :- खारीक- यह एक त्रिलिङ्ग नाम एक खारी बोने योग्य खेत का है। उत्तमर्ण शब्द से लेकर खारीकान्त शब्द त्रिलिङ्ग हैं अर्थात् वाच्यलिंग होते हैं॥१०॥

पुंनपुंसकयोर्वप्रः केदारः क्षेत्रम्

कृष्णमित्रटीका :- उप्यतेऽत्र[2]। 'वृधिवपिभ्यां रन्' (उ. २. २७)। के जले दारोऽस्य[3]। क्षीयते क्षेत्रम्। 'क्षि निवासगत्योः' (तु. प. अ.)। ष्ट्रन् (उ. ४. १५८)। त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. वप्र, २. केदार, ३. क्षेत्रम्- ये तीन नाम खेत, क्यारी के हैं, इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग, तृतीय नपुंसकलिङ्ग हैं।

अस्य तु।

केदारकं स्यात्कैदार्यं क्षेत्रं कैदारिकं गणे॥११॥

कृष्णमित्रटीका :- केदाराणां समूहः। 'केदाराद्यञ्च' (४. २. ४०), चाद्वुञ्। क्षेत्राणां समूहः। तस्य समूहः (४. २. ३७) इत्यण्। चत्वारि॥११॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१. कैदारकम्, २. कैदार्यम्, ३. क्षेत्रम, ४. कैदारिकम्- ये चार नपुंसकलिङ्ग नाम खेतों के समूह के हैं॥११॥

लोष्टानि लेष्टवः पुंसि

कृष्णमित्रटीका :- लोष्टति। 'लोष्ट संघाते' (भ्वा. अ. से.) अच् (३. १. १३४)। लिशति। 'लिश गतौ' (तु. प. से.)। बाहुलकात्तुन्। द्वे 'ढेला' लोके॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. लोष्टन्, २. लेष्टु- ये दो नाम ढेला के हैं। इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग पुल्लिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग मात्र हैं।

कोटिशो लोष्टभेदनः।

कृष्णमित्रटीका :- कोटिना अग्रेण श्यति। लोष्टानां भेदनः। 'हेंगा' लोके॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. कोटिश, २. लोष्टभेदनः- ये दो पुल्लिङ्ग नाम ढेलों को फोड़ने वाली मुंगरी या हेंगा के हैं।

प्राजनं तोदनं तोत्रम्

कृष्णमित्रटीका :- प्रकर्षेणाजत्यनेन। तुदत्यनेन। 'दाम्नी-' (३. २. १८२) इति ष्ट्रन्। तोत्र् वृषभादिप्रेरदण्डः। 'पयना' लोके॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. प्राजनम्, २. तोदनम्, ३. तोत्रम्- ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम चाबुक, कोड़ा, पैना आदि के हैं।

खनित्रमवदारणम्॥१२॥

कृष्णमित्रटीका :- खन्यतेऽनेन[2]। अर्तिलूधू' (३. २. १८४) इतीत्रः[3]। द्वे॥१२॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. खनित्रम्, २. अवदारणम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम कुदाल, फर्सा, रम्भा, गैंता आदि के हैं॥१२॥

दात्रं लवित्रम्

कृष्णमित्रटीका :- दात्यनेन। 'दाप् लवने' (अ. प. अ.)। 'दाम्नी-' (३. २. १८२) इति ष्ट्रन्। लूयतेऽनेन[5]। 'अर्ति-' (३. २. १८४) इति, इत्रः। द्वे। 'हसिआ' लोके॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. दात्रम्, २. लवित्रम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम हँसुवा के हैं।

आबन्धो योत्रं योक्त्रम्

कृष्णमित्रटीका :- आबध्यतेऽनेन[7]। 'यु मिश्रणे' (अ. प. से.)। 'युजिर् योगे' (रु. उ. अ.)। 'दाम्नी-' (३. २. १८२) इति ष्ट्रन्। वृषादेर्गले युगबन्धनम्। 'यु (जु) आ' लोके॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. आबन्ध, २. योत्रम्, ३. योक्त्रम्- ये तीन नाम क्रम से प्रथम पुल्लिङ्ग, द्वितीय-तृतीय नपुंसकलिङ्ग जुवा में बाँधी जाने वाली रस्सी के हैं।

अथा फलम्।

निरीषं कूटकं फालः कृषिकः

---

1. **A field in which one khari of grains can be sowed** [1] 2. M. उप्यतेत्र 3. M. दारोस्य 4. **Field** [4] 5. **A multitude of field** [4] 6. **A lump of earth** [2] 7. **Harrow or instrument** (for breaking clods) [2].

1. **Whip** [3] 2. M. खन्यतेनेन 3. M. इति इत्रः 4. **Spade** [2] 5. M. लुयतेनेन 6. **Sickle** [2] 7. M. आबध्यतेनेन 8. **The tie of the the yoke of a plough** [2].

कृष्णमित्रटीका :- फलति। 'ञिफला-' (भ्वा. प. से.)। ईषाया निर्गतम्। तालव्यः (निरीशं) अपि। कूटयति। 'कूट छेदने' (चु. उ. से.)। ह्रस्वमन्ये। फालयति। ञिफला (भ्वा. प. से.) ण्यन्तः। 'कृषिवृश्च्योः किकन्' (उ. २. ४०)। पञ्च। 'फलस्य' एके। आद्यद्वयं 'फालबन्धकाष्ठस्य' इत्यन्ये॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. फलम्, २. निरीषम्, ३. कुटकम्, ४. फाल, ५. कृषिक- ये पाँच नाम फार के हैं। इनमें प्रथम से तृतीय नपुंसकलिङ्ग शेष चतुर्थ, पञ्चम पुल्लिङ्ग हैं।

लाङ्गकं हलम्॥१३॥

गोदारणं च सीरः

कृष्णमित्रटीका :- लङ्गति। 'लगि गतौ' (भ्वा. प. से.) बाहुलकात्कलच् दीर्घश्च। हलति। 'हल विलेखने' (भ्वा. प. से.)॥१३॥ गां भूमिं दारयति। सिनोति। 'षिञ् बन्धने' (स्वा. उ. अ.)। 'शुसिमिचीनां दीर्घश्च' (उ. २. २५) इति क्रन्। चत्वारि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. लाङ्गलम्, २. हलम् ॥१३॥, ३.गोदारणम्, ४. सीर- ये चार नाम क्रम से प्रथम से तृतीय नपुंसकलिङ्ग, चतुर्थ पुल्लिङ्ग हल के हैं।

अथ शम्या स्त्री युगकीलकः।

कृष्णमित्रटीका :- शम्यतेऽनया[3]। 'शम उपशमे' (दि. प. से.)। अघ्न्यादिः (उ. ४. १११)। युगस्य कीलः द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. शम्या, २. युगकीलक- ये दो नाम क्रम से प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग जुवाठ की कील सैला के हैं।

ईषा[5] लाङ्गलदण्डः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- ईषते। 'ईष गत्यादौ' (भ्वा. आ. से.)। 'इगुपध-' (३. १. १३५) इति कः। लाङ्गलस्य दण्डः। 'हरिसि' लोके॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. ईशा, २. लाङ्गलदण्ड- ये दो नाम क्रम से प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग हरिश के हैं।

1. Ploughshare [5] 2. Plough [4] 3. M. शम्यतेनया 4. The pin of a yoke [2] 5. M. ईशा 6. The pole of a plough [2].

सीता लाङ्गलपद्धतिः॥१४॥

कृष्णमित्रटीका :- 'षिञ् बन्धने' (स्वा. उ. अ.)। क्तः (३. २. १०२) पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। लाङ्गलस्य पद्धतिः। द्वे॥१४॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. सीता, २. लाङ्गलपद्धति- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम हल के चलाने से पड़ी लकीर अर्थात् हराई (सिराउर) के हैं॥१४॥

पुंसि मेधिः खले दारु न्यस्तं यत्पशुबन्धने।

कृष्णमित्रटीका :- मेध्यन्ते पशवोऽत्र[2]। 'मेधा संगमे' (भ्वा. उ. से.) इन् (उ. ४. ११७)। एकम्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- मेधि- यह एक पुल्लिङ्ग नाम दँवरी करते समय बैलों को बाँधने के लिये खलिहान में गाड़े जाने वाले बड़े खूँटे अर्थात् मेंह का है।

आशुर्व्रीहिः पाटलः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- अश्नुते। अशू व्याप्तौ' (स्वा. आ. से.)। 'कृवापा-' (उ. १. १) इत्युण्। वर्हत्युपचयं गच्छति। इन्। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। पाटं लाति। त्रीणि 'षष्टिकादेः'॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. आशु, २. व्रीहि, ३. पाटल - ये तीन नाम साठी धानी के हैं, इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय-तृतीय पुल्लिङ्ग हैं।

सितशूकयवौ समौ॥१५॥

कृष्णमित्रटीका :- सितं शूकं यस्य[5]। यौति। अच् (३. १. १३४)। द्वे॥१५॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. सितशूक, २. यव- ये दो पुल्लिङ्ग नाम जौ के हैं।

तोक्मस्तु तत्र हरिते

कृष्णमित्रटीका :- तकति। '(त) क हसने' (भ्वा. प. से.)। बाहुलकान्म ओत्वं च। 'अपक्वयवस्य' एकम्॥[7]

हिन्दी अर्थ :- तत्र हरिते यवे - तोक्म- यह एक पुल्लिङ्ग नाम हरे (अपक्व) जौ का है।

1. Furrow [2] 2. M. पशवोत्र 3. The pillar in the midst of a threshing-floor to which oxen are bound [2] 4. Rice (ripening within sixty days & c. [3] 5. M. यस्याः 6. Barley [2] 7. Green barley [1].

कलायस्तु सतीनकः।
हरेणुखण्डिकौ चास्मिन्

कृष्णमित्रटीका :- कलमयते। 'अय गतौ' (भ्वा. आ. से.)। सति जीवे इनः प्रभुः। ततः कः। हरति। 'कृहृभ्यामेणुः' (उ. २. १)। खण्डोऽस्यास्ति[1]। ठन् (५. २. ११५)। चत्वारि। 'मटर' इति 'केराव' इति च लोके॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. कलाय, २. सतीनक, ३. हरेणु, ४. खण्डिक- ये चार पुल्लिङ्ग नाम मटर के हैं।

कोरदूषस्तु कोद्रवः॥१६॥

कृष्णमित्रटीका :- कोरं दूषयति। के जले उद्रोति। द्वे 'कोदव' लोके॥१६॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. कोरदूष, २. कोद्रव- ये दो पुल्लिङ्ग नाम कोदौ के हैं॥१६॥

मङ्गल्यको मसूरः

कृष्णमित्रटीका :- मङ्गले साधुः। यतः कन् (ज्ञापि. ५. ४. ५)। मस्यते। 'मसी परिणामे' (दि. प. से.)। 'मसेरूरन्' (उ. ५. ३) द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. मङ्गल्यक, २. मसूर- ये दो नाम मसूर के हैं।

अथ मकुष्ठकमयुष्ठकौ।

कृष्णमित्रटीका :- मङ्कति। 'मकि मण्डने' (भ्वा. आ. से.)। बाहुलकादुः। तत्र तिष्ठति। क्वुन् (उ. २. ३२)। मिनोति मयुः। 'डुमिञ्-' (स्वा. उ. अ.)। 'भृमृशी-' (उ. १. ७) इत्युः। मयुश्चासौ स्थकश्च। वनस्य मुद्गः। 'मोथी' लोके॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. मकुष्ठक, २. मयुष्ठक, ३. वनमुद्ग- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम वनमूँग या मोठ नामक अन्नविशेष के हैं।

सर्षपे तु द्वौ तन्तुभकदम्बकौ॥१७॥

कृष्णमित्रटीका :- 'सर्तेरपः षुक् च[6]' (उ. ३. १४१) इत्यप्। (तन्तु) नाभाति। कुत्सितमम्बयति। त्रीणि॥१७॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. सर्षप, २. तन्तुभ, ३. कदम्बक - ये तीन पुल्लिङ्ग नाम सरसों के हैं॥१७॥

सिद्धार्थस्त्वेष धवलः

कृष्णमित्रटीका :- सिद्धः अर्थोऽस्मात्[1]। एष सर्षपः। धवलः श्वेतः। एकमूर।[2]

हिन्दी अर्थ :- सिद्धार्थ- यह एक पुल्लिङ्ग नाम सफेद सरसों का है।

गोधूमः सुमनस्समौ।

कृष्णमित्रटीका :- गुध्यति। 'गुध परिवेष्टने' (दि. प. से.)। 'गुधेरूमः' (उ. ५. २)। सुष्ठु मनोऽस्मात्[3]। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. गोधूम, २. सुमन- ये दो पुल्लिङ्ग नाम गेहूँ के हैं।

स्याद्यावकस्तु कुल्माषः

कृष्णमित्रटीका :- (यौति[5]) यावकः। बुन्ता-त्प्रज्ञाद्यण् (५. ४. ३८)। कुत्सितो माषः। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। 'अर्धस्विन्नो यवादिः कुल्माषः'- इति स्वामी। 'शूकशून्यो यवादिः' - इति रक्षितः। 'बोड़ा' लोके॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. यावक, २. कुल्माष- ये दो पुल्लिङ्ग नाम अधसूखे जौ आदि के हैं।

चणको हरिमन्थकः॥१८॥

कृष्णमित्रटीका :- चण्यते। 'चण दाने' (भ्वा. प. से.)। क्वुन् (उ. २. ३२)। हरिभिर्मथ्यते। द्वे॥१८॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. चणक, २. हरिमन्थक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम चना के हैं॥१८॥

द्वौ तिले तिलपेजश्च तिलपिञ्जश्च निष्फले।

कृष्णमित्रटीका :- 'तिलान्निष्फलात्पिञ्जपेजौ' (वा. ४. २. ३६)। 'वन्यतिलस्य' द्वे॥[8]

हिन्दी अर्थ :-१. तिलपेज, २. तिलपिञ्ज- ये दो पुल्लिङ्ग नाम तेलरहित तिल के हैं।

क्षवः क्षुताभिजनो[9] राजिका कृष्णिकासुरी॥१९॥

कृष्णमित्रटीका :- क्षौति। अच् (३. १. १३४)। क्षुतमभिजनयति। राजयति। क्वुन् (उ. २. ३२)। कृष्णैव। असुरस्येयम्। 'रायी (ई)' लोके॥१९॥[10]

1. M. खण्डोस्यास्ति 2. **Pea** [4] 3. **Kodrava (Kodava), a kind of grain** [2] 4. **Masura, a kind of pulse** [2] 5. **A kind of kidney-bean** [3] 6. M. सर्तेः षः षः युक् च 7. **Mustard** [3].

1. M. अथोस्मात् 2. **White mustard** [1] 3. M. मनोस्मात् 4. **Wheat** [2] 5. M. यवराव (?) 6. **A kind of barley** [2] 7. **Gram** [2] 8. **Barren sesamum indicum** [2] 9. B. क्षुधाभिजननो 10. **Black mustard** [5].

हिन्दी अर्थ :- १. क्षव, २. क्षुधाभिजनन, ३. राजिका, ४. कृष्णिका, ५. आसुरी- ये पांच नाम क्रम से प्रथम और द्वितीय पुल्लिङ्ग, तृतीय से पञ्चम स्त्रीलिङ्ग राई के हैं॥१९॥

स्त्रियौ कङ्गुप्रियङ्गु द्वे

कृष्णमित्रटीका :- कं सुखं गच्छति। मितद्रवादिः (वा. ३. २. १८०)। प्रियं गच्छति। द्वे। 'काकुनि' (लोके)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. कङ्गु, २. प्रियङ्गु- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम ककुनी (काउन) के हैं।

अतसी स्यादुमा क्षुमा।

कृष्णमित्रटीका :- न तस्यति। 'तसु उपक्षये' (दि. प. से.)। उमाति। क्षौति। 'बाहुलकान्मक्'। त्रीणि। 'अरसी' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. अतसी, २. उमा, ३. क्षुमा - ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम अलसी के हैं।

मातुलानी तु भङ्गायाम्

कृष्णमित्रटीका :- मातुलस्य धतूरस्य स्त्रीव। भज्यतेऽनया। 'अकर्तरि-' (३. ३. १९) इति घञ्। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. मातुलानी, २. भङ्गा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम भाँग के हैं।

व्रीहिभेदस्त्वणुः पुमान्॥२०॥

कृष्णमित्रटीका :- अण्यते अणुः। 'धान्ये नित्' (उ. १. ९) इत्युः। 'चीना' लोके॥२०॥[4]

हिन्दी अर्थ :- व्रीहिभेदस्तु अणु- यह एक पुल्लिङ्ग नाम मडुवा का है॥२०॥

किंशारुः शस्यशूकं स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- किंचित् श्रृणाति। 'किंजरयोः श्रिणः[5]' (उ. १. ४) इत्युण। 'यवाद्यग्रस्य' द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१. किंशरु, २. शस्यशूकम्- ये दो नाम टूंड़ के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग हैं।

कणिशं शस्यमञ्जरी।

कृष्णमित्रटीका :- कणिनं स्वावयवं श्यति। द्वे। 'बालि' लोके॥[7]

1. A kind of inferior grain [2] 2. Flax [3] 3. Hemp [2] 4. A kind of grain [1] 5. M. श्विणः 6. The beard of corn [2] 7. The ear of corn [2].

हिन्दी अर्थ :- १. कणिशम्, २. शस्यमञ्जरी - ये दो नाम धान आदि के बाल (मञ्जरी) के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय स्त्रीलिङ्ग हैं।

धान्यं व्रीहिः स्तम्बकरिः

कृष्णमित्रटीका :- धाने पोषणे साधुः। स्तम्बं करोति। 'स्तम्बशकृतोरिन्' (३. २. २४)। 'धान्यस्य' त्रीणि॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. धान्यम्, २. व्रीहि, ३. स्तम्बकरि- ये तीन नाम धान्यमात्र के हैं। इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय तथा तृतीय पुल्लिङ्ग हैं।

स्तम्बो गुच्छस्तृणादिनः॥२१॥

कृष्णमित्रटीका :- तिष्ठति। 'स्थः स्तोऽम्ब' (उ. ४. ९६)। आदिना व्रीहियवादेः। 'गुङ् शब्दे' (भ्वा. आ. अ.)। क्विपि (वा. ३. ३. ९४) तुक् (६. १. ७१)। गुतं छ्यति। 'छो छेदने' (दि. प. अ.)॥२१॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. स्तम्ब, २. गुच्छ- ये दो पुल्लिङ्ग नाम तृण व्रीहियवादि के गुच्छे के हैं॥२१॥

नाडी नालं च काण्डोऽस्य

कृष्णमित्रटीका :- नालयति। नल गन्धे (भ्वा. प. से.)। गौरादिः (४. १. ४१)। काण्यते। 'ञमन्ताड्डः' (उ. १. ११४)। अस्य गुच्छस्य। त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. नाडी, २. नालम्, ३. काण्ड - ये तीन नाम धान, जौ इत्यादि के डण्ठल के हैं। इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय तथा तृतीय नपुंसकलिङ्ग हैं।

पलाशोऽस्त्री स निष्फलः।

कृष्णमित्रटीका :- पलमलति। स काण्डः: 'पयरा' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- पलाल- यह एक पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग नाम पुआल का है।

कडङ्गरो बुसं क्लीबे

कृष्णमित्रटीका :- कडति। 'कड मदे' (भ्वा. प. से.)। करडं करोति। 'मुरः' इति पाठान्तरम्। बुसति। 'वुस उत्सर्गे' (तु. प. से.)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. कडङ्गर, २. बुसम्- ये दो नाम पुआल के भूसे के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग हैं।

1. Corn [3] 2. A clump of grass & c. [1] 3. The stalk of a plant [3] 4. Straw [1] 5. Chaff [2].

धान्यत्वचि तुषः पुमान्[1] ॥२२॥

कृष्णमित्रटीका :- तुष्यति। 'तुष वैकृत्ये' (?)॥२२॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. धान्यत्वक्, २. तुष- ये दो नाम अन्न की भूसी के हैं। इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग हैं॥२२॥

शूकोऽस्त्री श्लक्ष्णतीक्ष्णाग्रे

कृष्णमित्रटीका :- श्यति। 'उलूकादयश्च' (उ. ४. ४१) इति साधुः। श्लक्ष्णं कृशं तीक्ष्णं च तदग्रं च। 'तूंड' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- शूक (शम्यति इति निपातनात् ऊकप्रत्यान्तः साधुः)- यह एक पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग नाम धान्य या तृण के चिकने व नुकीले टूँड का है।

शमी शिम्बा

कृष्णमित्रटीका :- शाम्यति। अच् (३. ३. १३४)। गौरादिः (४. १. ४१)। शिनोति। 'शिञ् निशाने' (स्वा. उ. अ.)। द्वे॥ 'छीमी' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. शमी, २. सिम्बा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम छीमी के हैं।

त्रिषूत्तरे।

कृष्णमित्रटीका :- उत्तरे, बहुलीकृता (अ. १. ६.२३) न्ताः॥

हिन्दी अर्थ :- आगे कहे हुए शब्द सभी तीनों लिङ्गों में होगें।

ऋद्धमावसितं धान्यम्

कृष्णमित्रटीका :- 'ऋधु वृद्धौ' (दि. प. से.) क्तः (३. २. १०२)। आ अवपूर्वात्स्यतेः क्तः (३. २. १०२)। 'मर्दनानन्तरमपनीततृणस्य'- इत्येके। 'बहुलीकरणयोग्यस्य धान्यराशेः' - इत्यन्ये॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. ऋद्धम्, २. आवसितम्- ये दो त्रिलिङ्ग नाम दौनी के बाद हवा में ओसाकर इकट्ठा करने योग्य धान आदि अन्न के हैं।

पूतं तु बहुलीकृतम् ॥२३॥

कृष्णमित्रटीका :- 'पूञ् पवने' (क्र्या. उ. से.)। क्तः (३. २. १०२)। बहु मानं लाति। अबहुलप्रकरणे 'राशीकृतस्य' ॥२३॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. पूतम्, २. बहुलीकृतम्- ये दो त्रिलिङ्ग नाम इकट्ठे किए हुए धान्य के हैं॥२३॥

माषादयः शमीधान्ये शूकधान्ये यवादयः।
शालयः कलमाद्या षष्टिकाद्याश्च

कृष्णमित्रटीका :- शाल्यते। शलने ण्यन्तात् 'अच् इः' (उ. ४. १३८)। षष्टिरात्रेण पच्यते॥[2]

हिन्दी अर्थ :- शमीधान्यम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम उरद आदि अन्न का है।

यव- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम टूड़ वाले जौ आदि अन्न का है।

शालि- यह एक पुल्लिङ्ग नाम अगहनी और साठी धान का है।

पुंस्यमी ॥२४॥

कृष्णमित्रटीका :- अमी माषाद्याः॥२४॥

हिन्दी अर्थ :- माष आदि शब्द पुंलिङ्ग में होते हैं॥२४॥

तृणधान्यानि नीवाराः

कृष्णमित्रटीका :- तृणानीव धान्यानि। निव्रियन्ते। 'नौ वृ धान्ये' (३. ३. ४८) इति घञ्। 'पसारी' 'तिन्नी' (इति च) लोके॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. तृणधान्यानि, २. नीवारा- ये दो नाम तीनी (पसाढ़ी), सांवा, कोदो आदि के हैं। इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय पुंल्लिङ्ग हैं। बहुवचन निर्देश से सांवा, कोदो का संग्रह है।

स्त्री गवेधुर्गवेधुका।

कृष्णमित्रटीका :- गवा जलेन एधते। मृगय्वादिः (उ १. ३७)। 'डंवर' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. गवेधु, २. गवेधुका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम ऋषियों के अन्नविशेष के हैं।

अयोऽग्रो मुसलोऽस्त्री स्यात्

---

1. **Majority reads** पुमांस्तुषः 2. **The chaff of grain** [2] 3. **Awn** [1] 4. **Pod** [2] 5. **Ripe corn** (when thrashed) [2].

1. **Ripe corn stored after thrashing** [2] 2. **Leguminous and awned grains, and varieties of rice** [1 each] 3. **Rice growing wild or without cultivation** [2] 4. **A kind of grass eaten by cattles** [2].

कृष्णमित्रटीका :- अश्सेऽग्रेस्य[1]। 'मुस खण्डने' (दि. प. से.) मुसं लाति। 'मुसलस्य' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. अयोग्र, २. मुसल- ये दो पुल्लिङ्ग नाम मुसल (मूसर) के हैं।

उदूखलमुलूखलम् ॥२५॥

कृष्णमित्रटीका :- ऊर्ध्वं च तत् खं च लाति। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। द्वे॥२५॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. उदूखलम्, २. उलूखलम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम ओखली के हैं॥२५॥

प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री

कृष्णमित्रटीका :- प्रस्फोट्यतेऽनेन[4]। 'स्फुट विकसने' (भ्वा. आ. से.)। शूर्प्यतेऽनेन[5]। 'शूर्प माने' (चु. प. से.)। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रस्फोटनम्, २. शूर्पम्- ये दो नाम सूप के हैं। इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग दोनों हैं।

चालनी तितउः पुमान्।

कृष्णमित्रटीका :- चाल्यतेऽनया[7]। तनोति। 'तनोतेर्ड उः सन्वच्च' (उ. ५. ५२)। द्वे॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. चालानी, २. तितउ-ये दो नाम चलनी के हैं। इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग हैं।

पुलिङ्गे-तितउः, तितऊ, तितवः इति भानुवद् रूपाणि। नपुंसके तितउ, तितउनी, तितऊनि इति बोध्यानि।

स्यूतप्रसेवौ

कृष्णमित्रटीका :- 'षिवु तन्तुसन्ताने' (दि. प. से.) क्तः (३. ३. १०२)। 'च्छवोः-' (६. ४. १९) इत्यूठ्। घञि प्रसेवः। 'वस्त्रशाणादिनिर्मितस्य' द्वे। 'थैली' इति लोके॥[9]

हिन्दी अर्थ :- १. स्यूत, २. प्रसेव- ये दो पुल्लिङ्ग बोरा या कपड़े के थैले के हैं।

कण्डोलपिटौ

कृष्णमित्रटीका :- कण्ड्यते। 'कडि भेदे' (चु. प. से.)। '-कटिकण्डिभ्य ओलच्' (उ. १. ६६)। 'पिट शब्दसंघातयोः' (भ्वा. प. से.)। 'इगुपध-' (३. १. १३५) इति कः। 'पिण्डः'- इति स्वामी। 'वंशादिनिर्मितभाण्डस्य' द्वे। 'डवरा' लोके॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. कण्डोल, २. पिट- ये दो पुल्लिङ्ग नाम दौरी, डाली आदि के हैं।

कटकिलिञ्जकौ ॥२६॥

कृष्णमित्रटीका :- कटति। 'कटे वर्षादौ' (भ्वा. प. से.)। अच् (३. १. १३४)। किल्यते। 'किल श्वैत्यक्रीडनयोः' (तु. प. से.)। इन्। किलेजतिः। डान्तात्कः पृषोदरादिः (६. ३. १०९) द्वे॥ 'किडिहरा' लोके॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. कट, २. किलिञ्जक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम बाँस से निर्मित झाँपी आदि के हैं। समानौ का पूर्व कटकिलिञ्जक से ही सम्बन्ध है।

समानौ रसवत्यां तु पाकस्थानमहानसे।

कृष्णमित्रटीका :- रसां महच्च तदनश्च। 'अनोश्मायः-' (५. ४. ९४) इति टच्। त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. रसवती, २. पाकस्थानम्, ३. महानसम्- ये तीन नाम क्रम से प्रथम स्त्रीलिङ्ग द्वितीय-तृतीय नपुंसकलिङ्ग रसोई घर के हैं।

पौरोगवस्तदध्यक्षः

कृष्णमित्रटीका :- पुरः पूजिता गौर्भूमिः पुरोगवी तस्या अयम्। 'महानसाधिकृतस्य' द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- पौरोगव- यह एक त्रिलिङ्ग नाम रसोई घर के मालिक के हैं।

सूपकारस्तु बल्लवः[5] ॥२७॥

आरालिका आन्धसिकाः सूदा औदानिका गुणाः।

कृष्णमित्रटीका :- शोभना आपोऽस्मिन्[6]। 'कुसुभ्यश्च' इत्यपोऽत्[7]। 'वल्ल संवरणे' (भ्वा. आ. से.)। बल्लं वाति॥२७॥ अरालं कुटिलं चरति। अन्धो

---

1. अयोग्रेस्य 2. Pestle (used for cleaning rice) [2] 3. Ulukhala, a wooden matter used for cleaning rice [2] 4. M. प्रस्फोट्यतेनेन 5. M. शूर्प्यतेनेन 6. Winnowing-basket [2] 7. M. चाल्यतेनया 8. Sieve [2] 9. Bag [2].

1. Basket [2] 2. A small basket made of green wood [2] 3. Kitchen [3] 4. The superintendent of a kitchen [1] 5. B. and K. read this half as : सूपकारास्तु बल्लवाः 6. M. आपोस्मिन् 7. M. इत्यपोत्.

भक्तं शिल्पमेषाम्। सुदति छागादीन्। ओदनं शिल्पमेषाम्। गुण्यन्ते। 'गुण निमन्त्रणे' (चु. उ. से.)। सप्त। 'आद्यद्वयं व्यञ्जनकारस्य-' इति स्वामी॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. सूपार, २. बल्लव- ये दो त्रिलिङ्ग नाम भोजन बनाने वाले के हैं॥२७॥

१. आरालिक, २. आन्धसिक, ३. सूद, ४. औदनिक, ५. गुण- ये पांच त्रिलिङ्ग नाम भी भोजन बनाने वाले के हैं।

आपूपिकः कान्दविका भक्ष्यकारः

कृष्णमित्रटीका :- अपूपाः पण्यमस्य। '-पण्यम्' (४. ४. ५१) इति ठक्। कन्दौ संस्कृतम्। कान्दवं पण्यमस्य। त्रीण॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. आपूपिक, २. कान्दविक, ३. भक्ष्यकार- ये दो त्रिलिङ्ग नाम हलवाई के हैं।

इमे त्रिषु॥२८॥

कृष्णमित्रटीका :- इमे पौरोगवादयः॥२८॥

हिन्दी अर्थ :- ये शब्द तीनों लिङ्गों में होते हैं॥२८॥

अश्मन्तमुद्धानमधिश्रयणी चुल्लिरन्तिका।

कृष्णमित्रटीका :- अश्मनोऽप्यन्तोऽत्र[3]। शकन्ध्वादिः (वा. ६. ९४)। उद् धीयतेऽत्र[4]। धाञः (जु. उ. अ.) ल्युट् (३. ३. ११७)। 'ध्मानम्'-इत्यन्ये। अधिश्रीयतेऽत्र[5]। 'श्रीञ् पाके' (क्र्या. उ. अ.)। ल्युट् (३. ३. ११७)। चुल्यतेऽत्र[6]। 'चुल्ल भावकरणे' (भ्वा. प. से.)। इन् (उ. ४. ११७)। 'कृदिकारात्-' (ग. ४. १. ४५) इति वा ङीष्। अन्त्यते। 'अति बन्धने' (भ्वा. आ. से.) ण्वुल॥ (३. ३. १०९)॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. अश्मन्तम्, २. उद्धानम्, ३. अधिश्रयणी, ४. चुल्लि, ५. अन्तिका- ये पांच नाम चूल्हे के हैं, इनमें प्रथम और द्वितीय पुल्लिङ्ग, तृतीय से पञ्चम स्त्रीलिङ्ग हैं।

अङ्गारधानिकाङ्गारशकट्यपि हसन्त्यपि॥२९॥

हसन्यपि

1. **Cook** [7] 2. **Baker or Confectioner** [3] 3. M. अश्मनोप्यन्तोत्र 4. M. उद्धीयतेत्र 5. M. अधिश्रीयतेत्र 6. M. चुल्यतेत्र 7. **Fire-place** [5].

कृष्णमित्रटीका :- अङ्गारा धीयन्तेऽस्याम्[1]। अङ्गाराणां शकटिः। हसति। शतृ (३. २. १२४)॥२९॥ चत्वारि 'बोरसी' 'अगेठी' (इति च) लोके॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. अङ्गारधानिका, २. अङ्गारशकटी, ३. हसन्ती, ४. हसनी- ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम बोरसी के हैं॥२९॥

अथ न स्त्री स्यादङ्गारः

कृष्णमित्रटीका :- अङ्गमाराति। एकम्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- अङ्गार- यह एक पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग नाम अङ्गार के हैं।

अलातमुल्मुकम्।

कृष्णमित्रटीका :- 'ला दाने' (अ. प. अ.)। क्तः (३. ३. १३४)। न लातमस्य। 'उष दाहे' (भ्वा. प. से.)। 'उल्मुकदर्वि-' (उ. ३. ८४) इति साधुः। 'अर्धदग्धकाष्ठस्य' द्वे। 'लुआठ' लोके॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. अलातम्, २. उल्मुकम्- ये दो नाम आधे जले हुए काष्ठ के हैं। उल्मुकं=ज्वलदङ्गारम्।

क्लीबेऽम्बरीषं भ्राष्टः

कृष्णमित्रटीका :- अम्ब्यतेऽत्र[5]। 'अवि शब्दे' (भ्वा. आ. से.)। 'अम्बरीषः' (उ. ४. २९) इति साधु। भृज्यतेऽत्र[6]। 'भ्रस्जिगमिनमि-' (उ. ४. १५९) इति ष्ट्रनवृद्धी। 'भर्जनपात्रस्य' द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. अम्बरीषम्, २. भ्राष्ट्र- ये दो नाम चना आदि भूँजने के बर्तन या भाड़ (भरसाइ) के हैं। इनमें प्रथम नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग हैं।

ना कन्दुर्वा स्वेदनी स्त्रियाम्॥३०॥

कृष्णमित्रटीका :- 'स्कन्देः[8] सलोपश्च' (उ. १. १४) इति कुः। स्विद्यतेऽस्याम्[9]। 'कराही' इति लोके॥३०॥[10]

हिन्दी अर्थ :- १. कन्दु, २. स्वेदिनी- ये दो नाम मदिरा बनाने की कराही या भट्ठी के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग द्वितीय स्त्रीलिङ्ग हैं॥३०॥

1. M. धीयन्तेस्याम् 2. **A portable fire-place** [4] 3. **Charcoal** [1] 4. **Half-burnt wood** [2] 5. M. अम्ब्यतेत्र 6. M. भृज्यतेत्र 7. **Frying-pan** [2] 8. M. स्कन्दे 9. M. स्विद्यतेस्याम् 10. **Boiler; pan** [2].

अलिञ्जरः स्यान्मणिकः

कृष्णमित्रटीका :- अलनमलिः। अलिं जरयति। मणिरिव। द्वे 'मट' लोके॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. अलिञ्जर, २. मणिक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम कूँडा, भाँड (महाकुम्भ) के हैं।

कर्कर्यालूर्गलन्तिका।

कृष्णमित्रटीका :- कर्कं राति कर्करी। गौरादिः (४. १. ४१)। आ लूनाति। 'गल अदने' (भ्वा. प. से.) शत्रन्तात्कन्। 'कठवत' लोके। कन्दोर्घृतपक्वनिष्काशन-साधनस्य' इत्यन्ये॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. कर्करी, २. आलु, ३. गलन्तिका- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम गुडुवा, हथहर, झंझरा के हैं।

पिठरः स्थाल्युखा कुण्डम्

कृष्णमित्रटीका :- 'पिठ बन्धे' (भ्वा. प. से.)। पिठं राति। स्थलन्त्यत्र। स्थल स्थाने (भ्वा. प. से.)। ज्वालादि णः (३. १. ४०)। ओखति। 'उख गतौ' (भ्वा. प. से.)। कः (३. १. १३५)। कुण्डयति। 'ओदनापि-पाकपात्रस्य' चत्वारि। 'हंडि' लोके॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. पिठर, २. स्थाली, ३. उखा, ४. कुण्डम्- ये चार नाम तसला, बटलोई, बटुवा के हैं। इनमें प्रथम पुल्लिङ्ग, द्वितीय और तृतीय स्त्रीलिङ्ग, चतुर्थ नपुंसकलिङ्ग हैं।

कलसस्तु त्रिषु द्वयोः॥३१॥

घटः कुटनिपौ

कृष्णमित्रटीका :- के लसति॥३१॥ घटते। 'कुट कौटिल्ये' (तु. प. से.)। नियतं पिबन्त्यनेन। 'घञर्थे कः' (वा. ३. ३. ५८)। चत्वारि 'घटस्य'॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. कलस ॥३१॥, २. घट, ३. कुट, ४. निप- ये चार नाम घड़े के हैं। इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग, तृतीय और चतुर्थ नपुंसकलिङ्ग हैं।

अस्त्री शरावो वर्धमानकः।

कृष्णमित्रटीका :- शरादवति। वर्धते। शानच् (३. २. १२४)। द्वे। 'कोशा' लोके।[5]

हिन्दी अर्थ :- १. शराव, २.वर्धमानकः- ये दो नाम क्रम से प्रथम पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग ढकना, कसोरा के हैं।

ऋजीषं पिष्टचनम्

कृष्णमित्रटीका :- 'अर्ज अर्जने' (भ्वा. प. से.)। अजेर्ऋज वा (उ. ४. २८) इतीषन्। पिष्टं पच्यतेऽत्र[1]। 'ताबा' लोके॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. ऋजीषम्, २. पिष्टचनम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम तावा के हैं।

कंसोऽस्त्री पानभाजनम्॥३२॥

कृष्णमित्रटीका :- कम्यते। 'वृतृवदि-' (उ. ३. ६२) इति सः। क्षीरादिपानस्य भाजनम्। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. कंस (कम्यते इति सः), २. पानभाजनम् (पीयते इति ल्युट्, क्षीरादिपानस्य भाजनम्)- ये दो नाम क्रम से प्रथम पुल्लिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग गिलास के हैं॥३२॥

कुतूः कृत्तेः सनेहपात्रम्

कृष्णमित्रटीका :- कुत्सितं तौति। 'तु शब्दे' (अ. प. अ.)। कृत्तेश्चर्मणम्। स्नेहस्य तैलघृतादेपत्रिम्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. कुतू, २. कृत्तेश्चर्मणः- स्नेहपात्रम्- ये दो नाम क्रम से प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग नाम तैल रखने के लिए चमड़े के बने हुए बड़े बर्तन (कुप्पा) के हैं।

सैवाल्या कुतुपः पुमान्।

कृष्णमित्रटीका :- 'कुत्वा डुपच्' (५. ३. ८१)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- कुतुप- यह एक पुल्लिङ्ग नाम चमड़े के बने हुए छोटे तैल पात्र के हैं।

सर्वमावपनं भाण्डं पात्रामत्र च भाजनम्॥३३॥

कृष्णमित्रटीका :- आ उप्यतेऽत्र[6]। डुवप् (भ्वा. उ. अ.)। 'भडि कल्याणे' (चुरादिः) आन्तादण्। पिबन्त्यनेन। ष्ट्रन् (उ. ४. १५८)। अमन्तेऽत्रा पयते। भाजयति। भाज पृथक्कर्मणि[7] (चु. उ. से.)। सर्वं[8] स्फातादि पिठरादि च॥३३॥[9]

---

1. Water-jar [2] 2. Small pitcher [2] 3. Bliler [4] 4. Water-pot [4] 5. Platter or dish [2].

1. M. पच्यतेत्र 2. Pan (for parching flour) [2] 3. A drinking vessel such as glass, cup & c. [2] 4. A lethern bottle for oil [2] 5. A small lethern bottle for oil [1] 6. M. उप्यतेत्र 7. M. पृथक्कमणि 8. M. सर्वं 9. Any vssel or utensil [5].

हिन्दी अर्थ :- १. आवपनम्, २. भाण्डम्, ३. पात्रम्, ४. अमत्रम्, ५. भोजनम्- ये पांच नपुंसकलिङ्ग नाम बर्तन के हैं।।३३।।

दर्विः कम्बिः खजाका च

कृष्णमित्रटीका :- दृणाति। 'वृदृभ्यां[1] विन्' (उ. ४.५३)। ङीषि दर्वी च। कम्पते बाहुलकाद्विन्। 'खज मन्थे' (भ्वा. प. से.)। 'खजेराकः' (उ. ३. १३)। त्रीणि 'करछुलि' लोके।।[2]

हिन्दी अर्थ :- १. दर्वि, २. कम्बि, ३. खजाका- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम करछुल के हैं।

स्यात्तर्दूर्दारुहस्तकः।

कृष्णमित्रटीका :- तर्दति। 'तर्द हिंसायाम्' (भ्वा. प. से.)। बाहुलकादूः। दारुणे हस्त इव। द्वे।।[3]

हिन्दी अर्थ :- १. तर्दू, २. दारुहस्तक- ये दो नाम क्रम से प्रथम स्त्रीलिङ्ग पुल्लिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग, भात दाल परोसने में उपयोगी बर्तन के हैं।

अस्त्री शाकं हरितकं शिग्रुः

कृष्णमित्रटीका :- शक्नोत्यनेन भोक्तुम्। घञ् (३. ३. १२१)। हरितो पर्णोऽस्य[4]। शिनोति। 'शिञ् निशाने' (स्वा. उ. अ.)। 'जत्रादयश्च' (उ. ४. १०२) इति साधुः। त्रीणि।।[5]

हिन्दी अर्थ :- १. शाकम्, २. हरितकम्, ३. शिग्रुः- ये तीन नाम क्रम से प्रथम नपुंसकलिङ्ग पुल्लिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग, तृतीय पुल्लिङ्ग साग के हैं।

अस्य तु नाडिका[6]।।३४।।

कडम्बश्च कलम्बश्च

कृष्णमित्रटीका :- के लम्बते। डलयोरैक्यम्। 'शकनालस्य' द्वे।।[7]

हिन्दी अर्थ :- १. कडम्ब, २. कलम्ब- ये दो पुल्लिङ्ग नाम साग के डंठल के हैं।।३४।।

वेसवार उपस्करः।

कृष्णमित्रटीका :- वेसं प्रेरणं वारयति। उपस्क्रोति। पिप्पली शुण्डी तण्डुलादयः समांशका वेसवारः।।[8]

1. M. दविभ्याँ 2. Ladle [3] 3. A wooden ladle [2] 4. M. पर्णोस्य 5. Vegetable [3] 6. B. नालिका 7. The stalk of a vegetable [2] 8. A particular condiment for food (as mustard, pepper & c) [2].

हिन्दी अर्थ :-१. वेसवार, २. उपस्कर- ये दो पुल्लिङ्ग नाम पचफोरन या मसाला के हैं।

तिन्तिडीकं च चुक्रं च वृक्षाम्लम्

कृष्णमित्रटीका :- तिम्यति। 'तिम आर्द्रीभावे' (दि. प. से.)। 'अमी (ली) कादयश्च' (उ. ४. २५) इति साधु। 'चक तृप्तौ' (भ्वा. आ. से.)। 'चकिरम्योरुच्चोपधायः' (उ. २. १४) वृक्षस्याम्लम्। त्रीणि 'चुक' लोके। 'विषामिल' इत्यन्ये।।[1]

हिन्दी अर्थ :- १. तिन्तिडीकम्, २. चुक्रम्, ३. वृक्षाम्लम्- ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम अमचूर, चटनी के हैं।

अथ वेल्लजम्।।३५।।

मरिचं कोलकं कृष्णमूषणं धर्मपनम्।

कृष्णमित्रटीका :- 'वेल्ल चलने' (भ्वा. प. से.)। वेल्ले जायते।।३५।। म्रियते बिषमनेन। बाहुलकादि चः। दीर्घमध्यः (मरीचम्) अपि। 'कुल संस्त्याने' (भ्वा. प. से.)। वुञ्। 'कृषेर्वर्णे' (उ. ३. ४०) नक्। 'उष दाहे' (भ्वा. प. से.)। धर्मपत्तने जातत्वात्तदारीपः। षट्।।[2]

हिन्दी अर्थ :- १.वेल्लजम् ।।३५।।, २. मरीचम्, ३. कोलकम्, ४. कृष्णम्, ५. ऊषणम्, ६. धर्मपत्तनम्- ये छः नपुंसकलिङ्ग नाम काली मिर्च के हैं।

जीरको जरणोऽजाजी कणा

कृष्णमित्रटीका :- 'ज्या वयोहानौ' (क्र्या. प. अ.)। 'ज्यश्च' इति रक् जरयति। अजमजति। 'कण शब्दे' (भ्वा. प. से.) चत्वारि।।[3]

हिन्दी अर्थ :- १. जीरक, २. जरण, ३. अजाजी, ४. कणा- ये चार नाम क्रम से दो पुल्लिङ्ग, दो स्त्रीलिङ्ग सफेद जीरा के हैं।।

कृष्णे तु जीरके।।३६।।

सुषवी कारवी पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्चिका।

कृष्णमित्रटीका :- सुष्ठु सूते सुषवः। सोऽस्त्यस्याः[4]। के आरवोऽस्याः।[5] प्रथते। 'प्रथ प्रस्थाने' (चु. प. से.)। 'प्रथिम्रदिभ्रस्जां संप्रसारणम्-' (उ. १. २८)

1. Vinegar made by acetous; the fruit of the tamarind used as an acid seasoning [3] 2. Pepper [6] 3. White cumin [4] 4. M. सोस्त्यस्याः 5. M. आरवोस्याः.

इति कुः। 'वातः-' (४. ६. ४४) इति ङीष्। कालो वर्णोऽस्याः[1]। उपकुञ्चति। ण्वुल् (३. १. १३३)। 'मगरैल' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. कृष्णे जीरक, २. कारवी, ३. पृथ्वी, ४. काला, ५. उपकुञ्चिका- ये पांच स्त्रीलिङ्ग नाम काला जीरा के हैं॥३६॥

आर्द्रकं शृङ्गवेरं स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- आर्द्रायां जातम्। 'पूर्वाह्णा-पराह्णा-' (४. ३. २८) इति वुन्। शृङ्गमिव वैरं देहोऽस्य[3]। द्वे। 'आदी' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. आर्दकम्, २. शृङ्गवेर- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम अदरख के हैं।

अथ छत्त्रा वितुन्नकम्॥३७॥

कुसतुम्बुरु च धान्याकम्

कृष्णमित्रटीका :- छत्त्रमस्त्यस्याः। 'अर्श आद्यच्' (५. २. १२७)। विगतं तुन्नं दुःखमस्मात्[5]॥३७॥ कुत्सितं तुम्बति। 'तुबि अर्दने' (भ्वा. प. से.)। बाहुलकाद्रुः। धान्यमकति। 'धनिया' (लोके)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. छत्त्रा, २. वितुन्नकम् ॥३७॥, ३. कुस्तुम्बुरु, ४. धान्याकम्- ये चार नाम क्रम से प्रथम स्त्रीलिङ्ग, तृतीय नपुंसकलिङ्ग धनियाँ के हैं।

अथ शुण्ठी महौषधम्।

स्त्रीनपुंसकयोर्विश्वं नागरं विश्वभेषजम्॥३८॥

कृष्णमित्रटीका :- शुण्ठाति कफम्। 'शुठि शोषणे' (भ्वा. प. से.)। महच्च तदौषधं च। विशति। 'अशूप्रुषि-' (उ. १. १५२) इति क्वन्। नगरे भवम्। विश्वस्य भेषजम्। 'शोंठि' (लोके)॥३८॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. शुण्ठी, २. महौषधम्, ३. विश्वम्, ४. नागरम्, ५. विश्वभेषजम्- ये पांच नाम क्रम से प्रथम स्त्रीलिङ्ग द्वितीय और तृतीय नपुंसकलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग, चतुर्थ और पञ्चम नपुंसकलिङ्ग सोंठ के हैं॥३८॥

आरनालकसौवीरकुल्माषाभिषुतानि च।

अवन्तिसोमधान्याम्लाकुञ्जलानि च काञ्जिके॥३९॥

1. M. वर्णोस्याः 2. Black cumin [6] 3. M. देहोस्य 4. Ginger [2] 5. M. दूष्खमस्मात् 6. Coriander seed [4] 7. Dry ginger [5].

कृष्णमित्रटीका :- आर्च्छति। आरः। स नालोऽस्य[1]। सुवीरेषु भवम्। अभि षूञ् (स्वा. उ. अ.) क्तः (३. २. १०२)। 'त्रीण्येव नामानि'-इत्यन्ये। अवन्तिषु सूते। धान्यमभिषुतमम्लम्। कुत्सितं जलम्। पृषोदरादिः (६. २. १०९)। के अञ्जिकाऽस्याः[2]। अष्टौ 'कांजी'॥३९॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. आरनलकम्, २. सौवीरम्, ३. कुल्माषम्, ४. अभिषुतम्, ५. अवन्तिसोमम्, ६. धान्याम्लम्, ७. कुञ्जलम्, ८. काञ्जिकम्- ये आठ नाम काँजी के हैं॥३९॥

सहस्रवेधि जतुकं वाह्लीकं हिङ्गु रामठम्।

कृष्णमित्रटीका :- सहस्रं वेधितुं शीलमस्य। 'विध विधाने' (तु. प. से.)। जत्विव। वह्लीकेषु भवम्। हिमं गच्छति। मृगय्वादिः (उ. १. ३७)। 'रमेर्वृद्धिश्च' (उ. १. १०१) इत्यठः। पञ्च। 'हींग' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. सहस्रवेधि, २. जतुकम्, ३. बह्लीकेषु, ४. हिङ्गु, ५. रामठम्- ये पांच नाम हींग के हैं।

तत्पत्री कारवी पृथ्वी वाष्पिका कवरी पृथु॥४०॥

कृष्णमित्रटीका :- तस्य हिङ्गतरोः पत्री। वाष्पमिव। कवरीव। पञ्च। 'वंशवती' (लोके)॥४०॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. तत्पत्री, २. कारवी, ३. पृथ्वी- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम हींग के पेड़ के पत्ते के हैं॥४०॥

निशाह्वा काञ्चनी पीता हरिद्रा वरवर्णिनी।

कृष्णमित्रटीका :- निशा आह्वाऽस्य[6] काञ्च्यतेऽनया[7]। पीता वर्णेन। हरिं वर्णं द्राति। 'द्रा कुत्सायाम्' (अ. प. अ.)। वरो वर्णोऽस्त्यस्याः[8]। पञ्च॥[9]

हिन्दी अर्थ :- १. निशाह्वा, २. काञ्चनी, ३. पीता, ४. हरिद्रा, ५. वरवर्णिनी- ये पांच स्त्रीलिङ्ग नाम हरिद्रा के हैं।

सामुद्रं यत्तु लवणमक्षीवं वशिरं[10] च तत्॥४१॥

कृष्णमित्रटीका :- समुद्रे भवम्। लुनाति। नन्द्यादिः (३. १. १३४) 'लवणाल्लुक्' (४. ४. २४)

1. M. नालोस्य 2. M. अञ्जिकास्याः 3. Sour gruel [8] 4. Asafoetida [5] 5. The leaf of an asafoetida plant [5] 6. M. आह्वास्य 7. M. काञ्च्यतेनया 8. M. वर्णोस्त्यस्याः 9. Turmeric [5] 10. B. वसिरं.

इति निर्देशाण्णः। न क्षीवति। 'क्षीवृ मदे' (भ्वादिः)। वशिनं राति। 'पांगा' (लोके)॥४१॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१. अक्षीवम्, २. वशिरम्- ये दो नपुंसक्लिङ्ग नाम समुद्री नमक के हैं॥४१॥

सैन्धवोऽस्त्री शीतशिवं माणिमन्थं[2] च सिन्धुजे।

कृष्णमित्रटीका :- सिन्धुषु भवम्। शीतं च तच्छिवं च। मणिमन्थाख्ये पर्वते भवम्। चत्वारि। 'सेंधव' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. सामुद्रम्, २. लवणम् । ३. सैन्धव, ४. शीतशिवम्, ५. माणिमन्थम्, ६. सिन्धुजम्- ये क्रम से प्रथम पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग, तृतीय पुल्लिङ्ग, शेष छः नाम सैंधानमक या सिन्धुदेशोत्पन्न लवण के हैं।

रौमकवसुकम्

कृष्णमित्रटीका :- रुमायां भवम्। अण् (४. ३. ५३) कन्। वसु कायति। द्वे 'सांभरि' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. रौमकम्, २. वसुकम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम साँभर नमक के हैं।

पाक्यं विडं च कृतके द्वयम्॥४२॥

कृष्णमित्रटीका :- पाके साधु। विडति। 'विड भेदनी' (तु. प. से.)। द्वे। 'वि (ख) रिआ' (लोके)॥४२॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. पाक्यम्, २. विडम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम खारा या खरिया नमक के हैं॥४२॥

सौवर्चलेऽक्षरुचके

कृष्णमित्रटीका :- सुष्ठु वच्यते। वृषादित्वात् (उ. १. १०६) कलच्। प्रज्ञाद्यण् (५. ४. ३८) अक्षति। अक्षं रोचते। क्वुन् (उ. २. ३२)। त्रीणि। 'सोंचर' (लोके)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. सौवर्चलम्, २. अक्षम्, ३. रुचकम्- ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम सीचर नमक के हैं।

तिलकं तत्र मेचके।

कृष्णमित्रटीका :- मेचके कृष्णवर्णे तस्मिन्॥[7]

हिन्दी अर्थ :- तिलकम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम काला नमक का है।

1. **Seasalt** [2] 2. K. माणिबन्धं 3. **Rock-salt** [4] 4. **Sambhar salt** [2] 5. **Artificial salt** (saltpetre) [2] 6. **Sochal salt** [2] 7. **Black salt** [1].

मत्स्यण्डी फाणितं खण्डविकारे

कृष्णमित्रटीका :- मत्स्य अण्डमिव। शकन्ध्वादिः। फाण्यते। क्तः (३. २. १०२)। खण्डो विकारोऽस्य। त्रीणि[1]। 'राब' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- खण्डविकारे- १. मत्स्यण्डी, २. फाणितम्- ये दो नाम राव के हैं, इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग हैं।

शर्करा सिता॥४३॥

कृष्णमित्रटीका :- शृणाति। 'श्रः करन्' (उ. ४. ३)। सिता वर्णेन। द्वे 'चीनी' (लोके)॥४३॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१. शर्करा, २. सिता- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम मिश्री, चीनी, शक्कर के हैं। खण्डविकारः- यह एक पुल्लिङ्ग नाम भी चीनी आदि का हैं॥४३॥

कूर्चिका क्षीरविकृतिः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- कूर्चो मस्त्वादिरस्त्यस्या। दध्ना सह पयः पक्वं दधिकुर्चिका द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. कूर्चिका, २. क्षीरविकृति- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम खोवा के हैं।

रसाला तु मार्जिता।

कृष्णमित्रटीका :- रसमालाति। मार्ज्यते स्म। क्तः (३. २. १०२)। 'कर्पूरादिमिश्रिततक्रविशेषस्य' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. रसाल, २. मार्जिता- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम दही, खाँड, घी, मिर्च, सोंठ से बनाई हुई चटनी के हैं।

स्यात्तेमनं तु निष्ठानम्

कृष्णमित्रटीका :- तिम्यतेऽनेन[6] । निष्ठीयतेऽत्र[7]। तिष्ठतेर्ल्युट् (३. ३. ११७)। 'व्यञ्जनस्य' द्वे॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. तेमनम्, २. निष्ठानम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम दही, बड़ा, कढ़ी के हैं।

त्रिलिङ्गा वासितावधेः॥४४॥

कृष्णमित्रटीका :- वासितपर्यन्ताः (अ. २. ६. ४६)॥४४॥

1. M. विकारोस्य 2. **Raw sugar** [3] 3. **Sugar** [2] 4. **Inspissated milk** [2] 5. **Curd mixed with camphor, sugar and other spices** [2] 6. M. तिम्यतेनेन 7. M. निष्ठीयतेत्र 8. **Condiment** [2].

हिन्दी अर्थ :- वासितावधेः त्रिलिङ्गाः इति। यहाँ से लेकर वासित- शब्द तक सभी त्रिलिङ्ग हैं॥४४॥

शूलाकृतं भटित्रं च शूल्यम्

कृष्णमित्रटीका :- शूलेन कृतम्। 'शूलात्पाके' (५. ४. ६५) इति डाच्। 'भट भृतौ' (भ्वा. प. से.)। 'अशित्रादिभ्यः-' (उ. ४. १७२) इतीत्रः। शूलेन संस्कृतम्। 'शूलोखाद्यत्' (४. २. १७)। 'लोहशलाकया पक्वमां (स) स्य' त्रीणि॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. शूलाकृतम्, २. भटित्रम्, ३. शूल्यम्- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम लोहे के छड़ से पकाये हुए मांस के हैं।

उख्यं तु पैठरम्।

कृष्णमित्रटीका :- उखायां संस्कृतम्। पिठरे संस्कृतम्। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. उख्यम्, २. पैठरम्- ये दो त्रिलिङ्ग नाम बटलोई में पकाए हुए ओदन आदि के हैं।

प्रणीतमुपसंपन्नम्

कृष्णमित्रटीका :- णीञः (३. २. १०२)। सं पदेः (दि. आ. अ.)। क्तः (३. ४. ७२)। 'पाके संस्कृतस्य व्यञ्जनादेर्द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रणीतम्, २. उपसम्पन्नम्- ये दो त्रिलिङ्ग नाम तैयार व्यञ्जनादि के हैं।

प्रयस्तं स्यात्सुसंस्कृतम्॥४५॥

कृष्णमित्रटीका :- 'यसु'[4] प्रयत्ने' (दि. प. से.)। क्तः (३. २. १०२)। 'द्रव्यान्तरसंस्कृतस्य पक्वस्य' द्वे॥४५॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१. प्रयस्तम्, २. सुसंस्कृतम्- ये दो त्रिलिङ्ग नाम परिश्रम से निर्मित उत्तमोत्तम भोज्य पदार्थ के हैं॥४५॥

स्यात्पिच्छिलं तु विजिलम्

कृष्णमित्रटीका :- पिच्छाऽस्यास्ति[6]। 'लोमादि-' (५. २. १००) इतीलच्। वेजनं विजिः। 'ओविजी-' (तु. आ. से.) किः। विजिं लाति। 'मण्डयुक्तभक्तस्य जलयुक्तव्यञ्जनस्य च' द्वे॥[7]

1. Roasted meat [3] 2. Rice & c. boiled in a pot [2] 3. Anything cooked or dressed (such as a condiment) [2] 4. M. वसु 5. Food seasoned or dressed with condiments [2] 6. M. पिच्छास्यास्ति 7. Boiled rice with scum and sauce mixed with rice-gruel [2].

हिन्दी अर्थ :- १. पिच्छिलम्, २. विजिलम्- ये दो त्रिलिङ्ग नाम माँड़ युक्त भात व रसदार व्यञ्जन आदि के हैं।

संमृष्टं शोधितं समे।

कृष्णमित्रटीका :- मृजिशुद्ध्योः क्ते (३. २. १०२)। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. संमृष्टम्, २. शोधितम्- ये दो नाम केश, कीड़ा आदि बीन कर साफ किये हए अन्नादि के हैं।

चिक्कणं मसृणं स्निग्धम्

कृष्णमित्रटीका :- 'चिक्क गतौ' (?) चिक्क मणति। मस्यते। स्निह्यति। क्तः (३. ४.७२) त्रीणि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. चिक्कणम्, २. मसृणम्, ३. स्निग्धम्- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम चिकने पदार्थ के हैं।

तुल्ये भावितवासिते॥४६॥

कृष्णमित्रटीका :- वास्यते। 'वास उपसेवायाम्' (चु. उ. से.)। 'हिङ्ग्वादिना सुगन्धीकृतस्य व्यञ्जनादेः' द्वे॥४६॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. भावितम्, २. वासितम्-ये दो त्रिलिङ्ग नाम हींग आदि से छौंके हुए व्यञ्जन के हैं॥४६॥

आपक्वं पौलिरभ्यूष

कृष्णमित्रटीका :- ईषत्पक्वम्। पोलति पोलः। 'पुल (म) हत्वे' (भ्वा. प. से.)। पोलेन निर्वृतः। सुतङ्गमादित्वात् (४. २. ८०) इञ्। अभ्यूषति। 'ऊष रुजायाम्' (भ्वा. प. से.)। 'हरितयवादे (र्भजितस्य)' (त्रीणि)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. आपक्वम्, २. पौलि, ३. अभ्यूष-ये तीन नाम क्रम से प्रथम नपुंसकलिङ्ग द्वितीय और तृतीय पुल्लिङ्ग शब्द होरहा आदि तपाये हुए पदार्थ के हैं।

लाजाः पुंभूम्नि: चाक्षताः।[5]

पृथुकः स्याच्चिपिटकः

कृष्णमित्रटीका :- 'प्रथ प्रख्याने' (चु. उ. से.)। 'पृथुकपाकाः-' (उ. ५. ५३) इति साधु। चिपटमिव। द्वे। 'चिउरा' (लोके)॥[6]

1. Cleansed grain [2] 2. Soft meals [3] 3. Food seasoned with asfoetida and other condiments [2] 4. Grain half-dressed or scroched or fried with ghee [3] 5. Fried paddy or rice [2] 6. Rice parched and flattened [2].

हिन्दी अर्थ :- १. लाजा, २. अक्षता- ये क्रम से एक स्त्रीलिङ्ग एक पुल्लिङ्ग नाम धान के भूँजे हुए लावा के हैं। मुकुट ने 'अक्षताः' को विशेषण माना है। किन्तु दीक्षित ने 'च' कास्को भिन्नक्रम मान कर पृथक् नाम माना है। और नपुंसकलिङ्ग पुल्लिङ्ग तथा बहुवचन माना है।

१. पृथुक, २. चिपिटक- ये २ पुल्लिङ्ग नाम चिउड़ा के हैं।

धानाभृष्टयवे स्त्रियः ॥४७॥

कृष्णमित्रटीका :- भृष्टश्चासौ यवश्चः। द्वे॥४७॥[1]

हिन्दी अर्थ :- भृष्टयवे इति सम्बन्धः- धाना- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम नित्य बहुवचनान्त नाम भूजे हुए जौ अर्थात् बहुरी का है॥४७॥

पूपोऽपूपः पिष्टकः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- पवनं पूः। क्विप् (वा. ३. ३. ६४)। पुवं पाति। अपूपं पाति। पिष्टस्य विकारः। त्रीणि। 'पुआ' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. पूप, २. अपूप, ३. पिष्टक- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम मालपुआ के हैं।

करम्भो दधिसक्तवः।

कृष्णमित्रटीका :- केन जलेन रभ्यते मिश्री-क्रियते। 'रभेः-' (७. १. ६३) इति नुम्। दध्ना उपसिक्ताः सक्तवः। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. करम्भ, २. दधिसक्तव- ये दो पुल्लिङ्ग नाम दधिमिश्रित सत्तू के हैं।

भित्सा[4] स्त्री भक्तमन्धोऽन्नमोदनो स्त्री स दीदिविः॥४८॥

कृष्णमित्रटीका :- भेदनं भित्। भिदं स्याति। भजेः क्तः। 'अन्ध (दृष्ट्यु), पघाते' (चु. उ. से.)। असुन् (उ. ४. १८८)। अद्यते। क्तः (३. २. १०२)। 'उन्देर्नलोपश्च' (उ. २. ७६) इति युच्। दिवो (द्वे) दीर्घश्चाभ्यासस्य' (उ. ४. ५५) इति क्विन्। दीदिविसहतोऽस्त्रीत्यन्वयः। षट्। मण्डकः 'पोलिका पोली' 'रोटी' 'अन्या च प्राङ्गारकर्करी (दी)' 'अङ्गाकदी' ॥४८॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. भिस्सा, २. भक्तम्, ३. अन्ध, ४. अन्नम्, ५. ओदन, ६. दीदिवि- ये छः नाम क्रम से प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय से चतुर्थ नपुंसकलिङ्ग, पञ्चम पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग, छः पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग भात के हैं॥४८॥

भिस्सटा दग्धिका

कृष्णमित्रटीका :- भिस्सां टीकते। डः (वा. ३. २. १०१)। 'ङ्यापोः-' (६. ३. ६३) इति ह्रस्वः। कुत्सितं दग्धम्। 'दग्धौदनस्य' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. भिस्सटा, २. दग्धिका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम जले हुए भात के हैं।

सर्वरसाग्रे मण्डमस्त्रियाम्

कृष्णमित्रटीका :- सर्वस्य रसस्याग्रः। मण्ड्यते। द्वे। 'माण (ड़)' लोके॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. सर्वरसाग्रम्, २. मण्डम्- ये दो पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग नाम माँड़ के हैं।

मासराचामनिस्रावा मण्डे भक्तसमुद्भवे ॥४९॥

कृष्णमित्रटीका :- मा लक्ष्मीः सरत्यत्र। आ यम्यते[3]। निस्राव्यते। 'सृ गतौ' (भ्वा. प. अ.)। ण्यन्तादच् (३. ३. ५६)। त्रीणि॥४९॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. मासर, २. आचाम, ३. निस्रावः- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम भात के माँड़ के हैं॥४९॥

यवागूरुष्णिका श्राणा विलेपी तरला च सा।

कृष्णमित्रटीका :- यौति। 'यु मिश्रणे' (अ. प. से.)। 'सृयुवचिभ्यः-' इत्यागूच्। उष्णमन्नम्। ज्ञायां[5] (५. २. ७१) कन्। 'श्रा पाके' (अ. प. अ.)। क्तः (३. २. १०२)। 'संयोगादेः-' (८. २. ४३) इति नः। विलिम्पति। अच् (३. १. १३४)। गौरादिः (४. १. ४१)। तरं लाति। पञ्च। 'लपसी' (लोके)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. यवागू, २. उष्णिका, ३. श्राणा, ४. विलेपी, ५. तरला- ये पांच स्त्रीलिङ्ग नाम लपसी, हलुवा के हैं।

गव्यं त्रिषु गवां सर्वम्

कृष्णमित्रटीका :- गोरिदम्। 'गोपयसोर्यत्' (४. ३. १६०)॥[7]

---

1. Fried barley [2] 2. A small round cake of flour [3] 3. Barley-meal (saktu) mixed with coagulated milk [2] 4. Majority reads भिस्सा 5. Boiled rice [6].

1. Scorched rice [2] 2. Scum [2] 3. M. आ चाम्यते 4. Scum of boiled rice [3] 5. M. संज्ञा 6. Gruel [5] 7. Milk, curd or any other thing belonging to a cow [1].

हिन्दी अर्थ :- गव्यम्- यह एक त्रिलिङ्ग नाम दूध, दही, गोबर, घी आदि का है।

गोविड् गोमयमस्त्रियाम् ॥५०॥

कृष्णमित्रटीका :- गोविट्। गोः पुरीषे (४. ३. १४५) मयट्। ५०॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. गोविट् (गोविट्), २. गोमयम्- ये एक-एक पुल्लिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग नाम गोबर के हैं॥५०॥

तत्तु शुष्कं करीषोऽस्त्री

कृष्णमित्रटीका :- कीर्यते। 'कृतॄभ्यांमीषन्' (उ. ४. २६)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- करीष- यह एक पुल्लिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग नाम सूखे गोबर, अर्थात् उपरी, गोहरी, गोइठा आदि का है।

दुग्धं क्षीरं पयः समम्।

कृष्णमित्रटीका :- दुहेः क्तः (३. २. १०२) क्षयणम्। 'क्षीष् हिंसायाम्' (क्र्या. प. से.)। क्षियमीरयति। पीयते। 'पीङ् पाने' (दि. आ. अ.)। असुन् (उ. ४. १८८)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. दुग्धम्, २. क्षीरम्, ४. पय, ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम दूध के हैं।

पयस्यमाज्यदध्यादि

कृष्णमित्रटीका :- पयसो विकारः॥[4]

हिन्दी अर्थ :- पयस्यम्- यह एक त्रिलिङ्ग नाम दूध से बने हुए दही, खोवा मक्खन आदि का है।

द्रप्सं दधि घनेतरत् ॥५१॥

कृष्णमित्रटीका :- 'दृप हर्षादौ' (दि. प. अ.)। बाहुलकात्सः। 'अनुदात्तस्य च-' (६. १. ५९) इत्यम्। घनात्कठिनादन्यत्॥५१॥[5]

हिन्दी अर्थ :- घनात्=कठिनात् अन्याद् दधि, द्रप्सम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम पतले दही का है॥५१॥

घृतमाज्यं हविः सर्पिः

कृष्णमित्रटीका :- घ्रियते। 'घृ सेके' (भ्वा. प. अ.)। 'अञ्जिषज्जिघृषिभ्यः क्तः (उ. ३. ८९)। आ अज्यते। हूयते। 'अर्चिशुचि-' (उ. २. १०८) इति, इसिः। सर्पति। इसिः[1] (वा.)। चत्वारि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. घृतम्, २. आज्यम्, ३. हवि, ४. सर्पि- ये चार नपुंसकलिङ्ग नाम घी के हैं।

नवनीतं नवोद्धृतम्।

कृष्णमित्रटीका :- नवं च तन्नीतं च। द्वे। 'नयनू' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. दघ्नः नवोद्धृतम्, २. नवनीतम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम बिना गर्म किये हुए नवनीत के हैं।

तत्तु हैयङ्गवीनं यत् ह्यो गोदोहोद्भवं घृतम् ॥५२॥

कृष्णमित्रटीका :- ह्यो गोदोहादुद्भवति। 'हैयङ्गवीनं संज्ञायाम्' (५. २. २३) इति निपातः। 'एकरात्रपर्युषितादुत्पन्नस्य घृतस्यैकम्॥५२॥[4]

हिन्दी अर्थ :- हैयङ्गवीनम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम बासी दूध से निकाले हुए नवनीत का है॥५२॥

दण्डाहतं कालशेयमरिष्टमपि गोरसः।

कृष्णमित्रटीका :- दण्डेनाहतम्, विलोडितम्। कलस्यां मन्थपात्रे भवम्। 'दृतिकुक्षि-' (४. ३. ५६) इति ढञ्। न रिष्टमस्मात्। गोरसस्य दुग्धस्य विकारत्वादुपचारः। चत्वारि 'घोलस्य'॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. दण्डाहतम्, २. कालशेयम्, ३. अरिष्टम्, ४. गोरस- ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम मथनी से मथे हुए गोरस के हैं।

तक्रं ह्युदश्विन्मथितं पादाम्ब्वर्धाम्बु निर्जलम् ॥५३॥

कृष्णमित्रटीका :- 'तञ्चु गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'स्फायि-' (उ. २. १३) इति रक्। उदकेन श्वयति वर्धते। 'टुओश्वि-' (भ्वा. प. से.) क्विप् (३. २. ७६)। अर्धजलघो (ल) स्यैकम्। निर्जलस्यैकम्॥५३॥[6]

---

1. Cow-dung [2] 2. Dry cow-dung [1] 3. Milk [3] 4. Ghee, curd and other things made or milk [1] 5. Diluted eurd [1].

1. M. इसि 2. Ghee or clari tied butter [4] 3. Butter [2] 4. Clarified butter preared with the preceding day's milk [1] 5. Butter-milk [4] 6. Butter-milk (i) Contaning twentyfive percent water (ii) Containing fifty percent water and (iii) Pure or wither [1 each].

हिन्दी अर्थ :- १. तक्रम्, २. उदश्वित्, ३. मथितम्- ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम क्रम से चौथाई जल, आधा जल, विना जल वाले दही के हैं॥५३॥

मण्डं दधिभवं मस्तु

कृष्णमित्रटीका :- मस्यते। 'सितनि-' (उ. १. ६९) इति तुन्। 'वस्त्रनिस्सृतदधिजलस्य' एकम्॥[1]

हिन्दी अर्थ :- दधिभवं मस्तु- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम गाढ़ी दही के (वस्त्र के द्वारा निकाला हुआ दही का पानी) हैं।

पीयूषोऽभिनवं पयः।

कृष्णमित्रटीका :- पीयते। 'पीयेरूषन्' (उ. ४. ७६)। 'नवप्रसूतगोः पयसः' एकम्। 'पेउस' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- पीयूष- यह एक पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग नाम छः से नौ दिन की व्याई हुई गाय के दूध का है।

अशनाया बुभुक्षा क्षुत्

कृष्णमित्रटीका :- अशनस्येच्छा। 'सुप आत्मनः' (३. १. ८) क्यच्। भोक्तुमिच्छा। 'क्षुध बुभुक्षायाम्' (दि. प. अ.)। क्विप् (३. २. १७८)। त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. अशनाया, २. बुभुक्षा, ३. क्षुत्- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम भूख के हैं।

ग्रास्तु कवलार्थकः[4]॥५४॥

कृष्णमित्रटीका :- ग्रस्यते। घञ् (३. ३. १९)। केन वलते। द्वे॥५४॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. ग्रास, २. कवल- ये दो पुल्लिङ्ग नाम ग्रास (कौर) के हैं॥५४॥

सपीतिः स्त्री तुल्यपानम्

कृष्णमित्रटीका :- पिबतेः (भ्वा. प. अ.) क्तिनि (३. ३. ९४) 'घुमास्था-' (६. ४. ६६) इतीत्वम्। समाना पीतिः। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. सपीति, २. तुल्यपानम्- ये दो क्रम से एक स्त्रीलिङ्ग एक नपुंसकलिङ्ग नाम बहुतों के एक साथ बैठकर पीने का है।

सग्धिः स्त्री सहभोजनम्।

कृष्णमित्रटीका :- अदनं ग्धिः। समानाग्धिः। 'बहुलं छन्दसि' (२. ४. ३९) इति घस्। 'घसिभसोः-' (६. ४. १००) इत्युपधालोपः। सलोपः धत्वं जश् च द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. सग्धि, २. सहभोजनम्- ये दो नाम क्रम से एक स्त्रीलिङ्ग एक नपुंसकलिङ्ग नाम साथ में भोजन करने के हैं।

उदन्या तु पिपासा तृट्

कृष्णमित्रटीका :- उदकस्येच्छा। 'अशनाया' (७. ४. ३४) इति क्यच्। पातुमिच्छा। तर्षणम्। घञ् (३. ३. १८)। चत्वारि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. उदन्या, २. पिपासा, ३. तृट्, ४. तर्ष- ये क्रम से एक से तीन स्त्रीलिङ्ग तथा चौथा पुल्लिङ्ग नाम प्यास के हैं।

जग्धिस्तु भोजनम्॥५५॥

जेमनं लेप[3] आहारो निघसो न्याद इत्यपि।

कृष्णमित्रटीका :- क्तिनि (३. ३. ९४) 'अदो जग्धिः-' (२. ४. ३६)। भुजेः (रु. आ. अ.) ल्युट् (३. ३. ११५)॥५५॥ 'जिमु अदने' (भ्वा. प. से.)। 'लिप् उपदेहे' (तु. उ. अ.) घञ् (३. ३. १८)। हृञः (भ्वा. उ. अ.)। घञ् (३. ३. १८)। अदेः (अ. प. अ) 'नौ ण च' (३. ३. ६०) इत्यप्। 'घञपोश्च' (२. ४. ३८) इति घस्ल्। सप्त॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. जग्धि, २. भोजनम्॥५५॥ ३. लेह, ४. आहार, ५. निघास, ६. न्याद- ये छः नाम क्रम से प्रथम स्त्रीलिङ्ग द्वितीय नपुंसकलिङ्ग तृतीय से छः पुल्लिङ्ग नाम भोजन के हैं।

सौहित्यं तर्पणं तृप्तिः

कृष्णमित्रटीका :- सुहितस्य भावः। 'तृप प्रीणने' (दि. प. से.)। त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. सौहित्यम्, २. तर्पणम्, ३. तृप्ति- ये दो क्रम से प्रथम, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग तृतीय स्त्रीलिङ्ग नाम तृप्ति (अघाने) के हैं।

---

1. Whey [1] 2. The milk of a cow during the first seven days after calving [1] 3. Hunger [3] 4. Majority reads कवलः पुमान् 5. Mouthfuel [2] 6. Drinking together [2].

1. Eating together [2] 2. Thirst [4] 3. B. and K. लेह 4. Food [7] 5. Satisfaction [3].

फेला भुक्तसमुज्झितम् ॥५६॥

कृष्णमित्रटीका :- फेल्यते। 'फेलृ गतौ' (भ्वा. प. से.) अः (३. ३. १०३) पूर्वं भुक्तं पश्चात्समुज्झितम्। 'भुक्तोत्सृष्टस्य' द्वे॥५६॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. फेला, २. भुक्तसमुज्झितम्- ये दो नाम क्रम से एक स्त्रीलिङ्ग एक नपुंसकलिङ्ग खाकर छोड़े हुए जूठे के हैं॥५६॥

कामं प्रकामं पर्याप्तं निकामेष्टं यथेप्सितम्।

कृष्णमित्रटीका :- कमेः (भ्वा. आ. से.) घञ् (३. ३. १८)। 'आप्लृ व्याप्तौ' (स्वा. प. अ.)। क्तः (३. ३. ११४)। इषे (तु. प. से.) क्तः (३. ३. ११४)। आप्नुमिष्टम्। सन्नान्तात् (३. १. ७) क्तः (३. ३. ११४)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. कामम्, २. प्रकामम्, ३. पर्याप्तम्, ४. निकामम्, ५. इष्टम्, ६. यथेप्सितम्- ये छः नपुंसकलिङ्ग (क्रियाविशेषण) नाम इच्छानुसार, मतलब भर के हैं।

गोपे गोपालगोसंख्यगोधुगाभीरवल्लवाः ॥५७॥

कृष्णमित्रटीका :- गां पाति। गां पालयति। गां संचष्टे। ख्याञ् (२. ४. ५४)। गां दोग्धि। आ समन्ताद्भियं राति। 'बल्ल संवरणे' (भ्वा. आ. से.) बल्लं वाति॥५७॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. गोप, २. गोपाल, ३. गोसंख्य, ४. गोधुक्, ५. आभीर, ६. वल्लव- ये छः पुल्लिङ्ग नाम ग्वाले (अहीर) के हैं॥५७॥

गोमहिष्यादिकं पादबन्धनम्

कृष्णमित्रटीका :- पादे बन्धनमस्य॥[4]

हिन्दी अर्थ :- पादबन्धनम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम पैर बाँधे जाने वाले गाय भैंस आदि पशुओं का है। आदि पद से गदहा, बकरी, भेंड़ा का संग्रह है।

द्वौ गवीश्वरे।

गोमान् गोमी

कृष्णमित्रटीका :- गवामीश्वरः गावः सन्त्यस्य। मतुप्। 'ज्योत्स्ना-' (५. २. ११४) इति मिनिः। त्रीणि॥[5]

1. Leavings of meal [1] 2. Enough [6] 3. Cowherd [6] 4. Animals whose feet are tied with rope [1] 5. The owner of cattle [3].

हिन्दी अर्थ :- १. गवीश्वर, २. गोमान्, ३. गोमी- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम साँड़ के हैं। गवीश्वरे द्वौ स्यातामिति सम्बन्धः।

गोकुलं तु गोधनं स्याद् गवां व्रजे ॥५८॥

कृष्णमित्रटीका :- गवां कुलम्। गवां धनम्। गवां समूहः॥५८॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. गोकुलम्, २. गोधनम्- ये दो नाम गोसमूह के हैं॥५८॥

त्रिष्वाशितंगवीनं तद्गावो यत्राशिताः पुरा।

कृष्णमित्रटीका :- 'अषडक्षाशित-' (५. ४. ७) इति खः। आशिताः भोजिताः॥[2]

हिन्दी अर्थ :- आशितङ्गवीनम्- यह एक त्रिलिङ्ग नाम गौवों के चराने या खिलाने के प्राचीन स्थान का है।

उक्षा भद्रो बलीवर्द ऋषभो वृषभो वृषः ॥५९॥

अनड्वान् सौरभेयो गौः

कृष्णमित्रटीका :- 'उक्ष सेचने' (भ्वा. प. से.)। 'श्वन्नुक्षन्-' (उ. १. १६०) इति निपातः। भन्दति। 'भदि कल्याणे' (भ्वादिः)। 'ऋज्रेन्द्र-' (उ. २. २८) इति साधुः। 'वर ईप्सायाम्' (चु. उ. से.)। बलिनमीवरं च ददाति। ऋषति। 'ऋषी गतौ' (तु. प. से.)। 'वृषु सेचने' (भ्वा. प. से.)। 'ऋषिवृषिभ्यां कित्' (उ. ३. १२३) इत्यभच्॥५९॥ अनः शकटं वहति। 'अनसो डश्च' इति क्विप्। सुरभ्या अपत्यम्। 'स्त्रीभ्यो ढक्' (४. १. १२०)। गच्छति गौः। 'गमेर्डोः' (उ. २. ६७)। नव॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. उक्षा, २. भद्र, ३. वलीवर्द ४. ऋषभ, ५. वृषभ, ६. वृष॥५९॥, ७. अनड्वान्, ८. सौरभेय, ९. गौः- ये नौ पुल्लिङ्ग नाम बैल के हैं।

उक्ष्णां संहतिरौक्षकम्।

कृष्णमित्रटीका :- उक्ष्णां समूहः। 'गोत्रोक्षोष्ट्र-' (४. २. ३९) इति वुञ्। एकम्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- औक्षकम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम बैलों के समूह के हैं।

गव्या गोत्रा गवाम्

1. A herd of cows [2] 2. A place formerly grazed by cattle [1] 3. Ox [9] 4. A multitude of oxen [1].

कृष्णमित्रटीका :- गवां संहतिः। 'खलगोरथात्' (४. २. ५०) इति यत्। 'इनित्रकट्यचश्च' (४. २. ५१)। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. गव्या, २. गोत्रा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम गायों के झुण्ड का हैं।

वत्सधेन्वोर्वात्सकधैनुके ॥६०॥

कृष्णमित्रटीका :- वत्सानां समूहः। धेनूनां समूहः। 'अचित्तहस्ति-' (४. २. ४७) इति ठक्। एकम् (एकम्) ॥६०॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. वात्सकम्, २. धैनुकम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम क्रम से बछड़ों तथा धेनुओं के झुण्ड के हैं॥६०॥

उक्षा महान्महोक्षः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- महांश्चासावुक्षा च॥[3]

हिन्दी अर्थ :- महानुक्षा- महोक्ष- यह एक पुल्लिङ्ग नाम बड़े डीलवाले बैल का है।

वृद्धोक्षस्तु जगरद्गवः।

कृष्णमित्रटीका :- वृद्धश्चासावुक्षा च। जरश्चासौ गौश्च। 'गोरतद्धित-' (५. ४. ९२) इति टच्। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. वृद्धोक्ष, २. जरद्गव- ये दो पुल्लिङ्ग नाम वृद्ध बैल के हैं।

उत्पन्न उक्षा जातोक्षः

कृष्णमित्रटीका :- जातश्चासावुक्षा च। कर्षणयोग्यः॥[5]

हिन्दी अर्थ :- जातोक्ष- यह एक पुल्लिङ्ग नाम जवान बैल का है।

सद्योजातस्तु तर्णकः ॥६१॥

कृष्णमित्रटीका :- तृणोति। 'तृणु भक्षणे' (त. उ. से.)। ण्वुल् (३. १. १३३)॥६१॥[6]

हिन्दी अर्थ :- तर्णक- यह एक पुल्लिङ्ग नाम तुरन्त पैदा हुए बछड़े का है॥६१॥

शकृत्करिस्तु वत्सः स्यात्

1. A multitude of cows [2] 2. Herds of milch-cows and calves [1 each] 3. A large ox [1] 4. An old ox [2] 5. A young bullock [1] 6. A calf born recently [1].

कृष्णमित्रटीका :- शकृत्करोति। 'स्तम्बश-कृतोरिन्' (३. २. २४)। वदति। 'वृतॄवादि-' (उ. ३. ६२) सः। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. शकृत्करि, २. वत्स- ये दो पुल्लिङ्ग नाम छोटे बछड़े के हैं।

दम्यवत्सतरौ समौ।

कृष्णमित्रटीका :- दमनार्हः। तनुर्वत्सः। 'वत्सोक्षाश्व-' (५. ३. ९१) इत्यादिना ष्टरच्। बत्सभावमतीत्य द्वितीयं वयः प्राप्तः॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. दम्य, २. वत्सतर- ये दो पुल्लिङ्ग नाम जोतने योग्य बछड़े के हैं।

आर्षभ्यः षण्डतायोग्यः

कृष्णमित्रटीका :- 'ऋषभोपानहोर्ञ्यः' (५. १. १४)। एकम्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- आर्षभ्य- यह एक पुल्लिङ्ग नाम गोपति होने के योग्य बैल का है।

षण्डो गोपतिरिट्चरः ॥६२॥

कृष्णमित्रटीका :- 'षणु दाने' (तु. उ. से.)। 'अमन्ताड्डः' (उ. १. ११४)। बाहुलकात्सो नः। 'शमेर्ढः' (उ. १. ९९) 'शण्ढः' इत्यन्ये। गवां पतिः। एषणमिट्। इषा चरति। त्रीणि॥ 'सांड' लोके॥६२॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. षण्ड, २. गोपति, ३. इट्चर- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम इच्छानुसार भ्रमण करनेवाले साँड़ के हैं॥६२॥

स्कन्धप्रदेशस्तु वहः

कृष्णमित्रटीका :- वहति युगमनेन॥[5]

हिन्दी अर्थ :- वह- यह एक पुल्लिङ्ग नाम बैल के कन्धे का है।

सास्ना तु गलकम्बलः।

कृष्णमित्रटीका :- 'षस स्वप्ने' (अ. प. से.)। 'रास्नासास्ना-' (उ. ३. १५) इति साधुः। गलस्य कम्बलः। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. सास्ना, २. गलकम्बल- ये दो नाम क्रम से एक स्त्रीलिङ्ग, एक पुल्लिङ्ग बैलों की ललरी के हैं। (गले में लटकते हुए चाम को ललरी कहते हैं।)।

1. A young calf [2] 2. A young bullock requiring training [2] 3. A bullock fit to be eunuch [1] 4. Bull [3] 5. The shoulder of an ox [1] 6. The dew-lap of an ox [2].

स्यान्नस्तितस्तु नस्योतः

कृष्णमित्रटीका :- नस कौटिल्ये (भ्वा. आ. से.)। क्तः (३. ३. ११४)। नस्ते कृतमस्य। नासिकाया भवम्। नस्य 'नासिकाया-' (वा. ६. १. ६३) नस्। नस्यया नासारज्जवा उतः। 'नासारज्जुयुक्तस्य' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. नस्तित, २. नस्योतः- ये दो पुल्लिङ्ग नाम नाथे हुए बैलों के हैं।

प्रष्ठवाड् युगपार्श्वगः ॥६३॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रष्ठमग्रगामिनं वहति। युगस्य पार्श्वं गच्छति। 'दमनकाले कण्ठारोपितकाष्ठ-वाहस्य' द्वे॥६३॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रष्ठवाड्, २. युगपार्श्वग- ये दो पुल्लिङ्ग नाम बछड़ों को सर्वप्रथम हल में जोतने के समय गले पर दिये जाने वाले काठ के हैं॥६३॥

युगादीनां तु वोढारो युग्यप्रासङ्ग्यशाकटाः।

कृष्णमित्रटीका :- 'तद्वहति रथयुगप्रासङ्गम्' (४. ४. ७६) इति यत्। 'शकटादण्' (४. ४. ८०)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. युगादीनां वोढार=युग्य, २. प्रासङ्ग्य, ३. शाकट- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम क्रम से पहले-पहले हल में जोतने के समय जुवाट के काठ को ढोनेवाले और बैलगाड़ी ढोनेवाले बैलों के हैं।

खनति तेन तद्वोढास्येदं हालिकसैरिकौ ॥६४॥

कृष्णमित्रटीका :- हलेन सीरेण खनति। हलं वहति। हलस्येदमित्यादि। 'हलसीराट्ठक्' (४. ३. १२४)॥६४॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. हालिक, २. सैरिक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम हल से खोदे जाने वाले, हल को ढोने वाले हलवाहा, हल में चलने वाले बैलों के हैं॥६४॥

धूर्वहे धुर्यधौरेयधुरीणाः स धुरंधराः।

कृष्णमित्रटीका :- धुरं वहति। 'धुरो यड्ढक्कौ (४. ४. ७७)। योगविभागात्खः। धुरं धारयति। 'संज्ञायां भृतृवृ-' (३. २. ४६) इति खच्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. धूर्वह, २. धुर्य, ३. धौरेय, ४. धुरीण, ५. धुरन्धर- ये पांच पुल्लिङ्ग नाम भार को ढोने वाले बैलों के हैं।

उभावेकधुरीणैकधुरावेकधुरावहे ॥६५॥

कृष्णमित्रटीका :- एकधुरां वहति। 'एकधुरा-ल्लुक् च' (४. ४. ७९) इति खः। त्रीणि॥६५॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. एकधुरेण, २. एकधुर, ३. एकधुरावह- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम केवल दायें या बायें चलने वाले बैलों के हैं॥६५॥

स तु सर्वधुरीणो यो भवेत्सर्वधुरावहः।

कृष्णमित्रटीका :- सर्वा धूः सर्वधुरा। 'ऋक्पूः' (५. ४. ७४) इत्यप्। 'खः सर्वधुरात्' (४. ४. ७८)। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. सर्वधुरीणः, २. सर्वधुरावह- ये दो पुल्लिङ्ग नाम दायें बायें (दोनो तरफ) चलने वाले बैलों के हैं।

माहेयी सौरभेयी गौरुस्रा माता च शृङ्गिणी ॥६६॥ अर्जुन्यघ्न्या रोहिणी स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- मही गौः, तस्या अपत्यम्। वसति क्षीरमस्याम्। 'स्फायि-' (उ. २. १३) इति रक्। शृङ्गे स्तोऽस्याः[3]॥६६॥ अर्जुनवर्णयोगात्। 'अन्यतो ङीष्' (४. १. ४०)। न हन्तुं योग्या। 'अघ्न्यादयः-' (उ. ४. १११) इति साधु। रोहिणी रोहितवर्णेन। नव॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. माहेयी, २. सौरभेयी, ३. गौ, ४. उस्रा, ५. माता, ६. शृङ्गिणी॥६६॥, ७. अर्जुनी, ८. अघ्न्या, ९. रोहिणी- ये नौ स्त्रीलिङ्ग नाम गाय के हैं।

उत्तमा गोषु नैचिकी।

कृष्णमित्रटीका :- नीचैश्चरति। (चरति) (४. ४. ८) इति ढक्। 'अव्ययानाम्' (वा. ६. ४. १४४) इति टिलोपः। 'उत्तमाया गोः' एकम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- नैचिकी- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम उत्तम गाय के हैं।

वर्णादिभेदात्संज्ञाः स्युः शवलीधवलादयः ॥६७॥[2]

द्विहायनी द्विवर्षा गौः

---

1. Nozzled (as a bullock) [2] 2. A young bull being trained for the plough [2] 3. Oxen who bear a yoke and draws a cart [1 each] 4. An ox who draws a plough [2] 5. An ox who bears a burden [5].

---

1. An ox fit for one yoke [3] 2. An ox fit for all sorts of yokes [2] 3. M. स्तोस्याः 4. Cow [9] 5. An excellent cow [1].

कृष्णमित्रटीका :- द्वौ हायनौ यस्याः। 'दामहायना-' (४. १. २७) इति ङीष्। द्वे वर्षे प्रमाणमस्याः ॥[1]

हिन्दी अर्थ :-१. शवली, २. धवला- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम रङ्ग भेद से चितकबरी थावर आदि गायों के हैं। आदि पद से प्रमाणभेद से दीर्घा, खर्वा, ह्रस्वा अङ्गभेद से पिंगाक्षी, लम्बकर्णी आदि गायों के नाम हैं॥६७॥

१. द्विहायनी, २. द्विवर्षा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम दो वर्ष की गौ के हैं।

एकाब्दा त्वेकहायनी।

कृष्णमित्रटीका :- एकोऽब्दो[2] यस्याः ॥[3]

हिन्दी अर्थ :- या गौ एकहायनी सा - १. एकाब्दा, २. एकहायनी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम एक वर्ष की गौ के हैं।

चतुरब्दा चतुर्हायणी[4] एवं त्र्यब्दा त्रिहायणी॥६८॥[5]
वशा वन्ध्या[6]

कृष्णमित्रटीका :- वष्टि। अच् (३. १. १३४)। वन्धेः (क्र्या. प. अ.) ण्यत् (३. १. १२४)। द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. चतुरब्दा, २. चतुर्हायणी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम चार वर्ष की गौ के हैं।

१. त्र्यब्दा, २. त्रिहायणी- ये २ स्त्रीलिङ्ग नाम तीन वर्ष की गौ के हैं॥६८॥

१. वशा, २. बन्ध्या- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम बाँझ गाय के हैं।

अवतोका तु स्रवद्गर्भा

कृष्णमित्रटीका :- अवगमितं तोकमपत्यमस्याः॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. अवतोका, २. स्रवद्गर्भा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम अकस्मात् जिसका गर्भ गिर गया हो उस गाय के हैं।

अथ संधिनी।

आक्रान्ता वृषभेण

कृष्णमित्रटीका :- संधानंसंधा, साऽस्त्यस्याः[1]। व्रीह्यादित्वात् (५. २. ११६) इनिः 'वृषरतायाः' एकम्॥[2]

हिन्दी अर्थ :- सन्धिनी- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम साँड़ के साथ संगम की हुई गाय के हैं।

अथ वेहद् गर्भोपघातिनी॥६९॥

कृष्णमित्रटीका :- विहन्ति गर्भम्। 'संश्चत्तृपद्वेहत्' (उ. २. ८५) इति साधुः। 'वृषयोगेन गर्भघातिन्याः' द्वे॥६९॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१. वेहद्, २. गर्भोपघातिनी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम साँड के साथ संगम करके गर्भ को नष्ट की हुई गायों के हैं॥६९॥

काल्योपसर्जा (या) प्रजने

कृष्णमित्रटीका :- प्रजने गर्भग्रहणे प्राप्तकाला। उपस्रियते वृषभेष। 'उपसर्याकाल्या-' (३. १. १०४) इति साधु। 'गर्भग्रहणयोग्यायाः' एकम्॥[4]

हिन्दी अर्थन :- उपसर्या- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम साँड़ के साथ मैथुन करने की इच्छा करने वाली गौ का है।

प्रष्ठौही बालगर्भिणी।

कृष्णमित्रटीका :- प्रष्ठं वहति। 'वहाः-' (४. १. ६१) इति ङीष्। बाला चासौ गर्भिणी च। 'प्रथमं गर्भधृतवत्याः' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रष्ठौही, २. बालगर्भिणी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम पहले पहल गर्भधारण करनेवाली गौ के हैं।

स्यादचण्डी तु सुकरा

कृष्णमित्रटीका :- न चण्डी। सुखं करोति। 'सुशीलायाः' द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. अचण्डी, २. सुकरा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम सीधी गाय के हैं।

बहुसूतिः परेष्टुका॥७०॥

कृष्णमित्रटीका :- बह्वी सूतिर्यस्याः। परमिच्छति। बाहुलकात्तुः। बहुप्रसूतायाः' द्वे॥७०॥[7]

---

1. Spotted and white cows [1 each] 2. A cow 2 years old [2] 3. M. एकः अब्दो 4. A cow one year old [2] 5. A cow 4 years old [2] 6. A cow 3 years old [2] 7. A barren cow [2] 8. A cow miscarrying from accident [2].

1. M. सास्त्यस्या 2. A cow united with a bull [1] 3. A cow that miscarries [2] 4. A cow fit for impregnation [2] 5. A cow pregnant for the first time [2] 6. A tractable cow [2] 7. A cow that has often calved [2].

हिन्दी अर्थ :- १. बहुसूति, २. परेष्टुका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम अधिक बच्चा पैदा की हुई गाय के हैं॥७०॥

चिरप्रसूता[1] वष्कयिणी

कृष्णमित्रटीका :- चिरं प्रसूता। 'वष्क गतौ' (चु. उ. से.)। बाहुलकादयन् वष्कयस्तरुणवत्सः, सोऽस्त्यस्याः[2]। द्वे॥ 'बकेन' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. चिरसूता, २. वष्कयिणी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम अधिक दिन की व्याई हुई (वकेना) गाय के हैं।

धेनुः स्यान्नवसूतिका।

कृष्णमित्रटीका :- 'धेट इच्च' (उ. ३. ११) इति नुः। नवं सूतं प्रसूतमस्याः द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. धेनु , २. नवसूतिका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम थोड़े दिन की व्याई हुई (धेनु) गाय के हैं।

सुव्रता सुखसंदोह्या

कृष्णमित्रटीका :- शोभनं व्रतमस्याः। सुखेन संदुह्यते॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. सुव्रता, २. सुखसंदोह्या- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम सुखपूर्वक दुही जाने वाली गाय के हैं।

पीनोध्नी पीवरस्तनी॥७१॥

कृष्णमित्रटीका :- पीनमूधोऽस्याः[6]। 'ऊधसोऽनङ्[7]' (५. ४. १३१)। पीवरः[8] स्तनोऽस्याः[9]। 'स्वाङ्गाच्च-' (४. १. ५४) इति ङीष्। द्वे॥७१॥[10]

हिन्दी अर्थ :- १. पीनोध्नी, २. पीवरस्तनी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम मोटे-मोटे स्तन वाली गाय के हैं॥७१॥

द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा

कृष्णमित्रटीका :- द्रोणपरिमितं क्षीरमस्याः। द्रोणं दोग्धि। 'दुहः कब् घश्च' (३. २. ७०)। द्वे॥[11]

हिन्दी अर्थ :- १. द्रोणक्षीरा, २. द्रोणदुग्धा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम दस सेर दूध देने वाली गाय के हैं।

1. B. and K. चिरसूता 2. M. सोस्त्यस्याः 3. A cow whose calf is full-grown [2] 4. A milch-cow [2] 5. A cow which can be easily milked [2] 6. M. पीनमूधोस्याः 7. M. ऊधसोनङ् 8. M. पीवर 9. M. स्तनोस्याः 10. A cow having large udders [2] 11. A cow yielding a drona of milk [2].

धेनुष्या बन्धके स्थिता।

कृष्णमित्रटीका :- 'संज्ञायां धेनुष्या-' (४. ४. ८९) इति साधुः॥[1]

हिन्दी अर्थ :- धेनुष्या- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम बन्धक रक्खी हुई गौ का है।

समांसमीना सा यैव प्रतिवर्षं प्रसूयते॥७२॥

कृष्णमित्रटीका :- समायां समायां विजायते। 'समां समां विजायते' (५. २. १२) इति खो यादिलोपश्च॥७२॥[2]

हिन्दी अर्थ :- समांसमीना- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम प्रतिवर्ष बच्चा देने वाली गौ का है॥७२॥

ऊधस्तु क्लीबमापीनम्

कृष्णमित्रटीका :- 'उन्दी क्लेदने' (रु. प. से.)। असुन् (उ. ४. १८८)। दस्य धः। 'प्यायः पी' (६. १. २८)। 'ओदितश्च' (८. २. ४५) इति निष्ठानः। 'स्तनस्य' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. ऊध, २. आपीनम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम गौ के थन के हैं।

समौ शिवककीलकौ।

कृष्णमित्रटीका :- शेतेऽत्र[4]। 'सर्वनीघृष्व' (उ. १. १५४) इति साधुः। 'कील बन्धे' (भ्वा. प. से.)। 'बन्धनकाष्ठस्य' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. शिवक, २. कीलक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम खूँटे के हैं।

न पुंसि दाम संदानम्

कृष्णमित्रटीका :- द्यति[6] दाम। मनिन् (उ. ४. १४४)। संपूर्वो दाण् बन्धने। 'दोहनकाले पादबन्धनरज्जोः' द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. दाम, २. संदानम- ये दो नाम क्रम से एक नपुंसकलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग, एक नपुंसकलिङ्ग दुहने के समय पैर बाँधने की रस्सी या पगहे के हैं।

पशुरज्जुस्तु दामनी॥७३॥

कृष्णमित्रटीका :- पशूबन्धनी रज्जुः। दामेव। 'प्रज्ञाद्यण्' (५. ४. ३८)। 'अन्' (६. ४. १३७) इति प्रकृतिभावः। 'पशुबन्धनरज्जोः' द्वे॥७३॥[8]

1. A cow that has been pledged [1], 2. A cow bearing a calf every year [1], 3. Udder [2], 4. M. शेतेत्र, 5. Wedge [2], 6. M. यति, 7. Foot-rope [2], 8. Cord for tethering cattle [2],

हिन्दी अर्थ :- १. पशुरज्जु, २. दामनी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम पगहा या छान के हैं।।७३।।

वैशाखमन्थमन्थानमन्थानो मन्थदण्डके।

कृष्णमित्रटीका :- विशाखा प्रयोजनमस्य। 'विशाखाषाढात्-' (५. १. ११०) अण्। अथ्यते। घञ् (३. ३. १२१) मन्थयति। बाहुलकादानच्। मथ्यते। 'मन्थः' (उ. ४. ११) इन् कित्। मन्थस्य दण्डः। पञ्च।।[1]

हिन्दी अर्थ :- १. वैशाख, २. मन्थ, ३. मन्थान, ४. मन्था, ५. मन्थदण्डक- ये पांच पुल्लिङ्ग नाम मथनी के दण्डे के हैं।

कुठरो दण्डविष्कम्भः[2]

कृष्णमित्रटीका :- 'कुट कुठ गति प्रतिघाते' (?)। बाहुलकात्करन्। दण्डं विष्कभ्नाति। 'स्कम्भु रोधने' (सौत्रः)। 'मन्थबन्धनकाष्ठस्य' द्वे।।[3]

हिन्दी अर्थ :- १. कुठर, २. दण्डविष्कम्भ- ये दो पुल्लिङ्ग नाम मथते समय मथनी के बाँधने वाले दण्ड के हैं।

मन्थनी गर्गरी समे।।७४।।

कृष्णमित्रटीका :- मथ्यतेऽस्याम्[4]। 'गर्ग' इति शब्दं राति। 'मन्थनपात्रस्य' द्वे।।७४।।[5]

हिन्दी अर्थ :- १. मथनी, २. गर्गरी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम कमोरी (जिससे दही मथी जाती है) के हैं।।७४।।

उष्ट्रे क्रमेलकमयमहाङ्गाः

कृष्णमित्रटीका :- 'उष दाहे' (भ्वा. प. से.)। ष्ट्रन् (उ. ४. १५८)। क्रमेः (भ्वा. प. से.) विच् (३. २. ७५)। एलयति। 'इल क्षेपे' (तु. प.से.)। ण्वुल् (३. १. १३३)। क्रम् चासौ एलकश्च। मयते। 'मीञ् हिंसायाम्' (क्र्या. उ. अ.)। महान्त्यङ्गान्यस्य। चत्वारि।।[6]

हिन्दी अर्थ :- १. उष्ट्र, २. क्रमेलक, ३. मय, ४. महाङ्ग- ये चार पुल्लिङ्ग नाम ऊँट के हैं।

करभः शिशुः।

कृष्णमित्रटीका :- कीर्यते। करे भाति। 'उष्ट्रशिशोः' एकम्।।[7]

हिन्दी अर्थ :- करभ- यह एक पुल्लिङ्ग नाम ऊँट के तीन वर्ष तक के उम्र वाले बच्चे का है।

करभाः स्युः शृङ्खलका दारवैः पादबन्धनैः।।७५।।

कृष्णमित्रटीका :- शृङ्खलं बन्धनमस्य। 'काष्ठकृतबन्धनयुक्तस्य करभय' एकम्।।७५।।[1]

हिन्दी अर्थ :- शृङ्खलक- यह एक पुल्लिङ्ग नाम काष्ठ की बनी हुई सिकड़ी से बाँधे हुए ऊँट के बच्चे का है।।७५।।

अजा छागी

कृष्णमित्रटीका :- अजति। अच् (३. १. १३४)। बाहुलकान्न वीभावः। 'छापूखडिभ्यः कित्' (उ. १. १२४) इति गन्। द्वे।।[2]

हिन्दी अर्थ :- १. अजा, २. छागी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम बकरी के हैं।

शुभच्छाग[3]-वस्तच्छगलका अजे।

कृष्णमित्रटीका :- 'शुभ हिंसायाम्' (भ्वा. प. से.)। कः। 'तुभः' इत्यन्ये। वस्तयति। 'वस्त अर्दने' (चु. आ. से.)। अच् (३. १. १३४)। 'छो गुक् ह्रस्वश्च' (उ. १. ११३) इत्यलच्। पञ्च।।[4]

हिन्दी अर्थ :- १. शुभ, २. छाग, ३. वस्त, ४. छगलक, ५. अज- ये पांच पुल्लिङ्ग नाम बकरा के हैं।

मेढ्रोरभ्रोरणोर्णायुमेषवृष्णय एडके।।७६।।

कृष्णमित्रटीका :- मेहति। ष्ट्रन् (उ. ४. १५८)। उना शम्भुना रभ्यते। 'रभ राभस्ये' (भ्वा. आ. अ.)। बाहुलकाद्रक्। उना रण्यते। उर्णाऽस्यास्ति[5]। 'ऊर्णाया युस्' (५. २. १२३)। 'मिष स्पर्धायाम्' (तु. प. से.)। अच् (३. १. १३४)। वर्षति। 'सृवृषिभ्यां कित्' (उ. ४. ४९) इति निः। एलयति। ण्वुल् (३. १. १३३)। सप्त।।७६।।[6]

हिन्दी अर्थ :- १. मेढ्र, २. उरभ्र, ३. उरण, ४. ऊर्णाय, ५. मेष, ६. वृष्णि, ७. एडक- ये सात पुल्लिङ्ग नाम भेड़ के हैं।।७६।।

उष्ट्रोरभ्राजवृन्दे स्यादौष्ट्रकौरभ्रकाजकम्।

कृष्णमित्रटीका :- उष्ट्राणामुरभ्राणामजानां च समूहः। 'गोत्रोक्षो-' (४. २. ३९) इति वुञ्।।[7]

---

1. **Churning-stick** [5] 2. B. दण्डविष्कम्भे 3. **A post round which the rope of a churning stick passes** [2] 4. M. मथ्यतेस्याम् 5. **Pot** (used for churning) [2] 6. **Camel** [4] 7. **A young camel** [2].

1. **A camel tied with wooden rope** [1] 2. **She-goat** [2] 3. **B. prefers** स्तभच्छाग 4. **Goat** [5] 5. M. उर्णास्यास्ति 6. **Ram or sheep** [7] 7. **A multitude of camels, a flock of sheep; and a flock of goats** (1 each).

हिन्दी अर्थ :- १. औष्ट्रकम्, २. औरभ्रकम्, ३. आजकम्- ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम क्रम से ऊँटों, भेड़ों, बकरों के समूह के हैं।

चक्रीवन्तस्तु बालेया रासभा गर्दभाः खराः ॥७७॥

कृष्णमित्रटीका :- चक्रवद्भ्रमणं चक्र (म्), तदस्यास्ति। 'आसंदीवत्-' (८. २. १२) इति साधुः। बलये उपहाराय संहितः। 'छदिरुपध-' (५. १. १३) इति ढञ्। खं मुखविलमतिशयितमस्य। 'खमुख-' (वा. ५. २. १०७) इति रः। पञ्च ॥७७॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. चक्रीवान्, २. वालेय, ३. रासभ, ४. गर्दभ, ५. खर- ये पांच पुल्लिङ्ग नाम गदहे के हैं॥७७॥

वैदेहकः सार्थवाहो नैगमौ वणिजो वणिक्।
पण्याजीवो ह्यापणिकः क्रयविक्रयिकश्च सः ॥७८॥

कृष्णमित्रटीका :- विदेहेषु भवः। धूमादित्वात् (४. २. १२७) वुञ्। सार्थं वहति। निगमे भवः। पणतेरिज्यादेश्च वः (उ. २. ७०) प्रज्ञादिः (५. ४. ३८)। पण्येना जीवति। आपणे व्यवहारोऽस्यास्ति[2]। 'अतः-' (५. २. ११५) इति ठन्। क्रयविक्रयाभ्यां जीवति। 'वस्नक्रयविक्रयाट्ठन्' (४. ४. १३) अष्टौ ॥७८॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. वैदेहक, २. सार्थवाह, ३. नैगम, ४. वाणिज, ५. वणिक्, ६. पण्याजीव, ७. आपणिक, ८. क्रयविक्रयिक, ये आठ पुल्लिङ्ग नाम बनियाँ व्यापारी के हैं॥७८॥

विक्रेता स्याद्विक्रयिकः

कृष्णमित्रटीका :- विक्रयेण जीवति। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. विक्रेता, २. विक्रयिक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम बेचने वाले के हैं।

क्रायकः क्रयिकः समौ।

कृष्णमित्रटीका :- क्रीणाति। ण्वुल्। क्रयेण जीवति। ठन् (४. ४. १३)। 'ग्रहीतुः' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. क्रायक, २. क्रयिक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम खरीदने वाले के हैं।

वाणिज्यं तु वणिज्या स्यात्

1. Donkey [5] 2. M. व्यवहारोस्यास्ति 3. Merchant [8] 4. Seller [2] 5. Purchaser [2]

कृष्णमित्रटीका :- वणिजां कर्म। ष्यञ् (५. २. १२४)। 'दूतवणिभ्यां च' इति यत्। 'वणिक्कर्मणः' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. वाणिज्यम्, २. वणिज्या- ये दो नाम क्रम से एक नपुंसकलिङ्ग एक स्त्रीलिङ्ग व्यापार के हैं।

मूल्यं वस्नोऽप्यवक्रयः ॥७९॥

कृष्णमित्रटीका :- मूलेनानाम्यम्। 'नौ वयो' (४. ४. ९१) इति यत्। वसत्यत्र। 'धापृवसि-' (उ. ३. ६) इति नः। अवक्रीयतेऽनेन[2]। 'पुंसि-' (३. ३. ११८) इति घः। त्रीणि॥७९॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १.मूल्यम्, २. वस्न, ३. अवक्रय- ये तीन नाम क्रम से एक नपुंसकलिङ्ग दो पुल्लिङ्ग कीमत (दाम) के हैं॥७९॥

नीवी परिपणो मूलधनम्

कृष्णमित्रटीका :- 'नीवृ स्थौल्ये' (?) नीवी। परिपण्यते वृद्ध्यर्थं प्रयुज्यते। मूलं च तद्धनं च। त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. नीवी, २. परिपण, ३. मूलधनम्- ये तीन नाम क्रम से एक स्त्रीलिङ्ग दो नपुंसकलिङ्ग नाम व्यापर में वृद्धि के लिए व्यय किये हुए धन के हैं।

लाभोऽधिकं फलम्।

कृष्णमित्रटीका :- लभ्यते। 'अकर्तरि-' (३. ३. १९) इति घञ्। अध्यारूढम्। 'अधिकम्' (५. २. ७३) इति साधुः। फलति। अच् (३. १. १३४)। त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. लाभ, २. अधिकम्, ३. फलम्- ये तीन नाम क्रम से एक पुल्लिङ्ग दो नपुंसकलिङ्ग लाभ, फायदा के हैं।

परिदानं परीवर्तो नैमेयनिमयावपि ॥८०॥

कृष्णमित्रटीका :- परिवृत्य दानम्। 'प्रतिदानम्' इति पाठान्तरम्। परिवर्तनम्। घञि (३. ३. १८) 'उपसर्गस्य' (६. ३. १२२) इति दीर्घः। 'मेङ् प्रणिदाने' (भ्वा. आ. अ.)। यत् (३. १. ९७)। चत्वारि 'बदला' लोके॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. परिदानम्, २. परीवर्त, ३. नैमेय, ४. निमय- ये चार नाम क्रम से एक नपुंसकलिङ्ग तीन पुल्लिङ्ग वस्तु को अदला बदला करने के हैं॥८०॥

1. Trade [2] 2. M. अवक्रीयतेनेन 3. Price or cost [3] 4. Principal or Capital 5. Profit [8] 6. Barter [4].

पुमानुपनिधिर्न्यासः

कृष्णमित्रटीका :- 'उपसर्गे घोः किः' (३. ३. ९२)। न्यस्ते। 'असु क्षेपणे' (दि. प. से.)। घञ् (३. ३. १९)। 'निक्षेपस्य' द्वे। 'थाती' लोके॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. उपनिधि, २. न्यास- ये दो पुल्लिङ्ग नाम धरोहर रखने के हैं।

प्रतिदानं तदर्पणम्।

कृष्णमित्रटीका :- प्रतीपदानम्। तस्यार्पणम्। 'स्वामिनो (ने) निक्षेपा (र्प) ण्स्य' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रतिदानम्, २. तदर्पणम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम धरोहर वापस रखने के हैं।

क्रये प्रसारितं क्रय्यम्

कृष्णमित्रटीका :- क्रीयते। 'अचो यत्' (३. १. ९७)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- क्रय्यम्- यह एक त्रिलिङ्ग नाम दुकान पर फैलाई हुई खरीदी जाने वाली वस्तुओं का हैं।

क्रेयं क्रेतव्यामात्रके॥८१॥[4]

विक्रेयं पणितव्यं च पण्यं क्रय्यादयस्त्रिषु।

कृष्णमित्रटीका :- विक्रीयते। पण्यते। 'अवद्यपण्य-' (३. १. १०१) इति साधुः। 'विक्रयकर्मणः' त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- क्रेयम्- यह एक त्रिलिङ्ग नाम खरीदने योग्य वस्तु का है॥८१॥

१. विक्रेयम्, २. पणितव्यम्, ३. पण्यम्- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम बेचने योग्य वस्तु के हैं।

क्लीबे सत्यापनं सत्यंकारः सत्याकृतिः स्त्रियाम्॥८२॥

कृष्णमित्रटीका :- सत्यस्य करणम्। 'सत्यापपाश-' (३. १. २५) इति णिच्। 'कारे सत्यागदस्य' (६. ३. ७०) इति मुम्। 'सत्यादशपथे' (५. ४. ६६) इति डाच्। त्रीणि। 'साई' लोके॥८२॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. सत्यापनम् , २. सत्यंकर, ३. सत्याकृति- ये तीन नाम क्रम से एक नपुंसकलिङ्ग दो पुल्लिङ्ग एक स्त्रीलिङ्ग साई, बयाना आदि के हैं॥८२॥

---

1. Deposit or pledge [2] 2. Giving away of a deposit [1] 3. A thing exhibited for sale in the market [1] 4. Any thing fit to be purchased [1] 5. A thing saleable [3] 6. Ratification of a bargain; verification [3].

विपणो विक्रयः

कृष्णमित्रटीका :- विपणनम्। घञ् (३. ३. १८)। 'एरच्' (३. ३. ५६), विक्रयः। 'विक्रयक्रियायाः' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. विपण, २. विक्रय- ये दो पुल्लिङ्ग नाम बेचने के हैं।

संख्याः संख्येये ह्यादश त्रिषु।

कृष्णमित्रटीका :- एकादिका अष्टादश नवदश पर्यन्ताः संख्याः संख्येये[2] त्रिलिङ्गाश्च। तेन 'दश ब्राह्मणाः' इत्येव, न तु 'ब्राह्मणानां दश' इति॥

हिन्दी अर्थ :- आदश- एक से लेकर नवदश (१९) तक संख्या संख्येय (द्रव्य) वाचक होने के कारण त्रिलिङ्ग में प्रयुक्त होती है।

विंशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः संख्येयसंख्ययोः॥८३॥

कृष्णमित्रटीका :- 'विंशति-' आद्यास्तु संख्याः संख्येयसंख्ययोरुभयोरप्यर्थयोरेकवचनान्ताः। संख्येये- 'विंशतिर्गावः' संख्यायाम्- गवां विंशतिः॥८३॥

हिन्दी अर्थ :- विंशत्याद्या- बीस आदि संख्या के वाचक शब्द संख्या और संख्येय के अर्थ में प्रयुक्त होने पर एकवचन ही होते हैं॥८३॥

संख्यार्थे द्विबहुवत्वे स्तः

कृष्णमित्रटीका :- यदा विंशत्यादीनां संख्या-अर्थस्तदा द्विवचनादि। यथा- 'द्वे विंशती', इत्यत्र चत्वारिंशदित्यर्थः।

हिन्दी अर्थ :- बीस से परार्द्ध तक संख्या के वाचक शब्द संख्या के अर्थ में द्विवचन और बहुवचन भी होते हैं।

तासु चानवतेः स्त्रियः।

कृष्णमित्रटीका :- विंशत्याद्या नवतिमभिव्याप्य स्त्रि (स्त्रीलिङ्ग) लिङ्गाः।

हिन्दी अर्थ :-बीस से लेकर निन्नानवे तक संख्या के वाचक शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं।

पङ्क्ते शतसहस्रादि क्रमाद् दशगुणोत्तरम्॥८४॥

कृष्णमित्रटीका :- पङ्क्तेरादि दशगुणं शतादि। यथा- 'दश पङ्क्तयः शतम्, दशशतानि सहस्रमित्यादि॥८४॥

---

1. Selling or sale [2] 2. M. संख्यये।

हिन्दी अर्थ :- १. पङ्क्ते, २. दशगुणोत्तरं- दहाई सैकड़ा और हजार आदि संख्या का क्रमशः एक-एक नाम हैं, ये क्रमशः उत्तरोत्तर दशगुने होते हैं॥८४॥

यौतवं द्रुवयं पाय्यमिति मानार्थकं त्रयम्।

कृष्णमित्रटीका :- यौतेर्बाहुलकात्तुन्। योतुरिदम्। द्रोर्विकारः। 'माने वयः' (४. ३. १६२)। मीयतेऽनेन[1]। 'पाय्यसांनाय्य-' (३. १. १२९) इति साधु। मानमर्थोऽस्य[2]। चत्वारि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. यौतवम्, २. द्रवयम्, ३. पाय्यम्- ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम नाप तौल प्रमाण के हैं।

मानं तुलाङ्गुलिप्रस्थैः

कृष्णमित्रटीका :- मानभेदानाह- तुलेति। तोल्यतेऽनया[4]। 'तुल उन्माने' (चु. प. से.)। भिदादिः (३. ३. १०४)॥

हिन्दी अर्थ :- १. तुला, २. अङ्गुलि, ३. प्रस्थ, के भेद से प्रमाण तीन प्रकार के होते हैं।

गुञ्जाः पञ्चाद्यमाषकः॥८५॥

कृष्णमित्रटीका :- मषति। 'मष हिंसायाम्' (भ्वा. प. से.)। ण्वुल् (३. १. १३३)। आद्यश्चासौ माषकश्च। शास्त्रीयत्वात्॥८५॥[5]

हिन्दी अर्थ :- आद्यमाषक- यह एक पुल्लिङ्ग नाम पाँच गुंजा भर (मासा) का है।

ते षोडशाक्षः कर्षोऽस्त्री

कृष्णमित्रटीका :- 'अक्ष व्याप्तौ' (भ्वा. प. से.)। अच् (३. १. १३४)। कर्षति। अच् (३. १. १३४)। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१. अक्ष , २. कर्ष, ये दो नाम क्रम से एक पुल्लिङ्ग एक पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग कर्ष परिमाण (सोलह आना) भर के हैं।

पलं कर्षचतुष्टयम्।

कृष्णमित्रटीका :- पलति। 'पल गतौ' (भ्वा. प. से.)। अच् (३. १. १३४)॥[7]

1. M. मीयतेनेन 2. M. मानमर्थोस्य 3. Measure (in general) [4] 4. M. तोल्यतेनया 5. A weight equal to 5 rattis [1] 6. A weight equal to 16 mas'as [1] 7. A weight equal to four karsas [1].

हिन्दी अर्थ :- कर्षचतुष्टयम् - पलम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम पल परिमाण (चार रूपया भर) का है।

सुवर्णविस्तौ हेम्नोऽक्षे

कृष्णमित्रटीका :- शोभने वर्णोऽस्य[1]। 'विस उत्सर्गे' (दि. प. से.)। क्तः (३. २. १०२) द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१. सुवर्ण, २. विस्त, ये दो पुल्लिङ्ग नाम मोहर अर्थात् १६ आने भर के हैं। सोने के कर्ष परिमाण को सुवर्ण और विस्त कहते हैं।

कुरुविस्तस्तु तत्पले॥८६॥

कृष्णमित्रटीका :- कुरुषु विस्तः। तस्य हेम्नः पले एकम्॥८६॥[3]

हिन्दी अर्थ :- कुरुविस्त- यह एक पुल्लिङ्ग नाम पल सुवर्ण का है। अर्थात् ३२० रत्ती भर का है॥८६॥

तुला स्त्रियां पलशतम्[4] भारः स्याद्विंशतिस्तुलाः।

कृष्णमित्रटीका :- भ्रियते। घञ् (३. ३. १९)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- तुला- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम सौ भर अर्थात् ४०० रूपया भर का है।

भार- यह एक पुल्लिङ्ग नाम २० तुला या २० पसेरी का है।

आचितो दशभाराः स्युः

कृष्णमित्रटीका :- आङ्पूर्वाच्चिञः (भ्वा. उ. अ.) क्तः (३. २. १०२)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- आचित- यह एक पुल्लिङ्ग नाम दश भार अर्थात् २५ मन का है।

शाकटो भार आचितः॥८७॥

कृष्णमित्रटीका :- शकटेन उह्यते॥८७॥ एकम्॥[7]

हिन्दी अर्थ :- शाकट- यह एक पुल्लिङ्ग नाम एक गाड़ी का बोझ आचित अर्थात् २५ मन का है॥८७॥

1. M. वर्णोस्य 2. A weight of gold equal to 80 gunjas [1] 3. A weight of gold equal to 320 rattis [1] 4. A weight of gold equal to 100 palas 5. A weight equal to 2000 palas 6. A measure of 10 bharas 7. A weight of 10 bharas or cart-loads (18,000) tolas.

कार्षापणः कार्षिकः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- कर्ष एक। कार्षमापणयति। कर्षस्यायम्॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. कार्षापण, २. कार्षिक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम रुपये के हैं।

कार्षिके ताम्रिके पणः॥[2]

कृष्णमित्रटीका :- अङ्गुलिमानं च नृवर्गे (अ. २. ६. ८६-८७) उक्तम्।

प्रस्थमानमाह-

हिन्दी अर्थ :- पण- यह एक पुल्लिङ्ग नाम ताबां के बने पैसे के हैं।

अस्त्रियामाढकद्रोणौ खारी वाहो निकुञ्चकः॥८८॥
कुडवः प्रस्थ इत्याद्या परिमाणार्थकाः पृथक्।

कृष्णमित्रटीका :- आढौकते। पृषोदरादि (६. ३. १०९)। द्रवति। 'कृवृ-' (उ. ३. १०) इति निः। खमाराति। गौरादिः (४. १. ४१)। ऊह्यतेऽनेन[3]। निकुञ्चति। 'कुञ्च कौटिल्ये' (भ्वा. प. से.)॥८८॥ कुण्ड्यते। बाहुलकाद्वच्। अनित्यो नुम्। प्रस्थीयतेऽनेन[4]। कः (वा. ३. ३. ५८)। चतुर्भिः कर्षैं पलं तदेव निकुञ्चकम्। पलचतुष्टयं कुडवः। तच्चतुष्टयं प्रस्थः। प्रस्थचतुष्टय-माढकः। एवं द्रोणो गोणी खारीति यथोत्तरचतुर्गुणाः। गोण्येव भारस्तच्चतुष्टयं वाहः॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. आढक, २. द्रोण, ३. खारी, ४. वाह, ५. निकुञ्चक॥८८॥, ६. कुडव, ७. प्रस्थ-ये सात नाम क्रम से दो पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग, एक स्त्रीलिङ्ग, चार पुल्लिङ्ग आढक आदि विशेष परिमाण के एक-एक नाम हैं।

अंशस्तुरीयः पादः स्यात्[6]

कृष्णमित्रटीका :- पद्यते। 'पदरुज-' (३. ३. १६) हति घञ्। एकम्॥[7]

हिन्दी अर्थ :- पाद- यह एक पुल्लिङ्ग नाम चौथाई भाग का है।

अंशभागौ तु वण्टके॥८९॥

कृष्णमित्रटीका :- अंश्यते। 'अंश विभाजने' (?)। भजेः (भ्वा. उ. अ.) कर्मणि घञ् (३. ३. १९)। वण्ट्यते। 'वटि विभाजने' (चु. प. से.) घञः कः। त्रीणि॥८९॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. अंश, २. भाग, ३. वण्टक - ये तीन पुल्लिङ्ग नाम भाग, हिस्सा के हैं॥८९॥

द्रव्यं वित्तं स्वापतेयं रिक्थमृक्थं धनं वसु।
हिरण्यं द्रविणं द्युम्नमर्थैराविभवा अपि॥९०॥

कृष्णमित्रटीका :- द्रुरिव। 'द्रव्यं च भव्ये' (५. ३. १०४) इति साधु। 'विद्लृ लाभे' (तु. उ. अ.)। 'वित्तो भोगप्रत्यययोः' (८. २. ५८)। स्वपतौ साधु। पथ्यतिथि' (४. ४. १०४) इति ढक्। रिच्यते। 'रिचिर् विरेचने' (रु. उ. अ.)। 'पातृतुदि-' (उ. २. ७) इति थक्। 'ऋ (च) शब्दे' (तु. प. से.)। बाहुलकात् थन्। धनति। 'धन धान्ये' (जु. प. से.)। अच् (३. १. १३४)। 'शृस्वृस्निहि-' (उ. १. १०) इत्युः। 'हर्य गतिकान्त्योः' (भ्वा. प. से.)। 'हर्यतेः कन्यन् हिर् च' (उ. ५. ४४)। 'द्रु गतौ' (भ्वा. प. अ.)। 'द्रु दक्षिभ्यामिनन्' (उ. २. ५०)। दिवमनति। 'म्ना अभ्यासे' (भ्वा. प. अ.)। 'आतः-' (३. २. ३) कः। इर्य्यते। अञ् (३. १. १३४)॥९०॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. द्रव्यम्, २. वित्तम्, ३. स्वापतेयम्, ४. रिक्थम्, ५. ऋक्थम्, ६. धनम्, ७. वस, ८. हिरण्यम्, ९. द्रविणम्, १०. द्युम्नम्, ११. अर्थ, १२. रा, १३. विभव- ये तेरह नाम क्रम से दस नपुंसकलिङ्ग तीन पुल्लिङ्ग धन के हैं॥९०॥

स्यात्कोशश्च हिरण्यं च हेमरूप्ये कृताकृते।

कृष्णमित्रटीका :- कुश्यते। 'कुश संश्लेषणे' (?)। हेम च रूप्यं च। कृतं चाकृतं च। घटिताघटिते। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. कोषः, २. हिरण्यम्- ये क्रम से एक पुल्लिङ्ग एक नपुंसकलिङ्ग नाम सोना चाँदी आदि के हैं।

ताभ्यां यदन्यत्तत्कुप्यम्

कृष्णमित्रटीका :- 'गुपू रक्षणे'। 'राजसूय-' (३. १. ११४) इति साधु। एकम्॥[4]

1. **Coin** [2] 2. **A copper coin** [1] 3. M. ऊह्यतेनेन 4. M. प्रस्थोयतेनेन 5. **Different measures being adhaka, drona, khari, vaha, nikuncaka, kudava and prastha** [1 each] 6. **B. reads this half as follws :** पादस्तुरीयो भागः स्यात् 7. **The fourth part of a thing** [1].

1. **Part, portion or share** [3] 2. **Wealth** [12] 3. **Minted or unminted gold, and silver** [2] 4. **Any metal but gold and silver** [1].

हिन्दी अर्थ :- कुप्यतम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम ताँबा आदि धातु का है।

रूप्यं तद्द्वयमाहतम् ॥९१॥

कृष्णमित्रटीका :- आहतं रूपमस्य। 'रूपादा-हतप्रशंसयोर्यप्' (५. २. १२०)। एकम् ॥९१॥[1]

हिन्दी अर्थ :- रूप्यम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम सिक्के बने हुए सोना चाँदी ताँबा आदि रूपया, अठन्नी, चवन्नी, अशर्फी, पैसा, अघेला का है ॥९१॥

गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भो हरिन्मणिः।

कृष्णमित्रटीका :- गरुत्मतो जातम्। मरकं तरन्त्यतनेन। डः (वा. ३. २. १०१)। अश्मनो गर्भः। हरिद्वर्णो मणिः चत्वारि ॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. गारुत्मतम्, २. मरकतम्, ३. अश्मगर्भ, ४. हरिन्मणि- ये चार नाम क्रम से दो नपुंसकलिङ्ग, दो पुल्लिङ्ग मरकतमणि के हैं।

शोणरत्नं लोहितकः पद्मरागः

कृष्णमित्रटीका :- शोणं च तद्रत्नं च। लोहितमेव। 'लोहितान्मणौ' (५. ४. ३०) इति कन्। पद्ममिव रागोऽस्य[3]। त्रीणि ॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. शोणरत्नम्, २. लोहितक, ३. पद्मराग- ये तीन नाम क्रम से एक नपुंसकलिङ्ग दो पुल्लिङ्ग पद्मरागमणि, लाल के हैं।

अथ मौक्तिकम् ॥९२॥

मुक्ता

कृष्णमित्रटीका :- मुक्तैव। 'विनयादिभ्यष्ठक्' (५. ४. ३४) ॥९२॥ मुचेः (तु. उ. अ.) क्तः (३. २. १०२)। द्वे ॥[5]

हिन्दी अर्थ :-१. मौक्तिकम्, २. मुक्ता- ये दो क्रम से एक नपुंसकलिङ्ग एक स्त्रीलिङ्ग नाम मोती के हैं ॥९२॥

अथ विद्रुमः पुंसि प्रवालं पुंनपुंसकम्।

कृष्णमित्रटीका :- विशिष्टो द्रुमः। प्रकृष्टो वालोऽस्य[6]। द्वे ॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. विद्रुम, २. प्रवाल- ये दो नाम क्रम से एक पुल्लिङ्ग एक पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग नाम मूँगे के हैं।

---

1. A stamped coin [1] 2. Emerald [4] 3. M. रागोस्य 4. Ruby [3] 5. Pearl [2] 6. M. वालोस्य 7. Coral [2].

रत्नं मणिर्द्वयोरश्मजातौ मुक्तादिकेऽपि च ॥९३॥

कृष्णमित्रटीका :- रमन्तेऽस्मिन्[1]। बाहुलकात् क्नम्। तुक् (६. १. ७१)। मण्यते। 'मण शब्दे' (भ्वा. प. से.) इनिः। अश्मजातौ मरकतादौ। द्वे ॥९३॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. रत्नम् , २. मणि- ये दो नाम क्रम से एक नपुंसकलिङ्ग, एक पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग नाम लाल, हीरा, मोती आदि जवाहरात के हैं ॥९३॥

स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेमहाटकम्।
तपनीयं शातकुम्भं गाङ्गेयं भर्म कर्बुरम् ॥९४॥
चामीकरं जातरूपं महारजतकाञ्चने।
रुक्मं कार्तस्वरं जाम्बूनादमष्टापदोऽस्त्रियाम् ॥९५॥

कृष्णमित्रटीका :- शोभनो वर्णोऽस्य[3]। कनति। 'कनी दीप्तौ' (भ्वा. प. से.)। 'कृञादिभ्यः-' (उ. ५. ३५) वुन्। 'हि गत्यादौ' (स्वा. प. अ.)। मनिन् (उ. ४. १४४)। 'हट दीप्तौ' (भ्वा. प. से.)। ण्वुल् (३. १. १३३)। तप्यतेऽनेन[4]। अनीयर् (३. १. ११३)। शतकुम्भे पर्वते भवम्। गङ्गाया अपत्यम्। शुभ्रादित्वात् (४. १. १२३) ढक्। भरति। मनिन् (उ. ४. १४४)। कर्वत्यनेन। 'कर्व दर्पे' (भ्वा. प. से.)। मद्गुरादि (उ. १. ४१) ॥९४॥ चमीकरे भवम्। जातं रूपमस्य। महच्च तद्रजतं च। काञ्चति (ते)। 'काचि दीप्तौ' (भ्वा. आ. से.)। नन्द्यादिः (३. १. १३४)। रोचते। 'युजिरुचितिजां कुश्च' (उ. १. १४६) इति मक्। कृतस्वरे आकरविशेषे भत्रम्।[5] जम्बूरसस्य नद्यां भवम्। अष्टौ धातवः पदानि स्थानान्यस्य। 'अष्टनः संज्ञायाम्-' (६. ३. १२५) इति दीर्घः। एकोन (विं) शतिः ॥९५॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. स्वर्णम्, २. सुवर्णम्, ३. कनकम्, ४. हिरण्यम्, ५. हेम्, ६. हाटकम्, ७. तपनीयम्, ८. शातकुम्भम्, ९. गाङ्गेयम्, १०. भर्म, ११. कर्बुरम् ॥९४॥, १२. चामीकरम्, १३. जातरूपम्, १४. महारजतम्, १५. काञ्चनम्, १६. रुक्मम्, १७. कार्तस्वरम्, १८. जाम्बूनदम्, १९. अष्टापद- ये क्रम से अठारह नपुंसकलिङ्ग, एक पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग नाम सुवर्ण के हैं ॥९५॥

---

1. M. रमन्तेस्मिन् 2. Any kind of jewels and pearls [2] 3. M. वर्णोस्य 4. M. तप्यतेनेन 5. M. भव 6. Gold [19].

अलंकारसुवर्णं यच्छृङ्गीकनकमित्यदः।

कृष्णमित्रटीका :- अलङ्कारस्य सुवर्णशृङ्गीं कनति। एकम्॥[1]

हिन्दी अर्थ :- शृङ्गीकनकम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम भूषण बने हुए सुवर्ण का है।

दुर्वर्णं रजतं रूप्यं खर्जूरं श्वेतमित्यपि॥९६॥

कृष्णमित्रटीका :- दुष्टो वर्णोऽस्य। रज्यते। 'पृषिरञ्जिभ्यां कित्' (उ. ३. १११) इत्यच्। प्रशस्तं रूपमस्य॥ 'खर्ज व्यथने' (भ्वा. प. से.)। 'खर्जपिञ्जादिभ्य ऊरोलचौ' (उ. ४. ९०)॥९७६॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. दुर्वणम्, २. रजतम्, ३. रूप्यम्, ४. खर्जूरम्, ५. श्वेतम्- ये पांच नपुंसकलिङ्ग नाम चाँदी के हैं॥९६॥

रीतिः स्त्रियामारकूटो न स्त्रियाम्

कृष्णमित्रटीका :- 'री गतिरेषणयोः' (क्र्या. प. अ.)। क्तिन् (३. ३. ९४)। आरं कूटयते। 'कूट दाहे' (चु. उ. से.)। 'पित्तलस्य' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१. रीति, २. आरकूट- ये दो नाम क्रम से एक स्त्रीलिङ्ग एक पुल्लिङ्ग पीतल के हैं।

अथ ताम्रकम्।

शुल्वं म्लेच्छमुखं द्वयष्टवरिष्ठोरम्बराणि च॥९७॥

कृष्णमित्रटीका :- ताम्यति। 'अमितभ्योर्दीर्घश्च' (उ. २. १६) इति रक्। शुल्वयति। 'शुल्व माने' (चु. प. से.)। म्लेच्छस्य मुखमिव। द्वे हेमरूप्ये अश्नुते स्म। 'अशू व्याप्तौ' (स्वा. आ. से.)। क्तः (३. ४. ७२)। अतिशयेन वरम्। अतिशायने इष्ठन् (५. ३. ५५)। उ शंभुं वृणोति। षट्॥९७॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. ताम्रकम्, २. शुल्वम्, ३. म्लेच्छमुखम्, ४. द्व्यष्टम्, ५. वरिष्ठम्, ६. उदुम्बरम्- ये छः नपुंसकलिङ्ग नाम ताँबा के हैं॥९७॥

लोहोऽस्त्री शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी। अश्मसारः

कृष्णमित्रटीका :- लोहति। 'लुह गार्ध्ये' (?) शश्यतेऽनेन[5]। 'शसु हिंसायाम्' (भ्वा. प. से.)। 'दाम्नी-' (३. १. १८२) इति ष्ट्रन्। 'तिज निशाने' (चु. प. से.)। 'तिजेदीर्घश्च' (उ. ३. १८) इति क्स्नः। पिण्ड्यते। 'पिडि संघाते' (भ्वा. आ. से.)। कालं च तदयश्च। 'अनोश्मायः' (५. ४. ९४) इति टच्। एति। अश्मनः[1] सारः। सप्त॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. लोह, २. शस्त्रकम्, ४. पिण्डम्, ५. कालायसम्, ६. अय, ७. अश्मसार (अश्मनः सारः)- ये सात पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग नाम लोहे के हैं।

अथ मण्डूरं सिंहानमपि तन्मले॥९८॥

कृष्णमित्रटीका :- मण्डते। खर्जूरादिः (उ. ४. ९०)। सिंहमाणयति। 'सिंहाणम्' इति पाठान्तरम्। तस्य मले॥९८॥[3]

हिन्दी अर्थ :-१. मण्डूरम् , २. शिंघाणम् - ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम लोह के मुर्चा (मैल) के हैं॥९८॥

सर्वं स्यात्तैजसं लौहम्

कृष्णमित्रटीका :- तेजसो विकारः। 'सर्वधातुनाम्' एकम्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- सर्वं तैजसम् लोहं- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम सब तरह के धातु का है।

विकारस्त्वयसः कुशी।

कृष्णमित्रटीका :- कुं भूमिं श्यति। एकम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- अयसो विकारः- कुशी- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम लोहनिर्मित अस्त्र, बर्तन तथा फार आदि का है।

क्षारं काचः

कृष्णमित्रटीका :- क्षरति। ज्वलादिः (३. १. १४०)। 'कच बन्धने दीप्तौ च' (भ्वा. आ. से.)। अच् (३. १. १३४)। प्रज्ञाद्यण् (५. ४. ३८)। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. क्षार, २. काच- ये दो पुल्लिङ्ग नाम काँच के हैं।

अथ चपलो रसः सूतश्च पारदे॥९९॥

कृष्णमित्रटीका :- 'चुप मन्दायां गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'चुपेरच्चोपधायाः' (उ. १. १११) इति कालः। रस्यते। सुष्ठु उतः। परं ददाति। पारा॥९९॥[7]

1. Gold as or teronaments [2] 2. Silver [5] 3. Brass [2] 4. Copper [6] 5. M. शश्यतेनेन.

1. M. अश्मना 2. Iron [7] 3. The rust of iron [2] 4 All kinds of metals [1] 5. Wrought iron [1] 6. Glass [2] 7. Quick-silver [4].

हिन्दी अर्थ :- १. चपल, २. रस, ३. सूत, ४. पादर- ये चार पुल्लिङ्ग नाम पारा के हैं॥९९॥

गवलं माहिषं शृङ्गम्

कृष्णमित्रटीका :- गवामलम्। 'महिषशृङ्गस्य' एकम्॥[1]

हिन्दी अर्थ :- गवलम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम भैसे के सींग का हैं।

अभ्रकं गिरिजामले।

कृष्णमित्रटीका :- अभ्रमिव। गिरौ जाता। न मलमस्य। त्रीणि। 'अभरक' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. अभ्रकम्, २. गिरिजामलम् - ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम अभ्रक के हैं।

स्त्रोतोञ्जनं तु सौवीरं कापोताञ्जनयामुने॥१००॥

कृष्णमित्रटीका :- स्त्रोतोञ्जनं[3]। अञ्जु (रु. प. से.)। सुवीरदेशे भवम्। कापोतं कपोतवर्णमञ्जनम्। यमुनायां भवम्। चत्वारि 'सुरमा' (लोके)॥१००॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. स्त्रोतोञ्जनम्, २. सौबीरम्, ३. कापोताञ्जनम्, ४. यामुनम्- ये चार नपुंसकलिङ्ग नाम सुरमा, आँजन के हैं॥१००॥

तुत्थाञ्जनं शिखिग्रीवं वितुन्नकमयूरकम्।[5]**।**

कृष्णमित्रटीका :- 'तुत्थ आवरणे' (चु. प. से.)। तुत्थं च तदञ्जनां च। शिखिनो ग्रीवाऽस्यास्ति[6]। विगतं तुन्नं व्यथनमस्तात्। मयूर इव। चत्वारि 'तु (तू) तिआ' (लोके)॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. तुत्थाञ्जनम्, २. शिखिग्रीवम्, ३. वितुन्नकम्, ४. मयूरकम्- ये चार नपुंसकलिङ्ग नाम तूतिया के हैं।

कर्परी दार्विका क्वाथोद्भवं तुत्थं रसाञ्जनम्॥१०१॥
रसगर्भं तार्क्ष्यशैलम्

कृष्णमित्रटीका :- 'कृपू सामर्थ्ये (भ्वा. आ. से.)। बाहुलकादरट्। दार्वी दारुहरिद्रा। तस्याः क्वाथेनोत्पन्न (म्) रसजमञ्जनम्॥१०१॥ रसो गर्भेऽस्य[8]। तुर्क्ष्यशैले भवम्। षट् 'रसवत'॥[9]

1. The horn of a buffalo [1] 2. Talc [3] 3. M. स्त्रोतोज्यतेनेन 4. Antimony applied to eyes as collyrium [4] 5. B. and K. वितुन्नकमयूरके 6. M. ग्रीवास्यास्ति 7. Blue vitriol [4] 8. M. गर्भेस्य 9. Sulphate or copper.

हिन्दी अर्थ :- १. कर्परी, २. दार्विका, ३. तुत्थम्- ये तीन नाम क्रम से दो स्त्रीलिङ्ग, एक नपुंसकलिङ्ग घिसकर बनाये हुए अञ्जन के हैं।

१. रसाञ्जनम्, २. रसगर्भम्, ३. तर्क्ष्यशैलम्, ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम नेत्र में लगाने के अञ्जन विशेष के हैं।

गन्धाश्मनि तु गन्धकः।
सौगन्धिकश्च

कृष्णमित्रटीका :- गन्धयुक्तोऽश्मगन्धो-ऽस्यास्ति[1]। अर्शं आद्यच् (५. २. १२७)। स्वार्थे कन्। शोभनो गन्धोऽस्य[2]। विनयादिः (५. ४. ३४)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. गन्धाश्मा, २. गन्धक, ३. सौगन्धिक- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम गन्धक के हैं।

चक्षुष्याकुलाल्यौ तु कुलत्थिका॥१०२॥

कृष्णमित्रटीका :- चक्षुषे हिता। कुलमलति। 'कर्मण्यम्' (३. २. १)। ङीष्। कुले तिष्ठति। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)॥१०२॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. चक्षुष्या, २. कुलाली, ३. कुलत्थिका- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम काला सुरमा के हैं॥१०२॥

रीतिपुष्पं पुष्पकेतु पौष्पकं कुसुमाञ्जनम्।

कृष्णमित्रटीका :- रीतेः पित्तलस्य पुष्पमिव। पुष्पस्य केतुः। विनाशकत्वात्। पुष्पमिव। ततः स्वार्थेऽण्[5] (५. ४. ३८)। कुसुममिव अञ्जनम्। 'रोतिकायां ध्यायमानायां जातस्य मलस्य' चत्वारि॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. रीतिपुष्पम्, २. पुष्पकेतु, ३. पौष्कम्, ४. कुसुमांजनम्- ये चार नपुंसकलिङ्ग नाम तपाये हुए पीतल से निकली हुई मैल के बने हुए सुरमे के हैं।

पिञ्जरं पीतनं तालमालं च हरितालके॥१०३॥

कृष्णमित्रटीका :- पिञ्जं वर्णविशेषं राति। पीतवर्णं नयति। डः (वा. ३. २. १०१)। तालयति। 'तल प्रतिष्टायाम्' (चु. प. से.)। आ अलयति। हरितं वर्णं मालाति। पञ्च॥१०३॥[7]

1. M. गन्धयुक्तोश्मगन्धोस्यास्ति 2. M. गन्धोस्य 3. Sulphur [3] 4. Black antimony [4] 5. M. स्वार्थे अण् 6. Calx of brass used as collyrium [4] 7. Yellow orpiment [4].

हिन्दी अर्थ :- १. पिंजरम्, २. पीतनम्, ३. तालम्, ४. आलम, ५. हरितालकम्- ये पांच नाम हरताल के हैं।।१०३।।

गैरेयमर्थ्यं गिरिजमश्मजं च शिलाजतु।

कृष्णमित्रटीका :- गिरौ भवम्। 'नद्यादिभ्यश्च' (४. २. ९७) इति ढक्। अर्थ्यते। यत् (३. १. ९७)। अश्मनो जातम्। शिलाया जतु। पञ्च 'शिलाजतु'।।[1]

हिन्दी अर्थ :- १. गैरेयम्, २. अर्थ्य, ३. गिरिजम्, ४. अश्मजम्, ५. शिलाजतु-ये पांच नपुंसकलिङ्ग नाम शिलाजीत के हैं।

बोलगन्धरसप्राणपिण्डगोपरसाः समाः ।।१०४।।

कृष्णमित्रटीका :- बोलयति। बुल मज्जने' (चु. प. से.)। गन्धवान् रसोऽस्य[2]। (प्रा) णित्यनेन। अच् (३. १. १३४)। गोर्जलात्पाति। रस्यते। षट् 'बोल' (इति ख्यातस्य) ।।१०४।।[3]

हिन्दी अर्थ :- १. बोल, २. गन्धरस, ३. प्राण, ४. पिण्ड, ५. गोप, ६. रस- ये छः पुल्लिङ्ग नाम गन्धरस के हैं।।१०४।।

हिण्डीरोऽब्धिकफः फेनः

कृष्णमित्रटीका :- 'हिण्डि (डी)' इति शब्दमीरयति। अब्धेः कफः। स्फायते। 'फेनमीनौ' (उ. ३. ३.) इति साधुः। त्रीणि 'समुद्रफेन (स्य)।।[4]

हिन्दी अर्थ :- १. हिण्डीर, २. अब्धिकफ, ३. फेन- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम समुद्रफेन के हैं।

सिन्दूरं नागसम्भवम्।

कृष्णमित्रटीका :- 'स्यन्देः संप्रसारणं च' (उ. १. ६८) इत्यूरन्। नागं सीसं संभवोऽस्य[5]। द्वे।।[6]

हिन्दी अर्थ :- १. सिन्दूरम्, २. नागसम्भवम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम सिन्दूर के हैं।

नागसीसकयोगेष्टवप्राणि

कृष्णमित्रटीका :- नगे भवः। सिनोति सीः। 'षिञ् बन्धने' (स्वा. उ. अ.)। बाहुलकाद्दीर्घः। सीं स्यति। योगे धातुसम्बन्धे इष्टम्। वृधेः (भ्वा. आ. से.) रन् (उ. २. २७)। अन्ये तु 'वप्राणि' इति पठन्ति। डुवप् (भ्वा. उ. अ.)। 'वृधिवपिभ्यां रन् (उ. २. २७)। चत्वारि।।[7]

हिन्दी अर्थ :- १. नागम्, २. सीसकम, ३. योगेष्टम्, ४. वप्रम्-ये चार नपुंसकलिङ्ग नाम सीसा के हैं।

त्रपु पिच्चटम्।।१०५।।

रङ्गवङ्गे

कृष्णमित्रटीका :- त्रपते। 'शृस्वृस्निहि-' (उ. १. १०) इत्युः। पिच्चयति। '(पि)च्च छेदने' (भ्वादिः)। 'शकादिभ्योऽटन्[1]' (उ. ४. ८१)।।१०५।। रङ्गति। वङ्गति। चत्वारि।।[2]

हिन्दी अर्थ :- १. त्रपु, २. पिच्चटम्, ३. रङ्गम्, ४. वङ्गम्- ये चार नपुंसकलिङ्ग नाम राँगा के हैं।

अथ पिचुस्तूलः

कृष्णमित्रटीका :- 'पिचु मर्दने' (?)। मृगय्वादिः (उ. १. ३७)। 'तूल निष्कर्षे' (भ्वा. प. से.)। द्वे।। 'रुई' (लोके)।।[3]

हिन्दी अर्थ :- १. पिचु, २. तूल- ये दो पुल्लिङ्ग नाम कपास, रुई के हैं।

अथ कमलोत्तरम्।

स्यात्कुसुम्भं वह्निशिखं महारजनमित्यपि।।१०६।।

कृष्णमित्रटीका :- कमलादुत्तरम्। 'कुस संश्लेषणे' (दि. प. से.)। कुसेरुम्भः (उ. ४. १०६)। वह्निवान् शिखाऽस्य[4]। (र) ज्यतेऽनेन। क्युन् (उ. २. ७९)। महच्च तद्रजनं च। चत्वारि।।१०६।।[5]

हिन्दी अर्थ :- १. कमलोत्तरम्, २. कुसुम्भम्, ३. वह्निशिखम्, ४. महारजनम्- ये चार नपुंसकलिङ्ग नाम वर्रे के फूल के हैं।

मेषकम्बल ऊर्णायुः

कृष्णमित्रटीका :- मेषलोमकृतः कम्बलः। ऊर्णाऽस्याति[6]। 'ऊर्णाया युस्' (५. २. १२३)। द्वे।।[7]

हिन्दी अर्थ :- १. मेषकम्बल, २. ऊर्णायु- ये दो पुल्लिङ्ग नाम भेड़ के रोम के बने हुए कम्बल के हैं।

शशोर्णं शशलोमनि।

कृष्णमित्रटीका :- शशस्य ऊर्णा। द्वे।।[8]

हिन्दी अर्थ :- १. शशोर्णम्, २. शशलोम- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम शशक (खरहे) के रोएँ के हैं।

---

1. **Red-chalk** [5] 2. M. रसोस्य 3. **Gum myrrth** [6] 4. **Foam of sea** [3] 5. M. संभवंस्य 6. **Red lead** [2] 7. **Lead** [4].

1. M. शकादिभ्योटन् 2. **Tin** [4] 3. **Cotton** [2] 4. M. शिखास्य 5. **Safflower** [4] 6. M. ऊर्णास्यास्ति 7. **Woolen blanket** [2] 8. **The hair of a rabbit** [2].

मधु क्षौद्रं माक्षिकादि

कृष्णमित्रटीका :- 'मन ज्ञाने' (दि. आ. अ.)। 'फलिपाटि-' (उ. १. १८) इति साधु। क्षुद्राभिः कृतम्। क्षुद्राभ्रमर-' (४. ३. ११९) इत्यञ्। मक्षिकाभिः कृतम्। 'संज्ञायाम्' (४. ३. ११७) इत्यण्। त्रीणि॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. मधु, २. क्षौद्रम्, ३. माक्षिकम्- ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम मधु, शहद के हैं।

मधूच्छिष्टं तु सिक्थकम्॥१०७॥

कृष्णमित्रटीका :- मधुन। उच्छिष्टम्। 'षि (सि) च क्षरणे' (तु. उ. अ.)। 'पातृतुदिवचि-' (उ. २. ७) इति स्थक्। द्वे 'मोम' (लोके)॥१०७॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. मधूच्छिष्टम्, २. सिक्थकम् - ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम मोम के हैं॥१०७॥

मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्वा नागजिह्विका।
नैपाली कुनटी गोला

कृष्णमित्रटीका :- मनशब्दवाच्या शिला। मनसा गुप्ता। मनश्शब्देन ह्यूते। 'आतश्च-' (३. ३. १०६) इत्यङ्। नागानां जिह्वेव। नेपाले भवा। कुत्सिता नटीव। गां दीप्तिं लाति। सप्त 'मयनशिल' (लोल)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. मनःशिला, २. मनोगुप्ता, ३. मनोहा, ४. नागजिह्विका, ५. नैपाली, ६. कुनटी, ७. गोला- ये सात स्त्रीलिङ्ग नाम मैनसिल के हैं।

यवक्षारो यवाग्रजः॥१०८॥
पाक्यः

कृष्णमित्रटीका :- यवानां क्षारः। यवाग्राज्जाताः। पाके साधुः। त्रीणि 'य (ज) वाखार' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. यवक्षार, २. यवाग्रज, ३. पाक्य- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम यवाखार के हैं।

अथस्वर्जिकाक्षारः कापोतः सुखवर्चकः।
सौवर्चलं स्याद्रुचकम्

कृष्णमित्रटीका :- स्वर्जिकारस (जः क्षारः। क), पोत-वर्णोऽस्यास्ति[5]। सुखं वर्चयति। 'वर्च दीप्तौ' (भ्वा. आ. से.)। सुवर्चलाया इदम्। रोचते। क्वुन् (उ. २. ३२)। पञ्च 'साजीखार' (लोके)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. स्वर्जिकाक्षार, २. कापोत, ३. सुखवर्चक, ४. सौवर्चलम्, ५. रुचकम्- ये पांच नाम क्रम से तीन पुल्लिङ्ग और दो नपुंसकलिङ्ग सज्जीखार के हैं।

त्वक्क्षीरी वंशरोचना॥१०९॥

कृष्णमित्रटीका :- त्वचो वशात् क्षीरमस्याः। वंशो रोच्यतेऽनया[1]। द्वे 'वंशलोचन (स्य)'॥१०९॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. त्वक्क्षीरी, २. वंशरोचना- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम वंशलोचन के हैं॥१०९॥

शिग्रुजं श्वेतमरिचम्

कृष्णमित्रटीका :- शिग्रोर्जातम्। श्वेतं मरिच-मिव। शोभाञ्जनबीजस्य' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. शिग्रुजम्, २. श्वेतमरिचम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम सहिजन के बीज के हैं।

मोरटं मूलमैक्षवम्

कृष्णमित्रटीका :- मुरति। 'मुरवेष्टने' (तु. प. से.)। 'शकादिभ्योऽटन्[4]' (उ. ४. ८१)। इक्षोरिदम्। एकम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- मोरटम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम गन्ने की जड़ का है।

ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलं चटकाशिर इत्यपि॥११०॥

कृष्णमित्रटीका :- ग्रन्थिरिव। पिप्पल्या मूलम्। चटकायाः शिर इव। त्रीणि॥११०॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. ग्रन्थिकम्, २. पिप्पलीमूलम्, ३. चटकाशिर, अपि शब्द से केवल शिरका भी ग्रहण है- ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम पिपरामूल के हैं॥११०॥

गोलोमी भूतकेशो ना

कृष्णमित्रटीका :- गोलोम्नामियम्। संज्ञापूर्व-कत्वान्न वृद्धिः। भूतानां केश इव। द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. गोलोमी, २. भूतकेश-ये दो नाम क्रम से प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग जटामांसी के हैं।

पत्त्राङ्गं रक्तचन्दनम्।

कृष्णमित्रटीका :- पत्त्राण्यङ्गेऽस्य[8]। द्वे॥[9]

---

1. Honey [3] 2. Bees' wax [2] 3. Red arsenic [7] 4. Saltpetre [3] 5. M. वर्णोस्यास्ति 6. Natron [5].

1. M. रोच्यतेनया 2. The manna of bamboos [2] 3. The seed of s'obhanjana (drum-stick) [2] 4. M. शकादिभ्योटन् 5. The root sugarcane [1] 6. The root of long pepper [3] 7. Spikenard [2] 8. M. पत्त्राण्यङ्गेस्य 9. Red sandal [2].

हिन्दी अर्थ :- १. पत्राङ्गम्, २. रक्तचन्दनम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम लाल चन्दन के समान पतङ्ग नाम से प्रसिद्ध रक्तसार के हैं।

त्रिकटु त्र्यूषणं व्योषम्

कृष्णमित्रटीका :- त्रयाणां कटूनां समहारः। त्रयाणामूषणानां समाहारः। 'उष दाहे' (भ्वा. प. से.)। त्रीणि 'त्रिकटु' (इति ख्यातस्य)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. त्रिकटु, २. त्र्यूषणम्, ३. व्योधम्- ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम त्रिकटु (पीपल, सोंठ, कालीमिर्च के समुदाय) के हैं।

त्रिफला तु फलत्रिकम्॥१११॥

इति वैश्यवर्गः॥९॥

कृष्णमित्रटीका :- त्रायाणां फलानां समाहारः। द्वे॥१११॥[2]

इति वैश्यवर्गः॥९॥

हिन्दी अर्थ :- १. त्रिफला, २. फलत्रिकम्- ये दो नाम त्रिफला (आँवला, हर्रा, बहेड़ा) के हैं, इनमें प्रथम स्त्रीलिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग हैं॥१११॥

॥इति वैश्यवर्गविवरणम्॥

अथ शूद्रवर्गः॥१०॥

शूद्राश्चावरवर्णाश्च वृषलाश्च जघन्यजाः।

कृष्णमित्रटीका :- 'शुच शोके' (भ्वा. प. से.)। 'शुचेर्दश्च' (उ. ३. १९) इति रक्, दीर्घश्च। अवरश्चासौ वर्णश्च। वृषे धर्मे लाति। जघन्यात्पादाज्जाताः। चत्वारि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. शूद्र, २. अवरवर्ण, ३. वृषल, ४. जघन्यज- ये चार पुल्लिङ्ग नाम शूद्र के हैं।

आचाण्डालात्तु संकीर्णा अम्बष्ठकरणादयः॥१॥

कृष्णमित्रटीका :- संकीर्यन्ते। कृ (भ्वा. प. से.)। क्तः (३. २. १०२)। 'ऋत् इत्-' (७. १. १००)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- सङ्कीर्ण- यह एक पुल्लिङ्ग नाम वर्णसङ्कर अर्थात् भिन्न-भिन्न जाति वाले माता पिता के संयोग से उत्पन्न हुए अम्बष्ठ, करण आदि जातिविशेष का है॥१॥

1. Peper, long-pepper and dry ginger taken collectively [3] 2. Three kinds of myrobalans taken collevtively [2] 3. S'udra [4] 4. A man of a mixed caste [1].

शूद्राविशोस्तु करणः

कृष्णमित्रटीका :- शूद्रा च विट्, वैश्यश्च तयोः सुतः। कीर्यते करणः॥[1]

हिन्दी अर्थ :- करण- यह एक पुल्लिङ्ग नाम शूद्रवर्ण की स्त्री और वैश्य वर्ण के पुरुष से उत्पन्न सन्तान का है।

अम्बष्ठो वैश्याद् द्विजन्मनोः।

कृष्णमित्रटीका :- अम्बे तिष्ठति॥[2]

हिन्दी अर्थ :- अम्बष्ठ- यह एक पुल्लिङ्ग नाम वैश्य वर्ण की स्त्री और ब्राह्मण वर्ण के पुरुष से उत्पन्न संतान का हैं।

शूद्राक्षत्रिययोरुग्रः

कृष्णमित्रटीका :- 'उच समवाये' (दि. प. से.)। 'ऋज्रेन्द्र-' (उ. २. २८) इति साधुः॥[3]

हिन्दी अर्थ :- उग्र- यह एक पुल्लिङ्ग नाम शूद्रवर्ण की स्त्री और क्षत्रियवर्ण के पुरुष से उत्पन्न सन्तान का है।

मागधः क्षत्त्रियाविशोः॥२॥

कृष्णमित्रटीका :- 'मगध वेष्टने'। अच् (३. १. १३४)। प्रज्ञादिः (५. ४. ३८)॥२॥[4]

हिन्दी अर्थ :- मागध- यह एक पुल्लिङ्ग नाम क्षत्रियवर्ण की स्त्री और वैश्यवर्ण के पुरुष से उत्पन्न सन्तान का है॥२॥

माहिष्योऽर्याक्षत्त्रिययोः

कृष्णमित्रटीका :- अर्या वैश्या क्षत्रियश्च, तयोः सुतः। महिष्यां (साधुः)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- माहिष्य- यह एक पुल्लिङ्ग नाम वैश्यवर्ण की स्त्री और क्षत्रियवर्ण के पुरुष से उत्पन्न सन्तान का है।

क्षत्तार्याशूद्रयोः सुतः।

1. A mixed tribe born of a Vais'ya father and S'udra mother. 2. The offspring of a man of the Brahmana and women of the Vais'ya caste [1] 3. The descendant of a Ksatriya father and Sudra mother [1] 4. The offspring of a Vais'ya father and Ksatriya mother [1] 5. The descendant sprung from a Ksatriya fatger abd Vais'ya mother [1].

कृष्णमित्रटीका :- क्षदति। 'क्षद संभृतौ' '-शंसिक्षदादिभ्यः-' (उ. २. ९३) इति तृच्। अर्याऽत्र[१], 'क्षत्रियां च शूद्र जे' इति वचनात्॥[२]

हिन्दी अर्थ :- क्षत्ता- यह एक पुल्लिङ्ग नाम क्षत्रियवर्ण की स्त्रीलिङ्ग और शूद्रवर्ण के पुरुष से उत्पन्न सन्तान अर्थात् बढ़ई का है।

ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूतः

कृष्णमित्रटीका :- सूडः क्तः (३. ४. ७२)॥[३]

हिन्दी अर्थ :- सूत- यह एक पुल्लिङ्ग नाम ब्राह्मणवर्ण की स्त्री और क्षत्रियवर्ण के पुरुष से उत्पन्न सन्तान अर्थात् सारथि का काम करने वाले का है।

तस्यां वैदेहको विशः॥३॥

कृष्णमित्रटीका :- ब्राह्मण्यां वैश्यात्, विदेहेषु भवः॥३॥[४]

हिन्दी अर्थ :- वैदेहक- यह एक पुल्लिङ्ग नाम ब्राह्मणवर्ण की स्त्री और वैश्यवर्ण के पुरुष से उत्पन्न सन्तान का है॥३॥

रथकारस्तु माहिष्यात्करण्यां यस्य संभवः।

कृष्णमित्रटीका :- रथं करोति॥[५]

हिन्दी अर्थ :- रथकार- शूद्रवर्ण की स्त्री और वैश्यवर्ण के पुरुष से उत्पन्न कन्या में, वैश्यवर्ण की स्त्री और क्षत्रियवर्ण के पुरुष से उत्पन्न सन्तान का यह एक पुल्लिङ्ग नाम हैं।

स्याच्चण्डालस्तु जनितो ब्राह्मण्यां वृषलेन यः॥४॥

कृष्णमित्रटीका :- वृषलेन शूद्रेण॥४॥[६]

हिन्दी अर्थ :- चण्डाल- यह एक पुल्लिङ्ग नाम ब्राह्मणवर्ण की स्त्री और शूद्रवर्ण के पुरुष से उत्पन्न सन्तान का है॥४॥

कारुः शिल्पी

कृष्णमित्रटीका :- करोति। 'कृवापा-' (उ. १. १) इत्युण्। शिल्पमस्यास्ति। द्वे॥[७]

1. M. अर्यात्र 2. The man born of a S'udra man and Ksatriya woman [1] 3. The son of a Ksatriya by a Brahmana woman [1] 4. The son of a Vais'ya by a Brahmana woman [1] 5. The son of a Mahisya man by a Karani woman [1] 6. The man born of a S'udra father and Brahmana mother [1] 7. Craftsman [2].

हिन्दी अर्थ :- १. कारु, २. शिल्पी- ये दो पुल्लिङ्ग नाम कारीगर के हैं।

संहतैस्तैर्द्वयोः श्रेणिः सजातिभिः।

कृष्णमित्रटीका :- शिल्पिभिः समुदितैः श्रेणिः। 'श्रिञ् सेवायाम्' (भ्वा. उ. से.)। 'बहि श्रि-' (उ. ४. ५१) इति निः। एकम्॥[१]

हिन्दी अर्थ :- श्रेणिः- यह एक पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग नाम एक जाति के कारीगरों के समूह का हैं।

कुलकः स्यात्कुलश्रेष्ठी

कृष्णमित्रटीका :- कुलं कायति। द्वे 'महरा'॥[२]

हिन्दी अर्थ :- १. कुलक, कुलिक इति पाठे, २. कुलश्रेष्ठी- ये दो पुल्लिङ्ग नाम कुलीन कारीगर के हैं।

मालाकारस्तु मालिकः॥५॥

कृष्णमित्रटीका :- मालाऽस्यास्ति[३]। 'ब्रीह्या-दिभ्यश्च' (५. २. ११६) इति ठन्॥५॥[४]

हिन्दी अर्थ :- १. मालाकार, २. मालिक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम माली के हैं॥५॥

कुम्भकारः कुलालः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- कुं भूमिं लालयति। द्वे॥[५]

हिन्दी अर्थ :- १. कुम्भकार, २. कुलाल- ये दो पुल्लिङ्ग नाम कुम्भकार (कुम्हार) के हैं।

पलगण्डस्तु लेपकः।

कृष्णमित्रटीका :- पलं मांसमिव मृदं गण्डति। लिम्पति। द्वे 'राज' (लोके)॥[६]

हिन्दी अर्थ :- १. पलगण्ड, २. लेपक-ये दो पुल्लिङ्ग नाम मकान आदि में चूना आदि लगाने वालों के हैं।

तन्तुवायः कुविन्दः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- तन्तून् वयति। 'ह्वावामाश्च' (३. २. २) इत्यण्। कुं भुवं विन्दति। द्वे 'जोलहा' (लोके)॥[७]

हिन्दी अर्थ :- १. तन्तुवाय, २. कुविन्द- ये दो पुल्लिङ्ग नाम कपड़ा बुनने वाले जुलाहे के हैं।

1. A company of craftsmen of the same caste [1] 2. An artisan of eminent birth [1] 3. M. मालास्यास्ति 4. Gardener or garland-meker [2] 5. Potter [2] 6. Mason [2] 7. Weaver [2].

तुन्नवायस्तु सौचिकः ॥६॥

कृष्णमित्रटीका :- तुन्नं छिन्नं वयति। सूची शिल्पमस्य। द्वे। 'दरजी' (लोके)॥६॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. तुन्नवाय, २. सौचिक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम दर्जी के हैं॥६॥

रङ्गाजीवश्चित्रकारः

कृष्णमित्रटीका :- रङ्गेणाजीवति। द्वे 'चितरे' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. रङ्गजीव, २. चित्रकर- ये दो पुल्लिङ्ग नाम कपड़े को रंगने या चित्रकारी करने वाले रंगसाज के हैं।

शस्त्रमार्जोऽसिधावकः।

कृष्णमित्रटीका :- शस्त्रं मार्ष्टि। अण् (३. २. १.)। असिं धावति। 'शिकिलीगर' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. शस्त्रमाज, २. असिधावक -ये दो पुल्लिङ्ग नाम शस्त्रों की सफाई, मरम्मत या सान चढ़ाने वाले के हैं।

पादूकृच्चर्मकारः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- पादूः पादत्राणं करोति। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. पादूकृत्, २. चर्मकार- ये दो पुल्लिङ्ग नाम चमार के हैं।

व्योकारो लोहकारकः ॥७॥

कृष्णमित्रटीका :- 'व्यो' इत्यव्ययं लोह-वाचि॥७॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. व्योकार, २. लोहकारक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम लोहार के हैं॥७॥

नाडिन्धमः स्वर्णकारः कलादो रुक्मकारकः[6]।

कृष्णमित्रटीका :- नार्डी वंशनालीं धमति। 'खित्यनव्ययस्य' (६. ३. ६६) इति ह्रस्वः। कलामादत्ते। चत्वारि॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. नाडिन्धम, २. स्वर्णकार, ३. कलाद, रुक्मकारक- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम सुनार के हैं।

1. Tailor [2] 2. Painter [2] 3. Furbisher of weapons [2] 4. Shoe-maker [2] 5. Blacksmith [2] 6. B. and K. रुक्मकारके 7. Goldsmith [4].

स्याच्छाङ्खिकः काम्बविकः

कृष्णमित्रटीका :- शङ्खः शिल्पमस्य। कम्बुः शिल्पमस्य। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. शाङ्खिक, २. काम्बविक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम शङ्ख की चूड़ी आदि बनाने वाले (चुरिहार) के हैं।

शौल्विकस्ताम्रकुट्टकः ॥८॥

कृष्णमित्रटीका :- शुल्वं शिल्पमस्य। ताम्रं कुट्टयति। द्वे 'ठठेर' (लोके)॥८॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. शौल्विक, २. ताम्रकुट्टक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम ताँबे के बर्तन आदि बनाने वाले के हैं॥८॥

तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारश्च काष्ठतट्।

कृष्णमित्रटीका :- 'तक्षो रत्नकर्ता जटितो रत्नविक्रयी' "जवाहिरी"। तक्षति। 'युवृषि-' (उ. १. १५७) इत्यादिना कनिन्। 'वर्ध छेदने' (चु. प. से.)। वर्धं करोति। बाहुलकाड्‌डिः। 'त्वक्षू तनूकरणे' (भ्वा. प. से.)। पञ्च॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. तक्षा, २. वर्धकि, ३. त्वष्टा, ४. रथकार, ५. काष्ठतट्- ये पांच पुल्लिङ्ग नाम बढ़ई के हैं।

ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः

कृष्णमित्रटीका :- ग्रामतक्षा। 'ग्रामकौटाभ्यां तक्ष्णः' (५. ४. ९५) इति टच्[4]॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. ग्रामाधीन, २. ग्रामतक्ष- ये दो पुल्लिङ्ग नाम ग्राम के बढ़ई के हैं।

कौटतक्षोऽनधीनकः ॥९॥

कृष्णमित्रटीका :- कुट्यां भवः। कौटः स्वतन्त्रः॥९॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१. कौटतक्ष, २. अनधीनक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम स्वतन्त्र बढ़ई के हैं॥९॥

क्षुरिमुण्डिदिवाकीर्तिर्नापितान्तावसायिनः।

कृष्णमित्रटीका :- क्षुरोऽस्यास्ति[7]। मुण्डं करोति। 'मुण्डमिश्र-' (३. १. २१) इति णिच्। ग्रह्यादित्वात् (३. १. १३४) णिनिः। दिवाकीर्तिरस्य।

1. Dealer (in shell) [2] 2. Coppersmith [2] 3. Carpenter [5] 4. M. इत्यच् 5. A village carpenter [2] 6. An independent carpenter [1] 7. M. क्षुरोस्यास्ति.

न आपितः। 'आप्लृ व्याप्तौ' (स्वा. प. अ.)। णिजन्तात् क्तः। अन्तुमवसातुं शीलमस्य। स्यतेर्णिनीः (३. २. ७८)। 'आतो युच्' (७. ३. ३३)। पञ्च॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. क्षुरी, २. मुण्डी, ३. दिवाकीर्तिः, ४. नापित, ५. अन्तावसायी- ये पांच पुल्लिङ्ग नाम नाई, हजाम के हैं।

निर्णेजकः स्याद्रजकः

कृष्णमित्रटीका :- निर्णेनेक्ति। ण्वुल् (३. १. १३३)। रजति। द्वे 'धोबी' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. निर्णेजक, २. रजक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम धोबी के हैं।

शौण्डिको मण्डहारकः ॥१०॥

कृष्णमित्रटीका :- शुण्डा सुरा पण्यमस्य। मण्डं सुराग्ररसं हरति। द्वे 'कलवार' (लोके)॥१०॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. शौण्डिक, २. मण्डहारक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम कलवार यां मदिरा बनाने वाले के हैं॥१०॥

जावालः स्यादजाजीवः

कृष्णमित्रटीका :- जवं वेगमालाति जवालोऽजः[4], तस्यायम्। अजा आजीवोऽस्य[5]। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. जावाल, २. अजाजीव- ये दो पुल्लिङ्ग नाम गड़ेरिया के हैं।

देवाजीवस्तु[7] देवलः।

कृष्णमित्रटीका :- देवैराजीवति। देवं देवस्वत्वम् (आलाति)। 'आतः-' (३. ३. १०६) कः॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. देवाजीवी, २. देवल- ये दो पुल्लिङ्ग नाम पण्डा, पुजारी आदि के हैं।

स्यान्माया शाम्ब

कृष्णमित्रटीका :- शम्बरस्य दैत्यभेदस्येयम्। द्वे॥[9]

हिन्दी अर्थ :- १. माया, २. शाम्बरी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम जादू के हैं।

मायाकारस्तु प्रातिहारिकः ॥११॥

1. Barber [5] 2. Washerman [2] 3. Distiller and seller of spiritous liquors [2] 4. M. जवालोजः 5. M. आजीवोस्य 6. Goat-herd [2] 7. B. and K. देवाजीवी तु 8. The attendant upon an idol [2] 9. Jugglery [2].

कृष्णमित्रटीका :- प्रतिहारो व्याजः प्रयोजनमस्य। 'ऐन्द्रजालिकस्य' द्वे॥११॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. मायाकार, २. प्रातिहारिक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम जादूगर के हैं॥११॥

शैलालिनस्तु शैलूषा जायाजीवाः कृशाश्विनः। भरता इत्यपि नटाः

कृष्णमित्रटीका :- शिलालिना प्रोक्तं नटसूत्रमधीयते। 'पराशर्य-' (४. ३. ११०) इति णिनिः। शिलूषस्य ऋषेरपत्यम्। जायया जीवन्ति। कृशाश्वेन प्रोक्तं नटसूत्रमधीयते। भरतस्य मुनेः शिष्याः। नटति। षट्॥[2]

हिन्दी अर्थ :- शैलाली, २. शैलूष, ३. जायाजीव, ४. कृशाश्वी, ५. भरत, ६. नट- ये छः पुल्लिङ्ग नाम नट के हैं।

चारणास्तु कुशीलवाः ॥१२॥

कृष्णमित्रटीका :- चारयन्ति कीर्तिम्। कुशीलं वान्ति। 'वन्दिविशेषस्य' द्वे॥१२॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. चारण, २. कुशीलव- ये दो पुल्लिङ्ग नाम स्तुति करने वाले बन्दी विशेष (कत्थक) के हैं॥१२॥

मार्दङ्गिका मौरजिकाः

कृष्णमित्रटीका :- मृदङ्गवादनं शिल्पमस्य। मुरजः शिल्पमस्य। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- मार्दङ्गिक, २. मौरजिक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम मृदङ्ग बजाने वाले के हैं।

पाणिवादास्तु पाणिघाः।

कृष्णमित्रटीका :- पाणिं वादयति। पाणिं हन्ति। 'पाणिघताऽद्यौ शिल्पिनि' (३. २. ५५) द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. पाणिवाद, २. पाणिघ- ये दो पुल्लिङ्ग नाम हाथ की ताली बजाकर बाजा के अनुकरण करने वाले के हैं।

वेणुध्माः स्युर्वैणविकाः

कृष्णमित्रटीका :- वेणुं धमन्ति। वेणोर्विकारः वैणवम्। 'ओरञ्' (४. ३. १३९)। वैणवं शिल्पमस्य द्वे॥[6]

1. Juggler [2] 2. Actor [6] 3. Singer dancer [2] 4. Drummer [2] 5. Striking with the hand; a drummer or one who plays upon any hand-instrument [2] 6. Flute-player [2].

हिन्दी अर्थ :- १. वेणुध्म, २. वैणविक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम वंशी या मुरली बजाने वाले के हैं।

वीणावादास्तु वैणिकाः ॥१३॥

कृष्णमित्रटीका :- वीणा शिल्पमस्य। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- वीणावाद, २. वैणिक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम वीणा बजाने वाले के हैं॥१३॥

जीवान्तकः शाकुनिकः

कृष्णमित्रटीका :- शकुनान् हन्ति। 'पक्षिमत्स्य' (४. ४. ३५) इति ठक्। द्वे 'चिरैमार' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. जीवान्तक, २. शाकुनिक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम बहेलिये अर्थात् चिड़ीमार के हैं।

द्वौ वागुरिकजालिकौ।

कृष्णमित्रटीका :- वागुलया जालेन च चरति। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. वागुरिक, २. जाटिक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम जाल से पशु-पक्षी, मछली आदि मारने वाले के हैं।

वैतंसिकः कौटिकश्च मांसिकश्च समं त्रयम्॥१४॥

कृष्णमित्रटीका :- वीतंसेन मृगादिबन्धनादिना चरति। कटेन मृगादिबन्धनयन्त्रेण चरति। मांसं पण्यमस्य॥१४॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१. वैतंसिक, २. कौटिक, ३. मांसिक- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम मांस बेचने वाले वधिक आदि के हैं॥१४॥

भृतको भृतिभुक्कर्मकरो वैतानिकोऽपि सः।

कृष्णमित्रटीका :- भृञः (भ्वा. उ. अ.) क्तः (३. २. १०२)। भृतिं वेतनं भुङ्क्ते। वेतनेन जीवति। ठक् (४. ४. १२)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. भृतक, २. भृतिभुक्, ३. कर्मकर, ४. वैतनिक- ये चार पुल्लिङ्ग नाम मजदूरी या वेतन ग्रहण करने वाले नौकर के हैं।

वार्तावहो वैवधिकः

कृष्णमित्रटीका :- वार्तां वहति। ठक्। द्वे 'कबरि (ड़ि) ओ' (लोके)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. वार्तावह , २. वैवधिक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम संदेशवाहक या काँवर, वहियाँ (वहँगी) ढोने वाले के हैं।

भारवाहस्तु भारिकः॥१५॥

कृष्णमित्रटीका :- भारोऽस्यास्ति[1]। 'अतः' (५. २. ११५) म (ठ) न्॥१५॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. भारवाह, २. भारिक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम बोझ ढोन वाले कुली आदि के हैं॥१५॥

विवर्णः पामरो नीचः प्राकृतश्च पृथग्जनः।
निहीनोऽपसदो जाल्मः क्षुल्लकश्चेतरश्च सः॥१६॥

कृष्णमित्रटीका :- विगतो वर्णोऽस्य[3]। पामानं राति। निकृष्टामीं लक्ष्मीं चिनोति। प्रकृतौ भवः। सज्जनेभ्यः पृथग्भूतो जनः। नितरां हीनः। अपकृष्टे सीदति। अच् (३. १. १३४)। जालं करोति। बाहुलकान्मः। क्षुधं लाति। कः (३.२. ३)। इतं शीतं राति। दश॥१६॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१. विवर्ण, २. पामर, ३. नीच, ४. प्राकृत, ५. पृथग्जन, ६. निहीन, ७. अपसद, ८. जाल्म, ९. क्षुल्लक, १०. इतर- ये दस पुल्लिङ्ग नाम नीच के हैं॥१६॥

भृत्ये दासेयदासेरदासगोप्यक चेटकाः।
नियोज्यकिंकरप्रेष्यभुजिष्यपरिचारकाः॥१७॥

कृष्णमित्रटीका :- भ्रियते। 'भृञोऽसंज्ञायाम्[5]' (३. १. ११२) इति क्यप्। दास्या आपत्यम्। 'द्व्यचः' (४. १. १२१) इति ढक्। 'शुद्राभ्यो वा' (४. १. १३१) इति द्रक् च। दास्यते। 'दासृ दाने' (भ्वा. उ. से.)। गुपेः (भ्वा. प. से.) ण्यतः (३. १. १२४) कः। चिट परप्रेष्ये (भ्वा. प. से.)। कृञादिभ्यो वुन् (उ. ५)। नियुज्यते। ण्यत् (३. १. १२४)। किंचित् करोति। 'कियत्त दूबहुपु' (वा. ३. ३. २१) इत्यप्। प्रेष्यते। 'प्रादूतो-' (वा. ६. १. ८९) इति वृद्धिः। भुज्यते। 'रुचिभुजिभ्यां किष्यन्' (उ. ४. १७८)। परिचरति। ण्वुल् (३. १. १३३)॥१७॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. भृञ, २. दासेय, ३. दासेर, ४. दास, ५. गोप्यक, ६. चेटक, ७. नियोज्य, ८. किङ्कर, ९. प्रैष्य, १०. भुजिष्य, ११. परिचारक- ये ग्यारह पुल्लिङ्ग नाम नौकर (भृत्य) के हैं॥१७॥

---

1. Lutanist [2] 2. **Bird-Catcher or hunter of birds** [2] 3. **Fowler** [2] 4. **Seller of meat** [3] 5. **A hired labourer** [4] 6. **Pedlar** [2].

1. M. भारोस्यास्ति 2. **Porter** [2] 3. M. वर्णोस्य। 4. **A low or mean man** [10] 5. M. भृञो संज्ञायाम् 6. **Servant** [11].

पराचितपरिस्कन्दपरजातपरैधिताः

कृष्णमित्रटीका :- परेण आचितः। परिस्कन्दति। अच् (३. १. १३४)। 'परेश्च' (८. ३. ७४) इति वा षः। परस्माज्जातः परैरेधितः। चत्वारि॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. पराचित, २. परिस्कन्द, ३. परजात, ४. परैधित- ये चार पुल्लिङ्ग नाम अन्य से पालित (परपोषित) के हैं।

मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्यः शीतकोऽलसोऽनुष्ठाः॥१८॥

कृष्णमित्रटीका :- 'मदि स्तुत्यादौ' (भ्वा. आ. से.)। अच् (३. १. १३४) तुन्दं[2] परिमार्ष्टि। 'तुन्द शोकयोः-' (३.२. ५) इति कः। न लसति। अच् (३. १. १३४)। स्वार्थे ष्यञ् (वा. ५. १. १२४)। शीतं करोति। 'शीतोष्णाभ्यां कारिणि-' (५. २. ७२) इति कः। उष्णादन्यः॥१८॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. मन्द, २. तुन्दपरिमृज, ३. आलस्य, ४. शीतक, ५. अलस, ६. अनुष्ण- ये छः पुल्लिङ्ग नाम आलसी के हैं॥१८॥

दक्षे तु चतुरपेशलपटवः सूत्थान उष्णश्च।

कृष्णमित्रटीका :- दक्षते। 'दक्ष वृद्धौ' (भ्वा. आ. से.) अच् (३. १. १३४)। चत्यते। 'चते याचने' (भ्वा. उ. से.)। चते उरच् (उ. १. ३८)। 'पिश समाधौ' (तु. प. से.)। पेशं लाति। पाटयति। 'फलिपाटि-' (उ. १. १८) इति साधुः। सुष्ठु उत्थानमुद्योगोऽस्य। उष्णत्वमस्यास्ति॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. दक्ष, २. चतुर, ३. पेशल, ४. पटु, ५. सुत्थान, ६. उष्ण- ये छः पुल्लिङ्ग नाम चतुर, (बुद्धिमान्) के हैं।

चण्डालप्लवमातङ्गदिवाकीर्तिजनङ्गमाः॥१९॥
निषादश्वपचावन्तेवासिचाण्डाल-पुष्कशाः[5]।

कृष्णमित्रटीका :- चण्डते। 'पतिचण्डिभ्यामालञ्' (उ. १. ११७)। प्लवते। अच् (३. १. १३४)। मतङ्गस्या-पत्यम्। दिवा कीर्तिरस्याः। अधार्मिकान् जनान् गच्छति॥१९॥ निषीदति पापमस्मिन्। घञ् (३. ३. १२१)। श्वानं पचति। अच् (३. १. १३४)। ग्रामादेरन्ते वसति। णिनिः (३. २. ७८)। प्रज्ञाद्यणि 'चाण्डालः-अपि इत्येके'। तन्न। 'कुलालवरुडकर्मारनिषादचण्डालमित्रामित्रेभ्य-श्छन्दसि' (५. ४. ३६ सूत्रे) इति वार्तिकेन छन्दस्यण्वि-धानवैयर्थ्यात्। पुरं कषति। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। दश॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १.चण्डाल, २. प्लवः, ३. मातङ्ग, ४. दिवाकीर्ति, ५. जनङ्गम्, ६. निषाद, ७. श्वपच, ८. अन्तेवासा, ९. चाण्डाल, १०. पुक्कश- ये दस पुल्लिङ्ग नाम चाण्डाल के हैं।

भेदाः किरातशबरपुलिन्दा म्लेच्छजातयः॥२०॥

कृष्णमित्रटीका :- किरातादयो म्लेच्छाश्च चण्डालजातयः। 'कृ विक्षेपे' (तु. प. से.)। किरमतति। शवं राति। पुरि इन्दति। म्लेच्छति। अच् (३. १. १३४)॥२०॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१. किरातः, २. शबर, ३. पुलिन्दः, ४. म्लेच्छ- ये चार पुल्लिङ्ग नाम चाण्डाल (म्लेच्छ) के अवान्तर भेद (जातिविशेष) के हैं॥२०॥

व्याधो मृगवधाजीवो मृगयुर्लुब्धकोऽपि सः।

कृष्णमित्रटीका :- विध्यति। श्याद्व्यधा-' (३. १. १४१) इति णः। मृगवधेनाजीवति। मृगान्वधार्थं याति। लुब्ध इव॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. व्याध, २. मृगवधाजीव, ३. मृगयु, ४. लुब्धक- ये चार पुल्लिङ्ग नाम व्याध के हैं।

कौलेयक सारमेयः कुक्कुरो मृगदंशकः॥२१॥
शुनको भषकः श्वा स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- कुले भवः। 'कुलकुक्षि' (४. २. ९६) इति ढकञ्। सरमा शुनी, तदपत्यम्। 'कुक्कु' शब्दं राति॥२१॥ शुनति। 'शुन गतौ' (तु. प. से.)। क्वुन् (उ. २. ३२) भषति। 'भष पैशुन्ये' (भ्वा. प. से.)। 'टुओश्वि-' (भ्वा. प. से.)। श्वन्नुक्षन्-' (उ. १. १६०) इति साधुः। सप्त॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. कौलेयक, २. सारमेय, ३. कुक्कुर, ४. मृगदंशक॥२१॥ ५. शुनक- ये पांच पुल्लिङ्ग नाम कुत्ते के हैं।

---

1. One brought upting other [1], 2. M. तुन्द, 3. A lazy man [6], 4. A clever or expert man [6], 5. B. and K. पृक्कसाः,

---

1. Candala 2. Three tribes, namely Kirata, S'abara and Pulinda [1 each] 3. Hunter [4] 4. Dog [7].

अलर्कस्तु स योगितः।

कृष्णमित्रटीका :- अलमर्च्यते। 'युगि वर्जने' (भ्वा. प. से.)। ण्यन्तात् क्तः (३. २. १०२) 'मत्तशुनः' एकम्॥[1]

हिन्दी अर्थ :- अलर्क- यह एक पुल्लिङ्ग नाम पागल कुत्ते का हैं।

श्वा विश्वकद्रुर्मृगयाकुशलः

कृष्णमित्रटीका :- मृगयायां कुशलः। श्वा। विश्वकं द्रवति। एकम्॥[2]

हिन्दी अर्थ :- विश्वकद्रुः- यह एक पुल्लिङ्ग नाम शिकारी कुत्ते का है।

सरमा शुनी॥२२॥

कृष्णमित्रटीका :- सरं मति। शुनी। गौरादिः (४. १. ४१)। द्वे॥२२॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. सरमा, २. शुनी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम कुतिया के हैं॥२२॥

विट्चरः शूकरो[4] ग्राम्यः

कृष्णमित्रटीका :- विशं विष्टां चरति। एकम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- विट्चर- यह एक पुल्लिङ्ग नाम ग्रामीण सूकर का है।

वर्करस्तरुणः पशुः॥[6]

आच्छोदनं मृगव्यं स्यादाखेटो मृगया स्त्रियाम्॥२३॥

कृष्णमित्रटीका :- आच्छ (च्छि) द्यतेऽनेन[7]। मृगा व्यय्यन्तेऽत्र[8]। 'व्यय गतौ' (भ्वा. उ. से.)। डः (वा. ३. २. १०१)। आखिट्यते। 'खिट त्रासे' (भ्वा. प. से.)। मृग्यतेऽत्र[9]। 'परिचर्यामृगया-' (वा. ३. ३. १०१) इति साधुः॥२३॥[10]

हिन्दी अर्थ :- तरुणः पशुः- वर्कर- यह एक पुल्लिङ्ग नाम जवान पशु का है।

१. आच्छोदनम्, २. मृगयम्, ३. आखेट, ४. मृगया- ये चार नाम क्रम से दो नपुंसकलिङ्ग, एक पुल्लिङ्ग, एक स्त्रीलिङ्ग शिकार के हैं॥२३॥

---

1. **A mad dog** [2] 2. **Hund** [1] 3. **Bitch** [2] 4. B. सूकरो 5. **A village hog** [1] 6. **Any young animal** [1] 7. M. आच्छद्यतेनेन 8. M. व्यय्यन्तेत्र 9. M. मृग्यतेत्र 10. **Hunting** [4].

दक्षिणारुर्लुब्धयोगाद्दक्षिणेर्मा कुरङ्गकः।

कृष्णमित्रटीका :- दक्षिणे अरुरस्य। दक्षिणे ईर्ममस्य। 'दक्षिणेर्मा लुब्धयोगे' (५. ४. १२६) इति साधु॥[1]

हिन्दी अर्थ :- दक्षिणेर्मा- यह एक पुल्लिङ्ग नाम व्याध के मारने से दक्षिण अङ्ग में घाव वाले मृग आदि पशु का है।

चौरैकागारिकस्तेनदस्युतस्करमोषकाः॥२४॥
प्रतिरोधिपरास्कन्दिपाटच्चरमलिम्लुचाः।

कृष्णमित्रटीका :- चुरा शीलमस्य। 'क्षत्रादिभ्यो णः' (४. ४. ६२)। एकागारं प्रयोजनमस्य। 'एकागादिकट् चोरे' (५. १. ११३)। स्तेनयतिं 'स्तेन चौर्ये' (चु. उ. से.)। 'दसु उपक्षये' (दि. प. से.)। 'जनिमनिदसिभ्यो युः' (उ. ३. २०)। तत्करोति। 'तद्बृहतोः-' (ग. ६. १. १५७) इति साधुः। मुष्णाति। ण्वुल् (३. १. १३३)॥२४॥ प्रतिरोद्धुं शीलमस्य। णिनिः (३. २. ७८)। परान् अस्कन्दितुं शीलमस्य। पटत् चरति पटच्चरम्, तस्यायम्। 'मल धारणे' (भ्वा. आ. से.)। इन् (उ. ४. ११७)। मलिं म्लोचति। 'म्लुच स्तेये' (भ्वा. प. से.)। दश॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. चौर, २. ऐकागारिक, ३. स्तेन, ४. दस्यु, ५. तस्कर, ६. मोषक॥२४॥, ७. प्रतिरोधी, ८. परास्कन्दी, ९. पाटच्चर, १०. मलिम्लुच- ये दस पुल्लिङ्ग नाम चोर के हैं।

चौरिकास्तैन्यचौर्ये च स्तेयम्

कृष्णमित्रटीका :- चौरस्य भावः कर्म वा। मनोज्ञादित्वात् (५. १. १३३) वुञ्। स्तेनस्य भावः। ष्यञ् (५. १. १२४)। चौरस्य कर्म। 'स्तेनाद्यन्नलोपश्च' (५. १. १२५) चौरकर्मणः चत्वारि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. चौरिका, २. स्तैन्यम्, ३. स्तेयम्, ४. चौर्यम्- ये क्रम से एक स्त्रीलिङ्ग और तीन नपुंसकलिङ्ग नाम चोरी कार्य के हैं।

लोप्त्रं तु तद्धनम्॥२५॥

कृष्णमित्रटीका :- लुप्यते। ष्ट्रन् (उ. ४. १५८)। एकम्॥२५॥[4]

---

1. **Wounded on the right side** (a deer) [1] 2. **Thief** [10] 3. **Theft** [4], 4. **The property stolen** [1].

हिन्दी अर्थ :- लोप्त्रम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम चोरी के धन का हैं॥२५॥

वितंसस्तूपकरणं बन्धने मृगपक्षिणाम्।

कृष्णमित्रटीका :- वितंस्यते। 'मृगादिबन्धन-साधनस्य' एकम्॥[1]

हिन्दी अर्थ :- वितंस- यह एक पुल्लिङ्ग नाम पशुपक्षियों को फँसाने के लिए जाल आदि फन्दा का है।

उन्माथः कूटयन्त्रं स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- उन्मथ्यतेऽनेन[2]। घञ् (३. ३. १२१)। कूटस्वरूपं यन्त्रम्। 'मृगादिबन्धनयन्त्रस्य' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. उन्माथ, २. कूटयन्त्रम्- ये नाम क्रम से एक पुल्लिङ्ग और एक नपुंसकलिङ्ग पशु-पक्षियों को फँसाने वाले यन्त्र के हैं।

वागुरा मृगबन्धनी॥२६॥

कृष्णमित्रटीका :- अवा (गुरते)। 'गुरी हिंसायाम्' (तु. प. से.)। मृगो बध्यतेऽनया[4]। 'जालविशेषस्य' द्वे॥२६॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. वगुरा, २. मृगबन्धनी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम पशु या मृगको फँसाने के जाल विशेष के हैं॥२६॥

शुल्वं वराटकः स्त्री तु रज्जुस्त्रिषु वटी गुणः।

कृष्णमित्रटीका :- शुल्वयति। 'शुल्व विसर्गे' (चु. प. से.)। वरमटति। सृज्यते। 'सृजेरसुम् च' (उ. १. १५)। चात्सलोपः। वटति। 'वट वेष्टने' (भ्वा. प. से.)। गुण्यते। 'गुण आमन्त्रणे' (चु. उ. से.)। पञ्च॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. शुल्वम्, २. वराटकम्, ३. रज्जु, ४. वटी, ५. गुण- ये पांच नाम क्रम से दो नपुंसक-लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग एक स्त्रीलिङ्ग एक पुल्लिङ्ग रस्सी (उवहनि) के हैं।

उद्घाटनं घटीयन्त्रं सलिलोद्वाहनं प्रहेः॥२७॥

कृष्णमित्रटीका :- उद्घाट्यतेऽनेन[7]। 'घट संघाते' (चु. उ. से.)। घटीनां यन्त्रम्। प्रहेः कूपात्। सलिलमुद्वाह्यतेऽनेन[8]। द्वे॥२७॥[9]

हिन्दी अर्थ :- १. उद्घाटनम्, २. घटीयन्त्रम्- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम कुँए से पानी निकालने वाले परवट, मोंट रहट आदि के हैं॥२७॥

पुंसि वेमा वापदण्डः

कृष्णमित्रटीका :- वयति, अनेन। 'वेञः सर्वत्र' (उ. ४. १४९) इति मनिन्। डुवप् (भ्वा. उ. से.)। घञ् (३. ३. १८)। वापस्य दण्डः। केचित् 'वाय' इत्यन्तस्थमध्यं पठन्ति। तत्र वेञो घञि 'आतो यु (क्)-' (७. ३. ३३)। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. वेमा, २. वापदण्ड- ये दो नाम क्रम से एक नपुंसकलिङ्ग पुल्लिङ्ग कपड़ा बुनते समय जिससे सूत बराबर किया जाता है, जुलाहों के उस अस्त्र विशेष के हैं।

सूत्राणि नरि तन्तवः।

कृष्णमित्रटीका :- सूत्र्यते। 'सूत्र वेष्टने' (चु. उ. से.)। नरि पुंसि। तन्यते। 'सितनि-' (उ. १. ६९) इति तुन्। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. सूत्रम्, २. तन्तु- ये दो नाम क्रम से एक नपुंसकलिङ्ग और एक पुल्लिङ्ग सूत के हैं।

वणिर्व्यूतिः स्त्रियौ तुल्ये

कृष्णमित्रटीका :- 'वण शब्दे' चुरादिः। 'अच इः' (उ. ४. १३८)। विशिष्टा ऊतिः। वेञः क्तिन् (३.३. ९७)। 'वस्त्रादिव्यूतेः' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. वाणि, २. व्यूति- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम वस्त्र आदि को बुनने के हैं।

पुस्तं लेप्यादिकर्मणि॥२८॥

कृष्णमित्रटीका :- 'पुस्त आदरादौ' (चु. प. से.)। एकम्॥२८॥[4]

हिन्दी अर्थ :- पुस्तम्- यह एक नाम मिट्टी कपड़े या चमड़े आदि से लीपने या पुतली बनाने का है॥२८॥

पाञ्चालिका[5] पुत्रिका स्याद्वस्त्रदन्तादिभिः कृता।

कृष्णमित्रटीका :- पञ्चालदेशे भवा। 'जनपदतदवध्योः' (४. २. १२४) इति वुञ्। पुत्रीव। द्वे॥[6]

---

1. **A net for contining beasts and birds** [7] 2. M. उन्मथ्यतेनेन 3. **A trap for deers, birds & c.** [2] 4. M. बध्यतेनया 5. **A trap for catching deers** [2] 6. **Rope** [5] 7. M. उद्घाट्यतेनेन 8. M. सलिलमुद्वाह्यतेनेन 9. **The rope and bucket for a well** [2].

1. **Loom** [2] 2. **Thread** [2] 3. **Weaving** [2] 4. **Plasterings painting; anointing** [1] 5. **B. prefers** पञ्चालिका 6. **Doll** [2].

हिन्दी अर्थ :- १. पञ्चालिका, २. पुत्रिका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम हाथी के दाँत या कपड़े आदि की पुतली के हैं।

पिटकः पेटकः

कृष्णमित्रटीका :- पेटति। 'पिट संघाते' (भ्वा. प. से.)। अच्। ण्वुलि (३. १. १३३) पेटकः। द्वे 'पेटरी' (लोके)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. पिटक, २. पेटक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम पेटी आदि के हैं।

पेटा मञ्जूषा

कृष्णमित्रटीका :- मज्जति। 'मस्जेर्नुम् च' (उ. ४. ७७) इत्यूषन्। द्वे 'संदूष (ख)' (लोके)[2]। 'चत्वार्येकार्थानि' इत्यन्ये।

हिन्दी अर्थ :- मञ्जूषा- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम पेटी झपोली आदि के हैं।

अथ विहङ्गिका॥२९॥

भारयष्टिः

कृष्णमित्रटीका :- विहङ्ग इव॥२९॥ भारस्य यष्टिः। द्वे 'कावडि' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. विहङ्गिका, २. भारयष्टि- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम बहँगी (वहियाँ) के हैं।

तदालम्बि शिक्यं काचः

कृष्णमित्रटीका :- तामालम्बितुं शीलमस्य। शक्नोति। पृषोदरादि (६. ३. १०९)। 'कच बन्धने' (भ्वा. आ. से.) घञ् (३. ३. १२१) द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१. शिक्यम्, २. काच- ये दो नाम क्रम से एक नपुंसकलिङ्ग और एक पुल्लिङ्ग बहँगों में झूलते हुए सिकहर के हैं।

अथ पादुका।

पादूरुपानत् स्त्री

कृष्णमित्रटीका :- पद्यते। णित् (उ. १. ८५) स्वार्थे कन्। पाद पानह्यते। 'णह बन्धने' (दि. उ. अ.)। क्विप् (वा. ३. ३. ९४)। 'नहिवृति-' (६. ३. ११६) इति दीर्घः॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १.पादुका, २. पादू, ३. उपानत् - ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम जूता खड़ाऊँ आदि के हैं।

सैवानुपदीना पदायता॥३०॥

कृष्णमित्रटीका :- पदस्यानु। अनुपदं बद्धा। 'अनुपदसर्वा-' (५. २. ९) इति खः। पदायता। पदवद्दीर्घा। 'मोजा' लोके॥३०॥[1]

हिन्दी अर्थ :- अनुपदीना- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम पैतावा या मौजे का है॥३०॥

नध्री वध्री वरत्रा स्याद्

कृष्णमित्रटीका :- नह्यतेऽनया[2]। 'दाम्नी-' (३. २. १८२) इति ष्ट्रन्। वर्धते। 'वृधिवपिभ्यां रन्' (उ. २. २७)। वरं त्रायते। 'चर्ममयरज्जोः' त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. नध्री, २. वध्री, ३. वरत्रा- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम चमड़े की रस्सी (पेटी) के हैं।

अश्वादेस्ताडनी कशा।

कृष्णमित्रटीका :- ताड्यतेऽनया। 'तड आघाते' (चु. प. से.)। कशति। 'कश शब्दे' । एकं 'कोड़ा' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- कशा- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम कोड़ा या चाबुक का है।

चाण्डालिका तु कण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी॥३१॥

कृष्णमित्रटीका :- चण्डालेन कृता। 'कुला (ला) दिभ्यो वुञ्' (४. ३. ११८)। 'कडि मदे' (भ्वा. प. से.)। बाहुलकादोलच्। कण्डोलस्य चण्डालस्य वीणा॥ त्रीणि 'किंगिरी' (लोके)॥३१॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. चाण्डालिका, २. कण्डोल-वीणा, ३. चण्डालवल्लकी- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम चण्डाल की वीणा (किंगरी) के हैं॥३१॥

नाराची स्यादेषणिका

कृष्णमित्रटीका :- स्वल्पो नाराचो बाणभेदः। गौरादिः (४. १. ४१)। इष्यतेऽनया। ल्युट् (३. ३. ११७)। कः। 'सुवर्णतुलायाः' द्वे। 'कांटा' (लोके)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. नाराची, २. एषणिका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम सोना आदि तौलने वाले काँटे के हैं।

---

1. Basket [2] 2. Box [2] 3. A pole for carrying burdens [2] 4. A string so fastened to the yoke as to support burdens [2] 5. Shoe; slipper [3].

1. A shoes of the length of the foot [1] 2. M. नह्यतेनया 3. A leather strap [3] 4. Whip [1] 5. The lute of a Candala [3] 6. The scale of a goldsmith [2].

शाणस्तुनिकषः कषः।

कृष्णमित्रटीका :- शण्यते। 'शण दाने' (भ्वा. प. से.)। घञ् (३. ३. १९)। निकषति। 'कष[1] हिंसायाम्'। (भ्वा. प. से.)। 'सुवर्णपरीक्षापाषाणस्य' त्रीणि। 'कसवटी' (लोके)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. शाण, २. निकष, ३. कष- ये तीन पुल्लिङ्ग नाम कसौटी सुवर्ण की परीक्षा करने वाले पाषाण-विशेष या सान के हैं।

व्रश्चनः पत्रपरशुः

कृष्णमित्रटीका :- वृश्च्यतेऽनेन[3]। पत्रमिव परशुः। 'सुवर्णादिच्छदनद्रव्यस्य' द्वे। 'सुलाखी' (लोके)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. व्रश्चन, २. पत्रपरशु- ये दो पुल्लिङ्ग नाम सोना आदि को काटने वाली छीनी (हथियार विशेष) के हैं।

ईषिका[5] तूलिका समे॥३२॥

कृष्णमित्रटीका :- ईषति। 'ईष उञ्छे' (भ्वा. प. से.) क्वुन् (उ. २. ३२)। तूल निष्कर्षे (भ्वा. प. से.)। 'वीरणादिशलाकायाः' द्वे॥३२॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. एषिका, २. तूलिका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम चित्र रँगने वाली कूची (ब्रुस) के हैं॥३२॥

तैजसावतंनी मूषा

कृष्णमित्रटीका :- तेजसो[7] विकारः। सुवर्णादिरावर्त्यते पच्यतेऽस्याम्[8]। 'मूष स्तेये' (भ्वा. प. से.)। कः (३. ३. १३५)। द्वे 'धरिया' (लोके)॥[9]

हिन्दी अर्थ :- १. तेजसावर्तनी, २. मूषा- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम सोना-चाँदी गलाने की धरिया (मिट्टी का पात्र-विशेष) के हैं।

भस्त्रा चर्मप्रसेविका।

कृष्णमित्रटीका :- 'भस दीप्तौ' (जु. प. से.)। 'हुयामा-' (उ. ४. १६७) इति त्रन्। चर्मणा प्रसीव्यते। द्वे॥[10]

हिन्दी अर्थ :- १. भस्त्रा, २. चर्मप्रसेविका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम माथी या धौकनी के हैं।

1. M. कर्ष 2. Touch-stone [3] 3. M. वृश्च्यतेनेन 4. File [2] 5. K. एषिका 6. The brush or pencil of a painter [2] 7. M. तेजसा 8. M. पच्यतेस्याम् 9. Crucible [2] 10. Bellows [2].

आस्फोटनी वेधनिका

कृष्णमित्रटीका :- आस्फोट्यतेऽनया[1]। विध्यतेऽनया[2]। 'मुक्तादिवेधिन्याः' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. आस्फोटनी, २. वेधनिका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम मोती आदि में छिद्र करने वाली वर्मी के हैं।

कृपाणी कर्तरी समे॥३३॥

कृष्णमित्रटीका :- कृपामणति। कर्तनं कर्तं तं राति। द्वे॥३३॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. कृपाणी, २. कर्तरी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम सोना आदि काटने वाली कैंची के हैं॥३३॥

वृक्षादनो[5] वृक्षभेदी

कृष्णमित्रटीका :- वृक्षमत्ति। वृक्षं भेत्तुं शीलमस्य। 'काष्ठभक्षणस्य' द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. वृक्षादनी, २. वृक्षभेदी- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम लकड़ी काटने वाले वसुला, कुल्हाड़ी आदि हथियार के हैं।

टङ्कः पाषाणदारणः।

कृष्णमित्रटीका :- टङ्कयति। 'टकि बन्धे' (चुरादिः)। पाषाणो दार्यतेऽनेन[7]। द्वे 'टांकी' (लोके)॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. टङ्क, २. पाषाणदारण- ये दो पुल्लिङ्ग नाम पत्थर फोड़ने वाले टाँकी, घन आदि हथियार के हैं।

क्रकचोऽस्त्री करपत्रम्

कृष्णमित्रटीका :- 'क्र' इति कचति। 'कच शब्दे' (भ्वा. आ. से.)। करात्पतति। द्वे 'आरा' (लोके)॥[9]

हिन्दी अर्थ :- १. क्रकच, २. करपत्रम्- ये दो नाम क्रम से एक पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग, एक नपुंसकलिङ्ग लकड़ी चीरने वाले आरा, आरी नामक हथियार के हैं।

आरा चर्मप्रभेदिका॥३४॥

1. M. आस्फोट्यतेनया 2. M. विध्यतेनया 3. A sharp-pointed instrument for perforating shells and jewels [2] 4. Scissor [2] 5. B. वृक्षादनी 6. Hatchet [2] 7. M. दार्यतेनेन 8. The chisel of a stone-cutter [2] 9. Saw [2].

कृष्णमित्रटीका :- आ ऋच्छति। 'आरा शस्त्र्याम्' इति साधुः। चर्मणः प्रभेदिका। द्वे 'रायी' (लोके)॥३४॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. आरा, २. चर्मप्रभेदिका- ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम चमड़ा काटने वाले हथियार के हैं॥३४॥

सूर्मी स्थूणायः प्रतिमा

कृष्णमित्रटीका :- शोभना ऊर्मिरस्याः। गौरादि (४. १. ४१)। तिष्ठति। 'रास्नासास्नास्थूणा-' (उ. ३. १५) इति साधुः। अयसो लोहस्य प्रतिमा। त्रीणि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. सूर्मी, २. स्थूणा, ३. अयः प्रतिमा- ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम लोह की बनी हुई मूर्ति के हैं।

शिल्पं कर्म कलादिकम्।

कृष्णमित्रटीका :- 'शील समाधौ' (भ्वा. प. से.)। 'शष्पशिल्प-' (उ. ३. २८) इति साधुः। कला नृत्यगीतादिश्चतुः षष्टिः॥ एकम्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- शिल्पम्- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम कला-कौशल के हैं।

प्रतिमानं प्रतिबिम्बं प्रतिमा प्रतियातना प्रतिच्छाया॥३५॥
प्रतिकृतिरर्चा पुंसि प्रतिनिधिः

कृष्णमित्रटीका :- प्रतिकृत्य मीयतेऽनेन[4]। प्रतिकृतिर्बिम्बस्य। प्रतियात्यतेऽनया[5]। यत निकारोपस्कारयोः' (चुरादिः)॥३५॥ प्रकृष्टाच्छाया। प्रकृष्ट कृतिः। 'अर्च पूजायाम्' (भ्वा. प. से.)। 'गुरोश्च-' (३. ३. १०३) इत्यः। प्रतिनिधीयते सदृशीक्रियते। 'प्रतिमायाः' अष्टौ॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रतिमानम्, २. प्रतिबिम्बम्, ३. प्रतिमा, ४. प्रतियातना, ५. प्रतिच्छाया॥३५॥, ६. प्रतिकृति, ७. अर्चा, ८. प्रतिनिधि- ये आठ नाम क्रम से दो नपुंसकलिङ्ग पाँच स्त्रीलिङ्ग और एक पुल्लिङ्ग प्रतिमा तस्वीर, फोटो के हैं।

उपमोपमानं स्यात्।

1. **The awl of a shoemaker** [2] 2. **An iron image or statue** [3] 3. **Art** (fine or mechanical) [1] 4. M. मीयतेनेन 5. M. प्रतियात्यतेनया 6. **Imagel; Picture** [8].

कृष्णमित्रटीका :- 'उपमातेर्भावे अङ्' (३. ३. १०६)। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. उपमा, २. उपमानम्- ये दो नाम क्रम से एक स्त्रीलिङ्ग और एक नपुंसकलिङ्ग तादृश, समानता (उपमा) के है, किसी के मत से तस्वीर के वाचक भी हैं।

वाच्यलिङ्गाः समस्तुल्यः सदृक्षः सदृशः सदृक्॥३६॥
साधारणः समानश्च

कृष्णमित्रटीका :- समति। 'सम वैक्लव्ये' (भ्वा. प. से.)। तुलया संमितः। समान इव पश्यति। दृग्दृश् (६. ३. ८९) इति कञ्क्विनौ क्सश्च॥३६॥ सह आधारणेन वर्तते। समानमानमस्य। सप्त वाच्यलिङ्गा अमी॥[2]

हिन्दी अर्थ :-१. सम, २. तुल्य, ३. सदृक्ष, ४. सदृश, ५. सदृक्॥३६॥, ६. साधारण, ७. समान- ये सात त्रिलिङ्ग नाम सदृश के बराबर हैं।

स्युरुत्तरपदे त्वमी।
निभसंकाशनीकाशप्रतीकाशोपमादयः॥३७॥

कृष्णमित्रटीका :- निभादय उत्तरपदस्था एव सदृशवचना वाच्यलिङ्गाः। पितृनिभः पुत्रः, मातृनिभा कन्या। नियतं भाति। सं काशते। नितरां काशते। 'इकः काशे' (६. ३. १२३) इति दीर्घः॥३७॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. निभ, २. संकाश, ३. नीकाश, ४. प्रतीकाश, ५. उपमा- ये पांच त्रिलिङ्ग नाम जिसके अन्त में रहते हैं, उसके सदृश अर्थ को कहते हैं। जैसे- पितृनिभः पुत्रः, मातृनिभा कन्या, देवनिभमपत्यम्। आदि शब्द से भूत, रूप, कल्प का ग्रहण है॥३७॥

कर्मण्या तु विधाभृत्याभृतयो भर्म वेतनम्।
भरण्यं भरणं मूल्यं निर्वेशः पण इत्यपि॥३८॥

कृष्णमित्रटीका :- कर्मणा संपद्यते। 'कर्मवेषाद्यत्' (५. १. १००)। कर्माणि विधीयन्तेऽनया[4]। भ्रियतेऽनया[5]। संज्ञायां समज-' (३. ३. ९९) इति क्यप्। क्तिनि भृतिः। भृञः (भ्वा. उ. अ.) मनिन् (उ. ७. ४. १४४)। वीयतेऽनेन[6]। 'नु वी गत्यादौ' (अ. प. अ.)।

1. **Resemblance or similarity** [2] 2. **Equal** (as a thing to another) [5] 3. **Like** (only when compunded) [5] 4. M. विधीयन्तेनया 5. M. भ्रियतेनया 6. M. वीयतेनेन.

'वीपतिभ्यां तनन्' (उ. ३. १५०)। भरणे साधु। भ्रियतेऽनेन[1]। मूलेनानाम्यम्। निर्विशन्ति (न्ते) अनेन। घञ्। पण्यते। नित्यं पणः-' (३. ३. ६६) इत्यप्। एकादश॥३८॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. कर्मण्या, २. विधा, ३. भृत्या, ४. भृति, ५. भर्म, ६. वेतनम्, ७. भरण्यम्, ८. भरणम्, ९. मूल्यम्, १०. निर्वेश, ११. पण- ये ग्यारह नाम क्रम से चार स्त्रीलिङ्ग, पाँच नपुंसकलिङ्ग और दो पुल्लिङ्ग वेतन, मजदूरी के हैं॥३८॥

सुरा हलिप्रिया हाला परिस्रुद्वरुणात्मजा।
गन्धोत्तमा प्रसन्नेराकदम्बर्यः परिस्रुताः॥३९॥
मदिरा कश्यमद्येचापि[3]

कृष्णमित्रटीका :- सुष्ठु राति। हलिनो वलस्य प्रिया। हलत्यङ्गानि। 'हल विलेखने' (भ्वा. प. से.)। ज्वलादिः (३. १. १४०)। परितः स्रवति। क्विप्। तुक् (६. १. ७१)। वरुणालयोऽपि[4] वरुणः, तस्यात्मजा। गन्धेनोत्तमा। सीदतेः क्तः (३. ४. ७२)। इं कामं राति। कादम्बं राति। गौरादिः (४. १. ४१)। परितः स्त्रुताः॥३९॥ माद्यन्त्यनया। 'इषिमदिमुदि-' (उ. १. ५१) इत्यादिना किरच्। कशामर्हति कश्यम्[5]। माद्यन्त्यनेन। 'गदमद-' (३. १. १००) इति यत्। त्रयोदश॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. सुरा, २. हलिप्रिया, ३. हाला, ४. परिस्रुत, ५. वरुणात्मजा, ६. गन्धोत्तमा, ७. प्रसन्ना, ८. इरा, ९. कादम्बरी, १०. परिस्रुता॥३९॥, ११. मदिरा, १२. कश्यम्, १३. मद्यम्- ये तेरह नाम क्रम से ग्यारह स्त्रीलिङ्ग और दो नपुंसकलिङ्ग मदिरा के हैं।

अवदंशस्तु भक्षणम्।

कृष्णमित्रटीका :- अवदश्यते। 'पानरुचिजननभक्षणस्य' एकम्॥[7]

हिन्दी अर्थ :- अवदंश- यह एक पुल्लिङ्ग नाम पदिरा पान के समय नमकीन आदि चबाने का हैं।

शुण्डा पानं मदस्थानम्

कृष्णमित्रटीका :- शुन्यते शुण्डा। 'शुन गतौ' (तु. प. से.)। 'अमन्ताड्डः' (उ. १. ११४)। पिबन्त्यत्र। मदस्य स्थानम्। त्रीणि 'पानगृहस्य'॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. शुण्डा, २. पानम्, ३. मदस्थानम्- ये तीन नाम क्रम से एक स्त्रीलिङ्ग और दो नपुंसकलिङ्ग सुरापान के स्थान के हैं।

मधुवारा मधुक्रमाः॥४०॥

कृष्णमित्रटीका :- मधुनो वारः। मधुनः क्रमः। 'मधुपानावसरस्य' द्वे॥४०॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. मधुवार, २. मधुक्रम- ये दो पुल्लिङ्ग नाम शराब पीने की वारी (अवसर) के हैं॥४०॥

मध्वासवो माधवको मधुमाध्वीकमद्वयोः।

कृष्णमित्रटीका :- मधूकपुष्पं मधु, तस्यासवः। मधुना कृतः। 'कुलालादिभ्यो वुञ्' (४. ३. ११८)। मन्यते। 'फलिपाटि-' (उ. १. १८) इति साधु। मधुन इयं माध्वी। 'मृद्वीका द्राक्षा, तस्या विकारः'- इत्यन्ये। अद्वयोः क्लीबम्। चत्वारि। 'द्वौ द्वौ' इत्यन्ये॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. मध्वासव, २. माधवक, ३. मधु, ४. माध्वीकम्- ये चार नाम क्रम से दो पुल्लिङ्ग दो नपुंसकलिङ्ग महुए की शराब के हैं।

मैरेयमासवः सी (शी) धुः

कृष्णमित्रटीका :- मिरायां देशविशेषे भवम् 'नद्यादिभ्यो ढक् (४. २. ९७)। आसूयते। 'षूञ् अभिषवे' (स्वा. उ. अ.)। 'ऋदोरप्' (३. ३. ५७)। शेरतेऽनेन[3]। 'शीङोधुक् (उ. ४. ३८)। त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. मैरयम्, २. आसव, ३. शीधु- ये तीन नाम क्रम से प्रथम नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय पुल्लिङ्ग, तृतीय पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग, ऊख के रस से या शाक से बनी हुई मदिरा के हैं।

मेदको जगलः समौ॥४१॥

कृष्णमित्रटीका :- मेद्यति। 'कृञादिभ्यो वुन्' (उ. ५. ३५)। भृशं गलति। 'गल अदने' (भ्वा. प. से.)। यङ्लुगान्तादच् (३. १. १३४)। संज्ञापूर्वकत्वान्न दीर्घः (७. ४. ८३)॥४१॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. मेदक, २. जगल- ये दो पुल्लिङ्ग नाम मदिरा के काढ़े या मदिरा के लिये पिसे हुए पदार्थ के हैं॥४१॥

---

1. M. भ्रियतेनेन 2. **Wage; salary; remuneration** [11] 3. B. कश्यमद्येऽपि 4. M. वरुणालयोपि 5. M. कश्यः 6. **Wine** [13] 7. **Any pungent food which excites thirst** [1] 8. **Dram-shop** [3].

1. **Tippling** [2] 2. **Sweet spiritous liquor made from honey or vine** [4] 3. M. शेरतेनेन 4. **Rum** [3] 5. **The liquor used for distillation** [2].

सन्धानं स्यादभिषवः

कृष्णमित्रटीका :- धाञो ल्युट् (३. ३. ११३)। 'आम्रादिसंधानस्य' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. सन्धानम्, २. अभिषव- ये दो नाम क्रम से एक नपुंसकलिङ्ग और एक पुल्लिङ्ग मदिरा निर्माण के हैं।

किण्वं पुंसि तु नग्नहूः

कृष्णमित्रटीका :- 'कण शब्दे' (भ्वा. प. से.)। 'उल्वादयश्च' (उ. ४. ९५) इति साधुः। नग्नस्य ह्वानम्। ह्वेञ् (भ्वा. उ. अ.)। क्विप् (वा. ३. ३. ९४)। 'नानाद्रव्यकृतसुराबीजस्य' द्वे। 'मत्तनग्नकृताह्वानस्य' इत्यन्ये॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. किण्वम्, २. नग्नहू- ये दो नाम क्रम से प्रथम नपुंसकलिङ्ग द्वितीय पुल्लिङ्ग चावल आदि से बनाये हुए मदिरा के बीज के हैं।

कारोत्तरः सुरामण्डः

कृष्णमित्रटीका :- कारेण क्रियया उत्तरः। सुराया मण्डः। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. कारोत्तर, २. सुरामण्ड- ये दो पुल्लिङ्ग नाम मदिरा के माँड़ के हैं।

आपानं पानगोष्ठिका॥४२॥

कृष्णमित्रटीका :- आसम्भूय पिबन्त्यत्र॥४२॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. आपानम्, २. पानगोष्ठिका - ये दो नाम क्रम से प्रथम नपुंसकलिङ्ग और द्वितीय स्त्रीलिङ्ग मदिरा पीने के स्थान के हैं॥४२॥

चषकोऽस्त्री पानपात्रम्

कृष्णमित्रटीका :- चष्यतेऽनेन। 'चष भक्षणे' (भ्वा. उ. से.)। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. चषक, २. पानपात्रम्- ये दो नाम क्रम से प्रथम पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय नपुंसकलिङ्ग शराब पीने के प्याले के हैं।

सरकोऽप्युनतर्षणम्।

1. Distillation or extraction of liquors [2] 2. The drug or seed used to cause fermentation in the manufacture of spirits [2] 3. The froth or scum of spiritous liquor during fermentation [2] 4. A drinking party [2] 5. Goblet or drinking vessel [2].

कृष्णमित्रटीका :- 'सङ्‌ गतौ'। 'इपि' शब्दात् 'सरकः' अप्यस्त्री। 'मद्यमानस्य' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. सरक, २. अनुतर्षणम्- ये दो नाम क्रम से प्रथम पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग,द्वितीय नपुंसकलिङ्ग शराब पीने या परोसने के हैं।

धूर्तोऽक्षदेवी कितवोऽक्षधूर्तो द्यूत्कृतसमाः॥४३॥

कृष्णमित्रटीका :- धूर्वति। 'हसिमृगृ-' (उ. ३. ८६) इति तन्। अक्षैर्दीव्यति। णिनिः (३. २. ७८)। कितेन वाति। अक्षेषु धूर्तः। पञ्च॥४३॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. धूत, २. अक्षदेवी, ३. कितव, ४. अक्षधूर्त, ५. द्यूतकृत्- ये पांच पुल्लिङ्ग नाम जुवाड़ी या जुवा खेलने वालों के हैं॥४३॥

स्युर्लग्नकाः प्रतिभुवः

कृष्णमित्रटीका :- 'आ (ओ) लस्जी-' (तु. आ. से.) क्तः (३. ४. ७२)। स्वार्थे कः। प्रतिनिधिर्भवति। द्वे 'जामिन' (लोके)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १.लग्नक, २. प्रतिभू- ये दो पुल्लिङ्ग नाम ऋण आदि में मध्यस्थ या जामिन होने वाले के हैं।

सभिका द्यूतकारकाः।

कृष्णमित्रटीका :- सभाद्यूतमस्यास्ति। ब्रीह्यादिः (५. २. १०९)। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. सभिक, २. द्यूतकारक- ये दो पुल्लिङ्ग नाम जुवा खेलने वाले (फडवाज) के हैं।

द्यूतोऽस्त्रियामक्षवती कैतवं पण इत्यपि॥४४॥

कृष्णमित्रटीका :- दिवेः (दि. प. से.) क्तः (३. ३. ११४)। अक्षाः पाशकाः सन्त्यस्याम्। कितवस्य कर्म। पणो ग्लहोऽस्त्यस्मिन्[5]॥४४॥[6]

हिन्दी अर्थ :-१. द्यूत, २. अक्षवती, ३. कैतवम्, ४. पण- ये चार नाम क्रम से प्रथम पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग, द्वितीय स्त्रीलिङ्ग, तृतीय, चतुर्थ पुल्लिङ्ग द्यूत (जुवा) क्रीड़ा के हैं॥४४॥

पणोऽक्षेषु ग्लहः

1. Drinking [2] 2. Gambler [5] 3. Surety [2] 4. One who keeps a gambling-house [2] 5. M. ग्लहोऽस्त्यस्मिन् 6. Gambling [5].

कृष्णमित्रटीका :- पण्यते उत्सृज्यते। ग्लह्यते। 'ग्लह आदाने' (भ्वा. आ. से.) 'द्यूते लाप्यमानस्य' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. पण, २. ग्लह- ये दो पुल्लिङ्ग नाम द्यूत में दाव पर रक्खे हुए रुपये आदि के हैं।

आक्षास्तु देवनाः पाशकाश्च ते।

कृष्णमित्रटीका :- अक्षति। 'अक्ष व्याप्तौ' (भ्वा. प. से.)। पाशयति, पशयति (वा)। 'पश बन्धने' चुरादिः। त्रीणि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. अक्ष, २. देवन, ३. पाशक - ये तीन पुल्लिङ्ग नाम पाशा के हैं।

परिणायस्तु शारीणां समन्तान्नयनेऽस्त्रियाम्॥४५॥

कृष्णमित्रटीका :- परितो वामदक्षिणतो नयनम्। एकम्॥४५॥[3]

हिन्दी अर्थ :- परिणाय- यह एक पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग नाम गोटी (शारी) को चलाने का हैं॥४५॥

अष्टापदं शारिफलम्

कृष्णमित्रटीका :- पङ्क्तौ अष्टौ पदान्यस्य। शारीणां फलम्। 'शारीणां खेलनाधारपट्टस्य' द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :-१.अष्टापदम्, २. शारिफलम्- ये दो नाम क्रम से एक पुल्लिङ्ग और एक नपुंसकलिङ्ग, द्यूत में गोटियों के बिठाने के आधार कपड़े या काष्ठ के बने हुए आधार विशेष के हैं।

प्राणिद्यूतं समाह्वयः।

कृष्णमित्रटीका :- प्राणिभिः कृतं द्यूतम्। सम्यगाहूयन्तेऽत्र[5]। 'पुंसि-' (३. ३. ११८) इति घः। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. प्राणिद्यूतम्, २. समाह्वय- ये दो नाम क्रम से एक नपुंसकलिङ्ग एक पुल्लिङ्ग बाजी रखकर पशु पक्षियों को लड़ाने के हैं।

उक्ता भूरिप्रयोगत्वादेकस्मिन्येऽत्र यौगिकाः॥४६॥
ताद्धर्म्यादन्यतो वृत्तावूह्या लिङ्गान्तरेऽपि ते।

इति शूद्रवर्गः॥१०॥

1. A thing staked in gambling [2] 2. Dice [3] 3. Moving a piece at chess, draughts & c. 4. Draught-board; Chess board 5. M. सम्यगाहूयन्तेत्र 6. Gambling with fighting animals.

कृष्णमित्रटीका :- यौगिका मार्दङ्गिकादयः। प्रचुरप्रयोगदर्शनादेकस्मिंल्लिङ्गे उक्तास्ते तद्धर्म-योगादन्यत्र वृत्तौ सत्यां लिङ्गान्तरेऽपि[1] बोध्याः। यथा-'मार्दङ्गिककुलम्' इत्यादि॥

इति शूद्रवर्गः॥१०॥

हिन्दी अर्थ :- इस वर्ग में जो मालाकार, मार्दङ्गिक, वैणविकादि यौगिक शब्द पुल्लिङ्ग में अधिक प्रयोग देखे जाने के कारण पुल्लिङ्ग में कहे गये हैं, उन्हें योगवशात् स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग में भी समझना चाहिये। जैसे-मालाकारी स्त्री, मालाकारं कुलम्। जो अयौगिक करण, मालिक, कुम्भकारादि शब्द कहे गये हैं, वे जातिवाचक होने के कारण शूद्रादिवत् लिङ्गान्तर में भी प्रयुक्त होते हैं॥४६॥

॥ इति शूद्रवर्गविवरणम्॥

इति श्रीमदाचार्यकृष्णमित्र कृतायां
अमरकोशटीकायां
द्वितीयः काण्डः समाप्तः।

---✻✻✻---

1. M. लिङ्गान्तरेपि।

॥श्री॥

अमरकोशः

कृष्णमित्रविरचितया संस्कृतटीकया वैकुण्ठीहिन्दीव्याख्या आङ्गलभाषानुवादेन च समलङ्कृतः

तृतीयं काण्डम्

अथ विशेष्यनिघ्नवर्गः ॥१॥

विशेष्यनिघ्नैः संकीर्णैर्नानार्थैरव्ययैरपि।
लिङ्गादि संगहैर्वर्गाः सामान्ये वर्गसंश्रयाः ॥१॥

कृष्णमित्रटीका :- श्रीरामाय नमः। सामान्ये सामान्यकाण्डेऽस्मिन्[1] विशेष्यनिघ्नादिभिः शब्दैः, उपलक्षिता वर्गा उच्यन्ते।कीदृशाःवर्गाः?स्वर्गादिवर्गाः पूर्वोक्ताः संश्रय आश्रयो येषाम्। सुकृत्यादयो देवासुरमनुष्येष्वेव संबध्यन्ते। लिङ्गान्यादौ येषां तानि तेषां संग्रहाः। आदिना नाम (मा) नि॥१॥

हिन्दी अर्थ :- अथ विशेष्यनिघ्नवर्गः। इस सामान्य तृतीयकांड में विशेष्यनिघ्न जिसमें विशेषणों का वर्णन है - जैसे सुकृती आदि। संकीर्ण जिसमें विशेषण तो है परन्तु उन विशेषणों के विशेष्य कई अर्थों में हो सकते हैं, जैसे 'कर्मपरायण' जो शब्द है वह शिल्पविद्या पढ़ाना आदि अनेक काम में जो चतुर हो उसको कह सकते हैं। नानार्थ जिसमें एक ही शब्द के अनेक अर्थ हैं, जैसे 'अब्द' यह एक नाम बादल का और वर्ष का है। अव्यय जिसमें अव्ययों के अर्थ हैं। लिंगादिसंग्रह जिसमें प्रत्ययों से लिंग का ज्ञान होता है। इन नामों वाले वर्गो के द्वारा पूर्वोक्त स्वर्ग आदि वर्गों से संघ रखने वाले ऐसे वर्ग कहे जावेंगे॥१॥

स्त्रीदाराद्यैर्यद्विशेष्यं यादृशं[2] प्रस्तुतं पदैः।
गुणद्रव्यक्रियाशब्दास्तथा स्युस्तस्य भेदकाः ॥२॥

कृष्णमित्रटीका :-स्त्रीदाराद्यैः पदैर्यादृशैर्यल्लिङ्गसंख्याकैर्यादृशं विशेष्यं स्त्रीदारादिकं प्रकान्तम्, तस्य गुणादिशब्दास्तथा तादृग्लिङ्गवचनाः भेदका विशेषणानि भवन्ति। गुणशब्दाः यथा- 'प्रवीणा स्त्री, प्रवीणाः दाराः, प्रवीणं कलत्रम्'। द्रव्यशब्दो यथा- 'दण्डिनी स्त्री, दण्डिनो दाराः'। क्रिया शब्दाः 'पाचिका स्त्री' इत्यादि॥२॥

हिन्दी अर्थ :- इस शास्त्र में जैसे स्त्री आदि भेद करके बहुधा लिंग का निर्णय है वैसे ही यहाँ भी हो इस भ्रम को दूर करने के लिये व्यापक लक्षण कहते हैं। जैसे स्त्री, दार, आदि पदों से विशेष्य बनता है उसी प्रकार उसके गुण द्रव्य क्रियावाचक शब्द विशेषण बनते हैं। अर्थात् जैसा विशेष्य होगा उसी लिंग और वचन का उसका विशेषण होगा। सुकृती आदि गुण द्रव्य क्रियावाचक विशेषण हैं इनको विशेष्य के लिङ्ग के अनुसार करने से उदाहरण बनता है- 'सुकृतिनी स्त्री, सुकृतिनो दाराः, सुकृति कुलम्'। दंडिनी स्त्री, दंडिनो दाराः, दंडि कुलम्'। पाचिका स्त्री, पाचका दाराः, पाचकं कुलम्' आदि॥२॥

सुकृती पुण्यवान् धन्यः

कृष्णमित्रटीका :-सुकृतमस्यास्ति। धने साधुः। त्रीणि॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. सुकृती, २. पुण्यवान्, ३. धन्यः- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम भाग्यवान् के हैं।

महेच्छस्तु महाशयः।

कृष्णमित्रटीका :-महतीच्छाऽस्य[2]। महानाशयोऽस्य[3]। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. महेच्छः, २. महाशयः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम बड़े अभिप्राय वाले के हैं।

हृदयालुः सहृदयः

कृष्णमित्रटीका :-प्रशस्तं हृदयमस्य। सह हृदयेन। द्वे॥[5]

1. M. सामान्यकाण्डे अस्मिन् 2. M. यादृशैः.

1. **A. lucky man** [3] 2. M. महतीच्छास्य 3. M. महानाशयोस्य 4. **A noble-minded** or maganimous person [2] 5. **A good hearted man** [2].

हिन्दी अर्थ :- १. हृदयालुः, २. सुहृदयः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम अच्छे (हृदय) मन वाले के हैं।

महोत्साहो महोद्यमः ॥३॥

कृष्णमित्रटीका :- महानुत्साहोऽस्य[1]। 'दुस्साध्येऽपि तत्परः' द्वे॥३॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. महोत्साहः, २. महोद्यमः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम अति उत्साही के हैं॥३॥

प्रवीणे निपुणाभिज्ञविज्ञनिष्णातशिक्षितः।
वैज्ञानिकः कृतमुखः कृती कुशल इत्यपि॥४॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रकृष्टा वीणाऽस्य[3]। निपुणति। 'पुण कर्मणि शुभे' (तु. प. से.)। कः (३. १. १३५)। अभिजानाति। 'आतश्च-' (३. १. १६१) इति कः। नितरां स्नातः। 'निनदीभ्यां स्नातेः' (८. ३. ८१) इति षः। शिक्षा संजाताऽस्य[4]। विज्ञानं बुद्धिः प्रयोजनमस्य। 'तत्र नियुक्तः' (४. ४. ६१) इति ठक्। कृतं संस्कृतं मुखमस्य। कृतं प्रशस्तं कर्मास्य। कुशं लाति॥४॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रवीणः, २. निपुणः, ३. अभिज्ञः, ४. विज्ञः, ५. निष्णातः, ६. शिक्षितः, ७. वैज्ञानिकः, ८. कृतमुखः, ९. कृती, १०. कुशलः- ये दस त्रिलिङ्ग नाम शिक्षित या लोक में चतुर के हैं॥४॥

पूज्यः प्रतीक्ष्यः

कृष्णमित्रटीका :- पूज्यते। प्रतीक्ष्यते। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. पूज्यः, २. प्रतीक्ष्यः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम पूजा (सत्कार) करने योग्य के हैं।

सांशयिकः संशयापन्नमानसः।

कृष्णमित्रटीका :- संशयमापन्नः द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. सांशयिकः, २. संशयापन्नमानसः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम सन्देह युक्त के हैं।

दक्षिणीयो[8] दक्षिणार्हस्तत्र दक्षिण्य इत्यपि॥५॥

कृष्णमित्रटीका :- दक्षिणामर्हति। 'कडंक (ग) रदक्षिणाच्छ च' (५. १. ६१)। 'दक्षिणायोग्यस्य' त्रीणि॥५॥[9]

हिन्दी अर्थ :- १. दक्षिणीयः, २. दक्षिणार्हः, ३. दक्षिण्यः- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम दक्षिणा देने योग्य ब्राह्मणादि के हैं। जहाँ दक्षिणीयः और दक्षिणार्हः है वहाँ दक्षिण्यः भी होता है, प्रशद्यण् करने पर 'दक्षिण्य' भी होगा॥५॥

स्युर्वदान्यस्थूललक्ष्यदानशौण्डा बहुप्रदे।

कृष्णमित्रटीका :- 'वदेरान्यः' (उ. ३. १०४)। स्थूलैर्महद्भिर्लक्ष्यते। ण्यत् (३. २. १२४)। दाने शौण्डः विख्यातः। 'बहुप्रदस्य' चत्वारि॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. वदान्यः, २. स्थूललक्ष्यः, ३. दानशौण्डः, ४. बहुप्रदः- ये चार त्रिलिङ्ग नाम अधिक दान करने वाले के हैं।

जैवातृकः स्यादायुष्मान्

कृष्णमित्रटीका :- जीवति। 'जीवेरातृकन्' (उ. १. ८०)। 'आयुष्मतः' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. जैवातृकः, २. आयुष्मान्- ये दो त्रिलिङ्ग नाम अधिक आयु वाले के हैं।

अन्तर्वाणिस्तु शास्त्रवित्॥६॥

कृष्णमित्रटीका :- अन्तर्वाण्यस्य। शास्त्रं वेत्ति॥६॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. अन्तर्वाणिः, २. शास्त्रवित् - ये दो त्रिलिङ्ग नाम शास्त्रज्ञ के हैं॥६॥

परीक्षकः कारणिकः

कृष्णमित्रटीका :- परीक्ष्यते। ण्वुल् (३. १. १३३)। करणैः प्रयोजनमस्य। ठक् (४. ४. ८)। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. परीक्षकः, २. कारणिकः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम परीक्षा करने वाले या ब्राह्मणादि की परीक्षा करके दान देने वाले दानाध्यक्ष के हैं।

वरदस्तु समर्धकः।

कृष्णमित्रटीका :- समृध्नोति। 'ऋधु वृद्धौ' (स्वा. प. से.)। ण्वुल् (३. १. १३३) द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. वरदः, २. समर्धकः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम वरदान देने वाले के हैं।

हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना हृष्टमानसः॥७॥

कृष्णमित्रटीका :- हर्षति। ताच्छील्ये चानश् (३. २. १२९)। विकुरुते। प्रकृष्टं मनोऽस्य[6]। चत्वारि॥७॥[7]

---

1. M. महानुत्साहोस्य 2. **A man possessed** of great energy [2] 3. M. वीणास्य 4. M. संजातास्य 5. **A learned** or proficient person [10] 6. **A venerable** person [2] 7. **A doubtful** person [2] 8. B. दक्षिणेयो 9. **A person** worthy of gift [3].

1. **A munificent** man [4] 2. **A long-lived person** [2] 3. **A very learned** scholar [2] 4. **Judge;** examiner [2] 5. **A benefactor** or granter of a boon [2] 6. M. मनोस्य 7. **A happy man** [4].

हिन्दी अर्थ :- १. हर्षमाणः, २. विकुर्वाणः, ३. प्रमनाः, ४. हृष्टमानसः- ये चार त्रिलिङ्ग नाम प्रसन्न चित्त वाले के हैं ॥७॥

दुर्मना विमना अन्तर्मनाः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- दुःस्थितं मनोऽस्य[1]। त्रीणि ॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. दुर्मनाः, २. विमनाः, ३. अन्तर्मनाः- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम उदास मन वाले के हैं।

उत्क उन्मनाः ।

कृष्णमित्रटीका :- उद्गतं मनोऽस्य[3]। उच्छब्दात्कन्। 'उत्कण्ठितमनसः' द्वे ॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. उत्कः, २. उन्मनाः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम उत्सुक या उत्कण्ठित के हैं।

दक्षिणे सरलोदारौ

कृष्णमित्रटीका :- दक्षते। 'द्रुदक्षिभ्यामिनन्' (उ. २. ५०)। सरं लाति। उद् आराति। आतः कः (३. १. १३६) त्रीणि ॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. दक्षिः, २. सरल, ३. उदारः- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम सरल स्वभाव वाले के हैं।

सुकलो दातृभोक्तरि ॥८॥

कृष्णमित्रटीका :- शोभना कलाऽस्य[6]। एकम् ॥८॥[7]

हिन्दी अर्थ :- सुकलः- यह एक त्रिलिङ्ग नाम दिल खोलकर दान देने वाले तथा खाने-पीने वाले का है ॥८॥

तत्परे प्रसितासक्तौ

कृष्णमित्रटीका :- तत्परमुत्तमं यस्य। प्रकर्षेण सितः। 'षिञ् बन्धने' (स्वा. उ. अ.)। आ सजति स्म। त्रीणि ॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. तत्परः, २. प्रसितः, ३. आसक्तः- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम तात्पर्य युक्त या कार्य में लगे हुए के हैं।

1. M. मनोस्य 2. **A sad man** [5] 3. M. मनोस्य 4. **An anxious person** [2] 5. **A courteous** man [3] 6. M. कलास्य 7. **A person** who is liberal in giving gifts and enjoying wealth [1] 8. **A man engaged** in any work [3].

इष्टार्थोद्युक्त उत्सुकः ।

कृष्णमित्रटीका :- इष्टो यः अर्थः तत्र य उद्युक्तः। उच्छब्द उद्योगार्थः सुशब्दः। शोभते। ततः कन्। द्वे ॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. इष्टार्थोद्युक्तः, २. उत्सुकः - ये दो त्रिलिङ्ग नाम अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए कार्य में लगे हुए के हैं।

प्रतीते प्रथितख्यातावित्तविज्ञातविश्रुताः ॥९॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रतीयते स्म। इणः (अ. प. अ.) क्तः। 'प्रथ प्रख्याने' (भ्वा. आ. से.)। क्तः (३. ४. ७२)। 'विद्लृ लाभे' (तु. उ. अ.)। 'वित्तो भोगप्रत्यययोः' (८. २. ५८) इति साधुः। षट् ॥९॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रतीतः, २. प्रथितः, ३. ख्यातः, ४. वित्तः, ५. विज्ञातः, ६. विश्रुतः- ये छः त्रिलिङ्ग नाम प्रसिद्ध या विख्यात के हैं ॥९॥

गुणैः प्रतीते तु कृतलक्षणाहितलक्षणौ

कृष्णमित्रटीका :- कृतमुच्चारितं लक्षणं नामास्य। आहतमभ्यस्तं लक्षणमस्य। 'गुणैः प्रसिद्धस्य' द्वे ॥१०॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. कृतलक्षणः, २. आहत-लक्षणः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम विद्या, शिल्प आदि किसी गुण से प्रसिद्ध के हैं।

इभ्य आढ्यो धनी

कृष्णमित्रटीका :- इभमर्हति। दण्डादिः (५. १. ६६) आध्यायति। (आ) तः कः (३. १. १३६)। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। 'बहुधनस्य' त्रीणि ॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. इभ्यः, २. आढ्यः, ३. धनी- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम धनी के हैं।

स्वामी त्वीश्वरः पतिरीशिता ॥१०॥

अधिभूर्नायको नेता प्रभुः परिवृढोऽधिपः ।

कृष्णमित्रटीका :- स्वमस्यास्ति। 'स्वामिन्नैश्वर्ये' (५. २. १२६)। ईष्टे। 'स्थेश-' (३. २. १७५) इति वरच्। 'पातेर्डतिः' (उ. ४. ५७)। ईष्टे। तृच् (३. १. १३३) ॥१०॥ अधिभवति। क्विप् (३. २. १७९)। णीञ्

1. **A person striving** for any desired object [2]. 2. **A famous man** [6] 3. **A man noted** for his good qualities [2] 4. **A rich man** [3].

(भ्वा. उ. से.) 'ण्वुल्तृचौ' (३. १. १३३)। प्रभवति। 'विप्रसंभ्य-' (३. २. १८०) इति डुः। 'वृहि वृद्धौ' (भ्वा. प. से.)। 'प्रभौ परिवृढः' (७. २. १२१) इति साधुः। अधिपाति। कः (३. १. १३६)। दश॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. स्वामी, २. ईश्वरः, ३. पतिः, ४. ईशिता॥१०॥, ५. अधिभूः, ६. नायकः, ७. नेता, ८. प्रभुः, ९. परिवृढः, १०. अधिपः- ये दस त्रिलिङ्ग नाम अधिपति मालिक के हैं।

अधिकर्द्धिः समृद्धः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- अधिका ऋद्धिरस्य। 'ऋधु (वृ) द्धौ' (स्वा. प. से.)। क्तः (३. ४. ७२)। 'अतिसम्पन्नस्य' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. अधिकर्द्धिः, २. समृद्धः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम अधिक धन वाले के हैं।

कुटुम्बव्यापृतस्तु यः ॥११॥

स्यादभ्यागारिकस्तस्मिन्नुपाधिश्च पुमानयम्।

कृष्णमित्रटीका :- कुटुम्बपोषणे व्यापृक्तः उद्युक्तः॥११॥ अभ्यागारे नियुक्तः। त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. कुटुम्बव्यापृतः २. अभ्यागारिकः, ३. उपाधिः- ये तीन नाम क्रम से दो त्रिलिङ्ग, एक नपुंसकलिङ्ग पुल्लिङ्ग परिवार के पालन-पोषण करने वाले के हैं।

वराङ्गरूपोपेतो यः सिंहसंहननो हि सः॥१२॥

कृष्णमित्रटीका :- वराणि श्रेष्ठानि अङ्गानि रूपाणि च यानि तैरुपेतः। सिंहस्येव संहननं देहोऽस्य[4]॥१२॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. सिंहसंहननः- यह एक त्रिलिङ्ग नाम सुन्दर सुडौल शरीरवाले का है॥१२॥

निर्धार्यः कार्यकर्ता यः संपतन् सत्त्वसंपदा।

कृष्णमित्रटीका :- धृञ् (भ्वा. उ. अ.) ण्यत् (३. १. १२४)। 'निर्वार्य' इति पाठे 'वृञ् वरणे' (स्वा. उ. से.)। सत्त्वस्य वित्तस्य संपदुत्कर्षः तया संपतन्संपद्यमानः। 'निस्सार्यकार्यकर्तुः' एकम्॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. निवार्यः- यह एक त्रिलिङ्ग नाम सत्व सम्पत्ति अर्थात् सुख-दुःख में हमेशा उत्साह से निःशंक होकर कार्य करने वाले का है।

अवाचि मूकः

कृष्णमित्रटीका :- न वागस्य। 'मू' इति कायति। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. अवाक्, २. मूकः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम गूँगे के हैं।

अथ मनोजवः स पितृसंनिभः॥१३॥

कृष्णमित्रटीका :- मनोजेऽभिलाषे[2] वसति। पितेव सम्यग्विभाति। 'पितृसमस्य' द्वे॥१३॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. मनोजवः, २. पितृसंनिभः - ये दो त्रिलिङ्ग नाम ज्ञान अवस्थादि के कारण पिता के सदृश पूज्य व्यक्ति के हैं॥१३॥

सत्कृत्यालङ्कृतां कन्यां यो ददाति स कूकुदः।

कृष्णमित्रटीका :- कोकति (ते)। 'कुक आदाने' (भ्वा. आ. से.)। पृषोदरादिः (६. ३. १०९) एकम्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. कूकुदः- यह एक त्रिलिङ्ग नाम अलङ्कार वस्त्रादि से कन्या को अलङ्कृत करके श्रेष्ठ वर को कन्यादान करने वाले का है।

लक्ष्मीवांल्लक्ष्मणः श्रीलः श्रीमान्

कृष्णमित्रटीका :- 'लक्ष्म्या अच्च' (ग. ५. २. १००) इति क्ष्मः। चत्वारि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. लक्ष्मीवान्, २. लक्ष्मणः ३. श्रीलः, ४. श्रीमान्- ये चार त्रिलिङ्ग नाम श्रीमान् (लक्ष्मीवान्) के हैं।

स्निग्धस्तु वत्सलः॥१४॥

कृष्णमित्रटीका :- 'स्निह प्रीतौ' (दि. प. अ.)। क्तः। 'वत्सांशा (सा) भ्यां कामबले' (५. २. १८) इति लच्॥१४॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. स्निग्धः, २. वत्सलः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम प्रेम (स्नेह) करने वाले के हैं॥१२॥

---

1. **Lord;** master [10] 2. **A prosperous** person [2] 3. **One who is diligent** in supporting a family [3] 4. M. देहोस्य 5. **A handsome person** [1] 6. **One who works** diligently [2].

1. A **mute** [2] 2. M. मनोजेभिलाषे 3. **A fatherly** child [2] 4. **One who gives** a girl in marriage with due ceremony and suitable decoration [1] 5. **A wealthy** or fortunate man [4] 6. **An affectionate** person [2].

स्याद्दयालुः कारुणिकः कृपालुः सूरतः समाः।

कृष्णमित्रटीका :- दयाऽस्यास्ति[1]। 'स्पृहिगृहि' (३. २. १५८) इत्यालुच्। करुणा शीलमस्य। ठक् (४. ४. ६१)। सुष्ठु उः शंभु, स्वि रतः। चत्वारि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. दयालुः, २. कारुणिकः, ३. कृपालुः, ४. सूरतः- ये चार त्रिलिङ्ग नाम दया करने वाले के हैं।

स्वतन्त्रोऽपावृतः स्वैरी स्वच्छन्दोनिरवग्रहः॥१५॥

कृष्णमित्रटीका :- स्व आत्मा तन्त्रं प्रधानमस्य। अपगतमावृतमावरणमस्य। स्वेनेरितुं शीलः। स्वः छन्दो-ऽभिप्रायोऽस्य[3]। निर्गतोऽवग्रहान्नियमनात्[4] पञ्च॥१५॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. स्वतन्त्रः, २. अपावृतः, ३. स्वैरी, ४. स्वच्छन्दः, ५. निरवग्रहः- ये पाँच त्रिलिङ्ग नाम स्वतन्त्र के हैं॥१५॥

परतन्त्रः पराधीनः परवान्नाथवानपि।

कृष्णमित्रटीका :- परः अधि उपर्यस्य पराधीनः। 'अषडक्ष-' (५. ४. ७) इति खः। परः स्वाम्यस्यास्ति। चत्वारि॥[6]

हिन्दी अर्थः- १. परतन्त्रः, २. पराधीनः, ३. परवान्, ४. नाथवान्- ये चार त्रिलिङ्ग नाम पराधीन के हैं।

अधीनो निघ्न आयत्तोऽस्वच्छन्दो गृह्यकोऽप्यसौ॥१६॥

कृष्णमित्रटीका :- इनमधिगतः। निहन्यते निगृह्यते। कः (वा. ३. ३. ५८)। आयत्यते। यतेः (भ्वा. आ. से.) क्तः (३. ४. ७२)। गृह्यते। 'पदास्वैरि-' (३. १. ११९) इति क्यप्॥१६॥[7]

हिन्दी अर्थः- १. अधीनः, २. निघ्नः, ३. आयत्तः, ४. अस्वच्छन्दः, ५. गृह्यकः- ये पाँच त्रिलिङ्ग नाम वश में रहने वाले अधीन के हैं॥१६॥

खलपूः स्याद्बहुकरः

कृष्णमित्रटीका :- खलं पुनाति। 'भुवं मार्जयतः' द्वे॥[8]

हिन्दी अर्थः- १. खलपूः, २. बहुकरः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम खलिहान या भूमि साफ करने वाले के हैं।

दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः।

कृष्णमित्रटीका :- दीर्घे सूत्रं व्यवस्था यस्य। 'विलम्बेन क्रियाकर्तुः' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थः- १. दीर्घसूत्रः, २. चिरक्रियः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम विलम्ब से कार्य करने वाले के हैं।

जाल्मोऽसमीक्ष्यकारी स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- जालयति। बाहुलकान्मः द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थः- १. जाल्मः, २. असमीक्ष्यकारी - ये दो त्रिलिङ्ग नाम विना विचारे ही कार्य करने वाले के हैं।

कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः॥१७॥

कृष्णमित्रटीका :- 'कुटि आलस्ये' (भ्वा. प. से.)। मन्दोऽलसः[3] एकम्॥१७॥[4]

हिन्दी अर्थः- कुण्ठः- यह एक त्रिलिङ्ग नाम मन्द गति से कार्य करने वाले का है॥१७॥

कर्मक्षमोऽलंकर्मीणः

कृष्णमित्रटीका :- कर्मसु क्षमः। अलं समर्थः कर्मणे। 'अषडक्ष-' (५. ४. ७) इति खः। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थः- १. कर्मक्षमः, २. अलङ्कर्मीणः - ये दो त्रिलिङ्ग नाम कार्य करने में समर्थ के हैं।

क्रियावान् कर्मसूद्यतः।

कृष्णमित्रटीका :- क्रियाऽस्यास्ति[6]। एकम्॥[7]

हिन्दी अर्थः- क्रियावान्- यह एक त्रिलिङ्ग नाम कार्य में संलग्न (लगे) तत्पर रहने वाले का है।

स कार्मः कर्मशीलो यः

कृष्णमित्रटीका :- कर्मशीलस्य। 'छत्रादिभ्यो णः' (४. ४. ६२)। द्वे॥[8]

हिन्दी अर्थः- १. कार्मः, २. कर्मशीलः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम फल की इच्छा न करते हुए सर्वदा कार्य करने वाले के हैं।

---

1. M. दयास्याति 2. **A kind man** [4] 3. M. छन्दोभिप्रायोस्य 4. M. निर्गतोवग्रहान्नियमनात् 5. **An independent man** [5]. 6. **A person dependent** on another [4] 7. **A dependent person** (in general) [5] 8. **Sweeper** [2].

1. **A man working** slowly [2] 2. **An inconsiderate** person [2] 3. M. मन्दोलसः 4. An indolent man [1] 5. **A person able** to do a work [2] 6. M. क्रियास्यास्ति 7. **A person engaged** in any work [2] 8. **An assiduous man** [2].

कर्मशूरस्तु कर्मठः ॥१८॥

कृष्णमित्रटीका :- कर्मणि शूरः। 'कर्मणि घटोऽठच्[1]' (५. २. ३५) 'प्रयत्नेन प्रारब्धकर्मसमापकस्य' द्वे॥१८॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. कर्मशूरः, २. कर्मठः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम यत्न पूर्वक प्रारम्भ किये हुए कार्य को समाप्त करने वाले के हैं॥१८॥

कर्म (भर) ण्यभुक्कर्मकरः

कृष्णमित्रटीका :- कर्मसु साधु। भरण्यं वेतनं भुङ्क्ते। 'कर्मणि भृतौ' (३. २. २२) इति टः। कर्मकरः। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. भरण्यभुक्, २. कर्मकरः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम मूल्य लेकर कार्य करने वाले मजदूर के हैं।

कर्मकारस्तु तत्क्रियः॥

कृष्णमित्रटीका :- तत्क्रियः कर्मकारक्रियः। 'यो वेतनं विना कर्म करोति तस्य' एकम्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. कर्मकारः- यह एक त्रिलिङ्ग नाम अवैतनिक कार्य करने वाले का है।

अपस्नातो मृतस्नातः

कृष्णमित्रटीका :- अपकृष्टं स्नातः। मृते स्नातः। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. अपस्नातः, २. मृतस्नातः - ये दो त्रिलिङ्ग नाम मरे हुए के उद्देश्य से स्नान किये हुए के हैं।

आमिषाशी तु शौष्कलः॥१९॥

कृष्णमित्रटीका :- आमिषमश्नाति। शुष्कं लाति तस्यायम्। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. आमिषाशी, २. शौष्कलः - ये दो त्रिलिङ्ग नाम मांस भक्षण करने वाले के हैं॥१९॥

बुभुक्षितः स्यात् क्षुधितो जिघत्सुरशनायितः।

कृष्णमित्रटीका :- बुभुक्षा जाताऽस्य[7]। 'वसतिक्षुधोः-' (७. २. ५२) इतीट्। अत्तुमिच्छुः। 'सनाशंस-' (३. २. १६८) इत्युः। अशनाया जाताऽस्य[8]। चत्वारि॥[9]

हिन्दी अर्थ :- १. बुभुक्षितः, २. क्षुधितः, ३. जिघत्सुः, ४. अशनायितः- ये चार त्रिलिङ्ग नाम भूखे व्यक्ति के हैं।

परान्नः परपिण्डादः

कृष्णमित्रटीका :- परान्नं नित्यमस्य। परपिण्डमत्ति। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. परान्नः, २. परपिण्डादः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम परान्न को खाकर जीवन व्यतीत करने वाले के हैं।

भक्षको घस्मरोऽद्मरः॥२०॥

कृष्णमित्रटीका :- भक्षयति। ण्वुल् (३. १. १३३)। 'सृघस्यदः क्मरच्' (३. २. १६०)। 'भक्षणपरस्य' त्रीणि॥२०॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. भक्षकः, २. घस्मरः, ३. अद्मरः- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम अधिक खाने वाले के हैं॥२०॥

आद्यूनः स्यादौदरिको विजिगीषाविवर्जिते॥

कृष्णमित्रटीका :- दिवेः क्तः (३. ४. ७२)। 'दिवोऽविजिगीषायाम्[3]' (८. २. ४९) इति नः। उदरे प्रसृतः। 'उदराट्ठगाद्यूने' (५. २. ६७)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. आद्यूनः, २. औदरिकः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम भूख से व्याकुल के हैं।

उभौ त्वात्मंभरिः कुक्षिंभरिः स्वोदरपूरके॥२१॥

कृष्णमित्रटीका :- आत्मानं च कुक्षिं च बिभर्ति। 'फलेग्रहिरात्मंभरिश्च' (३. २. २६) इति साधुः। चात्कुक्षिंभरिः द्वे॥२१॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. आत्मम्भरिः, २. कुक्षिंभरिः - ये दो त्रिलिङ्ग नाम अपने पेट भरने से मतलब रखनेवाले पेटू के हैं॥२१॥

सर्वान्नीनस्तु सर्वान्नभोजी

कृष्णमित्रटीका :- सर्वेषामन्नानि भुङ्क्ते। 'अनुपदसर्वान्न-' (५. २. ९) इति खः। द्वे॥[6]

---

1. M. घटोठच् 2. **A man completing** his work diligently [2] 3. **A hired labourer** or servant [2] 4. **A labourer performing** work without any remuneration [1] 5. **One who has** bathed after a death or funeral [2] 6. **Nonvegetarian** [2] 7. M. जातास्य 8. M. जातास्य 9. **A hungry man** [4].

1. **A person living** or subsisting on the food of others [2] 2. **A glutton** [2] 3. M. दिवोविजिगीषायाम् 4. **A voracious person** [2] 5. **A selfish man** Caring to feed his own belly [2] 6. **A person accepting** meals from every one [2].

हिन्दी अर्थ :- १. सर्वान्नीनः, २. सर्वान्नभोजी- ये दो त्रिलिङ्ग नाम सब जाति के अन्न को खाने वाले (औघड़) के हैं।

गृध्नस्तु गर्धनः।

लुब्धोऽभिलाषकस्तृष्णक्

कृष्णमित्रटीका :- 'गृधु अभिकाङ्क्षायाम्' (दि. प. से.)। 'त्रसिगृधि-' (३. २. १४०) इति क्नुः। 'जुचङ्क्रम्य' (३. २. १५०) इति युच्। 'लुभ गार्ध्ये' (दि. प. से.) क्तः (३. ४. ७२)। अभिलषति। 'लषपत' (३. २. १५४) इत्युकञ्। तृष्यति। 'स्वपितृषोर्नजिङ्' (३. २. १७२)। पञ्च॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. गृघ्नुः, २. गर्धनः, ३. लुब्ध, ४. अभिलाषुकः, ५. तृष्णक्- ये पाँच त्रिलिङ्ग नाम लोभी के हैं।

समौ लोलुपलोलुभौ ॥२२॥

कृष्णमित्रटीका :- गर्हितं लुम्पति। 'लुपसद' (३. १. २४) इति यङन्तादच्। भृशं लुभ्यति। यङ्न्तादच्। 'अतिलुब्धस्य' द्वे॥२२॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. लोलुपः, २. लोलुभः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम अधिक लोभी के हैं॥२२॥

सोन्मादः[3] तून्मदिष्णुः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- उन्माद्यति। तच्छीलः। अलंकृञादिना (३. २. १३६) इष्णुच्। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. सोन्मादः, २. उन्मदिष्णुः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम पागल के हैं।

अविनीतः समुद्धतः।

कृष्णमित्रटीका :- न विनीतः। हन्तेः क्तः। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. अविनीतः, २. समुद्धतः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम उद्धत के हैं।

मत्ते शौण्डोत्कटक्षीबाः

कृष्णमित्रटीका :- मदेः क्तः (३. ४. ७२)। शुण्डायां पानागारे भवाः। उद्गतः कट आवरणमस्य। 'क्षीबृ मदे' (भ्वा. आ. से.)। 'अनुपसर्गात्फुल्ल-' (८. २. ५५) इति साधु। चत्वारि॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. मत्तः, २. शौण्डः, ३. उत्कटः क्षीबः- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम मतवाले के हैं।

कामुके कमितानुकः ॥२३॥

कम्रः कामयिताभीकः कमनः कामनोऽभिकः।

कृष्णमित्रटीका :- कामयते। 'लषपत-' (३. २. १५४) इत्युकञ्। णिङ भावे तृच्। अनु कामयते। अभिकामयते। 'अनुकामिका-' (५. २. ७४) इति साधुः॥२३॥ 'नभिकम्पि-' (३. २. १६७) इति रः। 'अनुक-' (५.२. ७४) इति अभीकः साधुः। नव॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. कामुकः, २. कमिता, ३. अनुकः॥२३॥, ४. कम्रः, ५. कामयिता, ६. अभीकः, ७. कमनः, ८. कामनः, ९. अभिकः- ये नौ त्रिलिङ्ग नाम कामी प्राणी के हैं।

विधेयो विनयग्राही वचनेस्थित आश्रवः ॥२४॥

कृष्णमित्रटीका :- 'अचो यत्' (३. १. ९७)। विनयं गृह्णाति। आशृणोति। अच् (३. १. १३४) 'विधातुं शक्यस्य' चत्वारि॥२४॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. विधेयः, २. विनयग्राही, ३. वचनेस्थितः, ४. आश्रवः- ये चार त्रिलिङ्ग नाम आज्ञाकारी के हैं॥२४॥

वश्यः प्रणेयः

कृष्णमित्रटीका :- 'वशं गतः' (४. ४. ८६) यत्। प्रणीयते। यत् (३. १. ९७)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. वश्यः, २. प्रणेयः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम वश में रहने वाले के हैं।

निभृतविनीतप्रश्रिताः समाः।

कृष्णमित्रटीका :- भृञः (भ्वा. उ. अ.) क्तः (३. २. १०२) श्रिञः (भ्वा. उ. से.) क्तः (३. २. १०२)। 'विनययुक्तस्य' त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. निभृतः, २. विनीतः, ३. प्रश्रितः- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम विनीत (नम्र) के हैं।

धृष्टे धृष्णुः[5] वियातश्च

---

1. **A greedy person** [5] 2. **A very greedy man** [2] 3. B. उन्मदः 4. **A mad man** [2] 5. **An ill-behaved** person [2] 6. **An intoxicated man** [2].

1. **A lustful person** [9] 2. **An obedient person** [4] 3. **A submissive** man [2] 4. **A humble or** well-behaved person [4] 5. B. perfers धृष्णक्.

कृष्णमित्रटीका :- ञिधृषा (स्वा. प. से.) क्तः। 'त्रसिगृधि-' (३. २. १४०) इति क्नुः। 'धृषेश्च'। विरुद्धं यातं गमनमस्य। त्रीणि॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. धृष्टः, २. धृष्णक्, ३. वियातः- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम ढीठ (न डरने वाले) के हैं, अर्थात् निर्लज्ज के हैं।

प्रगल्भः प्रतिभान्विते॥२५॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रगल्भते। अच् (३. १. १३४)। प्रतिभया अन्वितः। द्वे॥२५॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रगल्भः, २. प्रतिभान्वितः - ये दो त्रिलिङ्ग नाम प्रतिभाशाली (नवीन बुद्धिवाले) के हैं॥२५॥

स्यादधृष्टे तु शालीनः

कृष्णमित्रटीका :- शालप्रवेशमर्हति। 'शाली -नकौपीने-' (५. २. २०) इति साधुः। 'सलज्जस्य' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. अधृष्टः, २. शालीनः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम लज्जा करनेवाले व्यक्ति के हैं।

विलक्षो विस्मयान्विते।

कृष्णमित्रटीका :- विरुद्धं लक्षयते, निष्प्रति-पत्तिरित्यर्थः द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. विलक्षः, २. विस्मयान्वितः - ये दो त्रिलिङ्ग नाम आश्चर्य से युक्त के हैं।

अधीरे कातरः

कृष्णमित्रटीका :- ईषत्तरति॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. अधीरः, २. कातरः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम भूख-प्यास रोगादि भय से व्याकुल के हैं।

त्रस्नौ भीरुभीरुकभीलुकाः॥२६॥

कृष्णमित्रटीका :- बिभेति। 'भियः क्रुक्लुकनौ' (३. ३. १७४)। 'क्रुकन्नपि' (वा. ३. २. १७४) 'भयशीलस्य' चत्वारि॥२६॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. त्रस्नुः, २. भीरु, ३. भीरुकः, ४. भीलुकः- ये चार त्रिलिङ्ग नाम डरने वाले या भयभीत हुए के हैं॥२६॥

1. **A shameless man** [3]. 2. **A person endowed** with genious [2] 3. **A modest** man [2] 4. **An astonished** person [2] 5. **An impatient** man [2] 6. **A timid** person [4].

आशंसुराशंसितरि

कृष्णमित्रटीका :- आशंसते। 'सनाशंस-' (३. २. १६८) इत्युः। 'इष्टार्थप्राप्तीच्छोः' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. आशंसुः, २. आशंसिता- ये दो त्रिलिङ्ग नाम अपने मनोरथ को पूर्ण करने की इच्छा वाले के हैं।

गृहयालुर्ग्रहीतरि।

कृष्णमित्रटीका :- 'गृह ग्रहणे' चुरादिः। 'स्पृहिगृहि-' (३. २. १५८) इत्यालुच्। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. गृहयालुः, २. ग्रहीता- ये दो त्रिलिङ्ग नाम ग्रहण करने वाले के हैं।

श्रद्धालुः श्रद्धया युक्ते

कृष्णमित्रटीका :- 'स्पृहि-' (३. २. १५८) इत्यालुच्, श्रद्धालुः॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. श्रद्धालुः- यह एक त्रिलिङ्ग नाम श्रद्धा करने वाले का है।

पतयालुश्च पातुके॥२७॥

कृष्णमित्रटीका :- पतति। आलुच् (३. २. १५८)। 'लषपत-' (१. २. १५४) इत्युकञ्। द्वे॥२७॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. पतयालुः, २. पातुकः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम गिरने वाले के हैं॥२७॥

लज्जाशीलेऽपत्रपिष्णु

कृष्णमित्रटीका :- अपत्रपते। अलंकृञादिना (३. २. १३६) इष्णुच्। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. लज्जाशीलः, २. अपत्रपिष्णुः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम लज्जा करने वाले के हैं।

वन्दारुरभिवादके।

कृष्णमित्रटीका :- 'शृवन्द्योरारुः' (३. २. १७३)। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. वन्दारुः, २. अभिवादकः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम प्रणाम करने वाले के हैं।

शरारुर्घातुको हिंस्रे[7]

कृष्णमित्रटीका :- शृणाणि। 'शृ हिंसायाम्' (क्र्या. प. से.)। आ (रुः) 'लषपत-' (३. २. १५४) इत्युकञ्। 'नमिकम्पि-' (३. २. १६७) इति रः। त्रीणि॥[8]

1. **A hopeful man** [2] 2. **Taker; acceptor;** holder [2] 3. **A faithful man** [2] 4. **A man tending** to fall [2] 5. **A bashful person** [2] 6. **Saluter** [2] 7. B. and K. हिंस्रः 8. **A noxious man** [3].

हिन्दी अर्थ :- १. शरारुः, २. घातुकः, ३. हिंस्रः- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम हिंसा करने वाले के हैं।

स्याद्वर्धिष्णुस्तु[1] वर्धनः ॥२८॥

कृष्णमित्रटीका :- वृधेः (भ्वा. आ. से.) इष्णुच् (३. २. १३६)। 'अनुदात्तेश्च-' (३. २. १४९) इति युच्॥२८॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. वर्धिष्णुः, २. वर्धनः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम बढ़ने वाले के हैं॥२८॥

उत्पतिष्णुस्तूत्पतितः

कृष्णमित्रटीका :- ऊर्ध्वपतनशीलः। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. उत्पतिष्णुः, २. उत्पतिता- ये दो त्रिलिङ्ग नाम उछलने वाले के है

अलङ्करिष्णुस्तु मण्डनः।

कृष्णमित्रटीका :- 'क्रुधमण्डार्थेभ्यश्च' (३. २. १५१) इति युच्। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. अलङ्करिष्णुः, २. मण्डनः - ये दो त्रिलिङ्ग नाम आभूषणों की इच्छा करने वाले के हैं।

भूष्णुर्भविष्णुर्भविता।

कृष्णमित्रटीका :- भवनशीलः। 'ग्लाजि' (३. २. १३९) इति ग्स्नुः। चादूभुवः। 'भुवश्च' (३. २. १३८) इतीष्णुच्। त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. भूष्णुः, २. भविष्णुः, ३. भविता- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम होनहार के हैं।

वर्तिष्णुर्वर्तनः समौ २९॥

कृष्णमित्रटीका :-'वर्तनशीलस्य' द्वे॥२९॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. वर्तिष्णुः, २. वर्तनः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम व्यवहार में लाने वाले के हैं॥२९॥

निराकरिष्णुः क्षिप्नुः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- क्षिपे (तु. उ. अ.) 'त्रसि' (३. २. १४०) इति क्नुः। द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. निराकरिष्णुः, २. क्षिप्नुः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम बहिष्कार करने वाले के हैं।

सान्द्रस्निग्धस्तु मेदुरः।

कृष्णमित्रटीका :- सान्द्रः स्निग्धः, घनचिक्कणः। 'मञ्जभासमिदो घुरच्' (३. २. १६१) द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. सान्द्रस्निग्धः, २. मेदुरः- यह दो त्रिलिङ्ग नाम घन या चिकने के हैं।

ज्ञाता तु विदुरो विन्दुः

कृष्णमित्रटीका :- वेत्ति। 'विदिभिदि-' (३. २. १६२) इति कुरच्। 'विन्दुरिच्छुः' (३. २. १६९) इति साधुः। त्रीणि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. ज्ञाता, २. विदुरः, ३. विन्दुः - ये तीन त्रिलिङ्ग नाम जानने वाले के हैं।

विकासी तु विकस्वरः ॥३०॥

कृष्णमित्रटीका :- विकसति। 'वौ कष-' (३. २. १४३) इति घिनुण्। 'स्थेशभास-' (३. २. १७५) इति वरच्। 'विकसनशीलस्य' द्वे॥३०॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. विकासी, २. विकस्वरः- ये दो त्रिलिङ्ग नाम खिलने वाले पुष्प आदि के हैं॥३०॥

विसृत्वरो विसृमरः प्रसारी च विसारिणि।

कृष्णमित्रटीका :- 'सृ गतौ' (भ्वा. प. अ.) 'इण्नशजि-' (३. २. १६३) इति क्वरप्। 'सृघसि-' (३. २. १६०) इति क्मरच्। 'प्रे लप-' (३. २. १४५) इति सरतेर्घिनुण्। चत्वारि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. विसृत्वरः, २. विसृमरः, ३. प्रसारी, ४. विसारिणी- ये चार त्रिलिङ्ग नाम फैलने वाली लता आदि के हैं।

सहिष्णुः सहनः क्षन्ता तितिक्षुः क्षमिता क्षमी॥३१॥

कृष्णमित्रटीका :- सहेरिष्णुच्- (३. २. १३६) युचौ (३. २. १४९)। तिजेः क्षमायाम्। सन् (३. १. ५)॥३१॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. सहिष्णुः, २. सहनः, ३. क्षन्ता, ४. तितिक्षुः, ५. क्षमिता, ६. क्षमी- ये छः त्रिलिङ्ग नाम क्षमा करने वाले के हैं॥३१॥

क्रोधनोऽमर्षणः क्रोधी (कोपी)

कृष्णमित्रटीका :- 'क्रुधमण्डा-' (३. २. १५) इति युच्। कोपी। णिनिः (३. ३. १७०)। त्रीणि॥[6]

---

1. B. स्याद्वर्धिष्णुश्च 2. **Growing** [2] 3. **Going up** [2] 4. **Decorating** [2] 5. **Becoming** [3] 6. **Abiding,** staying [2] 7. **Repudiating** [2].

1. **Smooth,** soft; thick, dense [2] 2. **A wise or** learned man [3] 3. **Opening or** blossoming [2] 4. **Spreading about** [2] 5. **A person who** is Capable of enduring [6] 6. **An angry** man [3].

हिन्दी अर्थ :- १. क्रोधन, २. अमर्षण, ३. कोपिन् (इन्नन्त)- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम क्रोधी के हैं।

चण्डस्त्वत्यन्तकोपनः।

कृष्णमित्रटीका :- 'चण्डिकोपे' (भ्वा. आ. से.)। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. चंड, २. अत्यंतकोपन- ये दो त्रिलिङ्ग नाम अत्यंत क्रोधी के हैं।

जागरूको जागरिता

कृष्णमित्रटीका :- जागतेर्जागरूकश्च (३. १. १६५)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. जागरूक, २. जागरितृ (ऋकारान्त)- ये दो त्रिलिङ्ग नाम जागने वाले के हैं।

घूर्णितः प्रचलायितः ॥३२॥

कृष्णमित्रटीका :- 'घूर्ण भ्रमणे' (भ्वा. आ. से.)। क्तः (३. ४. ७२) प्रचल इवाचरितः-॥३२॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. घूर्णित, २. प्रचलायित- ये दो त्रिलिङ्ग नाम नींद से घूर्णित (घरटि लेने वाले) के हैं॥३२॥

स्वप्नक् शयालुर्निद्रालुः

कृष्णमित्रटीका :- स्वपिति। 'स्वपितृषोर्नजिङ्' (३. २. १७२) 'शीङश्च' (वा. ३. २. १५८) इत्यालुच्। 'द्रा कुत्सायाम्' (अ. प. अ.)। 'स्पृहिगृहि-' (३. २. १५८) इत्यालुच्। त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. स्वप्नज् (जान्त), २. शयालु, ३. निद्रालु- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम नींद वाले के हैं।

निद्राणशयितौ समौ।

कृष्णमित्रटीका :- द्रातेः क्ते (३. ४. ७२) 'संयोगादेः' (८. २. ४३) इति नः। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. निद्राण, २. शयित- ये दो त्रिलिङ्ग नाम शयन करते हुए के हैं।

पराङ्मुखः पराचीनः

कृष्णमित्रटीका :- पराञ्चति। 'ऋत्विग्-' (३. २. ५९) आदिना क्विन्। पराक् मुखमस्य। 'विभाषाञ्चेः' (५. ४. ८) इति स्वार्थे खः। 'विमुखस्य' द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. पराङ्मुख, २. पराचीन- ये दो त्रिलिङ्ग नाम विमुख के हैं।

स्यादवाङप्यधोमुखः ॥३३॥

कृष्णमित्रटीका :- अवाञ्चति। द्वे॥३३॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. अवाङ्, २. अधोमुख- ये दो त्रिलिङ्ग नाम नीचे मुखवाले के हैं॥३३॥

देवानञ्चति देवद्र्यङ्

कृष्णमित्रटीका :- 'विष्वग्देवयोः-' (६. ३. ९२) इत्याद्रिः॥[2]

हिन्दी अर्थ :- देवद्र्यंङ्- यह एक त्रिलिङ्ग नाम देवताओं को पूजने वाले का हैं।

विष्वद्र्यङ् विष्वगञ्चति।

कृष्णमित्रटीका :- विष्वक्सर्वतः, अञ्चति गच्छति॥[3]

हिन्दी अर्थ :- विष्वद्र्यंच् (चान्त)- यह एक नाम सब ओर चलने वाले का है।

य सहाञ्चति सध्र्यङ् सः

कृष्णमित्रटीका :- 'सहस्य सध्रिः' (६. ३. ९५)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- सध्र्यंङ्- यह एक त्रिलिङ्ग नाम साथ चलने वाले का है।

स तिर्यङ् यस्तिरोऽञ्चति॥३४॥

कृष्णमित्रटीका :- तिरसस्तिरिः (६. ३. ९४)॥३४॥[5]

हिन्दी अर्थ :- तिर्य्यङ्- यह एक त्रिलिङ्ग नाम तिरछा चलने वाले का है॥३४॥

वदो वदावदो वक्ता

कृष्णमित्रटीका :- वदति। अच् (३. १. १३४)। 'चलिचरि-' (वा. ६. १. १२) इति द्वित्वादि। त्रीणि॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. वद, २. वदावद, ३. वक्तृ (ऋकारान्त)- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम वक्ता के हैं।

वागीशो वाक्पतिः समौ।

---

1. A wrathful person [2] 2. A wakeful man [2] 3. One noding his head (while asleep in sitting posture) [2] 4. A sleepy person [3] 5. A person who is sleeping [2] 6. A man with his face turned away [2].

1. A Person with his face downwards [2] 2. A worshipper of gods [1] 3. One who is all-pervading, or going everywhere [1] 4. A person going along [1] 5. A person going in an oblique direction [1] 6. Speaker [3].

कृष्णमित्रटीका :- वाचामीशः। 'पटुवचनस्य' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. वागीश, २. वाक्पति- ये दो नाम सुन्दर वाणी बोलने वाले का है।

वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी वावदूकोऽतिवक्तरि॥३५॥

कृष्णमित्रटीका :- वाचो युक्तेः पटुः। 'वाग्दिक्पश्यद्भ्यः' (वा. ६. ३. २१) इत्यलुक्। प्रशस्ता वागस्य। 'वाचो ग्मिनिः' (५. २. १२४)। 'कुर्वादिषु' (ग. ४. १. १५१) 'वावदूक' शब्दपाठाद् 'वदेः' ऊकः। चत्वारि॥३५॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. वाचोयुक्तिपटु, २. वाग्मिन् (इन्नन्त)- ये दो त्रिलिङ्ग नाम न्याय से बोलने वाले के हैं। १. वावदूक, २. अतिवक्तृ (ऋकारान्त)- ये दो त्रिलिङ्ग नाम बहुत बोलने वाले के हैं॥३५॥

स्याज्जल्पाकस्तु वाचालो वाचाटो बहुगर्ह्यवाक्।

कृष्णमित्रटीका :- 'जल्पभिक्ष-' (३. २. १५५) इति षाकन्। 'आलजाटचौ बहुभाषिणि' (५. २. १२५)॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. जल्पाक, २. वाचाल, ३. वाचाट, ४. बहुगर्ह्यवाक्- ये चार त्रिलिङ्ग नाम अवाच्य बोलने वाले के हैं।

दुर्मुखे मुखराबद्धमुखौ

कृष्णमित्रटीका :- दुर्निन्दितं मुखमस्य। 'खमुख-' (वा. ५. २. १०७) इति रः। न बद्धं मुखमस्य। 'अप्रियवादिनः' त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. दुर्मुख, २. मुखर, ३. अबद्धमुख- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम अप्रियवादी के हैं।

शक्तः[5] प्रियंवदे॥३६॥

कृष्णमित्रटीका :- शक्तेः क्तः। प्रियं वदति। द्वे॥३६॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. शक्त, २. प्रियंवद- ये दो त्रिलिङ्ग नाम प्रियवादी के हैं॥३६॥

लोहलः स्यादस्फुटवाक्

कृष्णमित्रटीका :- 'लुह् कत्थनादौ। लोहं लाति। द्वे॥[6]

1. **Orator** [2]. 2. **An eloquent man** [4] 3. **A talkative** or garrulous person [4] 4. **A scurrilous man** [3] 5. B. शक्लः 6. **A sweet-speaking person** [2].

हिन्दी अर्थ :- १. लोहल, २. अस्फुटवाक्- ये दो त्रिलिङ्ग नाम अस्पष्ट बोलने वाले के हैं।

गर्ह्यवादी तु कद्वदः[1]

कृष्णमित्रटीका :- कुत्सितं वदति। कोः कत् (६. ३. १०२)। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थः- १. गर्ह्यवादिन् (इन्नन्त), २. कद्वद- ये दो त्रिलिङ्ग नाम निन्दित बोलने वाले के हैं।

समौ कुवादकुचरौ

कृष्णमित्रटीका :- कुत्सितो वादोऽस्य[3]। कुत्सितं चरति। 'कुत्सितवादिनः' द्वे।[4]

हिन्दी अर्थः- १. कुवाद, २. कुचर- ये दो त्रिलिङ्ग नाम दोषकथनशील (बुराई करनेवाले) के हैं।

स्यादसौम्यस्वरोऽस्वरः॥३७॥

कृष्णमित्रटीका :- असौम्यो रुक्षः स्वरोऽस्य[5]। द्वे॥३७॥[6]

हिन्दी अर्थः- १. असौम्यस्वर, २. अस्वर- ये दो त्रिलिङ्ग नाम काक के स्वर के समान बुरे बोलने वाले के हैं॥३७॥

रवणः शब्दनः

कृष्णमित्रटीका :- रौति। 'चलनशब्दार्थात्' (३. २. १४८) इति युच्। द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थः- १. रवण, २. शब्दन- ये दो त्रिलिङ्ग नाम शब्द कर्त्ता के हैं।

नान्दीवादी नान्दीकरः समौ।

कृष्णमित्रटीका :- नान्दीवदनशीलः। नाटकादौ मङ्गलार्थं भेर्यादिवादनं नान्दी॥[8]

हिन्दी अर्थः- १. नांदीवादिन् (इन्नन्त), २. नान्दीकर- ये दो त्रिलिङ्ग नाम स्तुतिविशेष करने वाले के हैं।

जडोऽज्ञे

कृष्णमित्रटीका :- 'जल घातने' (भ्वा. प. से.)। लस्य डः। द्वे॥[9]

1. **One who** speaks indistinctly [2] 2. **One who speaks** ill [2] 3. M. वादोस्य 4. **An abusing man** [2] 5. M. स्वरोस्य 6. **A harsh voiced** person [2] 7. **Anything sounding** [2] 8. **The speaker** of Nandi (bdenediction) [2] 9. **A. stupid** [2].

हिन्दी अर्थः- १. जड, २. अज्ञ- ये दो त्रिलिङ्ग नाम अत्यंत मूढ के हैं।

अनेडमूकस्तु[1] वक्तुं श्रोतुमशिक्षिते ॥३८॥

कृष्णमित्रटीका :- अनेडराडसदृशः, स चासौ मूकश्च। काकश्रुतिहीनः ॥३८॥[2]

हिन्दी अर्थः- एडमूक- यह एक त्रिलिङ्ग नाम गूंगे बहिरे का है॥३८॥

तूष्णींशीलस्तु तूष्णीकः

कृष्णमित्रटीका :- तूष्णीं शीलं यस्य। 'शीले को मलोपश्च' (वा. ५. ३. ७१)। 'मौनिनः' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थः- १. तूष्णींशील, २. तूष्णीक- ये दो त्रिलिङ्ग नाम चुप रहने वाले के हैं।

नग्नोऽवासा दिगम्बरः ॥

कृष्णमित्रटीका :- 'ओलस्जी व्रीडे' (सु. आ. से.)। क्तः (३. ४. ७२)। न वासोऽस्य॥[4] दिग् अम्बरमस्य। त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थः- १. नग्न, २. अवासस् (सान्त), ३. दिगंबर- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम नंगे के हैं।

निष्कासितोऽवकृष्टः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- 'कस गतौ' (भ्वा. प. से.)। ण्यन्तात्क्तः (३. २. १०२)। अवकृष्यते निस्सर्यते। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थः- १. निष्कासित, २. अवकृष्ट- ये दो त्रिलिङ्ग नाम निकाले हुए के हैं।

अपध्वस्तस्तु धिक्कृतः ॥३९॥

कृष्णमित्रटीका :- ध्वंसेः (भ्वा. आ. से.) क्तः (३. २. १०२)। 'धिक्' इति कृतः। द्वे॥३९॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. अपध्वस्त, २. धिक्कृत- ये दो त्रिलिङ्ग नाम झिड़के गये वा धिक्कार किये गये के हैं॥३९॥

आत्तगर्वोऽभिभूतः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- आत्तो गर्वोऽस्य[8]। 'गन्धः'- इत्यन्ये। द्वे॥[9]

हिन्दी अर्थ :- १. आत्तगर्व, २. अभिभूत- ये दो त्रिलिङ्ग नाम भग्न हुए गर्ववाले के हैं।

दापितः[1] साधितः समौ।

कृष्णमित्रटीका :- दाप्यते। दापः (जु. उ. अ.) ण्यन्तात्क्तः। दापितस्य धनस्य पुरुषस्य वा। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. दापित, २. साधित- ये दो त्रिलिङ्ग नाम धनादि देकर वश किये गये के हैं।

प्रत्यादिष्टो निरस्तः स्यात्प्रत्याख्यातो निराकृतः ॥४०॥

कृष्णमित्रटीका :- दिशेः (तु. उ. अ.) असेः (दि. प. से.) च क्तः (३. २. १०२)। चत्वारि॥४०॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रत्यादिष्ट, २. निरस्त, ३. प्रत्याख्यात, ४. निराकृत- ये चार त्रिलिङ्ग नाम त्यागे हुए के हैं॥४०॥

निकृतः स्याद् विप्रकृतः

कृष्णमित्रटीका :- निः क्रियते खलीक्रियते स्म। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. निकृत, २. विप्रकृत- ये दो त्रिलिङ्ग नाम निकाले हुए वा विवर्णीकृत के हैं।

विप्रलब्धस्तु वञ्चितः।

कृष्णमित्रटीका :- 'वञ्चु गतौ' (भ्वा. प. से.)। ण्यन्तात्क्तः (३. २. १०२)। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. विप्रलब्ध, २. वंचित- ये दो त्रिलिङ्ग नाम ठगे हुए के हैं।

मनोहतः प्रतिहतः प्रतिबद्धो हतश्च सः ॥४१॥

कृष्णमित्रटीका :- मनो हतं यस्य। 'कृतमनोभङ्गस्य' चत्वारि॥४१॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. मनोहत, २. प्रतिहत, ३. प्रतिबद्ध, ४. हत- ये चार त्रिलिङ्ग नाम टूटे मनवाले के हैं॥४१॥

अधिक्षिप्तः प्रतिक्षिप्तः

कृष्णमित्रटीका :- क्षिपेः (तु. उ. अ.) क्तः (३. २. १०२)। 'कृताक्षेपस्य' द्वे॥[7]

---

1. B. एडमूकस्तु 2. A deaf-mute [1] 3. A. silent man [2] 4. M. वासोस्य 5. A nude person [3] 6. One who is expelled or turned out [2] 7. A person reproached [2] 8. M. गर्वोस्य 9. A humiliated man [2].

1. B. refers to also another reading दायितः 2. A person or thing caused to be given [2] 3. Anything turned down with contempt [4] 4. An insulted man [2] 5. One who is cheated [2] 6. A disappointed person [4] 7. A. person censured [2].

हिन्दी अर्थ :- १. अधिक्षिप्त, २. प्रतिक्षित- ये दो त्रिलिङ्ग नाम आक्षेप किये मनुष्य के हैं।

बद्धे कीलितसंयतौ।

कृष्णमित्रटीका :- 'कील बन्धे' (भ्वा. प. से.) क्तः (३. २. १०२)। त्रीणि॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. बद्ध, २. कीलित, ३. संयत- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम रज्जु आदि से बंधे हुए के हैं।

आपन्न आपत्प्राप्तः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- पदेः (दि. आ. अ.) क्तः (३. २. १०२)। आपदं प्राप्तः। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. आपन्न, २. आपत्प्राप्त- ये दो नाम दुःख में पड़े हुए के हैं।

कांदिशीको भयद्रुतः॥४२॥

कृष्णमित्रटीका :- 'कां दिशं यामि' इत्याह। पृषोदरादिः (६.३.१०९)। भयाद् द्रुतः। द्वे॥४२॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. कांदिशीक, २. भयद्रुत- ये दो त्रिलिङ्ग नाम भय से भागे हुए के हैं॥४२॥

आक्षारितः क्षारितोऽभिशस्ते

कृष्णमित्रटीका :- आक्षार्यते। 'क्षर संचलने' (भ्वा. प. से.)। ण्यन्तः। 'शसु हिंसायाम्' (भ्वा. प. से.) क्तः (३. २. १०२)। 'मिथ्याव्यभिचारादिना दूषितस्य' त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. आक्षारित, २. क्षारित, ३. अभिशस्त- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम लोकापवाद से दूषित हुए के हैं।

संकसुकोऽस्थिरे।

कृष्णमित्रटीका :- 'समि कस उकन्' (उ. २. २९)। 'चलस्वभावस्य' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. संकसुक, २. अस्थिर- ये दो त्रिलिङ्ग नाम चञ्चल प्रकृतिवाले के हैं।

व्यसनार्तोपरक्तौ द्वौ

कृष्णमित्रटीका :- व्यसनेनार्तः। रञ्जेः (भ्वा. प. अ.) क्तः (३. २. १०२)। 'पीडायुक्तस्य' द्वे॥[6]

1. one tied or fastened [2] 2. A distressed person [2] 3. A person fleeing from fear [2] 4. A man falsely accused of adultery & c. [3] 5. A fickle person [2] 6. A man involved in distress [2].

हिन्दी अर्थ :- १. व्यसनार्त, २. उपरक्त- ये दो त्रिलिङ्ग नाम व्यसन से पीडित हुए के हैं।

विहस्तव्याकुलौ समौ॥४३॥

कृष्णमित्रटीका :- विक्षिप्तो हस्तोऽस्य[1]। व्यकोलति। 'कुल संस्त्याने' (भ्वा. प. से.)। द्वे॥४३॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. विहस्त, २. व्याकुल- ये दो त्रिलिङ्ग नाम व्याकुल हुए के हैं॥४३॥

विक्लवो विह्वलः

कृष्णमित्रटीका :- विक्लवते। 'क्लुङ् गतौ' (भ्वा. आ. से.)। विह्वलति। 'ह्वल (चल) ने' (भ्वा. प. से.)। 'धारणायामशक्तस्य' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. विक्लव, २. विह्वल- ये दो त्रिलिङ्ग नाम शोक आदि से असमर्थ हुए के हैं।

स्यात्तु विवशोऽरिष्टदुष्टधीः।

कृष्णमित्रटीका :- अरिष्टेन मरणचिह्नेन दुष्टा धीर्यस्य॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. विवश, २. अरिष्टदुष्टधी - ये दो त्रिलिङ्ग नाम आसन्नमरण से दुष्ट बुद्धि हो जाने वाले के हैं।

कश्यः कशार्हे

कृष्णमित्रटीका :- कशामर्हति। दण्डादिः (५. १. ६६)। 'ताडनार्हस्य' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. कश्य, २. कशार्ह- ये दो त्रिलिङ्ग नाम कोड़े से मारने योग्य के हैं।

संनद्धे त्वाततायी वधोद्यते॥४४॥

कृष्णमित्रटीका :- आततं यथा तथा अयते। 'अय गतौ' (भ्वा. आ. से.)॥४४॥[6]

हिन्दी अर्थ :- आततायिन् (इन्नत)- यह एक त्रिलिङ्ग नाम वर्म आदि से सावधान हो कर वध के लिए तत्पर होने वाले का है॥४४॥

द्वेष्ये त्वक्षिगतः

कृष्णमित्रटीका :- 'द्विष अप्रीतौ' (अ. उ. अ.)। ण्यत् (३. १. १२४)। अक्षिविषयं गतः। 'द्वेषार्हस्य' द्वे॥[7]

1. M. हस्तोस्य 2. A perplexed person [2] 3. An agitated man [2] 4. One apprehensive of his death [2] 5. One who deserves flogging [2] 6. A person endeavouring to kill some one [1] 7. An eye-sore [2].

हिन्दी अर्थ :- १. द्वेष्य, २. अक्षिगत- ये दो त्रिलिङ्ग नाम वैर के योग्य के हैं।

बध्यः शीर्षच्छेद्य इमौ समौ।

कृष्णमित्रटीका :- बधमर्हः। शीर्षस्य शिरसच्छेदः, तमर्हति। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. वध्य, २. शीर्षच्छेद्य- ये दो त्रिलिङ्ग नाम शिर काटने के योग्य के हैं।

विष्यो विषेण यो बध्यः

कृष्णमित्रटीका :- विषेण बध्यः। 'नौवयः-' (४.४.९१) इति यत्।[2]

हिन्दी अर्थ :- विष्य- यह एक त्रिलिङ्ग नाम विष से मारने योग्य का है।

मुश (स) ल्यो मुश (स) लेन यः॥४५॥

कृष्णमित्रटीका :- मुशलो दण्डादिः॥४५॥[3]

हिन्दी अर्थ :- मुसल्य- यह एक त्रिलिङ्ग नाम मूसल से मारने योग्य का है॥४५॥

शिश्विदानोऽकृष्णकर्मा

कृष्णमित्रटीका :- 'श्विदि श्वैत्ये' (भ्वा. आ. से.)। लिटः क्वानज्वा (३. २. १०६)। अकृष्णं शुक्लं कर्मास्य॥ 'अपापकर्मणः' द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. शिश्विदान, २. अकृष्ण-कर्मन् (नान्त)- ये दो त्रिलिङ्ग नाम पुण्यकर्मवाले के हैं।

चपलश्चिकुरः समौ।

कृष्णमित्रटीका :- चपति। 'चप सान्त्वने' (भ्वा. प. से.)। वृषादित्वात् (उ. १. १०६) कलच्। 'चि' इति अव्यक्तं कुरति। 'कुर शब्दे' (तु. प. से.)। 'दोषमनिश्चित्य वधादिकमाचरतः' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. चपल, २. चिकुर- ये दो त्रिलिङ्ग नाम विना विचारे शीघ्र वध आदि करने वाले के हैं।

दोषैकदृक् पुरोभागी

कृष्णमित्रटीका :- दोषे एकस्मिन् दृग्यस्य। पुरोऽग्रे[6] भजते। द्वे 'दोषदर्शिनः'॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. दोषैकदृश् (शान्त), २. पुरोभागिन् (इन्नन्त)- ये दो त्रिलिङ्ग नाम दोषमात्र को देखने वाले के हैं।

निकृतस्त्वनृजुः शठः॥४६॥

कृष्णमित्रटीका :- 'कृती छेदने' (तु. प. से.)। क्तः। 'शठ कैतवे' (भ्वा. प. से.)। त्रीणि॥४६॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. निकृत, २. अनृजु, ३. शठ- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम टेढ़े अन्तः करण वाले के अर्थात् कपटी के हैं॥४६॥

कर्णेजपः सूचकः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- कर्णे जपति। 'स्तम्ब-कर्णयोः-' (३. २. १३) इत्यच्। 'सूच पैशुन्ये' (चु. उ. से.)। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. कर्णेजप, २. सूचक- ये दो त्रिलिङ्ग नाम चुगलखोर के हैं।

पिशुनो दुर्जनः खलः।

कृष्णमित्रटीका :- पिशति। 'पिश अवयवे' (तु. प. से.)। 'क्षुधिपिशि-' (उ. ३. ५५) इति उनन्। दुष्टो जनः। खं छिद्रं लाति॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. पिशुन, २. दुर्जन, ३. खल- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम आपस में वैर कराने वाले के हैं।

नृशंसो घातुकः क्रूरः पापः

कृष्णमित्रटीका :- नॄन् शंसति हन्ति। हतिः, तच्छीलः। 'लषपत-' (३. २. १५४) इत्युकञ्। कृन्तति। कृतेः (तु. प. से.) '-क्रूच' (उ. २. २१) इति रक्प्रत्यये क्रूभावः। पापमस्यास्ति। 'परद्रोहकारिणः' चत्वारि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. नृशंस, २. घातुक, ३. क्रूर, ४. पाप- ये चार त्रिलिङ्ग नाम द्रोही पुरुष के हैं।

धूर्तस्तु वञ्चकः॥४७॥

कृष्णमित्रटीका :- धुर्वति। 'धुर्वी हिंसायाम्' (भ्वा. प. से.)। 'हसिमृग्रि-' (उ. ३. ८६) इति तन्। राल्लोपः (६.४.२१)। 'वञ्चु गतौ' (भ्वा. प. से.)। द्वे॥४७॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. धूर्त्त, २. वञ्चक- ये दो त्रिलिङ्ग नाम धूर्त्त के हैं॥४७॥

---

1. A person fit to be beheaded [2] 2. A man deserving death by poison [1] 3. A person to be pounded or put to death with a club [1] 4. A sinful or wicked man [2] 5. A rash or inconsiderate person [2] 6. M. पुरोग्रे 7. A fault-finding man [2].

1. A rouge [3] 2. Whisperer [2] 3. Slanderer [3] 4. A cruel person [4] 5. A cheat [2].

अज्ञेमूढयथाजातमुर्खवैधेयवालिशाः।

कृष्णमित्रटीका :- मुह्यति। क्तः। जातं जन्मकालविशेषमनतिक्रम्य वर्तते। 'मुहेः खो मूर्च' (उ. ५. २२)। विधेय एव वैधेयः। वडिशस्यायं प्रियः। डस्य लः॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. अज्ञ, २. मूढ, ३. यथाजात, ४. मूर्ख, ५. वैधेय, ६. वालिश- ये छः त्रिलिङ्ग नाम मूर्ख के हैं।

कदर्ये कृपणक्षुद्रकिंपचानमितंपचाः॥४८॥

कृष्णमित्रटीका :- कुत्सितोऽर्यः स्वामी। कत् (६. ३. १०१) ल्युट् (३. ३. ११३) क्षुद्यते। 'स्फायि' (उ. २. १३) इति रक्। किं पचति। ताच्छील्ये चानश् (३. २. १२९)। मितं पचति। 'मितनखे च' (३. २. ३४) इति खच्। पञ्च॥४८॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. कदर्य, २. कृपण, ३. क्षुद्र, ४. किंपचान, ५. मितंपच- ये पाँच त्रिलिङ्ग नाम स्त्री पुत्र आदि को पीड़ित कर लोभ से धन संचय करने वाले के हैं॥४८॥

निःस्वस्तु दुर्विधो दीनो दरिद्रो दुर्गतोऽपि सः।

कृष्णमित्रटीका :- निर्गतं स्वमस्य। दुष्टा विधास्य[3]। 'दीङ् क्षये' (दि. आ. अ.)। क्तः (३. ४. ७२) स्वादित्वात् 'ओदितश्च' (८. २. ४५) इति नः। दरिद्राति। अच् (३. १. १३४) पञ्च॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. निःस्व, २. दुर्विध, ३. दीन, ४. दरिद्र, ५. दुर्गत- ये पाँच त्रिलिङ्ग नाम दरिद्र के हैं।

वनीयको याचनको मार्गणो याचकार्थिनौ॥४९॥

कृष्णमित्रटीका :- 'वनु याचने' (त. आ.से.)। वनिमिच्छति। क्यजन्तात् (३. १. ८) ण्वुल् (३. १. १३३)। याचेः (भ्वा. उ. से.) ल्युः (३. १. १३४)। 'मृग अन्वेषणे' (चु. आ. से.) युच्। अर्थोऽस्यास्ति[5]॥४९॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. वनीयक, २. याचनक, ३. मार्गण, ४. याचक, ५. अर्थिन् (इन्नन्त)- ये पाँच त्रिलिङ्ग नाम याचक के हैं॥४९॥

1. **A foolish man** [6] 2. **Miser** [5] 3. M. विधास्य 4. **A poor person** [5] 5. M. अर्थोस्यास्ति 6. **Begger** [5].

अहंकारवानहंयुः शुभंयुस्तु शुभान्वितः।

कृष्णमित्रटीका :- 'अहंशुभयोर्युस्' (५. २. १४०)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. अहंकारवत् (मत्वन्त), २. अहंयुस्- ये दो त्रिलिङ्ग नाम अहंकारी के हैं। १. शुभंयुस्, २. शुभान्वित- ये दो त्रिलिङ्ग नाम शुभ से युत हुए के हैं।

दिव्योपपादुका देवाः

कृष्णमित्रटीका :- देवा दिव्योपपादुका उच्यन्ते। दिवि भवा दिव्याः। 'लषपत-' (३. २. १५५) इत्युकञ्। दिव्याश्च ते उपपादुकाश्च ते॥[2]

हिन्दी अर्थ :- दिव्योपपादुक- यह एक त्रिलिङ्ग नाम अपने मातापिता के विना अपने भाग्य के गुणों से आकाश में उत्पन्न होने वालों का है।

नृगवाद्या जरायुजाः॥५०॥

कृष्णमित्रटीका :- जरायोर्गर्भाज्जाताः॥५०॥[3]

हिन्दी अर्थ :- जरायुज- यह एक त्रिलिङ्ग नाम मनुष्य गौ घोड़े आदि के हैं॥५०॥

स्वेदजाः कृमिदंशाद्याः

कृष्णमित्रटीका :- स्वेद ऊष्मा। तस्माज्जाताः॥[4]

हिन्दी अर्थ :- स्वेदज- यह एक त्रिलिङ्ग नाम कीड़े डांस आदि का है।

पक्षिसर्पादयोऽण्डजाः[5]।

उद्भिदस्तरुगुल्माद्याः[6] उद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम्॥५१॥

कृष्णमित्रटीका :- उद्भिनत्ति भुवम्। उद्भिदो जातम्। 'इगुपध-' (३. १. १३५) इति कः॥५१॥[7]

हिन्दी अर्थ :- अंडज- यह एक त्रिलिङ्ग नाम पक्षि सर्प आदि का है। **यहाँ प्राणि वर्ग समाप्त हुआ॥**

उद्भिद्- यह एक पुल्लिङ्ग नाम वृक्ष वेल आदि का है। १. उद्भिद्, २. उद्भिज्ज, ३. उद्भिद- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम उद्भिद् के हैं॥५१॥

सुन्दरं रुचिरं चारु सुषमं साधु शोभनम्।

कान्तं मनोरमं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम्॥५२॥

1. **A proud and** an auspicious man [2 each] 2. Gods; **divine** beings [1] 3. **Any being** born from the womb as man, cow &c. [1] 4. **Insects generated** by warm vapour or sweat [1] 5. **Birds and other** beings born from eggs [1] 6. **Trees, plants** & c. which sprout [1] 7. **One which** sprouts or germinates [3].

कृष्णमित्रटीका :- सुष्ठु ह्रियते। 'ग्रहवृदृ-' (३. ३. ५८) इत्यप्। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। रुचिं राति। चरति मनोऽस्मिन्[1]। 'दृसनि-' (उ. १. ३) इति ञुण्। शोभनं समं सर्वमस्य। 'सुविनिर्दुर्भ्यः' (८. ३. ८८) इति षः। साधेः (स्वा.- प. अ.) 'कृवापा-' (उ. १. १) इत्युण् शुभेः (भ्वा. आ. से.) युच् (३. २. १४९)। कमेः (भ्वा. आ. से.) क्तः (३. २. १०२)। मनो रमयति। रुच्यते। 'राजसूय-' (३. १. ११४) इति साधु। मन एव ज्ञं यत्र। मञ्ज्यते। 'मजि ध्वनौ' सौत्रम्। बाहुलकादुः। मञ्जु मञ्जुत्वं लाति ॥५२॥[2]

हिन्दी अर्थ :- आगे से अतिशोभन तक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं। १. सुन्दर, २. रुचिर, ३. चारु, ४. सुषम, ५. साधु, ६. शोभन, ७. कान्त, ८. मनोरम, ९. रुच्य, १०. मनोज्ञ, ११. मंजु, १२. मंजुल- ये बारह नाम सुन्दर के हैं॥५२॥

तदासेचनकं[3] तृप्तेर्नास्त्यन्तो यस्य दर्शनात्।

कृष्णमित्रटीका :- आसिच्यते मनोऽत्र[4]। ल्युटः (३.३. ११७) कन् (५. ३. ७५)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- आसेचनक- यह एक नाम जिसको देखने से दृष्टि और मन की तृप्ति का अन्त न हो और जो बहुत वार देखने पर भी अधिक प्रीति को उत्पन्न करे उस परम सुन्दर का है।

अभीष्टेऽभीप्सितं हृद्यं दयितं वल्लभं प्रियम्॥५३॥

कृष्णमित्रटीका :- इषेः (तु. प. से.) क्तः (३. २. १०२)। आप्लेः (स्वा. प. अ.) सनः (३. १. ७) क्तः (३. २. १०२)। 'हृदयस्य प्रियम्' (४. ४. ५) इति यत्। दया जाताऽस्य[6]। वल्लते। 'वल्ल संवरणे' (भ्वा. आ. से.)। 'रासिवल्लिभ्यां च' (उ. ३. १२५) इत्यभच्। प्रीणाति। प्रीञः (क्र्या. उ. अ.) कः (३. १. १३५)॥५३॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. अभीष्ट, २. अभीप्सित, ३. हृद्य, ४. दयित, ५. वल्लभ, ६. प्रिय- ये छः त्रिलिङ्ग नाम प्रिय के हैं॥५३॥

निकृष्टप्रतिकृष्टार्वरेफयाप्यावमाधमाः।
कुपूयकुत्सितावद्यखेटगर्ह्याणकाः समाः॥५४॥

कृष्णमित्रटीका :- कृषेः (भ्वा. प. अ., तु. अ. अ.) क्तः (३. २.१०२) ऋच्छति। 'ऋ गतौ' (भ्वादिः)। 'अवद्यावमाधमार्वरेफाः कुत्सिते' (उ. ५. ५४) इति निपातः। 'रिफ कत्थनादौ' (तु. प. से.)। याप्यते। यातेः (अ. प. अ.) ण्यन्ताद्यत् (३. १. ९७)। अवति। पक्षे वकारस्य धकारो निपातात्। कुत्सितं पूयते। 'पूयी विशरणे' (भ्वा. आ. से.)। कुत्सा जाताऽस्य[1]। न उद्यते। खेटति। 'खिट त्रासे' (भ्वा. प. से.)। गर्ह कुत्सायाम्' (भ्वा. आ. से.)। 'ऋहलोर्ण्यत्' (३. १. १२४)। अणति अणकः। अचः (३. १. १३४) कुत्सायां कन् (५. ३. ७४)॥५४॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. निकृष्ट, २. प्रतिकृष्ट, ३. अर्वन् (नान्त), ४. रेफ, ५. याप्य, ६. अवम, ७. अधम, ८. कुपूय, ९. कुत्सित, १०. अवद्य, ११. खेट, १२. गर्ह्य, १३. अणक- ये तेरह त्रिलिङ्ग नाम दुष्ट के हैं॥५४॥

मलीमसं तु मलिनं कच्चरं मलदूषितम्।

कृष्णमित्रटीका :- मलोऽस्यास्ति[3]। 'ज्योत्स्नातमिस्रा-' (५. २. ११४) इति साधुः। कुत्सितं चरति। 'रथवदयोश्च' (६. ३. १०२) इति चात्कत्। चत्वारि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. मलीमस, २. मलिन, ३. कच्चर, ४. मलदूषित- ये चार त्रिलिङ्ग नाम मल वाले के हैं।

पूतं पवित्रं मेध्यं च

कृष्णमित्रटीका :- पूयते स्म। पूङः (भ्वा. आ. से.) क्तः (३. २. १०२)। 'कर्तरि चार्षिदेवतयोः' (३. २. १८६) इतीत्रः। मेधनीयम्। ण्यत्। (३. १. १२४) त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. पूत, २. पवित्र, ३. मेध्य- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम पवित्र के हैं।

वीध्रं तु विमलात्मकम्॥५५॥

कृष्णमित्रटीका :- विशेषेण इन्धे। 'वाविन्धेः' (उ. २. २६) इति क्रन्। 'स्वभावनिर्मलस्य' द्वे॥५५॥[6]

हिन्दी अर्थ :- वीध्र- यह एक त्रिलिङ्ग नाम स्वभाव से निर्मल का है॥५५॥

---

1. M. मनोस्मिन् 2. **Beautiful** [12] 3. B. तदसेचनकं 4. M. मनोत्र 5. **Charming** [1] 6. M. जातास्य 7. Favourite [6].

1. M. जातास्य 2. Mean; vile [13] 3. M. मलोस्यास्ति 4. Dirty [4] 5. **Sacred** [3] 6. **Pure** (by nature) [2].

निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निश्शोध्यमनवस्करम्।

कृष्णमित्रटीका :- णिजेः (जु. उ. अ.) क्तः (३. २. १०२)। मृजेः (अ. प. से.) क्तः (३. २. १०२)। निष्क्रान्तं शोध्यात्। नास्त्यवस्करोऽत्र[1]। 'अपनीतमलस्य पञ्च'॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. निर्णिक्त, २. शोधित, ३. मृष्ट, ४. निःशोध्य, ५. अनवस्कर- ये पाँच नाम निर्मल के हैं।

असारं फल्गु

कृष्णमित्रटीका :- न सारोऽत्र[3]। 'ञिफला' (भ्वा. प. से.)। 'फलिपाटि-' (उ. १. १८) इति साधु द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. असार, २. फल्गु- ये दो त्रिलिङ्ग नाम निर्बल के हैं।

शून्यं तु वशिकं तुच्छरिक्तके ॥५६॥

कृष्णमित्रटीका :- शुने हितम्। 'शुनः संप्रसारणं वा च दीर्घः' (ग. ५. १. २.) (इति यत्)। वशीव। इवे कन्। तुदा व्यथया छ्यति। कः[5]। रिचेः (चु. उ. से.) क्तः (३. २. १०२)। चत्वारि॥५६॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. शून्य, २. वशिक, ३. तुच्छ, ४. रिक्तक- ये चार त्रिलिङ्ग नाम रीते के हैं॥५६॥

क्लीबे प्रधानं प्रमुखं प्रवेकानुत्तमोत्तमाः।
मुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रवर्हानवरार्यवत्॥५७॥
पराध्याग्रप्राग्रहरप्राग्र्याग्र्याग्रीयम्- अग्रियें[7]।

कृष्णमित्रटीका :- प्रदधाति। ल्युट् (३. १. ११३)। प्रकृष्टं मुखमस्य। प्रविच्यते। 'विचिर्-' (रु. उ. अ.)। घञ् (३. ३. १९)। नास्त्युत्तमोऽस्मात्[8]। उत्ताम्यति। अच् (३. १. १३४)। मुखमिव। शाखादित्वात् (५. ३. १०३) यः। 'वर ईप्सायाम्' चुरादि। यत् (३. १. ९७)। 'वृञ एण्यः' (उ. ३. ९८)। 'वृह वृद्धौ' (भ्वा. प. से.)। अच् (३. १. १३४)। अवरस्मिन्नर्धे भवः। 'अर्धाद्यत्' (४. ३. ४)। स पूर्वाच्च (४. ३. ५.) न अवरार्ध्यः॥५७॥ परस्मिन्नर्धे भवः। अगति अग्रम्। 'ऋज्रेन्द्र-' (उ. २. २८) इति साधु। प्रकृष्टमग्रं हरति। प्राग्रे भवः। 'अग्राद्यत्' (४. ४. ११६)। 'घच्छौ च' (४. ४. ११७)। सप्तदश॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रधान, २. प्रमुख, ३. प्रवेक, ४. अनुत्तम, ५. उत्तम, ६. मुख्य, ७. वर्य, ८. वरेण्य, ९. प्रवर्ह, १०. अनवरार्ध्य॥५७॥ ११. परार्ध्य, १२. अग्र, १३. प्राग्रहर, १४. प्राग्र्य, १५. अग्रिय, १६. अग्रीय, १७. अग्रिय- ये सत्रह त्रिलिङ्ग नाम प्रधान के हैं। प्रधान (नि. न.) है, अन्य सोलह त्रिलिङ्ग है।

श्रेयान् श्रेष्ठः पुष्कलः स्यात्सत्तमश्चातिशोभने॥५८॥

कृष्णमित्रटीका :- अतिशयेन प्रशस्यः। 'अतिशायने तमबिष्ठनौ' (५. ३. ५५)। 'द्विवचनविभज्य-' (५. ३. ५७) इत्यसुन्। 'प्रशस्यस्य श्रः' (५. ३. ६०)। पुष्यति। 'पुषः कित्' (उ. ४. ४.) इति करन्। अशियेन सन्, सत्तमः। पञ्च॥५८॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. श्रेयस् (सान्त), २. श्रेष्ठ, ३. पुष्कल, ४. सत्तम, ५. अतिशोभन- ये पाँच नाम अत्यन्त शोभन के हैं॥५८॥

स्युरुत्तरपदे व्याघ्रपुंगवर्षभकुञ्जराः।
सिंहशार्दूलनागाद्याः पुंसि श्रेष्ठार्थगोचराः॥५९॥

कृष्णमित्रटीका :- पुरुषो व्याघ्र इव पुरुषव्याघ्रः। पुमांश्चासौ गौश्च। 'गोः-' (५. ४. ९२) इति टच्। एते श्रेष्ठस्य वाचकाः॥५९॥

हिन्दी अर्थ :- व्याघ्र, पुंगव, ऋषभ, कुञ्जर, सिंह, शार्दूल, नाग आदि शब्द श्रेष्ठ अर्थ को कहने वाले (पुल्लिङ्ग) हैं और उत्तर पद में रहते हैं। जैसे- 'पुरुषोऽयं व्याघ्र इव पुरुषव्याघ्रः' अर्थात् पुरुष श्रेष्ठ है॥५९॥

अप्राग्र्यं द्वहीने द्वे अप्रधानोपसर्जने।

कृष्णमित्रटीका :- न प्राग्र्यं प्रधानमप्राग्र्यम्। उपसृज्यते। ल्युट् (३. ३. ११३) त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. अप्राग्र्य (त्रिलिङ्ग), २. अप्रधान, ३. उपसर्जन- ये तीन त्रिलिङ्ग नाम अप्रधान के हैं। इनमें अप्रधान और उपसर्जन ये दो शब्द (नपुंसकलिङ्ग) हैं। आगे के तनु शब्द तक (त्रिलिङ्ग) हैं।

विशङ्कटं पृथुबृहद्विशालं पृथुलं महत्॥६०॥
वड्रोरुविपुलम्

---

1. M. नास्त्यवस्करोऽत्र 2. **Purified;** cleansed [5] 3. M. सारोत्र 4. **Worthless** [2] 5. M. क 6. **Void; empty** [4] 7. B. and K. अग्रियम् 8. M. नास्त्युत्तमोस्मात्.

1. Chief [17] 2. Excellent, best [5] 3. **Subordinate** [3].

कृष्णमित्रटीका :- विस्तृतम्। 'वेः शालच्छंकटचौ' (५. २. २८)। प्रथते। 'प्रथिम (भ्र) दि' (उ. १. २८) इति कुः। बर्हति। 'बृह वृद्धौ' (भ्वा. प. से.)। महति। 'वर्तमाने पृषन्महत्-' (उ. २. ८४) इति साधुः॥६०॥ वलते। 'वल संवरणे' (भ्वा. आ. से.)। बाहुलकाद्रक्। लस्य डः। 'उड्‌ शब्दे' (भ्वादिः)। विपोलति। 'पुल महत्त्वे' (भ्वा. प. से.)। नव॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. विशंकट, २. प्रथु, ३. बृहत्, ४. विशाल, ५. पृथुल, ६. महत्॥६०॥, ७. वड्र, ८. उरु, ९. विपुल- ये नौ त्रिलिङ्ग नाम बड़े के हैं।

पीनपीन्वी तु[2] स्थूलपीवरे।

कृष्णमित्रटीका :- 'प्यायः पी' (६. १. २८)। 'ओदितश्च' (८. २. ४५) इति नः। प्यायते। 'प्यैङ् वृद्धौ' (भ्वा. आ. अ.)। 'धाप्योः संप्रसारणं च' (उ. ४. ११४) इति वनिप्। स्त्रियां ङीप्। 'स्थूल बृंहणे' (चु. आ. से.)। अच् (३. १. १३४)। पीवानं राति॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. पीन, २. पीवन् (नान्त), ३. स्थूल, ४. पीवर- ये चार त्रिलिङ्ग नाम मोटे के हैं।

स्तोकाल्पक्षुल्लकाः श्लक्ष्णं सूक्ष्मं दभ्रं कृशं तनु॥६१॥
स्त्रियां मात्रात्रुटी[4] पुंसि लवलेशकणाणवः।

कृष्णमित्रटीका :- स्तुच्यते। 'ष्टुच प्रसादे' (भ्वा. आ. से.)। घञ् (३. ३. १९)। अल्यते। 'अल भूषणादौ' (भ्वा. प. से.)। बाहुलकातः। 'क्षुदिर संपेषणे' (रु. उ. अ.)। क्षुदं लाति। सुष्ठु उक्ष्यते। दभ्यते। 'स्फायि' (उ. २. १३) इति रक्। 'कृश तनूकरणे' (दि. प. से.)। तन्यते। '-तनिचरि-' (उ. १. ७) इत्युः॥६१॥ मीयते। ष्ट्रन् (उ. ४. १५८)। त्रुट्यते। 'त्रुट छेदने' (चु. आ. से.)। इन्। लूयते। 'ऋदोरप्' (३. ३. ५७)। 'लिश गतौ' (तु. प. अ.)। 'कण निमीलने' (चु. उ. से.)। अच् (३. १. १३४)। 'अण शब्दे' (भ्वा. प. से.)। 'अणश्च' (उ. १. ८) इत्युः। चतुर्दश॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. स्तोक, २. अल्प, ३. क्षुल्लक- ये तीन नाम अल्प के हैं। १. सूक्ष्म, २. श्लक्ष्ण, ३. दभ्र, ४. कृश, ५. तनु॥६१॥, ६. मात्रा, ७. त्रुटि, ८. लव, ९. लेश, १०. कण, ११. अणु- ये ग्यारह नाम सूक्ष्म के हैं। इनमें मात्रा और त्रुटि शब्द (स्त्रीलिङ्ग) और लव आदि शब्द (पुल्लिङ्ग) शेष (त्रिलिङ्ग) हैं। आगे के वर्गान्ततक सब शब्द (त्रिलिङ्ग) हैं।

अत्यल्पेऽल्पिष्ठमल्पीयः कनीयोऽणीय इत्यपि॥६२॥

कृष्णमित्रटीका :- अतिशयेनाल्पः। युवाल्पयोः कन् (५. ३. ६४) अतिशयेनाणु। चत्वारि॥६२॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. अल्पिष्ठ, २. अल्पीयस्, (सान्त), ३. कनीयस् (सान्त), ४. अणीयस् (सान्त)- ये चार नाम अत्यंत अल्प के हैं॥६२॥

प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यमदभ्रं बहुलं बहु।
पुरुहं (हु) पुरु भूयिष्ठं स्फिरं भूयश्च भूरि च॥६२॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रगतं चुरायाः। प्रकर्षेणाज्यते। 'अञ्जू व्यक्त्यादौ' (रु. प. से.)। 'बहि वृद्धौ' (भ्वा. आ. से.)। 'लङ्घिबंह्योर्नलोपश्च' (उ. १. २९)। इत्युः। 'पुरु' इति हूयते पुरुहु। 'पुरून् हन्ति गच्छति। हतेर्डः (वा. ३. २. १०१)।' -इत्यन्ये। 'पृ पालने' (जु. प. से.)। 'पृभिदि-' (उ. १. २३) इति कुः। अतिशयेन बहु। 'बहोर्लोपो भू च बहोः' (६. ४. १५८)। स्फायी (भ्वा. आ. से.)। 'अजिरशिशिर-' (उ. १. ५३) इति स्फिरः। 'स्फारः' इत्यन्ये। अतिशयेन बहु। अदिभूशुभिभ्यः क्रिन् (उ. ४. ६५)। द्वादश॥६३॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रभूत, २. प्रचुर, ३. प्राज्य, ४. अदभ्र, ५. बहुल, ६. बहु, ७. पुरुह, ८. पुरु, ९. भूयिष्ठ, १०. स्फार, ११. भूयस् (सान्त), १२. भूरि- ये बारह नाम बहुत के हैं॥६३॥

परश्शताद्यास्ते येषां परा संख्या शतादिकात्।

कृष्णमित्रटीका :- शतात्परे। पारस्करादित्वात् (६. १. १५७) सुट्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- परःशत- यह एक नाम १०० से अधिक संख्यावालों का है। परःसहस्र- यह एक नाम १००० से अधिक संख्यावालों का है। ऐसे ही अन्य भी जानना।

गणनीये तु गणेयः (यम्)

---

1. Large or great (in size) [9] 2. B. न 3. Fat [4] 4. B. मात्रा त्रुटिः 5. Little; small [14].

1. Smallest or least [4] 2. Ample; abundant [12] 3. Figures more than hundred, thousand & c. [1 each].

कृष्णमित्रटीका :- गणयितुं शक्यः। अनीयर् (३. १. ९६)। संज्ञापूर्वकत्वाण्णिलोपाभावे 'अचो यत्' (३. १. ९७)। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. गणनीय, २. गणेय- ये दो नाम गिनने योग्य के हैं।

संख्याते[2] गणितम् अथ समं सर्वम्॥६४॥

कृष्णमित्रटीका :- ख्यातेः (अ. प. अ.) क्तः (३.२. १०२)। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. संख्यात, २. गणित- ये दो नाम गिने हुए के हैं॥६४॥

विश्वमशेषं कृत्स्नं समस्तनिखिलाखिलानि निश्शेषम्। समग्रं सकलं पूर्णमखण्डं स्यादनूनके॥६५॥

कृष्णमित्रटीका :- समति। 'षम वैक्लव्ये' (भ्वा. प. से.)। सरति। 'सर्वनिघृष्व-' (उ. १. १५४) इति साधुः॥६४॥ विशति। 'अशूप्रुषि-' (उ. १. १५२) इति क्वन्। 'कृती वेष्टने' (रु. प. से.)। 'कृत्यशूभ्यां क्स्नः' (उ. ३. १७)। समस्यते। असेः (दि. प. से.) क्तः (३. २. १०२)। निवृत्तं खिलमस्मात्। संगतमग्रमस्य। सह कलाभिः। पूर्यते। क्तः न खण्ड्यते। अच्। 'ऊन परिहाणे' (चु. उ. से.)। अच् (३. १. १३४)। न ऊनम्। चतुर्दश॥६५॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. विश्व, २. अशेष, ३. कृत्स्न, ४. समस्त, ५. निखिल, ६. अखिल, ७. निःशेष, ८. समग्र, ९. सकल, १०. पूर्ण, ११. अखण्ड, १२. अनूनक- ये बारह नाम समग्र के हैं॥६५॥

घनं निरन्तरं सान्द्रम्

कृष्णमित्रटीका :- हन्यते। 'मूर्तौ घनः' (३. ३. ७७)। सह अन्द्र्यते। 'अदि बन्धने' (भ्वा. प. से.)। रक्। त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. घन, २. निरंतर, ३. सान्द्र- ये तीन नाम सघन के हैं।

पेलवं विरलं तनु।

कृष्णमित्रटीका :- पिल्यते। 'पिल भेदने' (तु. प. से.)। पेलोऽस्यास्ति[6]। वि राति। अन्तरबाहुलकात् कलन्। त्रीणि॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. पेलव, २. विरल, ३. तनु - ये तीन नाम विरल (अलग-अलग) के हैं।

समीपे निकटासन्नसंनिकृष्टसनीडवत्॥६६॥ सदेशाभ्यास (श) सविधसमर्यादसवेशवत्। उपकण्ठान्तिकाभ्यर्णाभ्यग्रा अप्यभितोऽव्ययम्॥६७॥

कृष्णमित्रटीका :- संगता आपोऽस्मिन्[1]। 'कटे वर्षादौ' (भ्वा. प. से.)। आ सदेः क्तः। सह नीडेन। समानो देशोऽस्य। अभ्यश्यते। 'अशू व्याप्तौ' (स्वा. आ. से.)। समाना विधाऽस्य[2]। समाना मर्यादाऽस्य[3]। समानो वेशोऽस्य[4]। उपगतः कण्ठम्। अन्तोऽस्यास्ति[5]। ठन् (५. २. ११५)। अभ्यर्द्यते स्म। अर्देः (भ्वा. प. से.) क्तः। अभिमुखमग्रमस्य। अभेस्तसिल्। पञ्चदश॥६७॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. समीप, २. निकट, ३. आसन्न, ४. सन्निकृष्ट, ५. सनीड॥६६॥ ६. सदेश, ७. अभ्याश, ८. सविध, ९. समर्याद, १०. सवेश, ११. उपकंठ, १२. अंतिक, १३. अभ्यर्ण, १४. अभ्यग्र, १५. अभितस्- ये पन्द्रह नाम समीप के हैं। इनमें अभितस् अव्यय है॥६७॥

संसक्ते त्वव्यवहितमपटान्तरमित्यपि।

कृष्णमित्रटीका :- 'षज्ज सङ्गे' (भ्वा. प. अ.) क्तः (३. २. १०२)। 'दधातेर्हिः' (७. ४. ४२)। नास्ति पटेन अन्तरं व्यवधानमत्र। 'अपदान्तरम्' इत्यन्ये। त्रीणि॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. संसक्त, २. अव्यवहित, ३. अपटांतर- ये तीन नाम मिले हुए के हैं।

नेदिष्ठमन्तिकतमम्

कृष्णमित्रटीका :- अतिशयेनान्तिकम्। 'अन्तिकवाढयोर्नेदसाधौ' (५. ३. ६३)। द्वे॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. नेदिष्ठ, २. अंतिकतम- ये दो नाम अत्यंत निकट के हैं।

स्याद्दूरं विप्रकृष्टकम्॥६८॥

कृष्णमित्रटीका :- दुःखेन[9] ईयते। 'दुरीणो लोपश्च' (उ. २. २०)। द्वे॥६८॥[10]

---

1. **Numerable** [2] 2. B. संख्यातं 3. **Numbered or** counted [2] 4. **All; whole; entire** [14] 5. **Dense; thick** [3] 6. M. पेलोस्यास्ति 7. **Sparse** [3].

1. M. आपोस्मिन् 2. M. विधास्य 3. M. मर्यादास्य 4. M. वेशोस्य 5. M. अन्तोस्यास्ति 6. **Near**; close by, adjacent [15] 7. **Contiguous** [3] 8. **Nearest** [2] 9. M. दुःखेन 10. Far [2].

हिन्दी अर्थ :- १. दूर, २. विप्रकृष्टक- ये दो नाम दूर के हैं॥६८॥

दवीयश्च दविष्ठं च सुदूरे

कृष्णमित्रटीका :- अत्यन्तं दूरम्। त्रीणि॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. दवीयस् (सान्त), २. दविष्ठ, ३. सुदूर- ये तीन नाम अत्यंत दूर के हैं।

दीर्घमायतम्।

कृष्णमित्रटीका :- दृणाति। 'दृ विदारणे' (क्र्या. प. से.)। बाहुलकाद्घः। आयमेः क्तः (३.२. १०२)। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. दीर्घ, २. आयत- ये दो नाम लंबे के हैं।

वर्तुलं निस्तलं वृत्तम्

कृष्णमित्रटीका :- वर्तते। बाहुलकादुलच्। निर्गतं तलमस्य[3]। वर्तते स्म। क्तः (३. ४. ७२)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. वर्त्तुल, २. निस्तल, ३. वृत्त- ये तीन नाम गोल के हैं।

बन्धुरं तून्नतानतम्॥६९॥

कृष्णमित्रटीका :- बध्नाति गतिम्, बन्धुरम्। उन्नतस्तदुपाधिवशादानतम्॥६९॥[5]

हिन्दी अर्थ :- बंधुर- यह एक नाम जो स्वभाव से ऊँचा हो और उपाधि के भेद से कुछ नीचा हो जावे उसका है॥६९॥

उच्चप्रांशून्नतोदग्रोच्छ्रितास्तुङ्गे

कृष्णमित्रटीका :- उच्चीयते। डः। प्रकृष्टा अंशवोऽस्य[6]। नमेः क्तः। ऊर्ध्वमग्रमस्य। श्रिञः (भ्वा. प. से.) क्तः (३. ४. ७२)। तुञ्ज्यते। 'तुजि हिंसायाम्' (भ्वा. प. से.)। घञ् (३. ३. १९) षट्॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. उच्च, २. प्रांशु, ३. उन्नत, ४. उदग्र, ५. उच्छ्रित, ६. तुंग- ये छः नाम ऊँचे के हैं।

अथ वामने।

न्यङ्नीचखर्वह्रस्वाः स्युः

कृष्णमित्रटीका :- वामोऽस्त्यस्य[8]। न्यञ्चति। ऋत्विगादिना (३. २. ५९) क्विन्। निम्नं चीयते। खर्वति। 'खर्व गतौ' (भ्वा. प. से.)। ह्रसति। 'ह्रस शब्दे' (भ्वा. प. से.)। बाहुलकाद्वः। पञ्च॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. वामन, २. न्यच्, ३. नीच, ४. खर्व, ५. ह्रस्व- ये पाँच नाम वौने के हैं।

अवाग्रेऽवनतानतम्[2]॥७०॥

कृष्णमित्रटीका :- अवनतमग्रमस्य। अवनमति स्म अवनतम्। आनमति स्मानतम्। त्रीणि 'अधोमुखस्य'॥७०॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. अवाग्र, २. अवनत, ३. आनत- ये तीन नाम नीचे मुख वाले के हैं॥७०॥

अरालं वृजिनं जिह्ममूर्मिमत्कुञ्चितं नतम्।
आविद्धं कुटिलं भुग्नं वेल्लितं वक्रमित्यपि॥७१॥

कृष्णमित्रटीका :- अराः सन्त्यस्य। 'वृजी वर्जने' (अ. आ. से.)। 'वृजेः किच्च' (उ. २. ४७) इतीनन्। 'जहातेः सन्वदालोपश्च' (उ. १. १४१) इति मन्। व्यधेः (दि. प. अ.) क्तः (३. २. १०२)। कुटिं कौटिल्यं लाति। 'भुजो कौटिल्ये' (तु. प. से.)। क्तः (३. ४. ७२)। 'वेल्ल चलने' (भ्वा. प. से.)। वञ्चेः (भ्वा. प. से.) 'स्फायि-' (उ. २. १३) इति रक्। एकादश॥७१॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. अराल, २. वृजिन, ३. जिह्म, ४. ऊर्मित्, ५. कुंचित, ६. नत, ७. आविद्ध, ८. कुटिल, ९. भुग्न, १०. वेल्लित, ११. वक्र- ये ग्यारह नाम टेढ़े के हैं॥७१॥

ऋजावजिह्मप्रगुणौ

कृष्णमित्रटीका :- 'अर्ज अर्जने' (भ्वा. प. से.)। 'अर्जिदृशि-' (उ. १. २७) इति साधुः। प्रकृष्टो गुणोऽस्य[5]। त्रीणि॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. ऋजु, २. अजिह्म, ३. प्रगुण- ये तीन नाम सीधे के हैं।

व्यस्ते त्वप्रगुणाकुलौ।

कृष्णमित्रटीका :- 'कुल संस्त्याने' (भ्वा. प. से.)। 'व्याकुलस्य' त्रीणि॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. व्यस्त, २. अप्रगुण, ३. आकुल- ये तीन नाम आकुल के हैं।

1. Far away [3] 2. Long [2] 3. M. जलमस्य 4. **Round;** circular [3] 5. **Uneven** [2] 6. M. अंशवोस्य 7. **High;** tall [6] 8. M. वामोस्त्यस्य.

1. **Short;** small [5] 2. B. अवाग्रेऽवनतानते 3. **Bent down or down-cast** [3] 4. **Crooked; Curved** [11] 5. M. गुणोस्य 6. Straight [3] 7. **Bewildered** [2].

शाश्वतस्तु ध्रुवो नित्यसदातनसनातनाः ॥७२॥

कृष्णमित्रटीका :- शश्वद्भवः। 'ध्रुव स्थैर्ये' (तु. प. से.)। नियतं भवः। 'त्यब् नेर्ध्रुवे' (वा. ४. २. १०४)। सदा सना च भवः। 'सायंचिरम्-' (४. ३. ३३) इति ट्यूट्युलौ। पञ्च ॥७२॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. शाश्वत, २. ध्रुव, ३. नित्य, ४. सदातन, ५. सनातन- ये पाँच नाम नित्य के हैं॥७२॥

स्थास्नुः स्थिरतरः स्थेयान्

कृष्णमित्रटीका :- स्थानशीलः। 'ग्लाजि-' (३. २. १३९) इति क्स्नुः। अतिशयेन स्थिरः। ईयसुनि (५. ३. ५७) 'प्रियस्थिर-' (६. ४. १५७) इति साधुः। 'अतिस्थिरस्य' त्रीणि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. स्थास्नु, २. स्थिरतर, ३. स्थेयस् (सान्त)- ये तीन नाम अत्यंत स्थिर के हैं।

एकरूपतया तु यः।

कालव्यापी स कूटस्थः

कृष्णमित्रटीका :- कूटवत्तिष्ठति॥[3]

हिन्दी अर्थ :- कूटस्थ- यह एक नाम एक स्वभाव वाले नित्य व्यापक आकाश आदि का है।

स्थावरो जङ्गमेतरः ॥७३॥

कृष्णमित्रटीका :- 'स्थेशभास-' (३. २. १७५) इति वरच्। जङ्गमादितरः। द्वे॥७३॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. स्थावर, २. जंगमेतर- ये दो नाम अचर के हैं॥७३॥

चरिष्णुजङ्गमचरं त्रसमिङ्गं चराचरम्।

कृष्णमित्रटीका :- चरति। 'अलंकृञ्-' (३. २. १३६) इतीष्णुच्। कुटिलं गच्छति। गमेर्यङन्तादच् (३. १. १३४)। त्रसति। अच् (३. १. १३४)। इङ्गति। 'इगि गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'चरिचलि-' (वा. ६. १. १२) इति द्वित्वादि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. चरिष्णु, २. जंगम, ३. चर, ४. त्रस, ५. अंग, ६. चराचर- ये छः नाम चर के हैं।

चलनं कम्पनं कम्प्रं चलं लोलं चलाचलम्॥७४॥

चञ्चलं तरलं चैव पारिप्लवपरिप्लवे।

1. **Eternal** firm [5] 2. **Ever-lasting** [3] 3. **Kutastha** (Supreme Soul) [1] 4. **Immoveable** [2] 5. **Moveable** [5].

कृष्णमित्रटीका :- 'चलनशब्द-' (३. २. १४८) इति युच्। 'नमिकम्पि-' (३. २. १६७) इति रः। लोडति। 'चरिचलि-' (वा. ६. १. १२) इति द्वित्वादि॥७४॥ 'चञ्चु गतौ' (भ्वा. प. से.)। तरं लाति। परिप्लवते। 'प्लुङ् गतौ' (भ्वा. आ. से.) प्रज्ञाद्यण् (५. ४. ३८)। दश॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. चलन, २. कम्पन, ३. कंप्र, ४. चल, ५. लोल, ६. चलाचल॥७४॥ ७. चञ्चल, ८. तरल, ९. पारिप्लव, १०. परिप्लव- ये दस नाम चल के हैं।

अतिरिक्तः समधिकः

कृष्णमित्रटीका :- अतिरिच्यते। क्तः (३. २. १०२)। सम्यगधिकः। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. अतिरिक्त, २. समधिक- ये दो नाम अधिक के हैं।

दृढसंधिस्तु संहतः ॥७५॥

कृष्णमित्रटीका :- दृढसंधिरस्य। द्वे॥७५॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. दृढसंधि, २. संहत- ये दो नाम दृढसंधान अर्थात् बड़े मिलापी के हैं॥७५॥

कक्खटं कठिनं क्रूरं कठोरं निष्ठुरं दृढम्।

जरठं मूर्तिमन्मूर्तम्

कृष्णमित्रटीका :- करवति। 'कख हसने' (भ्वा. प. से.)। 'शकादिभ्योऽटन्'[4] (उ. ४. ८१) 'कवर्गद्वितीयादिः (खक्खटम्)' इत्यन्ये। 'खक्ख' हसने इत्यपरे। 'कठ कृच्छ्रजीवने' (भ्वा. प. से.)। बाहुलकादिनच्। कृन्तति। कृतेः क्रू रक् च। 'कठिचकिभ्यामोरन्' (उ. १. ६४)। नितिष्ठति। मद्गुरादिः (उ. १. ४१)। 'दृहदहि वृद्धौ' (भ्वा. प. से.)। क्तः। 'दृढः स्थूल-' (७. २. २०) इति साधुः। जीर्यति। बाहुलकादठच्। मुर्च्छा (भ्वा. प. से.) क्तः (३. ४. ७२)। नव॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. कर्कश, २. कठिन, ३. क्रूर, ४. कठोर, ५. निष्ठुर, ६. दृढ, ७. जठर, ८. मूर्तिमत्, ९. मूर्त- ये नौ नाम कठिन के हैं।

1. **Trembling;** shaking [10] 2. **Excessive** [2] 3. **Closely joined or** firmly united [2] 4. M. शकादिभ्योटन् 5. **Hard; cruel** [9].

प्रवृद्धं प्रौढमेधितम् ॥७६॥

कृष्णमित्रटीका :- प्र वहेः (भ्वा. उ. अ.) क्तः (३. २. १०२)। त्रीणि ॥७६॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रवृद्ध, २. प्रौढ, ३. एधित - ये तीन नाम प्रवृद्ध के हैं॥७६॥

पुराणं[2] प्रतनप्रत्नपुरातनचिरंतनाः।

कृष्णमित्रटीका :- पुरा भवम्। 'सायंचिरम्' (४. ३. २३) इति ट्युट्युलौ। 'नश्च पुराणे-' (वा. ५. ४. २५) पुरात्-त्नतनौ प्रादेशश्च। चिरं भवम्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. पुराण, २. प्रतन, ३. प्रत्न, ४. पुरातन, ५. चिरंतन- ये पाँच नाम पुरातन (प्राचीन) के हैं।

प्रत्यग्रोऽभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः॥७७॥ नूत्नश्च

कृष्णमित्रटीका :- प्रति नवमग्रमस्य। अभिनूयते। 'णु स्तुतौ' (अ. प. अ.)। 'ऋदोरप्' (३. ३. ५७)। 'अचो यत्' (३. १. ९७) नव्यः। नवस्य नू त्नप्तनप्खाश्च प्रत्ययाः (वा. ५. ४. ३०)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रत्यग्र, २. अभिनव, ३. नव्य, ४. नवीन, ५. नूतन, ६. नव॥७७। ७. नूत्न- ये सात नाम नवीन के हैं।

सुकुमारं तु कोमलं मृदुलं मृदु।

कृष्णमित्रटीका :- सुकुमार्यते। 'कुमार क्रीडायाम्' (चु. प. से.)। काम्यतेरलच्, अत उत्वं च। मृद्यते। 'मृद क्षोदे' (क्र्या. प. से.)। 'प्रथि मृदि-' (उ. १. २८) इति कुः। चत्वारि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. सुकुमार, २. कोमल, ३. मृदुल, ४. मृदु- ये चार नाम कोमल के हैं।

अन्वगन्वक्षमनुगेऽनुपदं क्लीबमव्ययम्॥७८॥

कृष्णमित्रटीका :- अन्वञ्चति। क्विन् (३. २. ५१)। अनुगतमक्षमिन्द्रियम्। अनु गच्छति। पदस्य पश्चात्॥७८॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. अन्वच् (चान्त), २. अन्वक्ष, ३. अनुग, ४. अनुपद- ये चार नाम पीछे के हैं। इनमें अनुपद शब्द (नपुंसकलिङ्ग) तथा अव्यय है॥७८॥

प्रत्यक्षं स्यादैन्द्रियकम्

कृष्णमित्रटीका :- प्रतिगतमक्षमिन्द्रियम्। इन्द्रियेषु भवम्। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रत्यक्ष, २. ऐन्द्रियक- ये दो नाम इन्द्रियों से ग्राह्य प्रत्यक्ष के हैं।

अप्रत्यक्षमतीन्द्रियम्।

कृष्णमित्रटीका :- 'अत्यध्यक्षम्' अपि क्वचित्पाठः। अतिक्रान्तमिन्द्रियम्। 'इन्द्रियेणाज्ञातस्य' द्वे[2]॥

हिन्दी अर्थ :- १. अप्रत्यक्ष, २. अतीन्द्रिय- ये दो नाम अप्रत्यक्ष अर्थात् इन्द्रियों से अग्राह्य धर्म आदि के हैं।

एकतानोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायनावपि॥७९॥ अप्येकसर्ग एकाग्रो (ग्र्यो) ऽप्येकायनगतोऽपि सः।

कृष्णमित्रटीका :- एकः अविच्छिन्नः तानो विस्तारोऽस्य[3]। अनन्या एकरूपा वृत्तिर्व्यापारोऽस्य[4]। एकमग्रं पुरोगतं ज्ञेयमस्य। एकमयनमस्य॥७९॥ एकः सर्गो निश्चयोऽस्य[5]। एकाग्र एव ऐकाग्र्यः। एकमयनं गतः। सप्त॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. एकतान, २. अनन्यवृत्ति, ३. एकाग्र, ४. एकायन॥७९॥ ५. एकसर्ग, ६. एकाग्र्य, ७. एकायनगत- ये सात नाम एकाग्र के हैं।

पुंस्यादिः पूर्वपौरस्त्यप्रथमाद्याः अथास्त्रियाम्॥८०॥

कृष्णमित्रटीका :- आ प्रथमं दीयते गृह्यते। 'उपसर्गे घोः किः' (३. ३. ९२) पूर्वति। 'पूर्व पूरणे' (भ्वा. प. से.)। पुरो भवः। 'दक्षिणापश्चात्पुरसस्त्यक्' (४. २. ९८)। 'प्रथ प्रख्याने' (भ्व. आ. से.)। 'प्रथेरमच्' (उ. ५. ६८)। पञ्च॥८०॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. आदि, २. पूर्व, ३. पौरस्त्य, ४. प्रथम, ५. आद्य- ये पाँच नाम आद्य के हैं। इनमें आदिशब्द (पुल्लिङ्ग) हैं॥८०॥

अन्तो जघन्यं चरममन्त्यपाश्चात्यपश्चिमम्।

कृष्णमित्रटीका :- अन्तति। 'अति बन्धने' (भ्वा. प. से.)। जघने भवम्। दिगादि (४. ३. ५४)। 'चरेश्च' (उ. ५. ६९) इत्यमच्। पश्चाद्भवम्। 'अग्रादि-पश्चाड्डिमच्' (वा. ४. ३. २३)॥[8]

---

1. **Grown;** increased [3] 2. B. and K. पुराणे 3. **old; ancient** [5] 4. **New** [7] 5. **Tender;** delicate: soft [4] 6. **Afterwards** or going after [4].

1. **Perceptible to** the senses [2] 2. **Imperceptible** to the senses [2] 3. M. विस्तारोस्य 4. M. वृत्तिर्व्यापारोस्य 5. M. निश्चयोस्य 6. **A concentrated** man [7] 7. **First** [5] 8 **Last** [6].

हिन्दी अर्थ :- १. अंत, २. जघन्य, ३. चरम, ४. अन्त्य, ५. पाश्चात्य, ६. पश्चिम- ये छः नाम अन्त के हैं। इनमें अन्त शब्द (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) है।

मोघं निरर्थकम्

कृष्णमित्रटीका :- मुह्यन्त्यस्मिन्। घञ् (३. ३. १२१) न्यङ्क्वादिः (७. ३. ५३) द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. मोघ, २. निरर्थक- ये दो नाम व्यर्थ के हैं।

स्पष्टं स्फुटं प्रव्यक्तमुल्बणम्॥८१॥

कृष्णमित्रटीका :- 'स्पश बाधनस्पर्शनयो' (भ्वा. उ. से.)। क्तः। (३. २. १०२)। 'वा दान्त-' (७. २. २७) इति साधु। स्फुटति। कः (३. १. १३५) उद्वणति। 'वण शब्दे' (भ्वा. प. से.)। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। चत्वारि॥८१॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. स्पष्ट, २. स्फुट, ३. प्रव्यक्त, ४. उल्बण- ये चार नाम स्पष्ट के हैं॥८१॥

साधारणं तु सामान्यम्

कृष्णमित्रटीका :- समानमाधरणमस्य। समं मानमस्य। ष्यञ्। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. साधारण, २. सामान्य- ये दो नाम साधारण के हैं।

एकाकी त्वेक एककः।

कृष्णमित्रटीका :- 'एकादाकिनिच्चासहाये' (५. ३. ५२)। चात्कनलुकौ॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. एकाकिन् (इन्नन्त), २. एक, ३. एकक- ये तीन नाम अकेले अर्थात् असहाय के हैं।

भिन्नार्थका अन्यतर एकस्त्वोऽन्येतरावपि॥८२॥

कृष्णमित्रटीका :- भिन्नोऽर्थो[5] येषाम्। अन्य एव। 'अल्पाचतरम्' (२. २. ३४) इतिवत्स्वार्थे तरप्। एति। 'इण्भी-' (उ. ३. ४३) इति कन्। तनोति। 'तनोतेरनश्च वः' (उ. २. ६३)। अनिति। 'अन प्राणने' (अ. प. से.)। अघ्न्यादिः (उ. ४. १११)। इतं राति॥८२॥[6]

1. **Futile** [2] 2. **Clear** [4] 3. **General** [2] 4. **Alone** [3] 5. M. भिन्नो अर्थो 6. **Other**; different [6].

हिन्दी अर्थ :- १. भिन्न, २. अन्यतर, ३. एक, ४. त्व, ५. अन्य, ६. इतर- ये छः नाम भिन्न के वाचक हैं॥८२॥

उच्चावचं नैकभेदम्

कृष्णमित्रटीका :- उदक् चावाक् च। मयूरव्यंसकादिः (२. १. ७२)। न एको भेदोऽत्र[1]। 'अनेकप्रकारस्य' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. उच्चावच, २. नैकभेद- ये दो नाम बहुत प्रकार के हैं।

उच्चण्डमविलम्बितम्।

कृष्णमित्रटीका :- 'चडि कोपे' (भ्वा. आ. से.) घञ्। (३. ३. १८) द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. उच्चंड, २. अविलम्बित- ये दो नाम जल्दी के हैं।

अरुन्तुदं तु मर्मस्पृक्

कृष्णमित्रटीका :- अरूंषि तुदति। 'विध्व-रुषोस्तुदः' (३. २. ३५) इति खच्। मर्म स्पृशति। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. अरुंतुद, २. मर्मस्पृश् (शान्त)- ये दो नाम मर्मभेदी के हैं।

अबाधं तु निरर्गलम्॥८३॥

कृष्णमित्रटीका :- न बाधाऽस्य[5]। निष्क्रान्तमर्गलायाः। 'अबाधितस्य' द्वे॥८३॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. अबाध, २. निरर्गल- ये दो नाम निर्बाध (बेरोक) के हैं॥८३॥

प्रसव्यं प्रतिकूलं स्यादपसव्यमपष्ठु च।

कृष्णमित्रटीका :- प्रगतं सव्यात्। प्रतीपं कूलात्। अपतिष्ठति। 'अप दुः सुषुस्थः' (उ. १. २५) इति कुः। 'विरुद्धार्थस्य' त्रीणि॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रसव्य, २. प्रतिकूल, ३. अपसव्य, ४. अपष्ठु- ये चार नाम विपरीत के हैं।

वामं शरीरं सव्यं स्यादपसव्यं तु दक्षिणे॥८४॥

कृष्णमित्रटीका :- सूयते। 'षू पूरणे' (तु. प. से.)। यत् (३. १. ९७)। अपक्रान्तं सव्यात्। एकैकम्॥[8]

1. M. भेदोत्र 2. **Various**; diverse [2] 3. **Quick** [2] 4. **Poignant** (as words) [2] 5. M. बाधास्य 6. **Unobstructed**; unrestrnied [2] 7. **Contradictory** [3] 8. The **left and right** parts of a body [1 each].

हिन्दी अर्थ :- सव्य- यह एक नाम वाम शरीर का है। अपसव्य- यह एक नाम दाहिने शरीर का है॥८४॥

संकटं ना तु संबाधः

कृष्णमित्रटीका :- संकटति। 'कटे वर्षादौ' (भ्वा. प. से.)। सं बाधन्तेऽत्र[1]। 'संकीर्णस्य' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. संकट, २. संबाध- ये दो नाम अल्प अवकाशवाले मार्ग आदि के हैं। इनमें सबाधशब्द (पुल्लिङ्ग) है।

कलिलं गहनं समम्।[3]

कृष्णमित्रटीका :- कलते। 'सलिकलि-' (उ. १. ५४) इतीलच्। गाहते। पृषोदरादित्वात् (६. ३. १०९) ह्रस्वः। 'दुष्प्रवेशस्य' द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. कलिल, २. गहन- ये दो नाम दुःख से अधिगम्य के हैं।

संकीर्णं संकुलाकीर्णे

कृष्णमित्रटीका :- किरः (तु. प. से.) क्तः (३. २. १०२)। 'कुल संस्त्याने' (भ्वा. प. से.)। त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. संकीर्ण, २. संकुल, ३. आकीर्ण- ये तीन नाम अत्यन्त मिले हुए के हैं।

मुण्डितं परिवापितम्॥८५॥

कृष्णमित्रटीका :- पर्येर्ण्यन्तात्कः (३. २. १०२)॥ द्वे॥८५॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. मुंडित, २. परिवापित- ये दो नाम मुण्डित के हैं॥८५॥

ग्रन्थिते[7] संदितं दृब्धम्

कृष्णमित्रटीका :- 'ग्रन्थ संदर्भे' (क्र्या. प. से.)। 'दो अवखण्डने' (दि. प. अ.)। क्तः (३. २. १०२)। 'द्यतिस्यति-' (७. ४. ४०) इतीत्वम्। 'दृभी ग्रंथे' (तु. प. से.) क्तः। त्रीणि॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. ग्रंथित, २. संदित, ३. दृब्ध- ये तीन नाम गुंफित अर्थात् गुथे हुए के हैं।

विसृतं विस्तृतं ततम्।

कृष्णमित्रटीका :- 'सृ गतौ' (भ्वा. प. अ.)। क्तः (३. ४. ७२)। त्रीणि॥[9]

हिन्दी अर्थ :- १. विसृत, २. विस्तृत, ३. तत- ये तीन नाम फैले हुए के हैं।

अन्तर्गतं विस्मृतं स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- 'स्मृ आध्याने' (भ्वा. प. अ.) द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. अन्तर्गत, २. विस्मृत- ये दो नाम विस्मृत अर्थात् भूले हुए के हैं।

प्राप्तप्रणिहिते समे॥८६॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रापेः क्तः। 'दधातेर्हिः' (७. ४. ४२)। 'स्थापितस्य' द्वे॥७६॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. प्राप्त, २. प्रणिहित- ये दो नाम लब्ध के हैं॥८६॥

वेल्लितप्रेङ्खिताधूतचलिताकम्पिता धुते।

कृष्णमित्रटीका :- 'वेल्ल चलने' (भ्वा. प. से.)। 'इखि गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'धू विधूनने' (तु. प. से.)। आकम्प्यते। 'धूञ् कम्पने' (क्र्या. प. से.) षट्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. वेल्लित, २. प्रेंखित, ३. आधूत, ४. चलित, ५. आकंपित, ६. धुत- ये छः नाम कुछ कंपित हुए के हैं।

नुत्तनुन्नास्तनिष्ठ्यूताविद्धक्षिप्तेरिताः समाः॥८७॥

कृष्णमित्रटीका :- 'णुद् प्रेरणे' (तु. उ. अ.)। 'नुदविद-' (८. २. ५५) इति वा नः। अस्यतेः क्तः (३. २. १०२) निष्ठीव्यते स्म। 'च्छ्वोः-' (६. ४. १९) इत्यूठ्। आविध्यते स्म। क्षिपेः (तु. उ. से.) क्तः। 'ईर गतौ' (अ. आ. से.)। सप्त॥८७॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. नुत्त, २. नुन्न, ३. अस्त, ४. निष्ठ्यूत, ५. आविद्ध, ६. क्षिप्त, ७. ईरित- ये सात नाम प्रेरित के हैं॥८७॥

परिक्षिप्तं तु निवृतम्

कृष्णमित्रटीका :- 'वृञ् आवरणे' (क्र्या. उ. से.)। क्तः (३.२.१०२)। 'परिखादिना वेष्टितस्य' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. परिक्षिप्त, २. निवृत- ये दो नाम कोट आदि से सब ओर घिरे हुए के हैं।

---

1. M. बाधन्तेत्र 2. **Narrow** [2] 3. B. and K. समे 4. **Impenetrable** [2] 5. **Crowded** [3] 6. **Shaved** [2] 7. K. ग्रन्थितं 8. **Strung;** tied together [3] 9. **extended;** spread out [2].

1. **Forgotten** [2] 2. **Obatained;** attained [2] 3. **Shaken;** oscillated [6] 4. **A person put** or set in motion [7] 5. **Sorrounded** or encircled with trench & c. [2].

मूषितं मुषितार्थकम्।

कृष्णमित्रटीका :- 'मूष स्तेये' (भ्वा. प. से.)। 'चोरितस्य' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. मूषित, २. मुषित- ये दो नाम चुराये हुए के हैं।

प्रवृद्धप्रसृते

कृष्णमित्रटीका :- वृधेः (भ्वा. आ. से.) क्तः (३. ४. ७२)। 'सृ गतौ' (भ्वा. प. अ.) द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रवृद्ध, २. प्रसृत- ये दो नाम फैले हुए के हैं।

न्यस्तनिसृष्टे

कृष्णमित्रटीका :- असेः (दि. प. से.) क्तः (३. २. १०२)। सृजेः (दि. आ. अ.) (क्तः)। 'त्यक्तस्य' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. न्यस्त, २. निसृष्ट- ये दो नाम फेके हुए के हैं।

गुणिताहते ॥८८॥

कृष्णमित्रटीका :- 'गुण आमन्त्रणे' (चु. उ. से.)। आ 'हन्' (अ. प. अ.)। 'गुणितस्य' द्वे॥८८॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. गुणित, २. आहत- ये दो नाम गुणा किये हुए के हैं॥८८॥

निदिग्धोपचिते

कृष्णमित्रटीका :- 'दिह उपचये' (अ. उ. अ.)। चिञ् (स्वा. उ. अ.)। 'पुष्टि प्रापितस्य' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. निदिग्ध, २. उपचित- ये दो नाम समृद्ध हुए के हैं।

गूढगुप्ते

कृष्णमित्रटीका :- गूह्यते। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. गूढ, २. गुप्त- ये दो नाम गुप्त के हैं।

गुण्ठितरूषिते।[7]

कृष्णमित्रटीका :- 'गुडि वेष्टने'। रुषिर्वेष्टनार्थः। द्वे 'गोटालौका' (लोके)॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. गुंठित, २. रूषित- ये दो नाम धूल से लिप्त हुए के हैं।

द्रुतावदीर्णे

कृष्णमित्रटीका :- 'द्रु गतौ' (भ्वा. प. अ.)। 'दृ विदारणे' (क्र्या. प. से.)। 'द्रवीकृतस्य' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. द्रुत, २. अवदीर्ण- ये दो नाम पिघले हुए के हैं।

उद्गूर्णोद्यते

कृष्णमित्रटीका :- 'गुरी उद्यमने' (दि. आ. से.)। उद् यमेः (भ्वा. प. अ.) क्तः क्तः (३. २. १०२)। 'उत्तोलितस्य' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. उद्गूर्ण, २. उद्यत- ये दो नाम उठाये हुए शस्त्र आदि के हैं।

कारितशिक्षिते[3] ॥८९॥

कृष्णमित्रटीका :- कार्यते। शिक्षां कारितः। द्वे॥८९॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. कारित, २. शिक्षित- ये दो नाम छींके पर धरे हुए के हैं॥८९॥

घ्राणघ्रातं

कृष्णमित्रटीका :- जिघ्रतेर्नुदविद (८. २. ५५) इति वा नः। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. घ्राण, २. घ्रात- ये दो नाम सूंघे हुए के हैं।

दिग्धलिप्ते

कृष्णमित्रटीका :- दिह (अ. उ. अ.)। लिप (तु. उ. अ.)। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. दिग्ध, २. लिप्त- ये दो नाम विलिप्त के हैं।

समुदक्तोद्धृते समे।

कृष्णमित्रटीका :- समु (द) च्यते। 'अञ्चु गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'हृञ् हरणे' (भ्वा. उ. से.)। 'कूपादेर्निष्कासितस्य' द्वे॥[7]

---

1. **Stolen** [2]. 2. **Full-grown** [2] 3. **Thrown;** laid down [2] 4. **Multiplied.** [2] 5. **Increased,** accumulated [2] 6. **Hidden** [2] 7. B. Prefer's गुण्डितरूषिते 8. **Covered with** dust [2].

1. **Liquidised;** melted [2] 2. **Raised;** lifted pu [2] 3. B. काचितशिक्यिते 4. **Anything put** on a hanging loop or swing made or rope [2] 5. **Smelt** [2] 6. **Smeared or** anointed [2] 7. **Raised;** drawn up (as water from a well) [2].

हिन्दी अर्थ :- १. समुदक्त, २. उद्धृत- ये दो नाम कुँए (कूप) आदि से निकाले हुए जल आदि के हैं।

वेष्टितं स्याद्वलयितं संवीतं रुद्धमावृतम् ॥९०॥

कृष्णमित्रटीका :- 'वेष्ट वेष्टने' (भ्वा. आ. से.)। वलयं जातमस्य। व्येञ् (भ्वा. उ. अ.)। क्तः (३. २. १०२)। रुधिर् (रु. उ. अ.)। 'वृञ् आवरणे' (क्र्या. उ. से.)। 'नद्यादिवेष्टितस्य' पञ्च॥९०॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. वेष्टित, २. वलयित, ३. संवीत, ४. रुद्ध, ५. आवृत- ये पाँच नाम घिरे हुए के हैं॥९०॥

रुग्णं भुग्ने

कृष्णमित्रटीका :- 'रुजो भङ्गे' (तु. प. अ.)। 'भुजो कौटिल्ये' (तु. प. अ.) 'वक्रस्य' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. रुग्ण, २. भुग्न- ये दो नाम टूटे हुए के हैं।

अथ निशितक्ष्णुतशातानि तेजिते।

कृष्णमित्रटीका :- श्यतेः क्तः (३. २. १०२)। 'शाच्छोः-' (७. ४. ४१) इति वेत्वम्। 'क्ष्णु तेजने' (अ. प. से.)। 'तिज निशाने' (चु. प. से.)। 'शाणादावारोपितस्य' चत्वारि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. निशित, २. क्ष्णुत, ३. शात, ४. तेजित- ये चार नाम शाण आदि से तीक्ष्ण किये शस्त्र आदि के हैं।

स्याद्विनाशोन्मुखं पक्वम्

कृष्णमित्रटीका :- 'पचो वः' (८. २. ५२)। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- पक्व- यह एक नाम पके हुए का है।

ह्रीणह्रीतौ तु लज्जिते॥९१॥

कृष्णमित्रटीका :- 'ह्री लज्जायाम्' (जु. प. अ.)। 'नुदविद' (८. २. ५६) इति वा नः। त्रीणि॥९१॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. ह्रीण, २. ह्रीत, ३. लज्जित- ये तीन नाम लज्जित हुए के हैं॥९१॥

1. **Encircled;** sorrounded [5] 2. **Broken or shattered** [2] 3. **Sharpened** [4] 4. **Ripen or about to** perish [2] 5. **Ashamed** [3].

वृते तु वृत्तवावृत्तौ

कृष्णमित्रटीका :- वृञ् वृतुभ्यां क्तः (३. २. १०२)। 'वावृतु वर्तने' इति मते ततः क्तः। 'वृतस्य व (रादेः)'॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. वृत्त, २. वृत्त, ३. व्यावृत्त- ये तीन नाम वरण किये हुए के हैं।

संयोजित उपाहितः।

कृष्णमित्रटीका :- युजेः (रु. उ. अ.) क्तः (३. २. १०२)। 'दधातेर्हिः' (७. ४. ४२)। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. संयोजित, २. उपाहित- ये दो नाम मिलाये हुए के हैं।

प्राप्यं गम्यं समासाद्यम्

कृष्णमित्रटीका :- आपेर्ण्यत् (३. १. १२४)। गमेः (भ्वा. प. अ.) यत्। षद्लृ (तु. प. अ.) ण्यत् (३. १. १२४)। त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. प्राप्य, २. गम्य, ३. समासाद्य- ये तीन नाम प्राप्त होने के योग्य के हैं।

स्यन्नं रीणं स्रुतं स्नुतम्[4] ॥९२॥

कृष्णमित्रटीका :- स्यन्देः (भ्वा. आ. से.) क्ते (३. २. १०२) 'रदाभ्याम्-' (८. २. ४२) इति नः। 'रीङ् स्रवणे' (दि. आ. अ.)। 'स्रु गतौ' (भ्वा. प. अ.)। 'स्नु (ष्णु) प्रस्रवणे' (अ. प. से.)॥९२॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. स्यन्न, २. रीण, ३. स्नुत, ४. स्रुत- ये चार नाम प्रस्रुत अर्थात् बहते हुए के हैं॥९२॥

संगूढः स्यात्संकलितः

कृष्णमित्रटीका :- गूहतेः (भ्वा. उ. अ.) (क्तः)। 'कल संख्याने' (भ्वा. आ. से.)। 'अङ्कान्तरेणैकीकृतस्य' द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. संगूढ, २. संकलित- ये दो नाम जोड़े हुए अंक आदि के हैं।

अवगीता ख्यातगर्हणः।

कृष्णमित्रटीका :- 'गै शब्दे' (भ्वा. प. से.)। 'घुमास्था-' (६. ४. ४६) इति (इत्वम्)। संख्यातं गर्हणमस्य। 'प्रसिद्धनिन्दस्य' द्वे॥[7]

1. **Chosen;** selected as a husband & c. [2] 2. **Connected;** joined [2] 3. **Obtainable;** knowable [3] 4. B. स्नुते 5. **Dropped or** flowed (as water & c.) [3] 6. **Added** (as a figure to another) [2] 7. **A notoriously** vile person [2].

हिन्दी अर्थ :- १. अवगति, २. ख्यातगर्हण- ये दो नाम निन्दित के हैं।

विविधः स्याद्बहुविधो नानारूपः पृथग्विधः ॥६३॥

कृष्णमित्रटीका :- विचित्रा विधाऽस्य[1]। नानारूपं यस्य। चत्वारि॥६३॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. विविध, २. बहुविध, ३. नानारूप, ४. पृथग्विध- ये चार नाम अनेक प्रकार के हैं॥६३॥

अवरीणो धिक्कृतश्चापि

कृष्णमित्रटीका :- 'रीङ् स्रवणे' (दि. आ. अ.) अवरीणः। 'निन्दितस्य' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. अवरीण, २. धिक्कृत- ये दो नाम निंदितमात्र के हैं।

अवध्वस्तोऽवचूर्णितः।

कृष्णमित्रटीका :- 'ध्वंसु गतौ' (भ्वा. आ. से.)। अवचूर्ण्यते। चुरादेः क्तः। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. अवध्वस्त, २. अवचूर्णित - ये दो नाम चूर्ण किये हुए के हैं।

अनायासकृतं फाण्टम्

कृष्णमित्रटीका :- 'फण गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'क्षुब्धस्वान्त-' (७. २. १८) इति साधु। 'क्वाथविशेषस्य' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १ अनायासक्रत, २. फांट- ये दो नाम विना परिश्रम किये क्वाथ के है।

स्वनितं ध्वनितं समे॥६४॥

कृष्णमित्रटीका :- 'स्वन ध्वन शब्दे' (भ्वा. प. से.)॥६४॥ द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. स्वनित, २. ध्वनित- ये दो नाम शब्दित के हैं॥६४॥

बद्धे संदानितं मूतमुद्दितं संदितं सितम्।

कृष्णमित्रटीका :- 'बन्ध बन्धने' (क्र्या. प. से.)। 'दान अव खण्डने' (भ्वा. उ. से.)। 'मूङ् बन्धने' (भ्वा. आ. से.)। उत्पूर्वाद् द्यतेः (दि. प. अ.) क्ते (३. २. १०२) 'द्यतिस्यति-' (३. ४. ४०) इतीत्वम्। 'षिञ् बन्धने' (स्वा. उ. अ.)। षट्॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. बद्ध, २. संदानित, ३. मूत, ४. उद्दित, ५. संदित, ६. सित- ये छः नाम बंधे हुए के हैं।

निष्पक्वं क्वथितम्

कृष्णमित्रटीका :- निश्चयेन पक्वम्। 'क्वथे निष्पाके' (भ्वा. प. से.)। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. निष्पक्व, २. क्वथित- ये दो नाम सकल रीति से पके हुए क्वाथ आदि के हैं।

पाके क्षीराज्य-हविषां[3] शृतम्॥६५॥

कृष्णमित्रटीका :- क्षीरादीनां पाके। 'शृतं पाके' (६. १. २७) इति साधु। एकम्॥६५॥[4]

हिन्दी अर्थ :- शृत- यह एक नाम पके हुए दूध घृत आदि का है।६५॥

निर्वाणो मुनिवह्न्यादौ निर्वातस्तु गतेऽनिले[5]।

कृष्णमित्रटीका :- निर्वाति स्म। 'निर्वाणोऽवाते' (८. २. ५०) इति साधु। निर्गतो वातः। एकैकम्॥[6]

हिन्दी अर्थ :- निर्वाण- यह एक नाम मुनि और अग्निविषय में मुक्त और बुझने के अर्थ में है। जैसे- 'निर्वाणो मुनिः, निर्मुक्त इत्यर्थः। निर्वाणो वह्निः' अर्थात् बुझी हुई अग्नि। निर्वात- यह एक नाम वायु रहित का है।

पक्वे परिणतम्[7]

कृष्णमित्रटीका :- परिणमति स्म। द्वे॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. पक्व, २. परिणत- ये दो नाम पके हुए के हैं।

गूनं हन्नं

कृष्णमित्रटीका :- 'गु पुरीषोत्सर्गे' (तु. प. अ.)। 'दुग्वोदीर्घश्च' (वा. ८. २. ४४) इति नः। 'हद पुरीषोत्सर्गे' (भ्वा. आ. अ.)। 'रदाभ्याम्-' (८.२. ४२) इति नः। 'गुदनिस्सृतपुरीषस्य' द्वे॥[9]

हिन्दी अर्थ :- १. गून, २. हन्न- ये दो नाम विष्ठा त्याग वाले के हैं।

---

1. M. विधास्य 2. **Manifold; of various sorts** [4] 3. **Despised** [2] 4. **Powdered** [2] 5. **An infusion or decoction** easily prepared [2] 6. **Sound** [2].

1. **Fettered; tied** [6] 2. **Well cooked** [2] 3. B. '-पयसां' 4. **Boiled milk,** ghee & c. [1] 5. B. गतानिले 6. **An extinguished** lamp and a liberated Muni, and a place sheltered from wind [1 each] 7. B. and K. पक्वं परिणते 8. **Ripened;** fully developed [2] 9. **Voided by** stool as ordure [2].

मीढं तु मूत्रिते ॥९६॥

कृष्णमित्रटीका :- 'मिह सेचने' (भ्वा. प. अ.)। क्तः (३.२. १०२)। द्वे ॥९६॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. मीढ, २. मूत्रित- ये दो नाम मूत्र कर चुकने के हैं॥९६॥

पुष्टे तु पुषितम्

कृष्णमित्रटीका :- 'पुष पुष्टौ' (दि. प. अ.)। भौवादिकस्य त्विट्। 'कृतपोषणस्य' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. पुष्ट, २. पुषित- ये दो नाम मोटे के हैं।

सोढं[3] क्षान्तम्

कृष्णमित्रटीका :- सहेः (भ्वा. आ. से.) क्तः (३. २. १०२)। 'क्षमूष सहने' (दि. प. से.)।[4]

हिन्दी अर्थ :- १. सोढ, २. क्षान्त- ये दो नाम क्षमा को प्राप्त हुए के हैं।

उद्वान्तमुद्गतम्[5]।

कृष्णमित्रटीका :- 'टुवम् उद्गिरणे' (भ्वा. प. से.)। क्तः (३. २. १०२) गमेः (भ्वा. प. अ.) क्तः (३. २. १०२)। 'वमित्वा त्यक्तस्य' द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. उद्वांत, २. उद्गत- ये दो नाम वमन करके गिराये हुए अन्न आदि के हैं।

दान्तस्तु दमिते

कृष्णमित्रटीका :- दम्यते स्म। 'दमु उपशमे' (दि. प. से.) 'वा दान्तशान्त-' (७. २. २७) इति साधुः। 'कृतदमनस्य वृषादेः' द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. दांत, २. दमित- ये दो नाम इन्द्रिय जीते के हैं।

शान्तः शमिते

कृष्णमित्रटीका :- शमेः क्तः (३. २. १०२)। द्वे॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. शांत, २. शमित- ये दो नाम शान्त हुए के हैं।

1. **Discharged or** voided as urine [2] 2. **Nourished;** brought up [2] 3. B. and K. सोढे 4. **Forgiven** [2] 5. B. उद्वान्तमुद्गते 6. **Vomited** [2] 7. **Tamed** [2] 8. **Appeased** [2].

प्रार्थितेऽर्दितः ॥९७

कृष्णमित्रटीका :- 'अर्थ उपायाञ्चायाम्' (चु. आ. से.)। 'अर्द गत्यादौ' (भ्वा.प.से.) द्वे॥९७॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रार्थित, २. अर्दित- ये दो नाम याचित अर्थात् माँगे हुए के हैं॥९७॥

ज्ञप्तस्तु ज्ञपिते

कृष्णमित्रटीका :- ज्ञप्यतेस्म। मारणादौ ज्ञा मित्। 'वा दन्त- ' (७. २. २७) इति साधुः। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. ज्ञप्त, २. ज्ञपित- ये दो नाम जाने हुए के हैं।

छन्नश्छादिते

कृष्णमित्रटीका :- 'छिद अपवारणे' (चु. उ. से.)। 'वा दन्त-' (७. २. २७) इति साधुः। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. छन्न, २. छादित- ये दो नाम ढके हुए के हैं।

पूजितेऽञ्चितः।

कृष्णमित्रटीका :- 'पूज पूजायाम्' (चु. प. से.)। 'अञ्चु पूजायाम्' (भ्वा. प. से.)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. पूजित, २. अंचित- ये दो नाम पूजित हुए के हैं।

पूर्णस्तु पूरिते

कृष्णमित्रटीका :- 'पूरी आप्यायने' (दि. आ. से.)। प्राग्वत्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. पूर्ण, २. पूरित- ये दो नाम पूर्ण के हैं।

क्लिष्टः क्लेशिते[6]

कृष्णमित्रटीका :- 'क्लिशू विबाधने' (चु. प. से.)। 'क्लिशः क्त्वानिष्ठयोः' (७. २. ५२) इति वेट्। द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. क्लिष्ट, २. क्लिशित- ये दो नाम क्लेश को प्राप्त हुए के हैं।

अवसिते सितः ॥९८॥

1. **Begged;** requested [2] 2. **Made known;** informed [2] 3. **Covered;** concealed [2] 4. **Revered;** honourd [2] 5. **Filled;** completed [2] 6. B. and K. क्लिशिते 7. **Distressed** [2].

कृष्णमित्रटीका :- अवस्यति स्म। 'द्यतिस्यति' (७. ४. ४०) इतीत्वम्। 'समाप्तस्य' द्वे॥९८॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. अवसित, २. सित- ये दो नाम समाप्त के हैं॥९८॥

प्रुष्टप्लुष्टोषिता दग्धे

कृष्णमित्रटीका :- 'प्रुषु प्लुषु दाहे' (भ्वा. प. से.)। 'उष दाहे' (भ्वा. प. से.)॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रुष्ट, २. प्लुष्ट, ३. उषित, ४. दग्ध- ये चार नाम जले हुए के हैं।

तष्टत्वष्टौ तनूकृते।

कृष्णमित्रटीका :- 'तक्षू त्वक्षू तनूकरणे' (भ्वा. प. से.)। त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. तष्ट, २. त्वष्ट, ३. तनूकृत- ये तीन नाम छीलकर अल्प बनाए हुए के हैं।

वेधितश्छिद्रितौ विद्धे

कृष्णमित्रटीका :- 'विध विधाने' (तु. प. से.)। छिद्रं जातमस्य। त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. वेधित, २. छिद्रित, ३. विद्ध - ये तीन नाम छेदे हुए के हैं।

विन्नवित्तौ विचारिते॥९९॥

कृष्णमित्रटीका :- 'विद विचारणे' (रु. आ. अ.)। 'नुदविद-' (८. २. ५५) इति वा नः। त्रीणि॥९९॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. विन्न, २. वित्त, ३. विचारित- ये तीन नाम विचारे हुए के हैं॥९९॥

निष्प्रभे विगतारोकौ

कृष्णमित्रटीका :- नास्ति रोचनं दीप्तिरस्य। त्रीणि॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. निष्प्रभ, २. विगत, ३. अरोक- ये तीन नाम दीप्तिरहित के हैं।

विलीने विद्रुत द्रुतौ।

कृष्णमित्रटीका :- 'लीङ् श्लेषणे' (दि. आ. अ.)। 'स्वादय ओदितः' इति नः॥ त्रीणि॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. विलीन, २. विद्रुत, ३. द्रुत- ये तीन नाम द्रवीभूत अर्थात् पिघले हुए घृतादि के हैं।

सिद्धे निर्वृत्तनिष्पन्नौ

कृष्णमित्रटीका :- 'षिधु-' (दि. प. अ.)। 'वृतु' (भ्वा. आ. से.)। 'पद-' (दि. आ. अ.)। त्रीणि॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. सिद्ध, २. निर्वृत्त, ३. निष्पन्न- ये तीन नाम सिद्ध हुए के हैं।

दारिते भिन्नभेदितौ॥१००॥

कृष्णमित्रटीका :- दृभिदोः क्तः (३. २. १०२)। त्रीणि॥१००॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. दारित, २. भिन्न, ३. भेदित- ये तीन नाम फाड़े हुए के हैं॥१००॥

ऊतं स्यूतमुतं चेति त्रितयं तन्तुसंतते।

कृष्णमित्रटीका :- 'ऊयी तन्तुसन्ताने' (भ्वा. आ. से.)। सिवेः (दि. प. से.) 'च्छ्वोः-' (६. ४. १९) इत्यूठ्। 'वेञ्-' (भ्वा. प. अ.) क्तः (३. २. १०२)। तन्तुभिः संततम्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. ऊत, २. स्यूत, ३. उत- ये तीन नाम तंतुओं के प्रबन्ध अर्थात् बीने हुए के हैं।

स्यादर्हिते नमसितं नमस्यित[4] मपचायितार्चितापचितम्॥१०१॥

कृष्णमित्रटीका :- 'अर्हं पूजायाम्' (भ्वा. प. से.)। नमः कृतम्। 'नमो वरिवः-' (३. १. १९) इति क्यच्। 'क्यस्य विभाषा' (६. ४. ५०) इति यलोपः। अपचायते स्म। 'चापृ पूजानिशामनयोः' (भ्वा. उ. से.)। 'अर्च पूजायाम्' (भ्वा. प. से.)। 'चायतेश्चिः'। 'नमस्कृतस्य' षट्॥१०१॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. अर्हित, २. नमस्यित, ३. नमसित, ४. अपचायित, ५. अर्चित, ६. अपचिर्त- ये छः नाम अर्चित के हैं॥१०१॥

वरिवसिते वरिवस्यितमुपासितं चोपचरितं च।

कृष्णमित्रटीका :- वरिवः कृतम् 'नमो वरिवः' (३. १. १९) इति क्यच्। 'क्यस्य विभाषा' (६. ४. ५०)।

1. **Finished** [2] 2. **Burnt** [4] 3. **Hewn** (as a wood) [3] 4. **Pierced** [3] 5. **Considered;** examined [3] 6. **Lustreless;** pale-looking [3] 7. **Dissolved** [3].

1. **Accomplished;** effected [3] 2. **Broken;** torn, split [3] 3. **Woven;** sewn (as cloth) [5] 4. B. and K. नमस्यितनमसित- 5. **Saluted;** respected [6].

'आस उपवेशने' (अ. आ. से.)। 'चह (र) गतौ'। चत्वारि॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. वरिवसित, २. वरिवस्यित, ३. उपासित, ४. उपचरित- ये चार नाम शुश्रूषित के है।

संतापितस्तु संतप्तो[2] धूपितधूपायितौ च दूनश्च॥१०२॥

कृष्णमित्रटीका :- 'तपदाहे' चुरादिः। 'तप संतापे' (भ्वा. प. अ.)। 'धूप संतापे' (भ्वा. प. से.)। 'आयादयः-' (३. १. ३१) इति वा आयाः। 'दुदु उपतापे' (स्वा. प. अ.)। 'दुग्वो दीर्घश्च' (वा. ८. ४. ४४) पञ्च॥१०२॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. संतापित, २. संतप्त, ३. धूपित, ४. धूपायित, ५. दून- ये पाँच नाम संतापित के हैं॥१०२॥

हृष्टे मत्तस्तृप्तः प्रह्लन्नः प्रमुदितः प्रीतः।

कृष्णमित्रटीका :- 'हृष तुष्टौ' (दि. प. से.)। क्तः (३. ४. ७२)। 'मदी हर्षे' (दि. प. से.)। 'तृप प्रीणने' (दि. प. अ.)। 'ह्लादी सुखे च' (भ्वा. आ. से.)। 'ह्लादो निष्ठायाम्' (६. ४. ९५) इति ह्रस्वः। षट्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. हृष्ट, २. मत्त, ३.तृप्त, ४. प्रह्लन्न, ५. प्रमुदित, ६. प्रीत- ये छः नाम प्रमुदित (प्रसन्न रहने वाले) के हैं।

छिन्नं छातं लूनं कृत्तं दातं दितं छितं वृक्णम्॥१०३॥

कृष्णमित्रटीका :- छिदेः (रु. उ. से.) क्तः (३. २. १०२)। 'छो च्छेदने' (दि. प. अ.) 'शाच्छोरन्यतरस्याम्' (७. ४. ४१) इति वा वेत्त्वम्। 'लूञ्' (क्र्या. उ. से.)। 'कृती' (तु. प. से.) 'छेदने'। 'दाप् लवने' (अ. प. अ.)। दो (दि. प. अ.)। 'द्यतिस्यति-' (७. ४. ४०) इत्यात्वम्। 'ओव्रश्चू-' (तु. प. से.) अष्टौ॥१०३॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. छिन्न, २. छात, ३. लून, ४. कृत्त, ५. दात, ६. दित, ७. छित, ८. वृक्ण- ये आठ नाम खंडित (कटे) के हैं॥१०३॥

स्रस्तं ध्वस्तं भ्रष्टं स्कन्नं पन्नं च्युतं गलितम्।

कृष्णमित्रटीका :- 'स्रंसु ध्वंसु भ्रंसु-' (भ्वा. आ. से.)। स्कन्दिर (भ्वा. प. से.) पद (दि. आ. अ.) गतौ। 'च्युङ् गतौ' (भ्वा. आ. अ.)। 'गल अदने' (चु. उ. से.)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. स्रस्त, २. ध्वस्त, ३. भ्रष्ट, ४. स्कन्न, ५. पन्न, ६. च्युत, ७. गलित- ये सात नाम च्युत अर्थात् चुए हुए के हैं।

लब्धं प्राप्तं विन्नं भावितमासादितं च भूतं च॥१०४॥

कृष्णमित्रटीका :- 'विद्लृ लाभे' (तु. उ. अ.)। 'भू प्राप्तौ' (चु. आ. से.)। आसाद्यते स्म। षट्॥१०४॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. लब्ध, २. प्राप्त, ३. विन्न, ४. भावित, ५. आसादित, ६. भूत- ये छः नाम प्राप्त हुए के हैं॥१०४॥

अन्वेषितं गवेषितमन्विष्टं मार्गितं मृगितम्।

कृष्णमित्रटीका :- अन्वेष्यते स्म। 'एषृ गतौ' (भ्वा. आ. से.)। 'गवेष मार्गणे' (चु. उ. से.)। 'इष इच्छायाम्' (तु. प. से.)। 'मार्ग अन्वेषणे' (चु. उ. से.) 'मृग अन्वेषणे' (चु. आ. से.)। पञ्च॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. अन्वेषित, २. गवेषित, ३. अन्विष्ट, ४. मार्गित, ५. मृगित- ये पाँच नाम ढूंढे हुए के हैं।

आर्द्रं सार्द्रं क्लिन्नं तिमितं स्तिमितं समुन्नतमुत्तं च॥१०५॥

कृष्णमित्रटीका :- 'अर्द गतौ' (भ्वा. प. से.) 'अर्देर्दीर्घश्च' (उ. २. १८) इति रक्। सह आर्द्रत्वेन। 'क्लिदू आर्द्रीभावे' (दि. प. से.)। 'तिम ष्टिम आद्रीभावे' (दि. प. से.)। 'उन्दी क्लेदने' (रु. प. से.)। 'नुदविद-' (८. २. ५५) इति वा नः। सप्त॥१०५॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. आर्द्र, २. सार्द्र, ३. क्लिन्न, ४. तिमित, ५. स्तिमित, ६. समुन्न, ७. उत्त- ये सात नाम गीले हुए के हैं॥१०५॥

त्राणं त्रातं रक्षितमवितं गोपायितं (च) गुप्तं (च)।

कृष्णमित्रटीका :- त्रैङ् (भ्वा. आ. अ.)। 'नुद-' (८. २. ५५) इति वा नः। षट्॥[5]

---

1. **Worshipped;** adored [4] 2. B. संतापितसंतप्तौ and K. संतापितस्तु तप्तो 3. **Heated;** tormented [5] 4. **Pleased;** satisfied [6] 5. **Cut; lopped** [8].

1. **Fallen;** dropped down [7] 2. **Got; obtained;** received [6] 3. **Searched,** sought; inquired or looked for [5]. 4. **Wet;** moisten [7] 5. **Saved; preserved;** protected [6].

हिन्दी अर्थ :- १. त्रात, २. त्राण, ३. रक्षित, ४. अवित, ५. गोपायित, ६. गुप्त- ये छः नाम रक्षित के हैं।

अवगणितमवमतावज्ञाते अवमानितं च परिभूते॥१०६॥

कृष्णमित्रटीका :- 'गण संख्याने' (चु. उ. से.)। मन (दि. आ. अ.)। 'मान पूजायाम्' (भ्वा. आ. से.)। पञ्च॥१०६॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. अवगणित, २. अवमत, ३. अवज्ञात, ४. अवमानित, ५. परिभूत- ये पाँच नाम अवमानित के हैं॥१०६॥

त्यक्तं हीनं विधुतं समुज्झितं धूतमुत्सृष्टम्।

कृष्णमित्रटीका :- 'त्यज हानौ' (भ्वा. प. अ.)। ओहाक् (जु. प. अ.)। 'घुमास्था' (६. ४. ६६) इतीत्वम्। 'धूञ् कम्पने' (स्वा. उ. अ.)। 'उज्झ उत्सर्गे' (तु. प. से.)। 'धू (विधू) नने' (तु. प. से.)। 'सृज विसर्गे' (दिवादिः)। षट्॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. त्यक्त, २. हीन, ३. विधुत, ४. समुज्झित, ५. धूत, ६. उत्सृष्ट- ये छः नाम त्यागे हुए के हैं।

उक्तं भाषितमुदितं जल्पितमाख्यातमभिहितं लपितम्॥१०७॥

कृष्णमित्रटीका :- वचभाषवदजल्पख्याभ्यः क्तः (३. २. १०२)। 'दधातेर्हिः' (७. ४. ४२)। 'लप व्यक्तायां वाचि' (भ्वा. प. से.)। सप्त॥१०७॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. उक्त, २. भाषित, ३. उदित, ४. जल्पित, ५. आख्यात, ६. अभिहित, ७. लपित- ये छः नाम कहे हुए के हैं॥१०७॥

बुद्धं बुधितं मनितं विदितं प्रतिपन्नमवसितावगते।

कृष्णमित्रटीका :- 'बुध अवगमने' (दि. आ. अ.)। अनिट्। 'बुधिर् वोधने' सेट् कः। 'मनु अवबोधने' (त. आ. से.)। 'यस्य विभाषा' (७. २. १५) इत्यस्यानित्यत्वादिट्। 'विद ज्ञाने' (अ. प. से.)। 'पद गतौ' (दि. आ. अ.) अव स्यतेः 'द्यतिस्यति-' (७. ४. ४०) इतीत्वम्॥ सप्त॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. बुद्ध, २. बुधित, ३. मनित, ४. विदित, ५. प्रतिपन्न, ६. अवसित, ७. अवगत- ये छः नाम अवगत (जाने हुए) के हैं।

ऊरीकृतमुररीकृतमङ्गीकृतमाश्रुतं प्रतिज्ञातम्॥१०८॥
संगीर्णविदितसंश्रुतसमाहितोपश्रुतोपगतम्।

कृष्णमित्रटीका :- अनङ्गमङ्गं कृतम्। 'श्रु श्रवणे' (भ्वा. प. अ.)॥१०८॥ 'गृ निगरणे' (तु. प. से.)। 'विद ज्ञाने' (अ. प. से.)। 'दधातेर्हिः' (७. ४. ४२)। उपश्रूयते स्म। एकादश॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. ऊरीकृत, २. उररीकृत, ३. अंगीकृत, ४. आश्रुत, ५. प्रतिज्ञात॥१०८॥, ६. संगीर्ण, ७. विदित, ८. संश्रुत, ९. समाहित, १०. उपश्रुत, ११. उपगत- ये ग्यारह नाम अंगीकार किये के हैं।

ईलितशस्तपणायितपनायितप्रणुतपणितपनितानि॥१०९॥
अपि गीर्णवर्णिताभिष्टुतेडितानि स्तुतार्थानि।

कृष्णमित्रटीका :- 'ईड स्तुतौ' (अ. आ. से.)। 'शंसु स्तुतौ' (भ्वा. प. से.)। 'पण व्यवहारे' (भ्वा. आ. से.)। 'णु स्तुतौ' (अ. प. से.)॥१०९॥ 'गृ शब्दे' (क्र्या. प. से.)। 'वर्ण वर्णक्रियादौ' (चु. उ. से.)। 'ष्टुञ् स्तुतौ' (अ. उ. अ.)। द्वादश॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. ईलित, २. शस्त, ३. पणायित, ४. पानायित, ५. प्रणुत, ६. पणित, ७. पनित॥१०९॥, ८. गीर्ण, ९. वर्णित, १०. अभिष्टुत, ११. ईडित, १२. स्तुत- ये बारह नाम स्तुति किये के हैं।

भक्षितचर्वितलिप्तप्रत्यवसितगिलितखादितप्सातम्॥११०॥
अभ्यवहृतान्नजग्धग्रस्तग्लस्ताशितं भुक्ते।

कृष्णमित्रटीका :- 'भक्ष अदने' (चु. प. से.)। 'प्सा भक्षणे' (अ. प. अ.)॥११०॥ अद्यते स्म। ग्लसु अदने' (भ्वा. आ. से.)। 'अश भोजने' (क्र्या. प. से.)॥ 'अदोऽनन्ने[3]' (३. २. ६८) इति ज्ञापकाज्जग्धिर्वा। 'ग्रसु ग्लसु अदने' (भ्वा. आ. से.)। 'अश भोजने' (क्र्या. प. से.)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. भक्षित, २. चर्वित, ३. लीढ, ४. प्रत्यवसित, ५. गिलित, ६. खादित, ७. प्सात॥११०॥,

1. **Contemned;** disregarded [5] 2. **Abandoned; forsaken;** left; quitted [6] 3. **Said; sporen;** uttered [7] 4. **Known;** understood [7]

1. **Accepted;** promised [11] 2. **Praised;** commended; applauded [12] 3. M. अदोनन्ने 4. **Eaten; chewed;** licked, swallowed [14].

८. अभ्यवहृत, ९. अन्न, १०. जग्ध, ११. ग्रस्त, १२. ग्लस्त, १३. अशित, १४. भुक्त- ये चौदह नाम खाये हुए के हैं।

क्षेपिष्ठक्षोदिष्ठप्रेष्ठवरिष्ठस्थविष्ठबंहिष्ठाः ॥१११॥
क्षप्रक्षुद्राभीप्सितपृथुपीवरबहुप्रकर्षार्थाः।

कृष्णमित्रटीका :- अतिशयेन क्षिप्रः। 'स्थूलदूर' (६. ४. ५६) इतीष्ठनि साधुः। अतिशयेनक्षुद्रः। प्रियः। 'प्रियस्थिर' (६. ४. ५७) इति साधु। एवं गुरुस्थूलयोः 'स्थूलदूर-' (६. ४. ५६) इति साधुः। बहुलस्य बंहः ॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. क्षेपिष्ठ, २. क्षोदिष्ठ, ३. प्रेष्ठ, ४. वरिष्ठ, ५. स्थविष्ठ, ६. बंहिष्ठ॥१११॥- ये छः शब्द क्रम से अत्यन्त क्षिप्र, अत्यन्तक्षुद्र, अत्यन्त अभीप्सित, अत्यन्त पृथु, अत्यन्त पीवर इन अर्थों के वाचक हैं। अर्थात् क्षेपिष्ठ- यह एक नाम अत्यन्त क्षिप्र का है।

साधिष्ठद्राघिष्ठस्फेष्ठगरिष्ठह्रसिष्ठवृन्दिष्ठाः ॥११२॥
वाढव्यायतबहुगुरुवामनवृन्दारकातिशये॥

इति विशेष्यनिघ्नवर्गः॥१॥

कृष्णमित्रटीका :- 'अन्तिकवाढयोर्नेदसाधौ' (५. ३. ६३)। एवं दीर्घगुरुह्रस्ववृन्दारकाणाम्॥[2]

इतिविशेष्यनिघ्न (वर्गः)॥१॥

हिन्दी अर्थ :- साधिष्ठ, द्राघिष्ठ, स्फेष्ठ, गरिष्ठ, ह्रसिष्ठ, वृन्दिष्ठ॥११२॥ ये शब्द क्रम से बाढ, व्यायत, बहु, गुरु, वामन, वृन्दारक इनके अतिशय अर्थ में हैं। जैसे- अतिशयेन बाढः साधिष्ठः इत्यादि।

इति विशेष्यनिघ्नवर्गः॥१॥

अथ संकीर्णवर्गः॥२॥

प्रकृतिप्रत्ययार्थाद्यैः संकीर्णे लिङ्गमुन्नयेत्।

कृष्णमित्रटीका :- संकीर्णे अस्मिन् वर्गे लिङ्गं प्रकृत्यर्थादिना बोद्धयम्। तद्यथा प्रकृतिभूतस्य परशब्दस्य त्रिलिङ्गत्वात्तेन सह समासे 'अपरस्पर' शब्दोऽपि[3] त्रिलिङ्गः। प्रत्ययेन क्तिना 'स्त्रीत्वादि'। अर्थेन 'कर्मैव कार्मणम्' इत्यादौ।

हिन्दी अर्थ :- अथ संकीर्णवर्गः। पूर्वकथित दोनों कांडों में स्वर्ग आदि नाम अपने-अपने सजातीय वर्ग में कहे गये हैं और तीसरे कांड में भी विशेष्यनिघ्नवर्ग में सुकृतिन् आदि शब्द विशेष्यनिघ्न के अनुसार कहे गये। अब पूर्वोक्त दोनों मिल न जांय इस आपत्ति के भय से जो पहले नहीं कहे हैं उन्हीं के संग्रह के लिये संकीर्णवर्ग का आरंभ किया गया है। इस वर्ग में वक्ष्यमाण लिङ्गसंग्रह को उक्त रीति से प्रकृति का अर्थ और प्रत्यय का अर्थ और कहीं-कहीं रूपभेद करके लिंग का विचार करना है।

कर्म क्रिया

कृष्णमित्रटीका :- क्रियते यत्तत्कर्म। मनिन् (उ. ४. १४४)। कृञः 'श च' (३. ३. १००)। रिङ् (७. ४. २८)। इयङ् (६. ४. ७७)। 'क्रियायाः' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. कर्मन् (नांत नपुंसकलिङ्ग), २. क्रिया (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम क्रिया के हैं।

तत्सातत्ये गम्ये स्युरपरस्पराः॥१॥

कृष्णमित्रटीका :- क्रियायाः सातत्ये त्वर्थे। 'अपरस्पराः क्रिया सातत्ये' (६. १. १४४) इति निपातः॥१॥[2]

हिन्दी अर्थ :- अपरस्पर- यह एक त्रिलिङ्ग नाम क्रिया के निरन्तर होने का है॥१॥

साकल्यासङ्गवचने पारायणतुरायणे।

कृष्णमित्रटीका :- साकल्यं च आसङ्गश्च तयोर्वचने बोधने। पारयते येन। 'पूर्वपदात्-' (८. ४. ३) इति णः। 'तुर त्वरणे' (जु. प. से.)। क्षु (तु) रस्य अयन मसक्तं गमनम्। 'परायणम्' इति पाठान्तरम्॥[3]

हिन्दी अर्थ :- पारायण- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम साकल्य (सम्पूर्ण) वचन का है। परायण- यह एक त्रिलिङ्ग नाम आसंग वचन का है।

यदृच्छा स्वैरिता

कृष्णमित्रटीका :- 'ऋच्छ गत्यादौ' (तु. प. से.)। 'गुरोश्च' (३. ३. १०४) इत्यः। या चासौ ऋच्छा च। स्वेनेरितुं शीलमस्य, तस्य भावः। 'स्वातन्त्र्यस्य' द्वे॥[4]

---

1. **Quickest, smallest**, dearest, greatest, fattest, and most [1 each] 2. **Best or most excellent,** largest, most abundant, haviest, shortest, and very great or handsome [1 each] 3. M. शब्दोपि.

1. **Action,** work [2] 2. **Continuous work** or worker [1] 3. **Full and relevant** statements [1 each] 4. **Independence** [2].

हिन्दी अर्थ :- १. यदृच्छा, २. स्वैरिता- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम स्वतन्त्रता के हैं।

हेतुशून्या त्वास्या[1] विलक्षणम्॥२॥

कृष्णमित्रटीका :- हेतुना कारणेन शून्या या आस्या स्थितिः। विगतं लक्षणमालोचनं यत्र। एकम्॥२॥[2]

हिन्दी अर्थ :- विलक्षण- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम कारण रहित स्थिति का है॥२॥

शमथस्तु शमः शान्तिः

कृष्णमित्रटीका :- 'शमादिभ्योऽथच्'। घञि 'नोदात्त-' (६. ४. ३३) इति न वृद्धिः। 'क्रोधाद्यभावस्य' त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. शमथ (पुल्लिङ्ग), २. शम (पुल्लिङ्ग), ३. शांति (स्त्रीलिङ्ग)- ये तीन नाम चित्त की शांति के हैं।

दान्तिस्तु दमथो दमः।

कृष्णमित्रटीका :- क्लेशादिसहिष्णुता दमः॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. दांति (स्त्रीलिङ्ग), २. दमथ (पुल्लिङ्ग), ३. दम (पुल्लिङ्ग)- ये तीन नाम इन्द्रियों के रोकने के हैं।

अवदानं कर्मवृत्तम्

कृष्णमित्रटीका :- 'दैप शोधने' (भ्वा. प. अ.)। ल्युट् (३. ३. ११४)। वृत्तेः (भ्वा. आ. से.) भावे क्तः (३. ३. ११४)। 'प्रशस्तकर्मणोः' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- अवदान- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम पहले हो गये चरित्र का है।

काम्यदानं प्रवारणम्॥३॥

कृष्णमित्रटीका :- काम्यस्यादानम्। 'वृञ् वरणे' चुरादिः। 'कामनापूर्वकं दानम्' द्वे॥३॥[6]

हिन्दी अर्थ :- प्रवारण- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम काम्य अर्थात् तुलापुरुष आदि दान का है॥३॥

वशक्रिया संवननम्

कृष्णमित्रटीका :- वशस्य क्रिया करणम्। संपूर्वः 'वनु याचने' (त. आ. से.) इति वशीकरणार्थः। 'वशीकरणस्य' द्वे॥[7]

1. B. त्वास्था 2. **Vain or useless** state [1] 3. **Calmness or** absence of passion & c. [3] 4. **Self-restraint or** forbearance of pain & c. [3] 5. **Valorous or** glorious act [2] 6. **A free-will** offering [2] 7. **Subjection** [2].

हिन्दी अर्थ :- १. वशक्रिया (स्त्रीलिङ्ग), २. संवनन (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम मणि मंत्र आदि के द्वारा वशीकरण के हैं।

मूलकर्म तु कार्मणम्।

कृष्णमित्रटीका :- मूलैरोषधिभिर्यद्वशीकरणम्। कर्मैव कार्मण (म्) '(त) द्युक्तात्कर्मणोऽण्' (५. ४. ३६)। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- कार्मण- यह एक नपुंसकलिङ्ग नाम औषधियों के मूलों से उच्चाटन आदि कर्मका है।

विधूननं विधुवनम्

कृष्णमित्रटीका :- 'धूञ् कम्पने' (चु. प. अ.) 'धुञ् प्रीञोः-' (वा. ७. ३. ३७) इति नुक्। 'धू विधूनने' (तु. प. से.)। ल्युट् (३. ३. ११५)। '-कुटात्' (१. २. १) इति ङित्वाद्गुणाभावः। 'कम्पनस्य' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. विधूनन, २. विधुवन- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम कंपन के हैं।

तर्पणं प्रीणनावनम्॥४॥

कृष्णमित्रटीका :- तृप (दि. प. अ.)। प्रीञ् (क्र्या. उ. अ.)। अव (भ्वा. प. से.)। 'प्रीतौ' त्रीणि॥४॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. तर्पण, २. प्रीणन, ३. अवन- ये तीन नुपंसकलिङ्ग नाम तृप्ति के हैं॥४॥

पर्याप्तिः स्यात्परित्राणं हस्तधारणमित्यपि[4]।

कृष्णमित्रटीका :- हस्तेन हस्तस्य वा धारणम्। प्रहर्तुमुद्यतस्य रोध इत्यर्थः। त्रीणि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. पर्याप्ति (स्त्रीलिङ्ग), २. परित्राण (नपुंसकलिङ्ग), ३. हस्तधारण (नपुंसकलिङ्ग)- ये तीन नाम मारने के लिये उद्युक्त हुए के रोकने के हैं।

सेवनं सीवनं स्यूतिः

कृष्णमित्रटीका :- सीव्यतेः पृषोदरादित्वात् (६. ३. १०९) वा दीर्घः। क्तिनि (३. ३. ९४) 'च्छ्वोः' (६. ४. १९) इत्यूठ। त्रीणि॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. सेवन (नपुंसकलिङ्ग), २. सीवन (नपुंसकलिङ्ग), ३. स्यूति (स्त्रीलिङ्ग)- ये तीन नाम सुई के कर्म अर्थात् सीवने के हैं।

1. **Bewitching by** means of herbs [2] 2. **Shaking**; trembling [2] 3. **Pleasing**; satisfying [3] 4. Some read हस्तवारणमित्यपि 5. **Protection or** warding off a blow (with the hand) [3] 6. **Sewing, stiching** [3].

विदरः स्फुटनं भिदा॥५॥

कृष्णमित्रटीका :- 'ऋदोरप्' (३. ३. ५७)॥५॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. विदर (पुल्लिङ्ग), २. स्फुटन (नपुंसकलिङ्ग), ३. भिदा (स्त्रीलिङ्ग)- ये तीन नाम फूटने के हैं॥५॥

आक्रोशनमभीषङ्गः

कृष्णमित्रटीका :- 'षज्ज सङ्गे' (भ्वा. प. अ.)। 'उपसर्गस्य घञि-' (६. ३. १२२) दीर्घः। 'शापस्य' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. आक्रोशन (नपुंसकलिङ्ग), २. अभीषंग (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम शाप देने के हैं।

संवेदो वेदना न ना।

कृष्णमित्रटीका :- वेत्तेर्घञ् (३. ३. १८)। 'विद चेतनाख्यानादौ' चुरादिः। 'अनुभवस्य' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. संवेद (पुल्लिङ्ग), २. वेदना- ये दो नाम अनुभव के हैं। इनमें वेदना शब्द (स्त्रीलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) है।

समूर्च्छनमभिव्याप्तिः

कृष्णमित्रटीका :- 'आप्लृ व्याप्तौ' (स्वा. प. अ.)। क्तिन् (वा. ३. ३. ९४)। 'सर्वव्याप्तस्य' द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. संमूर्च्छन (नपुंसकलिङ्ग), २. अभिव्याप्ति (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम सब ओर से व्याप्ति के हैं।

याञ्चा भिक्षार्थनार्दना॥६॥

कृष्णमित्रटीका :- अर्थ (चु. आ. से.)। ण्यन्तः। चत्वारि॥६॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. याञ्चा, २. भिक्षा, ३. अर्थना, ४. अर्दना- ये चार (स्त्रीलिङ्ग) नाम मांगने के हैं॥६॥

वर्धनं छेदने

कृष्णमित्रटीका :- 'वर्ध छेदनपूरणयोः' (चु. प. से.)। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. वर्धन, २. छेदन- ये दो नपुंसकलिङ्ग नाम काटने के हैं।

1. **Breaking;** bursting; tearing [3] 2. **Curse** [2] 3. Experience [2] 4. **Universal** pervasion [2] 5. **Begging** [4] 6. **Cutting** [2].

अथ द्वे आनन्दनसभाजने।

आप्रच्छन्नम्

कृष्णमित्रटीका :- 'टुनादि-' (भ्वा. प. से.)। 'सभाज प्रीतिसेवनयोः' (चु. उ. से.)। 'प्रच्छ ज्ञीप्सायाम्' (तु. प. अ.)। 'आलिङ्गनादिनाऽऽनन्दनस्य[1]' त्रीणि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. आनंदन, २. सभाजन, ३. आप्रच्छन्न- ये तीन नपुंसकलिङ्ग नाम स्वागत आदि कुशल पूछने से उत्पन्न हुए आनन्द के हैं।

अथाम्नायः संप्रदायः

कृष्णमित्रटीका :- 'म्ना अभ्यासे' (भ्वा. प. अ.)। घञ् (३. ३. १८)। दाञः (जु. उ. अ.) घञ् (३. ३. १८)। 'परम्परानुगतसदुपदेशस्य' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. आम्नाय, २. संप्रदाय- ये दो पुल्लिङ्ग नाम गुरु की परंपरा से प्राप्त हुए उपदेश के हैं।

क्षये क्षिया॥७॥

कृष्णमित्रटीका :- 'क्षि क्षये' (भ्वा. प. अ.)। अच् (३. ३. ५३)। 'क्षीष् हिंसायाम्' (क्र्या. प. अ.)। भिदादि (३. ३. १०४)। 'हानेः' द्वे॥७॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. क्षय (पुल्लिङ्ग), २. क्षिया (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम क्षय के हैं॥७॥

ग्रहे ग्राहः

कृष्णमित्रटीका :- 'ग्रहवृ-' (३. ३. ५८) इत्यप्। घञि ग्राहः। 'ग्रहणस्य' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. ग्रह, २. ग्राह- ये दो पुल्लिङ्ग नाम ग्रहण के हैं।

वशः कान्तौ

कृष्णमित्रटीका :- 'वशिरण्योः-' (वा. ३. ३. ५८) इत्यप्। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. वश (पुल्लिङ्ग), २. कांति (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम इच्छा के हैं।

रक्षणस्त्राणे

कृष्णमित्रटीका :- रक्षेः (भ्वा. प. से.)। 'यजयाच-' (३. ३. ९०) इति नङ्। द्वे॥[7]

1. M. आलिङ्गनादिनानन्दनस्य 2. **The courteous** treatment of a friend or guest at meetiong and parting [3] 3. **Traditional teaching;** doctrine [2] 4. **Decay; loss** [2] 5. **Taking, holding** [2] 6. **Wish, desire** [2] 7. **Protection** [2].

हिन्दी अर्थ :- १. रक्षण (पुल्लिङ्ग), २. त्राण (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम रक्षा के हैं।

रणः क्वणे।

कृष्णमित्रटीका :- 'रण क्वण शब्दे' (भ्वा. प. से.) द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. रण, २. क्वण- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम शब्द करने के हैं।

व्यधो वेधे

कृष्णमित्रटीका :- 'व्यधजपोः-' (३. ३. ६१) इत्यप्। 'विध विधाने' (तु. प. से.)। घञ् (३. ३. १८)। 'वेधनस्य' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. व्यध, २. वेध- ये दो पुल्लिङ्ग नाम वेधन के हैं।

पचा पाके

कृष्णमित्रटीका :- पचेः (भ्वा. उ. अ.) अङ् (३. ३. १०४)। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. पचा (स्त्रीलिङ्ग), २. पाक (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम पाक के हैं।

हवो हूतौ

कृष्णमित्रटीका :- ह्वेञ् (भ्वा. उ. अ.)। 'ह्वः संप्रसारणम्-' (३. ३. ७२) इत्यप्। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. हव (पुल्लिङ्ग), २. हूति (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम बुलाने के हैं।

वरो वृतौ॥८॥

कृष्णमित्रटीका :- 'वृञ्-' (स्वा. प. से.)। 'ग्रहवृ-' (३. ३. ५८) इत्यप् द्वे॥८॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. वर (पुल्लिङ्ग), २. वृति (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम वरदान के हैं॥८॥

ओषः प्लोषे

कृष्णमित्रटीका :- 'उष प्लुष दाहे' (भ्वा. प. से.)। घञ् (३. ३. १८)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. ओष, २. प्लोष- ये दो पुल्लिङ्ग नाम दाह के हैं।

नयो नाये

1. **Sound** [2] 2. **Piercing;** perforation [2] 3. **Cooking** [2] 4. **Calling** [2] 5. **Boon** [2] 6. **Burning** [2].

कृष्णमित्रटीका :- 'णीञ्-' (भ्वा. उ. अ.)। एरच् (३. ३. ५६) 'श्रिणीभुवोऽनुपसर्गे'[1] (३. ३. २४) इति घञ्। 'न्ययो न्यायः' इति पाठान्तरम्। 'नीतेः' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. नय, २. नाय- ये दो पुल्लिङ्ग नाम नीति के हैं।

ज्यानि जीर्णौ

कृष्णमित्रटीका :- 'ग्लाज्याहाभ्यो निः' (वा. ३. ३. ९५)। 'ॠल्वादिभ्यः क्तिन्निष्ठावत्-' (वा. ८. २. ४४) इति नः 'जीर्णतायाः' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. ज्यानि, २. जीर्णि- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम पुराना होने के हैं।

भ्रमो भ्रमौ॥

कृष्णमित्रटीका :- 'इक् कृष्यादिभ्यः' (वा. ३. ३. १०८)। भ्रमिः। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. भ्रम (पुल्लिङ्ग), २. भ्रमि (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम भ्रांति के हैं।

स्फातिर्वृद्धौ

कृष्णमित्रटीका :- 'स्फायी वृद्धौ' (भ्वा. आ. से.)। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. स्फाति, २. वृद्धि- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम वृद्धि के हैं।

प्रथा ख्यातौ

कृष्णमित्रटीका :- 'प्रथ प्रख्याने' (भ्वा. आ. से.)। भिदादिः (३. ३. १०४)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रथा, २. ख्याति- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम ख्याति के हैं।

स्पृष्टिः पृक्तौ

कृष्णमित्रटीका :- 'स्पृश स्पर्शे' (तु. प. अ.)। 'पृची संपर्के' (रु. प. से.)। द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. स्पृष्टि, २. पृक्ति- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम स्पर्श के हैं।

स्नवः स्रवे॥९॥

कृष्णमित्रटीका :- 'ष्णु प्रस्रवणे' (अ. प. से.)। 'स्रु गतौ' (भ्वा. प. अ.)। 'प्रस्रवणस्य' द्वे॥८॥[8]

1. M. श्रिणीभुवोनुपसर्गे 2. **Policy** [2] 3. **Old age;** decepitude [2] 4. **Moving; roaming about** [2] 5. **Growth;** increase [2] 6. **Fame** [2] 7. **Touch;** Contact [2] 8. **Oozing;** tricking [2].

हिन्दी अर्थ :- १. स्नव, २. स्रव- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम प्रस्रवण (झरने) के हैं॥९॥

एधा[1] समृद्धौ

कृष्णमित्रटीका :- एध (भ्वा. आ. से.)। भिदादिः (३. ३. १०४) 'ऋधु वृद्धौ' (भ्वा. आ. से.)। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. एधा, २. समृद्धि- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम वृद्धि के हैं।

स्फुरणे स्फुरणा

कृष्णमित्रटीका :- 'स्फुर स्फुरणे' कुटादिः। स्वार्थे ण्यन्ताद्युच् (३. ३. १०७)। संज्ञापूर्वकत्वान्न गुणः॥द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. स्फुरण (नपुंसकलिङ्ग), २. स्फुरणा (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम फरकने के हैं।

प्रमितौ प्रमा।

कृष्णमित्रटीका :- 'डुमिञ् प्रक्षेपणे' (स्वा. उ. अ.)। 'आतश्च-' (३. ३. १०६) इत्यङ्। प्रमा यथार्थज्ञानम्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रमिति, २. प्रमा- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम यथार्थ ज्ञान के हैं।

प्रसूतिः प्रसवे

कृष्णमित्रटीका :- 'ऋदोरप्' (३. ३. ५७) द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रसूति (स्त्रीलिङ्ग), २. प्रसव (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम गर्भमोचन के हैं।

श्च्योते प्राधारः

कृष्णमित्रटीका :- श्च्युतिर् (भ्वा. प. से.)। घञ् (३. ३. १८)। 'धृक्षरणदीप्त्योः' (जु. प. अ.)। 'उपसर्गस्य-' (६. ३. १२२) इति दीर्घः। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. श्च्योत, २. प्राधार- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम घृत आदि के टपकने में है।

क्लमथः क्लमः[7] ॥१०॥

कृष्णमित्रटीका :- 'शमादिभ्योऽथच्[8]'। घञि (३. ३. १८) 'नोदात्त-' (७. ३. ३४) इति न वृद्धिः। 'शा (श्रा) न्तेः' द्वे॥१०॥[9]

1. Some read विधा 2. **Prosperity** [2] 3. **Throbbing or quivering** [2] 4. **Valid knowledge** [2] 5. **Delivering or giving birth to** [2] 6. **Flowing** [2] 7. B. and K. क्लमे 8. M. शामादिभ्योथच् 9. **Fatigue** [2].

हिन्दी अर्थ :- १. क्लमथ, २. क्लम- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम ग्लानि के हैं॥१०॥

उत्कर्षोऽतिशये

कृष्णमित्रटीका :- 'कृष-' (भ्वा. प. अ.)। घञ् (३. ३. १८) शीङः (अ. आ. से.) एरच् (३. ३. ५६) द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. उत्कर्ष, २. अतिशय- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम उत्कर्ष (बड़ाई) के हैं।

संधिः श्लेषे

कृष्णमित्रटीका :- धाञः किः (३. ३. ९२)। श्लिष् (दि. प. अ.)। घञ् (३. ३. १८) द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. संधि (स्त्रीलिङ्ग), २. श्लेष (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम मिलाप के हैं।

विषय आश्रये[3]

कृष्णमित्रटीका :- 'षिञ् बन्धने' (स्वा. उ. अ.) एरच् (३. ३. ५६)। श्रिञः (भ्वा. उ. अ.)। एरच् (३. ३. ५६)। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. विषय, २. आश्रय- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम आश्रय के हैं।

क्षिपायां क्षेपणम्

कृष्णमित्रटीका :- 'क्षिप प्रेरणे' (तु. उ. अ.)। भिदादिः (३. ३. १०४)। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. क्षिपा (स्त्रीलिङ्ग), २. क्षेपण (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम प्रेरणा (आज्ञा) के हैं।

गीर्णिर्गिरौ

कृष्णमित्रटीका :- गिरतेः (तु. प. से.)। क्तिन् (३. ३. ९४)। निष्ठावत् (वा. ८. २. ४४)। 'इक्कृष्यादिभ्यः' (वा. ३. ३. १०८)। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. गीर्णि, २.गिरि- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम निगलने के हैं।

गुरणमुद्यमे ॥११॥

कृष्णमित्रटीका :- 'गुरी उद्यमे' (तु. प. से.)। कुटादिः। द्वे॥११॥[7]

1. **Elevation;** excellence [2] 2. **Union** [2] 3. Some read आशये 4. **Substratum,** asylem [2] 5. **Throwing,** directing [2] 6. **Swallowing** [2] 7. **Effort,** persever-ance [2].

हिन्दी अर्थ :- १. गुरण (नपुंसकलिङ्ग), २. उद्यम (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम भार आदि उठाने के उद्यम के हैं॥११॥

उन्नाये उनयः[1]

कृष्णमित्रटीका :- 'अवोदोर्नियः' (३. ३. २६) इति घञ्। बाहुलकादच्। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. उन्नाय, २. उन्नय- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम उठाने के हैं।

श्रायः श्रयणे

कृष्णमित्रटीका :- 'श्रिणोभुवः-' (३. ३. २४) इति घञ्। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. श्राय (पुल्लिङ्ग), २. श्रयण (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम सेवा के हैं।

जयने जयः।

कृष्णमित्रटीका :- 'जि जये' (भ्वा. प. अ.)। ल्युट् (३. ३. १०४)। अच्। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. जयन (नपुंसकलिङ्ग), २. जय (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम जय के हैं।

निगादो निगदे

कृष्णमित्रटीका :- 'नौ गद-' (३. ३. ६४) इत्यप्। घञ् (३. ३. १८)। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. निगाद, २. निगद- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम कथन के हैं।

मादो मदे

कृष्णमित्रटीका :- 'मदोऽनुप[6]-' (३. ३. ६७) इत्यप्। 'सदमादस्थयोः-' (६. ३. ६६) इति निर्देशाद् घञ्। द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. माद, २. मद- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम मद के हैं।

उद्वेग उद्भ्रमे ॥१२॥

कृष्णमित्रटीका :- भ्रमेः (दि. प. अ.) घञि (३. ३. १८) 'नोदात्त-' (७. ३. ३४) इति न वृद्धिः। द्वे॥१२॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. उद्वेग, २. उद्भ्रम- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम उद्वेग के हैं॥१२॥

1. B. and K. उन्नाय उन्नये 2. **Elevation;** height [2] 3. **Service;** shelter [2] 4. **Victory** [2] 5. **Discourse** [2] 6. M. मदोनप 7. **Pleasure** [2] 8. **Anxiety** [2].

विमर्दनं परिमले

कृष्णमित्रटीका :- 'मृद क्षोदे' (क्र्या. प. से.)। परि 'मल धारणे' (भ्वा. आ. से.)। 'कुङ्कमादिमर्दस्य' द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. विमर्दन (नपुंसकलिङ्ग), २. परिमल (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम केसर आदि से किये गये मर्दन के हैं।

अभ्युपपत्तिरनुग्रहः।

कृष्णमित्रटीका :- 'पद गतौ' (दि. आ. अ.)। 'ग्रहवृ-' (३. ३. ५८) इत्यप्। 'हितसंपादनादेः' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. अभ्युपपत्ति (स्त्रीलिङ्ग), २. अनुग्रह (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम अनुग्रह के हैं।

निग्रहस्तु निरोधः[3] स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- रुधेः (रु. उ. अ.) घञ् (३. ३. १८)। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- निग्रह- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम निरोध (रोकने) का है।

अभियोगस्त्वभिग्रहः ॥१३॥

कृष्णमित्रटीका :- 'युजेः (रु. उ. अ.) घञ् (३. ३. १८)॥१३॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. अभियोग, २. अभिग्रह- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम कलह में पुकारने के हैं॥१३॥

मुष्टिबन्धस्तु संग्रहः

कृष्णमित्रटीका :- 'समिमुष्टौ' (३. ३. ३६) इति ग्रहेर्घञ्। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. मुष्टिबंध, २. संग्राह- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम मुट्ठी से दृढ़ पकड़ने के हैं।

डिम्बे डमरविप्लवौ।

कृष्णमित्रटीका :- 'डि विनोदे' घञ् (३. ३. १८)। 'डम्' इति शब्दं राति। 'प्लुङ् गतौ' (भ्वा. आ. अ.)। अप् (३. ३. ५७) शस्त्रं बिना कलहः॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. डिंब, २. डमर, ३. विप्लव - ये तीन (पुल्लिङ्ग) नाम प्रलय के हैं।

बन्धनं प्रसितिश्चारः

1. **Grinding,** crushing, rubbing or pounding of saffron & c. [2] 2. **Favour,** kindness [2] 3. K. विरोधः 4. **Restraint, check** [2] 5. **Challenge** [2] 6. **Clenching the fist** [2] 7. **An affray** without weapons [3].

कृष्णमित्रटीका :- 'षिञ् बन्धने' (स्वा. उ. अ.)। क्तिन् (३. ३. ६४) स्वरति। 'स्वृ-' (भ्वा. प. से.)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. बंधन (नपुंसकलिङ्ग), २. प्रसिति (स्त्रीलिङ्ग), ३. चार (पुल्लिङ्ग)- ये तीन नाम बंधन के हैं।

स्पर्शः स्प्रष्टोपतप्तरि ॥१४॥

कृष्णमित्रटीका :- स्पृशेः (चु. आ. से.) तृच् (३. १. १३३)। तपेः (भ्वा. प. अ.) तृच् (३. १. १३३)। 'संतप्तस्य' त्रीणि॥१४॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. स्पर्श, २. स्पष्टृ (ऋकारान्त), ३. उपतप्तृ (ऋकारान्त)- ये तीन (पुल्लिङ्ग) नाम उपताप नामक रोगविशेष के हैं॥१४॥

निकरो विप्रकारः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- निकृष्टीकरणम्। 'घञ्' (३. ३. १८) 'अपकारस्य' द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. निकार, २. विप्रकार- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम अपकार के हैं।

आकारस्त्विङ्ग इङ्गितम्

कृष्णमित्रटीका :- आकरणम्। 'इगि गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'अभिप्रायानु (रू) पचेष्टायाः' त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. आकार, २. इंग (दो पुल्लिङ्ग), ३. इंगित- (नपुंसकलिङ्ग)- ये तीन नाम अभिप्राय के अनुरूप चेष्टित किये के हैं।

परिणामो विकारो द्वे समे विकृतिविक्रिये ॥१५॥

कृष्णमित्रटीका :- 'कृञः श च' (३. ३. १००) 'प्रकृतेरन्यथाभावे' चत्वारि॥१५॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. परिणाम, २. विकार- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम प्रकृति बदलने के हैं। १. विकृति, २. विक्रिया- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम विरुद्ध करने के हैं॥१५॥

अपहारस्त्वपचयः

कृष्णमित्रटीका :- चिञः (स्वा. उ. अ.)। 'एरच्' (३. ३. ५६) द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. अपहार, २. अपचय- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम अपहरण (छीन लेने) के हैं।

समाहारः समुच्चयः

कृष्णमित्रटीका :- हृञः घञ् (३. ३. १८)। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. समाहार, २. समुच्चय- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम इकट्ठे के हैं।

प्रत्याहार उपादानम्

कृष्णमित्रटीका :- उपादाञो ल्युट् (३. ३. ११५)। 'विषयेभ्य इन्द्रियपरावृत्तेः' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रत्याहार (पुल्लिङ्ग), २. उपादान (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम इन्द्रियों के खींचने के हैं।

विहारस्तु परिक्रमः ॥१६॥

कृष्णमित्रटीका :- क्रमेः (भ्वा. प. से.) घञि (३.३. १८) 'नोदात्त-' (७. ३. ३४) इत्यवृद्धिः॥१६॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. विहार, २. परिक्रम- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम सैर करने के हैं॥१६॥

अभिहारोऽभिग्रहणम्

कृष्णमित्रटीका :- आभिमुख्येन ग्रहणम्। द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. अभिहार (पुल्लिङ्ग), २. अभिग्रहण (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम चोरी करने के हैं।

निर्हारोऽभ्यवकर्षणम्।

कृष्णमित्रटीका :- निर्हारो निस्सारणम्॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. निर्हार (पुल्लिङ्ग), २. अभ्यवकर्षण (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम शिल्प आदि निकासने के हैं।

अनुहारोऽनुकारः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- अनुकरणं सदृशकरणम्। घञ् (३. ३. १८)॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. अनुहार, २. अनुकार- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम नकल करने के हैं।

अर्थस्यापगमे व्ययः ॥१७॥

कृष्णमित्रटीका :- 'व्यय वित्तसमुत्सर्गे' (चु. उ. से.)- इत्येके॥१७॥[7]

हिन्दी अर्थ :- व्यय- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम खर्च का है॥१७॥

---

1. **Tie or fetter** [3] 2. **Afflicted,** distressed [3] 3. **Injury** [2] 4. **Indication of** a sentiment by the gesture [3] 5. **Transformation.** evolution [4] 6. **Taking,** carrying away [2].

1. **Collection** [2] 2. **Drawing back** sense-organs from their objects [2] 3. **Walking** (for pleasure) [2] 4. **Robbing;** stealing, [2] 5. **Extraction,** drawing out [2] 6. **Imitation,** copy [2] 7. **Expense** [1].

प्रवाहस्तु प्रवृत्तिः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- अविच्छेदेन प्रवृत्तिः प्रवाहः ॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रवाह (पुल्लिङ्ग), २. प्रवृत्ति (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम पानी आदि की निरंतर गति के हैं।

प्रवहो गमनं बहिः।

कृष्णमित्रटीका :- 'गोचरसंचर-' (३. ३. ११९) इति 'बहः' साधुः ॥[2]

हिन्दी अर्थ :- प्रवह- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम बाहर निकसने का है।

वियामो वियमो यमो यमः संयामसंयमौ ॥१८॥

कृष्णमित्रटीका :- 'यमः समुपनिविषु च' (३. ३. ६३) इत्यप्। पक्षे घञ्। षट्॥१८॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. वियाम, २. वियम, ३. याम, ४. यम, ५. संयाम, ६. संयम- ये छः (पुल्लिङ्ग) नाम संयम के हैं॥१८॥

हिंसा कर्माभिचारः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- अभिभवितुं चरणं मारणादि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- हिंसाकर्मन् (नान्त)- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम मारणा आदि अभिचार का है।

जागर्या जागरा द्वयोः।

कृष्णमित्रटीका :- 'जागर्तेरकारो वा' (वा. ३. ३. १०१)। पक्षे यक् (३. १. ६६) द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. जागर्य्या (स्त्रीलिङ्ग), २. जागरा- ये दो नाम जागने के हैं। इनमें जागरा शब्द (पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग) है।

विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहः

कृष्णमित्रटीका :- हन्तेः कः (वा. ३. ३. ५८)। अन्तरस्य व्यवधानस्य अयनम्। प्रत्यूहः। घञ् (३. ३. १८)। त्रीणि॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. विघ्न, २. अंतराय, ३. प्रत्यूह- ये तीन (पुल्लिङ्ग) नाम विघ्न के हैं।

स्यादुपघ्नोऽन्तिकाश्रये ॥१९॥

कृष्णमित्रटीका :- 'उपघ्न आश्रये' (३. ३. ८५) इति साधुः ॥१९॥[7]

हिन्दी अर्थ :- उपघ्न- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम समीपभूत आश्रय का है॥१९॥

निर्वेश उपभोगः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- विशेर्घञ् (३. ३. १८) द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. निर्वेश, २. उपभोग- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम उपभोग के हैं।

परिसर्पः परिक्रिया।

कृष्णमित्रटीका :- सृपेर्घञ् (३. ३. १८)। परिजनादिना वेष्टनस्य' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. परिसर्प (पुल्लिङ्ग), २. परिक्रिया (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम परिजन आदि से घिरे हुए के हैं।

विधुरं तु प्रविश्लेषः[3]

कृष्णमित्रटीका :- विगता धूर्भारोऽत्र।[4] द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. विधुर (नपुंसकलिङ्ग), २. प्रविश्लेष (पुल्लिङ्ग)-ये दो नाम अत्यंत वियोग के हैं।

अभिप्रायश्छन्द आशयः ॥२०॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रीञः (क्र्या. उ. अ.) घञ् (३. ३. १८)। 'छदि संवरणे' (चु. प. से.) शीङ् (अ. आ. से.)। त्रीणि॥२०॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. अभिप्राय, २. छन्द, ३. आशय- ये तीन (पुल्लिङ्ग) नाम अभिप्राय के हैं॥२०॥

संक्षेपणं समसनम्

कृष्णमित्रटीका :- क्षिपास्योर्ल्युट् (३. ३. ११५)। द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. संक्षेपण, २. समसन- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम संक्षेप के हैं।

पर्यवस्था विरोधनम्।

कृष्णमित्रटीका :- स्था। 'आतश्च-' (३. ३. १०६) इत्यङ्। 'विरोधस्य' द्वे॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. पर्यवस्था (स्त्रीलिङ्ग), २. विरोधन (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम विरोध के हैं।

परिसर्या परीसारः

1. **Continuous flow** [2] 2. **Flowing,** streaming forth [2] 3. **The concertration** of mind [6] Cf. Yoga-sutra 3-4. 4. **Killing, slaying** [2] 5. **Waking** [2] 6. **Obstacle** [3] 7. **Contiguous** support or restoring to what is near [2].

1. **Enjoyment** [2] 2. **Encircling, sorrounding** [2] 3. B. and K. प्रविश्लेषे 4. M. धूर्भारात्र 5. **Separation** [2] 6. **Meaning, purpose** [3] 7. **Abridgement,** abbreviation [2] 8. **Opposition,** resistance [2].

कृष्णमित्रटीका :- 'सृ गतौ' (भ्वा. प. अ.)। 'परिचर्यापरिसर्या-' (वा. ३. १. १०१) इति साधुः। परितः सारो गमनम्। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. परिसर्या (स्त्रीलिङ्ग), २. परीसार (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम सब ओर फैले हुए के हैं।

स्यादास्या त्वासना स्थितिः ॥२१॥

कृष्णमित्रटीका :- आसेः (अ. आ. से.) ण्यत् (३. १. ११३)। युच् (३. ३. १०६)। त्रीणि॥२१॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. अस्या, २. आसना, ३. स्थिति- ये तीन (स्त्रीलिङ्ग) नाम आसन के हैं॥२१॥

विस्तारो विग्रहो व्यासः

कृष्णमित्रटीका :- 'स्तृञ आच्छादने' (क्र्या. उ. से.)। 'प्रथने वावशब्दे' (३. ३. ३३) इति घञ्। असेः (दि. प. से.) घञ् (३. ३. १८)। त्रीणि॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. विस्तार, २. विग्रह, ३. व्यास- ये तीन (पुल्लिङ्ग) नाम विस्तार के हैं।

स च शब्दस्य विस्तरः।

कृष्णमित्रटीका :- सः व्यासः। अप् (३. ३. ५७)। एकम्॥[4] ,

हिन्दी अर्थ :- विस्तर- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम शब्द संबंधी विस्तार का है।

स्यान्मर्दनं संवहनम्

कृष्णमित्रटीका :- बहेः (भ्वा. उ. अ.) ण्यन्ताल्ल्युट् (३. ३. ११५)। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. संवाहन, २. मर्दन- ये दो (नपुंसकलिङ्ग) नाम अंगमर्दन के हैं।

विनाशः स्यादर्शनम् ॥२२॥

कृष्णमित्रटीका :- णश (दि. प. से.)। घञ् (३. ३. १८)॥२२॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. विनाश (पुल्लिङ्ग), २. अदर्शन (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम लोप के हैं॥२२॥

संस्तवः स्यात्परिचयः

कृष्णमित्रटीका :- ष्टुञ् (अ. प. अ.)। अप् (३. ३. ११५)। द्वे॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. संस्तव, २. परिचय- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम परिचय के हैं।

प्रसरस्तु विसर्पणम्।

कृष्णमित्रटीका :- सरतेरप्। सृपेर्ल्युट् (३. ३. ११५)। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रसर (पुल्लिङ्ग), २. विसर्पण (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम घाव आदि के फैलने के हैं।

नीवाकस्तु प्रयामः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- वचेर्घञ् (३. ३. १८)। 'उपसर्गस्य दीर्घः' (६. २. १२२)। 'धान्यसंचयस्य' द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. नीवाक, २. प्रयाम- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम धन धान्य आदि के संग्रह के हैं।

संनिधिः संनिकर्षणम् ॥२३॥

कृष्णमित्रटीका :- धाञः किः (३. ३. ९२)। द्वे॥२३॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. सन्निधि (पुल्लिङ्ग), २. सन्निकर्षण (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम पड़ोस के हैं॥२३॥

लवोऽभिलावो लवने

कृष्णमित्रटीका :- लूञः (क्र्या. उ. अ.) अप् (३. ३. ५७)। 'निरभ्योः-' (३. ३. ५८) इति घञ्। 'छेदनस्य' त्रीणि॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. लव, २. अभिलाव, ३. लवन- ये तीन (पुल्लिङ्ग) नाम अन्न आदि को काटने के हैं।

निष्पावः पवने पवः।

कृष्णमित्रटीका :- पूञः (क्र्या. उ. अ.) घञपौ। त्रीणि। 'धान्यादेर्निबुसीकरणम्'। 'पछोरव (न)' लोके॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. निष्पाव (पुल्लिङ्ग), २. पवन (नपुंसकलिङ्ग), ३. पव (पुल्लिङ्ग)- ये तीन नाम अन्न आदि को पवित्र करने के हैं।

प्रस्तावः स्यादवसरः

कृष्णमित्रटीका :- 'प्रे द्रुस्तुस्रुवः' (३. ३. २७) इति घञ्। सरतेः (भ्वा. प. अ.) रप्। 'प्रसङ्गस्य' द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रस्ताव, २. अवसर- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम प्रसंग के हैं।

---

1. **Wandering about**; perambulation [2] 2. **Stay** [3] 3. **Extension**, expansion [3] 4. **Detailed** description [1] 5. **Shampooing**, massaging [2] 6. **Destruction** [2] 7. **Acquaintance**, intimacy [2].

1. **Diffusion**, dilation [2] 2. **The collection** of grain [2] 3. **Proximity** [2] 4. **Mowing**, cutting [3] 5. **Winnowing** corn [3] 6. **Opportunity** [2].

त्रसरः सूत्रवेष्टनम् ॥२४॥

कृष्णमित्रटीका :- 'त्रसी उद्वेगे' (दि. प. से.)। अरन्। सूत्रस्य वेष्टनम्॥२४॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. त्रसर (पुल्लिङ्ग), २. सूत्रवेष्टन (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम जुलाहे के बनाये सूत्रवेष्टन विशेष के हैं॥२४॥

प्रजनः स्यादुपसरः

कृष्णमित्रटीका :- प्रजायतेऽस्मिन्[2] प्रजनः, पशूनां ग्रर्भग्रहणकालः। 'प्रजने सर्तेः' (३. ३. ७१) इत्यप् द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रजन, २. उपसर- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम गर्भग्रहण के हैं।

प्रसरप्रणयौ[4] समौ।

कृष्णमित्रटीका :- सरतेः (भ्वा. प. अ.) अप्। णीञः (भ्वा. उ. अ.) अच्। 'प्रीत्याप्रार्थनम्' द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रश्रय, २. प्रणय- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम प्रेम के हैं।

धीशक्तिर्निष्क्रमः

कृष्णमित्रटीका :- शक्तिर्ग्रहणधारणादिः। द्वे॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. धीशक्ति (स्त्रीलिङ्ग), २. निष्क्रम- ये दो नाम बुद्धि की सामर्थ्य के हैं। इनमें निष्क्रमशब्द (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) हैं।

अस्त्री तु संक्रमो दुर्गसंचरः॥२५॥

कृष्णमित्रटीका :- क्रमेर्घञि (३. ३. १८) वृद्ध्यभावः। 'संक्रमः' इत्यन्ये। दुर्गस्य संचरणम्। प्रवेशः। द्वे॥२५॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. संक्रम, २. दुर्गसंचर- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम दुर्गमार्ग के हैं॥२५॥

प्रत्युत्क्रमः प्रयोगार्थः

कृष्णमित्रटीका :- क्रमयुजिभ्यां घञ् (३. ३. १८)। 'कर्मारम्भे प्रथमप्रयोगस्य' द्वे॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रत्युत्क्रम, २. प्रयोग- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम युद्ध के अर्थ अत्यंत उद्योग के हैं।

1. **Shuttle** [2] 2. M. प्रजायतेस्मिन् 3. **Impreganting** [2] 4. Majority prefers प्रश्रयप्रणयौ 5. **Love, affection** [2] 6. **Intellectual faculty** [2] 7. **The passage** to a fort [2] 8. **The first step** towards any business or work [2].

प्रक्रमः स्यादुपक्रमः।

स्यादभ्यादानमुद्घात आरम्भः

कृष्णमित्रटीका :- आभिमुख्येनादाने। 'रभेरशाब्लिटोः-' (७. १. ६३) इति नुम्। 'आरम्भस्य' पञ्च॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रक्रम, २. उपक्रम- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम प्रथमारंभ केहैं। १. अभयदान (नपुंसकलिङ्ग), २. उद्घात् (पुल्लिङ्ग), ३. आरंभ (पुल्लिङ्ग)- ये तीन नाम आरंभमात्र के हैं।

संभ्रमस्त्वरा॥२६॥

कृष्णमित्रटीका :- 'ञित्वरा संभ्रमे' (भ्वा. आ. से.)। घटादित्वेन षित्वादङ् (३. ३. १०४)॥२६॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. संभ्रम (पुल्लिङ्ग), २. त्वरा (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम संवेग के हैं॥२६॥

प्रतिबन्धः प्रतिष्टम्भः

कृष्णमित्रटीका :- प्रतिष्टम्भो रोधनम्। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रतिबंध, २. प्रतिष्ठंभ- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम कार्य के रुकने के हैं।

अवनायस्तु निपा (य) तनम्।

कृष्णमित्रटीका :- 'अवोदोर्नियः' (३. ३. २६) इति घञ्। पतेः स्वार्थण्यन्ताल्ल्युट्। 'यत् निकारोपस्कारयोः' (चु. उ. से.) इत्यस्यान्ये। 'अधोनयनस्य' द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. अवनाय (पुल्लिङ्ग), २. निपातन (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम नीचे को गिरने के हैं।

उपलम्भस्त्वनुभवः

कृष्णमित्रटीका :- 'उपसर्गात्खलघञोः' (७. १. ६७) इति लभेः (भ्वा. आ. अ.) नुम्। द्वे॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. उपलंभ, २. अनुभव- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम साक्षात्कार के हैं।

समालम्भो विलेपनम्॥२७॥

कृष्णमित्रटीका :- लिप (तु. उ. अ.)। 'कुङ्कुमादिलेपनस्य' द्वे॥२७॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. समालंभ (पुल्लिङ्ग) २. विलेपन (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम केसर आदि से किये लेप के हैं॥२७॥

1. **Beginning;** commenncement, introduction [5] 2. **Haste** [2] 3. **Impediment** [2] 4. **Throwing** down [2] 5. **Direct perception** or experience [2] 6. **Smearing the** body with satron or other unguents [2].

विप्रलम्भो विप्रयोगः

कृष्णमित्रटीका :- विप्रयोगः रागिणोर्वियोजनम्। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. विप्रलंभ, २. विप्रयोग- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम वियोग के हैं।

विलम्भस्त्वतिसर्जनम्।

कृष्णमित्रटीका :- अति सर्जनं दानम्। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. विलंभ (पुल्लिङ्ग), २. अतिसर्जन (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम अत्यंत दान के हैं।

विश्रावस्तु प्रविख्यातिः

कृष्णमित्रटीका :- 'श्रु श्रवणे' (भ्वा. प. अ.)। 'वौ क्षुश्रवः' (३. ३. २५) इति घञ्। प्रविख्यातिः अतिप्रसिद्धः। द्वे॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. विश्राव (पुल्लिङ्ग), २. प्रतिख्याति (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम अत्यंत प्रसिद्धि के हैं।

अवेक्षा प्रतिजागरः ॥२८॥

कृष्णमित्रटीका :- अवेक्षते। 'गुरोश्च-' (३. ३. १०३) इत्यः। जाग्रतेः (अ. प. से.) घञ् (३. ३. १८)। 'जाग्रोऽविचि[4]-' (७. ३. ८५) इति गुणः। 'अवेक्षणस्य' द्वे॥२८॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. अवेक्षा (स्त्रीलिङ्ग), २. प्रतिजागर (पुल्लिङ्ग)- ये दो नाम वस्तुओं को देखने के हैं॥२८॥

निपाठनिपठो पाठे

कृष्णमित्रटीका :- 'नौ गद-' (३. ३. ६४) इति पठेः (भ्वा. प. से.) रप्, पक्षे घञ् (३. ३. १८)। त्रीणि॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. निपाठ, २. निपठ, ३. पाठ- ये तीन (पुल्लिङ्ग) नाम पठन के हैं।

तेमस्तेमौ समुन्दने।

कृष्णमित्रटीका :- 'तिम ष्टिम आर्द्रीभावे' (दि. प. से.)। घञ् (३. ३. १८)। 'उन्दी-' (रु. प. से.)। 'आर्द्रीभावस्य' त्रीणि॥[7]

1. **Separation of** lovers [2] 2. **Liberality** [2] 3. **Fame,** celebrity [2] 4. M. जाग्रीविचि 5. **Vigilance,** watchfulness [2] 6. **Reading,** recitation, study [3] 7. **Wetting,** moistening [2].

हिन्दी अर्थ :- १. तेम (पुल्लिङ्ग), २. स्तेम (पुल्लिङ्ग), ३. समुंदन (नपुंसकलिङ्ग)- ये तीन नाम आर्द्रीभाव (गीले करने) के हैं।

आदीनवाश्रवं[1] क्लेशे

कृष्णमित्रटीका :- 'दीङ् क्षये' (दि. आ. अ.)। क्तः। 'स्वादय ओदितः' इति नः। आस्रवतीन्द्रियाण्यनेन। स्रवतेः (भ्वा. प. अ.) अप् (३. ३. ५७) 'क्लिशू विबाधने' (क्र्या. प. से.)। त्रीणि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. आदीनव, २. आस्रव, ३. क्लेश- ये तीन (पुल्लिङ्ग) नाम क्लेश के हैं।

मेलके संगमो गमः[3] ॥२९॥

कृष्णमित्रटीका :- मिल (तु. प. से.) घञन्तात्कः। षज्ज (भ्वा. प. अ.)। घञ् (३. ३. १८)। 'ग्रहवृ-' (३. ३. ५८) इति गमः (भ्वा. प. से.)। अप्॥२९॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. मेलक, २. संग, ३. संगम- ये तीन (पुल्लिङ्ग) नाम संगम (मेल) के हैं॥२९॥

संवीक्षणं विचयनं मार्गणं मृगणा मृगः।

कृष्णमित्रटीका :- ईक्षिचिञभ्यो ल्युट् (३. ३. ११५) द्वे। मार्ग (चु. उ. से.) मृग (चु. आ. से.) अन्वेषणे ल्युट्युचौ। घञ्। पञ्च॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. संवीक्षण (नपुंसकलिङ्ग), २. विचयन (नपुंसकलिङ्ग), ३. मार्गण (नपुंसकलिङ्ग), ४. मृगणा (स्त्रीलिङ्ग), ५. मृग (पुल्लिङ्ग)- ये पाँच नाम तात्पर्य्य से वस्तुओं के ढूंढ़ने के हैं।

परिरम्भः परिष्वङ्गः संश्लेष उपगूहनम् ॥३०॥

कृष्णमित्रटीका :- 'रभ रभस्ये' (भ्वा. आ. अ.)। 'रभेः-' (७. १. ६३) इति नुम्। 'ष्वञ्ज परिष्वङ्गे' (भ्वा. आ. अ.)। श्लिषेः (दि. प. अ.) घञ् (३. ३. १८)। चत्वारि॥३०॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १.परिरंभ (पुल्लिङ्ग), २. परिष्वंग (पुल्लिङ्ग), ३. संश्लेष (पुल्लिङ्ग), ४. उपगूहन (नपुंसकलिङ्ग)- ये चार नाम आलिङ्गन के हैं॥३०॥

1. B. and K. आदीनवास्रवौ 2. **Sorrow** [3] 3. B. and K. संगसंगमौ 4. **Meeting;** union [3] 5. **Search;** inquiry [2] 6. **Embracing** [4].

निर्वणनं तु निध्यानं दर्शनालोकनेक्षणम्।

कृष्णमित्रटीका :- वर्णशब्दात् 'सत्याप-' (३. १. २५) इति णिच्। पञ्च॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. निर्वर्णन, २. निध्यान, ३. दर्शन, ४. आलोकन, ५. ईक्षण- ये पाँच (नपुंसकलिङ्ग) नाम निरंतर देखने के हैं।

प्रत्याख्यानं निरसनं प्रत्यादेशो निराकृतिः॥३१॥

कृष्णमित्रटीका :- 'निराकरणस्य' चत्वारि॥३१॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रत्याख्यान (नपुंसकलिङ्ग), २. निरसन (नपुंसकलिङ्ग), ३. प्रत्यादेश (पुल्लिङ्ग), ४. निराकृति (स्त्रीलिङ्ग)- ये चार नाम निराकरण के हैं॥३१॥

उपशायो विशायश्च पर्यायशयनार्थकौ।

कृष्णमित्रटीका :- 'व्युपयोः शेतेः-' (३. ३. ३९) इति शीङः (अ. आ. से.) घञ्। पर्यायेण क्रमेण शयनमर्थो ययोः। यथा- 'तवाद्यराजोपशायः'॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. उपशाय, २. विशाय- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम पहर आदि के अनुसार शयन के हैं।

अर्तनं च ऋतीया च हृणीया च घृणार्थके॥३२॥

कृष्णमित्रटीका :- 'ऋतिः' सौत्र। इयङ्पक्षे 'अ प्रत्ययात्' (३. ३. १०२)। हृणीङ् कण्ड्वादि। यक् (३. १. २७)। चत्वारि 'जुगुप्सनस्य'॥३२॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. अर्त्तन (नपुंसकलिङ्ग), २. ऋतीया (स्त्रीलिङ्ग), ३. हृणीया (स्त्रीलिङ्ग), ४. घृणा (स्त्रीलिङ्ग)- ये चार नाम करुणा के हैं॥३२॥

स्याद्व्यत्यासो विपर्यासो व्यत्ययश्च विपर्यये।

कृष्णमित्रटीका :- असेः (दि. प. से.) घञ् (३. ३. १८)। इणः (अ. प. अ.) 'एरच्' (३. ३. ५६)। चत्वारि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. व्यत्यास, २. विपर्यास, ३. व्यत्यय, ४. विपर्य्यय- ये चार (पुल्लिङ्ग) नाम व्यतिक्रम (उलट पुलट) के हैं।

पर्ययोऽतिक्रमस्तस्मिन्नतिपात उपात्ययः॥३३॥

कृष्णमित्रटीका :- इणः (अ. प. अ.) अच्। पतेः (भ्वा. प. से.) घञ् (३. ३. १८) 'चत्वारि॥३३॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. पर्याय, २. अतिक्रम, ३. अतिपात, ४. उपात्यय- ये चार (पुल्लिङ्ग) नाम अतिक्रम के हैं॥३३॥

प्रेषणं यत्समाहूय तत्र स्यात्प्रतिशासनम्।

कृष्णमित्रटीका :- शास्तेः(अ. प. अ.) ल्युट् (३. ३. ११५)। 'भृत्यादिप्रेषणस्य' एकम्॥[1]

हिन्दी अर्थ :- प्रतिशासन- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम नौकर आदि को बुला कर प्रेरित करने का है।

स संस्तावः क्रतुषु या स्तुतिभूमिर्द्विजन्मनाम्॥३४॥

कृष्णमित्रटीका :- समेत्य मिलित्वा द्विजाः स्तुवन्ति यस्यां भूमौ। 'यज्ञे समि स्तुवः' (३. ३. ३१) इति घञ्॥३४॥[2]

हिन्दी अर्थ :- संस्ताव- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम यज्ञों में वेद को गाने वाले ब्राह्मणों के स्तवनदेश का है॥३४॥

निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे काष्ठं स उद्घनः।

कृष्णमित्रटीका :- ऊर्ध्वं हन्यतेऽस्मिन्[3]। 'उद्घनोऽत्याधानम्' (३. ३. ८०) इति साधुः॥[4]

हिन्दी अर्थ :- उद्घन- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम जिस काठ पर काठ को स्थापित कर छीला जावे उस काठ का है।

स्तम्बघ्नस्तु स्तम्बघनः स्तम्बो येन निहन्यते॥३५॥

कृष्णमित्रटीका :- स्तम्बस्तृणादिगुच्छो हन्यते उन्मूल्यते येन। 'स्तम्बे क च' (३. ३. ८३) इति कापौ घनश्च। द्वे॥३५॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. स्तंबघ्न, २. स्तंबघन- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम खुरपे के हैं॥३५॥

आविधो विध्यते येन

कृष्णमित्रटीका :- व्यधेः (दि. प. अ.) घञ्। 'वरमा' लोके॥[6]

हिन्दी अर्थ :- आविध- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम जिससे वेधा जावे उस शस्त्रविशेष अर्थात् वर्मे का है।

1. **Seeing;** beholding [5] 2. **Repudiataion;** refutation [4] 3. **Sleeping in** turn (while watching in the night) [2] 4. **Disgust** [4] 5. Inversion [4] 6. **Violation;** deviation (from established customs) [4].

1. **Sending** on an errand [1] 2. **The place which** Brahmanas repeating hymns and prayers occupy at a sacrifice [1] 3. M. हन्यतेस्मिन् 4. **A plank on which** a carpenter works [1] 5. **A hoe for** weeding clumps of grass [2] 6. **A carpenter's** intrument for piercing [1].

तत्र विष्वकसमे निघः।

कृष्णमित्रटीका :- विष्वक्, आरोहपरिणाहादिना सर्वत्र तुल्ये। 'निघोनिमितम्-' (३. ३. ८७) इति साधुः॥[1]

हिन्दी अर्थ :- निघ- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम सब ओर से समान रूप वृक्ष का है।

उत्कारश्च निकारश्च द्वौ धान्योत्क्षेपणार्थकौ॥३६॥

कृष्णमित्रटीका :- ऊर्ध्वं करणं निक्षेपणम्॥३६॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. उत्कार, २. निकार- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम अन्न को ऊपर निकालने के हैं॥३६॥

निगारोद्गारविक्षावोद्ग्राहाः- तु गरणादिषु[3]

कृष्णमित्रटीका :- 'उन्योर्ग्रः' (३. ३. २९) इति गिरतेः (तु. प. से.) घञ्। 'गृ शब्दे' (क्र्या. प. से.)। 'वौ क्षुश्रुवः' (३. ३. २५) इति घञ्। 'उदि ग्रहः' (३. ३. ३५) इति घञ्। एकैकम्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- निगार- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम निगलने का है। उद्गार- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम वमन का है। विक्षाव- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम छींक का है। उद्ग्राह- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम ऊपर करके ग्रहण करने का है॥

आरत्यवरतिविरतय उपरामे

कृष्णमित्रटीका :- रमेः (भ्वा. आ. से.) क्तिन्- (३.३.९४)- घञौ (३. ३. १८)। चत्वारि॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. आरति, २. अवरति, ३. विरति, ४. उपराम- ये चार नाम उपराम के हैं। उपराम (पुल्लिङ्ग) शेष (स्त्रीलिङ्ग) हैं।

अथास्त्रियां तु निष्ठेवः॥३७॥

निष्ठ्यूतिर्निष्ठेवनं निष्ठीवनमित्यभिन्नानि।

कृष्णमित्रटीका :- ष्ठिवेः (दि. प. से.) घञ् (३.३. १८)॥३७॥ ष्ठिवेर्ल्युटि (३. ३. ११५) बाहुलकाद् दीर्घोऽपि[6]॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. निष्ठेव, ॥३७॥, २. निष्ठ्यूति (स्त्रीलिङ्ग), ३. निष्ठेव (नपुंसकलिङ्ग), ४. निष्ठीवन (नपुंसकलिङ्ग)- ये चार नाम थूकने के हैं। इनमें निष्ठेवशब्द (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) हैं।

1. A tree having equal height and breadth [1] 2. Winnowing corn [2] 3. B. निगरण दिषु 4. Swallowing, vomiting, sneezing and eructating [1 each] 5. Cessation; stop [4] 6. M. दीर्घोपि 7. Spitting [4].

जवने जूतिः

कृष्णमित्रटीका :- 'जुः' सौत्रो वेगे। क्तिनि (३. ३. ९४) 'ऊतियूति'- (३. ३. ९७) इति साधुः। द्वे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. जवन (नपुंसकलिङ्ग), २. जूति (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम वेग के हैं।

सातिस्त्ववसाने स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- स्यतेः (३. ३. ९४) 'ऊतियूति-' (३. ३. ९७) इति साधुः। द्वे॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. साति, २. अवसान (नपुंसकलिङ्ग)- ये दो नाम अंत के हैं।

अथ ज्वरे जूर्तिः॥३८॥

कृष्णमित्रटीका :- 'ज्वरत्वर-' (६. ४. २१) इत्यूठ्॥३८॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. ज्वर (पुल्लिङ्ग), २. जूर्ति (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम ज्वर के हैं॥३८॥

उदजस्तु पशुप्रेरणम्

कृष्णमित्रटीका :- 'अज गतौ' (भ्वा. प. से.)। 'समुदोरजः पशुषु' (३. ३. ६९) इत्यप् द्वे॥[4]

हिन्दी अर्थ :- उदज- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम पशुओं के प्रेरणा का है।

अकरणिरित्यादयः शापे।

कृष्णमित्रटीका :- न करणम्। 'आक्रोशे नञ्यनिः' (३.३. ११२)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- अकरणि (पुल्लिङ्ग), अजननि, अवग्राह, निग्राह आदि शब्द शाप के वाचक हैं।

गोत्रान्तेभ्यस्तस्य वृन्दमित्यौपगवकादिकम्॥३९॥

कृष्णमित्रटीका :- गोत्रान्तेभ्यः, अपत्य-प्रत्ययान्तेभ्यः। औपगवानां समूहः। 'गोत्रोक्षोष्ट्र-' (४. २. ३९) इति वुञ्॥३९॥[6]

हिन्दी अर्थ :- अपत्यार्थ प्रत्ययांत औपगव आदि शब्दों से "उसका समूह" इस अर्थ में औपगवक आदि जाने॥३९॥ जैसे- 'उपगोरपत्यानि पुमांसः औपगवास्तेषां समूहः औपगवकम्' और यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम उपगू की संतानों के समूह का है।

1. Speed [2] 2. End; conclusion [2] 3. Fever [2] 4. Driving of cattle [2] 5. Curse [2] 6. An assemblage of aupagavas [1].

आपूयिकं शाष्कुलिकमेवमाद्यमचेतसाम्।

कृष्णमित्रटीका :- अपूपानां शष्कुलीनां च समूहम्। 'अचित्तहस्तिधेनोष्ठक्' (४. २. ६७)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- आपूपिक- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम जडरूप अपूप अर्थात् मालपुये आदि के समूह का है। शाष्कुलिक- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम शष्कुली अर्थात् पूरियों के समूह का है।

माणवानां तु माणव्यम्

कृष्णमित्रटीका :- 'ब्राह्मणमाणव-' (४. २. ४२) इति यत्। (माणवानां समूहस्य) एकम्॥[2]

हिन्दी अर्थ :-माणव्य- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम माणव अर्थात् बालकों के समूह का है।

सहायानां सहायता॥४०॥

कृष्णमित्रटीका :- 'गजसहायाभ्याम्-' (वा. ४. २. ४३) इति तल्॥४०॥[3]

हिन्दी अर्थ :- सहायता- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम सहायों के समूह का है॥४०॥

हल्या हलानाम्

कृष्णमित्रटीका :- हलात् 'पाशादिभ्यो यः' (४. २. ४९)॥[4]

हिन्दी अर्थ :- हल्या- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम हलों के समूह का है।

ब्राह्मण्यवाडव्ये तु द्विजन्मनाम्।[5]

द्वे पर्शुकानां पृष्ठानां पार्श्वं पृष्ठ्यमनुक्रमात्[6]॥४१॥

कृष्णमित्रटीका :- 'पर्शर्वा णस्-' (वा. ४. २. ४३)। 'पृष्ठाद्यन्-' (वा. ४. २. ४२)। यज्ञविषये एतत्॥४१॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. ब्राह्मण्य, २. वाडव्य- ये दो नाम (नपुसंकलिङ्ग) ब्राह्मणों के समूह के हैं। पार्श्व- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम पर्श्व का अर्थात् अस्थिविशेष के समूह का हैं। पृष्ठ्य- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम पृष्ठों के समूह का है॥४१॥

1. **A quantity** of two sorts of cakes [1 each]. 2. **A company** of lads or boys [1] 3. **A number of** companions [1] 4. **A multitude** of ploughs [1] 5. **A collection of** Brahmanas [2] 6. B. पृष्ठ्यमितिक्रमात् 7. **A multitude** of ribs, and blacks of a cattle [1 each].

खलानां खलिनी खल्यापि

कृष्णमित्रटीका :- 'खलगोरथात्-' (४. २. ५०) इति यः। 'इनित्रकट्यचश्च' (४. २. ५१)॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. खलिनी, २. खल्या- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम खलों के समूह के हैं।

अथ मानुष्यकं नृणाम्।

कृष्णमित्रटीका :- मनुष्यात् 'गोत्रोक्ष-' (४. २. ३९) इति वुञ्॥[2]

हिन्दी अर्थ :- मानुष्यक- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम मनुष्यों के समूह का है।

ग्रामता जनता धूम्या पाश्या गल्या पृथक् पृथक्॥४२॥

कृष्णमित्रटीका :- 'ग्रामजन-' (४. २. ४२) इति तल्। धूमपाशगलेभ्यः 'पाशादिभ्यो यः' (४. २. ४९)। गलो (बृहत्काशः)॥४२॥[3]

हिन्दी अर्थ :- ग्रामता- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम ग्रामों के समूह का है। जनता- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम जनों के समूह का है। धूम्या- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम धूमों के समूह का है। पाश्या- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम पाशों के समूह का है। गल्या- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम गल अर्थात् बृहत्काशों के समूह का है॥४२॥

अपि साहस्रकारीषचार्मणाथर्वणादिकम्।

इति संकीर्णवर्गः॥२॥

कृष्णमित्रटीका :- एवं सहस्रकरीष, चर्मन्, अथर्वन्, एभ्यो 'भिक्षादिभ्योऽण्'[4] (४. २. ३८)॥[5]

संकीर्णार्थत्वमर्थान्तरे विहितानां प्रत्ययाना (म) र्थान्तरे निदर्शनम्।

यथा- घञादेः कर्त्रादौ॥

इति संकीर्णवर्गः॥२॥

हिन्दी अर्थ :- साहस्र -यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम सहस्रों के समूह का है। करीष- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम करीष अर्थात् सूखे हुए गोबर के आरनों के समूह का है।

1. **A multitude of** threshing floors [2] 2. **A collection of** men [1]. 3. **A number of villages,** and people, a volume or cloud of smoke, a collection of nets, and a multitude of throats [1 each] 4. M. भिक्षादिभ्योण् 5. **An aggregate of thousand,** a heap of dried cow-dung, a multitude of hides or shields, and a number of Brahmanas knowing or studying the Atharvaveda [1 each].

वार्मण- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम वर्म अर्थात् कवचों के समूह का है। आथर्वण- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम अथर्वणों के समूह का है। चार्मण यह एक नाम चर्मो के समूह का है।

इति संकीर्णवर्गः ॥२॥

अथ नानार्थवर्गः ॥३॥

नानार्थाः केऽपि कान्तादिवर्गेष्वेवात्र कीर्तिताः।
भूरिप्रयोगा ये येषु पर्यायेष्वपि तेषु ते ॥१॥

कृष्णमित्रटीका :- केचन नानार्था इह तावत्कान्तखान्तादिवर्गेष्वेव कीर्तिताः। ये तु केचन शब्दाः कस्मिंश्चिदर्थे भूरिप्रयोगाः प्रसिद्धाः, ते तत्पर्यायेष्वपि युक्ताः, तेन पौनरुक्त्यं नोद्भावनीयम् ॥१॥

हिन्दी अर्थ :- अथ नानार्थवर्गः। अनेकार्थो का आरंभ क्यों किया जा रहा है ? यदि यह प्रश्न हो कि जो शब्द पूर्वोक्त वर्गों में कहे गये हैं, वे यहाँ भी कहे जावेंगे अतः क्या यह कहना उचित है? इसका उत्तर यह है कि यहाँ वक्ष्यमाण 'कांत' आदि वर्गों में बहुत से अनेक अर्थवाले कहे हैं न कि प्रागुक्त पर्य्यायों में। बहुत से प्रयोग कवियों ने काव्य आदि में अधिकता से कहे हैं वे ही पूर्वोक्त पर्य्यायों में दीखते हैं। जैसे नाक शब्द पूर्व कहे वर्गों में स्वर्ग और आकाश का वाची कहा है वह फिर यहाँ कहा जावेगा। इस प्रकार जंबुक शब्द गीदड के नामों में कहा गया है और वरुण के नामों में नहीं इस लिये यहाँ फिर कहा जायेगा ॥१॥

आकाशे त्रिदिवे नाकः[1] लोकः[2] तु भुवने जने।

कृष्णमित्रटीका :- जने गतानुगतिको लोकः ॥

हिन्दी अर्थ :- नाक- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम आकाश और स्वर्ग का है। लोक- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम स्वर्ग आदि का और जन का है।

पद्ये यशसि च श्लोकः

कृष्णमित्रटीका :- पद्ये पद्यवद्धे वृत्ते ॥[3]

हिन्दी अर्थ :- श्लोक- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम अनुष्टुप् आदि पद्य और यश का है।

1. **Nakah mas.** means (a) sky and (b) heaven 2. **Lokah mas.** means (a) world and (b) manking. 3. **S'lokah mas** means (a) verse and (b) fame.

शरे खड्गे च सायकः[1] ॥२॥
जम्बुकौ[2] क्रोष्टुवरुणौ पृथुकौ[3] चिपिटार्भकौ।

कृष्णमित्रटीका :- अर्भको बालः।

हिन्दी अर्थ :- सायक- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम शर और तलवार का है ॥२॥ जंबुक- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम गीदड और वरुण का है। पृथुक- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम भुने चावल और बालक का है।

आलोकौ[4] दर्शनोद्योतौ

कृष्णमित्रटीका :- उद्योतः प्रकाशः ॥

हिन्दी अर्थ :- आलोक- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम दीखना और प्रकाश का है।

भेरीपटहमाणकौ[5] ॥३॥

कृष्णमित्रटीका :- अन्तस्तन्त्रीका ढक्का भेरी। पटहो दुन्दुभिः। अणति आणकः। 'दन्त्यम्' (आनकः) अन्ये ॥३॥

हिन्दी अर्थ :- आनक- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम भेरी और मृदंग का है ॥३॥

उत्सङ्गचिह्नयोः- अङ्क[6]

कृष्णमित्रटीका :- अङ्क्यतेऽनेन[7]। उत्सङ्गः क्रोडः ॥

हिन्दी अर्थ :- अंक- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम गोद और चिह्न का है।

कलङ्को[8]ऽङ्कापवादयोः।

कृष्णमित्रटीका :- अपवादोऽपप्रथा ॥

हिन्दी अर्थ :- कलंक- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम चिह्न और अपवाद का है।

तक्षको नागवर्धक्योः[9]

कृष्णमित्रटीका :- वर्धकिस्तक्षा ॥

हिन्दी अर्थ :- तक्षक- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम नाग का और बढई का है।

1. **S'ayakah mas.** means (a) arrow and (b) sword. 2. **Jambukah mas.** means (a) jackal and (b) Varuna, 3. **Prthukah mas.** means (a) parched and flattened rice and (b) Child, 4. **Alokah mas.** means (a) seeing and (b) light or lustre 5. **Ankah mas.** means (a) Kettle-drum and (b) wardrum 6. **Ankah mas** means (a) lap and (b) mark, 7. M.अङ्क्यतेनेन 8. **Kalankah mas.** means (a) mark and (b) obloquy or disrepute 9. M. अपवादोषपथा.

अर्क[1] स्फटिकसूर्ययोः ॥४॥

मारुते वेधसि ब्रघ्ने पुंसि कः[2] कं[3] शिरोऽम्बुनोः।

कृष्णमित्रटीका :- वेधसि ब्रह्मणि। ब्रघ्ने सूर्ये। कायते। डः (वा. ३. २. १०१)॥

हिन्दी अर्थ :- अर्क- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम स्फटिकमणि और सूर्य का है॥४॥ क- यह एक नाम वायु, ब्रह्मा, सूर्य का है और (पुल्लिङ्ग) है और यही (नपुंसकलिङ्ग) वाची नाम शिर और जल का है।

स्यात् पुलाकः[4] तुच्छधान्ये संक्षेपे भक्तसिक्थके॥५॥

कृष्णमित्रटीका :- पोलति। 'पुल महत्त्वे' (भ्वा. प. से.)। 'बलाकादयश्च' (उ. ४. १४) इति साधुः। संक्षेपे यथा- 'पुलककारो विपुलाशयः स्यात्।' सिक्थे यथा- 'स्थालीपुलाकन्यायेन'॥५॥

हिन्दी अर्थ :- पुलाक- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम तुच्छ अन्न और अन्न के अवयव का है॥५॥

उलूके करिणः पुच्छमूलोपान्ते च पेचकः।

कृष्णमित्रटीका :- 'पचिमच्योरिच्चोपधायाः' (उ. ५. ३७)॥[5]

हिन्दी अर्थ :- पेचक- यह एक नाम उल्लू और हाथी की पुच्छ के मूल के गुदाच्छादक माँस का है।

कमण्डलौ च करकः[6]

कृष्णमित्रटीका :- कमण्डलुः पात्रम्। करको दाडिमेऽपि।[7]

हिन्दी अर्थ :- करक- यह एक (पुल्लिङ्ग नपुसंकलिङ्ग) नाम कमंडलु और ओले का है।

सुगते च विनायकः[8]॥६॥

किष्कु[9] हस्ते वितस्तौ च शूककीटे च वृश्चिकः[10]।

कृष्णमित्रटीका :- 'वृश्चिकस्तु द्रुणौ राशौ शूककीटौषधी भिदोः' (मेदिनी १३. १६०)॥

हिन्दी अर्थ :- विनायक- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम वृद्ध का और गणेश का है॥६॥ किष्कु- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम हाथ और विलस्त का है। वृश्चिक- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम शूककीडा और बिच्छू का है।

प्रतिकूले प्रतीकः[1] त्रिष्वेकदेशे तु पुंस्ययम्॥७॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रतिगता ई लक्ष्मीर्येन। 'नधृतश्च' (५. ४. १५३)॥७॥

हिन्दी अर्थ :- प्रतीक- यह शब्द प्रतिकूल का वाची (त्रिलिङ्ग) है और अवयव का वाची (पुल्लिङ्ग) है॥८॥

स्याद् भूतिकं तु[2] भूनिम्बे कट्फलेभूस्तृणेऽपि च।

कृष्णमित्रटीका :- भूनिम्बे, लोके 'चिराइता'। भूस्तृणं, कुकुरमुत्ता लोके॥

हिन्दी अर्थ :- भूतिक- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम चिरायता और गंध तृणविशेष का है।

ज्योत्स्निकायां च घोषे च कोशातकी[3] अथ कट्फले॥८॥

कृष्णमित्रटीका :- ज्योत्स्निका पटोलः। घोषा, अपामार्गः॥८॥

हिन्दी अर्थ :- कोशातकी- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम कड़वी तोरई और ऊंगारका है॥८॥

सिते च खदिरे सोमवल्कः[4] स्यात् अथ सिह्लके।

तिलकल्के च पिण्याकः[5] बाह्लीकं[6] रामठेऽपि च॥९॥

कृष्णमित्रटीका :- रामठं हिङ्गु। अपिना कुङ्कुमे॥

हिन्दी अर्थ :- सोमवल्क- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम कायफल और सफेद खैर का है। पिण्याक यह एक (पुल्लिङ्ग नपुसंकलिङ्ग) नाम पुण्यभेद का और स्नेहरहित तिलों के चूर्ण का है। बाल्हीक यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम हींग का और चकार से बाल्हीक देश का और घोडे का है॥९॥

---

1. **Taksakah mas.** means (a) principal serpant and (b) carpenter, 2. **Arkah mas.** means (a) crystal and (b) sun 12. **Kah mas.** means (a) wind or air (b) Brahman and (c) (c) sun. 3. **Kam n** means (a) head and (b) water. 4. **Pulakah mas.** means (a) bad grain (b) abridgement (c) a lump of boiled rice and (d) rice-water 5. **Pacakah mas.** means (a) owl and (b) the root of and elephant's tale 6. **Karakah mas. means** (a) water-pot and (b) hail, 7. M. दाडिमेपि 8. **Vinayakah mas.** means (a) **Ganes'a** and (b) Buddha. 9. **Kiskuh mas.** means (a) fore arm and (b) cubit 10. **Vrscikah mas.** means (a) scorpion (b) scorpio sign of the zodiac (c) Crab (d) Centiped and (e) a kind of medicine.

1. **Pratikah mas. f. and n.** emans contrary or unfavoarable, and **Pratikah mas.** means part of portion, 2. **Bhutikam n.** means (a) a medical plant (b) camphor and (c) a kind of grass 3. **Kosataki** f. means (a) a kind of vegetable and (b) a medicinal plant. 4. **Somavalkah mas.** means (a) a sort of **karanja** tree and (b) a medicinal substanee. 5. **Pinyakah mas.** means (a) oil-cake and (b) incense. 6. **Balhikam n.** means (a) saffron and (b) asafoetida.

महेन्द्रगुग्गुलूलूकव्यालग्राहिषु कौशिकः[1]।

कृष्णमित्रटीका :- कुशिकस्यापत्यम्। महेन्द्र इन्द्रः।

हिन्दी अर्थ :- कौशिक- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम इन्द्र, गूगल, उल्लू, सर्पग्राही, विश्वामित्र और नौले का है।

रक्तापशङ्कास्वातङ्कः[2] स्वल्पेऽपि क्षुल्लकस्त्रिषु[3]॥१०॥

कृष्णमित्रटीका :- 'क्षुल्लकस्त्रिषु नीचेऽल्पे' (मेदिनी ६. ७०)॥१०॥

हिन्दी अर्थ :- आतंक- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम रोग, ताप, शंका, भय इन्हीं का है। क्षुल्लक- यह एक नाम स्वल्प का और अपिशब्द से नीच, दरिद्रका है और (त्रिलिङ्ग) है॥१०॥

जैवातृकः[4] शशाङ्केऽपि

कृष्णमित्रटीका :- जैवातृको दीर्घायुः।

हिन्दी अर्थ :- जैवातृक यह एक नाम चन्द्रमा का और अपिशब्द से दीर्घायु और कुशा का है और (त्रिलिङ्ग) है।

खुरेऽप्यश्वस्य वर्तकः[5]।

कृष्णमित्रटीका :- वर्तकः पक्षी च॥

हिन्दी अर्थ :- वर्त्तक- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम अश्व के खुर का और अपिशब्द से बतक पक्षी का है।

व्याघ्रेऽपि पुण्डरीको[6] ना यवान्यामपि दीपकः[7]॥११॥

कृष्णमित्रटीका :- पुण्डरीकं पद्मं च॥११॥

हिन्दी अर्थ :- पुंडरीक- यह एक नाम (पुल्लिङ्ग) वाची भगेरा का और अपिशब्द से (नपुंसकलिङ्ग) वाची सफेद कमल का है। दीपक- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम अजमोदा का और अपि शब्द से प्रकाश का है॥११॥

1. **Kausaikah mas.** means (a) Indra (b) a fragrant grom resin (c) owl and (d) snake-catchor. 2. **Atankah mas.** means (a) disease (b) pain or afflication (of the mind) and (c) apyreherior. 3. **Ksullakah mas. f., n.** means (a) little or minute and (b) low, vile 4. **Jaivatrkah mas.** means (a) long lived and (b) moon 5. **Vartakah mas.** means (a) quail (bird) and (b) the hoof of a horse 6. **pundarikah mas.** means tiger, and pundarikam n. means white, louts 7. **Dipakah mas.** means (a) lamp and (b) a kind ef barley.

शालावृकाः[1] कपिक्रोष्टुश्वानः

कृष्णमित्रटीका :- शालां वृणोति। 'स्यति साला' इति स्वामी॥

हिन्दी अर्थ :- शालावृक- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम वानर, गीदड़, कुत्ता इन्हीं का है।

स्वर्णेऽपि गौरिकम्[2]।

पीडार्थेऽपि व्यलीकं[3] स्याद् अलीकं[4] त्वप्रियेऽनृते॥१२॥

कृष्णमित्रटीका :- विशेषणालीकृतम्॥१२॥

हिन्दी अर्थ :- गैरिक यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम सोने का और अपिशब्द से गेरूका है। व्यलीक- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम अप्रियका और पीड़ा का है। अलीक- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम अप्रिय और झूठ का हैं॥१२॥

शीलान्वयावनूके[5]

कृष्णमित्रटीका :- अनूच्यन्ते। 'उच समवाये' (दिवादिः)। कः (३. १. १३५)। अन्वयः कुलम्॥

हिन्दी अर्थ :- अनूक- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम स्वभाव का और वंश का है।

द्वे शल्के[6] शकलवल्कले।

कृष्णमित्रटीका :- शलति। 'शल चलने' (भ्वा. प. से.)। 'इणभीका-' (उ. ३. ४३) इति कन्। शकलं खण्डः॥

हिन्दी अर्थ :- शल्क- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम खंड और छाल का है।

साष्टे शते सुवर्णानां हेम्न्युरोभूषणे पले॥१३॥

दीनारेऽपि च निष्को[7]ऽस्त्री

कृष्णमित्रटीका :- सहाष्टभिर्वर्तते साष्टं सुवर्णं षोडशमाषकाः। पलं स्वर्णचतुष्टयम्॥१३॥ दीनैरर्यते दीनारः, रूपकम्। 'निष्कमस्त्री साष्टहेमशते दीनारकर्षयोः' (मेदिनी ३. २८)॥

1. **Salavrkah mas.** means (a) monkey (b) jackal and (c) dog 2. **Gaurikam n.** means (a) gold and (b) red chalk 3. **Vyalikam n.** means (a) pain; grief, sorrow and (b) inversion, contrariety 4. **Alikam n.** means (a) unpleasing or disaggreable and (b) untrue; false 5. **Anukam n.** means (a) character and (b) family, race 6. **Salkam n.** means (a) part; portion, fragment and (b) bark. 7. **Niskah mas. n.** means (a) 108 **suvarnas** (b) a golden ornament for the breast (c) a golden pala and (d) a golden coin.

हिन्दी अर्थ :- निष्क- यह एक नाम सोने के १०८ कर्षों का, सुवर्ण का, छाती के गहने का, पल भर सोने का ॥१३॥ और व्यवहार के अनुसार द्रव्यभेद का है। और (पुल्लिङ्ग न.) है ।

कल्को[1]ऽस्त्री शमलैनसोः ।
दम्भेऽपि

कृष्णमित्रटीका :- शमलं विष्टा। एनः पापम्॥

हिन्दी अर्थ :- कल्क- यह एक (पुल्लिङ्ग नपुसंकलिङ्ग) नाम विष्ठा, पाप और पाखंड का है।

अथ पिनाको[2]ऽस्त्री शूलशंकरधन्वनोः ॥१४॥

कृष्णमित्रटीका :- (स्पष्टम्) ॥१४॥

हिन्दी अर्थ :- पिनाक- यह एक (पुल्लिङ्ग नपुसंकलिङ्ग) नाम त्रिशूल और महादेव के धनुष का है॥१४॥

धेनुका[3] तु करेण्वां च मेघजाले च कालिका[4]।

कृष्णमित्रटीका :- कालिका श्यामा च।

हिन्दी अर्थ :- धेनुका- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम हथनीका और चकार से नवीन व्याई हुई गौ का है।

कारिका[5] यातनाकृत्योः

कृष्णमित्रटीका :- यातना नारकी व्यथा। कृतिः क्रिया॥

हिन्दी अर्थ :- कालिका- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम नरक यातना का और विवरण श्लोक का है।

कर्णिका[6] कर्णभूषणे ॥१५॥
करिहस्ताङ्गुलौ पद्मबीजकोश्याम्

कृष्णमित्रटीका :- करि हस्तस्याङ्गुलवग्रे। एषु कर्णिका॥

हिन्दी अर्थ :- कर्णिका ॥१५॥- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम कानकी तरकी, हाथी की सूंड के अग्रभाग, अंगुली, कमल के बीज का गुच्छा इन्हीं का है।

1. **Kalkah mas., n.** means (a) ordure (b) sin and (c) hypocrisy. 2. **Pinākah mas.** n. means (a) trident and (b) the bow of s'iva. 3. **Dhenuka f.** means (a) a female elephant and (b) a milch-cow. 4. **Kālika f.** means (a) a line or multitude of clouds and (b) blackness 5. **Kārika f.** means (a) torment or fortune and (b) a kind of verse. 6. Karnika f. (a) an earring (b) the tip of an elephant's trunk (c) the middle finger and (d) pericarp of a lotus.

त्रिषूत्तरे।
वृन्दारकौ[1] रूपिमुख्यौ

कृष्णमित्रटीका :- इतो वाच्यलिङ्गाः 'वृन्दारकः सुरे पुंसि मनोज्ञश्रेष्ठयोस्त्रिषु' (मेदिनी १७. २०४)॥

हिन्दी अर्थ :- इससे आगे और खाँतशब्दों से पहले शब्द (त्रिलिङ्ग) हैं। वृन्दारक- यह एक नाम देवता का, रूप वाले का और मुख्य का है।

एके[2] मुख्यान्यकेवलाः ॥१६॥
स्याद्दाम्भिकः कौक्कुटिको[3] यश्चादूरेरितक्षणः ।

कृष्णमित्रटीका :- कुक्कुटी माया, कुक्कुटी पादपातश्च, तौ पश्यति। 'संज्ञायां ललाटकुक्कुट्यौ पश्यति' (४.४.६६) इति ठक्॥

हिन्दी अर्थ :- एक शब्द मुख्य, अन्य और केवल का वाचक है॥१६॥ कौक्कुटिक- यह एक नाम मायावी का और जो समीप प्रेरित किये नेत्रों वाला हो उसका है।

लालाटिकः[4] प्रभोर्भालदर्शी कार्याक्षमश्च यः ॥१७॥
'भूभृन्नितम्बवलयचक्रेषु कटको[5]ऽस्त्रियाम् (१)
सूच्यग्रे क्षुद्रशत्रौ च लोमहर्षे च कण्टकः[6](२)
पाकौ[7] पक्तिशिशू मध्यरत्ने नेतरि नायकः[8](३)
पर्यङ्कः[9] स्यात्परिकरेऽथार्द्रायामपि लुब्धकः[10] (४)
पेटकः[11] त्रिषु वृन्देऽपि गुरौ देश्ये च देशिकः[12] (५)

1. **Vrndarakah mas. f., n.** means (a) pleasing; attractive and (b) chef of any thing. 2. **Ekah** all g. means (a) chief; supreme (b) other and (c) single, alone. 3. **Kaukkutikah** all g. means (a) hypocrite and (b) a mendicant who walks always fixing his eages on the ground. 4. **Lalatikah** all **g.** means (a) an attentive servant and (b) an idler. 5. **Katakah mas.**, n. means (a) the ridge of a mountain (b) bracelet and (c) circle, wheel 6. **Kantakah mas.** n. means (a) the point of a pin or needle (b) a paltry foe and (c) the erection of the hair of the body in thrilling emotions. 7. **Pakah mas.** means (a) cooking and (b) a child. 8. **Nayakah mas.** means (a) the central gem of a necklace and (b) a leader. 9. **Paryankah mas.** means (a) attendants; followers and (b) bed; couch. 10. **Lubdhakah all g.** means (a) Sinius (star) and (b) a covetous or greedy man. 11. **Petakah all g.** means (a) a basket and (b) a multitude or quantity. 12. **Desikah all g.** means (a) a teacher and (b) any thing pertaining to native.

खेटकौ[१] ग्रामफलकौ धीवरेऽपि च जालिकः[२] (६)
पुष्परेणौ च किञ्जल्कः[३] शुल्कोऽस्त्री[४] स्त्रीधनेऽपि च (७)
स्यात्कल्लोलेऽप्युत्कलिका[५] वार्द्धकं[६] भाववृन्दयोः (८)
करिण्यां चापि गणिका[७] दारकौ[८] बालभेदकौ (९)
अन्धेऽप्यनेडमूकः[९] स्याट्टङ्कौ[१०] दर्पाश्मदारणौ (१०)
मृद्भाण्डेऽप्युष्ट्रिका[११] मन्थे खजको[१२] रसदीर्वके (११)
इति कान्ताः।

कृष्णमित्रटीका :- ललाटं कोपप्रसादचिह्नं पश्यति। यश्च ललाटमेव पश्यति न करोति सोऽपि[१३] ॥१७॥ (इति कान्ताः)॥

हिन्दी अर्थ :- लालाटिक- यह एक नाम स्वामी के मस्तक को देखने वाले का और कार्य करने में असमर्थ का है॥१७॥ यहाँ ककारांत शब्द समाप्त हुए॥

मयूखस्त्विट्करज्वालासु[१४]

कृष्णमित्रटीका :- मयूखः त्विट्करो मरीचिः॥

हिन्दी अर्थ :- मयूख- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम शोभा, किरण, ज्वाला का है।

अलिवाणौ शिलीमुखौ।[१५]

कृष्णमित्रटीका :- शिली शलयं मुखेऽस्य॥

हिन्दी अर्थ :- शिलीमुख- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम भौंरे का और बाण का है।

---

1. **Khetakah all g.** means (a) a village and (b) a shield. 2. **Jalikah all g.** means (a) a fisherman and (b) a fowler or bird-catcher. 3. **Kinjalkah mas., n.** means (a) the blossom of any flower and (b) filament of a lotus. 4. **Sulkah mas., n.** means (a) the private propery of a woman (b) tax; custom. 5. **Utkalika f.** means (a) a wave (b) wanton sport and (c) anxiety. 6. **Vardhakam** all g. means (a) old age and (b) a collection of old men. 7. **Ganika f. means** (a) a female elephant and (b) a harlot or courtezan. 8. **Darakah mas.** means (a) a boy or a son and (b) splitting or breaking. 9. **Anedamukah mas.** means (a) a bling and (b) a deaf and dumb. 10. **Tankah all g.** means (a) pride and (b) a stone-cutter's chisel. 11. **Ustrika f.** means (a) an eatrhen vessel and (b) a she-camel. 12. **Khajakah mas.** means (a) a churning stick and (b) a ladle or spoon. 13. M. सापि 14. **Mayukhah mas.** means (a) beauty (b) a ray and (c) a flame. 15. **S'ilimukhah mas.** means (a) a bee (black) and (b) an arrow.

शङ्खो[१] निधौ ललाटास्थ्नि कम्बौ न स्त्रीन्द्रियेऽपि खम्[२]॥१८॥
घृणिज्वाले अपि शिखे[३]

कृष्णमित्रटीका :- (उपलेपेऽपि गोमुखम्[४])।

हिन्दी अर्थ :- शंख-यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम खजाना, मस्तक की हड्डी और शंख का है। जब शंखवाची है तब (पुल्लिङ्ग नपुसंकलिङ्ग) है। ख-यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम इन्द्रिय, पुर, क्षेत्र, शून्यबिन्दु, आकाश, संवेदन, देवलोक, कल्याण का वाचक है॥१८॥ शिखा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम किरण और चोटी का है।

इति खान्ताः।

कृष्णमित्रटीका :- घृणिर्मरीचिः। अपिना चूडा।
(इति खान्ताः)

हिन्दी अर्थ :- यहाँ खकरान्त शब्द समाप्त हुए।

शैलवृक्षौ नगावगौ[५]।
आशुगौ वायुविशिखौ[६] शरार्कविहगाः खगाः[७]॥१९॥

कृष्णमित्रटीका :- विशिखः शरः॥१९॥

हिन्दी अर्थ :- १. नग, २. अग- ये दोनों (पुल्लिङ्ग) नाम पर्वत के और वृक्ष के हैं। आशुग- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम वायु का और बाण का है। खग- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम बाण, पक्षी और सूर्य का है॥१९॥

पतङ्गौ[८] पक्षिसूर्यौ च
पूगः[९] क्रमुकवृन्दयोः।

कृष्णमित्रटीका :- क्रमुकः पूगवक्षः॥

---

1. M. मुखेस्य, 2. **S'ankhah mas.** means (a) one of the nine treasures of Kubera and (b) the bone of the forehead, and Sankhah mas., n. means a conch. shall. 3. **Kham n.** means (a) ray of light (b) a flame and (c) a lock of the hair on the hair on the crown of the head. 4. **Gomukham mas., n.** means (a) kind of musical instrument and (b) smearing. 5. **Nagah and agah mas.** mean (a) a mountain and (b) a tree. 6. **As'ugah mas.** means (a) the wind (b) the sun and (c) an arrow. 7. **Khagah mas.** means (a) an arrow (b) the sun and (c) a bird. 8. **Patangah mas.** means (a) a bird and (b) the sun 9. **Pugah mas.** means (a) the areca or betel-nut tree and (b) a multitude or quantity.

हिन्दी अर्थ :- पतंग- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम पक्षी, सूर्य और शालि चावल के भेद का है। पूग- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम सुपारी के वृक्ष और समूह का है।

पशवोऽपि मृगाः[1] वेगः[2] प्रवाहजवयोरपि ॥२०॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रवाहे यथा- 'नदी वेगेन'। अपि शब्दान्मूत्रादिप्रवृत्तौ यथा- 'वेगान्न धारयेत्' इति ॥२०॥

हिन्दी अर्थ :- मृग- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम पशु का, मृगशिर का और ढूंढने का है। वेग- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम प्रवाह का और वेग का है और अपि शब्द से विष्ठा को गुदा से बाहर निकालने का है ॥२०॥

परागः[3] कौसुमे रेणौ स्नानीयादौ रजस्यापि।

कृष्णमित्रटीका :- स्नात्यनेन। रजश्चूर्णम्॥

हिन्दी अर्थ :- पराग- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम फूलसंबंधी रेणु और स्नान के योग्य गंध के चूर्णविशेष का है और अपि शब्द से उपराग का है।

गजेऽपि नागमातङ्गौ[4]

कृष्णमित्रटीका :- मातङ्गश्चण्डालोऽपि[5]॥

हिन्दी अर्थ :- १. नाग, २. मातंग- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम हस्ती के और अपि शब्द से सर्प, नागकेसर, पानवेल आदि के हैं।

अपाङ्ग[6] स्तिलकेऽपि च ॥२१॥

कृष्णमित्रटीका :- अपाङ्गो नेत्रान्तेऽपि[7]॥२१॥

हिन्दी अर्थ :- अपांग- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम तिलक का और अपि शब्द से नेत्र के अन्त भाग और अंगहीन का है ॥२१॥

सर्ग[8] स्वभावनिर्मोक्षनिश्चयाध्यायसृष्टिषु।

1. **Mrgah mas.** means (a) a quadruped or animal and (b) a deer or an antelope. 2. **Vegah mas.** means (a) stream; current and (b) speed; velocity. 3. **Paragah mas.** means (a) the pollen of a flower (b) the fragrant powder for bath and (c) dust in general. 4. **Nagah mas.** means (a) an elephant and (b) a snare; **Matangah mas.** means (a) an elephant and (b) a Condala. 5. M. चण्डालोपि, 6. **Apangah mas.** means (a) a mark on the forehead and (b) the outer corner of the eye. 7. M. नेत्रान्तेपि 8. **Sargah mas.** means (a) nature (b) relinquishment (c) determination; resolve (d) a chapter; canto and (e) creation.

कृष्णमित्रटीका :- स्वभावे यथा- निसर्गः। निर्मोक्षः त्यागः- यथा विसर्गः। निश्चये यथा- 'गृहाण शस्त्रं यदि सर्ग एष ते' (रघुवंश)। अध्यायः काव्यादौ विश्रान्तिस्थानम्। 'सर्गबन्धो महाकाव्यम्-' (काव्यादर्श) इति। सृष्टिः यथा- 'सर्गश्च प्रतिसर्गश्च-' (विष्णु पुराण)॥

हिन्दी अर्थ :- सर्ग-यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम स्वभाव, त्याग, निश्चय, अध्याय, और सृष्टि का है।

योगः[1] संहननोपायध्यानसंगतियुक्तिषु ॥२२॥

कृष्णमित्रटीका :- संहननं कवचानि। उपायः सामादिः। युक्तिर्योजनम्॥२२॥

हिन्दी अर्थ :- योग- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम कवच, उपाय, ध्यान, संगति, और युक्ति का है ॥२२॥

भोगः[2] सुखे स्त्र्यादिभृतावहेश्च फणकाययोः।

कृष्णमित्रटीका :- स्त्र्यादीनां पण्यानां दासादीनां च भृतौ भरणे॥

हिन्दी अर्थ :- भोग- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम सुख, पण्य स्त्री हाथी घोड़े आदि का मूल्य, पालन वा भरना, सर्प के फण और शरीर इनका है।

चातके हरिणे पुंसि सारङ्गः[3] शबले त्रिषु ॥२३॥

कृष्णमित्रटीका :- शबले चित्रे ॥२३॥

हिन्दी अर्थ :- सारंग- यह एक नाम पपैया और हिरण का (पुल्लिङ्ग) है और शबलका वाची (त्रिलिङ्ग) है ॥२३॥

कपौ च प्लवगः[4]

कृष्णमित्रटीका :- प्लवगो भेकोऽपि[5]॥

हिन्दी अर्थ :- प्लवग- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम वानर का मेंडक और सारथि आदि का है।

शापे तवभिषङ्गः[6] पराभवे।

कृष्णमित्रटीका :- मिथ्याभिशंसने पराभवे चाभिषङ्गः॥

1. **Yogah mas.** means (a) an armour (b) the four **upayas** as **sama** & c. (c) deep and abstract meditation (d) propriety and (e) a plan. 2. Bhogah mas. means (a) an enjoyment (b) the wages of women and servants (c) the hood of a snake and (d) the body of a snake. 3. **Sarangah mas.** means (a) a cuckoo and (b) a deer; **sarangah all g.** means spotted or variegated. 4. **Plavagah mas.** means (a) a monkey and (b) a frog. 5. M. भेकोपि 6. **Abhisangah mas.** means (a) a curse (b) defeat and (c) an oath.

हिन्दी अर्थ :- अभिषंग- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम शाप का और तिरस्कार का है।

यानाद्यङ्गे युगः पुंसि युगं युग्मे कृतादिषु[1] ॥२४॥

कृष्णमित्रटीका :- यानादेः रथादेरङ्गे। कृतादिषु सत्यादिषु॥२४॥

हिन्दी अर्थ :- युग- यह एक नाम रथ घोड़े आदि के अवयव में (पुल्लिङ्ग) है और जोड़ा तथा सत्ययुग आदि का वाची (नपुसंकलिङ्ग) है॥२४॥

स्वर्गेषुपशुवाग्वज्रदिङ् नेत्रघृणिभूतले।
लक्ष्यदृष्ट्या स्त्रियां पुंसि गौः[2]

कृष्णमित्रटीका :- एषु गौः। इषुर्वाणः। दिशि नेत्रे रश्मौ भुवि लक्ष्यदृष्ट्या स्त्रीत्वादि। यथा- वागादौ स्त्रीलिङ्गः। स्वर्गादौ पुल्लिङ्गः॥

हिन्दी अर्थ :- गो- यह एक नाम स्वर्ग, बाण, पशु, वाणी, वज्र, दिशा,.नेत्र, किरण, पृथ्वी, तथा पानी का है एवं प्रयोग के अनुसार (स्त्रीलिङ्ग) और (पुल्लिङ्ग) है।

लिङ्गं[3] चिह्नशेफसोः॥२५॥

कृष्णमित्रटीका :- लिङ्गं चिह्नादि। शेफो मेढ्रम्॥२५॥

हिन्दी अर्थ :- लिङ्ग- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम चिह्न का और लिङ्ग इन्द्रिय का है॥२५॥

शृङ्गं[4] प्राधान्यसान्वोश्च

कृष्णमित्रटीका :- प्रधानमेव प्राधान्यम्। सानुर्गिरिशिखरम्॥

हिन्दी अर्थ :- शृंग- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम प्रधानता, शिखर और पशु के सींग का है।

वराङ्गः[5] मूर्धगुह्ययोः।

कृष्णमित्रटीका :- गुह्यं योनिः॥

1. **Yugah mas.** Means a yoke. and **yugam** n. means (a) pair; couple and (b) an age of the world. 2. **Gauh mas.** means (a) heaven (b) an arrow (c) Cattle (d) speech; words (e) the thunderbolt (f) a direction (g) the eye (h) the sun (i) the earth and (j) water. 3. **Lingam. n.** means (a) a mark; symbol and (b) the male organ of generation. 4. **Srngam. n.** means (a) supremacy; eminence and (b) the summit of a mountain 5. **Varangam. n.** means (a) the head and (b) the female organ of generation.

हिन्दी अर्थ :- वरांग- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम शिर का और योनि का है।

भगं[1] श्रीकाममाहात्म्यवीर्ययत्नार्ककीर्तिषु॥२६॥
इति गान्ताः।

कृष्णमित्रटीका :- कामोऽत्र[2] योनिः॥२६॥

(इति गान्ताः)।

हिन्दी अर्थ :- भग- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम लक्ष्मी, काम, ऐश्वर्य्य, वीर्य, यत्न, अर्क, और कीर्ति का है॥२६॥ यहाँ गान्त शब्द समाप्त हुए॥

परिघः[3] परिघातेऽस्त्रेऽपि

कृष्णमित्रटीका :- परिघोऽर्गला[4]। वि (परि) घातो हननम्॥

हिन्दी अर्थ :- परिघ- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम लोहे की लाठी का और योगभेद का है।

आघो[5] वृन्देऽम्भसां रये।

कृष्णमित्रटीका :- अम्भसां रये जलवेगे॥

हिन्दी अर्थ :- ओघ- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम समूह और पानी के प्रवाह का है।

मूल्ये पूजाविधावर्धः[6] अंघो[7] दुःखव्यसनेष्वघम्॥२७॥
त्रिष्विष्टेऽपि लघुः[8]

कृष्णमित्रटीका :- (इति घान्ताः)

हिन्दी अर्थ :- अघ- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम पाप, दुःख अर्थात् बुढापा मरण आदि, व्यसन अर्थात् शिकार जूआ खेलने आदि का है॥२७॥ लघु यह एक नाम मनोवांछित और अल्प का है और (त्रिलिङ्ग) है। यहाँ घकारान्त शब्द समाप्त हुए॥

1. **Bhagam n.** means (a) beauty (b) the female organ of generation (c) strength (d) indifference to worldly objects (e) glory; fame (f) desire and (g) effort; and **bhagah mas.** means the sun. 2. M. कामोत्र, 3. **Parighah mas.** means (a) an iron or wooden bar and (b) a stick studded with iron 4. M. परिघार्गला, 5. **Oghah mas.** means (a) quantity; multitude and (b) a stream or current. 6. **Arghah mas.** means (a) a kind of offering in worship and (b) price; value. 7. **Anghah mas.** means (a) sorrow; grief (b) evil habit and (c) sin. 8. **Laghuh all g.** means (a) desirable and (b) little; small.

काचाः[1] शिक्यमृद्भेददृग्रुजः।

कृष्णमित्रटीका :- सि (शि) क्यं रज्जुयन्त्रम्। मृद्भेदो धातुविशेषो वलयादिर्येन रच्यते। दृग्रोगः तिमिर-परिणामः॥

हिन्दी अर्थ :- काच- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम छींका, कांच, और नेत्ररोग का है।

विपर्यासे विस्तरे च प्रपञ्चः[2]

कृष्णमित्रटीका :- विपर्यासो माया॥

हिन्दी अर्थ :- प्रपञ्च- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम विपरीतता और विस्तार का है।

पावके शुचिः[3] ॥२८॥

मास्यमात्ये चात्युपधे पुंसि मेध्ये सिते त्रिषु।

कृष्णमित्रटीका :- मासि ज्यैष्ठे शुचिः। धर्मार्थादिभिः सचिवपरीक्षा उपधा, तामतिक्रान्तोऽत्युपधः तादृशे सचिवे॥

हिन्दी अर्थ :- शुचि- यह एक नाम अग्नि का॥२८॥ और आषाढ महीना, मंत्री तथा शुद्ध चित्तवाले का है और (पुल्लिङ्ग) है। पवित्र में और शुक्ल वर्ण में (त्रिलिङ्ग) है।

अभिष्वङ्गे स्पृहायां च गभस्तौ च रुचिः[4] स्त्रियाम्॥२९॥

इति चान्ताः।

कृष्णमित्रटीका :- अभिष्वङ्गो रागः। गभस्तिर्दीप्तिः॥२९॥

(इति चान्ताः)

हिन्दी अर्थ :- रुचि (स्त्री)- यह एक नाम मिलाप, बहुत इच्छा, किरण और शोभा का है॥२९॥ यहाँ चकारान्त शब्द समाप्त हुए॥

केकिताक्ष्यार्वहिभुजौ[5]

कृष्णमित्रटीका :- केकी मयूरः। ताक्ष्यो गरुडः।

हिन्दी अर्थ :- "अच्छ- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम रीछ, प्रसन्न और अपि शब्द से स्फटिक का है। गुच्छ- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम गुच्छे का और हार का है। कच्छ यह एक नाम धोती आदि पहनने के वस्त्र का किनारा, नाव का अंग विशेष, और जलप्रायदेश का है। इनमें वस्त्र वाची (पुल्लिङ्ग) हैं और तट नौकाङ्गादिवाची (त्रिलिङ्ग) है।" यहाँ छकारान्त शब्द समाप्त हुए॥

दन्तविप्राण्डजा द्विजाः[1]।

अजा[2] विष्णु हरच्छागाः गोष्ठा ध्वनिवहा व्रजाः[3]॥३०॥

कृष्णमित्रटीका :- 'गोचर-' (३.३. ११९) इति साधुः॥३०॥

हिन्दी अर्थ :- अहिभुज्- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम मोर का और गरुड (और नौले) का है। द्विज यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम दांत, ब्राह्मण, और पक्षी का है। अज- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम विष्णु, महादेव, तथा बकरा का है। व्रज- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम गौओं का स्थान, मार्ग, और समूह है॥३०॥

धर्मराजौ[4] जिनयमौ कुञ्जो[5] दन्तेऽपि न स्त्रियाम्।

कृष्णमित्रटीका :- दन्ते हस्तिदन्ते। अपिना लतादिगृहम्।

हिन्दी अर्थ :- धर्मराज- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम जिन अर्थात् बुद्धदेवता, यमदेवता और युधिष्ठर का है। कुंज- यह एक नाम हाथी के दांत तथा निकुञ्ज का है और (पुल्लिङ्ग नपुसंकलिङ्ग) है।

बलजे[5] क्षेत्रपूद्वारि बलजा वल्गुदर्शना॥३१॥

कृष्णमित्रटीका :- बले जायते क्षेत्रं पुरद्वारं च। बलजा वरयोषा॥३१॥

हिन्दी अर्थ :- वलज- यह एक (नपुसंक-लिङ्ग) नाम खेत और नगर के द्वार का है। वलजा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम सुन्दर स्त्री का है॥३१॥

---

1. **Kacah mas.** means (a) a swinging shett (b) glass; crystal and (c) an eye-disease. 2. **Prapancah mas.** means (a) fraud; illusion and (b) elucidation. 3. **S'ucih mas.** means (a) fire (b) the **As'adha** month (c) a minister and (d) the sentiment of love; **Sucih all g.** means (a) white colour (b) pure; clean and (c) uirtous pious. 4. **Rucih f.** means (a) liking; love (b) wish; desire (c) a ray of light and (d) lustre; splendour. 5. **Ahibhuk mas.** means (a) a peacock and (b) Garuda.

1. **Dvijah mas.** means (a) a tooth, and (b) a man of any of the first three castes and (c) a bird. 2. **Ajah mas.** means (a) a cowshed (b) a road and (c) a flock or multitude. 3. **Dharmarajah mas.** is an epithet of (a) Buddha (b) Yamaraja and (c) Yudhisthira. 4. **Kunjah mas.** means (a) a bower and (b) the tusk of an elephant. 5. **Balajam n.** meams (a) a field and (b) a city-gate; **balaja.** means a handsome woman.

समेऽक्ष्मांशे रणेऽप्याजिः[1]

कृष्णमित्रटीका :- समेऽक्ष्मांशे भूभागे।

हिन्दी अर्थ :- आजि- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम समानरूप पृथ्वीभाग का और युद्ध का है।

प्रजा[2] **स्यात्संततौ जने।**

अब्जौ शङ्खशशाङ्कौ च स्वके नित्ये निजं[3] **त्रिषु॥३२॥**

इति जान्ताः।

कृष्णमित्रटीका :- नियतं जायते निजम्॥३२॥

(इति जान्ताः)।[4]

हिन्दी अर्थ :- प्रजा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम संतान और जन का है। अब्ज- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम शंख और चन्द्रमा का है। निज- यह एक नाम अपना और नित्य का है। इनमें निज शब्द (त्रिलिङ्ग) है॥३२॥ यहाँ जकारांत शब्द समाप्त हुए॥

पुंस्यात्मनि प्रधाने तु[5] **क्षेत्रज्ञो**[6] **वाच्यलिङ्गकः।**

कृष्णमित्रटीका :- क्षेत्रं शरीरं पात्रं जानाति क्षेत्रज्ञः। आत्मा मुख्यश्च॥

हिन्दी अर्थ :- क्षेत्रज्ञ- यह एक नाम आत्मा का वाची (पुल्लिङ्ग) है और कुशल का वाची (त्रिलिङ्ग) है।

संज्ञा[7] **स्याच्चेतना नामहस्ताद्यैश्चार्थसूचना॥३३॥**

कृष्णमित्रटीका :- संज्ञानं संज्ञायतेऽनया[8] वा। अर्थः प्रयोजनम्॥३३॥

हिन्दी अर्थ :- संज्ञा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम बुद्धि, नाम और हाथ भौंह लोचन आदि से अर्थ की सूचना करने का है। गायत्री और सूर्य की स्त्री को भी संज्ञा कहते हैं॥३३॥

दोषज्ञौ[9] **वैद्यविद्वांसौ ज्ञो**[10] **विद्वान् सोमजोऽपि च**[11]**।**

इति ञान्ताः।

यहाँ ञकारान्त शब्द समाप्त हुए॥

काकेभगण्डौ करटौ[1]

कृष्णमित्रटीका :- इभस्य हस्तिनो गण्डः॥

हिन्दी अर्थ :- करट- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम काक का और हाथी के कपोल का है।

गजगण्डकटी कटौ[2]**॥३४॥**

शिपिविष्टः[3] **तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे।**

कृष्णमित्रटीका :- शिपिश्चर्मं विष्टं दोषव्याप्तमस्य॥

हिन्दी अर्थ :- कट- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम हाथी के कपोल का कटि का चटाई का है॥३४॥ शिपिविष्ट- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम बालों से रहित शिरवाला, दुष्टचामवाला और महादेव का है।

देवशिल्पिन्यपि त्वष्टा[4]

कृष्णमित्रटीका :- त्वष्टा देवशिल्पितक्ष्णोः।

हिन्दी अर्थ :- त्वष्टृ (ऋकारान्त)- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम विश्वकर्मा, सूर्यविशेष तथा खाती का है।

दिष्टं[5] **दैवेऽपि न द्वयोः॥३५॥**

कृष्णमित्रटीका :- दिष्टं कालोऽपि[6]॥३५॥

हिन्दी अर्थ :- दिष्ट- यह एक नाम दैव वाची (नपुंसकलिङ्ग) है और काल वाची (पुल्लिङ्ग) है॥३५

रसे कटु[7] **कट्वकार्ये त्रिषु मत्सरतीक्ष्णयोः।**

रिष्टं[8] **क्षेमाशुभभावेषु-अरिष्टे**[9] **तु शुभाशुभे॥३६॥**

कृष्णमित्रटीका :- 'तक्रे मरणचिह्ने चारिष्टं च क्षेत्रफेनिले। सुरायां च शुभेऽपि स्यात्' ॥३६॥

---

1. **Ajih f.** means (a) equal ground or field and (b) a battle or fight. 2. **Praja f.** means (a) issue; child and (b) subjects; people. 3. **Abjah mas.** n. means (a) a Conch-shell (b) the moon and (c) a lotus. 4. **Nijam all g.** means (a) perpetual; continual and (b) one's own. 5. B. प्रवीणे च, and K. प्रधाने च, 6. **Ksetrajnah mas.** means the Soul, and **Ksetrajnah** all g. means one who is knower of the body. 7. **Sanjna f.** means (a) consciousness; knowledge (b) name and (c) hint; gesture. 8. M. संज्ञायतेनया, 9. **Dosajnah mas.** means (a) a learned or wise man and (b) a physician. 10. **Jnah mas.** means (a) a wise or learned man and (b) Mercury. 11. B. and K. read it among interpolated verses.

1. **Karatah mas.** means (a) an elephant's cheek and (b) a crow. 2. **Katah mas.** means (a) the temples of an elephant and (b) the waist. 3. **Sipivistah mas.** means (a) a bald headed man (b) a man having bad skin and (c) Siva. 4. **Tvasta mas.** means (a) a carpenter and (b) Vis'vakarman. the architect of gods. 5. **Distam n.** means fate or destiny, and distah mas. means time. 6. M. कालोपि, 7. **Katuh mas.** means pungency, katu n. means an improper act, and **katuh all g.** means (a) envious and (b) bitter or caustic (words). 8. **Ristam n.** means (a) good luck; prosperity and (b) absence of misfortune or evil. 9. **Arista m n.** means (a) bad or ill luck, evil, misfortune and (b) good fortune or luck.

हिन्दी अर्थ :- कटु- यह एक नाम रस का वाची (पुल्लिङ्ग) है और अकार्य वाची (नपुसंकलिङ्ग) है। मत्सर और तीक्ष्ण वाची (त्रिलिङ्ग) है। रिष्ट- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम कुशल, अमंगल, अशुभ के अभाव का है। अरिष्ट- यह एक नाम शुभ अशुभ का है। सूतिका का घर, मदिरा और मरण के चिन्ह का भी है॥३६॥

मायानिश्चलयन्त्रेषु कैतवानृतराशिषु।
अयोघने शैलशृङ्गे सीराङ्गे कूटमस्त्रियाम्[1]॥३७॥

कृष्णमित्रटीका :- माया इन्द्रजालम्। निश्चले यथा- 'कूटस्थोऽक्षर[2] उच्यते' (गीता १५. १६)। यन्त्रं मृगादिबन्धनार्थं छलं यथा- 'छित्त्वा पाशमपास्य कूटरचनाम्-' (पञ्चतन्त्र, २.८८)। कैतवं व्याजम्। राशिर्धान्यादिपुञ्जः। अयोमयो घनः, आघातार्थः। सीराङ्गं फलाधारः कूटाख्यः॥३७॥

हिन्दी अर्थ :- कूट- यह एक नाम माया, निश्चलयंत्र, कपट, झूठ, समूह, लोहे का समूह, पर्वत का शिखर, और हल के अंग का है। इनमें कूट शब्द (पुल्लिङ्ग नपुसंकलिङ्ग) है॥३७॥

सूक्ष्मैलायां त्रुटिः[3] स्त्री स्यात्कालेऽल्पे संशयेऽपि सा।

कृष्णमित्रटीका :- अल्पे काले क्षणद्वयाख्ये। संशये यथा- त्रुटिप्राप्तो रोगी॥

हिन्दी अर्थ :- त्रुटि (स्त्रीलिङ्ग)- यह एक नाम छोटी इलायची कालभेद, लेश, और सन्देह का है।

अत्युत्कर्षाश्रय कोट्यः[4]

कृष्णमित्रटीका :- अर्तिर्धेनुः कोटिः। उत्कर्षे यथा- पराकोटिमारूढाः। अश्रिः कोणः। यथा- शतकोटिर्वज्रः॥

हिन्दी अर्थ :- कोटि- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम घनुष के अग्रभाग, प्रकर्ष कोण, और संख्याभेद का है।

1. **Kutam n. mas.** means (a) fraud; deception (b) immoveable; steady (c) a trap for catching deer (d) a trick (e) falsehood; untruth (f.) heep; mass (g) a hammer or an iron mallet (h) the summit of a mountain and (i) a plogh-share. 2. M. कूटस्थोक्षर, 3. **Trutih f.** means (a) small cardamoms (b) a very minute space of time (c) small and (d) doubt; uncertainty. 4. **Kotih f.** means (a) the curved end of a bow (b) excellence (c) an angle and (d) a crore.

मूले लग्नकचे जटा[1]॥३८॥

कृष्णमित्रटीका :- शिरस्थिताः केशाश्च जटाः॥३८॥

हिन्दी अर्थ :- जटा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम मूल, मिले हुए बाल, और जटामांसी का है॥३८॥

व्युष्टिः[2] फले समृद्धौ च

कृष्णमित्रटीका :- फलं प्रयोजनम्।

हिन्दी अर्थ :- व्युष्टि- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम फल का और समृद्धि का है।

दृष्टिः[3] ज्ञानेऽक्षिण दर्शने।

कृष्णमित्रटीका :- दृश्यतेऽनेनेति[4] दर्शनम्॥

हिन्दी अर्थ :- दृष्टि- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम ज्ञान, आंख, और देखना का है।

इष्टि[5] र्यागेच्छयोः सृष्टि[6] निश्चिते बहुनि त्रिषु॥३९॥
कष्टे[7] तु कृच्छ्रगहने

कृष्णमित्रटीका :- कष्टानि सामानि गहनानीत्यर्थः॥

हिन्दी अर्थ :- इष्टि- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम यज्ञ का और इच्छा का है। सृष्ट यह एक नाम निश्चय और बहुत का है और (त्रिलिङ्ग) है॥३९॥ कष्ट- यह एक नाम दुःख का और दुःख से प्राप्त हो सकने वाली वस्तु का है॥

दक्षामन्दागदेषु तु।
पटुः[8]

कृष्णमित्रटीका :- दक्षोऽनलसः। अमन्दो भ्रष्टुः। अगदो नीरु (क्)।

हिन्दी अर्थ :- पटु- यह एक नाम चतुर, तीक्ष्ण, और रोगहीन का है।

1. **Jata f.** means (a) a root in general and (b) the hair matted and twisted together. 2. **Vyustih f.** means (a) fruit; consequence and (b) proserity. 3. **Drstih f.** means (a) Knowledge, knowing (b) the eye and (c) a look, glance. 4. M. दृश्यतेनेनेति, 5. Istih f. means (a) desire, wish and (b) a sacrifice. 6. **Srstih f.** means (a) nature and (b) creation; **sristih** all g. means (a) ascertained or determined and (b) much, abundant 7. **Kastam all g.** means (a) painful, grievious and (b) difficult. 8. **Patuh all g.** means (a) clever; skilful (b) active and (c) healthy.

द्वौ वाच्यलिङ्गौ च

इति टान्ताः।

कृष्णमित्रटीका :- द्वौ कष्टपटू॥

(इति टान्ताः)।

हिन्दी अर्थ :- १. कष्ट, २. पटु- ये दोनों शब्द वाच्यलिङ्गी हैं॥ यहाँ टकारान्त शब्द समाप्त हुए॥

नीलकण्ठः[1] शिवेऽपि च॥४०॥

कृष्णमित्रटीका :- नीलकण्ठो मयूरोऽपि[2]॥४०॥

हिन्दी अर्थ :- नीलकंठ- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम महादेव का अपि से मोर का है॥४०॥

पुंसि कोष्ठा[3] ऽन्तर्जठरं कुशूलोऽन्तर्गृह तथा।

कृष्णमित्रटीका :- अन्तर्जठरमुदराभ्यन्तरम्। कुशूलो धान्याधारः॥

हिन्दी अर्थ :- कोष्ठ- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम पेट के भीतर अन्न का मकान का, कुठीले का और भीतर के घर का है।

निष्ठा[4] निष्पत्तिनाशान्ताः[5] काष्ठोत्कर्षे स्थितौ दिशि॥४१॥

कृष्णमित्रटीका :- स्थितिर्मर्यादा॥४१॥

हिन्दी अर्थ :- निष्ठा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम उत्कर्ष, स्थिति और दशा का है॥४१॥

त्रिषु ज्येष्ठो[6] ऽतिशस्तेऽपि कनिष्ठो[7] ऽति युवाल्पयोः।

इति ठान्ताः।

दण्डो[8] ऽस्त्री लगुडेऽपि स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- दण्डो दमादिरपि।

हिन्दी अर्थ :- ज्येष्ठ- यह एक नाम अत्यंत उत्तम अत्यंत वृद्ध, बड़ा और जेठ महीने का है और (त्रिलिङ्ग) है। कनिष्ठ- यह एक (त्रिलिङ्ग) नाम बालक का और अल्प का है। **यहाँ ठकारान्त शब्द समाप्त हुए॥**

1. **Nilakanthah mas.** means (a) S'iva and (b) peacock 2. M. मयूरोपि, 3. **Kosthah mas.** means (a) the abdomen (b) a granary and (c) an inner apartment. 4. **Nistha f.** means (a) perfection (ii) death, destruction and (c) end. 5. **Kastha f.** means (a) extremity, excess (b) limit and (c) a direction. 6. **Jyesthah** all g. means (a) elder brother and (b) eldest or **most senior,** and jyesthah mas. means the month, **Jyestha.** 7. **Kanisthah** all g. means (a) the youngest and (b) the smallest or least. 8. **Dandah mas.**, n. means (a) a stick and (b) punishment.

दंड- यह एक नाम लाठी का मानभेद और दंड का है और (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) है।

गुडो[1] गोलेक्षुपायकयोः॥४२॥

कृष्णमित्रटीका :- गोलो वृत्ता यथा- 'भक्षिताश्चाप्ययोगुडाः' (चरकसंहिता)॥४२॥

हिन्दी अर्थ :- गुड- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम गोले और गेंद का है॥४२॥

सर्पमांसात्पशू व्याडौ[2]

कृष्णमित्रटीका :- मांसमत्ति मांसात् स चासौ पशुश्च सिंहादिः॥

हिन्दी अर्थ :- व्याड- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम सर्प के मांस को खाने वाले और पशु का है।

गोभूवाचस्त्विडा[3] इलाः।

कृष्णमित्रटीका :- इडा इला शब्दौ गवादिषु॥

हिन्दी अर्थ :- १. इडा, २. इला- ये दो (स्त्रीलिङ्ग) नाम गौ, पृथ्वी, और वाणी के हैं। इला- यह एक नाम बुध की स्त्री का भी है।

क्ष्वेडः[4] वंशशलाकाऽपि

कृष्णमित्रटीका :- क्ष्वेडा सिंहनादोऽपि[5]॥

हिन्दी अर्थ :- क्ष्वेडा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम वंश की सलाई और विष का है। विष का वाची (पुल्लिङ्ग) है।

नाडी[6] कालेऽपि षट्क्षणे॥४३॥

कृष्णमित्रटीका :- षड्भिः क्षणैरुपलक्षिते काले॥४३॥

हिन्दी अर्थ :- नाडी- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम नाल का और छः क्षणपरिमित काल का अर्थात् घड़ी का है॥४३॥

काण्डो[7] ऽस्त्री दण्डवाणार्ववर्गावसरवारिषु।

1. **Gudah** mas. means (a) a giobe or ball and (b) a molasses. 2. **Vyadah** mas. means (a) a stick and (b) a carnivorous animal, as tiger. 3. **Ida- la** f. mean (a) a cow (b) the earth and (c) speech. 4. **Ksveda** f. means (a) a bamboo peg and (b) the roaring of a lion. 5. M. सिंहनादोपि, 6. **Nadi** f. means (a) a period of time (b) any tubular organ of the body and (c) the tubular stalk of any plant. 7. **Kandah mas.**, n. means (a) a stick, staff (b) an arrow (c) vile, bad (d) a chapter or division of any book (e) opportunity and (f) water.

कृष्णमित्रटीका :- दण्डो नालं यवादेः। अर्वः कुत्सितम्, यथा-काण्डपृष्ठः। वर्गो यथा- बालकाण्डम्॥

हिन्दी अर्थ :- कांड- यह एक नाम दंड, बाण, घोडा, वर्ग, अवसर, और पानी का है और (पुल्लिङ्ग नपुसंकलिङ्ग) है।

स्याद् भाण्ड[1] मश्वाभरणेऽमत्रे मूलवणिग्धने॥४४॥

इति डान्ताः।

कृष्णमित्रटीका :- अश्वस्याभरणमायानं पर्याणादि च। अमत्रं पात्रम्। मूलं क्रय्यं वणिजो धनं यथा- भाण्डपतिः॥ (इति डान्ताः)।

हिन्दी अर्थ :- भांड- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम घोड़े के भूषण, पात्र, मूलरूप वैश्य के धन का है।

यहाँ डकरान्त शब्द समाप्त हुए॥४४॥

भृशप्रतिज्ञयोर्वाढम्[2]

कृष्णमित्रटीका :- प्रतिज्ञानेऽङ्गीकारे[3]।

हिन्दी अर्थ :- बाढ- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम अत्यंत और प्रतिज्ञा का है।

प्रगाढं[4] भृशकृच्छ्रयोः।

शक्तस्थूलौ त्रिषु दृढौ[5]

कृष्णमित्रटीका :- 'दृढः स्थूलबलयोः' (७. २. २०)॥

हिन्दी अर्थ :- प्रगाढ- यह एक नपुसंकलिङ्ग नाम अत्यंत का और दुःख का है। दृढ- यह एक त्रिलिङ्ग नाम समर्थ और स्थूल का है।

व्यूढो[6] विन्यस्तसंहतौ॥४५॥

इति ढान्ताः।

कृष्णमित्रटीका :- विन्यस्तं रचितम्। यथा- 'व्यूढां द्रुपदपुत्रेण' (गीता. १. ३)। संहतो घनो यथा- 'व्यूढोरस्कः' (रघुवंश १. १३)॥४५॥ (इति ढान्ताः)।

हिन्दी अर्थ :- व्यूढ- यह एक त्रिलिङ्ग नाम धरोहर का और समूह का है॥४५॥

यहाँ ढकारान्त शब्द समाप्त हुए॥

1. **Bhandam n.** means (a) decoration of a horse (b) the capital and (c) a pot. 2. **Vadham n.**, ind (a) very much and (b) acceptance. 3. M. प्रतिज्ञानेङ्गीकारे 4. **Pragadham n.** means (a) excessiveness and (b) penance. 5. **Drdhah all g.** means (a) mighty, powerful (b) fat, strong and (c) firm. 6. **Vyudhah all g.** means (a) arranged and (b) closely joned or allied.

भ्रूणोऽर्भके[1] स्त्रैणगर्भे

कृष्णमित्रटीका :- अर्भको बालः। स्त्रैकगर्भे स्त्रीगर्भे॥

हिन्दी अर्थ :- भ्रूण- यह एक पुल्लिङ्ग नाम बालक और स्त्री के गर्भ का है।

बाणो[2] बलिसुते शरे।

कृष्णमित्रटीका :- बलिसुतो बाणासुरः।

हिन्दी अर्थ :- बाण- यह एक पुल्लिङ्ग नाम बलि के पुत्र और शर का है।

कणो[3] ऽतिसूक्ष्मे धान्यांशे

कृष्णमित्रटीका :- धान्यस्यांशः कणिका।

हिन्दी अर्थ :- कण- यह एक पुल्लिङ्ग नाम अत्यंत छोटे और अन्न के अंश का है।

संघाते प्रमथे गणः[4]॥४६॥

पणो[5] द्यूतादिषूत्सृष्टे भृतौ मूल्ये धनेऽपि च।

कृष्णमित्रटीका :- द्यूतादावुत्सृष्टं जय्यत्वे स्थापितम्। भृतिर्वेतनम्।

हिन्दी अर्थ :- गण- यह एक पुल्लिङ्ग नाम समूह का और महादेव के गण का है॥४६॥ पण- यह एक पुल्लिङ्ग नाम जूआ आदि की बाजी, वेतन, मोल, धन और खरीदने के योग्य शाक आदि का है।

मौर्व्यां द्रव्याश्रिते सत्त्वशुक्लसंध्यादिके[6] गुणः[7]॥४७॥

कृष्णमित्रटीका :- मौर्वी ज्या। द्रव्याश्रितं घटादौ रूपादि आत्मादौ बुद्ध्यादि च। सत्त्वादीनि सत्त्वरजस्तमांसि। शुक्लादि शौर्योदार्यादि। संध्यादि संधिर्ना विग्रहोयानमित्यादि॥४७॥

1. **Bhrunah mas.** means (a) a child, boy and (b) an embryo. 2. **Banah mas.** means (a) the son of Bali, Banasura and (b) an arrow. 3. **Kanah mas.** means (a) a very small quantity and (b) an atom or particle of grain 4. **Ganah mas.** means (a) a flock, multitude or group and (b) attendants on Siva. 5. **Panah mas.** means (a) the money or thing staked in gambling (b) wages, hire (c) price and (d) wealth, property. 6. B. स्तर्शैरुध्यादिके, 7. **Gunah mas.** means (a) the bow string (b) a quality or property of all substances. One of the seven categories or **padatrhas** of the Vais'esikes (c) the gunas known as **sattva, rajas** and **tamas** (d) a good quality and (e) the peace and other five expedients to be used by a king in foreign politics.

हिन्दी अर्थ :- गुण- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम धनुष की डोरी, रस गंध आदि, सत्व, रज, तम, चतुराई और संधि व विग्रह आदि का है॥४७॥

निर्व्यापारस्थितौ कालविशेषोत्सवयोः[1] क्षणः॥

कृष्णमित्रटीका :- निर्व्यापारस्थितौ यथा- 'क्षणो नास्ति रहो नास्ति' (पञ्चतन्त्र)। कालविशेषो नाडीषष्ठांशः। उत्सवे यथा- 'क्षणे रक्ष्याः कुलस्त्रियः'।

हिन्दी अर्थ :- क्षण- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम चुप चाप रहना, कालविशेष और उत्सव का है।

वर्णो[2] द्विजादौ शुक्लादौ स्तुतौ वर्णं तु चाक्षरे॥४८॥

कृष्णमित्रटीका :- शुक्लादौ रूपे। चाक्षरे पुंसि॥४८॥

हिन्दी अर्थ :- वर्ण- यह एक पुल्लिङ्ग नाम ब्राह्मण आदि वर्ण, सफेद आदि रंग, स्तुति और अक्षर का वाची (पुल्लिङ्ग नपुसंकलिङ्ग) है।

अरुणोः[3] भास्करेऽपि स्याद्वर्णभेदेऽपि च त्रिषु।
स्थाणुः[4] शर्वऽपि च

कृष्णमित्रटीका :- शर्वो हरः। अपि शब्दाद् वृक्षेऽपि॥

हिन्दी अर्थ :- अरुण- यह एक पुल्लिङ्ग नाम सूर्य का और अपि शब्द से सूर्य के सारथि का है। कपिल वर्ण, संध्या के राग का वाचक (त्रिलिङ्ग) है। स्थाणु- यह एक पुल्लिङ्ग नाम महादेव का और स्तंभ आदि का है।

द्रोणः[5] काकेऽप्यथ[6] रवे रणः[7]॥४९॥

कृष्णमित्रटीका :- रवे शब्दे॥४९॥

हिन्दी अर्थ :- द्रोण- यह एक पुल्लिङ्ग नाम द्रोणाचार्य, तोलविशेष और काक का है। रण- यह एक पुल्लिङ्ग नाम युद्ध का और शब्द का है॥४९॥

1. **Ksanah mas.** means (a) an actionless state (b) a measure of time and (c) a festival, Joy or delight. 2. **Varnah mas.** means (a) a caste (b) a colour and (c) a prayer varnam n. means a word or syllable. 3. **Arunah mas.** means (a) the sun and (b) the charioteer of the sun; and arunah all g. means the red colour. 4. **Sthanuh mas.** means (a) Siva and (b) a post pillar. 5. **Dronah mas.** means (a) Dronacarya (b) a measure and (c) a crow. 6. B. काकेपि च, 7. **Ranah mas.** means (a) war, battle and (b) noise or sound.

ग्रामणी[1] र्नापिते पुंसि श्रेष्ठे ग्रामाधिपे त्रिषु।

कृष्णमित्रटीका :- ग्रामः खेटको वृन्दं च।

हिन्दी अर्थ :- ग्रामणी- यह एक नाम नाई का वाची (पुल्लिङ्ग) है। अत्यंत उत्तम और ग्राम के मालिक का वाची (त्रिलिङ्ग) है।

ऊर्णा[2] मेषादिलोम्नि स्यादावर्ते चान्तरा भ्रुवौ॥५०॥

कृष्णमित्रटीका :- आवर्तश्चक्रवर्तिचिह्नं (यथा)- 'ऊर्णेयमन्तभ्रुवोः'। 'अन्तरा-' (२.३.४) इति द्वितीया॥५०॥

हिन्दी अर्थ :- ऊर्णा- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम भेड़ आदि के रोम, और भृकुटियों के घेर का है॥५०॥

हरिणी[3] स्यान्मृगी हेमप्रतिमा हरिता च या।

कृष्णमित्रटीका :- हेम्नः प्रतिमा॥

हिन्दी अर्थ :- हरिणी- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम मृगी, सोने की मूर्ति, और हरे वर्णवाली का है।

त्रिषु पाण्डौ च हरिणः[4] स्थूणा[5] स्तम्भेऽपि वेश्मनः॥५१॥

कृष्णमित्रटीका :- स्थूणा लौही प्रतिमा॥

हिन्दी अर्थ :- स्थूणा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम मकान के स्तंभ और लोहे की प्रतिमा का है॥५१॥

तृष्णे स्पृहापिपासा द्वे[6]
जुगुप्साकरुणे घृणे[7]।
वणिक्पथे च विपणिः[8]

कृष्णमित्रटीका :- वणिक्पथो हट्टः॥

हिन्दी अर्थ :- तृष्णा- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम इच्छा का और तृषा का है। घृणा- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम निन्दा का और दया का है। विपणि- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम बाजार की गली और दुकान का है।

1. **Gramani mas.** a barber; and **gramani all g.** means (a) a chief and (b) a leader or the chief of a village. 2. **Urna f.** means (a) wool and (b) a circle of hair between the eye-brows. 3. **Harini f.** means (a) a female deer (b) a golden image and (c) a greenish thing. 4. **Harinah all g.** means (a) yellowish white and (b) a deer. 5. **Sthuna f.** means (a) the post or pillar of a house (b) an iron image and (c) anvil. 6. **Trsna f.** means (a) desire and (b) thirst. 7. **Ghrna f.** means (a) disgust and (b) Compassion. 8. **Vipanih f.** means (a) market, market place and (b) anything for sale.

सुरा प्रत्यक् च वारुणी[1] ॥५२॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रत्यक् प्रतीचा (ची) दिक् सा हि वरुणस्य ॥५२॥

हिन्दी अर्थ :- वारुणी- यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम मदिरा का और पश्चिम दिशा का है ॥५२॥

करेणु[2] रिभ्यां स्त्री नेभे

कृष्णमित्रटीका :- इभी इस्तिनी। इभे तु ना पुमान्॥

हिन्दी अर्थ :- करेणु- यह एक नाम हथिनी वाची (स्त्रीलिङ्ग) और हाथी वाची (पुल्लिङ्ग) है।

द्रविणं[3] तु बलं धनम्।

शरणं[4] गृहरक्षित्रोः श्रीपर्णं[5] कमलेऽपि च ॥५३॥

कृष्णमित्रटीका :- श्रीपर्णमग्निमन्थोऽपि[6] ॥५३॥

हिन्दी अर्थ :- द्रविण- यह एक (पुल्लिङ्ग नपुसंकलिङ्ग) नाम बल का और धन का है॥ शरणं- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम घर का और रक्षा करने वाले का है। श्रीपर्ण- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम कमल का और अरनी का है।

विषाभिमरलोहेषु तीक्ष्णं[7] क्लीबे खरे त्रिषु।

कृष्णमित्रटीका :- अभिमरो मरकं युद्धं च॥

हिन्दी अर्थ :- तीक्ष्ण- यह एक नाम विष, युद्ध, लोहा का (नपुसंकलिङ्ग) है और तीक्ष्ण का वाची (त्रिलिङ्ग) है।

प्रमाणं[8] हेतुमर्यादा शास्त्रेयत्ता प्रमातृषु ॥५४॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रमीयतेऽनेन[9]। प्रति हेतुः धूमादिः। मर्यादाऽवधिः[10]। इयत्ता परिच्छेदः, यथा कियत्प्रमाणं जलम्। प्रमाता यथा- अत्रार्थे प्रभुः प्रमाणम् ॥५४॥

हिन्दी अर्थ :- प्रमाण- यह एक नपुसंकलिङ्ग नाम हेतु, मर्यादा, शास्त्र, परिच्छेद, तथा ज्ञाता का है ॥५४॥

करणं[1] साधकतमं क्षेत्रगात्रेन्द्रियेष्वपि।

प्राण्युत्पादे संसरणं[2] मसंबाधचमूगतौ ॥५५॥

घण्टापथे

कृष्णमित्रटीका :- प्राण्युत्पादो जीवभावः संसाराख्यः। असंबाधेनासंकटेन सेनागमने ॥५५॥ घण्टापथः पुरः समीपे विश्रामभूमिरुपनिष्कराख्या॥

हिन्दी अर्थ :- करण- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम क्रिया की सिद्धि में प्रकृष्ट कारण का है और क्षेत्र, अंग, इन्द्रिय का भी है। संसरण- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम प्राणियों के जन्म, निर्बाध सेना के गमन चौहट का है ॥५५॥

अथ वान्तान्ने समुद्धरणं[3] मुन्नये॥

कृष्णमित्रटीका :- समुद्धियते यत्। उन्नयः ऊर्ध्वं नयनम्, कूपादिभ्यो जलादेः।

हिन्दी अर्थ :- समुद्धिरण- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम उल्टी किये अन्न और जल के पात्र आदि को ऊपर लाने का है। इससे आगे वक्ष्यमाण शब्द (त्रिलिङ्ग) हैं।

स्वतस्त्रिषु विषाणं[4] स्यात्पशुशृङ्गेभदन्तयोः ॥५६॥

कृष्णमित्रटीका :- स्वतो न तु वाच्यलिङ्गतया ॥५६॥

हिन्दी अर्थ :- विषाण- यह एक नाम पशु के सींग और हाथी के दंत का है ॥५६॥

प्रवणं[5] क्रमनिम्नोर्व्यां प्रह्वे ना तु चतुष्पथे।

कृष्णमित्रटीका :- निम्ना उर्वी भूस्तत्र यथा- श्राद्धे दक्षिणप्रवणाभूः। प्रह्वो नम्रः, यथा- भक्तिप्रवणः। चतुष्पथे, प्रवर्तनेन प्रवणः।

हिन्दी अर्थ :- प्रवण- यह एक नाम क्रम से नीची पृथ्वी, (नपुसंकलिङ्ग) है और चौराहे का वाचक (पुल्लिङ्ग) है।

---

1. **Varuni f.** means (a) any spiritious liquor and (b) the west. 2. **Karenuh f.** means a female elephant; **karenuh mas.** means an elephant. 3 **Dravinam n.** means (a) strengh, power and (b) wealth. property. 4. **S'aranam n.** means (a) a house and (b) a protector. 5. **S'riparnam n.** means (a) a lotus and (b) the wood producing fire by friction. 6. M. श्रीपर्णमग्निमन्थोपि, 7. **Tiksnam n.** means (a) poison (b) war (c) death and (d) iron, and tiksnam all g. means sharp. 8. **Pramanam n.** means (a) Cause, reason (b) limit (c) scripture (d) extent or magnitude (e) one whose word is authority and (f) means of certain knowledge.9. M. प्रमीयतेनेन, 10. M. मर्यादावधिः।

1. **Karanam n.** means (a) an instrument or means of an action (b) a field (c) the body and (d) an organ of sense. 2. **Sansaranam n.** means (a) the birth of worldly being (b) the unresisted march of troops and (c) a highway 3. **Samuddharanam n.** means (a) the vomited food and (b) drawing or lifting out. 4. **Visanam all g.** means (a) a horn and (b) the tusk of an elephant. 5. **Pravanam all g.** means (a) steep and (b) modestly humble or submissive and pravanah mas. means a place where four roads meet.

संकीर्णौ[1] निचिताशुद्धौ

कृष्णमित्रटीका :- निचितं व्याप्तम्। अशुद्धं यतो मिश्रीभवति।

हिन्दी अर्थ :- संकीर्ण- यह एक नाम व्यापक और अशुद्ध का है।

ईरिणं[2] शून्यमूषरम् ॥५७॥

इति णान्ताः।

कृष्णमित्रटीका :- शून्यं निराश्रयो देशः ॥५७॥ (इति णान्ताः)।

हिन्दी अर्थ :- इरिण- यह एक नाम शून्य का और ऊषर पृथ्वी का है ॥५७॥ वरण- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम पुल, वेणी, नदी का भेद और बालों के समूह का है॥

यहाँ णकारान्त शब्द समाप्त हुए॥

देवसूर्यौ विवस्वन्तौ[3]

कृष्णमित्रटीका :- विवस्तेजोऽस्यास्ति[4]॥

हिन्दी अर्थ :- विवस्वत् (तान्त)- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम देवता और सूर्य का है।

सरस्वन्तौ[5] नदार्णवौ।

पक्षितार्क्ष्यौ गरुत्मन्तौ[6] शकुन्तौ[7] भासपक्षिणौ॥५८॥

कृष्णमित्रटीका :- 'भासो भासि समाख्यातो गोष्टकुक्कुटगृध्रयोः' इति विश्वः (१७४.२)॥५८॥

हिन्दी अर्थ :- सरस्वत् (मत्वन्त)- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम पक्षी और गरुड का है। शकुंत- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम गीध और पक्षी का है॥५८॥

अग्न्युत्पातौ धूमकेतू[8] जीमूतौ[9] मेघपर्वतौ।
हस्तौ[10] तु पाणिनक्षत्रे मरुतौ[11] पवनामरौ॥५९॥

कृष्णमित्रटीका :- धूमः केतुर्लिङ्गमस्य। धूमप्रधानश्च केतुः॥५९॥

1. **Sankirnah all g.** means (a) spread and (b) mixed or impure. 2. **Irinam n.** means (a) a desert and (b) barren soil 3. **Vivasvat mas.** means (a) a god and (b) the sun. 4. M. विवस्तेजोस्यास्ति 5. **Sarasvat mas.** means (a) a male river as Sonabhadra and (b) the ocean. 6. **Garutmat mas.** means (a) a bird and (b) Garuda. 7. **Sakuntah mas.** means (a) the blue jay and (b) a bird in general. 8. **Dhumketuh mas.** means (a) fire and (b) a comet. 9. **Jimutah mas.** means (a) a Cloud and (b) a mountain. 10. **Hastah mas.** means (a) the hand and (b) the star so named. 11. **Marutah mas.** means (a) the wind and (b) a god.

हिन्दी अर्थ :- धूमकेतु- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम अग्नि और उत्पात का है। जीमूत- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम मेघ और पर्वत का है। हस्त- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम हाथ और हस्त नक्षत्र का है। मरुत्- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम पवन और देवता का है॥५९॥

यान्ता[1] हस्तिपके सूते

कृष्णमित्रटीका :- सूतः सारथिः।

हिन्दी अर्थ :- यन्तृ (ऋकारान्त)- यह एक नाम महावत और सारथी का है।

भर्ता[2] धातरि पोष्टरि।

कृष्णमित्रटीका :- दधातीति धाता। यज्ञस्य भर्ता। पोष्टा रक्षकः। स्त्रिया भर्ता॥

हिन्दी अर्थ :- भर्तृ (ऋकारान्त पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम धारक और मालिक का है।

यानपात्रे शिशौ पोतः[3]

कृष्णमित्रटीका :- 'पोतः शिशौ वहित्रे च गृहस्थाने च वाससि' (मेदिनी, ५६. ३८)॥

हिन्दी अर्थ :- पोत- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम यान के पात्र अर्थात् डूंगी आदि और बालक का है।

प्रेतः[4] प्राण्यन्तरे मृते॥६०॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रकर्षेण इतः। प्राण्यन्तरं नारकम्॥६०॥

हिन्दी अर्थ :- प्रेत- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम भूत और मरे हुए का है॥६०॥

ग्रहभेदे ध्वजे केतुः[5]

कृष्णमित्रटीका :- ग्रहभेदो केतुनामैव॥

हिन्दी अर्थ :- केतु- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम केतु ग्रह और ध्वजा का है।

पार्थिवे तनये सुतः[6]।

कृष्णमित्रटीका :- 'षु प्रसवैश्वर्ययोः (अ. प. से.)। सुतो राजा॥,

1. **Yanta mas.** means (a) the driver of an elephnat and (b) a charioteer 2. **Bharta mas.** means (a) Brahma (b) a protector, supportr and (c) husband. 3. **Potah mas.** means (a) a ship and (b) the young of any animal 4. **Pretah mas.** means (a) a ghost, veil spirit and (b) the depatred spirit. 5. **Ketuh mas.** means (a) the ninth planet, Ketu and (b) a flag, banner. 6. **Sutah mas.** means (a) a king and (b) a son.

हिन्दी अर्थ :- सुत- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम राजा और पुत्र का है।

स्थपतिः[1] कारुभेदेऽपि

कृष्णमित्रटीका :- कारुविशेषो मुख्यतक्षा। अपिना कञ्चुकी यज्वा च॥

हिन्दी अर्थ :- स्थपति- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम शिल्पी का और जीवेष्टि यज्ञ को करने वाले का भी है।

भूभृद्[2] भूमिधरे नृपे॥६१॥

कृष्णमित्रटीका :- भूभृद्धारणात्पोषणाच्च॥६१॥

हिन्दी अर्थ :- भूभृत्- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम पर्वत और राजा का है॥६१॥

मूर्धाभिषिक्तो[3] भूपेऽपि

कृष्णमित्रटीका :- मूर्धाभिषिक्तो[4] मुख्योऽपि॥

हिन्दी अर्थ :- मूर्धाभिषिक्त- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम राजा और प्रधान का भी है।

ऋतुः[5] स्त्रीकुसुमेऽपि च।

कृष्णमित्रटीका :- ऋतुः स्त्रीणां रजो वसन्तादिश्च॥

हिन्दी अर्थ :- ऋतु- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम स्त्री को के रजोधर्म और हेमंत आदि ऋतुओं का है।

विष्णावप्यजिता[6] व्यक्तौ[7]

कृष्णमित्रटीका :- अजितो बुद्धो जयहीनश्च। अव्यक्तोऽस्फुटोऽपि[8]।

हिन्दी अर्थ :- १. अजित, २. अव्यक्त- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम विष्णु और महादेव के हैं।

सूतः[9] त्वष्टरि सारथौ॥६२॥

1. **Sthapatih mas.** means (a) a master carpenter (b) an attendant on the women's apartment and (c) one who offers a sacrifice to Brhaspati 2. **Bhubhrt mas.** means (a) a mountain and (b) a king. 3. **Murdhabhisiktah mas.** means (a) a king (consectated) (b) a man of Ksatriya caste and (c) a minister. 4. M. मुख्योपि, 5. **Rtuh mas.** means (a) a season and (b) menstrual discharge. 6. **Ajitah mas.** means (a) Visnu and (b) Siva and ajitah all g means unconquered. 7. **Avyaktah mas.** means (a) Visnu and (b) Siva avyaktam n. means (a) the primordial principle as mahat & c. and (b) Soul and avyaktam all g. means indistinct. 8. M. अव्यक्तोस्फुटोपि 9. **Sutah mas.** means (a) a carpenter and (b) a charioteer.

कृष्णमित्रटीका :- त्वष्टा रथकारः॥

हिन्दी अर्थ :- सूत- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम खाती और सारथी का है॥६२॥

व्यक्तः[1] प्राज्ञेऽपि

कृष्णमित्रटीका :- व्यक्तो निश्चितोऽपि[2]॥

हिन्दी अर्थ :- व्यक्त- यह एक (त्रिलिङ्ग) नाम पंडित और स्फुट का है।

दृष्टान्तौ[3] उभे शास्त्रनिदर्शने।

क्षत्ता[4] स्यात्सारथौ द्वाः स्थे क्षत्रियायां च शूद्रजे॥६३॥

कृष्णमित्रटीका :- दृष्टोऽन्तो[5] निश्चयोऽस्य[6]। निदर्शनमुदाहरणम्॥६३॥

हिन्दी अर्थ :- दृष्टांत- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम न्याय आदि शास्त्र का और उदाहरण का है। क्षत्तृ (ऋकारान्त पुल्लिङ्ग)- यह एक नाम सारथी, द्वारपाल और क्षत्रिय की स्त्री में शूद्र से उत्पन्न बालक का है॥६३॥

वृत्तान्तः[7] स्यात्प्रकरणे प्रकारे कार्त्स्न्यवार्तयोः।

कृष्णमित्रटीका :- वृत्तोऽन्तोऽस्य[8]। प्रकरणं प्रक्रिया। प्रकारो विशेषः वार्ता जनश्रुतिः॥

हिन्दी अर्थ :- वृत्तान्त- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम प्रकरण, प्रकार, समग्रता और वार्त्ता का है।

आनर्तः[9] समरे नृत्त (त्य स्थाननीवृद्धिशेषयोः)॥६४॥

कृष्णमित्रटीका :- आनृत्यन्त्यत्र। नीवृद्धिशेषो जनपदः॥६४॥

हिन्दी अर्थ :- आनर्त- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम युद्ध, नाचने का स्थान, तथा द्वारकापुर का है॥६४॥

कृतान्तो[10] यमसिद्धान्तदैवाकुशलकर्मसु।

1. **Vyaktah mas.** means (a) a wise or learned man and (b) clear, distinet. 2. M. निश्चितोपि. 3. **Drstantah mas.** means (a) a s'astra or science and (b) an example. illustration. 4. **Ksatta mas.** means (a) a Charioteer (b) a door-keeper and (c) a man born of Sudra man and Ksatriya woman. 5. M. दृष्टोन्तो 6. M. निश्चयोस्य 7. **Vrttantah mas.** means (a) an event or occurrenc (b) practice, mode of life (c) Completeness and (d) news, tidings. 8. M. वृत्तान्तोस्य, 9. **Anartah mas.** means (a) war (b) a dancing-half and (c) a country. 10. **Krtantah mas.** means (a) Yama the god of death (b) a demonstrated conclusion, dogma (c) fate, destiny and (d) a sinful or inauspicious action.

कृष्णमित्रटीका :- कृतः अन्तोऽनेनास्य[1] वा॥

हिन्दी अर्थ :- कृतान्त- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम धर्मराज, सिद्धान्त, प्राक्तन कर्म, और पाप का है।

श्लेष्मादिरस्थिरक्तादि[2] महाभूतानि तद्गुणाः॥६५॥
इन्द्रियाण्यश्मविकृतिः शब्दयोनिश्च धातवः[3]॥

कृष्णमित्रटीका :- श्लेष्मादि वातपित्त (त्ते)। अस्थ्यादिरस्थिमज्जामांसादिः। रक्तादिः रक्तशुक्ररसादिः। महाभूतानि पृथिव्यादीनि। तद्गुणा गन्धादयः॥६५॥ अश्मविकृतिर्हरितालादिः। शब्दयोनिः पचपठादिः॥

हिन्दी अर्थ :- धातु- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम कफ आदि, रस रक्त आदि, पृथ्वी पानी अग्नि वायु आकाश- इन के गंध आदि गुण, आँख आदि इन्द्रियाँ, अश्मविकृतिः आदि, और शब्दयोनि का है॥६५॥

कक्षान्तरेऽपि शुद्धान्तौ[4] नृपस्यासर्वगोचरे॥६६॥

कृष्णमित्रटीका :- 'नृपस्य' इति पूर्वस्यैव विशेषणम्। कक्षान्तरे राजधानीस्थानविशेषे वासगृहाख्ये। अपिना राजदारेषु शुद्धः अन्तोऽस्य[5]॥६६॥

हिन्दी अर्थ :- शुद्धान्त- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम स्थान के भीतर की कक्षा, राजधानी विशेष, रनिवास और आशौच के अन्त का है॥६६॥

कासूसामर्थ्ययोः शक्तिः[6] मूर्त्तिः[7] काठिन्यकाययोः।
विस्तारवल्लोर्व्रततिः[8] वसती[9] रात्रिवेश्मनोः॥६७॥

कृष्णमित्रटीका :- कासू शक्त्याख्यं शस्त्रम्॥६७॥

हिन्दी अर्थ :- शक्ति- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम बरछी का और सामर्थ्य का है। आगे के वार्त्ताशब्द तक सभी शब्द (स्त्रीलिङ्ग) हैं। मूर्ति- यह एक नाम कठिनाई का और शरीर का है। व्रतति- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम विस्तार का और वेल है। वसति यह एक नाम रात्रि और मकान का है।

क्षयार्चयोरपचितिः[1]

कृष्णमित्रटीका :- चिञः क्तिन् (३. ३. ९४)। 'चायृ पूजादौ च' (भ्वा. उ. से.)। 'चायः चिः-' (वा. ७. ३. २०)॥

हिन्दी अर्थ :- अपचिति- यह एक नाम क्षय और पूजा का है।

सातिर्[2]दानावसानयोः।

कृष्णमित्रटीका :- 'षणु दाने' (त. उ. से.)॥

हिन्दी अर्थ :- साति- यह एक नाम दान का अन्त का है।

अर्तिः[3] पीडाधनुष्कोट्योर्जातिः[4] सामान्यजन्मनोः॥६८॥

कृष्णमित्रटीका :- 'जनसन-' (६. ४. ४२) इत्यात्वम्, स्यतेश्च क्तिन्॥६८॥

हिन्दी अर्थ :- आर्त्ति- यह एक नाम पीडा और धनुष की कोटि का है। जाति यह एक नाम सामान्य और जन्म का है॥६८॥

प्रचारस्यन्दयो रीतिः[5]

कृष्णमित्रटीका :- प्रचारः शैली। 'री गतौ' (क्र्या. प. से.)। 'रीङ् स्रवणे' (दि. आ. अ.)॥

हिन्दी अर्थ :- रीति- यह एक नाम प्रचार का और झरने का है।

ईति[6] र्डिम्बप्रवासयोः॥

कृष्णमित्रटीका :- डिम्ब उपद्रवः अतिवृष्ट्यादयः सप्त इति यः॥

हिन्दी अर्थ :- ईति- यह एक नाम विप्लव अर्थात् अतिवृष्टि आदि और प्रवास का है।

उदयेऽधिगमे प्राप्तिः[7]

---

1. M. अन्तोनेनास्य, 2. B. श्लेष्मादिरसरक्तादि, 3. **Dhatuh mas.** means (a) an essential ingredient of the body (b) any of the five elements i. e. **prthivi, ap, tejas, vayu** and akasa (c) any one of the properties of these elements (d) a sense-organ (e) a mineral, metal and (f) a verbal root 4. **S'uddhantah mas.** means (i) harem and (b) a pure-hearted man. 5. M. अन्तोस्य 6. **S'aktih f.** means (a) a missile and (b) power, ability, strength. 7. **Murtih f.** means (a) solidity, hardness and (b) the body. 8. **Vratatih f.** means (a) extension, expansion and (b) a creeper. 9. **Vasatih [ti] f.** means (a) the night and (b) a house, residence.

1. **Apacitih f.** means (a) decline, loss and (b) worship 2. **Satih f.** means (a) a gift or donation and (b) end. conclusion. 3. **Artih f.** means (a) pain and (b) the end of a low. 4. **Jatih f.** means (a) a universal and (b) birth, production. 5. **Ritih. f.** means (a) usage, custom, practice (b) flowing and (c) style, diction. 6. **Itih f.** means (a) a calamity and (b) dwelling in a foreign place. 7. **Praptih f.** means (a) rise; production and (b) attainment, acquisition.

कृष्णमित्रटीका :- उदयो लाभः। अधिगम आसादन (म्)॥

हिन्दी अर्थ :- प्राप्ति- यह एक नाम उदय और लाभ का है।

त्रेता[1] त्वग्नित्रये युगे ॥६९॥

वीणाभेदेऽपि महती[2]

कृष्णमित्रटीका :- शततन्त्री वीण, महती॥

हिन्दी अर्थ :- त्रेता- यह एक नाम तीनों अग्नि और त्रेतायुग का है॥६९॥ महती- यह एक नाम नारद की वीणा और बड़े गुणों से युक्त स्त्री का है।

भूति[3]र्भत्मनि संपदि।

नदीनगयोर्नागानां भोगवती[4] अथ संगरे॥७०॥

कृष्णमित्रटीका :- भोगः, उपभोगः सर्पका-यश्चास्त्यस्याः, भोगवती नागपुरी।

हिन्दी अर्थ :- भूति- यह एक नाम भस्म और संपत् का है। भोगवती- यह एक नाम नदी और नागों की नगरी का है॥७०॥

सङ्गे सभायां समितिः[5]

कृष्णमित्रटीका :- समयनम्। सम्यगाग-च्छन्त्यस्यां वा।

हिन्दी अर्थ :- समिति- यह एक नाम युद्ध, संग, सभा का है।

क्षयवासावपि क्षितिः[6]॥

कृष्णमित्रटीका :- वासो निवासः। 'क्षि निवासादौ' (तु. प. अ.)॥

हिन्दी अर्थ :- क्षिति- यह एक नाम क्षय, वास, तथा पृथ्वी का है।

खेरर्चिश्च शस्त्रं च वह्निज्वाला च हेतयः[7]॥७१॥

कृष्णमित्रटीका :- शस्त्रमायुधम्॥७१॥

हिन्दी अर्थ :- हेति- यह एक नाम सूर्य की प्रभा, शस्त्र, तथा अग्नि की ज्वाला का है॥७१॥

जगती[1] जगतिच्छन्दोविशेषेऽपि क्षितावपि॥

कृष्णमित्रटीका :- जगति संसारे। छन्दो द्वादशाक्षरपादम्।

हिन्दी अर्थ :- जगती- यह एक नाम लोक, जगती छन्द और पृथ्वी का है।

पङ्क्ति[2]श्छन्दोऽपि दशमम्

कृष्णमित्रटीका :- दशमंदशाक्षरपादम्॥

हिन्दी अर्थ :- पंक्ति- यह एक नाम पंक्ति छन्द का और पंक्ति का है।

स्यात्प्रभावेऽपि चायतिः[3]॥७२॥

कृष्णमित्रटीका :- आयतिरागामिकालोऽपि॥७२॥

हिन्दी अर्थ :- आयति- यह एक नाम प्रभाव, उत्तरकाल और लंबाई का है॥७२॥

पत्ति[4] र्गतौ च

कृष्णमित्रटीका :- पत्तिः पदातौ च॥

हिन्दी अर्थ :- पत्ति- यह एक नाम गति और वीरभेद का है।

मूले तु पक्षतिः[5] पक्षभेदयोः॥

कृष्णमित्रटीका :- पक्षविशेषयोः मूलं प्रतिपदादिः।

हिन्दी अर्थ :- पक्षति- यह एक नाम पक्षकी आदि तिथि और पिच्छ के मूल का है।

प्रकृतिः[6] योनिलिङ्गे च

कृष्णमित्रटीका :- योनिरुपादानकारणम्। लिङ्गमव्यक्तं स्त्रीनपुंनपुंसकं च, यथा- 'तृतीयाप्रकृतिः षण्डः' (अ. को. २. ६. ३९)॥

हिन्दी अर्थ :- प्रकृति- यह एक नाम लिङ्ग और योनि का है।

---

1. **Treta f.** means (a) the triad of sacred fires and (b) the second Yuga. 2. **Mahati f.** means (a) the lute of Narada and (b) greatness 3. **Bhutih f.** means (a) ash (b) prosperity, wealth, riches and (c) decoration of an elephant. 4. **Bhogavat f.** means (a) the river of the lower world (b) the city of the Nagas inhabiting the lower world and (c) a snake. 5. **Samitih f.** means (a) war or battle (b) meeting, assembly and (c) association. 6. **Ksitih f.** means (a) destruction (b) a dwelling and (c) the earth. 7. **Hetih f.** means (a) a ray of the sun (b) flame and (c) a missile.

1. **Jagati f.** means (a) the world (b) a metre (c) the earth and (d) people. 2. **Panktih f.** means (a) a line, row (b) a metre and (c) the number 'ten' 3. **Ayatih f.** (a) majesty, dignity and (b) future time. 4. **Pattih f.** means (a) going (b) a foot-soldier and (c) a pedestran. 5. **Paksatih f.** means (a) the first day of a lunar fortnight and (b) the root of a wing. 6. **Prakrtih f.** means (a) the original or material cause and (b) the radical or crude form of a word.

कैशिक्याद्याश्च वृत्तयः[1] ॥७३॥

कृष्णमित्रटीका :- कैशिक्यारभट्याद्याः वृत्तयः जीविका च॥७३॥

हिन्दी अर्थ :- वृत्ति- यह एक नाम विश्वामित्र की बहन की बनाई कौशिकी नदी आरभटी आदि और जीविका आदि का है॥७३॥

सिकताः[2] स्युर्वालुकाऽपि

कृष्णमित्रटीका :- सिकताः सिकतिलदेशेऽपि[3]।

हिन्दी अर्थ :- सिकता- यह एक नाम बालू, वालुकामय प्रदेश, तथा शक्कर का है।

वेदे श्रवसि च श्रुतिः[4]।

कृष्णमित्रटीका :- श्रवः श्रोत्रम्।

हिन्दी अर्थ :- श्रुति- यह एक नाम वेद और कान का है।

वनिता[5] जनितात्यर्थानुरागायां च योषिति॥७४॥

कृष्णमित्रटीका :- वनिता स्त्रीमात्रम्। अत्यन्तानुरक्तयोषिति च॥७४॥

हिन्दी अर्थ :- वनिता- यह एक नाम बहुत प्यारी स्त्री का है॥७४॥

गुप्तिः[6] क्षितिव्युदासेऽपि

कृष्णमित्रटीका :- क्षितिव्युदासः भूगर्तः।

हिन्दी अर्थ :- गुप्ति- यह एक नाम पृथ्वी के छिद्र और रक्षा का है।

धृति[7] र्धारणधैर्ययोः।

बृहती[8] क्षुद्रावार्ताकी छन्दोभेदे महत्यपि॥७५॥

कृष्णमित्रटीका :- क्षुद्रवार्ताकी कण्टकारिका। छन्दोविशेषो नवाक्षरपादः॥७५॥

हिन्दी अर्थ :- धृति- यह एक नाम धारण और धैर्य्य का है। बृहती- यह एक नाम कटेलीविशेष, छंदोभेद और मोटी वस्तु का है॥७५॥

1. **Vrttih f.** means (a) any of the four styles in composition and (b) livelihood. 2. **Sikatah f.** means (a) sand and (b) sandy soil. 3. M. सिकतिलदेशेपि, 4. **S'rutih f.** means (a) the Vedas (b) the ear and (c) hearing 5. **Vanita f.** means (a) woman in general and (b) any beloved woman. 6. **Guptih f.** means (a) a hole in the ground (b) prison and (c) protection. 7. **Dhrtih f.** means (a) holding and (b) fortitude, courage. 8. **Brhati f.** means (a) variety of chenopodium (b) a mete and (c) great, high, tall.

वासिता[1] स्त्रीकरिण्योश्च

कृष्णमित्रटीका :- वास्यते॥

हिन्दी अर्थ :- वासिता- यह एक नाम स्त्री और हथिनी का है।

वार्ता[2] वृत्तौ जनश्रुतौ।

वार्तं फल्गुन्यरोगे च त्रिषु

कृष्णमित्रटीका :- वृत्तिः कृषिपाल्यादि। फल्गु तुच्छं, यथा- वार्तमेतत्।

हिन्दी अर्थ :- वार्त्ता- यह एक नाम वृत्ति और मनुष्यों की बात सुनने का है। यहाँ तक (स्त्रीलिङ्ग)हैं। वार्त्त- यह एक नाम असार वाची (नपुसंकलिङ्ग) है। रोगरहित वाची (त्रिलिङ्ग) है।

अप्सु च[3] घृतामृते॥७६॥

कृष्णमित्रटीका :- घृतं हविषि। अमृतं सुधायां च॥७६॥

हिन्दी अर्थ :- घृत- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम घी, और जल का है। अमृत- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम जल, घी, अमृत और यज्ञशेष का है॥७६॥

कलधौतं[4] रूप्यहेम्नोः

कृष्णमित्रटीका :- कलः कालिका धौताऽस्य[5]।

हिन्दी अर्थ :- कलधौत- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम चाँदी और सोने का है।

निमित्तं[6] हेतुलक्ष्मणोः।

कृष्णमित्रटीका :- हेतुः कारणम्। लक्ष्म नेत्रस्पन्दादि॥

हिन्दी अर्थ :- निमित्त- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम कारण और चिह्न का है।

श्रुतं[7] शास्त्रावधृतयोः

1. **Vasita f.** means (a) a woman and (b) a female elephant. 2. **Varta f.** means (a) talk (b) livelihood and (c) news; and **vartam** all g. means (a) unsubstantial or weak and (b) healthy, hale 3. **Ghrtam n.** means (a) ghee or clarified butter and (b) water Amrtam n. means (a) nectar (b) water (c) immortality and (d) unsolicited alms. 4. **Kaladhauttam n.** means (a) silver and (b) gold. 5. M. धौतास्य, 6. **Nimittam n.** means (a) a cause nad (b) any good or bad omen. 7. **S'rutam n.** means the Veda; and s'rutam all g. means heard.

कृष्णमित्रटीका :- अवधृतमाकर्णितम्।

हिन्दी अर्थ :- श्रुत- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम शास्त्र और निश्चय का है।

युगपर्याप्तयोः कृतम्[1] ॥७७॥

कृष्णमित्रटीका :- युगं सत्ययुगम्। पर्याप्तं यथा- कृतमतिविस्तरेण ॥७७॥

हिन्दी अर्थ :- कृत- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम सत्ययुग और पूर्णता का है ॥७७॥

अत्याहितं[2] महाभीतिः कर्म जीवानपेक्षि च।

कृष्णमित्रटीका :- जीवनानपेक्षि कर्म साहसाख्यम्।

हिन्दी अर्थ :- अत्याहित- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम बहुत भय और साहसकर्म का है।

युक्तेक्ष्मादावृते भूतं[3] प्राण्यतीते समे त्रिषु ॥७८॥

कृष्णमित्रटीका :- युक्ते यथा- यथाभूतवादी प्रामाणिकः स्यात्। क्ष्मादौ यथा- महाभूतानि।

हिन्दी अर्थ :- भूत यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम न्याय्य, पृथ्वी आदि पञ्चमहाभूत, सत्य, प्राणी, अतिक्रांत और समान का है तथा समान वाचक (त्रिलिङ्ग) है ॥७८॥ ऋतं सत्यं 'भूतमप्यनुवन्यस्तं हीयते व्यवहारतः' इति यथा। प्राणिनि यथा- भूतग्रामः। अतीते यथा- भूते लिट्। समस्तुल्यो यथा- सुहृद्भूतोऽयम्[4] ॥७८॥

वृत्तं[5] पद्ये चरित्रे त्रिष्वतीते दृढनिस्तले।

कृष्णमित्रटीका :- पद्यं पादबन्धः श्लोकादिः चरित्रं शीलम्। अतीते यथा- 'वृत्तोत्सवं पुरम्' (मुद्राराक्षस)। दृढे यथा- वृत्तदेहः स्नायुसारः। निस्तलं वर्तुलम्॥

हिन्दी अर्थ :- वृत्त- यह एक नाम श्लोक और चरित्र का वाचक (नपुसंकलिङ्ग) है। अतीत काल, दृढ और गोल का वाचक (त्रिलिङ्ग) है।

1. **S'rutam n.** means (a) the first of the four Yugas of the world and (b) enough. 2. **Atyahitam n.** means (a) a great calamity and (b) a daring deed. 3. **Bhutam n.** means (a) right, proper (b) the five elements and (c) true, a matter of fact; **bhutam all g.** means (a) a living being (b) past or gone (c) obtained and (d) like or similar 4. M. सुहृद्भूतोयम्, 5. **Vrttam n.** means (a) a verse and (b) Conduct, manner; vrttah all g. means (a) past gone (b) firm, fixed (c) round, circle and (d) studied.

महाद्राज्यं[1] चावगीतं[2] जन्ये स्याद्गर्हितं त्रिषु ॥७९॥

कृष्णमित्रटीका :- अवगीतं निन्दितम्। जननीयो जन्यः जनस्य जल्पा (ल्पो) वा ॥७९॥

हिन्दी अर्थ :- महत्- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम राज्य और बड़े का है। बड़े का वाची (त्रिलिङ्ग) है। अवगीत यह एक नाम जनों के अपवाद और निंदित का (त्रिलिङ्ग) है ॥७९॥

श्वेत[3] रूप्येऽपि रजतं[4] हेम्नि रूप्ये सिते त्रिषु।

कृष्णमित्रटीका :- रज्यते रजतम्॥

हिन्दी अर्थ :- श्वेत- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम चाँदी का और सफेद रंग का है। रजत- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम सोना और चाँदी का है। शुभ्र का वाची (त्रिलिङ्ग) है।

त्रिष्वितः

कृष्णमित्रटीका :- इतस्त्रिषु, वाच्यलिङ्गाः।

हिन्दी अर्थ :- इससे आगे तकारान्त शब्द (त्रिलिङ्ग) हैं।

जगदिङ्गेऽपि[5]

कृष्णमित्रटीका :- इङ्गे जङ्गमे।

हिन्दी अर्थ :- जगत्- यह एक नाम जंगम और लोक का है।

रक्तं[6] नील्यादि रागि च ॥८०॥

कृष्णमित्रटीका :- रागि अनुरक्तम् ॥८०॥

हिन्दी अर्थ :- रक्त- यह एक नाम नीले आदि से रंगे हुए और लालरंग का है ॥८०॥

अवदातः सिते[7] पीते शुद्धे बद्धार्जुनौ सितौ[8]।

1. **Mahat all g.** means great, and mahat n. means kingdom. 2. **Avagitam n.** means reproach and avagitam all g. means (a) reproached, censured and (b) wicked, vile. 3. **S'vetam n.** means silver, and s'vetam all g. means white or any white thing. 4. **Rajatam n.** means (a) gold and (b) silver, and rajatah all g. means whitish 5. **Jagat all g.** means moveable, jagat mas. means wind; and **jagat n.** means the world. 6. **Raktam n.** means (a) red colour (b) blood and (c) saffron, and **raktam all g.** means (a) affected with love and (b) coloured. 7. **Avadatah all g.** means (a) pure clear and (b) white or yellow colour. 8. **Sitah all g.** means (a) faste red, tied (b) finished, ended and (c) white.

कृष्णमित्रटीका :- अर्जुनः शुक्लः। 'षिञ् बन्धने' (स्वा. उ. अ.)॥

हिन्दी अर्थ :- अवदात- यह एक नाम सफेद, पीला, और शुद्ध का है। सित- यह एक नाम सफेद और बद्ध का है॥

युक्तेऽसित संस्कृते मर्षिण्यभिनीतः[1]

कृष्णमित्रटीका :- मर्षिण्यक्रोधे।

हिन्दी अर्थ :- अभिनीत- यह एक नाम योग्य, बहुत उत्तम, भूषित हुये और क्षमावाले का है।

अथ संस्कृतम्[2] **॥८१॥**

कृत्रिमे लक्षणोपेतेऽपि

कृष्णमित्रटीका :- लक्षणोपेतं प्रकृत्यादिविभागेन साधितम्।

हिन्दी अर्थ :- संस्कृत- यह एक नाम बनाये हुए घाट आदि और शास्त्र के लक्षण से युक्त का है।

अनन्तो[3] **ऽनवधावपि।**

ख्याते हृष्टे प्रतीतो[4] **ऽभिजातस्तु**[5] **कुलजे बुधे॥८२॥**

कृष्णमित्रटीका :- अनन्तो विष्णुर्नागश्च॥८२॥

हिन्दी अर्थ :- अनंत- यह एक नाम मर्यादा से रहित और शेषनाग का है। प्रतीत- यह एक नाम प्रसिद्ध और आनन्दित का है। अभिजात- यह एक नाम कुलीन और पंडित का है॥८२॥

विविक्तौ[6] **पूतविजनौ मूर्च्छितौ**[7] **मूढसोच्छ्रयौ।**

कृष्णमित्रटीका :- विविक्तौ रहः शुची॥

हिन्दी अर्थ :- विविक्त- यह एक नाम पवित्र और एकान्त का है। मूर्च्छित- यह एक नाम मूढ और वृद्धि से युक्त का है।

1. **Abhinitah all g.** means (a) highly refined, polished and (b) forgiving. 2. **Sanskrtam all g.** means (a) made perfect, refined (b) excellent and (c) adorned, decorated and **Sanskritam n.** means the refined language, Sanskrit. 3. **Anantah all g.** means ednless, **anantah mas.** means (a) Visnu and (b) Sesa, and **anantam n.** means sky 4. **Pratitah all g.** means (a) renowned (b) pleased and (c) recognised. 5. **Abhijatah all g.** means (a) a noble descent and (b) learned, wise. 6. **Viviktah all g.** means (a) pure (b) lonely and (c) judicious. 7. **Murchitah all g.** means (a) foolish (b) increased augmented and (c) fainted.

द्वौ चाम्लपरुषो शुक्तौ[1]

कृष्णमित्रटीका :- अम्लं चुक्रम्। परुषो नीरसः।

हिन्दी अर्थ :- शुक्त- यह एक नाम खट्टे का और कठोर का है।

शिती[2] **धवलमेचकौ॥८३॥**

कृष्णमित्रटीका :- मेचकः कृष्णः॥८३॥

हिन्दी अर्थ :- शिति- यह एक नाम सफेद और काले का है॥८३॥

सत्ये साधौ विद्यमाने प्रशस्तेऽभ्यर्हिते च सत्[3]**।**

कृष्णमित्रटीका :- अस्तेः (अ. प. से.) शतरि (३. २. १२४) सन्॥

हिन्दी अर्थ :- सत् (तान्त)- यह एक नाम सत्य, साधु, विद्यमान, बहुत उत्तम, और योग्य का है।

पुरस्कृतः[4] **पूजितेऽरात्यभियुक्तेऽग्रतः कृते॥८४॥**

कृष्णमित्रटीका :- अरातिनाऽभियुक्तोऽभिषेणितः॥८४॥

हिन्दी अर्थ :- पुरस्कृत- यह एक नाम पूजित, शत्रुओं से पीड़ित और आगे किये गये का है॥८४॥

निवाता[5] **वाश्रयावातौ शास्त्रयावातौ शास्त्राभेद्यं च वर्मयत्।**

कृष्णमित्रटीका :- निवायते गम्यते निवातः। निवृत्तो वातोऽत्र[6]। शस्त्राभेद्यं वर्म (यथा-) निवातकवचाः।

हिन्दी अर्थ :- निवात- यह एक नाम आश्रय और वात से रहित स्थान का है तथा जो शस्त्रों से नहीं कट सके उस कवच का भी है।

जातोन्नद्धप्रवृद्धाः स्युरुच्छ्रिताः[7]

कृष्णमित्रटीका :- ऊर्ध्वक उच्चकः।

हिन्दी अर्थ :- उच्छ्रित- यह एक नाम उत्पन्न, गर्वित, और प्रवृद्ध का है।

1. **Suktah all g.** means (a) acid, sour and (b) harsh, hard. 2. **Sitih all g.** means (a) white and (b) black. 3. **Sat all g.** means (a) real (b) good virtuous (c) existent (d) best, excellent (e) venerable, respectable and (f) wise, learned. 4. **Puraskrtah all g.** means (a) worshipped (b) attacked by an enemy (c) distinguished and (d) placed in front 5. **Nivatah all g.** means (a) a refuge (b) a place sheltered from the wind and (c) a strong armour. 6. M. वातोत्र, 7. **Ucchrtah all g.** means (a) born (b) raised lifted up and (c) high, tall.

उत्थितास्त्वमी[1] ॥८५॥

वृद्धिमत्प्रोद्यतोत्पन्नाः

कृष्णमित्रटीका :- जातादिषु त्रिषु अयम्॥८५॥ प्रोद्यत् सोद्यमः॥

हिन्दी अर्थ :- उत्थित- यह एक नाम वृद्धि युक्त, अधिक उद्यत और उत्पन्न का है॥८५॥

आदृतौ[2] सादरार्चितौ

इति तान्ताः।

अर्थो[3]ऽभिधेयरैवस्तुप्रयोजननिवृत्तिषु ॥८६॥

कृष्णमित्रटीका :- अभिधेयः शक्यार्थः। रै धनम्। वस्तु पदार्थः। निवृत्तौ यथा- मशकार्थोऽयं[4] धूमः॥८६॥

हिन्दी अर्थ :- आदृत- यह एक नाम आदरसहित और सत्कार किये हुए का है। **यहाँ तकारान्त और (त्रिलिङ्ग) शब्द समाप्त हुए।** अर्थ- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम वाच्य, धन, चीज, प्रयोजन और निवर्त्तन का है॥८६॥

निपानागमयोस्तीर्थं[5] मृषिजुष्टजलेगुरौ।

कृष्णमित्रटीका :- निपानं जलाशयः। आगमः शास्त्रम्। ऋषिभिर्जुष्टं सेवितम्।

हिन्दी अर्थ :- तीर्थ- यह एक (नपुसंकलिङ्ग) नाम कूप के पास का जलाशय, शास्त्र और मुनियों से सेवित किये जल तथा गुरु का है।

समर्थस्त्रिषु[6] शक्तिस्थे संबद्धार्थेहितेऽपि च॥८७॥

कृष्णमित्रटीका :- समर्थयते समर्थ्यते। संगतोऽर्थोऽस्य[7]। समर्थः॥८७॥

हिन्दी अर्थ :- समर्थ- यह एक नाम शक्तिवाला, संबंधयुक्त अर्थ, और हितकारी का है और (त्रिलिङ्ग) है॥८७॥

1. **Uthita all g.** means (a) raised or gone up (b) born, produced and (c) alive. 2. **Adrtah all g.** means (a) full of honour and (b) worsipped. 3. **Arthah mas.** means (a) a matter of message (b) wealth, riches (c) an object, thing (d) a purpose, aim and (e) prevention. 4. M. मशकार्थोय, 5. **Thrtham n.** means (a) a place of water (b) the scripture (c) the water used by sages and (d) a sacred preceptor or teacher 6. **Samatthah all g.** means (a) strong, powerful (b) connected in sense and (c) suitable; proper 7. M. संगतार्थोस्य.

दशमीस्थौ[1] क्षीणरागवृद्धौ

कृष्णमित्रटीका :- दशम्यां कामावस्थायाँ वयसि च तिष्ठति। क्षीणो रागेण।

हिन्दी अर्थ :- दशमीस्थ- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम क्षीण हुए रसवाले और अत्यंत बूढ़े का है।

वीथी[2] पदव्यपि॥

कृष्णमित्रटीका :- पदवी मार्गः अपिना गृहप्रान्तः।

हिन्दी अर्थ :- वीथि- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम मार्ग और पंक्ति का है।

आस्थानीयत्नयोरास्था[3] प्रस्थो[4]ऽस्त्री सानुमानयोः॥८८॥

इति थान्ताः।

कृष्णमित्रटीका :- आस्थानी आलम्बनम्॥८८॥[5]

(इति थान्ताः)

हिन्दी अर्थ :- आस्था- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम सभा और यत्न का है। प्रस्थ- यह एक (पुल्लिङ्ग नपुसंकलिङ्ग) नाम पर्वत की शिखर और परिमाणविशेष का है। ग्रंथ- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम शास्त्र और द्रव्य का है। संस्था- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम आधार, स्थिति, और मरना का है॥८८॥

यहाँ थकारान्त शब्द समाप्त हुए॥

अभिप्रायवशौ छन्दौ[6]

कृष्णमित्रटीका :- यथा छन्दानुवर्ती, स्वच्छन्दः।

हिन्दी अर्थ :- छन्द- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम अभिप्राय और अधीन का है।

अब्दौ[7] जीमूतवत्सरो।

कृष्णमित्रटीका :- जीमूतो मेघः॥

हिन्दी अर्थ :- अब्द- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम बादल और वर्ष का है।

1. **Das'amisthah mas.** means (a) one whose affection or love is diminished (b) an old man. 2. **Vithi f.** means (a) a road, way (b) a row and (c) the skirt of a house. 3. **Astha f.** means (a) an assembly (b) effort and (c) support. 4. **Prasthah mas.** n. means (a) the top of a mountain and (b) a measure. 5. **Chandah mas.** means (a) meaning, intention and (b) free will 6. **Abdah mas.** means (a) a cloud and (b) a year. 7. **Apavadah mas.** means (a) blame (b) exception and (c) an order, command.

अपवादौ[1] तु निन्दाज्ञं

कृष्णमित्रटीका :- आज्ञा शासनम्।

हिन्दी अर्थ :- अपवाद- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम निन्दा और आज्ञा का है।

दायादौ[2] सुतबान्धवौ ॥८९॥

कृष्णमित्रटीका :- दायमृक्थमादत्ते। बान्धवः सपिण्डः॥८१॥

हिन्दी अर्थ :- दायाद- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम पुत्र का और भाई का है॥८९॥

पादा[3] रश्म्यङ्घ्रितुर्यांशाः

कृष्णमित्रटीका :- रश्मिः किरणः। अङ्घ्रिश्चरणः।

हिन्दी अर्थ :- पाद- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम किरण, पैर, और चौथाई भाग का है।

चन्द्राग्न्यर्कास्तमोनुदः[4]।

निर्वादो[5] जनापवादेऽपि

कृष्णमित्रटीका :- निर्वादो वादाभावो निश्चितवादश्च।

हिन्दी अर्थ :- तमोनुद्- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि का है। निर्वाद- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम लोक की निष्ठा और सिद्धान्त अर्थात् निर्णय किये हुए का है।

शादो[6] जम्बालशष्पयोः॥९०॥

कृष्णमित्रटीका :- जम्बालः पङ्कः। शष्पः तृणम्॥९०॥

हिन्दी अर्थ :- शाद- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम कीचड़ का और बालतृण का है॥९०॥

आरावे[7] रुदिते त्रातर्याक्रन्दो[8] दारुणे रणे।

1. **Dayadah mas.** means (a) a son and (b) a relative or kinsmen. 2. **Padah mas.** means (a) a ray (b) the foot and (c) a quarter, fourth part. 3. **Tamonud mas.** means (a) the moon (b) fire and (c) the sun. 4. **Nirvadah mas.** means (a) blame (b) absence of dispute and (c) decision of a controversy. 5. **Sadah mas.** means (a) mud and (b) grass.6. B. and K. सारावे, 7. **Akrandah mas.** means (a) calling out (b) weeping or crying out, (c) a defender and (d) a fierce or voilent combat. 8. **Prasadah mas.** means (a) kindness (b) clearness and (c) perspicuity.

कृष्णमित्रटीका :- आराव आह्वानम्। त्राता विजिगीषो रक्षिता।

हिन्दी अर्थ :- आक्रन्द- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम आर्त्त शब्द, रुदित, रक्षक, दारुण कर्म और भयानक युद्ध का है।

स्यात्प्रसादो[1]ऽनुरोधेऽपि

कृष्णमित्रटीका :- अनुरोधे यथा- 'प्रसादे वर्तस्व'। अपिना नैर्मल्ये॥

हिन्दी अर्थ :- प्रसाद- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम अनुग्रह, प्रसन्नता और काव्यगुण का है।

सूदः[2] स्याद्व्यञ्जनेऽपि च[3]॥९१॥

कृष्णमित्रटीका :- सूदः सूपकारोऽपि[4] व्यञ्जनं सूपः॥९१॥

हिन्दी अर्थ :- सूद- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम व्यञ्जन का और रसोईया का है॥९१॥

गोष्ठाध्यक्षेऽपि गोविन्दः[5]

कृष्णमित्रटीका :- गोविन्दो विष्णुश्च।

हिन्दी अर्थ :- गोविन्द- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम गोपाल, बृहस्पति, और कृष्ण का है।

हर्षेऽप्यामोद[6] वन्मदः।

कृष्णमित्रटीका :- आमोदो गन्धोऽपि। एवं मदे हर्षे गर्वादौ च॥

हिन्दी अर्थ :- १. आमोद, २. मद- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम आनन्द और सुगंध के हैं।

प्राधान्ये राजलिङ्गे च वृषाङ्गे ककुदो[7]ऽस्त्रियाम्॥९२॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रधानमेव प्राधान्यम्। राजलिङ्गं छत्रादि॥९२॥

हिन्दी अर्थ :- ककुद- यह एक नाम प्रधान, राजचिह्न, बैल का अंग का है और (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) है।

1. **Sudah mas.** means (a) a cock and (b) anything seasoned or prepared dish. 2. B. स्याद्व्यञ्जने त्रिषु, 3. M. सूपकारोपि, 4. **Govindah mas.** means (a) a chief herdsman and (b) Krsna. 5. **Amodah mas.** means (a) joy and (b) fragrance Madah mas. means (a) pleasure and (b) pride.6. M. गन्धोपि 7. **Kakudah mas.** n. means (a) chief foremost (b) a sign or symbol of royality (c) hump and (d) the peak of a mountain.

स्त्री संविज्ज्ञा[1]नसंभाषाक्रियाकाराजिनामसु।

कृष्णमित्रटीका :-सं 'विद ज्ञाने' (अ. प. से.)। संभाषा संकेतो यथा- 'प्रवृत्तौ च निवृत्तौ च संविदं स्थापयेद्रणे'। क्रियाकारो व्यवस्थापनं यथा- 'संविदं लङ्घयेच्च यः'। आजिर्युद्धम्। नाम संज्ञैव॥

हिन्दी अर्थ :- संविद् (दान्त)- यह एक नाम ज्ञान, संभाषण, कर्म का नियम, युद्ध, और संज्ञा का है और (स्त्रीलिङ्ग) है।

धर्मे रहस्युपनिषत्[2] स्यादृतौ वत्सरे शरत्[3]॥६३॥

कृष्णमित्रटीका :- ऋतुः, आश्विनकार्तिकयोः॥६३॥

हिन्दी अर्थ :- उपनिषद् (दान्त स्त्रीलिङ्ग)- यह एक नाम वेदांत, धर्म और एकान्त का है। शरत्- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम ऋतु, और संवत्सर का है॥६३॥

पदं[4] व्यवसितित्राणस्थानलक्ष्माङ्घ्रिवस्तुषु।

कृष्णमित्रटीका :- व्यवसितिर्व्यवसायः। यथा- लब्धपदः। त्राणं शरणं यथा- पदमापदि माधवः। स्थाने- लब्धपदः। लक्ष्म यथा- 'नवनखपदलेखालाञ्छितं बाहुमूलम्। अङ्घ्रिश्चरणः। वस्तु यथा-पदार्थः॥

हिन्दी अर्थ :- पद- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम व्यवसाय, रक्षा, स्थान, चिह्न, पैर और वस्तु का है।

गोष्पदं[5] सेविते माने

कृष्णमित्रटीका :- गोभिः सेवितं गोष्पदम्। '-सेवित-' (६. १. १४५) इति साधुः। माने- 'गोष्पदं (प्र) विष्टो देवः'।

हिन्दी अर्थ :- गोष्पद- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम गौओं से सेवित किये देश का और खुर के प्रमाण का है।

प्रतिष्ठा कृत्यमास्पदम्[6]॥६४॥

1. **Samvid f.** means (a) knowledge (b) a sing, symbol (c) an established usage (d) war, fight (e) a name (f) pleasing, gratification and (g) promise, agreement. 2. **Upanisad f.** means (a) a sacred or religious lore (b) secrecy and (c) Vedanta. 3. **Sarat f.** means (a) a season and (b) a year. 4. **Padam n.** means (a) take possession of, occupation (b) protection (c) position, station (d) a mark, trace (e) a foot (f) a complete or intlected word and (g) a thing, object. 5. **Gospadam n.** means (a) a spot frequented by cows and (b) a measure equal to cows footsteps 6. **Pratistha f.** means (a) a high position and (b) work.

कृष्णमित्रटीका :- 'आस्पदं प्रतिष्ठायाम्' (६. १. १४६) (इति) साधु। कृत्यं च॥६४॥

हिन्दी अर्थ :- आस्पद- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम स्थान का और कृत्य का है। इससे आगे वर्ग की समाप्तिपर्य्यंत दकारान्त शब्द (त्रिलिङ्ग) हैं॥६४॥

त्रिष्विष्टमधुरौ स्वादू[1]

कृष्णमित्रटीका :- 'स्वादुर्मिष्ठमनोज्ञयोः' (मेदिनी ७५. १६)।

हिन्दी अर्थ :- स्वादु- यह एक नाम मनोवांछित और मधुर का है।

मृदू[2] चातीक्ष्णकोमलौ।

कृष्णमित्रटीका :- अतीक्ष्णोऽत्राहिस्रः॥

हिन्दी अर्थ :- मृदु- यह एक नाम अतीक्ष्ण और कोमल का है।

मूढाल्पापटुनिर्भाग्यमन्दाः[3] स्युः

कृष्णमित्रटीका :- मूढो यथा- 'मन्दः कवियशः प्रार्थी' (रघु. १. ३)। अल्पे-मन्दोदरी। अपटुः- मन्दं गच्छति। निर्भाग्यो मन्दभाग्यः॥

हिन्दी अर्थ :- मन्द- यह एक नाम मूढ, अल्प, मूर्ख, और निर्भाग्य का है।

द्वौ तु शारदौ[4]॥६५॥

प्रत्यग्राप्रतिभौ

कृष्णमित्रटीका :- प्रत्यग्रो नवः।

हिन्दी अर्थ :- शारदा- यह एक नाम नवीन और अप्रगल्भ का है॥६५॥

विद्वत्सुप्रगल्भौ विशारदौ[5]।

इति दान्ताः।

कृष्णमित्रटीका :- विगतः शारदोऽप्रतिभत्वदोषोऽस्य[6] विशारदः।

(इति दान्ताः)।

1. **Svaduh all g.** means (a) sweet (b) tasteful and (c) pleasing. 2. **Mrduh all g.** means (a) feeble, weak and (b) soft, tender. 3. **Mandah all g.**, means (a) small, little (b) stupid, dullwitted (c) unlucky (a) lazy, inactive and (e) Saturn. 4. **Saradah all g.** means (a) new and (b) diffident, not bold 5. **Vis'aradah all g.** means (a) wise, learned and (b) clever, skilful. 6. M. शारदोऽप्रतिमत्वदोषोस्य.

हिन्दी अर्थ :- विशारद- यह एक नाम पण्डित का और प्रगल्भ का है।

यहाँ दकारान्त शब्द समाप्त हुए॥

व्यामो वटश्च न्यग्रोधौ[1]

कृष्णमित्रटीका :- व्यामस्तिर्यक्कृतं बाह्वन्तरम्। न्यक्, रुणद्धि॥

हिन्दी अर्थ :- न्याग्रोध- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम व्यायाम अर्थात् पसारी हुई दोनों भुजाओं का और वट्वृक्ष का है।

उत्सेध[2] **काय उन्नतिः॥९६॥**

कृष्णमित्रटीका :- ऊर्ध्वं सिध्यत्यनेन। ऊर्ध्वं सेचनं च॥९६॥

हिन्दी अर्थ :- उत्सेध- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम शरीर और उन्नति का है॥९६॥

पर्याहारश्च मार्गश्च विवधौ वीविधौ[3] **च तौ॥**

कृष्णमित्रटीका :- परित आहरणं व्रीहितृणादेः। विशिष्टो वध्यो गमनमत्र।

हिन्दी अर्थ :- १. विध, २. वीविध- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम ध्यान आदि के और मार्ग के हैं।

परिधि[4]**र्यज्ञियतरोः शाखायामुपसूर्यके॥९७॥**

कृष्णमित्रटीका :- बाहुप्रमाणं परिधिरच्छिन्नग्रोति पत्रतः। उपसूर्यकं सूर्यमण्डलम्॥९७॥

हिन्दी अर्थ :- परिधि- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम यज्ञीय वृक्ष की और उपसूर्य्य का है॥९७॥

बन्धकं व्यसनं चेतः पीडाधिष्ठानमाधयः[5]

कृष्णमित्रटीका :- बन्धकं तद् यदुत्तमर्णाय भूम्याद्याधीयते। व्यसनं यथा- आधिं प्राप्तो यो न मुह्येत्स धीरः। आध्यानमाधिः, मानसी पीडा। आधीयतेऽस्मिन्नाधिराधारः।

1. **Nyagrodhah mas.** means (a) a fathom (measured by the arms extended) and (b) the banyan tree. 2. **Utsedhah mas.** means (a) the body and (b) height. elevation. 3. **Vivadhah and vivadhah mas.** means (a) a yoke for carrying burden (b) a way, road and (c) a burden. 4. **Paridhih mas.** mean (a) trees useful in sacrifices (b) a misty halo round the sun and (c) the circumference of a circle 5. **Adhih mas.** means (a) pawn, mortgage (b) a bad habit (c) mental pain, anguish and (d) location.

हिन्दी अर्थ :- आधि- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम बन्धक धरी, भूमि आदि व रक्त, व्यसन, चित्त की पीड़ा, और आधार का है।

स्युः समर्थननीवाकनियमाश्च समाधयः[1]**॥९८॥**

कृष्णमित्रटीका :- नीवाको वचनीभावः॥९८॥

हिन्दी अर्थ :- समाधि- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम समर्थन अर्थात् शंका का परिहार वा समाधान, वचन का प्रभाव, और अंगीकार का है॥९८॥

दोषोत्पादेऽनुबन्धः[2] **प्रकृत्यादिविनश्वरे।**
मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानुवर्तने॥९९॥

कृष्णमित्रटीका :- दोषोत्पादे यथा- अनुबन्धमवस्थां च ज्ञात्वा दण्डं प्रकल्पयेत्। प्रकृतिप्रत्य-यादीनां कार्यार्थमासज्यते विनश्वर उच्चरितप्रध्वंसी सोऽनुबन्धः[3]। मुख्यं पित्रादिकमनुयाति यः शिशुस्तत्र प्रकृतस्य प्रारब्धस्यानुवर्तने, अनिवर्तने यथा- वैरानु बन्धः॥९९॥

हिन्दी अर्थ :- अनुबन्ध- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम दोष के उत्पादन का और इत्संज्ञक इसके अतिरिक्त लोप के कारण अदर्शनशील अक्षर का है। अर्थात् माता पिता और गुरु की आज्ञा पालन करने वाले बालक और प्रकृति के पद की निवृत्ति के अभाव का भी है॥९९॥

विधु[4] **विष्णौ चन्द्रमसि परिच्छेदे विलेऽवधिः**[5]**।**
विधि[6] **र्विधाने दैवेऽपि प्रणिधिः**[7] **प्रार्थने चरे॥१००॥**

कृष्णमित्रटीका :- चरो दूतः॥१००॥

हिन्दी अर्थ :- विधु- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम विष्णु और चन्द्रमा का है। अवधि- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम परिच्छेद, बिल और काल का है। विधि- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम विधान और दैव का है। प्रणिधि- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम प्रार्थना का और चर का है॥१००॥

1. **Samadhih mas.** means (a) agreement (b) silence and (c) abstract meditation. 2. **Anubanhah mas.** means (a) fault (b) a grammatical term (c) a child or pupil who imitates an example set by a parent or preceptor and (d) continuity. 3. M. सोनुबन्धः 4. **Vidhuh mas.** means (a) Visnu (b) the moon (c) camphor and (d) a demon. 5. **Avadhih mas.** means (a) boundary, limit (b) a hole or pit and (c) time. 6. **Vidhih mas.** means (a) a rule, precept (b) fate (c) Brahma and (d) time. 7. **Pranidhih mas.** means (a) a request and (b) a spy.

बृद्धबुधौ[1] पण्डितोऽपि

कृष्णमित्रटीका :- बृद्धे जिने॥

हिन्दी अर्थ :- १. बृद्ध, २. बुध- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम पंडित के हैं और बुद्ध यह बुध ग्रह का नाम और बूढे का भी हैं।

स्कन्धः[2] समुदयेऽपि च।

कृष्णमित्रटीका :- समुदये यथा- सप्तवातस्कन्धाः।

हिन्दी अर्थ :- स्कन्ध- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम समूह का और राजा का है।

देशे नदविशेषेऽब्धौ सिन्धुः[3]र्ना सरिति स्त्रियाम्॥१०१॥

कृष्णमित्रटीका :- सिन्धुर्देशविशेषः॥१०१॥

हिन्दी अर्थ :- सिंधु- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम देश, नदविशेष अटक आदि और समुद्र का वाची (पुल्लिङ्ग) है और नदी का वाची (स्त्रीलिङ्ग) है॥१०१॥

विधा[4] विधौ प्रकारे च

कृष्णमित्रटीका :- विधिर्विधानम्। प्रकारे यथा- द्विविधः॥

हिन्दी अर्थ :- विधा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम विधि का और प्रकार का है।

साधू[5] रम्येऽपि च त्रिषु।

वधू[6] र्जाया स्नुषा स्त्रीषु[7]

कृष्णमित्रटीका :- स्त्रीस्विति स्त्रीमात्रम्।

हिन्दी अर्थ :- साधु- यह एक नाम सज्जन और रमणीक का है और (त्रिलिङ्ग) है। वधू- यह एक नाम भार्या का, पुत्र की पत्नी और स्त्री मात्र का है तथा (स्त्रीलिङ्ग) है।

सुधा लेपोऽमृतं स्नुही॥१०२॥

कृष्णमित्रटीका :- लिप्यतेऽनेन[1] लेपः शुक्तिका-चूर्णादि। स्नुही सीहुण्डः॥१०२॥

हिन्दी अर्थ :- सुधा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम अमृत और थोहर के वृक्ष का है॥१०२॥

संधा[2] प्रतिज्ञा मर्यादा।

कृष्णमित्रटीका :- प्रतिज्ञा यथा- सत्यसंधः॥

हिन्दी अर्थ :- संधा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम प्रतिज्ञा और मर्यादा का है।

श्रद्धा[3] संप्रत्ययः स्पृहा।

कृष्णमित्रटीका :- संप्रत्ययो भत्क्यतिशयः। यथा- श्रद्धया मामुपासते (भगवद्गीता, १२. ६)। स्पृहा यथा- भोजने श्रद्धालुः॥

हिन्दी अर्थ :- श्रद्धा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम श्रद्धा और इच्छा का है।

मधु[4]मद्ये पुष्परसे क्षौद्रेऽप्यन्धं[5] तमस्यपि॥१०३॥
अतस्त्रिषु समुन्नद्धौ[6] पण्डितम्मन्यगर्वितौ।

कृष्णमित्रटीका :- इतो धान्तास्त्रिलिङ्गाः॥१०३॥

हिन्दी अर्थ :- मधु- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम मदिरा, पुष्पों का रस, और शहद का है। अन्ध- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम अंधेरे और अंधे पुरुष का है। इससे परे धकारान्त वर्गपर्य्यंत शब्द (त्रिलिङ्ग) हैं॥१०३॥ समुन्नद्ध- यह एक नाम अपने को पंडित मानने वाले और गर्ववाले का है।

ब्रह्मबन्धु[7] रधिक्षेपे निर्देशे

कृष्णमित्रटीका :- ब्रह्मणो बन्धुस्तज्जातिमाने च नतक्रियावान्। निर्देशो यथावस्थितं कथनम्।

हिन्दी अर्थ :- ब्रह्मबन्धु- यह एक नाम निंदा, नीच ब्राह्मण और आज्ञा का है।

---

1. **Buddhah mas.** means (a) Gautama Buddha and (b) a wise or learned man. Budhah mas. means (a) the planet Mercuty and (b) a wise or learned man. 2. **Skandhah mas.** means (a) a multitude or group (b) the shoulder and (c) the trunk or stem or a tree. 3. **Sindhuh mas.** means (a) the country, Indus (b) a river and (c) the sea; sindhuh f. means river 4. **Vidha f. means (a) mode.** manner, form and (b) sort or kind. 2. Sadhuh all g. means (a) pleasant (b) good, virtuous (c) a merchant. 5. **Vadhuh f.** means (a) bride (b) a wife (c) a daughter-in-law and (d) a woman. 6. B. and K. स्त्री च.

1. M. लिप्यतेनेन, 2. **Sandha f.** means (a) acceptance (b) belief, faith and (c) limit, boundary. 3. **Sraddha f.** means (a) belief, faith (b) deep devotion and (c) strong desire. 4. **Madhu n.** means (a) wine (b) the juice of flowers and (c) honey; madhuh mas. measn (a) a season and (b) the month, Caitra. 5. **Andham n.** means darkness, and andhah all g. means blind. 6. **Samunnaddhah all g.** means (a) thinking oneself to be learned and (b) proud. 7. **Brahmabandhuh all g.** means (a) a contemptible Brahamana and (b) an instruction.

अथावलम्बितः ॥१०४॥
अविदूरोऽप्यवष्टब्धः[1]

कृष्णमित्रटीका :- अविलम्बितो वस्त्रादौ रुद्धः ॥१०४॥ अविदूरे समीपे यथा- अवष्टब्धा सेना॥

हिन्दी अर्थ :- अवलम्बित- यह एक नाम बँधा हुआ का है॥१०४॥ अवष्टबध यह एक नाम आश्रित और सन्निहित का है।

प्रसिद्धौ[2] **ख्यातभूषितौ**

इति धान्ताः।

सूर्यवह्नी चित्रभानू[3] **भानू रश्मिदिवाकरौ॥१०५॥**
भूतात्मानौ[4] **धातृदेहौ**

कृष्णमित्रटीका :- भूतानामात्मा। भूतान्येवात्माऽस्येति च।

हिन्दी अर्थ :- प्रसिद्ध- यह एक नाम विख्यात और भूषित हुए का है। **यहाँ धकारान्त शब्द समाप्त हुए॥** आगे के शब्द राजा शब्द तक (पुल्लिङ्ग) हैं। चित्रभानु- यह एक नाम सूर्य और अग्नि का है। भानु यह एक नाम किरण और सूर्य्य का है॥१०५॥ भूतात्मन् (नांत)- यह एक नाम ब्रह्माजी और देह का है।

मूर्खनीचौ पृथग्जनौ[5]**।**

कृष्णमित्रटीका :- पृथक्कार्यो जनः।

हिन्दी अर्थ :- पृथग्जन- यह एक नाम मूर्ख और नीच का है।

ग्रावाणौ[6] **शैलपाषाणौ पत्त्रिणौ**[7] **शरपक्षिणौ॥१०६॥**

कृष्णमित्रटीकाः-पत्त्राणि पक्षाः सन्त्यस्य॥१०६॥

हिन्दी अर्थ :- ग्रावन् (नांत)- यह एक नाम पर्वत और पत्थर का है। पत्त्रिन् (इन्नन्त)- यह एक नाम शर का और पक्षी का है॥१०६॥

तरुशैलौ शिखरिणौ[8]

कृष्णमित्रटीका :- शिखरमस्त्स्याः।

हिन्दी अर्थ :- शिखरिन् (इन्नन्त) यह एक नाम वृक्ष का और पर्वत का है।

शिखिनौ[1] **वह्निबर्हिणौ।**
प्रतियत्ना[2] **वुभौ लिप्सोपग्रहौ**

कृष्णमित्रटीका :- प्रतिकृतः यत्नोऽत्र[3]। लिप्सा लाभेच्छा। उपग्रहो वन्दिग्रहणादिः।

हिन्दी अर्थ :- शिखिन्- यह एक नाम अग्नि और मोर का है। प्रतियत्न- यह एक नाम इच्छा और अनुकूल का है।

अथ सादिनौ[4] **॥१०७॥**
द्वौ सारथिहयारोहौ वाजिनो[5] **ऽश्वेषुपक्षिणः।**

कृष्णमित्रटीका :- वाजाः पक्षाः सन्त्यस्य। अश्वानामपि पूर्वं पक्षा अभवन्। इषुः शरः॥

हिन्दी अर्थ :- सादिन् (इन्नन्त)- यह एक नाम सारथी और घोड़े के सवार का है॥१०७॥ वाजिन्- यह एक (इन्नन्त) नाम घोड़े और पक्षी का है।

कुलेऽप्यभिजनो[6] **जन्मभूम्यामपि**

कृष्णमित्रटीका :- अभिजायतेऽस्मात्[7]। जन्मनो भूमिः॥

हिन्दी अर्थ :- अभिजन- यह एक नाम कुल और जन्मभूमि का है।

अथ हायनः[8] **(नाः) ॥१०८॥**
वर्षार्चिर्व्रीहिभेदाश्च

कृष्णमित्रटीका :- वर्षे वर्षणे। अर्चिषि चाग्रहायणं क्लीबम्। व्रीहिभेदः षष्टिकाख्यः।

हिन्दी अर्थ :- हायन- यह एक नाम वर्ष, किरण और व्रीहिभेद का है॥१०८॥

चन्द्राग्न्यर्का विरोचनाः[9]**।**

---

1. **Avastabdhah all g.** means (a) supported (b) near and (c) bound. 2. **Prasiddhah all g.** means (a) renowned and (b) ornamnted, decorated 3. **Citralbhanuh mas.** means (a) the sun and (b) fire- Bhanuh mas. means (a) a ray and (b) the sun. 4. **Bhutatman mas.** means (a) the Creator, Brahma and (b) the individual soul. 5. **Prthagjanah mas.** means (a) a fool and (b) a low man. 6. **Gravan mas.** means (a) a mountain and (b) a stone. 7. **Patrin mas.** means (a) an arrow (b) a bird in general and (c) a falcon. 8. **Sikharin mas.** means (a) a tree and (b) a mountain

1. **Sikhin mas.** means (a) fire and (b) a peacock. 2. **Pratiyatnah mas.** means (a) wish, desire and (b) making captive or taking prisoner. 3. M. यत्नोत्र 4. **Sadin mas.** means (a) a charioteer and (b) a horse-rider. 5. **Vajin mas.** means (a) horse (b) an arrow and (c) a bird. 6. **Abhijanah mas.** means (a) a noble descent (b) family and (c) motherland. 7. M. अभिजायतेस्मात्, 8. **Hayanah mas.** means (a) a year (b) a flame and (c) a kind of rice. 9. **Virocanah mas.** means (a) the moon (b) fire and (c) the sun.

केशेऽपि वृजिनः[1]।

कृष्णमित्रटीका :- वृजिनः पापेऽपि[2]॥

हिन्दी अर्थ :- विरोचन- यह एक नाम चन्द्र, अग्नि, और सूर्य्य का है। वृजिन- यह एक नाम क्लेश और पाप का है।

विश्वकर्मार्कसुरशिल्पिनोः[3] ॥१०६॥

कृष्णमित्रटीका :- विश्वस्य कर्मास्मात्। विश्वं च कर्मास्य॥१०६॥

हिन्दी अर्थ :- विश्वकर्मन् (नांत)- यह एक नाम सूर्य्य का और देवताओं के शिल्पी का है ॥१०६॥

आत्मा[4] यत्नो धृतिर्बुद्धिः स्वभावो ब्रह्म वर्ष्म च।

कृष्णमित्रटीका :- यत्ने यथा- महात्मा। स्वभावे-दुष्टात्मा। ब्रह्मणि- 'आत्मैवेदं सर्वम्' (छा. उ. ७. २४. २)। वर्ष्म शरीरं तत्र यथा- कृशात्मा॥

हिन्दी अर्थ :- आत्मन् (नांत)- यह एक नाम यत्न, धैर्य, बुद्धि, स्वभाव, ब्रह्म, और शरीर का है।

शक्रो घातुकमत्तेभो वर्षुकाब्दो घनाघनः[5]॥११०॥

कृष्णमित्रटीका :- घातुको हिंसनशीलः। स चासौ मत्तेभश्च। वर्षुको वर्षणशीलः। हन्तीति घनः। एते त्रयः॥११०॥

हिन्दी अर्थ :- घनाघन- यह एक नाम इन्द्र, उन्मत्त हाथी, और बरसने वाले बादल का है। घन- यह एक नाम मेघ और काठिन्य का वाचक (पुल्लिङ्ग) हैं। कठिन और निरन्तर का वाचक (त्रिलिङ्ग) हैं॥११०॥

अभिमानो[6]ऽर्थादिदर्पेऽज्ञाने प्रणयहिंसयोः॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रणयः प्रार्थना। मानेर्मन्यतेश्च। 'मीञ् हिंसायाम्' (क्र्या. उ. अ.) इत्यस्य च 'मान' इति रूपम्।

हिन्दी अर्थ :- अभिमान- यह एक नाम द्रव्य पशु, कुल और गुण आदि से उपजा गर्व, ज्ञान, नरमाई, और हिंसा का है।

घनो[1] मेघे मूर्त्तिगुणे त्रिषु मूर्ते निरन्तरे॥१११॥

कृष्णमित्रटीका :- मूर्त्तिगुणः काठिन्यम्। दर्शनं स्पर्शनं च मूर्तम्। निरन्तरं निविडम्॥१११॥

हिन्दी अर्थ :- घनः- यह एक (पुल्लिङ्ग) शब्द के मेघ (बादल), लोहे का मुद्गर, मुस्त, कड़ापन तथा बाहुल्य के अर्थ हैं॥१११॥

इनः[2] सूर्ये प्रभौ

कृष्णमित्रटीका :- प्रभुः स्वामी।

हिन्दी अर्थ :- इन- यह एक नाम सूर्य्य और मालिक का है।

राजा[3] मृगाङ्के क्षत्त्रिये नृपे।

कृष्णमित्रटीका :- 'सोमो राजा द्विजातीनाम्' इति श्रुतिः॥

हिन्दी अर्थ :- राजन् (नान्त)- यह एक नाम चन्द्रमा, क्षत्रिय, और राजा का है।

वाणिन्यौ[4] नर्तकीदूत्यौ

कृष्णमित्रटीका :- अवश्यं वणति वाणिनी। 'वण शब्दे' (भ्वा. प. से.)। णिनिः॥

हिन्दी अर्थ :- वाणिनी- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम नाचनेवाली और दूती का है।

स्रवन्त्यामपि वाहिनी[5]॥११२॥

कृष्णमित्रटीका:-स्रवन्ती नदी। अपिना सेना॥११२॥

हिन्दी अर्थ :- वाहिनी- यह एक नाम वज्र और बिजली का है॥११२॥

ह्लादिन्यौ[6] वज्रतडितौ वन्दायामपि कामिनी[7]।

कृष्णमित्रटीका :- वन्दा यत्र प्रोहविशेषः॥

हिन्दी अर्थ :- ह्लादिनी- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम वज्र और बिजली का है। कामिनी- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम वंदा वृक्ष का और सुन्दर स्त्री का है।

---

1. **Vrjin mas.** means (a) hair and (b) the wicked man. 2. M. पापेपि, 3. **Visvakarman mas.** means (a) the sun and (b) the architect of gods. 4. **Atman mas.** means (a) the natural temperament (f) Supreme Soul, Brahman and (g) the body. 5. **Ghanaghanah mas.** means (a) Indra (b) a vicious elephant or one in rut or intoxicated and (c) a raining year. 6. **Abhimanah mas.** means (a) pride (b) ignorance (c) affection and (d) injury, killing.

1. **Ghanah mas.** means (a) a cloud (b) an iron club and (c) a collection or multitude, and ghanah all g. means (a) hard and (b) deep, thick. 2. **Inah mas.** means (a) the sun and (b) a lord. 3. **Rajn mas.** means (a) a king (b) the moon and (c) a Ksatriya. 4. **Vahini f.** means (a) a dacning girl (b) a female messenger and (c) a clever woman. 5. **Vahini f.** means (a) river and (b) an army. 6. **Hradini f.** means (a) the thunderbot and (b) lightning. 7. **Kamini f.** means (a) a plant (b) a woman and (c) a loving woman.

त्वग्देहयोरपि तनुः[1]

कृष्णमित्रटीका :- तनुः सूक्ष्मेऽपि[2]॥

हिन्दी अर्थ :- तनु- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम खाल और देह का है।

सूना[3] धोजिह्विकापि च॥११३॥

कृष्णमित्रटीका :- अधोजिह्विका जिह्वातलम्। सूना वधस्थानं च॥११३॥

हिन्दी अर्थ :- सूना- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम गलघंटिका और वधस्थान का है॥११३॥

क्रतुविस्तारयोरस्त्री वितानं[4] त्रिषु तुच्छके। मन्दे

कृष्णमित्रटीका :- वितन्यते क्रतुः विगतं (त) ननमत्रेति। वितानो मन्दः।

हिन्दी अर्थ :- वितान- यह एक नाम यज्ञ और विस्तार का है। तुच्छ और मन्द का वाचक (त्रिलिङ्ग) है।

अथ केतनं[5] कृत्ये केतावुपनिमन्त्रणे॥११४॥

कृष्णमित्रटीका :- 'कित ज्ञाने'। कृत्ये, अवश्यकार्ये यथा- कार्यकेतनम्। केतुर्ध्वजः। उपनिमन्त्रणे यथा- ब्राह्मणो निकेतनं नातिक्रामेत्॥११४॥

हिन्दी अर्थ :- केतन- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम कृत्य, ध्वजा, निवास और मित्रों के निमन्त्रण का है॥११४॥

वेदस्तत्त्वं तपो ब्रह्म[6] ब्रह्मा विप्रः प्रजापतिः।

कृष्णमित्रटीका :- वेदतत्त्वतपस्सु क्लीबं द्वयोः पुंसि। तत्त्वं ज्ञानम्। विप्रे- ब्रह्महत्या॥

हिन्दी अर्थ :- ब्रह्मन् (नान्त)- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम वेद, चैतन्य, और तप का वाचक (नपुंसकलिङ्ग) है। ब्रह्मन् (नान्त)- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम ब्राह्मण और ब्रह्मा का वाचक है।

उत्साहने च हिंसायां सूचने चापि गन्धनम्[1]॥११५॥

कृष्णमित्रटीका :- 'गन्धनं सूचनोत्साहहिंसनेषु प्रकाशने' (विश्व ६१.७४)॥११५॥

हिन्दी अर्थ :- गंधन- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम उत्साह, हिंसा और आशय के प्रकाश का है॥११५॥

आतञ्चनं[2] प्रतीवापजवनाप्यायनार्थकम्।

कृष्णमित्रटीका :- दध्यादिसिद्ध्ये दुग्धादौ तक्रादेः प्रक्षेपः प्रतीवापः, निक्षेपो वा। जवनं वेगः। आप्यायनं तर्पणम्।

हिन्दी अर्थ :- आतंचन- यह एक नाम दूध आदि में तक्र आदि का जामन देना, वेग, और तृप्ति का है।

व्यञ्जनं[3] लाञ्छनश्मश्रुनिष्ठानावयवेष्वपि॥११६॥

कृष्णमित्रटीका :- व्यज्यतेऽनेन[4]। निष्ठानं भक्ताद्युपसेचनं दध्यादि। अवयवः स्त्र्यादिचिह्न (म्)॥११६॥

हिन्दी अर्थ :- व्यञ्जन- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम चिह्न, दाढी, मूंछ, शाक आदि, अंग, और अवयव का है॥११६॥

स्यात्कौलीनं[5] लोकवादे युद्धे पश्वहिपक्षिणाम्।

कृष्णमित्रटीका :- कुलीने भवं कौलीनम्। लोकवादो लोकापवादः। पश्वादीनां युद्धे चेदम्॥

हिन्दी अर्थ :- कौलीन- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम लोक का अपवाद, सर्प पक्षी, पशु आदि का युद्ध, और कुलीनता का है।

स्यादुद्यानं[6] निःसरणे वनभेदे प्रयोजने॥११७॥

कृष्णमित्रटीका :- उद्याने गमने। उद्यान्ति अत्र अनेनेति च। वनभेद उपवने॥११७॥

हिन्दी अर्थ :- उद्यान- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम ग्रह आदि का उदय, उपवन और प्रयोजन का है॥११७॥

अवकाशे स्थितौ स्थानम्[7]

---

1. **Tanuh f.** means (a) skin and (b) the body; **tanuh all g.** means (a) thin, lean and (b) small, little. 2. M. सूक्ष्मेपि, 3. **Suna f.** means (a) uvula (b) a slaughter-house and (c) a daughter. 4. **Vitanam n.** mas. means (a) a sacrifice (b) expansion, extension and (c) a canopy; vitanam all g. means (a) pithless and (b) stupid, dull. 5. **Ketanam n.** means (a) an indispensable act (b) a flag (c) an invitation and (d) a house. 6. **Brahman n.** means (a) the Vedas (b) principle (c) penance, austerity (d) the supreme principal, Brahman; and Brahma mas. means (a) a Brahmana and (b) the creator of the world.

1. **Gandhanam n.** means (a) perseverance (b) injury, killing (c) information and (d) manifestation 2. **Atancanam n.** means (a) causing to coagulate or curdle (b) speed and (c) satisfaction. 3. **Vyanjanam n.** means (a) a mark or token (b) the beard (c) a condiment or seasoned article and (d) a limb or memher. 4. M. व्यज्यतेनेन 5. **Kaulinam n.** means (a) a sandal (b) a combat of animals and birds and (c) high birth. 6. **Udyanam n.** means (a) going out (b) a garden and (c) aim, purpose 7. **Sthanam n.** means (a) anoccasion (b) state, condition and (c) stay, residence.

कृष्णमित्रटीका :- तिष्ठन्त्यत्रेति। अधिकरणे (३. ३. ११७) भावे (३. ३. ११५) च ल्युट्॥

हिन्दी अर्थ :- स्थान यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम अवकाश का और स्थिति का है।

क्रीडादावपि देवनम्[1]।

कृष्णमित्रटीका :- देवनं विजिगीषादावपि॥

हिन्दी अर्थ :- देवन- यह एक (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) नाम क्रीड़ा का व्यवहार, और जीतने की इच्छा का है। आगे के वन तक (नपुंसकलिङ्ग) हैं।

उत्थानं[2] पौरुषे तन्त्रे संनिविष्ठोद्गमेऽपि च॥११८॥

कृष्णमित्रटीका :- पौरुषमुद्योगः। तन्त्रं सैन्यम्। संनिविष्ठस्य उद्गम ऊर्ध्वीभावः॥११८॥

हिन्दी अर्थ :- उत्थान- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम पौरुष, तंत्र, बैठे हुए को उठाना और मलरोग का है॥११८॥

व्युत्थानं[3] प्रतिरोधे च विरोधाचरणेऽपि च।

कृष्णमित्रटीका :- विगतमुत्थानम्॥

हिन्दी अर्थ :- व्युत्थान- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम तिरस्कार, विरोध करना, और अपने अधीन कृत्य का है।

मारणे मृतसंस्कारे गतौ द्रव्योपपादने॥११९॥
निवर्तनोपकरणानुव्रज्यासु च साधनम्[4]।

कृष्णमित्रटीका :- साधनं मारणादौ। द्रव्यं धनम्। उपपादनमुपपादः॥११९॥ उपकरणं साधनसामग्री। अनुव्रज्याऽनुगमनम्[5]॥

हिन्दी अर्थ :- साधन- यह एक नाम मारण अर्थात् पराका साधन, मृतसंस्कार, अग्निदाह, गमन, धन, धन का देना, धन का निष्पादन, उपाय और अनुगमन का है॥११९॥

निर्यातनं[6] वैरशुद्धौ दाने न्यासार्पणेऽपि च॥१२०॥

कृष्णमित्रटीका :- 'यत निकारादौ' (चु. उ. से.)। न्यासार्पणं निक्षेपे प्रतिदाने॥१२०॥

1. **Devanam n.** means (a) desire to excel; devanah mas. means gambling. 2. **Utthanam n.** means (a) activity, effort (b) an army and (c) the act of rising or standing up. 3. **Vyuhanam n.** means (a) opposition and (b) independent action. 4. **Sadhanam n.** means (a) killing (b) funeral rites (c) going (d) causing the delivery of money (e) earning money (f) accomplishmant (g) means (h) following and (i) cause (hetu). 5. M. अनुव्रानुगमनम्। 6. **Niryatanam n.** means (a) revenge (b) gift and (c) restitation of a daposit.

हिन्दी अर्थ :- निर्यातन यह एक नाम वैर की शुद्धि, त्याग, और धरोहर वापस करने का है॥१२०॥

व्यसनं[1] विपदि भ्रंशे दोषे कामजकोपजे।

कृष्णमित्रटीका :- कामजो दोषो मृगयाद्यूतपानादि। कोपजो वाक्पारुष्यार्थदूषणादि।

हिन्दी अर्थ :- व्यसन- यह एक नाम विपद, नाश, पतन, कामज और क्रोधज दोष का है।

पक्ष्माक्षिलोम्नि[2] किञ्जल्के तन्त्वाद्यंशेऽप्यणीयसि॥121॥

कृष्णमित्रटीका :- 'पक्ष्मसूत्रादिसूक्ष्मांशे किञ्जल्के नेत्रलोमनि' इति विश्वः (१५. १२२)॥१२१॥

हिन्दी अर्थ :- पक्ष्मन् (नान्त)- यह एक नाम आँखों के रोम, केसर, बहुत अल्प सूत्र आदि के अंश का है॥१२१॥

तिथिभेदे क्षणे पर्व[3]

कृष्णमित्रटीका :- तिथिभेदोऽष्टमीपूर्णिमादिः[4]। क्षणः प्रस्ताव उत्सवश्च॥

हिन्दी अर्थ :- पर्वन् (नान्त)- यह एक नाम तिथियों का भेद अर्थात् अष्टमी अमावस आदि का और उत्सव का है।

वर्त्म[5] नेत्रच्छदेऽध्वनि।

कृष्णमित्रटीका :- नेत्रच्छदोऽक्षिपुटः[6]॥

हिन्दी अर्थ :- वर्त्मन् (नान्त)- यह एक नाम ढकने का और मार्ग का है।

अकार्यगुह्ये कौपीनम्[7]

कृष्णमित्रटीका :- कूपपतनमर्हति। 'शालीनकौपीने अधृष्टाकार्ययोः' (५. २. २०) इति साधुः। लक्षणया लिङ्गं तदाच्छादनं च कौपीनम्।

हिन्दी अर्थ :- कौपीन- यह एक नाम अकार्य का और गुदा लिंग का है।

1. **Vyasanam n.** means (a) fall, defect (b) defects caused by evil habits, anger & c. and (c) evil or bad habit. 2. **Paksman n.** means (a) an eyelash (b) the filament of a flower and (c) the point of a thread. 3. **Parvan n.** means (a) days (b) an opportunity and (c) a festival or joy. 4. M. तिथिभेदोष्टमीपूर्णिमादिः, 5. **Vartman n.** means (a) an eyelid (b) a road, way. 6. M. नेत्रच्छदोक्षिपुटः, 7. **Kaupinam n.** means (a) improper or wrong act. (b) the pudenda and (c) a small piece of cloth worn over the privities.

मैथुनं[1] संगतौ रतौ ॥१२२॥

कृष्णमित्रटीका :- मिथुनं युग्मं स्त्रीपुंसौ च तस्येदं कर्म मैथुनम्॥१२२॥

हिन्दी अर्थ :- मैथुन- यह एक नाम भार्या आदि के संबंध का और स्त्रीसंग का है ॥१२२॥

प्रधानं[2] परमात्मा धीः

कृष्णमित्रटीका :- प्रधीयतेस्मिन्[3] प्रवर्तते च॥

हिन्दी अर्थ :- प्रधान- यह एक नाम परमात्मा और बुद्धि का है।

प्रज्ञानं[4] बुद्धिचिह्नयोः।

कृष्णमित्रटीका :- प्रज्ञायते इति, अनेन वा।

हिन्दी अर्थ :- प्रज्ञान- यह एक नाम बुद्धि और चिह्न का है।

प्रसूनं[5] पुष्पफलयोः

कृष्णमित्रटीका :- प्रसूयते।

हिन्दी अर्थ :- प्रसून- यह एक नाम फूल और फल का है।

निधनं[6] कुलनाशयोः ॥१२३॥

कृष्णमित्रटीका :- नियतं धनं यत्र निवृत्तिश्च धनस्य॥१२३॥

हिन्दी अर्थ :- निधन- यह एक नाम कुल और नाश का है॥१२३॥

क्रन्दने[7] रोदनाह्वाने वर्ष्म[8] देहप्रमाणयोः।

कृष्णमित्रटीका :- प्रमाणमत्रोन्नतिः यथा- व्याप्तं व्योमनि वर्ष्मणा॥

हिन्दी अर्थ :- क्रन्दन- यह एक नाम रोने और बुलाने का है। वर्ष्मन् (नान्त)- यह एक नाम शरीर और प्रमाण का है।

1. **Maithunam n.** means (a) sexual intercourse and (b) union, connections. 2. **Pradhanam n.** means (a) the Supreme Soul (b) the mind and (c) the **Prakrti** of Samkhya system. 3. M. प्रधीयतेस्मिन् 4. **Prajnanam n.** means (a) intelligence and (b) a mark,sign. 5. **Prasunam n.** means (a) a flower and (b) a fruit. 6. **Nidhanam n.** means (a) a family and (b) death, destruction. 7. **Krandanam n.** means (a) weeping and (b) calling. 8. **Varsman n.** means (a) body and (b) a measure.

गृहदेहत्विट्प्रभावा धामानि[1] अथ चतुष्पथे॥१२४॥

कृष्णमित्रटीका :- त्विट् तेजः॥

हिन्दी अर्थ :- धामन् (नान्त)- यह एक नाम शरीर, किरण, और प्रभाव का है॥१२४॥

संनिवेशे च संस्थानम्[2]

कृष्णमित्रटीका :- संनिवेशो रचना॥

हिन्दी अर्थ :- संस्थान- यह एक नाम चौराहे और अवयव के विभाग का है।

लक्ष्म[3] चिह्नप्रधानयोः।

आच्छादनं[4] संपिधानमपवारणमित्युभे ॥१२५॥

कृष्णमित्रटीका :- 'आच्छादनं संपिधाने वस्त्रेऽपवृतिमात्रके' इति धरणिः॥१२५॥

हिन्दी अर्थ :- लक्ष्मन् (नान्त)- यह एक नाम चिह्न और प्रधान का है। १. संपिधान, २. अपवारण- ये दो नाम आच्छादन के हैं॥१२५॥

आराधनं[5] साधने स्यादवाप्तौ तोषणेऽपि च

अधिष्ठानं[6] चक्रपुरप्रभावाध्यासनेष्वपि ॥१२६॥

कृष्णमित्रटीका :- चक्रं रथाङ्गम्। पुरे प्रभावेऽध्यासने॥१२६॥

हिन्दी अर्थ :- आराधन- यह एक नाम साधन, लाभ, संतोष इन्हीं का है। अधिष्ठान- यह एक नाम रथ का पहिया, नगर, प्रभाव, और आक्रमण का है॥१२६॥

रत्नं[7] स्वजातिश्रेष्ठेऽपि

कृष्णमित्रटीका :- 'जातौ जातौ यदुत्कृष्टं तद्रत्नमभिधीयते'॥

हिन्दी अर्थ :- रत्न- यह एक नाम अपनी जाति में श्रेष्ठ और मणि आदि का है।

1. **Dhaman n.** means (a) a house (b) the body (c) light splendour and (d) glory. 2. **Sansthanam n.** means (a) a place where four roads meet (b) configuration and (c) form, shape. 3. **Laksman n.** means (a) a sign, token and (b) chief, foremost. 4. **Acchadanam n.** means (a) coveriug, concealing (b) a cover and (c) cloth. 5. **Aradhanam n.** means (a) means (b) accomplishment, attainment and (c) satisfaction. 6. **Adhisthanam n.** means (a) a wheel (b) town, village (c) glory and (d) an abode. 7. **Ratnam n.** means (a) gem, jewel and (b) anything best or exellent of its kind.

वने[1] सलिलकानने।

तलिनं[2] विरले स्तोके वाच्यलिङ्गास्तथोत्तरे॥१२७॥

कृष्णमित्रटीका :- तलमस्यास्ति॥१२७॥

हिन्दी अर्थ :- वन- यह एक नाम जल और वन का है। यहाँ तक (नपुंसकलिङ्ग) हैं। आगे नान्त तक (त्रिलिङ्ग) हैं। तलिन- यह एक नाम विरल का और बहुत अल्प का है। तलिन शब्द वाच्यलिङ्गी है। इससे उपरान्त नांतवर्गपर्य्यन्त शब्द (त्रिलिङ्ग) हैं॥१२७॥

समानाः[3] सत्समैके स्युः

कृष्णमित्रटीका :- सह मानेन वर्तते। समानं मानमस्येति च॥,

हिन्दी अर्थ :- समान- यह एक नाम पंडित, समान, और एक का है।

पिशुनौ[4] खलसूचकौ।

हीनन्यूनावूनगर्ह्यौ[5] वेगिशूरौ तरस्विनौ[6]॥१२८॥

कृष्णमित्रटीका :- तरो जवो बलं वाऽस्यास्ति[7]॥१२८॥

हिन्दी अर्थ :- पिशुन- यह एक नाम खल और निन्दक का है। हीन, न्यून- ये दो नाम अल्प और निन्दा के योग्य के हैं। तरस्विन् (इन्नन्त)- यह एक नाम वेगवाले और शूरवीर का है॥१२८॥

अभिपन्नो[8] ऽपराद्धोऽभिग्रस्तव्यापद्गतावपि।

इति नान्ताः।

कृष्णमित्रटीका :- 'अभिपन्नोऽपराद्धेऽभिद्रुते ग्रस्ते विपद्गते' इति विश्वः॥

(इति नान्ताः)

हिन्दी अर्थ :- अभिपन्न- यह एक नाम अपराधी, शत्रु से आक्रांत और विपत्तियुक्त का है।

यहाँ नकारान्त शब्द समाप्त हुए॥

1. **Vanam n.** means (a) water (b) forest and (c) a house. 2. **Talinam all g.** means (a) spare, thin (b) small, little and (c) clear 3. **Samanah all g.** means (a) good, virtuous (b) same and (c) eqeal. 4. **Pisunah all g.** means (a) wicked and (b) base informer, calumniator. 5. **Hinah all g.** means (a) deficient and (b) censurable. 6. **Tarasvin all g.** means (a) quick, swift and (b) mightly, courageous. 7. M. वास्यास्ति, 8. **Abhipannah all g.** means (a) guilty (b) overpowered, afflicted and (c) fallen into difficulties.

अथ पान्ताः

कलापो[1] भूषणे बर्हे तूणीरे संहतेऽपि च॥१२९॥

कृष्णमित्रटीका :- कला आप्नोति। भूषणे काञ्च्यादौ। संहते समूहे॥१२९॥

हिन्दी अर्थ :- कलाप- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम गहना, मोर की पंख, तरकस, समुदाय, और आभूषण का है॥१२९॥

परिच्छदे परीवापः[2] पर्युप्तौ सलिलस्थितौ।

कृष्णमित्रटीका :- परिच्छदः परिवारः। पर्युप्तिः परितो बीजत्यागः। स्थितिरचलत्वम्। 'सलिलस्थिति-र्जलाधारः' इत्यन्ये।

हिन्दी अर्थ :- परीवाप- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम वस्त्रमंडप आदि की सामग्री, सब ओर से वपन, और पानी की स्थिति का है।

गोधुग्गोष्ठपतिर्गोपो[3]

कृष्णमित्रटीका :- गोष्ठपतिर्गोष्ठाध्यक्षः॥

हिन्दी अर्थ :- गोप- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम गौ को दुहने वाले और गोशाला के मालिक का है।

हरो विष्णुर्वृषाकपिः[4]॥१३०॥

कृष्णमित्रटीका :- वृषं धर्मं न कम्पयति। 'अंहिकम्प्योर्नलोपश्च' (उ. ४. १४३) इति इः॥१३०॥

हिन्दी अर्थ :- वृषाकपि- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम महादेव और विष्णु का है॥१३०॥

वाष्पमूष्माश्रु[5]

कृष्णमित्रटीका :- वाष्पयते वाष्पः॥

हिन्दी अर्थ :- वाष्प- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम ऊष्मा का और आंसू का है।

कशिपु[6] त्वन्नमाच्छादनं द्वयम्।

कृष्णमित्रटीका :- भक्ताच्छादने च कशिपु॥

हिन्दी अर्थ :- कशिपु- यह एक (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) नाम अन्न और आच्छादन का है।

1. **Kalapah mas.** means (a) an ornament (b) a peacock's tail (c) a quiver and (d) a bundle. 2. **Parivapah mas.** means (a) canopy (b) sowing and (c) a reservoir, pool. 3. **Gopah mas.** means (a) a cowherd (b) The chief of a cowpen and (c) the superintendent of a village. 4. **Harah mas.** means (a) S'iva (b) Visnu and (c) fire. 5. **Vaspam n.** means (a) mist, vapour and (b) tear, tears. 6. **Kasipuh mas.** means (a) food and (b) clothing.

तल्पं[1] शय्याट्टदारेषु

कृष्णमित्रटीका :- शय्या यथा- 'तल्पं भूस्तरणं तृणानि' (भर्तृहरि)। अट्ट अट्ट अट्टालिका। दारेषु (यथा) गुरुतल्पगः॥

हिन्दी अर्थ :- तल्प- यह एक (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) नाम शय्या, अटारी, और स्त्री का है।

स्तम्बेऽपि विटपो[2]ऽस्त्रियाम्॥१३१॥

कृष्णमित्रटीका :- स्तम्बो गुल्मः। विटपः शाखाऽपि[3]॥१३१॥

हिन्दी अर्थ :- विटप- यह एक नाम तृणों का गुच्छा, विस्तार, और शाखा का है और (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) है॥१३१॥

प्राप्तरूपस्वरूपाभिरूपा[4] बुधमनोज्ञयोः।

कृष्णमित्रटीका :- प्राप्तं रूपं येन। स्वमेव रूपं यस्य। अभि लक्ष्यं रूपमस्य। एते त्रयो बुधमनोज्ञयोः।

हिन्दी अर्थ :- १. प्राप्तरूप, २. स्वरूप, ३. अभिरूप- ये तीन नाम पंडित के और मनोहर के हैं। ये सब वाच्यलिङ्गी हैं।

भेद्यलिङ्गा अमी कूर्मी बीणाभेदश्च कच्छपी[5]॥१३२॥

इति पान्ताः।

कृष्णमित्रटीका :- कूर्मी कमठी। वीणाविशेषः सारस्वत्याख्याः कच्छपी॥१३२॥

(इति पान्ताः)

हिन्दी अर्थ :- कच्छपी- यह एक नाम कछवी का और वीणा के भेद का है। "कुतप- यह एक नाम मृग के रोमों से बने वस्त्र का और दिन के आठवें अंश का है।"

यहाँ पकारान्त शब्द समाप्त हुए॥

खर्णे पुंसि रेफः[6] स्यात्कुत्सिते वाच्यलिङ्गकः।

इति फान्ताः।

1. **Talpam n.** means (a) a bed, couch and (b) and upper story. 2. **Vitapah mas.** means (a) a cluster (b) extension and (c) a branch. 3. M. शाखापि, 4. **Praptarupa,** svarupa and abhirupa mean (a) a scholar and (b) a beautiful man. 5. **Kacchapi f.** means (a) a female tortoise and (b) the lute of Sarasvati. 6. **Rephah mas.** means (a) the letter 'र्', and rephah all g. means contemptible, vile.

अन्तरामवसत्त्वेऽश्वे गन्धर्वो[1] दिव्यगायने॥१३३॥

कृष्णमित्रटीका :- 'अन्तरा मरणजन्मनोर्मध्ये भवं सत्त्वं यातनाशरीरम्' इति न युक्तं लक्ष्यविरोधात्। तस्मादन्तरिक्षवासिनो गन्धर्वाख्या भूताः इति स्वामी। 'गन्धर्वः पशुभेदे सत्पुंस्कोकिलतुरङ्गयोः। अन्तराभवसत्त्वे च गायने खेचरेऽपि च' इत्यन्ये (मेदिनी १०५. ११)॥१३३॥

हिन्दी अर्थ :- रेफ- यह एक नाम र वर्ण का वाचक (पुल्लिङ्ग) और कुत्सित वाची (त्रिलिङ्ग) है। **यहाँ फान्त शब्द समाप्त हुए॥**

गंधर्व- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम मरणजन्म के बीच में स्थित प्राणी, घोड़ा, विश्वावसु आदि गायक का है॥१३३॥

कम्बु[2]र्ना वलये शङ्खे

कृष्णमित्रटीका :- वलयः, बाहुभूषणम्।

हिन्दी अर्थ :- कंम्बु- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम कङ्कण और शंख का है।

द्विजिह्वौ[3] सर्पसूचकौ।

कृष्णमित्रटीका :- द्वे जिह्वे यस्य॥

हिन्दी अर्थ :- द्विजिह्व- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम सर्प और चुगलखोर का है।

पूर्वो[4]ऽन्यलिङ्गः प्रागाह पुंबहुत्वेऽपि पूर्वजान्॥१३४॥

इति वान्ताः।

कृष्णमित्रटीका :- पूर्वो वाच्यलिङ्गः। प्रागिति दिशं देशं कालं चाह। पुंसि बहुत्वे च वर्तमानः पूर्वजातादि-पुरुषानाह॥१३४॥

(इति वान्ताः)।

हिन्दी अर्थ :- पूर्व- यह एक नाम पूर्व दिशा का वाची (त्रिलिङ्ग) है और पितामह आदि पूर्व लोगों का वाची (पुल्लिङ्ग) और बहुवचनान्त है॥१३४॥

यहाँ बान्त शब्द समाप्त हुआ॥

1. **Gandharvah mas.** means (a) the soul after death and previous to its being born again (b) a horse (c) a musk-deer and (d) a celestial musician 2. **Kambuh mas.** means (a) a bracelet and (b) a conchshell. 3. **Dvijhvah mas.** means (a) a snake and (b) an informer. 4. **Purvah all g.** means (a) former, previous; purvah mas. means east and purve pl. means forefathers.

कुम्भौ[1] घटेभमूर्धांशौ

कृष्णमित्रटीका :- इभस्य मूर्धांशः शिरोभागः॥

हिन्दी अर्थ :- कुंभ- यह एक (त्रिलिङ्ग) नाम घट, और हाथी के शिर में भाग का है।

डिम्भौतु[2] शिशुबालिशौ

कृष्णमित्रटीका :- बालिशो मूर्खः॥

हिन्दी अर्थ :- डिंभ- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम बालक और अत्यंत मूर्ख का है।

स्तम्भौ[3] स्थूणाजडीभावौ

कृष्णमित्रटीका :- स्थूणा स्तम्भनकाष्ठम्।

हिन्दी अर्थ :- स्तंभ- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम घर के खम्भे और जड़ता का है।

शम्भू[4] ब्रह्मत्रिलोचनौ ॥१३५॥

कुक्षिभ्रूणार्भका गर्भाः[5]

कृष्णमित्रटीका :- कुक्षौ यथा-गर्भस्थेन समस्तदा। भ्रूण उदरस्थो जन्तुः। अर्भके यथा- गर्भरूपः॥

हिन्दी अर्थ :- शंभु- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम ब्रह्मा और महादेव का है॥१३५॥ गर्भ- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम कुक्षि, गर्भ में स्थित प्राणी, और बालक का है।

विस्रम्भः[6] प्रणयेऽपि च।

कृष्णमित्रटीका :- प्रणयः शृङ्गारप्रार्थना। अपिना विश्वासे॥

हिन्दी अर्थ :- विस्रंभ- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम विनय का और विश्वास का है।

स्याद्भेर्यां दुन्दुभिः[7] पुंसि स्यादक्षे दुन्दुभिः स्त्रियाम्॥१३६॥

कृष्णमित्रटीका :- भेर्यां यथा- 'दुन्दुभिस्ताडितोऽयम्' (वेणीसंहार)। अक्षः पाशकः॥१३६॥

हिन्दी अर्थ :- दुंदुभि- यह एक नाम भेरी (पुल्लिङ्ग) और बालक की डफली आदि का वाचक (स्त्रीलिङ्ग) है॥१३६॥

स्यान्महारजने क्लीबं कुसुम्भं[1] करके पुमान्।

कृष्णमित्रटीका :- महारजनं पद्मकम्। करकः[2] कमण्डलुः।

हिन्दी अर्थ :- कुसंभ- यह एक नाम कुसुम फूल का वाचक (नपुंसकलिङ्ग) और कमंडलु का वाचक (पुल्लिङ्ग) हैं।

क्षत्रियेऽपि च नाभिर्ना

कृष्णमित्रटीका :- ना पुमान्॥

हिन्दी अर्थ :- नाभि- यह एक नाम क्षत्रिय का वाचक (पुल्लिङ्ग) और मुख्य, राजा, चक्र का मध्यभाग, और प्राणी अंग का वाचक (पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग) है।

सुरभि[3] गवि च स्त्रियाम्॥१३७॥

सभा[4] संसदि सभ्ये च

कृष्णमित्रटीका :- सभ्ये तु तात्स्थ्यात् सभा॥

हिन्दी अर्थ :- सुरभि- यह एक नाम गौ का वाचक (स्त्रीलिङ्ग) और वसंत चमेली के फूल आदि का वाचक (नपुंसकलिङ्ग) है॥१३७॥ सभा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम सभा का और सभ्य का है।

त्रिष्वध्यक्षेऽपि वल्लभः[5]।

इति भान्ताः।

कृष्णमित्रटीका :- अध्यक्षोऽत्र[6] गवामध्यक्षः॥

(इति भान्ताः)।

हिन्दी अर्थ :- वल्लभ- यह एक नाम मालिक और कुलीन घोड़े का है तथा (त्रिलिङ्ग) है॥

यहाँ भान्त शब्द समाप्त हुए॥

---

1. **Kumbhah mas.** means (a) a water-pot and (b) the frontal globe on the forehead of an elephant. 2. **Dimbhah mas.** means (a) a child and (b) a fool 3. **Stambhah mas.** means (a) the post or pillar and (b) stupefaction. 4. **S'ambhuh mas.** means (a) Brahma and (b) S'iva. 5. **Garbhah mas.** means (a) the womb (b) the child in the womb and (c) a child. 6. **Visrambhah mas**. means (a) trust, confidence and (b) an affectionate enquiry. 7. **Dundubhih mas.** means (a) a drum and (b) demon slain by Vali; dundubhih f. means dice.

1. **Kusumbham n.** means (a) safflower and (b) gold; kusumbhah mas. means the waterpot of an ascetics. 2. **Nabhih mas.** means (a) the nave of a wheel (b) a Ksatriya and (c) navel; nabhih f. means musk 3. **Surbhih all g.** means (a) frgrant and (b) pleasing; surabhih f. means a cow 4. **Sabha f.** means (a) an assembly and (b) a hall. 5. **Vallabhah all g.** means (a) supreme, head and (b) beloved, dear, 6. M. अध्यक्षोव.

किरणप्रगहौ रश्मी[1]

कृष्णमित्रटीका :- प्रग्रहो रज्जुः॥

हिन्दी अर्थ :- रश्मि- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम किरण का और घोड़े आदि के बाँधने की रस्सी अर्थात् लगाम का है।

कपिभेकौ प्लवङ्गमौ[2] **॥१३८॥**

इच्छामनोभवौ कामौ[3]

कृष्णमित्रटीका :- मनोभवः कंदर्पः।

हिन्दी अर्थ :- प्लवंगम- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम वानर का और मेंढक का है॥१३८॥ काम- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम इच्छा और कामदेव का है।

शक्त्युद्योगौ[4] **पराक्रमौ**[5]**।**

कृष्णमित्रटीका :- शक्तिः प्रभुमन्त्रोत्साहलक्षणा। उद्योगः शत्रुं प्रति बलोत्साहः॥

हिन्दी अर्थ :- पराक्रम- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम शूरवीरता और उद्योग का है।

धर्माः[6] **पुण्ययमन्यायस्वभावाचारसोमपाः ॥१३९॥**

कृष्णमित्रटीका :- यमो धर्मराजः। न्याये यथा- धर्माधिकरणम्। स्वभावे-क्रूरधर्मा। आचारे-धर्मशास्त्रम्। सोमपे- एष धर्मः सनातनः॥१३९॥

हिन्दी अर्थ :- धर्म- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम पुण्य, धर्मराज, न्याय, स्वभाव, आचार, और सोम को पीने वाला का है॥१३९॥

उपायपूर्व आरम्भ उपधा चाप्युक्रमः[7]**।**

कृष्णमित्रटीका :- उपधा अमात्यपरीक्षा। चिकित्साप्युपायपूर्वारम्भत्वात्॥

हिन्दी अर्थ :- उपक्रम- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम उपायपूर्वक आरंभ, नौकर का शील, परीक्षा का उपाय, और चिकित्सा का है।

1. **Ras'mih mas.** means (a) a ray and (b) a rope, string. 2. **Plavangamah mas.** means (a) a monkey and (b) a frog. 3. **Kamah mas.** means (a) desire, wish and (b) Cupid. 4. B. शैर्योद्यागो, 5. **Parakramah mas.** means (a) herosim, courage and (b) endeavour, enterprise 6. **Dharmah mas.** means (a) religion (b) merit (c) Yama (d) nature, character (e) duty, prescribed code of conduct and (f) a drinker of the soma juice. 7. **Upakramah mas.** means (a) beginning, commencement (b) trial or test of a minister's honesty and (b) the treatment (of a patient).

वणिक्पथः पुरं वेदा निगमाः[1] **नागरो वणिक्॥१४०॥**

कृष्णमित्रटीका :- 'निगमो वाणिजे पुर्यां कटे वेदे वणिक्पथे' इति विश्वः (११३. ४२)॥१४०॥

हिन्दी अर्थ :- निगम- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम व्यवहार, नगर, और वेद का है॥१४०॥

नैगमौ[2] **द्वौ**

कृष्णमित्रटीका :- निगमे[3] भवः। 'नैगमः स्यादुपनिषद्वणिजोर्नागरेऽपि च' (विश्व ११३. ४२)॥

हिन्दी अर्थ :- नैगम- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम नगर में होने वाले और वैश्य का है।

बले रामो[4] **नीलचारुसिते त्रिषु।**

कृष्णमित्रटीका :- बले हलधरे। श्वेतासितमनोज्ञेऽपि[5] रामः॥

हिन्दी अर्थ :- राम- यह एक नाम बलदेवजी का वाचक (पुल्लिङ्ग) तथा नील, सुन्दर, और सफेद का वाचक (त्रिलिङ्ग) है राम यह नाम रामचन्द्र और परशुराम का भी है।

शब्दादिपूर्वो वृन्देऽपि ग्रामः[6]

कृष्णमित्रटीका :- शब्दादिपूर्वो यथा- शब्दग्रामः, गुणग्रामः।

हिन्दी अर्थ :- ग्राम- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम गांव, शब्द आदि पूर्वक ग्राम शब्द समूह का और स्वरविशेष का है।

क्रान्तौ च विक्रमः[7] **॥१४१**

कृष्णमित्रटीका :- क्रान्तौ पादादिभिराक्रमणे॥१४१॥

हिन्दी अर्थ :- विक्रम- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम क्रांति और पराक्रम का है॥१४१॥

1. **Nigamah mas.** means (a) trade (b) a city and (c) the Veda. 2. **Nigamah all g.** means (a) relating to the Vedas and (b) a Citizen, and **nigamah mas.** means (a) an Upanisad and (b) a merchant. 3. M. निवार्ये 4. **Ramah mas.** means (a) Rama (b) Balarama and (c) Paras'urama; ramah all g. means (a) blue (b) beautiful and (c) white 5. M. मनोज्ञेपि, 6. **Gramah mas.** means (a) a village and (b) a multitude or collection of any thing. 7. **Vikramah mas.** means (a) stepping over and (b) heroic valour.

स्तोमः[1] स्तोत्रेऽध्वरे वृन्दे जिह्मस्तु[2] कुटिलेऽलसे।
उष्णेऽपि घर्म[3] श्चेष्टालङ्कारे भ्रान्तौ च विभ्रमः[4] ॥१४२॥
गुल्मा[5] रुक्स्तम्बसेनाश्च

कृष्णमित्रटीका :- रुक्, उदरव्याधिविशेषः। स्तम्बो लताप्रतानतृणादिसमूहः। सेनाऽक्षौहिण्यङ्गम्[6] ॥१४२॥

हिन्दी अर्थ :- स्तोम- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम स्तोत्र, यज्ञ, और समूह का है। जिह्म- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम कुटिल और आलस का है। "घर्म- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम घाम और पसीने का है। विभ्रम- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम गहने और भ्रांति का है।" ॥१४२॥ गुल्म- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम गुल्मरोग, तिल्लिरोग, तृणगुच्छा, और सेना का है।

जामिः[7] स्वसृकुलस्त्रियोः।
क्षितिक्षान्त्योः क्षमा[8] युक्ते क्षमं शक्ते हिते त्रिषु॥१४३॥

कृष्णमित्रटीका :- 'योग्ये शक्ते हिते क्षमम्' इति धरणिः ॥१४३॥

हिन्दी अर्थ :- जामि- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम हन और कुलीन स्त्री का है। क्षमा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम पृथ्वी का और सहनशीलता है। क्षम- यह एक नाम योग्य का वाचक (नपुंसकलिङ्ग) है और समर्थ तथा हित का वाचक (त्रिलिङ्ग) है॥१४३॥

त्रिषु श्यामौ[9] हरित्कृष्णौ श्यामा स्याच्छारिवानिशा।

कृष्णमित्रटीका :- हरिन्नीलोवर्णः। शारिवा जम्बूपत्राकृतिर्लता॥

1. **Stomah mas.** means (a) praise, hymn (b) a sacrifice and (c) a multitude. 2. **Jihmah all g.** means (a) wicked and (b) lazy. 3. **Gharmah mas.** means (a) heat, warmth (b) summer and (c) sweat. 4. **Vibhramah mas.** means (a) gesticulation (b) an ornament (c) stepping over (d) an error, mistaker and (d) beauty. 5. **Gulmah mas.** means (a) a disease (b) a clump, cluster and (c) an army. 6. M. सेनक्षौहिण्यङ्गम्, 7. **Jamih f.** means (a) a sister and (b) a virtuous woman 8. **Ksama f.** means (a) the earth and (b) forgiveness, **ksamam n.** means suitable; and **ksamam all g.** means (a) Competent, able and (b) favourable or friendly. 9. **Syamah all g.** means green or blue colour; s'yama f. means (a) a kind of medicinal plant and (b) a woman.

हिन्दी अर्थ :- श्याम- यह एक नाम हरे और काले रंग का है तथा (त्रिलिङ्ग) है। श्यामा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम शतावरी और रात्रि का है।

ललामं[1] पुच्छपुण्ड्राश्वभूषाप्राधान्यकेतुषु॥१४४॥

कृष्णमित्रटीका :- ललमति ललाम्। पुण्ड्रः, अश्वादीनां ललाटचिह्नम्। अश्वो वाजी। भूषा सामर्थ्यादश्वस्यैव। प्राधान्ये यथा- नृपललामः। केतौ- कपिलललामोऽर्जुनः। स्व (प्र) भावे शृङ्गे च (ललामम्) नान्तोऽप्ययं[2] यथा- 'कन्याललामकमनीयमजस्य' (रघु. ०५.६४) इति॥१४४॥

हिन्दी अर्थ :- ललाम- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम पूंछ, घोड़ा आदि के मस्तक का चिह्न, घोड़े का गहना, प्रधानता, और ध्वजा का है॥१४४॥

सूक्ष्ममध्यात्ममपि[3]

कृष्णमित्रटीका :- आत्मनि इति अध्यात्मम्। अपि शब्दादल्पेऽपि[4] ॥

हिन्दी अर्थ :- सूक्ष्म- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम लिङ्गदेह और अल्प का है।

आदौ प्रधाने प्रथमः[5] त्रिषु।
वामौ[6] वल्गुप्रतीपौ द्वौ

कृष्णमित्रटीका :- वल्गु सुन्दरम्। प्रतीपं विपरीतम्॥

हिन्दी अर्थ :- प्रथम- यह एक नाम आदि में होने वाले का और प्रधान का है। इसके आदि से लेकर वर्गपर्य्यत सब शब्द (त्रिलिङ्ग) हैं। वाम- यह एक नाम टेढ़े और विपरीत का है।

अधमौ[7] न्यूनकुत्सितौ ॥१४५॥
जीर्णं च परिभुक्तं च यातयाममिदं[8] द्वयम्।
इति मान्ताः।

1. **Lalamam n.** means (a) a tail (b) the mark made on the forehead of a horse & c. (c) the ornament or decoration of a horse (d) anything best of its kind (e) a flag (f) a horn (g) beautiful. charming and (h) eminence, glory. 2. M. नान्तोप्ययम्, 3. **Suksmam n.** means (a) the Supreme Soul and (b) fraud; suksmah all g. means (a) subtle, minute and (b) little, small. 4. M. शब्दादल्पेपि. 5. **Prathamah all g.** means (a) first, foremost and (b) chief. 6. **Vamah all g.** (a) lovely, beautiful (b) reverse, contrary and (c) left. 7. **Adhamah all g.** means (a) low and (b) vile 8. **Yatayamam all g.** means (a) aged and (b) used, spoiled, rejected.

कृष्णमित्रटीका :- जीर्णे यथा- 'यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च तत्' (गीता १७.१०)। परिभुक्तं यथा- दर्भाः कृष्णाजिनं मन्त्रा ब्राह्मणा हविरग्नयः। आयातयामन्येतानि नियोज्यानि पुनः पुनः॥

(इति मान्ताः।)

हिन्दी अर्थ :- अधम- यह एक नाम न्यून और नीच का है॥१४५॥ यातयाम- यह एक नाम पुराने का और भोजन करने के बाद बचे हुए का है।

यहाँ मान्त शब्द समाप्त हुए॥

तुरङ्गरुडौ ताक्ष्यौं[1] निलयापचयौ क्षयौ[2]॥१४६॥

कृष्णमित्रटीका :- निलयो गृहम्। 'क्षि निवासे' (तु. प. अ.)॥१४६॥

हिन्दी अर्थ :- ताक्ष्र्य- यह एक नाम घोड़े का और गरुड़ का है। इसके आदि से लेकर विषय शब्द तक (पुल्लिङ्ग) हैं। क्षय- यह एक नाम घर और नाश का है॥१४६॥

श्वशुर्यौ[3] देवरश्यालौ भ्रातृव्यौ[4] भ्रातृजद्विषौ

कृष्णमित्रटीका :- श्वसुरस्यापत्ये॥

हिन्दी अर्थ :- श्वशुर्य- यह एक नाम देवर और श्याले का है।

पर्जन्यौ[5] रसदब्देन्द्रौ स्यादर्यः[6] स्वामिवैश्ययोः॥१४७॥

कृष्णमित्रटीका :- रसदब्दो गर्जन्मेघः। आगर्जत्यपि योग्यत्वात्॥१४७॥

हिन्दी अर्थ :- पर्जन्य- यह एक नाम शब्द करते हुए बादल और इन्द्र का है। अर्य- यह एक नाम मालिक और वैश्य का है॥२४७॥

तिष्यः[7] पुष्ये कलियुगे पर्यायोऽ[8]वसरे क्रमे।

1. **Tarksyah mas.** means (a) a horse (b) Garuda (c) a snake and (d) Garuda's elder brother. 2. **Ksayah mas.** means (a) a house (b) loss, decay (c) destruction and (d) a disease.3. **S'vas'uryah mas.** means (a) a husband's younger brother and (b) a wife's brother. 4. **Bhratrvy** ah mas. means (a) a nephew and (b) an enemy. 5. **Parjanyah mas.** means (a) a cloud (b) Indra and (c) the thunder of a cloud. 6. **Aryah mas.** means (a) a master, lord and (b) a Vais'ya. 7. **Tisyah mas.** means (a) the star, Pusya and (b) the last of the four Yugas. 8. **Paryayah mas.** means (a) an opportunity, occasion and (b) turn, succession.

प्रत्ययो[1]ऽधीनशपथज्ञानविश्वासहेतुषु॥१४८॥ रन्ध्रे शब्दे

कृष्णमित्रटीका :- अधीन आयत्तः, यथा- राजप्रत्ययाः प्रजाः। विश्वासे- न शत्रोः प्रत्ययः। हेतौ- स्त्रीप्रत्ययः कलहः॥१४८॥ रन्ध्रेरिपोः प्रत्ययमासाद्य प्रहरेत्। शब्दः कृत्तद्धितादिः।

हिन्दी अर्थ :- तिष्य- यह एक नाम पुष्य नक्षत्र और कलियुग का है। पर्य्याय- यह एक नाम अवसर और क्रम का है। प्रत्यय- यह एक नाम अधीन, शपथ, ज्ञान, विश्वास, हेतु, छिद्र, और शब्द का है॥१४८॥

अथानुशयो[2] दीर्घद्वेषानुतापयोः।

कृष्णमित्रटीका :- दीर्घे द्वेषे॥

हिन्दी अर्थ :- अनुशय- यह एक नाम बहुत दिन के वैर का और पश्चात्तापका है।

स्थूलोच्चयस्त्वसाकल्ये[3] गजानां मध्यमे गते॥१४९॥

कृष्णमित्रटीका :- स्थूलस्य मुख्यस्योच्चय- नमन्यस्यासंग्रहात्, स्थूलावलोकेनेत्यर्थः हस्तिनां मध्यगतौ, तदुक्तं **पालकाप्ये**- 'नीचैर्गतं स्थूलाच्चयो वीचिमार्ग इति तिस्रो गतयः'॥१४९॥

हिन्दी अर्थ :- स्थूलोच्चय- यह एक नाम न्यून और हाथियों की मध्यम गति का है॥१४९॥

समयाः[4] शपथाचारकालसिद्धान्तसंविदः।

कृष्णमित्रटीका :- शपथे यथा- कृतसमयः। आचारे- समयात् श्रावयेच्छिष्यम्। काले- संध्यासमयः। सिद्धान्ते- बौद्धसमयः। संविदि- अन्योन्यसमयः।

हिन्दी अर्थ :- समय- यह एक नाम शपथ, सौगंध, आचार, काल, सिद्धान्त, और श्रेष्ठ भाषा का है।

व्यसनान्यशुभं दैवं विपदित्यनया[5]स्त्रयः॥१५०॥

1. **Pratyayah mas.** means (a) a dependent (b) an oath (c) knowledge, cognition (d) Faith, confidence (e) a cause (f) a hole and (g) a termination, an affix or suffix. 2. **Anus'ayah mas.** means (a) acute harted and (b) repentance. 3. **Sthuloccayah mas.** means (a) incompleteness (b) the middle pace of an elephant and (c) rock 4. **Samayah mas.** means (a) an oath (b) an established rule of conduct, (c) time (d) a doctrine (e) mind and (f) a sign, indication. 5. **Anayah mas.** means. (a) a bad conduct (b) misfortune and (c) adversity, distress.

कृष्णमित्रटीका :- व्यसने, विरुद्धो नयोऽनयः। अशुभदैवे- नयो नामानुकूलं दैवं तद्भिन्नमित्यर्थः। विपदि, विरुद्धं नयनमनयः ॥१५०॥

हिन्दी अर्थ :- अनय- यह एक नाम व्यसन, अशुभ दैव, और विपत् का है॥१५०॥

अत्ययो[1]ऽतिक्रमे कृच्छ्रे दोषे दण्डेऽपि

कृष्णमित्रटीका :- अतिक्रम उल्लङ्घः, यथा- धर्मात्ययः। कृच्छ्रे प्राणात्ययः। दोषे- गुणिनां नात्ययं कुर्यात्। दण्डे वाक्पारुष्ये- अत्ययः शतम्।

हिन्दी अर्थ :- अत्यय- यह एक नाम अतिक्रम, कष्ट, दोष, और दंड का है।

अथापदि।

युद्धायत्योः संपरायः[2]

कृष्णमित्रटीका :- सम्परायः सम्यक्परागमनम् (यथा)- यत्र सांपरायिकं दुर्गं कुर्यात्।

हिन्दी अर्थ :- संपराय- यह एक नाम आपत्, युद्ध, और उत्तरकाल का है।

पूज्य[3]स्तु श्वशुरेऽपि च ॥१५१॥

पश्चादवस्थायिबलं समवायश्च संनयौ[4]।

कृष्णमित्रटीका :- पश्चादवस्थायिबलमनुबलाख्यम्। समवायो मेलनम्। संनयति संनयनं चेति क्रमेणार्थः॥

हिन्दी अर्थ :- पूज्य- यह एक नाम पूजा के योग्य और श्वसुर का है।१५१॥ अवस्थायि यह एक नाम सेना के पृष्ठभाग में जो सेना स्थित हो उसके पीछे स्थित हुई सेना का है। समवाय- यह एक नाम समूह का और सन्नाय का है।

संघाते संनिवेशे च संस्त्यायः[5]

कृष्णमित्रटीका :- 'स्त्यै संघाते' (भ्वा. प. अ.) संस्त्यायः।

हिन्दी अर्थ :- संस्त्याय- यह एक नाम समूह, स्थान, और विस्तार का है।

प्रणया[1] स्त्वमी ॥१५२॥

विश्रम्भयाच्ञाप्रेमाणः

कृष्णमित्रटीका :- विश्रम्भो विश्वासः॥

हिन्दी अर्थ :- प्रणय- यह एक नाम विश्वास, याच्ञा, और प्रेम का है॥१५२॥

विरोधेऽपि समुच्छ्रयः[2]॥

कृष्णमित्रटीका :- समुल्लङ्घ्य श्रयणमूर्ध्वश्रयणं च समुच्छ्रयः।

हिन्दी अर्थ :- समुच्छ्रय- यह एक नाम वैर का और उन्नति का है।

विषयो[3] यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि॥१५३॥

कृष्णमित्रटीका :- विसिनोति विषयः। यस्य मत्स्यादेर्यो जलादिर्ज्ञातः स तस्य विषयः। गोचरो देशश्च। शब्दादयः शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाः॥१५३॥

हिन्दी अर्थ :- विषय- यह एक नाम मत्स्य आदि के द्वारा ज्ञात जल विषय वस्तु और शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध का है॥१५२॥

निर्यासे[4]ऽपि कषायोऽस्त्री

कृष्णमित्रटीका :- निर्यासः क्वाथरसः। कषायस्तुवराख्यो रसः। रक्तपीतवर्णयोगे च, यथा- कषायवस्त्रः॥

हिन्दी अर्थ :- कषाय- यह एक नाम क्वाथ केरस और विलेपन आदि का है तथा (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) है।

स्यात्सभायां[5] प्रतिश्रयः[6]।

कृष्णमित्रटीका :- प्रतिश्रय आस्पदेऽपि[7]।

हिन्दी अर्थ :- प्रतिश्रय- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम सभा और समीप गमन का है।

---

1. **Atyayah mas.** means (a) transgression (b) distress (c) defect and (d) punishment. 2. **Samparayah mas.** means (a) a war (b) a calamity and (c) future 3. **Pujyah mas.** means (a) vulnerable and (b) a father-in-law. 4. **Sannyah mas.** means (a) the rear-guard of an army and (b) a collection. 5. **Samstyayah mas.** means (a) a collection (b) vicinity and (c) expansion.

1. **Pranyah mas.** means (a) faith (b) solicitation (c) love and (d) intimacy. 2. **Samucchrayah mas.** means (a) elevation, height and (b) opposition, enmity. 3. **Visyah mas.** means (a) a place (b) a country and (c) an object of sense 4. **Kasayah mas n.** means (a) decoction (b) astringent flavour and (c) red colour. 5. B. सभायां च, 3. **Pratisrayah mas.** means (a) a shelter, asylum and (b) an assenbly. 6. M. आस्पदेपि.

प्रायो[1] भूम्न्यन्तगमने

कृष्णमित्रटीका :- भूम्नि बाहुल्ये, यथा- प्रायेण याज्ञिकः। अन्तगमनं नाशः, यथा- प्रायोराविष्टः। तुल्येऽपि-मूर्खप्रायः।

हिन्दी अर्थ :- प्राय- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम बहुत और अन्नत्याग का है।

मन्युर्दैन्ये[2] क्रतौ क्रुधि ।।१५४।।

कृष्णमित्रटीका :- क्रतौ यथा-शतमन्यु-रिन्द्रः ।।१५४।।

हिन्दी अर्थ :- मन्यु- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम दीनता, यज्ञ, और क्रोध का है।।१५४।।

रहस्योपस्थयोर्गुह्यम्[3]

कृष्णमित्रटीका :- रहस्यं गोप्यम्। उपस्थो योन्यादिः।।

हिन्दी अर्थ :- गुह्य- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम गुप्त और गुदालिंग का है।

सत्यं[4] शपथतथ्ययोः।

कृष्णमित्रटीका :- शपथे यथा-'सत्येन शापयेद्विप्रम्'। तथ्ये-सत्यवादी

हिन्दी अर्थ :- सत्य- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम सौगन्ध और सच का है।

वीर्यं[5] बले प्रभावे च

कृष्णमित्रटीका :- बले-वीर्यसंपन्नः। प्रभावो द्रव्यशक्तिः, यथा- रसवीर्यविपाकाः।।

हिन्दी अर्थ :- वीर्य- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम बल और प्रभाव का है।

द्रव्यं भव्ये[6] गुणाश्रये ।।१५५।।

कृष्णमित्रटीका :- भव्ये योग्ये। 'द्रव्यं च भव्ये' (५.३. १०४) इति साधु। गुणानां रूपादीनामाश्रयः पृथिव्यादिः ।।१५५।।

1. **Prayah mas.** means (a) excess, abundance and (b) death. 2. **Manyuh mas.** means (a) a wretched or miserable state (b) a sacrifice and (c) anger. 3. **Guhyam n.** means (a) a secret and (b) the male or female organ of generation. 4. **Satyam n.** means (a) an oath (b) trnth and (c) like 5. **Viryam n.** means (a) vigour, strength (b) dignity and (c) semen virile. 6. **Dravyam n.** means (a) a fit or suitable roject (b) an elementary substance, the substratum of properties and (d) wealth.

हिन्दी अर्थ :- द्रव्य- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम सत्त्व और गुणों के आश्रय का है।।१५५।।

धिष्ण्यं[1] स्थाने गृहे भेऽग्नौ

कृष्णमित्रटीका :- भे नक्षत्रे।।

हिन्दी अर्थ :- धिष्ण्य- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम स्थान, स्त्री, नक्षत्र, और अग्नि का है।

भाग्यं[2] कर्म शुभाशुभम्।

कृष्णमित्रटीका :- पुराकृतं कर्म भाग्यम्।

हिन्दी अर्थ :- भाग्य- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम शुभ अशुभ कर्म का है।

कसे (शे) रुहेम्नोर्गाङ्गेयम्[3]

कृष्णमित्रटीका :- कसेरुर्जलजकन्दः।

हिन्दी अर्थ :- गांगेय- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम कशेरु और जमालगोटे की जड़ का है।

विशल्या[4] दन्तिकापि च ।।१५६।।

कृष्णमित्रटीका :- विशल्या लाङ्गली। 'करिआरी' लोके 'दन्तीहूली' (च) लोके।।१५६।।

हिन्दी अर्थ :- विशल्या- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम जमालगोटे की जड़ और गिलोय का है।।१५६।।

वृषाकपायी श्रीगोर्योः

कृष्णमित्रटीका :- वृषाकपेः स्त्री[5]। वृषाकप्यग्नि' (४. १. ३७) इति ङीष् ए (ऐ) त्वम्।।

हिन्दी अर्थ :- वृषाकपायी- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम लक्ष्मी और गौरी का है।

अभिख्या[6] नामशोभयोः।

कृष्णमित्रटीका :- शोभायां यथा- 'काप्यभिख्या तयोरासीत्' (रघुवंशम्)।।

हिन्दी अर्थ :- अभिख्या- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम, नाम का और शोभा का है।

1. **Dhisnym n.** means (a) a place (b) a house (c) a star and (d) fire. 2. **Bhagyam n.** means (a) fate, destiny and (b) prosperity 3. **Gangeyam n.** means (a) a kind of grass and (b) gold; Gangayah mas. means Bhisma Pitamaha. 4. **Vis'alya f.** means (a) the flame of fire and (b) various medicinal plants 5. **Vrsakapagi f.** is an epithet of (a) Laksmi and (b) Sarasvati. 6. **Abhikhya f.** means (a) a name (b) beauty and (c) fame.

आरम्भो निष्कृतिः शिक्षा पूजनं संप्रधारणम्॥१५७॥
उपायः कर्मचेष्टा च चिकित्सा च नव क्रियाः[1]।

कृष्णमित्रटीका :- आरम्भे क्रियाशब्दो यथा- क्रिया मन्त्रमूलाः निष्कृतिरपराधपरिहारः, यथा- महापातकिनां प्राणान्तिका क्रिया। शिक्षा यथा- क्रियाहि द्रव्यं विनयति नाद्रव्यम्। पूजने- गुरुदेवक्रियारतः। संप्रधारणा (णं) विचारः, यथा- क्रियां विना को हि जानाति कृत्यम्॥१५७॥ उपायेसामादिकाः क्रियाः। कर्मणिपाकक्रिया। चेष्टा यथा-मूर्च्छया निष्क्रियः[2]। चिकित्सायां, (यथा) ग्रहण्यामतीसारक्रिया॥

हिन्दी अर्थ :- क्रिया- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम आरंभ, निष्कृति, शिक्षा, पूजन, संप्रधारण है॥१५७॥ उपाय, कर्म, चेष्टा, चिकित्सा ये नव प्रकार की क्रिया का नाम है।

छाया[3] सूर्यप्रिया कान्तिः प्रतिबिम्बनातपः॥१५८॥

कृष्णमित्रटीका :- छाया सूर्यस्य प्रिया पत्नी। कान्तौ यथा- विच्छायः। प्रतिबिम्बेसंक्रान्तच्छाय आदर्शः। अनातपः धर्माभावः, वृक्षच्छाया॥१५८॥

हिन्दी अर्थ :- छाया- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम सूर्यप्रिया, कांति, प्रतिबिंब, और अनातप इन-चारों अर्थों का वाची है॥१५८॥

कक्ष्या[4] प्रकोष्ठे हर्म्यादेः काञ्च्यां मध्येभबन्धने।

कृष्णमित्रटीका :- राजगृहादेः प्रारम्भकोष्ठके यथा-सप्त कक्ष्या अतिक्रम्य। काञ्चीबन्धदाम यथा- 'परिधानाद्बहिः। कक्ष्या निबध्या त्वासुरी मता।' मध्ये इभस्य बन्धने, यथा- हेमकक्ष्या गजाः। उद्योगेऽपि लक्षणया-परार्थं बद्धकक्ष्याणाम्।

हिन्दी अर्थ :- कक्ष्या- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम हवेली आदि के भीतर का मकान, करघनी, तथा हस्तिबंधन का मध्यभाग का है।

1. **Krya f.** means (a) an action, undertaking (b) expiation (c) teaching, instruction (d) worship (e) thinking (f) any of the four means of success known as conciliation & c. (g) bodily action or work (h) effort and (i) medical treatment. 2. M. निः क्रियः, 3 **Chaya f.** Means (a) the wife of the sun (b) lustre, beauty (c) reflection and (d) shadow 4. **Kaksya f.** means (a) an inner apartment (b) a girdle and (c) the girth of an elephant.

कृत्या[1] क्रियादेवतयोस्त्रिषु भेद्ये धनादिभिः॥१५९॥

कृष्णमित्रटीका :- क्रियायां यथा- कां कृत्यामकार्षीत्। देवता मारणहेतुः। धानादिना यः शत्रोः सकाशाद्भिद्यते सोऽपि[2] कृत्यः॥१५९॥

हिन्दी अर्थ :- कृत्या- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम क्रिया और देवता का वाचक (त्रिलिङ्ग) है तथा धन स्त्री, पृथ्वी आदि से भेदन करने के योग्य परदेशगत पुरुष आदि वाचक वाच्यलिङ्गी हैं। आगे के शब्द वर्गान्ततक (त्रि.) हैं॥१५९॥

जन्यः[3] स्याज्जनवादेऽपि

कृष्णमित्रटीका :- जनस्य जल्पः। 'मतजन-' (४. ४. ९७) इति यत्। अपिना संग्रामः॥

हिन्दी अर्थ :- जन्य- यह एक नाम निन्दित वाद और युद्ध आदि का है।

जघन्यो[4]ऽन्तेऽधमेऽपि च।
गर्ह्याधीनौ च वक्तव्यौ[5] कल्यौ[6] सज्जनिरामयौ॥१६०॥

कृष्णमित्रटीका :- कलासु साधुः कल्यः। सज्जोऽत्र[7] नवः, दक्षश्च। कल्यं तु प्रभाते॥१६०॥

हिन्दी अर्थ :- जघन्य- यह एक नाम चांडाल आदि और नीच का है। वक्तव्य- यह एक नाम निन्दा के योग्य और अधीन का है। कल्प- यह एक नाम सामग्रीसहित और आरोग्य का है।

आत्मवाननपेतोऽर्थादर्थ्यौ[8]

कृष्णमित्रटीका :- आत्मवान् साधुः। अर्थादनपेतः, युक्तः। 'धर्मपथ्यर्थ-' (४. ४. ९२) इति यत्॥

हिन्दी अर्थ :- अर्थ्य- यह एक नाम बुद्धिमान् और प्रयोजन से युक्त पुरुष का है।

1. **Krtya f.** means (a) an action, deed and (b) a female diety, and Krtya all g. means one who may be subdued from allegiance. 2. M. सापि, 3. **Janyah mas.** means (a) rumour and (b) war. 4. **Jaghanyah all g.** means (a) last (b) worst and (c) of low origin. 5. **Vaktavyah all g.** means (a) fit to be said (b) censurable and (c) dependent. 6. **alyah all g.** means (a) ready, prepared and (b) healthy. 7. M. सज्जोत्र 8. **Arthyah all g**. means (a) wise (b) rich and (c) appropriate.

पुण्यं[1] तु चार्वपि।
रूप्यं[2] प्रशस्ते रूपेऽपि

कृष्णमित्रटीका :- 'रूपादाहतप्रशंसयोः' (५. २. १२०) यत् (प्)। अपिना आहते हेमरूप्ये॥

हिन्दी अर्थ :- पुण्य- यह एक नाम सुन्दर और सुकृतधर्म का है। रूप्य- यह एक नाम सुन्दर रूप और रुपया तथा अशरफी आदि का है।

वदान्यो[3] वल्गुवागपि॥१६१॥

कृष्णमित्रटीका :- वदान्यो दाताऽपि[4]॥१६१॥

हिन्दी अर्थ :- वदान्य- यह एक नाम टेढ़ा बोलने वाले और दाता का है॥१६१॥

न्याय्येऽपि मध्यम्[5]

कृष्णमित्रटीका :- न्याय्ये यथा-मध्यस्थः॥

हिन्दी अर्थ :- न्याय्य- यह एक नाम उचित और अवलग्न का है।

सौम्यं[6] तु सुन्दरे सोमदेवते।

(इति यान्ताः)

कृष्णमित्रटीका :- सोमो देवताऽस्य[7]। 'सोमाट्ट्यण्' (४. २. ३०)॥

(इति यान्ताः)।

हिन्दी अर्थ :- सौम्य- यह एक नाम सुन्दर, मृगशिर। नक्षत्र और बुध का है। **यहाँ यान्त शब्द समाप्त हुए।** आगे वार से दुरोदरशब्द तक (पुल्लिङ्ग) हैं। जहाँ भेद है, बतायेंगे।

निवहावसरौ वारौ[8]

कृष्णमित्रटीका :- निवहो यथा- ग्रामवारः। अवसरे-बारंबारम्॥

हिन्दी अर्थ :- वार- यह एक नाम समूह और अवसर का है।

संस्तरौ[1] प्रस्तराध्वरौ॥१६२॥

कृष्णमित्रटीका :- संस्तीर्यते संस्तरः। प्रस्तरः शय्या। अध्वरो यज्ञः॥१६२॥

हिन्दी अर्थ :- संस्तर- यह एक नाम कुश की शय्या और यज्ञ का है॥१६२॥

गुरू[2] गीष्पतिपित्राद्यौ

कृष्णमित्रटीका :- गीष्पतिर्जीवः॥

हिन्दी अर्थ :- गुरु- यह एक नाम बृहस्पति और पिता आदि का है।

द्वापरौ[3] युगसंशयौ।

कृष्णमित्रटीका :- द्वाभ्यां कृतत्रेताभ्यां परं युगम्। संशये, द्वौ परौ मुख्यावत्र, उभयकोटिकत्वात्। पृषोदरादित्वात् (६. ३. १०९) आत्वम्॥

हिन्दी अर्थ :- द्वापर- यह एक नाम युग और संशय का है।

प्रकारौ[4] भेदसादृश्ये

कृष्णमित्रटीका :- भेदो विशेषः, यथा-पलाण्डुप्रकारो गृञ्जनः। सादृश्ये विषप्रकारः पिशुनः॥

हिन्दी अर्थ :- प्रकार- यह एक नाम भेद का और सदृशता का है।

आकाराविङ्गिताकृती[5]॥१६३॥

कृष्णमित्रटीका :- इङ्गितं भावसूचकचेष्टा। आकृतिर्वैवर्ण्यादिः॥१६३॥

हिन्दी अर्थ :- आकार- यह एक नाम चेष्टा और आकृति का है॥१६२॥

किंशारू[6] धान्यशूकेषु

कृष्णमित्रटीका :- इषुः शरः॥

हिन्दी अर्थ :- किंशारु- यह एक नाम खेती के तुष विशेष का है।

मरू[7] धन्वधराधरौ।

---

1. **Punyam all g.** means (a) holy, pure and (b) Charming; punyam n. means merit. 2. **Rupyam all g.** means beautiful, lovely; and rupyam n. means (a) stamped coin rupee and (b) silver. 3. **Vadanyah all g.** means (a) eloquent and (b) munificent. 4. M. दातापि, 5. **Madhyam all g.** mean (a) justifiable (b) waist and (c) the middle. 6. **Saumyam all g.** means (a) gentle (b) handsome and (c) a thing related to Soma. 7. M. देवतास्य 8. **Varah mas.** means (a) multitude, herd (b) an opportunity and (c) a day of the week.

1. **Sanstarah mas.** means (a) a bed, couch and (b) a sacrifice. 2. **Guruh mas.** means (a) Jupiter (b) a father and (c) a teacher. 3. **Dvaparah mas.** means (a) one of the four Yugas and (b) doubt. 4. **Prakarah mas.** means (a) kind and (b) similitude. 5. **Akarah mas.** means (a) gesticulation (b) hint and (c) form, shape. 6. **Kimsaruh mas.** means (a) the beard of corn and'(b) an arrow 7. **Maruh mas.** means (a) a desert or any region destitute of water and (b) a mountain.

कृष्णमित्रटीका :- धन्व (न्वा) निर्जलदेशः॥

हिन्दी अर्थ :- मरु- यह एक नाम मरुस्थल और पर्वत का है।

अद्रयो[1] द्रुमशैलार्काः स्त्रीस्तनाब्दौ पयोधरौ[2]॥१६४॥

कृष्णमित्रटीका :- अब्दो मेघः॥१६४॥

हिन्दी अर्थ :- अद्रि- यह एक नाम वृक्ष, पर्वत और सूर्य का है। पयोधर- यह एक नाम स्त्री के स्तन और बादल का है॥१६४॥

ध्वान्तारिदानवाः वृत्राः[3]

बलिहस्तांशवः कराः[4]।

कृष्णमित्रटीका :- राजग्राह्यभागो बलिः॥

हिन्दी अर्थ :- वृत्र- यह एक नाम अंधेरा, शत्रु और दानव का है। कर- यह एक नाम बलि, हाथ और किरण का है।

प्रदरा[5] भङ्गनारीरुग्वाणाः

कृष्णमित्रटीका :- नारीरुग्रुधिरस्रावः॥

हिन्दी अर्थ :- प्रदर- यह एक नाम भंग, स्त्री का प्रदर रोग और बाण का है।

अस्राः[6] कचा अपि॥१६५॥

कृष्णमित्रटीका :- अस्यन्ते अस्राः॥१६५॥

हिन्दी अर्थ :- अस्र- यह एक नाम केश और कोण का है॥१६५॥

अजातशृङ्गो गौः कालेऽप्यश्मश्रुर्ना च तूवरौ[7]।

कृष्णमित्रटीका :- काले अजातशृङ्गो गौर्ना च काले अजातश्मश्रुः। तूवरः। 'तु' सौत्रः, तस्माद्वरः दीर्घश्च-बाहुलकात्॥

हिन्दी अर्थ :- तूवर- यह एक नाम समय पर सींग न आने वाले बैल का और समय पर आये मूंछ दाढ़ीवाले पुरुष का है।

1. **Adrih mas.** means (a) a tree (b) a mountain and (c) the sun. 2. **Payodharah mas.** means (a) the breast and (b) a cloud. 3. **Vrtrah mas.** means (a) darkness (b) an anemy (c) the demon Vrtrasura and (d) a kind of mountain. 4. **Karah mas.** means (a) tax (b) the hand (c) a ray of light and (d) an elephant's trunk. 5. **Pradarah mas.** means (a) a fracture (b) a kind of female disease and (c) an arrow. 6. **Asrah mas.** means (a) an angle and (b) the hair; asram; n. means (a) tear and (b) blood 7. **Tuvarah mas.** means (a) a homeless cattle (b) a beardless man and (c) astringent flavour.

स्वर्णेऽपि राः[1]

कृष्णमित्रटीका :- 'रै' शब्दः स्वर्णे वित्ते च॥

हिन्दी अर्थ :- रै- यह एक नाम धन और सोने का है।

परिकरः[2] पर्यङ्कपरिवारयोः॥१६६॥

कृष्णमित्रटीका :- परिक्रियते परिकीर्यते च॥१६६॥

हिन्दी अर्थ :- परिकर- यह एक नाम पलंग और कुटुंब का है॥१६६॥

मुक्ताशुद्धौ च तारः[3] स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- मुक्तानां शुद्धिस्तारः॥

हिन्दी अर्थ :- तार- यह एक नाम मोतियों की शुद्धि, तैरना ऊँचा शब्द और चाँदी का है।

शारो[4] वायौ स तु त्रिषु।

कर्बुरे

कृष्णमित्रटीका :- 'श्रृवायुवर्ण-' (वा. ३. ३. २१) इति घञ्। कर्बुरो नानावर्णः॥

हिन्दी अर्थ :- शार- यह एक नाम वायु का वाचक (पुल्लिङ्ग) और कर्बुर वर्ण का वाचक वाच्यलिंगी हैं।

अथ प्रतिज्ञाजिसंविदापत्सु संगरः[5]॥१६७॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रतिज्ञायां यथा- सत्यसङ्गरः। आजौ युद्धे। संविदि-अन्योन्यं वृत्तसङ्गरौ। आपदिसङ्गरे शरणं सुहृत्॥१६७॥

हिन्दी अर्थ :- संगर- यह एक नाम प्रतिज्ञा, युद्ध, क्रिया का करना और दुःख का है॥१६७॥

वेदभेदे गुह्यवादे मन्त्रः[6]

कृष्णमित्रटीका :- मन्त्रातिरिक्तो वेदभागो ब्राह्मणम्। गुह्यवादो-रहसि वक्तव्यम्।

1. **Rah mas.** means (a) riches, wealth and (b) gold. 2. **Parikarah mas.** means (a) bed and (b) family. 3. **Tarah mas.** means (a) the clearness of a pearl and (b) a beautiful pearl; taram n., f. means (a) a star and (b) the pupil of the eye. 4. **S'arah mas.** means (a) air, wind, **sarah** all g. means variegated. 5. **Sangarah mas.** means (a) a promise (b) war (c) knowledge (d) misfortune, calamity and (e) poison 6. **Mantrah mas.** means (a) a Vedic hymn and (b) a secret plan, consultation.

हिन्दी अर्थ :- मंत्र- यह एक नाम वनविशेष का, गुप्त बात देव आदि के साधन और वेद भेद का है।

मित्रो[1] रवावपि।

मखेषुयूपखण्डेषु[2] स्वरुः[3]

कृष्णमित्रटीका :- मखो यागः। इषुः शरः। 'यूपस्य खण्डः' इत्येके। 'चत्वारोऽर्थाः' इति स्वामी। 'खण्ड' स्थाने 'खड्गम्' अन्ये॥

हिन्दी अर्थ :- मित्र- यह एक नाम सूर्य का वाचक (पुल्लिङ्ग) है और प्रिय का वाचक (नपुंसकलिङ्ग) है। स्वरु- यह एक नाम यज्ञ स्तम्भ के खंड और वज्र का है।

गुह्येऽप्यवस्करः[4] ॥१६८॥

कृष्णमित्रटीका :- अवस्करो वर्चस्कोऽपि[5] ॥१६८॥

हिन्दी अर्थ :- अवस्कर- यह एक नाम गुप्त और मल का है॥१६८॥

आडम्बरस्तूर्यरवे[6] गजेन्द्राणां च गर्जिते।
अभिहारो[7] ऽभियोगे च चौर्ये संहननेऽपि च॥१६९॥

कृष्णमित्रटीका :- अभियोगः=अभ्याक्रमणम् संहननं कवचादिधारणम्॥१६९॥

हिन्दी अर्थ :- आडंबर- यह एक नाम बाजे के शब्द का और हस्तियों की गर्जना का है। अभिहार- यह एक नाम अभिहरण, चौरकर्म और कवच आदि को धारण करने का है॥१६९॥

स्याज्जङ्गमे परीवारः[8] खड्गकोशे परिच्छदे।

कृष्णमित्रटीका :- 'परिवारः परिजने खड्गकोशे परिच्छदे' (मेदिनी १४३. २८०)। परिच्छद उपकरणम्॥

हिन्दी अर्थ :- परीवार- यह एक नाम जंगमविशेष, तलवार का म्यान, उपकरण और सामग्री का है।

---

1. **Mitrah mas.** means the sun and **mitram n.** means a friend. 2. B. and K. मखेषुयूपखण्डेऽपि 3. **Svaruh mas.** means (a) a sacrifice (b) an arrow and (c) a part of the sacriflcial post. 4. **Avaskarah mas.** means (a) ordure and (b) privities. 5. M. वर्चस्वपि 6. **Adambarah mas.** means (a) a drum (b) din and (c) the roaring of an elephant. 7. **Abhiharah mas.** means (a) an attack (b) accusation (c) stealing and (d) arming oneself with armour and other weapons 8. **Parivarah mas.** means (a) attendants or followers taken collectivly (b) a sheath and (c) covering.

विष्टरो[1] विटपी दर्भमुष्टिः पीठाद्यमासनम्॥१७०॥

कृष्णमित्रटीका :- विस्तीर्यते। 'वृक्षासनयोर्विष्टरः' (८. ३. ९३) इति साधुः। दर्भमुष्टिः श्राद्धादौ ब्राह्मणासनत्वेनाम्नाता॥१७०॥

हिन्दी अर्थ :- विष्टर- यह एक नाम वृक्ष कुश की मुष्टि अर्थात् चौबीस कुशों और काठ आदि से बने हुए आसन आदि का है॥१७०॥

द्वारि दाःस्थे प्रतीहारः[2] प्रतीहार्यप्यनन्तरे।

कृष्णमित्रटीका :- प्रतिह्रियतेऽत्रानेन वा। अनन्तरे द्वाः स्थे॥

हिन्दी अर्थ :- प्रतीहार- यह एक नाम द्वार और द्वार पर स्थित हुए पुरुष का है। प्रतीहारी- यह एक नाम द्वार पर स्थित हुई स्त्री का है और (स्त्रीलिङ्ग) है। इन् प्रत्ययान्त नहीं है।

विपुले नकुले विष्णौ बभ्रुः[3] स्यात्पिङ्गले त्रिषु॥१७१॥
सारो[4] बले स्थिरांशे च न्याय्ये क्लीबं वरे त्रिषु।

कृष्णमित्रटीका :- बले यथा- घृतान्मांसं तु सारकृत्। स्थिरांशे-चन्दनसारः, मज्जासारः। न्याय्ये- नैतत्सारम्। वरे यथा- जये धरित्र्याः पुरमेव सारम्॥

हिन्दी अर्थ :- बभ्रु- यह एक नाम मोटे नेवले और विष्णु का वाचक (पुल्लिङ्ग) है तथा पिंगल का वाची (त्रिलिङ्ग) है॥१७१॥ सार यह एक नाम बल, स्थिर और अंश, का वाची (पुल्लिङ्ग) है। योग्य का वाची (नपुंसकलिङ्ग) है और श्रेष्ठ वाची (त्रिलिङ्ग) है।

दुरोदरो[5] द्यूतकारे पणे द्यूते दुरोदरम्॥१७२॥

कृष्णमित्रटीका :- पणे ग्लहे॥१७२॥

हिन्दी अर्थ :- दुरोदर- यह एक नाम जुवारी का वाचक (पुल्लिङ्ग) और दाव तथा जुवा का वाचक (नपुंसकलिङ्ग) है॥१७२॥

---

1. **Vistarah mas.** means (a) a tree (b) a hand ful of kus'a grass and (b) a seat. 2. **Pratiharah mas.** means (a) door and (b) a door keeper, pratithari f. means a female door-keeper. 3. **Babhruh mas.** means (a) big (b) a mongoose (c) Visnu and (d) a sage; babhruh all g. means deep-brown. 4. **Sarah mas.** means (a) strength, vigour and (b) essence of any thing, **saram n.** means justifiable and **sarah all g.** means best or excellent 5. **Durodarah mas.** means (a) a gamester and (b) a stake; **durodaram n.** means gambling.

महारण्ये दुर्गपथे कान्तारः[1] पुंनपुंसकम्।
मत्सरो[2] ऽन्यशुभद्वेषे तद्वत्कृपणयोस्त्रिषु ॥१७३॥

कृष्णमित्रटीका :- अन्यदीयशुभस्य द्वेषः। तद्वान्= अन्यशुभद्वेषवान्, तत्र वाच्यलिङ्गः ॥१७३॥

हिन्दी अर्थ :- कान्तार- यह एक नाम बड़े वन और दुर्गम मार्ग का है तथा (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) है। मत्सर- यह एक नाम दूसरे की संपत्ति को नहीं सहने का वाचक (पुल्लिङ्ग) और कृपण का वाचक (त्रिलिङ्ग) है॥१७३॥

देवाद्वृते वरः[3] श्रेष्ठे त्रिषु क्लीबे मनाक्प्रिये।

कृष्णमित्रटीका :- देवादिभ्यः संतुष्टेभ्यः वृते प्राप्ते, यथा-वरो लब्धः। श्रेष्ठे वररुचिः। त्रिषु ईषत्प्रिये- वरं कूपशताद्वापी॥

हिन्दी अर्थ :- वर- यह एक नाम देवता से वाञ्छा पाने का वाचक (पुल्लिङ्ग) और श्रेष्ठ का वाचक (त्रिलिङ्ग) है तथा इष्ट का और प्रिय का वाची (नपुंसकलिङ्ग) है।

वंशाङ्कुरे करीरो[4] ऽस्त्री तरुभेदे घटे च ना॥१७४॥

कृष्णमित्रटीका :- तरुभेदघटनयोर्ना॥१७४॥

हिन्दी अर्थ :- करीर- यह एक नाम बाँस के अंकुर का वाची (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) तथा वृक्ष के भेद का और घट का वाची (पुल्लिङ्ग) है॥१७४॥

ना चमूजघने हस्तसूत्रे प्रतिसरो[5] ऽस्त्रियाम्।

कृष्णमित्रटीका :- चमू जघनं सेनापश्चाद्भागः। हस्तसूत्रं विवाहादौ कङ्कणाद्याकृतिः।

हिन्दी अर्थ :- प्रतिसार- यह एक नाम सेना के पश्चाद्भाग का वाचक (पुल्लिङ्ग) और मंगल के लिये हाथ में बाँधे हुए कंगन का वाचक (नपुंसकलिङ्ग) है।

यामानिलेन्द्रचन्द्रार्कविष्णुसिंहांशुवाजिषु ॥१७५॥

1. **Kantarah mas.** n. means (a) large forest (b) a bad road and (c) a hole. 2. **Matsarah mas.** means envy or jealousy; **maskarah all g.** means (a) envious and (b) miser. 3. **Varah mas.** means (a) a boon (b) gift, dowery and (c) a bridegromm; varah all g. means best, and varam n. means a bit favourable. 4. **Karirah mas.** means (a) the shoot of a bomboo; kariram means (a) a tree and (b) a water-jar. 5. **Pratisarah mas.** means (a) the rear of an army (b) a marriage string and (c) a bracelet.

शुकाहिकपिभेकेषु हारि[1]र्ना कपिले त्रिषु।

कृष्णमित्रटीका :- यमादिषु हरिः॥१७५॥ कपिले पीतवर्णे॥

हिन्दी अर्थ :- हरि- यह एक नाम यम, वायु, इन्द्र, चन्द्रमा, सूर्य, विष्णु, सिंह, किरण, घोड़ा॥१७५॥ तोता, सर्प, वानर तथा मेंढ़क का वाचक (पुल्लिङ्ग) और कपिल रंग वाची (त्रिलिङ्ग) है।

शर्करा[2] कर्परांशेऽपि

कृष्णमित्रटीका :- कर्परांशे मृत्कपालखण्डे

हिन्दी अर्थ :- शर्करा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम कंकड़ और खांड आदि का है।

यात्रा[3] स्याद्यापने गतौ॥१७६॥

कृष्णमित्रटीका :- यापनं भोजनादिनिर्वाहः, यथा- प्राणयात्रा॥१७६॥

हिन्दी अर्थ :- यात्रा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम सवारी और गमन का है॥१७६॥

इरा[4] भूवाक्सुराप्सु स्यात्, तन्द्रा[5] निद्राप्रमीलयोः।

कृष्णमित्रटीका :- प्रमीला इन्द्रियग्लानि (नपुंसकलिङ्ग) ता॥

हिन्दी अर्थ :- इरा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम पृथ्वी, वाणी, मदिरा और पानी का है। तन्द्रा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम नींद और इन्द्रिय-शिथिलता का है।

धात्री[6] स्यादुपमातापि क्षितिरप्यामलक्यपि॥१७७॥

कृष्णमित्रटीका :- धयति धत्ते च धात्री। उपमाता क्षीरपायिनी॥१७७॥

हिन्दी अर्थ :- धात्री- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम धायमाता, पृथ्वी और आँवला का है॥१७७॥

क्षुद्रा[7] व्यङ्गा नटी वेश्या सरघा कण्टकारिका

1. **Harih mas.** means (a) Yamaraja (b) wind (c) Indra (d) the moon (e) the sun (f) Visnu (g) a lion (h) a ray (i) a horse (j) a parrot (k) a snake (i) a monkey and (m) a frog; and **harih all g.** means yellow or green colour. 2. **S'arkara f.** means (a) candied sugar and (b) a piece of clay. 3. **Yatra f.** means (a) going, journey and (b) livelihood, maintenance. 4. **Ira f.** means (a) earth (b) speech (c) liquor and (d) water. 5. **Tandra f.** means (a) sleepiness and (b) lassitude. 6. **Dhatri f.** means (a) earth (b) a foster mother and (c) myrobalan. 7. **Ksudra f.** means (a) a woman maimed or crippliled (b) a female dancer (c) a prostitute (d) a bee and (e) a medicinal plant; **ksudrah mas.** means (a) cruel (b) poor and (c) wicked or vile.

त्रिषु क्रूरेऽधनेऽल्पेऽपि क्षुद्रः

कृष्णमित्रटीका :- व्यङ्गा हीनाङ्गी। वेश्येति नीचोपलक्षणम्। सरघा मधुमक्षिका। अधनो निस्स्वः॥

हिन्दी अर्थ :- क्षुद्रा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम हीन अंगवाली, नटनी, वेश्या, मधुमाक्खी और मरकटैया का है। क्षुद्र- यह एक नाम क्रूर, नीच और अल्प का वाचक (त्रिलिङ्ग) है।

मात्रा[1] परिच्छदे ॥१७८॥

अल्पे च परिमाणे सा मात्रं[2] कार्त्स्न्येऽवधारणे।

कृष्णमित्रटीका :- परिच्छदे, यथा- महामात्रः॥१७८॥ अल्पे-मात्रया व (वि) लेपनं ययुः। परिमाणे- मात्राशी सर्वकालं स्यात्।

हिन्दी अर्थ :- मात्रा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम परिच्छेद॥१७८॥ अल्प और परिमाण का है। आगे मात्र शब्द से क्षीरशब्द तक (नपुंसकलिङ्ग) हैं। मात्र- यह एक नाम सकलत्व और निश्चय का है।

आलेख्याश्चर्ययोश्चित्रं[3] कलत्रं[4] श्रोणिभार्ययोः॥१७९॥

कृष्णमित्रटीका :- श्रोणिर्नितम्बः॥१७९॥

हिन्दी अर्थ :- चित्र- यह एक नाम तसवीर और आश्चर्य का है। कलत्र- यह एक नाम कटिका और भार्या का है॥१७९॥

योग्यभाजनयोः पात्रम्[5]

कृष्णमित्रटीका :- पाति पीयतेऽनेन[6] च।

हिन्दी अर्थ :- पात्र- यह एक नाम योग्य और पात्र का है।

पत्त्रं[7] वाहनपक्षयोः।

कृष्णमित्रटीका :- पतन्ति यान्त्यनेन।

हिन्दी अर्थ :- पत्र- यह एक नाम वाहन और पक्ष का है।

निदेशग्रन्थयोः शास्त्रम्[1]

कृष्णमित्रटीका :- निदेश आज्ञा।

हिन्दी अर्थ :- शास्त्र- यह एक नाम आज्ञा और शास्त्र अर्थात् व्याकरण आदि शास्त्र का है।

शस्त्रमायुधलोहयोः[2]॥१८०॥

स्याज्जटांशुकयोर्नेत्रम्[3]

कृष्णमित्रटीका :- जटा वृक्षमूलम्। अंशुकं पटः॥

हिन्दी अर्थ :- शस्त्र- यह एक नाम हथियार का और लोहे का है॥१८०॥ नेत्र- यह एक नाम वृक्ष की जड़ और वस्त्र के भेद तथा आँख का है।

क्षेत्रं[4] पत्नीशरीरयोः।

कृष्णमित्रटीका :- क्षिणोति क्षीयते वा॥

हिन्दी अर्थ :- क्षेत्र- यह एक नाम भार्या का और शरीर का है।

मुखाग्रे क्रोडहलयोः पोत्रम्[5]

कृष्णमित्रटीका :- क्रोडः शूकरः, तस्य मुखाग्रं घोणा। 'हलसूकरयोः पुवः' (३. २. १८३) (इति) ष्ट्रन्।

हिन्दी अर्थ :- पोत्र- यह एक नाम शूकर और हल के अग्रभाग का है।

गोत्रं[6] तु नाम्नि च॥१८१॥

कृष्णमित्रटीका :- गयते शब्द्यतेऽनेन[7]॥१८१॥

हिन्दी अर्थ :- गोत्र- यह एक नाम कुल और नाम का है॥१८१॥

सत्त्रमाच्छादने यज्ञे सदादाने वनेऽपि च।

कृष्णमित्रटीका :- सदा नियमेन दानम्[8]॥

हिन्दी अर्थ :- सत्त्र- यह एक नाम आच्छादन, यज्ञ, सदावर्त्त और वन का है।

---

1. **Matra f.** means (a) a measure (b) a little quantity and (c) a part of Nagari Characters. 2. **Matram n.** means (a) the full measure of anything, totality and (b) mere, only. 3. **Citram n.** means (a) a picture, painting (b) wonder and (c) the variegated colour. 4. **Kalatram n.** means (a) the waist and (b) a wife. 5. **Patram n.** means (a) a fit or worthy person and (b) a vessel in general. 6. M. पीयतेनेन, 7. **Patram n.** means (a) a carriage (b) the wing of a bird and (c) a leaf.

1. **S'astram n.** means (a) an order, command and (b) scripture, science. 2. **S'astram n.** means (a) a weapon and (b) iron. 3. **Netram n.** means (a) the root of a tree (b) the woven silk (c) the eye and (d) the string of a churning stick. 4. **Ksetram n.** means (a) a field (b) a wife and (c) the body. 5. **Potram n.** means (a) the snout of a hog (b) a ploughshare and (c) a boat, ship. 6. **Gotram n.** means (a) a lineage, family and (b) a name. 7. M. शब्द्यतेनेन 8. **Satram n.** means (a) covering (b) a sacrifice (c) liberality, munificence and (d) a wood, forest.

अजिरं[1] विषये कायेऽप्यम्बरं[2] व्योम्नि वाससि॥१८२॥

कृष्णमित्रटीका :- 'अजिरं प्राङ्गणे काये' ॥१८२॥

हिन्दी अर्थ :- अजिर- यह एक नाम विषय, शरीर, और चौराहा का है। अम्बर- यह एक नाम आकाश और वस्त्र का है॥१८१॥

चक्रं[3] राष्ट्रेऽपि

कृष्णमित्रटीका :- चक्रं रथाङ्गादावपि॥

हिन्दी अर्थ :- चक्र- यह एक नाम देश और रथ के पहिये का है।

अक्षरं[4] तु मोक्षेऽपि

कृष्णमित्रटीका :- अक्षरं ब्रह्मण्यपि॥

हिन्दी अर्थ :- अक्षर- यह एक नाम मोक्ष और परब्रह्म का है।

क्षीरमप्सु च[5]।

कृष्णमित्रटीका :- क्षीरं दुग्धेऽपि॥

हिन्दी अर्थ :- क्षीर- यह एक नाम पानी और दूध का है।

स्वर्णेऽपि भूरिचन्द्रौ[6] द्वौ

कृष्णमित्रटीका :- भूरिचन्द्रशब्दौ स्वर्णेऽपि॥

हिन्दी अर्थ :- १. भूरि, २. चन्द्र- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम सोने के हैं। भूरि यह नाम परमात्मा का भी है। चन्द्र यह नाम कपूर आदि का भी है।

द्वारमात्रेऽपि गोपुरम्[7]॥१८३॥

कृष्णमित्रटीका :- गोपुरं पुरद्वारे॥१८३॥

हिन्दी अर्थ :- गोपुर- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम द्वारमात्र और मोथे का है॥१८३॥

गुहादम्भौ गह्वरे[8] द्वौ

कृष्णमित्रटीका :- गाहनं गाह्यते वा गह्वरं गुहायां दम्भे च॥

हिन्दी अर्थ :- गह्वर- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम गुफा और पाखंड का है।

रहोऽन्तिकमुपह्वरे[1]।

कृष्णमित्रटीका :- उपह्वरं समीपे स्यादेकान्ते च॥

हिन्दी अर्थ :- उपह्वर- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम एकांत और समीप का है।

पुरो[2]ऽधिकमुपर्यग्राणि

कृष्णमित्रटीका :- पुरो यथा-अग्रेसरः। अधिके- साग्रं शतम्। उपरि-वृक्षाग्रम्॥

हिन्दी अर्थ :- अग्र- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम अगाड़ी, अधिक और ऊपर का है।

अगारे नगरे पुरम्[3]॥१८४॥

मन्दिरं[4] च

कृष्णमित्रटीका :- पुरं नगरागारमन्दिरेषु॥१८४॥

हिन्दी अर्थ :- पुर- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम नगर और मन्दिर का है॥१८४॥

अथ राष्ट्रो[5]ऽस्त्री विषये स्यादुपद्रवे।

कृष्णमित्रटीका :- विषयो जनपदः। उपद्रवे-परराष्ट्रभयम्॥

हिन्दी अर्थ :- राष्ट्र- यह एक नाम देश और उपद्रव का है तथा (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) है।

दरो[6] ऽस्त्रियां भये श्वभ्रे

कृष्णमित्रटीका :- स्व (श्व) भ्रे गर्ते॥

हिन्दी अर्थ :- दर- यह एक नाम भय और छिद्र का है तथा (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) है।

वज्रो[7] ऽस्त्री हीरके पवौ॥१८५॥

कृष्णमित्रटीका :- वज्रोऽशनिः[8]॥१८५॥

---

1. **Ajiram n.** means (a) a court-yard (b) an object of sense and (c) the body. 2. **Ambaram n.** means (a) sky, ether and (b) cloth, garment. 3. **Cakram n.** means (a) a wheel and (b) a sovereignty; and cakrah mas. means a ruddy goose. 4. **Aksaram n.** means (a) letter of the alphabet (b) Brahman and (c) final beautitude. 5. **Ksiram n.** means (a) water and (b) milk. 6. **Bhuri n.** means gold, and bhuri all g. means much or abundent; Condrah mas. means (a) the moon and (b) gold. 7. **Gopuram n.** means (a) a door in general and (b) a town-geat. 8. **Gahvaram n.** means (a) a cave and (b) hypocrisy.

1. **Upahvaram n.** means (a) loneliness and (b) proximity. 2. **Agram n.** means (a) foremost (b) excess and (c) top, summit. 3. **Puram n.** means (a) a house and (b) a city. 4. **Mandiram n.** means (a) a house and (b) a city. 5. **Rastrah mas. n.** means (a) a country and (b) a calamity. 6. **Darah mass. n.** means (a) fear, terror and (b) a cavity, hole. 7. **Vajrah masn. n.** means (a) a diamond and (b) a thunderbolt. 8. M. वज्रोशनिः.

हिन्दी अर्थ :- वज्र- यह एक नाम हीरा और इन्द्र के वज्र का है और (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) है॥१८५॥

तन्त्रं[1] प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये परिच्छदे।

कृष्णमित्रटीका :- प्रधाने यथा- द्वित्त्वमतन्त्रम्। सिद्धान्ते-चतुष्पीठमिदं तन्त्रम्। सूत्रवायः-तन्त्रवायः। परिच्छदे-तन्त्रपतिः॥

हिन्दी अर्थ :- तंत्र- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम प्रधान, सिद्धान्त, सूत्र को बुनने का औजार और परिच्छद का है।

औशीरं[2] चामरे दण्डेऽप्यौशीरं शयनाशने॥१८६॥

कृष्णमित्रटीका :- उशीरस्येदम्। दण्डे यष्टौ। शयनासनयोः समुदितयोः संज्ञेयम्॥१८६॥

हिन्दी अर्थ :- औशीर- यह एक नाम चमर और दंड वाचक (पुल्लिङ्ग) और शय्या तथा आसन का वाचक (नपुंसकलिङ्ग) है॥१८६॥

पुष्करं[3] करिहस्ताग्रे वाद्यभाण्डमुखे जले।
व्योम्नि खड्गफले पद्मे तीर्थौषधिविशेषयोः॥१८७॥

कृष्णमित्रटीका :- वाद्यभाण्डे मुरजस्य मुखे। ओषधिविशेषे- पुष्करमूलम्। अष्टौ अर्थाः॥१८७॥

हिन्दी अर्थ :- पुष्कर- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम हाथी की सूंड के अग्रभाग, बाजा, बर्त्तन का मुख, पानी, आकाश, तलवार मध्यभाग, कमल, तीर्थ और औषधिविशेष का है॥१८७॥

अन्तरमवकाशावधिपरिधानान्तर्धिभेदतादर्थ्ये[4]।
छिद्रात्मीयविनाबहिरवसरमध्येऽन्तरात्मनि च॥१८८॥

कृष्णमित्रटीका :- अन्तं-रात्यन्तरम्। अवकाशे यथा अन्तरं देहि। अवधौमासान्तरे। परिधाने- अन्तरे शाटकाः। अन्तर्धौ-पर्वतान्तरिताः सुहृदः। भेदो विशेषः- अन्तरज्ञो भवः। तादर्थ्ये-ओदनान्तरस्तण्डुलः। छिद्रे अन्तरं लब्ध्वा रिपुं हन्यात्। आत्मीये-अमयाभ्यन्तरो मम। विनार्थे-अन्तरेण हरिं न सुखम्। बहिरर्थे अन्तरे चण्डालगृहाः, बाह्या इत्यर्थः। अवसरे-अन्तरज्ञः सेवकः। मध्ये आवयोरन्तरे जाताः पर्वताः। अन्तरात्मनि- दृष्ट्वान्तरं ज्योतिरुपाराम॥१८८॥

हिन्दी अर्थ :- अंतर- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम अवकाश, अवधि, परिधान, अन्तर्धि, भेद, तादर्थ्य, छिद्र, आत्मीय, बाहर, अवसर, मध्य और अन्तरात्मा का है॥१८८॥

मुस्तेऽपि पिठरम्[1]

कृष्णमित्रटीका :- पिठरं स्थाल्यपि॥

हिन्दी अर्थ :- पिठर- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम नागरमोथे और मथानी का है।

राजकशेरुण्यपि नागरम्[2]।

कृष्णमित्रटीका :- नागरं शुण्ठ्यपि॥

हिन्दी अर्थ :- नागर- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम राजकशेरु और सोंठ का है।

शार्वरं[3] त्वन्धतमसे धातुकेभे नृलिङ्गकम्[4]॥१८९॥

कृष्णमित्रटीका :- शर्वयां भवं शृणाति वा। धातुकश्चासाविभो हस्ती च॥१८९॥

हिन्दी अर्थ :- शार्वर- यह एक नाम गाढ़े अंधेरे और मारने वाले का है तथा वाच्यलिङ्गी है। आगे के भी वर्गान्ततक सब शब्द (त्रिलिङ्ग) है॥१८९॥

गौरो[5]ऽरुणे सिते पीते व्रणकार्येऽप्यरुष्करः[6]।

कृष्णमित्रटीका :- अरुष्करो भल्लातकोऽपि[7]॥

हिन्दी अर्थ :- गौर- यह एक नाम अरुण, सफेद और पीला का है। अरुष्कर- यह एक नाम घाव करने वाले और भालू का है।

---

1. **Tantram n.** means (a) main, chief (b) a doctrine, theory (c) a weaver and (d) subservience or dependence. 2. **Aus'iram n.** means (a) the handle of a chowri (b) a bed and a seat (c) an unguent made of **us'ira.** 3. **Puskaram n.** means (a) the tip of an elephant's tongue (b) the skin of a drum (c) water (d) sky (e) the blade of a sword (f) a lotus (g) a place of pilgrimage and (h) a plant. 4. **Antaram n.** means (a) a hole (b) intermediate time or space (c) a garment a concealment (e) difference (f) intended for that (g) weak or defective point (h) intimate, dear (i) without (j) exterior (k) opportunity (l) between and (m) the inner soul.

---

1. **Pitharam n.** means (a) a kind of grass (b) a pot and (c) a churning stick. 2. **Nagaram n.** means (a) dry ginger and (b) a plant. 3. Sarvaram n. means darkness, thick gloom, and **sarvarah mas**. means a wild elephant. 4. B. Joins this with the last letter of the preceding word and reads भेद्यलिङ्गकम्। 5. **Gaurah all g.** means (a) white (b) red (c) yellow and (d) pure. 6. **Aruskarah mas.** means the marking-nut plant and **aruskarah all g.** means causing or inflicting wounds. 7. M. भल्लातकोपि,

जठरः[1] कठिनेऽपि स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- जठरः कुक्षौ च॥

हिन्दी अर्थ :- जठर- यह एक नाम कठिन और पेट का है।

अधस्तादपि चाधरः[2]॥१९०॥

कृष्णमित्रटीका :- अधर ओष्ठेऽपि[3]॥१९०॥

हिन्दी अर्थ :- अधर- यह एक नाम नीचे और होंठ का है॥१९०॥

अनाकुलेऽपि चैकाग्रः[4]

कृष्णमित्रटीका :- एकमग्रं चिन्तनीयमस्य। अपिना अवहिते।

हिन्दी अर्थ :- एकाग्र- यह एक नाम स्वस्थ और एकतान का है।

व्यग्रो[5] व्यासक्त आकुले।

उपर्युदीच्यश्रेष्ठेष्वप्युत्तरः[6] स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- उपरि यथा- इत उत्तरम्। उदीच्ये यथा- उत्तरे कुरवः। श्रेष्ठे लोकोत्तरम्।

हिन्दी अर्थ :- व्यग्र- यह एक नाम बिगड़े हुए चित्तवाले और आकुल का है। उत्तर- यह एक नाम ऊपर, उदीच्य और श्रेष्ठ का है।

अनुत्तरः[7]॥१९१॥

एषां विपर्यये श्रेष्ठे

कृष्णमित्रटीका :- एषामुपर्यादीनां विपर्यये। बुध्ने दक्षिणेऽधमे[8] च।

हिन्दी अर्थ :- अनुत्तर- यह एक नाम ऊपर आदि इन तीनों से विपरीत और श्रेष्ठ का है॥१९१॥

दूरानात्मोत्तमाः पराः[9]।

कृष्णमित्रटीका :- अनात्मा=आत्मनोऽन्यः[1]। उत्तमोऽत्रोत्तरः[2]॥

हिन्दी अर्थ :- पर- यह एक नाम दूर, दूसरा और उत्तम का है।

स्वादुप्रियौ च मधुरौ[3] क्रूरौ[4] कठिननिर्दयौ॥१९२॥

उदारो[5] दातृमहतोः

कृष्णमित्रटीका :- उच्चैरारराति।

हिन्दी अर्थ :- मधुर- यह एक नाम स्वादु और प्रिय का है। क्रूर- यह एक नाम कठोर और निर्दय का है॥१९२॥ उदार- यह एक नाम दाता का और बड़े का है।

इतरस्त्वन्यनीचयोः[6]।

मन्दस्वच्छन्दयोः स्वैरः[7] शुभ्र मुद्दीप्तशुक्लयोः[8]॥१९३॥

इति रान्ताः।

चूडा किरीटं केशाश्च संयता मौलय[9] स्त्रयः।

कृष्णमित्रटीका :- संयता बद्धाः केशा मौलिः।

हिन्दी अर्थ :- इतर- यह एक नाम अन्य और नीच का है। स्वैर- यह एक नाम मन्द और स्वाधीन का है। शुभ्र- यह एक नाम प्रकाशित और सफेद का है॥१९३॥ **यहाँ रान्त शब्द समाप्त हुए॥** मौलि- यह एक (त्रिलिङ्ग) नाम चोटी, मुकुट और बंधे हुए बाल का है।

द्रुमप्रभेदमातङ्गकाण्डपुष्पाणि पीलवः[10]॥१९४॥

कृष्णमित्रटीका :- द्रुमप्रभेदः पीलुः। मातङ्गो हस्ती। काण्डो वाणः॥१९४॥

हिन्दी अर्थ :- पीलु- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम वृक्षविशेष, हस्ती, बाण और पुष्प का है॥१९४॥

कृतान्तानेहसो कालः[11]

कृष्णमित्रटीका :- अनेहा क्षणः; त्रुट्यादिः॥

1. **Jatharah mas.** n. means belly and jatharah all g. means difficult. 2. **Adharah all g.** means (a) low and (b) vile **adhrah** mas. means the lip. 3. M. ओष्ठेपि 4. **Ekagrah all g.** means (a) Concentrated and (b) alone. 5. **Vyagrah all g.** means (a) eagerly or intently occupied and (b) distracted. 6. **Uttarah all g.** means (a) upper (b) growing in the north and (c) excellent. 7. **Anuttarah all g.** means (a) low (b) growing in directions other than north (c) vile and (d) best. 8. M. दक्षिणे अधने च, 9. **Parah all g.** means (a) far (b) an enemy (c) best and (d) other and param n. means only.

1. M. आत्मनोन्यः 2. M. उत्तमोत्रोत्तरः 3. Madhurah all g. means (a) sweet and (b) pleasant, agreeable. 4. **Krurah all g.** means (a) cruel and (b) pitiless. 5. **Udarah all g.** means (a) generous and (b) high, great 6. **Itarah all g.** means (a) another and (b) low, mean. 7. **svairah all g.** means (a) dull, lazy and (b) self-willed, independent. 8. **S'ubhram all g.** means (a) shining, radiant and (b) white. 9. **Maulih mas.** f. means (a) hair on the crown of the head (b) a crown and (c) braided hair. 10. **Piluh mas.** means (a) a tree (b) an elephant (c) an arrow and (d) a flower 11. **Kalah mas.** means (a) Yama (b) time (c) death and (d) black.

हिन्दी अर्थ :- काल- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम धर्मराज और समय का है।

चतुर्थेऽपि युगे कलिः[1]।

कृष्णमित्रटीका :- कलिः कलहेऽपि[2]॥

हिन्दी अर्थ :- कलि- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम कलियुग का और कलह का है।

स्यात्कुरङ्गेऽपि कमलः[3] प्रावारेऽपि च कम्बलः[4]॥१९५॥

कृष्णमित्रटीका :- कम्बलः सास्नाऽपि[5]॥१९५॥

हिन्दी अर्थ :- कमल- यह एक (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) नाम मृगविशेष और जलकमल का है। कंबल यह एक (पुल्लिङ्ग) और नागराज का है॥१९५॥

करोपहारयोः पुंसि बलिः[6] प्राण्यङ्गजे स्त्रियाम्।

कृष्णमित्रटीका :- करो राजग्राह्यः। उपहारः पूजोपकरणम्। प्राण्यङ्ग (ज) स्त्वक्संकोचः।

हिन्दी अर्थ :- बलि- यह एक नाम बलिदैत्य, कर और भेंट का वाची (पुल्लिङ्ग) है तथा त्वचा के संकोच का वाचक (स्त्रीलिङ्ग) है।

स्थौल्यसामर्थ्यसैन्येषु बलं[7] न काकसीरिणोः॥१९६॥

कृष्णमित्रटीका :- स्थौल्यादौ बलं क्लीबं काकादौ ना पुमान्। सीरी बलभद्रः॥१९६॥

हिन्दी अर्थ :- बल- यह एक नाम स्थूलता, सामर्थ्य और सेना का वाची (नपुंसकलिङ्ग) है तथा काक और हल का वाची (पुल्लिङ्ग) है॥१९६॥

वातूलः[8] पुंसि वात्यायामपि वातासहे त्रिषु।

कृष्णमित्रटीका :- वात्या वातसमूहः॥

हिन्दी अर्थ :- वातूल- यह एक नाम वात के समूह का वाची (पुल्लिङ्ग) और वात के विकार को नहीं सहने वाले प्राणी का वाचक (त्रिलिङ्ग) है।

---

1. **Kalih mas.** means (a) fighting, combat and (b) the fourth Yuga. 2. M. कलहेपि 3. **Kamalah mas.** means (a) a deer, kamalam n. means a lotus. 4. **Kambalah mas.** means (a) an upper garment (b) a blanket and (c) dewlap 5. M. सास्नापि 6. **Balih mas.** means (a) tax (b) an ollation, offering and (c) worsip, adoration and balih f. means wrinkle. 7. **Balam n.** means (a) stoutness (of the body) (b) might, vigour and (c) an army and balah mas. means (a) a Crow and (b) Balarama. 8. **Vatulah mas.** means whirlwind and vatulah all g. means mad.

भेद्यलिङ्गः शठे व्यालः[1] पुंसि श्वापदसर्पयोः॥१९७॥

मलो[2]ऽस्त्री पापविट्किट्टानि

कृष्णमित्रटीका :- विड्विष्या। किट्टं लौहादिमलम्।

हिन्दी अर्थ :- व्याल- यह एक नाम शठ का वाची वाच्यलिङ्गी और सिंह, भेड़िया आदि और सर्प का वाची (पुल्लिङ्ग) है॥१९७॥ मल- यह एक नाम पाप, विष्ठा, पसीना आदि का वाची (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) है।

अस्त्री शूलं[3] रुगायुधम्।

कृष्णमित्रटीका :- 'शूलोऽस्त्री रोग आयुधे' (मेदिनी. १४८. ५३)।

हिन्दी अर्थ :- शूल- यह एक नाम रोग और हथियार का वाची (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) है।

शङ्कावपि द्वयोः कीलः[4]

कृष्णमित्रटीका :- कीलो ज्वालाऽपि[5]॥

हिन्दी अर्थ :- कील- यह एक नाम शंकु और अग्नि के तेज का है तथा (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) है।

पालिः[6] स्त्र्यस्र्यङ्कपङ्क्तिषु॥१९८॥

कृष्णमित्रटीका :- 'पालिः कर्णलतायां स्यात्प्रदेशे कर्णचिह्नयोः'। अस्रिर्धारा। अङ्के यथा-कपोलपाली, 'कपोलोत्सङ्ग इत्यर्थः' इत्यन्ये। पङ्क्तौपालीयं चम्पकानाम्॥१९८॥

हिन्दी अर्थ :- पालि- यह एक नाम कान की लता, पंक्ति और चिह्न का है तथा (स्त्रीलिङ्ग) है॥१९८॥

कला[7] शिल्पे कालभेदेऽपि

कृष्णमित्रटीका :- शिल्पे गीतादौ। कालभेदः 'अष्टादशनिमेषास्तु-' (अ. को. १. ४. ११) इत्यादिनोक्तः॥

हिन्दी अर्थ :- कला- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम शिल्प और काल के भेद का है।

---

1. **Vyalah all g.** means wicked vyalah mas. means (a) a vicious animal or elephant and (b) a snake. 2. **Malah mas. n.** means (a) sin (b) ordure and (c) excrement, dirt 3. **s'ulam mas.** n. means (a) a disease and (b) a weapon. 4. **Kilah mas.** f. means (a) a wedge, pin and (b) a flame. 5. M. ज्वालापि, 6. **Palih f.** means (a) the sharp adge or point of anything (b) the lap (c) a line, row (d) the tip of the ear and (e) a woman with the beard. 7. **Kala f.** means (a) art (b) a division of time and (c) a digit of moon.

आली[1] सख्यावली अपि।

कृष्णमित्रटीका :- आ अलति। इन् (उ. ४. ११७) 'कृदिकारात्-' (वा. ४. १. ४५) इति वा ङीप् (ष्)। आवलिः पङ्क्तिः॥

हिन्दी अर्थ :- आली- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम सखी और पंक्ति का है।

अब्ध्यम्बुविकृतौ बेला[2] कालमर्यादयोरपि॥१९९॥

कृष्णमित्रटीका :- 'वेलृ चलने' (भ्वा. प. से.)। अब्धिः समुद्रः अम्बुविकृतिर्जलविकारः। कालोऽवसरः[3]। मर्यादायां यथा- उद्वेलः॥१९९॥

हिन्दी अर्थ :- वेला- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम चन्द्रमा के उदय आदि से समुद्र के पानी की वृद्धि और अवृद्धि अर्थात् ज्वारभाटा तथा कालमर्यादा का है॥१९९॥

बहुलाः[4] कृत्तिकाः गावो बहुलोऽग्निः[5] शितौ त्रिषु।

कृष्णमित्रटीका :- कृत्तिका नक्षत्रं तारकाणां बहुत्वात् बहुला। वहति हव्यं बहुलोऽग्निः[6]। शितौ कृष्णवर्णे॥

हिन्दी अर्थ :- बहुल- यह एक नाम अग्नि का वाची (पुल्लिङ्ग) और कृष्णवर्ण का वाची (त्रिलिङ्ग) है।

लीला[7] विलासक्रिययोः

कृष्णमित्रटीका :- 'लीङ्श्लेषणे' (दि. आ. अ.)। विलासे शृङ्गारादिचेष्टायाम्। क्रिया कायिकः परिस्पन्दः॥

हिन्दी अर्थ :- लीला- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम भोग और क्रिया का है।

उपला[8] शर्करापि च॥२००॥

कृष्णमित्रटीका :- उपलाति उपला। शर्करा, अश्मरूपा मृत्। अपिना इक्षुविकारः- यथा- सितोपला॥२००॥

हिन्दी अर्थ :- उपला- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम खांड और पत्थर का है॥२००॥

शोणितेऽम्भसि कीलालं[1] मूलं[2] माद्ये शिफाभयोः।

कृष्णमित्रटीका :- आद्ये प्रथमे। शिफा वृक्षादिजटा। भं नक्षत्रम्।

हिन्दी अर्थ :- कीलाल- यह एक (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) नाम रक्त और पानी का है। आगे के नाम कुशलशब्द तक (नपुंसकलिङ्ग) है। मूल- यह एक नाम पहला, जड़, मूल नक्षत्र का है।

जालं[3] समूह आनायो गवाक्षक्षारकावपि॥२०१॥

कृष्णमित्रटीका :- जलन्ति (ति) 'जल घातने' (भ्वा. प. से.) णः (३. १. १४०)। आनायो रज्जुवितानो[4] मत्स्यादिबन्धनः। गवाक्षे यथा- जालान्तरगते भानौ। क्षारकौ मुकुलवृन्दम्॥२०१॥

हिन्दी अर्थ :- जाल- यह एक नाम समूह, सन या सूत का बना रज्जुबंध, झरोखा और विना खिली कली का है॥२०१॥

शीलं[5] स्वभावे श्रद्वृत्ते

कृष्णमित्रटीका :- स्वभावे- धर्मशीलः। सद्वृत्ते- शीलधनः साधुः।

हिन्दी अर्थ :- शील- यह एक नाम स्वभाव और सद्वृत्त का है।

सस्ये हेतुकृते फलम्[6]।

कृष्णमित्रटीका :- सस्ये वृक्षादिभिर्जनिते हेतुना कृतम्, यथा- अधिश्रयणादेः पाकः फलम्॥

हिन्दी अर्थ :- फल- यह एक नाम वृक्ष आदि के फल, कार्य के फल और त्रिफला आदि का है।

छदिर्नेत्ररुजोः क्लीबे[7] समूहे पटलं[8] न ना॥२०२॥

कृष्णमित्रटीका :- छदिषि गृहाच्छादने। नेत्ररोगे यथा- तिमिरं काचतां याति पटलं तदुपेक्षया। समूहे- पयोदपटली॥२०२॥

---

1. **Ali f.** means (a) a female friend (of a woman) and (b) a row, line. 2. **Vela f.** means (a) boundary of sea and land (b) time and (c) limit, boundary.3. M. कालोवसरः, 4. **Bahula f.** means (a) the star, Krttika and (b) a cow, bahulah mas. means (a) fire and (b) the dark halt of a month, and bahaulah all g. means black. 5. B. and K. बहुलोऽग्नौ, 6. M. बहुलोग्निः, 7. **Lila f.** means (a) play, pastime (b) amorous pastime and (c) a bodily action. 8. **Upala f.** means refined sugar; and upalah mas. means (a) a stone and (b) a jewel.

1. **Kilalam n.** means (a) blood and (b) water. 2. **Mulam n.** means (a) flrst, foremost (b) root and (c) a star 3. **Jalam n.** means (a) a collection (b) a net (c) a window and (d) an unblown flower. 4. M. रज्जुवितानः 5. **S'ilam n.** Means (a) nature, character and (b) good conduct or character. 6. **Phalam n.** means (a) fruit (as of a tree) (b) result effect, and (c) profit. 7. Majority reads क्लीबं 8. **Patalam n.** means (a) a thatch, roof and (b) an eye-disease; patalam n., f. means a heap, multitude, quantity.

हिन्दी अर्थ :- पटल- यह एक नाम घर का छादन और नेत्र की पीडा का वाचक (नपुंसकलिङ्ग) है तथा समूह का वाची पटलशब्द (पुल्लिङ्ग) नहीं है॥२०२॥

अधःस्वरूपयोरस्त्री तलम्[1]

कृष्णमित्रटीका :- अधो यथा-पादतलम्। स्वरूपे- तनुतलोदरी। पृष्ठे-भूतलम्। चपेटे तलप्रहारः॥

हिन्दी अर्थ :- तल- यह एक नाम नीचे का और स्वरूपवाची (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) है।

स्याच्चामिषे पलम्[२]।

कृष्णमित्रटीका :- आमिषे मांसे, पलं कर्षचतुष्टयम्॥

हिन्दी अर्थ :- पल- यह एक नाम पलभर का और मांस का है।

और्वानलेऽपि पातालं[३] चेलं[४] वस्त्रेऽधमे त्रिषु॥२०३॥

कृष्णमित्रटीका :- अधमे चेलः पचादिः, यथा ब्राह्मणचेली॥२०३॥

हिन्दी अर्थ :- पाताल- यह एक नाम वडवाग्नि का और पाताल का है। चैल- यह एक नाम वस्त्र का और नीच का है और नीच का वाची (त्रिलिङ्ग) है॥२०३॥

कुकूलं[५] शङ्कुभिः कीर्णे श्वभ्रे ना तु तुषानले।

कृष्णमित्रटीका :- कोः कुलम्। शङ्कुकृते गर्ते।

हिन्दी अर्थ :- कुकूल कीलों से आच्छादित छिद्र और तुष की अग्नि है।

निर्णीते केवल[६] मिति त्रिलिङ्गं त्वेककृत्स्नयोः॥२०४॥

कृष्णमित्रटीका :- 'इति' शब्दो मान्तमव्ययं ध्वनयति- साधुश्चैत्रः केवलं मूर्खः। एको सहायः। कृत्स्ने यथा- न केवलं भुवो भर्ता॥२०४॥

हिन्दी अर्थ :- केवल- यह एक नाम निश्चित का वाचक (नपुंसकलिङ्ग) और एक का तथा संपूर्ण का वाचक (त्रिलिङ्ग) है॥२०४॥

1. **Talam mas., n. f.** means (a) a surface (b) form (c) the lower part and (d) a slap 2. **Palam n.** means (a) flesh, meat (b) a weight and (c) a measure of division of time. 3. **Patalam n.** means (a) a world under the earth and (b) submarine-flre. 4. **Celam n.** means a garment, and celam al! g. means wicked. 5. **Kukulam n.** means a ditch filied with stakes and kukulah mas. means the fire made of chaff. 6. **Kevalam ind.** means only, kevalam all g. means (a) alone and (b) entire.

पर्याप्तिक्षेमपुण्येषु कुशलं[१] शिक्षिते त्रिषु।

कृष्णमित्रटीका :- पर्याप्तिः सामर्थ्यम् यथा- कुशलः (लम्) कटकरणे। क्षेमे-कुशलं ते भूयात्। पुण्ये- कुशलकृत्। शिक्षितो निपुणः॥

हिन्दी अर्थ :- कुशल- यह एक नाम सामर्थ्य, क्षेम, पुण्य का वाची (नपुंसकलिङ्ग) और शिक्षा वाची (त्रिलिङ्ग) है।

प्रवालमङ्कुरेऽप्यस्त्री[२]

कृष्णमित्रटीका :- अङ्कुरोऽत्र[३] किसलयः। अपिना विद्रुमः।

हिन्दी अर्थ :- प्रवाल- यह एक नाम अंकुर का और मूंगे का वाची (पुल्लिङ्ग न.) है।

त्रिषु[४] स्थूलं जडेऽपि च॥२०५॥

कृष्णमित्रटीका :- स्थूलः पीवरोऽपि[५]। जडे मूर्खे॥२०५॥

हिन्दी अर्थ :- स्थूल- यह एक नाम जड़ और मोटे का है और (त्रिलिङ्ग) है॥२०५॥

करालो[६] दन्तुरे तुङ्गे

कृष्णमित्रटीका :- दन्तुरे उन्नतदन्ते। तुङ्गे उच्चे॥

हिन्दी अर्थ :- कराल- यह एक (त्रिलिङ्ग) नाम ऊँचे दांतों वाले का और ऊँचे का है।

चारौ दक्षे च पेशलः[७]।

मूर्खेऽर्भकेऽपि बालः[८] स्यात् लोल[९] श्चलसतृष्णयोः॥२०६॥

इति लान्ताः।

कृष्णमित्रटीका :- बालो बालकमूर्खयोः॥२०६॥

हिन्दी अर्थ :- पेशल (त्रिलिङ्ग) नाम शत्रु और चतुर का है। बाल (त्रिलिङ्ग) मूर्ख और बालक लोल- यह एक (त्रिलिङ्ग) नाम चञ्चल का और तृष्णावाले का है॥२०६॥

यहाँ लान्त शब्द समाप्त हुए॥

1. **Kus'alam n.** means (a) ability (b) welfare and (c) virtue, kus'alam all g. means skilful, well-versed. 2. **Pravalam n.**, mas. means (a) a new leaf and (b) a coral 3. M. अङ्कुरोत्र 4. **Sthulam all g.** means (a) fat, stout and (b) stupid, dull. 5. M. पीवरोपि 6. **Karalah all g.** means (a) having long teeth (b) height and (c) dreadful. 7. **Pes'alah all g.** means (a) beautiful, charming and (b) clever, expert. 8. **Balah all g.** means (a) a fool (b) a child and (c) the hair. 9. **Lolah all g.** means (a) fickle, unsteady and (b) longing, anxious for.

दवदावौ[1] वनारण्यवह्नी

कृष्णमित्रटीका :- 'दवो वनगतो वह्निर्दावश्च वनमुच्यते' (इति काव्यः)॥

हिन्दी अर्थ :- १. दव, २. दाव- ये दो (पुल्लिङ्ग) नाम वन के और वन की अग्नि के हैं।

जन्महरौ भवौ[2]।

कृष्णमित्रटीका :- भवनं भवत्यस्मादिति भवः।

हिन्दी अर्थ :- भव- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम जन्म का और महादेव का है।

मन्त्री सहायः सचिवौ[3]

कृष्णमित्रटीका :- मन्त्री धीसचिवः। सहायः कर्मसचिवः॥

हिन्दी अर्थ :- सचिव- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम मंत्री का और सहाय का है।

पतिशाखिनरा धवाः[4] ॥२०७॥

कृष्णमित्रटीका :- पतिर्भर्ता, शाखी वृक्षविशेषः, धवः॥२०७॥

हिन्दी अर्थ :- धव- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम पति, धववृक्ष और मनुष्य का है॥२०७॥

अवयः[5] शैलमेषार्काः

कृष्णमित्रटीका :- अविः शैलादिः॥

हिन्दी अर्थ :- अवि- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम पर्वत, मेंढा और सूर्य का है।

आज्ञाह्वानाध्वरा हवाः[6]।

कृष्णमित्रटीका :- हवनं हवः। हूयतेऽस्मिन्निति[7] च॥

हिन्दी अर्थ :- हव- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम आज्ञा, आह्वान और यज्ञ का है।

भावः[8] सत्तास्वभावाभिप्रायचेष्टात्मजन्मसु॥२०८॥

कृष्णमित्रटीका :- सत्तायां यथा- कालभावयोः सप्तमी स्वभावे- भावानुरक्तवनितासुरतेः (तैः) शपेयम् अभिप्राये- भावानुवर्ती भृत्यः। तात्पर्ये- अस्यायं भावः। चेष्टा क्रिया। आत्मनि- स्वं भावं भावयेद्योगी। जन्मनि- 'नासतो विद्यते भावः-' (गीता, २. १६)॥२०८॥

हिन्दी अर्थ :- भाव- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम सत्ता, स्वभाव, अभिप्राय, चेष्टा, आत्मा और जन्म का है॥२०८॥

स्यादुत्पादे फले पुष्पे प्रसवो[1] गर्भमोचने।

कृष्णमित्रटीका :- प्रसवनं प्रसूयते च (वा)

हिन्दी अर्थ :- प्रसव- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम उत्पत्ति, फल, पुष्प और गर्भमोचन का है।

अविश्वासेऽपह्नवेऽपि निकृतावपि निह्नवः[2] ॥२०९॥

कृष्णमित्रटीका :- निकृतिः शाठ्यम्॥२०९॥

हिन्दी अर्थ :- निह्नव- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम अविश्वास, अपलाप (बकवाद) और शठपता का है॥२०९॥

उत्सेकामर्षयोरिच्छाप्रसवे मह उत्सवः[3]।

अनुभावः[4] प्रभावे च सतां च मतिनिश्चये॥२१०॥

कृष्णमित्रटीका :- उत्सेक उद्रेकः। इच्छायाः प्रसव उत्पत्तिः। 'मह' इति सप्तमी॥२१०॥

हिन्दी अर्थ :- उत्सव- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम उद्गति (ऊपरको उठाना), कोप, इच्छा का वेग, आनन्द का अवसर इन का है। अनुभाव- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम प्रभाव, सत्पुरुषों की बुद्धि और निश्चय का है॥२१०॥

स्याज्जन्महेतुः प्रभवः[5] स्थानं चाद्योपलब्धये।

कृष्णमित्रटीका :- जन्महेतुः पित्रादिः। प्रथममुपलब्ध्यर्थो देशश्च प्रभवः, यथा-हिमवतो गङ्गायाः प्रभवः॥

हिन्दी अर्थ :- प्रभव- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम जन्म का हेतु और प्रथम ज्ञान के स्थान का है।

शूद्रायां विप्रतनये शस्त्रे पारशवो[6] मतः॥२११॥

---

1. **Davah and davah mas.**means (a) a wood, forest and (b) wild fire. 2.**Bhavah mas** means (a) birth and (b) S'iva. 3. **Sacivah mas.** means (a) minister and (b) a follower, companion. 4. **Dhavh mas.** (a) a husband (b) a kind of tree and (c) a man. 5. **Avih mas.** (a) a mountain (b) a ram and (c) the sun. 6. **Havah mas.** (a) an order, command (b) calling and (c) a sacrifice. 7. M. हूयतेस्मिन्निति, 8. **Bhavah mas.** means (a) existence (b) nature (c) meaning (d) movement, gesture (e) Soul and (f) birth.

1. **Prasavah mas.** means (a) an issue (b) bitrh, origination (c) a fruit (d) a flower and (e) delivery 2. **Nihanvah mas.** means (a) mistrust (b) concealment and (c) fraud. 3. **Utsavah mas.** means (a) elevation (b) wrath (c) rising of a wish and (d) a festive occasion. 4. **Anubhavah mas.** means (a) dignity (b) determination and (c) the manifestation of a feeling. 5. **Prabhavah mas.** means (a) source, origin and (b) birthplace 6. **Paras'avah mas.** means (a) the son of a Brahmana by a Sudra woman and (b) an adulterine.

कृष्णमित्रटीका :- शूद्रायां ब्राह्मणाज्जातः परस्त्रिया अपत्यं च॥२११॥

हिन्दी अर्थ :- पारशव- यह एक नाम शूद्र की स्त्री में ब्राह्मण से उपजे पुत्र का और शस्त्र का है और (पुल्लिङ्ग) है॥२११॥

ध्रुवो[1] भभेदे क्लीबे तु निश्चिते शाश्वते त्रिषु।

कृष्णमित्रटीका :- भस्य नक्षत्रस्य भेद औत्तानपादिः। निश्चिते क्लीबं यथा- ध्रुवं मूर्खोऽयम्[2]। शाश्वते- 'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः' (गीता, २. २७)॥

हिन्दी अर्थ :- ध्रुव- यह एक नाम ध्रुव तारे का वाची (पुल्लिङ्ग) है। निश्चय वाची (नपुंसकलिङ्ग) है और नित्यवाची (त्रिलिङ्ग) है।

स्वो[3] ज्ञातावात्मनि स्वं त्रिष्वात्मीये स्वोऽस्त्रियां धने॥२१२॥

कृष्णमित्रटीका :- आत्मनि यथा- हृदि स्वमवलोकयन्। आत्मीये- स्वदारतः॥२१२॥

हिन्दी अर्थ :- स्व- यह एक नाम सगोत्री का और आत्मा वाची (पुल्लिङ्ग) है। अपने संबंधवाले का वाचक (त्रिलिङ्ग) है और धन का वाचक (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) है॥२१२॥

स्त्रीकटीवस्त्रबन्धेऽपि नीवी[4] परिपणेऽपि च।

कृष्णमित्रटीका :- स्त्रियाः कट्यां यद्वस्त्रं तस्य बन्धने। परिपणो राजपुत्रादिबन्धकः।

हिन्दी अर्थ :- नीवी- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम स्त्री की कटि के वस्त्रबंधन का और मूलद्रव्य का है।

शिवा[5] गौरीफेरवयोः

कृष्णमित्रटीका :- फेरवा शृगाली॥

हिन्दी अर्थ :- शिवा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम पार्वती का और गीदड़ी का है।

द्वन्द्वं[6] कलहयुग्मयोः ॥२१३॥

1. **Dhruvah mas.** means the polar star Dhruva, dhruvam n. means certain, sure, and dhruvah all g. means eternal, perpetual. 2. M. मूर्खोयम् 3. **Svah mas.** means (a) a relative nad (b) the Soul; savh all g. means one's own or belonging to oneself, and savh mas. n. means wealth. 4. **Nivi f.** mans (a) the knot of a cloth worn round a woman's waist (b) capital and (c) a stake. 5. **s'iva f.** means (a) Parvati and (b) a female jackal. 6. **Dvandvam n.** means (a) tight, war and (b) couple, pair.

कृष्णमित्रटीका :- द्वौ द्वौ। 'द्वन्द्वं रहस्य-' (८. १. १५) इति साधुः॥२१३॥

हिन्दी अर्थ :- द्वन्द्व- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम कलह का जोड़े का है॥२१३॥

द्रव्यासुव्यवसायेषु सत्त्व[1] मस्त्री तु जन्तुषु।

कृष्णमित्रटीका :- द्रव्यं पारिभाषिकं यथा- सत्त्वे निविशतेपैति। असुषु- उत्क्रान्तसत्त्वाः। व्यवसायोऽतिशयितं[2] वीर्य यथा- सत्त्ववान्। जन्तुषु प्राणिषु॥

हिन्दी अर्थ :- सत्त्व- यह एक नाम वस्तु, प्राण और वीर्य की अधिकता का वाची (नपुंसकलिङ्ग) और प्राणी का वाचक (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) है।

क्लीबं[3] नपुंसके षण्ढे वाच्यलिङ्गमविक्रमे ॥२१४॥

इति वान्ताः।

कृष्णमित्रटीका :- षण्डः तृतीयप्रकृतिः। 'अस्त्री नपुसंके क्लीबं वाच्यलिङ्गमविक्रमे' इति रुद्रः॥२१४॥

(इति वान्ताः)।

हिन्दी अर्थ :- क्लीब- यह एक नाम हिजड़े का वाचक (नपुंसकलिङ्ग) और अलस का वाची वाच्यलिंगी है॥२१३॥

यहाँ वान्त शब्द समाप्त हुए॥

द्वौ विशौ[4] वैश्यमनुजौ द्वौ चराभिमरौ स्पशौ[5]।

कृष्णमित्रटीका :- अभिभ्रियतेऽभिमरः[6]।

हिन्दी अर्थ :- विश् (शान्त)- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम वैश्य का और मनुष्य का है। स्पश- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम गूढ पुरुष का और युद्ध का है।

द्वौ राशी[7] पुञ्जमेषाद्यौ

कृष्णमित्रटीका :- पुञ्जे यथा- धान्यराशिः। मेषवृषाद्या द्वादश॥

हिन्दी अर्थ :- राशि- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम समूह का और मेष आदि राशि का है।

1. **Sattvam n.** means (a) a substance, thing (b) spirit, life (c) determination and (d) strength, and sattvam mas., means a living being. 2. M. व्यवसायोतिशयितं 3. **Klibam n.** means neuter, klibam all g. means a eunuch 4. **Vis mas.** means (a) a Vaisya and (b) a man. 5. **Spas'ah mas.** means (a) a messenger and (b) war. 6. M. अभिम्रियतेमिमरः 7. **Ras'ih mas.** means (a) a heap, collection and (b) a sing of the zodiac.

द्वौ वंशौ[1] कुलमस्करौ ॥२१५॥

कृष्णमित्रटीका :- मस्करो वेणुः ॥२१५॥

हिन्दी अर्थ :- वंश- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम कुल का और बांस का है॥२१५॥

रहः प्रकाशौ वीकाशौ[2]

कृष्णमित्रटीका :- विगतः काशः। प्रकाशो विशिष्टश्च॥

हिन्दी अर्थ :- वीकाश- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम एकान्त का और प्रकाश का है।

निर्वेशो[3] भृतिभोगयोः।

कृष्णमित्रटीका :- भृतौ यथा- विक्रमनिर्वेशाधिगतैरर्थैः। भोगे- स्त्र्यन्नपानं निर्वेशः॥

हिन्दी अर्थ :- निर्वेश- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम तनखा का और भोग का है।

कृतान्ते पुंसि कीनाशः[4] क्षुद्रकर्षकयोस्त्रिषु॥२१६॥
पदे लक्ष्ये निमित्तेऽपदेशः[5] स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- पदे स्थाने यथा- त्यक्रापदेशो यतिः। लक्ष्ये- लब्धव्यपदेशः।

हिन्दी अर्थ :- कीनाश- यह एक नाम यम का वाची (पुल्लिङ्ग) है। क्षुद्ररोग का और किसान का वाची (त्रिलिङ्ग) है॥२१६॥ अपदेश- यह एक पुल्लिङ्ग) नाम पद, लक्ष्य और निमित्त का है।

कुशमप्सु[6] च।
दशावस्थानैकविधापि[7]

कृष्णमित्रटीका :- दशा पटान्तेऽपि[8]। अनेकविधा बाल्यादिरूप।

हिन्दी अर्थ :- कुश- यह एक (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) नाम डाभ का और रामचन्द्र के पुत्र का है। दशा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम अनेक प्रकार की बाल्य आदि अवस्था का और वस्त्र के अंत का है।

1. **Vamsah mas.** means (a) a family, lineage and (b) a bamboo. 2. **Vikasah mas.** mas. means (a) privacy and (b) manifestation. 3. **Nirves'ah mas.** means (a) salary, wage and (b) enjoyment, eating. 4. **Kinas'ah mas.** means (a) Yama and (b) a monkey, kinas'ah all g. means (a) means and (b) a farmer 5. **Apadesah mas.** means (a) deceit (b) a place (c) a butt and (d) a reason. 6. **Kusam n.** means water, kus'ah mas. means (a) Rama's son and (b) sacred grass. 7. **Das'a f.** means (a) state, condition (b) a period or stage of life and (c) the fring of a garment. 8. M. पटान्तेपि.

आशा[1] तृष्णापि चायता॥२१७॥
वशा[2] स्त्री करिणी च स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- स्त्री योषित्॥

हिन्दी अर्थ :- आशा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम लंबी तृष्णा का और दिशा का है॥२१७॥ वशा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम स्त्री का और हथिनी का है।

दृग्ज्ञाने ज्ञातरि त्रिषु[3]।
स्यात्कर्कशः[4] साहसिकः कठोरावसृणावपि॥२१८॥

कृष्णमित्रटीका :- अमसृणो दुःस्पर्शः॥२१८॥

हिन्दी अर्थ :- दृश् (शान्त)- यह एक नाम ज्ञान का और ज्ञाता का वाचक (त्रिलिङ्ग) है। दृष्टिवाची (स्त्रीलिङ्ग) है। कर्कश- यह एक (त्रिलिङ्ग) नाम विवेकरहित, कठोर और दुष्ट स्पर्श वाले का है॥२१८॥

प्रकाशो[5]ऽतिप्रसिद्धेऽपि[6] शिशावज्ञे च बालिशः[7]।
इति शान्ताः।
सुरमत्स्यावनिमिषौ[8]

कृष्णमित्रटीका :- न (नि) मिषति। 'मिष श्लेषणे' (तु. प. से.)।

हिन्दी अर्थ :- प्रकाश- यह एक (त्रिलिङ्ग) नाम अत्यंत प्रसिद्ध का और धाम का है। बालिश- यह एक (त्रिलिङ्ग) नाम बालक का और मूर्ख का है। कोश यह एक नाम फूल की कली, तलवार का, घर, धनसमूह और शपथभेद का है और (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) है। **यहाँ शान्त शब्द समाप्त हुए॥** अनिमिष- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम देवता का और मच्छ का है।

पुरुषावात्ममानवौ[9] ॥२१९॥
काकमत्स्यात्खगौ ध्वांक्षौ[10]

1. **As'a f.** means (a) hope, expectation and (b) a direction as east & c. 2. **Vas'a f.** means (a) woman (b) a female elephant and (c) one remaining dependent. 3. **Drs f.** means (a) knowledge and (b) the eye; drs all g. means a knower. 4. **Karkas'ah all g.** means (a) cruel (b) courageous (c) hard and (d) difficult to comprehend 5. **Prakas'ah mas.** means (a) a renown person (b) light and (c) sunlight. 6. M. प्रकाशोतिप्रसिद्धंपि, 7. **Balis'ah mas.** means (a) a boy and (b) a fool. 8. **Animisah mas.** means (a) a god and (b) a fish. 9. **Purusah mas.** means (a) the soul and (b) a man. 10. **Dhvanksah mas.** means (a) a crow (b) a crane and (c) a begger.

कृष्णमित्रटीका :- मत्स्यमत्ति मतस्यात्, स चासौ खगः, वकः॥

हिन्दी अर्थ :- पुरुष- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम आत्मा का और मनुष्य का है॥२१९॥ ध्वांक्ष- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम काक का और बग़ला आदि का है।

कक्षौ[1] तु तृणवीरुधौ।

कृष्णमित्रटीका :- वीरुत्=लता।

हिन्दी अर्थ :- कक्ष- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम तृण का और वेल का है।

अभीषुः[2] प्रग्रहे रश्मौ

कृष्णमित्रटीका :- अभिगत इषुः। प्रग्रहो पल्यादिः। रश्मिर्मरीचिः॥

हिन्दी अर्थ :- अभीषु- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम घोड़े आदि की रस्सी का और किरण का है।

प्रैषः[3] प्रैषणमर्दने॥२२०॥

पक्षः[4] सहायेऽपि, उष्णीषं[5] शिरोवेष्टकिरीटयोः।

कृष्णमित्रटीका :- उष्णमीषते हिनस्ति। 'ईष गत्यादौ' (भ्वा. आ. से.)। शिरसो वेष्टने वस्त्रादौ। किरीटे मुकटे॥

हिन्दी अर्थ :- प्रैष- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम प्रेषण और मर्दन का है॥२२०॥ पक्ष- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम सहाय और पन्द्रह दिनों का है। उष्णीष- यह एक (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) नाम शिर की पगड़ी आदि और मुकुट का है।

शुक्रले मूषिके श्रेष्ठे सुकृते वृषभे वृषः[6]॥२२१॥

कृष्णमित्रटीका :- शुक्रले वृष्यप्रयोगे। मूष (षि) के यथा- वृषदंशकः श्रेष्ठे- पुरुषवृषः सुकृते- वृषो हि भगवान्धर्मः॥२२१॥

हिन्दी अर्थ :- वृष- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम वीर्य वाला, मूषा, श्रेष्ठ, सुकृत और बैल का है॥२२१॥

कोषो[1]ऽस्त्री कुड्मले खड्गपिधानेऽर्थौघदिव्ययोः।

कृष्णमित्रटीका :- कुड्मले कलिकामध्ये। अर्थस्य ओघः समूहः।

हिन्दी अर्थ :- कोषः- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम पुष्प की विना खिली हुई कली, म्यान, शपथ और खजाना का वाचक है।

द्यूतेऽक्षे सा (शा) रिफलकेऽप्याकर्षः[2]

कृष्णमित्रटीका :- अक्षे पाशके। शारिफलकमक्षपीठिका॥

हिन्दी अर्थ :- आकर्ष- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम जूवा, पाशा और जूआ की पीठिका का है।

अथाक्ष[3]-मिन्द्रिये॥२२२॥

ना द्यूताङ्गे कर्षे चक्रे व्यवहारे कलिद्रुमे।

कृष्णमित्रटीका :- इन्द्रिये चक्षुरादौद्यूताङ्गे पाशके। कर्षे षोडशमाषके। चक्रं रथकाष्ठोपलक्षणम्। व्यवहार आयव्ययादिन्यायः, यथाक्षपटलम्। कलिद्रुमे बिभीतके॥

हिन्दी अर्थ :- अक्ष- यह एक नाम इन्द्रिय का वाचक (नपुंसकलिङ्ग) है और जूवा का अंग, कर्ष (तोल), चक्र, व्यवहार तथा बहेड़ा का वाची (पुल्लिङ्ग) है॥२२२॥

कर्षू[4]र्वार्ता करीषाग्निः कर्षूः कुल्याभिधायिनी॥२२३॥

कृष्णमित्रटीका :- वार्त्ता कृषिः। करीषं शुष्क-गोमयम्। कुल्या यथा- चतस्रः कर्षूः पितृभ्यः कुर्यात्॥२२३॥

हिन्दी अर्थ :- कर्षू- यह एक नाम वात और गाय के गोबर से बनाये उपले से प्रज्वलित अग्नि का वाची (पुल्लिङ्ग) और कर्षू नदी का वाची (स्त्रीलिङ्ग) है॥२२३॥

पुंभावे तत्क्रियायां च पौरुषम्[5]

---

1. **Kaksah mas.** means (a) grass (b) creeper and (c) a forest. 2. **Abhisuh mas.** means (a) rein, bridle and (b) a ray of light. 3. **Praisah mas.** means (a) sending and (b) squeeging. 4. **Pakash mas.** means (a) wing (b) a follower (c) a fortnight and (d) flank of a thing. 5. **Usnisam n.** means (a) a turban and (b) a crown 6. **Vrsah mas.** means (a) a strong man (b) a rat (c) the best of its kind (d) Dharma (e) Taurus and (f) a bull.

1. **Kosah mas.** n. means (a) a bud (b) a sheath (c) a treasure and (d) an oath. 2. **Akarsah mas.** means (a) playing with dice (b) a die (c) a board for dice-game (d) attracting or drawing towards oneself. 3. **Aksam n.** means (a) an organ of sense and (b) sochal salt; aksah mas. means (a) a die (b) a weight (c) a wheel (d) usury and (e) a tree 4. **Karsuh mas.** means (a) cultivation and (b) a fire of dried cowdung and karsuh f. means a canal 5. **Paurusam n.** means (a) virility and (b) humen action.

कृष्णमित्रटीका :- पुंसो भावः कर्म वा॥

हिन्दी अर्थ :- पौरुष- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम पुरुषत्व का और पुरुष के कर्म का है।

विषमप्सु[1] च।

कृष्णमित्रटीका :- 'विष्लृ व्याप्तौ' (जु. उ. अ.)।

हिन्दी अर्थ :- विष- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम पानी और जहर का है।

उपादानेऽप्यामिषं[2] स्यादपराधेऽपि किल्बिषम्[3]॥२२४॥

कृष्णमित्रटीका :- उपादानमुत्कोचः॥२२४॥

हिन्दी अर्थ :- आमिष- यह एक (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) नाम उपादान और उत्कोच (रिश्वत) का है। किल्बिष- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम अपराध का और रोग का है॥२२४॥

स्याद्वृष्टौ लोकधात्वंशे वत्सरे वर्षं[4] मस्त्रियाम्।

कृष्णमित्रटीका :- लोके (लोकं) धत्ते लोकधातुर्जम्बूद्वीपः, तस्यांशो नवधाभिन्न इलावृतादिः॥

हिन्दी अर्थ :- वर्ष- यह एक नाम वर्षा, जम्बूद्वीप का अंश भरतखंड आदि और संवत्सर का है और (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) है।

प्रेक्षा[5] नृत्येक्षणं प्रज्ञा

कृष्णमित्रटीका :- 'प्रेक्षा नृत्येक्षणे बुद्धौ' (मेदिनी १६६.१६)॥

हिन्दी अर्थ :- प्रेक्षा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम नाच देखने का और बुद्धि का है।

भिक्षा[6] सेवार्थना भृतिः॥२२५॥

कृष्णमित्रटीका :- अर्थना याञ्चा। भृतिर्वेतनम्॥२२५॥

हिन्दी अर्थ :- भिक्षा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम सेवा, मांगना और वेतन का है॥२२५॥

त्विट्[7] शोभापि, त्रिषु परे

कृष्णमित्रटीका :- इतः परे षान्तास्त्रिषु वाच्यलिङ्गा॥

हिन्दी अर्थ :- त्विषू- शोभा तथा वाणी, नयक्ष-अध्यक्ष और रूक्ष यह तीनों शब्द वाच्यलिङ्गी है।

न्यक्षं[1] कात्स्न्यनिकृष्टयोः।

कृष्णमित्रटीका :- नियताक्षं निकृष्टाक्षं वा न्यक्षम्॥

हिन्दी अर्थ :- न्यक्ष- यह एक नाम संपूर्णता और नीचे का है।

प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षः[2]

कृष्णमित्रटीका :- अधिगतोऽक्षैरध्यक्षः[3]। अक्षेष्वायस्थानेष्वधिकृतोऽध्यक्षः[4] अध्यक्षो नियुक्तः॥

हिन्दी अर्थ :- अध्यक्ष- यह एक नाम प्रत्यक्ष और अधिकृत का है।

रूक्षस्त्वप्रम्ण्यचिक्कणे[5]॥२२६॥

इति षान्ताः॥

कृष्णमित्रटीका :- अचिक्कणे निस्नेहे।

(इति षान्ताः)।

हिन्दी अर्थ :- रूक्ष- यह एक नाम प्रेम रहित का और रूखे का है॥२२६॥

यहाँ षान्त शब्द समाप्त हुए॥

रविश्वेतच्छदौ हंसौ[6]

कृष्णमित्रटीका :- हन्ति गच्छति (इति) हंसः॥

हिन्दी अर्थ :- हंस- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम सूर्य का और हंस विशेष का है।

सूर्यवह्नी विभावसू[7]।

वत्सौ[8] तर्णकवर्षौ द्वौ सारङ्गाश्च दिवौकसः[9]॥२२७॥

कृष्णमित्रटीका :- तर्णको गवादिशिशुः॥२२७॥

हिन्दी अर्थ :- विभावसु- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम सूर्य का और अग्नि का है। वत्स- यह एक (पुल्लिङ्ग)

1. **Visam n.** means (a) water and (b) poison. 2. **Amisam n.** means (a) bribe and (b) meat. 3. **Kilvisam n. mas.** means (a) an offence (b) sin and (c) a disease. 4. **Varsam n.** mas. means (a) rain (b) a division of the world and (c) a year. 5. **Preksa f.** means (a) enjoying a dance and (b) intellect 6. **Bhiksa f.** means (a) service (b) begging (c) wages and (d) alms 7. **Tvit f.** means (a) beauty (b) speech and (c) lustre.

1. **Nyaksam all g.** means (a) entirety and (b) vile, mean. 2. **Adhyaksah all g.** means (a) perceptible to the senses and (b) a superintendent. 3. M. अधिगतोक्षैरध्यक्षः 4. M. कृतोऽध्यक्षः, 5. **Ruksah all g.** means (a) unkind and (b) ruogh, harsh. 6. **Hamsah mas.** means (a) the sun and (b) a swan 7. **Vibhavasuh mas.** (a) the sun and (b) fire. 8. **Vatsah mas.** means (a) a calf and (b) a year. 9. **Divaukasah mas.** means (a) a peacock and (b) a god.

नाम गौ के बच्चे का और वर्ष का है। दिवौकस्- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम पपैये का और देवताओं का है॥२२७॥

शृङ्गारादौ विषे वीर्ये गुणे रागे द्रवे रसः[1]।

कृष्णमित्रटीका :- विषे यथा- तीक्ष्णरसा भिक्षुकी। वीर्ये- रसस्यातिरसः सर्पिः। गुणे मधुरलवणादौ। रागे- रसिकः पुरुषः॥

हिन्दी अर्थ :- रस- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम शृंगार आदि, विष, वीर्य, गुण, प्रीति और द्रव का है।

पुंस्युत्तंसावतंसौ[2] कर्णपूरेऽपि[3] शेखरे॥२२८॥

कृष्णमित्रटीका :- कर्णपूरः कर्णाभरणम्। शेखरः (भूषणम्)॥२२८॥

हिन्दी अर्थ :- १. उत्तंस, २. अवतंस- ये दो (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) नाम कान के गहने के और शिर के गहने के हैं॥२२८॥

देवभेदेऽनले रश्मौ वसू[4] रत्ने धने वसु।

कृष्णमित्रटीका :- देवभेदे यथा- अष्टौ वसवः। अनल=अग्निः। रश्मिस्तेजः॥

हिन्दी अर्थ :- वसु- यह एक नाम देवता (वसुदेवता), अग्नि, किरण का वाची (पुल्लिङ्ग) है। रत्न का और धन का वाची (नपुंसकलिङ्ग) है।

विष्णौ च वेधाः[5] स्त्री त्वाशीः[6] हिताशंसाहिदंष्ट्रयोः॥२२९॥

कृष्णमित्रटीका :- अहेः सर्पस्य दंष्ट्रा॥२२९॥

हिन्दी अर्थ :- वेधस् (सान्त)- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम विष्णु का और ब्रह्मा का है। आशिस्- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम हित की चाहना का और सर्प की डाढ़ का है॥२२९॥

लालसे[7] प्रार्थनौत्सुक्ये

कृष्णमित्रटीका :- उत्कण्ठातृष्णयोर्लालसा॥

हिन्दी अर्थ :- लालसा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम प्रार्थना और आनन्द का है।

हिंसा[1] चौर्यादिकर्म च।

प्रसूरश्वापि[2]

कृष्णमित्रटीका :- अश्वा वडवा॥

हिन्दी अर्थ :- हिंसा- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम चोरी और मारने आदि कर्म का है। प्रसू- यह एक (स्त्रीलिङ्ग) नाम माता का और घोड़ी का है।

भूद्यावौ रोदस्यौ रोदसी[3] च ते॥२३०॥

कृष्णमित्रटीका :- 'रोदसी' शब्द ईदन्तः। सान्तो 'रोदः' शब्दस्तु क्लीबे। 'रोदसी' इत्यव्ययमपि॥२३०॥

हिन्दी अर्थ :- १. रोदस् (सान्त नपुंसकलिङ्ग), २. रोदसी (स्त्रीलिङ्ग)- ये दो नाम पृथ्वी, आकाश के हैं॥२३०॥

ज्वालाभासोर्नपुंस्यर्चिः[4]

कृष्णमित्रटीका :- 'अचिर्मयूखशिखयोः' (मेदिनी १७१.१५)॥

हिन्दी अर्थ :- अर्चिस्- यह एक नाम ज्वाला और प्रकाश का है और (पुल्लिङ्ग) नहीं है।

ज्योतिर्भद्योत[5] दृष्टिषु।

कृष्णमित्रटीका :- भं तारका। द्योतः प्रकाशः। दृष्टिः कनीनिकामध्यम्॥

हिन्दी अर्थ :- ज्योतिस्- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम नक्षत्र, प्रकाश तथा दृष्टि का है।

पापापराधयोरागः[6]

कृष्णमित्रटीका :- पापे अपराधे च॥

हिन्दी अर्थ :- आगस्- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम पाप का और अपराध का है।

खगवाल्यादिनोर्वयः[7]॥२३१॥

कृष्णमित्रटीका :- वयतेरसुन् (उ. ४. १८८) वयः। बालादिनोरिति नुम्-निर्देशाद्वयः क्लीबम्॥२३१॥

---

1. **Rasah mas.** means (a) a sentiment (b) poison (c) semen virile (d) taste, flavour (e) love, affection (f) liquid, fluid (g) mercury and (h) water. 2. **Uttansah and avatansah mas.** means (a) an ear-ornament and (b) an ornament. 3. B. कर्णपुरे च 4. **Vasuh mas.** means (a) a class of dieties (b) fire and (c) a ray of light; vasu n. means wealth or riches. 5. **Vedhah f.** means (a) Visnu (b) Brahma and (c) a scholar. 6. **Asih f.** means (a) blessing and (b) the tooth of a snake 7. **Lalasa f.** means (a) solicitation and (b) eagerness, longing.

1. **Himsa f.** means (a) Killing and (b) stealing or any other bad work. 2. **Prusuh f.** means (a) a mother and (b) a mare. 3. **Rodasyau f.** and rodasi n. means (a) earth and (b) ether. 4. **Archih f. n.** means (a) a flame and (b) a ray of light. 5. **Jyotih n.** means (a) a star (b) light and (c) the faculty of seeing. 6. **Agah n.** means (a) sin and (b) offence. 7. **Vayah n.** means (a) a bird and (b) stages of life.

हिन्दी अर्थ :- वयस्- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम पक्षी का और बाल्य यौवन अवस्था आदि का है॥२३१॥

तेजः पुरीषयोर्वर्चो[1]मह[2] स्तूत्सवतेजसोः।
रजो[3] गुणे च स्त्रीपुष्पे

कृष्णमित्रटीका :- गुणे सत्त्वात्परे। स्त्रीपुष्पे-रजस्वला॥

हिन्दी अर्थ :- वर्चस्- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम तेज का और विष्ठा का है। महस्- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम उत्सव और तेज का है। रजस्- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम रजोगुण का और स्त्री के रजोधर्म का है।

राहौ ध्वान्ते गुणे तमः[4]॥२३२॥
छन्दः[5] पद्येऽभिलाषे च

कृष्णमित्रटीका :- पद्ये गायत्र्यादौ। अभिलाषे, अकारान्तोऽपि[6]॥

हिन्दी अर्थ :- तमस्- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम राहु, अंधेरा तथा तमोगुण का है॥२३२॥ छन्दस्- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम सांतपन और चान्द्रायण आदि व्रत का है।

तपः[7] कृच्छ्रादिकर्म च।

कृष्णमित्रटीका :- तपा माघेऽपि[8] ग्रीष्मार्थस्त्वदन्तः॥

हिन्दी अर्थ :- तपस्- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम सांतपन और चान्द्रायण आदि व्रत का है।

सहो[9] बलं सहा मार्गो नभः[10] खं श्रावणो नभाः॥२३३॥

कृष्णमित्रटीका :- सहो नभसोर्द्विः पाठो लिङ्गभेदार्थः॥२३३॥

हिन्दी अर्थ :- सहस्- यह एक नाम बल का वाची (नपुंसकलिङ्ग) है और मार्ग का वाची (पुल्लिङ्ग) है। नभस्- यह एक नाम आकाश का वाची (नपुंसकलिङ्ग) और श्रावण का वाची (पुल्लिङ्ग) है॥२३३॥

ओकः[1] सद्माश्रयश्चौकाः

कृष्णमित्रटीका :- अदन्त ओकः, सान्तश्च सद्माश्रये॥

हिन्दी अर्थ :- ओकस्- यह एक नाम मकान का वाची (नपुंसकलिङ्ग) और आश्रय वाचक (पुल्लिङ्ग) है।

पयः[2] क्षीरं पयोऽम्बु च।
ओजो[3] दीप्तौ बले स्रोत[4] इन्द्रिये निम्नगारये॥२३४॥

कृष्णमित्रटीका :- इन्द्रिये इन्द्रियद्वारे। निम्नगाया नद्या रये प्रवाहे॥२३४॥

हिन्दी अर्थ :- पयस्- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम दूध और पानी का है। ओजस्- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम कांति और बल का है। स्रोतस्- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम इन्द्रिय और नदी के वेग का है॥२३४॥

तेजः[5] प्रभावे दीप्तौ च बले शुक्रेऽपि
शुक्रे रेतसि।
अतस्त्रिषु।

कृष्णमित्रटीका :- इतस्सान्ता वाच्यलिङ्गाः॥

हिन्दी अर्थ :- तेजस्- यह एक (नपुंसकलिङ्ग) नाम प्रभाव, तेज, बल और वीर्य का है। इससे आगे सकारान्त शब्द की समाप्तिपर्य्यन्त सब शब्द (त्रिलिङ्ग) हैं।

विद्वान्[6] विदंश्च

कृष्णमित्रटीका :- वेत्ति विद्वान्। विदन् पण्डितः।

हिन्दी अर्थ :- विद्वस्- यह एक नाम जाननेवाले का और आत्मज्ञानी का है।

बीभत्सो[7] हिंस्रोऽपि

कृष्णमित्रटीका :- वीभत्सो गुप्सितोऽपि[8]।

---

1. **Varcah n.** means (a) light, lustre and (b) Ordue. 2. **Mahah n.** means (a) a festival and (b) light, lustre. 3. **Rajah n.** means (a) Rajoguna (b) menstrual discharge and (c) dust. 4. **Tamah n.** means (a) Rahu (b) darkness and (c) Tamoguna. 5. **Chandah n.** means (a) a metre (b) a desire and (c) the veda. 6. M. अकारान्तोपि, 7. **Tapah n.** means (a) penance and (b) a world; tapah mas. means the month Magha. 8. M. माघेपि। 9. **Sahah n.** means power of energy; and sahah mas. means the month Agahana. 10. **Nabhah n.** means sky; nabhah mas. means the month S'ravana.

1. **Okah n.** means (a) a house and (b) an asylum. 2. **Payah n.** means (a) milk and (b) water. 3. **Ojah n.** means (a) splendour (b) vigour, energy and (c) light. 4. **Srotah n.** means (a) an organ of sense and (b) stream, current. 5. **Tejah n.** means (a) majesty, dignity (b) brilliance, lustre (c) strength and (d) semen virile. 6. **Vidvan all g.** means (a) a wise, learned and (b) a self-knower. 7. **Bibhatsah all g.** means (a) eruel ferocious, and bibhatsah mas. means a poetical sentiment. 8. M.गुप्सितोपि.

हिन्दी अर्थ :- बीभत्स- यह एक नाम क्रूर और रसभेद का है।

अतिशये त्वमी ॥२३५॥

कृष्णमित्रटीका :- अमी वक्ष्यमाणाः॥२३५॥

हिन्दी अर्थ :- ये वक्ष्यमाण (आगे कहे जाने वाले) ज्यायस् से लेकर साधीयस् शब्द पर्य्यन्त अतिशय के वाची हैं॥२३५॥

वृद्धप्रशस्ययोर्ज्यायान्[1]

कृष्णमित्रटीका :- 'ज्य च' (५. ३. ६१) 'वृद्धस्य च' (५. ३. ६२)॥

हिन्दी अर्थ :- जयायस्- यह एक नाम अत्यन्त वृद्ध और अत्यंत स्तुति के योग्य का है।

कनीयांस्तु[2] **युवाल्पयोः।**

वरीयास्तूरुवरयो[3]**: साधीयान्**[4] **साधुवाढयोः॥२३६॥**

इति सान्ताः।

कृष्णमित्रटीका :- 'युवाल्पयोः कन्-' (५. ३. ६४)॥२३६॥

(इति सान्ताः)।

हिन्दी अर्थ :- कनीयस्- यह एक नाम अत्यंत जवान का और अत्यंत अल्प का है। वरीयस्- यह एक नाम अत्यंत बड़े का और अत्यन्त श्रेष्ठ का है। साधीयस्- यह एक नाम अत्यंत साधु का और अत्यंत प्रतिज्ञावाले का है॥२३६॥

यहाँ सान्त शब्द समाप्त हुए॥

दलेऽपि बर्हम्[5]

कृष्णमित्रटीका :- दलं पर्णम्। बर्हं मयूरपिच्छेऽपि॥[6]

हिन्दी अर्थ :- बर्ह- यह एक (पुल्लिङ्ग नुपंसकलिङ्ग) नाम पत्ते और मोर के पंख का है।

निर्बन्धोपरागार्कादयो ग्रहाः[7]**।**

कृष्णमित्रटीका :- उपरागो राहुग्रहणम्॥

हिन्दी अर्थ :- ग्रह- यह एक (पुल्लिङ्ग) नाम आग्रहविशेष, ग्रहण और सूर्य आदि ग्रहों का है। आगे के वर्गान्त तक सब शब्द (पुल्लिङ्ग) हैं।

द्वार्यापीडे क्वाथरसे निर्व्यूहो[1] **नागदन्तके॥२३७॥**

कृष्णमित्रटीका :- आपीडे शिरोभूषणे। क्वाथरसे क्वथितद्रव्यरसे। नागदन्त के भित्तिस्थकीलके॥२३७॥

हिन्दी अर्थ :- निर्व्यूह- यह एक नाम द्वार, मुकुट, क्वाथ का रस, घर आदि की भीति में गाड़ी हुई दो कीलों का है॥२३७॥

तुलासूत्रेऽश्वादिरश्मौ प्रग्राहः[2] **प्रग्रहोऽपि च॥**

कृष्णमित्रटीका :- प्रगृह्यतेऽनेन[3]। अश्वस्य रज्जौ॥

हिन्दी अर्थ :- १. प्रग्राह, २. प्रग्रह- ये दो नाम तराजू की डोरी और घोड़े आदि की रस्सी का है।

पत्नीपरिजनादानमूलशापाः परिग्रहाः[4] **॥२३८॥**

कृष्णमित्रटीका :- आदानं स्वीकारः। शापः शपथः॥२३८॥

हिन्दी अर्थ :- परिग्रह- यह एक नाम भार्या, कुटुम्ब, अंगीकार, मूल और शाप का है॥२३८॥

दारेषु च ग्रहाः[5] **श्रोण्यामप्यारोहा**[6] **वरस्त्रियाः।**

कृष्णमित्रटीका :- श्रोण्यां यथा- वरारोहा॥

हिन्दी अर्थ :- गृह- यह एक नाम स्त्री वाची बहुवचनान्त (पुल्लिङ्ग) है और मकान का वाचक (नुपंसकलिङ्ग) है। आरोह- यह एक नाम उत्तम स्त्री की कटि का और हाथी के चढ़ने का है।

व्यूहो[7] **वृन्देऽपि**

कृष्णमित्रटीका :- व्यूहः सैन्यविन्यासोऽपि[8]।

हिन्दी अर्थ :- व्यूह- यह एक नाम समूह और सेना के स्थित करने का है।

---

1. **Jyayah all g.** means (a) elder and (b) superior, most excellent 2. **Kaniyan all g.** means (a) younger and (b) smaller, shoorter. 3. **Varian all g.** means (a) most exensive and (b) very good. 4. **Sadhiyan all g.** means (a) better and (b) harder, stronger. 5. **Barham mas. n.** means (a) a leaf and (b) a peacock's tail. 6. मयूरपिच्छेपि, 7. **Grahah mas.** means (a) seizing (b) an eclipse of the sun or the moon and (c) a planet.

1. **Niryuhah mas.** means (a) a door (b) a head-ornament (c) decoction and (d) a peg. 2. **Pragrahah and pragrahah mas.** means (a) the string of a balance and (b) rein. 3. M. प्रगृह्यतेनेन, 4. **Parigrahah mas.** means (a) wife (b) an attendent, follower and (c) receiving, taking (d) root, (e) an oath and (f) the eclipse of the sun or the moon. 5. **Grhah mas.** pl. means (a) wife; gham n. means a house. 6. **Arohah mas.** means (a) the buttoks of a woman nad (b) height, elevation. 7. **Vyuhah mas.** means (a) a military array and (b) multitude. 8. M. सैन्यविन्यासोपि.

अहिर्वृत्रे[1]ऽप्यग्नीन्द्वर्कास्तमोपहाः[2] ॥२३६॥
परिच्छदे नृपार्हेऽर्थे परिवर्हः[3]

इति हान्ताः

इति (शब्देषु) नानार्थवर्गः ॥३॥

कृष्णमित्रटीका :- नृपार्हे छत्रचामरादौ। अर्थे वस्तुनि। (इति हान्ताः)

(इति नानार्थवर्गः ॥३॥)

हिन्दी अर्थ :- अहि- यह एक नाम वृत्रासुर का और सर्प का है। तमोपह- यह एक नाम अग्नि, चन्द्रमा और सूर्य का है॥२३६॥ परिबर्ह- यह एक नाम राजा के योग्य सफेद छत्र आदि और चंदोवा वस्त्र आदि का है।

यहाँ हान्त शब्द समाप्त हुये॥

(यहाँ नानार्थवर्ग समाप्त हुये)।

अथ अव्ययेष्वनेकार्थवर्गः ॥४॥

अव्ययाः परे।

कृष्णमित्रटीका :- इत ऊर्ध्वमव्ययवर्गः॥

हिन्दी अर्थ :- इससे आगे अव्यय है।

आङीषदर्थेऽभिव्याप्तौ[4] सीमार्थे धातुयोगजे ॥१॥

कृष्णमित्रटीका :-अततेर्डाङ् ईषद्रक्तमारक्तम्। अभिव्याप्तिरभिविधिः। सीमा मर्यादा, तेन सहेत्यभिविधिः, तेन विनेति मर्यादा। आप्रयागं वृषः। धातुना योगे सति योऽर्थो[5] जायते तत्र यथा-आरोहति॥१॥

हिन्दी अर्थ :- आङ्- यह एक नाम ईषदर्थ अर्थात् थोड़ा, अभिव्याप्ति, सीमार्थ और धातुयोगज का वाचक अव्यय है और इसका ङ्कार अनुबंध के लिये है। ईषदर्थ में आपिंगल अर्थात् कुछ पिंगल है। अभिव्याप्ति में जैसे- 'आ सत्यलोकात्' अर्थात् सत्यलोक को अभिव्याप्त करके। सीमार्थ में जैसे- 'आसमुद्रं राजदंडः' अर्थात् समुद्र तक राजदंड है। धातुयोग में जैसे- 'आहरति' अर्थात् आक्रमण करता है॥१॥

आ[6] प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्येऽपि

कृष्णमित्रटीका :- आप्नोतेः क्विप्। स्मृतिः सूचनं-आ एवं किल तत्। वाक्ये= पूर्वोक्तस्यान्यथात्व-द्योत्ये- आ एवं नु मन्यसे, पूर्वमेवं न मंस्था इदानीं तु मन्यस इत्यर्थः। 'निपात एकाच्-' (१. १. १४) इति प्रगृह्यता॥

हिन्दी अर्थ :- जो प्रगृह्यसंज्ञक आ है वह स्मरण में और वाक्य के पूरने में है।

आस्तु[1] स्यात्कोपीडयोः।

कृष्णमित्रटीका :- आस्तेः क्विप्। कोपे- आः मा पतिष्ठः। पीडायाम्- आः किमकार्षीः।

हिन्दी अर्थ :- आः यह कोप में और पीडा के अर्थ में है।

पापकुत्सेषदर्थे कु[2]

कृष्णमित्रटीका :- क्रवतेर्डुः (वा. ३. २. १८०) पापे यथा- पापी ब्रह्मा, कुब्रह्मा। कुत्सायांकुपुरुषः। ईषज्जलं काजलम्॥

हिन्दी अर्थ :- कु यह पाप, निन्दा और थोड़ा के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

धिग्निर्भर्त्सननिन्दयोः[3]॥२॥

कृष्णमित्रटीका :- निर्भर्त्सने-धिग्नास्तिकान्। निन्दायां-धिक्कृतोऽयम्[4]॥२॥

हिन्दी अर्थ :- धिक् यह झिड़कने में और निन्दा में प्रयुक्त होता है॥२॥

चान्वाचयसमाहारेतरेतरसमुच्चये[5]।

कृष्णमित्रटीका :- चन्देर्डः (वा. ३. २. १०१) अन्वाचयो मुख्यप्रसङ्गाद्गौणस्यापि सिद्धिः (यथा)- भिक्षामट गां चानय। समाहारे- पाणिपादम्। इतरेतरयोर्योगे-धवखदिरौ। समुच्चय एकत्रानेक संचय- घटः पटश्च आनेषौ (आनीषौ)॥

हिन्दी अर्थ :- च यह अन्वाचय, समाहार, इतरेतर, समुच्चय के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

स्वस्त्याशीः[6] क्षेमपुण्यादौ

---

1. **Ahih n.** means (a) Vrtrasura and (b) a snake. 2. **Tamopahah mas.** means (a) fire (b) moon and (c) the sun. 3. **Parivarhah mas.** means (a) furniture (b) a royal insignia and (c) wealth. 4. **Angins means** (a) little (b) the limit inceptive (c) the limit exclusive or inclusive and (d) the meaning obtained from its joinder with a verb. 5. योर्थो, 6. **A ind.** means (a) recollection and (b) sentence.

1. **Ah ind.** means (a) anger, with and (b) pain. 2. **Ku ind.** means (a) sin (b) badness and (c) littleness. 3. **Dhik ind.** means (a) menace and (b) reproach. 4. M. धिक्कृतीयम्, 5. **Ca ind.** means (a) anvacaya joining a subordinate fact with a principal one (b) samahara (collective combination) (c) iteretarayoga (mutual connection) and (d) samuccaya (aggregation). 6. **Svasti ind means** (a) blessing (b) welfare (c) merit and (d) benediction.

कृष्णमित्रटीका :- सु पूर्वादसेः क्तिच् (३. ३. १७४) स्वस्ति तेऽस्तु[1]। क्षेमे-स्वस्ति प्रजाभ्यः। पुण्ये-काममिदं ते स्वस्ति। आदिना मङ्गलेस्वस्ति श्रीधर्मपुरात्।

हिन्दी अर्थ :- स्वस्ति का आशीर्वाद, कुशल, पुण्य आदि में प्रयोग होता है।

प्रकर्षे लङ्घनेऽप्यति[2] ॥३॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रकर्षे- अतिवृद्धः। लङ्घने-अतिसर्वः॥३॥

हिन्दी अर्थ :- अति यह अत्यंत और लंघन में प्रयुक्त होता है॥३॥

स्वित्प्रश्ने[3] च वितर्के च

कृष्णमित्रटीका :- सुष्ठु एति, स्वित्। (प्रश्ने) कः स्विदेकाकी चरति। वितर्को नानापक्षोद्भावनम्- इह स्विदस्ति, अन्यत्र स्विदस्ति।

हिन्दी अर्थ :- स्वित् यह प्रश्न और तर्क में प्रयुक्त होता है।

तु[4] स्याद् भेदेऽवधारणे।

कृष्णमित्रटीका :- तुदेः (तु. उ. अ.) डुः (३. २. १८०) भेदो विशेष :- क्षीरान्मांसं तु पुष्टिकृत्। अवधारणे-भीमस्तु पाण्डवानां रौद्रः।

हिन्दी अर्थ :- तु यह निश्चय और भेद में प्रयुक्त होता है।

सकृत्[5] सहैकवारे चापि

कृष्णमित्रटीका :- एकवारम्। 'एकस्य सकृच्च' (५. ४. १९) इति सुच्। सहार्थे- सकृद्यान्ति

हिन्दी अर्थ :- सकृत् यह सहार्थ और एक वार में प्रयुक्त होता है।

आराद्दूरसमीपयो[6]: ॥४॥

कृष्णमित्रटीका :- एतेरातिः, आरात्॥४॥

हिन्दी अर्थ :- आरात् यह एक नाम दूर का और समीप का वाचक है॥४॥

प्रतीच्यां चरमे पश्चात्[7]

कृष्णमित्रटीका :- चरमे-पश्चाद्याति॥

हिन्दी अर्थ :- पश्चात्- यह एक नाम पश्चिम दिशा का और अन्त्य का वाचक है।

उताप्यर्थविकल्पयो:[1]।

कृष्णमित्रटीका :- 'उङ् शब्दे' (भ्वा. आ. अ.)। क्तः (३. ३. १७४)। अप्यर्थः समुच्चये प्रश्ने (च)। समुच्चये - उत भीम उतार्जुनः। प्रश्ने उत दण्डः पतिष्यति। विकल्पे- स्थाणु उत पुरुषः।

हिन्दी अर्थ :- उत- यह एक नाम समुच्चय का और विकल्प के अर्थ में है।

पुनः सहार्थयोः शश्वत्[2]

कृष्णमित्रटीका :- 'शश प्लुगतौ' (भ्वा. प. से.), वत्। पुनरर्थे पौनः पुन्येशश्वद्याति। सहार्थे-शश्वद् भुञ्जते॥

हिन्दी अर्थ :- शश्वत्- यह एक नाम वारं वार का और सहार्थ का बोधक है।

साक्षात्[3] प्रत्यक्षतुल्ययो ॥५॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रत्यक्षे-साक्षात्करोति। तुल्ये- इयं साक्षाल्लक्ष्मीः॥५॥

हिन्दी अर्थ :- साक्षात्- यह एक नाम प्रत्यक्ष और तुल्य बोधक का है॥५॥

खेदानुकम्पासंतोषविस्मयामन्त्रणे बत[4]।

कृष्णमित्रटीका :- खेदे- अहो बत महत्कष्टम्। अनुकम्पायां- बत निस्वोऽसि[5]। संतोषे- बत प्राप्ता सीता। विस्मये-बतातिवीर्योऽसि[6]। आमन्त्रणे- बत विसर (तरत) तोयं (तोय) वाहा नितान्तम्॥

हिन्दी अर्थ :- बत- यह एक नाम खेद, दया, संतोष, आश्चर्य, गुप्त बोलने का बोधक है।

हन्त[7] हर्षेऽनुकम्पायां वाक्यारम्भविषादयोः ॥६॥

---

1. M. तेस्तु, 2. **Ati ind.** means (a) very, exceadingly and (b) abovo, surpassing. 3. **Svit ind.** implies (a) inqury and (b) either...or. 4. **Tu ind.** means (a) difference and (b) certianty. 5. **Sakrt ind.** means (a) once and (b) together with. 6. **Arat ind.** means (a) far and (b) near. 7. **Pas'cat ind.** means (a) west, westward and (b) lastly, finally.

1. **Uta ind.** means (a) association, connection (b) interrogation (c) alternative (d) doubt, uncertainty (e) amazement and (f) address. 2. **S'asvat ind,** means (a) again and again (h) together with and (c) always. 3. **Saksat ind.** means (a)direct and (b) like, similar, 4. **Bata ind means** (a) regret (alas) (b) compassion, pity (c) satisfction, pleasure. 5. M. निस्सवोसि, 6. M. वीर्योसि। 7. **Hanta ind.** means (a) joy (b) compassion (c) the beginning of a sentence and (d) grief.

कृष्णमित्रटीका :- हन्तेः तः। हर्षे- हन्त जीविताः स्मः। अनुकम्पायां-पुत्र हन्त ते बालकाः। वाक्यारम्भे- 'हन्त ते कथयिष्यामि' (गीत १०.१९)। विषादे- हन्त ताः पथिकाङ्गनाः ॥६॥

हिन्दी अर्थ :- हंत- यह अव्यय आनन्द, दया, वाक्य का आरंभ, विषाद का बोधक है॥६॥

प्रति[1] प्रतिनिधौ वीप्सालक्षणादौ प्रयोगतः।

कृष्णमित्रटीका :- प्रथेः (भ्वा. आ. से.) डतिः। प्रतिनिधौ-प्रद्युम्नः कृष्णात्प्रति। बीप्सायां-वृक्षं वृक्षं प्रतिसिञ्चति। लक्षणे-वृक्षं प्रति विद्योतते विद्युत्। आदिना इत्थंभूताख्यानादौ।

हिन्दी अर्थ :- प्रति यह अव्यय प्रतिनिधि, व्याप्त होने की इच्छा, लक्षणा, इत्थंभूत आख्यान आदि में प्रयुक्त होता है शिष्टप्रयोगी है।

इति[2] हेतुप्रकरणप्रकर्षादि[3] समाप्तिषु॥७॥

कृष्णमित्रटीका :- एतेः क्तिच् (३. ३. १७४) इति। हेतौ- हन्तीति पलायते। प्रकरणं प्रकारः- हस्ती गौरश्व इति जातिः। प्रकर्षे- इति पाणिनिः, पाणिनिशब्दः प्रकर्षात्प्रसिद्ध इत्यर्थः॥७॥

हिन्दी अर्थ :- इति यह अव्यय हेतु, प्रकरण, प्रकाश, निश्चय और समाप्ति का बोधक है॥७॥

प्राच्यां पुरस्तात्प्र[4]थमे पुरार्थेऽग्रत इत्यपि।

कृष्णमित्रटीका :- पूर्वस्मिन्पुरस्तात्। 'अस्ताति च' (५. ३. ४०)। पुरार्थे अतीते-पुरस्ताद् रामोऽभूत्[5]। अग्रतोऽर्थे[6]- पुरस्तात्सेनानीर्यातिः॥

हिन्दी अर्थ :- पुरस्तात् यह अव्यय पूर्वदिशा, प्रथम, बीता हुआ, आगे (सामने) का बोधक है।

यावत्तावच्च[7] साकल्येऽवधौ मानावधारणे॥८॥

1. **Prati ind.** means (a) a representative of (b) in each, in or at very (c) toward, in direction of and (b) with regard or reference to. 2. **Iti ind.** means (a) cause (expressed by 'since' or 'because') (b) description, of this nature (c) quotation (d) thus and (e) conclusion. 3. B. प्रकाशादि, 4. **Purastat and** agratah ind. mean (a) eastward (b) past time (c) foremost and (d) before, in front. 5. M. रामोभूत्, 6. M. अग्रतोर्थे, 7. **Yavat and tavat ind.** mean (a) totality (b) as long as (c) as much as and (d) as soon as.

कृष्णमित्रटीका :- यत्परिमाणमस्य। साकल्ये-यावल्लब्धं तावद्भुक्तम्। अवधौयावद्गङ्गा तावद्गच्छ। माने-याव (द्दत्तं ताव) द्भुक्तम्। अवधारणेयावदमत्रं ब्राह्मणानामन्त्रयस्व॥८॥

हिन्दी अर्थ :- १. यावत्, २. तावत्- ये दो अव्यय तक सम्पूर्णता, अवधि, परिमाण, निश्चय के बोधक है॥८॥

मङ्गलानन्तरारम्भप्रश्नकार्त्स्न्येष्वथो[1] अथ

कृष्णमित्रटीका :- मङ्गले- अथ परस्मैपदानि। आरम्भे-अथ शब्दानुशासनम्। प्रश्ने-अथ (श) क्तोऽसि[2] भोक्तुम्। कार्त्स्न्यो-अथ क्रतून् ब्रूमः। अर्थयतेः (चु. आ. से.) डोर्डश्च॥

हिन्दी अर्थ :- १. अथो, २. अथ- ये दो अव्यय, मंगल, अनंतर, आरंभ, प्रश्न, सकसम्पूर्णता के वाचक है।

वृथा[3] निरर्थकाविध्योः

कृष्णमित्रटीका :- वृञः थाक्। अविधि-र्विध्यभावः। वृथादानं नटादौ।

हिन्दी अर्थ :- वृथा- यह एक अव्यय निरर्थक का और विधि से हीन का बोधक है।

नानानेको[4] भयार्थयोः॥९॥

कृष्णमित्रटीका :- उभयार्थे- नानापक्षावमर्षः संशयः॥९॥

हिन्दी अर्थ :- नाना अनेकार्थ और उभयार्थ का बोधक है॥९॥

नु[5] पृच्छायां विकल्पे च

कृष्णमित्रटीका :- प्रश्ने-को नु धावति। विकल्पे-भीमो नु अर्जुनो नु।

हिन्दी अर्थ :- नु पूछने का और विकल्प का बोधक है।

पश्चात्सादृश्ययोरनु[6]।

कृष्णमित्रटीका :- पश्चादर्थे- तमनुधावति। सादृश्ये-अनुकारः॥

1. **Atho and atha Ind.** mean (a) auspiciousness (b) beginning (c) interrogation (d) totality, entirety and (e) then, afterward. 2. M. क्तोसि, 3. **Vrtha ind.** means (a) useless and (b) improper. 4. **Nana (b) ind.** means (a) different, manifold and (b) both 5. **Nu ind.** means (a) interrogation and (b) alternative (or). 6. **Anu ind.** means (a) after, behind (b) like, in imitation of.

हिन्दी अर्थ :- अनु पीछे का और सदृशता का बोधक है।

प्रश्नावधारणानुज्ञानुनयामन्त्रणे ननु[1] ।।१०।।

कृष्णमित्रटीका :- प्रश्ने-ननूपदिश्यसि। अवधारणे- नन्वद्य गच्छामः। अनुज्ञा इच्छा-नन्वादिश। अनुनयामन्त्रणे-ननु चण्डि प्रसीद मे।।१०।।

हिन्दी अर्थ :- ननु प्रश्न, निश्चय, आज्ञा, सान्त्वना, संबोधन का बोधक है।।

गर्हासमुच्चयप्रश्नशङ्कासंभावनास्वपि[2] ।

कृष्णमित्रटीका :- गर्हायाम्-अपि स्तुयाद्बलम्। समुच्चये-भीमोऽर्जुनोऽपि[3]। प्रश्ने-अपियासि। शङ्कायाम्-अपि प्रसीदेत्। संभावने-अपि शिरसा गिरिं भिन्द्यात्।।

हिन्दी अर्थ :- अपि निन्दा, समुच्चय, पश्न, शंका, संभावना अर्थो का वाचक है।

उपमायां विकल्पे वा[4]

कृष्णमित्रटीका :- उपमायां-आशीविषो वा संक्रुद्धः।

हिन्दी अर्थ :- वा उपमा का और विकल्प का बोधक है।

सामि[5] त्वर्धे जुगुप्सिते ।।११।।

कृष्णमित्रटीका :- अर्धे-सामि संमीलिताक्षा (क्षी)। जुगुप्सिते-सामि कृतमकृतं स्यात्।।११।।

हिन्दी अर्थ :- सामि आधे का और निन्दा का बोधक है।।११।।

अमा[6] सह समीपे च

कृष्णमित्रटीका :- सहार्थे- अमा वसतश्च-न्द्रर्कावस्याममावास्या। समीपे अम्म भवो मासः।।

हिन्दी अर्थ :- अमा साथ का और समीप का बोधक है।

कं[7] वारिणि च मूर्घ्नि च[8] ।

कृष्णमित्रटीका :- जले-कञ्जं कमलम् मूर्घ्नि-कञ्जाः केशाः।।

हिन्दी अर्थ :- कं पानी का और शिर का बोधक है।

इवेत्थमर्थयोरेवम्[1]

कृष्णमित्रटीका :- इवार्थे- अग्निरेवं विप्रः। इत्थमर्थे-एवमिदम्।।

हिन्दी अर्थ :- एवं सदृशता का और निश्चय का वाचक है।

नूनं[2] तर्केऽर्थनिश्चये ।।१२।।

कृष्णमित्रटीका :- तर्के-नूनमयं विद्वान्। अर्थनिश्चये-नूनं गमिष्यामि।।१२।।

हिन्दी अर्थ :- नूनं तर्क का और अर्थ के निश्चय का बोधक है।।१२।।

तूष्णीमर्थे सुखे जोषम्[3]

कृष्णमित्रटीका :- तूष्णीमर्थे-जोषमास्व। सुखे- जोषमास्ते जितेन्द्रियः।।

हिन्दी अर्थ :- तूष्णीम् मौन का वाचक है। जोषं सुख का वाचक है।

किं[4] पृच्छायां जुगुप्सने ।

कृष्णमित्रटीका :- प्रश्ने-किं गतोऽसि[5]। जुगुप्सने- किं राजा यो न रक्षति।

हिन्दी अर्थ :- किं पूंछने का और निन्दा का वाचक है।

नाम[6] प्राकाश्यसंभाव्यक्रोधोपगमकुत्सने ।।१३।।

कृष्णमित्रटीका :- प्राकाश्ये- 'हिमालयो नाम नगाधिराजः' (कु. सं. १.१)। संभावने- कथं नाम समेष्यति। संभाव्यं स्मृतिः- स नामायं बन्धुः। क्रोधे-ममापि नाम परैः पराभिभवः। उपगमोऽङ्गीकारः[7]- एवमस्तु नाम। कुत्सने- को नामायम्।।१३।।

---

1. **Nanu ind.** means (a) inquiry, interrogation (b) certainly (c) any desire and (d) pray or be pleased. 2. **Api ind.** means (a) contempt (b) and, also (c) interrogation (d) doubt, uncertainty and (e) passibility supposition. 3. M. भीमार्जुनोपि, 4. **Va ind.** means (a) like and (b) or. 5. **Sami ind.** means (a) half and (b) contemptible. 6. **Ama ind.** means (a) together with and (b) near, close to. 7. **Kam ind.** means (a) water (b) the hair and (c) the mouth. 8. B. omits च, and reads मूर्धनि, for मूर्घ्नि,

1. **Evam ind means** (a) like, similar and (b) thus, so. 2. **Nunam ind means** (a) probablity, in all probability and (b) decidedly, surely. 3. **Josam ind.** means (a) silently and (b) with ease. 4. **Kim ind** means (a) enquiry and (b) censure. 5. M. गतोसि, 6. **Nama ind.** means (a) named, called (b) probably, perhaps (c) anger (d) acceptance and (e) censure. 7. M. उपगमोङ्गेकारः.

हिन्दी अर्थ :- नाम प्रकाश होने, कथंचिदर्थ, क्रोध, वैरसहित अंगीकार, निन्दा का बोधक है॥१३॥

अलं[1] भूषणपर्याप्तिशक्तिवारणवाचकम्।

कृष्णमित्रटीका :- भूषणे- अलङ्कारः पर्याप्तिः पूर्णता-अलमस्य धनम्। शक्तौ-अलं मल्लो मल्लाय। वारणे- अलमिति विस्तरेण॥

हिन्दी अर्थ :- अलं परिपूर्णता, गहना, सामर्थ्य, निवारण का वाचक है।

हुं[2] वितर्के परिप्रश्ने

कृष्णमित्रटीका :- वितर्के-चैत्रो हुं मैत्रो हुम्। (परि) प्रश्ने-हुं स त्वं सुहृत्।

हिन्दी अर्थ :- हुं वितर्क का और प्रश्न का वाचक है।

समयान्तिकमध्ययोः[3]॥१४॥

कृष्णमित्रटीका :- ग्रामं समया समीपे मध्ये चेत्यर्थः॥१४॥

हिन्दी अर्थ :- समया समीप का और मध्य का बोधक है॥१४॥

पुनरप्रथमे[4] भेदे

कृष्णमित्रटीका :- अप्रथमे-पुनरुक्तम्। भेदो विशेष :- 'किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्याः' (गीता ९.३३)॥

हिन्दी अर्थ :- पुनर् वारंवार और भेद का वाचक है।

नि[5]र्निश्चयनिषेधयोः।

स्यात्प्रबन्धे चिरातीते निकटागामिके पुरा[6]॥१५॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रबन्धे-उपाध्यायेन स्म पुराधीयते अविरतमपाठीत्यर्थः। चिरातीते-पुरा भवं पुरातनम्। निकटागामिके भविष्यदासन्ने-गच्छ पुरा देवो वर्षति, समनन्तरं वर्षिष्यतीत्यर्थः। 'यावत्पुरानिपातनयोर्लट्' (३. ३. ४)॥१५॥

1. **Alam ind.** means (a) ornamenting (b) enough, sufficient for (c) a match for, equal to (d) prohibition and (e) useless. 2. **Hum ind.** means (a) doubt (b) interrogation and (c) aversion. 3. **Samya ind.** means (a) near (b) in and (c) between. 4. **Punah ind.** means (a) again and (b) distinction. 5. Nis ind. means (a) surely and (b) without. 6. **Pura ind.** means (a) incessantly (b) formerly, in the old time and (c) shortly.

हिन्दी अर्थ :- निर् निश्चय का और निषेध का बोधक है। पुरा प्रबंध, बहुत दिनों का बीता हुआ, समीप आनेवाला का बोधक है॥१५॥

ऊरर्यूरी[1] चोररी च विस्तारेऽङ्गीकृतौ त्रयम्।

कृष्णमित्रटीका :- उररीकृत्य पटं विस्तार्येत्यर्थः। आज्ञामुररीकृत्य॥

हिन्दी अर्थ :- १. ऊररी, २. ऊरी, ३. उररी ये तीन अव्यय विस्तार के और अंगीकार करने के अर्थ में होते हैं।

स्वर्गे परे च लोके स्वः[1]

कृष्णमित्रटीका :- परलोके-स्वर्गतस्य ह्यपुत्रस्य॥

हिन्दी अर्थ :- स्वर् स्वर्ग का और परलोक का वाचक है।

वार्तासंभाव्ययोः किल[2]॥१६॥

कृष्णमित्रटीका :- वार्तायाम्- जघान कंसं किल वासुदेवः। संभाव्ये-अर्जुनः किल विजेष्यते कुरून्॥१६॥

हिन्दी अर्थ :- किल वार्ता का और संभाव्य का बोधक है॥१६॥

निषेधवाक्यालंकारे जिज्ञासानुनये खलु[3]

कृष्णमित्रटीका :- निषेधे-खलु कृत्वा- मा कुरु, इत्यर्थः। वाक्यालंकारे-अथो खल्वाहुः। जिज्ञासायां-स खलु अधीते। अनुनये-'न खलु न खलु मुग्धे साहसं कार्यमेतत्' (नागानन्द. २.१०)॥

हिन्दी अर्थ :- खलु निषेध, वाक्य की शोभा, जानने की इच्छा, नम्रता का बोधक है।

समीपोभयतः शीघ्रसाकल्याभिमुखेऽभितः[4]॥१७॥

कृष्णमित्रटीका :- अभितो ग्रामं समीपे उभयत्र चेत्यर्थः। शीघ्रे-गच्छाभितः। साकल्ये व्याप्नोत्यभितो रजः। आभिमुख्ये-आपतन्तमभितोऽरिमपश्यत्॥१७॥

हिन्दी अर्थ :- अभितस् समीप, दोनों तरफ से, शीघ्र, मग्नता और सन्मुख का बोधक है॥१७॥

1. **Urari,** uri and urari ind. mean (a) exension and (b) acceptance. 1. **Svah ind.** means (a) heaven and (b) the next or future world. 2. **Kila ind.** means (a) verily (b) traditional saying and (c) probability. 3. **Khalu ind.** means (a) prohibition. (b) grace to the sentence (c) inquiry (d) entreaty, conciliation and (e) surely, indeed. 4. **Abhitah ind.** means (a) near (b) on both sides (c) soon (d) entirety and (e) in front of.

नामप्रकाश्ययोः प्रादुः[1]

कृष्णमित्रटीका :- नाम्नि-विष्णोर्दश प्रादुर्भावाः॥

हिन्दी अर्थ :- प्रादुर् नाम का और प्रकाश होने का बोधक है।

मिथो[2] ऽन्योन्यं रहस्यपि।

कृष्णमित्रटीका :- अन्योन्यार्थे परस्परार्थे। रहसि-मिथो मन्त्रयते।

हिन्दी अर्थ :- मिथस् आपस का और एकान्त का वाचक है।

तिरोन्तर्धौ[3] तिर्यगर्थे

कृष्णमित्रटीका :- अन्तर्धौ-तिरोहितुः (तः)। तिर्यगर्थे-तिरः काष्ठं कुरु॥

हिन्दी अर्थ :- तिरस् अंतर्धान का और तिरछे का बोधक है।

हा[4] विषादशुगर्तिषु ॥१८॥

कृष्णमित्रटीका :- विषादे-हाऽऽर्यो वनं[5] गतः। शोके- हा प्रिये जानकि। आर्तौ हा हतोऽस्मि[6] ॥१८॥

हिन्दी अर्थ :- हा विषाद, शोक और पीड़ा का बोधक है॥१८॥

अहहेत्यद्भुते[7] खेदे

कृष्णमित्रटीका :- अद्भुते- अहह प्रज्ञाप्रकर्षोऽस्य[8]। खेदे-अहह वयं हताः॥

हिन्दी अर्थ :- अहह अद्भुत का और खेद का बोधक है।

हि[9] हेतावववधारणे।

इति अव्ययेष्वनेकार्थवर्गः ॥४॥

कृष्णमित्रटीका :- अवधारणे- को हि हस्तगतं पादगतं कुर्यात्॥

(इत्यव्ययेषु) अनेकार्थवर्गः ॥४॥

हिन्दी अर्थ :- हि हेतु का और निश्चय का वाचक है।

इति अव्ययेष्वनेकार्थवर्गः ॥४॥

1. **Praduh ind.** means (a) name and (b) appearance. 2. **Mithah ind.** means (a) mutually, reciprocally and (b) secretly. 3. **Tirah ind.** means (a) concealment and (b) awry, crookedly. 4. **Ha ind.** means (a) affliction (b) grief and (c) sorrow. 5. M. हार्यो, 6. M. हतोस्मि। 7. **Ahaha ind.** means (a) wonder and (b) regret, sorrow. 8. M. प्रज्ञाप्रकर्षोम्य, 9. **Hi ind.** means (a) for, because and (b) surely, indeed.

अथ अव्ययवर्गः ॥५॥

चिरायचिररात्रायचिरस्याद्याश्चिरार्थकाः।

कृष्णमित्रटीका :- चिराय निर्धनो भूत्वा। आद्यशब्दाच्चिरेण, चिरात्, चिरम्[1]।

हिन्दी अर्थ :- १. चिराय, २. चिररात्राय, ३. चिरस्य, ४. चिरेण, ५. चिरात्, ६. चिरं- ये छः चिर अर्थात् बहुत देर के बोधक हैं।

मुहुः पुनः पुनः शश्वदभीक्ष्णमसकृत्समाः ॥१॥

कृष्णमित्रटीका :- मुहुरादयः समानार्थाः[2]॥१॥

हिन्दी अर्थ :- १. मुहुस्, २. पुनः पुनः, ३. शश्वत्, ४. अभीक्ष्णं, ५. असकृत्- ये पाँच नाम वारंवार के बोधक हैं और अर्थ से समान हैं॥१॥

स्राग्झटित्यञ्जसाह्नायसपदिद्राङ्मङ्क्षु च द्रुते[3]।

कृष्णमित्रटीका :- 'स्रै पाके' (भ्वा. प. अ.)। स्रामकति। अक गतौ (भ्वा. प. से.)। एते शीघ्रार्थाः[4]॥

हिन्दी अर्थ :- १. स्रक्, २. झटिति, ३. अंजस, ४. अह्नाय, ५. द्राक्, ६. मंक्षु, ७. सपदि- ये सात नाम शीघ्र के बोधक हैं।

बलवत्सुष्ठुकिमुत स्वत्यतीव च निर्भरे ॥२॥

कृष्णमित्रटीका :- बलवदपि शिक्षितानाम्। किमुत ब्रह्मविन्निमिः। सुसिक्तम्। अतीव क्षुधितः। एते षड्, अतिशयार्थाः[5] ॥२॥

हिन्दी अर्थ :- १. बलवत्, २. सुष्ठु, ३. किमुत, ४. सु, ५. अति, ६. इव- ये छः नाम अतिशय के हैं॥२॥

पृथग्विनान्तरेणर्ते हिरुङ् नाना च वर्जने।

कृष्णमित्रटीका :- पृथग्देवदत्तादयम्। हिरुक् कर्मणा मोक्षः, कर्मक्षये इत्यर्थः। नाना नारी निष्फला लोकयात्रा[6] ॥

हिन्दी अर्थ :- १. पृथक्, २. विना, ३. अन्तरेण, ४. ऋते, ५. हिरुक्, ६. नाना- ये छः नाम वर्जने के अर्थ में हैं।

यत्तद्यतस्ततो हेतौ

कृष्णमित्रटीका :- यज्ज्ञातासि तत्पूज्योऽसि[7]। यतो जनासि[8] ॥

1. **Late,** longtime (3). 2. **Repeatedly,** again and again [5]. 3. B. स्रग्झटित्यञ्जसाह्व- यद्राङ्मङ्क्षुसपादिद्रुते 4. **Soon,** at once [7] 5. **Very much,** excssively [6] 6. **Without** [6] 7. M. तत्पूज्योसि 8. **Since,** because [4]

हिन्दी अर्थ :- १. यत्, २. तत्, ३. यतः, ४. ततः- ये चार नाम कारणवाचक हैं।

असाकल्ये तु चिच्चन ॥३॥

कृष्णमित्रटीका :- कदाचित् कथञ्चित्, कुतश्चन एतौ असाकल्यार्थौ[1] ॥३॥

हिन्दी अर्थ :- १. चित्, २. चन- ये दो नाम असंपूर्ण वाचक हैं॥३॥

कदाचिज्जातु

कृष्णमित्रटीका :- न जातु कामाः कामानामुपभोगेन शाम्यति[2] ।

हिन्दी अर्थ :- १. कदाचित्, २. जातु- ये दो नाम किसी काल के बोधक हैं।

सार्धं तु साकं सत्रा समं सह ।

कृष्णमित्रटीका :-पुत्रेण सार्धं यामि । सत्रा कलत्रैर्गार्हस्थ्यम् । पञ्च सहार्थाः[3] ॥

हिन्दी अर्थ :- १. सार्धं, २. साकं, ३. सत्रा, ४. समं, ५. सह- ये पाँच नाम साथ के वाचक हैं।

आनुकूल्यार्थकं प्राध्वम्

कृष्णमित्रटीका :-प्राध्वं कुरुध्वं बुधाः[4] ॥

हिन्दी अर्थ :- प्राध्वं- यह एक नाम अनुकूलता का वाचक है।

व्यर्थके तु वृथा मुधा॥४॥

कृष्णमित्रटीका :- मुधे सुधा ताम्यसि[5] ॥४॥

हिन्दी अर्थ :- १. वृथा, २. मुधा- ये दो नाम व्यर्थ के बोधक हैं॥४॥

आहो उताहो किमुत विकल्पे किं किमूत च ।

कृष्णमित्रटीका :- स्थाणु उताहो पुरुषः। किमुत रज्जुः किमुत सर्पः। किं रज्जुः किं सर्पः। किमु दद्यात् किमु हन्यात्। एकमेव[6] वरं पुंसामुतराज्यमुताश्रमः।

हिन्दी अर्थ :- १. आहो, २. उताहो, ३. किमुत, ४. किं, ५. किमु, ६. उत- ये छः नाम विकल्प के बोधक हैं।

तु हि च स्म ह वै पादपूरणे

1. **Indefinitely,** incompletely [4] 2. **At any time** [2] 3. **With,** together with [5] 4. **Favourably,** suitably [1] 5. **In vain,** uselessly [2] 6. **Either....or** [5].

कृष्णमित्रटीका :- नहि नहि करि कलभोऽयम्[1]। इति ह स्माहूराचार्याः। षट्[2]॥

हिन्दी अर्थ :- १. तु, २. हि, ३. च, ४. स्म, ५. ह, ६. वै- ये छः नाम श्लोक के पाद को पूरण करने में प्रयुक्त होते हैं।

पूजने स्वति॥५॥

कृष्णमित्रटीका :- सु स्तुतम्। अति स्तुतम्[3] ॥५॥

हिन्दी अर्थ :- १. सु, २. अति- ये दो नाम पूजन के बोधक हैं॥५॥

दिवाह्नीति

कृष्णमित्रटीका :- 'दिवातनम्' इति शब्देन दिवार्थे सप्तम्यन्त इति सूच्यते[4]।

हिन्दी अर्थ :- दिवा- यह एक नाम दिन का बोधक है।

अथ दोषा च नक्तं च रजनाविति।

कृष्णमित्रटीका :- नक्तं चरः। रजनौ रात्रौ[5]॥

हिन्दी अर्थ :- १. दोषा, २. नक्तं- ये दो नाम रात्रि के वाचक हैं।

तिर्यगर्थे साचि तिरोऽपि

कृष्णमित्रटीका :- साचि लोचनयुगं नमयन्ती[6]।

हिन्दी अर्थ :- १. साचि, २. तिरस्- ये दो अव्यय तिरछे के बोधक हैं॥

अथ संबोधनार्थकाः॥६॥

स्युः पाट् प्याडङ्ग है हे भोः

कृष्णमित्रटीका :- षट् संबोधनार्थाः[7]॥६॥

हिन्दी अर्थ :- १. प्याट्, २. पाट्, ३. अंग, ४. हे, ५. है, ६. भोस्- ये छः नाम संबोधन के बोधक हैं॥६॥

समया निकषा हिरुक्

कृष्णमित्रटीका :- लङ्कां निकषा हनिष्यति। समया निकषा हिरुक् त्रयः समीपार्थाः[8]॥

हिन्दी अर्थ :- १. समया, २. निकषा, ३. हिरुक्- ये तीन नाम समीपता के वाचक हैं।

अतर्किते तु सहसा

1. M. कलभोयम् 2. **Expletory** indeclinables [6] 3. **Praise,** applause [2] 4. **In day** [2] 5. **In night** [2] 6. **Crookedly** [2] 7. **Vocative** indeclinables [6] 8. **Near** [3].

कृष्णमित्रटीका :- अतर्किते अविचारिते- 'सहसा विदधीत न क्रियाम्' (किरातार्जुनीयम्, २. ३०)[१]॥

हिन्दी अर्थ :- सहसा- यह एक अव्यय तर्कित किये बिना (अकस्मात्) का वाचक है।

स्यात्पुरः पुरतोऽग्रतः ॥७॥

कृष्णमित्रटीका :- पुरार्थाः त्रयः[२]॥७॥

हिन्दी अर्थ :- १. पुरः, २. पुरतः, ३. अग्रतः- ये तीन नाम सामने के बोधक हैं॥७॥

स्वाहा देवहविर्दाने श्रौषड्वौषड् वषट् स्वधा।

कृष्णमित्रटीका :- हविषो दाने-अग्नये स्वाहा। अस्तु श्रौषड् वषड् इन्द्राय। पितृभ्यः स्वधा[३]॥

हिन्दी अर्थ :- १. स्वाहा, २. श्रौषट्, ३. वौषट् वषट्, ४. स्वधा आदि- ये चार देवताओं के अर्थ हविर्दानविशेष के वाचक हैं। और स्वधा- यह एक नाम पितरों के अर्थ देने में प्रसिद्ध हैं।

किञ्चिदीषन्मनागल्पे

कृष्णमित्रटीका :- मनाग् मृदः (दुः)। (त्रयः) अल्पार्थाः[४]॥

हिन्दी अर्थ :- १. किञ्चित्, २. ईषत्, ३. मनाक्- ये तीन नाम अल्प के बोधक हैं।

प्रेत्यामुत्र भवान्तरे ॥८॥

कृष्णमित्रटीका :- अन्यो धनं प्रेत्य गतस्य भुङ्क्ते। इहामुत्र च मोदते[५]॥८॥

हिन्दी अर्थ :- १. प्रेत्य, २. अमुत्र- ये दो नाम अन्य जन्म के बोधक हैं॥८॥

व वा यथा[६] तथैवेवं साम्ये

कृष्णमित्रटीका :- शात्रवं वपुर्यशः। केचित्तु 'वतु वत् इति पठन्ति। 'पद्मिनी' वान्यरूपाम्' (मेघ. २. २३)। शारदाभ्रमिव पेलवमायुः। यर्थार्क (एवं क) र्णः[७]॥

हिन्दी अर्थ :- १. व, २. वा, ३. यथा, ४. तथा, ५. इव, ६. एवं- ये छः नाम तुल्य के हैं।

अहो हीति[८] विस्मये।

1. **Suddenly,** all at once [1] 2. **Before,** in front. [3] 3. **Exclamatory** indeclinebles used in offering oblation to gods. [5] 4. **Little,** slighty [3] 5. **The next** world or the life to come. [2] 6. K. वद्वा तथा 7. **As, like** [6] 8. B. हीच

कृष्णमित्रटीका :- अहो आश्चर्यम्। 'हत विधिलुलितानां ही विचित्रो विपाकः।' (शिशुपाल. ११. ६४)॥[१]

हिन्दी अर्थ :- १. अहो, २. ही- ये दो नाम आश्चर्य के वाचक हैं।

मौने तु तूष्णीं तूष्णीकं (कां)

कृष्णमित्रटीका :- मौनमात्रे तूष्णीम्। विशिष्टे मौने तूष्णीकम्। तूष्णीमः काम् लोपश्च[२]॥

हिन्दी अर्थ :- १. तूष्णीं, २. तूष्णीकां- ये दो नाम मौन अर्थात् चुपके के अर्थ में हैं।

सद्य सपदि तत्क्षणे ॥९॥

कृष्णमित्रटीका :- सद्यः पतति मांसेन॥९॥[३]

हिन्दी अर्थ :- १. सद्यः, २. सपदि- ये दो नाम तत्काल के अर्थ में हैं॥९॥

दिष्ट्या समुपजोषं चेत्यानन्दे

कृष्णमित्रटीका :- दिष्ट्या पुत्रो जातः समुपजोषं वर्तते[४]॥

हिन्दी अर्थ :- १. दिष्ट्या, २. समुपजोषं- ये दो नाम आनन्द के अर्थ हैं।

अथान्तरेऽन्तरा।

अन्तरेण च मध्ये स्युः

कृष्णमित्रटीका :- आवयोरन्तरा हरिः[५]।

हिन्दी अर्थ :- १. अन्तरे, २. अंतरा, ३. अंतरेण- ये तीन अव्यय मध्य के अर्थ में हैं।

प्रसह्य तु हठार्थकम् ॥१०॥

कृष्णमित्रटीका :- प्रसह्य हरति चौरः॥१०॥[६]

हिन्दी अर्थ :- प्रसह्य- यह एक नाम हठ का बोधक है॥१०॥

युक्ते द्वे सांप्रतं स्थाने

कृष्णमित्रटीका :- न सांप्रतमिदम्। स्थाने प्रश्नः। इदं द्वयं युक्तार्थकमित्यर्थः[७]।

हिन्दी अर्थ :- १. सांप्रतं, २. स्थाने- ये दो नाम युक्त के अर्थ में हैं।

1. **Surprise,** wonder [2] 2. **In silene,** silently [2] 3. **Instantly,** immediately [2] 4. **Toy** [2] 5. **Between** [3] 6. **Forcibly,** voilently [1] 7. **In the right** or proper place, properly, rightly [2].

अभीक्ष्णं शश्वदनारते।

कृष्णमित्रटीका :- अनारते अविरते[1]।

हिन्दी अर्थ :- १. अभीक्ष्णं, २. शश्वत्- ये दो नाम निरंतर के अर्थ में हैं।

अभावे नह्यनो नापि

कृष्णमित्रटीका :- न हि प्रयोजनापेक्षं प्रेम। अविप्र इव भाषसे, विप्रवन्न ब्रूष इत्यर्थः। नो जानीमः। न हन्यात्॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. नाहि, २. अ, ३. नो, ४. न- ये चार नाम अभाव के अर्थ में हैं।

मास्म मालं च वारणे॥११॥

कृष्णमित्रटीका :- वास्म करोः। मा कार्षीः। अलं रोदनेन॥११॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. मास्म, २. मा, ३. अलं- ये तीन नाम मना करने के अर्थ में हैं॥११॥

पक्षान्तरे चेद्यदि च

कृष्णमित्रटीका :- सन्तश्चेदमृतेन किम्। यदि खलास्तत्कालकूटं मृषा॥[4]

हिन्दी अर्थ :- १. चेत्, २. यदि- ये दो नाम अन्य पक्ष के अर्थ में हैं।

तत्त्वे त्वद्धाञ्जसा द्वयम्।

कृष्णमित्रटीका :- अद्धा पुरुषः। अञ्जसा वक्ति साधुः॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. अद्धा, २. अंजसा- ये दो नाम तत्व के अर्थ में हैं।

प्रकाशे[6] प्रादुराविः स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- प्रादुरासीत्॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रादुस्, २. आविस्- ये दो नाम स्पष्टता के अर्थ में हैं।

ओमेवं परमं मते॥१२॥

कृष्णमित्रटीका :- मनमभ्युपगमः। (ओं) कुरु। एवं कुरु। परमं तत्रावसम्॥१२॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. ॐ, २. एवं, ३. परमं- ये तीन नाम अंगीकार के अर्थ में हैं॥१२॥

1. **Constantly** [2] 2. **Not, no** [4] 3. **No need of, no use of,** (Expressing prohifitive farce) [3] 4. **It,** in case. [2] 5. **Truly** [2] 6. B. प्रकाश्ये 7. **Before the eyes.** openly or evidently [2] 8. **Acceptanced** (Expressed as 'well' 'yes') [2].

समन्ततस्तु परितः सर्वतो विष्वगित्यपि

कृष्णमित्रटीका :- समन्ततो धावति॥[1]

हिन्दी अर्थ :- १. समंततः, २. परितः, ३. सर्वतः, ४. विष्वक्- ये चार नाम सब ओर के अर्थ में हैं।

अकामानुमतौ कामम्

कृष्णमित्रटीका :- अकामे- आदावनिच्छायां पश्चादङ्गी (कारे)-कामं करोमि॥[2]

हिन्दी अर्थ :- कामं- यह एक नाम विना इच्छा की अनुमति का बोधक है।

असूयोपगमेऽस्तु च॥१३॥

कृष्णमित्रटीका :- असूयायाम् अस्तुकारः। अङ्गीकारे-एवमस्तु को दोषः॥१३॥[3]

हिन्दी अर्थ :- अस्तु- यह एक नाम गुणों में दोष आरोपण करने का और अंगीकार का वाचक है॥१३॥

ननु च स्याद्विरोधोक्तौ

कृष्णमित्रटीका :- ननु च कः शब्दः॥[4]

हिन्दी अर्थ :- ननु- यह एक नाम विरोधवचन का वाचक है।

कच्चित्कामप्रवेदने।

कृष्णमित्रटीका :- कामप्रवेदनमिष्ट (प्र) श्नः- कच्चिज्जीवति॥[5]

हिन्दी अर्थ :- कच्चित्- यह एक नाम वांछित को पूछने का बोधक है।

निःषमं दुःषमं गर्ह्ये

कृष्णमित्रटीका :- निःषमं वक्ति मूर्खः, कालानुचितमित्यर्थः। निष्क्रान्ताः दुष्टाः समाश्च समा वत्सरा यत्र। तिष्ठद्गुप्रभृतित्वात् (२.१.१७) अव्ययत्वम्॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. निःषमं, २. दुःषमं- ये दो नाम निन्दा के योग्य के अर्थ में हैं।

यथास्वं तु यथायथम्॥१४॥

कृष्णमित्रटीका :- यथास्वं यथास्वीय-मित्यर्थः॥१४॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. यथास्वं, २. यथायथं- ये दो नाम यथायोग्य के अर्थ में हैं॥१४॥

1. **From every side,** all around or on all sides [4] 2. **Acceptance followed** by unwillingness [1] 3. **Envious acceptance** [1] 4. **Objection** [1] 5. **Interrogation** (expressed as 'I hope') [1] 6. **Improperly** [2] 7. **Each his own,** respective [2].

मृषा मिथ्या च वितथे[1]
यथार्थं तु यथातथम्।

कृष्णमित्रटीका :- 'तथा' इति सत्यमनतिक्रम्य यथातथम्॥[2]

हिन्दी अर्थ :- १. मृषा, २. मिथ्या- ये दो नाम असत्य के हैं। १. यथार्थ, २. यथातथं- ये दो नाम सत्य के अर्थ में हैं।

स्युरेवं तु पुनर्वैवेत्यवधारणवाचकाः ॥१५॥

कृष्णमित्रटीका :- एवमेतत्। आत्मा सर्वं तु पश्यति। विप्रः पुनः पूज्यः। गुरुर्वा वक्ति भीष्मो वा। त्वमेव सर्वं जानासि॥१५॥[3]

हिन्दी अर्थ :- १. एवं, २. तु, ३. पुनर्, ४. वै, ५. वा- ये पाँच नाम निश्चय के अर्थ में हैं॥१५॥

प्रागतीतार्थकं नूनम्

कृष्णमित्रटीका :- 'प्राक्' इति प्रतीतार्थे प्राक् कृतम्॥[4]

हिन्दी अर्थ :- प्राक्- यह एक नाम वीते हुए का वाचक है।

नूनमवश्यं निश्चये द्वयम्।[5]
संवद्वर्षे[6]**, अवरे त्ववर्वाग्**[7] **आमेवम्**[8]

कृष्णमित्रटीका :- अङ्गीकारार्थे-आम् कुर्मः।

हिन्दी अर्थ :- १. नूनं, २. अवश्यं- ये दो नाम निश्चय के बोधक हैं। संवत्- यह एक नाम वर्ष का वाचक है। अर्वाक्- यह एक नाम पीछे का बोधक है। १. आं, २. एवं- ये दो नाम अंगीकार के अर्थ में हैं।

स्वयमात्मना ॥१६॥[9]

अल्पे नीचैः

कृष्णमित्रटीका :- नीचैर्वाति॥[10]

हिन्दी अर्थ :- स्वयं- यह एक नाम अपने का बोधक है॥१६॥ नीचैस् यह एक नाम अल्प का बोधक है।

महत्युच्चैः[11] **प्रायो भूम्नि**

कृष्णमित्रटीका :- भूम्नि बाहुल्ये॥[12]

1. Falsely, wrongly [2] 2. Exactly, precisely [1] 3. Surely or decidedly [5] 4. Previously; in the east [1] 5. Verily, certainly [2] 6. year [1] 7. Afterwards (the posterior time) [1] 8. yes [1] 9. Oneself [1] 10. Low, small, short or gently [1] 11. High, verymuch, grertly [1] 12. Mostly [1].

हिन्दी अर्थ :- उच्चैस्- यह एक नाम बड़े का और ऊँचे का है। प्रायः- यह एक नाम बहुत का वाचक है।

अद्भुते शनैः

कृष्णमित्रटीका :- अद्भुते आशीघ्रार्थे॥[1]

हिन्दी अर्थ :- शनैस्- यह एक नाम धीरे का बोधक है।

सना नित्ये

कृष्णमित्रटीका :- सनातनः[2]

हिन्दी अर्थ :- सना- यह एक नाम नित्य का बोधक है।

बहिर्बाह्ये

कृष्णमित्रटीका :- बहिर्गच्छ॥[3]

हिन्दी अर्थ :- बहिस्- यह एक नाम बाहर का वाचक है।

स्मातीते

कृष्णमित्रटीका :- वक्ति स्म॥[4]

हिन्दी अर्थ :- स्म- यह एक नाम बीते हुए का बोधक है।

अस्तमदर्शने ॥१७॥

कृष्णमित्रटीका :- अस्तं गतः॥१७॥[5]

हिन्दी अर्थ :- अस्तं- यह एक नाम दर्शन के अभाव का वाचक है॥१७॥

अस्ति सत्त्वे

कृष्णमित्रटीका :- अस्ति क्षीरा गौः॥[6]

हिन्दी अर्थ :- अस्ति- यह एक नाम सत्व का और प्रसिद्ध का वाचक है।

रुषोक्तावु

कृष्णमित्रटीका :- कोपनोक्तौ[7]- उ सैवास्मि तव प्रिया॥[8]

हिन्दी अर्थ :- उ- यह एक नाम कोप के वचन का वाचक है।

ऊँ प्रश्ने

कृष्णमित्रटीका :- 'उङ् शब्दे' क्विप्, मुक्। रुषेत्येव- ऊँ न जानासि स्वार्थम्। ऊयो तन्तुसन्ताने (भ्वा. आ. से.) मुक्प्रत्ययः॥[9]

1. Slowly [1] 2. Always, perpetually [1] 3. Outside, out of [1] 4. Denoting past tense [1] 5. Disappearance [1] 6. Being, existence [1] 7. M. कीपनाक्तौ 8. Wrathful statement [1] 9. Interrogation [1].

हिन्दी अर्थ :- ॐ- यह एक नाम प्रश्न का वाचक है।

अनुनये त्वयि।

कृष्णमित्रटीका :- इण् (न्), इः (उ. ४. ११७) अपि। अप्ययि साहसकारिणि।।[1]

हिन्दी अर्थ :- अयि- यह एक नाम अनुनय का वाचक है।

हुं तर्के स्यात्

कृष्णमित्रटीका :- स्याद्वायुः।।[2]

हिन्दी अर्थ :- हुं- यह एक नाम तर्क का बोधक है।

उषा रात्रेरवसाने

कृष्णमित्रटीका :- उषसि उत्थाय।।[3]

हिन्दी अर्थ :- उषा- यह एक नाम रात्रि के अन्त का वाचक है।

नमो नतौ।।१८।।

कृष्णमित्रटीका :- नमस्ते।।१८।।[4]

हिन्दी अर्थ :- नमस्- यह एक नाम प्रणाम का बोधक है।।१८।।

पुनरर्थेऽङ्ग

कृष्णमित्रटीका :- मूर्खोऽप्यादर्तव्यः[5], किमङ्ग विद्वान्, किं पुनरित्यर्थः।।[6]

हिन्दी अर्थ :- अंग- यह एक नाम वारंवार का बोधक है।

निन्दायां दुष्ठु सुष्ठु प्रशंसने।।

कृष्णमित्रटीका :- 'अपदुः सुसु स्थः' (उ. १. २५) कुः।।[7]

हिन्दी अर्थ :- दुष्ठु- यह एक नाम निन्दा का वाचक है। सुष्ठु- यह एक नाम प्रशंसा का बोधक है।

सायं साये

कृष्णमित्रटीका :- सायते क्षीयते सायः।।[8]

हिन्दी अर्थ :- सायं- यह एक नाम सांझ का बोधक है।

1. **Entreatly** or solicitation (expressed as 'I pary') 2. **Supposition** or conjecture [1] 3. **Dawn;** morning [1] 4. **Bow, salutation** [1] 5. M. मूर्खौप्यादर्तव्यः 6. **How much more;** how much less [1] 7. **Blame,** applause [1 each] 8. **Evening** [1].

प्रगे प्रातः प्रभाते

कृष्णमित्रटीका :- प्रगेतनो वायुः।।[1]

हिन्दी अर्थ :- १. प्रगे, २. प्रातर्- ये दो नाम प्रभात के अर्थ में हैं।

निकषान्तिके।।१९।।[2]

परुत्परार्यैषमोऽब्दे पूर्वे पूर्वतरे यति।

कृष्णमित्रटीका :- पूर्वे वर्षे परुत्। पूर्वतरे वर्षे परारि। 'प्रति' इत्यस्य गच्छतीत्यर्थः। वर्तमाने वर्षे ऐषमः। 'सद्यः परुत्परारि' (५. ३. २२) इति साधवः।।[3]

हिन्दी अर्थ :- निकषा- यह एक नाम समीप का बोधक है।।१९।। परुत्- यह एक नाम पहले वर्ष का वाचक है। परारि- यह एक नाम पहले से पहले वर्ष का वाचक है। ऐषम- यह एक नाम वर्त्तमान वर्ष का वाचक है।

अद्यात्राह्नि

कृष्णमित्रटीका :- अस्मिन्नहनि, अद्य।।[4]

हिन्दी अर्थ :- अद्य- यह एक नाम इस दिन का बोधक है।

अथ पूर्वेऽह्नीत्यादौ पूर्वोत्तरापरात्।।२०।।

तथाधरान्यान्यतरेतरात्पूर्वेद्युरादयः।

कृष्णमित्रटीका :- पूर्वेऽह्नि[5] पूर्वेद्युः। आदि-शब्दादुत्तरेद्युः, अपरेद्युः।।२०।। अधरेद्युः, अन्येद्युः, अन्यतरेद्युः, इतरेद्युः।।[6]

हिन्दी अर्थ :- पूर्वेद्युस्- यह एक नाम पहले दिन का बोधक है। उत्तरेद्युस्- यह एक नाम अगले दिन का वाचक है। अपरेद्युस्- यह एक नाम अपर दिन का वाचक है। अधरेद्युस्- यह एक नाम नीचे दिन का बोधक है। अन्येद्युस्- यह एक नाम अन्य दिन का बोधक है। अन्यतरेद्युस्- यह एक नाम अन्यतर दिन का वाचक है। इतरेद्युस्- यह एक नाम इतर अर्थात् अन्यदिन का बोधक है।।२०।।

उभयद्युश्चोभयेद्युः

कृष्णमित्रटीका :- उभयोरह्नोरुभयेद्युः। '(द्यु) श्चोभयाद्वक्तव्यः' (वा. ५. ३. २२)।।[7]

1. **At day break;** early in the morning [1] 2. **Near,** close by [1] 3. **the last year;** the year before the present year [1 each] 4. **To-day** [1] 5. M. पूर्वेह्नि 6. **Yeasterday,** tomorrow on the following day, on the other day, on either of two days and another day [1 each] 7. **Both days** [2].

हिन्दी अर्थ :- १. उभयद्युस्, २. उभयेद्युस्- ये दो नाम दोनों के अर्थ में हैं।

परे त्वह्नि परे द्यवि॥२१॥

कृष्णमित्रटीका :- परस्मिन्नहनि॥२१॥[1]

हिन्दी अर्थ :- परेद्यवि- यह एक नाम परदिन का बोधक है॥२१॥

ह्योऽतीते

कृष्णमित्रटीका :- अतीतेऽह्नि[2] ह्यः॥[3]

हिन्दी अर्थ :- ह्यस्- यह एक नाम बीते हुए दिन का वाचक है।

अनागतेऽह्नि श्वः परश्वश्च परेऽहनि।

कृष्णमित्रटीका :- श्वादिनात्परमहः परश्वः॥[4]

हिन्दी अर्थ :- श्वस्- यह एक नाम अगले दिन का वाचक है। परश्वस्- यह एक नाम परसों दिन का बोधक है।

तदा तदानीम्

कृष्णमित्रटीका :- तस्मिन्काले तदा॥[5]

हिन्दी अर्थ :- १. तदा, २. तदानीं- ये दो नाम उस काल के बोधक हैं।

युगपदेकदा

कृष्णमित्रटीका :- युगं पद्यते तस्मिन् युगपत्॥[6]

हिन्दी अर्थ :- १. युगपत्, २. एकदा- ये दो नाम एक काल के अर्थ में हैं।

सर्वदा सदा॥२२॥

कृष्णमित्रटीका :- सर्वस्मिन्काले॥[7]

हिन्दी अर्थ :- १. सर्वदा, २. सदा- ये दो नाम सब काल के बोधक हैं॥२२॥

एतर्हि संप्रतीदानीमधुना सांप्रतं तथा।

कृष्णमित्रटीका :- अस्मिन्काले। 'इदमो हिल्' (५. ३. १६)। अधुना, इदानीम्। 'एतेतौ रथोः' (५. ३. ४)। सम्प्रत्येव साम्प्रतम्॥[8]

हिन्दी अर्थ :- १. एतर्हि, २. संप्रति, ३. इदानीं, ४. अधुना, ५. सांप्रतं- ये पाँच नाम इस काल के बोधक हैं तथा यह समुच्चयार्थक हैं।

1. The other day [1] 2. M. अतीतेह्न 3. Yesterday [1] 4. Tomorrow and the day after tomorrow [1 each] 5. Then or at that time [2] 6. simultaneously or all together [2] 7. Always or all the time [2] 8. Now, at present or at this time [5].

दिग्देशकाले पूर्वादौ प्रागुदक्प्रत्यगादयः॥२३॥

इत्यव्ययवर्गः॥५॥

कृष्णमित्रटीका :- प्राच्यां दिशि प्राचि देशे काले वा- प्राग्वसति। प्राच्या दिशः प्राची दिक्। '-सप्तमीपञ्चमीप्रथमाभ्यो दिग्देशकालेष्वस्तातिः' (५. ३. २७)॥२३॥

इत्यव्ययवर्गः॥

हिन्दी अर्थ :- प्राक्- यह एक नाम पूर्वदिशा, पूर्वदेश, पूर्वकाल का बोधक है। उदक्- यह एक नाम उत्तर दिशा, उत्तर देश, उत्तर काल का वाचक है। प्रत्यक्- यह एक नाम पश्चिम दिशा, पश्चिम देश, पश्चिम काल का बोधक है। अर्वाक्- यह एक नाम दक्षिण दिशा, दक्षिण देश, दक्षिण काल का बोधक है॥२३॥

इति अव्ययवर्गः॥४॥

अथ लिङ्गादिसंग्रहवर्गः॥६॥

सलिङ्गशास्त्रैः सन्नादिकृत्तद्धितसमासजैः[1]।
अनुक्ते संग्रहे लिङ्गं संकीर्णवदिहोन्नयेत्॥१॥

कृष्णमित्रटीका :- इह, अस्मिन् लिङ्गसंग्रह-वर्गे लिङ्गमूहेत्। सन्नादयः सन्क्य- (*) जादयः। तदन्तैर्लिङ्ग (सहित) कार्यविधायकानिसूत्राणि 'स्त्रियां क्तिन्' (३. ३. ९४)', 'नपुंसके भावे क्तः' (३. ३. ११४) इत्यादीनि, यैश्च सन्नायः कृदादयश्च जायन्ते तैः शास्त्रैः। गोबलीव-र्दन्यायेन सुब्धातुजानां कृदन्तात्पृथगुदाहरणं बोध्यम्। सुब्धातुजैर्यथा- 'अ प्रत्ययात्' (३. ३. १०२) 'ण्यासश्रन्थो युच्' (३. ३. १०७)। कृद्वृत्तिजैर्यथा- 'स्त्रियां क्तिन्'(३. ३. ९४), 'पुंसि संज्ञायां घः-' (३. ३. ११८)। तद्धितवृत्तिजैर्यथा- तत्क्रीडायां प्रहरणं चेन्मौष्टादि। समासवृत्तिजैर्यथा- अदन्तो द्विगुः स्त्रियामिष्टः। शास्त्रेण यथा- स्त्रियामीदूद्विरामैकाच्। कथमुन्नयेत्? इत्याह- संकीर्णवदिति, यथोक्तं प्राक्- 'प्रकृतिप्रत्ययार्थाद्यैः संकीर्णे लिङ्गमुन्नयेत्' (अ. को. ३. २. १) इति। प्रकृत्या, यथा- 'अधर्चाः पुंसि च' (२. ४. ३१) इति। प्रत्ययेन, यथा- 'स्त्रियां क्तिन्' (३. ३. ९४)। अर्थद्वारेण यथा- स्त्र्यादीनाम्॥१॥

*Illegible. 1. M. शेषविधिसज्ञांयम्।

हिन्दी अर्थ :- अथ लिंगादिसंग्रहवर्गः। लिंगशास्त्र अर्थात् पाणिनि आदि से कहे हुए लिंगानुशासन सहित सन् आदि प्रत्ययों से बने हुए चिकीर्षा आदि शब्दों से और कृदंत से बने हुए श्वपाक आदि शब्दों से और तद्धित प्रतययों से बने हुए अण् आद्यंत शब्दों से और समास से उपजे अदंतोत्तरपद द्विगु आदि से कहे हुए शब्दों से और बहुधा बोधक पहले नहीं कहे हुए शब्दों से यह संग्रह किया जाता है। इस संग्रहवर्ग में संकीर्णवर्ग की तरह लिंग को विचारना। उनमें प्रकृति के अर्थ से जैसे- "अर्द्धर्चाः पुंसि च" और प्रत्यय के अर्थ से यथा- "स्त्रियां क्तिन्" और "प्रकृत्यर्थाद्यैः" इस आद्यशब्द से क्रिया विशेषण सर्वदा नपुंसकलिंग और एकवचन में रहता है। जैसे- "शोभनं पचति" आदि॥१॥

लिङ्गशेषविधिर्व्यापी विशेषैर्यद्यबाधितः।

कृष्णमित्रटीका :- प्रागुक्तानां लिङ्गानां शेषविधिसंज्ञाऽयं। वर्गो ज्ञेयः, यो विशेषैरपवादैरबाधितः। स उत्सर्गत्वाद्व्यापकः यथा- असन्नन्तः पुंसि, 'चन्द्रमाः' इत्यादि। अस्यापवादः- द्व्यच्कमसन्नन्तं क्लीबं, यशस्तेज इत्यादि॥

हिन्दी अर्थ :- सन् आदि, कृत्, तद्धित्, समास से उत्पन्न विषय वाला पूर्वोक्त शब्दों के लिंग से जो अन्यलिंग है वह लिंग शेष है। उसकी विधिव्यापिता अर्थात् अपने विषय की व्यापकता है। जो पहले कही गई और यहाँ कहीं गई विशेषविधियों से बाधित न हो तब ही व्यापी हो सकता है; क्योंकि अपवाद विषय छोडकर उत्सर्ग सब स्थानों में होता है। इसलिये लिंग विशेषविधिरूप उत्सर्गभूत के स्वर्ग आदि वर्ग का अपवाद जानना उचित है।

स्त्रियामीदूद्विरामैकाच् सयोनिप्राणिनाम च॥२॥

कृष्णमित्रटीका :- ईदन्तमदून्तं चैकस्वरं स्त्रीलिङ्गं भवति, श्रीः, धीः, भ्रूः, भूः। योनिर्भगः, तत्सहितानां प्राणिनां यन्नाम तत्स्त्रियां, यथा-माता स्वसा, योषित्, वानरी॥२॥

हिन्दी अर्थ :- इकारान्त, ऊकारान्त, एकस्वरवाला (थ), और योनि अर्थात् भगसहित प्राणियों का नाम ये सब (स्त्रीलिङ्ग) हैं। जैसे- "धी, श्री, भू, भ्रू, माता, दुहिता, धेनु" इत्यादि शब्द। दार शब्द विशेष वचन के बल से (पुल्लिङ्ग) वाची है।

नाम विद्युन्निशावल्लीवीणादिग्भूनदीह्रियाम्।

कृष्णमित्रटीका :- विद्युदादीनां नाम स्त्रियाम्। विद्युत्, तडित्। निशा, रात्रिः। वल्ली, वीरुत्। वीणा, परिवादिनी। वीणाग्रहणं चिन्त्यफलम्, विपञ्चीत्यादेर्ङीब्, क्षत्वात्सिद्धेः पक्षीग्रहणमपि। दिक्, ककुप्, भूः, कु। नदी, सरित्। ह्रीः, लज्जा॥

हिन्दी अर्थ :- विद्युत् अर्थात् तडित्, निशा अर्थात् रात्रि, वल्ली अर्थात् व्रतति, वीणा अर्थात् विपंची, दिश् अर्थात् दिशा, भू अर्थात् पृथ्वी, नदी अर्थात् तरंगिणी, ह्री अर्थात् लज्जा इन शब्दों के नाम और मूल आदि अदंत शब्द बनाकर के जो समाहार अर्थवाला द्विगुसमास ये (स्त्रीलिङ्ग) हैं। जैसे- "पंचानां मूलानां समाहारः पंचमूली" आदि।

अदन्तैर्द्विगुरेकार्थः

कृष्णमित्रटीका :- अकारान्तै शब्दैः सह यो द्विगुरेकार्थः समाहारे स्त्रियाम्। त्रयाणां लोकानां समाहारस्त्रिलोकी। एकार्थः किम्? पञ्चकपालः, पञ्चकपालौ॥

न स पात्रयुगादिभिः॥३॥

कृष्णमित्रटीका :- स द्विगुः पात्रयुगादिभि-रुत्तरपदैर्घटितश्चेन्न स्त्रियाम्। पञ्चपात्रं, चतुर्युगम्॥३॥

हिन्दी अर्थ :- पात्र और युग ये दोनों उत्तरपद में हैं जिनके ऐसा अदंत द्विगु (स्त्रीलिङ्ग) नहीं है। जैसे- "पंचानां पात्राणां समाहारः पञ्चपात्रम्, चतुर्णां युगानां समाहारश्चतुर्युगम्" इत्यादि। अन्य भी जैसे- "त्रिभुवनम्"॥३॥

तल्वृन्दे येनिकट्यत्रा वैरमैथुनकादिवुन्।
स्त्रीभावादावनिक्तिण्ण्वुल्ण्णच्वण्वुच्यब्युजित्रङ्शा[1]॥४॥
उणादिषु निरूरीश्च ङ्याबूङन्तं चलं स्थिरम्।

कृष्णमित्रटीका :- तलप्रत्ययान्तम्, गोर्भावो गोता। समूहार्थे यादिप्रत्ययान्ताः, पाशानां समूहः पाश्या। 'इनि (त्र) कट्यचश्च' (४. २. ५१), खलिनी गोत्रा, रथकट्या। 'द्वन्द्वावन् वैरमैथुनिकयोः' (४. ३. १२५), अश्वमहिषयोर्वैरमश्वमहिषिका। अत्रिभरद्वाजयोर्मैथुन-प्रयोजने विवाहः, अत्रि (भ) रद्वाजिका। 'विवाहे वैरमित्यर्थः' इत्यन्ये। दण्डव्यवसर्गयोश्च' (५. ४. २),

1. B. श्रुजियङ्निशाः,

द्वौ द्वौ पादौ द्विपदिकां दण्डितः। 'द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्च' (५. १. १३३) इति वुञ्-शि (शै) ष्योपाध्यायिका। 'स्त्रियाम्' (३. ३. ९४) इत्यधिकृत्य भावे कर्तरि च ये अन्यादिप्रत्ययान्तास्ते स्त्रियाम्। 'आक्रोशे नञ्यनिः' (३. ३. ११२)- अजननिस्ते भूयात्। स्त्रियां क्तिन्' (३. ३. ९४)- कृतिः। 'रोगाख्यायां ण्वुलबहुलम्' (३.३. १०८) प्रवाहिका। 'कर्मव्यतिहारे णच् स्त्रियाम्' (३. ३. ४३)- अन्योन्यं व्याक्रोशनं व्याक्रोशी वर्तते। 'णचः[1] स्त्रियामञ्' (५. ४. १४)॥ 'पर्यायार्हणोत्पत्तिषु ण्वुच्' (३. ३. १११)- भवतः शायिका। 'व्रजयजोः (भावे) क्यप्' (३. ३. ९८)-व्रज्या, इज्या। 'ण्यासश्रन्थो युच्' (३. ३. १०७)- कामना। 'प्रश्नाख्यानयोरिञ्च' (चान्द्रसू.)- कां कारिमकार्षीः। षिद्भिदादिभ्योऽङ्[2]' (३.३. १०४)-त्रपा, भिदा। 'अ प्रत्ययात्'-(३. ३. १०२)- चिकीर्षा। 'कृञः श च' (३. ३. १००)- क्रिया॥४॥ उणादौन्यन्त ईदन्तस्त्रियाम्-ग्लानिः, अरणिः, अलाबूः, जम्बू, लक्ष्मीः ङ्यन्तमाबन्तमूङन्तं चलं विशेष्यलिङ्गं स्थिरं नियतलिङ्गं च स्त्रियाम्। 'चरं जङ्गमं स्थिरं स्थावरम्' इत्यन्ये॥

हिन्दी अर्थ :- भाव आदि अर्थ में जहाँ तल् प्रत्यय है वह (स्त्रीलिङ्ग) है। जैसे- "शुक्लता, ब्राह्मणता" समूह अर्थ में य, इन्, कट्यच्, त्र ये चार प्रत्यय (स्त्रीलिङ्ग) हैं। जैसे- "पाश्या, खलिनी, रथकट्या, गोत्रा" वैर अर्थ में और मैथुनअर्थ में जो वुन् प्रत्यय है वह (स्त्रीलिङ्ग) है। आदि शब्द से वीप्साअर्थ में वुन् का ग्रहण है। स्त्रियां इसके अधिकार कर भाव आदि में जो अनि, क्तिन्, णच्, क्यप्, वुञ्, इच्, अङ्, निश ये प्रत्यय विहित हैं वे (स्त्रीलिङ्ग) हैं। जैसे- "अकरणि, कृति, प्रच्छर्दिका, व्यावक्रोशी, शायिका, व्रज्या, कारणा आसना, वापि, आजिपचा, ग्लानि, क्रिया" आदि शब्द (स्त्रीलिङ्ग) हैं॥४॥ उणादियों में नि, ऊ, ई ये तीन प्रत्यय (स्त्रीलिङ्ग) होते हैं। जैसे- "श्रेणि, श्रोणि; चमू, कर्षू, तंत्री" आदि। अन्य भी इसी प्रकार जाने।

तत्क्रीडायां प्रहरणं चेन्मौष्टा पाल्लवा णदिक्॥५॥

कृष्णमित्रटीका :- मुष्टिः प्रहरणमस्यां क्रीडायां मौष्टा। पल्लवाः प्रहरणमस्यां पाल्लवा। 'तदस्यां प्रहरणमिति क्रीडायां णः' (४. २. ५७)। 'णदिक्' इति णप्रत्ययस्य दिगुदाहरणं न तु परिगणनं तेन दाण्डा, मौसलेत्याद्यपि॥५॥

1. M. णच 2. M. षिद्भिदादिभ्योङ्।

हिन्दी अर्थ :- ङीप्, आप्, ऊङ् प्रत्ययांत जो जंगम और स्थावर हो वह (स्त्रीलिङ्ग) है जैसे " नारी, शिवा, ब्रह्मवधू, कदली, माला, कर्कन्धू आदि जानने। ब्रह्मष्टि आदि प्रहरण जो क्रीडा में हो उस अर्थ में विहित ण-प्रत्यय (स्त्रीलिङ्ग) होता है। जैसे- दाँडा, मौसला, मौष्टा, पाल्लवा ऐसे अन्य भी जाने॥५॥

घञो ञः सा क्रियाऽस्यां चेद्दाण्डपाता हि फाल्गुनी।
श्यैनंपाता च मृगया तैलंपाता स्वधेति दिक्॥६॥

कृष्णमित्रटीका :- 'घञः साऽस्यां[1] क्रियेति ञः' (४. २. ५८) घञः, घञन्तात् क्रियावाचिनोऽस्या-मित्यर्थे[2] ञः स्यात्तदन्तं स्त्रियाम्। दण्डपातोऽस्यां[3] तिथौ वर्तते दाण्डपाता। श्येनपातोऽस्यां[4], मृगयायां वर्तते श्यैनपाता। तिलपातोऽस्यां[5] स्वधायां वर्तते। 'दिक्' इति, तेन मौसलपाता भूमिरित्यादि॥६॥

हिन्दी अर्थ :- वह घञन्तवाच्य दंडपताका आदि क्रिया फाल्गुनिकायाम् इस अर्थ में घञंत से विहित हो ञ प्रत्यय है वह (स्त्रीलिङ्ग) होता है। जैसे- दांडपाता फाल्गुनी, श्यैनंपाता मृगया, तैलंपाता स्वधा ऐसे अन्य भी जानें॥६॥

स्त्री स्यात्काचिन्मृणाल्यादिर्विवक्षापचये यदि।
लङ्का शेफालिका टीका घातकी पञ्जिकाढकी॥७॥

कृष्णमित्रटीका :- अपचये अल्पत्वे यदि विवक्षा तथा मृणाल्यादयः स्त्रीलिङ्गाः। मृणाली, तटी, मठी। 'काचित्' इत्यनेन सर्वत्र स्त्रीत्वविवक्षा नेति सूच्यते॥ लक्यते लङ्का, रावणपुरी। 'लक आस्वादने' (चुरादिः)। पृषोदरादित्वात् (६. ३. १०९) नुम्। शेते शेतं फालयति शेफालिका 'निर्गुण्डी'। टीक्यतेऽर्थोऽनया[6] टीका, वृत्तिः। 'टीकृ गतौ' (भ्वा. आ. से.)। धातु करोति। णिजन्तात् (वा. ३. ३. २६) क्वुन् (उ. २. ३२), धातकी। 'धवई' इति प्रसिद्धो वृक्षः। पिञ्ज्यतेऽर्थोऽस्यां[7] पञ्जिका, विषमपदव्याख्या। 'पिजि भाषार्थः' (चु. उ. से.)। पृषोदरादित्वादे- (६. ३. १०९) रत्। आढौक्यते आढकी, व्रीहिविशेषः॥७॥

1. M. सोस्यां 2. M. वाचिनोस्यामित्यर्थे 3. M. दण्डपातोस्यां 4. M. श्येनपातोस्याम् 5. M. तिलपातोस्यां 6. M. टीक्यतेर्थोनया 7. M. पिञ्जतेर्थोस्यां.

हिन्दी अर्थ :- जो थोड़े में कहने की इच्छा हो तब मृणाली आदि शब्द (स्त्रीलिङ्ग) होते हैं। जैसे- मृणाली, वंशी आदि अन्य भी जानें। लंका अर्थात् राक्षस की पुरी, शेफालिका अर्थात् शंभालू, टीका अर्थात् विषमपदों का व्याख्यान करना, धातकी अर्थात् धववृक्ष, पंजिका अर्थात् निःशेष पदव्याख्या, आढकी अर्थात् अर्हर॥७॥

सिध्रका सारिका हिक्का प्राचिकोल्का पिपीलिका।
तिन्दुकी कणिका भङ्गी[1] सुरङ्गा सूचिमाढयः॥८॥

कृष्णमित्रटीका :- सिध्यते सिध्रका। 'सीध' इति प्रसिद्धो वृक्षः। 'षिधु गत्याम्' (भ्वा. प. से.)। 'बहुलमन्यत्रापि' इति रक्। क्षिपकादित्वात् (वा. ७. ३. ५०) इत्वं न। सरति सारिका। ण्वुल् पक्षभेदः। 'पक्षिभेदः' इत्यन्ये। 'हिक्क अव्यक्ते शब्दे' (भ्वा. प. से.)। हिक्का। ऊर्ध्ववातप्रवृत्तौ शब्दविशेषः। 'हुचकी' लोके। प्राचति प्राचिका। 'अच् (चु) गतौ' (भ्वा. उ. से.)। 'वनमक्षिका' इत्येके। 'पक्षिभेदः' इत्यन्ये। ऋच्छति उल्काः, तेजः पुञ्जः। 'शुकवल्कोल्काः' (उ. ३. ४२) इति साधुः। 'लूक' इति लोके। अपि पील्यते। 'पील प्रतिष्टम्भे' (भ्वा. प. से.)। वल्मीककृमिः पिपीलिकः पुमानपि। 'चिउटी' लोके। तिम्यति तिन्दुकी। 'तिम आर्द्रीभावे' (दि. प. से.)। बाहुलकादुगादि। 'तेन्दु' इति प्रसिद्धो वृक्षः। कणति कणिका, सूक्ष्मकणः। 'कण गतौ' (भ्वा. प. से.)। भङ्गस्य करणं भङ्गिः, विच्छित्तिः। ण्यन्तात् (वा. ३. १. ३६) 'अच इः' (उ. ४. १३८)। सुष्ठु रज्यतेऽस्याम्[2]। 'रञ्ज रागे' (भ्वा. प. अ.)। घञ्। 'चजोः-' (७. ३. ५२) इति कुः। सुरङ्गा तिर्यक्। मूखातः सूच्यतेऽनया[3] सूचिः, सीवनी। माढिः कवचम्। 'महेः (भ्वा. प. से.) क्तिनि (३. ३. ९१) ढत्त्वादौ माढिः' इत्यन्ये॥८॥

हिन्दी अर्थ :- सिध्र का अर्थात् वृक्षभेद, सारिका अर्थात् मैना, हिक्का अर्थात् हिचकी, प्राचिका अर्थात् वन की माखी, उल्का अर्थात् तेज का समूह, पिपीलिका अर्थात् कीडी, तिंदुकी अर्थात् टेंभरनी वृक्ष, कणिका अर्थात् परिमाण, भंगि अर्थात् कुटिलता का भेद, सुरंगा अर्थात् सुरंग, सूचि अर्थात् सूई, माढि अर्थात् पत्रशिरा॥८॥

1. B. and K. भङ्गिः 2. M. रज्यतेस्याम् 3. M. सूच्यतेनया

पिच्छावितण्डाकाकिन्यश्चूर्णिः शाणी द्रुणी दरत्।
सातिः कन्था तथासन्दी नाभी रासभापि च॥९॥

कृष्णमित्रटीका :- पिच्छ्यते। 'पिच्छ बाधे' (चु. प. से.)। पिच्छा शाल्मलिनिर्यासः। आवामश्च। वितण्ड्यतेऽनया[1]। 'तडि आघाते' (भ्वा. आ. से.)। वितण्डा स्वपक्षस्थापनाहीनो जल्पः। काकमनिति। 'अन प्राणने' (अ. प. से.)। केचिन्मूर्धन्यं (काकिणी) पठन्ति। 'काकिनी' नाम विंशति कपर्दाः। चूर्णस्य 'तत्करोति-' (वा. ३. १. २६) इति ण्यन्तात् 'अच इः' (उ. ४. १३८)। 'चूर्णिर्भाष्यम्' इत्यन्ये। शणस्य विकारः। शाणो निकषः। द्रुणति। 'द्रुण गतौ' (तु. प. से.)। कः (३. १. १३५)। 'जातेः-' (४. १. ६३) इति ङीष्। द्रुणी कर्णजलौका। दीर्यते। 'शृद्बृभसोऽदिः'[2] (उ. १. १३०)। दरत्, म्लेच्छजातिः। 'ऊतियूति-' (३. ३. ९७) इत्यादिना सातिः साधुः। 'सातिर्दानावसानयो' (हैम २. २०९)। कम्यते कन्था। आस्यतेऽस्याम्[3]। 'अब्दादयश्च' (उ. ४. ९८) इति साधुः। आसन्दी पीठिका। नभ्यतेऽनया[4]। 'णभ हिंसायाम्' (भ्वा. आ. से.)॥९॥

हिन्दी अर्थ :- पिच्छा अर्थात् शंभल का निर्यास, वितंडा अर्थात् वादभेद, काकिणी अर्थात् दमड़ी, चूर्णि अर्थात् चूर्णिका, शाणी अर्थात् सनका वस्त्रविशेष, द्रुणी अर्थात् कानकी जलौका, दरत् अर्थात् म्लेच्छजाति, साति अर्थात् दान और अन्त, कंथा अर्थात् वस्त्रविशेष और माटी का भींत, आसंदी अर्थात् आसनभेद वेतका आसन, नाभि अर्थात् सूंडी, राजसभा अर्थात् राजाओं की सभा॥९॥

झल्लरी चर्चरी पारी होरा लट्वा च सिध्मला।
लाक्षा लिक्षा च गण्डूषा गृध्रसी चमसी मसी॥१०॥
इति स्त्रीलिङ्गशेषः।

कृष्णमित्रटीका :- झल्लरी वाद्यभेदः। चर्च्यते चर्चरी, हर्षक्रीडा। पारयति पारी पानभाण्डम्। होलति होरा लग्नम्। 'हुल हिंसादौ' (भ्वा. प. से.)। लटति। 'लट बाल्ये' (भ्वा. प. से.)। 'अशुप्रुषिलटि-' (उ. १. १५२) इति क्वुन्। लट्वा पक्षिभेदः फलभेदश्च। सिध्मला

1. M. वितण्ड्यतेनया 2. M. शृदृभसोदिः 3. M. आस्यतेस्याम् 4. M. नभ्यतेनया.

पामा। लाक्षा जतुः। लिक्षा युकागर्भः। 'गण्डेश्च' (उ. ४. ७८) इत्यूषन्। गण्डूषा अ (आ) स्यचुलुकम्। गृध्रमपि स्यति। जङ्घाया पीडाविशेषः। चम्यते चमसी माषादिपिष्टम्। मसी रञ्जनी॥१०॥

इति स्त्रीलिङ्गशेषः॥

हिन्दी अर्थ :- झल्लरी अर्थात् बाजाविशेष, चर्चरी अर्थात् हाथों का शब्द और आनन्द की क्रीड़ा, पारी अर्थात् हाथी के पैर की रज्जु, होरा अर्थात् राशि का आधा भाग, लट्वा अर्थात् गाम का चिड़ा, सिध्मला अर्थात् सूखी मछली, लाक्षा अर्थात् लाख, लिक्षा अर्थात् लीख, गंडूषा अर्थात् पानी आदि से मुख को पूरना, गृध्रसी अर्थात् वातरोगभेद, चमसी अर्थात् यज्ञपात्रभेद प्रणीतापात्र, मसी अर्थात् स्याही॥१०॥

यहाँ स्त्रीलिंगवाची शब्दों का संग्रह समाप्त हुआ॥

पुंस्त्वे सभेदानुचराः सपर्यायाः सुरासुराः।
स्वर्गयागाद्रिमेघाब्धिद्रुकालासिशरारयः॥११॥

कृष्णमित्रटीका :- सुरासुरयोर्ये विशेषा अनुचराः पर्यायाश्च ते पुंसि। सुराः देवाः, इन्द्रो विडौजाः शक्रो रविः, विष्ण्वनुचरः- जयो विजय इत्यादि। असुरेषु- दैत्या दानवाः, तद्विशेषाः- विरोचनः, बलिः। स्वर्गादयः सभेदाः सपर्यायाः पुंसि। स्वर्गे-नाकः, त्रिदिवः। यागे-मखः, क्रतुः। यागविशेषे- अग्निष्टोमः, सोमः। अद्रिः पर्वतः, तद्विशेषो मेरुः। मेघो घनः। विशेषः पुष्करावर्तः। अब्धिः समुद्रः। विशेषः क्षीरोदः। द्रु वृक्षः। विशेषः। विशेषः- आम्रः। कालः समयः। विशेष :- क्षणः। असिः खड्गः। विशेषो नन्दकः। शरो वाणः। अरिः शत्रुः॥११॥

हिन्दी अर्थ :- तुषित्, साध्य आदि अनुचर इनके सहित देवता और दैत्यों के पर्यायवाची शब्द (पुल्लिङ्ग) हैं। स्वर्ग के नाक, त्रिदिव आदि पर्य्याय याग के यज्ञ, मख आदि पर्यायः, अद्रि के पर्वत, अद्रि आदि पर्य्याय; मेघ के घन आदि पर्य्याय; अब्धि के समुद्र आदि पर्य्याय द्रु के शाखी आदि पर्य्याय; शरके बाण आदि पर्य्याय; अरि के शत्रु आदि पर्य्याय॥११॥

करगण्डौष्ठदोर्दन्तकण्ठकेशनखस्तनाः।
अह्नाहान्ताः क्ष्वेडभेदा रात्रान्ताः प्रागसंख्यकाः॥१२॥

कृष्णमित्रटीका :- करः हस्तः। गण्डः कपोलः। ओष्ठः, अधरः। दोर्बाहुः। दन्तो रदनः। कण्ठो गलः। सायाह्नः, मध्याह्नः, उत्तमाह्नः। 'राजाहः सखिभ्यः टच्' (५. ४. ९१)। 'अह्नोऽह्न[1] एतेभ्यः' (५. ४. ८८)। (क्ष्वेडभेदा) विषभेदाः पुंसि गरलः कालकूटः। क्लीबेऽपि[2] प्रागुक्ताः। प्रचुरप्रयोगार्थं चेहोक्तिः। असंख्यापूर्वो रात्रास्तः पुंसि अहोरात्रः। संख्यापूर्वे तु पञ्चरात्रम्॥१२॥

हिन्दी अर्थ :- कर के रश्मि, पाणि आदि पर्य्याय; गंड के कपोल आदि पर्य्याय ओष्ठ के अधर आदि पर्य्याय; दोष् के बाहु आदि पर्याय दन्त के रद आदि पर्य्याय; कंठ के गल आदि पर्य्याय; केश के कच आदि पर्य्याय; नख के कररुह आदि पर्य्याय; स्तन के कुच आदि पर्य्याय ये सब भेदों सहित शब्द (पुल्लिङ्ग) हैं। अह्न और अह ये हैं अन्त में जिनके वे शब्द (पुल्लिङ्ग) वाची हैं। जैसे- पूर्वाह्न, अपराह्न, द्व्यहन आदि जानने। क्ष्वेड अर्थात् विषविशेष के वाची सौराष्ट्रिक आदि शब्द (पुल्लिङ्ग) हैं। रात्र है अन्त में जिनके वे शब्द और आदि में नहीं है संख्यावाचक शब्द जिनके वे शब्द (पुल्लिङ्ग) हैं। जैसे- अहोरात्र, सर्वरात्र आदि जानें और संख्या है आदि में जिनके वे पञ्चरात्र आदि शब्द (नपुंसकलिङ्ग) हैं॥१२॥

श्रीवेष्टद्याश्च निर्यासा असन्नन्ता अबाधिताः।
कशेरुजतुवस्तूनि हित्वा तुरुविरामकाः॥१३॥

कृष्णमित्रटीका :- श्रीवेष्टः सर्जरसः। निर्यासो वृक्षद्रवः। असन्नन्ताश्च अपवादेनाबाधिताः पुंसि- पुरोधाः, उशना। अबाधिता इति किम्? यादांसि जलजन्तवः, इदं लोम। द्वयच् अक (क) मस इत्याद्यपवादो वक्ष्यते। कसे (शे) र्वादीनि वर्जयित्वा त्वन्ता रुशब्दान्ताश्च पुंसि-सक्तुः, धातुः[3], कुरुः, महः। 'कसेरु' जलकन्दविशेषः। जतु लाक्षावस्तुपदार्थः। 'तु' 'रु' एतौ विरामे येषां ते॥१३॥

हिन्दी अर्थ :- श्रीवेष्ट आदि शब्द निर्यास (गोंद वा सार) वाचक हैं वे और अस्, अन् ये प्रत्यय हैं अन्त में जिनके वे शब्द और विशेषवचन से नहीं बाधित किये ऐसे ये सब शब्द (पुल्लिङ्ग) हैं। जैसे- श्रीवेष्ट, सरल, चन्द्रमाः, कृष्णवर्त्मा आदि अन्य भी जानने। कशेरु, जतु, वस्तु इन शब्दों को छोड़ तु और रु ये हैं अन्त में जिनके वे शब्द (पुल्लिङ्ग) हैं। जैसे- हेतु, सेतु, धातु आदि अन्य भी जानने॥१३॥

---

1. M. अह्नोन्ह 2. M. क्लीबेपि 3. M. घातः.

कषणभमरोपान्ता यद्यदन्ता अमी अथ।
पथनयसटोपान्ता गोत्राख्याश्चरणाह्वयाः ॥१४॥

कृष्णमित्रटीका :- ककारादय उपान्ते उपधायां येषां ते अदन्ताः पुंसि। कः-शुल्कः, वा (व) राटकः। षः- वृक्षः। णः- शणः (भः) कुम्भः, कलभः। (मः-) धूमः, वामः। (रः-) करः, अङ्कुरः। सूपः, सूर्पः। शपथः, सार्थः। नन्दनः, फेनः। तनयः, व्ययः। दासः, सारसः। कटः, पटः। गोत्राख्या अपत्यप्रत्ययान्ताः- गार्ग्यं, वाशिष्ठ इति न सत् 'अपत्यप्रत्ययान्ताः' (अ. को. ३. ५. ३७) इत्यनेन पुनरुक्तिप्रसङ्गात्। तस्माद्गोत्रस्यादिपुरुषाः गोतमः, भरद्वाज इत्युदाहर्यम्। चरणाह्वयाः शाखाध्यायिनः, छन्दोगः ॥१४॥

हिन्दी अर्थ :- क, ष, ण, भ, म, र ये छः अक्षर अन्त्य के समीप हैं जिनके वे और नहीं बाधित अदंत शब्द (पुल्लिङ्ग) हैं। जैसे- अंक, लोक, स्फटिक आदि और ओष, प्लोष, माष, प्लक्ष आदि और पाषाण, गुण, किक्षरण आदि और कौस्तुभ, दर्भ शलभ आदि और होम, ग्राम, गुल्म, व्यायाम आदि और झर्झर, सीकर, कर आदि ये सब शब्द (पुल्लिङ्ग) हैं और कुशल वल्क आदि ये सब शब्द विशेषवचन से बाधित हुए (पुल्लिङ्ग) नहीं हैं। प, थ, न, य, स, ट ये छः वर्ण हैं अन्त्य के समीप जिनके वे शब्द नहीं बाधित किये (पुल्लिङ्ग) वाची हैं। जैसे- यूप, बाष्प, कलाप आदि और वेपथु, रोमंथ आदि और इन, धन, भानु आदि और आय, व्यय, आयु, तंतुवाय आदि और रस, हास आदि और पट आदि ये सब शब्द (पुल्लिङ्ग) हैं और कुतप आदि, वन आदि, मृगया आदि, बिस आदि, किरीट आदि ये शब्द विशेषसूत्रों से बाधित हैं। गोत्र अर्थात् वंश उसमें हैं संज्ञा जिनकी वे गोत्र के आदि पुरुष जो प्रवराध्याय में पठित हैं और जो अन्यभी अपत्यप्रत्यय के विना गोत्रवाचित्व करके लोक में प्रसिद्ध हैं वे सब (पुल्लिङ्ग) हैं। जैसे- भरद्वाज, कश्यप, वत्स आदि जानें। वेद की शाखा की संज्ञा वाले शब्द (पुल्लिङ्ग) हैं। जैसे- कण्ठ, बह्वृच आदि शब्द जानें ॥१४॥

नाम्न्यकर्तरि भावे च घञजब्नङ्णघाथुचः।
ल्युः कर्तरीमनिज्भावे को घोः किः प्रादितोऽन्यतः ॥१५॥

कृष्णमित्रटीका :- नाम्नि संज्ञायाम्, अकर्तरि कारके भावे चार्थे घञन्तादयः पुंसि। प्रसीदन्त्यस्मिन्प्रासादः। प्रक्रियते प्राकारः। 'अकर्तरि च कारके संज्ञायाम्' (३. ३. १९) घञ्। भावे-पाकः, त्यागः। अच्-जयः, चयः। 'एरच्' (३. ३. ५६) अप (प्)- करः, स्तवः। 'ऋदोरप्' (३. ३. ५७)। नङ्- यज्ञः, यत्नः। 'यजयाच-' (३. ३. ९०)। इति नङ्। णः[1]- न्यदनं न्यादः। 'नौ ण च' (३. ३. ६०) इति णः। घः[2]- गोचरः, निगमः। 'पुंसि संज्ञायाम्-' (३. ३. ११८) घः। अथुच्-श्वयथुः, वेपथुः। 'ट्वितोऽथुच्'[3] (३.३. ८९)। नन्दयतीति नन्दनः। रमयति रमणः। 'नन्दिग्रहि-' (३. १. १३४) इति कर्तरि ल्युः। इमनिजन्ताः पृथोर्भावः प्रथिमा। भावे किम्? तरिमा। 'पृथ्वी' औणादिक इमनिच्। एतच्च 'कृतः कर्तर्यसंज्ञायाम्' (अ. को., ३ . ६. ४५) इत्येव सिद्धम्, तस्माद्भावे इति नास्य विशेषणेषु भावे कप्रतययान्तपुंसि- आखूनामुत्थानमाखूत्थो वर्तते, 'सुपि स्थः' (३. २. ४) इति योगे (ग) विभागात्कः। प्रादेरन्यस्माच्च सुबन्तात्परो घो घुसंज्ञकस्तत्परः किप्रत्ययः पुंसि निधिः, संधिः। 'उपसर्गे घोः किः' (३. ३. ९२)। अब्धिः, इषुधिः। 'कर्मण्यधिकरणे च' (३. ३. ९४) इति किः ॥१५॥

हिन्दी अर्थ :- संज्ञा, कारक, भाव इनमें विहित किये घञ्, अच्, अप्, नङ्, प, घ, अथुच्- ये सात प्रत्यय (पुल्लिङ्ग) हैं। जैसे- प्रासाद, वेद, प्रपात, भाव, माघ, पाक, त्याग आदिः जय, चय, नय आदिः कर, गर, लव, प्लव आदि; यज्ञ, प्रश्न आदि; न्याद, रस आदि; उरश्छद आदि और वेपथु आदि ये सब शब्द (पुल्लिङ्ग) हैं। कर्त्ता में नन्द्यादि से हुआ ल्युप्रत्यय (पुल्लिङ्ग) है। जैसे-नन्दन, रमण, मधुसूदन आदि अन्य भी जाने। भाव में पृथु आदि से हुआ इमनिच् प्रत्यय (पुल्लिङ्ग) है। जैसे- प्रथिमा, महिमा आदि अन्य भी जानें। भाव में हुआ क प्रत्यय (पुल्लिङ्ग) है। जैसे- आखूत्थ, प्रस्थ आदि अन्य भी जानें। प्रादियों से है। जैसे- प्रधि, निधि आदि; जलधि आदि अन्य भी जाने ॥१५॥

द्वन्द्वेऽश्ववडवावश्ववडवा न समाहृते।
कान्तः सूर्योन्दुपर्यायपूर्वोऽयः पूर्वकोऽपि च ॥१६॥

कृष्णमित्रटीका :- अश्वश्च वडवा च अश्ववडवौ, अश्ववडवाः। समाहारे तु-अश्ववडवम्। सूर्यादिपूर्वकः कान्तशब्दः पुंसि सूर्यकान्तः, चन्द्रकान्तः, अयस्कान्तः ॥१६॥

1. M. ण 2. M. घ 3. M. टिवतोथुच्.

हिन्दी अर्थ :- समाहार से अन्य द्वन्द्व समास में अश्ववडवौ शब्द (पुल्लिङ्ग) है। सूर्य और चन्द्रमा का पर्यायपूर्वक कान्तशब्द और अयस् अर्थात् लोह का वाचक शब्द है पूर्व जिसके ऐसा कान्त शब्द (पुल्लिङ्ग) है। जैसे- सूर्यकान्त, अर्ककान्त, चन्द्रकान्त, इन्दुकान्त, सोमकान्त, अयस्कान्त, लोहकान्त आदि अन्य भी जाने॥१६॥

वटकश्चानुवाकश्च रल्लकश्च कुडङ्गकः।
पुङ्खो न्युङ्खः समुद्गश्च विटपट्टघटाः खटः॥१७॥

कृष्णमित्रटीका :- वटन्ति। 'वट वेष्टने' (भ्वा. प. से.)। वटको मासपिष्टविकारः। अनुवाकः मन्त्रसमूहः। रल्लकः पक्ष्मकम्बलः। 'कुट कौटिल्ये' (तु. प. से.)। कुट् अङ्गमस्य। कुडङ्गको वृक्षलतागहनम्। पुंसा खन्यते। पुङ्खः (काण्ड) मूलम्। न्युङ्खति। 'यज्ञकर्मण्यजपन्यूङ्ख-' (१. २. ३४) इति निर्देशाद्दीर्घः। न्युङ्ख ओंकाराः षोडश। समुद्गकः संपुटकः। विटः कामुकानुचरः। 'पट गतौ' (भ्वा. प. से.) पट्ट उ (ऊ) ष्णीषादि। 'घन शब्दे' (भ्वा. प. से.)। नस्य टः, घटः, तुला। खटः तृणम्॥१७॥

हिन्दी अर्थ :- वटक अर्थात् पीठी का वडा, अनुवाक अर्थात् वेद का अवयव, रल्लक अर्थात् कंबल, कुडंगक अर्थात् वृक्षलता का वन, पुंख अर्थात् बाण का अवयव, न्यूंख अर्थात् सामवेद में निपातित ॐकार, समुद्ग अर्थात् संपुटक, विट अर्थात् धूर्त्त, पट्ट अर्थात् पटला, घट अर्थात् तुला, खट अर्थात् अंधा कुआ आदि॥१७॥

कोट्टारघट्टहट्टाश्च पिण्डगोण्डपिचण्डवत्।
गड्डुः करण्डो लगुडो बरण्डश्च किणो घुणः॥१८॥

कृष्णमित्रटीका :- कुट्यते। कोटो दुर्गम् (र्गः)। अरैश्चक्रावयवसदृशैः काष्ठैर्घट्यते अरघट्टः। कूपाज्जलनिस्सारणार्थं घटीयन्त्रमित्येके। 'बृहत्कूपः' इति स्वामी। केचित्कोट्टार इति च्छिन्दन्ति। 'कोट्टारो नागरे कूपे पुष्करिण्यां च पाटके' इति रभसः, (मेदिनी १३३. १४४, विश्वश्च १३९. १७७) 'हट दीप्तौ' (भ्वा. प. से.) टः, हट्ट आपणः। पिण्ड्यते। पिण्डो ग्रासः। गौडः गुडकः, जातिविशेषः। करे अण्ड इव करण्डः समुद्गकः। लगति। लगुडो यष्टिः। 'वृञ् वरणे' (स्वा. उ. से.)। वरण्डः समूहः। 'कणः गतौ' (भ्वा. प. से.)। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। किणो मांसग्रन्थिः 'घुण भ्रमणे' (भ्वा. आ. से.)। घुणः काष्ठकृमिः॥१८॥

हिन्दी अर्थ :- कोट्ट अर्थात् किले की भींत, अरघट्ट अर्थात् अरहटका कूआ, हट्ट अर्थात् दुकान, पिंड अर्थात् माटी आदि का गोला, गोंड अर्थात् नाभि, पिचंड अर्थात् पेट, गड्डु अर्थात् गलगंड, करंड अर्थात् बाँस आदि की बनाई हुई करंडी, लगुड अर्थात् लाठी, वरंड अर्थात् मुखरोग, किण अर्थात् मांस की ग्रंथि का भेद, घुण अर्थात् घुन॥१८॥

दृतिसीमन्तहरितो रोमन्थोद्गीथबुद्बुदाः।
कासमर्दोऽर्बुदः कुन्दः फेनस्तूपौ सयूपकौ[1]॥१९॥

कृष्णमित्रटीका :- 'दृङ् आदरे' (तु. आ. अ.)। दृतिर्भस्त्रा। सीमन्तः केशविन्यासः। हरित्, नीलवर्णः। रोगस्य मन्थो रोमन्थः, पशूनां चर्विते चर्वणम्। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। उद्गीयते। उद्गीथः। ओंकारः। गायतेः (भ्वा. प. अ.) थक्। 'बुद्' इत्यव्यक्तं वदति बुद्बुदः, फेनविशेषः। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। कासमर्द ओषधिविशेषः। अर्बुदो व्याधिविशेषः। कुन्दः पुष्पभेदः। स्तूपो मृदादिकूटः। यूपो यज्ञोस्तम्भः॥१९॥

हिन्दी अर्थ :- दृति अर्थात् पशुओं के चर्वित का चावना, उद्गीथ अर्थात् सामवेद, बुद्बुद अर्थात् जलविकार, कासमर्द अर्थात् कसौंदी, अर्बुद अर्थात् दशकरोड, कुन्द अर्थात् शिल्पभांड, फेन अर्थात् झाग, स्तूप अर्थात् वड़ आदि, यूप अर्थात् यज्ञस्तंभ, यूप अर्थात् मालपुआ॥१९॥

आतपे[2] क्षत्रिये नाभिः कु (क) णपक्षुरकेदराः।
पूरक्षुरप्रचुक्राश्च गोलहिङ्गुलपुद्गलाः॥२०॥

कृष्णमित्रटीका :- आतपः धर्मः। 'क्षत्रियः' इति नाभेर्विशेषणम्। नेह इयं नाभिस्तुन्दिः। कणं पाति। कणपः प्रासभेदः। 'कुणपः' इति पाठे शव इत्यर्थः। 'क्षुर विलेखने' (तु. प. से.)। क्षुरो नापितास्त्रम्। के दीर्यते। केदरो वृक्षभेदः। 'रूपकम्' इति स्वामी। पूरस्तोयोल्लासः। क्षुरप्रो बाणभेदः। चुक्रोऽम्लभेदः[3]। गोली वर्तुलः पिण्डः। हिङ्गुलः। 'पुत्' इति कुत्सार्थमव्ययम्। पुत् गलति। पुद्गलो जीवः॥२०॥

1. B. सपूपकौ 2. B. and K. आतपः 3. M. चुक्राम्लभेदः.

हिन्दी अर्थ :- आतप अर्थात् घाम, क्षत्रिय का वाची नाभि, कुणप अर्थात् मुर्दा, क्षुर अर्थात् उस्तरा, केदर अर्थात् व्यवहार पदार्थ, पूर अर्थात् जल का प्रवाह, क्षुरप्र अर्थात् बाणभेद, चुक्र अर्थात् चूका शाक, गोल अर्थात् गोला, हिंगुल अर्थात् सिंगरफ, पुद्गल अर्थात् आत्मा॥२०॥

वेतालम्ल्लभल्लाश्च[1] पुरोडाशोऽपि पट्टिशः।
कुल्माषो रभसश्चैव सकटाहः पतद्ग्रहः॥२१॥
इति पुल्लिङ्गसंग्रहः॥

कृष्णमित्रटीका :- वे वायौ तालः प्रतिष्ठाऽस्य[2]। वेतालो भूताविष्टः। मल्लो वाहशब्दः। भल्लः काण्डभेदः। पुरोडाशो देववलिः। पट्टिं[3] श्यति। पट्टिश आयुधभेदः। दन्त्यान्तः (पट्टिसः) अपि। 'कुल्माषः स्विन्नो माषः' इत्येके, 'वोडा' लोके। रभसः पौर्वापर्यं विचारः। कटाहः पात्रभेदः। पतद्ग्रहः, 'पीकदानी' लोके॥२१॥
इति पुल्लिङ्गसंग्रहः॥

हिन्दी अर्थ :- वेताल अर्थात् भूतों से अधिष्ठित किया मुर्दा, भल्ल अर्थात् रीछ, मल्ल अर्थात् बाहुओं से युद्ध करने वाला, पुरोडाश अर्थात् हविर्भेद, पट्टिश अर्थात् हथियार विशेष, कुल्माष अर्थात् आधा सिझाया जव, रभस अर्थात् आनन्द, कटाह अर्थात् कड़ाही, पतद्ग्रह अर्थात् पीकदानी ये सब शब्द (पुल्लिङ्ग) वाची हैं॥२१॥

यहाँ पुल्लिंग शेष समाप्त हुआ॥

द्विहीनेऽन्यच्च खारण्यपर्णश्वभ्रहिमोदकम्।
शीतोष्णमांसरुधिरमुखाक्षिद्रविणं बलम्॥२२॥

कृष्णमित्रटीका :- अन्यः शेषो वक्ष्यमाणः द्वाभ्यां स्त्रीपुंसाभ्यां हीने क्वीबे बोध्यः। खादयः सवर्यावयविशेषाः क्लीबे। खमिन्द्रियमाकाशं च। अरण्यं वनम्। पर्णं यन्त्रम्। खभ्रं विलम्। हिमं तुहिनम्। उदकं जलम्। शीतं शिशिरम्। उष्णं धर्म (म्)। मासं पल्लम्। रुधिरं रक्तम्। मुखमास्यम्। अक्षि नेत्रम्। द्रविणं धनम्। बलं सैन्यम्॥२२॥

हिन्दी अर्थ :- अब (न.) का अधिकार है। बाधित से जो अन्य है वही (न.) वाची है। ख अर्थात् आकाश, अरण्य अर्थात् वन, पर्ण अर्थात् पत्ता, श्वभ्र अर्थात् छिद्र, हिम अर्थात् जाड़ा, उदक अर्थात् जल, शीत अर्थात् सीला, उष्ण अर्थात् गर्म, मांस अर्थात् कबाब, रुधिर अर्थात् लहू, मुख अर्थात् मुंह, अक्षि अर्थात् आँख, द्रविण अर्थात् धन, बल अर्थात् सेना॥२२॥

फलहेमशुल्बलोहं सुखदुःखशुभाशुभम्।
जलपुष्पाणि लवणं व्यञ्जनान्यनुलेपनम्॥२३॥

कृष्णमित्रटीका :- फलं विशेषाः- आम्रं कपित्थम्। हेम सुवर्णम्। शुल्बं ताम्रम्। व्यञ्जनस्य भेदः। अनुलेपनस्य भेदाः- चन्दनं कुङ्कुमम्॥२३॥

हिन्दी अर्थ :- फल अर्थात् आम्र आदि, हेम अर्थात् सोना, शुल्ब अर्थात् ताँबा, लोह अर्थात् लोहा, सुख, दुःख, शुभ, अशुभ, जलपुष्प अर्थात् कमल के फूल आदि, लवण अर्थात् नमक, व्यञ्जन अर्थात् दधि तक्र आदि पदार्थ, अनुलेपन अर्थात् केसर आदि का तिलक॥२३॥

कोट्याः शतादिः संख्यान्या वा लक्षा नियुतं च तत्।
द्व्यच्कमसिसुसन्नन्तं यदनान्तमकर्तरि॥२४॥

कृष्णमित्रटीका :- कोटेरन्या शतादिका संख्या क्लीबे- शत (म्), सहस्रम्। इयं कोटिः लक्षा शब्दो वा क्लीबे यथा- कियती लक्षाऽथवा[1] कोटिः, लक्षमेव प्रयुतम्। असन्तमिसन्तमुसन्तमन्नन्तं च द्विस्वरं क्लीबे- यशः, तेजः, सर्पिः, वर्हिः, धनुः, यजुः। नाम, पर्व। अनप्रत्ययान्तं यदकर्तरि-पचनं, पठनम्। कर्तरि तु-मधुसूदनः॥२४॥

हिन्दी अर्थ :- कोटिशब्द के विना जो शत आदि संख्यावाचक शब्द हैं वे (नपुंसकलिङ्ग) हैं और लक्षशब्द विकल्प से (नपुंसकलिङ्ग) है इस लिये (स्त्रीलिङ्ग) में लक्षा बनता है। लक्ष का पर्य्याय नियुत है। असंत, इसंत, उसंत और अन्नन्त ऐसे शब्द दो स्वरों वाले (नपुंसकलिङ्ग) वाची हैं। जैसे पयस्, सर्पिस्, वपुस्, शर्मन् आदि शब्द (नपुंसकलिङ्ग) हैं। कर्त्तासे अन्य में जो अनांत है वह (नपुंसकलिङ्ग) है। जैसे- गमन, मरण, दान आदि अन्य भी जानें। और कर्त्ता में रमण आदि (पुल्लिङ्ग) हैं॥२४॥

त्रान्तं सलोपधं शिष्टं रात्रं प्राक् संख्ययातम्।
पात्राद्यदन्तैरेकार्थो द्विगुर्लक्ष्यानुसारतः॥२५॥

कृष्णमित्रटीका :- केवलं त्रान्तं क्लीबे- पात्रं, दात्रम्। सकारनकारोपधं च त्रान्तं-वस्त्रं, तन्त्रम्। शिष्टं पूर्वोक्तादन्यत्, तेनेह न मन्त्रः, सत्रः। सख्यापूर्वे रात्रं क्लीबे-

1. K. वेतालभल्लमल्लाश्च 2. M. प्रतिष्ठास्य 3. M. पट्टि.

1. M. लक्षार्थ,

त्रिरात्रं, पञ्चरात्रम्। 'संख्या' इति किम्? वर्षारात्रः। पात्रादिरिदन्तैरुत्तरपदैर्घटितः समाहारो द्विगुः क्लीबे-पञ्चपात्रं, त्रिभुवनम्। 'पात्रादि' इति किम्? त्रिलोकी। 'एकार्थः' इति किम्? पञ्चकपालः, पुरोडाशः। 'लक्ष्यानुसारतः' इति किम्? त्रिपुरी, पञ्चमूली॥२५॥

हिन्दी अर्थ :- त्रांत शब्द (नपुंसकलिङ्ग) हैं। जैसे- गात्र, पात्र, वस्त्र आदि अन्य भी जाने। स और ल उपधा में हैं जिनके वे शब्द (नपुंसकलिङ्ग) हैं। जैसे- बिस, कुल आदि अन्य भी (नपुंसकलिङ्ग) जाने और जो प्रागुक्त अर्थात् पूर्व में कहे हुए से शेष हैं वे ही (नपुंसकलिङ्ग) हैं और जो बाधित हैं वे पुत्र, वृक्ष, हंस, कंस, शिला, काल आदि (पुल्लिङ्ग) और (स्त्रीलिङ्ग) हैं। संख्या है पूर्व जिसके ऐसा रात्रशब्द (नपुंसकलिङ्ग) है। जैसे- त्रिरात्र, पञ्चरात्र ये (नपुंसकलिङ्ग) हैं। और संख्या से रहित पूर्ववाले अर्द्धरात्र, आदि शब्द (पुल्लिङ्ग) हैं। पात्र आदि अदंत शब्दों से एकार्थ द्विगु शिष्टप्रयोग के अनुसार से जानें। इस लिए पंचमूली, त्रिलोकी ये भी ठीक बन सकते हैं॥२५॥

द्वन्द्वैकत्वाव्ययोभावौ पथः संख्याव्ययात्परः।
षष्ठ्याश्छाया बहूनां चेद्विच्छायं संहतौ सभा॥२६॥

कृष्णमित्रटीका :- द्वन्द्वस्य एकत्वं समाहार, अव्ययीभावश्च, एतौ क्लीबे- पाणिपादम्, अधिहरि। तिष्ठद्गु गोदोहनकालः। संख्याव्ययाभ्यां परः कृतसमासान्तः पथिशब्दः क्लीबे (बम्)- त्रयाणां पन्था त्रिपथम्। विरूपः पन्था विपथम्। षष्ठीबहुवचनान्तात्परा कृतसमासा छाया क्लीबे-वीना छाया विच्छायं, वकानां छाया वकच्छायम्। बहुत्वे किम्? वृक्षस्य च्छाया वृक्षच्छाया। संहतौ समूहेऽर्थे[1] सभा क्लीबं-ब्राह्मणानां सभा ब्राह्मणसभम्॥२६॥

हिन्दी अर्थ :- द्वन्द्वसमास का एकत्व और अव्ययीभाव (नपुंसकलिङ्ग) होता है। जैसे- पाणिपाद, शिरोग्रीव आदि और अधिस्त्रि, उपगंग आदि। संख्या से और अव्यय से परे पथिन् शब्द (नपुंसकलिङ्ग) होता है। जैसे- द्विपथ, त्रिपथ, विपथ, कापथ आदि। समास में षष्ठीविभक्त्यन्त से परे छाया शब्द (नपुंसकलिङ्ग) है जो छाया बहुतों की हो तो। जैसे-विच्छाय अर्थात् पक्षियों की

1. M. समूहर्थे.

छाया है। यहाँ वि नाम पक्षियों का है। समूह के विषय में सभा शब्द (नपुंसकलिङ्ग) हैं। जैसे- दासीसभ, स्त्रीसभ आदि हैं॥२६॥

शालार्थापि परा राजामनुष्यार्थादराजकात्।
दासीसभं नृपसभं रक्षःसभमिमादिशः॥२७॥

कृष्णमित्रटीका :- शालार्थापि सभा नृपसभं नृपगृहमित्यर्थः। राजपर्यायेभ्यः, अमनुस्यार्थेभ्यश्च षष्ठ्यन्तेभ्यः परा सभा क्लीबं न तु राजशब्दात्परा चेत्-ईश्वरसभं, पिशाचसभम्। 'अराजा' इति किम्? राजसभा। इमा दिशः इमान्युदाहरणानि॥२७॥

हिन्दी अर्थ :- शालानामवाली और अपिशब्द से समूह नामवाली जो सभा है वह राजशब्द के पर्य्यायों से वर्जित और मनुष्य के पर्याय से वर्जित शब्द के संग (नपुंसकलिङ्ग) है। जैसे- इनसभ, प्रभुसभ, रक्षःसभ, पिशाचसभ आदि शब्द (नपुंसकलिङ्ग) हैं॥२७॥

उपज्ञोपक्रमान्तश्च तदादित्वप्रकाशने।
कोपज्ञकोपक्रमादि कन्थोशीनरनामसु॥२८॥

कृष्णमित्रटीका :- पाणिन्युपज्ञं व्याकरणम्। उपज्ञायते इति उपज्ञा। पाणिनिप्रथमज्ञानविषय इत्यर्थः। उपक्रम्यत इति, उपक्रमः। नन्दस्य उपक्रमः, नन्दोपक्रमम्। नन्दसंबन्धिप्रथमारम्भविषय इत्यर्थः। तयोरादित्वं प्राथम्यं तद् द्योत्यत इत्यर्थः। कस्य उपज्ञा कोपज्ञम्। कस्य उपक्रमः कोपक्रमम्। उशीनरदेशे या कन्था तदन्तः संज्ञायां क्लीबं सौसमीनां कन्था सोसमीकन्थम्॥२८॥

हिन्दी अर्थ :- उपज्ञा और उपक्रम के प्रारम्भ को प्रकाशित करने में उपज्ञान्त और उपक्रमान्त समास (नपुंसकलिङ्ग) है। जैसे- कोपज्ञ, क अर्थात् ब्रह्मा की उपज्ञा अर्थात् प्रजा, कोपक्रम अर्थात् लोक। उशीनरों के नामों के मध्य में षष्ठी विभक्ति से परे कंथाशब्द (नपुंसकलिङ्ग) हैं। जैसे- सौशमिकंथ आदि हैं॥२८॥

भावे नणकचिद्भ्योऽन्ये समूहे भावकर्मणोः।
अदन्तप्रत्ययाः पुण्यसुदिनाभ्यां त्वहः परः॥२९॥

कृष्णमित्रटीका :- न ण क चित्, एभ्योऽन्ये[1] ये भावेऽर्थे[2] कृतस्ते क्लीबे ब्रह्मणो भवनं ब्रह्म भूयं वतः। 'भुवो भावे' (३. १. १०७) इति क्यप्। नणन्तास्तु पुंसि यत्नः, प्रश्नः। न्यदनं न्याद, 'नौ ण च' (३. ३. ६०)।

1. M. एभ्योन्ये 2. M. भवेर्थे

आखूनामुत्थानमाखूत्थः। 'सुपि स्थः' (३. २. ४) इति कः। श्वयथुः, 'ट्विवतोऽथुच्'[1] (३. ३. ८९)। समूहेऽर्थे[2] भावकर्मणोश्च ये तद्धितास्तेऽपि[3] क्लीबे-भिक्षाणां समूहो भैक्षं, गौर्भावो गोत्व, स्तेयम्। पुण्यसुदिनाभ्यां परः कृतसमासान्तोऽहः[4] क्लीबे पुण्यमहः पुण्याहम्। सुदिनशब्दः शोभावाची ॥१९॥

हिन्दी अर्थ :- न, ण, क, चित् इन प्रत्ययों से अन्य जो तव्य आदि अदंत धातु प्रत्यय हैं वे भाव में विहित किये (न.) हैं। जैसे- भवितव्य, भाव्य, सहित, भुक्त आदि हैं। समूह, भाव, कर्म इन अर्थों में विहित किये अदंत प्रत्यय (नपुंसकलिङ्ग) वाची हैं। जैसे- भैक्ष अर्थात् भिक्षाओं का समूह, गोत्व अर्थात् गौओं का समूह, चौर्य अर्थात् चोर का कर्म आदि। पुण्य और सुदिन शब्द से परे अहन्शब्द (नपुंसकलिङ्ग) है। जैसे-पुण्याह, सुदिनाह ये हैं॥२९॥

क्रियाव्ययानां भेदकान्येकत्वेऽप्युक्थतोटके।
चोचमुक्तं गृहस्थूणं तिरीटं मर्मयोजने॥३०॥

कृष्णमित्रटीका :- क्रियाव्योर्विशेषणानि च क्लीबे एकवचनान्तानि च भवन्तिमृदु पचति, स्वः शोभनम्। उक्थादयः शब्दाः क्लीबे, उक्थं सामविशेषः। तोटकं वृत्तभेदः। चोचं त्वक्। उक्तमेकाक्षरच्छन्दः। गृहस्य स्थूणा गृहस्थूणम्। तिरीटं शिरोवेष्टनम्। मर्म संधिस्थानम्। योजनं चतुःक्रोशी ॥३०॥

हिन्दी अर्थ :- क्रियाओं के और अव्ययों के विशेषण शब्द (नपुंसकलिङ्ग) और एकवचन हैं। जैसे- मन्दं पचति, सुखदं प्रातः आदि अन्य भी जानने। उक्थ अर्थात् सामभेद, तोट क अर्थात् वृत्तभेद, चोच अर्थात् उपभुक्त किये फल से बचा हुआ, पिच्छ अर्थात् मोर की पंख, गृहस्थूण अर्थात् घर में खूँटा, तिरीट अर्थात् वेष्टन, मर्म अर्थात् संधिस्थान, योजन अर्थात् चार कोश॥३०॥

राजसूयं वाजपेयं गद्यपद्ये कृतौ कवेः।
माणिक्यभाष्यसिन्दूरचीरचीवरपञ्जरम्॥३१॥

कृष्णमित्रटीका :- कविकर्मणि इदं द्वयम्। गद्यं दण्डकबन्धः। पद्यं श्लोकबन्धः। कवेः कृता-विति किम्? गद्यास्त्री पद्या शकरा। मणिक एव माणिक्यं मणिविशेषः। भाष्यते सूत्रार्थोऽनेनेति[1] भाष्यम्। चीरं वृक्षत्वक्। चीवरं मुनिवस्त्र (म्)। 'पिजि संपर्के' (अ. आ. से.)। पृषोदरादिः (६. ३. १०९)। पञ्जरं पक्षिबन्धगृहम्॥३१॥

हिन्दी अर्थ :- राजसूय अर्थात् यज्ञविशेष, वाजपेय अर्थात् यज्ञविशेष, गद्य अर्थात् पदसमूह, पद्य अर्थात् श्लोक, माणिक्य अर्थात् माणिकरत्न, भाष्य और अर्थात् पदार्थ का विवरण, सिन्दूर अर्थात् लालचूर्ण, चीर अर्थात् वस्त्र, चीवर अर्थात् मुनिवास, पिंजर अर्थात् पिंजरा॥३१॥

लोकायतं हरितालं विदलं स्थालबाह्लवम्।
इति नपुंसक (लिङ्ग) शेषः।

कृष्णमित्रटीका :- लोके आयतते, लोकायतं नास्तिकग्रन्थः। विदलति। विदलं दाडिमकणः। स्थलत्यत्र स्थालं भोजनपात्रम्। बह्लवदेशे भवं बाह्लवम्॥
इति नपुंसक (लिङ्ग) शेषः॥

हिन्दी अर्थ :- लोकायत अर्थात् चार्वाक शास्त्र, हरिताल अर्थात् हरताल, विदल अर्थात् बांस के छिलकों का बनाया पात्रविशेष, स्थाल अर्थात् पात्रभेद, बाल्हिक अर्थात् केशर आदि॥ यहाँ (नपुंसकलिङ्ग) वाची शब्दों का संग्रह समाप्त हुआ॥

पुनंपुंसकयोः शेषोऽर्धर्चपिण्याककण्टकाः॥३२॥

कृष्णमित्रटीका :- ऋचः अर्धमर्धर्चः। 'पण व्यवहारे' (भ्वा. आ. से.)। 'पिनाकादयश्च' (उ. ४. १५) इति साधु। पिण्याकस्तिलखलिः। कण्टति। 'कटि गतौ' (भ्वा. प. से.)॥३२॥

हिन्दी अर्थ :- उक्त से शेष रहे शब्द (पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) हैं। अर्धर्च् अर्थात् ऋचा का आधा भाग, पिण्याक अर्थात् तिलों का कल्क, कंटक अर्थात् कांटा॥३२॥

मोदकस्तण्डष्टङ्कः शाटकः खर्वटोऽर्वुदः।
पातकोद्योगचरकतमालामलका नडः॥३३॥

कृष्णमित्रटीका :- 'तडि आघाते' (भ्वा. आ. से.)। तण्डकः परिष्कारः, खण्ड (ञ्ज) नं च। 'टकि बन्धे' (चु. प. से.)। टङ्कः पाषाणभेदनः। शाटकः पटः। 'खर्वटं नाम नदीगिरिसमाश्रयम्'। अर्बुदोऽक्षिरोगः[2]। उद्योग उत्साहः। चरकं वैद्यकग्रन्थः। तमालं वृक्षभेदः। आमलकं धात्रीफलम्। नडस्तृणभेदः॥३३॥

1. M. ट्विवताथुच् 2. M. समूहेर्थे 3. M. तद्धितास्तेपि 4. M. समासान्तोहः.

1. M. सूत्रार्थोनेनेति 2. M. अर्बुदीक्षिरोगः.

हिन्दी अर्थ :- मोदक अर्थात् लड्डू, तंडक अर्थात् उपताप, टंक अर्थात् टांकी, शाटक अर्थात् शाटीविशेष, कर्पट अर्थात् वस्त्रभेद, अर्बुद अर्थात् संख्याभेद, पातक अर्थात् ब्रह्महत्या आदि, उद्योग अर्थात् उत्साह, चरक अर्थात् वैद्यकशास्त्र, तमाल अर्थात् वृक्षभेद, आमलक अर्थात् आंवला, नड अर्थात् नरशल॥३३॥

कुष्ठं मुण्डं सीधु[1] बुस्तं क्ष्वेडितं क्षेमः कुट्टिमम्।
संगमं शतमानार्मशम्बलाव्ययताण्डवम्॥३४॥

कृष्णमित्रटीका :- मुण्डं शिरः। सीधु मद्यम्। 'बुस उत्सर्गे' (दि. प. से.)। बुस्तं मांसशष्कुली। क्ष्वेडितं मुखशब्दभेदः। 'कुट्ट च्छेदने' (चु. प. से.)। 'भावप्रत्ययान्तादिमप्' (वा. ४. ४. २०)। कुट्टिमं बद्धभूमिः। संगमो नद्यादेः। शतं मानमस्य शतमानं चत्वारः कर्षाः। 'ऋ गतौ' (भ्वादि. प. अ.)। मन् (उ. १. १४०)। अर्म अक्षिरोगः। 'शम्ब गतौ' (चु. प. से.)। शम्बं लाति शम्बलः पथिव्ययः। अव्ययमलिङ्गम्। ताण्डवं नृत्तभेदः॥३४॥

हिन्दी अर्थ :- कुष्ट अर्थात् कोढ़ रोग, मुंड अर्थात् शिर, शीघु अर्थात् मदिरा, बुस्त अर्थात् भुना हुआ मांस, क्ष्वेडित अर्थात् वीर पुरुष का किया सिंहनाद, क्षेम अर्थात् कुशल, कुट्टिम अर्थात् भीति का भेद, संगम अर्थात् संयोग, शतमान अर्थात् तोलविशेष, अर्म अर्थात् नेत्ररोग का भेद, शंबल अर्थात् वर्णभेद, अव्यय अर्थात् स्वर आदि निपात, तांडव अर्थात् नृत्यभेद॥३४॥

कवियं कन्दकर्पासं पारावरं युगंधरम्।
पूयं[2] प्रग्रीवपात्रीवे यूषं चमस चिक्कसे[3]॥३५॥

कृष्णमित्रटीका :- कवते। 'कुङ् शब्दे' (भ्वा. प. अ.)। बाहुलकादियः। कवियमश्वमुखबन्धनम्। कन्दो मूलभेदः। पारं नद्याः परं पार्श्वम्। अवारमवाक्पार्श्वम्। युगंध (रं) रथकाष्ठम्। पूयं मज्जा। केचित् 'यूपम्' इति स्तम्भार्थकं पठन्ति। प्रगता ग्रीवाऽस्मिन्[4]। प्रग्रीवं वातायनम्। पात्रीं वाति। पात्रीवं यज्ञोपकरणम्। यूषो मुद्गादिरसः। चमसं येऽम्बुप्रणयनम्[5]। 'चिक्' इति कसति चिक्कसं यवपिष्टम्॥३५॥

1. B. and K. शीधुः 2. B. यूपं 3. B. and K. चमसचिक्कसौ 4. M. ग्रीवास्मिन् 5. M. यज्ञेम्बुप्रणयनम्.

हिन्दी अर्थ :- कविय अर्थात् लगाम, कन्द अर्थात् कमलिनी की मूल आदि, कार्पास अर्थात् कपास, पारावार अर्थात् जलसमूह, युगंधर अर्थात् लहोदर, यूप अर्थात् यज्ञस्तंभ, प्रग्रीव अर्थात् वृक्ष का शिर, पात्रीव अर्थात् यज्ञपात्रभेद, यूष अर्थात् मांड, चमस अर्थात् चमसा, चिक्कस अर्थात् पात्रभेद॥३५॥

अर्धर्चादौ घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं ध्रुवम्।
तन्नोक्तमिहलोकेऽपि तच्चेदस्त्यस्तु शेषवत्॥३६॥
इति पुंनपुंसकसंग्रहः॥

कृष्णमित्रटीका :- अर्धर्चादौ घृतामृतादीनां यत्पुंस्त्वमुक्तं तच्छान्दसम् अत इह लोके नोक्तम्। अथ यदि लोकेऽपि[1] तच्चेत्क्वचिद्दृश्येत्, तर्हि लिङ्गशेषत्वादस्तु॥३६॥

इति पुंनपुंसकशेषः॥

हिन्दी अर्थ :- इस अर्धर्चादि वर्ग में जो घृत आदि शब्द (पुल्लिङ्ग) वाची पाणिनि आदि ने कहे हैं वह रीति वैदिक है अर्थात् वेद में प्रसिद्ध है। इस कारण यहाँ नहीं कहे। वे लोक में भी हैं तो शिष्टप्रयोग से जानना उचित है॥३६॥

यहाँ (पुल्लिङ्गनपुंसकलिङ्ग) वाची शब्दों का संग्रह समाप्त हुआ॥

स्त्रीपुंसयोरपत्यान्ता द्विचतुः षट्पदोरगाः।
जातिभेदाः पुमाख्याश्च स्त्रीयोगैः सह मल्लकः॥३७॥

कृष्णमित्रटीका :- अपत्यप्रत्ययान्ता द्वयोः- वासिष्ठः, वासिष्ठी। द्विपदादयो जातयश्च स्त्रीपुंसयोः- पुरुषः, पुरुषी, मृगो मृगी, भ्रमरः, भ्रमरी, (उरगः), उरगी। ब्राह्मणी शूद्री। स्त्रीयोगैः सह पुमाख्याः स्त्रीनरलिङ्गा इत्यर्थः। 'मल्लधारणे'। मल्लकः पुष्पभेदो मीनमृत्पात्रभेदश्च॥३७॥

हिन्दी अर्थ :- अपत्यप्रत्ययान्त शब्द (स्त्रीलिङ्ग पुल्लिङ्ग) हैं जैसे-औपगव, औपगवी। दो चार छः पैरोवाले प्राणी और सर्पवाची ऐसे जाति भेद (स्त्रीलिङ्ग पुल्लिङ्ग) हैं। जैसे- मानुष मानुषी, ब्राह्मण ब्राह्मणी, मृग मृगी, भृंग भृंगी, उरग उरगी, नाग नागी। स्त्रियों के साथ पुरुषवाचक शब्द (स्त्रीलिङ्ग पुल्लिङ्ग) है। जैसे- इन्द्र इन्द्राणी, मातुल मातुली। मल्लक आदि शब्द (स्त्रीलिङ्ग पुल्लिङ्ग) हैं। जैसे- मल्लक मल्लिका॥३७॥

1. M. लोकेपि.

मुनिर्वराटकः स्वातिर्वर्णको झाटलिर्मनुः।
मूषा सृपाटी कर्कन्धूर्यष्टिः शाटी कटी कुटी॥३८॥
इति स्त्रीपुंसंग्रहः॥

कृष्णमित्रटीका :- मन्यते मुनिः। वराटकः कपर्दः। सुष्ठु अतति। स्वातिर्नक्षत्रभेदः। वर्णयति। वर्णकश्चारणश्चन्दानदिलेपश्च। 'झट संघाते' (भ्वा. प. से.)। झाटं लाति। झाटा (ट) लिर्वृक्षभेदः। मन्यते मनुः। 'मूषस्तेये' (भ्वा. प. से.)। मूषति। 'मूषा स्वर्णादिविलेपनभाण्डम्। 'सृप्लृ गतौ' (भ्वा. प. से.)। बाहुलकात् कीटः (पाठः)। सृपाटी परिमाणभेदः। कर्कन्धूर्वदरी। 'यक्ष पूजायाम्' (चु. आ. से.)। क्तिच् (३. ३. १७४)। यष्टिर्दण्डः। 'शट श्लाघायाम्' (?)। शाटी पटः। 'कटे वर्षादौ' (भ्वा. प. से.)। 'कुट कौटिल्ये' (तु. प. से.)॥३८॥

इति स्त्रीपुंससंग्रहः॥

हिन्दी अर्थ :- ऊर्मि अर्थात् तरंग, वराटक अर्थात् कौड़ी, स्वाति अर्थात् नक्षत्र, वर्णक अर्थात् चन्दन, झाटलि अर्थात् परिमाणभेद, कर्कन्धू अर्थात् बडवेरी, यष्टि अर्थात् लाठी, शाटी अर्थात् धोती, कटी अर्थात् कमर, कुटी अर्थात् घर का कोठा ये सब शब्द (स्त्रीलिङ्ग पुल्लिङ्ग) हैं॥३८॥

यहाँ (स्त्रीलिङ्ग पुल्लिङ्ग) वाची शब्दों का संग्रहवर्ग समाप्त हुआ॥

स्त्रीनंपुसकयोर्भावक्रिययोः ष्यञ् क्वचिच्च वुञ्।
औचित्यमौचिती मैत्री मैत्र्यं वुञ् प्रागुदाहृतः॥३९॥

कृष्णमित्रटीका :- क्वचिद् ष्यञ् वुञ् च स्त्रीनपुंसकयोः। उचितस्य भावः कर्म वा औचित्यमौचिती। ब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि ष्यञ् (५. १. १२४)। षित्त्वात् (४. १. ४१) ङीष्। चौरस्य भावः कर्म वा चौरिका, चौरिकम्। क्वचिद्ग्रहणान्नेह ब्राह्मण्यं शौक्ल्यम्। वुञ्-मानोज्ञकं, रामणीयकम्॥३९॥

हिन्दी अर्थ :- भाव में और कर्म में वर्त्तमान ष्यञ् प्रत्यय वुञ् प्रत्यय कहीं-कहीं (स्त्रीलिङ्ग पुल्लिङ्ग) हैं। जैसे- औचित्य औचिती, मैत्र्य मैत्री, मैथुनिक मैथुनिका॥३९॥

षष्ठ्यन्तप्राक्पदाः सेनाच्छायाशालासुरानिशाः।
स्याद्वा नृसेनं श्वनिशं गोशालमितरे च दिक्॥४०॥

कृष्णमित्रटीका :- षष्ठ्यन्तपूर्वपराः सेनाद्यन्ताः स्त्रीपुंसयोः। नृणां सेना नृसेनं, नृसेना। शुनां निशा श्वनिशा। गवां शाला गोशाला। एवमितरे छायासुरे च उदाहार्ये- वृक्षच्छायं वृक्षच्छाया, दिगिति उदाहरणमेतदित्यर्थः॥४०॥

हिन्दी अर्थ :- तत्पुरुष समास में षष्ठी विभक्त्यंत पद है पूर्व जिनके ऐसे सेना, छाया, शाला, सुरा, निशा ये शब्द (स्त्रीलिङ्ग) और (न.) हैं। जैसे- नृसेन नृसेना, कुड्यच्छाय कुड्यच्छाया, गोशाल गोशाला, यवसुर यवसुरा, श्वनिश श्वनिशा आदि अन्य भी जाने॥४०॥

आबन्नन्तोत्तरपदो द्विगुश्चापुंसि नश्च लुप्।
(पञ्चखट्वं पञ्चखट्वी पञ्चतक्षं पञ्चतक्ष्यपि)॥४१॥[1]
इति स्त्रीनपुंसकवर्गाः॥

कृष्णमित्रटीका :- आबन्तोत्तरपदो द्विगुरन्नन्तोत्तरपदो द्विगुश्च अपुंसि स्त्रीनपुंसकयोः, नस्य च लुब्भवति[2] प्रसङ्गाल्लक्षणानुवादोऽयम्[3]- पञ्चखट्वी, पञ्चखट्वं, पञ्चतक्षी, पञ्चतक्षम्॥४१॥

(इति स्त्रीनपुंसकवर्गाः)

हिन्दी अर्थ :- आबंत शब्द और अन्नन्त शब्द हैं उत्तर पद में जिसके ऐसा द्विगु समास (स्त्रीलिङ्ग न.) है। जैसे- त्रिखट्व त्रिखट्वी, त्रितक्ष त्रितक्षी। तक्षन्शब्द के अन्त का नकार लुप्त हो रहा है॥४१॥

यहाँ (स्त्रीलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग) वाची शब्दों का संग्रह समाप्त हुआ॥

त्रिषु पात्री पुटी वाटी पेटी कुवलदाडिमौ।
एते त्रिलिङ्गाः॥

कृष्णमित्रटीका :- एते त्रिलिङ्गाः। पात्री पात्रं पात्रो भाजनम्। पुट आच्छादनम्। वाटो वृत्तिः। पेटा संहतिः। कुवलं कोलिफलम्॥

(इति त्रिलिङ्गसंग्रहाः॥)

हिन्दी अर्थ :- पात्र, पुट, बाट, पेट, कुवल, दाडिम ये शब्द (त्रि.) हैं। जैसे- पात्रः पात्री पात्रम्, पुटः पुटी पुटम्, वाटः वाटी वाटम्, पेटः पेटी पेटम्, कुवलः कुवली कुवलम्, दाडिमः दाडिमी दाडिमम्॥

---

1. The latter half of this verse is not found in the manuscript, and the bracketed reading is based on our anthor's commentary on the verse. But the usual reading is as follows : त्रिखट्वं च त्रिखट्वी च त्रितक्षं च त्रितक्ष्यमपि 2. M. लुप् भवति 3. M. नुवादीयम्.

यहाँ (त्रिलिङ्ग) वाची शब्दों का संग्रह समाप्त हुआ।।

परलिङ्गं स्वप्रधाने द्वन्द्वे तत्पुरुषेऽपि तत्।।४२।।

कृष्णमित्रटीका :- स्वप्रधाने, इतरेतरयोगद्वन्द्वे तत्पुरुषे च उत्तरपदस्य लिङ्गं भवति-कुक्कुटमयूर्याविमे मयूरीकुक्कुटाविमे। अर्ध पिप्पल्या अर्धपिप्पली।।४२।।

हिन्दी अर्थ :- उभयपदप्रधान समास में और इतरेतर द्वन्द्वसमास में अग्रिम पद का लिंग होता है। जैसे- कुक्कुटमयूर्यौ, मयुरीकुक्कुटौ, धान्यार्थ, सर्पभीति आदि अन्य भी जाने।।४२।।

अर्थान्ताः प्राद्यलंप्राप्तापन्नपूर्वाः परोपगाः।
तद्धितार्थ द्विगुः संख्यासर्वनामतदन्तकाः।।४३।।

कृष्णमित्रटीका :- अर्थशब्दान्तास्त्रिषु। तथा प्राद्यलमादिपूर्वाश्च परोपगा वाच्यलिङ्गाः-ब्राह्मणार्थः सूपः, ब्राह्मणार्था यवागूः ब्राह्मणार्थं पयः। प्रगत आचार्यः[1] प्राचार्यः, प्राचार्या इत्यादि। अतिखट्वः, अतिखट्वम्। अलं जीविकायै- अलंजीविकः। प्राप्तो जीविकां प्राप्तजीविकः, आपन्नजीविक इत्यादयस्त्रिषु। तद्धितार्थे द्विगुः- पञ्चसु कपालेषु संस्कृतः पञ्चकपालः पुरोडाशः, पञ्चकपाला। संख्या- एका एक एकम्। सर्वनाम- सर्वः सर्वा सर्वम्। तदन्तः- प्रियत्रयः, प्रियतिस्रः, प्रियत्रीणि, प्रियसर्वा इत्यादि।।४३।।

हिन्दी अर्थ :- अर्थान्त अर्थात् अर्थ शब्द है अन्त में जिनके और आदि अलं, प्राप्त, आपन्न ये हैं पूर्व में जिनके वे शब्द विशेष्य के लिंग को प्राप्त होते हैं। जैसे- 'द्विजार्थः सूपः' अर्थात् द्विज के लिये दाल है, 'द्विजार्था यवागूः' अर्थात् द्विज के लिये यावागू है, 'द्विजार्थं पयः' अर्थात् द्विज के लिये दूध है। 'अतिमालो हारः' अर्थात् माला को उल्लंघन करने वाला यह हार है, 'अतिमाला इयम्' अर्थात् माला को उल्लंघन करने वाली यह माला है, 'अतिमालमिदम्' अर्थात् माला को उल्लंघन करने वाला यह कुल है। 'अलंकुमारिरयम्' अर्थात् कुमारी को उल्लंघन करने वाला यह पुरुष है, 'अलंकुमारी इयम्' अर्थात् कुमारी को उल्लंघन करने वाली यह स्त्री है, 'अलंकुमारि इदम्' इर्थात् कुमारी को उल्लंघन करने वाला यह कुल है। 'प्राप्तजीविको द्विजः' अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाला द्विज है, 'प्राप्तजीविका स्त्री' अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाली स्त्री है, 'प्राप्तजीविकं कुलम्' अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाला कुल है। 'आपन्नजीविको द्विजः' अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाला द्विज है, 'आपन्नजीविका स्त्री' अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाली स्त्री है, 'आपन्नजीविकं कुलम्' अर्थात् प्राप्त हुई जीविका वाला कुल है। तद्धित है अर्थ जिसका ऐसा द्विगु समास वाच्यलिंगी है। जैसे- 'पञ्चकपालः पुरोडाशः' अर्थात् पाँच कपालों में संस्कृत किया पुरोडाश है, 'पञ्चकपालं हविः' अर्थात् पाँच कपालों में संस्कृत किया घृत है। संख्यावाचिशब्द, सर्वनामसंज्ञक शब्द, संख्यांत शब्द ये सब विशेष्य लिंग के समान होते हैं। जैसे- 'एकः पुमान्' अर्थात् एक पुरुष है, 'एकं कुलम्' एक कुल है। 'द्वौ पुमांसौ' अर्थात् दो पुरुष हैं, 'द्वे स्त्रियौ' अर्थात् दो स्त्री हैं। 'सर्वो देशः' अर्थात् संपूर्ण देश है, 'सर्वा नदी' अर्थात् संपूर्ण नदी है, 'सर्व जलम्' अर्थात् संपूर्ण पानी है। 'परमसर्वः पुमान्' अर्थात् परमसर्व पुरुष है, 'परमसर्वा स्त्री' अर्थात् परमसर्वरूप स्त्री है, 'परमसर्वं कुलम्' अर्थात् परमसर्वरूप कुल है।।४३।।

बहुव्रीहिरदिग्नाम्नामुन्नेया तदुदाहृतिः[1]।
गुणद्रव्यक्रियायोगोपाधयः परगामिनः।।४४।।

कृष्णमित्रटीका :- बहुव्रीहिसमासस्त्रिषु। दिग्नाम्नां तु न- दक्षिणस्याः पूर्वस्याश्च अन्तरालं दिक् दक्षिणपूर्वा वा। गुणादिभिर्योग उपाधिः प्रवृत्तिनिमित्तं येषां ते परगामिनो वाच्यलिङ्गाः। गुणोपाधिः[2]- शुक्ला घटी, शुक्लं वस्त्रम्। द्रव्योपाधिः- दण्डी पुमान्, दण्डिनी स्त्री। क्रियोपाधिः- पाचकः, पाचिका।।४४।।

हिन्दी अर्थ :- दिश्शब्द से वर्जित नामवालों का बहुव्रीहि अन्य के लिंग के समान होता है। जैसे- 'वृद्धभार्य्यः' अर्थात् बूढ़ी है भार्या जिसकी वह पुरुष है। गुण के योग, द्रव्य के योग और क्रिया के योग से जो उपाधि विशेषण हैं धर्मिलिङ्ग भोज होते हैं। जैसे- 'गंधवती पृथिवी' अर्थात् गंधवाली पृथिवी है, 'गंधवानश्मा' अर्थात् गंधवाला पर्वत है, 'गंधवत् कुसुमं' अर्थात् गंधवाला फूल है। 'दंडिनी स्त्री' अर्थात् दंडवाली स्त्री है। 'पाचिका स्त्री' अर्थात् पाक करने वाली स्त्री है।।४४।।

1. M. आचार्य

1. B. मुन्नेयं तदुदाहृतम् 2. M. गुणापाधिः

कृतः कर्तर्यसंज्ञायां कृत्याः कर्तरि कर्मणि।
अणाद्यन्तास्तेन रक्ताद्यर्थे नानार्थभेदकाः ॥४५॥

कृष्णमित्रटीका :- कर्तर्यर्थे कृत्प्रत्ययाः त्रिषु- वक्ता, वक्त्री, वक्तृ। संज्ञायां तु- व्याघ्रः, ग्रहः। कर्तरि कर्मणि चार्थे कृत्याः त्रिषु- वास्तव्यं, वास्तव्यः, वास्तव्या, कर्तव्यः, कर्तव्या, कर्तव्यम्। 'तेन रक्तम्-' (४. २. १) इत्याद्यर्थे अणादयः त्रिषु- हरिद्रया रक्तः, हारिद्रः, हारिद्रा, हारिद्रम्। नानाविधार्थविशेषा येषां ते वाच्यलिङ्गाः- को ब्रह्मा, कं शिरः[1] ॥४५॥

हिन्दी अर्थ :- कर्त्ता में और असंज्ञा में कृत् प्रत्यय विशेष्य के लिंग को प्राप्त करते हैं। जैसे- 'कर्त्तापुमान्' अर्थात् करनेवाला पुरुष है, 'कर्त्री स्त्री' अर्थात् करने वाली स्त्री है, 'कर्तृ कुलम्' अर्थात् करने वाला कुल है। कर्म में और कर्त्ता में वर्त्तमान हुए कृत्यप्रत्यय पर के लिंग वाले होते हैं। जैसे- 'कर्त्तव्या भक्तिः' अर्थात् करनेयोग्य भक्ति है, 'कर्त्तव्यो धर्मस्त्वया' अर्थात् तुझको धर्म करना योग्य है। 'वास्तव्यो यम्' अर्थात् यह वसने के योग्य है, 'वास्तव्या सा' अर्थात् वह स्त्री वसने के योग्य है, 'वास्तव्यं तत्' अर्थात् वह कुल वसने के योग्य है। ''तेन रक्तम्'' आदि अर्थ में अण् आदि तद्धित प्रत्ययांत अनेकार्थविशेषणभूत विशेष्य के लिंग के समान होते हैं। जैसे- कौसेयः शाटी' अर्थात् कुसुंभा से रंगी हुई धोती है, 'कौसेयः पटः' अर्थात् कुसुंभा से रंगा हुआ वस्त्र है, 'कौसुंभं वासः' अर्थात् कुसुंभा से रंगा हुआ वासस् अर्थात् वस्त्र है॥४५॥

षट्संज्ञास्त्रिषु[2] समाः युष्मदस्मत्तिङव्ययम्।
परं विरोधे शेषं तु ज्ञयं शिष्टप्रयोगतः ॥४६॥
इति लिङ्गसंग्रहः ॥६॥

कृष्णमित्रटीका :- षान्ता नान्ताश्च संख्यावाचकस्त्रिषु समाः। युष्मदस्मदौ तिङन्तमव्ययं च त्रिषु समम्। लिङ्गविशेषविधौ पूर्वापरविरोधे परं लिङ्गं ज्ञेयम्। असु (र) पर्यायाः पुंसीत्युक्तं तथा असन्तं क्लीबमित्युक्तं रक्ष इत्यत्र सं (ज्ञ) योर्विरोधे क्लीबमेव भवति। इह यन्नोक्तं तल्लक्ष्यतो ज्ञेयं, या पोटा नपुंसकमपि स्त्री॥४६॥

(इति लिङ्गसंग्रहः ॥६॥)

---

1. M. शिर. 1. B. and K. षट्संज्ञकास्त्रिषु।

हिन्दी अर्थ :- षट्संज्ञक अर्थात् षान्त और नांत संख्यावाले शब्द, कतिशब्द, युष्मद्शब्द, अस्मद्शब्द, तिङ्प्रत्यय, अव्यय ये सब तीनों लिंगों मे समान हैं। जैसे- 'षडिम, अर्थात् ये छः पुरुष हैं, 'षडिमाः' अर्थात् ये छः स्त्री हैं, 'षडिमानि अर्थात् ये छः कुल हैं। ऐसे अन्य भी जाने। 'कति पुरुषाः' कितने पुरुष हैं, 'कति स्त्रियः' अर्थात् कितनी स्त्रियाँ हैं, 'कति कुलानि' अर्थात् कितने कुल हैं। 'त्वं पुमान्' अर्थात् तू पुरुष है, 'त्वं स्त्री' अर्थात् तू स्त्री है, 'त्वं कुलम्' अर्थात् तू कुल है। 'अहं स्त्री' अर्थात् मै स्त्री हूँ, 'अहं पुरुषः' अर्थात् में पुरुष हूँ, 'अहं कुलम्' अर्थात् मैं कुल हूँ, स्थाली भवति, अर्थात् स्थाली है, 'घटो भवति' अर्थात् घट है, 'पात्रं भवति' अर्थात् पात्र है। 'उच्चैः पुरुषः' अर्थात् ऊँचा पुरुष है, 'उच्चैः स्त्री' अर्थात् ऊँची स्त्री है, 'उच्चैः कुलम्' अर्थात् ऊँचा कुल है। विप्रतिषेध में परका लिंग होता है। जैसे- 'मानुषीयम्' अर्थात् यह मनुष्य की स्त्री है, 'मानुषोऽयम्' अर्थात् यह मनुष्य है। यहाँ नहीं कहा हुआ शिष्ट अर्थात् महाकवि भाष्यकार आदि के प्रयोगों से जानना उचित है॥४६॥

इति लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ॥५॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने।
सामान्यकाण्डस्तृतीय साङ्ग एव समर्थितः ॥४७॥

कृष्णमित्रटीका :- इति श्रीमदाचार्यकृष्ण- मित्रकृतायाममरकोशटीकायां तृतीयः काण्डः समाप्तः ॥३॥

हिन्दी अर्थ :- इस प्रकार अमरसिंह के नामलिंगानुशासन नाम का तीसरा काण्ड संपूर्ण हुआ॥१॥

तृतीयः काण्डः समाप्तः ॥३॥

---***---

APPENDIX- (परिशिष्ट)-I

Reviews and Opinions

LINGUISTICS

Amarakosa of Amarasimha- Ed. with the commentary of Acarya Krsnamitra by Satyadeva Mishra. Kuala Lumpur, The Editor, 1972. xv+554+185+4pp. Rs. 23.50.

Amarakosa occupies a unique place in Sanskrit Lexicography. Arranged in three sections, viz., Svaradi, Bhumyadi, and Samanya Kandas, it deals with both synonymous and homonymous words, Many commentaries have been written on this popular work.

The volume has been prepared from a single manuscript which contains the text of Amarakosa and the Commentary of Krsnamitra. The Commentary is a brilliant exposition on the lines of Ksirasvamin's Amarakosodghatana and Bhanuji Diksita's Vyakyasudha. English synonyms of words are given in footnotes and their number in rectangular brackets. Variations in Reading are jotted in the footnotes.

The book contains an exhaustive introduction in English, useful index of words, and bibliography.

It is a valuable addition to the reference shelf.

Glary of India, Volume iv, No. 2-3, p. 43, fune-Sept. 1980, Motilal Banarasidas, Delhi.

Great Sanskrit Dictionary

AMARA KOSA OF AMARASIMHA WITH THE COMMENTARY OF ACARYA KRSNAMITRA:

Edited by Satyadeva Mishra: Indira Prakashan, Patna: Rs. 23.50.

This is an excellent edttion of the celebrated Sansakrit dictionary, the "Amara Kosa", the earliest and the best Sanskrit lexicon available to us. It occupies a unique place among lexicons.

While other lexicons contain either synonymous or homonymous words, it contains both. It treasures over twenty thousand words in a compass of fifteen hundred verses. No other lexicon has been so authoritative and popular.

All the lexicons of later origin and glosses of Sanskrit Literature are replete with quotations from it. Many Sanskrit scholars even today know it by heart. Its popularity is evidenced also by the mass of commentaries written on it by scholars belonging to different religions.

The commentary by Acarya Krasnamitra, which is offered here, is a brilliant exposition of the text of "Amara Kosa". The editor has laboured hard to make the edition as useful as possible. Though based upon a single manuscript. the edittion is quite reliable and free from mistakes and lacunae.

This very well edited book is a boon to students of Sanskrit language and literature.

Indian Express, Madras,

6 April 1974

SANSKRIT

1-San

75-907260

Amarasimha

Amarakosa of Amarasimha/with the commentary of Acarya Krsnamitra, edited by Satyadeva Mishra- Ist ed.- Kuala Lumpur. S. Mishra, Patna : Sole distributor, Indira Prakashan, 1972

xv, 554, 185, up. 22cm

Titel on spine in Sanskrit : अमरकोशः; Running title in Sanskrit अमरकोशः, कृष्णमित्रटीकोपेतः Text and Krsnamitra's commentary in Sanskrit, Critical apparatus in English.

Includes bibliography and index.

Verse thesarus of Sanskrit synonyms and homonyms, critical edition, with English glosses.

Library of Congress, Accession List, Vol. 15, No. 2 February 1976 p 102 g.

UNITED STATES LIBRARY OF CONGRESS OFFICE

SHIELA THEATRE BUILDINGS, NEW DELHI- 110055, INDIA
TELEPHONE : 518151 TELEGRAM : LIBCON

Dear Dr. Misra.

This is to acknowledge with thanks your letter and a complimentary copy of **Amarakosa.** This is a welcome addition to the Library of Congress holdings.

Sincerely Yours,
Jerry R. James
Director

Dr. A. N. Pandey
M. A., D. Phil.
Head

Dear Dr. Misra.

I received the Amarkosa edited by you. Your edition with the hitherto unknown commentary of Krishnamitra is fairly executed. The commentary is authentic and at some places surpasses even some best commentaries on the Lexicon. You have minutely examined the text with a discerning eye and I may add that you have brought it to perfection. The Amarkosa occupies an unparalleled position among the lexicons of Sanskrit literature and the commentary of Krishnamitra adds lusture to its existing expositions.

I congratulate you on your achievement and hope that you will go deeper into realm of textual criticism.

With thanks,

Yours Sincerely,
A. N. Pandey

सुधीर कुमार गुप्त (भाशोसास, (2), 2.3-4; 1972-72)

Amarakosa of Amarasimha

with the commentary of Acarya krsnamitra Edited and Published by Dr. Satya Deva Mishra, M. A., Ph. D., Leeturer in Sanskrit, Department of Indian Studies, University of Malaya, Kuala, Lumpur, Malaysia; Sole Distributors: Indira Prakashan, 3/38, Gardanibagh, Patna (India), First Edition, 1972; Pages xv+554+186+4; Priee Rs. 23-50; Language : Sanskrit and English.

This edition of the Amarakosa has been published by Dr. Satya Deva Mishra with the commentry of Krsnamitra edited here for the first time from a single manuscript which exists in his family's collection. The commentary is indebted to the earlier commentaries by Ksirasvamin and Bhanuji Diksita. The editor has given such readings of the manuscript in the footnotes which he has emended in some way. In these footnotes he has also given the English meanings of the main words of the text of the Amarakosa. Besides a brief introduction containing an enumeration of the various commentaries on the Amarakosa and an account of Krsnamitra and his date the work contains two indices containing alphabetical lists of words used (i) in the text and (ii) in the interpolated texts. References of most of the quotations occuring in the commentary have been added in brackets. The text of the Amarakosa itself has been printed in bolder type than that of the commentary. Sometimes the editor has appended such quotations in the footnotes as support the explanations of the commentary (as e. g., Page 21, ftn. 1; Page 96, ftn. 8). The commentary itself is quite lucid, informative and expository of the meanings and grammatical formations of words explained.

2. The edidion is, thus, very useful and deserves a place in the shelves of all good libraries and students of Sanskrit language and literature. The editor deserves all apperciation of all for this painstaking and excellent work.

Bharati- Sara- Sangraha,
Vol. 2, No.-3-4, (October 1972-
Jan. 1973), Jaipur, p. 40

अमरकोश-मूल-क्षेपकस्थशब्दानामकारादिक्रमेण शब्दानुक्रमणिका

शब्दाः	काण्डाङ्काः	वर्गाङ्काः	श्लोकाङ्काः
	अ		
अ	३	५	११
अंश	२	९	८९
अंशु	१	३	३३
अंशुक	२	६	११५
अंशुमती	२	४	११५
अंशुमत्फला	२	४	११३
४१अंशुमालिन्	१	३	३०
अंस	२	६	७८
अंसल	२	६	४४
अंहति	२	७	३०
अंहस्	१	४	२३
अंह्रि	२	६	७१
अकरणि	३	२	३९
३ अकल्मष	३	१	११०
अकूपार	१	१०	१
अकृष्णकर्मन्	३	१	४६
अक्ष	२	४	५८
अक्ष	२	९	४३
अक्ष	२	९	८६
अक्ष	२	१०	४५
अक्ष	३	३	२२२
अक्षत	२	९	४७
अक्षदर्शक	२	८	५
अक्षदेविन्	२	१०	४३
अक्षधूर्त्त	२	१०	४३
अक्षर	३	३	१८२
अक्षरचरण	२	८	१५
अक्षरचुञ्चु	२	८	१५
अक्षरविन्यास	२	८	१५
अक्षवती	२	१०	४४
अक्षाग्रकीलक	२	८	५६

शब्दाः	काण्डाङ्काः	वर्गाङ्काः	श्लोकाङ्काः
अक्षान्ति	१	७	२४
अक्षि	२	६	९३
अक्षि	३	६	२२
अक्षिकूटक	२	८	३८
अक्षिगत	३	१	४५
अक्षीव	२	४	३१
अक्षीव	२	९	४१
अक्षोट	२	४	२९
अक्षौहिणी	२	८	८१
अखण्ड	३	१	६५
अखात	१	१०	२७
अखिल	३	१	६५
अग	३	३	१९
अगद	२	६	५०
अगदङ्कार	२	६	५७
अगम	२	४	५
अगस्त्य	१	३	२०
अगाध	१	१०	१५
अगार	२	२	५
अगुरु	२	६	१२६
अगुरु	२	६	१२७
अगुरुशिशपा	२	४	६२
अग्नायी	२	७	२५
अग्नि	१	१	५३
अग्निकण	१	१	५७
अग्निचित्	२	७	१२
अग्निज्वाला	२	४	१२४
अग्निभू	१	१	३९
अग्निमन्थ	२	४	६६
अग्निमुखी	२	४	४२
अग्निशिख	२	६	१२४
अग्निशिखा	२	४	११८

शब्दाः	काण्डाङ्काः	वर्गाङ्काः	श्लोकाङ्काः
अग्निशिखा	२	४	१३६
अग्न्युत्पात	१	४	१०
अग्रम्	२	४	१२
अग्र	३	१	५८
अग्र	३	३	१८४
अग्रज	२	६	४३
अग्रजन्मन्	२	७	४
अग्रतःसर	२	८	७२
अग्रतस्	३	४	८
अग्रतः	३	५	७
अग्रमांस	२	६	६४
अग्रिय	२	६	४३
अग्रिय	३	१	५८
अग्रीय	३	१	५८
अग्रेदिधीषू	२	६	२३
अग्रेसर	२	८	७२
अग्र्य	३	१	५८
अघ	१	४	२३
अघ	३	३	२७
अघ	३	१	२७
अघमर्षण	२	७	४७
अघ्नया	२	९	६७
अङ्क	१	३	१७
अङ्क	३	३	४
अङ्कुर	२	४	४
अङ्कुश	२	८	४१
अङ्कोट	२	४	२९
अङ्क्य	१	७	५
अङ्ग	१	६	४
अङ्ग	१	७	१६
अङ्ग	२	६	७०
अङ्ग	३	५	७

शब्दाः	काण्डाङ्काः	वर्गाङ्काः	श्लोकाङ्काः
अङ्ग	३	५	१९
अङ्गद	२	६	१०७
अङ्गन	२	२	१३
अङ्गना	१	३	५
अङ्गना	२	६	३
अङ्गविक्षेप	१	७	१६
अङ्गसंस्कार	२	६	१२१
अङ्गहार	१	७	१६
अङ्गार	२	९	३०
अङ्गारक	१	३	२६
अङ्गारधानिका	२	९	२९
अङ्गारवल्लरी	२	४	४८
अङ्गारवली	२	४	९०
अङ्गारशटकी	२	९	२९
अङ्गीकार	१	५	५
अङ्गीकृत	३	१	१०८
अङ्गुलिमान	२	९	८५
अङ्गुलिमुद्रा	२	६	१०८
अङ्गुली	२	६	८२
अङ्गुलीयक	२	६	१०७
अङ्गुष्ठ	२	६	८२
अङ्घ्रि	२	६	७१
अङ्घ्रिनामक	२	४	१२
अङ्घ्रिपर्णिका	२	४	९२
अचण्डी	२	९	७०
अचल	२	३	१
अचला	२	१	२
अच्युत	१	१	१९
अच्युताग्रज	१	१	२३
अच्छ	१	१०	१४
३४ अच्छ	३	३	२९
अच्छभल्ल	२	५	४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.
आचार्यानी	२	६	१५
आचित	२	९	८७
आच्छादन	१	३	१३
आच्छादन	२	६	११५
आच्छादन	३	३	१२५
आच्छुरितक	१	७	३४
आच्छोदन	२	१०	२३
आजक	२	९	७७
आजानेय	२	८	४४
आजि	२	८	१०६
आजि	३	३	३२
आजीव	२	९	१
आजू	१	९	३
आज्ञा	२	८	२६
आज्य	२	९	५२
आडम्बर	२	८	१०८
आडम्बर	३	३	१६९
आडि	२	५	२५
आढक	२	९	८८
आढकिक	२	९	१०
आढकी	२	४	१३०
आढकी	३	६	७
आढ्य	३	१	१०
आणक	३	३	३
आतङ्क	३	३	१०
आतञ्चन	३	३	११६
आततायिन्	३	१	४४
आतप	१	३	३५
आतप	३	६	२०
आतपत्र	२	८	३२
आतर	१	१०	११
आतायिन्	२	५	२१
आति	२	५	२५
आतिथेय	२	७	३३
आतिथ्य	२	७	३३
आतुर	२	६	५८
आतोद्य	१	७	५
आत्तगर्व	३	१	४०
आत्मगुप्ता	२	४	८६
आत्मघोष	२	५	२०
आत्मज	२	६	२७
आत्मन्	१	४	२९
आत्मन्	३	३	११०
आत्मभू	१	१	१६
आत्मभू	१	१	२६
आत्मम्भरि	३	१	२१
आत्रेयी	२	६	२०
आथर्वण	३	३	४३
आदर्श	२	६	१४०
आदि	३	१	८०
आदिकारण	१	४	२८
आदितेय	१	१	८
आदित्य	१	१	८
आदित्य	१	१	१०
आदित्य	१	३	२८
आदीनव	३	२	२९
आदृत	३	३	८६
आद्य	३	१	८०
आद्यमाषक	२	९	८५
आद्यून	३	१	२१
आधार	१	१०	२९
आधि	१	७	२८
आधि	३	३	९८
आधूत	३	१	८७
आधोरण	२	८	५९
आध्यान	१	७	२९
आनक	१	७	६
आनक	३	३	३
आनकदुन्दुभि	१	१	२२
आनत	३	१	७०
आनद्ध	१	७	४
आनन	२	६	८९
आनन्द	१	४	२५
आनन्दथु	१	४	२५
आनन्दन	३	२	७
आनर्त	३	३	६४
आनाय	१	१०	१६
आनाय्य	२	७	२१
आनाह	२	६	५५
आनाह	२	६	११४
आनुपूर्वी	२	७	३६
आन्धसिक	२	९	२८
आन्वीक्षिकी	१	६	५
आपक्व	२	९	४७
आपगा	१	१०	३०
आपण	२	२	२
आपणिक	२	९	७८
आपत्प्राप्त	३	१	४२
आपत्	२	८	८२
आपन्न	३	१	४२
आपन्नसत्त्वा	२	६	२२
आपमित्यक	२	९	४
आपान	२	१०	४२
आपीड	२	६	१३६
आपीन	२	९	७३
आपूपिक	२	९	२८
आपूपिक	३	२	४०
आप्त	२	८	१३
आप्य	१	१०	५
आप्रच्छन्न	३	२	७
आप्रपद	२	६	११९
आप्रपदीन	२	६	११९
आप्लव	२	६	१२१
आप्लाव	२	६	१२१
आप्लुतव्रतिन्	२	७	४३
आबद्धमुख	३	१	३६
आबन्ध	२	९	१३
आभरण	२	६	१०१
९२ आभरण	३	५	२३
आभाषण	१	६	१५
आभास्वर	१	१	१०
आभीर	२	९	५७
आभीरपल्ली	२	२	२०
आभीरी	२	६	१३
आभील	१	९	४
आभोग	२	६	१३७
आमगन्धिन्	१	५	१२
आमनस्य	१	९	३
आमय	२	६	५१
आमयाविन्	२	६	५८
आमलक	३	६	३३
आमलकी	२	४	५७
आमिक्षा	२	७	२३
आमिष	२	६	३३
आमिष	३	३	२२४
आमिषाशिन्	३	१	१९
आम्	३	५	१६
आमुक्त	२	८	६५
आमोद	१	४	२४
आमोद	१	५	१०
आमोद	३	३	९२
आमोदिन्	१	५	११
आम्नाय	१	६	३
आम्नाय	३	२	७
७१आम्नाय	३	३	१६१
आम्र	२	४	३३
आम्रातक	२	४	२७
आम्रेडित	१	६	१२
७ आयःशूलिक	३	१	११०
आयत	३	१	६९
आयतन	२	२	७
आयति	२	८	२९
आयति	३	३	७२
आयत्त	३	१	१६
आयाम	२	६	११४
आयुध	२	८	८२
आयुधिक	२	८	६७
आयुधीय	२	८	६७
आयुष्मत्	३	१	६
आयुस्	२	८	१२०
आयोधन	२	८	१०३
आरकूट	२	१	९७

शब्दाः	का.	व.	श्लो.
इतर	२	१०	१६
इतर	३	१	८२
इतर	३	३	१९३
इतहेद्युस्	३	८	२१
इति	३	४	७
इतिह	२	७	१२
इतिहास	१	६	४
इत्वरी	२	६	१०
इदानीम्	३	५	२३
इध्म	२	४	१३
४१ इन	१	३	३०
इन	३	३	११२
१ इन्दिरा	१	१	२७
इन्दीवर	१	१०	३७
इन्दीवरी	२	४	१००
इन्दु	१	३	१४
इन्द्र	१	१	४१
इन्द्र	१	३	२
इन्द्रदु	२	४	४५
इन्द्रयव	२	४	६७
१४ इन्द्रलुप्तक	२	६	५५
इन्द्रवारुणी	२	४	१५६
इन्द्रसुरस	२	४	६८
इन्द्राणिका	२	४	६८
इन्द्राणी	१	१	४५
१६इन्द्राणी	१	१	४५
इन्द्रायुध	१	३	११
इन्द्रारि	१	१	१२
इन्द्रावरज	१	१	२०
इन्द्रिय	१	५	८
इन्द्रिय	२	६	६२
इन्द्रियार्थ	१	५	८
इन्धन	२	४	१३
२० इन्वका	१	३	२३
इभ	२	८	३४
इभ्य	३	१	१०
इरंमद	१	३	१०
इरा	२	१०	३९
इरा	३	३	१७७
१ इला	२	१	३
इला	३	३	४२
इल्वल	१	१०	२४
इव	३	५	९
इष	१	४	१७
इषीका	२	८	३८
इषु	२	८	८७
इषुधि	२	८	८८
इष्ट	२	७	२८
इष्ट	२	९	५७
इष्टकापथ	२	४	१६५
इष्टगन्ध	१	५	११
इष्टार्थोद्युक्त	३	१	९
इष्टि	३	३	३९
इष्वास	२	८	८३
ई			
ईक्षण	२	६	९३
ईक्षण	३	२	३१
ईक्षणिका	२	६	२०
ईडित	३	१	११०
ईति	३	३	६९
ईरिण	३	३	५७
ईरित	३	१	८७
ईर्म	२	६	५४
ईर्ष्या	१	७	२४
६ ईर्ष्यालु	३	१	११०
ईलित	३	१	१०९
ईली	२	८	९१
ईश	१	१	३०
ईश	१	३	२
ईशा	२	९	१४
ईशान	१	१	३०
ईशितृ	३	१	१०
१८ ईशित्व	१	१	३५
ईश्वर	१	१	३०
ईश्वर	३	१	१०
ईश्वरी	१	१	३६
ईषत्	३	५	८
ईषत्पाण्डु	१	५	१३
ईषा	२	९	१४
ईषिका	२	१०	३२
ईहा	१	७	२७
ईहामृग	२	५	७
उ			
उ	३	५	१८
उक्त	३	१	१०७
उक्ति	१	६	१
उक्थ	३	१	३०
उक्षन्	२	९	५९
उखा	२	९	३१
उख्य	२	९	४५
उग्र	१	१	३२
उग्र	१	७	२०
उग्र	२	१०	२
उग्रगन्धा	२	४	१०२
उग्रगन्धा	२	४	१४५
उच्च	३	१	७०
उच्चटा	२	४	१६०
उच्चण्ड	३	१	८३
उच्चार	२	६	६७
उच्चावच	३	१	८३
उच्चैःश्रवस्	१	१	४५
उच्चैर्घुष्ट	१	६	१२
उच्चैस्	३	५	१७
उच्छ्रय	२	४	१०
उच्छ्राय	२	४	१०
उच्छ्रित	३	१	७०
उच्छ्रित	३	३	८५
उज्जासन	२	८	११५
उज्ज्वल	१	७	१७
उञ्छ	२	९	२
उटज	२	२	६
उडु	१	३	२१
९४ उडु	३	५	२३
उडुप	१	१०	११
उड्डीन	३	५	३७
उत	३	१	१०१
उत	३	४	५
उत	३	५	५
उताहो	३	५	५
उत्क	३	१	८
उत्कट	२	४	१३४
उत्कट	३	१	२३
उत्कण्ठा	१	७	२९
उत्कर	२	८	४२
उत्कर्ष	३	२	११
उत्कलिका	१	७	२९
३०उत्कलिका	३	३	१७
उत्कार	३	२	३६
उत्क्रोश	२	५	२३
उत्त	३	१	१०५
उत्तंस	३	३	२२८
उत्तप्त	२	६	६३
उत्तम	३	१	५७
उत्तमर्ण	२	९	५
उत्तमा	२	६	४
उत्तमाङ्ग	२	६	९५
उत्तर	१	३	२
उत्तर	१	६	१०
उत्तर	३	३	१९१
उत्तरासङ्ग	२	६	११७
उत्तरीय	२	६	११८
उत्तान	१	१०	१५
उत्तानशया	२	६	४१
उत्थान	३	३	११८
उत्थित	३	३	८५
उत्पतितृ	३	१	२९
उत्पत्ति	१	४	३०
उत्पतिष्णु	३	१	२९
उत्पल	१	१०	३७
उत्पल	२	४	१२६
उत्पलशारिवा	२	४	११२
१२ उत्पश्य	३	१	११०

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
कुडङ्गक	३	६	१७	कुबेरक	२	४	१२७	७८ कुल	३	२	२०५	कुशेशय	१	१०	४०
कुड्मल	२	४	१६	कुबेराक्षी	२	४	५५	कुलक	२	४	३९	कुष्ठ	२	४	१२६
कुड्य	२	२	४	कुब्ज	२	६	४८	कुलक	२	४	१५५	कुष्ठ	२	६	५४
कुणप	२	८	११८	कुमार	१	१	४०	कुलक	२	१०	५	कुष्ठ	३	६	३४
कुणप	३	६	२०	कुमार	१	७	१२	कुलटा	२	६	१०	कुसीद	२	९	४
कुणि	२	४	१२८	कुमारक	२	४	२५	कुलत्थिका	२	९	१०२	कुसीदिक	२	९	५
कुणि	२	६	४८	कुमारी	२	४	७३	कुलपालिका	२	६	७	कुसुम	२	४	१७
कुण्ठ	३	१	१७	कुमारी	२	६	८	कुलश्रेष्ठिन्	२	१०	५	कुसुमाञ्जन	२	९	१९३
कुण्ड	२	६	३६	कुमुद	१	३	३	कुलसम्भव	२	७	२	कुसुमेषु	१	१	२६
कुण्ड	२	९	३१	कुमुद	१	१०	३७	कुलस्त्री	२	६	७	कुसुम्भ	२	६	१०६
कुण्डल	२	६	१०३	कुमुदप्राय	२	१	९	कुलाय	२	५	३७	कुसुम्भ	३	३	१३७
कुण्डलिन्	१	८	७	कुमुदबान्धव	१	३	१४	कुलाल	२	१०	६	कुसृति	१	७	३०
कुण्डी	२	७	४६	कुमुदिका	२	४	४०	कुलाली	२	९	१०२	कुस्तुम्बुरु	२	९	३८
कुतप	२	७	३३	कुमुदिनी	१	१०	३९	कुलिश	१	१	४७	६ कुहन	३	१	११०
५९ कुतप	३	३	१३१	कुमुद्वत्	२	१	९	कुली	२	४	९४	कुहना	२	७	५३
कुतुक	१	७	३१	कुमुद्वती	१	१०	३८	कुलीन	२	७	३	कुहर	१	८	१
कुतप	२	९	३३	कुम्बा	२	७	१८	कुलीन	२	८	४४	कुहू	१	४	९
कुतू	२	९	३३	कुम्भ	२	४	३४	कुलीर	१	१०	२१	कूकुद	३	१	१४
कुतूहल	१	७	३१	कुम्भ	२	८	३७	कुल्माष	२	९	१८	कूट	२	३	४
कुत्सा	१	६	१३	कुम्भ	३	३	१३५	कुल्माष	२	९	३९	कूट	२	५	४२
कुत्सित	३	१	५४	कुम्भकार	२	१०	६	कुल्माष	३	९	२१	कूट	३	३	३७
कुथ	२	४	१६६	कुम्भसम्भव	१	३	२०	कुल्माषाभिषुत	२	९	३९	कूटक	२	९	१३
कुथ	२	८	४२	कुम्भिका	१	१०	३८	कुल्य	२	६	६८	कूटयन्त्र	२	१०	२६
कुद्दाल	२	४	२२	१ कुम्भिनी	२	१	३	कुल्या	१	१०	३४	कूटशाल्मलि	२	४	४७
कुनटी	२	९	१०८	कुम्भी	२	४	४०	७३ कुल्या	३	३	१६१	कूटस्थ	३	१	७३
कुनाशक	२	४	९१	५४ कुम्भीनस	१	८	८	कुवल	२	४	३६	कूप	१	१०	२६
कुन्त	२	८	९३	कुम्भीर	१	१०	२१	कुवल	३	६	४२	कूपक	१	१०	१०
कुन्तल	२	६	९५	कुरङ्ग	२	५	८	कुवलय	१	१०	३७	कूपक	१	१०	१२
२३ कुन्द	१	१	३०	कुरण्टक	२	४	७४	कुवाद	३	१	३७	कूपक	२	६	७५
कुन्द	२	४	७३	कुरण्टक	२	४	७५	कुविन्द	२	१०	६	कूबर	२	८	५८
कुन्द	२	४	१२१	कुरवक	२	४	७४	कुवेणी	१	१०	१६	कूर्च	२	६	९२
कुन्द	२	६	१९	कुरवक	२	४	७५	कृश	२	४	१६६	कूर्चशीर्ष	२	४	१४२
कुन्दुरु	२	४	१२१	कुरर	२	५	२३	कुश	३	३	२१७	कूर्चिका	२	९	४४
कुन्दुरुकी	२	४	१२४	कुरुण्टक	२	४	७४	कुशल	१	४	२६	कूर्दन	१	७	३३
कुपूय	३	१	५४	कुरुविन्द	२	४	१५९	कुशल	३	१	४	कूर्पर	२	६	८०
कुप्य	२	९	९१	कुरुविस्त	२	९	८६	कुशल	३	३	२०५	कूर्पासक	२	६	११८
कुबेर	१	१	६८	कुल	२	५	४१	कुशी	३	९	९९	कूर्म	१	१०	२१
कुबेर	१	३	३	कुल	२	७	१	कुशीलव	२	१०	१२	कूल	१	१०	७

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
चीरी	२	५	२८	चोरपुष्पी	२	४	१२६	छिद्रित	३	१	९९	जठर	३	३	१९०
चीरुका	२	५	२८	चोल	२	६	११८	छिन्न	३	१	१०३	जड	१	३	१९
चीवर	३	६	३१	चौर	२	१०	२४	छिन्नरुहा	२	४	८२	जड	३	१	३८
चुक्र	२	४	१४१	चौरिका	२	१०	२५	११ छुछुन्दरी	२	५	११	जडुल	२	६	४९
चुक्र	२	९	३५	चौर्य	२	१०	२५	छुरिका	२	८	९२	जतु	२	६	१२५
चुक्र	३	६	२०	च्युत	३	१	१०४	छेक	२	५	४३	जतु	३	६	१३
चुक्रिका	२	४	१४०	**छ**				छेदन	३	२	७	जतुक	२	९	४०
चुल्ल	२	६	६०	छगलक	२	९	७६	**ज**				जतुका	२	५	२६
चुल्लि	२	९	२९	छगलान्त्री	२	४	१३७	३९ जगच्चक्षुस्	१	३	३०	जतुकृत्	२	४	१५३
चूचुक	२	६	७७	छत्र	२	८	३२	जगत	२	१	६	जतूका	२	४	१५३
चूडा	२	५	३१	छत्रा	२	४	१०५	जगत्	३	३	८०	जत्रु	२	६	७८
चूडा	२	६	९७	छत्रा	२	४	१६७	२ जगती	२	१	३	जडा	२	४	८६
चूडामणि	२	६	१०२	छत्रा	२	९	३७	जगती	२	१	६	५८ जन	३	३	१२८
चूडाला	२	४	१६०	छत्राकी	२	४	११५	जगती	३	३	७२	जनक	१	७	१२
६ चूत	१	१	२६	छद	२	४	१४	जगत्प्राण	१	१	६२	जनक	२	६	२८
चूत	२	४	३३	छद	२	५	३६	जगर	२	८	६४	जनङ्गम	२	१०	१९
चूर्ण	२	६	१३४	छदन	२	४	१४	जगल	२	१०	४१	जनता	३	२	४२
चूर्ण	२	८	९९	छदिस्	२	२	१४	जग्ध	३	१	१११	जनन	१	४	३०
चूर्णकुन्तल	२	६	९६	छद्मन्	१	७	३०	जग्धि	२	९	५५	जनन	२	७	१
चूर्णि	३	६	९	छन्द	३	२	२०	जघन	२	६	७४	जननी	२	६	२९
चूलिका	२	८	३८	छन्द	३	३	८९	जघनेफला	२	४	६१	जनपद	२	१	८
चेटक	२	१०	१७	छन्दस्	२	७	२२	जघन्य	३	१	८१	जनयित्री	२	६	२९
चेत्	३	५	१२	छन्दस्	३	३	२३३	जघन्य	३	३	१६०	जनश्रुति	१	६	७
चेतकी	२	४	५९	छन्न	२	८	२२	जघन्यज	२	६	४३	जनार्दन	१	१	१९
चेतन	१	४	३०	छन्न	३	१	९८	जघन्यज	२	१०	१	जनाश्रय	२	२	९
चेतना	१	५	१	छल	२	८	१०८	जङ्गम	३	१	७४	जनि	१	४	३०
चेतस्	१	४	३१	छवि	१	३	१८	जङ्गुल	२	६	४९	जनी	२	४	१५३
चेल	२	६	११५	छवि	१	३	३४	जङ्गमेतर	३	१	७३	जनी	२	६	९
चेल	२	३	२०३	छाग	२	९	७६	जङ्घा	२	६	७२	जनुस्	१	४	३०
चैत्य	२	२	७	छागी	२	९	७६	जङ्घाकरिक	२	८	७३	जन्तु	१	४	३०
चैत्र	१	४	१५	छात	२	६	४४	घङ्घाल	२	८	७३	जन्तुफल	२	४	२२
चैत्ररथ	१	१	७०	छात	३	१	१०३	जटा	२	४	११	जन्मन्	१	४	३०
चैत्रिक	१	४	१५	छात्र	२	७	११	जटा	२	६	९७	जन्मिन्	१	४	३०
चोच	२	४	१३४	छादित	३	१	९८	जटा	३	३	३८	जन्य	२	७	५८
४६ चोद्य	६	१	६१	छान्दस	२	७	६	जटामांसी	२	४	१३४	जन्य	२	८	१०३
४६ चोद्य	३	५	३०	छाया	३	३	१५८	जटिन्	२	४	३२	जन्य	३	३	१६०
१४ चोरित	३	१	११२	छित	३	१	१०३	जटिला	२	४	१३४	जन्यु	१	४	३०
चोच	३	६	३०	छिद्र	१	८	२	जठर	२	६	७७	जप	२	७	४७

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
दिव्	१	२	१	दीर्घवृन्त	२	४	५७	दुश्च्यवन	१	१	४४	देवजग्धक	२	४	१६६
दिवस	१	४	२	दीर्घसूत्र	३	१	१७	दुष्कृत	१	४	२३	देवतरु	१	१	५०
दिवस्पति	१	१	४२	दीर्घिका	१	१०	२८	दुष्ठु	३	५	१९	देवता	१	१	९
४ दिवस्पृथिवी	२	१	१८	दुःख	१	९	३	दुष्पत्र	२	४	१२८	देवताड	२	४	६९
दिवा	३	५	६	दुःख	३	६	२३	दुष्प्रधर्षिणी	२	४	११४	देवदारु	२	४	५४
दिवाकर	१	३	२८	दुःषमम्	३	५	१४	दुहितृ	२	६	२८	देवद्र्यच्	३	१	३४
दिवाकीर्ति	२	१०	१०	दुःस्पर्श	२	४	९१	दूत	२	८	१६	देवन	२	१०	४५
दिवाकीर्ति	२	१०	१९	दुःस्पर्शा	२	४	९४	दूती	२	६	१७	देवन	३	३	११८
१२ दिवान्ध	२	५	१४	दुकूल	२	६	११३	दूत्य	२	८	१६	देवभूय	२	७	५२
११ दिवान्धिका	२	५	११	दुग्ध	२	९	५१	दून	३	१	१०२	देवमातृक	२	१	१२
१२ दिवाभीत	२	५	१४	*दुग्धद	२	६	२९	दूर	३	१	६८	देवयोनि	१	१	११
दिविषद्	१	१	८	*दुग्धदा	२	६	२९	दूरदर्शिन्	२	७	६	देवर	२	६	३२
दिवौकस्	१	१	७	दुग्धिका	२	४	१००	दूरशून्योध्वन्	२	१	१७	देवल	२	१०	११
दिवौकस्	३	३	२२७	दुन्दुभि	१	७	६	दूर्वा	२	४	१५८	देववल्लभ	२	४	२५
दिव्य	१	४	२१	दुन्दुभि	३	३	१३६	दूषिका	२	६	६७	देवसभा	१	१	४८
दिव्योपपादुक	३	१	५०	दुरध्व	२	१	१६	दूष्य	२	६	१२०	देवाजीव	२	१०	११
दिश्	१	३	२	दुरालभा	२	४	९२	दूष्या	२	८	४२	देविका	१	१०	३६
दिश्	१	३	६	दुरित	२	४	२३	दृढ	१	१	६७	देवी	१	७	१३
दिश्	३	६	३	४६ दुरेषण	१	६	१६	दृढ	३	१	७६	देवी	२	४	८३
दिश्य	१	३	१	दुरोदर	३	३	१७२	दृढ	३	३	४५	देवी	२	४	१३३
दिष्ट	१	४	१	दुर्ग	२	८	१७	दृढसन्धि	३	१	७५	देवृ	२	६	३२
दिष्ट	१	४	२८	दुर्गत	३	१	४९	दृति	३	६	१९	देश	२	१	८
दिष्ट	३	३	३५	दुर्गति	१	९	१	दृब्ध	३	१	८५	देशरूप	२	८	२४
दिष्टान्त	२	८	११६	दुर्गन्ध	१	५	१२	दृश्	२	६	९३	२७ देशिक	३	३	१७
दिष्ठ्या	२	५	१०	दुर्गसञ्चर	३	२	२५	दृश्	३	३	२१८	देह	२	६	७१
दीक्षित	२	७	८	दुर्गा	१	१	३७	दृषद्	२	३	४	देहली	२	२	१३
दीदिवि	२	९	४८	दुर्जन	३	१	४७	दृष्ट	२	८	३०	दैतेय	१	१	१२
दीधिति	१	३	३३	दुर्दिन	१	३	१२	दृष्टरजस्	२	६	८	दैत्य	१	१	१२
दीन	३	१	४९	दुर्द्रुम	२	४	१४८	दृष्टान्त	३	३	६२	दैत्यगुरु	१	३	२५
दीप	२	६	१३५	दुर्नामक	२	६	५४	दृष्टि	२	६	९३	दैत्या	२	४	१२३
दीपक	३	३	११	दुर्नामन्	१	१०	२५	दृष्टि	२	३	३९	दैत्यारि	१	१	१९
दीप्ति	१	३	३४	दुर्बल	२	६	४४	देव	१	१	७	दैर्घ्य	२	६	१४
दीप्य	२	४	१११	दुर्मनस्	३	१	८	देव	१	७	१३	दैव	१	४	२८
दीर्घ	३	१	६९	दुर्मुख	३	१	३६	देवकीनन्दन	१	१	२१	दैव (अहोरात्र)	१	४	२१
दीर्घकोशिका	१	१०	२५	दुर्वर्ण	२	९	९६	देवकुसुम	२	६	१२५	दैव (तीर्थ)	२	७	५०
११ दीर्घमुण्डी	२	५	११	दुर्विध	३	१	४९	देवखातक	१	१०	२७	दैवज्ञ	२	८	१४
दीर्घदर्शिन्	२	७	६	दुर्हृद्	२	८	१०	देवखातबिल	२	३	६	दैवज्ञा	२	६	२०
दीर्घपृष्ठ	१	८	८	दुलि	१	१०	२४	देवच्छन्द	२	६	१०५	दैवत	१	१	९

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
पवि	१	१	४७	पाणि	२	६	८१	पान	२	१०	४०	पारिभद्रक	२	४	५३
पवित्र	२	४	१६६	पाणिगृहीती	२	६	५	पानगोष्ठिका	२	१०	४२	पारिभव्य	२	४	१२६
पवित्र	२	७	४५	पाणिघ	२	१०	१३	पानपात्र	२	१०	४३	पारियात्रक	२	३	३
पवित्र	३	१	५५	पाणिपीडन	२	७	५६	पानभाजन	२	९	३२	पारिषद्	१	१	३५
पवित्रक	१	१०	१६	पाणिवाद	२	१०	१३	पानीय	१	१०	४	पारिहार्य	२	६	१०७
पशुजाति	२	५	११	पाण्डर	१	५	१२	पानीयशालिका	२	२	७	पारी	३	६	१०
पशुपति	१	१	३०	पाण्डु	१	५	१३	पान्थ	२	८	१७	पारुष्य	१	६	१४
पशुप्रेरण	३	२	३९	पाण्डुकम्बलिन्	२	८	५४	पाप	१	४	२३	पार्थिव	२	८	१
परशुरज्जु	२	९	७३	पाण्डुर	१	५	१३	पाप	३	१	४७	पार्वती	१	१	३७
पश्चात्	३	४	५	पातक	३	६	३३	पापचेली	२	४	८५	पार्वतीनन्दन	१	१	३९
पश्चात्ताप	१	७	२५	पाताल	१	८	१	पाप्मन्	१	४	२३	पार्श्व	२	६	७९
पश्चिम	१	३	२	पाताल	३	३	२०३	पामन्	२	६	५३	पार्श्व	३	२	४१
पश्चिम	३	१	८१	पातुक	३	१	२७	पामन	२	६	५८	पार्श्वभाग	२	८	४०
पांशु	२	८	९८	पात्र	१	१०	८	पामर	२	१०	१५	पार्ष्णि	२	६	७२
पांशुला	२	६	११	पात्र	२	७	२४	पामा	२	६	५३	पार्ष्णिग्राह	२	८	१०
पाक	२	५	३८	पात्र	२	९	३३	पायस	२	६	१२८	पालघ्न	२	४	१६७
पाक	३	२	८	पात्र	३	३	१८०	पायस	२	७	२४	पालङ्की	२	४	१२१
३ पाक	३	३	१७	पात्री	३	६	४२	पायु	२	६	७३	पालाश	१	५	१४
पाकल	२	४	१२६	पात्रीव	३	६	३५	पाय्य	२	९	८५	पालि	२	८	९३
पाकशासन	१	१	४१	पाथस्	१	१०	४	पार	१	१०	८	पालि	३	३	१९८
पाकशासनि	१	१	४६	पाद	२	३	७	पारद	२	९	९९	पालिन्दी	२	४	१०८
पाकस्थान	२	९	२७	पाद	२	६	७१	पारशव	३	३	२११	पाल्लवा	३	६	५
पाक्य	२	९	४२	पाद	२	९	८९	पारश्वधिक	२	८	७०	पावक	१	१	५४
पाक्य	२	१	१०९	पाद	३	३	९०	पारसीक	२	८	४५	पाश	२	६	९८
पाखण्ड	२	७	४५	पादकटक	२	६	११०	पारस्त्रैणेय	२	६	२४	पाशक	२	१०	४५
पाञ्चजन्य	१	१	२८	पादग्रहण	२	७	४१	पारायण	३	२	२	पाशिन्	१	१	६१
पाञ्चालिका	२	१०	२९	पादप	२	४	५	पारावत	२	५	१४	पाशुपत	२	४	८१
पाट	३	५	७	पादबन्धन	२	९	५८	पारावताङ्घ्रि	२	४	१५०	पाशुपाल्य	२	९	२
पाटच्चर	२	१०	२५	१४ पादवल्मीकर	२	६	५५	पारावार	१	१०	१	पाश्चात्य	३	१	८१
पाटल	१	५	१५	पादस्फोट	२	६	५२	पारावार	३	६	३५	पाश्या	३	२	४२
पाटल	२	९	१५	पादाग्र	२	६	७१	पाराशरिन्	२	७	४१	पाषाण	२	३	४
पाटला	२	४	५४	पदाङ्गद	२	६	१०९	पारिकाङ्क्षिन्	२	७	४२	पाषाणदारण	२	१०	३४
पाटलि	२	४	५४	पादात	२	८	६७	पारिजातक	१	१	५०	पिक	२	५	१९
पाठ	२	७	१४	पादातिक	२	८	६६	पारिजातक	२	४	२६	७ पिकवल्लम	२	४	३३
पाठ	३	२	२९	पादुका	२	१०	३०	पारितथ्या	२	६	१०३	पिङ्ग	१	५	१६
पाठा	२	४	८४	पादू	२	१०	३०	पारिपार्श्वक	१	३	३२	पिङ्गल	१	३	३१
पाठिन्	२	४	८०	पादूकृत्	२	१०	७	पारिप्लव	३	१	७५	पिङ्गल	१	३	३२
पाठीन	१	१०	१८	पाद्य	२	७	३३	पारिभद्र	२	४	२६	पिङ्गल	१	५	१६

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
३ रोदसी	२	१	१८	लक्ष्मीवत्	३	१	१४	ललाम	३	३	१४४	लिङ्ग	३	३	२५
रोदसी	३	३	२३०	लक्ष्य	१	७	३३	ललामक	३	३	१३५	लिङ्गवृत्ति	२	७	५४
रोधस्	१	१०	७	लक्ष्य	२	८	६६	ललित	१	७	३१	लिपि	२	८	१६
५८ रोधोवक्रा	१	१०	३०	लगुड	३	६	१८	लव	३	१	६२	लिपिङ्कर	२	८	१५
रोप	२	८	८७	लग्न	१	३	२७	लव	३	२	२४	लिप्त	३	१	९०
रोमन्	२	६	९९	लग्नक	२	१०	४४	लवङ्ग	२	६	१२५	लिप्त	३	१	११०
रोमन्थ	३	६	१९	१७ लघिमा	१	१	३५	लवण	१	५	९	लिप्तक	२	८	८८
रोमहर्षण	१	७	३५	लघु	१	१	६४	लवण	३	६	२३	लिप्सा	१	७	२७
रोमाञ्च	१	७	३५	लघु	१	४	१३३	लवणोद	१	१०	२	लिवि	२	८	१६
रोष	१	७	२६	लघु	३	३	२८	लवन	२	२	२४	लीला	१	७	३२
रोहिणी	२	९	६७	लघुलय	२	४	१६५	लवित्र	२	९	१३	लीला	१	७	३२
रोहित	१	३	११	लङ्का	२	६	७	लशुन	२	४	१४८	लीला	३	३	२००
रोहित	१	५	१५	लङ्कोपिका	२	४	१३३	लस्तक	२	८	८५	लुठित	२	८	५०
रोहित	१	१०	१९	लज्जा	१	७	२३	लाक्षा	२	६	१२५	लुब्ध	३	१	२२
रोहित	२	५	१०	लज्जाशील	३	१	२८	लाक्षा	३	६	१०	लुब्धक	२	१०	२१
रोहितक	२	४	४६	लज्जित	३	१	९१	लाक्षाप्रसादन	२	४	४१	४ लुब्धक	३	३	१७
रोहिताश्व	१	१	५५	लट्वा	३	६	११	लाङ्गल	२	९	१३	लुलाय	२	५	४
रोहिन्	२	४	४६	लता	२	४	९	९२ लाङ्गल	३	५	२३	लूता	२	५	१३
रौद्र	१	७	१७	लता	२	४	१०	लाङ्गलदण्ड	२	९	१४	लून	३	१	१०३
रौद्र	१	७	२०	लता	२	४	११	लाङ्गलपद्धति	२	९	१४	लूम	२	८	५०
रौमक	२	९	४२	लता	२	४	५५	लाङ्गलिकी	२	४	११८	लेख	१	१	८
रौरव	१	९	१	लता	२	४	७२	लाङ्गली	२	४	१११	लेखक	२	८	१५
रौहिणेय	१	१	२४	लता	२	४	१३३	लाङ्गली	२	४	१६८	लेखर्षभ	१	१	४२
रौहिणेय	१	३	२६	लता	२	४	१५०	लाङ्गूल	२	८	५०	लेखा	२	४	४
रौहिष	२	४	१६६	लतार्क	२	४	१४८	लाज	२	९	४७	लेप	२	९	५६
रौहिष	२	५	१०	लपन	२	६	८९	लाञ्छन	१	३	१७	लेपक	२	१०	६
ल				लपित	२	६	१	५८ लाञ्छन	३	३	१२८	८३ लेलिहान	१	८	८
लकुच	२	४	६०	लपित	३	१	१०७	लाभ	२	९	८०	लेश	३	१	६२
लक्ष	२	८	८६	लब्ध	३	१	१०४	लामज्जक	२	४	१६५	लेष्टु	२	९	१२
८८ लक्ष	३	३	२२५	लब्धवर्ण	२	७	६	लालसा	१	७	२८	लेह	२	९	१६
लक्षण	१	३	१७	लभ्य	२	८	२४	लालसा	३	३	२३०	लोक	२	१	६
लक्ष्मज	३	१	१४	लम्बन	२	८	१०४	लाला	२	६	६७	लोक	३	३	२
लक्ष्मणा	२	५	२५	लम्बोदर	१	१	३८	लालाटिक	३	३	१७	१० लोकजननी	१	१	२७
लक्ष्मन्	१	३	१७	लय	१	७	९	लाव	२	५	३५	लोकजित्	१	१	१३
लक्ष्मन्	३	३	१२५	ललना	२	६	३	लासिका	१	७	८	३९ लोकबन्धु	१	१	३०
लक्ष्मी	१	१	२७	ललन्तिका	२	६	१०४	लास्य	१	७	१०	४० लोकबान्धव	१	३	३०
लक्ष्मी	२	४	११२	ललाट	२	६	९२	लिकुच	२	४	६०	९ लोकमातृ	१	१	२७
लक्ष्मी	२	८	८२	ललाटिका	२	६	१०३	लिक्षा	३	६	१०	लोकायत्	३	६	३२

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
विचक्षण	२	७	६	वित्त	२	९	९०	विधि	२	७	३९	विपाशा	१	१०	३३
विचयन	३	२	३०	वित्त	३	१	९	विधि	३	३	१००	विपिन	२	४	१
विचर्चिका	२	६	५३	वित्त	३	१	९९	विधु	१	१	२२	विपुल	३	१	६१
विचारणा	१	५	२	१ विदग्ध	३	१	२३	३६ विधु	१	३	२	१ विपुला	२	१	३
विचारित	३	१	९९	विदर	३	२	५	विधु	१	३	१४	विप्र	२	७	४
विचिकित्सा	१	५	३	विदल	३	६	३२	विधु	३	३	१००	विप्रकार	३	२	१५
विच्छन्दक	२	२	११	विदारक	१	१०	१०	विधुत	३	१	१०७	विप्रकृत	३	१	४१
विच्छाय	३	६	२६	विदारिगन्धा	२	४	११५	विधुन्तुद	१	३	२७	विप्रकृष्टक	३	१	६८
विजन	२	८	२२	विदारी	२	४	११०	विधुर	३	२	२०	विप्रतीसार	१	७	२५
विजय	२	८	११०	विदित	३	१	१०८	विधुवन	३	२	४	विप्रयोग	३	२	२८
विजिल	२	९	४६	विदित	३	१	१०९	विधूनन	३	२	४	विप्रलब्ध	३	१	४१
विज्ञ	३	१	४	विदिश्	१	३	५	विधेय	३	१	२४	विप्रलम्भ	१	७	३६
३७ विज्ञ	३	३	३३	विदु	२	८	३७	विनयग्राहिन्	३	१	२४	विप्रलम्भ	३	२	२८
विज्ञात	३	१	९	विदुर	२	४	३०	विना	३	५	३	विप्रलाप	१	६	१६
विज्ञान	१	५	६	विदुर	३	१	३०	विनायक	१	१	१४	विप्रश्निका	२	६	२०
२ विट	३	१	२३	विदुल	२	४	३०	विनायक	१	१	३८	विप्रूष्	१	१०	६
विट	३	६	१७	विद्ध	३	१	९९	विनायक	३	३	६	विप्लव	३	२	१४
विटङ्क	२	२	१५	विद्धकर्णी	२	४	८४	विनाश	३	२	२२	विबन्ध	२	६	५५
विटप	२	४	१४	विद्याधर	१	१	११	विनाशोन्मुख	३	१	९१	विबुध	१	१	७
विटप	३	३	१३२	विद्युत्	१	३	९	विनीत	२	८	४४	विभव	२	९	९०
विटपिन्	२	४	५	विद्युत्	३	६	३	विनीत	३	१	२५	विभाकर	१	३	२८
विट्खदिर	२	४	५०	विद्रधि	२	३	५६	विन्दु	३	१	३०	विभावरी	१	४	४
विट्चर	२	१०	२३	विद्रव	२	८	१११	विन्ध्य	२	३	३	विभावसु	१	१	५६
विड	२	९	४२	विद्राव	२	८	१११	विन्न	३	१	९९	विभावसु	१	३	३१
विडङ्ग	२	४	१०६	विद्रुत	३	१	१००	विन्न	३	१	१०४	विभावसु	३	३	२२७
विडाल	२	५	६	विद्रुम	२	९	९३	विपक्ष	२	८	११	विभीतक	२	४	५८
विडौजस्	१	१	४१	विद्रुमलता	२	४	१२९	विपञ्ची	१	७	३	विभूति	१	१	३६
वितण्डा	३	६	९	विद्वस्	१	७	१२	विपण	२	९	८२	विभूषण	२	३	१०१
वितथ	१	६	२२	विद्वस्	२	७	५	विपणि	२	२	२	विभ्रम	१	७	३१
वितरण	२	७	२९	विद्वस्	३	३	२३५	विपणि	३	३	५२	विभ्रम	३	३	१४२
वितर्दि	२	२	१६	विद्वेष	१	७	२५	विपत्ति	२	८	८२	विभ्राज्	२	६	१०१
वितस्ति	२	६	८४	विधवा	२	६	११	विपथ	२	१	१६	विमनस्	३	१	८
वितान	२	६	१२०	विधा	२	१०	३८	विपद्	२	८	८२	विमर्दन	३	२	१३
वितान	३	३	११४	विधा	३	२	१०	विपर्यय	३	२	३३	४५ विमर्श	१	५	२
वितुन्न	२	४	१४९	विधा	३	३	१०२	विपर्यास	३	२	३३	विमला	२	४	१४३
वितुन्नक	२	४	१२६	विधातृ	१	१	१७	विपश्चित्	२	७	५	विमलात्मक	३	१	५५
वितुन्नक	२	९	३७	विधि	१	१	१७	विपादिका	२	६	५२	विमातृज	२	६	२५
वितुन्नक	२	९	१०१	विधि	१	४	२८	विपाश्	१	१०	३३	विमान	१	१	४८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
स्वयम्भू	१	१	१६	स्वराज्	१	१	४३	हरिचन्दन	१	१	५०	हलिप्रिया	२	१०	३९
स्वर्	१	१	६	स्वाहा	२	७	२१	हरिचन्दन	२	६	१३१	हल्य	२	९	८
स्वर्	३	४	१६	स्वाहा	३	५	८	हरिण	१	५	१३	हल्या	३	२	४१
स्वर	१	६	४	स्वित्	३	४	४	हरिण	२	५	८	हल्लक	१	१०	३६
स्वर	१	७	१	स्वेद	१	७	३३	हरिण	२	५	९	हव	३	२	८
स्वरु	१	१	४७	स्वेदज	३	१	५१	हरिण	३	३	५१	हव	३	३	२०८
स्वरु	३	३	१६८	स्वेदनी	२	९	३०	हरिणी	३	३	५१	हविस्	२	७	२७
स्वरूप	१	७	३८	स्वैर	३	३	१९३	हरित्	१	३	१	हविस्	२	९	५२
स्वरूप	३	३	१३२	स्वैरिणी	२	६	११	हरित्	१	५	१४	हव्य	२	७	२४
स्वर्ग	१	१	६	स्वैरिता	३	२	२	हरित्	३	६	१९	हव्यवाहन	१	१	५५
स्वर्ग	३	६	११	स्वैरिन्	३	१	१५	हरित	१	५	१४	हस	१	७	१८
स्वर्जिकाक्षार	२	९	१०९	**ह**				हरितक	२	९	३४	हसनी	१	९	३०
स्वर्ण	२	९	९४	ह	३	५	५	हरिताल	३	६	३२	हसन्ती	२	९	२९
स्वर्णकार	२	१०	८	हंस	१	३	३१	हरितालक	२	९	१०३	हस्त	२	६	८६
स्वर्णक्षीरी	२	४	१३८	हंस	२	५	२३	हरिदश्व	१	३	२९	हस्त	२	६	९८
स्वर्णदी	१	१	४९	हंस	३	३	२२७	हरिद्रा	२	९	४१	हस्त	३	३	५९
१ स्वर्भानु	१	३	२	हंसक	२	६	११०	१० हरिद्रारागक	३	१	११०	हस्तवारण	३	२	५
१ स्वर्भानु	१	३	२६	२ हंसवाहन	१	१	१७	हरिद्राभ	१	५	१४	हस्तिन्	२	८	३४
स्वर्वेश्या	१	१	५२	हञ्जिका	२	४	८९	हरिद्रु	२	४	१०१	हस्तिनख	२	२	१७
स्वर्वैद्य	१	१	५१	हञ्जे	१	७	१५	हरिन्मणि	२	९	९२	हस्तिपक	२	८	५९
स्ववासिनी	२	६	९	हट्ट	३	६	१८	हरिप्रिया	१	१	२७	हस्त्यारोह	२	८	५९
स्वसृ	२	६	२९	हट्टविलासिनी	२	४	१३०	हरिमन्थक	२	९	१८	हा	३	४	८१
स्वस्ति	३	४	३	हठ	२	८	१०८	हरिवालुक	२	४	१२१	हाटक	२	९	९४
स्वस्तिक	२	२	१०	हण्डे	१	७	१५	हरिहय	१	१	४३	हायन	१	४	२०
स्वस्रीय	२	६	३२	हत	३	१	४१	हरीतकी	२	४	१८	हायन	३	३	१०८
स्वाति	३	६	३८	हनु	२	४	१३०	हरीतकी	२	४	५९	हार	२	६	१०५
स्वादु	३	३	९५	हनु	२	६	९०	हरेणु	२	४	१२०	हारीत	२	५	३४
स्वादुकण्टक	२	४	३७	हन्त	३	४	७	हरेणु	२	९	१६	हार्द	१	७	२७
स्वादुकण्टक	२	४	९८	हन्न	३	१	६६	हर्म्य	२	१	९	८० हाल	३	३	२०५
स्वादुरसा	२	४	१४४	हय	२	८	४४	हर्यक्ष	२	५	१	हाला	२	१०	३९
स्वाद्वी	२	४	१०७	हयपुच्छी	२	४	१३८	हर्ष	१	४	२४	हालिक	२	९	६४
स्वाध्याय	२	७	४७	हयमारक	२	४	७६	हर्षमाण	३	१	७	हाव	१	७	३२
स्वान	१	६	२३	हर	१	१	३३	हल	२	९	१३	हास	१	७	१९
स्वान्त	१	४	३१	हरण	२	८	२८	हला	१	७	१५	हास्तिक	२	८	३६
स्वाप	१	७	३६	हरि	१	८	८	हलायुध	१	१	२३	हास्य	१	७	१७
स्वापतेय	२	९	९०	५४ हरि	१	८	८	हलाहल	१	८	१०	हास्य	१	७	१९
स्वामिन्	२	८	१७	हरि	२	५	१	हलिन्	१	१	२४	हाहा	३	१	५२
स्वामिन्	३	१	१०	हरि	३	३	१७६	हलिप्रिय	२	४	४२	हि	३	४	१९

इत्यमरकोशमूलपेक्षकस्थशब्दानामकारादिशब्दानुक्रमणिका

समाप्ता

अकारादिक्रम से अमरक़ोष में हिन्दी के शब्दों की

शब्दानुक्रमणिका

शब्द	का.	वर्ग	श्लो.	शब्द	का.	वर्ग	श्लो.	शब्द	का.	वर्ग	श्लो.	शब्द	का.	वर्ग	श्लो.
लार	२	६	४९	विषामिल	२	९	३५	शूअर	२	५	२	सुनुगा	२	४	३१
लुआठ	२	६	११९	वि (ख) रिआ	२	९	४२	शूरण	२	४	१५७	सुपारी	२	४	१६९
लूक	३	६	८	विधार	२	४	१३५	शेल	२	८	९३	सुरमा	२	९	१००
बकहल	२	४	८१	विजउरा	२	४	७८	शेवार	१	१०	३८	सुलाखी	२	१०	३२
बकु (गु) ला	२	५	२२	विथवनि	२	४	९२-९३	शेखुआ	२	४	४४	सेवती	२	४	७६
बकुची	२	४	९५-९६	विसखपरिया	२	४	१४९	शेबर	२	४	४६	सेहुण्ड	२	४	१०५-१०६
बगई	२	४	१६३	वीर	२	६	११०	शैशव	२	४	१०५	सैंधव	२	९	४२
वच	२	४	१०२	वीछी	२	४	१४	शौंफ	२	४	१५२	सोंचर	२	९	४२
वटई	२	५	३५	वेदी	२	२	१६	शोंठि	२	९	३८	स्त्रीचोटी	२	६	९८
वतक	२	५	२३	वेनौरी	१	३	१२	श्यामतिधारा	२	४	१०८-९	हथिकन	२	४	६९
वनकुक्कुर	२	५	३५	वेवड़ा	२	२	१७	षोजा	२	८	९	हरड	२	४	५९
वनभाटा	२	४	११४	वेरसा	२	४	२९-३०	सनई	२	४	१०७	हरिसि	२	९	१४
वनभृंगी	२	४	११३	वैरि	२	४	३६	समुद्रफल	२	४	६१	हरिकारा	२	८	१३
वमन	२	६	५५	वैरि	२	४	३७	सराय	२	२	१३	हसिया	२	९	१३
वरई	२	५	२७	वंशलोचन	२	९	१०९	सवन	२	४	५६-५७	हँडिया	२	९	३१
वरण	२	४	२५	वंशवती	२	९	४०	सहरस	२	५	२२	हंसपदी	२	४	११९
वरगद	२	४	३२	शतलुज	१	१०	३३	सहिजन	२	४	३१	हाड	२	६	६८
वरमा	३	२	३६	शतावरि	२	४	१००-१०१	संदूष (ख)	२	१०	२९	हिलिसा	२	४	१५७
वरवटि	२	६	६६	शरहरि	२	४	१६२	साही	२	५	७	हींग	२	९	४०
वरिआरा	२	४	१०७	शरिवनि	२	४	११५	साजीखार	२	९	१०९	हुचकी	३	६	८
वाध	२	५	१	शालई	२	४	१२३-२४	साई	२	९	८२	हेंग	२	९	१२
वाज	२	४	१४-१५	शिरीस	२	४	६३	सांड	२	४	११२	क्षायी	२	६	५१
विगु	२	५	७	शिकिलीगर	२	१०	७	सांदल	२	४	२६-२७	त्रायमान	२	४	१५०
विछिया	२	६	१०९	शुनेर	२	४	१३२	सांभरि	२	९	४२				
विछतुइया	२	५	१२	शुग्गा	२	५	२१	सुगन्धवाला	२	४	१२२				

---✲✲✲---

BIBLIOGRAPHY

BOOKS

Amarakosa in Burmese- Com. By Lokesh Chandra, Sata-Pitaka Series, Indo-Asian Literature 336, New Delhi, 1984.

Amarakosa : Gems from the Tresarue House of Sanskrit Words, Deshmukh, C. D. Uppal Publishing House, New Delhi, 1981

Amarakosa par Bhanuji Diksita ki **Ramasrami** Tika ka Samiksatmaka Adhyayan, Delhi University Ph. Jha, Lalit Kumar, D. Thesis, 2002 (Unpublished).

Amarakosa with Mahesvari, edited by Narayan Ram Acarya, Nirnaya Sagar Press, Bombay, 1950.

Amarakosa with the unpublished South Indian Commentaries- **Amarapalaurtiti** of lingusurin, **Amarapada-parijata** of Mallinatha and the Amarapradipavivavana of Appayara Vol. I (1974), Vol. II (1975) and Vol. III (2003) Edited by Ramanathan, A. A., Adyar Library and Research Centre, Madras.

Amarakosa, translated into Hindi by Ram Svarupa, Bombay, 1913,

Dharanikosa of Dharanidasa, Part I, edited by E. D. Kulkarni Deecan college,Poone,1968

Namalinganusasana (Amarakosha) of Amarasimha with the Commentary (Amarakoshodghatana) of Ksirasvamin, edited by Krishnaji Govind Oka, Poona, 1913. (Republished from uparana Prkashan, Delhi, 1981)

Namalinganusasana or Amarakosa of Amarasimha with the Ramasrami (Vyakhyasudha) Commentary of Bhanuji Diksita (Ramasrama), edited with Hindi Commentary by Haragovinda. Sastri Chowkhamba Sanskrit Series, Varanasi, 1970.

Siddhanta Kaumudi of Bhattoji Diksita, edited and translated into English by Srisa Chandra Vasu, Vol I & II, reprinted by Motilal Banarsidass, Delhi, 1962.

Student's English-Sanskrit Dictionary by V. S. Apte, Motilal Banarsidass, Delhi, 1964.

Student's Sanskrit-English Dictionary By V. S. Apte, Motilal Banarasidass, Delhi, 1965.

ARTICLES

A Contemporary Manuscript of Bhanuji Diksita's Vyakhyasudba by P. K. Gode in 'Studies in Indian Literary History', Vol. III pp. 25-30, P. K. Gode Collected Works, Publication Committee, Poona, 1956.

Date and Works of Raymaukuta by Dinesh Chandra Bhattacharya in 'Indian Historical Quarterly' Volume 17 (1941), pp. 456-471.

Date of Subhuticandra's Commentary on the Amarakosa by P. K. Gode in 'Studies in Indian Literary History' Vol. I, PP. 217-221, Bharatiya Vidya Bhavan, Bombay, 1953.

Rare Manuscripts of Subbuticandra's Commentary on the Amarakosa by P. K. Gode in 'Studies in Indian Literary History' Vol. I, pp. 215-216, Bharatiya Vidya Bhavan, Bombay, 1953.

The Oldest Available MS. of Ksirasvamin's Commentary on Amarakosa By N. G. Sardesai in 'Poona Orientalist' Vol. I, April 1936. January 1937, pp. 24-26.

The **Vanausuddhi Varga** of the **Amarakosa** and its Historical Implication by P. V. Sharma in **Glory of India,** Vol. III No. 4, December, 1979 P. P. 9-13